रजि नं० 83207/73 पंजि० सं० P/RTK 49

सृष्टि सम्वत् १,९६,...

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३ अङ्क १-२   २८ नवम्बर १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे



28 नवम्बर को प्रधान मंत्री की यात्रा के अवसर पर—

भारत जापान सांस्कृतिक सम्बन्ध

—विवेकशील

सूर्योदय का देश जापान, सहस्रों मन्दिरों एवं विहारों से सुसज्जित धर्म की अविरल जलने वाली ज्योति से आलोकित, "बुद्ध शरणं गच्छामि" का पाठ कर अपने मन एवं जिह्वा को पवित्र करते हुए गेरुए वस्त्र धारण किये गौरवर्ण बौद्ध भिक्षुओं की निरन्तर कठिन तपस्या से पवित्र यह देश स्मरण दिलाता है उस गौरवशाली विश्व गुरु कहलानेवाले भारत के अतीत का, जिसका सांस्कृतिक साम्राज्य पड़ोसी देशों तिब्बत और मंगोलिया तक ही नही, अपितु सुदूर-पूर्व स्थित जापान व दक्षिण पूर्वी एशिया में इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, कम्पूचिया (कम्बुज), मलेशिया, लाओस आदि अनेक देशों तक फैला था और आज भी इसकी अमिट छाप जन-जीवन मे दिखाई देती है।

भारतीय आचार्यों की जापान यात्रा—

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व जबकि विश्व में कही सभ्यता एव संस्कृति का नाम भी नही था, हिमालय के उत्तुंग शिखरों एव कर्णभेदी ध्वनि करती हिन्दमहासागर की लहरों को पार कर विश्व के अनेक देशो में मानवता का पाठ पढाने भारतीय आचार्य गये। उस समय न तो यातायात के कोई साधन उपलब्ध थे, नही ज्ञात था कि कब प्रकृति के शिकार हो सदा-सर्वदा के लिए सो जायें, अनेक बाधाओं को पार करते हुए, बहुत सी पुस्तकों का बोझा उठाये न जाने किस अन्तःप्रेरणा से प्रेरित होकर ये महामनीषी देश-विदेशों मे घूम-घूम कर धर्म की दीक्षा देते रहे। इन्हीं आचार्यों के साथ स्वच्छ विचरण करती भारतीय संस्कृति चीन से कोरिया और कोरिया से जापान पहुची।

पिछले 1400 वर्षों में भारतीय आचार्य निरन्तर धर्म की ज्योति लिए जापान जाते रहे हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि सबसे पूर्व जापान जाने वाले भारतीय बौद्ध भिक्षु आचार्य बोधिसेन थे।

बोधिसेन के पश्चात् बहुत से भारतीय आचार्य जापान गये जिनमें से नालन्दा विश्वविद्यालय के आचार्य शुभकरसिंह(637-735ई०) वज्रबोधि (663-74? ई०), काचीपुरम् के आचार्य अमोघवज्र (705-774 ई०) के नाम उल्लेखनीय हैं। इन आचार्यों ने मन्त्रयान सम्प्रदाय (सिंगोन्) का प्रचार किया।

संस्कृत का प्रचार-प्रसार—

बुद्ध धर्म के साथ ही जापान में सस्कृत का प्रचार भी बढा। आचार्य कोबोदाईशी (774-835 ई०) का नाम जापान के इतिहास में उल्लेखनीय है। सन् 805 ई० की शरद् ऋतु में चीन के छसपन् नगर में काश्मीरी आचार्य प्रज्ञा के प्रवचन से प्रभावित होकर इन्होने बौद्धमत के मंत्रयान सम्प्रदाय की दीक्षा ली। इन्होने जापान जाकर एक नये संप्रदाय वज्रयान का सूत्रपात किया। मंत्रों का महत्त्व उनके शुद्ध उच्चारण मे है; अतः जापानी एव चीनी भाषाओं मे मत्र नहीं लिखे जा सकते। आचार्य प्रज्ञा से ही आचार्य कोबोदाईशी ने चीन मे 11 वर्ष तक सस्कृत सीखी और देवनागरी लिखने का पर्याप्त अभ्यास किया। इन्होंने देवनागरी लिपि में ही मंत्र लिखने आरम्भ किये और यही परम्परा आज भी जापान में प्रचलित है। इस लिपि को सित्तम कहा जाता है जो कि सिद्धम् का अपभ्रंश उच्चारण है। 11वी शती के ईरानी यात्री अलबरूनी के यात्रा वृत्तान्त मे उल्लेख मिलता है कि उस समय भारत में सिद्धम् का प्रचार था।

जापान एक बौद्ध देश है। जापान की कुल जनसख्या के 80 प्रतिशत बौद्धमतावलम्बी हैं। मुख्यतः 13 सम्प्रदाय प्रचलित हैं। प्रथम जो दो सम्प्रदाय, यह सुखावती नामक स्वर्ग भूमि को मानने वाले हैं तथा अमिताभ बुद्ध इनके रक्षक है।

जापान मे 80, 000 से भी अधिक मन्दिर हैं व इनमें 150000 से अधिक भिक्षु निवास करते हैं। भारत को छोड़ विश्व मे सबसे अधिक संस्कृत विद्वान् यहीं पर हैं। प्रायः प्रत्येक विश्वविद्यालय मे संस्कृत तथा बौद्धविभाग हैं। बौद्ध मन्दिरो से सम्बद्ध विद्यालय तथा उनमें सस्कृत पढाने की परम्परा 1400 वर्ष पुरानी है। जापान का सारा जीवन संस्कृत तथा बौद्ध धर्म से ओतप्रोत है। दैनिक जीवन के अनेक कार्यकलाप भारतीय हैं। घर-घर में भारतीय देवी-देवताओं के चित्र व मूर्तियां विद्यमान है।

भारतीय संस्कृति के दर्शन

बहुत से उत्सव एव सस्कार भारतीय ढंग से मनाये जाते हैं। नववर्ष के प्रथम दिन जापानी लोग मन्दिरों में जाकर पूजा करते हैं व सुख समृद्धि की कामना करते हैं। दान जिकि अर्थात् इक्कीस दिन का उपवास करते हैं। इस उपवास मे केवल जल ही पीते हैं व मन्दिरों में वास करते हैं। भारतीय परम्परा के समान ही पितरों का तर्पण करते हैं। मार्च व सितम्बर में हाकामारि श्राद्ध होता है व पारिवारिक समाधियों पर जाकर पितृतर्पण किया जाता है। इन दिनों पूर्ण शाकाहारी भोजन का सेवन करना होता है।

जापानी नृत्य एव सगीत लका जिसे बगाकु और गगाकु कहा जाता है, आज से 1200 वर्ष पूर्व भारतीय आचार्य बोधिसेन द्वारा प्रचलित की गयी थी। भारत मे यह कला लुप्त हो गयी है परन्तु जापान मे आज भी वास्तविक रूप में सुरक्षित है। इस नृत्य का अभिनय राजसिक है। यह विशेष उत्सवों पर किया जाता है। कुछ रागों के नाम भी सस्कृत के है जैसे बैरा अर्थात् भैरव।

सांस्कृतिक सम्बन्ध दृढ़ हो

आजकल जापान की एक बौद्ध सस्था "जापान बुद्ध सघ" विश्वभर में शान्ति स्थापना हेतु कार्यरत है। सेकड़ों बौद्ध भिक्षु अनेक देशों में शान्तिस्तूपो का निर्माण करवा रहे हैं। विश्व के कई बडे-बड़े नगरों में शान्तिस्तूप बनाये गये हैं। भारत में राजगीर में (पटना के निकट) शान्तिस्तूप बनाया गया है। इस संस्था के अध्यक्ष पूजनीय भिक्षु फुजुई गुरु जी हैं। ये महामना 98 वर्ष की आयु के उपरान्त भी स्थान-स्थान पर जाते है व बुद्ध भगवान् के उपदेशो का प्रचार कर रहे हैं। ये प्राचीन भारतीय राजाओं के समान ही विश्वभर मे शान्तिस्तूप स्थापित करने की प्रबल इच्छा रखते है।

आज देश को आवश्यकता है कि भारत व जापान के सांस्कृतिक सम्बन्धों को और अधिक सुदृढ बनाया जाये। भारत का शिक्षा मत्रालय भारतीय सस्कृति पर कार्य करने वाले जापानी छात्रो को छात्रवृत्ति दे तथा भारतीय छात्रों को जापान जाने की सुविधा प्रदान करे जिससे कि सम्बन्ध और अधिक सबल एव सुदृढ हों और भारत एक बार फिर से विश्वगुरु का स्थान प्राप्त करे। (युगवार्ता से साभार)

स्वामी दयानन्द की मृत्यु का कारण विष—

धर्मयुग में प्रकाशित लेख की समीक्षा

—डा० भवानीलाल भारतीय

धर्मयुग के दीपावली विशेषांक में प्रकाशित सावित्री परमार का लेख "क्या महर्षि दयानन्द की मृत्यु मे नन्हीजान का हाथ था" मुख्यतया नवलगढ़ के कुवर सग्रामसिह तथा जोधपुर स्थित रसिक बिहारी जी के मन्दिर के पुजारी के वक्तव्यों पर ही आधारित है। अधिक अच्छा होता यदि लेखिका अपने प्रतिपाद्य को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए स्वामी दयानन्द के कुछ जीवन-चरितों के प्रासंगिक स्थलों को भी देख लेती। वस्तुत. महर्षि दयानन्द जिस समय जोधपुर आये उस समय महाराजा जसवन्तसिह का सम्पर्क जिस रखैल से था वह नन्ही भगतन एक हिन्दू वेश्या थी जो वैष्णव मत की अनुयायी थी। मुसलमान वैश्या नन्हीजान इससे भिन्न थी। इस सम्बन्ध मे राजस्थान के प्रख्यात इतिहास लेखक स्व० जगदीशसिह गहलोत ने समुचित जानकारी प्राप्त कराई है। लेखिका को भी इस बात से बडी हैरानी हुई कि नन्हीजान रहो मुसलमान, उसके द्वारा इन मन्दिरो का निर्माण कैसे? वस्तुत: हिन्दू वेश्या ने ही स्वामी दयानन्द को विष दिलाने के षड्यन्त्र में प्रमुख भूमिका निभाई थी। इस तथ्य की साक्षी देते हैं— राजस्थान के इतिहासकार महामहोपाध्याय पं० गौरीशकर हीराचन्द ओझा, पं० नैनूराम ब्रह्मभट्ट, मुन्शी देवीप्रसाद मुसिफ आदि वे प्रामाणिक लेखक जिनकी इस विषय से सम्बन्धित रचनायें दयानन्द स्मृति ग्रन्थ, चाद के मारवाड़ी अक तथा सरस्वती पत्रिका के 1929 के नवम्बर मास के अक में प्रकाशित हुई थीं।

सावित्री जी के लेख में तथ्य विषयक कुछ अन्य भूले भी हैं। यथा, वे लिखती हैं कि तखतसिह के दो राजकुमार थे। सत्य यह है कि महाराजा जसवन्तसिह तथा प्रतापसिह के अतिरिक्त महाराजा किशोर सिह भी तखतसिह के ही औरस पुत्र थे जिनके महल जोधपुर से मण्डोर जाने वाली सड़क पर आज भी मौजूद हैं। यह कहना भी उचित नहीं है कि स्वामी दयानन्द ने राजस्थान की रियासतों मे पैदल घूम-घूम कर धर्म प्रचार किया था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द की राजस्थान मे चार बार यात्राएं हुई थी। इनमें से प्रथम 1865 ई० की यात्रा में वे अवश्य ही पैदल भ्रमण करते रहे, किन्तु उनके अवशिष्ट भ्रमण रेल तथा अन्य साधनों से ही हुए थे। स्वामी जी को जोधपुर के जिस बाग मे ठहराया गया था वह पं० शिवदान का बाग नही अपितु मिया फैजुल्ला खां का बाग था। इसके बीच की कोठो मे ही स्वामी जी ने लगभग चार मास तक निवास किया था। यहां यह ध्यातव्य है कि जोधपुर राज्य की हकीकत बही में स्वामी जी के जोधपुर आगमन का जो उल्लेख हुआ है उसमे स्पष्ट लिखा है कि जब स्वामी दयानन्द जोधपुर आये तो मिया फैजुल्ला खा के बाग मे उनका डेरा किया गया। 4 जून 1883 के मारवाड गजट के अक मे भी इस तथ्य का उल्लेख हुआ है। यह भी स्मरणीय है कि इन्ही मिया फजुल्ला खा के वशज मिया बरकतुल्ला खां के राजस्थान के मुख्य मन्त्रित्व काल मे यह कोठी और उसका परिसर स्वामी दयानन्द के निवास की स्मृति के रूप मे एक स्मारक बनाने के लिए आर्यसमाज को प्रदान किया गया था।

स्वामी जी के जोधपुर के राजमहल मे जाने तथा वहां वेश्या नन्ही की पालकी उठाने वाले महाराजा की भर्त्सना करने वाला प्रसग यद्यपि पर्याप्त चर्चित है, किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रामाणिक बंगला जीवन चरित लेखक देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय इससे सहमत नही है। राजाओ के रनिवासों या विलासगृहों की व्यवस्था इतनी शिथिल नही होती कि यकायक विना सूचना दिये कोई भी व्यक्ति वहा अनायास प्रविष्ट हो जाये। यदि मान भी लिया जाय कि स्वामी जी का राजमहल मे आकस्मिक आगमन हुआ था, तब भी इन्हे राजा के आने तक प्रतीक्षा-गृह में बैठाया जा सकता था। यह कथन भी पुष्टि की अपेक्षा रखता है कि स्वामी जी के महाराजा के नाम लिखे गये पत्रो को नन्ही ने उन तक पहुंचने नही दिया। पं० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन मे सकलित पत्र सख्या 502 द्रष्टव्य है जिसमें स्वामी जी ने गुप्त समाचार शीर्षक से महाराजा को नन्ही का सम्पर्क त्यागने की प्रेरणा की है और लिखा है—"एक वेश्या से जो कि नन्ही कहाती है उससे प्रेम उसका अधिक संग और अनेक (विवाहिता) पत्नियों से न्यून प्रेम रखना आप जैसे महाराजों को सर्वथा अयोग्य है।"

जिस रसोइये ने 29 सितम्बर 1883 को रात्रि को स्वामी जी को दूध में विष (सखिया) दिया वह शाहपुरा निवासी था और उसका नाम जगन्नाथ न होकर धूड मिश्र था। यह सत्य है कि लोक में विषदाता रसोइये का नाम जगन्नाथ ही प्रसिद्ध है किन्तु स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक प० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय किसी जगन्नाथ नामधारी रसोइये का संकेत नही करते। धूड मिश्र को स्वामी जी की रसोई बनाने के लिये शाहपुरा नरेश नाहरसिह ने भेजा था और उसी ने नन्ही तथा अन्य षडयन्त्रकारियों के बहकावे में आकर 29 सितम्बर की रात्रि को स्वामी जी को विष दे दिया। सूरजमल के पश्चात् जिस डाक्टर को स्वामी जी की चिकित्सा का कार्य सौंपा वह अलीमर्दान नही किन्तु डा० अलीमर्दान खा था जो मूलत एटा जिले का निवासी था।

नन्ही भगतन द्वारा जोधपुर के उदय मन्दिर मुहल्ले में निर्मित मदिर मुहल्ले के पुजारी का सावित्री परमार को दिया गया यह बयान तो निश्चय ही गलत है कि आर्यसमाजियों ने स्वामी जी को चिर अमर करने के लिए उन्हें विष देने की कथा गढ ली है। स्वामी जी की मृत्यु को स्वाभाविक तथा जिगर एवं तिल्ली आदि के बिगड़ने के कारण होने वाली बताने वाले अन्य लेखकों यथा डा० बी० के० सिह जो श्रीराम शर्मा तथा श्री ओंकारसिह के कथनों का प्रतिवाद समय-समय पर इन्हीं पंक्तियों के लेखक द्वारा किया जा चुका है। इस प्रकरण की विस्तृत एवं तर्कपूर्ण समीक्षा इस लेखक ने अपने शोधपूर्ण ग्रन्थ नव-जागरण के पुरोधा—दयानन्द सरस्वती में एक पृथक् अध्याय लिखकर की है।

इस दहेज की बोली में

लाखों घर बरबाद हो गये इस दहेज की होली में
अर्थी चढ़ीं हजारों कन्या—बैठ न पाई डोली में

कितनों ही ने अपनी कन्या के पीले हाथ कराने में
कहां कहां तक मस्तक टेके आती शर्म बताने में

जिस पर बीते वही जानता शब्द नहीं ये कहने के
कितनों ने बेचे मकान हैं—अब तक अपने रहने के

कितनी कन्या राख हो गई—इस दहेज की बोली में
लाखों घर बरबाद हो गये इस दहेज की होली में

रहन पड़े हैं घर दुकान और गहने खेत छुड़ा नही पाये
रहन सहन गिर गया—किसको अपनी कथा सुनायें

लड़के वाले रेट बढ़ाते जाते—धन की आशा मे
हार गये नेता समझा कर—मानवता की भाषा में

आग लगे ऐसे दहेज को—दानवता की होली में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या—बैठ न पाई डोली में

यही हमारा मनुज रूप है—यही अहिंसा प्यारी है
लड़की वालो की गर्दन पर—चलती आज कटारी है

भीख मागना लाचारी है—इसमे क्या लाचारी है
सब कुछ तुम्हारे पास सेठ जी—फिर भी शर्म उतारी है

धनलोलुप लड़के वालो ने—कमी न छोडी बोली मे
लाखों घर बरबाद हो गये—इस दहेज की होली में

अब भी चेतो लडके वालो—अपने पुत्रों को शादी मे
तुमको भी ऐसा दुःख होगा—अपनी कन्या की शादी में

समझो यह हराम का पैसा—तुम्हे नरक ले जायेगा
अब भी सोचो, संभलो लालचखोर-पाप गले लग जायेगा

घर के घर नीलाम हो रहे—इस दहेज की बोली मे
लाखों घर बरबाद होगये—इस दहेज की होली में

॥ दुलहन ही दहेज है ॥

मन्त्री आर्यसमाज, फतेहाबाद (आगरा)

सरकार के साये में पुलिस का दमनचक्र



१ नवम्बर (हरयाणा दिवस) पर फिरोजपुर बांगर में अग्रेजी व देशी शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिए सघर्ष प्रारम्भ किया था। जब गांव के नौजवानों व माताओं बहनों ने देखा कि यदि योंही बर्बादी के षड्यन्त्र का शिकार भावी सन्तति होती रही तो वह दिन दूर नही जब हमें प्रत्येक क्षेत्र मे असफलता का मुह देखना पड़े। इसके मूल में जाकर पता लगा कि १०-१२ वर्ष के छोटे बच्चे भी जो शराब इनके बड़े पियक्कड़ों द्वारा, अद्धों, पव्वों व बोतलों में झूठी छोड दी जाती थी उनको पीछे से पीते थे तथा साथ में स्कूल के बड विद्यार्थी अपने ही घर में से अन्न व पैसे की चोरी कर पव्वों के दाम जुटाने मे लगे थे।

शराब के ठेको पर हमारा सघर्ष शान्तिपूर्ण रहा। लेकिन प्रशासन व पुलिस ने उत्तेजित व खण्डित करने का बार-बार असफल प्रयास किया। कभी लाउडस्पीकरों, गडियो, मोटर, साइकलों को अपनी गिरफ्त में लेते हैं तो कभी सत्याग्रहियों को वगैर वारण्ट के पकड कर उनको थानो व चौकियो मे प्रताडित किया जाता है। हमारे साथियों ने बार-बार पुलिस को सचेत किया कि शराब समय से आगे पीछे निकलती है इतना ही नही रात को कट्टे औचन्दी बार्डर से दिल्ली में जाते हुए पकड़वाये गये। लेकिन इसके विपरीत पुलिस ने अपना वास्तविक रूप उस समय दिखाया जब श्री सतबीरसिह व महाशय कर्ण सिह इन शराब के कट्टों की शिकायत करने खरखौदा थाने मे पहुचे तो जाते ही दोनों को हथकड़िया लगाकर अपमानित करते हुए यह कहा कि तेरी दाडी फाड कर ·· ऐसा कर दूगा। पुलिस के इस अपशब्द को मेरी कलम लिखने मे असमर्थ है। ये शब्द खरखौदा पुलिस के ए० एस० आई० गुलाटी के हैं। इनसे पहले हा एक वृद्ध चौ० रिसाल-सिह जी को जो सत्याग्रह मे प्रमुख भूमिका अदा कर रहे थे, रात को उस समय जटौला के नजदीक खरखौदा पुलिस ने आ दबोचा जब वह धरने पर से अपने गाव जा रहे थे। शरीर से अस्वस्थ व कमजोर होते हुए भी वृद्ध चौ० रिसालसिह के साथ बेरहमी से पेश आये। ४-५ दिन कारावास मे रखने के बाद जब छोड़ा गया तो उनकी दशा दयनीय थी तथा अब भी यह कहा नही जा सकता कि वह पूर्व अवस्था मे आ सकते है।

यहां दुर्भाग्य का विषय यह रहा कि जिन लोगो पर ग्राम के सुधार का भार होना चाहिए था उन्होंने ही धरने को असफल करने का पूर्ण प्रयास किया। ज्यों-ज्यों धरने की सफलता हेतु सत्याग्रह का रूप निखरता जा रहा था त्यों-त्यों सरकार, पुलिस, ठेकेदार अपनी आखिरी अमानवीयता दमनचक्र को तेज करती जा रही थी। इस बीच सरकार के नुमायन्दे एक मन्त्री महोदय ने भी अपनी सरकार की नीति को स्पष्ट करते हुए ३-४ प्रश्नों सहित कुछ कहा कि १. सरकार को इससे २०० करोड़ की सबसे ज्यादा आय होती है। इस घाटे को सरकार कभी वर्दाश्त नही कर सकती। २. लोगों को खुद शराब पीनी छोड़नी पड़ेगी तथा इसके रोकने के लिए प्रचार-प्रसार करना पड़ेगा। ३. यह आन्दोलन साल के प्रारम्भ (मार्च अप्रेल) मे होना चाहिए था। ४ पंचायत द्वारा रेजुलेशन (प्रस्ताव) अवश्य समय पर पास हो। इसी के बीच बहन कान्ता धर्मपत्नी डा० वीरेन्द्रसिह नाहरी ने खड़ा होकर कहा कि यदि सरकार लोगो के स्वास्थ्य का ध्यान न रखकर पैसा ही कमाना चाहती है तो लोगों को डकैती के लाईसैंस दे दिये जावे। तदुपरान्त मैंने कहा यदि सरकार को केवल मात्र पैसा ही कमाना है, घाटे की व्यवस्थाओ को नही रखना है तो फिर शिक्षा, पुलिस, मिलिट्री आदि तो ऐसे महकमें है जिनको तुरन्त समाप्त कर देना चाहिए। लेकिन देश से अज्ञान को मिटाने व सुरक्षा हेतु शिक्षा व सेना अत्यावश्यक हैं। जबकि शिक्षा व मिलिट्री के हेतु १० अरब रुपय प्रति वर्ष व्यय किये जाते है। सरकार लोगों के जिस्म को बर्बाद कर पैसे किसके लिए बटोर रही है। जब लोगों के मार्गदर्शक ही शराब के अड्डे खोलकर देश के आम गरीब (शोषित) व्यक्ति को समाप्त करने पर तुले हुए हों तो सामान्य जन उससे कैसे बच सकते हैं। मैंने अनेक स्थानों का उदाहरण देकर बतलाया कि जहा भी शराब के ठेके बन्द हुए वहीं सन्तोष जनक व्यवस्था बन गई। एक तरफ सरकार रेडियो, टी० वी० माध्यम से शराब विरोधी प्रचार करती है दूसरी तरफ शराब से लोगों को बर्बाद कर नाजुक स्थिति मे खड़ा कर दिया है यह दोहरी नीति (पोलिसी) क्यों? इस प्रकार मेरे कथन का कोई भी उत्तर न दे सकने पर क्रोधित अवस्था मे चले गये। इसके बाद ही यह सारा दमनचक्र प्रारम्भ हुआ।

जब मैं १६ नवम्बर को कुतबगढ बहादुरगढ, सांपला, हसनगढ़ आदि स्थानो पर धरने की बैठके लेकर खरखौदा आया तो मुझे वहीं बन्दूको के साये मे पकड लिया गया तथा अपशब्दो का प्रयोग कर हथकड़िया, बेड़िया लगाकर अपमानित किया गया। अब वारण्ट के बारे मे पूछना चाहा तो अपनी ताकत का अहसास कराने की कोशिश की। न ही वस्त्र व भोजन की कोई व्यवस्था की। यहा तक कि शौच, पेशाब, स्नान के लिए भी बेड़ियो को समय पर न खोलकर तग किया। एक बार तो ऐसा वास्तविक आभास भी हुआ कि क्या यह वही सरकार व पुलिस है जो आज से ५०-६० वर्ष पहले क्रान्तिकारियो के दमनार्थ हथकण्डो का प्रयोग करती थी। क्योंकि वे भी अत्याचार, शोषण, अन्याय के विरोध मे आवाज बुलन्द करना चाहते थे।

आज हमे फिर एक बार मजबूर होकर यह सोचना पडेगा कि क्या यह सरकार व पुलिस हमारी है। जब देश मे अत्याचार, अन्याय, शोषण, व्यभिचार, बेईमानी, अश्लीलता, अज्ञानता, अराष्ट्रीयता, पराकाष्ठा पर है तो क्या यह पुलिस, फौज देश को सुरक्षा के नाम पर अत्याचारी शोषकों को बढा नही रही? जब देश मे, चरित्र, न्याय, इन्साफ, राष्ट्रीयता ही नही तो दूसरे दुश्मनो (राष्ट्रो) से बचाव किस लिए। आज गरीब कमजोर शोषित ही पुलिस के कोप का शिकार होता है। ठीक यही बात हम आप सभी के साथ है। शराब का ठेकेदार सरकार का दल्ला (पूंजीपति) होने के कारण पुलिस से जो चाहे करवा सकता है। हम कितना भी अच्छा कार्य क्यो न कर लेकिन पैसा न होने के कारण दब जाते है। यदि इस अवस्था मे भी आर्य-समाज मे चेतना नही आती है तो इससे बढकर ऋषि दयानन्द की कमर में छुरा घोपने वाली बात और क्या हो सकती है। अब देखते है सघर्ष क्या गुल खिलाता है। अगले अक मे सघर्ष मे कार्यरत अन्य व्यक्तियो के कार्यो का दिग्दर्शन कराया जावेगा।

ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री महोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा

साधना शिविर का समापन

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। वेद-सस्थान में आयोजित सप्त-दिवसीय साधना-शिविर का समापन 10 नवम्बर को प्रातःकाल स्वस्तियाग की पूर्णाहुति के साथ होगया। इस शिविर में 35 शिविरार्थियो ने यजुर्वेद के शिवसकल्प-मन्त्रों का गहराई से चिन्तन किया। व्यक्ति और सम्पूर्ण मानव-समुदाय का विराट् मन शिवसकल्प वाली अपनी स्थिति तक प्रत्येक बिखेरे हुए टूटे मन को उठा सकता है, उठाना चाहता है। इस विराट् मन की आकांक्षा को पूरा करने से धरती की विनाश-कारी शक्तियां पराजित होगी और विनाश के साधनों पर प्रभावशाली ढगो से रोक लगाई जा सकेगी। मानवता के विनाश को रोकने के लिए आज की यह सबसे बड़ी और प्रथम आवश्यकता है

इस उपयोगी शिविर में महात्मा दयानन्द, स्वामी दयानन्द, संस्थानाध्यक्ष डा० अभयदेव शर्मा डा० व्रतीप्रसाद पचोली, माता नरेन्द्रार्या आदि के प्रवचनों के अतिरिक्त सध्या, आसन, प्राणायाम और ध्यानविधि का अभ्यास कराया गया। वेदमन्त्रो के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया गया। अगला शिविर मई 1986 में आयोजित किया जाएगा।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों को सूचना

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह मे ६ मास का कारावास भुगतने वाले सत्याग्रही अपने गिरफ्तार होने की तिथि, दण्ड के अदालती आदेश, कारावास मे रहने की अवधि और जेल से छूटने की निश्चित तिथि के सम्बन्ध मे सम्बद्ध जेलो से प्रमाणपत्र प्राप्त करके उसकी सत्यापित प्रति लिपि के साथ केन्द्रीय गृहमन्त्रालय के लोकनायक भवन (सुजानसिह पार्क, नई दिल्ली, के निकट) मे स्थित स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग मे सम्मान पेंशन पाने के लिए आवेदन कर सकते है।

भारत सरकार की ओर से जारी की गई मूल विज्ञप्ति यहा प्रकाशित की जा रही है।

No 8/32/84-FF (P)
Government of India/Bharat Sarkar
Ministry of Home Affairs/Grih Mantralaya
New Delhi-110003 the 30th Sep 1985

To

Chief Secretaries of all State
Govts./U.T. Administration, (as per list attached).

Sub.

Grant of persion from Central Revenues to freedom fighters and their families under Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme.

Sir,

I am directed to state that certain proposals b sed on the recommendations of the Non-Official Advisory Committee at the Central level have been under consideration of the Government for some time The Government have taken the following decisions in respect of the Freedom fighter's Pensions Scheem, 1972 now renamed as Swatantra Sainik Samman Pension Scheme

i) Arya Samaj Movement of 1938-39 which took place in the former Hyderabad State has been recognised as part of the freedom strggule for the purpose of Samman Pension under the liberalised pension scheme effective from 1-8-80

ii) The quantum of monthly pension admissible to freedom fighters and the widows of the deceased freedom fighters has been raised to Rs. 500 p.m. with effect from 1st June, 1985. The enhanced rates of pension of Rs. 500 p m. will also be admissible to the widows of the deceased freedom fighters. The unmarrid daughters of the widows who have been sanctioned family persion under the scheme will now not be entiled for additional pension of Rs. 50. Separate general instructions are being issued to all the Accountants General to revise the Pension payment Orders in pursuance of this decision.

2. The Government have also considered the under mentioned proposals but have not accepted them for the purpose of pension under Swatatrata Sainik Samman Persion Scheme :

i) Award of Tamsapatras to the legal heirs mortyrs/deceosed freedom fighters.

ii) Grant of pension to such ex-INA personnel (from civilian side) who are in receipt of State pension in relaxation of the existing provisions.

iii) The question of recognition of :

(a) Cochin Polic Strike-1942-Kerala.

(b) Kerivellur Struggle- Kerala.

3. The State Gsveanments are requested to bear in mind the above decisions of the Governmet while verfying the claims of applicants for Samman Pension under Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme.

Yours faithfully,
Sd/-
(K.N. Singh)
Under Secretary to the Govt. of India

C. for information to :

1. All the Branch Officers and Processing Sections of the freedom fighters Division.
2. DS (FF)/PS to JS (F)/PS to Dir (FF)
3. Cabine Secretariat (Sh H.R. Goel Dy. Secy with ref. to his letter No. 27/CM/85 (1) dt 11/9/85.

(K N. Singh)
Under Secy. to the Govt. of India

शंका-समाधान—

क्या ईश्वर में ईच्छा है ?

श्री प० वुद्धराम आर्य गुरुकुल झज्जर (रोहतक) तथा श्री करतार सिंह रुदडोल (भिवानी) के दो पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माध्यम से प्राप्त हुए। जिन में लिखा है कि क्या ईश्वर में इच्छा है ? यदि नहीं तो महर्षि दयानन्द ने महाप्रयाण के समय यह क्यों कहा कि ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो।

ईश्वर में इच्छा विषयक एक समाधान महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इन शब्दों में लिखा है—"(प्र०) ईश्वर में इच्छा है वा नही (उ०) वैसी अच्छी नही, क्योंकि इच्छा भी अप्राप्त, उत्तम और जिसकी प्राप्ति से सुख विशेष होवे, उसकी होती है। इसलिए ईश्वर को यदि कोई पदार्थ अप्राप्त, उससे उत्तम वा विशेष सुख देने वाला हो तो ईश्वर में इच्छा हो सके। न कोई उसे अप्राप्त पदार्थ न कोई उससे उत्तम और पूर्ण सुख युक्त होने से सुख की अभिलाषा भी नही किन्तु ईक्षण अर्थात् सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का करना कहाता है, वह ईक्षण है।" (सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

महर्षि के इस लेख से स्पष्ट है कि जैसी इच्छा मनुष्य आदि प्राणियों मे अप्राप्त को प्राप्त करने आदि की होती, है वैसी इच्छा ईश्वर में नही है। प्राणियों के कल्याण के लिए सृष्टि रचना आदि की कामना उसमें अवश्य है। उसे शास्त्रीय भाषा मे ईक्षण कहा जाता है। ईक्षण का शाब्दिक अर्थ देखना है, वह भी बिना कामना के सम्भव नही "नाकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित्।" महर्षि के निम्न प्रकरण इस विषय में देखने चाहिए—

१- जो सबका रक्षक जैसे पिता अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर उनकी उन्नति चाहता है, उससे उसका नाम पिता है।

२- धार्मिकों को जिताने की इच्छायुक्त है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम देव है।

३- यः कामयते काम्यते वा स देवः।

जिसके सब सत्य काम और जिसकी प्राप्ति की कामना सब शिष्ट करते हैं ... इसलिए उस परमेश्वर का नाम देव है।

(सत्यार्थप्रकाश प्रथम समु०)

योगी लोग ईश्वर प्रणिधान अर्थात् ईश्वर को समर्पण पूर्वक सब कार्य करते हैं। इसे महर्षि पतजलि ने भक्तिविशेष कहा है। ईश्वर प्रणिधान की भावना से "ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो" ये महर्षि के वचन उपयुक्त ही हैं।

आशा है मेरे इस लेख से भाई बुद्धराम तथा करतारसिंह को सिद्धान्त के द्वार तक पहुंचने में अवश्य सहायता मिलेगी।

१९-११-८५

सेवक
सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)

गुरुकुल प्रेमी आर्य भाई, बहनो !

आपको ज्ञात ही है कि गत २७ वर्षों से जगत्प्रसिद्ध परिव्राजक-शिरोमणि स्वामी ओमानन्द जी महाराज के तप त्याग एवं कठिन परिश्रम से नरेला में आर्ष पाठविधि का कन्या गुरुकुल चल रहा है। जिसे तप.पूता स्वनामधन्या माननीया आचार्या सुमित्रा जो उन्नति की ओर अग्रसर करने के लिए कृतप्रयत्ना हैं जो कि इस आर्ष कन्या गुरुकुल में सन् १६६० मे पठनार्थ प्रविष्ट हुई। उस समय उनकी अवस्था ११ वर्ष की थी। इस प्रकार निरन्तर कक्षा में सर्वप्रथम श्रेणी से अध्ययन करती हुई सन् ६६ में विद्याव्रतस्नातिका बनी । एक वर्ष तक स्नातिका पद पर कार्य करने के पश्चात् सन् ७० मे उन पर आचार्या पद का गुरुतर भार सौंपा गया, तब से लेकर अब तक सुश्री सुमित्रा आत्मसाधनापरायणा, समर्पितभावा, विदुषी वात्सल्यमूर्ति देवी निष्ठा एवं पूर्ण मनोयोग से गुरुकुल को उन्नति के उच्च शिखर पर आरूढ करने के लिए कृतसंकल्पा हैं। गुरुकुल दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति कर रहा है लेकिन अफसोस इस बात का है कि गत वर्ष से कुछ गुरुकुलविरोधीतत्त्व अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए आचार्या बहिन जी को हटाकर अपनी मनमानी करना चाहते है। जिनमें एक षड्यन्त्र यह भी है कि बहिन जी तथा गुरुकुल के विरोध में विज्ञापन छपवाकर जहां तहा भेजना जिससे कि आर्यजनता में बहिन जी के प्रति दुर्भावनाए फैलें तथा जनता भी बहिन जी को हटाने के लिए आग्रह करे। ऐसी देवता आचार्या बहिन जी ने अपने माता, पिता की इकलौती सन्तान होते हुए भी सामाजिक जीवन से अलग होकर अपना जीवन अर्पित करके कन्या गुरुकुल की उन्नति एव प्रगति की है व करने मे सलग्न हैं। इससे गुरुकुल की प्रबन्ध कारिणी समिति बहुत सन्तुष्ट है तथा बहिन जी के स्वास्थ्य एव दीर्घायु की मगल कामना करती है।

इस बार स्नातिकाओं के नाम से पत्र लिखवाकर कन्या गुरुकुल नरेला की अ ग्रेजी मे मोहर लगवाई जबकि गुरुकुल मे अग्रेजी की मोहर है ही नही। कन्या गुरुकुल की हम सभी स्नातिकाए आचार्या बहिन सुमित्रा जी के आचार्यत्व से सर्वथा सन्तुष्ट है । यह पोस्टर सर्वथा नकली और जाली है। पोस्टर में लिखे सभी आरोप मिथ्या है। विशेष जानकारी हेतु यहा आकर मिलें।

आपकी बहन कन्या गुरुकुल की सभी स्नातिकाए

स्व० नवाबसिंह जी के परिवार सहायतार्थ दान

सर्वहितकारी दिनाक २१-१०-८५ गताक का योग —७१५७-००

१- महात्मा वेदमुनि (ला० लालमण आर्य) ग्राम टटेसर जौन्ती (दिल्ली) —५१-००

२- स्वामी जीवनानन्द जी आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक —१००-०० (२५ रु० मासिक अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी ८६ तक)

३- श्री रामप्रताप आर्य सुपुत्र श्री मनफूल गाव डूमरखा कला तह० नरवाना जिला जीन्द —२७१-००

४- ला० छबीलदास आर्य, मै/-मातराम छबीलदास अनाजमण्डी जीन्द —१०१-००

५- श्री सोमदेव आर्य मन्त्री आर्यसमाज हाउसिंग कालोनी म० न० ४६० सैक्टर २२ फरीदाबाद। —५१-००

६- श्रीमती सौभाग्यवती आर्या द्वारा श्री सत्यपाल आर्य १५६/१५ जैकमपुरा गुड़गाव। —११०-००

योग—७७४१-००

दान दाताओं का सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद तथा जिन आर्य महानुभावों तथा आर्यसमाजों ने अभी तक इस सहायता यज्ञ में आहुति नही डाली है, उनसे निवेदन है कि वे मनीआर्डर द्वारा अपना दान भेज कर यश के भागी बनें।

—सभा मन्त्री

गुरुकुल वेदविद्यालय का छात्र सर्वप्रथम

दिल्ली विश्वविद्यालय में १६-११-८५ को अखिल भारतीय स्नातकोत्तर स्तर पर आयोजित "चतुर्दशीय इन्द्र विद्यावाचस्पति सद्योवाक् प्रतियोगिता" में गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर दिल्ली के स्नातक कृष्णचन्द्र शास्त्री ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्कृत में समायोजित इस प्रतियोगिता में केवल मात्र आधा घण्टा पहले विषय प्रदान किये गये थे। विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा विद्यापीठों से आये हुए प्रत्येक प्रतियोगी को अलग-अलग विषय दिये गये थे । इस छात्र का विषय था "सर्वासामुपलब्धीनां निकष लोकमङ्गलम्" अर्थात् समस्त उपलब्धियों का सार है, जनकल्याण करना। इस को पुरस्कार-रूपेण प्रमाण-पत्र सहित 200 रुपये भी प्राप्त हुए। इस समय यह छात्र दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु उज्जैन जा रहा है।

आचार्य हरिदेव

बृहद्यज्ञपद्धति

श्रीयुत सत्यदेव शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज, सोनीपत नगर का २१ अक्तूबर १६८५ के सर्वहितकारी मे प्रकाशित "संस्कार-विधि मे लिखित महर्षि दयानन्द सम्मत बृहद्यज्ञपद्धति' विषयक लेख को पढने के पश्चात् मै इस परिणाम पर पहुंचा हू कि शास्त्री जी ने अपनी कल्पित बृहद्यज्ञपद्धति को महर्षि दयानन्द सम्मत सिद्ध करने का असफल प्रयास किया है।

आर्यसमाज मे प्रचलित बृहद्यज्ञपद्धति की वास्तविकता यह है कि महर्षि ने तो सोलह संस्कारों में उपयोग के लिए सामान्य प्रकरण लिखा है। जिससे वह प्रत्येक संस्कार मे बार-बार न लिखना पडे। उसी सामान्य प्रकरण को आर्यसमाज ने बृहद्यज्ञपद्धति के रूप मे अपना लिया है। इसके अतिरिक्त महर्षि ने पञ्चमहायज्ञ विधि तथा संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण मे दैनिक यज्ञ की विधि का पृथक् से विधान किया है। संस्कार विधि के ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना,स्वस्ति वाचन, शान्तिकरण और सामान्य प्रकरण को लेकर आर्यसमाज मे बृहद्यज्ञपद्धति की परम्परा चालू है अतः जिस रूप मे महर्षि ने उसे संस्कार विधि मे लिखा है उसी रूप मे व्यवहार करने मे एकरूपता बनी रह सकती है। मैने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रकाशित "वैदिक उपासना पद्धति" मे इसी सिद्धान्त का पालन किया है और उसके प्राक्कथन मे महर्षि की यज्ञ-पद्धति का सप्रमाण उल्लेख किया है। शास्त्री जी से मेरा नम्र निवेदन है कि कृपया यज्ञपद्धति के विषय मे जो भी लिखें वह महर्षि के प्रमाणों सहित लिखने का कष्ट करें, महर्षि के प्रमाणो के अभाव मे लिखित सम्पूर्ण यज्ञ-पद्धति विचाराधीन ही कही जा सकती है।

—सुदर्शनदेव आचार्य, सभा उपमन्त्री

अमूल्य हीरा हरिकिशनसिंह मलिक

दिल्ली के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एव कर्मठ तथा निष्ठावान् आर्य समाजी श्री हरिकिशनसिंह मलिक की निर्मम एव जघन्य हत्या पर हरयाणा प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे रविवार दि० १०-११-८५ को प्रात.काल आर्यसमाज दीवान हाल मे एक शोक सभा का आयोजन किया गया। आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी ओमानन्द जी ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्हे आर्यजगत् का एक ऐसा हीरा बताया जिसका मूल्य आका नही जा सकता। आ० प्रा० प्र० सभा के सहमन्त्री श्री मामचन्द रिवारिया ने निष्ठावान्, प्रचार से विमुक्त, सादगी पसन्द तथा कर्मठ आर्य बताया। आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश जी ने भी उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनके गुणो को प्रशसा की। अन्त मे सभाध्यक्ष प्रो० शेरसिह ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए बताया कि वे घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश पहुचाना चाहते थे।

इस सभा मे सुझाव दिया गया कि उनकी सम्पत्ति का जनता के हित में प्रयोग हो और सरकार से माग की गई कि इस नृशंस हत्या की गुप्तचर विभाग द्वारा जांच कराकर अपराधियों को दडित किया जाये।

यजुर्वेद मन्त्र कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता

हरयाणा प्रदेश में वेद-मन्त्र कण्ठस्थीकरण की लुप्तप्राय परम्परा को फिर से जीवित करने और उस मे विशेष रुचि पैदा करने के लिए विश्व सस्कृत प्रतिष्ठानम् हरयाणा की ओर से एक यजुर्वेद मन्त्र कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता २९-१२-८५ रविवार के दिन डी० ए० वी०- कालिज, यमुनानगर सभाभवन मे सम्पन्न होगी। उस के सम्बन्ध मे निम्नलिखित की ओर आपका ध्यान दिलाना आवश्यक है :—

१. प्रतियोगिता मे वेदमन्त्र उच्चारण मे एकश्रुति, शुद्ध उच्चारण और निर्बाधगति बस इतना ही अपेक्षित है।

२. यह प्रतियोगिता हरयाणा वासियो के लिए ही है, दूसरो के लिए नही।

३. यजुर्वेद के किन्ही पाच अध्ययो को कण्ठस्थ कर के सफल प्रथम दस प्रतियोगी पुरस्कृत होगे। उन्हे प्रति पुरस्कार दो सौ रुपये और मार्गव्यय मिलेगा।

इसके अतिरिक्त दो अध्यायों मात्र को कण्ठस्थ करके सफल पाच प्रथम महिला प्रतियोगी भी पुरस्कृत होगे। प्रत्येक पुरस्कार डेढ सौ रुपये का मार्ग व्ययसहित होगा।

४. प्रतियोगी अपना नाम प्रविष्ट कराने के लिए २९-१२-८५ रविवार प्रातः ६ बजे, डी०ए०वी० कालिज, यमुनानगर मे पहुचकर सूचित करे और अपने आचार्य से परिचय पत्र लाकर उपस्थित करे।

५. सस्कृत विद्यालय/गुरुकुल/ स० सस्थाओं के प्राचार्य कृपया अपने-अपने प्रतियोगियो के नाम २५-१२-८५ तक नीचे लिखे पते पर भेजे।

६. २७-१२-८५ तक पूर्व सूचना देकर आनेवाले प्रतियोगियो के आवास और भोजन की व्यवस्था कर दी जाएगी।

७. प्रतियोगिता समारोह का कार्यक्रम २९-१२-८६ को प्रातः दस बजे से १-३० बजे मध्यान्ह तक होगा। तदनन्तर सहभोज और फिर विसर्जन हो जाएगा।

८- सभी प्रतियोगियो को प्रशसापत्रों से अभिनन्दित किया जाएगा।

९. यगुर्वेद के विशिष्ट विद्वानो का अभिनन्दन किया जाएगा।

१०. सस्कृत के वृत्तपत्र/पत्रिकाओ की प्रदर्शनी की जाएगी।

इस अपूर्व समारोह मे आपका उदार सहयोग अपेक्षित है। आप स्वभाव से वेदपरम्परा के अनुरागी हे अतः प्रतियोगिता के लिए अपने छात्र/अध्यापक तथा अन्यो को प्रेरणा देकर कृपा करे। आप के सुझाव हमारे मार्ग दर्शक बनेगे।

सत्यदेव वर्मा, प्रधान
विश्व सस्कृत प्रतिष्ठानम्
(हरयाणा प्रदेश)
माडल टाउन, यमुनानगर

शराब व फिल्म के कारण

मेरठ, 22 नवम्बर (वार्ता)। यहा कल प्रभातनगर मे अपनी ससुराल वालो के घर को आग लगाकर अपनी पत्नी, पुत्री साले और सालियो आदि सात व्यक्तियो को जिन्दा जलाकर मारनेवाले युवक सतीश ने गिरफ्तारी के बाद अपना अपराध कबूल कर लिया है।

उसने पुलिस को बताया कि वह आजकल निलबित है। अतः उसने मवाना से 280 रुपये निर्वहन भत्ता लिया और मेरठ आकर खूब अग्रेजी शराब पी तथा मारधाड़ से भरपूर फिल्म 'मर्द' देखी। फिल्म देखने के बाद वह किराये की साईकल पर मिट्टी का तेल और पैट्रोल लेकर प्रभातनगर अपने ससुराल गया और उसे खिडकी से अन्दर फेककर आग लगा दी तथा दरवाजो को बाहर से कुण्डे लगा दिए।

पुलिस ने इस जघन्य अपराध मे सतीश को सहयोग देने के सिलसिले मे जयभगवान् नामक युवक को भी गिरफ्तार कर लिया है।

सतीश का कहना है कि वह अपनी ससुराल वालो से नाराज जरूर था लेकिन वह उन्हे जीवित जलाकर मारना कदापि नही चाहता था। उसने जीवन मे पहली बार अग्रेजी शराब पी थी, फिर विध्वंसक फिल्म देखी। सभवतः इन्ही दोनो के कारण उसने इतना जघन्य अपराध कर डाला। (दैनिक ट्रिब्यून 23-11-85)

आर्य जाति की गलत परिभाषा दी गई है : —श्रीधर

यमुनानगर, 22 नवम्बर (सहगल) : वैदिक सरस्वती शोध अभियान के नेता एव सुप्रसिद्ध इतिहासकार डाक्टर विष्णु श्रीधर वाकनकार ने आज यहा यमुनानगर-जगाधरी के बुद्धिजीवियों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि विदेशी इतिहासकारों ने आर्य जाति की गलत परिभाषाए देकर उनके स्वाभिमान तथा शास्त्र पर सदैव के लिए चोट की है। शोध कार्य करके आर्यों की वास्तविक पहचान, रहन-सहन, रीति-रिवाजों व उनकी नैतिकता को पुनः उजागर करना होगा। उन्होंने कहा कि यह कहना कि आर्य विदेशों से भारत में आये गलत है। वास्तव मे भारत 'आर्यों' का 'ध्रुवी केन्द्र' है। वैदिक आर्य और हड़प्पा व मोहनजोदड़ों एक ही चीज है। उन्होंने दावा किया कि ऋग्वेद में हड़प्पा व मोहनजोदड़ो का स्पष्ट उल्लेख है। उन्होंने यह भी दावा किया है कि 22 लाख वर्ष पूर्व भारत उत्थान की चरमसीमा पर रहा था। डेढ करोड़ वर्ष पूर्व भी भारत उत्थान की चरमसीमाओं पर रहा।

डाक्टर वाकनकार का कहना है कि महर्षि विश्वामित्र, महर्षि मारकंडेय, महर्षि व्यास जी तथा अन्य ऋषि-मुनि सरस्वती नदी के क्षेत्र के आस-पास अपना उपासनास्थल रखे हुए थे। उन्होने कहा कि विदेशी इतिहासकारों ने अब सरस्वती नदी के महत्त्व को समझना शुरू कर दिया है, या कुछेक इतिहासकार अपना मत दे चुके हैं।

डाक्टर वाकनकार का मत है कि 'सरस्वती' शैवालिक की उत्तरी पहाडियो से निकली थी और प्रारम्भ मे इसका फैलाव चौडाई में आठ किलोमीटर था, जो कि ससार मे सबसे चौड़ी नदी रही।

डाक्टर विष्णु श्रीधर वाकनकार जिनके साथ इस शोध कार्य में टीम के रूप में बीस अन्य विद्वान् भी कार्य कर रहे है, ने पत्रकारों को बताया कि शीघ्र ही इस पर एक खुला सैमीनार बुलाया जाएगा जिसमें विश्वभर से इतिहासकार बुलाए जाएगे ताकि वे प्राचीन वास्तविकता को जान सके। (पंजाब केसरी जालन्धर 23/11/85 से)

शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करने वाले दान दाताओं की सूची

1- आर्यसमाज नीलो खेडी जि० करनाल	51-00
2- श्री बलदेव कृष्ण आर्य मुलतान ट्रेडर जी० टी० मार्ग करनाल	21 00
3- 11 वेद प्रकाश जी आर्य करनाल	20-00
4- डा० यज्ञदत्त प्रेमस्वरूप करनाल	25-00
5- ,, आत्मप्रकाश सुखीजा करनाल	05-00
6- आर० डो० आर्य कन्या हाई स्कूल होली मोहल्ला करनाल	21-00
7- श्री ज्ञानस्वरूप आर्य गुड़मण्डी करनाल	10-00
8- मे० स्वदेशी आयरन एण्ड ट्रंक स्टोर करनाल	51-00
9- श्री लालचन्द वरमानी करनाल	05-00
10- ,, बलदेव सहाय न्यू चार चमन करनाल	20-00
11- ,, केवल कृष्ण काठपालिया करनाल	11-00
12- ,, लोकनाथ जी आर्य दयालपुरा करनाल	11-00
13- ,, डा० जगदयाल जी आर्य रामनगर करनाल	21-00
14- ,, आर्यसमाज रामनगर करनाल	25-00
15- ,, नारायणदास करनाल	10-00
16- माता सीता देवी आर्या रामनगर करनाल	10-00
17- श्री ला० ठाकुरदास जी आर्य रामनगर करनाल	10-00
18- ,, पृथ्वीराज सुभाषचन्द्र आर्य घरोण्डा करनाल	101-00
19- ,, ,, ज्ञानचन्द आर्य अनाज मण्डी घरोण्डा करनाल	51-00
20- श्री डा० सत्यपाल जी आर्य अनाज मण्डी घरोंडा करनाल	21-00
21- ,, पुरुषोत्तम लाल आर्य घरोंडा करनाल	21-00
कुल योग	521-00

उपरोक्त राशि पं० चन्द्रसेन जी द्वारा एकत्रित की गई है। सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद। आशा है दानी महानुभाव हरयाणा में शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए दान भेजकर सहयोग प्रदान करेंगे। रामकृष्ण सभा कोषाध्यक्ष

हरयाणा के वीर सैनिकों के बलिदान

लेखक—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

१. अंग्रेजी राज्य में भी अनेक युद्ध हुए जिनमें भारत के वीरों ने खूब बढ़कर भाग लिया और अपनी वीरता के जौहर दिखाये इसी वीरता के कारण हरयाणा के वीर सैनिकों को अंग्रेजों ने अपने वीरता सूचक बडे पुरस्कार मैडल (तमगे) प्रदान किये। उनका सबसे बड़ा मैडल विक्टोरिया क्रास (VICTORIA CROSS) था। उसको प्राप्त करने वाले भी हरयाणा के अनेक वीर थे। रिसलदार बदलूसिंह २३ सितम्बर सन् १९१८ ईस्वी को जौडन नदी के पश्चिम किनारे पर शत्रुओं के साथ वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। मरने से पूर्व सबसे बड़ी सन्तोष की बात यह हुई कि अपनी आंखों से उन्होंने अपने शत्रु को पूर्णतया पराजित होते देख लिया। यह सर्वोत्तम प्रकार का शूरवीर योद्धा था। मृत्यु का भय इसको नाममात्र भी नही था।

२. होलदार उमरावसिंह तोपखाने का वीर सैनिक था। यह जापानियो के साथ ब्रह्मा में युद्ध करते हुए १५ दिसम्बर १९४४ को वीरगति को प्राप्त हुआ। जापान की दो कम्पनियों का इसने डटकर युद्ध में वीरता से सामना किया और उनको रोके रखा। जब इसका गोला बारूद खत्म होगया तो जापानियों से इसने मुष्टा-मुष्टि (हाथों-हाथ) वीरतापूर्वक युद्ध किया। युद्ध समाप्ति पर यह अपनी मशीनगन के पास अत्यन्त थका हुआ पाया गया। इसके शरीर पर सात बड़े-बड़े जख्म थे और इसके आस-पास दश जापानी सैनिकों के मृतक शरीर पाये गये अर्थात् वे इसी के द्वारा मारे गये। यह वीर हरयाणे के प्रसिद्ध जिला रोहतक की झज्जर तहसील के पलडा ग्राम का रहने वाला था।

CHM छेलूराम का जन्म जिला भिवानी में ग्राम दिनोद में १० मई १९०५ में हुआ था। इसके पूज्य पिता का नाम जयराम था। यह अपनी टोमीगन के साथ अपने बड़े अफसर की सहायता के लिए युद्ध में आगे बढा। इसने तीन चार शत्रुओं को समाप्त कर डाला और शत्रु का आगे बढ़ना रोक दिया। अपने कम्पनी कमाण्डर की सहायता करते हुए यह भी बुरी तरह से जख्मी होगया। युद्ध के समय अपने सैनिकों को उत्साहित करने के लिए निरन्तर इसके मुख से बड़ी ऊँची ध्वनि में निरन्तर यही शब्द गुजरते रहे—जाट वीरो आगे बढ़ो, मुसलमान वीरो आगे बढ़ो इस प्रकार युद्ध में लडते हुए शत्रुओं को पीछे भगा दिया। शत्रुओं से इनकी हाथों हाथ भी लड़ाइयां हुईं। ये ईट पत्थरों से लडे और बन्दूकों के बट और बेनोट से भी लड़े CHM छेलूराम बुरी तरह जख्मी होगये किन्तु पीछे हटने का नाम नही लिया और अपने वीर सैनिकों को लड़ने के लिए उत्साहित करते रहे। जब तक वे बेहोश न हुए। कुछ मिनट के पीछे वे वीरगति को प्राप्त हुए। इनके साथी वीर सैनिक आज भी इनकी वीरता और धैर्य की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते है। फलस्वरूप इनको विक्टोरिया क्रास का पुरस्कार मिला।

४. सूबेदार रामस्वरूप सिंह का जन्म १२ अप्रैल १९१९ को श्री जोरावरसिंह के घर में ग्राम खेड़ी तलवाणा जिला महेन्द्रगढ में हुआ। जापानियो के विरुद्ध ब्रह्मा में इन्होंने डटकर युद्ध किया। इन्होंने शत्रु को बुरी तरह हराकर भगा दिया। पुन: जापानियो ने दूसरी बार आक्रमण किया। सूबेदार रामस्वरूप बुरी तरह जख्मी था फिर वह अपने सैनिकों के साथ उन्हे उत्साहित करने के लिए युद्ध क्षेत्र मे पहुंच गया। पुन. मशीनगन की गोली से बुरी तरह जख्मी होगया। इसी के कारण वह वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके सैनिक भी उसकी वीरता धैर्य और प्रसन्नवदनता की मुक्तकण्ठ से प्रशसा करते है।

५. सूबेदार रिछपालराम। इसका जन्म जिला महेन्द्रगढ मे बारड़ा ग्राम में हुआ था। इसके पिता का नाम मोहरसिंह था। इसने दो दिन के युद्धों मे अर्थात् ६ फरवरी और १२ फरवरी को बड़ी वीरता दिखायी। १२ फरवरी के युद्ध में वीरतापूर्वक लडता हुआ वह बुरी तरह घायल होगया किन्तु उसने अपने घावों की कोई चिन्ता नही की। वह वीर सैनिकों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करता रहा। उसके अन्तिम शब्द यही थे हम अवश्य ही विजयी होंगे। उसने प्रशसनीय वीरता और धैर्य का परिचय देते हुए वीरगति प्राप्त की। इसी प्रकार अंग्रेजी सेना में भारत के हजारों वीर सैनिकों ने अपने प्राणों की बलि देकर अपनी वीरभूमि भारत माता का शिर ऊँचा किया। इनके विषय में समय मिलने पर विस्तार से लिखूगा।

तीनमूर्ति भवन में महर्षि दयानन्द

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर नेहरू स्मारक सग्रहालय ने काग्रेस और स्वाधीनता आन्दोलन 1885 से 1947 तक प्रदर्शनी तीनमूर्ति भवन मे आयोजित की है।

इस प्रदर्शनी मे उन सभी महान् नेताओ के चित्र है जिन्होने भारत के पुनर्जागरण मे योगदान दिया। इसी कारण इस प्रदर्शनी का एक प्रमुख भाग वह समय होगया है जो काग्रेस के जन्म से पहले का है। काग्रेस के जन्म से पूर्व जिन महान् नेताओ ने स्वाधीनता के लिए आधार तैयार किया, उनके चित्र भी इस प्रदर्शनी मे सम्मिलित किये गये है। इन महान् समाज सुधारकों मे पाच नाम विशेषत: उल्लेखनीय हैं—राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, एम० जी० रानाडे, केशवचन्द्र सेन। इसी अन्तराल के राजाओ में निम्न नाम उल्लेखनीय है—महारानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, बहादुरशाह जफर और आदिवासी बिरसामुण्डा।

इसके बाद इस प्रदर्शनी में काग्रेस के अध्यक्षों तथा अन्य नेताओं के चित्र है। वह चित्र जिनका सबध आर्यसमाज से है—लाला लाजपतराय का है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि अनेक नेता जिन्होंने देश के स्वाधीनता सग्राम मे भाग लिया और जो आर्यसमाज से सम्बद्ध हैं, उनके चित्र इस प्रदर्शनी मे अवश्य होने चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द का नाम ऐसा है, जिसे महात्मा गांधी की ओर से भी मान्यता मिली थी तथा जिसके जीवन से सम्बन्धित दिल्ली के घण्टाघर चौक की घटना इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। जब इस वीर योद्धा ने अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी। इस प्रकार की घटनाओं के चित्र विशेष रूप से इस प्रदर्शनी में रखे जाने चाहियें।

धर्मपाल आर्य
महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्राच्य विद्या सम्मेलन

अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद् के ३२ वे अहमदाबाद अधिवेशन में आर्यजगत् के अनेक गणमान्य विद्वान् सम्मिलित हुए और उन्होने अपने शोध पत्र विभिन्न विद्वद् गोष्ठियों में पढे। सर्व श्री युधिष्ठिर मीमासक, डा० सुधीर कुमार गुप्त, डा० भवानीलाल भारतीय, डा० यज्ञवीर (म० द० वि० विद्यालय रोहतक) डा० जयदत्त शास्त्री (अल्मोडा वि० विद्यालय/ तथा डा० वेदपाल वर्णी के नाम उल्लेखनीय है। आर्यसमाज काकरिया अहमदाबाद के उपप्रधान सेठ रामेश्वर लाल लाहोरी ने आर्य विद्वानो को स्वगृह पर भोजनार्थ आमन्त्रित कर उनका सत्कार किया। —सवाददाता

शराब के अवगुण से दुखी महिला की कहानी

सुधा छोड़कर सुरा अपनाई नशे में सारी रात गवाई
रोजाना वारहरिशा चढता नंगे भूखे बालक ठुठुराते रोते रोते
नगरवधूका मान बढ़ाकर रात रात भर घर नहीं आते
दया प्रेम का गला दबाकर मूरा चढाकर सुध बिसराई
तनिक लाज नही आई सजना शराब लील गई अनुपम कंगना
अब क्या मेरा लहू पियोगे अथवा कुए मे जाय मरोगे
क्यों बनते इतने हरजाई अरमानों की चिता दिखाई
कहां से अब मैं कमाऊ पंसा अथवा बोतल में बिक जाऊ
इस शराब की खातिर बलमा मैंने दो दो लाल गंवाये
आसू पीकर बालक सोगये तैने सो सो जाल बिछाये
ऐसी भी क्या बेशरमाई घर मे अपने आग लगाई

बुद्धि नाशिनी शराब

सुरा होती है गलत इसको मत पीजिये,
इसके पीने से स्थिति खराब होती है।
आप पीते हैं इसे न पीती है ये आपको,
उलटी आदत वाली ये शराब होती है।
इसके पीने से बेकार होता है धन,
बन के ऊंट हो ऐसे भागता है मन।
इसके पीने से परिवार भूखों मरे,
बहुत खर्चीली ये बेहिसाब होती है।
मान सम्मान में फर्क डालती,
और असाध्य रोगों को है पालती।
बेहयाई खुराफात पैदा करे,
ये भयंकर जहर बस जनाव होती है।
जो इसी के नशे में मस्त रहते,
सदा भ्रष्ट बुद्धि होती कष्ट सहते सदा।
जड़ तबाही की है सत्य कहता हू मैं
मत पियो ये बहुत ही खराब होती है।

भजन गो-महिमा

(स्व० वैद्य मगलदेव आर्य)

टेक—धरती माता जननी माता तीजी मात गऊ हो सै
सब पशुओं में गुणकारी और चेतन जात गऊ हो सै

गऊ अकेली जगल में बच्छे से कितना प्यार करै
भेडा भालु शेर यदि कोई बच्छे पै प्रहार करै
प्रवाह नहीं प्राणो की गऊ सींगों से संहार करै
अपने मालिक और पाली बिन बिल्कुल ना इतबार करै
बैल कमाऊ प्यार करै, और अगला हाथ गऊ हो सै ॥१॥

जंगल झील बणी खेतों मे पाली गऊ चरावै सै
यदि किसी के साथ अचानक जो झगडा हो जावै सै
पीली गौरी धौली लाखी न्यू दे कै बोल बुलावै सै
सारी गऊ चोगरदै फिरज्या सिगा ऊपर ठावै सै
पाली नै छुटवावै सै, इसी रक्षक तात गऊ हो सै ॥२॥

प्यार करै जो गऊ माता से गऊ कैसी दरवेश नहीं
भागे दौडे गात बचाकै लागण दे कोई ठेस नही
यदि ओपरा धमकावैगा ओटे जरा आवेश नही
सीगा लाता मारै बुड़का भरणा राखै शेष नही
इस में कोई अन्देश नही, सारे दाव घात गऊ हो सै ॥३॥

"मंगल वैद्य "गऊ माता का जब तक आदर मान रहा
सोने की चिड़िया और पारस आर्यावर्त महान् रहा
दूध दही घी गउओ का यहां बहता नदी समान रहा
भारत के तुल्य किसी मुल्क में ना योद्धा विद्वान् रहा
सर्वगुणो की खान रही, सारी करामात गऊ ही सै ॥४॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



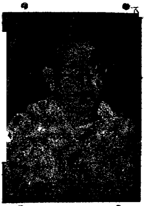
ओ३म् कृण्वन्तो

सर्वहितकारी

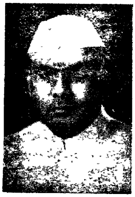
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३ अङ्क ३ ७ दिसम्बर १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे



हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए अपील



स्वामी ओमानन्द जी

प्रो० शेरसिंह

आपको भलि-भान्ति ज्ञात ही है कि राजीव लोंगोवाल समझौते में हरयाणा के हितों की उपेक्षा की गई है और इससे पूर्व भी हरयाणा के साथ सदा अन्याय होता रहा है जबकि हरयाणावासी शान्तिप्रिय, राष्ट्रवादी एवं राष्ट्र की अखण्डता की रक्षा के लिए सदा अग्रसर रहे हैं। हरयाणा के वीर सैनिकों ने प्रत्येक युद्ध में अपने देश की रक्षा हेतु अपनी वीरता के कीर्तिमान स्थापित किये तथा बड़े बड़े बलिदान दिये हैं। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र मे भी राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में मुख्य भूमिका निभाई है, परन्तु अकालियो ने धर्म के नाम पर हिंसक मार्ग अपनाकर हरयाणा के हितों को हानि पहुंचाने में कोई कसर नहीं उठा रखी। जबकि हरयाणा तथा पंजाब दोनों सगे भाई समान हे। आज से 20 वर्ष पूर्व दोनों एक ही प्रदेश के वासी थे। परन्तु अकालियो की साम्प्रदायिक भावना ने भाई-चारे को कड़ी को तोड़ने का पूरा यत्न किया है। जब-जब भी अकालियों के साथ भारत सरकार ने कोई समझौता किया है तब तब ही हरयाणा के हितों की सदा उपेक्षा तथा अन्याय हुआ है और अकाली सदैव अपने किये हुए समझौते से मुकरते रहे हैं। अब भी पूर्ववत् राजीव लोंगोवाल समझौते को तारपीडो करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की धमकियां दी जा रही हैं और इस समझौते के अनुसार मैथ्यू आयोग के कार्य में अनुचित रुकावटें व बाधाएं डाली जा रही हैं, ताकि हरयाणा को न्याय न मिल सके।

इन परिस्थितियों में हरयाणा महान् संकट से गुजर रहा है। अब भी यदि हरयाणा की जनता अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट नहीं हुई तो सदा के लिए भावी पीढी को भी इसके दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

हरयाणा के हितों के लिए लड़ने का दायित्व हरयाणा सरकार का था, परन्तु वह इसकी उपेक्षा करती रही है। उसे हरयाणा के हितों की यथोचित चिन्ता नही है।

इन परिस्थितियों में हरयाणा वासियों का दायित्व और भी बढ़ जाता है। अतः हम हरयाणा के प्रत्येक भाई-बहिन से नम्र निवेदन करते हैं कि वह इस सकट की घड़ी में हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए अपने सभी भेद-भाव भुलाकर एकजुट हो जावे और हरयाणा के अधिकारों के सघर्ष मे तन, मन और धन से पूर्ण सहयोग एवं समर्थन देने की कृपा करें।

हरयाणा की आवाज सांसदों तक पहुंचाने के लिए अधिक से अधिक संख्या मे 19 दिसम्बर 85 को वोट क्लब पर (निकट लोकसभा भवन) नई दिल्ली पहुंच कर अपनी शक्ति का परिचय दें।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती
अध्यक्ष परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

दिसम्बर तथा जनवरी मास में हरयाणा के जो आर्यसमाज अपने यहां वेदप्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, वे यथाशीघ्र सभा को सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर प्रबन्ध करने मे सुविधा रहे। अभी तक निम्नलिखित आर्यसमाजों के कार्यक्रम अंकित किए गये हैं।

आर्यसमाज	कंवारी जिला हिसार	७, ८ दिसम्बर
,,	खानपुर जिला महेन्द्रगढ़	१४, १५ ,,
,,	जीन्द शहर	१३, १४, १५ ,,
,,	रायपुर रोडान जि. करनाल	२०, २१, २२ ,,
,,	लूखी जिला महेन्द्रगढ़	२३, २४, २५ ,,
,,	सोहना जिला गुड़गांव	२२, २३
,,	अकालगढ़ जिला जीन्द	२५, २६, २७ ,,

जिन आर्यसमाजों की ओर से प्रचार की माग पहले आवेगी उनका प्रबन्ध पहले किया जायेगा। इस समय सभा मे ६ उपदेशक तथा ६ भजन मण्डलियां निरन्तर वेद प्रचार कार्यक्रम पर हैं।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदानांक

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को सारे आर्यजगत् मे श्रद्धापूर्वक मनाया जावेगा। इस अवसर पर सर्वहितकारी का २१ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अङ्क प्रकाशित किया जावेगा।

व्यवस्थापक

वेद की आविर्भाव पद्धति

(ब्र० विरजानन्द दैवकरणि, गुरुकुल झज्जर)

गुण गुणी का नित्य सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरा नहीं रह सकता। जैसे प्रकाश, दहन और उष्णता के बिना अग्नि नहीं रह सकता। इसी प्रकार वेदज्ञान के साथ ईश्वर का नित्य सम्बन्ध है। अतः हम मनुष्यमात्र के लिये ईश्वर द्वारा दिया गया वेदज्ञान भी नित्य है। यह ज्ञान आदिसृष्टि में वेद के रूप में किस प्रकार आविर्भूत हुवा, इस पर विचार करना है।

सभी जीवों को कर्मानुसार फल मिलता है। ज्ञान प्राप्त करना भी एक कर्म है जो जो व्यक्ति जितना-जितना अधिक ज्ञान का कर्म करेगा, उसको फल भी उतना ही अधिक मिलेगा। इस वर्तमान सृष्टि से पूर्व जो सृष्टि थी, उसके प्रलय समय में जो चार जीवात्मा सबसे अधिक ज्ञानवान्, पुण्यकर्मा, पवित्र और विद्वान् थे, उन्हीं को इस सृष्टि के आरम्भ में चारों वेदों का ज्ञान एक-एक वेद के रूप में हुआ। जिस-जिस जीवात्मा ने जिस-जिस वेद के ज्ञान ग्रहण करने में सबसे अधिक परिश्रम किया, उस-उस को उसी-उसी वेद का ज्ञान मिल गया।

यह ठीक है कि एक व्यक्ति चारों वेदों में बहुत परिश्रम कर सकता है, किन्तु जितना परिश्रम एक वेद के ज्ञान ग्रहण करने में करके जो योग्यता प्राप्त कर सकेगा, उतनी योग्यता चारो वेदों में समपरिश्रम करने वाला विद्वान् पुरुष प्राप्त नही कर सकता। अत एव पूर्वसृष्टि के चतुर्वेदवित् को इस नई सृष्टि के प्रारम्भ में चारों वेदों का ज्ञान एक साथ नहीं मिल सकता।

मुक्ति से लौटे जीवात्मा को कभी भी सृष्टि के प्रारम्भ में वेद ज्ञान नही मिल सकता। क्योंकि उसे एक सामान्य मनुष्य की योनि प्राप्त होती है। और दूसरी विशेष बात यह है कि सृष्टि के प्रारम्भ में मुक्तात्मा मोक्ष से लौट ही नही सकता, क्योंकि जिस समय जोव मुक्ति से लौटता है, ठीक उससे इकत्तीस नील, दस खरब, चालीस अरब वर्ष पूर्व वह मोक्ष में गया था। उक्त समय व्यतीत करके ही वह मुक्ति से लौटेगा, न कि पूर्वापर काल में। क्योंकि बिना ज्ञान और कर्म के मुक्ति नही मिलती तथा सृष्टि के प्रारम्भ में पैदा होते ही एकदम ज्ञान और कर्म करके मरेगा कैसे। बिना मरे मुक्ति में जायेगा कैसे, पुन: लौटना भी नही बन सकता। मुक्ति के काल मे न्यूनाधिक्य करके तो ऐसा किया जा सकता है, किन्तु ऐसा करना जीव के हाथ नही है। जब तक छत्तीस सहस्र बार सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय का समय न बीत जायेगा, तब तक उसे मुक्ति में रहना पडेगा। ऐसी ईश्वर की शाश्वती व्यवस्था है। अत: सिद्ध हुआ कि सृष्टि के प्रारम्भ में वेदज्ञान मुक्तात्मा को न दिया जाकर पूर्वसृष्टि के किन्ही चार पुरुषविशेषों को ही दिया जाता है।

पद्धति

इस ज्ञान के मिलने की पद्धति यह है कि परमेश्वर सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी शक्ति के द्वारा उनके अन्त:करणों में वेदज्ञान प्राप्त करवा देता है। जैसे हम अपने मन मे नाना प्रकार के शङ्कासमाधान तथा उच्चारणादि करते रहते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर भी बिना मुख, जिह्‌वा, ताल्वादि के ही जीव को वेदज्ञान दे दिया करता है।

इस विषय मे ऋषिवर दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं—

"परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नही है, क्योंकि मुख जिह्वा से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न के बोध होने के लिये किया जाता है, कुछ अपने लिये नहीं। क्योंकि मुख जिह्‌वा के व्यापार के बिना ही मन में अनेक व्यवहारों का विचार और शब्दोच्चारण होता रहता है। कानों को अंगुलियों से मूद कर देखो, सुनो कि बिना मुख, जिह्वा ताल्वादि स्थानों के कैसे-कैसे शब्द हो रहे हैं, वैसे जीवों को अन्तर्यामी रूप से उपदेश किया है। किन्तु केवल दूसरों को समझाने के लिये उच्चारण करने की आवश्यकता है। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेदविद्या का [illegible] स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है।"

(सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास)

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति में भी इसकी पर्याप्त चर्चा है। पाठक वहां देख सकते हैं। वहां लिखा है—

"अब जानना चाहिये कि उनही चार पुरुषों का ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया।"

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदोत्पत्तिविषय)

इस प्रकार जब चारों महर्षियों को एक-एक वेद का ज्ञान मिल चुका तो उनसे जिस दिव्य पुरुष ने वह ज्ञान पाया उसका नाम चतुर्वेदवित् ब्रह्मा हुआ। इससे पूर्व सम्भव है चारों ऋषियों ने एक दूसरे से परस्पर सभी वेदों का ज्ञान ग्रहण कर लिया होगा, पुन: वे सभी ब्रह्मा क्यों न कहलाये, यह बात विचाराधीन है।

तदनन्तर परम्परागत एक दूसरे को मौखिक रूप से ज्ञान मिलता रहा और वे ग्रहण करते रहे। कालान्तर में [illegible] के ह्रास से स्मरणार्थ लिपि का सहारा लिया गया, जिसकी महती कृपा से आजपर्यन्त वेदज्ञान सुरक्षित चला आ रहा है और प्रलय काल तक इसी प्रकार अबाधगति से चलता रहेगा। ॥ इति ॥

हरयाणा और झज्जर गुरुकुल का नाम ऊँचा

झज्जर गुरुकुल में प्रविष्ट ब्रह्मचारियों की दिनचर्या इतनी सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित है कि विद्यार्थी उसमें पोषण पाता हुआ शारीरिक दृष्टि से ठोस तथा बलवान् हो जाता है। प्रतिदिन किया गया व्यायाम भी इस दिनचर्या में पूर्ण सहायक है। विद्यासमाप्ति पर ये छात्र गुरुकुल से निर्गमन कर अन्यत्र अध्यापक बन जाने पर भी अपना अस्तित्व पूर्ववत् बनाए रखते है और प्रातियोगिक शारीरिक परीक्षाओं में हरयाणा राज्य और गुरुकुल के नाम को समुज्ज्वल बनाते हैं।

अन्य वर्षों की भांति इस साल भी अध्यापक क्रीड़ा प्रतियोगिता में झज्जर गुरुकुल के स्नातकों ने कीर्तिमान् स्थापित किया है। विवरण नीचे की पंक्तियों में पढ़िये:—

1. जिलास्तर कुश्ती — सुरेन्द्र ५२ किलो में — प्रथम स्थान; जिलास्तर कुश्ती — वेदपाल ६२ किलो में — प्रथम स्थान; जिलास्तर कुश्ती — जगवीर ६८ किलो में — सर्व द्वितीय

2. अखिल भारतीय सिविल सर्विस कुश्ती

वेदपाल ६२ किलो में हरयाणा राज्य मे प्रथम रहा।

नैशनल कुश्ती जयपुर में

वेदपाल सर्वतृतीय एवं कांस्यपदक प्राप्ति

विशेष:—अनेक वर्षों से चैम्पियन बने आ रहे दिल्ली के पहलवान से कुश्ती हुई, आधे समय तक तो दोनों ओर से भिड़न्त समान रही, बाद में चैम्पियन पहलवान अङ्कों से बाजी मार गया। वेदपाल के प्रथम और द्वितीय चांस समाप्त हुए। वह पुन: तीसरे स्थान के लिये इलाहाबाद के पहलवान से जा भिड़ा और केवल १५ सैकण्ड में ही चित कर डाला। इसी प्रकार वेदपाल ने गोवा के मल्ल को १६ सैकण्ड और आन्ध्रप्रदेश के पहलवान को २२ सैकण्ड में ही पराजित कर जयपुर दंगल में अभिलेख (रिकोर्ड) स्थापित किया है।

नैशनल मल्लकला-समर में यह वेदपाल के लिये प्रथम ही अवसर था, जिसमें इस वीर ने गुरुकुल झज्जर के ध्वज को आकाशचुम्बी बनाया और अपने हरयाणा राज्य के नाम को कलङ्कित नही होने दिया। हरयाणा राज्य और उसमें विराजमान झज्जर गुरुकुल अपने इस शूरवीर सपूत को बधाई देता है। यह और भी हर्ष का विषय है कि आल इण्डिया सिविल सर्विस कुश्ती में हरयाणा ने ही ट्राफी प्राप्त की है। इन कुश्तियों में हरयाणा प्रथम, राजस्थान, द्वितीय और दिल्ली तृतीय स्थान पर रहे। —वेदानन्द वेदवागीश

-सम्पादकीय—

अनुकरणीय सहयोग



डा० देसराज जी

प्राय: वे सभी लघु समाचार-पत्र घाटे में चलते हैं जिनको सरकार का सहयोग विज्ञापनादि के रूप मे नही मिलता। सरकार उन्ही पत्रों को विज्ञापन-धन प्रदान करती है जो उसकी विचारधारा का प्रचार प्रसार करते है अथवा तात्कालिक राजनेताओं की प्रशंसा करते है। आज के निरन्तर बढती मंहगाई के युग में सर्वहितकारी साप्ताहिक भी घाटे में ही चल रहा है। इसकी पूर्ति सभा के अन्य विभागो द्वारा की जाती है। सर्वहितकारी को घाटे से बचाने अथवा इसकी आय बढाने के लिए—

१) ग्राहक शुल्क मे वृद्धि की जावे।
२) ग्राहक संख्या बढाई जावे।
३) विज्ञापन प्राप्त किये जावें।
४) आजीवन सदस्य बनाकर अथवा दान रूप मे सहायता लेकर स्थिर निधि बनाई जावे।

इसी प्रसंग मे मैंने डा० देशराज जी खीरबाट इन्दिरा कालोनी रोहतक से प्रतिसप्ताह सर्वहितकारी का एक नया ग्राहक बनाने के लिए निवेदन किया। तीसरे दिन आकर डाक्टर साहब ने कहा—ग्राहक तो बने या न बनें मै एक वर्ष के ४८ ग्राहको के चन्दे की जो राशि बनती है वह दे देता हूँ। अगले वर्ष फिर देखा जाएगा। यह कहते हुए ६०० रुपयों का चैक सर्वहितकारी साप्ताहिक के नाम का दे दिया।

डा० देशराज जी की यह प्रथम सहयोग-राशि है आशा है भविष्य मे भी वे देते ही रहेगे। इसी प्रकार अन्य आर्य सज्जनों से भी निवेदन है कि वे स्वयं सर्वहितकारी के ग्राहक बने तथा अपने साथी मित्रो को भी ग्राहक बनावें। जिन महानभावो का अपना कारोबार है वे सर्व हितकारी मे अपना विज्ञापन देकर दोहरा लाभ उठा सकते है—अपने कारोबार की वृद्धि और सर्वहितकारी की सहायता। जो महानुभाव समर्थ हैं वे २५० रुपये देकर आजीवन सदस्य बन सकते है।

सर्वहितकारी साप्ताहिक पत्र प्रचार का सबसे सस्ता साधन है। रिक्शा, बस रेल आदि गमन-आगमन के साधन बहुत महंगे होगये है। उपदेशक प्रचारको का भी न्यून दक्षिणा से निर्वाह नही हो सकता। ऐसी स्थिति मे साप्ताहिक पत्र ही सबसे सस्ता और चिरस्थायी प्रचार का माध्यम है। इसको अपने पैरो पर खडा कीजिये इसको उत्तम प्रचार साधन बनाने के लिये आपके सुझाव सादर आमन्त्रित है।

— वेदव्रत शास्त्री

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद (पैंशन का मामला)

दिल्ली २ दिसम्बर। जिन लोगों ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ मे सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आन्दोलन में भाग लिया था और जिन्हे जेल की सजा हुई थी। उन सब सत्याग्रहियो से निवेदन है कि अपना प्रार्थना-पत्र अपने नाम, पिता के नाम, स्थान जहां से सत्याग्रह के लिए गए थे और जहा गिरफ्तार हुए, तिथि, जेल का नाम जहा प्रारम्भ मे भेजे गए और जहा से छूटे तथा छूटने की तिथि के विवरण सहित अधिकतम २० दिसम्बर, १९८५ तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के पते पर भिजवा देवे ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पैंशन हेतु स्वीकृत कराया जा सके। इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छूट गया तो सार्वदेशिक सभा उनके मामले मे किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नहीं होगी।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान—सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

वैदिक विवाह संस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य के अनुज श्रीयुत चौ० चन्द्रभान ए. एफ. एस. ओ. हरिसिंह कालोनी की ज्येष्ठ पुत्री विमला रानी का विवाह संस्कार दिनांक २४-११-१९८५ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। यह संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामन्त्री प्रो० सत्यवीर जी शास्त्री ने उत्तम रीति से सम्पन्न कराया। पं० वेदव्रत शास्त्री तथा मुन्शीराम प्रधान आर्यसमाज बालन्द ने नव-युगल को आशीर्वाद दिया। प्रो० बलवीर आचार्य, सोमदेव शास्त्री, श्री राजकुमार आचार्य तथा डा० सुदर्शनदेव आचार्य आदि विद्वान् इस संस्कार मे विराजमान थे। आर्य प्रतिनिधि हरयाणा को श्री चौ० चन्द्रभान (वधूपक्ष) ने १०१) रु०, श्री चौ० ताराचन्द मुण्ढाल (वरपक्ष) ने ५१) रु०, श्री प० कृष्णचन्द्र शर्मा (विवाह मध्यस्थ) ने १०१) रु० प्रदान किया। वैदिक संस्कार का बडा अच्छा प्रभाव रहा।

उमेदसिंह मन्त्री आर्यसमाज
हरिसिंह कालोनी, रोहतक

पुस्तक-समीक्षा

"सनातन वैदिक धर्म" पुस्तिका मैंने पढी।

इस छोटी सी पुस्तिका में लेखक कर्मनारायण कपूर ने वैदिक धर्म के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान देने का प्रयत्न किया है। अनुभवी लेखक ने अपने अनुभव के आधार पर प्रत्येक आर्य (हिन्दू) के अध्ययन करने के लिए काफी अच्छा लिखा है।

इस पुस्तिका का हर धर्मप्रेमी को बार-बार अध्ययन करना चाहिये। इस अध्ययन से पवित्र गुणो की धारणा बनेगी। पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया है। यह सभा के कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकेगी। आशा है सभी धर्मप्रेमी इस पुस्तिक से लाभ उठावेंगे।

दीपचन्द
२२-११-८५ ग्राम पो० कासनी (रोहतक)

करो ऐसी की तैसी.........

('नाज़' सोनीपती)

खबर हमको नहीं अपने घरों की
खबर लेते हैं लेकिन दूसरों की॥
सियासत के ये अड्डे बन चुके है।
न पूछो मस्जिदों की, मन्दिरों की॥
गुरुद्वारो मे बद-तर हाल देखा।
बुरी हालत है अब गिरजाघरो की॥
हकीकत के कदम टिकने तो क्यो कर?
यह नगरी रह गई जादूगरो की॥
यह जनता भाड में जाती है, जाए।
यह इच्छा है हमारे लीडरो की॥
इलाज-ए-दर्देदिल मुमकिन नही है।
यह है बेचारगी चारागरो की॥
जड़े, दहशतपसन्दी की उखाडो।
करो ऐसी की तैसी, सरफिरों की॥
बचा लो 'नाज़' खुद को रहबरों से।
कि चालें पुरखतर है, रहबरो की॥

मुक्तक :

'नाज़' सोनीपती

'दुनिया वालों ने यों ही शोर मचा रखा है।'
आसमां सर पे न जाने क्यों उठा रखा है॥
बात तो कुछ भी नहीं, बात बनाने वालो?
बात का तुम ने बतंगड तो बना रखा है॥
जिस को बुतगर ने तराशा है, बड़ी मेहनत से।
नाम उस बुत का ज़माने ने खुदा रखा है॥

शंका-समाधान—

मृत्यु के उपरान्त जीव की गति

भाई सत्यपाल जी "विमल", मन्त्री आर्यसमाज खारवन (अम्बाला)

सप्रेम नमस्ते। आपका दिनाक ३-१०-१९८५ का लिखा पत्र मिला। आपने पूछा है कि यजुर्वेद के ३९वे अध्याय के छठे मन्त्र में उपदिष्ट तथा बृहदारण्यकोपनिषद् में वर्णित मृत्यु के उपरान्त जीव की गति मे जो विरोध है, उसका क्या समाधान है? सब आर्यजनों के लाभार्थ सर्वहितकारी के माध्यम से आपकी जिज्ञासा का समाधान किया जाता है—

(१) यजुर्वेद के ३९वे अध्याय का छठा मन्त्र यह है—

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चमऽऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे मित्रो नवमे वरुणो दशमऽइन्द्रऽएकादशे विश्वेदेवा द्वादशे ॥ (यजु० ३९।६)

भावार्थ—हे मनुष्यो ! यह जीव पहले दिन सूर्य, दूसरे दिन अग्नि, तीसरे दिन वायु, चौथे दिन आदित्य, पाचवे दिन चन्द्रमा, छठे दिन ऋतु, सातवे दिन मनुष्य आदि, आठवे दिन बडो का पालक वायु, नौवे दिन प्राण, दसवे दिन उदान, ग्यारहवे दिन विद्युत् और बारहवे दिन सब दिव्य गुणो को प्राप्त करता है।

भावार्थ—हे मनुष्यो ! जब ये जीव शरीर को छोडते है तब सूर्य प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त करके, कुछ काल भ्रमण करके, अपने कर्मों के अनुसार गर्भाशय को प्राप्त करके, शरीर को धारण करके उत्पन्न होते हैं, तभी पुण्य-पाप कर्म के द्वारा सुख दु:ख रूप फलो को भोगते है (दयानन्द यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर ३९।६)।

२—यजुर्वेद के इसी अध्याय के पाचवे मन्त्र मे भी यह वर्णन मिलता है—

भावार्थ—यदाऽय देहं त्यक्त्वा सर्वेषु पृथिव्यादिपदार्थेषु भ्रमन्, यत्र कुत्र प्रविशन्, यतस्ततो गच्छन्, कर्मानुसारेणेश्वरव्यवस्थया जन्म प्राप्नोति, तदैव सुप्रसिद्धो भवति।

अर्थ—जब यह जीव देह को छोड़कर सब पृथिवी आदि पदार्थों मे भ्रमण करता हुआ, जहा कहीं प्रविष्ट होकर जहा-तहा गति करता हुआ कर्मानुसार ईश्वर की व्यवस्था से जन्म प्राप्त करता है, तभी जीव सुप्रसिद्ध होता है (दयानन्द यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर ३९।५)।

यजुर्वेद के इस ३९वे अध्याय मे नरमेध (अन्त्येष्टि कर्म) का उपदेश है। प्रसगवश ईश्वर ने मानव के कल्याण एव ज्ञान के लिए मृत्यु के उपरान्त जीव की गति का भी उपदेश किया है कि वह देह को छोडकर पृथिवी, सूर्य-प्रकाश, अग्नि, वायु आदि मे भ्रमण करके अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से गर्भाशय मे जाकर शरीर को धारण करता है।

३—इस विषय का और अधिक स्पष्ट उपदेश महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश में किया है—"जब (जीव) शरीर से निकलता है, उसी का नाम 'मृत्यु' और शरीर के संयोग होने का नाम 'जन्म' है। जब शरीर छोडता तब यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु मे रहता क्योंकि "यमेन वायुना०" वेद मे लिखा है कि यम नाम वायु का है, गरुड पुराण का कल्पित यम नही। पश्चात् धर्मराज अर्थात् परमेश्वर उस जीव के पाप-पुण्यानुसार जन्म देता है। वह वायु, अन्न, जल अथवा शरीर के छिद्र द्वारा दूसरे के शरीर मे ईश्वर की प्रेरणा से प्रविष्ट होता है। जो प्रविष्ट होकर क्रमश: वीर्य मे जा, गर्भ मे स्थित हो, शरीर धारण कर बाहर आता है (सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास)।

यहा महर्षिकृत यजुर्वेद भाष्य तथा सत्यार्थप्रकाश की भाषा का एक स्वर है कि मृत्यु के उपरान्त जीव वायु आदि में भ्रमण करता है। तत्पश्चात् वह अपने पाप-पुण्य कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से प्रथम वायु, अन्न, जल, शरीर-छिद्र आदि किसी माध्यम मे पुरुष के शरीर में प्रविष्ट होता है और वीर्य के माध्यम से गर्भाशय मे स्थित होकर शरीर धारण करता है।

आत्मा के चार शरीर—आत्मा का प्रथम 'स्थूल' शरीर है जो यह दिखाई देता है। दूसरा 'सूक्ष्म शरीर कहाता है। इसमें ५ प्राण, ५ ज्ञानेन्द्रियां, ५ सूक्ष्म भूत, १ मन और १ बुद्धि ये १७ तत्त्व होते हैं। यह सूक्ष्म शरीर जन्म-मरण आदि में भी जीव के साथ रहता है। इस सूक्ष्म शरीर के भौतिक और स्वाभाविक दो भेद हैं। 'भौतिक सूक्ष्म शरीर' सूक्ष्म भूतों के अंशों से बनता है। और दूसरा 'स्वाभाविक सूक्ष्म शरीर' जीव के स्वाभाविक गुण हैं, उन्हीं का समुदाय उक्त शरीर कहाता है। यह 'स्वाभाविक शरीर' मुक्ति में भी रहता है। इसलिए शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—"शृण्वन् श्रोत्रं भवति०" (शतपथ ब्राह्मण का० १४)। तीसरा 'कारण' शरीर कहाता है। जिसमें सुषुप्ति (गाढ़ निद्रा) होती है। वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु (व्यापक) और सब जीवों के लिए एक है। चौथा 'तुरीय' शरीर कहाता है। जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्द स्वरूप में जीव मग्न होता है। इसी समाधि संस्कारजन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम (शक्ति) मुक्ति में भी यथावत् सहायक होता है।

आत्मा 'स्थूल शरीर' और 'भौतिक-सूक्ष्म शरीर' का ही त्याग करता है। 'स्वाभाविक सूक्ष्म शरीर' मुक्ति में काम आता है। कारण शरीर सब जीवो के लिए एक है। मुक्ति की प्राप्ति होने पर उसका त्याग सम्भव है। समाधि संस्कारजन्य तुरीय शरीर योगी जनों का ही होता है।

४ जीव स्थूल-शरीर को त्यागकर शरीरान्तर को कैसे प्राप्त करता है इसका उपदेश बृहदारण्यकोपनिषद् में इस प्रकार आया है—

"तद्यथा तृणजलायुका तृणस्यान्तं गत्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरत्येवमेवायमात्मा शरीरं निहत्याऽविद्यां गमयित्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरति" ॥ (बृहदारण्यकोपनिषद् ४/४)।

अर्थ—जैसे घास का एक कीड़ा किसी तिनके के अन्त में पहुंच कर अन्य आक्रम=गन्तव्य स्थान पर जाकर स्वयं को समेट लेता है, वैसे यह आत्मा इस शरीर को समाप्त करके, अविद्या को प्राप्त होकर अन्य गन्तव्य स्थान पर जाकर स्वयं को समेट लेता है।

इस उपनिषद्-वचन में एक घास के कीड़े के उदाहरण से यह उपदेश किया गया है कि जैसे कीड़ा किसी तिनके पर चलता हुआ उसके अन्तिम भाग को प्राप्त करके अपने गन्तव्य स्थान पर चला जाता है, और उस तिनके से स्वयं को समेट लेता है वैसे यह आत्मा इस शरीर रूप तिनके के अन्तिम छोर (मृत्यु) पर पहुचता है तब वह अपने गन्तव्य स्थान पर चला जाता है और इस शरीर से स्वयं को समेट लेता है।

यहा उपनिषद्-वचन में एक तिनके से दूसरे तिनके अथवा एक शरीर से दूसरे शरीर में आक्रमण का वर्णन नहीं, क्योंकि रूप (शरीर) धारण करने करने का वर्णन उपनिषद् के अगले वचन मे किया गया है। अपितु अपने गन्तव्य स्थान पर जाने का वर्णन है अर्थात् जीव शरीर को छोडकर अपने भ्रमण करने के स्थान वायु आदि मे चला जाता है पुन: अपने पाप पुण्य रूप कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से शरीर धारण करता है।

५. हो सकता है कि यजुर्वेद के उक्त १२ दिनों के वर्णन को देखकर किसी पौराणिक ने १३ वीं की प्रथा चालू कर दी हो। जैसे वेद में 'उक्षा दाधार पृथिवीम्' पृथिवी को 'उक्षा' धारण करता है। यहां 'उक्षा' शब्द को देखकर यह कल्पना कर ली गई है कि यह पृथिवी बैल के शरीर पर खडी है।

६ हिन्दू लोग १३वीं मृतक की सद्गति के लिए मनाते हैं। उसे तो अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से शरीर आदि फल मिलना ही है। अस्थि-चयन के पश्चात् मृतक के लिए कुछ भी कर्तव्य कर्म शेष नही रहता। 'भस्मान्तं शरीरम्' यजुर्वेद के इस प्रमाण से यह भौतिक शरीर भस्म रूप होकर समाप्त हो जाता है। हां, यदि मनुष्य सम्पन्न हो तो अपने जीते जी अथवा मरे पीछे उनके सम्बन्धी वेद विद्या, वेदोक्त कर्म का प्रचार, अनाथों का पालन, वैदिक धर्म के उपदेश की प्रवृत्ति के लिए चाहें जितना धन लगावे। यह बहुत अच्छी बात है।

आशा है इस लेख से आपको शका का समाधान हो जाएगा।

—सुदर्शनदेव आचार्य

दिनाक १०-१०-८५

सभा उप मन्त्री

(दयानन्द आश्रम नलवा हिसार)

फिरोजपुर बांगर (सोनीपत) शराब ठेकों को बन्द करवाने के संघर्ष में

कार्यरत व्यक्तित्व–



महेन्द्र शास्त्री महोपदेशक सभा

जब-जब समाज में कुरीतिया चरम सीमा तक पहुँची तब-तब लोगों ने एकजुट हो संघर्ष का रास्ता अपनाया है। आज सरकार इस बात का बार-बार दम भरती है कि हमने थोडे ही समय में बहुत अधिक प्रगति की है। लेकिन वास्तविकता इससे बहुत दूर है। हा यदि प्रगति (विकास) हुआ भी तो उसको इस रूप में देख सकते है। देशभक्ति परार्थ से स्वार्थ पराकाष्ठा पर है। सात्विक गुणों को अश्लीलता मे रेडियो, टी. वी., दीवारो पर स्त्री के नग्न चित्रो, अश्लील नावलो से परिवर्तित कर विकास के नाम से वाह-वाह की प्राप्ति हासिल की है। मानवतावाद का झूठा दम भरके शोषण का शिकजा विकास के नाम पर (पूजी को कुछ हाथो मे सोपकर) ओर मजबूत किया जारहा है। हरयाणा सरकार जो इस विकास मे सबसे अग्रणी है। प्रतिदिन के उपभोग्य की वस्तुओ के अभाव को दूर न करके शराब की दुकानो का गाव-गाव मे लोगो के न चाहने पर भी विस्तार करना इस तथाकथित विकास को पदे-पदे देखा जा मकता है।

कुछ अशों मे पूर्वोक्त बात को समझकर फिरोजपुर बागर (सोनीपत) में ग्राम सेवा समिति के नौजवानो ने अपने गाव के ओचन्दी बार्डर पर स्थित शराब के ठेको को बन्द करवाने का सकल्प लिया। यों तो गाव के अत्यधिक नौजवानो ने कार्य किया और कर रहे है लेकिन लेख बडा होने के भय से सबका विवरण देने में असमर्थ हू। सबसे पहले नौजवान साथी मनवीरसिंह जी जिन्होंने अपने साथी हयगाज जी के साथ मिलकर कागज कार्यवाही, पैसे के आय-व्यय को बखूबी तौर मे निभाया व अपना सम्पूर्ण समय सघर्ष मे देकर अब भी निभा रहे है। सघर्ष के बतौर जब वे तथाकथित विकास की सरकार के जेल रूपी शिकजो में थे उनके साहस का एक उज्ज्वल रूप देखा जा सकता था। भाई जसवीर भी इस सघर्ष मे अग्रणी देखे जा सकते है। ग्राम सेवा समिति के अन्य नवयुवको ने भी तन, मन, धन से सहयोग देने की अत्यधिक चेष्टा की। कुछ साथियो के नाम है - सुलतान, नरेन्द्र, जगरूप, देवेन्द्र, देवराज, दलेल, ईश्वर, रणवीर, जगडू, सतीश, भोपाल, सुमेर आदि व जिनके नाम मेरी स्मृति मे न होकर उनके चेहरे बार-बार मेरे सामने से उभरते दिखाई देते है ने भी सहयोग मे कोई कसर न रखी।

अब विशेषकर हम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग को कदापि नही भुला सकते। क्योकि सभा लगभग १ वर्ष से इस विषय मे विशेष सचेत है तथा सभी स्थानों पर भरपूर शक्ति के साथ सहयोग दिया है। जब भी प्रो० शेरसिंह जी व अन्य सभा कार्यकर्त्ताओं को बुलाया गया तो उन्होने यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। लगभग १२ वर्ष के अल्प काल मे अपने पैरो पर खडी होकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा जितना कार्य कर रही है शायद ही दूसरी अन्य कुछ समर्थ प्रान्तीय सभाये ऐसा कर पारही हैं। मै हरयाणा सभा से यह अपेक्षा भी रखता हूँ कि वह तात्कालिक समस्याओं को लेकर इसके मूल मे जाने का प्रयत्न भी करेगी व सघर्ष की ओर मुखरित होगी। वास्तव मे तभी हम अपनी असलियत या सस्कृति को बचा पायेगे। इसमे हमे आर्यसमाज नाहरी व रोहणा के व्यक्तियों का विशेष सहयोग रहा व रहेगा।

जिस प्रकार नाहरी के शराब ठेके को बन्द करवाने मे नाहरी शाखा एस० यू० सी० का विशेष योगदान रहा ठीक उसी प्रकार से फिरोजपुर बांगर मे भी डा० विरेन्द्र के नेतृत्व मे यह कार्य बखूबी तौर से निभाया गया। मेरा यहां किसी की बड़ाई करने का कोई प्रयोजन नही है लेकिन बबंस कहना ही पड़ता है कि जिस बखूबी तौर से सघर्ष को चलाने में डा० साहब व उनके साथियो का दिललगी से सहयोग मिला द्रष्टव्य था। इतना ही नही महिलाओ ने भी उसी प्रकार मे कार्य करने के लिए एम० एस० एस० की तरफ से बहन दर्शना व बहन कान्ता का आना एक विशेष अहमियत रखता है।

यदि गाव फिरोजपुर व अडोस-पडोस के गावो की स्त्रियों के सम्बन्ध की इस सघर्ष मे चर्चा न की जावे तो मेरे जैसा कृतघ्न कोई नही हो सकता। जो उत्साह मैंने महिलाओं में देखा वह अवर्णनीय है। चार व पांच माताये धर्मवीर की माता जी, साहबसिंह, मा० रणधीर की धर्मपत्नी, भाई मनवीर की माताजी व अन्य जिनको नाम से नहीं कार्य व चेहरे से अच्छी प्रकार जानता हूँ, चौबीस घण्टे रात की सर्दी मे ठिठुर के भी साहस नही छोड़ा। मै शायद गलती नही करता हू तो लगभग २० ऐसे नए भजन गाव की नौजवान बहुओ ने धरने स्थल पर बनाये। मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उनका नाम ज्ञात न होने के कारण लिख नही पारहा। प्रतिदिन १० बजे ठीक अपने काम काज से निवृत हो ठेके पर ग्रामीण महिलायें व स्कूल की लडकिया शराब विरोधी नारे लगाती हुई व इसी सम्बन्ध मे गीत गाती हुई रात के १० बजे तक देखी जा सकती थी। गाव की दरियापुर स्कूल में जाने वाली लडकिया भी आते-जाते नारे लगाती व धरने पर भी बैठती थी। कुण्डल गाव मे जहां सरपच राजसिह, राजेराम जी आर्य, मा० इन्द्रसिह का सहयोग प्राप्त हुआ वहा माताओं का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इसी प्रकार जटौला मे जहां रिसालसिह, जयप्रकाश व अन्य का सहयोग मिला वहा मातायें भी पीछे नही थी।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जटगणा व अडौस-पडौस के लगते गावो ने पूर्ण रूप मे न सही लेकिन व्यक्तिगत तौर से सहयोग देने की चेष्टा की। इसमे मैं विशेष तौर से बगैर हिचक के एक बात साफ कर देना चाहता हूँ तथा इसमे देहात का दुर्भाग्य भी समझता हूँ कि फिरोजपुर गाव समेत किसी भी गाव की पचायत ने कोई सहयोग नही दिया इसमें कोई अतिशयोक्ति नही होगी। बल्कि विडम्बना इस बात की थी कि जिम्मेदार व्यक्ति ही ठेकेदार व सरकार की गलत नीतियो का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष मे समर्थन कर रहे थे। ठीक है पचायतो मे भी जिन लोगों ने अपने धर्म ईमान को सुरक्षित रख अभी बेचा नही है तथा जिनकी आत्मायें मनुष्य रूप मे जीते हुए भी मरी नही है भले ही वे थोडी सख्या मे है लेकिन समाप्त नही हुए है। इन्ही मे गाव के बुजुर्ग व बुद्धिजीवियों ने भी सहयोग दिया। महाशय कर्णसिह, शान्तिलाल जी, मा० रणधीर सिह, हजारीसिह जी, महेन्द्रसिह, रतनसिह, पहलवान जी, मुबेशर जी, मा० कटारसिह, मा० बलजीतसिह, ब्लोक समिति मेम्बर मुन्ना या जिनके मेरी स्मृति मे नाम स्मरण नही हो पारहे सभी ने एकजुट हो सहयोग दिया। यदि आवश्यकता समझी गई तो अन्य अको या पुस्तिका (पम्पलैट) के रूप मे भी विस्तार से लिखा जा सकता है।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के बारे में सूचना

जब से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (1938-39) में भाग लेनेवालों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिये जाने की घोषणा हुई है, तब से अनेक लोगो के पत्र इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में आ रहे हैं। सबका अलग-अलग उत्तर देना सभा के लिए मुश्किल है ऐसे लोगों को 3 नवम्बर के अंक में प्रकाशित सूचना को ध्यान से पढ़ना चाहिये।

गृहमन्त्रालय में सम्पर्क करने से ज्ञात हुआ है कि जेलो के प्रमाण-पत्र यदि आवेदनकर्त्ता सरकारी सूत्रो से लेकर भी आवेदन करेंगे, तब भी सरकार उनके दावे को तब तक स्वीकार नही करेगी जब तक कि वह स्वय सम्बन्धित सरकार से आवश्यक प्रमाणपत्र पाकर सन्तुष्ट न हो ले। इसलिए आवेदनकर्त्ताओं के लिए आवश्यक है कि वे अपने गिरफ्तार होने की तिथि, सजा की अवधि और रिहाई की तिथि और जिन-जिन जेलों में रहे उसका पूरा विवरण सरकारी अधिकारी के पास नई दिल्ली भेजे। बिना पूरे विवरण के आवेदन करने पर सम्पुष्टि न होने से मामला निपटाना मुश्किल होगा।

सत्याग्रहियो को उपरोक्त कार्यालय मे से निर्धारित फार्म मंगाकर आवेदन करना चाहिए। जो लोग दिवगत हैं उनकी पत्नी भी नियमानुसार स्वाधीनता सेनानी के सम्मान के लिए अधिकृत मानी जायेगी। उनके सम्बन्धियों, आर्यसमाजों एव आर्यप्रतिनिधि सभा को इस विषय मे पूरी सहायता करनी चाहिए।

तत्कालीन निजाम रियासत वर्तमान मे तीन राज्यों मे बटी हुई है इसलिए यदि आवेदन कर्त्ता एक से अधिक जेलों में रहा है और जेलें अब अलग-अलग राज्यों में हैं, तब उनको अलग-अलग राज्यो से कारावास का विवरण प्राप्त करना होगा।

केन्द्र सरकार द्वारा सामान्यत: छ: मास तक कारावास मे रहने वाले (जो अवधि 5 मास से ऊपर होनी चाहिए) केन्द्रीय सरकार की पेन्शन योजना के अधिकारी होते हैं। एक दो या तीन मास कारावास में रहनेवालों के लिए राज्य सरकारो के अपने-अपने नियम हैं और उनकी पेन्शन की राशि भी भिन्न भिन्न है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी ने अन्य प्रकार के त्याग या कष्ट उठाये हैं तो उनके केस पर भी सरकार प्रमाणो और गुणावगुण के आधार पर विचार कर सकती है।

ब्रह्मदत्त स्नातक-जनसम्पर्क सलाहकार, सार्वदेशिक सभा

मेला कपाल मोचन पर वेद प्रचार

कपाल मोचन का मेला सुन्दर ढग से सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिये लगाये गये पडाल में २५, २६ एव २७ नवम्बर १९८५ को विशेष रूपेण वेद प्रचार हुआ। कार्यक्रम में विघ्न बाधाओं के होते हुए भी वेद प्रचार कार्य जोर शोर रहा। जनता में अच्छा प्रभाव पड़ा।

इस प्रचार कार्य में पं० श्री हरिश्चन्द्र जी (मण्डली सहित), श्री मुन्शीराम जी, श्री विद्याभूषण जी, श्री शेरसिह जी, श्री चिरञ्जीलाल जी (मण्डली सहित) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पधारे और वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल मधुर भजन, ओजस्वी भाषण एव प्रभावशाली प्रचार के द्वारा सर्व साधारण जनता को प्रभावित किया। साथ मे भण्डारा भी चलता रहा। खाने पीने का प्रबन्ध भी अच्छा था।

इसके अतिरिक्त श्री साधुराम जी भजनोपदेशक (ब्याना वाले) के भजन तथा उपदेश हुए।

इन कार्यों के सम्पन्न करने के लिये एव सहयोग देने के लिये श्री रामलाल जी वैद्य, श्री गेन्दाराम जी मन्त्री तथा श्री महेन्द्रपाल जी मन्त्री फतेहपुर मो. देखभाल के लिये पण्डाल मे पहुचे थे। इनका पूर्ण सहयोग रहा है।

भवदीय
स्वामी सदानन्द

आर्यसमाज के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण से भेंट
हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में ज्ञापन

दिल्ली ३० नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतत्व में आज प्रात: आर्यसमाज के शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण से भेंट कर उन्हें हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में एक ज्ञापन पत्र दिया।

शिष्टमण्डल ने गृहमन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए बताया कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सामने पेंशन प्राप्त करने में कुछ विशेष कठिनाइया हैं। १९३८-३९ में पश्चिमी पंजाब जो अब पाकिस्तान में है, के लोगो ने भी सत्याग्रह मे भाग लिया था। तत्कालीन निजाम स्टेट अब तीन प्रान्तो मे विभाजित हो चुका है। उस समय जो लोग जेलों में गये थे, उन्हे निजाम सरकार ने कोई प्रमाण पत्र नही दिया था। यह आन्दोलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में चला था और सभा ने सत्याग्रहियों को प्रमाण पत्र भी दिए थे।

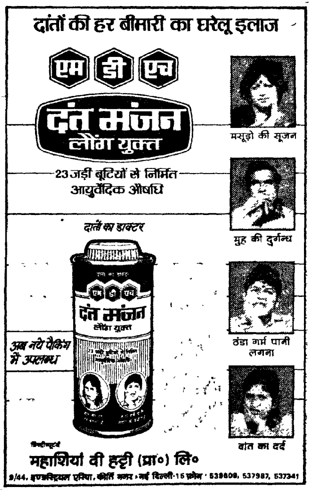
शिष्टमण्डल ने यह भी बताया कि अधिकाश सत्याग्रही अब तक दिवंगत हो चुके है। जो थोड़े बहुत लोग इस समय वृद्धावस्था मे जी रहे हैं, उनके पास अब ४७ वर्ष के उपरान्त कोई प्रमाण पत्र शेष नही है।

शिष्टमण्डल ने सरकार मे मांग की कि जिस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन के सेनानियों को कांग्रेस के प्रमाण पत्र के आधार पर स्वतन्त्रता सेनानी माना गया था, उसी प्रकार केन्द्र सरकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के आधार पर प्रमाणित लोगों को स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार करे और गृह मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत पेंशन योजना का लाभ प्रदान करे।

गृहमन्त्री श्री चव्हाण ने तुरन्त सभा से सूचि भेजने के लिए कहा और आश्वासन दिया कि वे राज्य सरकारो से बातचीत करके इसका निर्णय जल्दी करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद अब आन्ध्र, कर्नाटक और महाराष्ट्र मे विभाजित हो चुका है।

शिष्टमण्डल मे प्रो० शेरसिंह, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री सोमनाथ एडवोकेट और लक्ष्मीचन्द आदि सम्मिलित थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमन्त्री सभा



एक उद्बोधन—

अन्तःराष्ट्रीय युवा वर्ष पर युवकों के नाम संदेश

प्रिय आर्य युवको !

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट्र यह वर्ष अन्तःराष्ट्रीय युवा वर्ष के रूप में मना रहा है। हमारे देश में भी ११ जनवरी १९८५ को स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर हमारे युवा प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने युवा वर्ष का उद्घाटन किया था और ११ जनवरी को युवा दिवस भी घोषित किया। उस समय यह आशा बंधी थी कि हमारी सरकार युवा-वर्ग को एक रचनात्मक दिशा देगी और युवा शक्ति का देश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुझे यह कहते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि युवा-वर्ष समाप्त होने को जा रहा है, पर अभी तक देश में न युवकों को कोई रचनात्मक दिशा दी जा सकी है, न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनके लिए किसी वर्ग की कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे लाभान्वित हों।

युवावर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक मास्को में आयोजित युवा-समारोह में भाग लेने के लिए गये थे, पर वहां पर इन युवकों ने अपनी जिस विलासी वृत्ति का परिचय दिया उससे मेरे देश की प्रतिष्ठा पर आंच आई। नवम्बर मास में दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से निर्गुट देशों के युवकों का एक सम्मेलन बुलाया गया। पर यह सम्मेलन भी युवकों के लिए किसी रचनात्मक योजना पर विचार नहीं कर सका।

मैंने वचपन में एक कविता पढी थी जिसकी पहली पंक्ति थी—बताएं तुम्हें जवान जवानी किसको कहते हैं, दें जंग को जीवन दान जवानी उसको कहते हैं—इस पंक्ति में यौवन को किसी आयु विशेष के साथ नहीं बांधा गया, वरन् उसे एक पवित्र और ऊँची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलांजलि देकर निःस्वार्थ और परोपकार की भावना से राष्ट्र, नहीं विश्व के कल्याण के लिए आत्मसमर्पण की भावना रखता हो। जिस समय महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके आर्यसमाज का लक्ष्य ऋग्वेद का यह वाक्य कि—'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' स्थापित किया था, उस समय वे भी आर्यजन में यही भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड़ दें और प्रतिदिन यज्ञ करते हुए विश्व के कल्याण के लिए अपनी आहुति, आत्म-बलिदान की भावना से भर उठें।

याद रखो, हमें विश्व को आर्य-श्रेष्ठ गुणों से युक्त बनाना है और संसार में जितना अशिव है, जो अकल्याणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म हैं उन सबको नष्ट करना है। ऋग्वेद ने संसार को श्रेष्ठ बनाने की जहां प्रेरणा दी वहां संसार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रखो, संसार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हमें स्वयं श्रेष्ठ बनाना होगा। साधु और मानवीय दृष्टि से ऊँचा व्यक्ति ही दूसरे को सत्कर्म पर प्रेरित कर सकता है। जो स्वयं दुष्ट है वह दूसरों की दुष्टता को दूर करने की बात सोच भी कैसे सकता है ?

जब मैं तुम्हें कहता हूं कि अच्छे बनो तो मेरा अर्थ होता है कि तुम्हारा सारा व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से पुष्ट बनो। यदि तुम शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ और दुर्बल हो तो तुम जीने योग्य भी नहीं हो। तुमने पढ़ा और सुना होगा "वीरभोग्या वसुंधरा" यह पृथ्वी वीरों के भोग के लिए ही है। तुम्हें अपने में वीरता की भावना भरनी होगी। वीरता के लिए अपनी मांसपेशियों को पुष्ट करना होगा। उसके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्यायाम करने का अपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने कहा था—शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्। शरीर धर्म का अपने कर्त्तव्य की पूर्ति का प्रथम साधन है। यदि तुमने संसार को श्रेष्ठ बनाने का अपना कर्त्तव्य पूर्ण करना है तो पहले अपने शरीर को पुष्ट बनाओ। मुझे तुम्हें यह भी बताना है कि वीरता व पुष्ट शरीर से तुम्हें निर्बलों व अनाथों की दुष्ट व्यक्तियों से रक्षा करनी है। वीर व पुष्ट होने का अर्थ किसी को अनावश्यक रूप से दबाना या प्रताड़ित करना नहीं है।

जब मैं तुम्हें श्रेष्ठ बनने के लिए कहता हूं तब तुम्हें अच्छा और तीक्ष्ण मस्तिष्क वाला बनने की भी प्रेरणा देता हूं ताकि तुम अपनी प्रखर बुद्धि से अपने प्राप्त शरीर का ठीक उपयोग कर सको। तुम्हारा मस्तिष्क ऐसा हो जिसमें नीर क्षीर विवेक की क्षमता हो। सत्य को पहचानने और असत्य को त्यागने की समझ हो। मस्तिष्क इतना पुष्ट हो कि वह ठीक समय पर ठीक निर्णय करे और इतना विकसित हो कि सदा नये नये ज्ञान को ग्रहण करने में वह सक्षम हो। तभी तुम समझ सकोगे कि विश्व में क्या हेय है और क्या ग्राह्य। जब तुम्हें संसार के दुष्टों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया है तो बिना विवेक व ज्ञान के तुम यह कार्य नहीं कर पाओगे। संसार में कौन दुष्ट है और कौन साधु ? —यह बात तुम बिना मस्तिष्क के नहीं जान सकते। अपना अच्छा मस्तिष्क करने के लिए तुम्हें सदा अपने माता-पिता, किसी अच्छे गुरु व पथ-प्रदर्शक के सम्पर्क में रहना होगा ? उनके प्रति तुम्हें आस्था रखनी होगी। गीता में कहा है श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्—श्रद्धा व विश्वास से ही मस्तिष्क में नया ज्ञान आता है और विवेक शक्ति बढ़ती है जो विचारधारा अनास्था का प्रचार करती है वह हेय है। आज संसार में भौतिकता पर आधारित ऐसी अनेक विचारधाराएं हैं जो व्यक्ति को अनास्था का पाठ पढ़ाकर उनके मस्तिष्क को विकृत कर देती हैं। तुम्हें उन सबसे बचना है। मैं तुम्हें कहना चाहता हूं कि तुम महर्षि दयानन्द के शिष्य हो, उन्हीं के ग्रन्थों का मनन करो और उन्हीं से अपनी दिशा निर्धारित करो।

पर याद रखो, पुष्ट शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क वाले व्यक्ति ही भ्रष्ट आचरण के दोषी देखे गये हैं। मैं तुम्हें अच्छे चरित्र का भी उपदेश देना चाहता हूं। कोई भी ऐसा काम मत करो जिसे करने पर तुम्हें गर्व न हो। अच्छे की निशानी यही है कि व्यक्ति अपने किये हुए काम का हर जगह वर्णन कर सकता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को बता ही नहीं सकते तो वह निषिद्ध कर्म है, उससे बचो। उससे चरित्र दुष्ट होता है।

यह सच है कि आज के युग में सत्याचरण करने व ईमानदारी से रहने में अनेक कठिनाइयां आती हैं। पर तुम जिस ऊँची और महान् संस्था से सम्बद्ध हो और जिस देवपुरुष महर्षि दयानन्द की तुम संतान हो उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हों। यदि तुम्हारे किसी काम से किसी की हानि हो, उसे कभी न करो। महाभारत में धर्म की परिभाषा—"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" के रूप में की गई है। दूसरे के प्रति वही व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरे से चाहते हो। तुम्हारे किसी काम से किसी का दिल न दुखे। वरन् तुम्हारे कामों से दूसरों का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तुलसीदास ने 'परहित सरिस धरम न हिं कोई' कहकर मनुष्य को यही प्रेरणा दी थी। महर्षि दयानन्द ने भी अपने ग्रन्थों में वारवार यही कहा है कि संसार का उपकार करना सब का परमधर्म है।

मैं यह सब तुम्हें इसलिए कह रहा हूं कि देश का युवा वर्ग आज किंकर्तव्यविमूढ है, वह कुछ करना चाहता है, पर उसे सूझता नहीं है। उसके सामने आज कोई आदर्श नहीं है। मुझे विश्वास है कि दयानन्द के शिष्य उसके लिए आदर्श सिद्ध होंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतन्त्र कराने के लिए इस देश के हजारों युवकों ने प्राणों की आहुति दी थी। आर्यसमाज के सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान् योगदान दिया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश में इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रचार विदेशों में भी किया, जिससे देश का स्वाभिमान जागा। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द सरदार अजीतसिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, डा० रोशनसिंह जी, सरदार भगतसिंह, चौ० मुख्त्यारसिंह श्री हरविलास शारदा तथा अन्य अनेक स्वतन्त्रता-प्रेमियों ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान किया।

मालाबार के मोपला-विद्रोह, राजस्थान व बंगाल के अकाल, बिहार के भूकम्प, हैदराबाद व सिन्ध सत्याग्रह देश-विभाजन और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन् १९५७ में पंजाब में हिन्दी-रक्षा-आन्दोलन आदि द्वारा आर्य युवकों ने सदा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया।

देश को स्वतन्त्रता दिलाने में, देश की कुरीतियों व अन्ध-विश्वासों को विनष्ट करने में, देश की शिक्षा-प्रणाली में भारतीयता का स्वर भरने में, स्त्री जाति के उद्धार में, दलित एवं अछूत कहीं जाने वाली जातियों के उत्थान में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रकट करने में तथा अपने देश के गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठों को उजागर करने में आर्य युवकों का कार्य अविस्मरणीय है।

क्या तुम आर्यसमाज के गरिमापूर्ण इतिहास को स्मरण करके उसी प्रकार का आदर्श प्रस्तुत नहीं कर सकते? निश्चित कर सकते हो। यदि मन में ऊँची भावना हो। हृदय में यौवन हिलोरे ले रहा हो, मस्तिष्क में उथल-पुथल हो तो सब कुछ हो सकता है।

आज का युवक अपने महापुरुषों से, देश के गौरवपूर्ण इतिहास से, अपने प्रेरक पर्वों से कह चुका है। आर्यसमाज उन्हे उसी जड़ से फिर से जोड़ना चाहता है। पर यह काम केवल उपदेशों से होने वाला नही है। इसके लिए उदाहरण चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उनके लिए उदाहरण बनोगे और उनका मार्ग दर्शन करोगे।

युवा वर्ष में भी तुमने यौवन के वास्तविक आदर्शों को अपने यौवन में धारण कर लिया तो उससे जहा तुम्हारा अपना कल्याण होगा, आर्य समाज का नाम ऊँचा होगा। यह राष्ट्र भी समुन्नत होगा। विश्व को एक नई दिशा प्राप्त होगी। आओ! मेरे वीरो, कमर कस लो। एक बार संकल्प करने की आवश्यकता है फिर मंजिल तुम्हारे कदम चूमेगी।

डा० प्रशांत वेदालंकार
७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

गाली देनेवाली पुस्तक जब्त

मेरठ विश्वविद्यालय के श्री गर्ग ने महर्षि दयानन्द को गालियां देते हुए एक पुस्तक लिखी थी। श्री गर्ग को यह आशा थी कि यदि वह किसी उच्च ऋषि-महर्षि पर आक्षेप कर दे, तो उसका आसन समाज में ऊँचा हो सकता है। किन्तु हुआ इससे विपरीत। आर्यसमाज और सनातन कहे जाने वाले सभी लोगों में इस कार्य की निन्दा हुई, अन्ततः पुस्तक को जब्त करना पड़ा। किसी भी समाज सुधारक के लिए अपशब्दों का प्रयोग करना सर्वथा अभद्रता है। जनता इसे कैसे सहन कर सकती है।

अतः जिन लोगों का हाथ गर्ग जी के इस पुस्तक को जब्त कराने में है, उन सब को धन्यवाद दिया जाता है, जिससे कभी भी किसी द्वारा ऐसा कुकर्म न किया जा सके। ऐसे मामलों में प्रत्येक को प्रतिक्षण सावधान रहना चाहिए। इससे बुराई को न सहने वाला पाप से बच जाता है।
अन्यथा अनदेखी करने वाले भी अच्छे नहीं माने जाते।

वेदानन्द वेदवागीश

सोनीपत में वेद-प्रचार

सोनीपत : वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत का इस बार मासिक यज्ञ श्री मास्टर मेघराज कथूरिया के गृह स्थान अशोक नगर (सोनीपत) में हुआ। जिस में भारी संख्या में आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। हवन के पश्चात् श्री 'राघव' जी के प्रभावशाली भजन हुए पुरोहित शास्त्री जी दिल्ली से विशेष निमन्त्रण पर पधारे। आपका व्याख्यान सुनकर श्रोतागण मुग्ध हो उठे। नाज सोनीपती की कविता जो मौका के अनुसार थी, छाई रही। इस सारे यज्ञ का व्यय श्री मेघराज जी ने किया। उनके तीनों सुपुत्र 'रूप', यश, रत्न जी भी यजमान रूप में विराजमान रहे। लोगों ने हार्दिक आशीर्वाद दिए। अन्त में देशी घी के हलवे का प्रसाद वितरित किया गया। शान्तिपाठ के बाद कार्यवाही सफलतापूर्वक समाप्त हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० नं० P/RTR 49 फोन ४८१२ १३,०८५



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४ १४ दिसम्बर १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

वशीकरण-मन्त्र

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमन् भूयासं मधुसन्दृशः॥ अथर्ववेद १।३४।३।

प्रस्तुत मन्त्र चार वाक्यों में विभक्त है, 'मधुमन्मे निक्रमणम्' मन्त्र का प्रथम वाक्य है। 'मधुमत् मे निक्रमण वा मे निक्रमणं मधुमत्।' निक्रमणं का अर्थ है निकलना, गति करना, व्यवहार करना, मधुमत् का अर्थ है मधु से युक्त, मधु सदृश, मधु जैसा मीठा। सम्पूर्ण वाक्य का अर्थ हुआ, मेरा व्यवहार मधुमय, मिठासयुक्त अर्थात् मीठा हो। दूसरे शब्दो मे 'मेरे व्यवहार मे कटुता न हो।'

व्यवहार का मिठास सबको प्यारा लगता है, सबको पसन्द आता है, व्यवहार की कटुता कोई भी पसन्द नही करता। मीठा व्यवहार करनेवाले के सब प्रशसक होते है, उससे सब स्नेह करते है। कटु व्यवहार करनेवाले के लोग विरोधी हो जाते है, उसमे घृणा करने लग जाते है। मनुष्य का जीवन एकाकी जीवन नही है क्योकि उस का कार्य अकेले-अकेले चल सकता तो मनुष्य नगर न बसाता अपितु भेड़ियो और सिहों की भाँति पृथक्-पृथक् रहा करता किन्तु क्योकि उसका कार्य अकेले-अकेले चलता नही अत एव वह मिलजुल कर तथा एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करके रहना पसन्द करता है एतदर्थमेव 'मनुष्य सामाजिक प्राणी है' ऐसा कहा जाता है।

मनुष्य की सामाजिकता तभी प्रशसनीय है, जब उसका व्यवहार मिठास से परिपूर्ण हो। यदि व्यवहार में मिठास नही तो सामाजिकता क्या रही? एक दूसरे के पास तो अनेक पशुओ को बांध दिया जाता है, परन्तु इससे वह सामाजिक नही बन जाते। सामाजिकता तो मिठास-युक्त व्यवहार मे निहित है। व्यवहार का मिठास सामाजिकता की सूई है और व्यावहारिक कटुता सामाजिकता की कैंची।

जो उधार लेकर देना न जानता हो, उसे कौन अच्छा कहेगा? अच्छा तो वह भी नही कहलाता, जो उधार लेकर दे तो देता है किन्तु नियत समय पर अपने वचन का पालन करके नही देता। बहुतो की तो आदत इतनी बिगड़ी हुई होती है कि वह लेकर देना नही जानते, सो बात तो रही एक ओर अपितु देनेवाले के मागने पर लड़ने-मरने को तैयार हो जाते है, यह व्यवहार की कटुता होती है। ऐसे व्यक्ति समाज मे सर्वदा हीन दृष्टि से देखे जाते है। जो लिया हुआ नियत समय पर पहुंचा देते हैं और यदि परिस्थितिवश नियत समय पर नही पहुचा पाते तो देनेवाले से मिलकर उसे परिस्थिति से अवगत करा देते हैं और उससे थोड़े समय की और मांग करते है तथा यथासम्भव शीघ्र ही देय धन को उसके स्वामी के पास पहुंचा देते हैं। उनका जीवन इस व्यावहारिक मधुमयता के कारण मधुमय बना रहता है तथा समाज में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहती है।

जो व्यक्ति उठने-बैठने, चलते-फिरते चञ्चलता, असभ्यता, उद्दण्डता आदि का प्रदर्शन करता है, वह अच्छा आदमी नही होता। जो व्यक्ति प्रत्येक समय शिष्टता, सभ्यता, सौम्यता और गम्भीरता प्रदर्शित करता है, वह मधुमयता का प्रसार करता है। उसका यह मधुमय व्यवहार देखनेवालों को बलात् उसकी ओर आकर्षित करता है। सत्य बात तो यह है कि इसी का नाम मानवता है, इससे विपरीत तो पशुत्व ही है। जिस व्यवहार से मानव अन्यो को अपनी ओर आकर्षित कर सके, अपना बना सके, वही सामाजिकता का सूत्र है। जिससे परस्पर स्नेह और सद्भाव उत्पन्न हो, उसे ही सामाजिकता कहते हैं, उससे इतर को नही। स्नेह और सद्भावनामय व्यवहार मनुष्य को मनुष्य के निकट लाते है, परिणामस्वरूप मेल बढता है। जिसमे मेल बढे, वही मधुमयता है तथा जिसमे बिलगाव और विरोध बढे वही कटुता है। कटुता में असामाजिकता और मधुमयता में सामाजिकता निवास करती है अतः वेद के निर्देशानुसार समस्त मानवो को अपना व्यवहार मधुमय बनाना चाहिये, जिसमें मानव समाज मधुमयता से ओत-प्रोत होकर सम्पूर्ण वातावरण ही सुखमय हो जाय।

मन्त्र का दूसरा वाक्य है 'मधुमन्मे परायणम्'। मधुमत् मे परायण अथवा मे परायण मधुमत्। परायण का अर्थ है दूर जाना अथवा परलोक गमन करना। परलोक गमन भी दूर जाना ही है। जिसका निक्रमण मधुमय होगा, उसका परायण अवश्यमेव मधुमय होगा। जिसका निक्रमण ही मधुमय न हो, उसका परायण मधुमय कहा से होगा? जो व्यक्ति जीवन भर लोगो से उधार लेकर खाता रहा हो और देने का कभी नाम न लिया हो। कभी किसी पडौसी के साथ भी जिसने प्रेम और सद्भावनामय व्यवहार न किया हो। जिस के किसी भी व्यवहार से कभी भी शिष्टता, सभ्यता, नम्रता और गम्भीरता न प्रदर्शित हुई हो, भला उसका परायण कभी मधुमय हो सकता है? परायण तो मधुमय उसी का होता है, जिसने सदैव मधुमयता का व्यवहार किया हो।

ऐसा व्यक्ति जिसने कभी मधुमय व्यवहार न किया हो, यदि कभी एक स्थान से दूसरे स्थान को अपनी नौकरी के कारण स्थानान्तरित होकर जाने लगे तो उसके साथी और विशेषकर उसके अधीनस्थ कर्मचारी बडे प्रसन्न होते है तथा कहते है, अच्छा हुआ, इस दुष्ट ने बडा तग कर रक्खा था, परमात्मा फिर कभी इसका मुह न दिखाये। इसी प्रकार का कोई किरायेदार जब मकान छोड़कर जाता हो तो पड़ौसी कहते है, बडे दिनों के बाद भगवान ने सुनी, बडा ही दुष्ट है, सभी का नाक मे दम कर रक्खा था इत्यादि। किन्तु यदि कोई ऐसा व्यक्ति जिसका जीवन मधुमयता से ओत-प्रोत रहा हो, स्थानान्तरित होकर किसी दूसरे स्थान को जा रहा हो तो लोग समारोह करके अत्यन्त सौहार्द तथा भावपूर्ण विदाई देते हैं नेत्रों में अश्रु भरे हुए अवरुद्ध कण्ठ से विदाई के अवसर पर प्राय विदा करने वाले कहा करते हैं, अजी क्या पूछिये? देवता है, कभी किसी से बुरा नही रहा। क्या उच्चाधिकारी? क्या अधीनस्थ कर्मचारी? सभी के साथ ऐसा प्रेममय, ऐसा मधुमय व्यवहार रक्खा कि बस ... ...।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

रामायण तथा श्री रामचन्द्र का अमर आदर्श जीवन

—निहालसिंह आर्य

रामायण का धर्म ग्रन्थ समूचे भारत तथा विदेशों में भी समादर से पढ़ा जाता है। इस ग्रन्थ के रचयिता महर्षि वाल्मीकि थे। जिन्हें आधुनिक विद्वान् आदि कवि मानते हैं। रामायण साहित्य का काव्यमय ऐतिहासिक अति प्रसिद्ध धर्म ग्रन्थ है जो श्लोकबद्ध संस्कृत में है। जिसको पढ़कर लाखों मनुष्य प्रेरित होकर धर्मात्मा बन गए। इसी के अनुसार विक्रम की सतरहवीं शती में गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना की थी परन्तु इसमें प्रक्षेप बहुत हो गया है। महर्षि दयानन्द और पं० लेखराम ने इस पुस्तक को मान्यता नहीं दी क्योंकि इसमें कुम्भकर्ण की चारकोश लम्बी मूछ तथा सोलह कोश लम्बी नाक आदि झूठे गपोड़े भी बहुत हैं। पं० लेखराम ने इस हिन्दी पुस्तक की एक असली प्रति भी खोज ली थी। पता नहीं वह कहां गई।

प्रश्न—क्या वाल्मीकि ऋषि ने रामायण ग्रन्थ को श्रीराम से दश हजार वर्ष पूर्व रचा था ?

उत्तर—नहीं, उन्होंने इसे श्रीराम की जबानी में उनके दिव्य आदर्श गुण नारद मुनि से जानकर ही लिखा था। जब उन्होंने सर्वप्रथम यह श्लोक लिखा—

को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रत: ।।

अत: नारद ने गुणसम्पन्न, पराक्रमी, धर्मज्ञाता, कृतज्ञ, सत्यवक्ता, दृढव्रती, धर्यवान्, परमेश्वरोपासक दाशरथि राम ही बताया था।

प्रश्न—रामायण का क्या अर्थ है ?

उत्तर—तत्कालीन समाज राज और लोक में राम का यशस्वी महत्त्व, मानमर्यादा और आदर्श स्थान ही रामायण (राम+अयन) का अर्थ है।

प्रश्न—रामायण मे मूल श्लोक कितने हैं।

उत्तर—रामायण में छ: काण्ड है सातवा पीछे जो है। इन छ: काण्डों में १९७८५ श्लोक है जिनमे १७८२ प्रक्षिप्त है अत: मूल श्लोक अठारह हजार (१८०००) ही हैं जो अब अनुमान बढ़कर २४००० हो गए हैं।

प्रश्न—क्या राम भरत आदि चारो भाइयों में घनिष्ठ प्रेम था ?

उत्तर—हां, चारों भाइयो में घनिष्ठ प्रेम था। शेष तीनों भाई राम मे और रामचन्द्र जी तीनों से सच्चा प्रेम रखते थे। चारो में राम सर्वाधिक बलवान्, शूरवीर गम्भीर धीर तथा विद्वान् राज्याधिकारी थे। उनके राजतिलक के समय भरत तथा शत्रुघ्न अपने नाना अश्वपति के घर गए हुए थे। बड़े धर्मात्मा भ्राता राम का बनवास सुनकर भरत ने दु:ख से अपनी माता कैकेयी को धिक्कार कर बनमार्ग से श्रीराम को वापिस लाने का भरसक प्रयत्न किया और राम के कहने और दृढ प्रतिज्ञा से भरत ने उनकी पादुका सिंहासन पर रख दुखी मन से अयोध्या का शासन चलाया। लक्ष्मण भी प्रेमवश वन गमन में राम सीता के साथ १४ वर्ष तक रहे थे।

प्रश्न—श्री रामचन्द्र की विद्या कितनी थी ?

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता ।
वेदवेदांगतत्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठित: ।।

(वा० रा० सर्ग १।१४)।।

अर्थात् धर्म की रक्षा करने और प्रजापालन में तत्पर श्रीराम चारों वेद, छ: वेदांग तथा निष्ठापूर्वक धनुर्वेद के तत्त्वज्ञाता थे और छ: दर्शनों के भी ज्ञाता थे। उनकी विद्या रावण से कम नहीं थी।

प्रश्न—क्या रावण ने ७२ चौकड़ी राज्य किया था ?

उत्तर राष्ट्रीय महादेव महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि रघुगण राज्य के अधीन भी रावण था। फिर विरुद्ध होने से राम ने रावण को मार विभीषण को लंका का राजा बनाकर मृत रावण की पत्नी मन्दोदरी से उसका नियोग (करेपा) भी करा दिया। अत: राजा रघु से राम के समय तक रावण ने ७२×४=२८८ वर्ष राज्य किया होगा। चारों युगों की चतुर्युगी को भी चौकड़ी कहते है जिसमें ४३२००००, वर्ष होते हैं परन्तु वेदों में मनुष्य को आयु २००-४०० वर्ष ही बताई है।

प्रश्न—क्या राम बनवास में भी तपस्वी रहे थे ?

उत्तर—हां, राम लक्ष्मण सीता ने तपस्वी जीवन बिताकर वन के फूल-फल, मूल कन्द खाए थे। बनगमन के समय राजसी वस्त्र उतार चीर धारण कर कन्था (कुदाल) और पिटारी रानी कैकेयी से लेकर माता कौशल्या से तपस्वी जीवन की प्रतिज्ञा कर वन में गए। तीनों ने प्रयाग स्थित भारद्वाज ऋषि के आश्रम का भी भोजन नहीं खाया। प्रात: सायं नित्य प्रति ईश्वरोपासना सन्ध्या यज्ञ व्यायाम अवश्य करते थे (वे तीन ही वन में गए और रावण को मार तीन ही निस्सन्तान ब्रह्मचर्य सहित वापिस अयोध्या आए थे।

प्रश्न—श्रीराम का जन्म कब हुआ था ?

उत्तर - श्रीराम का शुभ जन्म चैत्र शुक्ला नवमी, पनर्वसु नक्षत्र, पांचग्रह अपने उच्च स्थान में, अश्वत्थ कर्क लग्न में बृहस्पति चन्द्रमा के लग्न में हुआ था।

प्रश्न—सीता क्या क्षेत्री हलके खुड में पड़ी पाई थी क्या अयोनिज थी ?

उत्तर - नहीं, सीता के पिता राजा जनक थे। उनकी माता योगिनी थी और सृष्टिक्रमानुसार योनिज थी।

प्रश्न—सीता का जन्म दिन क्या है ?

उत्तर—सीता का जन्म दिन फाल्गुन कृष्ण अष्टमी है।

प्रश्न—रामायण को कितना समय व्यतीत हो चुका है ?

उत्तर—रामायण तथा मर्यादा पुरुषोतम राम का होना सामान्यतया त्रेता युग मे माना जाता है अत: त्रेता के अन्तिम से बीच में पूरा द्वापर चले जाने से अब तक पौने नौ लाख वर्ष बीते मानते है। परन्तु वायु पुराण के श्लोक—

चतुर्विंशे त्रेता युगे रावणस्तपस: क्षयात् ।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगण: क्षयमीयिवान् ।।

के अनुसार पूज्य श्रद्धेय स्वर्गीय सिद्धान्ती जी ने इस बचन का कई अन्य ग्रन्थों से मेल मान फलस्वरूप रामायण काल चौबीसवीं चतुर्युगी के त्रेता युग का अन्तिम समय बताया है। इस गणना से अब अठाईसवीं चतुर्युगी के कलियुग के ५०८४ वर्ष चले गए तो चार चतुर्युगी का काल अर्थात्—

४३२० ००, ×४ =	१७२८००००, वर्ष
बाच में द्वापर काल =	८६४००० ,,
वर्तमान कलियुग का बीता काल =	५०८४ ,,

अनुमान एक करोड़ इकासो लाख उनचास हजार चौरासी १८१४९०८४ वर्ष बीत चुके हैं।

वर्तमान कलियुग के बीतने तथा ४३ अन्य चतुर्युगियों के बीतने पर तब ७१ चतुर्युगी का यह सातवां वैवस्वत मन्वन्तर पूरा होने से आधा कल्प (सृष्टि) पूरी होगी।

प्रश्न—क्या अयोध्या वापिस आ राजा बन राम ने एक धोबी के व्यग्य से सीता वन में निकाल दी थी ?

उत्तर—यह अनभिज्ञ लोगों का कल्पनायुक्त मिथ्या दोषारोपण है। राम और सीता दोनों का विवाह पूर्ण प्रोति से गुण कर्म स्वभाव के साम्य से हुआ था। दोनों में सदाचार, ईश्वर उपासना, जितेन्द्रियता समान होने से परस्पर पूर्ण प्रीति, श्रद्धा, विश्वास अटूट था। वियोग और पुर्नमिलन में दोनों शोकातुर तथा प्रसन्न हुए थे। सीता जी राम से आज्ञा लेकर ईश्वरोपासना के लिए एकान्तवासार्थ स्वयं वन में गई थी।

प्रश्न – क्या राम सुत लव सीता से और कुश कुशा से हुआ।

उत्तर—राम के ये दोनों पुत्र सीता की कुक्षि से सृष्टि नियम से ही उत्पन्न, वाल्मीकि के आश्रम में शिक्षित और पुष्ट है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हरयाणा रक्षा वाहिनी द्वारा न्याय-यात्रा का समर्थन तथा सहयोग

—प्रो० शेरसिंह का प्रेस वक्तव्य

रोहतक ११ दिसम्बर, हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने प्रेस वक्तव्य द्वारा दैनिक ट्रिब्यून मे छपे उस समाचार का खण्डन किया है जिसमें लिखा था कि हरयाणा के हितो की रक्षार्थ आन्दोलन मे हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह आदि के सम्मिलित न होने पर जनता में रोष है।

प्रो० शेरसिंह ने कहा है कि हरयाणा के हितों की रक्षा का अभियान सर्वप्रथम हरयाणा रक्षा वाहिनी के मच से ही आरम्भ हुआ है। तब से निरन्तर हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए जिलेवार बैठकों, सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करके तथा मैथ्यू आयोग के सामने ज्ञापन प्रस्तुत करके और अकालियों के उत्तर का प्रत्युत्तर देकर एव बहस में भाग लेकर हरयाणा का पक्ष तथ्यो के साथ रखा गया है। हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र में भी दो-तीन बार शिष्ट-मण्डल तथा प्रचारक भेजकर हरयाणा मे मिलाने की प्रेरणा की गई है। हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए विपक्षी दलों ने भी "हरयाणा सघर्ष समिति" के नाम से आन्दोलन चला रखा है। परन्तु हरयाणा के हित किसी एक विशेष दल से सम्बन्धित नहीं हैं। यह आन्दोलन सभी दलों के सहयोग से दलगत राजनीति से ऊपर उठकर ही सफल हो सकता है। विपक्षी दलो के प्रतिनिधियो द्वारा यह आश्वासन मिलने पर कि न्याय यात्रा सभी दलो की ओर से सगठित रूप में "हरयाणा रक्षा समिति" के नाम से आयोजित की जा रही है। अत: इस न्याय युद्ध मे हरयाणा रक्षा वाहिनी ने इसका पूरा समर्थन तथा सहयोग देने का निश्चय किया है। चौ० देवीलाल के नेतृत्व मे न्याय यात्रा का १८ दिसम्बर को रक्षा वाहिनी की ओर से रोहतक में स्वागत किया जा रहा है। न्याय युद्ध को सफल करने के लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी के सभी कार्यकर्त्ता तथा अधिकारी-गण दिन-रात कार्य में जुटे हुए हैं। इस सम्बन्ध मे मेरी तथा रक्षा वाहिनी के सरक्षक स्वामी ओमानन्द जी की ओर से जनता के नाम अपील भी प्रसारित की जा चुकी है।

प्रो० शेरसिंह ने अपने वक्तव्य के अन्त मे कहा कि कुछ ऐसे तत्त्व हैं, जिन्हे हरयाणा के हितो की चिन्ता नही है। वे इस प्रकार के भ्रान्तिपूर्ण समाचार दिलाकर इस न्याय युद्ध को असफल करने के प्रयास कर रहे है। जबकि हरयाणा के हितो के लिए हम बिना किसी भेदभाव तथा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर एकजुट होकर सघर्ष कर रहे है। मैं स्वय अपने सहयोगियों के साथ न्याय-यात्रियों के स्वागत हेतु १६ दिसम्बर को पूरे दल-बल के साथ वोट क्लब नई दिल्ली में न्याय यात्रा मे सम्मिलित रहूगा।

—रघुबीरसिंह प्रचार मन्त्री

आर्यनेता आचार्य पृथ्वीसिंह का स्वर्गवास

आर्यसमाज के प्रसिद्ध वयोवृद्ध नेता आचार्य पृथ्वीसिह का १० दिसम्बर को अपने निवास खरड़ निकट चण्डीगढ मे लम्बी बीमारी के पश्चात् ८० वष की आयु मे निधन हो गया। आप आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान रह चुके हैं। आपने स्वतन्त्रता सग्राम मे भी बढचढ कर भाग लिया था और सदा ही दलित वर्ग के उत्थान हेतु कार्यों मे अग्रणी रहे थे। उनके रिक्त स्थान को पूर्ति सम्भव नही है।

उनके निधन का दुखद समाचार सुनकर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह तथा उपप्रधान महाशय भरतसिह वानप्रस्थी ने उनके परिवार को शोक सवेदना भेजी है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग में दुःखी जनो को धैर्य प्रधान करे।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

फाजिल्का तहसील हरियाणा सम्मिलन समिति अबोहर

मैथ्यू आयोग को 4-11-85 को हाथों-हाथ दिये गये पत्र की प्रतिलिपि

श्री प्रो० शेरसिह जी,

नमस्ते।

श्री प्रो० जिज्ञासु जी द्वारा आपका कुशल-समाचार मिला। आप कुछ अस्वस्थ थे, आशा है अब ठीक होंगे। 3 नवम्बर की हरियाणा रक्षा वाहिनी की बैठक की सूचना भी श्री जिज्ञासु जी द्वारा मिली। यहा ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि मै इस समय इलाके से बाहर नहीं जा सकता। पिछले 3-4 दिन से पजाब सरकार ने पचायतो मे पजाब के पक्ष मे प्रस्ताव कराने का जोरदार अभियान शुरू कर दिया। डी० सी० (फिरोजपुर) फाजल्का मे डेरा डाले बैठा है तथा एस० डी० एम०, बी० डी० ओ० मजिस्ट्रेटो आदि को सख्त आदेश दिए है कि सब पचायतो मे इस आशय के प्रस्ताव पास कराये कि हम पजाबी भाषी है, अत: पजाब मे ही रहना चाहते है बी० डी० ओ० गाव-गाव मे घूम कर कोरे कागज पर सरपचो से हस्ताक्षर कराने के लिए जबरन मजबूर कर रहा है कि सरपच का बयान अपनी मर्जी से लिख लेगा। जो सरपच कोरे कागज पर हस्ताक्षर करने मे आना-कानी करता है, उसे सख्त धमकी दी जाती है कि तुम्हे सस्पैन्ड कर देंगे, तुम्हारे खिलाफ केस कर देंगे तुम्हारी पचायत तोड देंगे, तुम्हारी जमीन मुरब्बा मे निकाल देंगे, तुमने सरकार से खाद आदि के लिए तकावी ली है, तो उसकी वसूली के लिए तुम्हे जेल मे डाल देंगे आदि बातो द्वारा इलाके के लोगो मे दहशत पैदा कर दी जिससे कई सरपच तो घर छोड कर राजस्थान, हरियाणा आदि मे अपने रिश्तेदारो के पास चले गए। हम रात-दिन दौड़धूप करके गावो मे लगातार चक्कर लगाकर लोगो को हौसला रखने के लिए प्रेरणा दे रहे है।

इस इलाके के लोग पजाब सरकार की दमनकारी नीति का कैसे मुकाबला करे, अत ऐसी स्थिति मे हरयाणा के नेताओ व कार्यकर्त्ताओ को बडी सख्या मे फौरन यहा पहुच कर गावो का दौरा करना चाहिए। इस सम्बन्ध मे आप दिल्ली के समाचार पत्रो मे वक्तव्य निकलवाइयेगा। प्रधान मन्त्री व गृह मन्त्री से भी मिलकर पजाब सरकार की इस दमनकारी नीति के विरुद्ध रोष प्रकट कीजिए। हरियाणा के मुख्य मन्त्री तथा अन्य नेताओ से भी कहिए कि वे केन्द्रीय सरकार पर जोर डाले कि वह पजाब सरकार की इस तानाशाही को रुकवाये। ये सब काम अति शीघ्र उठाये जाने आवश्यक है।

इस सम्बन्ध मे २६-१०-८५ को मैथ्यू आयोग को तार दिया था तथा उसकी प्रति श्री आर० एस० मलिक सैक्रेटरी B.A.C को तथा हरियाणा प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष चौ० बीरेन्द्रसिह को भी भेजी थी। आप इन से सम्पर्क कर उन्हे कहे कि इस क्षेत्र के ऊपर किये जा रहे अत्याचार को शीघ्र बन्द कराये।

कृपया इस सम्बन्ध मे मुझे अपने विचार से शीघ्र सूचित कीजिए तथा स्वास्थ्य ठीक है तो अन्य कार्यकर्त्ताओं सहित इस क्षेत्र का दौरा कीजिए।

भवदीय—तेगराम
दिनाक २९-१०-८५

श्री प्रो० शेरसिह जी,
एम० १४, साकेत,
मालवीय नगर, नई दिल्ली।

सूचना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला गोण्डा द्वारा वैदिक धर्म प्रचार हेतु

※ आर्य सम्मेलन का आयोजन ※

दिनाक १४ से १७-१२-८५ तक स्थान रेलवेस्टेशन (बडगाव) गोण्डा जिला मे आयोजित किया जा रहा है।

(जिले की समस्त आर्यसमाजो एव सम्बद्ध सस्थाओ के सहयोग से) देश के गणमान्य विद्वान् भाग ले रहे है।

१९ नवम्बर को महारानी लक्ष्मीबाई के जन्म दिन पर—

मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी

ब्रह्मचारी संजयदेव वैदिक आश्रम दातौली (भिवानी) हरयाणा

विदेशी इतिहासकारों तथा उनके अन्धानुयायी भारतीय इतिहासकारों ने पवित्र आर्य संस्कृति तथा सभ्यता को मिटाने का कितना ही घिनौना प्रयास क्यों न किया हो—किन्तु जब तक चित्तौड़, बुन्देलखण्ड और सिंहगढ़ का नाम इतिहास में विद्यमान है, मर्यादापुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, महर्षि दयानन्द, महारानी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब, सुभाष, बिस्मिल आदि वीरों का नाम भारतीयों के हृदय-स्थल में अंकित है—तब तक स्वधर्म और स्वराज्य के सिद्धान्त भी भारतीय आर्यों के हृदय-स्थल से मिट नहीं सकते।

आर्य विद्वानों द्वारा किए गए शोध कार्य से यह सिद्ध हो चुका है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग ही नहीं लिया, अपितु वे तथा उनके संन्यास गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी, विद्या-गुरु स्वामी विरजानन्द जी इस संग्राम के निर्देशक थे। पवित्र आर्य संस्कृति के रक्षक इन संन्यासियों के निर्देशन में तथा पेशवा नाना साहेब की अध्यक्षता में महारानी लक्ष्मीबाई ने विदेशी लुटेरों के छक्के छुड़ा दिए।

तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने उन सब राज्यों को ईस्ट इण्डिया कम्पनी में मिलाने की नीति अपनाई, जिन राज्यों का अपना कोई उत्तराधिकारी नहीं था। झांसी के लिए भी यही नीति अपनाई गई। वहां रानी लक्ष्मीबाई ने सिंह गर्जना करते हुए कहा—"क्या मैं झांसी छोड़ूं? नहीं छोड़ूंगी। किसी की हिम्मत हो तो देख ले, मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।"

महारानी लक्ष्मीबाई ने यह प्रण कर लिया था कि जब तक उसके अन्दर रक्त की एक बूंद भी बाकी है—झांसी को कोई छीनने का साहस नहीं कर सकता। सचमुच वह वीरांगना साक्षात् रणचण्डी बनकर निकली तथा अंग्रेजी सेना के छक्के छुड़ा दिए।

ग्यारह महीने तक गूंजने वाले इस क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड गूंज उठा था। विन्ध्य से जमुना तक ब्रिटिश सत्ता का कोई चिन्ह दिखाई नहीं दे रहा था। अब तो ब्राह्मण से शूद्र तक तथा साहूकार से गरीब तक सभी की एक ही मांग थी, एक ही इच्छा थी—स्वाधीनता प्राप्ति। इन सबको एकसूत्र में पिरोने का कार्य महर्षि दयानन्द आदि संन्यासियों के निर्देशन में नाना साहेब पेशवा और महारानी लक्ष्मीबाई ने किया। लक्ष्मीबाई की आवाज में वही रटना थी "मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।"

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जी ने लिखा है, "संसार के सामने दृढ़ता पूर्वक कहा गया 'नहीं' शब्द बहुत कम आया है। भारत में उदारमना लोगों के मुंह से अब तक यही शब्द सुनाई देता आया है—मैं दूंगा। परन्तु लक्ष्मीबाई ने यह विलक्षण जयघोष किया—मैं नहीं दूंगी। काश! यह आवाज भारत के हर मुख से गूंजी होती।"

वीर सावरकर जी ने इस वीरांगना के बारे में आगे लिखा है—'सिंहासन पर नहीं चिता पर लक्ष्मी के गले में स्वतन्त्रता की कौस्तुभमणि विराजमान है। रणभूमि में उत्सर्ग करके रानी ने मृत्यु का दरवाजा तोड़ दिया है। अब भला कोई मानव उसका क्या पीछा करेगा?

"इस प्रकार रानी लक्ष्मीबाई लड़ी और अपना लक्ष्य पूरा कर गई। ऐसा एक जीवन सम्पूर्ण राष्ट्र का मुख उज्ज्वल करता है। वह सब सद्गुणों का निचोड़ थी। एक महिला जिसने जीवन के २३ बसन्त ही देखे थे, कोमलांगी, मधुर, विशुद्ध चरित्र, पुरुषों में भी न पाई जाने वाली संगठनकुशलता से ओतप्रोत थी। उसके हृदय में देशभक्ति रत्नदीप की तरह प्रकाशमान थी। अपने देश भारत पर उसे गर्व था। युद्ध कौशल में अद्वितीय थी। विश्व में शायद ही कोई देश ऐसा होगा, जो ऐसी देवी को अपनी कन्या और रानी कहने का अधिकारी होगा। इगलैण्ड के भाग्य में यह सम्मान अब तक नहीं बदा है। इटली की क्रान्ति में ऊंचे शौर्य और आदर्श का परिचय मिलता है, फिर भी इतने वैभवपूर्ण समय में इटली एक लक्ष्मी को पैदा नहीं कर सका।

"भारत का यह अहोभाग्य है कि ऐसा स्त्रीरत्न यहां पैदा हुआ। उसका शरीर बाबा गंगादास की झोंपड़ी में प्रज्ज्वलित ज्वाला में दमक रहा है। पर यह रत्नदीप हमारी मातृभूमि भी कदाचित् पैदा नहीं कर सकती यदि यह स्वतन्त्रता संग्राम का महायज्ञ न रचा जाता।"

(१८५७ का स्वातन्त्र्य समर)

सचमुच ही इस वीरांगना ने सावित्री, सीता, सिसोदिया, दुर्गा जैसी वीरांगनाओं द्वारा प्रदत्त मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने जीवन को पातिव्रत्य धर्म पालन करते हुए देश और धर्म की भेंट चढ़ा दिया।

आज जबकि चारों ओर राष्ट्रद्रोह की आवाजें गूंज रही हैं, माँ भारती की आखों में आंसू बह रहे हैं, वैदिक संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करने के हर सम्भव प्रयास 'जयचन्द' और 'मानसिंह' की 'अवैध गद्दार औलादों' द्वारा हो रहे हैं—आर्यसमाज को रामप्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह जैसे युवकों का निर्माण करना होगा। तथा महारानी लक्ष्मीबाई जैसी देवियां धर्मयुद्ध करने के लिए तैयार करनी होंगी।

क्या हमारे आर्यसमाज के संचालक, आर्य राष्ट्र की मांग करने-वाले, आर्यसमाज का नेतृत्व करनेवाले तन-मन-जीवन से आर्य हैं? या मात्र आर्यत्व पर भाषण देनेवाले हैं? क्या मात्र आर्यत्व पर भाषण देने से आर्यत्व की रक्षा हो जाएगी? परन्तु नहीं, आर्यत्व की रक्षा के लिए संघर्ष करना होगा और संघर्ष के लिए आगे लाना होगा—उस युवाशक्ति को जो अपना तन-मन-जीवन राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए समर्पित कर सके।

आज हमें यह संकल्प लेना होगा कि जब तक हमारे अन्दर रक्त की एक बूंद भी शेष है—पवित्र वैदिक संस्कृति, सभ्यता और माँ भारती की आन, बान और शान पर चोट नहीं आने देंगे। तभी १९ नवम्बर का यह महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म दिवस मनाना सार्थक हो सकेगा।

(शेष पृष्ठ १ का)

लोगों की इच्छा नहीं होती है कि यह सर्वदा यहीं रहे, हमसे कदापि पृथक् न हो। मानो कोई अपना सगा-सम्बन्धी छूट रहा हो। पड़ौस से जब कोई इस प्रकार का किरायेदार मकान छोड़कर जाने लगे, तब भी यही स्थिति होती है। जिन लोगों को इस प्रकार के पड़ौसियों और साथियों को विदा करने का अवसर प्राप्त हुआ है, वह जानते हैं उस स्थिति के विह्वलतापूर्ण आह्लाद को जब 'कोई मधुमय जीवन वाला व्यक्ति इह लोक लीला समाप्त कर संसार से विदा हो रहा हो तो उस समय पड़ौसियों पर जो बीतती है, उसका वर्णन लेखनी की शक्ति से बाहर की बात है।

मन्त्र का तीसरा वाक्य है 'वाचा वदामि मधुमत्' वाचा मधुमत् वदामि, वाणी से मधुमय (मीठा) बोलता हूं, वाणी से मीठा बोलूं या बोलता रहूं। वाणी के मिठास का बड़ा महत्त्व है। कोई कितने भी मधुमय व्यवहार वाला व्यक्ति हो, जहां वाणी से कटु बोला और बस—बस सारे किये-कराये पर पानी फिर गया। वाणी की कटुता अपनों को भी पराया बना देती है। वाणी की मधुरता परायों को भी अपना बना लेती है।

कागा काको धन हरे, कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाइ के, जग अपनो कर लेय॥

कोयल और कौवे में वाणी के अतिरिक्त और अन्तर ही क्या है? गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में—

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुं ओर।

मीठा बोलना मात्र ही वशीकरण है किन्तु वेद तो वाणी की मधुरता के साथ साथ व्यवहार की मधुरता का भी प्रतिपादन करता है। यदि वाणी की मधुरता के साथ व्यवहार में भी मधुरता हो तो 'स्वर्ण में सुगन्ध' वाली लोकोक्ति चरितार्थ हो जाए।

मन्त्र के अन्तिम वाक्य में कहा गया है 'भूयासं मधुसन्दृशः, मधुसन्दृशः भूयासम्, [अहं] मधु सन्दृशः भूयासम्, मैं मधु के समान दिखायी देने वाला हो जाऊं अर्थात् मेरे जीवन में लेशमात्र भी कटुता न रहे, मेरा जीवन सर्वाङ्गपूर्णरूपेण मधु जैसा अर्थात् मधुरतापूर्ण हो जाय।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

1—आर्य विद्यालय जीन्द शहर का वार्षिकोत्व रविवार 17-11-85 को आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में बड़े धूमधाम से मनाया गया। यह विद्यालय आर्यसमाज जीन्द शहर द्वारा चलाया जा रहा है। उत्सव पर मुख्य अतिथि श्री एस० पी० कटारिया उपायुक्त जीन्द थे, जिन्होने बच्चों में पुरस्कार भी बाटे। विद्यालय के नन्हे बच्चो ने वेदमन्त्र, आर्यसमाज के दश नियम, देशभक्ति, समाज सुधार विषयक सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। उत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

2—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के भूतपूर्व उपदेशक, ६२ वर्षीय वानप्रस्थी गणेशदत्त जी, जो आजकल भिवानी में रहते है। गिर पडने से चोट लगने के कारण अस्वस्थ होगए है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वे शीघ्र स्वस्थ हो जावे।

3—हरयाणा शुद्धि सभा के मन्त्री स्वामी सेवानन्द जी आर्यसमाज राधाकुण्ड जि० गोडा के सहयोग से 17 दिसम्बर को बडगाव में एक शुद्धिसभा का आयोजन करके पिछडे वर्ग को पुन. वैदिक धर्म में प्रविष्ट करेगे। इसी प्रकार ग्राम मात्रीगूजर जि० सहारनपुर मे भी हजारो मुसलमान-गूजरो ने पुन वैदिक धर्म को अपनाने का कार्यक्रम बनाया है।

4—केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा सभी विश्वविद्यालयो से सभी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमो को हिन्दी माध्यम मे पढाए जाने हेतु निवेदन किया है क्योकि भारत सरकार के लोक सेवा आयोग ने हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की छूट सभी परीक्षाओं मे दे दी है।

5—आर्यसमाज न्यू कालोनी गुडगाव मे श्री चौ० हरकिशनसिंह मलिक की हत्या पर एक शोक सभा द्वारा गहरा शोक प्रकट किया गया।

6—आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला बडा बाजार रोहतक मे डा० रामलाल मदान धर्मार्थ औषधालय आरम्भ हो गया है। जिसमे दवाओं की कोई कीमत नही ली जाएगी।

7—आर्यसमाज मन्दिर भाण्डवा जिला भिवानी, तथा आर्यसमाज मन्दिर कोसली के निर्माणाधीन आर्यसमाज के मन्दिरो के लिए जनता से दान देने की अपील की गई। दानी सज्जन सहायता करे। सभा मन्त्री

शराब बन्दी के बाद नाहरी ग्राम का उत्साह बढ़ा

जब से ग्राम नाहरी जि. सोनीपत मे आर्यसमाज का गठन हुआ है तब से नाहरी व आस-पास के ग्रामो मे वैदिक धर्म का प्रचार व शराब व दहेज के खिलाफ प्रचार खूब हो रहा है।

श्री उमरावसिंह, श्री रामस्वरूप, श्री नीतिदेव, श्री जितसिंह, रात दिन इस कार्य मे जुटे रहते है। हर रविवार को प्रात [illegible] वैदिक सतसग होता है और शाम के समय आस-पास के ग्रामो मे शराब बन्दी का प्रचार करने मे इन आर्यों का जत्था साइकिलों पर निकल पड़ता है।

इस सप्ताह से एक विशेष प्रोग्राम यह किया गया है स्वामी सत्पति जी परिव्राजक का गाव नाहरी मे दो दिनों तक वैदिक सत्सग कराया गया है। इसमें सैंकड़ो स्त्री पुरुषों व बच्चो ने बड़ी श्रद्धा से लाभ उठाया।

दिनाक 24-11-85 को गाव की सब से बडी नई चौपाल मे प्रात: सैंकडों ग्रामीणो की उपस्थिति मे हवन यज्ञ किया गया तथा वैदिक मान्यताओं पर स्वामी जी ने प्रवचन किया इससे पूर्व की सन्ध्या को स्वामी जी का आर्यसमाज को आगे बढाने का बड़ा सारगर्भित भाषण हुआ। रविवार की रात्री को भी स्वामी जी का गांव की नीमोवाली चौपाल में वैदिक योग के सम्बन्ध में प्रवचन हुआ। सर्दी की परवाह न करते हुए पचासों महिलाओं ने भी लाभ उठाया।

श्री रामस्वरूप जी ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि भविष्य मे भी वे हमें व आस-पास के ग्रामों को इसी प्रकार लाभान्वित करते रहे। स्वामी जी ने प्रार्थना स्वीकार कर ली।

होश्यारसिंह सत्यप्रिय
विश्व सेवक, नाहरी जि. सोनीपत

वेद विचार गोष्ठी

अजमेर 18-11-1985। परोपकारिणी सभा के तत्वावधान ऋषि मेले के अवसर पर मध्यान्ह सत्र में चर्चा की गई। रामस्वरूप संयोजक गोष्ठी ने कहा कि (1) ऋषिकृत वेद भाष्य उसी शैली में पूरा हो (2) सब भाषाओं में इसका अनुवाद हो (3) आक्षेपों का निराकरण हो (4) एक निर्धारित रूपरेखा अनुसार विभिन्न देशों के मूल वासियों में वैदिक धर्म के उपदेश की व्यवस्था हो। इन मुद्दों पर गम्भीर विचार करने के लिए लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिक शिक्षाशास्त्री स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे गोष्ठी हुई।

क्रमश: स्वामी ओमानन्द जी महाराज (प्रधान, परोपकारिणी सभा) सत्यप्रिय शास्त्री (हिसार), प० आनन्दप्रिय जी (बडौदा), डा० भवानी लाल जी भारतीय (चण्डीगढ), प्रो० शेरसिंह जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), वैद्य प० ब्रह्मानन्द जी (अजमेर), कुमारी सरोजिनी (आचार्या-कन्या गुरुकुल चित्तौड), प० अनन्तराम जी (ब्यावर), बजरग लाल जी (डीडियाणा), धर्मवीर जी (लानडो), बशीलाल जी (देवली), मोहन लाल शारदा (शाहपुरा-भीलवाडा), वैद्य लक्ष्मणसिंह जी (मालवन), श्रीमती मिथिलेश (महिला आर्यसमाज अजमेर), भजनोपदेशक वेगराज जी, भीखाराम वानप्रस्थी जी (शिवगज), प्रदीप (मानौर), वैद्य धर्मसिंह जी कोठारी ने विचार व्यक्त किये। शान्ति पाठ किरोडी मल जी गुप्त ने किया।

सब वक्ताओ ने सक्षेप मे व सरल भाषाओ में अपनी बात रखी। उपरोक्त चारो विषयो के बारे मे क्या किया रहा है? क्यों रहा है? कमी कैसे दूर हो सकती है? इन सब पर चर्चा की गई। वक्ताओ ने आगे के कार्य की दिशा की ओर सकेत किए।

श्रोताओं का यह आग्रह रहा कि इस प्रकार की गोष्ठी बार-बार हो। उपरोक्त चारों विषयो पर अलग-अलग से कई-कई दिन गोष्ठी होनी आवश्यक है। इन चारों पर गोष्ठी हर भाषा, क्षेत्र में हो, भारत के अलावा अन्य देशो मे भी हो। [illegible] सन्तोष न कर लिया जाये वरन् चारो प्रकार के रचनात्मक कार्य त्वरित गति से चले। ये अपेक्षाए श्रोताओं की रही। विश्वास है इन महत्वपूर्ण कार्यों के सचालन में आर्यसमाज जगत का सतत सहयोग परोपकारिणी सभा को मिलता रहेगा।

—रामस्वरूप गोष्ठी संयोजक

धार्मिक पिक्चर

प्रचार पर्व पर आप भी अपने आर्यसमाज मे कराइए। गोहत्या, दहेज, [illegible] के विरुद्ध तथा आर्य [illegible] के शहीदों की पूर्ण जीवनियां स्लाइडस द्वारा दिखलाई जाती है। जोशीले गीत भी होते है। बिजली का प्रबन्ध अवश्य हो।

आशानन्द आर्य भजनीक
1/9359 प्रताप पुरा, गली न० 2
वैस्ट रोहतास नगर, शाहदरा दिल्ली-32

हैदराबाद के सत्याग्रहियों से निवेदन

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे जिन महानुभावो ने जेल यात्रा की थी, उनसे निवेदन है कि वे अपना (१) वर्तमान पता, (२) कहां से किसके नेतृत्व मे सत्याग्रह किया (३) कितनी सजा सुनाई गई (४) किस जेल में कितने दिन रहे (५) जेल मे रहने का कोई प्रमाण पत्र यदि हो तो उसके साथ अन्य आवश्यक विवरण लिखकर तुरन्त सभा कार्यालय मे भेज देवे। यह विवरण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को २० दिसम्बर तक सभा की ओर से भेजा जावेगा।

अत: जिन्होने अभी तक ऊपर लिखित विवरण नही भेजा है, वे भी तुरन्त भेज देवे।

मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

(शेष पृष्ठ २ का)

प्रश्न—क्या सीता धरती में समा गई थी ?

उत्तर—नहीं, राम के अश्वमेध यज्ञ में लव कुश द्वारा गाकर रामायण श्रवण कर श्रोताओं की प्रार्थना पर रामाज्ञा से जब लक्ष्मण कृशकाय सीता को अयोध्या के समीप लाए तो वह ठोकर से गिरकर अचेत हो अनेक प्रयत्न से नही उठी और वहीं प्राणान्त होगया।

प्रश्न—क्या राम परमात्मा थे ?

उत्तर—नही, राम न्यायकारी, धर्मात्मा, अनुपम धनुधारी, पूर्ण जितेन्द्रिय, मर्यादा पुरुषोतम, दयालु, पराक्रमी, वेदज्ञ, प्रजापालक राजा मनुष्य थे। शरीरधारी अल्पज्ञ थे। जबकि परमात्मा सर्वव्यापक, सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वशक्तिमान् सर्वान्तर्यामी सृष्टिकर्त्ता धर्ता हर्ता अनुपम सबका एक उपास्य देव है। नाड़ी नस और गर्भ के जो बन्धनों में आएगा वह क्या यह सम्भव कि परमात्मा कहलाएगा, नही।

श्री रामचन्द्र के पराक्रम तथा दिव्य गुण:—

राम बाल्यकाल से ही तीव्र प्रतिभावान्, गुणग्राही, शिष्ट, सत्य वक्ता, दृढप्रतिज्ञ, स्थितधी, शूरवीर, योद्धा, महाबलवान् सीता स्वयंवर मे धनुष तोड़कर, सयमी, उदार, दानी, याज्ञिक, ब्रह्मउपासक, प्रजारक्षक, दुष्टसहारक, सहिष्णु, परोपकारी, धनुर्धारी, धर्मवीर आर्य महापुरुष थे। उनके ही कथनानुसार तब राम तथा शिव के समान भूगोल मे तीसरा योधा नही था। 'दिवसस्य अष्टमे भागे, इस वचनानुसार उन्होंने शरद ऋतु के छोटे दिनो के आठवे भाग (अर्थात् एक घण्टे २०-२५ मिनट मे लका मे दो लाख चालीस हजार २४००००, सेना मार कर रावण वध किया था। वे आश्विन मे नही अपितु चैत्र मास में अयोध्या लोटे थे। हमे रामायण के पाठ मे उनके गुण ग्रहण कर यथायोग्य उनका पालन करना चाहिए। हम आर्यसमाज मे उनके आदर्श जीवन का समादर करते है।

प्रश्न—क्या हनुमान बन्दर थे?

उत्तर—नही, नही। हनुमान बाल ब्रह्मचारी वज्राग बली अथाह शरीर शक्तियुक्त अति तीव्र धावक योद्धा था। अगस्त्य मुनि ने उनको सततशास्त्रपाठी, महाव्याकरणवेत्ता, यज्ञोपवीतधारी, गदा चालक, पराक्रमी बताया है। बन्दर व्याकरणवित् जनेऊवाले सस्कृत विद्वान् नही हुआ करते। वे भाषा नही बोलते।

हनुमान तो किष्किन्धा राज्य (करनाटक) के राजा सुग्रीव के मन्त्री थे। उनके शरीर मे पुच्छ नही थी, अपितु अनकी वानर सज्ञक सेना के योद्धाओं का यह आयुध बन्ध होता था वे राजा कसेरी (पवन) के पुत्र थे। उनकी माता अजना देवी थी। उन्ही की सहायता से राम ने लंका मे विजय पाई थी। सारे भारत में हनुमान का आदर भाव है पर वे वानर सज्ञक विद्वान् थे बन्दर नहीं थे। अब भी बर्मा, श्याम, मलाया, इण्डोनेशिया, सुमात्रा, जावा, बाली आदि देशों में वानर संज्ञक लोग रहते हैं।

प्रश्न—श्रीराम लक्ष्मण की मृत्यु कैसे हुई थी ?

उत्तर—अश्वमेध यज्ञ की पूर्ति के पश्चात् श्रीराम और लक्ष्मण भी सीता के वियोग में सरयू नदी के जल मे समाधि ले गए और शरीर छोड दिया।

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के पदाधिकारी

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कागडी हरिद्वार की बैठक रविवार १-१२-८५ को आर्यसमाज मदिर दीवान हाल में सम्पन्न हुई। इसमें दिनाक ३०-१०-१९८५ की कार्यवाही सम्पुष्ट की गयी तथा संविधान को अन्तिम रूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गई। शेष पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के सदस्यो का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी और कार्यकारिणी इस प्रकार है:- प्रधान प्रो० शेरसिंह, उपप्रधान श्री सूर्यदेव और श्री वीरेन्द्र, मन्त्री डा० धर्मपाल, सहायक मन्त्री श्री प्रकाशवीर शास्त्री और श्री आशानन्द आर्य, कोषाध्यक्ष डा० हरिप्रकाश, सदस्य लाला रामगोपाल जी शालवाले, स्वामी ओमानन्द, श्री हरवश लाल शर्मा, महाशय धर्मपाल जी तथा सभी पदेन सदस्य। इस अवसर पर अन्य विषयो पर निर्णय लिए गये। कुलाधिपति, कुलपति, मुख्याधिष्ठाता, सहायक मुख्याधिष्ठाता, आचार्य तथा आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून सभी ने इस सकल्प को दोहराया कि सभी गुरुकुल की गौरवमयी परम्परा के अनुरूप, मिलकर कार्य करेंगे और गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर ले जाने का यथाशक्ति प्रयास करेंगे। उल्लास एवं हर्ष के वातावरण में बैठक सम्पन्न हुई।

—सत्यपाल प्रचार विभाग

सर्वहितकारी-कितनी प्यारी

सर्वहितकारी, लगती प्यारी ये है सच कहना।
पढ़के करो सुधार ना पीछे रहना ।।टेक।।

वेद मत की उद्घोषक है वेदों का प्रचार करे। ।।१।।
लेख, कविता समाचार से ऋषि स्वप्न साकार करे।
ओ३म्, नमस्ते, आर्य, यज्ञ का हरदम प्रचार करे।
लगती प्यारी ना बात हमारी सभी का है कहना ।।
पढ़के करो सुधार १

पाखण्ड खण्डन करती है, नित्य करे सत्य प्रचार। ।।२।।
पाठक पढ़े प्रेम से इसको छपे सप्ताह में एक बार।
विद्वानो के लेख हैं उत्तम जिनसे हो आत्म सुधार।
कर पढना जारी, मान बात हमारी, ना दु:ख सहना ।।
पढ़के करो सुधार २

मद्य निषेध गोसेवा का ये उत्तम पाठ पढ़ाती है। ।।३।।
आर्यजन हर्षाते जब पत्रिका घर आती है।
प्रशसा शब्द नहीं पत्रिका मन को भाती है।
कह रामचन्द्र प्रचारी, बड़ी परोपकारी यही सब कहना।
पढ़के करो सुधार ३

प्रि० रामचन्द्र आर्य
सहसम्पादक, 'बड़वा समाचार'
शाखा कार्यालय—बडवा (भिवानी)

सरकार से चार सूत्री मांगें

नई दिल्ली २६ नवम्बर। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अखिल भारतीय अधिवेशन में देश के विभिन्न भागों से पधारे युवा विद्वान् व प्रतिनिधियों ने भारत सरकार को चार सूत्री कार्यक्रम दिया है, जिससे युवा वर्ग को देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार से बचाया जा सकता है।

१. शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने के साथ नैतिक, धार्मिक एवं देश के जीवन चरित्र के साथ जोडा जाए। सस्ते शुल्क में आम आदमी को शिक्षा उपलब्ध हो।
२. आकाशवाणी (रेडियो), दूरदर्शन, फिल्मों मे अश्लीलता व अश्लील साहित्य पर प्रतिबन्ध लगे। नारियो के अंग-प्रदर्शन पर कानूनी प्रतिबन्ध हो।
३. दहेज के अभिशाप को समाप्त करने के लिए जाति बन्धन तोड दहेज छोड़कर शादी करने वाले युवक-युवतियों को सरकारी सेवा में प्राथमिकता दी जाये।
४. अराष्ट्रीय व साम्प्रदायिक तत्त्वों पर प्रतिबन्ध लगा, मताधिकार से वंचित कर भारत से उनकी नागरिकता समाप्त की जाए।

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

१. आर्यसमाज खारबन, जिला अम्बाला
प्रधान—सर्वश्री इन्द्रदत्त शर्मा
उपप्रधान—स्वर्णलाल
मन्त्री—कर्मवीर एम० ए०
उपमन्त्री—राजेश्वर प्रसाद एम० ए० बी-एड
कोषाध्यक्ष—श्री प्रीतमसिंह आजाद
प्रचारमन्त्री—ओम्प्रकाश

२. बूडिया जिला अम्बाला
प्रधान—मा० रुद्रदेव सैनी
उपप्रधान—मा० फूलसिंह
सचिव—राकेश आर्य
उपसचिव—हरीशचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष—चौ० रतनलाल आर्य
प्रचारमन्त्री—रवीन्द्रकुमार आर्य

३. गधौली, जिला अम्बाला
प्रधान—मा० रामसिंह आर्य
उपप्रधान—श्री ओम्प्रकाश, श्यामलाल, सतीशकुमार
मन्त्री—अशोककुमार
उपमन्त्री—केहरसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—जगमाल आर्य
प्रचारमन्त्री—करमचन्द आर्य

४. आर्यसमाज शाहाबाद मारकण्डा (कुरुक्षेत्र)
प्रधान—सर्वश्री जीवनदास
उपप्रधान—बाबूराम गुप्त
मन्त्री—वासुदेव आर्य
उपमन्त्री—निहालचन्द
कोषाध्यक्ष—बृजभूषण

५. लोक सेवा समिति फतेहपुर
अध्यक्ष—श्री धमदेव विद्यार्थी एम० ए० बी० एड० रिसर्चस्कालर
उपाध्यक्ष—सुभाषचन्द्र एडवोकेट एम० ए० एल-एल-बी
महासचिव—रामेश्वरदास भू० पू० पुलिस इन्सपेक्टर
सचिव—राजकुमार L. I. C.
कोषाध्यक्ष—मा० बृजभूषण मित्तल

६. आर्यसमाज रामपुर, रोड़ान (करनाल)
प्रधान—राजकुमार आर्य
उपप्रधान—डा० ईश्वरचन्द्र आर्य
मन्त्री—रणवीरसिंह आर्य
उपमन्त्री—वेदप्रकाश विद्रोही
कोषाध्यक्ष—मा० धनपतराय, रामसिंह आर्य
प्रचार मन्त्री—धर्मपाल आर्य

७. आर्यसमाज मनाना जिला करनाल
प्रधान—सर्वश्री रतनसिंह आर्य
उपप्रधान—हरीसिंह आर्य
मन्त्री—मा० सहदेव आर्य
उपमन्त्री—रामस्वरूप आर्य
कोषाध्यक्ष—दलीपसिंह आर्य

८. मन्त्री आर्यसमाज जौबन कलां पो० कारद जिला करनाल
प्रधान—सर्वश्री इन्द्रदेव आर्य
उपप्रधान—दयानन्द आर्य
मन्त्री—रामफल आर्य
उपमन्त्री—मामन आर्य
कोषाध्यक्ष—लहरीसिंह आर्य

९. स्त्री आर्यसमाज जीन्द
प्रधान—श्रीमती मनोरमादेवी
उपप्रधान—सीमादेवी
मन्त्री—सरला गोयल
उपमन्त्री—सावित्रीदेवी
कोषाध्यक्ष—कृष्णा नेहरु
प्रचार मन्त्री—दर्शनादेवी

१० मिर्जापुर बाच्छोद जिला महेन्द्रगढ़
प्रधान—पहलादसिंह
उपप्रधान—बाबूलाल
मन्त्री—विश्वम्भर दयाल
सयोजक—बनवारीलाल
कोषाध्यक्ष—सत्यनारायण

११. महिला आर्यसमाज पुनहाना जिला—गुड़गांव
प्रधान—माता रतनदेवी आर्या
उपप्रधान—श्रीमती प्रेमवती आर्या
मन्त्री—श्रीमती शान्तिदेवी
उपमन्त्री—कुसुमलता
कोषाध्यक्ष—सरोजरानी

१२. आर्यसमाज फतेहाबाद (हिसार)
प्रधान—सत्यपाल बंसल
मन्त्री—रामलाल
कोषाध्यक्ष—श्री बनवारीलाल

१३. आर्यसमाज अजमेर (राजस्थान)
प्रधान—श्री दत्तात्रेय आर्य
उपप्रधान—डा० प्रेमसिंह, कृष्णराम बावले
मन्त्री—रामसिंह
उपमन्त्री—गोविन्दसिंह, शिवचन्दसिंह
कोषाध्यक्ष—किशनलाल शर्मा
प्रचारमन्त्री—नवीनकुमार शर्मा

१४ आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश
प्रधान—सर्वश्री कृष्णलाल आर्य
वरिष्ठ उपप्रधान—ज्ञानप्रकाश आर्य
उपप्रधान—शशी मित्तल व श्रीमती चान्दरानी शर्मा
महामन्त्री—श्री भगवानदेव "चैतन्य"
संयुक्त मन्त्री—रामकृष्ण गौतम
उपमन्त्री—रोशनलाल बहल व शान्तिकुमार
वित्तमन्त्री—शिवदत्त मेहता
प्रचार मन्त्री—सुबोधानन्द
वेदप्रचार अधिष्ठाता—स्वामी ब्रह्मानन्द

शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करनेवाले दानदाताओं की सूची

गतांक का योग—५२१-००

आर्य स्त्री समाज होली मोहल्ला करनाल	५१-००
आर्यसमाज दयालपुरा करनाल	५१-००
श्री लाजपतराय आर्य, कोठी न० १९९७ अर्बन इस्टेट करनाल	५१-००
आर्य केन्द्रीय सभा करनाल	५१-००
वेदप्रचार मण्डल २ सी आर्यसमाज रामनगर अम्बाला छावनी	३१-००
श्री धनीराम जी १८/१९ रामनगर अम्बाला छावनी	२१-००
श्री हरबन्सपाल शर्मा B-३६ रामनगर अम्बाला	१०-००
वेदमित्र जी गुप्त ७२-B गोविन्द नगर अम्बाला छावनी	१०-००
वेदभूषण आर्य, कोठी नं० ९६ हाउसिंग बोर्ड कालोनी अम्बाला छावनी	५१-००
आर्यसमाज कच्चा बाजार अम्बाला छावनी	५१ ००
मन्त्री आर्यसमाज सोनीपत नगर	१०१-००
कुल योग	१०५०-००

उपरोक्त राशि पं० ... वैदिक मिशनरी द्वारा प्राप्त हुई। आर्यसमाजों तथा दानियों से निवेदन है कि अपना योगदान भेजकर शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करें।

—रामकृष्ण
सभा कोषाध्यक्ष

गोरक्षा के उपक्ष्य में ऋषि सन्देश

(डा० दे.   ाट, इन्दिरा कालोनी, रोहतक)

वेद मन्त्र-यजु ६।११

हे घृतप्रसक्त अर्थात् घृत चाहने वा... और, यज्ञ के करने हारो! तुम गौ आदि पशुओं को पालो, तुम एक-एक जन सर्वगत पवन से समान प्रीति करते हुए समान विस्तृत अंतरिक्ष से उत्पन्न हुए प्रिय सुख को अच्छे ऐश्वर्ययुक्त यज्ञ करने वाले धनी पुरुष में स्थापन करो तथा उसके अभिप्राय: को प्राप्त होओ और इसके होम के योग्य पदार्थ को आप ही निष्पादन किये हुए के समान अग्नि मे होमो अर्थात् यज्ञ की किसी क्रिया का विपरीत भाव न करो और इसके शरीर के साथ एकीभाव रखो किन्तु विरोध से द्विधा आचरण मत करो। यज्ञकम से सर्व सुख पहुचावेवालो ! सत्कर्म के अनुष्ठान से प्रकाशित धर्मिष्ठ ज्ञानी पुरुष जो कि यज्ञ देखने की इच्छा करते हुए बार-बार यज्ञ मे आते हैं उन विद्वानों के लिए अच्छे सत्कार करने वाली वाणियों को उचारण करते हुए यज्ञपति को सर्व सुख वर्षानेवाले यज्ञ में अभियुक्त करो।

यजु ६।१२

हे अच्छे प्रकार सुख से विस्तार करनेवाले विद्वान्! तू सर्प के समान कुटिलमार्गगामी और व्याघ्र के समान हिंसा करनेवाला और मूर्खजन के समान अभिमानी मत हो, सब जगह तेरे सुख के लिए अन्नादि पदार्थ पहिले ही प्रवृत्त हो रहे है और अश्वादि सवारी के बिना निराश्रय पुरुष जैसे जल को बड़ी धाराओं को प्राप्त हो वैसे सत्य के मार्गों को प्राप्त हो।

प्रिय पाठक गण! हम सब आर्यसमाज के सदस्य हैं और यज्ञ कर्म नित्य करना और इसका प्रचार करना अपना धर्म समझते हैं। अस्तु! परन्तु कभी यह भी सोचा है कि जिस मार्ग पर हम चल रहे हैं यह निभेगा कब तक, आज घृत और दूध का अभाव होता जा रहा है, यही हाल रहा तो कुछ, समय पश्चात् आप अग्निहोत्र करना चाहते हुए भी घृत के अभाव के कारण न कर सकेंगे। इसलिए हम इस वेद उपदेश के अनुसार गोरक्षा करने का प्रयत्न करें और सर्प व्याघ्रादि पशुओं के समान कुटिल मार्गगामी न बनें।

प्रीतिपूर्वक विद्वानों का सत्कार करें। और बिल्डिगें बनानी छोड़कर गोपालन में लगें। इस कार्य में प्रत्येक आर्यजन धन लगावे व्यक्तिगत रूप से या संगठन के रूप में। ग्रामीण आयजनों को धन दिया जावे जिससे वे लोग गोपालन करें। आप देव बने। और वे लोग देवपूजा करेंगे अर्थात् घृत दूध से आपकी सेवा करेंगे। इस तरह यज्ञ (अग्निहोत्र) की रक्षा होगी और वास्तविक यज्ञ (संगठन) भी होगा। अस्तु!

देवराज क्षीरवाट
१९९ इन्दिरा कालोनी, रोहतक।

नाम संस्कार

विगत दिनों आर्यसमाज नलवा के मन्त्री व आर्यजगत् के उत्साही कार्यकर्त्ता नवयुवक ब्रह्मचारी चैतन्य देव "वैश्वानर" ने श्री रामचन्द्र आर्य (नलवा) के घर बच्चे का नामकरण संस्कार किया। ब्रह्मचारी जी ने अपने वक्तव्य में मानव जीवन में संस्कारों के महत्त्व का उल्लेख किया। इस शुभावसर पर अनेक नर-नारियों ने नवजात शिशु को आशीर्वाद दिया।

—सहसम्पादक, "बड़वा समाचार"
पाक्षिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८५

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक – प्रो० सत्यवीर शास्त्री सम्पादक – वेदव्रत शास्त्री सह सम्पादक – डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अंक ५ २१ दिसम्बर, १९८५ वार्षिक शुल्क १५) इस प्रति का १-००)



श्रद्धानन्द बलिदान-विशेषांक

आर्यों के नाम सन्देश

तुम यह मत भूलो कि वैदिक-धर्म कोई सम्प्रदाय या पन्थ नही है। यह वह सत्य सनातन धर्म है जिसके बिना संसार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भर के लिए भी नही रह सकती। प्राचीन काल मे असंख्य आध्यात्मिक कोषो को खोलने वाली चाबी तुम्हारे ही हाथो मे दे दी गई थी और अब भी अशांत संसार को शान्ति देना तुम्हारा ही काम है, किन्तु पहले तुमको अपनी सब अपवित्रताओ को धोना होगा। आज गम्भीर भाव से यह प्रतिज्ञा करो कि तुम दैनिक पाचमहायज्ञो के अनुष्ठान मे प्रमाद न करोगे, तुम अस्वाभाविक जाति बन्धन को तोडकर वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन मे परिणत करोगे, तुम अपनी मातृभूमि मे से अस्पृश्यता के कलंक का समूल नाश कर दोगे और तुम आर्यसमाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार मत सम्प्रदाय जाति रंग आदि के भेदभाव का कुछ भी विचार न करके मनुष्य मात्र के लिए खोल दोगे। परम-पुरुष परमात्मा इस गम्भीर प्रतिज्ञा के पालन मे तुम्हारे सहायक हो। (२१-५-१९२५ को दिल्ली मे दिया गया भाषण)

लाखों हरयाणा वासियों द्वारा संसद् पर प्रदर्शन

हरयाणा से न्याय न किया गया तो रास्ता रोको आन्दोलन होगा।

चौ० देवीलाल

सभी राष्ट्रीय दलों के नेताओं को हरयाणा के हितों की रक्षा करनी चाहिए।

—प्रो० शेरसिंह

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

१६ दिसम्बर ८५ को हरयाणा के कोने-कोने से तीन लाख से अधिक नर-नारियों ने रामलीला मैदान नई दिल्ली में एकत्रित होकर ऐतिहासिक शक्ति का प्रदर्शन किया। हरयाणा सघर्ष समिति के अध्यक्ष चौ० देवीलाल तथा मन्त्री डा० मंगल सेन ने हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सभी राजनैतिक सामाजिक तथा धार्मिक नेताओं को सहयोग करने का निमन्त्रण दिया था और न्याय प्राप्त करने के लिए लोकसभा भवन तक न्याय यात्रा का आयोजन किया गया था अत: हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से इसके सरक्षक स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा रक्षा वाहिनी तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को इस न्याय यात्रा में बढ़-चढ कर सम्मिलित होने के लिए अपील की थी। इस प्रकार इस न्याय यात्रा में १५ हजार के लगभग रक्षा वाहिनी के स्वय सेवकों ने भाग लिया। रामलीला मैदान मे जो विशाल सार्वजनिक सभा हुई उसमे लोकदल के हरे झण्डो के बाद सबसे अधिक ओ३म् के झण्ड दिखाई दे रहे थे। रोहतक, सोनीपत, गुड़गावा तथा फरीदाबाद आदि से सैकड़ो ट्रैक्टरों में सवार होकर १८ दिसम्बर को ही रामलीला मैदान पहुंच गये थे। चौ० देवीलाल के नेतृत्व में पदयात्रियो का जत्था जब दिल्ली सीमा मे दाखिल हुआ तो ग्राम ज्वालाहेडी के पास हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह भी इस न्याय यात्रा में सम्मिलित हो गये और रामलीला मैदान तक उनके साथ रहे।

१६ दिसम्बर को रामलीला मैदान में सार्वजनिक सभा में हरयाणा के प्राय: सभी राजनैतिक दलों के नेताओं ने जनता को सम्बोधित किया। इस अवसर पर हरयाणा लोकदल के नेता चौ० देवीलाल ने राजीव लोंगोवाल समझौता को हरयाणा विरोधी बताते हुए कहा कि पंजाब को २६ जनवरी से चण्डीगढ़ देने का निर्णय किया गया। परन्तु चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिलका के हिन्दी भाषी क्षेत्रों तथा जल वितरण का मामला आयोग बनाकर लटका दिया। हरयाणा के साथ इस अन्याय को हम किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं करते और यदि १५ जनवरी तक हरयाणा के हिस्से का पूरा पानी और चण्डीगढ़ के बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र नही मिले तो १६ जनवरी ८६ से रास्ता रोको आन्दोलन शुरु होगा जिसमे रेल सहित सारा यातायात ठप कर दिया जाएगा।

इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा की जनता को न्याय प्राप्ति के लिए शक्ति प्रदर्शन करने पर बधाई दी और कहा कि यदि हरयाणा की इतनी भीड़ डेढ वर्ष पूर्व दिल्ली मे जमा हो जाती तो इस अन्याय की नौबत नही आ पाती और भारत सरकार अकालियों के साथ समझौता करते

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

ओ३म्

सम्पादकीय

गुरुकुल शिक्षा पद्धति को साकार रूप प्रदान करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द

आर्यजगत् में स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे संन्यासी हुए है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार रूप प्रदान किया है। महर्षि दयानन्द के अनुसार गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही एकमात्र ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा भारत वर्ष का उद्धार हो सकता है। इस पद्धति का श्रीगणेश स्वामी श्रद्धानन्द ने पारेगङ्ग गुरुकुल कागडी की स्थापना करके किया। हिमालय की उपत्यका एव गङ्गा नदी के किनारे पर गुरुकुल की स्थापना, इस बात के बोलते प्रमाण है कि स्वामी श्रद्धानन्द के मस्तिष्क मे गुरुकुल की कल्पना उन गुरुकुलों से सर्वथा भिन्न थी, जो वर्तमान समय मे गुरुकुल कर रहे है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने दोनों पुत्रों को सर्वप्रथम गुरुकुल मे प्रविष्ट कर यह सिद्ध कर दिया कि वे कथनी और करनी मे अन्तर नही करते। जिस आर्षपाठविधि का उल्लेख स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे किया है उसी पाठ विधि मे अपने दोनो पुत्रों को शिक्षा दिला कर देश को सौंप दिया तथा उसके पश्चात् गुरुकुल कागडी ने अनेक स्नातक तैयार किये जिन्होंने देश विदेश सभी जगह अपने देश का नाम उन्नत किया।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह आर्षपाठविधि क्या बला है ? जिस पर स्वामी दयानन्द ने इतना जोर दिया और जिसे स्वामी श्रद्धानन्द ने मूर्त रूप प्रदान किया—इस पद्धति के द्वारा चार पाञ्च वर्ष मे ही सस्कृत का इतना अच्छा ज्ञान हो जाता है जितना अन्य किसी पद्धति से पच्चीस वर्ष मे भी नही हो सकता। सस्कृत भाषा हमारे देश का आत्मा है जिसके न रहने पर कुछ भी शेष नही रहता। जिस प्रकार शरीर से आत्मा के चले जाने पर शरीर केवल मास व हाड का लोथडा रह जाता है। ठीक उसी प्रकार यदि सस्कृत को देश की पाठ्य शिक्षा पद्धति से निकाल दिया तो देश केवल मात्र भवनो का समुदाय मात्र रह जायेगा। सस्कृत भाषा के अन्दर हमारे देश का सर्वस्व निहित है। हमारे ही देश का नही अपितु यदि यह कहा जाये कि इस भाषा मे सम्पूर्ण विश्व का सर्वस्व निहित है तो अतिशयोक्ति नही होगी।

भारोपीय परिवार की मूल भाषा सस्कृत ही है जिस में सब से पहले वेदो की रचना हुई और ऋग्वेद का अध्ययन करने के उपरान्त पाश्चात्य विद्वानो ने भी यह स्वीकार किया है कि—

Rrigueda is the oldest book of the "world Library"

ऋग्वेद ससार के पुस्तकालय का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है।"

इससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृत संसार की सबमे प्राचीन भाषा है और, इसमें लिखा गया सम्पूर्ण साहित्य मानस मस्तिष्क की चरमोत्कृष्टता का जीता जागता प्रमाण है। आगे चलकर इसी भाषा मे महर्षि पाणिनि ने सस्कृत व्याकरण की रचना की जिसे अष्टाध्यायी के नाम से जाना जाता है। वर्तमान समय में लब्धख्याति "भाषा विज्ञान" (Linguistics) इसी को आधार मानकर चल रहा है तथा ससार के समस्त भाषा वैज्ञानिकों ने पाणिनि के व्याकरण को मानव मस्तिष्क में कीर्तिमान स्तम्भ बतलाया है तथा पाणिनि को ससार का सर्वप्रथम भाषाविद् कहा है।

भाषाविज्ञान को समझने के लिए पाणिनि के व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है और पाणिनि के व्याकरण को समझने के लिए सस्कृत भाषा का अध्ययन आवश्यक है। अत: वर्तमान युग के अन्दर भी सस्कृत भाषा की बहुत बडी उपयोगिता है। इस की महत्ता को स्वामी श्रद्धानन्द बहुत अच्छी प्रकार समझते थे। इस भाषा के अध्ययन को साकार रूप प्रदान करना ही आर्षपाठविधि है।

सस्कृत भाषा मे भाषा वैज्ञानिक तत्त्व ही हो ऐसी बात भी नही है। इस भाषा के माध्यम से हम इतिहास, भूगोल, दर्शन, वेद, पुराण, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, कानून विद्या, नीतिविद्या, राजतन्त्र, चिकित्सा (आयुर्विज्ञान), भवन निर्माण विद्या, धर्मशास्त्र, गणितविद्या, जन्तुविद्या, भविष्यविद्या इत्यादि सभी क्षेत्रो की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान समय मे उपयोग में आने वाली प्रत्येक विद्या का मूलमन्त्र सस्कृत भाषा मे ही निहित है। अत: भारत वर्ष की आत्मा को ठीक-ठीक समझने के हेतु ही स्वामी श्रद्धानन्द ने इस शिक्षा पद्धति का श्रीगणेश कर सम्पूर्ण ससार को आश्चर्यचकित कर दिया।

आर्यजगत् में स्वामी दयानन्द के पश्चात द्वितीय स्थान स्वामी श्रद्धानन्द का ही आता है जिन्होने भारत को नई शिक्षा पद्धति प्रदान की।

— यज्ञवीर

o—o

सूचना

ऋषि शैली में छहों दर्शनाध्यापन व गहन क्रियात्मक वैदिक योग प्रशिक्षण का नि:शुल्क व निरन्तर द्विवर्षीय कार्यक्रम आर्यसमाज स्थापना दिवस - चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रमी सवत् 2043 (10 अप्रैल, 1986) से आर्य वन विकास फार्मट्रस्ट (अवासर) जि० साबरकाठा गुजरात में आयोजित है। अंतिम प्रवेश तिथि आश्विन पूर्णिमा वि० स० 2042 तक इसमे सात प्रतिभाशाली ब्रह्मचारी प्रवेश कर लिये गये हैं। अन्य अभिलाषी ब्रह्मचारियों हेतु प्रवेश तिथि फाल्गुन मास अमावस्या, वि० स० 2042 (10 मार्च, 1986) तक बढाई गई है। कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करे।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक
2-एफ कमला नगर, दिल्ली-7

ओ३म्

२३ दिसम्बर बलिदान दिवस पर—

सत्य, श्रद्धा और निर्भयता के देवता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के प्रेरणाप्रद जीवन संस्मरण

(राजवीर शास्त्री)

जो अपने बलिदान से दे गये जन-जन को आनन्द।
वे थे महान् त्यागी तपस्वी स्वामी श्रद्धानन्द॥

जीवन परिचय अमर शहीद स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिला के अन्तर्गत तलवन ग्राम में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी (सं० १९१३) के दिन ला० नानकचन्द के घर हुआ। उनका बचपन का नाम मुंशीराम था। आपकी माता बहुत सुशील, धार्मिक और वात्सल्य में पूर्ण थी, उनके सद्‌गुणों का स्मरण स्वामी जी ने स्वयं ही बहुत प्रेम व भक्तिभरे शब्दों में किया है। आपके परदादा श्री सुखानन्द जी एक आनन्द मूर्ति ही थे। आपके पितामह श्री गुलाबराय बड़े धार्मिक, व्यवहारकुशल और अत्यन्त स्पष्टवादी थे। आपके पिता ला० नानकचन्द जी की नौकरी का समय अधिकतर उत्तरप्रदेश (तत्कालीन युक्त प्रान्त) में व्यतीत हुआ। आप बरेली बनारस, बांदा, मिर्जापुर, बलिया आदि स्थानों पर पुलिस-विभाग में एक उच्च अधिकारी रूप में सेवा करते रहे। पुलिस के विभाग में एक उच्च अधिकारी होते हुए भी ला० नानकचन्द बहुत ही ईश्वर भक्त एवं धार्मिक वृत्ति के थे। मुंशीराम अपने माता-पिता के स्नेहपात्र तथा पढ़ने-लिखने में बहुत प्रवीण थे। पिताजी के सेवा में होने से मुंशीराम जी को विभिन्न स्थानों में बाल्यकाल बिताना पड़ा। आपकी शिक्षा का अधिकतर समय बनारस में ही व्यतीत हुआ। आपकी स्नेहमूर्ति माता का देहान्त स्कूल की शिक्षा समाप्त होने पर ही हो गया था। आपके तीन भाई तथा दो बहिनें थी, जिनके आयु के क्रम से नाम ये थे—सीताराम, प्रेमदेवी, मूलाराम, द्रौपदी और आत्माराम। मुंशीराम सबसे छोटे थे।

तत्पश्चात् बनारस के क्वीन्स कालेज में प्रवेश लिया। आपका कालेज का जीवन बहुत ही विचित्र था। कभी पढ़ाई का शौक, कभी कविता की धुन, कभी उपन्यास लिखने की ललक और कभी आवारगी। शहर कोतवाल के पुत्र तथा धन बाहुल्य के कारण मुंशीराम के जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आये। यौवन काल, विपुल सम्पत्ति, ऊँचे पद पर आसीन पिता का आश्रय और विवेक का अभाव, ये चारों मानव को अनर्थ की तरफ दौड़ा देते है। मुंशीराम भी इनसे बचे नहीं थे। शराब मांस जैसे राक्षसी भोजन ने आपके लम्बे चौड़े स्वस्थ शरीर को भी अस्वस्थ कर दिया था। आपका विवाह जालन्धर के प्रसिद्ध रईस ला० शालिगराम की पुत्री शिवदेवी से १९७७ में हुआ।

आस्तिक से नास्तिक—पौराणिक परम्परा में दीक्षित मुंशीराम जी के पिता मूर्ति पूजा बहुत ही श्रद्धा से करते थे, तुलसीकृत रामायण का पाठ बहुत ही मधुर कण्ठ से किया करते थे। मुंशीराम पर भी पिता के दृढ विचारो का प्रभाव पड़ा और वे भी प्रातः साय नियमित रूप में पूजा-पाठ करने लगे। एक दिन जब आप नियत समय पर विश्वनाथ के मन्दिर के द्वार पर पहुचे, तो एक सिपाही ने आपको अन्दर घुसने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उस समय रीवा-नरेश की महारानी मन्दिर मे पूजा पाठ कर रही थी। मुशीराम के भक्ति-भाव से पूर्ण हृदय पर इस घटना का बहुत बुरा प्रभाव पडा कि क्या भगवान् के मन्दिर मे भी छोटे-बड़े, धनी-निर्धन का भेद-भाव है? मुशीराम के मन मे इस घटना ने मूर्ति-पूजा के प्रति बिल्कुल अश्रद्धा पैदा कर दी। घर पर आने पर भी मुशीराम के मन मे अन्तर्द्वन्द्व बड़ी तेजी से बढता रहा। मुशीराम उसका वर्णन करते हुए स्वय लिखते हैं—"मुझे वह रात जागते बीती। मन की विचित्र दशा थी। प्रश्न पर प्रश्न उटते थे—क्या सचमुच वह जगत् स्वामी का दरबार है, जिससे एक रानी उसके भक्तों को रोक सकती है? क्या यह मूर्ति विश्वनाथ हो सकता है या वे देवता कहला सकते हैं, जिनके अन्दर ऐसा पक्षपात हो? परन्तु मूर्ति को देवता किसने बनाया? नित्य मेरे सामने सगतराश ही तो मूर्निया बनाते हैं ··· । कभी व्याकुल होकर दस बीस मिनट टहलता और फिर बैठ जाता। फिर दूसरी और प्रश्नावली की लहर पर लहर उठी—'जब सासारिक व्यवहारों मे पक्षपात है तो देवताओ के दरबार में उसका दखल क्यो न हो? क्या मनुष्यों ने भी पक्षपात देवताओं से ही सीखा है? क्या मेरे स्वच्छन्द जीवन ने तो मुझे अविश्वासी नही बना दिया?" ('कल्याण मार्ग का पथिक' पृ० ७१-७२)

तत्पश्चात् मुशीराम एक रोमन कैथलिक पादरी के ससर्ग पाकर गिर्जे में चले गए और वहा बहुत ही उत्सुकता से प्रार्थना सुनने लगे। कुछ दिनो तक इस युवक का हृदय इस ओर भी झुका रहा किन्तु वहा भी एक दिन पादरी के घर नन और नाविस के अनुचित-सम्बन्ध को देखकर गिर्जे के प्रति भी घृणाभाव पैदा हो गया और मन्दिर व गिरजाघर के व्यवहारो से असन्तुष्ट नवयुवक के हृदय में ईश्वर-पूजा का द्वार बन्द कर दिया।

नास्तिक से आस्तिक—इसके बाद पूजा-पाठ के प्रति अपने पुत्र की अश्रद्धा देखकर पिता बहुत ही दु:खी रहने लगे। रोगी होने से परीक्षा मे फेल होने पर मुशीराम ने कालिज की पढाई छोड़ दी थी और वे अपने पिता के पास बरेली आगये। उन्ही दिनो मुशीराम के पिता को महर्षि दयानन्द का ईश्वर विषय पर भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। पिता ने विचार किया कि यह साधु मुंशीराम की ईश्वर विषयक अश्रद्धा को भी दूर कर सकता है। घर जाकर पुत्र को समझाया कि तुम्हें भी साधु का भाषण सुनना चाहिये। प्रथम तो सन्देह पूर्ण हृदय पर पिता का कोई प्रभाव नही पडा, किन्तु फिर वे पिता के अत्याग्रह करने पर साधु के भाषण मे चले गए। साधु के ईश्वर विषयक युक्ति-युक्त भाषण से मुंशीराम की न केवल शकाओ का समाधान ही हुआ, प्रत्युत यूरोप के नास्तिकवाद का भी निर्मूलन हो गया। व्याख्यान के बाद भी मुशीराम ने स्वामी जी से अनेक प्रश्न किये और उत्तर भी पाया, पर सन्तोष नही हुआ। और स्वामी जी से कहने लगे—महाराज! आपने मुझे निरुत्तर तो कर दिया, किन्तु ईश्वर के प्रति विश्वास नही हो सका। तब स्वामी जी ने कहा—भाई! मैने कब कहा था कि मै तुम्हे विश्वास करा दूगा? मै तो केवल प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूं। 'नैव आत्मा प्रवचनेन लभ्यः।' ईश्वर विश्वास तो तभी होगा, जब ईश्वर की कृपा होगी।

स्वामी जी के उत्तर तथा उनके जीवन का मुंशीराम पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मुंशीराम नास्तिक से फिर आस्तिक बन गये।

सती साध्वी धर्म-पत्नी की सेवा मे दुर्व्यसनो से मुक्ति—

धन-धान्य से सम्पन्न परिवारो मे लाड-चाव से पले बच्चे प्राय: दुर्व्यसनो के शिकार बन जाते है। मुशीराम भी इसी कारण शराब, मास, जुए जैसे दुर्व्यसनो से बच न सके। कुछ साथी भी ऐसे बने हुए थे, जिनके ससर्ग मे रहकर चाहते हुए भी दुर्व्यसनो से मुशीराम नही बच पाते थे और जो बुरी लत पल्ले पड जाती है, उसका छूटना भी सरल नही होता। परन्तु पिछले अच्छे कुछ सस्कारो एवं पिता जी के भक्तिमय विचारों का मुशीराम पर बडा प्रभाव था, साथ ही सती साध्वी पत्नी भी ऐसी मिली कि जिसके सतत सेवा भाव ने मुशीराम को दृढ शृखला तुल्य दुर्व्यसनो से छूटने में बड़ी सहायता की। एक बार बरेली मे घटना इस प्रकार घटी—धर्मपत्नी शिवदेवी का यह दृढ नियम था कि पति को भोजन कराकर ही स्वय भोजन करती थी। एक बार बरेली मे रात को मुशीराम घर लौट रहे थे, रास्ते मे एक मित्र का घर था, उसके अत्याग्रह के कारण मुशीराम उनके घर चले गये और वहा मद्य के पान मे नही बच सके। मना करते-करते चार गिलास पी गये। शराब बहुत नशीली थी, जल्दी ही नशा होने लगा। तत्पश्चात् दो मित्र मुशीराम को वेश्यालय मे ले गये वहा मुजरा लगाया गया, किन्तु मुशीराम बीच मे ही वहाँ से चल पड़े। घर आकर बैठक मे तकिये पर ही गिर गये। नौकर ने जूते उतारे और सहारा देकर ऊपर चढाया। छत पर बरामदे मे ही उल्टिया होने लगी, पत्नी ने हाथ का सहारा देकर कुल्ला कराया, कपडे बदलवाये और पलग पर लिटा दिया। तत्पश्चात् साथ बैठकर माथा व सिर दबाने लगी। नीद आने से समय पर्याप्त बीत गया, रात के लगभग एक बजे आखे खुलने पर मुशीराम ने देखा कि मेरी पत्नी भूखी प्यासी रहकर भी रातभर सेवा मे लगी हुई है। उसने मिश्री मिला गर्म दूध पिलाया, तब कुछ होश आया। पत्नी से बोले—तुम अभी तक जागती ही रही, भोजन तक नही खाया। पत्नी बोली—पतिदेव! आपके भोजन किए विना मै भोजन कैसे खाती? मुशीराम को इस घटना से बड़ा पश्चात्ताप हुआ और वे बहुत ही दु:खी होकर क्षमा मागने लगे। किन्तु पत्नी पर अपनी माता का बडा प्रभाव था, वह बोली—आप मेरे स्वामी हो, आप ऐसा कहकर मेरे पर पाप क्यो चढा रहे हो। धन्य है यह शिवदेवी का पतिपरायण आदर्श। इसके बाद एक और घटना घट गई। मुशीराम पर मद्य विक्रेता का बिल इतना बढ गया, जिसका भुगतान मुशीराम नही कर सके और अन्दर-अन्दर ही दु:खी होने लगे। पत्नी ने पति के दु:ख का कारण समझकर और पति के दु:ख मे समभागी बनकर अपने घर के बने दो सोने के कड़े हाथो से उतार कर पतिदेव को तुरन्त सौप दिये और पति मुशीराम के बार-बार मना करने पर भी यह कहकर कडे सौपे—'पतिदेव! पतिव्रता देवी पति के स्वास्थ्य रक्षा में माता, विपत्ति के समय भगिनी और सन्तान सुख के लिये धर्मपत्नी का रूप धारण करती है।' पत्नी के शब्दों का मुशीराम के जीवन पर ऐसा प्रभाव पडा कि मुशीराम का कायाकल्प ही होने लगा। उसके बाद एक वकील के घर दावत मे मित्रों के सत्याग्रह पर शराब का प्याला पी तो लिया, किन्तु मन में अत्यन्त दु:खी भाव से। उस समय अपने एक मित्र के एक देवी के साथ दुर्व्यवहार को देखकर मुंशीराम को मानो मन ही मन झकझोर दिया और अपनी पत्नी शिवदेवी के समान उस पतिव्रता के सतित्व की रक्षा के लिये तुरन्त उद्यत हो गये। अपने मित्र को ऐसा धक्का दिया कि वह तो एक

तरफ जा पड़ा और उस देवी की उस नराधम से रक्षा की। उस समय मुंशीराम को ऐसा वैराग्य हुआ कि उसने शराब की बोतल और प्याले उठाकर तुरन्त दिवार पर दे मारे और इस पिशाचिनी मद्य से सदा के लिये मुक्त हो गये।

पिता पुत्र का अद्भुत सघर्ष—महर्षि दयानन्द की सगति पाकर मुशीराम आस्तिक तो बन गये थे, किन्तु जैसा पिताजी चाहते थे कि मुशीराम परम्परागत कुल की प्रतिष्ठा के अनुसार मूर्ति पूजादि किया करे, वैसा नही। इस विषय में पिता पुत्र का जो अन्तर्द्वन्द्व हुआ तथा मंशीराम के दृढ़-सकल्प की विजय हुई, यह घटना अत्यन्त रोचक एव शिक्षाप्रद होने से यहा दी जाती है—

ग्रीष्म-ऋतु की निर्जला एकादशी का दिन था, यह दिन मुशीराम की धार्मिक परीक्षा का प्रथम अवसर था। पिता का छोटा पुत्र होने से मुशीराम पर अतिशय स्नेह भी था। महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के पढने से मुशीराम की श्रद्धा मूर्ति-पूजा, एकादशी व्रतादि पर बिल्कुल भी नही थी। पिताजी ने सेवक को भेजकर मुशीराम को बुलवाया कि वह भी कुल की परम्परागत विधि से मूर्ति-पूजादि करे। मुशीराम प्रथम बुलाने पर उपेक्षा कर गये किन्तु दूसरी बार पिता के आदेश को न टाल सके। मुशीराम के आने पर पिता बोले—

पिता—मुशीराम! आओ, अब तक तुम कहा थे। हमने तुम्हारी प्रतीक्षा करके सबसे सकल्प पढ़ा दिया है, तुम भी सकल्प पढकर पूजा करो।

मुंशीराम—पिताजी! मैं स्पष्ट कहने से डर रहा था। सकल्प का सम्बन्ध तो दिल के साथ होता है। जब आपने सकल्प किया है तो यह आप का दान है, जिसे चाहे देवें। मैने इसीलिये आना आवश्यक नही समझा था।

पिता—मुशीराम! क्या मेरा धन तुम्हारा नही है? फिर उसमे से दान देने का अधिकार तुम्हे क्यों नही है? क्या दिल का सकल्प बाहर निकालना पाप है? क्या तुम एकादशी और ब्राह्मण पूजा पर विश्वास नही रखते?

मुंशीराम—पिताजी! मुझे ब्राह्मणत्व पर तो पूर्ण विश्वास है किन्तु जिनको आप दान दे रहे हैं, मेरी दृष्टि मे वे ब्राह्मण नही है और एकादशी के दिन मे भी मै अन्य दिनो की अपेक्षा कोई विशेषता नही देख रहा हूँ।

पिता—बहुत दु:खी भाव से दीर्घ श्वास लेकर बोले—मुशीराम! मैंने तो बड़ी आशा लेकर सरकारी नौकरी से हटाकर वकालत की ओर डाला था। मुझे तुमसे बडी सेवा की आशा थी, क्या उन सबका फल मुझे यही मिलना था? अच्छा अब तुम जाओ।

इसके बाद मुंशीराम कई दिनो तक पिताजी के पास जाने से घबराते रहे। पिताजी भी अतिशय स्नेह होते हुए भी मुझे बुलाने से टलते रहे। मुशीराम सारे दिन सत्यार्थप्रकाशादि ऋषि के ग्रन्थों को पढने में ही बिताते रहे। छुट्टियो के दो मास धीरे-धीरे बीत गये। मुशीराम लाहौर के लिये अपना सब सामान तैयार करके पिताजी से नमस्ते करने गये। पिताजी ने आशीर्वाद देकर कहा कि अभी बैठ जाओ। पिताजी ने सेवक से एक थाली में मिठाई और साथ में अठन्नी रखकर बोले—

पिता—जाओ पुत्र ! ठाकुर जी को मत्था टेक कर विदा हो जाओ । मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के सेवक हनुमान जी तुम्हारी रक्षा करें ।

(मुंशीराम मौन होकर बैठे रहे, क्योंकि उनके मन में ठाकुर जी के प्रति लेशमात्र भी श्रद्धा नहीं थी । पिताजी ने समझा कि देवता के उपहार के लिये आठ आने कम समझकर मुंशीराम चुप हैं अतः एक रुपया रखकर कहने लगे)

पिता—लो पुत्र ! अब ठीक हो गया, देर हो रही है । ठाकुर जी को मत्था टेककर पढने के लिए चले जाओ ।

मुंशीराम—(बहुत दुःखी होकर) पिताजी यह बात नही है । किन्तु मैं अपने वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध कोई कार्य नही कर सकता हू । मैं आपका पुत्र हू, मैं ईश्वर के बाद आपका ही सर्वोपरि सम्मान करता हूं, मै सासारिक व्यवहार में जो भी आप आज्ञा देगे, मानने को सदा उद्यत हू ।

पिता (चेहरे पर क्रोध के भाव) मुशीराम ! क्या तुम हमारे ठाकुर जी को धातु पत्थर मात्र ही समझते हो ?

मुशीराम—पिताजी ! क्या आप चाहते है कि आपकी सन्तान मक्कार हो ?

पिता—कौन अपनी सन्तान को मक्कार देखना चाहता है ?

मुशीराम—पिताजी ! मेरे लिये तो ये मूर्तिया पत्थर मे बढकर कुछ भी नही है और यदि मैं इनके आगे भेट धरकर सिर झुकाऊंगा तो यह मक्कारी होगी ।

पिताजी—(बहुत दुःखी होकर) मुशीराम ! अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि तुम कुल की परम्पराओ को बिल्कुल भी नही निभाओगे । और मेरे मरने पर मुझे कोई पानी देने वाला भी नही रहेगा । अच्छा भगवान् जो तेरी इच्छा ।

(मुशीराम दस मिनट तक मौन ही धारण कर खडे रहे, मानो उन्हें कुछ भी सुध नही रही। फिर पिताजी ही बोले)

पिताजी—मुशीराम ! अच्छा अब जाओ, देर हो जायेगी ।

मुशीराम पिताजी को सादर नमस्ते कहकर नीचे उतर कर मझोली पर सवार होकर चलने की तैयारी मे है । मन मे अनेक प्रकार के सकल्प-विकल्प उठने लगे । मै पिताजी के धार्मिक विचारों से सहमत नही हू, मैं पिताजी के स्वर्ग या मोक्ष प्राप्ति का साधन भी नही बन सकता, मैं पिताजी की मान्यता के अनुसार उनका मरणोत्तर श्राद्ध और तर्पण भी नही कर सकता इत्यादि । अतः मुझे उनके कमाये धन का हिस्सेदार बनने का भी कोई अधिकार नही है । अतः पिताजी द्वारा दिये खर्च के लिये पचास रुपये एक कागज मे बाधकर एक सम्बन्धी को पत्र सहित यह कह कर दिये कि ये पिताजी को कल दे देवें और पत्र मे यह लिख दिया 'जब मै आपके मन्तव्य के विरुद्ध मत रखता हू, तो मुझे आपके धन का भी कोई अधिकार नही है। जीवन शेष है तो आपके चरणों मे अपनी भेंट रक्खूगा ही ।' मुंशीराम की घोडागाडी अभी एक मील दूर ही गई होगी कि इतने में ही एक घुड़सवार पिता जी का पत्र तथा रुपयो की पोटली लेकर आ गया । पत्र मे पिताजी ने बहुती ही मार्मिक शब्दों मे लिखा था—मुंशीराम ! तुम यह प्रतिज्ञा करके गये थे कि मै ईश्वर के बाद आपका

ही सर्वाधिक मान करता हूं और सांसारिक आज्ञाओं से मुख नहीं मोड़ूंगा। यह मेरी सांसारिक आज्ञा ही समझ कर खर्चे के लिये रुपये ले लेना और आगे खर्चे के लिये रुपये मागने में संकोच नही करना।' माता-पिता का हृदय अपनी सन्तान के लिये कितना उदार हो सकता है यह उसका एक उज्ज्वल उदाहरण है। इसीलिए भारतीय सस्कृति में माता-पिता के लिये ठीक ही लिखा है—भूमेर्गरीयसी माता स्वर्गादुच्चतर: पिता।'

सत्य की विजय—मुंशीराम के लाहौर चले जाने पर अपने कुल पुरोहित प० काशीराम जी से मुंशीराम के पिता विचार-विमर्श करते रहते थे। उन्हें मुंशीराम के कमरे मे मेज पर रखी दो पुस्तके मिली एक सत्यार्थ प्रकाश दूसरी पंच महायज्ञ विधि। पिताजी ने पण्डित जी से प्रार्थना की कि मुंशीराम इन पुस्तकों को पढकर पता नही कैसा बन गया है। इन पुस्तको मे क्या लिखा है, पण्डित जी! मुझे पढकर तो सुनाओ। पहले पण्डित जी अन्यमनस्क से रहे, क्योकि वे जानते थे कि ऋषि दयानन्द की पुस्तको को पढकर पता नही क्या जादू सा प्रभाव हो जाता है? यदि इनको पढने से ये भी (मुंशीराम के पिता) बदल गये तो मेरी दाल नही गल सकेगी। किन्तु उनके बार-बार आग्रह करने पर पण्डित जी ने पुस्तके सुनानी आरम्भ की। पण्डित जी ने ब्रह्मयज्ञ का विषय प्रथम पढ कर सुनाया। ईश्वर के सन्ध्या विषयक मन्त्रो का अर्थसहित पाठ सुनकर मुंशीराम के पिताजी की सुनने की इच्छा और बढ गई। तत्पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश का ईश्वर विषयक प्रथम समुल्लास सुनाया, जिसे सुनकर पिताजी ने पण्डित जी से कहा - पण्डित जी! हम तो इन ग्रन्थो को नास्तिकता के ही समझते थे। हम अब तक अविद्या में ही पड़े थे। हमने जीवन भर जो भी पूजा पाठ किया है, उससे तो मोक्ष प्राप्ति सम्भव ही नही है। अब आगे वैदिक सन्ध्या ही किया करेंगे। फिर तो पिताजी ने वैदिक सन्ध्या के मन्त्रों को अर्थसहित याद करना प्रारम्भ कर दिया और अपने पुत्र मुन्शीराम के प्रति पहले से भी अधिक स्नेह बढने लगा और उसके प्रति समस्त अप्रसन्नता दूर हो गई।

पिताजी का असीम प्रेम—सत्यार्थ प्रकाशदि ग्रन्थों के स्वाध्याय करने से मुन्शीराम के पिता की हृदयस्थ अविद्या जैसे-जैसे क्षीण होती जा रही थी, वैसे ही मुन्शीराम के प्रति उनका अगाध स्नेह उत्तरोत्तर बढता जा रहा था। स० १९३६ के अन्त मे पिता जी के सेवक भीमा ने कागज मे लपेटा हुआ पुलिन्दा लाकर पिताजी के आगे रखा। पिता की आज्ञा से मशीराम ने उसे खोला तो उसमे पिता जी का वसीयतनामा एक कागज पर लिखा हुआ मिला। वसीयतनामे मे लिखा था—मुंशीराम के दूसरे दोनो भाइयो को केवल मकान और भूमि का कुछ भाग नियत किया गया था। मुंशीराम इसे पढकर बहुत उदासीन से होकर बैठ गये, जैसे कि आपत्तियो का पहाड टूट गया हो। मुंशीराम ने अपने भाग से अधिक लेने की अनिच्छा प्रकट की तो पिता जी ने समझाते हुए कहा—मुंशीराम! मै पहले बहुत अविद्या में था, मै तुम्हारे आर्यसमाज मे प्रवेश से भी असन्तुष्ट था, किन्तु अब मेरी अविद्या दूर हो गई है और अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्ही मेरी समस्त धार्मिक आशाओ को पूरा कर सकोगे।'

उपसहार- इस प्रकार दृढ सकल्पी सत्याग्रही मुंशीराम ने अपने सदविचारो को न त्यागते हुए अपने पूज्य पिताजी के पौराणिक विचारो पर विजय प्राप्त की और पिताजी के सच्चे स्नेह को भी बनाये रखा। यही मुन्शीराम बाद मे कितना महान् समाज सुधारक बना, यह विश्व जानता है। जिन्होंने बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्धि प्राप्ति की। यथार्थ स्थिति यदि देखी जायें तो

यह निर्भ्रान्त सत्य है कि जैसे महर्षि दयानन्द जैसा दृढ संकल्पी शिष्य ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी को नही मिलता, तो आज उन्हें कोई विरला ही जान पाता । और यदि स्वामी श्रद्धानन्द जैसा दृढ संकल्पी शिष्य ऋषि दयानन्द को नही मिलता तो महर्षि दयानन्द के सुधारात्मक कार्य पुस्तकों में ही लिखे रह जाते । इस महान् पुरुष ने ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों पर गम्भीरता से अध्ययन किया और एक कुशल निदेशक बनकर उनको मूर्तरूप भी दिया। उसके लिये चाहे प्राणों की भी कुर्बानी देनी पडी, तो भी वे नही सकुचाये। स्वामी श्रद्धानन्द ने समस्त ऐषणाओं का परित्याग करके जो सच्चे फकीर का रूप धारण किया, वह किसी से छिपा नही है। यथार्थ में वह सचाई और निर्भयता का साक्षात् देवता था। विधर्मी मुसलमानों की जामामस्जिद पर आसीन होकर एक वैदिक-धर्मी का वेद मन्त्र का उच्चारण करके भाषण देने का सौभाग्य प्रथम बार स्वामी श्रद्धानन्द को ही प्राप्त है। गुरुकुल विश्वविद्यालय कागड़ी जैसी सस्थाये इस महान् पुरुष के आदर्श स्मारक हैं। दलितोद्धार, शुद्धि आन्दोलन, विधवा-विवाह, स्वतन्त्रता-आन्दोलन, सामाजिक सुधार इत्यादि कार्यों में जो आपने साहस पूर्वक निर्भीकता से कार्य किया, वह भारतीय इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा रहेगा। हिन्दू-मुस्लिम एकता के कार्य को तो आपने अपने अन्तिम जीवन का परम लक्ष्य ही बना लिया था। इस विषय में कॉग्रेस की तुष्टीकरण की नीति से आप सर्वथा असन्तुष्ट थे। यदि इस दूरदर्शी कार्य को आगे तेजी से बढाया जाता तो सन् १९४७ मे अखण्ड भारत खण्ड-खण्ड नही होता। एक असगरी बेगम को शुद्धकर शान्तिदेवी बनाने पर मुस्लिम-सम्प्रदाय मे जो साम्प्रदायिक भावना भडक उठी, उसी के परिणाम स्वरूप एक मदान्ध अब्दुल रसीद ने २३ दिसम्बर १९२६ को साय ४ बजे इनके निवास स्थान पर गोली मारकर इस महात्मा के शरीर को छलनी कर दिया।

आज वह महान् आत्मा हमारे मध्य नही रही, किन्तु उसके अधूरे कार्य अब भी पड़े हैं। उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही हो सकती है कि हम उसी श्रद्धा व दृढ संकल्प के साथ उनके कार्यों को पूर्ण करके दिखाये। 'श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पै खाई गोलिया' इस आदर्श गीत को सार्थक बनाने का साहस दिखाये। आज उनके द्वारा स्थापित सस्थाओ मे शिथिलता, अकर्मण्यता या रुकावट दिखाई दे रही है, उसको दूर करके उनके कार्यो को पूर्ण करने का दृढ सकल्प धारण करे, तभी इस महान् आत्मा का बलिदान सार्थक हो सकता है। श्री सत्यकाम वेदालकार के निम्न शब्दो से ही श्रद्धाञ्जलि देकर हम उस महापुरुष का स्मरण करते है—

स्वामी श्रद्धानन्द आपका नाम रहेगा सदा अमर।
प्राण आपने किये समर्पित भारत मा के चरणों पर॥
हे दयानन्द ऋषि की सेना के महायशस्वी सेनानी।
धर्मयुद्ध में प्राण समर्पण करने वाले बलिदानी॥
हे गुरुकुल के सन्त, तपस्वी, वेदो के श्रद्धालु महान्।
आर्य सस्कृति के सरक्षक, हिन्दू जाति के प्रेरक प्राण॥
जब देखा भारत के बालक अग्रेजों के बने गुलाम।
भूल गये ऋषियो की शिक्षा योरुप का ही लेते नाम॥
फिर से वेद शास्त्रों की शिक्षा का तुमने सकल्प लिया।
गगा की लहरे फिर झूमी, वेद ऋचाओं का गान किया॥
ऋषियों के युग की यादो से जाग उठे सपने सुन्दर।
स्वामी श्रद्धानन्द आपका नाम रहेगा सदा अमर॥

प्रमुख क्रान्तिकारी पं० लेखराम

(श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रत्येक दौर में वीरभूमि हरयाणे का सदैव सक्रिय योगदान ता रही है किन्तु यहा के वीर देशभक्तों में अनेक ऐसे शूरवीर भी थे जिन्होने कई मोर्चों पर सारे राष्ट्र के जन-जीवन को एक प्रकार से भलोभाति झकझोरने वाली भूमिका भी निभाई है। ऐसे वीरों की सूची में सर्वप्रथम वीरशिरोमणि प लेखराम जी का गौरव से नाम जाता है। आपने भारत के क्रांतिकारी इतिहास को चार चांद लगाये। पं० लेखराम जी के पूर्वज राजस्थान के निवासी थे। वे अपने ठाकुरों सहित जोधपुर से चलकर हरयाणे के सिरसा जिले में आकर बस गये। उस समय अग्रेजों का राज्य था पं० लेखराम जी के दादा श्री बलदेवराम जोशी अच्छे विद्वान् पण्डित थे। अंग्रेजी सरकार के आफिसर भी इनका बडा आदर करते थे। एक अंग्रेजी आफिसर ने प्रसन्न होकर बहुत अधिक भूमि देनी चाही और यह घोषणा करदी कि आप जितनी भी भूमि लेना चाहें मैं आपको सहर्ष देने को तैयार हूँ। मूल्य सौगन्ध खाने के लिए एक बीघे का एक पैसा लेगे। पं० लेखराम जी के दादा जी ने अस्सी पैसे दिये। अग्रेज आफिसर ने उनको सहर्ष इसी मूल्य में अस्सी बीघे भूमि दे दी। किन्तु इनके दादा जी के यजमान ने जो राजपूत ठाकुर थे चालाकी से चालीस बीघे भूमि अपने नाम करवा ली। इससे सभी ग्राम निवासी ठाकुर साहब से सदा नाराज रहे और उससे सदा घृणा करते थे। उस वेईमान के घर का अन्न व जल भी ग्रहण नही करते थे। पं० लेखराम जी के दादा जिला हिसार की तहसील फतेहाबाद के ग्राम ढींगसरा में बस गये। किन्तु पं० लेखराम जी के जीवन का प्रारम्भ का समय सिरसा नगर मे ही बीता है। इसीलिए प० लेखराम जी की गणना सिरसा जिले के स्वतन्त्रता सेनानियों में की जाती है।

आपका जन्म ३ मार्च सन् १८०२ में गाव ढींगसरा के ब्राह्मण परिवार श्री कन्होराम सुपुत्र श्री बलदेवराम के घर माता भागवती देवी की कोख से हुआ। आपका पालन-पोषण बड़े लाड प्यार से हुआ। प्राथमिक शिक्षा गांव के स्कूल में ही प्राप्त करके मिडल तक की शिक्षा राजकोय स्कूल सिरसा मे प्राप्त की। उसके बाद मैट्रिक तक की शिक्षा सी० ए० वी० हाई स्कूल हिसार मे प्राप्त की। दसवी तक की शिक्षा प्राप्ति के बाद आपका विवाह सिरसा के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ।

सन् १९२०-२१ में जब 'भारतीय स्वाधीनता' संग्राम का उष:काल प्रारम्भ हुआ, तभी आप हरयाणा के महान् देशभक्त प० नेकीराम शर्मा के सम्पर्क में आकर राजनैतिक क्षेत्र में आए। उन दिनों राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने देशवासियों का आह्वान किया कि वे स्कूल कालिज, वकालत, सरकारी नौकरियां छोड दे और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करे। तभी आपने काग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य शुरू कर दिया।

सन् १९२३ में आपको ब्रिटिश सरकार विरोधी गतिविधियों के आरोप मे सिरसा नगर में गिरफ्तार किया गया और हिसार की एक अदालत से दो वर्ष सख्त कैद को सजा हुई। यह कारावास आपने हिसार और मियांवाली जेलों में काटा। सन् १९२४ के अन्तिम दिनों में जेल से रिहा होकर सीधे लाहौर चले गये और वहां डी० ए० वी० कालिज में आयुर्वेदिक की शिक्षा प्राप्त करने लगे। उन्हीं दिनों आपका सम्पर्क भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री धन्वंतरि तथा श्री भगवतीचरण से हुआ। अब आप क्रातिकारी दल के बाकायदा सदस्य के रूप में कार्य करने लगे।

श्री प० लेखराम को अपने सेवा कार्य के लिए विशाल कार्यक्षेत्र की आवश्यकता थी। इसलिए अपने क्रांतिकारी मित्रों से परामर्श करके रोहतक को अपना क्रान्तिकारी केन्द्र बना लिया

क्योंकि रोहतक दिल्ली के अधिक समीप था अत: यहां पर क्रान्ति का अच्छा उपयोगी केन्द्र बन सकता था। पं० लेखराम जी आरम्भ से ही आर्यसमाजी विचार धारा के थे। अथवा यूँ समझिए की वे आर्यसमाज के रंग में खूब रंगे हुए थे। अत: रोहतक में आर्यसमाज बाबरा के सदस्य बन गये। वहा के प्रसिद्ध आर्यसमाजी महाशय मामचन्द जी के साथ इन्होने अपना तालमेल बैठा लिया। अपनी सेवा के कारण कुछ काल के पश्चात् आप आर्यसमाज के मन्त्री बन गये। वे रोहतक में दिखावे के लिए एक वैद्य के रूप में सेवा करते थे और अपनी दुकान चलाते थे। उनकी दुकान अच्छी चलने लगी और लोगों में पं० लेखराम जी का पर्याप्त मान सम्मान भी बढ़ने लगा। उनके पास चिकित्सा के लिए बहुत से सरकारी कर्मचारी तथा पुलिस वाले भी आते थे। किन्तु किसी को आभास नहीं होने दिया कि वैद्य लेखराम जी कोई राजनैतिक नेता वा क्रान्तिकारी हैं। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री धन्वन्तरि जी और श्री भगवतीचरण आदि छद्मवेश में वैद्य जी के पास आते जाते रहते थे। तथाकथित कपटवेशी क्रान्तिकारी यशपाल भी इनके पास आता जाता था। वैद्य लेखराम जी ने एक बहुत अच्छा सुरक्षित स्थान बना रखा था जिसमे छोटे-बड़े बम बनाने का कार्य बहुत तेजी से आरम्भ कर दिया था।

पं० लेखराम जी ने स्वय बताया कि शहीद यतीन्द्रनाथ दास के ६४ दिन भूख हड़ताल बलिदान मे क्रान्तिकारियों मे बहुत रोष था और वे किसी शस्त्रक्रान्ति के लिए यत्नशील थे। तभी श्री भगवती चरण शहीद यतीन्द्र की अर्थी कलकत्ता पहुंचाकर केन्द्रीय असेम्बली मे भगतसिंह आदि के बम फेंकने से एक दिन पूर्व मेरे पास आया और बम फेंकने की सारी योजना मुझे बताई। मैंने उन्हे समझाया कि इस काण्ड से लाभ कम होगा और हानि ज्यादा। परन्तु वह नही माने और अगले ही रोज दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली मे बम फेंक दिया गया। बम फेंककर दूसरे दिन भगवतीचरण मेरे पास आया और रात भर रहा। अगले ही दिन लाहौर में झग रोड स्थित भगवतीचरण के अड्डे पर पुलिस का छापा पड़ा और वहा से १७ व्यक्ति पकड़े गये। उनमें से कई वायदामाफ गवाह बन गए और सारा रहस्य बता दिया।

जो बम रोहतक मे पर्याप्त समय से बनाये जा रहे थे उनका उपयोग करने का सुअवसर ढूंढ रहे थे। किन्तु विश्वासघाती झूठे क्रान्तिकारियो की कृपा से अभी विशेष कार्य करने से पहले सदैव भय लगा रहता था कि कभी कोई घर का भेदी लका ढाहने वाली लोकोक्ति को सच्चा न सिद्ध कर दे। इसलिए फूक फूक कर कदम रखना पड़ता था। कई अपने साथी क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर लार्ड इरविन की रेलगाडी को बम से उडाकर उनकी हत्या करने की गुप्त योजना बनाई। यह कार्य २३ दिसम्बर १९२९ को दिल्ली के पुराने किले के पास होना था। यह गुप्त योजना असफल ही रही परन्तु इस घटना से पूरा ब्रतानवी साम्राज्य हिल उठा और क्रान्तिकारियो के इस महान् साहसिक कार्य की गूँज विश्व भर में गूज उठी तथा भारत मे संचालित स्वाधीनता सग्राम को ओर दुनियां भर के समाचार पत्रों का ध्यान भी गया। पं० लेखराम जी के द्वारा पता चला २२ दिसम्बर को कई दिन के परिश्रम के पश्चात् अपने साथियों के साथ वे इस कार्य में सफल हो गये कि बहुत दूर तक जमींदोज तारें बिछाकर एक बड़ा बम रेलवे लाइन के साथ गहरा दबाकर उससे जोड़ दिया। घटना के दिन २३ दिसम्बर को इतनी भारी धुन्ध थी कि हमें दूर से ट्रेन के इजन की लाइट नजर नहीं आई कि कितनी दूर है ? परन्तु ज्यों ही ट्रेन की धड़धड़ की आवाज हमे महसूस हुई, लगभग एक किलोमीटर दूर से स्विच दबा दिया गया, तो एक भयकर धमाका हुआ। उस समय तो धुन्ध

तथा चारों ओर धूएं से कुछ पता न लगा कि क्या हुआ। परन्तु बाद में पता चला कि वायसराय का डिब्बा निकलने पर ट्रेन के पिछले दो डिब्बे उड़ गये। इस घटना पर देश भर में क्रान्तिकारियों की जोरदार घर पकड़ हुई, परन्तु हमारी तरफ किसी का भी कोई ध्यान नहीं गया।

कुछ समय बाद पं० लेखराम जी ने स्वयं ही देखा कि रोहतक में भी पुलिस सावधानी की सरगमिया बढ़ रही हैं। तो ३० सितम्बर १९३० को अचानक रोहतक की दुकान छोड़कर पं० लेखराम जी भूमिगत होकर बम्बई चले गये। बाद मे पुलिस को उनकी सारी गतिविधियों का पता चला, परन्तु वे कौन थे यह सारा रहस्य वह न जान पाई। सरकार द्वारा आपकी गिरफ्तारी के लिए तरह-तरह के इनामों की घोषणा की गयी और लगातार १६ वर्ष तक पुलिस आपको देशभर में ढूढती रही। परन्तु आप उसके हाथ नही आये। हां इस लम्बे अर्से मे पुलिस ने आपके घर वालों और सगे सम्बन्धियों को आपका अता पता जानने के लिए तरह २ से तग तथा बहुत परेशान किया।

प्रश्न इस प्रकार उठता है कि आप १६ वर्ष तक भूमिगत काल मे कहा कहा और किस हाल में रहे? पं० लेखराम जी ने स्वय बताया कि "मै तो बहुत मजे में रहा। आपने पहले बम्बई तथा बाद में कराची शहर में अपना नाम साई गोपालदास देवकोनन्दन रखकर ठेकेदारी, घी का व्यापार तथा भट्ठे वगैरा लगाने का व्यवसाय करके अच्छा पैसा कमाया और आनन्द से जीवन बिताया। सन् १९४६ में प्रकट होकर पहले लाहौर तथा फिर हिसार आगया। तब आपके गिरफ्तारी वारण्ट मंसूख हो चुके थे।

आपको भारत सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी सम्मान पेंशन, भूमि तथा ताम्र-पत्र प्रदान करके सम्मानित किया है। आपके कोई सन्तान नही थी और आपकी धर्मपत्नी भी काफी समय हुआ स्वर्गवास हो गयी है। आजकल पं० लेखराम जी सन्ध्याकाल का ही जीवन एक वीतरागी के रूप में अपने एकमात्र दत्तक पुत्र के निवास स्थान पर हिसार मे बिता रहे हैं। यह वही मकान है जिसको प्रतापसिह कैरो ने ६ हजार रुपये प० लेखराम जी को पुरस्कार रूप मे देकर बनवाया था। उनके पुत्र श्री सन्तकुमार जोशी एच० सी० एच०, आजकल हरयाणा रोडवेज, सिरसा डिपो के जनरल मैनेजर हैं। इन दिनो प० लेखराम जी अपने मकान मे एकान्त में रहते हुए धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हैं और अपना समय ईश्वर उपासना में भी लगाते है। इस समय उनकी आयु ८० वर्ष से अधिक है। अभी कुछ समय बीता जब मैंने उनके दर्शन उनके मकान में ही किये। उनके पैर पर चोट लगी हुई थी। उन दिनों उठने बैठने चलने में वे असमर्थ से प्रतीत होते थे बड़ी कठिनाई से अन्दर से उठकर अपने भतीजे का सहारा लेकर बाहर आये थे। जब मै उनसे विदा लेकर चलने लगा तो वे सहारा लेकर उठे और बार-बार मना करने पर भी द्वार पर्यन्त (द्वारान्तं पान्थमनुव्रजेत्) के अनुसार मुझे छोड़ने आये। इन दिनो उपनिषदों और विदुरनीति का स्वाध्याय प० लेखराम जी कर रहे थे। वश परम्परानुगत इनका परिवार आर्ष ग्रन्थो के पठन पाठन में श्रद्धा रखता है। जब प० लेखराम जी आठ वर्ष के ही थे तभी इनके पिता जी ने इनको मूल अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करा दी थी। इन्ही सस्कारो के वशीभूत होकर प० जी ने काशिका और महाभाष्यादि पठन-पाठन बडी श्रद्धा से किया है। इतना ही नही अपनी सगी भतीजी को स्वयं व्याकरण साहित्यादि पढ़ाकर सस्कृत एम० ए० की परीक्षा दिलवायी जिससे वह अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुई। इन्हीं आर्ष ग्रन्थों के प्रति पं० लेखराम जी की श्रद्धा होने मे ये मुझ लेखक से हार्दिक प्रेम करतेहैं। जब कभी मुझे वे मिले सदैव आर्ष ग्रन्थो के पठन-पाठन की ही बाते करते रहे। जब कभी मैंने उनके क्रान्तिकारी जीवन के विषय में जानना चाहा और यह पूछा कि १६ वर्ष आप भूमिगत कहां-कहां

रहे तो थोडा बहुत बताकर इस विषय को सदा टालते ही रहे किन्तु इस बार मिलने पर उनके जीवन व विचारधारा मे परिवर्तन मिला। मैने जो कुछ उनसे पूछा बताने की कृपा की। टाल मटोल नही किया। एक विशेष कृपा उन्होने यह की कि अन्दर से अमर गाथा नाम की पुस्तक लाकर मुझे भेंट की। साथ ही अपना एक फोटो चित्र भी प्रदान करके मुझे अनुगृहीत किया।

बडे सौभाग्य की बात एक यह है कि जिस समय यह रोहतक का अपना औषधियो का भरा हुआ औषधालय छोड़कर भूमिगत हो गये और १५-१६ वर्ष तक इनका कुछ पता ही नही चला कि वे कहां हैं उस समय इनके मित्रो ने इनकी औषधिया उठाकर इधर-उधर सुरक्षित रख दी। उनमे से कुछ भस्मे इनके घनिष्ठ मित्र सेठ शेरसिंह जी के पास रखी थी। सेठ शेरसिंह जी के साथ मेरा स्नेह था। उन्होने वे भस्मे मेरे पास गुरुकुल झज्जर मे भिजवा दी। धर्मार्थ औषधालय के द्वारा उनका बड़ा अच्छा सदुपयोग हुआ। वैद्य लेखराम जी के साथी लाला शेरसिंह जी धार्मिक व क्रान्तिकारी विचारधारा रखनेवाले थे। धार्मिक कामो मे वे सदैव श्रद्धा से सहयोग देते रहे। उनकी एक विशेष बात यह थी उन्होने क्रान्तिकारियो के प्रिय अस्त्र माऊजर पिस्टल का लाइसेन्स बनवा रखा था। और माऊजर पिस्टल भी सदैव अपने साथ रखते थे। क्रान्तिकारियों का इतिहास पढ़ने वाले भली-भांति जानते है कि माऊजर पिस्टल, पिस्टल ही नही यह राईफल का भी काम देता है। क्योंकि जो बीटा वा दस्ता पिस्टल का होता है उसको लम्बा करने पर यही माऊजर पिस्टल राईफल बन जाता है और इसकी गोली राईफल की तरह दूर तक मार करती है। मेरा भी रिवालवर का लाइसन्स था इसलिए मै बहुत बार सोचता था कि मै अपने छोटे रिवालवर को किसी मित्र को दे दूँ और यह माऊजर पिस्टल खरीदकर अपने लाइसेन्स पर चढवा लूँ किन्तु इच्छा होते हुए भी यह बात न बन सकी। प० लेखराम जी ने प्रसङ्गवश अपने मित्र को एक घटना श्री यशपाल के विषय मे बताई जो उनका भ्रम ही है क्योकि प० जी धार्मिक वृत्ति के अपने मित्रो पर विश्वास करने वाले हैं। इन्होने बताया जब इनके साथी क्रान्तिकारी अनेक पुस्तको के लेखक श्री यशपाल जी मृत्यु के समय अन्तिम सास ले रहे थे तो उनके किसी साथी ने पूछा कि इस समय आप क्या और कैसा सोच रहे हैं। तब उन्होने बताया कि मुझे मेरे परम मित्र श्री लेखराम याद आ रहे हैं।

टिप्पणी—श्री वैद्य लेखराम जी को सम्भव है अब तक यह पता नही चला कि यह यशपाल नाम का व्यक्ति अत्यन्त झूठा छली कपटी क्रान्तिकारियो की पीठ में छुरा घोंपनेवाला था। यह सारी आयु अंग्रेजो की खुफिया पुलिस से मिला रहा और उनसे मासिक वेतन लेकर क्रान्तिकारियों के गुप्त रहस्यो की सूचना सरकार को देता रहा और इसी के निमित्त से वेतन पाता रहा। चन्द्रशेखर आजाद को मरवाने वाला यही धूर्त पापी था। अपनी लेखनी से इसने अनेक पुस्तकें सिंहावलोकनादि लिख डाली और इसने जिन्दा शहीद बनने का यत्न किया। किन्तु स्वतन्त्रता मिलने पर एक देशभक्त जो पहले अंग्रेजों के गुप्तचर विभाग मे नौकरी करता था, जिनके द्वारा इसको भी तनखाह मिलती थी, उसने इसका हस्ताक्षरयुक्त पत्र छाप के इसके ढ़ोल की पोल खोल डाली। इसकी पुस्तक पृथक् छपी हुई मिलती है, जिसमे इसकी देश भक्ति क्रान्तिकारी जीवन के पाखण्ड की पोल खोल दी और चन्द्रशेखर आजाद को किसने मरवाया यह अब तक रहस्य बना हुआ था। उस रहस्य का उद्घाटन खुले पृष्ठो मे आगया और इस पापी का नगा रूप दिखाकर यथार्थता के दर्शन करा दिये। इस विषय मे कभी विस्तार से लिखूंगा। ●

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का गीत

इतिहासों में नाम रहेगा उन्हीं का संसार में,
जो धर्म खिलारी जय पाये हैदराबाद में।

दूसरा जत्था रोहतक से गया जिसमें थे 25 वीर,
लड़े बलकारी, जय पाये हैदराबाद में। १।

खेड़ी का जयलाल लछमन, टीटोली का देवकराम,
बढकर गये अगाड़ी। २।

गंगाणे का भूपाल साधु भजनानन्द जागसी के,
करने लगे तैयारी। ३।

चिड़ी का शंकरदत्त, मोलड़ जमनाराम नान्दल के,
धर्म के पुजारी। ४।

भैण का जयलाल, बेगा जगतराम भैण के,
कर रहे अपनी हुशियारी। ५।

कासडी के जयलाल लखी, माईधन धर्मपाल,
उजाला हजारी। ६।

खानपुर के कन्हैया मूला, गवाड़ीले का रणसिह,
रहे ना पिछाड़ी। ७।

बाघा डीघा पाकसमे के, रोहतक का शमशेरसिंह,
सच्चे प्रणधारी। ८।

भिखनसिंह ढ़ोलकिया सग मे, नित्यानन्द बना जत्थेदार,
ले सग सेना सारी। ९।

यशोदा और सुभाषिणी ने जत्थे के तिलक किये,
फूलमाला डाली। १०।

गुरु ईश्वरसिंह का हाथ, नित्यानन्द के सिर पर था,
हो गई फतह हमारी। ११।

("गीत हरयाणा" भाग २ से उद्धृत)

अमर बलिदानी वीर स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान पर विशेष:—

लो, सामने खड़ा हूँ, गोली मारो

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

१८५६ का वर्ष भारतवर्ष के इतिहास में महत्त्वपूर्ण वर्ष माना जाना चाहिए। क्योंकि इसी वर्ष में देश की कई महान् विभूतियों ने जन्म लिया। जिन में दो विभूतियां महान् देशभक्त पैदा हुई हैं वे हैं स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा श्री श्याम जी कृष्णवर्मा। इन दोनों ही वीर पुरुषो ने भारत का नाम ऊँचा किया है। इसी १८५६ वर्ष के आरम्भ में ही स्वतन्त्रता सग्राम की तैयारियां आरम्भ हो गई थी। १८५६ में पहली सर्वखाप पचायत मेरठ के जगल मे ही हुई थी। जिसमें उस समय के सभी स्वतन्त्रता सेनानी शामिल हुए थे। जिसमें भारत के अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह जफर के पुत्र भी उपस्थित हुए थे। सर्वखाप पचायत की अध्यक्षता की थी ब्रह्मर्षि दण्डी स्वामी विरजानन्द जी ने। आजादी की नीव इसी वर्ष मेरठ में रक्खी गई। जिसके परिणाम स्वरूप १८५७ का स्वातन्त्र्य सग्राम हुआ।

इसी सन् में जिला जालन्धर के एक ग्राम तलवन में स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म हुआ। इनका बचपन का नाम मुन्शीराम था। इनके पिता का नाम नानकचन्द था। ये पुलिस में उच्चाधिकारी थे। उन्होंने अपने बालक मुन्शीराम को अग्रेजी पद्धति के स्कूल मे दाखिल करवाया। अग्रेजी शिक्षा तथा कुसगति से मास, शराब, जूआ, शतरज, हुक्का, दुराचारादि सब व्यसन बालक मुन्शीराम को लग गए। इन व्यसनों में फसने से युवक का जीवन अन्धकारमय हो गया।

जिन दिनों युवक मुन्शीराम घोर अन्धकारमय जीवन बिता रहे थे। शराब, मास तथा वेश्या से भी नफरत न करते थे। पूरी तरह से जीवन व्यसनों में फंस कर व्यतीत हो रहा था, ऐसे में युवक मुन्शीराम के सौभाग्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती बरेली पधारे। मुन्शीराम के पिता श्री नानकचन्द जी उन दिनों वहां कोतवाल थे। उनको यह आदेश दिया गया कि वे महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों में उपद्रव को रोकने का प्रबन्ध करे। श्री नानकचन्द जी स्वय सभा में गए और महर्षि के व्याख्यानों से स्वय बडे प्रभावित हुए। अब उनको यह भी विश्वास होगया कि उनके नास्तिक पुत्र को संशय निवृत्ति महर्षि के सत्संग से हो जायेगी। उन्होने अपने पुत्र से कहा—बेटा मुन्शीराम! एक दण्डी सन्यासी आए हुए है। बडे विद्वान् और योगिराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे सारे संशय दूर हो जाएगे। कल मेरे साथ चलना।

अगले दिन अपने पिता के साथ बेगम बाग की कोठी पर जहां महर्षि के व्याख्यान हो रहे थे, पहुंचे। महर्षि के सूर्य के समान चमकते हुए चेहरे को देखकर उनके मन मे कुछ श्रद्धा उत्पन्न हुई, साथ ही पादरी स्काट तथा कई अन्य यूरोपियनों को व्याख्यान में उपस्थित देखकर श्रद्धा और बढ

गई। अभी दश मिनट भी वक्तृता नहीं सुनी थी कि उन्होंने मन में विचार किया—यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल सस्कृतज्ञ होते हुए ऐसी युक्तियुक्त बाते करता है कि—विद्वान् दंग हो जाए। उस दिन महर्षि का व्याख्यान परमेश्वर के निज नाम "ओ म्" पर था। मुन्शीराम जी ने अपने आत्मचरित में लिखा है कि—"वह पहले दिन का आत्मिक आल्हाद मैं कभी भूल नहीं सकता"।

मुन्शीराम जी को महर्षि के साक्षात् सत्सग का इन थोडे से दिनो के अतिरिक्त अवसर प्राप्त नही हुआ, किन्तु थोड़े से दिनों के सत्सग ने उनके मन पर महर्षि के सत्सग का स्थायी प्रभाव छोड़ा, और उनकी काया पलटनी आरम्भ हो गई। महर्षि के स्मरण से ही मद्य मास सेवन, जुआ व्यभिचार इत्यादि सब व्यसनों से धीरे-धीरे वे मुक्त होने लगे और उनमें आस्तिकता का सचार होने लगा। महर्षि कृत सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमि का, वेद भाष्यादि के नियमित स्वाध्याय ने उन्हें अन्धार से ज्योति, प्रेय से श्रेय व कल्याण मार्ग को ओर आने में सब से अधिक सहायता की।

महर्षि दयानन्द के सत्संग मे मुन्शीराम के जीवन मे अद्भुत परिवर्तन हुआ। इसमें कोई सन्देह नही, कितु महर्षि के सत्सग के अतिरिक्त उनकी प्रतिव्रता नारी शिवदेवी जी का भी प्रदृश्य हस्त इनके परिवर्तन में विशेष सहायक सिद्ध हुआ। मुन्शीराम जी की शराबी हालत में उनकी सेवा करके उनके हृदय मे परिवर्तन किया, जिससे प्रभावित होकर उन्होने शराब छोड़ दी। शराब के पैसे भी शिवदेवी जी ने अपने गहने देकर लौटाए।

महर्षि दयानन्द के सत्सग का प्रभाव भी जीवन में बढ़ता ही जा रहा था। सत्यार्थप्रकाश का दशम समुल्लास पढकर मांस खाना भी छोड दिया। शतरज, हुक्का आदि व्यसनों का परित्याग मुन्शीराम जी ने आर्यसमाज में प्रवेश के पश्चात् श्री प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी के सत्सग के प्रभाव से किया।

आर्यसमाज मे प्रवेश के पश्चात् उन्होंने अनेकों सुधार कार्य किए। मुन्शीराम जी ने न केवल बालविवाह की कुप्रथा के विरुद्ध आन्दोलन किया प्रत्युत ब्रह्मचर्यपूर्वक शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार के लिए सबसे अधिक प्रयत्न किया। इसके लिए उन्होने सर्वस्व त्यागकर गुरुकुल की स्थापना की। अब सन्यास लेने से उनका नाम स्वामी श्रद्धानन्द होगया।

उन दिनों पौराणिक स्त्री शिक्षा का बहुत विरोध करते थे। कन्याओं की शिक्षा के लिए उन्होंने जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। इसके अतिरिक्त देहरादून में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। कन्याओं की शिक्षा, बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, जाति बन्धन तोडकर विवाह अस्पृश्यता निवारण आदि कार्य स्वामी जी ने बडी लगन से किए।

अपूर्व त्याग—

गुरुकुल की स्थापनार्थ उन्होंने वकालत का तो परित्याग कर ही दिया था उन्होंने अपने दोनों पुत्रों इन्द्र और हरिश्चन्द्र को भी गुरुकुल को समर्पित कर दिया था। सद्धर्म प्रचारक प्रेस भी जिसकी कीमत उस समय आठ हजार से कम न थी उन्होंने उसे भी गुरुकुल के चरणों में चढा दिया। ३० हजार रुपये से भी अधिक रुपया लगाकर बनाई गई जालन्धर की अपनी कोठी भी उन्होने गुरुकुल को सौंप दी। उन्होंने अपना तन, मन, धन सब कुछ गुरुकुल को अर्पित कर दिया था। इससे बढ़ कर त्याग और क्या हो सकता है?

निर्भयता की मूर्ति—

३० मार्च, १९१९ को स्वामी श्रद्धानन्द जी म० गांधी के द्वारा संचालित रोलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का दिल्ली में नेतृत्व कर रहे थे। ३० मार्च को दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही। मध्यान्ह के १२ बजे तक स्वामी जी दिल्ली नगर का चक्कर लगाकर अपने निवास स्थान पर पहुंचे ही थे कि स्टेशन पर गोली चलने का समाचार आया। तुरन्त स्टेशन पर पहुंचे। वहां पर एकत्रित ३-४ हजार आदमियों को कम्पनी बाग की सभा में ले आए। सभा में २५ हजार के लगभग हाजरी हो गई थी। स्वामी जी वहां पर भाषण दे रहे थे कि चांदनी चौक के घण्टाघर पर भी गोली चलने का समाचार मिला। उत्तेजित जनता को स्वामी जी ने शान्त रक्खा। सेना ने आकार उसी समय सारी सभा को घेर लिया। चीफ कमिश्नर भी कुछ घुडसवारों के साथ वहां आगए। मशीनगनें भी लाकर खड़ी कर दी गईं। स्वामी जी ने चीफ कमिश्नर से कह दिया था कि यदि आपके आदमियों ने लोगों को उत्तेजित किया तो मैं शान्ति स्थापना का जिम्मेवार नहीं हूं अन्यथा शान्ति भंग न होने देने का सब उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है।' ऐसी उत्तेजित जनता को शान्त रखना सचमुच स्वामी जी का ही काम था। अब ४० हजार का विशाल जनसमूह आपके पीछे-पीछे चला आरहा था। घण्टाघर पर गोरखे सिपाही रास्ते से हटकर एक ओर पंक्ति बांधकर खड़े होगए। लोगों ने समझा कि हमारे लिए रास्ता छोडा गया है किन्तु वहां पहुचते ही बन्दूक दागी गई। लोगों में खलबली मच गई। जनता को वहां ही खड़ा रहने का आदेश देकर स्वामी जी शान्त जनता पर बन्दूक दागने का कारण जानने के लिए गोरखों की ओर बढ़े। परन्तु दो किरचें स्वामी जी की छाती पर बड़े घमण्ड से और धृष्टता के साथ यह कहते हुए गोरखों ने तान दी कि तुमको छेद देंगे। वे शान्ति से उनके सामने खड़े होगए और गोरखों से कहा—लो, मैं सामने खड़ा हूं, गोली मारो। इतने में ही ८-१० किरचें और भी स्वामी जी की छाती पर तान दी गई। और वैसी ही धमकियां दी जाने लगीं। अब जनता के लिए शान्त रहना असम्भव होगया, किन्तु उन्होंने हाथ के इशारे से सत्याग्रह व्रत का स्मरण दिलाते हुए लोगों को शान्त किया। लगभग तीन मिनट किरचें स्वामी जी की छाती की ओर तनी रहीं तब एक घुड़सवार अंग्रेज सी० आई० डी० पुलिस के मि० औड आए तो उन्होंने बड़े गुस्से के साथ आर्डर देकर गोरखों को पीछे हटा दिया। इस प्रकार लाल अक्षरों में लिखी जाने वाली लाल घटना स्वामी जी की निर्भीकता के कारण टल गई।

स्वामी जी के जीवन की अनेकों घटनाएं हैं जिन्हें यहां लिखा नहीं जा सकता। उन्होंने स्वराज्य आन्दोलन में भी बढ़ चढ़कर भाग लिया। म० गांधी को स्वराज्य लेने का मूल मन्त्र उन्होंने ही बताया। गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने रुपये भेजे। हरिजनों के उद्धार के लिए उन्होंने बहुत से कार्य किए। अनाथों विधवाओं के लिए भी उन्होंने आश्रम खोले। हरिजनों के उद्धार का कार्य करते हुए उन्होंने हिन्दू जाति की रक्षा के लिए शुद्धि आन्दोलन आरम्भ किया। हजारों मलकाने मुसलमानों को शुद्ध किया। जिससे मुसलमानों में खलबली मच गई। स्वामी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे गए। उन्हें बार-बार मारने की धमकियां दी गई। उस समय दुर्भाग्य से गांधी जी ने भी अपने अखबार में शुद्धि के विरुद्ध मुसलमानों का ही पक्ष लिया, सत्यार्थप्रकाश, व आर्य-समाज के विरुद्ध भी गांधी जी के बयानों ने जलती पर घी का काम किया।

मुसलमानों का षड्यन्त्र पूरा हुआ, अब्दुलरशीद नाम के एक मुसलमान युवक ने, जो कि एक जिल्दसाज था, स्वामी जो को बिमारी की हालत में गोली मार दी।

इस प्रकार आदर्श सुधारक, आदर्श आचार्य, आदर्श कर्मयोगी नेता, निर्भीक संन्यासी, २३ दिसम्बर, १९२६ को सदा के लिए देश के लिए बलिदान होगया।

ओ३म्

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए—

न्याय यात्रा का सर्वत्र शानदार स्वागत

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

रोहतक—१३ दिसम्बर को स्थानीय छोटूराम पार्क में न्याय यात्रा का रोहतक की जनता ने शानदार स्वागत किया। चौ० देवीलाल के नेतृत्व में हिसार से पदयात्रा आरम्भ की गई है। इस पदयात्रा का नाम न्याय यात्रा रखा गया है क्योंकि राजीव लोंगोवाल समझौते में हरयाणा से अन्याय हुआ है। चण्डीगढ पजाब को देने की घोषणा कर दी गई, परन्तु उसके बदले में हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का पूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के कार्यक्रम के अनुसार हरयाणा को हस्तान्तरित नहीं किया गया और मैथ्यू आयोग को हिन्दी भाषी क्षेत्रों का निर्णय करने का कार्य सौंप कर मामला लटका दिया गया। इस समझौते के अनुसार पंजाब के मुकाबले नहरों का पानी पहले से भी कम कर दिया गया। अतः हरयाणा की जनता न्याय की माग करने के लिए लोकसभा भवन नई दिल्ली तक न्याय यात्रा कर रही है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के मच से सर्वप्रथम हरयाणा के हितो की रक्षा की माग उठाई गई थी। प्रो० शेरसिह ने जो कि हरयाणा रक्षा वाहिनी एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष भी है जनमत तैयार करने हेतु हरयाणा के कोने-कोने में कार्यकर्त्ताओ की बैठक तथा सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया। गतवर्ष अपनी मांगों के समर्थन मे दिल्ली मे गृहमन्त्री को ज्ञापन दिया तथा प्रधान मन्त्री से शिष्ट मण्डल के साथ भेट की और मैथ्यू आयोग के सामने भी ज्ञापन दिया तथा पंजाब में अकाली सरकार की ओर से दिये गये ज्ञापन का प्रत्युत्तर दिया एव बहस मे भाग लेकर हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत किया। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से न्याय यात्रा का स्वागत किया तथा समर्थन किया गया। रक्षा वाहिनी के सयोजक म० भरतसिह जी तथा प्रचार मन्त्री श्री रघुवीर सिंह जी ने भूतपूर्व विधायक चौ० बदलूराम जी के सहयोग से न्याय यात्रा का ग्राम बहूअकबरपुर तथा अन्य ग्रामों में पहुँचकर स्वागत करवाया। १३ दिसम्बर को रोहतक में हुई विशाल सार्वजनिक सभा में रक्षा वाहिनी की ओर से ११०० के नोटों का हार चौ० देवीलाल जी के गले में पहनाया गया और सभा के उपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री ने प्रो० शेरसिह जी का सन्देश सुनाते हुए बताया कि हरयाण रक्षा वाहिनी के सभी अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता न्याय यात्रा में सम्मिलित होंगे तथा दिल्ली में वोट क्लब पर पहुचकर प्रो० शेरसिह जी उपस्थित होंगे। इस सन्देश का उपस्थित जनता ने तालिया बजाकर स्वागत किया। अन्य खापो की भान्ति चौ० बदलू राम जी ने हुड्डा खाप की ओर से ११००१ रु० की माला चौ० देवीलाल को पहनाकर पूर्ण

समर्थन करने का आश्वासन दिया। प्रो० शेरसिंह तथा उनके अनेक साथियों द्वारा न्याय यात्रा में कूदने का समाचार १५ दिसम्बर ८५ के दैनिक ट्रिब्यून चण्डीगढ के अंक मे थथम पृष्ठ के प्रथम कालम में प्रकाशित किया गया।

न्याय यात्रा का हरयाणा के कोने-कोने मे स्वागत किया जा रहा है। न्याय यात्री जिस ग्राम तथा नगरों से गुजरते हैं वहा से भी जत्थे इस यात्रा मे सम्मिलित हो रहे है तथा उनके भोजनादि तथा रात्रि को विश्राम का भी प्रबन्ध किया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशकों तथा भजन मण्डलियों द्वारा अपने प्रचार कार्य के साथ-साथ हरयाणा के हितों की रक्षा करने के लिए जनता को तैयार किया जा रहा है। सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी भी अपने एक जत्थे के साथ चौ० ओमप्रकाश विधायक (बेरी) के साथ न्याय यात्रा में चल रहे है। इसी प्रकार हरयाणा रक्षा वाहिनी तथा आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ता भी अपने-अपने क्षेत्रों से न्याय यात्रा मे भाग ले रहे है।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने भी अपनी एक अपील द्वारा हरयाणा की जनता से इस न्याय युद्ध मे भारी संख्या मे सम्मिलित होने का अनुरोध किया है।

कितने थे वे महान् श्रद्धानन्द

कितने थे वे महान् श्रद्धानन्द महर्षि जी के अनुयायी।
हर देशवासी के दिल मे जिसने राष्ट्र भक्ति सिखायी ॥

भौतिक सुख को छोड़ कठिन मार्ग अपनाया।
निर्भय हो जिसने गोली आगे सीना फैलाया।
देख वीरता स्वामी जी की दग रहे अंग्रेज सिपाही ॥१॥

कुरान शरीफ पढा करते जो उन्हे वेद फिर पढवाये।
वेदों के अनुसार दोबारा गुरुकुल खुलवाये।
यवन ईसाई बने भाइयो को यज्ञोपवीत पहनाई ॥२॥

ओ३म् पताका ली हाथ मे शुद्धि का प्रचार किया।
यज्ञ धूम मचा सारे ऋषि स्वप्न को साकार किया।
भेद भाव भुला सारे मिला दिये भाई-भाई ॥३॥

अधूरे काम ऋषि के थे जो पूरे कर दिखलाए।
"रामचन्द्र" आज श्रद्धा से गीत उन्ही के गाये।
आर्य गुण वर्णित ना हो करते रहो कविताई ॥४॥

—डा० रामचन्द्र आर्य
बड़वा (भिवानी) १२५०४५

बुरों की भलाई करना आदर्श परोपकार

—पृथ्वीसिंह बेधड़क आर्य भजनीक

टेक··· बुरों की भलाई करना सबसे अच्छा काम है।
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥

छोड़कर बुराई बुरा अच्छे काम करने लगे,
शायद उसको देख उसका भाई भी सुधरने लगे।
बताओ तो इससे अच्छा और क्या प्रोग्राम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥१॥

कोई बुरा होता नहीं बुरी हों बुराइयां,
लूटता था रोजाना जो लोग और लुगाइयां।
जिसका आज सिद्ध ऋषि वाल्मीकि नाम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥२॥

शिक्षा देकर दूर करो अज्ञानी की अज्ञानता,
अगर शिक्षा देने पर भी किसी की नहीं मानता।
फिर तो उस पापी के लिए राम है घनश्याम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥३॥

मुसलमान ने ही मुसलमान को बरबाद किया,
भारत ने कुर्बानी करके बगला को आजाद किया।
पूछो जिया से क्या अब भी खतरे में इस्लाम है'
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥४॥

बहादुरशाह जफर का बेटा एक रोज मथुरा गया,
वृजानन्द के पैर पकड़े पांच गिन्नी देकर कहा।
खुदा के फरिश्ते तुझे शाह का सलाम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥५॥

स्वामी दयानन्द ने कहा था तहसीलदार को,
छोड़ दो शराब सुनो वेद के प्रचार को।
अमीचन्द तू हीरा है पर वेश्याओं का गुलाम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥६॥

पिलाया था दूध जहर गेर करके किसी ने,
पांच सौ रुपये दे करके कहा था यह ऋषि ने।
दयानन्द की तरफ से यह आपको इनाम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥७॥

ईश्वर की असली भक्ति सत्यार्थ-प्रकाश में,
यस्य नाम महद्यशः ग्यारहवें समुल्लास में।
ज्ञान से अच्छा जाप ओ३म् नाम न्याम शाम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है॥८॥

एक डेढ़ मिनट बाकी रह गया था फांसी का,
कितना अच्छा फिकरा था यह भक्त ईसा मसी का।
गुड ऐण्ड फोरगेट आखिरी कलाम है।
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥९॥

कृष्ण जैसी नीति रहे राम सी मर्यादा रहे,
पृथ्वीसिंह बेधड़क कहे शासन प्रजावाद रहे।
जिला मेरठ अन्दर जिसका शिकोहपुर ग्राम है,
छुड़ा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥१०॥

आर्यसमाज के सुविख्यात आर्य भजन उपदेशक, आशु कवि चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क ने अपने स्वर्गवास से कुछ पहले, दुर्जनो के सुधार तथा उनके दोष निवारणार्थ १० पद्याशों का यह गीत बनाया था। जैसे साधुओ के सत्सग से रत्नाकर डाकू कवि वाल्मीकि ऋषि बना था। भारत ने बगलादेश स्वतन्त्र कराया। गुरु वृजानन्द की राजनैतिक गुप्त मथुरा पंचायत श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स० १९१३ वि० में दिल्ली नरेश बहादुर शाह के बेटा फिरोजशाह ने गुरु को पांच गिन्नी भेंटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भी सम्मान सदेश दिया था। वह शाहजादा सग्राम हार के पश्चात् मक्का मदीना जाकार सन् १८९६ ई० मे गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अमीचन्द आर्यभजनीक बना। निहालसिंह आर्य

अप्रैल 1966 मे पंजाब के अकाली नेताओं तथा हरयाणा के नेताओं का सर्वसम्मत निर्णय जिसकी प्रतिलिपि प्रो० शेरसिंह ने मैथ्यू आयोग को 4 नवम्बर 1985 को हाथोंहाथ दी

क्योंकि यह भावना है कि पंजाब और हरयाणा की प्रस्तावित सीमाओं के दोनों ओर ऐसे गाव हैं जिनका भाषाई सम्बन्ध दूसरी तरफ के इलाके से बनता है, और क्योंकि ऐसे गाव का भाषा के आधार पर एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने से वातावरण में शांति रहेगी तथा एकरूपता आयेगी, इसलिये यह प्रावधान किया जाये कि : -

गाव का अर्थ है भूमि का ऐसा टुकड़ा जिसको माल के कागजात में अलग नाम से जाना जाता है।

कोई गाव जो पजाव और हरयाणा से प्रस्तावित सीमाओ से जुडा हुआ हो या हस्तातरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप जुड़ सके, अपनी ग्राम पचायत या ग्राम सभा द्वारा अपने हस्तांतरण का प्रस्ताव पास करके नियम अनुसार सम्बन्धित राज्य सरकार को भेज देवे और वह राज्य सरकार उस प्रस्ताव को मंजूरी के लिये राष्ट्रपति को भेज देवे।

यदि दस या अधिक गांव जो दूसरे से जुडे हुए हों, इस प्रकार के प्रस्ताव भेज देवें, और यदि जिस प्रदेश में जाने का गांव प्रस्ताव करे, उसमें दो या कम गाव बाधा बनते हों तो वे दो या कम गांव बाधा नही बन सकेंगे, और सम्बन्धित राज्य सरकार उसके प्ररस्ताव मजूरी के लिये राष्ट्रपति को भेज देवे।

राष्ट्रपति उन ग्रामों के समूह के प्रस्तावों की असलियत की जाच करने के बाद आदेश जारी करके जिस राज्य मे उन्होंने जाने का प्रस्ताव किया है, उस राज्य मे उन ग्रामों के समूह को मिला दे।

1967 के आम चुनावों के बाद तीन वर्ष के अन्दर ग्रामों का हस्तातरण करने के लिये प्रस्ताव किये जाने चाहियें।

इसके अलावा पजाब, हरयाणा तथा हिमाचल प्रदेशों की सरकारे आपसी सदमति से इलाकों के हस्तांतरण के लिये राष्ट्रपति को अपनी सिफारशें भेज सकेंगी और राष्ट्रपति उन सिफारशों पर अम्ल के लिये आदेश दे देंगे।

क्योंकि सीमा के दोनों ओर ही कुछ ग्रामों के हस्तांतरण की इच्छा भाषाई आधार पर लोगों के मन में है, और यह शांति और एकरूपता के लिये सहायक हैं इसलिये यह प्रावधान किया जाये कि :—

पंजाब, हरयाणा और हिमाचल प्रदेश की सरकारें जिन ग्रामों और इलाकों के हस्तांतरण के लिये आपसी सहमति से सिफारिश करे तो राष्ट्रपति अपने आदेश के द्वारा उस पर अम्ल करवा देवें।

(1) चौ० रणबीरसिंह एम० एल० ए०, भू० पू० मन्त्री
(2) चौ० देवीलाल, अध्यक्ष सर्वदल एक्शन कमेटी
(3) प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा लोक समिति
(4) सरदार लछमनसिंह गिल, मन्त्री, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति
(5) सहमति पत्र बाबू आनन्द स्वरूप, एडवोकेट चण्डीगढ
(6) श्री रामशरण चन्द मित्तल, एम० एल० ए० भू० पू० मन्त्री
(7) श्री उजागरसिंह उल्फत, सदस्य शि० गु० प्र० समिति
(8) श्री सुरेन्द्रनाथ खोसला, एडवोकेट, पटियाला
(9) स० गुरनामसिंह, —अकाली विधायक दल के नेता
(10) स० हरचरणसिंह हुडियारा, मन्त्री, शि० गु० प्र० समिति
(11) श्री प्रकाशसिंह बादल
(12) ज्ञानी कर्तारसिंह एम० एल० ए०, भू० पू० मन्त्री
(13) सन्त चाननसिंह, अध्यक्ष, शि० गु० प्र० समिति
(14) स० नरेन्द्रसिंह, संसद सदस्य

नोट—इस दस्तावेज से यह स्पष्ट हो जाता है कि दो या एक गांव यदि बीच में पंजाबी भाषी पड़े तो भी फाजिल्का अबोहर के गांव हरयाणा मे आने से नही रोक सकते।

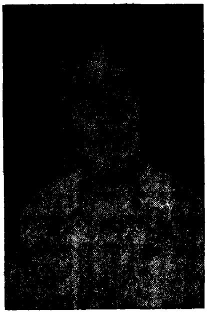
आर्यसमाज जसौर खेड़ी में आर्यधर्म प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आर्य कवि मंगल वैद्य के सुरीले गायक शिष्य श्री सुमेरसिंह आर्य भजनोपदेशक ने आर्यसमाज जसौर खेडी (रोहतक में १८ से २० अक्तूबर १९८५ तक बहुत सुन्दर वेद प्रचार किया। प्रातःकाल वैदिक यज्ञ और ईश्वर भजन होते रहे। सायकाल धर्मोपदेश तथा वीर ऐतिहासिक कथाएं गाई गई। सुमेरसिह जी का मधुर स्वर ग्रामवासियों ने बहुत पसन्द किया। लोग एक सप्ताह तक प्रचार की मांग करते रहे। वीर कथा तथा भजन गायन के ध्वनि रिकार्ड भर लिए गए। इस प्रचार में शराब, धूम्रपान, तथा अति दहेज लालच का पूरा विरोध किया गया। भारतीय संस्कृति तथा ब्रह्मचय का प्रचार किया। आर्यसमाज की ओर से सभा को २०१ रु० दिए गए। २२ अक्तूबर दशहरे पर स्वर्गीय सिद्धान्ती जी की जयन्ती पर यज्ञ तथा श्रद्धाजलि सभा के पश्चात् गायन प्रतियोगिता की २० भजन मण्डलियों में भी श्री सुमेरसिह को प्रथम स्थान का पुरस्कार प्राप्त हुआ। आर्यसमाज के कुशल कवि श्री मंगल वैद्य के निधन से हमे बहुत मानसिक खेद हुआ है। परमात्मा उन्हे शक्ति प्रदान करे।

मन्त्री—आर्यसमाज जसौरखेड़ी (रोहतक)

अमर ज्योति स्वामी श्रद्धानन्द

(डा० देशराज खीरबांट २६० इन्दिरा कालोनी रोहतक)



यू तो आर्यसमाज का सारा इतिहास ही बलिदानों का है, इसीलिये विद्वानों की रक्षा करने के लिये आर्यसमाज के अधिकारियों को आर्यवीर दल का निर्माण करना पड़ा। परन्तु इन में स्वामी श्रद्धानन्द की गाथा सबसे निराली है। क्योंकि वह एक नास्तिक से आस्तिक बने, दुर्व्यसनों को छोडा, और सच्चे ईश उपासक बने जो जुल्म के आगे छाती तान कर गोली खाने को तैयार हो गये।

आज भी जब दानवता मुह फाडे मानवता को निगल जाना चाहती है तो आवश्यकता है कि स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा ले कर दानवता का दमन करने के लिये बलिदानो की पक्ति में अपने आप को खडा कर सके।

वह कौन सी शक्ति थी और कौन से विचार थे जिन्होंने पतित मुन्शीराम को स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। आशा है, हम भी उन के जीवन से प्रेरणा लेकर श्रद्धानन्द बनने का प्रयत्न करेंगे।

आप उन विचारों को जानने के लिए उन्ही के शब्दों को पढें, जो मैंने पुस्तक "कल्याण मार्ग का पथिक" से लिए हैं। वह लिखते हैं कि—सवत् १६४१ का माघ मास और अदित्यवादर का दिन है। नास्तिकपन के गढे से मैं निकल चुका हूँ। धर्म विषयक गहरे आन्दोलन के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश का पाठ दिन रात आरम्भ कर चुका हूँ। अनारकली के पास रहमत खा के अहाते में एक तीन कमरो वाली कोठी के बांई ओर के कमरे में मैं कुर्सी पर प्रात: ६ बजे बैठा हूं, सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास सामने खुला पडा है, किन्तु मै हाथ पर सिर रखे किसी गम्भीर विचार में निमग्न हू। इतने में कमरे का द्वार खुला, और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया, उन की पैर की आहट ने मुझे विचार निद्रा से जगा दिया। यह सुन्दरदास जी रावलपिडी के राजक्राति के अन्दोलन मे फसे वकील लाला अमोलकराम के भाई, आर्य जाति के दृढ पक्षपाती थे। सुन्दरदास जी जानते थे कि आस्तिक बनने के पश्चात् मेरा अधिक झुकाव ब्रह्मसमाज की ओर हो रहा था। उन्होने पूछा—किस चिन्ता में हैं, कहिए कुछ निश्चय हुआ ? मेरी ओर से उत्तर मिला—पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने फंसला कर दिया, आज मैं सच्चे विश्वास से आर्यसमाज का समासद् बन सकता हूं। इस उत्तर ने सुन्दरदास जी की मुख की काति को ऐसा उज्ज्वल कर दिया कि उसका तत्काल प्रभाव मुझ पर पड़ा।

भाई सुन्दरदास जी के साथ लाहौर के आर्यसमाज मन्दिर बच्छोवाली मे पहुचा। मैं सामने वाली दीवार के साथ बैठ ही रहा था कि आर्यसमाज के प्राणदाता स्वर्गीय लाला साईदास जी के कान में भाई सुन्दरदास जी ने कुछ कहा, शायद यह बतलाया कि मैं ऋषि दयानन्द जी की शरण ग्रहण कर चुका हू।

भाई जवाहरसिह जी उठे, मेरे आर्यसमाज प्रवेश के विषय में बहुत कुछ कह समाप्ति पर कह दिया, कि यह अपने कुछ विचार उपस्थित सज्जनों के समक्ष प्रकट करगे। इस घोषणा ने मुझ पर मानो वज्रपात कर दिया। पहले से कुछ सोचने का अवसर भी नही मिला था, इसलिए हैरान था कि क्या बोलू। उठते-उठते यही सूझी कि अन्दर के भाव प्रकट कर दू। मुझे उस समय की वक्तृता का पूरा स्मरण तो है नही, किन्तु १५-२० मिनटों में मैंने जो कुछ कहा उस का साराश यह था कि हम सब के कर्त्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिए, और इसलिए जो वैदिक धर्म के सिद्धान्त के अनुकूल अपना जीवन नही ढाल रहा उसे उपदेशक बनने का साहस नही करना चाहिए। मुझे याद है कि मैंने समाप्ति पर यह भी कहा था कि भाड़े के टट्टुओ से धर्म का प्रचार नही हो सकता, इस पवित्र कार्य के लिये स्वार्थत्यागी पुरुषों की आवश्यकता है। स्वामी जी के इस कथन से सिद्ध होता है कि उन के जीवन में जो परिवर्तन हुआ वह सत्यार्थप्रकाश से हुआ। हम भी आज कुछ करना चाहते है तो हमें स्वामी जी का अनुकरण करना होगा और सत्यार्थप्रकाश पढना होगा। कोई ऐसा विषय नही है जिस का समाधान सत्यार्थप्रकाश में न हो। परन्तु केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना पर्याप्त नही, उस को अपने जीवन में घटाना होगा। इस प्रकार हमारे जीवन की जो इमारत तैयार होगी, उस की नीव, तप—ब्रह्मचर्य और श्रद्धा पर होगी।

तप—शारीरिक साधना।

ब्रह्मचर्य—मानसिक साधना।

श्रद्धा—आत्मिक साधना।

मनुष्य शारीरिक साधना करके ज्ञान प्राप्त करता है, और उसके पश्चात् उस ज्ञान का मनन करता है तो वह आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जान जाता है, तो उस मे श्रद्धा उत्पन्न होती है, और वह कार्य करने के लिए उठ खडा होता है, और राष्ट्रहित कार्य करने में यदि बड़े से बडा कष्ट भी सहना पड़े तो उस मे आनन्द अनुभव करता है और जब श्रद्धा के साथ आनन्द मिल जाता है तो मनुष्य श्रद्धानन्द बन जाता है।

सम्पादक के नाम पत्र

माननीय सभा मन्त्री जी,

आपके द्वारा प्रकाशित सर्वहितकारी ता० २८-११-८५ साप्ताहिक पत्र में "सरकार के साए में पुलिस का दमनचक्र" लेख श्री वीर ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रनितिधि सभा हरयाणा द्वारा लिखा पढा। लेख को पढ़कर अत्यन्त दुख: हुआ कि हमारे भाइयो के साथ पुलिस और सरकार ने ऐसा घिनौना काम किया।

इतनी राक्षस प्रवृत्ति इस सरकार और हमारे पुलिस भाइयो की हमारे लिए असहनीय है। क्या हमारे पास मुकाबला करने के लिए दो हाथ नही है। लेकिन हम सोचते हैं कि वे लोग हमारे भाई ही हैं। इन लोगों को पता होना चाहिए कि यह वही खून है जो शहीद भगतसिह जी की नसों में था, हम सब कुछ करना जानते हैं। हम से पशुओ की तरह बरताव न करे कि जो चाहे सो करे। पशु बेचारा क्या बोलता है। हमें इन्सान समझकर बात करे कि ये तुमसे हर बात में मजबूत है, हम भगतसिह बनना जानते हैं, और ईंट का जवाब पत्थर से दे सकते हैं।

—अजीतसिह पूनिया प्रधान आर्यसमाज अकालगढ़

ओ३म्

राष्ट्रीय शिक्षा नीति सम्मेलन चण्डीगढ़

हरयाणा सरकार की ओर से ४ दिसम्बर १९८५ के दिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर एक सम्मेलन हुआ। प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिये निमन्त्रित किया गया। उनके विचारों को सुनकर चिन्तन को एक नई दिशा मिली और उसके पश्चात् सभी वक्ताओं ने उसी दिशा से प्रेरित होकर अपने विचार रखे।

प्रो० शेरसिंह के विचार

आज सभी मानते हैं कि राष्ट्र के विकास का सबसे बड़ा साधन शिक्षा है। जापान के पास प्राकृतिक संसाधन बहुत कम हैं, परन्तु अपने नागरिकों को शिक्षित और प्रशिक्षित करके उसने समृद्धि में संसार में दूसरा नम्बर प्राप्त कर लिया। भारत के पास प्राकृतिक ससाधनों के ठाठ लगे हैं, परन्तु सही शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी के कारण भारत सबसे गरीब देशों में है। आज भी भारत में आजादी के ३८ वर्ष बाद ६४ प्रतिशत लोग निरक्षर हैं। महिलाएं ७५ प्रतिशत से भी अधिक। जब भारत इक्कीसवी शताब्दी में प्रवेश करेगा तब (आज का ढंग ही चलता रहा) तो संसार के निरक्षर लोगों में से ५४ प्रतिशत भारत मे लोग होंगे। सारा संसार एक तरफ और अकेला भारत एक तरफ। भारत में ५४ प्रतिशत निरक्षर और बाकी सारे संसार में ४६ प्रतिशत।

भारत के ग्रामों में शिक्षा की यह हालत है कि ४० प्रतिशत स्कूलों के या तो कच्चे भवन है या हैं ही नही। ६० प्रतिशत स्कूलों में पीने का पानी नही। ४० प्रतिशत में ब्लैकबोर्ड नही और ३५ प्रतिशत स्कूलों में ४ कक्षाओं के लिये केवल एक शिक्षक। बिहार जैसे प्रदेश मे ऐसा भी है कि न स्कूल है न विद्यार्थी और शिक्षक घर बैठे वेतन ले रहे हैं। यह दुर्दशा क्यों है ? दशाबोध होने पर दिशाबोध कठिन नही। जब तक बड़े लोगों के, जिनमें सरकारी अधिकारी राजनेता और धनी लोग शामिल है, बच्चे अलग स्कूलों में (पब्लिक स्कूलों में) पढते रहेंगे और साधारण ग्रामीण और शहर के निर्धन लोगों के लिये अलग स्कूल रहेगे, तब तक प्राथमिक स्कूलों की शिक्षा का स्तर ऊंचा नही हो सकेगा। तथाकथित बड़े लोगों के बच्चे और साधारण किसान मजदूर और गरीबों के बच्चे कृष्ण और सुदामा की तरह एक ही स्कूल में नहीं पढेंगे तब तक साधारण स्कूलों की दशा नही सुधारेगी। जिस दिन तक शिक्षा विभाग के बडे से बड़े अधिकारी और खजाना मन्त्री के बच्चे साधारण स्कूल में सबके साथ नही पढ़ेंगे तब तक स्कूल में न ब्लैकबोर्ड आयेगा न बैठने के लिये टाट पट्टी आयेगी न पानी का प्रबन्ध होगा न भवन बनेंगे और न अच्छे और न पूरी संख्या में शिक्षक ही मिलेंगे। १९६८ में इसी लिये जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई थी तब (neighbour hood school) पास पड़ोस के स्कूल में ही सब बच्चे पढें, चाहे वे धनी हों या निर्धन यह निर्णय किया गया था। परन्तु इन १७ वर्षों में उस

पर अमल नहीं हुआ। अभाव नीतियों का नही है अभाव तो नीयत का है। अमल करने की नीयत ही न हो, इच्छा ही न हो तो नीति क्या करेगी ?

१९६८ में यह भी शिक्षा नीति बनाते समय निर्णय किया गया था कि ऊंची से ऊंची शिक्षा भारत की भाषाओं मे दी जाये, अंग्रेजी मे नही। दु:ख यह है कि अग्रेज के जाने के बाद इस देश मे अंग्रेजियत बढी है। गान्धी को हम लोग भूल गये है। उन के स्वदेशी का अर्थ केवल खादी नही, चिन्तन, रहन-सहन शिक्षण आदि सब स्वदेशी है। शिक्षा देश के विकास का साधन बने। १० वर्ष पढने के बाद ऐसा काम हर विद्यार्थी को सिखाया जाये जिसकी कारखानों खेतों आदि के द्वारा देश का सब चीजों का उत्पादन बढाने के लिये जरूरत है, ताकि सबको काम मिले और देश आगे बढ़े। परन्तु इन बातों पर भी अमल नही हुआ। आज भी कालिजों की सख्या तो बढ रही है, परन्तु उसमें से निकलने वाले कलम चलाने के सिवाय कुछ नही सीखते इसलिये किसी रोजगार के लिये काम के नही बनते। इसलिये पढे लिखे बेरोजगारो की सख्या बढ रही है।

शिक्षा पर आज जो खर्च होता है उससे दुगुना खर्च सरकार करे और लोगों से भी ठीक रोजगार देने वाली काम की शिक्षा देने के लिये अधिक पैसा लेना जरूरी हो तो उनकी सामर्थ्य के अनुसार लिया जाये। सादगी और साधना, विद्यार्थी और शिक्षक दोनो के लिये जरूरी है। नीतियो के बनाने मे व्यर्थ समय न गवाकर १९६८ की राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर ही अमल करना चाहिये। अभाव नीतियों का नही अभाव नीयत का है। कमी साधनों की नही, कमी साधना की है।

कलकत्ता उच्च न्यायालय का गलत निर्णय

५ दिसम्बर के दैनिक ट्रिब्यून में यह पढकर बहुत दुख हुआ कि कलकत्ता हाइकोर्ट ने स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित "रामकृष्ण-मिशन" को अल्पसख्यक-सम्प्रदाय मान लिया है।

देश विदेश मे वेदान्त के निर्भीक प्रवक्ता स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा स्थापित "रामकृष्ण-मिशन" को हिन्दू-सस्था न मानकर अल्पसख्यक कहना किसी भी प्रकार सही नही है।

इस सन्दर्भ मे इतना ही कहना चाहू गा कि यदि इसी प्रकार सरकार की धर्मनिरपेक्षता की आड़ मे भारत के विभिन्न सम्प्रदायों को अल्पसख्यक मानकर विशेष सुविधाएं दी जाती रही तो इसके भयकर परिणाम हो सकते है। इसका प्रमाण सिख, बौद्ध, ईसाई तथा मुस्लिम आदि सस्थाओं द्वारा की जाने वाली राष्ट्रविरोधी मागे सर्वविदित है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को चाहिए कि वह सरकार को चेतावनी दे कि यदि इसी प्रकार से विभिन्न मतों को अल्पसंख्यक मानकर विशेष सुविधाएं दी जाती रही तो राष्ट्र की अखंडता को खतरा हो सकता है।

ब्र० संजयदेव आर्य
निवास दातौली, पो० चिड़िया (भिवानी)

ओ३म्

अमर हुतात्मा वीर श्रद्धानन्द

(श्री सत्यकाम आर्य, हिसार)

ऐतिहासिक ग्रन्थों में हमारी संस्कृति और सभ्यता के अभ्युत्थान के लिए अनेक महापुरुषों के योगदान की मधुर चर्चा है। उनमें भारत के भाग्यविधाता; आर्य संस्कृति के सफल उद्धारक; शिक्षा भानु, अमर हुतात्मा, स्वतन्त्रता सेनानी श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का नाम सर्वोपरि है।

स्वामी जी की जीवन झांकी जहां हृदयों में सनसनी जागृत कर देनेवाली है वहां प्रेरणा एवं स्फूर्ति की अजस्र मन्दाकिनी भी है। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी जीवन सम्बन्धी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति वाणी के माध्यम से की।

स्वामी जी का प्रारम्भिक गृहनाम श्री मुन्शीराम था। शिक्षा की दृष्टि से आप एक सफल विधिवक्ता थे। आपके पिता प्रशासन में उच्च अधिकारी थे। उनका जीवन धर्म एवं कर्मनिष्ठ था। तब भी पुत्र सभी दुर्गुण एव दुर्व्यसनों से ओत-प्रोत था। युवावस्था के भारी थपेड़े मुन्शीराम के जीवन को अस्तव्यस्त करते रहे तथा वह भौतिकता के गर्त में स्वाभाविक ही हवा के साथ सूखे पत्ते के समान उड़ा जा रहा था। दुनियां भर के दोषों ने मुन्शीराम के जीवन को ऐसा धूमिल बना दिया था कि जीवन के सूचीभेद्य अंधकार में सन्मार्ग की दिशाएं सर्वथा ओझल हो चुकी थी। ऐसी विकट स्थिति में मुन्शीराम के लिए आर्यसमाज के संस्थापक भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में अमृत के रूप प्राण सचारित करने वाले जगद्गुरु महर्षि दयानन्द का प्रवचन अमृत का काम कर गया तथा मुन्शीराम के जीवन मे श्रद्धा हुई वह स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप में आर्यजगत् के सामने प्रकट हुई।

वैदिक सभ्यता के अनुरागी, निर्भीक सन्यासी ने योग्य उपदेशकों द्वारा वैदिक प्रचार करवाया। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली सुरक्षा हेतु गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। जो अब भी दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। स्वामी जी मुस्लिम शुद्धि के प्रबल समर्थक थे। मुसलमानों ने जामामस्जिद के गुम्बज पर खड़े होकर उनसे उपदेश देने की प्रार्थना की। इस्लाम के इतिहास मे यह पहली घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार सम्मान प्रदान किया गया हो। इतना ही नही स्वामी जी ने सिद्धान्तवाद को दर्शाते हुए जामास्जिद के गुम्बज पर खड़े होकर भी अपना उपदेश वेद मंत्रों के उच्चारण से प्रारम्भ किया।

स्वामी जी ने गाधी जी की मुस्लिम पोषक नीति के कारण ही कांग्रेस से त्याग पत्र दिया तथा खुले रूप से शुद्धिकरण का कार्य अपने हाथो में ले लिया।

स्वामी जी का जीवन विशाल कर्मक्षेत्र रहा है। गुरुकुलीय मण्डली के आप सबसे बड़े नेता थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आप वर्षों प्रधान रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भी आप वर्षों प्रधान रहे। सचमुच देश और जाति को जागृत करने में आपका गहरा हाथ था।

पंजाब में फौजी कानून की घटना विशेष स्मरणीय है। जिसके कारण सारे पंजाब में आतंक छाया हुआ था। अब तक बहुत से निरीह प्राणियों को अण्डेमान जेल में ठूंस दिया गया था। रोलट एक्ट भारतीयों पर थोपा गया। दिल्ली में इस आन्दोलन के अग्रिम नेता वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। वीर संन्यासी निडर होकर जलूस का वेतृत्व करते हुए घण्टाघर के पास पहुंचे तो गोरों के सैनिक अपनी संगीनें तानें खड़े थे। स्वामी जी ने गरज कर कहा "निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती में संगीन घोंप दो

२३ दिसम्बर, सन् १९२६ को एक अब्दुल रशीद नामक व्यक्ति ने कुछ लीगी नेताओं के बहकावे में आकर स्वामी जी पर तीन गोलियां चला दीं। तथा यह वैदिक सभ्यता का अनुरागी ओ३म् की तीन अक्षरों की ध्वनि के साथ शहीद हो गया।

आज हम सबको यह सकल्प लेना चाहिए की हम स्वामी जी की भांति आर्यसमाज के निर्भीक एवं त्यागी तपस्वी बनकर महर्षि दयानन्द के अनुपम सन्देश को घर-घर फैलाने की इन शब्दों के साथ शपथ लें।

आर्य वीर उठो और जागो, कसम तुम्हें देश व कौम की।
आर्य वीरो वतन को सम्भालो, कसम तुम्हें देश व कौम की॥

आर्य वीराङ्गना दल

सूचना

कन्या गुरुकुल नेरला दिल्ली में २० दिन पर्यन्त "आर्य वीराङ्गना दल" का शिविर लगा था जिसमें ब्रह्मचारिणियों को शस्त्रसञ्चालन का प्रशिक्षण मिला। भविष्य मे यहाँ आर्य वीराङ्गना दल की इकाई बना दी गई है एतदर्थ-सुश्री सुमित्रा जी प्राचार्या के सरक्षण में शाखा सञ्चालिका-ब्र० किरणमयी स्नातिका, सह सञ्चालिका ब्र० अञ्जू स्ना०, मन्त्री-ब्र० कृष्णा स्ना०, पुस्तकाध्यक्षा-ब्र० सरस्वती स्ना०, प्रचारमन्त्री-ब्रह्म० कमला शास्त्री, कोषाध्यक्षा ब्र० तूफानजित् शास्त्री की नियुक्ति की गयी है। यह कार्य भविष्य में नियमित चलेगा ऐसा निर्णय किया है।

शोक–समाचार

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के भजनोपदेशक म० जयपाल आर्य के पिता चौ० मेहरसिंह जी ग्राम आसन जि० रोहतक का ८५ वर्ष की आयु में दिनांक १५ दिसम्बर ८५ को निधन होगया। वे आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे है। उन्होने अपने एक सुपुत्र श्री वेदप्रकाश को गुरुकुल भटिण्डू में शिक्षा दिलाई तथा अपने एक सुपुत्र म० जयपाल को आर्यसमाज का उपदेशक तैयार किया। अपने खेत में एक कुआँ बनवाकर सार्वजनिक प्याऊ का प्रबन्ध किया। तथा सदा धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में सहयोग किया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द

भगवान्देव "चैतन्य"

(महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हि० प्र०)

स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज चहुंमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को जिस पैनी दृष्टि से पहचानकर आत्मसात् किया, उनका समूचा जीवन उसी के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्ण रूप से समर्पित था। उन्होंने प्रत्येक उस कार्यक्षेत्र को अपनी कर्मभूमि बनाया जिसका स्वप्न महर्षि दयानन्द जी लिया करते थे। आर्यभाषा, आर्यसमाज, गुरुकुल शिक्षा पद्धति, अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, शुद्धि आन्दोलन आदि कार्यों के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। धुन के धनी इस दिवाने ने रात-दिन, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास कुछ भी नही देखा। इनका प्रारम्भिक जीवन जितना विकृत था दयानन्द रूपी पारस के छूने के पश्चात् उतना ही दिव्यतापूर्ण बन गया। उनके हृदय में एक ऐसी तड़प, एक ऐसी लगन थी, ऐसा साहस और विश्वास था, ऐसी गतिशीलता थी कि आंधी के समान जब एक बार चल पड़े तो अन्तिम सांस निकलने पर ही विश्राम लिया।

अपनी ही पुत्री के मुख से जब ये शब्द सुने "इक बार ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।" तो मानो यह तपस्वी तन्द्रा त्यागकर उठ खड़ा हुआ। ईसाई प्रचार के इस कुत्सित षड्यन्त्र से उनकी आत्मा सचेत होगई तथा गुरुकुल की स्थापना का स्वप्न मस्तिष्क में साकार हो उठा ताकि आर्य संस्कृति का दुर्ग इतना सबल बन जाए कि विदेशी षडयन्त्रकारी उसमें प्रवेश न कर सके। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के षड्यन्त्र को भले ही सभी बुद्धिजीवी पहचानते थे मगर इसके निराकरण के लिए ठोस कदम सर्वप्रथम इसी मनीषी ने उठाए। मुख्य रूप से गुरुकुल की स्थापना के पीछे उनके कुछ एक विशेष लक्ष्य थे। वास्तव में वे गुरु शिष्य की पुरातन एवं पवित्र आध्यात्मिक परम्परा को चलाना चाहते थे। शिष्यों में सच्चरित्रता के गुण का सम्पादन करके समाज व राष्ट्र को सुयोग नागरिक देना यह भी उनका एक लक्ष्य था। वे आधुनिक शिक्षा के विरोधी नही थे बल्कि वे विद्यार्थियों को आधुनिकतम शिक्षा देने में भी संकोच नही करते थे अगर उनका आधार वे भारतीय धर्म, संस्कृति और सभ्यता ही मानते और मनवाना चाहते थे। गुरुकुल स्थापना के पीछे उनकी एक और भावना थी वह यह कि वे सम्पूर्ण शिक्षा का माध्यम आर्यभाषा अर्थात् हिन्दी को बनाना चाहते थे। महर्षि दयानन्द के इस स्वप्न को वे गुरुकुल शिक्षा के माध्यम से पूरा करना चाहते थे कि आर्यावर्त की सन्तति वेद ज्ञान से परिपूर्ण हो।

महर्षि दयानन्द जी का एक और स्वप्न था कि भारत मां की परतन्त्रता की बेड़ियां काटकर इसे स्वतन्त्र किया जाए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस स्वप्न को साकार करने के लिये भी ठोस कदम उठाए। जहां एक ओर राष्ट्रीय कांग्रेस में सक्रिय कार्य किया वहीं दूसरी ओर ये गर्मदल वालों के लिए भी प्रेरणास्रोत रहे। चांदनी चौक पर एक जलूस का नेतृत्व करते हुए जब भगवां वस्त्र अपनी छाती

पर से हटाकर इस आग्नेय वस्त्रधारी ने गोरे सैनिकों को गोली चलाने के लिये ललकारा था तो भय के कारण गोरों की सगीने झुक गई थी। उस अद्भुत संन्यासी की उस सिंहगर्जना की कल्पना मात्र करने से ही मन सिहर उठता है। भारत मां क्या अपने प्यारे सपूत की उस गर्जन को कभी भुला सकती है। इस प्रकार स्वामी जी ने स्वतन्त्रताप्राप्ति के लिए सक्रिय कार्य किया। गुरुकुल कागड़ी से कितने ही राष्ट्रभक्त देश को समर्पित किये इसका साक्षी स्वयं इतिहास है।

जाति-पाति एव छूआ-छात को वे भारत के लिए कोढ के समान मानते थे। उनकी पैनी दृष्टि ने इस बात को पहचान लिया था कि धर्म परिवर्तन के पीछे भी हिन्दुओं की इसी अन्ध परम्परा का मुख्य हाथ है अत: उन्होने बहुत से ऐसे व्यावहारिक कदम उठाए जिनसे इस कुप्रथा पर सीधी चोट पड़ी। स्वयं अपने घर से उन्होने अन्तर्जातीय विवाह की नीव रखी और तथाकथित धार्मिक व्यक्तियों एवं सामाजिक विरोध के बावजूद आजीवन अपने इस कार्य में लगे रहे। स्वामी जी महाराज एक अत्यन्त दूरद्रष्टा संन्यासी थे। उन्होंने इस बात को भाप लिया था कि जब तक दलितो अन्त्यजों, अस्पृश्यों और हरिजनो में आर्यसमाजी अपना कार्यक्षेत्र नही बनायेगे, तब तक भारतवर्ष के पिछड़े वर्ग के लोग राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेकर न तो राष्ट्रीय आन्दोलन को कोई शक्ति देंगे और न वैदिक हिन्दू समाज एक मजबूत और संगठित समाज बन सकेगा। इसलिए उन्होंने अपूर्व शक्ति के साथ अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन आरम्भ किया था। गान्धी जी भी इसी प्रभाव के कारण हरिजनों के लिए कुछ कर पाये थे। शूद्रोद्धार के साथ-साथ स्वामी जी ने स्त्री जाति के उद्धार के लिए भी कई ठोस एव प्रभावशाली कदम उठाए। स्त्री शिक्षा को विरोध करने वालों की कटु आलोचनाओं को सहते हुए भी इस ऋषि ने इस दिशा में ऐसे-ऐसे आधारभूत कार्य किए कि युगों तक राष्ट्र इनका ऋणी रहेगा।

स्वामी जी ने राष्ट्र जागरण का शंखनाद किया, राष्ट्रभाषा हिन्दी का उत्थान किया, दलितों व स्त्री जाति को उद्धार किया, अछूतों को गले लगाया मगर भारतीय समाज के लिए उनकी सबसे अद्भुत एव विशेष देन तो यह थी कि उन्होने शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ करके अपने भाइयों को विधर्मी होने से बचाया। भले ही इसी कार्य के लिए उन्हे अपनी जीवनलीला भी समाप्त कर देनी पड़ी मगर उनके कार्य इतने विशाल थे कि वे कभी भी मर नही सकते। शुद्धि आन्दोलन उस समय की आवश्यकता थी। यदि उस समय यह कार्य स्वामी जी महाराज ने नहीं किया होता तो आज कोई भी हिन्दू बचा न होता। यह इस देश का दुर्भाग्य ही था कि यहा के लोगों ने घटाना और भाग देना तो सीखा था मगर गुणा और जोड़ के सूत्रों को ये लोग पूरी तरह से भूल चुके थे। एक बार विधर्मी बने व्यक्ति को पुन: अपनाने का साहस इन तथाकथित धार्मिक लोगों में नही था। इसीलिए दिन प्रतिदिन हिन्दू विधर्मी बनकर एक राष्ट्रीय समस्या बनते जा रहे थे। विधर्मी बनने की इस तेज बाढ को रोकने का साहस उस समय कोई नहीं जुटा पाया था। मगर तभी महर्षि दयानन्द के ओज तेज से प्रभावित हुए इस महामानव ने आगे बढकर दृढता के साथ इस विनाशकारी बाढ़ को रोक दिया। यदि बाढ न रुकी होती तो हमारे पतन की पराकाष्ठा क्या होती इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। स्वामी जी महाराज ने शुद्धि आन्दोलन को एक व्यापक रूप देकर भारत मां और यहां के वासियों पर एक ऐसा उपकार किया कि जिससे कभी भी उन्मना नही हुआ जा सकता है। इसी महान् कार्य के लिए स्वयं अपनी आहुति भी देनी पड़ी थी।

इन सभी कार्यों के अग्रनेता होने के बावजूद मूलतः स्वामी जी एक त्यागी, तपस्वी, निष्कपट एवं सरल हृदयी महामानव थे। श्री रैम्जे मैकडानल्ड महोदय ने उनके सम्बन्ध में लिखा है "एक महान्, भव्य और शानदार मूर्ति —जिसको देखते ही उसके प्रति आदर का भाव उत्पन्न होता है हमारे आगे हमसे मिलने के लिए बढ़ती है। आधुनिक चित्रकार ईसामसीह का चित्र बनाने के लिए उसको अपने सामने रख सकता है और मध्यकालीन चित्रकार उसे देखकर सर पीटर का चित्र बना सकता है यद्यपि उस पछियारे की अपेक्षा यह मूर्ति कही अधिक भव्य और अधिक प्रभावोत्पादक है कवीन्द्र रवीन्द्र जी ने उन्हें इस रूप में देखा था—श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्य प्रति श्रद्धावान् थे और उसी में आनन्द मानते थे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गए थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक, अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है।

०—०

श्री हरकिशन आर्य जज की नृशंस हत्या राक्षसी बर्बरता

—निहालसिंह आर्य

बहुत दुर्भाग्य तथा अन्तर्वेदना की बात है कि ३ नवम्बर के रविवार को श्री हरकिशन आर्य विद्वान् पूर्व न्यायाधीश को उनके दिल्ली निवास पर किन्ही अज्ञात हत्यारों ने घातक प्रहारों से निर्दयता से मार दिया। इस अशुभ सूचना को जानकर सारे आर्यजगत् तथा न्यायाधीश मण्डल में अति शोक तथा दुख की रोमांचकारी लहर दौड़ गई क्योंकि न्यायधीश महोदय आर्यसमाज के समर्पित विद्वान्, मिलनसार, हंसमुख प्रेमी, सरल जीवन सबके आर्य मित्र थे। आपके उत्तम स्वास्थ्य सुन्दर मुखाकृति से ४५ वर्ष से अधिक आयु के नही लगते थे। क्योंकि आप अविवाहित सदाचारी और न्यायप्रिय थे। आपने छः लाख रुपये का ट्रस्ट बनाकर स्वामी सत्यानन्द लिखित महर्षि दयानन्द का जीवन चरित, सत्यार्थप्रकाश सस्ते मूल्य पर प्रचार-प्रसार की सुन्दर योजना बनाई थी। आपका जन्म ग्राम जसराणा डाप गठवाला जिला सोनीपत में है जहां आपने एक सुन्दर धर्मार्थ औषधालय बनाया हुआ है। आप आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा तथा सार्वदेशिक सभा के प्रतिष्ठित अधिकारी सदस्य थे। आपकी दुखद मृत्यु से आर्यसमाज की भारी क्षति हुई है। लगातार आर्य नेताओं धर्मात्मा वीर पुरुषों की जघन्य हत्याओं से शासन की निर्बलता तथा आयसमाज के शिथिलनेतृत्व का आभास शोचनीय है। कई मास पूर्व हमायूंपुर ग्राम के युवा आर्य पहलवान सूबेसिंह, देवली के धर्मात्मा उत्साही मास्टर जागेराम आर्य, होशियारपुर के आर्यनेता चौ० बलबीरसिंह की भी इसी प्रकार निर्मम हत्या की गई थी।। मानव जीवन सुरक्षा का कोई विश्वास नही रहा। न्यायाधीश जी की इस हृदयविदारक हत्या का हमें असह्य शोक है। परमात्मा उन्हें सद्गति दे।

—आर्यसमाज जसौर खेड़ी रोहतक

पंजाब सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49

ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री | सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री | सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ७ | ७ जनवरी १९८६ | वार्षिक शुल्क १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

युवा वर्ष बीत गया : युवकों को क्या मिला ?

—राकेशकुमार सिन्हा

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने १३ दिसम्बर १९७९ को ३४/१५१ प्रस्ताव के द्वारा १९८५ के वर्ष को युवा वर्ष घोषित किया था। इसके तीन उद्देश्य रखे गये थे—सहभागिता, विकास और शांति।

सहभागिता का तात्पर्य होता है युवको को विभिन्न निर्णायक सभा एव समितियो तथा विकास के कार्य के लिये गठित इकाइयो में उचित प्रतिनिधित्व देते हुए उनमे नेतृत्व की क्षमता का विकास करना। संयुक्त राष्ट्र सघ की मान्यता रही है कि युवा-ऊर्जा का रचनात्मक एव विकास के कार्यो मे तभी उपयोग किया जा सकता है जब इस वर्ग को विश्वास के साथ नीचे के स्तर से सहभागी बनाकर चला जाये। यह तब तक सभव नही है जब तक युवा वर्ग की समस्याओ से निपटने के लिए विकास के कार्यक्रम आरम्भ नही किये जाते। इन दोनो उद्देश्यो मे तभी सफलता मिल पाएगी जब शांति का वातावरण हो। संयुक्त राष्ट्र सघ की कल्पना रही है कि आणविक हथियारो के इस युग मे शांति के लिए चल रहे आन्दोलन मे अधिकाधिक युवा वर्ग को सम्मिलित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युवा वर्ष के घोषित उद्देश्यो के अनुसार कोई भी सार्थक कदम नही उठाया जा सका है। "मास्को युवा उत्सव' और "नई दिल्ली गुट निरपेक्ष युवा सम्मेलन" युवा समस्याओ पर विचार करने के मच न होकर औपचारिकता के सम्मेलन मात्र बनकर रह गए।

विश्व मे युवको की स्थिति

युवको की कुल जनसंख्या ८५ करोड है। सन् १९५० मे ४५ करोड एव १९६० मे ५१५ करोड थी। सन् २००० ई० तक यह संख्या ११८ करोड हो जाने की सभावना है। विकसित एव विकासशील देशों मे युवकों की संख्या मे वृद्धि-गति अलग-अलग है। विकसित राष्ट्रो मे यह दर १४ प्रतिशत है जबकि विकासशील देशो मे २५ प्रतिशत है। फलत युवको की बहुत बडी आबादी विकासशील देशो मे केन्द्रित है। अफ्रीका, लातिनी अमेरिका एव एशिया मे युवको की जनसंख्या ६६५ करोड है और इसकी आधी जनसंख्या केवल एशिया महाद्वीप मे है। स्पष्ट है कि विश्व की जनसंख्या का एक बहुत बडा भाग युवको का है।

व्यापक प्राकृतिक सपदा एवं मानव शक्ति के बावजूद अपना देश तृतीय विश्व के देशो की भांति ही समस्याओ से ग्रस्त है। देश का छात्र-युवा वर्ग इन समस्याओ के कुचक्र से सर्वाधिक गम्भीर रूप से प्रभावित है जिसके परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक, राजनीतिक एव आर्थिक बुराइयों का जन्म बडी तेजी के साथ हो रहा है। भारत में युवको की समस्याए दो वर्गों मे आती हैं। इसका कारण युवको के बीच दो वर्गों का पाया जाना है। प्रथम वर्ग मे वे लोग आते हैं जिनका सम्बन्ध सम्पन्न परिवारों एव महानगरों के बड़े परिवारो से होता है। इस वर्ग मे आने वाले युवक बहुत ही स्वच्छन्द प्रकृति के होते है। उनके पास कोई मौलिक समस्या न होकर स्वनिर्मित समस्याए होती है। यह वर्ग 'शिक्षा' को जीवन के आनन्द का साधन मानता है। साथ ही देश की गम्भीर समस्याओ से ये अपरिचित ही नही रहते बल्कि राष्ट्र के भीतर उठने वाले 'ज्वार-भाटे' से भी इनका कोई गहरा सम्बन्ध नही होता। यह वर्ग पाश्चात्य देशो की उन सभी चीजो की आख बन्द कर नकल कर रहा है जो त्याज्य है और यही वर्ग भारत का असली युवावर्ग कहलाता है तथा देश के युवको का प्रतिनिधित्व भी कर रहा है।

दूसरा वर्ग देश के ८५ प्रतिशत युवको का है। इस वर्ग मे गावो, कस्बो एव महानगरो के छोटे एव मध्यवर्गीय परिवारो के युवा मुख्य रूप मे आते है। इस वर्ग के युवकों के पास न्यूनतम सुविधाओ का अभाव है। जीवन के हर मोर्चे पर सघर्ष करता हुआ यह वर्ग आगे बढता है। इस वर्ग के युवा 'शिक्षा' को 'जीविकोपार्जन का साधन' मानते हैं।

स्पष्टत दोनो ही वर्गों के रहन-सहन आचार-व्यवहार एव चिन्तन मे आधारभूत अन्तर है। 'अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष' एक सुन्दर अवसर था जब सरकारी और गैर सरकारी दोनो स्तरो पर दोनो वर्गों के बीच सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयास शुरु कर उनकी समस्याओ के समाधान के लिए मार्ग निकालने का प्रयास शुरु होता।

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ग मे छात्र सगठनो की रचनात्मक भूमिका उपेक्षित थी। देश मे छात्रो एव युवको के बीच सक्रिय अधिकाश छात्र सगठन किसी न किसी राजनीतिक दल से जुडे हुए है। फलत सशक्त राष्ट्रवादी छात्र-शक्ति का निर्माण नहीं हो पा रहा है। २६ सितम्बर १९८३ को कस्तूरबा ग्राम मे सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के प्रथम तैयारी सम्मेलन मे प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डा० वी० वी० जौन ने कहा था—"पुरानी पीढी की यह साजिश है कि शिक्षा सस्थाओ में दलगत पद्धति की बेहूदगिया फैले। आज केरल मे २० राजनीतिक पार्टियो के युवा विभाग (यूथविंग) हैं कल शायद वे नर्सरी स्कूल में भी पहुँच जाय। इनके तथाकथित युवा नेता राजनीतिक नेताओ की चापलूसी करते है, बिना उनकी औकात जाने।"

छात्र-युवा सगठनो से यह अपेक्षा की जाती है कि कम से कम आम छात्रो एव युवको की समस्याओ से जूझने के लिए वे दलीय स्वार्थी नेताओ के हितो की अपेक्षा कर एक मच से रचनात्मक पहल करे। "अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष की प्रेरणा छात्र-युवा सगठनो को एक मच पर ला सकेगी" यह प्रश्न बना हुआ है।

भारत मे युवा वर्ग के सामने सबसे बडी समस्या बेरोजगारी की है। डिग्री प्रधान शिक्षा-नीति बहुत हद तक इसके लिए जिम्मेदार है। शिक्षा-नीति मे परिवर्तन कर इसे रोजगारोन्मुख बनाना समय की माग है। साथ ही शिक्षा का राष्ट्रीयकरण भी आवश्यक है। देश

(शेष पृष्ठ ४ पर)

राम का काल-निर्णय

—ब्रह्मचारी सजय देव

महर्षि वाल्मीकि द्वारा जो आदर्श पुरुष पाठकों के समक्ष रखा गया और जैसे आदर्श पुरुष अपने राष्ट्र मे उत्पन्न करना उचित है ऐसा ऋषि ने सूचित किया। वह आदर्श पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र थे। रामायण की रचना करने से पूर्व महर्षि वाल्मीकि ने अपने मन में आदर्श पुरुष की कुछ कल्पना की थी। इसी का अनुमोदन महर्षि नारद ने किया था।

रामायण का अनुशीलन करने से पता चलता है कि राम अपने समय के एक आदर्श सम्राट् तथा वैदिक संस्कृति के अद्वितीय रक्षक थे। राम के इन सब गुणों का वर्णन होते हुए भी रामायण मे उनके काल का कोई स्पष्ट संकेत नही है। प्राचीन तथा अर्वाचीन सभी विद्वानों के इस विषय में अनेक मत हैं—

१- सामान्य रूप से यह कहा जाता है कि राम इसी चतुर्युगी के त्रेता युग के अन्तिम समय मे हुए थे। इस मत से राम का काल लगभग पौने नौ लाख वर्ष बनता है।

२- वायु पुराण के अनुसार राम २४वी चतुर्युगी के त्रेता युग में हुए थे। इस मत से राम का काल एक करोड़ उनचास हजार वर्ष के लगभग बनता है।

३- आधुनिक काल के अधिकाश भारतीय एव पाश्चात्य विद्वान् राम के काल को केवल तीन से चार हजार वर्ष पूर्व मानते हैं।

यहा महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा रामायण को अन्त साक्षी के अनुसार राम का काल निर्धारित किया जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूना के ९वें तथा १०वे प्रवचन मे इस प्रकार वर्णन किया है—

"'इक्ष्वाकु' यह आर्यावर्त का प्रथम राजा हुआ। इक्ष्वाकु की ब्रह्मा से छठी पीढ़ी है — ......।"

"...... ....बहुत सी पीढियो के बाद सगर राज्य करने लगा ..... ।'

" ....इसके अनन्तर भरत-कुल मे अनेक राजा होते रहे। इसी कारण पर उस समय से आर्यावर्त का नाम भारतवर्ष भी हो गया। तदनन्तर राजा रघु हुआ। ... रघु के पीछे राजा राम हुए ... ।"

वाल्मीकि रामायण के सर्ग ७० श्लोक १९ ४४ मे राम को निम्नलिखित वशावली का वर्णन किया गया है

१- ब्रह्मदेव २- मरीचि ३- कश्यप ४- विवस्वान् ५- मनु ६- इक्ष्वाकु (अयोध्या का पहला राजा) ७ कुक्षि ८- विकुक्षि ९- बाण १०- अनरण्य ११- पृथु १२- त्रिशकु १३- धुन्धुमार १४- युवनाश्व १५- मान्धाता १६- सुसन्धि १७- ध्रुव सन्धि १८- भरत १९ असित २०- सगर २१- असमञ्जा २२- अशुमान् २३ दिलीप २४ भगीरथ २५- ककुत्स्थ २६- रघु २७- प्रवृद्ध २८- शखण २९- सुदर्शन ३० अग्निवर्ण ३१- शीघ्रग ३२- मरु ३३- प्रशुश्रुक ३४- अम्बरीष ३५- नहुष ३६- ययाति ३७- नाभाग ३८- अज ३९- दशरथ ४०- रामचन्द्र।

वाल्मीकि रामायण में ब्रह्मा से लेकर राम पर्यन्त इन ४० राजाओं की सूची दी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' के एकादश-समुल्लास में युधिष्ठिर से यशपाल पर्यन्त १२४ राजाओं का शासन-काल अनुमानत ४१५७ वर्ष ९ मास १४ दिन बताया है। इस मत से देखा जाए तो ४० राजाओं का शासन-काल तो और भी कम होता है।

फिर भी सौ वर्ष का शासन काल भी यदि प्रत्येक राजा का लगाया जाय तो ४००० वर्ष ही बनता है। वर्तमान सृष्टि सवत् १९६०८५३०८६ में से ४००० वर्ष घटाने से १९६०८४९०८६ वर्ष राम के काल को व्यतीत हुए बनते हैं। इससे अन्य मत स्वत ही खण्डित हो जाते हैं।

२४ अक्तूबर, १९८६ को दयानन्द-मठ रोहतक मे हुई रामायण-गोष्ठी में पूज्य आचार्य सुदर्शनदेव जी ने भी अपने शोध-पत्र मे यही मत प्रस्तुत किया था। उनसे हमारा इस विषय मे विस्तृत विचार-विमर्श हुआ था।

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि राम का काल आज से लगभग १९६०८४९०८६ वर्ष पूर्व प्रथम मन्वन्तर की प्रथम चतुर्युगी के प्रथम कृतयुग में ही था।

—इतिहास शोध संस्थान
कार्यालय—आर्य निवास दातौली
पो० चिड़िया (भिवानी)।

हरयाणा के आर्यसमाजों मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का ५९वाँ बलिदान दिवस प्रति वर्ष की भान्ति हरयाणा के आर्यसमाजो तथा सस्थाओ मे श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

१- आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक—

२२ दिसम्बर रविवार को प्रात यज्ञ के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री तथा प० हरीशचन्द्र की मण्डली ने स्वामी जी को जीवनी पर प्रकाश डाला। सभा १०० रु० वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुआ।

२- आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक—

२२ दिसम्बर को ही दोपहर बाद आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे रोहतक के बडे पार्क मे स्वामी जी का बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया। प० विश्वामित्र जी, प्रो० रामविचार के व्याख्यान तथा प० सत्यपाल के मधुर के मधुर सगीत हुए। समारोह की अध्यक्षता स्वामी जीवनानन्द जी ने की।

३- आर्यसमाज गन्नौर शहर जि० सोनीपत—

२२ दिसम्बर को प० जयदेव अतोई वालो की अध्यक्षता में बलिदान दिवस आर्यसमाज गन्नौर की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द चौक में मनाया गया। इस अवसर पर श्री हरीश जी, महात्मा प्रेमभिक्षु जी, सभा के उपदेशक प० चन्द्रसैन जी वैदिक मिशनरी आदि वक्ताओ ने स्वामी जी को श्रद्धाजलियाँ दी।

४- आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा—

२३ दिसम्बर को स्कूल मे बलिदान दिवस चौ० सूबेसिंह जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता में चल विजयोपहार राजकीय वरिष्ठ मा० विद्यालय सिरसा ने प्राप्त किया। प्रथम स्थान पर प्रोमिला रानी, दूसरे पर श्री हितेशकुमार तथा तीसरे पर श्री दिनेश कुमार रहे। विद्यालय के प्रबन्धक डा० रणधीरसिंह साँगवान तथा प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलियाँ दी।

५ आर्यवीर दल रोहतक

१५ दिसम्बर को वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक में आर्यवीर दल रोहतक की ओर से बलिदान दिवस मनाया गया। प० पृथ्वीराज शास्त्री जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा की।

ग्राम घिराय जिला हिसार में सर्वखाप की पचायत —

ग्राम घिराय तहसील हासी जि० हिसार मे २-९-८५ को खाप रोधी, बालू, बिलायन, सेमन बिठमडा की सामूहिक पचायत दहेज व अन्य सामाजिक बुराइयो पर फैसले लेने के लिए हुई थी। परन्तु ग्राम घिराय मे खापो के साथ अभद्रव्यवहार किया गया था। अत पुन: रविवार १२ जनवरी ८५ को उपरोक्त खापो की पचायत हो रही है। सभी खापो, पालो, बाहरो, तपो से निवेदन है कि इस अवसर पर घिराय में पधारें। यह ग्राम हासी-बरवाला मार्ग पर स्थित है।

स्वामी कर्मपाल प्रधान सर्वजातीय सर्वखाप पचायत।

सम्पादकीय—

प्रधानमन्त्री के नाम खुला पत्र

प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी की ओर से २४-१२-८५

मुझे प्रसन्नता है कि आपने हरयाणा के ससद सदस्यो को यह आश्वासन दिया है कि हरयाणा को न्याय मिलेगा और आप पजाब समझौते पर उसकी भावना के अनुरूप अमल करेंगे।

मुझे क्षमा करें कि पिछले पाच महीनो मे जो कुछ हुआ उससे इस बात के सकेत नही मिलते कि हरयाणा के साथ न्याय होगा या समझौते पर उसकी भावना के अनुरूप अमल होगा।

सन्त लोंगोवाल ने सिख जनता को अपने साथ लेने और उनको देश की मुख्य धारा से जोडने के लिए कुछ बातो को स्पष्ट रूप से लिखने से रोका था। इसीलिए हरयाणा को फाजिल्का अबोहर तथा रावी व्यास के पानी का हिस्सा समझौते मे सीधा न देकर आयोग और न्यायाधिकरणो द्वारा दिलवाने का निर्णय किया था, ताकि २६ जनवरी को जब चण्डीगढ पजाब को दिया जाय, उसके साथ साथ हरयाणा को फाजिल्का अबोहर दे दिया जाये और रावी व्यास के पानी मे उसके हिस्से का भी अन्तिम निर्णय हो चुका हो। लिक नहर की खुदाई का काम, क्योंकि ६ महीने मे पूरा होना सम्भव नही लगा, इसलिए उसके लिए और ६ महीने की अवधि निश्चित की गई। इन दो महत्त्वपूर्ण विषयो के लिए गणतन्त्र दिवस और स्वतन्त्रता दिवस ठीक ही चुने गए थे। थोडे शब्दो मे समझौते की अन्तरात्मा और भावना का यही सार निकलता है।

सरकार ने इस सम्बन्ध मे क्या किया ?

भारत सरकार ने चण्डीगढ के बदले मे हरयाणा को दिए जाने वाले पजाब के इलाके का चयन करने के लिए मैथ्यू आयोग की नियुक्ति की। अपने अध्यादेश मे सरकार ने 'सबद्ध तत्त्वो' पर विचार करने का विवेक अधिकार भी आयोग को दिया। कानून के जानकार हल्को में सभी जानते हैं कि यह विवेक अधिकार 'सबद्ध तत्त्वो' पर विचार करने का तो सभी न्यायाधीशों और आयोगो के अधिकारो मे अन्तर्भूत होता है, जिससे वे मामले की तह और सचाई तक पहुच सके। सफाई देते हुए आपने भी गलती मानी, उससे अकालियो को वावेला मचाने, होशा खड़ा करने, सिख जनता को भडकाने तथा गृह मन्त्रालय और उसके अधिकारियो पर छीटाकशी करने का अवसर मिल गया। हालाकि अकालियो ने अपने उत्तर मे कई असम्बद्ध मामले उठाये और असम्बन्ध तत्त्वो को शामिल करने को कोशिश की परन्तु आयोग ने तो आपके वक्तव्य का आदर करते हुए सम्बद्ध तत्त्वो की भी अनदेखी सी ही किए रखी। परन्तु जब आयोग ने आश्चर्य मे डालने वाले १९८१ की जनगणना के आंकडे देखे, जिनके अनुसार पजाब में केवल फाजिल्का तहसील के काफी गावो मे हिन्दी भाषी लोगो की सख्या जो १९६१ की जनगणना मे ६० फीसदी से ६८ फीसदी तक थी, उसे ३ से ५ फीसदी पर लाकर खड़ा कर दिया, तो उन्होने ऐसे गाँवों के बारे में सही जाँच करने के लिए गणक भेजे जाने का निर्णय किया। परन्तु अकाली सरकार तो जानती थी कि इस प्रकार १९८१ की जनगणना के आंकडें गलत प्रमाणित होगे और १९७० में जो गाँव श्रीमती इन्दिरा गाधी ने हरयाणा को दिये थे, वे सभी हिन्दी भाषी साबित हो जायेंगे, इसलिए उन्होने इस जाँच को रोकने के लिये दगे फिसाद होने की धमकी दी और मन्त्रिमण्डल के त्यागपत्र तक की धमकी भी दी गई। इन सभी गावो में पजाबी भाषी लोग तो इने गिनें हैं, उनमें कहाँ ताकत है कि दगे फिसाद की हिम्मत कर सकें। बाहर से सरकार के या अकालियों के भेजे हुए लोग ही फिसाद कर सकते हैं।

मैथ्यू आयोग के काम को आगे बढ़ाने का दायित्व सरकार पर ही है, क्योंकि उसी के कहने पर आयोग अपना काम रोके हुए है। आज यह आम धारणा है कि पर्दे के पीछे कोई सौदा करने की बात चल रही है और आयोग को निष्क्रिय बना दिया गया है तथा उसकी अवहेलना की जा रही है।

यह तो इलाकाई सवालो के बारे में धारा ७२ की बात हुई। रावी व्यास के पानी के बटवारे के लिए नियुक्त किये जाने वाले न्याय अधिकरण के बारे में पाँच महीने बीतनें पर भी चर्चा तक नहीं। यह स्पष्ट है कि रावी व्यास के पानी के बटवारे का मामला ठण्डे बस्ते मे ताक पर रख दिया है। एक बार चण्डीगढ मिल जाये फिर तो पजाब वाले इस मामले को छेडने तक नहीं देंगे, फैसले की बात तो दूर रही। इसीलिये तो पानी के फैसले के लिए ६ महीने की अवधि रखी गई थी। धारा ६ मे चाहे न्यायाधिकरण की नियुक्ति की कोई तारीख नही रखी थी, परन्तु यह काम तेजी से करने की बात कही थी। न्यायाधिकरण की नियुक्ति को टालते जाना क्या फैसले की भावना के अनुरूप है? सतलुज-यमुना लिक नहर का काम ठप्प पडा है और श्री बरनाला ने फिर से नहर की रेखा बदलने के बहाने से खुदाई का काम रोक दिया है। अकाली सरकार की यह बदनीयती है। भारत सरकार खुदाई के काम को १५ अगस्त १९८६ तक पूरा करने के अपने आश्वासन मे पूरी तरह असफल रही है।

रेल के डिब्बे बनाने वाला कारखाना पहले हरयाणा मे लगाया जाना था, वह अब पजाब मे लगा दिया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में पजाब से ५००० युवक भर्ती किए जा रहे है, और हरयाणा से एक भी नही ऐसा क्यो? क्या इसीलिए कि हरयाणा के युवक कानून का आदर करते है और देश से प्यार करते हैं? इन तथ्यो के रहते हरयाणा को न्याय देने की बात करना उनके साथ मखौल करना है।

अकाली क्या कर रहे है ?

अकाली मैथ्यू आयोग को निष्क्रिय और बेकार बनाने मे सफल हो गए है। रावी व्यास के पानी के बटवारे के मामले को भी उन्होने ताक पर रख दिया है। लिक नहर का काम उन्होने बन्द कर दिया है। आप कुछ कहे, परन्तु आम लोग यह महसूस करते हैं कि आपने अकालियो के सामने हथियार डाल दिये है।

सभी समझदार लोग खुश हुए थे कि समझौते के कारण पजाब देश की मुख्य धारा से जुड जाएगा। अकाली सरकार को गतिविधियो को देखकर अब लोग अपनी राय बदलने के लिये मजबूर हो रहे हैं। आतकवादी तथा खालिस्तानी तत्त्व फिर पहिले की तरह सक्रिय हो गये है। बेस कमेटी के आड मे भारत सरकार की इच्छा के विरुद्ध अकाली सरकार समाजविरोधी तथा राष्ट्रविरोधी तत्त्वो को छोडते जा रहे हैं, और खुलकर कह रहे हैं कि कानून व्यवस्था तो राज्य सरकारो का विषय है। फौजी भगोडों को पुरस्कृत किया जा रहा है तथा उनके पुनर्वास का प्रबन्ध हो रहा है। जिन जवानो को दोषी पाकर उनको सजा मिली, उनके लिए भी पजाब मे अलग जेल में रखकर उनके साथ विशेष महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो वाला सलूक किया जाता है। ऐसे सभी तत्त्वो को सरकारी नौकरिया दी जा रही हैं। ऐसे लोगो को पुरस्कृत करने के लिए नया बहाना ढूढ लिया गया है। उनकी सभी समाजविरोधी और राष्ट्रविरोधी गतिविधियो का कारण बेरोजगारी बताया जा रहा है। भले और कानून का आदर करने वाले राष्ट्रभक्त नवयुवको पर इनको तरजीह दी जा रही है। यदि रोजगार पाने के लिए सारे देश मे नवयुवक यही काम करना शुरु कर दें, तो देश का क्या होगा? फिर कोई भी नवयुवक देश के कानून का आदर क्यो करेगा? इस प्रकार अकाली सरकार ने एक नई धारा खोल दी है, यह धारा राष्ट्र की मुख्य धारा से कैसे जुड सकती है। जिस दिन यह धारा देश की मुख्य धारा से जुड जायेगी, वह राष्ट्र के लिए सब से बुरा दिन होगा।

यह सर्वविदित है कि दूसरे प्रदेशो के मुकाबले में पजाब मे बेरोजगारी बहुत ही कम है। पजाब में ही ऐसे हिन्दू और सिख युवको की कमी नही जो बेरोजगार हैं, परन्तु देश के कानून का आदर करते हैं और देश से प्यार भी करते हैं क्या बुरे सिक्खो की तरह बुरे नवयुवक भी अच्छे नवयुवको का चलन बन्द करने जा रहे हैं?

समझौते के अनुसार अल्पसख्यको को सुविधाए दी जानी हैं। सिख भारत मे अपने आपको अल्पसख्यक मानते हैं, तब हिन्दू पजाब में अल्पसख्यक हो गए। आतकवाद को समाप्त करने के बहाने उन्होने १०००० नौकरियाँ केवल सिखो के लिए सुरक्षित कर दी हैं। यह सुविधा उन्होने अपने अल्पसख्यकों को दी है। पजाब के एक उद्योगपति ने पिछले दिनों बताया कि उनके कारखाने मे रिक्त स्थानो की पूर्ति

—शेष पृष्ठ ५ पर

रास्ता हरयाणा का नहीं पंजाब का रोकना चाहिए

प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी का वक्तव्य

बडी प्रसन्नता की बात है कि न्याय यात्रा की सफलता के कारण आज हरयाणा एक आवाज होकर यह कह रहा है कि जब तक रावी व्यास के पानी का बटवारा, लिंक नहर की खुदाई और फाजिल्का अबोहर हरयाणा को दिए जाने का काम पूरा नही हो जाता, तब तक चण्डीगढ पजाब को नही देना चाहिए। पजाब सरकार अकाली दल और तथाकथित किसान यूनियन लिंक नहर बनाने के काम को रोके हुए है, इसलिए उनपर भरोसा नही किया जा सकता कि वे इस काम को चण्डीगढ मिलने के बाद कभी भी पूरा होने देगे। राजीव लोगोवाल समझौता हरयाणा उसी हालत मे स्वीकार करेगा, जब हरयाणा को फाजिल्का अबोहर, पानी का पूरा हिस्सा हरयाणा को देने का अन्तिम निणय हो जाएगा और नहर की खुदाई का काम भी भारत सरकार अपने हाथ मे लेकर 15 अगस्त 1986 तक पूरा करने का आश्वासन देगी।

आज जाहिर तौर पर इस बारे मे हरयाणा मे दो राय नही है, रास्ता तो हमको रोकना चाहिये, पजाब के लोगो का और हरयाणा की सीमा मे से गुजरकर जाने वाले उनके वाहनो का, क्योंकि पजाब की सरकार और पजाब के अकाली तथा किसान यूनियन के लोग, हमारी नहर की खुदाई अपनी जमीन पर नही होने देते। जब वे अपनी जमीन पर हमारी नहर का पूरा मुआवजा देने पर भी नही बनने देते, तो हम उनको और उनके वाहनो को अपनी जमीन पर से कैसे जाने देगे।

चौ० भजनलाल ने वक्तव्य मजबूत दिये है, उनका तो स्वागत है, परन्तु उनको न तो कोई सौदा करना चाहिये और न ही इन दिनो मे कोई भी दफ्तर किसी कारण से भी हो, चण्डीगढ से बदलना चाहिए। गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी को जैसे पजाब चण्डीगढ मे मना रहा है, उसी प्रकार हरयाणा को भी चण्डीगढ मे ही मनाना चाहिये। चण्डीगढ तो हिन्दी भाषी होने के नाते हरयाणा का है, और इसीलिए शाह कमीशन ने हरयाणा को दिया। पजाब को चण्डीगढ देने का कोई औचित्य नहीं है, यह तो केवल अकालियो की धमकियो और हिसात्मक कार्यवाहियो के सामने झुककर दिया जा रहा है।

रामप्रसाद विस्मिल एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस नरवाना

आर्यसमाज नरवाना के तत्वावधान मे २३ दिसम्बर १९८५ को आर्य वीरदल के बौद्धिकाध्यक्ष प्रो० ओमकुमार जी की अध्यक्षता मे राज्यस्तरीय भाषण एव भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे चलविजयोपहार आर्य कन्या हाई स्कूल नरवाना ने जीता। समारोह मे मुख्य अतिथि स्वामी रत्नदेव जी ने पुरस्कार बाटे। श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने युवा पीढी को स्वामी श्रद्धानन्द एव प० रामप्रसाद विस्मिल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। समारोह के अन्त मे प्रि० जसवन्तराय और मन्त्री श्री रामकुमार जी ने अभ्यागतो का धन्यवाद किया।

आर्य वीर भाषण एव भजन प्रतियोगिता फतेहपुर—

आर्यसमाज फतेहपुर जि० कुरुक्षेत्र के तत्वावधान मे राज्य स्तरीय आर्य वीर भाषण एव भजन प्रतियोगिता का आयोजन २५ दिसम्बर १९८५ को प० रामप्रसाद विस्मिल और स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के अवसर पर किया जिसकी अध्यक्षता आर्य वीर विजय के सहसम्पादक श्री बाबूराम गुप्त ने की। इस प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए हरयाणा भर की आर्य वीर दल की शाखाओ को आमन्त्रित किया गया जिसमे आर्य वीर दल नरवाना ने चलविजयोपहार जीता। इस अवसर पर श्री धर्मदेव विद्यार्थी और उमेद शर्मा ने युवको को आर्यसमाज मे आने की प्रेरणा की। सचालन मास्टर इन्द्रसिह ने किया श्री बाबूराम जी गुप्त ने ५००/- का पवित्र दान दिया। युधिष्ठिरपाल जी प्रधान ने सबका धन्यवाद किया।

आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर—

कैथल मे आयोजित आर्य वीर दल हरयाणा की कार्यकारिणी की बैठक मे सभी आर्य शिक्षण सस्थाओ एव देश-प्रेमी आर्य बन्धुओ को सुझाव दिया जाता है कि फरवरी मे आठवी कक्षा की परीक्षा के बाद आठवी के परिणाम तक आठवी के बालक निठल्ले घूमते रहेंगे और समय का दुरुपयोग भी करेंगे। इन भटकते छात्रो को दिशा देने के लिए फरवरी और मार्च मे आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर लगाये जाये जिनमे योगासन, प्राणायाम और अन्य व्यायाम के साथ वैदिक सस्कृति की शिक्षा दी जाये। इच्छुक महानुभाव सहयोग के लिए मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा पलवल से सम्पर्क करे। इसके अतिरिक्त मई जून मे शिविर आयोजन हेतु अभी से पत्रव्यवहार कर अपने सुझाव सहित अपनी तारीख नियत कर ले। प्रत्येक जिले मे एक शिविर लगाया जायेगा इसके बाद द्वतीय वर्ष का शिविर चुने हुए आर्य वीरो का ही होगा

—धर्मदेव विद्यार्थी

(पृष्ठ १ का शेष)

मे शिक्षा के समान अवसरो का अभाव है। देहातो मे स्थित 'स्कूल' इमारतो के द्वारा मात्र अपनी उपस्थिति का आभास कराते है। १९८४ के मध्य मे रोजगार दफ्तरो मे २ २६ करोड बेरोजगार लोगो का नाम दर्ज था। भारत मे छ पचवर्षीय योजनाओ के क्रियान्वयन के बाद भी रोजगार के अपेक्षित अवसरो का निर्माण नही हो पाया है। बेरोजगार युवको मे भटकाव स्वाभाविक है। आज महानगरो मे छात्रो एव युवको के बीच 'नशीली वस्तुओ' एव 'ब्लू-फिल्मो' के बढते हुए आकर्षण से उनकी मानसिकता रुग्ण होती जा रही है। नशीली वस्तुओ का सेवन महानगरो की सीमा के बाहर बड़े पैमाने पर युवको को आकर्षित कर रहा है। गाधी जी के मित्र श्री निर्मल-कुमार बोस ने युवा वर्ग की आज की स्थिति के लिए तीन कारण बताये थे। (क) युवको मे आदर्शो का अभाव, (ख) स्वयसेवी सस्थाओं का अवमूल्यन एव (ग) सभी विकास के कार्यों के लिए सरकारी मदद की अपेक्षा।

युवा पीढी की बदल रही मानसिकता आज सभी छात्र-युवा सगठनो के लिए चुनौती के समान है। सरकारी प्रचार माध्यमो पर अत्यधिक निर्भरता एव 'कैरियर' के प्रति अधिक चिंतित होने से युवा वर्ग के बीच जुझारूपन समाप्त होता जा रहा है। स्वय युवा नेतृत्व 'आरामदायी' राजनीति मे विश्वास करने लगा है। यदि देश मे स्वस्थ छात्र-युवा आन्दोलन की परम्परा को पुनर्जीवित करना है तो छात्र-युवा सगठनो को महानगरीय राजनीति से तलाक लेकर गांवो, कस्बो के असगठित छात्र युवाओ के बीच कदम बढाने होगे। सरकारी जलसो, उत्सवो और सरकारी धन पर विदेश भ्रमण को युवा वर्ष की सार्थकता सरकार की फाइलो मे माना जा सकता है पर यह सन्तोष का विषय नही होना चाहिये। सच्चे अर्थ मे ये सभी कार्यक्रम इस बात के प्रमाण हैं कि युवा वर्ष के मूल उद्देश्यो को सरकार अथवा गैर-सरकारी सगठन नही पकड पाए। (युगवार्ता)

हरयाणा-हिमाचल की आर्यसमाजों को सूचना

आप अपनी आर्यसमाज मे शराब, मास, दहेज तथा गऊहत्या के करुणाजनक सीन परदे पर दिखलाकर ऋषि-ऋण से उऋण होइए। चलचित्रो के साथ-साथ जोशीले गीत सुनने का भी आपको अवसर मिलेगा। इस पिक्चर प्रचार के लिए बिजली का होना अति आवश्यक है।

आशानन्द भजनीक
आर्य भवन, I/9359, प्रतापपुरा,
गली न० 2, शाहदरा, दिल्ली-32

केन्द्रीय सरकार का सहरानीय कदम

भारत की केन्द्रीय सरकार के गृहमन्त्रालय ने आर्यसमाज द्वारा सन् १९३८-३९ मे निजामशाही के विरुद्ध चलाए गए सत्याग्रह आन्दोलन को स्वाधीनता सग्राम का अ ग मानकर अतीव ही सराहनीय कार्य किया है। अब हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने वाले सत्याग्रहियो अथवा उनकी विधवाओं को वे सभी सुविधाए तथा पेन्शन आदि दी जायेंगी, जो सुविधाए तथा पेन्शन आदि स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियों को मिलती हैं। ज्ञातव्य है कि सन् १९३८ मे हैदराबाद राज्य के नवाब निजाम साहब ने हिन्दुओ को उनके समस्त धार्मिक अधिकारो से वचित कर दिया था जिसके विरुद्ध महात्मा नारायण स्वामी तत्कालीन प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-के नेतृत्व मे आर्यसमाज ने एक ऐतिहासिक सत्याग्रह आन्दोलन चलाया था। इस आन्दोलन मे आर्यसमाज के लगभग बाईस हजार लोगो ने निर्भीकतापूर्वक भाग लिया था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप निजाम को अपना जनविरोधी आदेश वापस लेना पड़ा था और समस्त राष्ट्र मे एक नए वातावरण का निर्माण हुआ था। नवयुवको मे त्याग-बलिदान तथा अन्याय के विरुद्ध सघर्ष करने की भावना का प्रादुर्भाव हुआ था।

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट
मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा, सुलतानपुर

युवा दिवस की पूर्व सन्ध्या पर मशाल जलूस

पलवल (वि०)–सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल उपमण्डल के तत्वावधान मे युवा दिवस को पूर्व सन्ध्या पर दिनाक 11 जनवरी 1986 को एक विशाल जलूस साय 5 00 बजे से पुराने सिविल हस्पताल से निकाला जाएगा। जलूस का नेतृत्व आर्यवीर दल जिला फरीदाबाद के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश आर्य करेगे। जलूस शहर के विभिन्न बाजारो तथा मोहल्लो में से गुजर कर आर्यसमाज दरबार कुआ पर समाप्त होगा। जहाँ पर एक विशाल युवा सम्मेलन श्री अजीतकुमार आर्य महामत्रि हरयाणा प्रान्तीय आर्यवीर दल की अध्यक्षता मे होगा। जिसे आर्यवोर दल के युवा नेता श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी, श्री सजीव मगला "मोनू" श्री रमेश अग्रवाल, श्री अरुण आर्य, श्री यशपाल मगला, श्री राजेश सागर, श्री अजयसिंह भाटी तथा श्री बलदेवराज कथूरिया सबोधित करेगे। ज्ञातव्य रहे कि भारत सरकार ने स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस को युवा दिवस घोषित किया है।

प्रेस सचिव
आर्यवीर दल पलवल उपमण्डल

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह

१९८५-८६ डी० ए० वी० शताब्दी का वर्ष है इस उपलक्ष्य मे भारत की राजधानी दिल्ली में विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त समस्त प्रातों मे डी० ए० वी० शताब्दी समारोह की रीजनल कमेटिया बन चुकी हैं तथा वहाँ भी सारे कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं।

उपर्युक्त शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य मे एक विशाल शोभा यात्रा शनिवार १५ फरवरी १९८६ को भारत की राजधानी दिल्ली मे निकाली जायेगी। यह शोभा यात्रा प्रात ११ बजे लालकिला मैदान से आरम्भ होगी, जो कि— चाँदनी चौक, घटाघर, नई सडक, चावडी-बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिन्टो रोड, कनाट प्लेस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेंट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिडला मन्दिर से होती हुई साय ५ बजे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

हमारी समस्त आर्यसमाजों, डी० ए० वी० सस्थाओ एव अन्य आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि वे यह तिथि अभी से अकित कर लेवें तथा १५ फरवरी को शोभा यात्रा में अवश्य ही सम्मिलित होने की कृपा करे। इस उपलक्ष्य में सारे प्रबन्ध किये जा रहे हैं।

बाहर से पधारने वाले महानुभावों के ठहरने एव भोजन का प्रबन्ध डी० ए० वी० शताब्दी समारोह समिति की ओर से किया जायेगा। दिल्ली भारत की राजधानी है, हमारी इच्छा है कि इस शोभा यात्रा मे सब सस्थाए अपने-अपने "मोटो" एव ओ३म् के झण्डे लेकर अवश्य ही सम्मिलित हो। दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों की आर्यसमाजें, आर्य सस्थाए एव डी० ए० वी० सस्थाए १५ फरवरी को प्रात: चलकर शाम को अपने-अपने स्थानो पर पहुच सकती है।

रामनाथ सहगल
सयोजक शोभा यात्रा

यतिमण्डल की बैठक

१ से ३ फरवरी ८६ को वैदिक यतिमण्डल का सम्मेलन गुरुकुल आमसेना वाया खरियार रोड (जिला कालाहाँडी) उडीसा प्रान्त में होगा। अत सब यति महात्मा निश्चित समय पर पहुचने की कृपा करे।

निजामुद्दीन नई दिल्ली स्टेशन से (३६) छत्तीसगढ़ ऐक्सप्रेस प्रात: छह बजे चलती है जो खरियार रोड स्टेशन पर अगले दिन दोपहर बाद ३ बजे पहुचती है।

खरियार रोड मे गुरुकुल आश्रम आमसेना का अपना प्रेस (छापाखाना) है, वहा से गुरुकुल पहुच जायेगे।

निवेदक
सोमानन्द मत्री, वैदिक यति मण्डल

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की बैठक

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष माननीय प्रो० शेरसिंह जी के आदेशानुसार एक आवश्यक बैठक दिनाक १२ जनवरी १९८६, रविवार को प्रात: ११ बजे दयानन्द मठ, गोहाना मार्ग रोहतक मे आमन्त्रित की गई है। इस बैठक में राजीव-लोगोवाल समझौता के सम्बन्ध मे वर्तमान परिस्थितियो पर विचार करके आवश्यक पग उठाने का कार्यक्रम बनाया जायेगा। हरयाणा की जनता को सघर्ष के लिए बडे से बडा बलिदान देने की तैयारी करनी होगी।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अधिकारियो तथा कार्यकर्ताओ से निवेदन है कि अपने सक्रिय साथियो सहित समय पर पधार कर अपना सुझाव तथा सहयोग देकर अपने कर्तव्य का पालन कीजिए।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी
सयोजक, हरयाणा रक्षा वाहिनी,
दयानन्द मठ, रोहतक।

(पृष्ठ ३ का शेष)

भी जेल से रिहा किये युवकों के द्वारा भरने के आदेश है। यदि ऐसे लोग भर्ती होगये तो उद्योगपति तो वहाँ घुस ही नही सकता, फिर वह कारखाना तो उन युवको का ही हो गया। यदि सब निजी क्षेत्र के कारखानो मे यह आदेश लागू हो गया तो उन सब के मालिक यही युवक हो जायेगे। सब खाली स्थान मिलाकर १०,००० स्थानो पर ऐसे युवको को जो जेलो मे छूटकर आयगे, भर्ती किया जायेगा। क्या यही समझौते की भावना थी?

इन तथ्यों के प्रकाश मे तथा गृह मन्त्रालय के अधिकारियो का आश्वासन कि चण्डीगढ २६ जनवरी १९८६ को मिल जाएगा और अकाली सरकार द्वारा चण्डीगढ के मुख्य आयुक्त की नियुक्ति, सब मिलाकर आनेवाले समय मे क्या होने जा रहा है और हरयाणा को कैसा न्याय मिलेगा इसका स्पष्ट सकेत मिल जाता है।

किस प्रकार आप हरयाणा को न्याय देंगे, यह आप ही जान सकते है। हमे अच्छे से अच्छे की कामना और आशा करनी चाहिए।

मेरा पत्र लम्बा हो गया, परन्तु इसमे जो कहना चाहता था वह विस्तार से नहीं कहा जा सकता था। इसलिए यदि किसी दिन आप मुझे अपने अमूल्य समय मे से कम से कम १५, २० मिनट का समय दे तो सब स्पष्ट रूप से कहा जा सकेगा, जिससे आपको स्थिति को उसके सही परिप्रेक्ष्य मे जानने मे सुविधा होगी।

प्रो० शेरसिंह

ऋषि सन्देश

पूजा किस को ?

आजकल आर्यसमाज मे इस प्रकार की भ्रान्ति फैलाई जा रही है कि अग्निहोत्र द्वारा जड देवताओ की पूजा करते है और अग्नि देवताओ का मुख है। इस विषय मे जो ऋषिकृत ग्रन्थो मे लिखा है वह लिखते हैं ताकि भ्रान्ति न रहे।

पूजा—जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है उसको पूजा कहते है।

देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा।
(नि० ७।१५)

दान देने से देव नाम पडता है, और दान कहते है अपनी चीज दूसरे के अर्थ दे देना। दीपन कहते है प्रकाश करने को। द्योतन कहते है सत्योपदेश को। इनमे से दान का दाता मुख्य एक ईश्वर ही है कि जिसने जगत् को सब पदार्थ दे रखे है। तथा विद्वान् मनुष्य भी विद्यादि पदार्थ के देने वाले होने से देव कहाते है। (दीपन) अर्थात् सब गतिमान् द्रव्यो का प्रकाश करने से सूर्यादि लोको का नाम भी देव है। (द्योतन) तथा माता पिता आचार्य और अतिथि भी पालन-विद्या और सत्योपदेशादि के करने से देव कहाते है। वैसे ही सूर्यादि लोको का भी जो प्रकाश करने वाला है, सो ही ईश्वर सब मनुष्यो को उपासना करने के योग्य इष्टदेव है अन्य कोई नही।

इसमे कठोपनिषद् का भी प्रमाण है—सूर्य, चन्द्रमा, तारे बिजली और अग्नि ये सब परमेश्वर मे प्रकाश नही कर सकते, किन्तु इन सब का प्रकाश करने वाला एक वही है। क्योकि परमेश्वर के प्रकाश से ही सूर्य आदि सब जगह प्रकाशित हो रहा है। इसमे यह जानना चाहिए कि ईश्वर से भिन्न कोई पदार्थ स्वतन्त्र प्रकाश करने वाला नही है इससे एक परमेश्वर ही मुख्य देव है। यजु० ४०-४

नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत्।

इस वचन मे देव शब्द से इन्द्रियो का ग्रहण होता है। जोकि श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, मन और नाक ये छ देव कहलाते है। क्योकि शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध सत्य और असत्य इत्यादि अर्थो का इनसे प्रकाश होता है और देव शब्द से स्वार्थ मे 'तल्' प्रत्यय करने से देवता शब्द सिद्ध होता है। जो जो गुण जिस जिस पदार्थ मे ईश्वर ने रचे है, उन उन गुणो का लेख उपदेश श्रवण और विज्ञान करना तथा मनुष्य सृष्टि के गुणो दोषो का भी लेख आदि करना इसको स्तुति कहते हैं। क्योकि जितना-जितना जिस-जिस मे गुण है उतना उतना उसमे देवपन है। इससे वह किसी के इष्टदेव नही हो सकते ? जैसे किसी ने किसी से कहा कि यह तलवार काट करने मे बहुत अच्छी और निर्मल है, इसकी धार बहुत तेज है और यह धनुष के समान नमाने से भी नही टूटती, इत्यादि तलवार के गुणकथन को स्तुति कहते हैं।

यह जो तेतीस जड देवता हैं यह व्यवहार के देवता हैं। इनमे से कोई भी उपासना के योग्य नही है, और सब मनुष्यो के उपासना के योग्य तो देव एक ब्रह्म ही है। जो सब जगत् का कर्ता, सर्वशक्तिमान् सब का इष्ट सबको उपासना के योग्य, सबका धारण करने वाला, सब मे व्यापक और सब का कारण है, जिसका आदि अन्त नही और जो सच्चिदानन्दस्वरूप है जिसका जन्म कभी नही होता और जो कभी अन्याय नही करता, इत्यादि विशेषणो से वेदादि शास्त्रो में जिसका प्रतिपादन किया है उसी को इष्टदेव मानना चाहिए और जो कोई इससे भिन्न को इष्टदेव मानता है, उसको अनार्य अर्थात् अनाडी कहना चाहिये। आजकल कुछ लोग भ्राति फैलाते फिरते हैं कि वेदो मे जड पूजा लिखी है उनसे सावधान रहना चाहिए।

पूजनीय योग्य देवताओ का भेद दो प्रकार का है। पहला माता, पिता, आचार्य, अतिथि, यह चार मूर्तिमान् और दूसरा पाँचवां परब्रह्म अमूर्तिमान् है, अर्थात् उसकी किसी प्रकार की मूर्ति नही। इस प्रकार से पाँच देव की पूजा मे यह दो प्रकार का भेद जानना चाहिये।

इससे क्या सिद्ध होता है कि जो यह कहते फिरते हैं कि यज्ञ से जड देवताओ की पूजा आर्यजन करते है, ठीक नही है। सब आर्यजनों को सावधान रहना चाहिये, भ्राति में नही पडना चाहिए। अस्तु

सदेशवाहक
देसराज खीरबाट, रोहतक

कांग्रेस में रहते हुए संघर्ष के साथी

चौधरी देवीलाल के नेतृत्व मे लडे जा रहे 'न्याय-युद्ध' का समर्थन प्रदेश की सभी सस्थाओ एव दलो ने किया है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह ने भी इस सघर्ष मे खुलकर हाथ बटाया है।

न्याय-यात्रियो का जत्था जब दिल्ली सीमा मे दाखिल हुआ तो ज्वाला हेडी गाव के पास प्रो० शेरसिह के नेतृत्व मे वाहिनी का एक जत्था इस यात्रा मे शामिल हुआ। बोट क्लब पर अन्य न्याय-यात्रियों के साथ वाहिनी के कार्यकर्ताओ ने भी गिरफ्तारिया दी।

19 दिसम्बर को रामलीला मैदान मे आयोजित सावजनिक सभा मे बोलते हुए प्रो० शेरसिह ने कहा कि यदि डेढ साल पहले हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए इतनी बडी भीड उमडी होती तो इस अन्याय की नौबत ही नही आती। उन्होने बताया कि वे काग्रेस मे रहते हुए भी इस सघर्ष के साथ है। उन्होने अपने भाषण मे काग्रेस के अन्य नेताओ से अनुरोध किया कि वे न्याय-युद्ध मे शामिल हो।

हाल ही मे प्रधान मन्त्री के नाम लिखे एक पत्र मे प्रो० शेरसिह ने कहा है कि पिछले पाँच महीने का अनुभव यह बताता है कि पजाब समझौते के सदर्भ मे हरयाणा को न्याय मिलना कठिन है। जब मैथ्यू आयोग ने 1961 और 1981 की जनगणना की तुलना की तो पाया कि फाजिल्का तहसील के कई गावो मे सन् 1961 मे ही 90 से 98 प्रतिशत लोग हिन्दी भाषी थे। पर यह समझ मे नही आता है कि 1981 की जनगणना मे यह सख्या कैसे घटकर 3 से 5 प्रतिशत रह गई। मैथ्यू आयोग ने जनगणना अधिकारियो के जरिये इस सदर्भ मे छानबीन करवानी चाही तो सरकार ने यह बात सिर नही चढने दी। सतलुज-यमुना लिक की खुदाई भी पजाब मे बन्द पडी है।

—जनवरी पीस से साभार

यात्रा वेद प्रचार वाहन

१५ नवम्बर से १२ दिसम्बर तक ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी द्वारा करनाल, पानीपत, माडल टाउन फरीदाबाद, मथुरा, भरतपुर, अजमेर, जयपुर, नारनौल, खेतडी, गुडगावा तथा दिल्ली के शिवाजी एनक्लेव, रोडापुर, लाजपतनगर, जवाहर नगर, रोशनआरा रोड, अशोकविहार तथा सफदरजग एन्कलेव आदि स्थानो पर यज्ञ, वैदिक शका समाधान, वेद प्रवचन तथा पुस्तको का वितरण किया। इस प्रचार यात्रा में ब्रह्मचारी आर्य अनिल उद्गीथ भवन की विशेष सहायता रही।

प्रेषक—रिसालसिह आर्य
प्रधान, आर्यसमाज सै० ७, चण्डीगढ-१६००१९

सम्पादक के नाम पत्र

प्रसन्नता की बात यह है कि १६-१२-८५ को हरयाणा के हितो हेतु हुई रैली मे दिल्ली पहुचे। विशाल सख्या में पहुचे लोगो ने सरकार को अवगत करा दिया कि हरयाणा के लोगो को पजाब समझौता मजूर नही है। हरयाणा के लोगो का जोश देखकर तथा इतनी बडी तादाद मे जलूस को देखकर दिल्ली के लोग भी चर्चा कर रहे थे कि हरयाणा किसी भी कीमत पर अपना हक नही छोडेगा। कुछ लोगो को शका थी कि प्रो० शेरसिह काग्रेसी होने के कारण इस रैली मे नही पहुच सकते लेकिन जब वे रामलीला मैदान मे स्टेज पर आये और ललकार कर कहा कि जो रैली आज हो रही है यह डेढ वर्ष पूर्व होनी चाहिए थी इसपर लोगो ने बहुत धन्यवाद किया और जनता में हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु बहुत जोश था कि अपना हक लेके रहेंगे।

—महेन्द्रसिह प्रधान, आर्यसमाज झील (जीन्द)

'स्वामी श्रद्धानन्द' : एक अनुपम व्यक्तित्व

जो रोशनी भारतीय समाज को दिवाली के दिन महर्षि दयानन्द के निर्वाण द्वारा प्राप्त हुई थी और जो स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा आगे बढाई गई वही रोशनी और बढी जब उस महानात्मा की छाती मे तेईस दिसम्बर १९२६ को शाम ४ बजे तीन गोलिया एक धर्मांध व्यक्ति द्वारा उतार दी गयी।

वह जो एक महान् नेता था, जो एक महान् स्वतन्त्रता-सेनानी था और जो स्वामी दयानन्द के नारे 'वेदो को अपनाओ' को आदर्श मानकर एक शिक्षाशास्त्री बना, जो एक वकील से एक सन्यासी बना और जिसने अपना सब कुछ छोड दिया, जो कुछ भी उसके पास था।

पजाब को खासकर उस गाव तलवन को गर्व होना चाहिए कि उसने २२ फरवरी १८५७ मे भारत को एक शिशु के रूप मे एक उभरता सितारा दिया, जिसका नाम बृहस्पति था।

उस समय कौन सोच सकता था कि यह बालक एक दिन बिल्कुल ही अलग प्रकार का जीवन जीयेगा। और यह बालक एक दिन भारत में गुरुकुल पद्धति की शिक्षा शुरु करेगा, और वह भी उस समय जब भारतीय अपना ज्ञान खो चुके हैं और अपनी सस्कृति भूल बैठे है।

प्रभु की लीला, कौन सोच सकता था, मुन्शीराम जो मास मदिरा आदि का सेवन करता था वह अपने पिता नानकचन्द द्वारा स्वामी दयानन्द के वचनो से प्रभावित हो मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन जाएगा।

कभी किसी ने कहा है भूमि मा कितनी मनमोहक खुशबू है तुम्हारी! तब मा ने उत्तर दिया वह तो मेरे ऊपर चन्दन वृक्षों के कारण है। बन्धुओ! स्वामी जी के तेज का रहस्य भी यही है। कल्याण का पथिक नामक अपनी जीवनी मे स्वामी जी ने लिखा है कि मेरी जिन्दगी दो व्यक्तियो के मिलने से प्रभावित हुई है। एक है डाकू सग्रामसिह के मिलने से दूसरा एक जादूगर के मिलने से जिसने मुन्शीराम जी को बचाया। कहा जाता था कि वह जादूगर भगवान् को नही मानता था। क्योंकि वह मूर्ति-पूजा का विरोधी था। लोकापवाद था कि वह बहुत बडा नास्तिक था और वेदशास्त्र के नाम से शास्त्रार्थ करने काशी आया था। जो कोई पण्डित भी उसके पास को जाता वह उसके तेज के कारण उसके सामने प्रश्न नही रख पाता था। एक इसी विशेष कारण से लाला मुन्शीराम जी को घर से बाहर निकलने की अनुमति उनकी माता जी ने नही दे रखी थी। बाद मे नानकचन्द जी ने बताया कि वह जादूगर कोई और नही अपितु महर्षि दयानन्द हैं? कैसे मा उस समय अनुमान लगा सकती थी कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनका पुत्र उस महान् जादूगर के वचनो से प्रभावित होगा और उसका सच्चा शिष्य बन जाएगा।

मुन्शीराम १८८६ मे आर्यसमाज के नियमित सदस्य बन गए। वे बाद में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चुने गए। १९०२ मे उन्होने महान् शिक्षा सस्था गुरुकुल कागडी की स्थापना की।

१९०९ मे पटियाला दरबार ने आर्यसमाज को अवैध बताया। आर्यसमाज की कार्यवाहियो पर रोक लगा दी गई और इसके पकडे सदस्यो के घरों की तलाशी ली गई। मन्दिरो को ले लिया गया। यह सब देखकर, मुन्शीराम जी पटियाला गए। वहा उनकी कोशिशो एव प्रभाव से सभी सदस्यो को एव मन्दिर छोड दिए गए।

सन् १९१९ मे अमृतसर मे जलियावाला बाग मे कर्नल डायर अपनी अमानुषिकता दिखा चुका था। काग्रेस की अध्यक्षता करने की किसी मे हिम्मत नही थी। पर स्वामी श्रद्धानन्द ने उस चुनौती को स्वीकार किया। काग्रेस की अध्यक्षता करके जहाँ उन्होने पजाब की कायरता व भय को दूर भगाया वहाँ राजनीति मे भ्रष्टाचार व अनैतिक कार्यों का भी विरोध किया।

दस दिसम्बर १९२२ एक अविस्मरणीय दिन था जब स्वामी जी ने आकाल तख्त पर भाषण दिया और वे अन्य सिक्खो के सहित पकड लिए गए इसलिए क्योकि यह कहा था कि गुरु के बाग हैं। और उन्हे मिलानवाली जेल मे १६ महीनो की सजा दी गई।

इसका परिणाम यह निकला कि सब हिन्दू, मुस्लिम एव सिक्खो में स्वामी जी के लिए अपार सम्मान उमड आया। जामा मस्जिद से भी स्वामी जी ने अनेक बार वेद मत्र का उच्चारण करके हिन्दू मुस्लिम एकता का शखनाद किया।

स्वामी जी द्वारा जो कार्य हरिजनो एव समाज के शोषित वर्गों के लिए किए गये उसमे स्वामी जी को बहुत मान मिला। वह समाज के सामने कहा करते थे छह करोड व्यक्ति, जिन्हें अछूत कहा जाता है वे हमारे भाई है।

जनसाधारण मे शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना अत्यावश्यक माना जाता है। और स्वामी श्रद्धानन्द का शारीरिक व्यक्तित्व भी बहुत अद्भुत था। स्वामी जी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था एव वह किसी भी प्रकार का कठिन से कठिन कार्य करने मे सक्षम थे।

मैं इन्ही शब्दो से उस महान नेता को, महान् स्वतन्त्रता सेनानी को, उस महान् शिक्षाशास्त्री को, उस महान् वकील को या सन्यासी को जो कुछ भी उन्हे कहा जाए मैं उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

केवल स्वामीजी को ही क्यो उनके बलिदान पर्व पर आइए हम स्वामीजी के साथ उन सबको भी श्रद्धाजलि अर्पित करे जो हमारे बीच मे नही हैं परन्तु जिन्होने थोडा बहुत भी देश की उन्नति मे हाथ बटाया है।

और अन्त मे मैं नमन करता हू उस वीर-सन्यासी श्रद्धानन्द को जो ब्रिटिश सिपाहियो की सगीनो के सामने दिल्ली के चादनी चौक मे सीना तान कर खडे हो गये, मै प्रणाम करता हू उस महान शिक्षा-शास्त्री को जिन्होने इस युग मे गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली का व्यावहारिक रूप दिया, जो आज भी नई शिक्षा नीति का आधार हो सकती है। मैं उनके महान् और उदार व्यक्तित्व के आगे बार-बार झुकता हू जिन्होने भेद बुद्धि और छुआछूत के विरुद्ध आवाज उठाई, अनैतिकता का नाश किया और सच्चरित्रता आस्था और विश्वास का हम सबको क्रियात्मक ज्ञान दिया और जिससे हमे सच्चे मानव के दर्शन हुए।

विराट् दिव्य कीर्ति
विद्या निकेतन, पिलानी (राज०)
द्वारा डा० प्रशान्त वेदालकार
७/२ रूपनगर, देहली-७

आर्यराज लाओ

रामचन्द्र आर्य, बडवा (भिवानी)

शराब छोड, यज्ञ कर प्रेम से, गौ सेवा अपनाओ।
तीनो कार्य कर दोबारा आर्यराज लाओ ॥ टेक ॥

१ सब बुराइयो की जड है शराब बरी बताई।
खाने को ना अन्न मिले धन की हो सफाई।
सरताज से मोहताज बनादे करदे लोग हँसाई।
कितने हुए बरबाद देखो देता इतिहास गवाही।
जीवनघातक जहर यह मत घर में लाओ।
तीनो कार्य कर . ..

२ यज्ञ बिना ना भला होता इस ससार का।
वायु शुद्ध होती है काम नही ख्वार का।
वेदो अन्दर वर्णन मिलता यज्ञ की महकार का।
यज्ञ बिना दुखी रहते यह मूल सब सार का।
भूले हुए पथिको को वेद मार्ग पर लाओ।
तीनो कार्य कर.... . .

३ सारे जग की माता है गऊ मीठा दूध पिलाती।
घृत अमृत खिला हम बल बुद्धि बढाती।
इसके बछडे का कमाया दुनिया सारी खाती।
कितनी है परोपकारक यह माता कहलाती।
रख गऊ कर सेवा इसकी घी दूध खाओ।
तीनो कार्य कर ... ...

४. होज्या ठेके बन्द जब ये पापाचार नहीं होंगे।
राम-कृष्ण हो पदा गऊ पर अन्याचार नहीं होंगे।
वेद मार्ग पर चल सारे बुरे विचार नहीं होंगे।
रामचन्द्र कह यज्ञ बडे कोई बिमार नहीं होंगे।
आर्यराज जब होगा वेदो को पढो पढाओ।
तीनो कार्य कर

आर्यसमाज चिड़िया (भिवानी) में वेद-प्रचार

आर्यसमाज चिडिया (भिवानी) मे २१-२२ दिसम्बर, १९८५ को वेद-प्रचार का कार्यक्रम बहुत समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्यजगत् के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी के वेदविषयक सारगर्भित व्याख्यान हुए तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प० सुमेरसिंह आर्य की मण्डली के द्वारा भजनो के माध्यम से प्रचार हुआ —जो यहा की जनता मे विशेष सराहनीय रहा। ब्रह्मचारी जी का युवकों पर विशेष प्रभाव रहा तथा युवक आर्यसमाज के सम्पर्क मे आए। इस आयोजन को सफल करने मे श्री महात्मा सन्तराम जी, श्री बनीसिंह जी एव श्री धूपसिंह जी का सहयोग प्रशसनीय रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को २००/- रु० आर्य-समाज चिडिया की ओर से दान दिए गए।

कर्मवीर शास्त्री
मत्री आर्यसमाज चिडिया (भिवानी)

आर्यसमाज खानपुर कलां जि० सोनीपत का चुनाव

१ प्रधान श्री धर्मभानु जी आर्य
२- उपप्रधान श्री होशियारसिंह भूतपूर्व सरपच
३- उपप्रधान श्री चतरसिंह भूतपूर्व सरपच
४- कोषाध्यक्ष श्री वैद्य धर्मपाल
५- मन्त्री श्री राजकुमार मलिक
६- उपमन्त्री श्री सूरजभान
७- उपमन्त्री श्री किताबसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतकसे प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 48 ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ १४८१२ ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ ‍ ८३,०८६



ओ३म् ‍ ‍ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री ‍ ‍ ‍ सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री ‍ ‍ ‍ सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ९ ‍ ‍ ‍ २१ जनवरी १९८६ ‍ ‍ ‍ वार्षिक शुल्क १५) ‍ ‍ ‍ विदेश मे ५ पौंड ‍ एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा रक्षावाहिनी के नेताओं का अबोहर फाजिल्का मे तूफानी भ्रमण

रोहतक १९ जनवरी (केदारसिंह आर्य द्वारा), हरयाणा रक्षा वाहिनी एव आर्य प्रतिनिधि हरयाणा के अध्यक्ष ने वाहिनी के सयोजक महाशय भरतसिह वानप्रस्थी एव प्रचारमन्त्री बा० रघुबीरसिह के साथ १४ जनवरी को पजाब के हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का के २५ ग्रामों का भ्रमण किया।

दयानन्दमठ रोहतक मे १२ जनवरी रविवार को हरयाणा रक्षा वाहिनी की कार्यकर्त्ता बैठक मे हुए निश्चयानुसार रक्षावाहिनी के नेताओ से अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्रो का भ्रमण करने का अनुरोध किया गया था, ताकि मैथ्यू आयोग के आदेशानुसार वहा मिनी जनगणना न्यायपूर्वक हो सके। अत १४ जनवरी को रोहतक से चलकर प्रो० शेरसिह जी अन्य अधिकारियो के साथ रात्रि को सिरसा पहुँचे। वहाँ रक्षावाहिनी के कार्यकर्त्ताओ के साथ विचार-विमर्श किया तथा कुछ देर विश्राम करके अबोहर के लिए प्रस्थान किया। पजाब सीमा के अन्दर जो हिन्दी भाषी ग्राम है, वहा के सरपचो तथा पचो से मिलकर उन्हे विश्वास दिलाया कि हरयाणा की सारी जनता आपके साथ है। पजाब की अकाली सरकार की धीगामस्ती का डटकर सामना कर तथा निर्भय होकर जनगणना मे अपनी मातृभाषा का अकिन करावे। ज्योहि इस क्षेत्र की जनता मे समाचार फैला कि हरयाणा के नेता पहुँच गए है, उत्साह का वातावरण बन गया। हरयाणा के इन नेताओ स उन ग्रामो के सरपचो ने भी भेंट की जिन ग्रामो मे यह मिनी जनगणना नही हो रही और इनसे अनुरोध किया कि हमे भी हरयाणा प्रदेश मे सम्मिलित किया जाये क्योकि पजाब सरकार उनके बच्चो को हिन्दी की पढाई के लिए सुविधा नही देती और उन पर पजाबी भाषा को बलात् लादा जा रहा है। अकाली कार्यकर्ता तथा उग्रवादी उन्हे प्रतिदिन धमकिया देकर सिख बनाने के लिए कहते रहते है। राज्य सरकार ने उनके लिए नौकरियों के द्वार बन्द कर दिए है। आर्यसमाज के प्रचारको को इस क्षेत्र मे आने पर आतंकित किया जा रहा है। अनेक सरपचो ने प्रो० शेरसिह को शिकायते की कि पुलिस अधिकारियो ने भी हमे चेतावनी दी है कि मिनी जनगणना मे यदि हिन्दी भाषा लिखवाई तो उन्हे कोई न कोई बहाना बनाकर जेलो मे बन्द कर दिया जाएगा। उग्रवादियो से उनकी रक्षा नही की जाएगी।

प्रो० शेरसिह ने उनकी शिकायते सुनकर तथा आतकवाद का दृश्य अपनी आखो से देखकर रात्रि को ही अबोहर से प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री को नई दिल्ली फोन किया तथा वर्तमान स्थिति से उन्हे अवगत कराते हुए कहा कि न्यायपूर्ण जनगणना पजाब पुलिस तथा उग्रवादियो के साये तले कैसे हो सकती है। अत केन्द्रीय पुलिस को तुरन्त भेजा जावे। आपने चण्डीगढ मे हरयाणा के मुख्य-मन्त्री से भी फोन पर सम्पर्क किया और उन्हे तुरन्त इस क्षेत्र मे पहुँचने का परामर्श दिया। बाद मे प्रो० शेरसिह को बताया गया कि हरयाणा के कई मन्त्रियो को अबोहर के क्षेत्र मे घुसने नही दिया और जनगणना कार्य मे अकाली दल के युवा कार्यकर्ता पजाब पुलिस के सहयोग से हिन्दी भाषी जनता पर दबाव डालकर उनकी भाषा पजाबी भाषा लिखवा रहे है। प्रो० साहब ने ३,४ दिन यहाँ का भ्रमण करके सारी स्थिति की जानकारी देने १७ जनवरी की रात्रि नई दिल्ली पहुँचे तथा भारत सरकार के उच्च अधिकारियो से सम्पर्क किया तथा उन्हे सावधान किया कि आतक के वातावरण मे कराई गई जन गणना को हरयाणा की जनता किसी भी मूल्य पर सहन नही करेगी। भारत सरकार निरन्तर अकालियो के दबाव के कारण झुककर उनकी अनुचित मागे स्वीकार कर रही है। हरयाणा की शान्तिप्रिय जनता को पारितोषिक देने के विपरीत उससे अन्याय तथा भेदभाव का व्यवहार किया जा रहा है। परन्तु अब हरयाणा जाग उठा है। प्रतिक्रिया होनी आवश्यक है।

केंद्र ने हरियाणा के हितों की बलि चढ़ा दी

नई दिल्ली, १८ जनवरी। हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मत्री प्रोफेसर शेरसिह ने आज यहा आरोप लगाया कि अकालियो को कद्दूखेडा व अबोहर फाजिल्का के अन्य गावो के निवासियो को परेशान करने व डराने धमकाने की खुली छूट देकर केन्द्र सरकार ने उनके (अकालियो के) आगे घुटने टेक दिये।

उन्होने कहा कि जब तक कद्दूखेडा मे पजाब व हरियाणा दोनो के मन्त्रियो व कर्मचारियो को नही निकाला जाता, वहा निष्पक्ष भाषायी जनगणना नही हो सकती। वे पजाब के विवादस्पद गावो का दौरा करने के बाद आज यहाँ पत्रकारो से बातचीत कर रहे थे।

प्रोफेसर सिह ने २० साल पहले पजाब-हरयाणा के विभाजन के समय काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। अब उनका कहना है कि केन्द्र ने हरयाणा के हितो की पूरी तरह बलि दे दी है।

उन्होने कहा कि यदि २६ जनवरी को हरयाणा को अबोहर-फाजिल्का के इलाके न दिए गये तो पजाब-समझौते का कोई अर्थ नही रह जाएगा। मैथ्यू आयोग ने स्पष्ट कर दिया है यदि चडीगढ के बदले हरयाणा को कोई इलाका दिया जाता है तो वह अबोहर-फाजिल्का मे ही होगा।

प्रोफेसर सिह ने कहा कि यदि कद्दूखेडा मे निष्पक्ष जनगणना नही होती, तो हरयाणा को चडीगढ के बदले पजाब के गाव कैसे मिल सकते है?

वार्ता के अनुसार प्रोफेसर शेरसिह ने कहा कि पजाब के कुछ स्थानो मे भाषायी जनगणना निष्पक्ष नही हुई है और इसके परिणाम हरयाणा के लोगो को मान्य नही होंगे। उन्होने कहा कि जिन ५४ गावो मे जनगणना हुई, उनमे पजाब पुलिस के २५ हजार से ज्यादा जवान तैनात थे। इनके अलावा पजाब के दो वरिष्ठ मत्रियो बलवन्त-सिह व अमरइन्द्रसिह ने भी सर्वाधिक विवादस्पद गाव कद्दूखेडा मे डेरा डाले रखा। इनके कारण इलाको मे आतक फैला हुआ है और जब तक ये यहा रहेंगे, जनगणना निष्पक्ष नही हो सकती।

उन्होने कहा कि एक तरफ तो प्रधानमत्री पजाब समझौते के पूरी तरह पालन की बात करते हैं पर दूसरी ओर सतलुज-यमुना लिक नहर बनाने के लिए पजाब सरकार को कुछ भी नही कहते।

प्रोफेसर शेरसिह ने कहा कि क्षेत्रीय समस्याए व जल विवाद-दोनो मामलो मे हरयाणा के साथ भेदभाव किया जा रहा है। (ट्रिब्यून से)

वैदिक यति मण्डल के लिये सुझाव

(विद्यानन्द देवकरणि, गुरुकुल भज्जर)

यद्यपि वैदिक यति मण्डल के वर्तमान कार्यकर्ता प्रधान महात्मा दयानन्द जी ने मुझे यह कहा था कि बिना प्रधान की आज्ञा के यति मण्डल के विषय में आप कुछ नहीं लिख सकते, पुनरपि विचार अभिव्यक्ति का स्वातन्त्र्य कोई रोक नहीं सकता इसलिये कुछ लिख रहा हूं।

१- दिसम्बर १८९० ई० में परोपकारिणी सभा अजमेर के कार्यकर्ता सभापति (वस्तुतः उप सभापति) श्री मूलराज जी० एम० ए० ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की इच्छानुसार आर्यसमाज का कार्य सुचारु रूप से चलते रहने की दृष्टि से सर्वसम्मति से एक सगठन की स्थापना की थी उसका नाम था 'वैदिक धर्मोपदेशक मण्डली।" उसके अधिकारी पाच थे। १ प्रधान २ उपप्रधान ३ मन्त्री ४ कोषाध्यक्ष और ५ वा पुस्तकाध्यक्ष। यह मण्डली परोपकारिणी सभा के अधीन कार्य करती थी। सन् १८९१ ई० में इसका संविधान वैदिक प्रेस अजमेर में प्रकाशित हुआ था। इसमें ७५ नियम थे। कुछ नियम उपयोगी जानकर वर्तमान वैदिक यतिमण्डल के लिये दिये जा रहे हैं। आशा है यतिमण्डल के अधिकारी लोग इनसे कुछ लाभान्वित होकर यतिमण्डल को और अधिक उपयोगी बना सकेंगे।

२- यदि यतिमण्डल के अधिकारीजन एक ऐसे योग्य व्यक्ति की नियुक्ति अभी से करदे जो वर्तमान यतिमण्डल का विस्तृत विवरण ब्यौरेवार लिखता रहे तो यह अतिमहत्त्वपूर्ण कार्य हो जायेगा। इसके पुराना होने पर अधिक विस्तृत होने पर अथवा किसी भी कारण से सगठन के छिन्न भिन्न हो जाने पर पुनः सामग्री एकत्र करके इतिहास की रचना करना अति दुष्कर होगा। इसलिये इस विषय की ओर अभी से लग जाना चाहिये।

पुरानी वैदिक धर्मोपदेशक मण्डली के ४८ नियम यहां प्रकाशित किये जा रहे हैं। २७ नियम जान बूझकर छोड दिये गये। क्योंकि वे नियम प्रायः सर्वसाधारण सभी सभाओं में इसी प्रकार के मिलते हैं। जो विशेष थे, वे ही यहां दिये गये हैं। मूल संख्या वही छापी गई है जो नियमावली में छपी है।

परोपकारिणी सभा की १८९० ई० की वार्षिकी कार्यवाही में १६ वें प्रस्ताव में उपदेशक मण्डली के नियम सुनाये और संशोधित किये जाने का उल्लेख है। उस समय केवल तीन उपदेशक ही उपस्थित हुये थे स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी और स्वामी आत्मानन्द जी। उस समय यह भी निश्चय हुआ कि ये नियम छापकर समस्त सन्यासी उपदेशक और आर्यसमाजों में भेजकर सम्मति मागी जाये और आगामी अधिवेशन में स्वीकृत होने के लिये ये नियम उपस्थित किये जायें

परोपकारिणी सभा के इस पचम अधिवेशन में ७४ विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे। इनमें सर्वश्री मूलराज एम० ए०, प० मोहनलाल विष्णुलाल पड्या, कविराज श्यामलदास, लाला हसराज, प० श्याम जी कृष्ण वर्मा, सेवकलाल कृष्णदास (बम्बई), स्वामी विश्वेश्वरानन्द, ब्रह्मचारी नित्यानन्द और स्वामी आत्मानन्द सरस्वती प्रभृति प्रमुख थे।

८ सितम्बर १८९१ के दिन परोपकारिणी सभा में प्रस्ताव स० १० अनुसार निश्चय किया गया कि—वैदिक धर्मोपदेशक मडली के नियम जो मास दिसम्बर १८९० ई० को सभा के सम्मुख प्रवेश किये गये थे, उसके लिये ६००) रुपये खर्च होने के लिये स्वीकृत किये जायें और वैदिक धर्मोपदेशक मडली नियत करने के लिये निम्नलिखित सभासदों की एक उपसभा भी नियत हो। १ श्री मूलराज जी एम० ए० २ राजा जयकृष्णदास सी० एस० आई० ३ लाला लालचन्द, ४ लाला हसराज ५ बाबू दुर्गाप्रसाद, ६ बाबू जगन्नाथप्रसाद, ७ प० हरबिलास बी० ए० ८ प० मोहनलाल पडया।

वैदिकधर्मोपदेशक मण्डली की समाप्ति

२८ दिसम्बर सन् १८९३ को प्रस्ताव स० ४ के अनुसार उपदेशक मडली को अनियमित घोषित कर दिया गया। और कहा गया— लाहौर में स्थापित की हुई उपदेशक मण्डली सम्बन्धी पत्र पढ़े गये। प० रामदुलारे वाजपेयी ने प्रस्ताव किया कि श्रीमती परोपकारिणी सभा के ८ सितम्बर १८९१ के अजमेर अधिवेशन का उपदेशक मण्डली सम्बन्धी दशम निश्चय बजाय तमदीक के रद्द किया जाये और ३०० रु० जो उपप्रधान परोपकारिणी सभा की आज्ञानुसार लाला लाजपतराय जी के पास भेजे गये हैं लौटा लिये जाये और उपप्रधान जी को सूचित किया जाये कि उक्त रुपया परोपकारिणी सभा को वापिस दे दिये जायें इस प्रस्ताव का अनुमोदन रामगोपाल जी बैरिस्टर ऐटला ने किया और सर्वसम्मत्यनुसार यह प्रस्ताव पारित हो गया।

यह भी निश्चित हुआ कि परोपकारिणी सभा शोक करती है कि उक्त उपदेशक मडली अनियमित नियत हुई और किसी प्रकार उचित समझने योग्य न बनी। हस्ताक्षर—श्याम जी कृष्ण वर्मा, हरविलास शारदा, मोहनलाल पड्या, रामदुलारे वाजपेयी, रामगोपाल मुकुन्दसिंह, रामचरण।

इस प्रकार यह अतिविशिष्ट मडली कागजों में ही बनी और कागजों में ही विलीन हो गई। यति मण्डल इसकी अपेक्षा कुछ प्रगति कर ही रहा है। इसकी प्रगति और तेज होनी चाहिये। उपदेशकों पर अभी पूरा नियन्त्रण नहीं हो पाया है। उन द्वारा किये कार्य भी अभी तक स्पष्ट नहीं दिखाई दिये है। पहले से चले आ रहे कार्यों का सेहरा यतिमडल के सिर नहीं बाधना चाहिये। देखना यह है कि अपनी स्थापना के बाद से यतिमण्डल ने देश का क्या कुछ दिया है। पुरानी सस्थाओं के अधिकारी यदि अब यति मडल के सदस्य बन गये हैं तो उन द्वारा की गई सेवाओं का श्रेय यति मण्डल को नहीं देना चाहिये। यति मडल की स्वयं की क्या-क्या गतिविधियां हैं, क्या उपलब्धियां हैं, यह ध्यान दिया जाये।

पुरानी वैदिक धर्मोपदेशक मडली के नियम आगे दिये जा रहे हैं।

वैदिकधर्मोपदेशक मण्डली के नियम

भूमिका

परमपदप्राप्त परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराजकृत स्वीकारपत्र में लिखे दूसरे उद्देश्य के पूर्ण करने के लिये उक्त स्वामी जी महाराज के स्थानापन्न श्रीपरोपकारिणी सभा ने विचार किया है कि वैदिकधर्मोपदेशक मण्डली स्थापन की जाय। अतएव उक्त सभा के उपसभापति जी ने उसके लिये एक नियमों की नियमावली बनाई है।

इन नियमों में उन्हीं सन्यासी महात्माओं का मण्डली में प्रविष्ट होना लिखा है जो घर बार और सब सांसारिक सुखों को त्याग के लोकोपकारार्थ ही अपना जीवन समर्पण कर चुके हैं और नानाविध कष्ट उठाके बिना वेतन के देशदेशान्तरों में भ्रमण करके अब भी वैदिक धर्म का उपदेश करते फिरते हैं।

यद्यपि वे लोग वही काम कर रहे हैं जिसके लिये कि यह उपदेशक मण्डली बनाई जाती है। परन्तु किसी प्रकार के नियम न होने से वे लोग ऐसे लाभकारी नहीं हैं जैसे कि यथार्थ में होने चाहिये क्योंकि स्पष्ट देखा जाता है कि कोई भारी काम कैसा ही उत्तम रीति और उत्तम पुरुषों से क्यों न किया जावे जब तक उसके लिये कोई नियम न हो तब तक ठीक नहीं उतरता है। अतएव आवश्यक है कि पूर्वोक्त उपदेशक भी इन नियमों के अनुसार इस मण्डली में प्रविष्ट हो के उपदेश करें जिसमें अधिक लाभकारी हो।

इन नियमों में उपदेशकों के लिये भिक्षा करके भोजन का प्रबन्ध लिखा है। उसका कारण यह है कि जब तक पुरुष मागे ना तब तक उसके हृदय से अभिमान नहीं निकलता है और उपदेशक को निरभिमान होना परम आवश्यक है। दूसरे उपदेश उसी पुरुष का गुणकारी और माननीय होता है जो सर्वथा निर्लोभ हो और भोजन तक के लिये भी किसी को बोझ न मालूम होता हो। और जो अच्छा खाने और अच्छा पहिरने को उपदेश करता है उस का उपदेश श्रोता गणों पर क्या गुण करेगा इसीलिये भिक्षा माग के खाना और सर्वथा निर्लोभ होना लिखा है। और इतिहास भी यह सिद्ध करता है क्योंकि बौद्धों के मत के ससार भर में इतना जल्दी फैल जाने का क्या कारण था यही कि उस धर्म

के उपदेष्टा लोग परमनिर्लोभ निर्मान और भीख माग के खाते थे और उपदेश करते थे। यहा तक कि स्वय बुद्धदेव जो बडे राज्य के स्वामी थे भीख माग के खाते थे और उपदेश करते थे इसलिये आशा है कि हमारे उपदेशक लोग भी बुद्धदेव का अनुकरण करके इन नियमो को स्वीकार करके स्वामी जी महाराज के इस उद्देश्य को सत्य चित्त से पूर्ण करेगे।

१ श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के स्वीकार-पत्र मे लिखे दूसरे उद्देश्य के पूर्ण करने के लिये श्रीमती परोपकारिणी सभा एक उपदेशक मण्डली स्थापन करेगी जिस का नाम वैदिक धर्मोपदेशक मण्डली होगा।

२ इन नियमो मे जहा कही "मण्डली" शब्द आवे वहा इसी वैदिक-धर्मोपदेशक मण्डली का अभिप्राय समझना चाहिये।

३ इस मण्डली मे प्रविष्ट होने के लिये नीचे लिखी रीति से मण्डली के मन्त्री के पास निवेदन-पत्र देना चाहिये परन्तु निवेदन पत्र वही महाशय दे सकेगे जिनकी आयु २५ साल से अधिक हो और सब सदाचारो से युक्त हो —

निवेदन-पत्र का आदर्श —

४ मै प्रसन्नतापूर्वक इस मण्डली मे प्रविष्ट होना चाहता हू और प्रतिज्ञा करता हू कि सदा सदाचार से रहूगा और सदा आर्यसमाज के नियमो और सिद्धान्तो के अनुकूल आचरण और व्यवहार रखूगा और मण्डली के नियमो के भी अनुकूल आचरण करूगा।

(१) नाम
(२) पहिला इतिहास
(३) आयु
(४) विद्या
(५) जन्मस्थान

५ मण्डली का मन्त्री उस निवेदन-पत्र को मण्डली की अन्तरङ्ग सभा मे पेश करेगा और सभा यदि उचित समझेगी तो उस निवेदन-पत्र को स्वीकार करेगी। नही तो अस्वीकार करेगी।

६ निवेदन-पत्र के स्वीकार व अस्वीकार होने से पहिले मण्डली का मन्त्री निवेदन करने वाले का मण्डली की पाठशाला मे पढने और शहर मे भिक्षा माग के लाने की आज्ञा दे सकेगा।

७ जो लोग इस मण्डली मे प्रविष्ट होगे वे उपदेशक, कहलावेगे।

८ जो उपदेशक आर्यसमाज के नियमो और सिद्धान्तो तथा मण्डली के नियमो के विरुद्ध आचार व्यवहार वा उपदेश करेगा वह मण्डली से निकाल दिया जायेगा।

१९ अन्तरगसभा उपदेशको के पढाने के लिये एक पाठशाला नियत करेगी। उसमे या तो कोई विद्वान् उपदेशक ही पढावेगे वा कोई विद्वान् पण्डित पढाने के लिये नियत किये जाएगे।

२०. इस पाठशाला मे चारो वेद उपवेद वेदो के अग और उपाग सभी पढायें जायेंगे।

२१ अन्तरगसभा यह निश्चित करेगी कि कौन उपदेशक कितनी देर तक पढे और कब उपदेश करने के योग्य समझा जावे। वा वर्ष में कितने समय पढे और कितनी देर उपदेश करे और कहा पर उपदेशार्थ भेजा जाय।

अधिकारी

२२. अधिकारी पाच प्रकार के होगे। १ प्रधान २ उपप्रधान ३. मन्त्री ४. कोषाध्यक्ष ५ पुस्तकाध्यक्ष।

२३ यदि अन्तरङ्ग सभा में सभासद थोडे हों तो उपप्रधान नही भी नियत किया जा सकता है और कोषाध्यक्ष तथा पुस्तकाध्यक्ष एक ही पुरुष नियत किया जा सकता है।

२४ मन्त्री, कोषाध्यक्ष और पुस्तकाध्यक्ष वे पुरुष नियत कियेजायेंगे जो मण्डली के साधु न हों। उनको आर्यसमाज का आर्यसभासद् होना आवश्यक है और परोपकारिणी सभा उनको नियत करेगी।

३७, कोषाध्यक्ष—किसी को अन्तरङ्ग सभा की आज्ञा बिना रुपया नही देगा। वरन मन्त्री और प्रधान को भी उस प्रमाण से जितना कि अन्तरङ्ग सभा ने उनके लिये नियत किया है अधिक नही देगा।

४१ सब उपदेशक जो अजमेर मे रहेगे वह अन्तरङ्ग सभा की आज्ञानुसार भिक्षा करके भोजन का प्रबन्ध करगे और यदि भिक्षा से कमी रहेगी तो मण्डली के कोष से पूर्ण की जायेगी। और यदि बढेगा तो मण्डली के कोष मे दाखिल किया जायेगा।

४२ प्रत्येक उपदेशक को मण्डली के कोष मे दो धोती, दो कुडते वा मिर्जई, दो साफे दो चादर दो जोडी कपीन, चार अगोछे, दो जूते, एक जोडी खडाऊ और एक गर्म मिर्जई प्रतिवर्ष, और एक लोई और एक कम्बल प्रतितीसरे वर्ष मिला करेगा।

४३ प्रत्येक उपदेशक को वहा पर अवश्य जाना होगा जहा कि उसे अन्तरग सभा भेजे यदि किसी जगह न जाना चाहे तो ऐसा हेतु बतायेगा जिसे अन्तरङ्ग सभा पर्याप्त समझे।

४४ प्रत्येक उपदेशक को जो मण्डली की ओर से कही भेजा जायेगा उसे मण्डली वहा तक आने जाने का किराया देगी।

४५ प्रत्येक उपदेशक जब मण्डली की ओर से कही भेजा जायेगा तो मण्डली के कोष से उसे ५) पाच रु० नकद इस अभिप्राय से दिये जायगे कि यदि कही दैववशात् यात्रा के लिये आवश्यकता पड जाये तो काम आवे। (यह राशि सन् १८९० मे स्वीकृत की गई थी)

४६ जो समाज किसी उपदेशक को बुलायेगा वह उसको उस स्थान से नगर तक आने जाने का किराया देगा और जितने समय के लिये बुलावेगा उतने समय तक भोजन और स्थान आदि का प्रबन्ध करेगा।

४७ प्रत्येक उपदेशक जब कही भेजा जायेगा तो उसे आवश्यक पुस्तके पुस्तकालय से ले के दी जाएगी और लौट के आने पर फिर पुस्तकालय मे रख दी जाएगी।

४८ प्रत्येक उपदेशक की इस बात मे बडाई समझी जायेगी कि वह अन्य सभाओ के समान जहा तक हो सके भिक्षा से भोजन का प्रबन्ध करे।

४९ प्रत्येक उपदेशक अपने उपदेशो से समाजो को बल पहुचावेगा। वैदिक-धर्म फैलावेगा, नये समाज स्थापन करेगा, आर्यसमाज के नियमो और सिद्धान्तो पर पूर्ण रीति से आचरण करेगा औरो को करायेगा और सब प्रकार के गूढ़ और प्रकट दोषो से बचेगा और दूसरो को बचायेगा।

५० समाजो और उपदेशक मण्डलियो के लाभ के लिये छोटी-छोटी पुस्तके बना के वा अनुवाद करके अन्तरङ्ग सभा की आज्ञानुसार प्रकाशित करेगा।

५१ अन्यमतावलम्बियो के अनुचित दोषारोपो से वैदिक-धर्म की रक्षा करेगा सदा मधुरवाणी को काम मे लावेगा। अन्यमतावलम्बियो पर अयोग्य दोषारोप नही करेगा। और आवश्यकता होने पर उनके दोषो को बडी सभ्यता से प्रकट करेगा।

५२ यदि किसी समाज मे बहुत देर तक ठहरना होवे तो अपने निवासस्थान मे नवयुवकों की धर्मशिक्षार्थ पाठशाला प्रचलित करेगा।

५३ कोई ऐसा काम वा वृत्ति नही स्वीकार करेगा जिससे उपदेशक के काम मे विघ्न पडे।

५४ प्रत्येक उपदेशक मे यह परमगुण गिने जायेगे कि वे योग्यता-सम्पन्न गम्भीरप्रकृति सरलवेश धर्मभीरु यमनियमो से सम्पन्न दयालु और मधुरभाषी हो।

५५ प्रत्येक उपदेशक अवैतनिक होगा अर्थात् उनको उपदेश करने के लिये कुछ मासिक नही मिलेगा।

५६ प्रत्येक उपदेशक अपने शरीर के लिये सिवाय भोजन, औषध (रोगशान्ति के लिये) और किराये के किसी समाज से कुछ नही लेगा। परन्तु मण्डली के लिये वा किसी और फण्ड के लिये जो मिले ले सकेगा।

५७ प्रत्येक उपदेशक अपने आय व्यय का हिसाब रखेगा और उसकी नकल प्रति पन्द्रह दिन पीछे यदि न हो सके तो प्रति मास अवश्य मण्डली के मन्त्री के पास भेजेगा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पंजाब और हरयाणा

किसके दावे मे कितना दम

—वेदप्रताप वैदिक

इस बार २६ जनवरी का दिन क्या? उत्तर भारत में हरयाणा का दिन होगा या तो उस दिन भारत के पश्चिमी सीमान्त पर शान्ति का सूर्य उगेगा या एक लम्बे विवाद का बिगुल बजेगा। अगर तनाव बढा तो अब वह सिर्फ दिल्ली और अमृतसर के बीच नही होगा, बल्कि उसका स्वरूप त्रिकोणात्मक होगा। एक तरफ पजाब और हरयाणा, दूसरी तरफ पजाब और केन्द्र तथा तीसरी तरफ हरयाणा और केन्द्र होगे।

पजाब के मुख्यमन्त्री सुरजीतसिह बरनाला ने कह दिया है कि २६ जनवरी को चण्डीगढ नही मिला तो वे इस्तीफा दे देगे। उधर हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल कह रहे हैं कि २६ जनवरी को चण्डीगढ दिया ही नही जा सकता। जब तक बदले मे फाजिल्का और अबोहर के गाव नही मिलते, जब तक १५ अगस्त १९८६ तक पूरी होने वाली सतलज-यमुना नहर पूरी नही हो जाती, चण्डीगढ पजाब को नही जाएगा।

केन्द्र सरकार असमजस मे है। राजीव गाँधी की विजय-पताका तूफान मे फँस गई है। अगर २६ जनवरी को चण्डीगढ की चाबी पजाब को नही सौपी गई तो राजीव लोगोवाल समझौता मुँह के बल आ गिरेगा। यही तो वह समझौता है, जिसके कारण राजीव का प्रधान मत्रित्व दिपदिपा रहा है और लोग कह रहे है कि राजीव दूसरे किस्म का अभिमन्यु है, जो जानता है कि चक्रव्यूह मे बाहर कैसे आया जाता है।

चक्रव्यूह से निकलने की कोशिश राजीव ने रणथम्भौर से लौटते ही शुरू कर दी थी। पजाब और हरयाणा के मुख्यमन्त्रियो को दिल्ली बुला कर समझाया-बुझाया गया। मैथ्यू आयोग के आदेश पर पजाब के ५४ गावो की भाषाई गणना हो गई। लेकिन अभी कहा नही जा सकता कि २६ जनवरी को क्या होगा? जो भी हो यह जानना दिलचस्प होगा कि देवीलाल तथा भजनलाल जिन मुद्दो पर लाल-पीले हो रहे है, वे कितने सही हैं?

पजाब के मुख्य मन्त्री बरनाला जब कहते हैं कि चण्डीगढ हर हालत मे २६ जनवरी को पजाब के पास आना चाहिए तो वे दाएँ-बाएँ बिल्कुल नही देखना चाहते। २६ जनवरी की बात वे राजीव लोगोवाल समझौते के आधार पर कर रहे हैं। इस समझौते की धारा ७(१) मे कहा गया है कि चण्डीगढ आगर २६ जनवरी को पजाब को दिया जाएगा याने उस पर से हरयाणा का सयुक्त अधिकार खत्म होगा। लेकिन अकाली नेतागण इसी धारा की २ और ३ नम्बर की उपधारा को बाचने की तकलीफ गवारा नही कर रहे।

इन दोनो उपधाराओ मे कहा गया है कि जिस दिन चण्डीगढ पजाब को जाएगा, उसी दिन पजाब के हिन्दी भाषी गाँव हरयाणा को आएगे। **ये हिन्दी भाषी गाँव कौन-कौन से होगे और कितने होंगे यह एक आयोग तय करेगा। वह अपना फैसला दिसम्बर १९८५ तक** सुना देगा। आयोग का फैसला दोनो राज्यो को मानना होगा। मैथ्यू आयोग ने अपना काम शुरू कर दिया था लेकिन ३१ दिसम्बर की तारीख निकल गई और वह अपना फैसला सुना नहीं पाया। अब उसकी मियाद २२ जनवरी तक बढा दी गई है।

श्री बरनाला से पूछा जा सकता है कि क्या आपके पास उन हिन्दी भाषी गावो की कोई सूची है, जो हरयाणा को दिए जाने चाहिए। **क्या आप हरयाणा को एक भी गाव नहीं देना चाहते और चण्डीगढ लेना चाहते हैं?** अगर हां, तो **क्या राजीव-लोगोवाल समझौते का उल्लघन नहीं है?** क्या इससे **पजाबी सूबे का बुनियादी आधार रद्द नहीं होता,** जिसके मुताबिक बँटवारे का आधार भाषा थी। हरयाणा को कुछ न देना चाहना और चडीगढ को हथियाने के लिए तलवार माँजना एकांगी निश्चय नही तो क्या है?

वैसे चडीगढ न पहले पजीबी भाषी था और न अब है। अब भी वहाँ के ज्यादातर निवासी हिन्दी भाषी हैं। पजाब सीमा आयोग ने अपनी रपट मे बताया था कि १९६६ मे चडीगढ के ७३.३ प्रतिशत लोग हिन्दी भाषी थे और सिर्फ २५.१ पजाबी भाषी। १९७१ मे चडीगढ के ५५.९६ प्रतिशत लोग हिन्दी भाषी थे और केवल ४०.६७ प्रतिशत पजाबी भाषी।

१९६६ मे पजाब सीमा आयोग की सिफारिश थी कि खरड की तहसील और चडीगढ का इलाका दोनो ही पजाब के पास नही रह सकते, क्योकि दोनो मे हिन्दी भाषियो की बहुसख्या थी। लेकिन खरड तहसील हरयाणा मे से काट कर पजाब को दे दी गई ताकि पजाब मान जाए कि चडीगढ, पजाब और हरयाणा दोनो के पास रहे।

लेकिन वह नही माना। चडीगढ पर पूरा कब्जा पजाब का हो, इस सवाल पर आन्दोलन चलते रहे। **सन्त फतेहसिह ने दो बार आत्मदाह की धमकी दी। स्वतत्र पार्टी के नेता दर्शनसिह फेरूमन ने तो अनशन करके अपने प्राण ही त्याग दिए। दोनों मुख्यमन्त्रियो की कई बैठको के बावजूद समझौते के जब कोई आसार नजर नही आए तो** पजाब के अनुरोध पर १९७० में श्रीमती इदिरा गाँधी ने फैसला दिया कि चण्डीगढ पजाब को दे दिया जाए, लेकिन बदले में अबोहर-फाजिल्का के १०५ गाव हरयाणा को दिए जाए। साथ ही फाजिल्का और अबोहर, ये दो कस्बे भी दिए जाए। क्योकि हिन्दी भाषी इलाको और हरयाणा की सीमा एक-दूसरे से सीधी नही जुडती इसलिए दोनो को मिलाने के लिए यह निश्चय भी हुआ कि कदूखेडा नामक गाव में से एक फलाँग चौडी और आठ कि मी लम्बी एक पट्टी हरयाणा को दे दी जाए ताकि उसे अपने ही गावो मे जाने के लिए राजस्थान का मोहताज न होना पडे।

यह कदूखेडा गाव हिन्दीभाषी था और ऐसा गाव था, जो पजाब की फाजिल्का और हरयाणा की सिरसा तहसील के बीच जोड का एकमात्र माध्यम था। लेकिन १९५९ मे उसे सिरसा तहसील से निकाल कर मुक्तसर तहसील मे डाल दिया गया ताकि अगर भविष्य मे कभी भाषाई आधार पर पजाब बटे तो फाजिल्का हिन्दीभाषी होते हुए भी पजाब मे ही रह जाए। इस युक्ति ने आगे जाकर अपना करतब दिखाया। जब पजाब और हरयाणा बटे तो फाजिल्का वाकई पजाब के पास रह गया क्योकि उसे हरियाणा मे जोडने वाले कदूखेडा पर पजाब का कब्जा था। इसी को ठीक करने के लिए ही इदिरा-फैसले ने कदूखेडा में से एक फर्लांग चौडी और आठ किलोमीटर लम्बी पट्टी हरयाणा को देने की बात कही।

इदिरा-फैसले का १९७० मे पजाब सरकार ने स्वागत किया और सारे पजाब मे दीवालियाँ मन गई। सन्त फतेहसिह ने आत्मदाह का इरादा बदल दिया। मुख्यमत्री गुरनामसिह गर्व से फूले नही समाए। उन्हे चडीगढ मिलने वाला था और सुखना झील का वह इलाका भी, जो हमेशा हरयाणा का हिस्सा माना जाता था। हरियाणा को गम था कि लगभग ४०० गावो मे से सिर्फ १०५ ही उसे मिलने वाले हैं। मुख्यमत्री बसीलाल ने अन्य कई गावो पर अपना लिखित दावा भी पेश किया। हरयाणा में जनाक्रोश भडका। गोली चली। कई लोग मारे गए।

आज जबकि बरनाला चडीगढ लेने पर आमादा है तब वे इन १०५ गावो के बारे में चुप हैं। राजीव लोंगोवाल समझौते मे साफ-साफ शब्दो मे श्रीमती गाधी की इस राय का उल्लेख किया गया है कि चडीगड के बदले में वे हरयाणा को कुछ हिन्दी इलाके देना चाहती थीं। श्रीमती गाधी की राय का उल्लेख इस समझौते मे क्यों किया गया क्या इसीलिए नही कि १९७० के अवार्ड को दोनो पक्षो ने अब भी उपयोगी पाया था?

इसके बावजूद अब १०५ नही, सिर्फ ५४ गावो मे भाषायी गणना कराई जा रही है। शेष ५१ गावो में नही। इसका कारण कोई नही बता रहा। हरयाणा पजाब और केन्द्र तीनो चुप है। तीनो के कारण अलग-अलग है। लेकिन एक बात साफ है। सबको पता है कि शेष ५१ गावो का भाषायी नक्शा पिछले २५ साल मे बिल्कुल बदल चुका है। १९६१ को जनगणना के वक्त इन गावो मे लगभग ९० प्रतिशत लोग हिन्दीभाषी थे, लेकिन अब किसी में ४०, किसी में ३० और किसी में २० प्रतिशत रह गये हैं। शेष ५४ गावो में, जिनकी

भाषायी गणना आजकल चल रही है, अब भी उम्मीद है कि हिन्दी भाषी बहुतायत मे हैं। लेकिन बरनाला सरकार का कहना है कि उनमे भी कई गाव पजाबी भाषी है। फाजिल्का के इन गावो को पजाब किसी भी कीमत पर छोडना नही चाहता। इसे इस इलाके से ४३ करोड रु० साल की आमदनी है। १९६१ मे जिन गावो मे ९५ प्रतिशत हिन्दीभाषी थे, उनमे १९८१ मे ९५ प्रतिशत लोगो को पजाबी भाषी दिखाया गया है

पता नही, मैथ्यू आयोग की गणना इन आकडो को कैसे उलटेगी और नही उलटेगी तो क्या होगा ? जिस तरीके से और जिस माहौल मे भाषायी गणना हुई है, क्या उसके नतीजे दोनो पक्षो को मान्य होगे ? क्या दोनो पक्ष पलडा अपने पक्ष मे झुकाने को आमादा नही हैं ?

भजनलाल कह चुके हैं कि अगर ये गाँव उन्हें नही मिले तो वे मैथ्यू आयोग के फैसले को नही मानेगे। और बरनाला कह रहे हैं कि ये गाँव अगर हिन्दीभाषी भी निकल आए तो भी हरयाणा को तभी मिलेगे, जबकि वे उसकी सीमा से लगे हुए हो। याने सारा मामला कन्दूखेडा पर आकर टिक गया है। कन्दूखेडा मानो बर्लिन बनता जा रहा है।

अगर कन्दूखेडा हिन्दीभाषी नही निकला और शेष ५३ गाव निकल आये तो भी वे हरियाणा को नही जा सकेगे, यह पजाब का तर्क है। इस तर्क का दारोमदार राजीव-लोगोवाल समझौते की वह धारा है, जो कहती है कि इलाको की अदला-बदली के आधार तीन होगे (१) भाषा (२) जुडाव और (३) गाँव को इकाई मानना।

राजीव-लोगोवाल समझौते मे इलाको की अदला-बदली का एक सिद्धान्त है—भाषायी बहुसख्या। क्या आज के चडीगढ मे पजाबी भाषी बहुसख्या मे है ? जाहिर है कि नही है। फिर भी चण्डीगढ पजाब को दिया ही जा रहा है। यदि जुडाव का सिद्धान्त इन ५३ गावो पर लागू होता है तो भाषायी बहुसख्या का सिद्धान्त चडीगढ पर लागू क्यो नही होगा ? ऐसी हालत मे क्या यह पूछना गलत है कि जब पजाब का सवाल खडा होता है तो एक सिद्धान्त का हनन क्यो कर दिया जाता है और जब हरयाणा का सवाल उठता है तो दूसरे सिद्धान्त मे से जरा सी रियायत भी क्यो नही दी जाती ?

५४ गावो की भाषायी-गणना का महत्त्व ही क्या रह जाएगा, अगर कन्दूखेडा पजाबीभाषी निकल आया ? यहाँ असली सवाल यह नही है कि कन्दूखेडा किसके पास रहे पजाब के या हरयाणा के ? बल्कि सवाल यह है कि पजाब और हरयाणा के बीच वह जोड-गाँव का काम करेगा या नही ? कन्दूखेडा की जमीन मे से एक 'हरियाणा-पट्टी' निकाली जाएगी या नही ? इसीलिये कन्दूखेडा की भाषायी जनगणना निरर्थक है। जो सार्थक और जरूरी चीज है, वह यह कि इस नाजुक मौके पर पजाब विवेक और उदारता का परिचय देता है या नही ?

१९६६ मे जब बँटवारा हुआ तो पजाब को क्या-क्या नही मिला ? ला काबूजिए की बनाई राजधानी मिली, रावी और ब्यास का प्रचुर पानी मिला, भाखडा नगल मिले, सोना उगलने वाली जमीन मिली और यह अधिकार मिला कि वह चाहे तो हरयाणा और राजस्थान की प्यास बुझाए और न चाहे तो विवाद खडे करे।

हरयाणा को क्या मिला ? एक राजधानी भी नही ! पानी का मोहताज वह हमेशा बना रहा। सतलुज-यमुना नहर अभी भी उसके लिए एक सपना है। जैसे दिसम्बर १९८३ खाली चला गया, वैसे ही १५ अगस्त १९८६ भी चला जाएगा। ऐसी हालत मे यानि २६ जनवरी को उक्त ५४ या ज्यादा गाव वाकई हरयाणा को मिल गए तो राजीव-लोगोवाल समझौता शायद क्षत-विक्षत होने से बच जाए। लेकिन ये गाँव अगर हरयाणा को नही मिले और चडीगढ पजाब को दे दिया गया तो कुरुक्षेत्र के इस इलाके मे एक नए महाभारत की शुरुआत हो जाएगी।

बिगुल भूतपूर्व मुख्यमत्री देवीलाल पहले ही बजा चुके है। हरियाणवियो की न्याय-यात्रा ने दिल्ली के कान खडे कर दिए हैं। खुद भजनलाल ने देवीलाल से बढकर बयान देने शुरु कर दिए हैं। **बनारसीदास गुप्ता और प्रो० शेरसिंह फिर से आग पड़े हैं। २३ जनवरी से फिर बड़ा अभियान चलने वाला है।**

उधर अगर बरनाला पर टोहरा और बादल दबाव डाल रहे है तो इधर भजनलाल की कुर्सी भी हिल रही है। अगर बरनाला के साथ न्याय नही हुआ तो उस [illegible] नही [illegible] बैठे, कुछ पता नही ? [illegible] दिखाना बहुत जरूरी है [illegible] कांग्रेस को जिन्दा रखने के लिए [illegible] इस समझौते को कायम रखने के लिये भी जरूरी है जो भारत की अक्षुण्णता का उद्घोष बनकर सामने आया है। इस २६ जनवरी को देश का ध्यान राजपथ की परेड पर नही चडीगढ की सडको पर होगा। (नवभारत १९-१-८६ से साभार)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जीन्द दिसम्बर १३-१४-१५ की तिथियो मे आर्यसमाज जीन्द शहर का ८७ वा वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से सोत्साह सम्पन्न हुआ। उत्सव के प्रारम्भ मे प्रथम दिवस १३ दिसम्बर को दोपहर दो बजे नगर के मुख्य मार्गो पर से एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे स्थानीय तीनो आर्यसमाज, स्त्री आर्यसमाज, आर्यवीरदल, वेदप्रचार मण्डल, आर्य प्राथमिक विद्यालय तथा महाशय हरगोविन्द आर्यकन्याउच्च विद्यालय जीन्द शामिल हुये। विशेष उल्लेखनीय है कि शोभा यात्रा मे कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) की छात्राओ द्वारा लाठी तलवार आदि चलाना ब्रह्मचारी रामस्वरूप (करनाल) का योग शक्ति के चमत्कार, लाठी आदि का प्रदर्शन बहुत ही प्रभावशाली रहा। नगर की जनता ने बडी रुचि और ध्यान मग्न होकर इन आर्य कन्याओ आर्यवीरो और आर्य युवक परिषद शामलो कला (जीन्द) के युवको का अपूर्व प्रदर्शन देखा। इस शोभा यात्रा ने आर्यसमाज के सगठन की और इस द्वारा किये गये सामाजिक कार्य को अमिट छाप दर्शको पर अकित की। तीन दिवसीय इस उत्सव मे प्रात यज्ञ होता रहा तथा तीन सभाये प्रतिदिन होती रही जिसमे आमन्त्रित विद्वानो के मधुर भजनो ने श्रोताओ को भाव विभोर किया। सर्दी के बावजूद बडी सख्या मे श्रोताओ ने उपदेश श्रवण किया। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य सत्यप्रिय जी एम ए हिसार, आचार्य सुदर्शनदेव जी सभाउपमन्त्री, आचार्यदेवव्रत जी कुरुक्षेत्र, प० जयप्रकाश जी (पूर्व इमाम) हिसार, प० सुरेशचन्द्र जी शास्त्री, उपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा वक्ता के रूप मे पधारे तथा श्री वीरेन्द्र जी वीर शामली उत्तर प्रदेश, बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल [illegible] प० चिरञ्जीलाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा प० चन्द्रभान जी जीन्द की भजन मण्डलिया शामिल हुई। आस-पास के गावो तथा आर्यसमाजो से आर्य नरनारी शोभा यात्रा तथा उत्सव मे शामिल हुये। उत्सव की समाप्ति १५ दिसम्बर को रात्रि प्रधान चौ० देवराज एडवोकेट द्वारा धन्यवाद तथा आभार प्रदर्शन करते हुये हुई। इस वर्ष के दौरान आर्यसमाज के पुराने भवन का जीर्णोद्वार, आर्यप्राथमिक विद्यालय का तथा आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन इस समाज की प्रमुख उपलब्धिया रही।

मकर सक्रान्ति के उपलक्ष मे आर्यवीर दल जींद द्वारा सभा

जीन्द जनवरी १४, १९८६। मकर सक्रान्ति के अवसर पर आर्य वीर दल जीन्द की ओर से आर्यसमाज मन्दिर रामनगर जीन्द मे एक पर्व-सभा का आयोजन साय ५ बजे से रात्रि ७-३० तक किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत यज्ञ से हुई जो कि खुले प्राग्ण मे बने यज्ञ कुण्ड मे सम्पन्न हुआ और प० विद्यासागर जी सुमन द्वारा करवाया गया। तत्पश्चात् महिलाओ ने गीत गाए और प० विद्यासागर जी ने मकर सक्रान्ति पर्व के असली स्वरूप पर प्रकाश डाला। प० चन्द्रभान जी ने अपने भजनो द्वारा पर्व के वैदिक रूप को स्पष्ट किया और आर्य वीरो को सगठित होकर कार्य करते रहने की प्रेरणा दी। सभा की अध्यक्षता नगर के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और 'शान्ति ब्रेड' के निर्माता तथा आर्यसमाज रामनगर के भूतपूर्व प्रधान श्री इन्द्रसिंह जी शास्त्री ने की। उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आर्यवीर दल के रचनात्मक कार्यो की सराहना की। प्रो० ओमप्रकाश आर्य ने आभार-प्रदर्शन तथा सुभाषचन्द्र आर्य मन्त्री ने मचसंचालन किया दलवीर आर्य ने ध्वजारोहण विधिपूर्वक करवाया। प्रसादवितरण किया गया।

भारतमाता का नेता सुभाष बोस को आह्वान

प्रेषक—निहालसिंह आर्य

विष्णपुरी से भारतमाता कलकत्ता मे आई।
दी कई बोल लिए आख खोल कर होश बोस बलदाई।
क्यो सोता है पडा भूल मे शेर जागना होगा,
प्यारा भारतवर्ष छोडकर दूर भागना होगा।
मागे से कभी राज मिले ना करनी पडेगी लडाई,
दी कई बोल लिए आख खोल ।१।

रणभूमि मे मेरे पुत्रो ने लाखो शीश कटाए,
आजादी की लडी लडाई जीवन भेट चढाए।
महाराणा प्रताप शिवा गोकुल गोबिन्द सहाई,
दी कई बोल लिए आख खोल ।२।

कपटी नीच फिरगी ने किए अत्याचार घनेरे,
देश धर्म का शोषण कर दिया पक्के दुष्ट लुटेरे।
युद्ध मे अमर हुए थे नाना टोप लक्ष्मीबाई।
दी कई बोल लिए आख खोल ।३।

गाधी ज्वाहर तिलक गोखले श्रद्धानन्द बलिहारी,
शेर लाजपत के शिर पर कई घातक लाठी मारी।
ऋषि दयानन्द ने दुष्टो के विष की घूट पचाई,
दी कई बोल लिए आख ।४।

राजेन्द्र अशफाक और बिस्मिल शेखर निडर हमारे,
राजगुरु सुखदेव भगतसिह ऊधमसिह भी मारे।
इन वीरो की कचन काया फासी पर लटकाई,
दी कई बोल लिए आख खोल ।५।

दुष्ट निर्दयी अग्रेजो ने भारी जुल्म गुजार दिए,
तेरे चाचा बोस बिहारी काले पानी उतार दिए।
जो जो भोगी घोर यातना जाती नही बनाई,
दी कई बोल लिए आख खोल । ।६।

बहुत पी लिए घूट जहर के जुल्मो की हद होली,
अग्रेजो की छाती पर बरसा दे गोले गोली।
बेईमानो को पीट पीट कर दे खूब तबाही,
दी कई बोल लिए आख खोल ··· ।७।

अमर रहेगा नाम जगत् मे स्वरूप दिखाया जाएगा,
सदा स्वतन्त्र भारत मे तेरा यश गाया जाएगा।
अपने हाथो लाल किले पर लहरा दे तिरगा भाई,
दी कई बोल लिए आख खोल ।८।

सूचना—कहते है इस गीत के निर्माता बरोणा वासी मेहरसिह अमर शहीद थे। यह मायने के दयाचन्द गाने थे। दो तीन पद्याश मैने भी जोड दिए है। (प्रेषक)

युवा दिवस पर मशाल जलूस

पलवल (वि०) गत दिवस युवा दिवस की पूर्व सध्या पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल के तत्वाबधान मे एक विशाल मशाल जुलूस पलवल के विभिन्न बाजारो एव मोहल्लो मे से आर्य वीर दल पलवल के सैकडो नौजवानो द्वारा निकाला गया। जुलूस का नेतृत्व आर्य वीर दल पलवल उपमण्डल के महासचिव श्री सजीव मगला 'मीनू' ने किया। जुलूस की समाप्ति पर एक विराट् युवक सम्मेलन युवको की विभिन्न समस्याओ पर हुआ जिसे आर्यसमाज के युवा नेताओ द्वारा सम्बोधित किया गया। ज्ञातव्य रहे कि स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती को सारे देश मे 'युवा दिवस' के रूप मे मनाया गया।

राजेशकुमार 'सागर'

आर्यसमाज बौल (कुरक्षेत्र) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—डा० ताराचन्द, उपप्रधान—श्री कपूरचन्द वर्मा एडवोकेट, उपप्रधान—सरदार किशनसिह रिटायर्ड एस एच ओ पुलिस, महा सचिव—एस० कृष्णन एम ए एल-एल बी, सह सचिव—श्री बलजीतसिह एम ए कोषाध्यक्ष- श्री रामसिह Acett, प्रचारक—श्री महावीरसिह, सरक्षक श्री खेमचन्द महाशय।

वैदिक यति मण्डल की बैठक

सब सदस्यो को विदित हो कि यति मण्डल की बैठक १, २, ३, फरवरी १९८६ को गुरुकुल आश्रम आमसेना मे हो रही है। अत सभी ३१-१-८६ को शाम तक वहा पहुचने की कृपा करे।

नई दिल्ली से गमन करने वाले निजामुद्दीन नई दिल्ली स्टेशन से छत्तीसगढ एक्सप्रेस पकडे यह गाडी निजामुद्दीन स्टेशन से प्रात ७।। बजे चलकर अगले दिन दोपहर बाद ३ बजे खरियार रोड पहुचेगी। अत. खरियार रोड स्टेशन का टिकिट लेवे। यही पर आमसेना गुरुकुल का मुद्रणालय है। वहा का सेवक मण्डल स्टेशन पर तैयार मिलेगा।

यह गाडी, मथुरा, आगरा रायपुर होती हुई जाती है। जो खरियार रोड पहुचेगी।

यदि किसी को अन्य गाडी सुविधा जनक हो तो उसे भी ग्रहण किया जा सकेगा।

सदस्य—वेदानन्द वेदवागीश

(पृष्ठ ६ का शेष)

५८ प्रत्येक उपदेशक का जो कुछ कही मिलेगा वह मण्डली का धन गिना जायेगा और उसे मण्डली क मन्त्री के पास भेजेगा।

५९ प्रत्यक उपदेशक को याग्य होगा कि मण्डलो के धन बढाने मे प्रयत्न कर।

६० प्रत्येक उपदेशक जो उपदेश के लिये बाहिर जायेगा वह एक दिनचर्या पुस्तक (डायरा) अपने साथ रखेगा और उसको नकल प्रति सप्ताह यदि नहा सके ता पन्द्रह दिन पीछे अवश्य ही मण्डली के मन्त्री के पास भेजेगा।

६१ प्रत्येक उपदेशक सिवाय वेदो उपवेदो और वेदो के अङ्गो और उपाङ्गो के सस्कृतभाषा आर्यसमाज के नियमो और सिद्धान्तो की वक्तृता क ढङ्ग शास्त्रार्थ करने की रीति को भी अच्छी तरह सीखेगा।

६२ किसी उपदेशक को याग्य नही होगा किसी राजनैतिक (पुलेटिकल) विषय पर वादानुवाद वा उपदेश करे। अथवा किसी ऐसी सभा वा सोसाइटी से सम्बन्ध रखे वा उसमे उपस्थित हो जिस मे राजनैतिक (पुलेटिकल) विषयो का आन्दोलन किया जाता हो।

६३ प्रत्येक उपदेशक को मण्डली की ओर से एक प्रशसा-पत्र दिया जायेगा जिस पर श्रीमती परोपकारिणी सभा के मन्त्री के हस्ताक्षर होगे।

६४ मण्डली की अन्तरङ्ग सभा किसी उपदेशक को प्रशसा-पत्र देने के पहिले कुछ काल तक परीक्षा के नीचे रख सकती है।

६५ मण्डली की अन्तरङ्ग सभा किसी कारण से किसी उपदेशक के प्रशसा-पत्र को खोस भी सकती है और उसकी सब समाजो को सूचना भी दे सकती है।

६६ उस प्रशसा-पत्र पर उपदेशको के कर्त्तव्याकर्त्तव्यादि सब विषय भी लिखे रहेगे।

६७ मण्डली की अन्तरङ्ग सभा यदि उचित समझे तो किसी उपदेशक का काम और योग्यता के अनुसार कोई पदवी दे सकती है वा किसी कारण से उस पदवी को खोस सकती है।

६८ अन्तरङ्ग सभा किसी उपदेशक को मुअत्तल भी कर सकती है।

६९ प्रति वर्ष सब उपदेशको की एक नामावली अन्तरङ्ग सभा की ओर से प्रकाशित की जाया करेगी।

७० श्रीमती परोपकारिणी सभा इन उपदेशको के रहने और पाठशाला आदि के लिये अपने स्थानो मे से एक स्थान देगी और उस स्थान को मण्डली उसी रीति से बरताव मे लायेगी जैसा कि श्रीमती परोपकारिणी सभा का मन्त्री लिखे और आज्ञा दे।

७१ श्रीमती परोपकारिणी सभा से धन, पुस्तक और पण्डितों से जहा तक हो सके इस मण्डली की सहायता की जायेगी इसका निश्चय श्रीमती परोपकारिणी सभा समय समय पर किया करेगी।

७२ श्रीमती परोपकारिणी सभा मण्डली की सख्या (अर्थात् कितने उपदेशक रहे वा पढे) नियत कर सकेगी और किसी उपदेशक को भी विशेष हेतु से मण्डली से बाहिर भी कर सकेगी।

७३ मण्डली का धन श्रीमती परोपकारिणी सभा का धन गिना जायेगा परन्तु मण्डली का धन केवल मण्डली के अर्थ व्यय किया जावेगा।

७४ श्रीमती परोपकारिणी सभा इन नियमो और मण्डली की अन्तरङ्ग सभा की बनाई व्यवस्था और उपनियमों को घटा बढ़ा सकेगी।

७५ श्रीमती परोपकारिणी सभा इन नियमों को आवश्यकता होने पर उचित विज्ञापन दे के बदल सकती है।

मेवात में आर्य धर्म प्रचारक डा० सुमन आनन्द के भाषण को बीच मे रोका गया

—एम के शर्मा

फिरोजपुर झिरका, 7 जन । (एम के शर्मा) फिरोजपुर झिरका से 16 कि मी दूर कस्बा नगीना मे पिछले दिनो आर्य धर्म का एक सम्मेलन हो रहा था। जिसके मुख्य प्रचारक डा० सुमन आनन्द थे। सम्मेलन मे कई आर्यसमाज प्रधानो ने भाग लिया।

जब डा० सुमन भाषण दे रहे थे, तो वह अपने आर्यधर्म को सभी धर्मों से श्रेष्ठ बता रहे थे। अक्सर धर्मप्रचारक ऐसा ही करते है चाहे वह किसी धर्म का हो, वह अपने धर्म को सभी धर्मों मे उच्चकोटि का बतायेगा।

ऐसा ही भाषण जब डा० सुमन दे रहे थे तो उस जलसे मे काफी सख्या मे मुसलमान युवक खड़े भाषण को सुन रहे थे। मुसलमान युवको को यह भाषण अच्छा नही लगा और उन्होने भाषण के बीच मे ही काफी शरारत की। जिसके कारण डा० सुमन का भाषण बीच मे ही लटक गया।

पता चला है कि डा सुमन का भाषण लोगो ने टेप भी कर लिया है।

सम्मेलन में शोर शराबा होने ही एस एच ओ नगीना ने तुरन्त ही शरारती तत्त्वो पर काबू पाया जिसके कारण झगडा ज्यादा नही बढ सका।

डा सुमन इस विषय पर उपायुक्त महोदय गुडगाव से भी मिले हैं। (भारत जननी से)

डा० सुदर्शनदेव आचार्य गोहाना मे

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य राजकीय महाविद्यालय नलवा जिला हिसार से स्थानान्तरित होकर राजकीय महाविद्यालय गोहाना जि० सोनीपत मे आ गये हैं। अत उनसे पत्रव्यवहार तथा सम्पर्क गोहाना तथा उनके निवास स्थान पर हरिसिह कालोनी सुनारिया मोड रोहतक अथवा सभा कार्यालय सिद्धान्तीभवन रोहतक के पते पर करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज अकालगढ जिला जीन्द का चुनाव

प्रधान-श्री अजीतसिह पूनिया, उपप्रधान-श्री रामभज, श्री उमेदसिह दलाल, मन्त्री श्री जोरासिह पूनिया, उपमन्त्री-श्री उमेदसिह सुपुत्र श्री रामचन्द्र, कोषाध्यक्ष-श्री सूरजमल सुपुत्र श्री साधुराम, पुस्तकाध्यक्ष श्री सूरजमल सुपुत्र श्री केदारसिह, प्रचार मन्त्री श्री लक्ष्मीचन्द।

गन्नौर शहर मे लोहडी पर्व

१२ जनवरी १९८६ दिनाक रविवार को वेदप्रचार सप्ताह की ओर से लोहडी का पर्व प्रधान रा० जयदेव जतोई वाला की अध्यक्षता मे शहीद भगतसिह चौक मे मनाया गया। जिसमे-हरीचन्द स्नेही ओमप्रकाश वर्मा, दिवान वेलाराम जी, मा० ओमप्रकाश दिवान जी ने स्वामी विवेकानन्द की जीवनी पर प्रकाश डाला। इसके बाद शान्ति पाठ किया गया। लाजू दी हट्टी के द्वारा रेवडियो का प्रसाद बाटा गया।

झाड़ौदा कलां में यज्ञ

ग्राम झाडौदा कला (दिल्ली) में ११ जनवरी से २० जनवरी तक "यजुर्वेद पारायण यज्ञ" बडे ही समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ मे प० धर्मदेव 'मनीषी' तथा ब्रह्मचारी चेतनदेव जी ने वेदपाठ किया तथा वेद-मन्त्रो की व्याख्या प्रस्तुत की।

आर्यजगत् के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी के वेद विषयक प्रवचन होते रहे—जिनका यहा की जनता पर विशेष प्रभाव रहा। इस कार्यक्रम के आयोजन मे भगत शीशराम जी, भगत रामधन जी तथा प० ताराचन्द जी का सहयोग प्रशसनीय रहा।

—मन्त्री, आर्यसमाज झाडौदाकला (दिल्ली)

सूचना

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से सुखदेव शास्त्री का भाषण। साय ७ बजे दिनाक २८ जनवरी ८६। विषय—पजाब केसरी लाजपतराय का स्वातन्त्र्य सग्राम में योगदान।

आर्यसमाज सुखराली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सुखराली गुडगावा को स्थापित हुए लगभग एक ही वर्ष हुआ था कि गाव के नवयुवको मे एक अपूर्व शक्ति का सचार हुआ और इस बार सर्दी दिनाक ९ व १० जनवरी को लगातार दो दिन तक पुरुषो, महिलाओ, युवक युवतियो का तात्कालिक समस्याओं की तरफ ध्यान आकृष्ट किया। नवयुवको मे कार्यकर्ता प्रमुख थे श्री सुरेन्द्र सिह ज्ञानसिह भगतसिह, पहलादसिह, बलजीतसिह जसवीरसिह अभय सिह राजवीरसिह आदि दर्जनो नवयुवक इस कार्यक्रम मे उत्साह से भाग ले रहे थे। महेन्द्र जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पूर्ण कार्यक्रम किया गया तथा दो दिन शास्त्री जी क्रान्तिकारी विचारो से नवयुवको को प्रभावित करते रहे तथा भविष्य मे कार्य करने के लिए नौजवानो का आह्वान भी किया। रवीन्द्रलाल बिस्मिल ने भी अपने मौलिक विचार लोगो व नवयुवको को बतलाये कार्यक्रम मे सभा की तरफ से श्री जयपाल जी की भजनमण्डली ने भी बहुत ही प्रभावोत्पादक विचार प्रस्तुत किये। सभा को ६०० रु० प्रदान किये गये। सुरेन्द्रसिह प्रधान

हरयाणा के दल मतभेद भुला दें

रोहतक १८ जनवरी (निस) आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने सभी राजनैतिक दलो को चेतावनी दी है कि इस समय हरयाणा एक ऐसे मोड पर खडा है जहा इसकी जिन्दगी और मौत का सवाल है। अब सभी राजनैतिक पार्टियो तथा सभी सामाजिक सगठनो को निजी स्वार्थों को छोड कर एक जुट होकर हरयाणा के साथ हो रहे अन्याय और जुल्म के विरुद्ध कमर कसकर सघर्ष करना होगा।

यदि हरयाणा के विपक्षी दल तथा कांग्रेस आदि परस्पर लडते रहे और हरयाणा के अधिकारो की रक्षा नही कर सके तो भावी पीढी हमें क्षमा नही करेगी।

स्वामी जी ने हरयाणावासियो से अनुरोध किया है कि अपने अधिकारो के लिए सगठित होकर सघर्ष करें।

०——०

विश्व शान्ति का दिव्य संदेश

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी
१८५७ अहाता ठाकुरदास, सरायरुहेला,
नई दिल्ली—५।

(गतांक से आगे)

२३ वैदिक युग और धर्मयुग, नवयुग के निर्माण पक्ष मे तन मन और धन अपने-सर्वस्व का दान देकर लगो।
विश्व के समस्त राष्ट्रो के राष्ट्रनायको को वेद का पावन संदेश देकर उनका जीवन वेदोक्त बनाने का आज जीवन समर मे बीडा उठाओ।

२४ भारत माता की स्वतन्त्रता और अखण्डता के लिये सर पर कफन बांधकर मौत को भी मार देने की प्रबल प्रतिज्ञा करके अरिदल पर बादल बनकर बिजली बनकर टूट पडो।

२५ विश्व में समता, स्नेह प्रेम की ज्ञान की गंगा बहाने के लिये गुरुकुलो की स्थापना करो। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही मानव दानवता को त्यागकर मानव और देव सज्ञा का अधिकारी बन सकेगा।

२६ राष्ट्रभाषा हिन्दी के विश्वव्यापी प्रबल प्रचार के लिए तथा भारत जननी की रक्षा के लिये अपना तन, मन और धन सर्वस्व निछावर करके जीवन संग्राम मे प्रतिपल आगे बढो।

२७ अखिल विश्व मे भारत राष्ट्र का झण्डा ऊँचा रहे इसके लिए विश्व के मानव समाज के पथप्रदर्शक हियहर्षक और मग्नदर्शक, आत्म तत्त्व दर्शक बनो।

२८ सोते हुए विश्व के मानव समाज को जागृत करने के लिए अपने आपको जागृत करो, घोर तप करो।

२९ वैर, विरोध, द्वेष के दावानल से बचने के लिए विश्व शांति का संदेशवाहक बनो।

३० कठिन कठिनाइयो से घिर जाने पर अथवा विकराल काल के आ जाने पर अपने आपको अजर अमर अक्षय समझकर एक क्षण के लिये भी अधीर मत होओ।

३१ तुम शक्तियो के पुंज हो, परमात्मा के अमृत पुत्र हो अत इस संसार मे निर्भय होकर विश्व के मानव समाज की सेवा मे अपने आपको समर्पित कर दो।

३२ वैदिक जीवन की आभा की प्रतिभा के पावन पराग को और अनुपम अलौकिक अकल्पनीय अनुराग को प्राप्त करो।

३३ जग को जगमग कर देने की क्षमता को प्राप्त करो। यह वेद भगवान् का उपदेश है।

३४ सदा प्रसन्न रहने का अपना सरल, सरस, सखिल, सौम्य स्वभाव बना लो।

३५ जीवन की पथ रेखा के सुमन सौम्य समीर और अमर अभय अद्‌भुत वीर धर्मवीर बनो।

३६ अपने रोम रोम मे प्रतिपल ऐसी मृदु मंगल झनकार, ताल, स्वर लय सरगम साकार और निराकार पैदा करो जिससे जग की आकुलता, घुटन, वेदनायें सभी समाप्त हो जायें।

३७ विश्व के नील गगन के तुम ध्रुव तारा बनो। रवि, शशि तारो के समान अपने जीवन में अतुलित प्रकाश को पैदा करके जग जीवन को वैदिक जीवन् का दान दो।

३८ भारतीय वैदिक सभ्यता की धन्य धरोहर, को संचित सजोए हुए तुम विश्व के मानव समाज के अग्रदूत धर्मदूत धर्मवीर महान् बनो।

३९ तुम अपने मन पर विजय प्राप्त करके विश्वविजय का अभियान करो।

४० आपदाओं के तूफानों की परवाह न करके डटे रहो कर्तव्य पर जब तक दम मे दम रहे।

४१ तुम सृष्टि के शृङ्गार और विश्व सिन्धु के पतवार बनो।

४२ मृत्यु से अब कह दो कि हम अजर अमर अक्षय अमृत आत्मा हैं हम अविनाशी परमात्मा के अमृत पुत्र हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 दयानन्दाब्द ... ४८१२ सृष्टि सवत् १,९६,०८५२,



ओ३म्

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क १० २८ जनवरी १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश मे ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

क्या अष्टादश पुराण वेदमूलक है ?

ले० डा० भवानीलाल भारतीय

भारतोदय के अगस्त १९८५ के अक मे श्री मनुदेव बन्धु लिखित 'पुराणाना वेदमूलकता' शीर्षक निबन्ध को पढकर खेद और आश्चर्य हुआ कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रचारार्थ स्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के वेद विभाग मे ऐसे प्राध्यापक भी है जो महर्षि के मन्तव्यो के विपरीत पुराणो की वेदमूलकता का प्रतिपादन करने मे ही अपनी शक्ति और श्रम को लगा रहे है। महर्षि तो अपने साहित्य मे सर्वत्र पुराणो को वेदविरुद्ध, अनार्ष तथा कपोल कल्पित होने के कारण मिथ्या घोषित करते है जबकि हमारे उपर्युक्त लेखक बन्धु 'इतिहासपुराणाभ्या वेद समुपबृहयेत' इस महाभारतोक्त वाक्य को उद्धृत कर इससे पुराणो का वेदार्थ मे सहायक मानते हैं। तथ्य तो यह है कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश मे पुराणो की आलोचना के प्रकरण मे उक्त वाक्य को पूर्व पक्ष मे रखा है और सिद्धान्त पक्ष की स्थापना करते हुए यह स्पष्ट किया है कि पुराण वेदार्थ मे सहायक नही अपितु बाधक ही हैं।

अच्छा तो यह होता है कि बन्धु जी पुराणो की वेदमूलकता को सिद्ध करने के लिए ठोस प्रमाण उपस्थित करते। हम उन्हे निम्न पुराण कथाओ की वेदमूलकता सिद्ध करने की चुनाती देते है—

१- भागवत मे वर्णित समुद्र मन्थन प्रसग मे मोहिनी अवतार की कथा।
२- कृष्ण और गोपियो की रास लीला।
३- ब्रह्म वैवर्तपुराण वर्णित राधा कृष्ण के अश्लील शृगार प्रसग।
४- शिव पुराणोक्त दारुवन की कथा।
५- मार्कण्डेय पुराणोक्त दुर्गा सप्तशती की कथाए।

क्या बन्धु जी वर्तमान प्रचलित अष्टादश पुराणो के अश्लील, युक्ति एव तर्कविरुद्ध, वेद की सदाचार मूलक शिक्षाओ के विरुद्ध, साम्प्रदायिक भावनाओ से परिपूर्ण सहस्रो प्रसगो को वेदमूलक सिद्ध कर सकते है? अथवा क्या वे भी पौराणिको की भाति उन अठारह पुराणो को महर्षि व्यास कृत मानते है जिनका पदे पदे खण्डन महर्षि ने सर्वत्र किया है और आर्यसमाज के मनस्वी विद्वानो ने जिनके खण्डन मे प्रचुर साहित्य का निर्माण किया है।

श्री मनुदेव के अनुसार पुराणो का मुख्य प्रयोजन वेद विहित तत्त्वो का जनसाधारण मे प्रचार करना है। सत्य तो यह है कि पुराणो ने जिन तत्त्वो का जन-सधारण मे प्रचार किया है वे है, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहु देवतावाद, मृतकश्राद्ध, तीर्थयात्रा से मुक्ति, मिथ्या व्रतोपवासादि से मोक्ष प्राप्ति आदि। ये सभी अवैदिक तत्त्व है। अत यह कहना सर्वथा सत्य का अपलाप करना है कि पुराण वेदप्रतिपादित तत्त्वो का ही प्रचार करते है। लेखक का यह कथन तो और भी आपत्तिजनक है कि पुराणो के द्वारा मनुष्य अपना जीवन सयमशील बना सकता है। वास्तविकता सर्वथा विपरीत है। पुराण वर्णित अश्लील कथाओ को पढकर मानवी चरित्र का पतन अवश्यम्भावी ही है। क्या ब्रह्मवैवर्तपुराण के राधा कृष्ण और कृष्ण-कुब्जा प्रसग को पढकर कोई भी व्यक्ति सयमी और चरित्रवान् बन सकता है? लेखक की इस मिथ्या गर्वोक्ति पर तो कोई टिप्पणी करना ही व्यर्थ है कि विश्व की किसी भी अन्य जाति के पास पुराणो जैसा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ नही है। वस्तुत पुराणो ने वेदार्थ का स्पष्टीकरण करने की अपेक्षा उसे और अधिक अस्त व्यस्त तथा वास्तविकता से दूर किया है। इसके लिये एक ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा। "इद विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पद समूढमस्य पासुरे' इस सूर्यविज्ञान प्रतिपादक वैज्ञानिक तथ्य निरूपक मन्त्र को विष्णु के अवतार वामन द्वारा ब्रह्माण्ड को तीन चरणो मे नाप लेने की कथा से जोडने को क्या वेदार्थ का स्पष्टीकरण कहा जाएगा?

पुराणो मे भारतीय इतिहास के कतिपय तथ्य भले ही घुणाक्षर न्याय से मिल जाये, पुराणोक्त भूगोल को तो सर्वथा कपोल कल्पित ही कहा जायगा। इसीलिए स्वामी दयानन्द ने पुराणकारो को भूगोल विद्या का शत्रु ही कहा है। लेखक के इस मिथ्या कथन पर तो कोई टिप्पणी करना ही अनावश्यक है कि वेदो के अनन्तर सर्वमान्य एव सर्वप्राचीन पुराण ही है। वेद के एक अध्यापक की लेखनी से लिखा गया उसका यह कथन सर्वथा अनर्गल तथा भ्रामक है। क्या वह यह नही जानता कि वेद के पश्चात् तो ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद वेदाग, उपवेद, उपाग आदि की गणना होती है न कि पुराणो की। आश्चर्य होता है कि एक आर्य गुरुकुल का वेदाध्यापक पुराणो को वेदो से भी ऊचा स्थान देने के लिये मत्स्यपुराण का निम्न श्लोक उद्धृत करता है—

पुराण सर्वशास्त्राणा प्रथम ब्रह्मणा स्मृतम।
अनन्तर च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गता॥

वेदो को पुराणो का पश्चात्वर्ती बताना तो घोडे के आगे गाडी को खडा करने के तुल्य है। यदि गुरुकुल के वेद प्राध्यापक ही पुराणो को वेदमूलक सिद्ध करने लगे तो काबे मे कुफ्र वाली कहावत सिद्ध होगी और पुन किसी राजकुमारी को कहना पडेगा—

को वेदानुद्धरिष्यति?

निवेदन

आर्यसमाज के प्रसिद्ध शोध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित निम्न दो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जो सर्वत्र प्रशसित हुए है विक्रयार्थ उपलब्ध है—

१ नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती। शोधपूर्ण जीवन चरित्र।

मूल्य ४० रु०

२ आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय

मूल्य २५ रु०

इस ग्रन्थ मे आर्यसमाज के नियमो का २५ भाषाओ मे अनुवाद भी दिया गया है। दोनो ग्रन्थ एक साथ मगाने पर डाक व्यय नही लिया जायेगा।

मगाने का पता—भुवन मोहन माथुर
जी० ३ सेक्टर १४ चण्डीगढ १६००१४

सम्पादकीय—

भारतीय इतिहासकारों की भयंकर भूलें

१—पानीपत की तीसरी लडाई जो कि अहमदशाह अब्दाली एव सदाशिवराव भाऊ के मध्य हुई थी। आज भी प्रायेण सभी भारतीय इतिहासकार यह मानते हैं कि मराठा सेना के प्रधान सेनापति सदाशिव राव भाऊ उस लडाई मे ही मारे गए थे परन्तु सच्चाई कुछ और ही है।

२—पानीपत के मैदान मे जब दोनो सेनायें आमने-सामने काफी दिनो तक डटी रही। अहमदशाह अब्दाली ने मराठा सेना के रसद पहुँचाने के सभी मार्गो को अवरुद्ध कर दिया तथा मराठा सेना खाद्य सामग्री के अभाव मे त्राहि-त्राहि करने लगी तब तीन दिन से भूखी मराठी सेना ने पहले आक्रमण किया तथा कुछ समय तक युद्ध पर हावी रही परन्तु जब सदाशिव भाऊ के छोटे भाई जिन्होने पेशवा बनना था गोली लगने मे मारे गये तथा मराठा सेना के रनिवास पर उन्ही की तरफ से एक मुसलमान सरदार ने आक्रमण कर दिया। हार को अवश्यभावी जानकर सदाशिव भाऊ घोडे पर सवार होकर येन केन प्रकारेण शत्रु की आखो मे धूल डालकर बच निकले तथा गोहाना आ पहुचे। गोहाना पहुचने पर उन्होने किसी पथिक से पूछा कि मुझे कोई ऐसा गाव अथवा धर्मात्मा व्यक्ति बतलाओ जो मुझे शरण दे सके। उस व्यक्ति ने बताया कि यहा (गोहाना) से कुछ दूर पर साघी गाव है जिसमे अच्छा गुजारा है आप वहा चले जायें। सदाशिव राव भाऊ साघी पहुच गए। गाव से बाहर कुये मे एक औरत पानी भर रही थी। उस औरत से भाऊ ने पूछा—"बेटी मुझे इस गाव के किसी धर्मात्मा व्यक्ति का नाम बताओ।" उस देवी ने उनके सैनिक वेश एव घोडे को देखकर अनायास कहा "यह घोडा तो भाऊ की लूट का लगता है।" भाऊ ने उसी समय घोडे को छोड दिया तथा गाव के एक नम्बरदार के घर चले गये जिसका नाम पानी भरने वाली औरत ने बताया था, तथा उनको सम्पूर्ण किस्सा सुनाया तथा अनेक वर्षो तक उनके घर मे रहे तथा अन्त मे उनका शरीर भी पूर्ण उसी गाव मे हुआ तथा आज भी उनकी समाधि गाव साघी मे बनी हुई है।

नरहरि विष्णु गाडगिल जब पजाब के गवर्नर थे, तब वे एक बार गुरुकुल भज्जर मे आए थे तब हमने यह सम्पूर्ण किस्सा सुनाया। प्रथम तो उनको विश्वास नही हुआ परन्तु जब उन्होने अपने आधार पर इसकी खोज करवाई तो सच्चाई सामने आई। फिर वे राजधानी चण्डीगढ से भाऊ की समाधि देखने आये तथा वहा पर अपने परिवार के कुछ बच्चो का मुण्डन भी कराया था तथा वहा भाऊ की याद मे एक विशाल Technology College खोलना चाहते थे परन्तु न जाने वह योजना पूरी क्यो नही हुई।

३—इन्दौर का राजा होल्कर भी एक बार चौथ उघाने के लिए इस गाव मे आया था तथा गाव वालो के चौथ देने से इन्कार करने पर होल्कर की सेना तथा साघी गाव के आसपास के किसानो के बीच अनेक दिनो तक युद्ध चला। होल्कर ने अपनी हार जानकर गाव के कुछ प्रमुख व्यक्तियो को समझौते के लिए बुलाया तथा धोखे से गिरफ्तार कर उन्हे कुए मे लटका दिया तथा चौथ देने के लिए बाध्य किया तब कुये मे लटके हुए किसानो ने कहा कि आपके ही आदमी (सदाशिवराव भाऊ) है जो चौथ देने नही देते, आप उनसे बातचीत कर लीजिए। होल्कर को यह सुनकर आश्चर्य हुआ तथा उन किसानो को तुरन्त छोडकर सदाशिव राव भाऊ से मिलने की इच्छा प्रकट की। उनकी एक चोपाल मे मुलाकात हुई तथा सदाशिव भाऊ ने होल्कर को बहुत धमकाया और कहा इन गरीब किसानो के पास देने को कुछ नही है। परन्तु होल्कर ने कहा कि मै राजा हूँ और राजा होते हुए मुझे गाव के साधारण किसान चौथ न दे यह मेरा अपमान है। सदाशिव राव भाऊ ने कहा अच्छा तो जो मै फैसला करूँ उसे मान लेना। सदाशिव भाऊ ने होल्कर को कुछ गाये दी जिन्हे वह जाते समय रास्ते मे ही छोड गया। इसी लडाई मे "आसोदा" गाव का एक बनिया भी भाग लेने आया हुआ था। उसने होल्कर को सलाह दी कि यहाँ से कुछ ही दूर पर 'कलानौर' मैं मुसलमानो की छोटी सी रियासत है उसे लूट लो। होल्कर को वहा तक छोड आया तथा उस रियासत को होल्कर ने जी भर लूटा।

भारतीय इतिहासकारो विशेषतया मराठा इतिहासकारो ने यह जानने की कभी कोशिश नही की मराठा सेना के प्रधान सेनापति एव महान् योद्धा सदाशिव राव भाऊ का क्या हुआ। यह हम सभी भारतीयो के लिये बडी ही लज्जा की बात है। यज्ञवीर

रोहतक में रास्ता रोको अभियान सम्पन्न

आज २३ जनवरी को हरयाणा बन्द के अवसर पर हरयाणा-रक्षावाहिनी के प्रचारमन्त्री बाबू रघुवीरसिंह जी के निर्देशन तथा सभा महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री के नेतृत्व मे सुखपुरा चौक रोहतक पर रास्ता रोको धरना दिया गया। प्रात ६ बजे सुखपुरा चौक पर श्री वेदव्रत शास्त्री की अध्यक्षता मे यज्ञ किया गया, जिसमे हरयाणा सभा के प्रसिद्ध उपदेशक श्री मुन्शीराम जी, श्री तेजपाल जी की भजन मण्डली के ओजस्वी भजन जो कि युवको के अन्दर नवजीवन प्रदान कर रहे थे, समीपस्थ व्यक्ति मे भी नवचेतना प्राप्त कर रहे थे। सभा कार्यालय के कार्यकर्त्ता श्री सीसराम गणक, श्री वीरेन्द्र-सिंह जी पुस्तकाध्यक्ष, श्री टीकाराम सहायक, श्री अर्जुनदेवजी, वानप्रस्थ श्री मनोहरलाल जी श्री केसरदास आर्य मन्त्री आर्यसमाज बडा बाजार रोहतक भी उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त हरयाणा हितो की रक्षा हेतु व्याख्यान तथा भजन भी हुए, साथ ही महिलाओं का जत्था ओ३म् के झण्डे हाथ मे लेकर श्रीमती सुवीरादेवी के नेतृत्व मे सुखपुरा चौक पर उपस्थित था चौक पर दर्शको ने विचारो को ध्यानपूर्वक सुना। हरयाणा राज्य परिवहन की एक भी बस अड्डे से बाहर नही निकली एव नगर मे कोई भी वाहन नही चला, चाय तक की दुकान भी नही खोली गई तथा शहर मे शत-प्रतिशत दुकाने बन्द रही। व्यापार ठप्प हुआ। इतना तक कि लोगो ने साईकल तक भी न चला कर रास्ता रोको अभियान में पूरा योगदान दिया। उपरोक्त प्रकार का एक यज्ञ हरयाणा रक्षावाहिनी के तत्वावधान मे प्रचारमन्त्री जी की अध्यक्षता मे सोनीपत रोड पर प्रात ५॥ पर बजे से ७॥ बजे तक सम्पन्न हुआ। नगर के मुख्य बस स्टैण्ड के पास भी हरयाणा सघर्ष समिति की ओर एक यज्ञ प्रात ५॥ बजे से ही प्रारम्भ हुआ। इसका कार्यक्रम निरन्तर एक घण्टे तक चलता रहा। बाद मे एक विशाल जलूस जनसमूह के रूप मे शहर के मुख्य बाजारो से होता हुआ रास्ता रोको अभियान के लिए सक्रिय कार्यकर्ताओ द्वारा नगर निवासियो की भावना को जोडता हुआ आगे बढा। इस जलूस की समाप्ति पर लोगो ने हरयाणा के हितो की रक्षा हेतु दृढ सकल्प लिया।

—केसरदास आर्य

२६ जनवरी गणतन्त्र-दिवस पर—

आर्यवीरों का मंगल गान-राष्ट्र का उत्थान

(निहालसिंह आर्य)

आर्य वीरो मगल गान करो हे वीरो।
निज राष्ट्र का उत्थान करो हे वीरो॥

हमने जन्म इसी मे पाया, इसका अन्न घृत फल खाया।
भारत मा का सम्मान करो मेरे वीरो ! आर्य वीरो॥१

यहा के ऋषि वेदाचारी, श्री राम कृष्ण बलधारी।
इस धरती का गुण गान करो हे वीरो ! आर्य वीरो॥२

जब मा पर सकट आए, बच्चा-बच्चा शीश कटाए।
सब तन मन धन बलिदान करो मेरे वीरो ! आर्य वीरो॥३

ऋषिवर ने वेद पढाया, सोया भारत फेर जगाया।
स्वामी दयानन्द का आह्वान करो वीरो ! आर्य वीरो॥४

नित्य सन्ध्या यज्ञ रचाओ, प्रीति बल ओज बढाओ।
ईश भक्ति अमृतपान करो मेरे वीरो ! आर्य वीरो॥५

गोमाता के प्राण बचाना, घी दूध मलाई खाना।
हल खेती से धनवान करो मेरे वीरो ! आर्य वीरो॥६

श्री चन्द्र बोस बलदायी, होंगे रण बीच सहाई।
श्रद्धानन्द पटेल ऐलान करो हे वीरो ! आर्य वीरो॥७

छब्बीस जनवरी आई, सन्देश पचायती लाई।
वैदिक गणतन्त्र विधान करो हे वीरो ! आर्य वीरो॥८

वेद की ज्योति जलती रहे

१३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक ब्रह्मचारी आर्यनरेश जी वैदिक प्रवक्ता ने उद्गीथ साधना स्थली ट्रस्ट के वेद प्रचार वाहन से बरनाला, अबोहर, लुधियाना, जालन्धर मुकेरिया, पठानकोट, हिमाचल के नूरपुर, जसूर, राजा का तलाब, रहन, मोहदपुर व हटारिया, शिमला, अमृतसर आदि स्थानो पर आर्यसमाजो, गीता भवन, कालेज, स्कूल तथा अनेको परिवारो मे कर्मकल, सात्विक भोजन, ईश्वर, जीव-प्रकृति, पुरुषार्थ, देशभक्ति ब्रह्मचर्य पालन व यज्ञ के महत्त्व पर प्रवचन हुए। इस यात्रा मे टकारा प्रचारक विद्यालय के सुयोग्य स्नातक श्री प० हरिश्चन्द्र जी भजनोपदेशक भी उनके साथ रहे।

आर्य अनिल
उद्गीथ भवन, चण्डीगढ

वार्षिक उत्सव

आर्य आदर्श विद्यालय के तृतीय वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता श्री मगतराम सिघल अध्यक्ष निर्माण समिति दिल्ली नगर निगम ने की। श्री महेन्द्रसिह महानगर पार्षद तथा श्री प्रशान्त वेदालकार ने बच्चो को आशीर्वाद दिया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री कुलानन्द भारतीय कार्यकारी पार्षद, शिक्षा ने बच्चो को पुरस्कृत किया। बच्चो के सांस्कृतिक कार्यक्रमो की प्रशसा करते हुए आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह के सयोजक श्री महावीर बत्रा ने सबका स्वागत किया।

पुष्पलता मेन्दीरत्ता
प्रधानाचार्या
आर्य आदर्श विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली-३३

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-काश्मीर का चुनाव

प्रधान—डा योगेन्द्रकुमार, उपप्रधान—श्री जयदेव, श्री कृष्णलाल, कार्यालयाध्यक्ष श्री मोहनलाल मोतियाल, श्रीमती रामप्यारी, श्री बालकृष्ण जी, महामन्त्री—श्री राजेन्द्रकुमार, सगठनमन्त्री तथा निरीक्षक—प० हरिश्चन्द्र, उपमन्त्री श्री लाहोरीमल, देवेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज सेठी, अन्तरग सदस्य—श्री सूर्यदेव वेद प्रचार अधिष्ठाता, सुदेशकुमार—पुस्तकाध्यक्ष, शम्भुनाथ तुली, कृष्णलाल गाधीनगर (अ० स०) ला० हरनामदास, डा० वेदकुमारी, गोपाल भिक्षु, नेत्रपाल शास्त्री, भारतभूषण, विद्याभानु शास्त्री, श्रीमती प्रेम सहगल कमलादेवी, शातिदेवी, श्री कुलदीप।

उपसभा श्रीनगर—

प्रधान—श्री सत्यदेव सेठी, मन्त्री—श्री विक्रमकुमार, वेदप्रचार अधिष्ठाता—श्री नेत्रपाल शास्त्री। सदस्य—श्री योगेन्द्र मदन, श्री त्रिलोकीनाथ मटटू, श्री महेशनाथ टिक्कू, श्री लालचन्द, डा० महेशकुमार शर्मा।

विद्यार्य सभा—

प्रस्तोता—श्री विद्याभानु शास्त्री, मन्त्री प० हरिश्चन्द्र शास्त्री।

चौ० बदलूराम का निधन

साघी ग्राम मे जन्मे ७३ वर्षीय स्वतन्त्रता सेनानी चौ० बदलूराम जी आर्य का निधन २४ जनवरी १९८६ को प्रात काल ७-३० बजे उनके रोहतक स्थित निवास स्थान पर हृदयगति रुक जाने से हो गया। वे "रास्ता रोको" आन्दोलन की गिरफ्तारी से कल रात ही रिहा हुए थे। उनके एक पुत्र और पाच पुत्रिया है।

चौ० बदलूराम जी सयुक्त पजाब मे निरन्तर १५ वर्ष तक विधायक रहे थे और वर्तमान मे लोकदल तथा हरयाणा रक्षा-वाहिनी के माध्यम से सेवा कर रहे थे। ईश्वर दिवगत आत्मा को सद्गति एव शोक सन्तप्त परिवार, बन्धु बान्धवो को धैर्य प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्यसमाज घरौंडा (करनाल)

प्रधान—श्री रामतीर्थ जी। उपप्रधान—श्री देवराज भाटिया जी।
मन्त्री—सुभाषचन्द आर्य उपमन्त्री—श्री सत्यपाल आर्य जी।
कोषाध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द जी। पुस्तकाध्यक्ष—श्री दयानन्द जी।

दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र की प्रबन्ध समिति का चुनाव

आर्य शिक्षा समिति, कुरुक्षेत्र ने निम्नलिखित महानुभावो को अपने अधिवेशन मे ३ वर्ष की अवधि के लिए सर्वसम्मति से पदाधिकारी चुना है। चुनाव सर्वसम्मति से ४-१-८६ को सम्पन्न हुआ।

प्रधान—डा० ओमप्रकाश ललित, उपप्रधान—श्री अमरसिंह, महामन्त्री—चौ० रणसिह, कोषाध्यक्ष—श्री रामकृष्ण सेठी।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज जीन्द शहर को एक योग्य विद्वान् पुरोहित की तुरन्त आवश्यकता है। समाज की ओर से मुफ्त सर्व सुविधाओं से युक्त सुन्दर आवास। पुरोहित सस्कार आदि कराने तथा प्रवचन देने मे पूर्ण दक्ष हो। सगीतकार (हारमोनियम पर गाना आदि) तथा गृहस्थी को प्राथमिकता दी जाएगी। शीघ्र मिले या पत्रव्यवहार करे। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा।

कृष्णदेव शास्त्री
मन्त्री, आर्यसमाज जींद शहर

चौ० बदलूराम जी का अन्तिम संस्कार

हरयाणा के पटेल चौ० बदलूराम जी पूर्व विधायक का अन्तिम सस्कार २६ जनवरी ८६ को वैदिक रीति के अनुसार माडल टाउन की शमशान भूमि मे किया गया गया। इस अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह, उपप्रधान म० भरतसिह वानप्रस्थ, मन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री तथा हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रचारमन्त्री बा० रघुवीरसिह एव लोकदल हरयाणा के प्रधान चौ० देवीलाल पूर्वसासद्, डा स्वरूपसिह आदि हरयाणा के प्रमुख नेता उपस्थित थे। सस्कार सभा के उपदेशक प० मुखदेव शास्त्री, प० अर्जुनदेव सिद्धान्त शास्त्री ने करवाया। उनके इकलौते सुपुत्र डा० सुदर्शन कुमार जो अमेरिका मे रहते है ने चिता मे अग्नि दी। इस अवसर पर एक शोक सभा मे नेताओ ने उन द्वारा किये गये सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक कार्यो की सराहना की तथा उन्हे हरयाणा का पटेल बताया गया।

५ फरवरी ८६ को प्रात ११ बजे उनके निवास स्थान माडल टाउन रोहतक म शान्ति यज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन किया गया है। केदारसिह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसभा के प्रचारक म० प्यारेलाल का निधन

हरयाणा के पुराने प्रचारक महाशय प्यारेलाल जी ग्राम भापडोदा जि० रोहतक का दिनाक २६ जनवरी ८६ को सायकाल रोहतक मे निधन हो गया। आपकी ८२ वर्ष की आयु थी। कुछ दिनो से आप बीमार थे और अपने सुपुत्र के निवास स्थान पर रोहतक रहते थे।

आप गुरुकुल झज्जर के कई वर्षो तक प्रधान रहे तथा बचपन से ही आर्यसमाज तथा गुरुकुलो का प्रचारकार्य करते रहे। आपने चौ० छोटूराम के साथ भी रहकर किसानो मे जागृति तथा सुधार करने के लिए प्रचार किया। आपकी ऊँची सुरीली आवाज मे आकर्षण था। आपके मधुरगीत सुनने के लिए जनता लालायित रहती थी। हिन्दी रक्षा गोरक्षा तथा शराब बन्दी आन्दोलनो मे भी आपने बढचढकर भाग लिया। २७ जनवरी को उनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति से रोहतक मे सम्पन्न की गई।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

ऋषि सन्देश

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। हम प्रार्थना करते है कि—

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृत गमयेति।

अर्थ—हे परमगुरु परमात्मन्! आप हमको मार्ग से पृथक् कर सन्मार्ग मे प्राप्त कीजिये। अन्धकार को मिटाकर ज्योति को प्राप्त कीजिए, और मृत्यु रोग से पृथक् करके मोक्ष के आनन्द को प्राप्त कीजिये।

परन्तु उपनिषत्कार ऋषि लिखते है कि जब यजमान यह कहता है, असतो मा सद् गमय तो वास्तव मे वह कहता है मृत्योर्मा अमृत गमयेति और जब यजमान कहता है तमसो मा ज्योतिर्गमय तब भी उसका भाव यही होता है कि मृत्योर्मा अमृत गमयेति। तीसरी पंक्ति तो स्पष्ट है ही कि मृत्योर्मा अमृत गमयेति।

क्योंकि मनुष्य अविद्या के कारण ही असत् के मार्ग पर चलता है, और अन्धकार मे पड़ा रहता है, और मृत्यु के चक्कर मे छुटकारा नही पा सकता।

अविद्या से अस्मिता, अस्मिता से राग, राग से द्वेष और द्वेष से अभिनिवेश क्लेश पैदा होते है और यह क्लेश ही जन्म मरण आदि रूप दुख का कारण है।

ससार के लोग अविद्या मे फसे हुए, सासारिक भोगो मे पडे हुए अपने को धीर और पडित माने फिरते हैं। टेढे रास्तो से इधर उधर भटकते हुए ये मूढ ऐसे जा रहे हैं जैसे अन्धा अन्धे को रास्ता दिखा रहा हो।

जो बड़ा होकर भी बुद्धि का बच्चा ही है धन के मोह से जो दूसरी बात सोच ही नही सकता, ऐसे प्रमादी को शौच, सतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान तथा अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह—यम, नियम पसन्द नही आते। वह यह जान बैठा है कि यही लोक है परलोक नही है। ऐसा व्यक्ति बार बार मृत्यु के चगुल मे फसता है, बार-बार पैदा होता है। बहुतो को तो यह सुनने को भी नहीं मिलता, बहुत से लोग इसे सुनते है, पर फिर भी कुछ जान नही पाते उसके कहने वाला कोई विरला है, उसको पाने वाला कोई कुशल गुरु के उपदेश से कोई विरला ही उसे जान पाता है।

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ-साथ जानता है वह अविद्या अर्थात कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है।

अविद्या के लक्षण—

जो अनित्य ससार और देहादि मे नित्य, अर्थात् जो कार्य जगत् देखा सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योग बल से यही देवो का शरीर सदा रहता है, वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है।

अशुचि—अर्थात् मलमय स्त्र्यादि के और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र मे पवित्र बुद्धि।

दूसरा—

अत्यन्त विषयसेवनरूप दुख मे सुखबुद्धि आदि।

तीसरा—

अनात्मा मे आत्मा बुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है, यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहाती है।

इससे विपरीत अर्थात् अनित्य मे अनित्य, और नित्य मे नित्य, अपवित्र मे अपवित्र और पवित्र मे पवित्र, दुख मे दुख, सुख मे सुख, अनात्मा मे अनात्मा, और आत्मा म आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। अर्थात् जिससे पदार्थो का यथार्थ स्वरूप का बोध होवे वह विद्या, और जिससे तत्त्वस्वरूप न जान पडे अन्य मे अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है। अर्थात कर्म और उपासना अविद्या इसलिए है कि यह बाह्य और अन्तर क्रियाविशेष नाम है, ज्ञानविशेष नही।

इसी से कहा है कि विना शुद्ध कर्म के और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुख से पार कोई नही हो सकता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्र उपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति, और अपवित्र मिथ्या भाषणादि कर्म से पाषाण मूर्त्यादि की उपासना और मिथ्या ज्ञान से बन्ध होता है। कोई भी मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नही होता।

इसलिए धर्मयुक्त सत्यभाषणादि कर्म करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड देना ही मुक्ति का साधन है। अस्तु।

इसीलिए ऋषिवर ने आर्यसमाज के दस नियमो मे एक यह भी रखा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

क्योंकि हम सब वैदिकधर्मी मोक्ष की कामना करते है। इसलिए सब मनुष्यो को परमात्मा से प्रार्थना के साथ-साथ स्वय भी प्रयत्न करते रहना चाहिए।

सन्देशवाहक—
देशराज खीरवाट
२९०, इन्दिरा कालोनी, रोहतक

शहीद स्मृति समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र द्वारा निर्मित शहीद गिरधारीलाल स्मारक समिति के तत्वावधान मे ८ जनवरी १९८६ को हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल जी की अध्यक्षता मे शहीद गिरधारीलाल की स्मृति मे फतेहपुर पूण्डरी मे एक विशाल जनसभा हुई जिसमे मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर सुखजीतसिह जी महाराजा कपूरथला ने शहीदो को श्रद्धाजलि देते हुए उपस्थित भारी जनसमूह को देश की एकता व अखण्डता के लिए कार्य करने की प्रेरणा की। आर्यसमाज फतेहपुर के मत्री तथा समिति के सयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने अभिनन्दन पढते हुए सरकार से शहीद स्मारक बनाने की माग की। समिति के महामत्री और ग्राम सरपच चौ० अमरसिह ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए ५१ हजार की थैली भेट की जिसे महाराजा जी ने शहीद स्मारक हेतु प्रदान किया। इसमे चौ० भजनलाल जी ने ५१ हजार और स्मारक हेतु देने की घोषणा की। समारोह के सयोजक चौ० ईश्वरसिह विधायक की माग पर फतेहपुर मे शहीद गिरधर की याद मे आदर्श विद्यालय और स्मारक की माग मानते हुए चौ० भजनलाल ने शहीदो को श्रद्धाजलि देते हुए एकजुट होकर देशरक्षा का आह्वान किया।

चौ० भजनलाल ने अपने विस्तृत भाषण मे शहीद गिरधर की कहानी सुनाकर लोगो को भावुक कर दिया। शहीद गिरधर की याद मे आर्यसमाज फतेहपुर ने सर्वप्रथम पुस्तकालय का निर्माण किया है।

नमस्ते ही क्यों

"ले० स्व० प० जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती"

'नमस्ते' शब्द संस्कृत भाषा का है। इसमें दो पद हैं—नमः + ते। इसका अर्थ है आपका मान करता हूं। संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार नमः पद अव्यय है। इसके रूप में कोई विकार=परिवर्तन नहीं होता लिङ्ग और विभक्ति का इस पद पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। इसी कारण इसको अव्यय=विकार रहित कहा जाता है। नमः पद के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यहां नमस्ते शब्द में भी 'ते' पद चतुर्थी का एक वचन है जिसके लिए मान दिया जाए उसमें एकवचन, द्विवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग होने पर भी नमः पद में कुछ परिवर्तन नहीं होता, जैसे ते+नमः —एकवचन युवाभ्यां+नमः द्विवचन, विद्वद्भ्यः +नमः —बहुवचन। तीनों स्थानों में नमः एक जैसा ही रहा।

आदर सूचक शब्दों में 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग ही उचित तथा उत्तम है। क्योंकि दो सज्जनों के परस्पर मिलने पर एक दूसरे के सम्मानार्थ भाव को 'नमस्ते' ही सूचित करता है। राम-राम जयगोपाल, जयराम, जयकृष्ण, जयशंकर दण्डवत्, पालागन, गुडमार्निंग, गुडनाइट, आदावअर्ज आदि शब्दों में वह भाव प्रदर्शित नहीं होता जो 'नमस्ते' में होता। वह सभी शब्द साम्प्रदायिक भावना के द्योतक हैं।

'नमः' शब्द से पालन-पोषण अन्न, जल वाणी और दण्ड अर्थों का भी ग्रहण होता है। ये सभी अर्थ नमः शब्द के कहे जाते हैं। इन अर्थों में नमः शब्द का प्रयोग वेदादि सत्य शास्त्रों में पाया जाता है। सब शास्त्रों में ईश्वरोक्त होने से वेद ही परम प्रमाण है।

परमेश्वर के लिए—दिव्य देव नमस्ते अस्तु (अथर्व २-२-१) हे प्रकाशस्वरूप देव प्रभो! आपको नमस्ते हो।

बड़े के लिए—नमस्ते राजन्। अथर्व १-१०-२) हे राष्ट्रपते! आपको हम नमस्ते करते हैं।

देवी (स्त्री) के लिए—नमोऽस्तु देवि (अथर्व १-१३-४) हे देवि! माननीया महनीया माता आदि देवी! तेरे लिए नमस्ते हो। स्त्री पुरुष को—पितृभ्यश्च नमस्कुरु (अथर्व १४-२-२०, विवाह संस्कार के समय वधू को उपदेश दिया जाता है कि— देवि माता-पिता, सास श्वसुर आदि पितरों के लिए नमस्ते कर। चोरों के लिए—तस्कराणां पतये नमः (ऋ० १६-२१) चोरों के रक्षक को नमस्ते अर्थात् दण्ड देकर चोरों को शासित किया जाए। बैलों के लिए—नमो वृषभाय (यजु १-५१-१५) बैल को चारा आदि से पुष्ट किया जाए। वृक्षेभ्य (यजु १६-१७) वृक्षों के के लिए नमस्ते अर्थात् जलादि सींचकर फलों की प्राप्ति की जाये। विस्तार भय से कुछ प्रमाण दिये।

महर्षि दयानन्द का प्रमाण

सत्कारे कर्त्तव्ये 'नमस्ते' इति वाक्योच्चारणेन कनिष्ठज्येष्ठा ज्येष्ठै कनिष्ठा क्षत्रियाद्यैर्ब्राह्मणा ब्राह्मणाद्यैः क्षत्रियाश्च सत्कर्त्तव्या। यजुर्वेदभाष्ये भावार्थ। अर्थात् छोटो को बडो के लिए, ब्राह्मण को क्षत्रियादि के लिए, क्षत्रिय को ब्राह्मण के लिए सत्कार के समय 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

अतः समझदार सज्जनों का कर्त्तव्य है कि अन्य साम्प्रदायिक मिथ्या शब्दों को त्यागकर केवल 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग सम्मान के लिए किया करें।

"चलता हुआ एक्स-रे"

आजकल विश्व के वैज्ञानिक मानव जीवन को बचाने के लिए अनथक प्रयास में लगे हुए हैं। वे दिन प्रतिदिन नए नए आविष्कार कर रहे हैं। पहले एक्स-रे द्वारा मानव शरीर के भीतरी भाग का अध्ययन किया जाता था अब भी करते हैं परन्तु अब एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया है जिसने मानव शरीर की भीतरी क्रियाओं को साकार रूप दे दिया है। मानव उन्हें अपनी आंखों से गतिशील रूप में स्पष्टता से देख सकता है। इसी प्रकार की एक मशीन है जिसके द्वारा 'पराबैंगनी' किरणें निकलती हैं। मानव को उसके सामने खड़ा करके उसमें से किरणें निकाली जाती हैं। फिर पर्दे पर मानव का एक-एक अंग गतिशील अवस्था में स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। मांसपेशियों की क्रिया, दवाई की गोली का अन्दर जाना व किस प्रकार से खून में मिलना, खून में विद्यमान लाल व श्वेत कण का कार्य यह सब मशीन बड़े स्पष्ट रूप से दर्शाती है वैज्ञानिकों ने इसे "चलती-फिरती एक्स-रे रिपोर्ट" नाम की संज्ञा दी है।

संजय मारवाड़ी 198, प्रेमनगर, हिसार।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सिन्ध पर हमला करने के बाद मीर कासिम ने बड़े भारी जुल्म सितम हिन्दुओं पर किए, परन्तु उस समय तो हिन्दू मुसलमान बन गए। परन्तु धीरे धीरे कुछ लोग तो मुसलमान रहे और कुछ हिन्दू बन गए। इस प्रकार दास राज्य से अलाउद्दीन खिलजी मोहम्मद तुगलक, अब्राहिम लोधी से लेकर औरंगजेब के बाद तक इसी प्रकार हिन्दुओं पर जुल्म होते रहे। बल से हिन्दुओं को मुसलमान जबरदस्ती बना दिया गया। इसमें कुछ हिन्दू व कुछ मुसलमान होते रहे। इसके इलावा अंग्रेजों के जमाने में हिन्दुओं के विरुद्ध बड़े भारी जुल्म होते रहे। हिन्दू मुसलमान बनते रहे और ... आम होती रही। बल्कि जगह तो मुसलमानों का बहुत जोर था जहां पर हिन्दुओं का जीना मुश्किल था। खरबूजा चाकू पर पड़े या चाकू खरबूजे पर कटना हमेशा खरबूजे को पड़ता है। इसमें साफ जाहिर है कि इस प्रकार वे अपनी संख्या तो बढ़ा सके, परन्तु हिन्दुओं को समाप्त नहीं कर सके।

—श्री जयदेव गोयल, देव भूमि पुस्तकालय, जीन्द।

जब आर्यराज होगा

लेखक—रामचन्द्र आर्य, बड़वा (भिवानी)

हो सत्य विद्या का प्रचार, उठे यज्ञ की महकार।
हों सबके उत्तम विचार, जब आर्यराज होगा॥
ईश्वर पर विश्वास करेंगे ना फलित की आश करेंगे।
पाखण्ड का पर्दाफाश करेंगे, ना कोई दगाबाज होगा॥ १

ब्रह्मचारी बन शिक्षा पावे, फिर गृहस्थ को अपनावे।
वानप्रस्थ संन्यास में जावे देश धर्म का काज होगा॥ २
दूध दही का खाना होगा, आर्यों का गाना होगा।
मिलकर देश बचाना होगा एकता का साज होगा॥ ३

मदिरा से हो छुटकारा, मांस भक्षण से हो किनारा।
आर्यावर्त देश जो प्यारा कभी ना मोहताज होगा॥ ४
गोपालन को अपनावें, वेद पढ़े और पढ़ावें।
कभी ना पत्थर पूजन जावें पूर्वजों पर नाज होगा। ५

दयानन्द के हो अनुयायी, देश भरे ना तबाही।
रामचन्द्र करता कविताई, बजता रह साज होगा॥ ६

पुस्तक-समीक्षा

आर्योद्देश्यरत्नमाला—महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित पुस्तक नेपाली भाषा मे अनूदित हुआ है। पुण्य प्रसाद उप्रति नाम व्यक्ति ने हिन्दी से नेपाली मे रूपान्तर किया है। उप्रति जी विद्यावाचस्पति और संस्कृत एम ए हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री, वैदिक साहित्य प्रकाशन विभाग शिवगंज, जिला–झापा (नेपाल) और आर्यसमाज देवास (म० प्र०) के सहयोग से हुआ है। सुरुचि मुद्रणालय १८१/१, यान्त्रिक सङ्घटन भवन महाराणा प्रताप नगर, भोपाल— (म० प्र०) मे पुस्तक मुद्रित हुआ है। पुस्तक के प्राप्तिस्थान तीन है (१) श्री मनोरथ उप्रति, लाल पानी–शिवगंज, गा० प० वार्ड नं० ५, झापा (नेपाल) (२) श्रीमती गगादेवी पाठक, बुधबारे गा० प० वार्ड ५, झापा (नेपाल) और (३) आर्यसमाज सिलीगुडी, जिला दार्जिलिङ्ग (प० ब०)।

पुस्तक मूल्य ७५ पैसे। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठय पर आर्यसमाज के १० नियमो का अनुवाद भी नेपाली भाषा मे दिया गया है।

पुस्तक आर्यों के १०० उद्दश्यो की परिभाषा करता है। पुस्तक का आकार ३०×२०—१६ मे है। सुन्दर श्वेत कागज पर सुन्दर छपाई है। इस पुस्तक को वदिक यति मण्डल के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी दयानन्द, मठ, दीनागर गुरुदासपुर (पजाब) का आशीर्वाद प्राप्त है। ब्रह्मचारी नन्दकिशोर एम० ए० विद्यावाचस्पति-उपाचार्य वेदमन्दिर, गीता आश्रम, ज्वालापुर (हरद्वार) तथा वेद-प्रचारक-पीताम्बर शर्मा, विद्यावाचस्पति एम० ए०, इन दोनों महानुभावो ने अपनी पूर्ण विद्या और शक्ति से पुस्तक का सम्पादन किया है।

इस प्रकार सभी दृष्टियो से पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक के सभी आयोजको को इस परिश्रम, दान आदि के लिए भूरिश धन्यवाद है।

नेपाल मे राणाओ के शासनकाल मे सिकन्द्राबाद गुरुकुल के स्नातक शुक्रराज शास्त्री को प्राणो से वियुक्त किया गया था। वर्तमान शासन ने शुक्रराज शास्त्री का मरणोपरान्त सत्कार किया, जिसके फलस्वरूप आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिये भूमि प्रदान की गई और शुक्रराज शास्त्री की प्रतिमा भी स्थापित की गई। आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार का मार्ग नेपाल मे खुल गया है। इस नेपाली भाषा मे छपे पुस्तक से प्रचार की सम्भावनाए और अधिक बढ गई हैं।

नेपाल विश्वभर मे एक-मात्र हिन्दू राष्ट्र है किन्तु शासक, पडित और समस्त प्रजा घोर पौराणिक है। इन म प्रायश मासभक्षक हैं। आयसमाज का साहित्य यदि वहा उनकी भाषा म उन्हे पढने को मिले, तो बहुत कुछ नेपाल की काया पलट सकता है।

दूसरा नेपाली भाषा मे अनूदित है–वैदिक नित्य कम विधि, जिसमे सध्या हवन का निरूपण मन्त्र-सहित है। आकार-प्रकार, सम्पादक, अनुवादक वही हैं। इनके प्रचार म आयसमाज, मल्हार गज, इन्दौर (म० प्र०) ने सहयोग किया है। मूल्य ३ रुपये है।

तीसरा पुस्तक नेपाली भाषा मे अनूदित है—सत्यसनातन वैदिक-धर्म प्रश्नोत्तरी, जिसके लेखक प० धर्मदेव सिद्धान्तालकार विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड है, इसका मूल्य २-५० रुपये है। इसके प्रकाशन मे आर्यसमाज एच ई एल भोपाल का सहयोग मिला है। इन तीनो ही पुस्तको के लिये आयसमाज चिचोली (बैतूल) के प्रधान श्री राजेन्द्र गदरेल एव सदस्यो तथा आयसमाज पिम्परी (पूना) के प्रधान कृष्णचन्द्र एव सदस्यो और आर्यसमाज अकोला (महाराष्ट्र) से भी रुपया दान मे मिला है। नेपाल को भारत से और अधिक जोडने मे यह उपक्रम सार्थक प्रमाणित होगा। इस सब के लिये सर्वहितकारी परिवार की बधाई है।

—वेदानन्द वेदवागीश

(पृष्ठ ७ का शेष)

मुझे राम और भरत मे कोई अन्तर नही है। राम के राजा होने से मुझे प्रसन्नता है इससे राम मे अपनी मौसी के लिये माता जैसा प्यार प्रकट होता है।

वन गमन के समय राम ने प्रजा को कहा—

या प्रीतिर्बहुमानश्च मय्ययोध्यानिवासिनाम्।
मत् प्रियार्थं विशेषेण भरते सा विधीयताम्॥

हे प्रजाजनो! जो प्यार आप मुझ पर प्रकट कर रहे हैं आप उस प्यार को भरत पर भी प्रकट करें इससे मुझे प्रसन्नता होगी। इससे यह प्रतीत होता है राम अपने मे और भाई में किसी प्रकार का अन्तर न मानते थे।

राम के उत्तम व्यवहार के कारण सीता जी सदा सुख में दुःख में राम के सान्निध्य को पसन्द करती थी। रावण के द्वारा राम को भिखमगा कहने पर सीता ने रावण को कहा—

दीनो वा राज्यहीनो वा यो मे भर्ता स मे गुरु।
त नित्यमनुरक्तास्मि यथा सूर्यं सुवर्चला॥

मेरा पति चाहे दीन हो, चाहे राज्य से हीन हो, मुझे वह अत्यन्त प्रिय है। विभीषण के शरण रूप मे अपने समीप आने पर राम ने उसे लङ्का का राज्य देने की प्रतिज्ञा की—

अहं हत्वा दशग्रीव सप्रहस्त सहात्मजम्।
राजान त्वा करिष्यामि सत्यमेतच्छृणोतु मे॥

मैं प्रहस्त और पुत्र सहित रावण को मारकर तुझे लङ्का का राजा बनाऊगा। इसके अनुसार राम ने अपने वचन का पालन किया। वहा के स्वय राजा न बने और विभीषण को वहा का राज्य प्रदान किया।

लक्ष्मण के युद्ध मे मूर्च्छित होने पर उसे मृत मानकर राम का विलाप करते समय कहना कि मे विभीषण को राजा न बना सका, इस बात का मुझे महान् दुःख है यह कहना अपनी प्रतिज्ञा के भग होने से दुःख को प्रकट करना है—

तत्तु मिथ्याप्रलप्त मा प्रधक्ष्यति न सशय।
यन्मया न कृतो राजा राक्षसाना विभीषण॥

मुझे भाई के मरने का इतना दुःख नही है जितना विभीषण को लङ्का का राजा बनाने का वचन करके उसको पूर्ण न करने का दुःख है। इससे राम की सत्यनिष्ठा प्रतीत होती है। आज के शासक राम के इस वचन की ओर ध्यान दे तो देश का कल्याण हो।

मेघनाद पर बाण का प्रहार करते हुए लक्ष्मण की राम के प्रति कितनी अधिक आस्था थी—

धर्मात्मा सत्यसन्धश्च रामो दाशरथिर्यदि।
पौरुषे चाप्रतिद्वन्द्व तदन जहि रावणिम्॥

यदि राम सत्यप्रतिज्ञ और बलवान् है तो मेरा यह बाण मेघनाद का वध कर डाले। इससे लक्ष्मण का राम पर अद्भुत विश्वास प्रकट होते ही राम को अपनी शक्ति का कितना विश्वास था। वे रावण से युद्ध करते समय घोषणा करते है—

अद्य पश्यन्तु रामस्य रामत्व मम सयुगे।
त्रयो लोका सगन्धर्वा सदेवा सर्षिचारणा॥

आज ससार के सारे जन मुझे राम के अनुपम पौरुष को देखे। यह अहङ्कार न होकर वास्तविक आत्मप्रशस्ति है।

राम का अपने भाई लक्ष्मण से कितना अद्भुत प्यार था। इसे वे उसके मूर्च्छित होने पर इस प्रकार से प्रकट करते हैं—

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवा।
त तु देश न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदर॥

स्त्री भी मिल सकती है, सगे सम्बन्धी भी मिल सकते है परन्तु सगे भाई का प्राप्त करना नितान्त कठिन है। इससे राम का भाई के प्रति अत्यन्त प्रेम प्रकट होता है।

लङ्का से लौटते हुए राम ने हनुमान को अयोध्या मे भेजकर यह पता लगाया कि कहीं भरत को राज्य मे आसक्ति तो नही हो गई हो। यदि उसको राज्य म आसक्ति हो गई हो तो वह राज्य इसी के पास रहने दिया जावे। यह राम का राज्य मे शान्ति और सु-व्यवस्था रखने का विचार था।

राम ने भरत की राज्य मे अनासक्ति देखकर उसकी प्रार्थना करने पर राज्य ग्रहण किया। राम के राज्य के विषय मे वाल्मीकि ऋषि के ये वचन स्मरणीय है—

न पर्यदेवयन् विधवा न च व्यालकृत भयम्।
न व्याधिज भय चासीत् रामे राज्य प्रशासति॥
निर्दस्युरभवल्लोको नानर्थ कश्चिदस्पृशत्।
न च स्म वृद्धा बालाना प्रेतकार्याणि कुर्वते॥

राम के राज्य मे विधवाओ का विलाप तथा एक दूसरे का मारना और रोग की पीडा न व्यापती थी। कोई डाकू नही था। बूढो से पहले या उनके आगे उनकी सन्तान न मरती थी। ये कार्य सदा सुराज्य मे होते है कुराज्य मे नही होते हैं। राम का राज्य आदर्श था।

हमारे वर्तमान शासक क्या राम के इन गुणों को लेने का प्रयत्न करेंगे? राज्य लेने की भूख तो सब मे जाग गई है परन्तु हम राम के आदर्श को भी ग्रहण करे तो कल्याण हो सकता है।

राम का आदर्श जीवन

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

भारत के इतिहास में राम और कृष्ण बहुत प्रसिद्ध महापुरुष माने जाते हैं। भक्तो ने तो भक्तिविभोर होकर इनको भगवान् का अवतार ही मान लिया है। रामायण और महाभारत ये दोनों ग्रन्थ भारतीयो को अत्यन्त प्रिय हैं। यदि रामायण और महाभारत को भावना में, श्रद्धा मे पढा जावे तो इन ग्रन्थो के पढने में बहुत प्रसन्नता होती है। जब इन ग्रन्थों को समालोचना की दृष्टि से पढा जाता है तब उस काल की कमजोरियों का प्रथाओं का भी इनसे ज्ञान होता है। लेखक ने इन ग्रन्थो को इतिहासपरक न लिखकर भावनापरक लिखा है, इससे इतिहास सम्बन्धी गहनता को प्राप्त करने मे वाचक असमर्थ रह जाता है।

किसी भी घटना को वह कहाँ हुई इसको जानने मे कठिनता होती है। किसी श्लोक या घटना के आधार पर जा निर्णय होता है वह हृदयग्राही नही होता है। इतना होने पर भी ये ग्रन्थ कुछ अलौकिकता और विशेषता रखते हैं। बड-बड भारतीय सस्कृत के और हिन्दी के विद्वान् कवियो ने इन ग्रन्थो के आधार पर उत्तम-उत्तम काव्य रचे है जिससे भारत की प्रतिष्ठा देश विदेश मे सर्वत्र फैली है।

जब विश्वामित्र राक्षसो के सहार के लिये राम को लेने के लिये दशरथ के पास अयोध्या मे आये तब राम की आयु पन्द्रह वर्ष की थी दशरथ ने विश्वामित्र को कहा है—

ऊनषोडशवर्षो मे रामो राजीवलोचन।
न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसै ॥

मेरा पुत्र अभी पन्द्रह ही वर्ष का है। इसमें राक्षसो से युद्ध करने की शक्ति मुझे दिखाई नही देती है। दशरथ के इन वचनो से विश्वामित्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर राजा से बोले हे राजन्! पहले सब कुछ देने की स्वीकृति प्रदान कर अब इन्कार करते हो, इससे तुमने अपने वचन का पालन नही किया। उसी समय बीच में पडकर रघुकुल के कुलगुरु वसिष्ठ ने राजा को समझा बुझाकर विश्वामित्र को राम सुपुर्द किये।

राम उस काल वीर्यत्व से, शूरता से युक्त थे। राम की इस शक्ति को वसिष्ठ और विश्वामित्र जानते थे परन्तु पुत्र मोह के कारण दशरथ राम की वीरता को जानते हुए भी उसको युद्ध मे भेजना न चाहते थे।

राजा दशरथ ने विश्वामित्र के साथ राम को भेजते हुए लक्ष्मण को भी उसके साथ भेजा, जिससे दोनो भाई सुरक्षित रह सके। आश्रम की ओर गमन करते हुए विश्वामित्र ने वन के विभिन्न आश्रम दिखलाते हुए उनका इतिहास भी राम लक्ष्मण को सुनाया।

ताडका वन को निर्जन देखकर राम ने विश्वामित्र से इसका कारण जानना चाहा। तब राम को विश्वामित्र ने ताडका नाम की राक्षसी का वर्णन किया तथा राम का बतलाया कि यह बहुत दुष्टा राक्षसी है। तुम इसका आज सहार अवश्य करो। स्त्री समझकर इसके मारने मे झिझक न करना। इस प्रकार राम की झिझक को दूर कर उसके द्वारा ऋषि मुनियो का सहार करनेवाली राक्षसी का वध कराया।

विश्वामित्र ने राम को बला और अतिबला विद्याओ से अलंकृत कर उसे शक्तिसम्पन्न बनाकर राम के द्वारा सुबाहु का वध और मारीच का पराभव कराया।

रामायण पढने से तो ऐसा प्रतीत होता है कि सिद्धाश्रम मे सात दिन तक यज्ञ की राक्षसो से रक्षा करा विश्वामित्र राम को सीता के स्वयवर मे विदेहराज जनक के राज्य मे ले गये परन्तु विश्वामित्र ने राम को अनेक प्रकार के दिव्य अस्त्र शस्त्रो की शिक्षा दी थी जो काम दिनो का न होकर वर्षों का प्रतीत होता है। यहा पर राम ने विश्वामित्र से अनेक प्रकार की युद्धकला सीखी थी। राम यहा पर कई वर्षों तक रहकर इस विद्या का अभ्यास करते रहे। हो सकता है राम यहा दस वर्ष तक रहे हों और पूर्ण युवा हो गये हो।

जनक द्वारा रचित सीता स्वयंवर में मुनि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को भी अपने साथ विशेष योजनाबद्ध ले गये। विश्वामित्र इस बात से भली प्रकार परिचित थे कि शिव धनुष को तोडने की सामर्थ्य केवलमात्र राम मे ही है, अन्य कोई राजा उस शर्त को पूर्ण न कर सकेगा। हुआ भी ऐसा ही। जब कोई सीता स्वयम्बर की शर्त को पूर्ण न कर सका तब अपने गुरु विश्वामित्र की आज्ञा से राम ने शिव धनुष को तोड डाला। इस पर सीता ने राम के गले मे वरमाला डाल दी। राम की अस्त्र शस्त्र की अपार जानकारी से सारे राजा परिचित हो गये। विश्वामित्र राम की इस योग्यता को सर्वत्र प्रसारित करना चाहते थे।

जब चारो भाई विवाहित होकर अयोध्या मे आगये तब भरत के मामा युधाजित् दशरथ से आज्ञा लेकर लक्ष्मण और शत्रुघ्न को अपने देश केकय की राजधानी गिरिव्रज (वर्तमान बिहार) में लेगये। वहा पर वे दोनो भाई अनेक वर्षो तक बडे सुख और शान्ति से रहे। इधर राजा अपने वार्धक्य को देखकर राम को युवराज बनाना चाहते थे। उन्होने अपनी इच्छा को प्रजा के सम्मुख प्रस्तुत किया—प्रजा ने भी सर्वसमति से कहा—"इच्छामो वय महाबाहु रघुवीर महाबलम्।" हम सब राम को युवराज बनाने की इच्छा रखते हैं। इससे राजा दशरथ बडे प्रसन्न हुए।

रामायण के पढने से ऐसा प्रतीत होता है कि सन्तानहीनता के कारण राजा ने कैकेयी से इसी शर्त पर विवाह किया था कि कैकेयी की कोख से जो सन्तान होगी वही अवध के राज्य की अधिकारी होगी। राजा दशरथ को अपनी यह शर्त सदा स्मरण रहती थी अत वह कैकेयी को सदा प्रसन्न रखता था। राजा राम को ही अयोध्या का राजा बनाना चाहता था परन्तु विवाह के समय की हुई प्रतिज्ञा उसे बेचैन रखती थी। अत राम को राजा ने अपने महल मे एकान्त में बुलाकर यह कहा—

अद्य प्रकृतय सर्वास्त्वामिच्छन्ति नराधिपम्।
अतस्त्वा युवराजानमभिषेक्ष्यामि पुत्रक ॥
तद् यावदेव मे चेतो न विमुह्यति राघव।
तावदेवाभिषिञ्चस्व चला हि प्राणिनां मति. ॥
विप्रोषितश्च भरतो यावदेव पुरादित।
तावदेवाभिषेकस्ते प्राप्तकालो मतो मम ॥
काम खलु सता वृत्ते भ्राता ते भरत स्थित।
ज्येष्ठानुवर्ती धर्मात्मा सानुक्रोशो जितेन्द्रिय ॥
किन्तु चित्त मनुष्याणामनित्यमिति मे मति.।
सता च धर्मनित्याना कृतशोभि च राघव ॥

हे राम! जबतक मेरा चित्त ठीक प्रकार है तब तक तू युवराज पद को ले ले। भरत इन दिनो बाहार है, हो सकता है वह रुकावट डाल दे। यद्यपि भरत धर्मात्मा है, तुम्हारा भी सम्मान करता है तो भी पता नहीं दूसरे का चित्त कब डगमगा जावे। यहा पर दशरथ का भरत पर अविश्वास प्रकट होता है। कवि ने राम के मुख से यहाँ कुछ भी नही कहलवाया। राम यह सुनकर युवराज पद को तैयारी के लिये अपने महल मे चले गये।

कैकेयी ने राम से कहा—हे राम! तुम्हारे पिता तुम्हे वन में भेजना चाहते हैं परन्तु अपने मुख से कहने मे झिझक अनुभव करते हैं। उस समय राम ने कैकेयी को यो कहा—

अहो धिङ् नार्हसे देवि वक्तुमीदृश वच।
अह हि वचनाद् राज्ञ पतेयमपि पावके ॥
भक्षयेय विष तीक्ष्ण पतेयमपि चार्णवे।
नियुक्तो गुरुणा पित्रा नृपेण च हितेन च ॥

हे देवि! तुम को ऐसी बात नही करनी चाहिये। मैं राजा की आज्ञा से समुद्र मे गिरकर, विष खाकर, अग्नि मे पडकर मर सकता हू, फिर वन मे जाना कौन सी बडी बात है। इससे राम की पितृभक्ति प्रकट होती है।

कैकेयी को मन्थरा के बहकाने मे पहले राम पर बडा विश्वास और स्नेह था। मन्थरा द्वारा राम के राज्याभिषेक की सूचना देने पर उसके मुख से ये शब्द निकले थे—

रामे वा भरते वाऽह विशेष नोपलक्षये।
तस्मात्तुष्टास्मि यद् राजा रामं राज्ये ऽभिषेक्ष्यति ॥

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ [illegible] सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८६

ओ३म् कृण्वन्तो वि[illegible]र्यम्



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ११ ७ फरवरी १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश मे ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

(प्रसुव यज्ञपति भगाय (यजु ९/१)

महान् ऐश्वर्य के लिए यज्ञपति उत्पन्न हों

लेखक श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर-४५२००१

(१) यज्ञपति उत्पन्न हो—

आज सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता इस बात की है कि यज्ञ करने वाले यजमान अधिकाधिक उत्पन्न हो और सर्वत्र यज्ञो का अनुष्ठान हो। यज्ञो के अनुष्ठानो से सर्वत्र ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। ऐश्वर्य की वृद्धि होने से दुःख, दारिद्रय दूर होगे और सुख की सर्वत्र वर्षा होगी। सर्वत्र आनन्द-मगल होगा। यज्ञपतियो के अभाव से ऐश्वर्य की वृद्धि तो नही होती है अपितु दुःख दारिद्रय की वृद्धि ही होती है। वेद ने पृथिवी पर यज्ञ का साम्राज्य स्थापित करने के लिये पृथिवी को देवयजनि कहा है। अर्थात् पृथिवी देवो द्वारा यज्ञ-यागादि करने के निमित्त है यह घोषित किया है। यज्ञ देवो द्वारा अर्थात् वेदो के विद्वानो द्वारा ही होना चाहिए। अविद्वान्जनो से नही कराना चाहिए। दैवी कर्मो के अभाव से पृथिवी आसुरी कार्यो से व्याप्त हो जावेगी। सर्वत्र दुःख, कलह, अशान्ति ही अशान्ति और युद्धोन्माद से भयत्रस्त हो जावेगी।

(२) यजमानो का निर्माण करे —

पृथिवी को देवयजनि बनाने के लिए यज्ञपतियो, यजमानो का निर्माण करना आवश्यक है। यजमानो का निर्माण करने के लिए उसका विधि-विधान है। बिना उस विधि विधान की साधना के यजमान बनने की पात्रता नही होती। अपात्र यजमानो एव अपात्र अविद्वानो द्वारा यज्ञ करने कराने से यज्ञ का बाह्याडम्बर मात्र विकास को प्राप्त हो जाता है और यज्ञ का सत्य स्वरूप अस्तित्व को प्राप्त नही हो पाता। देवो की समृद्धि नही हो पाती है जिससे इष्टलाभ नही होता। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने सस्कार-विधि मे यजमानो के निर्माण के लिये उन्हे मन्त्र से दीक्षित करने के लिये लिखा है। अत यजमानो के निर्माण कार्य को सर्वाधिक प्राथमिकता देनी चाहिए। यजमानो को सस्कार विधि के सामान्य प्रकरणोक्त ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्र, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण मन्त्र, हवन आदि के समस्त मन्त्र और वामदेव्यगान तथा महावामदेव्यगान मन्त्रो का अभ्यास एव जिस वेद का जैसा उच्चारण है उस विधि से सस्वर पाठ का अभ्यास प्रत्येक यजमान को कराना चाहिए। इस निमित्त सस्वर वेदपाठ शिविरो का आयोजन होना चाहिये। जब इस योग्यता के यजमान होगे तभी यज्ञ के शुभ परिणाम होगे—अन्यथा नही।

(३) ऋत्विजादि भी मन्त्राभ्यास करे

सम्प्रति तो ऐसी दुरवस्था है कि यजमानो को शुद्ध मन्त्र भी नही सिखाया जाता। जो यज्ञ कराने वाले ब्रह्मा, ऋत्विज, होता, अध्वर्यु, पुरोहित हैं वे भी प्राय शुद्ध पाठ नही जानते हैं—सस्वर मन्त्र पाठ और प्रति वेदानुसार पाठ की बात तो दूर ही है। जब पुरोहितादि भी नित्य अभ्यास मे प्रयुक्त होने वाले मन्त्रो का यथोचित पाठ नही जानते है तो वे यजमानो को क्या सिखायेगे। अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा की स्थिति विद्यमान है अत यजमानो को अभ्यास कराने से पूर्व पुरोहितादि को शुद्ध, सस्वर मन्त्रपाठ का अभ्यास कर देवत्व प्राप्त करना चाहिये और फिर यजमानो को भी सिखाना चाहिए। देवत्व स्थिति पुरोहितादियो ने प्राप्त कर यज्ञ कराने से—पृथिवी को देवयजनि बनाना चाहिये। तभी प्रसुव यज्ञपति भगाय—की स्थिति उत्पन्न होगी और दैवी ऐश्वर्य तथा भौतिक दोनो प्रकार के ऐश्वर्यो की प्राप्ति हो सकेगी।

(४) अशुद्ध मन्त्रोच्चारण सर्वथा त्याज्य है—

बिना शुद्ध एव सस्वर मन्त्रपाठ के जाने जो यज्ञ किया जाता है वह तो यज्ञ का दम्भमात्र है। नारदीय शिक्षा (१/६) मे लिखा है—

प्रहीण स्वरवर्णाभ्या यो विमन्त्र प्रयुज्यते।
यज्ञेषु यजमानस्य रुषत्यायु प्रजा पशून्॥

अर्थात् उदात्तानुदात्त स्वर रहित तथा वर्णो के अशुद्ध उच्चारण द्वारा जो तथाकथित मन्त्र यज्ञ मे बोला जाता है वह विमन्त्र कहाता है। उस स्वर और वर्णो से अशुद्ध प्रयुक्त मन्त्र से यजमान की आयु और प्रजा-पशुओ की हानि होती है। इसी प्रकार से अनेक शिक्षा ग्रन्थो मे स्वर रहित और अशुद्ध मन्त्रो को त्याज्य, निन्दनीय तथा हानिकारक बताया है। अत शुद्ध एव सस्वर शुद्ध पाठ ही करना अति-आवश्यक है। बिना वेद पाठ शिक्षण सत्रो के आयोजित किये यह न्यूनता सदा बनी रहेगी। वेदमन्त्रो के उच्चारण मे यह प्रदूषण की स्थिति बनाए रखने मे, तथा मिथ्या प्रयुक्त स्थिति मे आत्मसन्तोष मानना अज्ञान एव अविद्या को प्रोत्साहन एव सरक्षण प्रदान करता है।

(५) वेद मन्त्रो को प्रदूषण से बचावे—

वर्तमान समय मे प्रदूषण निवारण का ध्यान सब ओर आकृष्ट हुआ है। वायु से, जल मे, पृथिवी से प्रदूषण निवारण के प्रयत्न हो रहे है क्योकि प्रदूषण जीवन के लिए घातक है। गगा आदि पवित्र नदियो को प्रदूषण रहित करने का प्रयत्न भी हो रहा है। देश और विदेश के वैज्ञानिक भी इस कार्य मे सहयोग दे रहे है। वेदमन्त्रो को प्रदूषण से रहित रखने के लिए प्राचीन ऋषि मुनियो ने—स वाग्वज्रो यजमान हिनस्ति यथेन्द्रशत्रु स्वरतोऽपराधात आदि वचनो द्वारा सावधान रहने का घोष किया। अत वेदमन्त्रो को अशुद्ध और स्वर रहित उच्चारण के प्रदूषणो से बचाने का प्रबलतम प्रयत्न करना चाहिये। वेदमन्त्रो का शुद्ध और सस्वर अभ्यास श्रुतिपरम्परा से गुरुमुख द्वारा ही होता है—अन्यथा नही। इसीलिये नारदीय शिक्षा मे लिखा है—

पुस्तकप्रत्ययाधीत नाधीत गुरुसन्निधौ।
न शोभते सभामध्ये जारगर्भ इव स्त्रिय ॥

यह ध्रुव सत्य है। इस रहस्य को न जानकर जो बिना गुरु के अपनी प्रज्ञा मात्र से वेदमन्त्रो का उच्चारण करते हैं—याज्ञवल्क्य ने उन्हें अधम पाठक घोषित किया है। ये अधम पाठक ही वेदमन्त्रो मे

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश के प्रति भयंकर षड्यन्त्र

(विरजानन्द दैवकरणि, सम्पादक ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश)

विश्व के सभी प्रमुख आर्यसमाजो को यह सुविदित है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी और सुधारवादी अद्भुत ग्रन्थ को स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्यजनता के सहयोग से ताम्रपत्रो पर अंकित करवाया है। इस सत्यार्थप्रकाश की एक ही प्रति है इसमे साढे छब्बीस मन भार है। प्रत्येक पृष्ठ ९"×१४" आकार का है तथा अढाई सेर वजनी है। कुल ४२५ पृष्ठ हैं। इसी सत्यार्थ-प्रकाश को पुस्तक रूप मे भी प्रकाशित किया गया है, प्रकाशक है—स्वामी ओमानन्द हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर रोहतक। मेरी जानकारी के अनुसार विश्व के इतिहास मे यह प्रथम सफल और स्तुत्य प्रयास है कि इतने विशाल ग्रन्थ को ताम्रपत्रो पर अंकित करवा कर आगामी हजारो वर्षो तक एक अद्भुत ज्ञानराशि को सुरक्षित कर दिया गया है। ऐसे अद्भुत कार्य को 'वर्ड गिनीज बुक' मे स्थान मिलना चाहिए और इसके कर्त्ता को प्रमुख राष्ट्रो की ओर से सम्मानित किया जाना चाहिये।

आर्यसमाज मे एक पण्डितम्मन्य विश्वश्रवा नामक व्यक्ति है जो किसी भी व्यक्ति को अपने से अधिक विद्वान् नही मानता, उसकी प्रशसा करना तो दूर की बात है। ऋग्वेद ५.४२.१० के अनुसार विश्वश्रवा का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया जा सकता है -

"ससार मे ऐसे भद्र मनुष्य भी है जिन्हे दूसरो की सुखशान्ति देखकर ईर्ष्या और मत्सर घेर लेते हैं। वे उनकी प्रशसा को सुन नही सकते, सहन नही कर सकते। वे स्वय चू कि भले कार्य करके प्रशसा प्राप्त नही कर सकते, जलन के मारे वे ऐसे शुभकर्म्मा लोगो के शुभकार्यो की निन्दा करते रहते हैं और इस प्रकार अपने हृदय की जलन बुझाना चाहते है, जो उलटी और बढ जाती है। ऐसे निन्दक और शान्ति भग करने वालो को समाज से बाहर कर देना चाहिये।"

उपर्युक्त लक्षण वाला तथा स्वय को महामहोपाध्याय कहने वाला विश्वश्रवा कैसा है यह तो मैं आगामी लेख मे लिखूगा। इस बार तो सत्यार्थ-प्रकाश विषयक इसकी द्वेषभावना को दूर करने का असफल प्रयास करता हुआ वस्तुस्थिति से अवगत करा देना चाहता हूँ।

चू कि इस ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश के शुद्ध करने तथा सम्पादन करने मे मेरा पूरा उत्तरदायित्व रहा है इसलिये इसके विषय मे मैं ही सर्वाधिक स्पष्टीकरण कर सकता हू।

प्रथम, पचम तथा दशम समुल्लास पहले ताम्रपत्रो पर उत्कीर्ण कराये गये है। इसके शुद्ध पाठ हेतु हमने परोपकारिणी सभा से हस्तलिखित सत्यार्थ-प्रकाश की प्राप्ति हेतु बहुत यत्न किया परन्तु सफलता नही मिली। यह अवस्था तब थी, जब स्वामी ओमानन्द जी स्वय परोपकारिणी सभा के तत्कालीन प्रधान थे। श्री धर्मसिह कोठारी बार-बार यही कहते रहे कि हमारा पैंतीसवा सस्करण का सत्यार्थ-प्रकाश सर्वथा पाण्डुलिपि के अनुसार है, नितान्त शुद्ध है, आप निश्चिन्त होकर ताम्रपत्रो पर खुदवा दीजिये। उनके ऐसा कहने पर भी मुझे सन्तुष्टि नही हुई और मूलप्रति की प्राप्ति हेतु यत्न चालू रहा। बहुत यत्न करने पर स्वामी ओमानन्द जी इस विषय मे सफल हुये और देखने से ज्ञात हुआ कि कोठारी जी जिस सस्करण को शुद्ध, प्रामाणिक तथा हस्तलेखानुसार कहते थे, वह वस्तुत वैसा नही है।

अस्तु मैंने और अपने सहयोगी श्री यशपाल शास्त्री ने दोनो हस्तलेखो से मिलाकर सर्वाधिक शुद्ध पाठो से युक्त सस्करण तैयार कर दिया। इसमे जो शकाये थी उन के समाधान हेतु हमने आर्यसमाज के अनेक विद्वानो से सम्पर्क किया और शुद्ध पाठ के पूर्ण निश्चय न होने तक महीनो उसी पृष्ठ को रोके रखा।

महात्मा अमर स्वामी जी, प० उदयवीर शास्त्री, प० युधिष्ठिर मीमासक, प० राजवीर शास्त्री, प० शिवकुमार शास्त्री आदि विद्वानो से सम्पर्क तथा पत्र-व्यवहार आदि से भी परामर्श लिये गये। यह सब होने पर भी मानवस्वभावजन्य दोष से यदि कोई त्रुटि रह गई हो और उसे यदि कोई विद्वान् अवगत करायेगा तो हम मानने को तैयार हैं। यदि वह वस्तुत शोधने योग्य हुई तो उसी पृष्ठ को नष्ट करके दूसरा पृष्ठ तैयार करा दिया जायेगा।

श्री अमर स्वामी जी के नाम से यह प्रचारित किया जा रहा है कि वे अशुद्धिया निकाल रहे हैं। मैं महात्मा अमर स्वामी जी से मिला, उन्होने कई स्थलो पाठो पर शकाए की मैंने समाधान किये पुन उनसे कहा गया कि प० विश्वश्रवा आपके नाम से यह प्रचारित करता है तो वे बोले मैंने अशुद्धियो के विषय मैं विश्वश्रवा जी को कुछ नहीं कहा। किन्तु यह कहा कि कुछ पाठ सत्यार्थप्रकाश मे अस्पष्टार्थक हैं, विद्वानो को मिलकर उन्हे बदल देना चाहिए। मैंने कहा किसी के मूल ग्रन्थ मे परिवर्तन करने का अधिकार किसी को नही होना चाहिए। इस पर स्वामी जी ने अपनी ही रट लगाये रखी। पुन मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि आप यह बात लिखकर दे दे कि मैंने विश्वश्रवा जी से यह नही कहा कि ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश मे हजारो अशुद्धिया है। इस पर उक्त स्वामी जी लिखने को तत्पर नही हुये और कहा कि आप मेरे नाम से स्वय लिख दे। मैं अपने हाथ से कुछ नही लिखूगा। ये आर्यसमाजी ऐसे होते हैं कि उल्टा सीधा प्रचार करके यह है वह है आदि। यह सब वार्तालाप होने पर मैं वापिस आ गया। यदि अमर स्वामी जी अब भी अशुद्धिया निकालेगे तो हस्तलेख के अनुसार सबका समाधान किया जायेगा और भूल होने पर मानी भी जायेगी। परन्तु कोई सज्जन निकाल कर दिखलाये तो सही।

जिन सज्जनो ने ताम्रपत्र खुदवाने हेतु दान दिया है उनके नामों को देखकर विश्वश्रवा व्यास कहता है कि सत्यार्थप्रकाश की छाती पर सेठो, दुकानदारो आदि को बैठा दिया गया है। इसे देखकर मुझे गहरा धक्का लगा।

दानी का नाम देना कृतज्ञता प्रकाशित करना है। नाम न देना कृतघ्नता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद भाष्य अको के रूप में निकालना प्रारम्भ किया था। उस समय के प्रत्येक अक पर दानियो के नाम छपे हैं। विक्रम सवत १९३६ के मार्गशीर्ष मास में निकले पुस्तक (२०) अक (१३) तक ५३९ ग्राहको के नाम चन्दे सहित प्रकाशित हो चुके थे इन नामो को देखकर विश्वश्रवा ने यह नही कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने दानियो को वेद की छाती पर बैठा दिया। इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के अको पर भी देखा जा सकता है। विश्वश्रवा से मैं पूछता हूँ कि सत्यार्थप्रकाश की छाती कौनसी है जिस पर सेठ, साहूकार दुकानदार बैठे हैं? सत्यार्थ-प्रकाश के विषय से हटकर नीचे पाद टिप्पणी के स्थान पर दानियो के नाम छापे हैं। उन्हे हम सत्यार्थप्रकाश के चरणो मे तो कह सकते है। छाती पर कहना तो अपनी मूर्खता सिद्ध करना है। इससे लेखक का द्वेषभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

इतना निवेदन करने पर मेरा कथन यह है कि इस ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश को लेकर विश्वश्रवा जी पता नही क्यो जले बैठे हैं तथा इसे आर्यसमाज के लिये कलक बनाकर सारे सत्यार्थप्रकाश को गलाने की जिद् कर रहे हैं। इनको यह पता नही कि ज्ञान नष्ट करने वाला असुर हन्तव्य होता है। भारतवर्ष का बहुत सा प्राचीन इतिहास आज ताम्रपत्र, शिलालेख, स्तम्भलेख, मुद्रा और मुद्रांको के रूप मे ही सुरक्षित है। कभी आगे चलकर यह अदभुत ताम्रपत्रीय सत्यार्थप्रकाश भी भारत के लिए इसी प्रकार ऐतिहासिक वस्तु बनकर रहेगा। भावी पीढी के लिये क्रान्तदर्शी स्वामी ओमानन्द सरस्वती का यह एक सराहनीय पग है। इसी के साथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को भी स्वामी ओमानन्द जी ताम्रपत्रों पर अंकित करा रहे हैं। उसके तीन सौ पृष्ठो मे से ११७ पृष्ठ ताम्रपत्रो पर अकित हो चुके हैं। इसके पश्चात् विचार तो यह है कि चारो वेद, छ शास्त्र, उपनिषद्, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, छन्द शास्त्र, वर्णोच्चारण शिक्षा और निरुक्त आदि को भी ताम्रपत्रो पर खुदवाया जाये। आर्यावर्त्त का सौभाग्य हुआ तो ईश्वर के साहाय्य से यह कार्य पूरा हो सकता है। विश्वश्रवा जैसे तुच्छ विचार वाले व्यक्ति के [illegible] विरोध से हमें कार्य करने की शक्ति ही मिलती है, घटती नही।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

छाज बोले तो बोले किन्तु छलनी भी बोले जिसमें हजार—

(राजवीर शास्त्री)

८ दिसम्बर १९८५ की साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' पत्रिका मे एक लेख 'एक घटना और एक दुर्घटना' के नाम से प्रकाशित हुआ है, जिसके लेखक हैं—श्री म० म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य एम ए, वेदमन्दिर बरेली। इस लेख को पढकर लेखक की दुर्भावना ही अभिव्यक्त हो रही है, क्योकि उनके लेख में एक भी बात सत्य तथा उपयुक्त नही है। लेख का सक्षिप्त उत्तर इस प्रकार है—

१- लेखक ने लिखा है कि दिवान बहादुर बाबू हरबिलास जी शारदा ने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों पर सम्पादक रूप मे श्री डा० रघुवीर के नाम को उचित नही माना था। इसलिए ऋषि के ग्रन्थो पर किसी व्यक्ति का नाम छपना नही चाहिये। लेखक ने इस घटना मे श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा ताम्रपत्रो पर अकित सत्यार्थप्रकाश के नीचे दिये दानदाताओ के नामो को अनुचित ही नही बताया, प्रत्युत उसे गलाकर नष्ट करने का भी आग्रह किया है। प्रथम तो यहा विचारणीय बात यह है कि श्री शारदा जी ने सम्पादक के नामोल्लेख को क्यो उचित नही समझा। क्या यह ठीक है कि जो विद्वान् किसी ग्रन्थ के सम्पादन मे परिश्रम करे, उसका नाम भी उस पर अकित न किया जाये? और उस ग्रन्थ मे यदि कोई त्रुटि हो जाये तो वह दोष किसका कहा जायेगा? यदि लेखक को एक तपस्वो साधु के निस्स्वार्थ भाव मे ताम्रपत्रो पर खुदवाये सत्यार्थप्रकाश पर मूल लेखक के लेख से बिल्कुल पृथक् दानदाताओ के नाम देखकर इतना रोष है, तो इसमे पूर्व अनेक वेदभाष्यों के प्रकाशनो पर न केवल दानदाताओ के नामो का हो उल्लेख है, प्रत्युत उनके चित्र भी छापे गये है, लेखक ने उनके विरुद्ध तो कभी कुछ भी नही लिखा और लिखते भी कैसे? यदि लेखक को महर्षि निर्वाण शताब्दी पर यज्ञ का ब्रह्मा बना दिया जाता, तो लेखक को रोष लेशमात्र भी नही होता। किन्तु ऐसा क्यो नहीकिया गया, इसमे कौन मुख्य कारण बना? यह तो सभा के अधिकारी ही जान सकते हैं। परन्तु लेखक ने अपना रोष सभा के प्रधान होने मे श्री ओमानन्द जी के शुभकार्यों मे भी असूयावृत्ति से दोषारोपण करके प्रकट किया है।

२- ताम्रपत्रो पर खुदे सत्यार्थप्रकाश में अन्य किसी प्रकार की न्यूनता न पाकर लेखक ने एक दोष दिखाने का दुस्साहस मात्र ही किया है। लेखक लिखता है- महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास मे निम्नलिखित प्रमाण दिया है।

'ऋषयो मन्त्रदृष्टयो, मन्त्रान सम्प्रादु ।'

लेखक के अनुसार इसका प्रकाशन इस प्रकार करना चाहिये था- "ऋषय मन्त्रदृष्टय मन्त्रान् सम्प्रादु ।' इसका कारण लेखक ने यह दिया है कि ऐसा पाठ निरुक्त मे कही नही है। किन्तु विचारणीय बात तो यह है कि क्या महर्षि के मूलपाठ को बदलने का किसी को अधिकार है? यदि मूलग्रन्थ मे ऐसा ही पाठ है, तो उसमे लेखक परिवर्तन कराना क्यो चाहता है? क्या ऐसा करके अपनी त्रुटि को ही दूसरो पर बलात् थोपने का साहस नही है? लेखक का यदि निश्चय यह है कि ऐसा पाठ निरुक्त मैं नही मिलता, तो लेखक के अनुसार छापने से वह त्रुटि कैसे दूर हो सकती है? अत चले थे चौबे जी छब्बे जी बनने, और गाठ के दो खोकर दूबे जी ही रह गये।

३- लेखक को शुभकार्यों मे भी जघन्यता क्यो प्रतीत हो रही है? लेखक के अनुसार सत्यार्थप्रकाश मे नीचे दानदाताओ के नाम छापने मे जघन्य कार्य की गन्ध आ रही है, किन्तु ऐसा करने मे लेखक ने कौनसा मापदण्ड अपनाया है, यह तो वे स्वय हो जानें, किन्तु मैं तो यही समझता हू कि दानदाताओ के नाम अवश्य छापने चाहिए, इससे दानशीलों का उत्साहवर्धन तथा दानवृत्ति को प्रेरणा मिलती है। यदि यह कार्य लेखक के अनुसार जघन्य कृत्य है तो कृपया अपने अन्दर झाककर देखने का तो प्रयास करे कि जो जीवनभर दान ले लेकर पेट ही भरता रहा हो, दान जैसे पवित्र धन को खाकर डकार भी न लेता हो, दानदाताओं का धन्यवाद तो दूर की बात है, क्या उसे भी दूसरो पर निरर्थक दोष लगाने का कोई अधिकार है? कृपया अपने दुष्कार्यों पर तो विचार करके देखें।

१- लेखक अनेक वर्षों तक गुरुकुल गोतमनगर दिल्ली मे उपदेशक विद्यालय चलाने के नाम पर लाखो रुपया खा गया, क्या कभी उसका कोई हिसाब दिया है? और अब भी जो अपने मुंह से कहता रहता है कि गुरुकुल के कुछ रुपये बैंक मे जमा हैं, किन्तु वे अब तक गुरुकुल के अधिकारियो को क्यो नही सौंपे?

२- उपदेशक-विद्यालय के नाम से दान का पैसा तो हज्म किया हो, साथ ही कितने विद्यार्थियो के जीवनो मे भी खिलवाड लेखक ने की? क्या उन्होने कोई विद्वान उपदेशक बनाया? बिहार जैसे दूरस्थ प्रदेशो से आये छात्रो के अमूल्य जीवन से खिलवाड क्या जघन्य कृत्य नही है?

३- जो व्यक्ति जीवनभर ऋषिदयानन्द का अनन्य भक्त बनकर आर्यजगत् को धोखा देकर पेट भरता रहा हो, आज वही महेशयोगी की चरण-शरण मे क्यो? क्या कुछ मुद्रा राक्षस के लोभ मे आ कर सिद्धान्तो को ताक मे रख दिया है? क्या यही दयानन्दभक्ति है? यदि हम महर्षि दयानन्द के भौतिक शरीर को विष देकर नष्ट करने वाले जगन्नाथ को महापापी व हत्यारा कहते है तो जो व्यक्ति महर्षि दयानन्द के सत्य सिद्धान्तो को कुछ चादी के टुकडो के लिए हनन करने मे लगा हो क्या वह महापापी नही है?

४- महर्षि दयानन्द के सत्य सिद्धान्तो को नष्ट करने के लिए वर्त्तमान काल मे अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं, जैसे-स्वामी करपात्री द्वारा लिखित वेदार्थ पारिजात, डा० राजेन्द्र गर्ग द्वारा लिखित 'दयानन्द गाली पुराण' आदि। ऐसे झूठे काल्पनिक ग्रन्थो के विरुद्ध तो लेखक को एक शब्द भी लिखने का साहस नही हुआ, क्योंकि सम्भव है कि लेखक के विचारों मे वे जघन्य कृत्य नही हो किन्तु दान मागकर सत्यार्थप्रकाश को अमर बनाने वाला पवित्र कार्य (ताम्रपत्रो पर उल्लेखन) लेखक को रुचिकर नही लगा, क्या यह अधर्मी व्यक्तियो के सदृश निन्दनीय नही है?

५- और यह कर्ण-परम्परा मे सुना गया है कि लेखक महेशयोगी के यहा धनगबन मे पकडा गया, किन्तु फिर क्षमा मागकर वही शरण लिए हुए है। क्या यह सत्य है? अन्यथा उसका प्रतीकार करने का साहस लेखक को करना चाहिए।

६- एक व्यक्ति एक घर को विपुल धन-राशि और अचल सम्पत्ति को दान देकर अनेक गुरुकुलो का सचालन कर रहा है, अप्राप्य साहित्य का प्रकाशन कर रहा है, वैदिक सिद्धान्तो के प्रसार व प्रचार मैं अहर्निश लगा रहता है, अनेक आन्दोलन मे अग्रणी रहकर कार्य करता रहा है, और जिसके शिष्य स्नातक विद्वान, विद्वान सन्यासी, वानप्रस्थी आदि समस्त भारत मे बडे ही त्यागभाव से वैदिक धर्म के प्रचार तथा गुरुकुलो का सचालन कर रहे है उस व्यक्ति के प्रति भी लेखक की असूया-वृत्ति क्यो? क्या कोई आपसे भी प्रश्न पूछ सकता है कि लेखक ने जीवन भर कौन से क्षेत्र मे प्रशसनीय कार्य किये है? अथवा आर्यजगत के सामने नई-नई योजनाए रखकर धन बटोरकर ऐन्द्रजालिक के सदृश कार्य तो नही करते रहे है?

(पृष्ठ २ का शेष)

जीवन्तु मे शत्रुगणा सदैव येषा प्रमादात् सुविचक्षणोऽहम्।
यदा यदा मे विकृति लभन्ते तदा तदा मा प्रतिबोधयन्ति ॥

मै विश्वश्रवा व्यास से आग्रह करता हू कि यदि उनमे साहस है तो सामने आकर बाते करें। अशुद्धिया निकालकर दिखाये। हम भी शुद्ध ग्रन्थ छापने के पक्ष मे है, यदि वे सद्भाव से कुछ यत्न करेगे तो हमे स्वीकार है। आर्यसमाज करोलबाग मे उक्त महानुभाव से मैंने बाते की तो लगा कि सब कुछ द्वेष भावना के वशीभूत होकर कह रहे हैं। उस समय भी यह श्रीमान् स्वामी ओमानन्द जी द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद, सामवेद और सामपदसहिता आदि का विरोध कर रहे थे। विरोध के लिए ही विरोध करना इनका ध्येय है। सुधार हेतु नही है।

यद्यपि प० भवानीलाल भारतीय प० राजवीर शास्त्री, प० वेदव्रत शास्त्री, यशपाल शास्त्री और बलजीत शास्त्री आदि ने विश्वश्रवा के लेख का उत्तर दे दिया था, परन्तु ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश का सम्पादक होने के नाते मुझे निराकरण करना चाहिए था, इसीलिए यह लेख लिखा है। आशा है पाठकजन सत्यासत्य का जानकर स्वय ही निर्णय करने का यत्न करेगे।

यह लेख सर्व खाप पचायत की सामग्री मे लिखा गया है।

शिवाजी बलवंशी कश्यपगोत्री जाट था

लेखक—नायब सूबेदार लालसिह आर्य, शोरम (उ० प्र०)

आज हम ३६ कुलो से बटकर ४½ हजार वर्गों मे बट चुके हैं इसको रोकने के लिए हमे अत्यन्त परिश्रम करना पडेगा। प्राचीन वश-गोत्रो को जानकर परस्पर ऊ च-नीच भेद-भाव को त्याग कर प्रेम भाव रुपी अमृत की वर्षा कर ओ३म् के झण्डे के नीचे एकत्र होकर शक्तिशाली बन। सगठन शक्ति है, जादू है, अमृत है। इस अमृत के प्याले को पीना हमारा धर्म है।

महाराष्ट्र प्रदेश—

महाभारत काल तक इस क्षेत्र का नाम दण्डकारण्य अर्थात् दक्षिणापथ था। पाणिनि के पश्चात्, आर्य-ब्राह्मण क्षत्रिय (बाद मे राष्ट्र कूट) तथा चालुक्य राजवशो के क्षत्रियो ने इधर आकर इस महाराष्ट्र देश को बसाया जिसमे सूर्य, चन्द्र वशो आन्ध्र-राठ क्षत्रिय थे। सर्वप्रथम यदु की तीन पत्नियो के पुत्र यादव राष्ट्रकूट एव भोज नामक तीन वशो के नामिक कोल्हापुर एव बनवासी मे राज्य स्थापित हुए। बौद्ध काल के बाद यहा ब्राह्मण क्षत्रिय तथा मराठा नाम से प्रसिद्ध हुए।

भोसले—

बलवशी कश्यपगोत्री (बालायन) मालोजी भोसले इस राज्य के सस्थापक महाराज शिवाजी के दादा आप चित्तौड वश मे थे। आप से ७-८ पीढी पहले शिवराव राणा चित्तौड के कनिष्ठ पुत्र भीमसिह ने भोसला नामक दुर्ग मे भाग कर जान बचाई थी। इसी कारण से यह वश भोसला नाम से ख्याति प्राप्त कर गया। यह बात लगभग १३५६ वि० स० अर्थात् अलाउद्दीन खिलजी के काल की है।

मालो जी के पिता सम्भा जी भोसले दौलताबाद के समीप वेरुल मे रहते हुए कई ग्रामो की जमीदारी करते थे। २५ वर्ष की आयु मे मालो जी अहमद नगर राज्य मे कुछ घुडसवारों के अफसर नियुक्त हुए तथा धीरे-धीरे पाच हजार घुड-सवारो के अफसर नियुक्त होगये। १६५१ वि०स० मे आपके पुत्र शाह जी का जन्म हुआ तथा १६६१ वि० स० मे निजाम शाही सरकार ने मालोजी भोसले को सूपा तथा पूना के परगने जगीर मे दिये। आपका काल १६०९ से १६७५ वि० स० है।

शाहजी भोसले—

महाराणा चित्तौड के कश्यपगोत्री, बलवशी मोलोजी के पुत्र थे। आप बीजापुर नवाब के यहा ऊ चे पद पर रहते थे। रानी जीजी बाई के उदर मे शिवाजी का जन्म वि० स० १६८४ मे हुआ था जिसने अपनी माता तथा अपने गुरु समर्थ रामदास की शिक्षा को प्राप्त कर एक महान् वीर साहसी तथा छापामार युद्ध के धुरन्धर योद्धा बनकर ख्याति प्राप्त की। आप ने १७०५ वि० स० मे तोरण दुर्ग को विजय कर अधिकार जमाया तथा नया दुर्ग रामगढ का निर्माण कराया और पूना तथा सूपा जागीर का प्रबन्ध उत्तम रीति से चलाकर कृषको को आत्मीय बनाने लगा तथा इस प्रकार सफलता प्राप्त की कि चाकण थाना तथा बारामती के सरदार भी आपकी अधीनता मे आगये। इसके पश्चात कोडाना पुरन्दर-रोहिरा तिगोना-लोहगढ आदि पर अधिकार कर रोकना कल्याण तथा भिण्डी विजय कर तथा अन्य विजय कर रामगढ मे अपनी राजधानी स्थापित कर कुछ दुर्गों का निर्माण कराया तथा अपनी वीरता साहस पूर्वक छापामार युद्ध मुगल सेना से करते हुए औरगजेब को हताश करते हुए बल वश शाखा को सुदृढ किया। यह कर्म १७५७ वि० स० तक चलता रहा। इसके पश्चात् यह सत्ता पेशवाओ के हाथ मे चली गई। १८७२ वि० स० मे रेजिडेण्ट ने पूना पर अधिकार कर अग्रेजो ने पूना द्वारा शासित समस्त प्रदेश का एक प्रान्त बना देने की घोषणा की। अब बडौदा के गायकवाड, इन्दौर का होल्कर, ग्वालियर का सिंधिया सतारा-नागपुर के भोसले, धार देवास के पवार तथा सान्तवाडी के मराठा नाम पर देश के शासक रह गये।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क १२ १४ फरवरी १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

इतिहास की वन्दनीय विभूति—

कृषकों मजदूरों के रक्षक न्यायप्रिय निर्भीक आर्य राजनेता चौधरी छोटूराम

—निहालसिंह आर्य

सारे पंजाब तथा भारत के कर्मठ ईमानदार परन्तु शोषित दीन कृषक मजदूरो का यह अहोभाग्य ही था कि ईश कृपा से रोहतक मण्डल के गढी (सापला) ग्राम मे चौधरी सुखीराम के घर २४ नवम्बर १८८१ ई० को दीनबन्धु, रहबरे आजम निर्भीक आर्य राजनेता चौधरी छोटूराम का शुभ जन्म हुआ। क्योकि पुरुषार्थी किसान मजदूरो की नेक कमाई बेईमान बनिया, साहूकार तथा निमम अंग्रेजी शासन के हाथ मे जा रही थी जिसे चौधरी छोटूराम ने अपने बुद्धिचातुर्य ईमानदारी और निर्भीक न्यायप्रियता के फलस्वरूप बेचारे किसान मजदूरो का संरक्षण पंजाब के सुखद कानून बनाकर किया। चौधरी साहब बहुप्रतिभासम्पन्न, निर्भीक, न्यायदाता, व्यवहारकुशल, दयालु दानी, उदार तथा धर्मचेता थे जो हम सब के लिए वन्दनीय तथा चिरस्मरणीय हैं।



कुशाग्रमेधावी—

आप बाल्यकाल से ही चुस्त, नटखट कुशाग्रबुद्धि थे और १८९५ में सापला के प्राथमिक विद्यालय से जिले में छात्रवृत्ति सहित प्रथम तथा सारे पंजाब में द्वितीय स्थान पर उत्तीर्ण हुए। फिर दिल्ली के मिशन हाई स्कूल मे नवम कक्षा मे पंजाब मिडल परीक्षा के प्रथम छात्र महताब राय से भी अधिक अंक प्राप्त किए। फिर कालेज मे निबन्ध लेखन तथा दिल्ली के सेशन जज हाईकोर्ट बारिस्टर की निबन्ध प्रतियोगिता मे भी सर छोटूराम ही प्रथम आए। आप एक दो बार भाषण ... में भी प्रथम आए थे। बी. ए परीक्षा उत्तीर्ण कर आप प्रतिभा सम्पन्नता के कारण ही गंगा पार कालाकांकर के राजा रामपालसिंह के प्राइवेट सैक्रेट्री बने और उनके समाचार पत्र हिन्दुस्तान मे अंग्रेजी हिन्दी में बहुत यथार्थ रुचिपूर्ण लेख लिखते रहे।

स्वाभिमान तथा आत्मबल—

जब बालक छोटूराम माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके तो सापला कस्बे के फुल्लू सेठ के पास अपने पिता जी के साथ गए। आगामी अध्ययन के लिए पूछना था। सेठ द्वारा चौधरी सुखीराम को पंखा खीचने की बात को अपमान समझ कर बालक छोटूराम का स्वाभिमान फूट पडा और सेठ को लताडते हुए बोले कि ऐ सेठ! आपका पंखा खीचने की बेगार का काम हमारा नही। मेरे पिता जी से पंखा खीचने की बात कहते आपको शर्म नही आई। इसके लिए तुम अपने लड़के को या मुझे कह देते।

जब आप कालाकांकर के राजा के पास थे तो एक दिन उस राजा ने दोनों का भोजन तो साथ मंगवा लिया पर चौधरी छोटूराम के आए बिना अकेले ही खाने लग गए। चौधरी साहब को यह बात बहुत अखरी परन्तु भोजन खा तो लिया और साथ ही त्याग पत्र दे दिया। राजा के सौ बार क्षमा मांगने पर भी नही रुके और आगरा भरतपुर चले गए परन्तु वहा भरतपुर राज की निर्बलता देख घर आगए।

१९४२ के दूसरे विश्वयुद्ध मे बंगाल मे दुर्भिक्ष तथा व्यापारियों की अन्न संग्रह छुपाने की नीति के कारण अन्नाभाव मे भारतीय सेनाओ के प्रमुख सैन्याधिकारी अंग्रेज लार्डवेवल ने अन्न के लिए दिल्ली में २ जून १९४२ को भारत के खाद्यमन्त्रियो का सम्मेलन बुलाकर प्रार्थना की कि आप गेहूँ के कण्ट्रोल रेट ६ रुपये मन की स्वीकृति दे दे। और तो सब चुप रहे। चौधरी छोटूराम ने खडे होकर तमक कर कहा कि दूसरे मन्त्री तो लेने वाले हैं। गेहू तो मैं ही दूंगा। जब तक किसान की आवश्यकता की दूसरी वस्तुए भी कंट्रोल से सस्ती नही दी जाए तब तक ६ रुपये मन नही दे सकता। वायसराय द्वारा किसान की सहायता अस्वीकार करने पर छोटूराम बोले कि पंजाब का गेहू १० रुपये मन से कम कतई नही मिलेगा चाहे मुझे भी गेहू मे आग लगवानी पडे। मैं देखूंगा कि कौन मेरे गेहू को मनमाने भाव पर लेने आएगा। वायसराय नाराज होकर बोले कि मेरे पास बहस के लिए समय नही है। चौधरी छोटूराम यह कह कर चल पडे कि मैं भी ठाल्ली बैठा आदमी नही हूं। पश्चात् वायसराय द्वारा पंजाब के गवर्नर और मुख्यमन्त्री को यह सूचना भेजने पर उन्होने उत्तर दिया कि चौधरी छोटूराम एक विश्वस्त पुरुष हैं। इनके काम कभी गलत नहीं होते। पंजाब शासन का श्रेय इन्हीं को है। इनके उत्तर से युद्ध मे पंजाब की ओर धन जन की सहायता जानकर वायसराय को गेहू का भाव ११ रुपये मन निश्चित घोषित करना पडा और चौधरी साहब का सत्यपक्ष विजयी रहा।

सन् १९४० मे मलिक खिजर हयात खा के प्रयत्न से नवाब ममदोत के घर पर मिस्टर जिन्ना और चौधरी छोटूराम की भेंट मे पूरे तीन घण्टे के वार्तालाप मे चौधरी साहब के अपने सत्य पक्ष पर सुदृढ रहने से जिन्ना को कहना पडा कि चौधरी छोटूराम अपने मन्तव्य पर वज्र के समान दृढ रहे और उनकी यूनियनिस्ट पार्टी के साथ हमारा मेल नही बैठता।

एक बार फिर कालका मे एक मुसलमान मित्र के घर ये दोनो भोजन के निमन्त्रण मे बुलाए। वहा पहले आए हुए सलाम के भूखे मुह फेरे बैठे जिन्ना के सामने छोटूराम भी मेज पर मुह फेर कर बैठ गये और कुछ भी खाए बिना शीघ्र ही नाराज हो बाहर आगए। उस मित्र मेजबान के पूछने पर कह दिया 'जाट की मरोड मे भी कौन घटा सकता है।' यह था अंग्रेजी राज्य की तूती बोलती मे भी चौधरी छोटूराम का आत्मगौरव तथा अदम्य साहस।

वेद श्रद्धालु सच्चे आर्य —

चौधरी साहब प्रतिदिन सन्ध्या करते थे। सत्यार्थ-प्रकाश को पढ़ ११ वें समुल्लास में ईमानदार कर्मठ जाट जी और स्वार्थी पोप जी की कथा से और दृढ़ आर्य बन गए। दिल्ली कालेज में एफ. ए कक्षा के फार्म में अपना धर्म वैदिक लिख दिया। पंडित रुद्र ने हिन्दू लिखने पर दबाव दिया। परन्तु छोटूराम ने वैदिक धर्म ही रखा। जब ये निर्धनता के कारण घर लौट आए तो प० रघबरदयाल ग्राम गढ़ी में उन्हें बुलाने गए तब वहां चौपाल में छोटूराम पंडितों से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ करते पाए। चौ० बलदेवसिंह और छोटूराम द्वारा सन् १९१३ में रोहतक में स्थापित जाट हाई स्कूल में संस्कृत, सन्ध्या, हवन अनिवार्य थे। साघी के चौ० रामजीलाल की प्रेरणा से छोटूराम आर्यसमाज को विशेष सहयोग देने लगे।

कृषक निर्धन मजदूरों के रक्षक —

चौधरी साहब दया के भण्डार और अन्याय के शत्रु थे इसलिये उन्होंने साहूकारों के अत्याचारों से किसान मजदूर मुक्ति के लिए (१९२८ ई० में) मार्केटिंग बिल, कर्जा मुक्ति बिल, गिरवी भूमि मुक्ति आदि कानून बना कर ६ हजार में ४९ प्रतिशत खोटे बन्द कराए। ८ हजार कानी डण्डी में से ६६ प्रतिशत ठीक कराई। ४० वर्ष पहले की गिरवी भूमि ५ तहसीलदार नियत करके ४२ लाख बीघे भूमि मुफ्त वापिस दिलाई। यह १९३८ में पंजाब कृषि उत्पादन बाजार कानून के आधीन था। १९१९ में किसान जाटों के संगठन के लिए 'जाट गजट पत्र' चलाया जिसमें 'बेचारा जमींदार' पाकिस्तान, ठग्गी का बाजार आदि लेख स्वयं लिखे। कृषकों तथा देश के उत्थान के लिए ऊसर भूमि उर्वरा बनाने के लिए भाखड़ा-नांगल बांध बनवा कर अन्न समस्या का समाधान किया। इसीलिए रहबरे आजम, दीनबन्धु तथा सर छोटूराम के पदों से अलंकृत किए गए।

सच्चरित्रवान् राष्ट्रवादी नेता —

चौ० छोटूराम मादक द्रव्यों, शराब, हुक्का, मांस के विरोधी, सदाचारी आर्य दानी तथा निष्पक्ष महापुरुष थे। छुआ-छूत जात-पात के खण्डक थे। उन्होंने राष्ट्रवादी क्षत्रिय कुलों का संगठन 'अजगरदल' बनाया था। उन्होंने ८ जुलाई १९३६ को ग्रामीण अफसरों के नाम लिखे एक पत्र में कहा था—"किसान कौम को मैं हृदय से प्यार करता हूं मुझे दुख है कि गांवों के उच्च पदों के लोग शराब, रिश्वत आदि दुर्गुणों में फसने जा रहे हैं जो सारी कौम की बदनामी है फैशन और ठाट में पैसे बर्बाद मत करो। मनोरंजन से चरित्र बिगड़ता है। इसे मैं पसन्द नहीं करता। दुर्व्यसनता तथा चरित्र की ढिलाई में जीवन पतन की ओर ढलने लगता है। अपने बालकों के पालन में असमर्थ लोगों से रिश्वत लेना महापाप है। सद्गुणों में सादा जीवन, उच्च विचार, अच्छा चरित्र, ईमानदारी और पारस्परिक एकता है।

चौधरी साहब साम्प्रदायिकता, प्रान्त वाद, भाषा मत तथा जात पात से ऊपर उठकर राष्ट्र का उत्थान चाहते थे। इसलिए उन्होंने। गरीबी अमीरी का भेद मिटाने के लिए मण्डी एक्ट शाप एक्ट, बेनामी एक्ट, कर्जा राहत, रहन वापसी बना कर देश के लिए उद्योग को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने राष्ट्रवादी यूनियनिष्ट पार्टी बनाकर मुस्लिम-लीग का घोर विरोध किया। वे पाकिस्तान बनने के सख्त विरोधी थे और अखण्ड राष्ट्र के पोषक थे। उन्होंने १५ अगस्त १९४४ को राज गोपाला-चारी के बटवारे फार्मूले के विरुद्ध म० गांधी को एक सबल पत्र लिखा था और जिन्ना को दिल्ली मार्ग से बम्बई भगने पर विवश कर दिया।

चौ० छोटूराम अदम्य मनोबल, उदारता, दया देश धर्म के सच्चे प्रहरी थे। भारत के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लेखनीय है। हम भी शराब कबाब, रिश्वत को त्याग कर देश संगठन, भ्रातृभाव, दीन सहायता गो कृषि उत्थान और आर्यसमाज का उत्कर्ष कर उनके गुणों को सार्थक करें।

अबोहर-फाजिल्का दो या चण्डीगढ़ खाली करो

—प्रो० शेरसिंह

रोहतक ३ फरवरी हरयाणा रक्षावाहिनी के रोहतक कार्यालय से जारी की गई एक प्रेस विज्ञप्ति में चण्डीगढ़ के सम्बन्ध में कहा गया है कि चण्डीगढ़ पंजाब को दिये जाने की बात सन् १९७० में तय की गई थी जब सन्त फतेहसिंह ने स्वयं कहा था कि पंजाब को चण्डीगढ़ दे दिया जाए तो वह हरयाणा को अबोहर-फाजिल्का के क्षेत्र देने पर राजी हैं। तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व० इन्दिरा गांधी ने सन्त फतेहसिंह की इस बात को स्वीकार कर लिया था और तदनुसार अपना निर्णय दिया था। किन्तु पंजाब के तत्कालीन कांग्रेसी मुख्यमन्त्री ने इस निर्णय के बारे में कहा था कि यह निर्णय ऐसा है जैसे गन्ने के बदले में भेंस देना। पंजाब की मौजूदा सरकार उसी बात पर अब भी अड़ी हुई है।

प्रेस नोट में आगे कहा गया है कि वैसे स्वयं अकाली लीडर तथा पंजाब के दूसरे नेता भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि चण्डीगढ़ पर हरयाणा का हक जायज है किन्तु वे अपनी हठधर्मीपन के कारण जिद पर अड़े हुए हैं। हरयाणा ने राष्ट्रहित को सामने रखते हुए हर बात स्वीकार की। बड़े से बड़ा घाटा भी सहन किया किन्तु पंजाब सरकार उसको हर मामले में दबाती चली आ रही है, जो अब नहीं होगा।

प्रेस में अन्त में कहा गया है कि यदि पंजाब चण्डीगढ़ चाहता है तो अबोहर-फाल्किा के क्षेत्र हरयाणा को देने होंगे, वर्ना उसे चण्डीगढ़ खाली करने के लिए तैयार रहना चाहिये।

(दैनिक भारत जननी से)

पुस्तक समालोचना

"व्याकरणशास्त्रम्" (प्रथमखण्ड)

"व्याकरणशास्त्रम्" (प्रथमखण्ड) पुस्तक-देखने को मिली। इसके लेखक आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित सुदर्शनदेव आचार्य उप-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन श्रीमती सुशीला आर्या संचालिका संस्कृत सेवा संस्थान हरिसिंह कालोनी (सुनारियां मोड़) रोहतक की ओर से किया गया है इस ग्रन्थ में प्रक्रिया पद्धति में संज्ञा, सन्धि, षड्लिंग, कारक, समास और स्त्रीप्रत्यय प्रकरणों को अत्यन्त सरल संस्कृत भाषा में समझाया गया है। स्थान-२ पर तालिकाएं बना कर विषय को स्पष्ट किया गया है। शब्दों की कच्ची सिद्धि रख कर उनमें बड़ी कुशलता से सूत्र-योजना की गई है। षड्लिंग प्रकरण में शब्दसिद्धि के पश्चात् शब्दों के सब रूप दिए गये हैं। प्रकरण के अन्त में व्याख्येय पदावली की सूची भी दी गई है। यदि अन्त में सूत्र-सूची भी जोड़ दी जाती तो अच्छा होता। यह ग्रन्थ विशारद, मध्यमा, एम ए आदि परीक्षार्थी, छात्रों एवं अध्यापक महानुभावों के लिए अत्यन्त उपादेय है। यह पुस्तकालयों के लिए भी संग्रहणीय ग्रन्थ है। इसमें पांच सौ पृष्ठ हैं और एक प्रति का मूल्य ५० रु० है। ऐसा परिश्रम संस्कृत में प्रथम बार हुआ है। मैं पण्डित सुदर्शनदेव आचार्य को उनकी इस सरल कृति के लिए बधाई देता हूं।

सत्यवीर शास्त्री,
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

अबोहर फाजिल्का क्षेत्र शीघ्र हरयाणा को दिया जाये

—प्रो० शेरसिंह

२६ जनवरी १६८६ से पजाब समझौते के अमल मे गतिरोध पैदा हो गया। मैथ्यू आयोग ने ८३ गाव और २ नगर (फाजिल्का) तथा अबोहर) हिन्दी भाषी तो मान लिये और अपना काम इस दृष्टि से पूरा कर दिया। आयोग का काम था हिन्दीभाषी इलाके निश्चित करके सरकार को बताना, जिससे कि चण्डीगढ के बदले मे वे इलाके हरयाणा को दिये जा सके। परन्तु आयोग अपने अधिकार की सीमा से बाहर चला गया और उसने यह कह दिया कि क्योंकि कन्दूखेडा नई जाच के आधार पर पजाबी भाषा साबित हुआ, इसलिये फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा से नही जुडता इसलिये आयोग यह इलाका हरयाणा को देने की सिफारिश नही करता। पजाब समझौते में यह स्पष्ट लिखा है कि चण्डीगढ और उसके बदले दिये जाने वाले इलाको का तबादला एक साथ होगा। इसलिये चण्डीगढ पजाब को देने का मामला भी स्थगित करना पडा।

प्रो० शेरसिह ने आन्तरिक सुरक्षा मन्त्री श्री अरुण नेहरु से मुलाकात की और इस सम्बन्ध मे जल्दी फैसला करके, फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा को दे, ताकि अबोहर फाजिल्का के लोगो मे जो भय और रोष फैला है वह समाप्त हो और उनके साथ जो अत्याचार पजाब सरकार पिछले १५ वर्षो से करती आरही है उनसे राहत मिले।

प्रो० शेरसिह ने प्रधान मन्त्री को एक और पत्र ३० जनवरी को लिखा है और उसमे कहा है कि आयोग अपने अधिकारो की सीमा मे नही रहा और उसने गलत सिफारिश कर दी। यदि कन्दूखेडा पजाबी भाषी है तो भी हरयाणा को देना चाहिये, क्योंकि चण्डीगढ हिन्दी भाषी होते हुए पजाब को दिया जाना है। जब ८००० करोड की कीमत का हिन्दी भाषी शहर जो हरयाणा का बनता है, वह पजाब को दिया जा सकता है तो एक छोटा सा कन्दूखेडा गाव हरयाणा को क्यो नही दिया जा सकता। न भी दिया जाये तो भी ८३ गाव और २ शहर तो एकदम दिये जा सकते हैं। सवाल तो केवल उस गाव मे से हरयाणा वासियो के गुजरने का है। यह देश तो एक है और सभी प्रान्तों के लोग एक दूसरे प्रान्त मे खुले तौर पर आते जाते हैं, फिर हरयाणा के लोगो को कन्दूखेडा मे से गुजरने से कैसे रोका जा सकता है। यदि ऐसा होने लगे तो हरयाणा भी पजाब के लोगो को अपने इलाके मे से गुजरने से रोक सकता है। फिर देश की एकता और शान्ति कैसे रहेगी?

अपने पत्र मे प्रो० शेरसिह ने पानी के लिए जिस न्यायाधिकरण का गठन किया है उसके बारे मे भी लिखा है कि उस न्यायाधिकरण को पजाब पुनर्गठन कानून १६६६ को आधार मानकर पहिले रावी व्यास मे हरयाणा और पजाब का भाग निश्चित करना चाहिये और फिर जो पानी उन्होने अब तक इस्तेमाल किया है उसकी जाच करले। बाकी बचे हुए पानी को इस्तेमाल करने के बाद जितना हिस्सा बचता है उतना ही देना चाहिये। यदि पजाब ने अपने हिस्से का पानी पहिले ही इस्तेमाल कर लिया तो उसको बाकी पानी मे से बिल्कुल नही मिलना चाहिये।

प्रो० शेरसिह ने यह भी लिखा है कि अमृतसर के गुरुद्वारे की घटनायें तो अकालियो का एक नाटक है। यदि नाटक न होता तो १०० गोलिया चलने पर भी कोई व्यक्ति क्यो नही मरा? ज्ञानी जैलसिंह आदि का पथ से बहिष्कार किया तब बरनाला, तोहडा जिनको पथ का गद्दार कहा गया है उनका बहिष्कार क्यो नही किया गया? यह नाटक तो भारत सरकार पर दबाव डालने के लिए है, जिससे हरयाणा को फाजिल्का अबोहर न मिले और पजाब को चण्डीगढ मिल जाये ताकि वे उग्रवादियो को सिखो से अलग कर सके।

प्रो० शेरसिह ने कहा कि यदि यह नाटक नही है तो बरनाला सरकार कानून व्यवस्था रखने मे असफल रही है और उसके देखते-देखते राष्ट्रीय झण्डा जलाया गया है तथा खालिस्तान का झण्डा लहराया गया है। यदि लोग इसी प्रकार मारे जाते रहे, गुरुद्वारो पर फिर से उग्रवादियो और देशद्रोहियो का कब्जा होगया, और राष्ट्रीय झण्डे का अपमान होता रहा तथा खालिस्तान का झण्डा लहराया जाता रहा और नारे लगाये जाते रहे तो देश की एकता को खतरा फिर से पहिले से भी अधिक हो जायेगा। इसलिये बरनाला सरकार को अब और देर नही करनी चाहिए और अपनी विफलता को स्वीकार करके त्याग पत्र दे देना चाहिये।

समय आ गया है जब भारत सरकार यह चेतावनी पजाब भारत सरकार को दे। हरयाणा के हितो की रक्षा करके देश की एकता की रक्षा करे और लिक नहर का काम भी शीघ्र अपने हाथ मे लेकर उसका काम १५ अगस्त १६८६ तक पूरा करे।

मैथ्यू आयोग की उपलब्धियाँ

मैथ्यू आयोग ने दो बाते मान ली हैं।

(१) १६८१ की जनगणना धोखा तथा एक मजाक था।

(२) चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का के अलावा और कोई क्षेत्र देने की बात सोची भी नही जा सकती। —प्रो० शेरसिह

नववर्ष

आज कल एक प्रथा चल पडी है कि लोग पहली जनवरी को नववर्ष मानकर शुभ कामनाए, मित्रों तथा सम्बन्धियो को भेजते हैं। हालाकि हमारा नया वर्ष विक्रमी सवत् से आरम्भ होता है, मैं यह निवेदन करना चाहता हू कि आप सब सज्जन विक्रमी सवत् पर अपने मित्रो तथा सम्बन्धियो को नये साल की शुभ कामनायें भेजे। इस के लिये कार्ड छापे जा रहे हैं। जो बिना हानि लाभ के बेचे जावेगे। सब से प्रार्थना है कि अधिक सख्या मे मगवाकर अपनी सस्कृति का प्रचार और प्रसार करे। मूल्य १० पैसे।

डा० देशराज खीरवाट
द्वारा—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

दक्षिणी ध्रुव पर सत्यार्थप्रकाश का पाठ

गत वर्ष श्री चान्दसिह आर्य भारत सरकार को ओर से ८० वैज्ञानिको के साथ अनटार्कटिक भूगर्भीय खोज के लिए गये तो सत्यार्थप्रकाश भी साथ ले गये। वे प्रतिदिन सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करते हैं। दक्षिणी ध्रुव पर तापमान—२० सैलसियस रहता है तथा जीवन विद्युत्-उत्पादको द्वारा ही सम्भव होता है। श्री चान्दसिह आर्य १८ महीनो के बाद भारत लौटेंगे।

श्री चान्दसिह आर्य की वैदिक-धर्म मे अगाध निष्ठा है। वे अथक परिश्रमी, ईमानदार, स्वाध्यायशील तथा सच्चे देशभक्त हैं। इसी २६ जनवरी को उन्हे भारत के राष्ट्रपति द्वारा नौ सेना मंडल से विभूषित किया गया है। यह आर्यजनता के लिए हर्ष का विषय है।

डा० करतारसिंह आर्य, रोहतक।

हरयाणा के आर्यसमाज सावधान !

आप इस बात से भलीभांति परिचित हैं खेतों को तो पानी तब दिया जावे जब पहले शहरों व गाव में पीने तक का पानी उपलब्ध नही होता । रोजमर्रा में काम आने वाली चीजों तेल, आटा आदि को मजाक बनाकर नाटकीय ढग से घटा बढा कर देश के जीर्ण शीर्ण कराहते घायल जिस्म पर नमक छिड़का जा रहा है । दूसरी तरफ अश्लीलता नग्नता के खुले नगे नाच को टी. वी रेडियो पोस्टर नावल कैबरे डासो के माध्यम से निमन्त्रण दिया जा रहा है । हरयाणा जैसे छोटे प्रान्त मे जहा सरकार प्रति व्यक्ति जीने के लिए दो घूट पानी का इन्तजाम नही कर पाती वहा सरकार शराब तो इतनी जुटा सकती है कि पानी की जगह पीने को बजाय व्यक्ति ठाठ से स्नान कर सकता है । इसका नमूना आप देख रहे हैं कि गाव-गाव मे शराब ठेको की भरमार है जबकि कोई भी गाव इसे चाह नही रहा है जबरन लोगो को बर्बाद करने के लिए ठेके थोप दिये गये हैं तथा इसके लिए लोगो को ही दोषी ठहराया जा रहा है । जबकि व्यक्ति दो जून की भूख को दूर कर उभर नही पा रहा है । यह सब दोहरी नीति का परिणाम है । मैं यह समझता हू कि इस अवस्था मे सरकार से हम यह अपेक्षा रखे कि वह शराब ठेको को बन्द कर देगी यह केवल स्वप्नमात्र होगा । हमे स्वय ही इसके लिए कुछ करना होगा । इसके लिए सूचनार्थ आपको अवगत किया जाता है कि फिलहाल जो पचायते, आर्यसमाजे व नौजवान साथी गाव से शराब ठेको को बन्द करने के लिए कटिबद्ध है वे शीघ्राति-शीघ्र Reminder अपने जिलो के उपायुक्त महोदय व उपआबकारी व कराधान आयुक्त दे देव । मार्च मे उठनेवाले शराब के ठेको की बोली लगने से पहले अर्थात् एक-दो मास से ठेको पर धरने की तैयारी करें । अब की बार सैकडो गावो मे शराब ठेको को बन्द करने के लिए लोग जगह जगह धरने देगे । अत मेरा आर्यसमाजो, पचायतो व नौजवानो से अनुरोध है कि अवश्य ही आप अपने गाव व पड़ौस मे शराब ठेको को उखाडने मे पूर्ण शक्ति से लग जावे । इसी आशा विश्वास के साथ ।

महेन्द्र शास्त्री
महोपदेशक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

मेवात मे गोवध रोकने का संकल्प

पुनहाना रविवार २ फरवरी, १९८६ मेवात मण्डल द्वारा आयोजित पूरे मेवात क्षेत्र के प्रतिनिधियो का एक सम्मेलन इस क्षेत्र मे बढते जा रहे गोवध को रोकने के लिये प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । मेवात क्षेत्र मे गोवध बन्द करने, बूचडखाने को बन्द करवाने तथा सगठित होकर इस क्षेत्र को मुल्लाओ को साम्प्रदायिकता आदि से बचाने, आर्यसमाज का प्रचार तेज करने आदि के सम्बन्ध मे प्रस्ताव पारित किये गये । इन सब कामो को चलाने के लिये इस क्षेत्र के हिन्दुओ का मजबूत सगठन बनाकर इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिये उपस्थित सभी प्रतिनिधियो ने सकल्प लिया । सभी पालो (खापों) तथा बिरादरियो के प्रतिनिधियो की एक बैठक १३ फरवरी, १९८६ बसन्त पचमी के दिन होडल मे होगी । उसी दिन सगठन बनाकर उसके पश्चात् एक सारे मेवात और समीपवर्ती क्षेत्रो की बडी पचायत होगी, जिसमे मेवो के प्रतिनिधि भी बुलाये जायेगे । पचायत के द्वारा गोवध निषेध कानून को लागू करने के लिए ठोस कदम उठाये जायेंगे और हरयाणा सरकार से भी एक निश्चित तारीख तक कानून पर पूरा अमल करने के लिये प्रार्थना की जायेगी । यदि मेवो की ओर से तथा सरकार की ओर से अपेक्षित सहयोग नही मिला तो आन्दोलन का बिगुल बजा दिया जायेगा । सारे क्षेत्र को हिन्दू जनता, मेवात मण्डल आदि अनेक सस्थाये, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से आन्दोलन चलायेगी और जब तक कानून पर पूरी तरह अमल नही होगा, वह आन्दोलन जारी रहेगा ।

क्षेत्र के सभी गणमान्य नेता उपस्थित थे और सब ने खुलकर अपने सुझाव दिये । खुले विचार विनिमय के पश्चात् अध्यक्ष के सुझावो के आधार पर यह योजना तैयार की गई ।

पोप पाल के आने पर धर्मान्तरण की छुट नही—

प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री का आर्यसमाज के शिष्टमण्डल को आश्वासन

पोप पाल के भारत आगमन पर बडे पैमाने पर आदिवासियो के धर्मान्तरण के समाचार से भारतीय जनता मे व्याप्त असतोष को देखते हुए श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी गृहमन्त्री श्री चव्हाण और आतरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री श्री अरुण नेहरू से मिला और उन्हे एक ज्ञापन दिया कि पोप पाल के आगमन पर ऐसे किसी धर्मान्तरण की छूट नही दी जाएगी । सरकार इस विषय में पूरी तरह सावधान है । राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को भी ज्ञापन दिया गया ।

गृहमन्त्री ने वायरलैस से बिहार राज्य सरकार को इस विषय मे पूरी सावधानी बरतने का आदेश दिया । श्री अरुण नेहरू ने दृढता पूर्वक कहा कि ऐसा कोई तमाशा नही होने दिया जाएगा । प्रधानमन्त्री ने कहा कि मैं गृहमन्त्री और आतरिक सुरक्षा मन्त्री के आश्वासन का पूरी तरह समर्थन करता हू ।

शिष्टमण्डल मे हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री डा० धर्मपाल आदि सम्मिलित थे ।

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा संस्थाओं के वार्षिक उत्सव

कन्या गुरुकुल खानपुर कला जि० सोनीपत	८ फरवरी
आर्यसमाज दिसावर खेडी जि० रोहतक	१२, १३ ,,
आर्यसमाज खानपुर कलॉ जि० सोनीपत	२२, २३ ,,
आर्यसमाज ओरगाबाद मित्रोल जि० फरीदाबाद	२१, २२, २३ ,,
आर्यसमाज मनाना जि० करनाल	२८ फरवरी १, २ मार्च
आर्यसमाज नीलोखेडी जि० करनाल (ऋषिबोधोत्सव)	४ से ८ मार्च
आर्यसमाज नरवाना जि० जीन्द	७, ८ ,,
आर्यसमाज नई कालोनी गुडगाव	८ से १३ ,,
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)	८,९ ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	१४, १५, १६ ,,
आर्यसमाज सालवान जि० करनाल	२१, २२, २३ ,,
आर्यसमाज कन्धार जि० कुरुक्षेत्र	२६, २७, २८ ,,
कन्या गुरुकुल मोर माजरा जि० करनाल	२८, २९, ३० ,,
आर्यसमाज मवाना जि० जीन्द	२८, २९, ३० ,,
आर्यसमाज कौल जि० कुरुक्षेत्र	४, ५, ६ अप्रैल
आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत	३० मार्च से ७ अप्रैल

हरयाणा के आर्यसमाजो तथा गुरुकुलो के अधिकारियो से निवेदन है कि जो अपने वार्षिक उत्सव फरवरी, मार्च तथा अप्रैल मास मे रखना चाहते है वे ऊपर लिखित उत्सवो की तिथियो को दृष्टि मे रखते हुए अपनी तिथियाँ नियत करके सभा को सूचित करे ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे ।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री

लन्दन मे क्रान्तिकारियों का गुरुकुल

—ओमानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द के प्रियतम शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा काठियावाड राज्य के थे। ये संस्कृत भाषा के धुरन्धर विद्वान् थे। महर्षि दयानन्द जी से अष्टाध्यायी संस्कृत व्याकरण को पढा था। महर्षि दयानन्द ने विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ ही लन्दन भेजा था। महर्षि दयानन्द के साथ इनका पत्रव्यवहार भी था। यह सुशिक्षित तो था ही इसने अपने पुरुषार्थ से पर्याप्त धन भी इकट्ठा कर लिया था। इसने बम्बई से विलायत (इङ्गलैंड) मे जाकर १९०५ की जनवरी मे भारत स्वराज्य सभा (India Home Rule Society) स्थापित की और उसके प्रधान भी स्वयं अपने आप श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा बने और सभा की मुख्य पत्रिका 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट' निकाली जिसका मूल्य एक आना मासिक रक्खा। इसका उद्देश्य "भारत के लिये स्वराज्य प्राप्त करना और यथासम्भव हर प्रकार से विलायत मे वास्तविक प्रचार करना" था।

घोषणा

दिसम्बर सन् १९०५ मे कृष्ण वर्मा ने घोषणा की कि उसकी इच्छा है कि एक एक हजार के छः वजीफे योग्य भारतीयो को विदेश भ्रमण के लिये देवें जिससे लेखक सम्पादक आदि अमरीका और योरुप देखकर इस योग्य हो जाये कि भारत मे स्वतन्त्र और राष्ट्रीय एकता के विचार फैला सकें। उसने एक पत्र और प्रकाशित किया जिसका लेखक पैरिस का एक भारतीय आर० एस० राना था। उसने दो-दो हजार की तीन छात्रवृत्तियां विदेश भ्रमण के लिए महाराणा प्रताप, शिवाजी और तीसरी किसी एक बडे मुसलमान राजा के नाम पर रखकर देने का वचन दिया।

लन्दन मे भारतीय भवन (गुरुकुल)

कृष्ण वर्मा ने उपरिलिखित कार्यपूर्ति के लिए *भारतीय भवन* की स्थापना की और इसमे प्रशिक्षण के लिये कृष्ण वर्मा ने कुछ विद्यार्थी (रगरूट) भर्ती किये जिन में से एक विनायक दामोदर सावरकर था। यह महात्मा तिलक का पत्र कृष्ण वर्मा के नाम लेकर गया था। पहली छात्रवृत्ति वर्मा जी की वीर सावरकर को मिली और वर्मा जी के क्रान्तिकारी गुरुकुल का प्रथम छात्र बना। वीर सावरकर की आयु उस समय केवल २२ वर्ष की थी। यह चित्तपावन ब्राह्मण बी० ए० पास करके पूना मे आया था। इसकी जन्मभूमि नासिक थी। उन दिनो महाराष्ट्र मे एक महात्मा अगम्य गुरु परमहंस (सन्यासी) थे जो भारतवर्ष मे घूमकर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध बेधडक व्याख्यान दिया करते थे और अपने श्रोताओ से कहते थे कि सरकार से मत डरो। इनकी प्रेरणा से पूना मे विद्यार्थियो ने एक सभा बनाई जिसका मुखिया वीर सावरकर को उन्होने चुना। इसी महात्मा जी के परामर्श से कार्य करने के लिए ९ व्यक्तियो की समिति बनाई। इस प्रकार वीर सावरकर देशभक्ति के रंग मे रंगे हुए थे और अंग्रेजी राज्य के कट्टर विरोधी बन चुके थे। इसी कारण महात्मा तिलक जी ने उन्हें श्याम जी कृष्ण वर्मा के पास लन्दन भेज दिया।

कृष्ण वर्मा का खोला हुआ भारतीय भवन सन् १९०६ और १९०७ मे राजद्रोह का नामी केन्द्र बन चुका था, और जुलाई १९०७ मैं इसके विषय में पार्लियामेंट मे एक प्रश्न भी हुआ और पूछा गया कि सरकार का कृष्ण वर्मा के विषय मे क्या इरादा है? कुछ दिनो पश्चात् सम्भव है इसी पूछताछ के कारण वर्मा जी लन्दन छोडकर पैरिस चले गये और वहीं रहने लगे। पैरिस मे राजद्रोह का कार्य वे अधिक खुलकर करने लगे किन्तु अपने पत्र 'इण्डियन सोशियालोजिस्ट' को अब भी इङ्गलैड में ही छपवाते रहे। प्रकाशक पर १९०९ में मुकदमा चलाया गया और उसे सजा हुई। छपाई का भार फिर दूसरे व्यक्ति ने अपने ऊपर लिया। उसका भी १९०९ मे वही हाल हुआ। उसे एक वर्ष का कारावास हुआ। फिर पत्र पैरिस मे छपने लगा। कृष्ण वर्मा अपने मित्र एस० आर० राना द्वारा भारतीय भवन लन्दन से सम्बन्ध रखता रहा और उसके कार्यक्रम को चलाता रहा। राना इस कार्य के लिये निरन्तर लन्दन आता जाता रहा। इसी कृष्ण वर्मा के गुरुकुल मे ही लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय, मदनलाल धींगडा देशभक्त युवक भारत से आकर (भारतीय भवन) लन्दन मे रहकर क्रान्ति का प्रशिक्षण लेते रहे। यह सब एक प्रकार से कृष्ण वर्मा के क्रान्तिकारी शिष्यो की मण्डली थी जिन्होने इङ्गलैंड अमरीका आदि देशो मे भारत की स्वतन्त्रता के अनेक प्रकार के वीरतापूर्ण कार्य किये। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा इस प्रकार का प्रचार करते थे। दिसम्बर सन १९०७ के उनके इण्डियन सोशियालोजिस्ट मे निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुआ—

"ऐसा प्रतीत होता है कि भारतवर्ष मे आन्दोलन खुल्लमखुल्ला नहीं करना चाहिये—अंग्रेजी सरकार को होश मे लाने के लिए जोर-शोर से रूसी नीति को काम मे लाना चाहिये। यहाँ तक कि अंग्रेजी अत्याचार ढीला हो जाये और वे देश से भाग निकलें। अभी कोई नहीं कह सकता कि किन किन नियमो पर चलना पडेगा और किसी विशेष साध्य के लिये हमारी कार्यप्रणाली क्या होगी, यह सब देश और काल के अनुसार ठीक करना पडेगा—हाँ सम्भवत साधारण नियम यह होगा कि रूसी नीति पहले अंग्रेजी अफसरो के लिए नहीं, बल्कि देशी अफसरो के लिये काम मे लाई जाएगी।"

भारतीय भवन की कार्यवाही

सन १९०८ की मई मे 'भारतीय भवन' मे गदर अर्थात सिपाही युद्ध का स्मृति दिवस मनाया गया। निमन्त्रण-पत्र भेजे गये और लगभग १०० हिन्दुस्तानी विद्यार्थी जो कि ब्रिटिश द्वीपो के भिन्न-भिन्न भागो मे सफर करके आये थे शामिल हुए। इसके थोडे ही दिनो बाद 'ऐ शहीदो!' शीर्षक एक पर्चा आया, जो उनकी याद मे था, जो कि सन १८५७ मे मारे गये थे। मतलब यह कि इस प्रकार पहली बार भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध का स्मारक मनाया गया। पर्चा फ्रांसीसी टाइप मे छपा था और इसमे सन्देह नहीं कि कृष्ण वर्मा की जानकारी मे यह सब काम हुआ था। कुछ प्रतियां, जो कि मद्रास के एक कालेज मे पाई गई। लन्दन के दैनिक पत्र "डेली न्यूज" मे लिपटी हुई थी अत एव यह स्पष्ट है कि पर्चे लन्दन मे ही बाँटे गये थे। भारतीय भवन मे आने वालो को इस पर्चे की और 'घोर चेतावनी' नामक एक और पुस्तिका की प्रतियाँ, यह कह कर मुफ्त दी जाती थी, कि वह अपने मित्रो के पास भारतवर्ष भेज दें। इस वर्ष भी मार-काट की नीति का प्रचार *भारतीय भवन* की सभाओ में बराबर होता रहा।

जून सन १९०८ मे एक हिन्दू ने, जो कि लन्दन विश्वविद्यालय में पढा करता था। 'भारतीय भवन' मे "बम" पर व्याख्यान दिया। उसने व्याख्यान मे बम का प्रयोग करना उचित बताया और यह भी बताया कि बम किन-किन चीजो से बनाया जाता है। उसने कहा कि "जब श्रोताओ मे से कोई अपने जीवन की भी परवाह न करके इसे प्रयोग करने के लिये उद्यत हो जाय तो वह मेरे पास आवे, मैं उसे पूरा नुस्खा बता दूंगा।"

सर कर्जन वाइली का खून

सन् १९०९ मे विनायक सावरकर 'भारतीय भवन' का नेता माना जाने लगा और वहाँ यह प्रथा सी चल गई कि साप्ताहिक सभाओ मे उसकी पुस्तक "सन १८५७ का भारतीय स्वतन्त्रता का युद्ध—लेखक एक भारतीय राष्ट्रवादी" का पाठ हुआ करे। इन वर्ष 'भारतीय भवन' के सभासद् लन्दन मे एक पहाडी पर बन्दूक चलाने का अभ्यास करने लगे और पहली जुलाई सन १९०९ को 'भारतीय भवन' के सभासद् मदनलाल धींगरा नामक युवक ने साम्राज्य विद्यालय की एक सभा मे भारत सचिव कार्यालय मे राजनैतिक एडिकाँग सर कर्जन वाइली का खून कर दिया। इस प्रकार अंग्रेजी राज्य की जड उखाडने का कार्य कृष्ण वर्मा की संस्था ने किया।

"स्वराज्य तभी सम्भव हो सकता है, जब हिन्दू इतने अधिक सगठित और शक्तिशाली हो जाय कि नौकरशाही तथा मुस्लिम धर्मोन्माद का मुकाबला कर सकें।"

—वीर सावरकर

"हरयाणा के हितो की रक्षा हेतु एवं शराब, दहेज प्रथा बन्दी तथा वेद प्रचार के लिए"

१६ से २३ फरवरी तक (१९८६)

आर्य नेताओं तथा आर्य उपदेशकों का तूफानी दौरा

हरयाणा प्रदेश आजकल भयकर परिस्थितियो तथा समस्याओ से गुजर रहा है। राजीव लौंगोवाल पंजाब समझौता तथा मैथ्यू आयोग का निर्णय चर्चा का विषय बना हुआ है। सतलुज-यमुना लिक नहर की खुदाई बन्द पडी है। ३५ लाख फुट एकड पानी न मिलने से हरयाणा को प्रतिदिन ८० लाख रुपये की हानि उठानी पड रही है। चण्डीगढ़ तो पंजाब को देने की तैयारी की जा रही है परन्तु हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने में एक ग्राम कन्दूखेडा रुकावट बना रखा हैं। शाह-आयोग ने चण्डीगढ एवं खरड़ तहसील को हिन्दी भाषी मानकर हरयाणा को देने का निर्णय किया था।

हरयाणा मे शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराइयां दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। सरकार ने शराब के ठेको का जाल बिछा रखा है। इस कारण ग्रामीण किसान तथा मजदूर बर्बाद हो रहा है।

आर्यसमाज राष्ट्र रक्षा कार्यो तथा समाज सुधार कार्यो मे सदा अग्रणी रहा है अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दिनाक १६ फरवरी से २३ फरवरी, १९८६ तक शराबबन्दी तथा दहेज की लानत को समाप्त करने एवं हरयाणा के हितो की रक्षा हेतु जन-जागरण करने और वेदप्रचार करने हेतु कार्यक्रम बनाया गया है। परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह और सभा के उपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री, ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री, श्री अर्जुनदेव सिद्धान्त शास्त्री, सभा की भजन मण्डलियां, श्री पं० ईश्वरसिह तूफान, पं० सुमेरसिह आर्य, श्री पं० तेजपाल एक सप्ताह तक प्रचारार्थ तूफानी दौरा कर रहे हैं। अतः आर्यसमाजें निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार इस अवसर पर यज्ञ तथा प्रचार कार्यक्रम की व्यवस्था करके रचनात्मक कार्यो मे सभा को सहयोग प्रदान करें।

१६ से २३ फरवरी तक प्रचार कार्यक्रम जिला रोहतक

दिनाक	समय प्रात ९-०० से १२-००	समय दोपहर बाद २-००से ५-००	समय रात्रि ७-०० से १०
१६ फरवरी			मोखरा (रोहतक)
१७ फरवरी	पाकस्मा, आसन	भालौट	बलियाणा ,,
१८ फरवरी	कन्माला	सिलाना (सोनीपत)	रोहणा, हसनगढ
१९ फरवरी	फरमाणा (सोनीपत)	भटगाव (सोनीपत)	मुहाना (सोनीपत)
२० फरवरी	दूबलधन (रोहतक)	माजरा दूबलधन (रोहतक)	डीघल, भज्जर
२१ फरवरी	कोसली	बिरोहड	ढाकला
२२ फरवरी		औरगाबाद मित्रोल (फरीदाबाद)	
२३ फरवरी	रोहतक अन्तरग सभा तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी बैठक	आर्यसमाज प्रेमनगर, जेल रोड, (रोहतक)	

इस प्रकार के प्रचार कार्यक्रम अन्य जिलो के लिए सभा की अन्तरंग बैठक मे तैयार किये जायेंगे।

निवेदक
महाशय भरतसिह वानप्रस्थी, वेदप्रचार अधिष्ठाता
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, रोहतक।

ईसाई धर्म प्रचारकों की संदिग्ध गतिविधियां

—भुवनेश्वर

धर्म-प्रचार की चादर ओढ़कर कुछ ईसाई पादरी जिन राष्ट्र विरोधी कार्यों मे सलग्न हैं उसे नजर अन्दाज नही किया जा सकता। वैसे भारत अपनी सहज धार्मिक उदारता के लिये पुरातन काल मे ही प्रसिद्ध रहा है। यह अच्छी बात है, लेकिन इसे उसकी दुर्बलता कह कर न केवल इसके उपहास की ही चेष्टा की गयी है वरन उससे अनुचित लाभ भी उठाया जाता रहा है। यह देश आज भी अपनी उसी नीति पर दृढ हैं परन्तु कई ईसाई धर्म-प्रचारको के कार्य और इनकी गतिविधिया आज अपनी तीव्र सम्भावनाओ के साथ ऐसी अशुभ स्थिति की ओर इगित करने लगी हैं जिसका सम्बन्ध देश की आत्म-रक्षा तथा आत्म-सम्मान की भावना मे है। इसी से इस प्रश्न पर नये सिरे से विचार जरूरी हो गया है।

यह धर्म-प्रचारक काफी समय से इस देश में सामाजिक एव धर्म-प्रचार का कार्य करते रहे हैं। दक्षिण का सीरियन चर्च हजार वर्ष पुराना है। कैथोलिक चर्च की अवस्था भी साढे तीन-चार सौ वर्षों की होगी ही। प्रोटेस्टेन्ट मत के विभिन्न दलो को भी कार्य करते हुए डेढ सौ वर्षों से अधिक हो गये। प्रारम्भ में ईसाई धर्म-प्रचारक अपनी कार्यवाई को केवल धर्मोपदेश तक ही सीमित रखते थे। परन्तु पिछले तीन सौ वर्षो से उनके इस धर्म-प्रचार का रूप परिवर्तित होने लगा।

विदेशी सत्ता के जमने के साथ ही यह प्रवृत्ति उन्हें प्रेरणा देने लगी कि पूर्व की पिछडी जाति के लोगो को सुधारने का भार ईश्वर ने विशेषतया उन गोरे लोगो के कन्धो पर ही छोडा है। धीरे-धीरे धर्म प्रचार की योजना मे विजेता का दर्प भी सम्मिलित हो गया। भ्रांति, ईर्ष्या तथा घृणा इनके प्रचार के आधार बन गये। भारतीय संस्कृति की विशिष्टताओ की भर्त्सना, भारतीय जीवन के उच्चादर्शों की निन्दा, यहा के धार्मिक कृत्यो की कुछ बातो को ही अपना लक्ष्य बनाकर अबोध, असहाय जनता के हृदय में भारत के प्रति कुत्सा और ग्लानि उत्पन्न करना ही वे अपना धर्म समझने लगे।

इस देश के लगभग एक करोड ईसाइयों में ऐसे लोगो की सख्या नगण्य ही होगी जो धर्मविशेष के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् एक धर्म को छोडकर दूसरे में प्रविष्ट हुए हो। अधिकाश के लिये मुख्य आकर्षण भौतिक ही अधिक था। यह आकर्षण था सम्पत्ति और सुन्दरी का पद और प्रतिष्ठा का कर्ज सुरक्षा और पेशन का। यह सत्य है कि हिन्दुओं की अपनी उपेक्षा नीति ने भी उन्हे विजातीय बनाने के लिये बाध्य किया। समाज के कुछ अन्त विरोधो के कारण अशिक्षा तथा अज्ञान के अन्धकार मे पडी जनता उनके प्रभाव मे आती गई।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि इन विदेशी धर्म प्रचारको ने ईसाई धर्म को भी पश्चिमी बना दिया। ईसाई धर्म का जन्म पूर्व, अर्थात् एशिया में हुआ पर जिस प्रकार राजनीति अर्थ-व्यवस्था, सास्कृतिक परम्परा, जीवन के स्तर और दृष्टिकोण ही पाश्चात्य तथा प्राच्य दो वर्गों मे बट गये उसी प्रकार इन लोगो ने ईसाई धर्म को भी हमारे सम्मुख अलग ढग से रखा है। धर्म को यह रूप देकर भारतीय ईसाइयो की देश-भक्ति की भावना को कुचलने और उन्हें राष्ट्र विमुख बनाने का प्रयास किया गया। इस दुष्प्रचार के कारण कई जगह वे खुद को अलग राष्ट्र व अग्रेजी को मातृ-भाषा बताने लगे।

यह सब होता रहा विदेशी पूजी के सहारे। ईसाई मिशनरियो के विद्यालय, चिकित्सालय, अनाथालय, कृषि तथा इजिनियरिंग के सुव्यवस्थित रूप से चलते हैं। इन्हे कानूनी सरक्षण मिलता है। लोक-हित के इन कार्यों के प्रति जनता का, विशेषत पिछडी जनता का, आकर्षण स्वाभाविक ही है। यही वह मोहक पाश है जिसमे वह बन्ध जाते हैं।

विदेशी धन के खुले उपयोग के साथ ही कई वर्षों से देश का धन विदेश भेजने का अराष्ट्रीय कार्य भी यह धर्म प्रचारक करते रहे हैं। जब यह विदेशी पहले पहल भारत मे आये तो गिरजाघर और पूजा-स्थान के लिये कुछ तो सरकार के दबाव से और कुछ जमीदारो, राजा-महाराजाओ के दान के कारण बिना मूल्य अथवा नाम-मात्र के मूल्य पर उन्हे विस्तृत जमीन के टुकडे मिल गये। समय के साथ इनकी कीमतो मे आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। जो सम्पत्ति मिट्टी मोल या दान रूप मे प्राप्त हुई थी, उसे यह धर्म प्रचारक कई वर्षों से लाखो और करोडो मे बेच रहे हैं। हमारी जायदाद हमारे ही हाथो बेच कर सारा धन किसी न किसी तरीके से भारत के बाहर भेजा जा रहा है। धर्म स्थान पूजा स्थान के नाम पर जिस जमीन पर अधिकार किया गया उनमे से कितने ही गिरजाघर व्यापारगृहो तथा मधुशालाओ में परिवर्तित हो गये है।

ईसाई धम पचारको के कार्य की एक राजनीतिक भूमिका भी है जो देश की बदली हुई परिस्थिति मे महत्त्वपूर्ण है। यह सर्वविदित है कि स्वातन्त्र्य सग्राम का ईसाई मिशनरियो ने खुला विरोध किया था ईसाई सघटन के धर्माधिकारियो ने ईसाइयो को इसमें भाग लेने से हर प्रकार से रोका था। उस समय वे ब्रिटिश सरकार के भक्त थे। आज कांग्रेस सरकार के प्रति अपनी भक्ति का विश्वास वे बार-बार दिलाते हैं। सदिग्ध गतिविधियो के कारण कुछ पादरियों को देश निकाला दिया गया लेकिन कई अभी भी सक्रिय हैं।

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि यदि आज भारत और अमेरिका, इगलैंड अथवा अन्य यूरोपीय देश में जहा से यह मिशनरी आये हैं, उनसे युद्ध घोषित हो जाये तो इनकी राजनीतिक स्थिति या मान्यता क्या होगी? धर्म के प्रचार और राजनीतिक दाव-पेंच व घृणा के फैलाव मे तो अन्तर करना ही होगा।

धर्म की चादर रामनामी ओढकर यह ईसाई मिशनरी किस प्रकार राष्ट्र विरोधी कार्यों में सलग्न हैं इसका प्रमाण निर्विवाद रूप से उत्तर-पूर्व की सीमा पर मिल चुका है। वहा एक क्षेत्र विशेष मे पासपोर्ट प्रणाली लागू है जिसकी अवहेलना करने पर कुछ ईसाई मिशनरी पकडे जा चुके हैं और उन्हें दण्ड दिया जा चुका है। इनका राजनीतिक रूप भी देश के सामने आया। असम मे नागा राष्ट्रीय परिषद इन्ही की कृति थी। नागा प्रदेश और आत्मनिर्णय की माग तोते को रटा-रटाया पाठ था। यह परिषद गावो में जाकर नागाओ को जबरन ईसाई बनाती रही है और विरोध करने पर भयकर उपद्रव कराने मे भी इसे सकोच नही हुआ। अभी गत वर्ष मणिपुर और तम्फाल क्षेत्रो मे नागा परिषद के चालीस सदस्यो ने लियाई ग्राम के पास लोगो को ईसाई बनाने की चेष्टा की और आग्रह किया कि 'नागा राष्ट्र' की उन्नति के लिये इस परिषद मे सम्मिलित हो जाये। इसका विरोध करने पर ग्रामीणो को खूब पीटा गया। लोग घायल हुए। गिरफ्तारिया हुई। कगपोक्पी स्थित अमेरिकी ईसाई पादरी के पास एक छिपा हुआ नागा दुभाषिया भी पकडा गया। झारखड नागा एव मीजो विद्रोह के पीछे मिशनरियो के हाथ की जाच होनी चाहिये। सच्चाई सामने आ जायेगी।

अन्तरराष्ट्रीय वैधानिक मर्यादाओ का उल्लघन करना भी मिशनरियो ने आरम्भ कर दिया है यह रेडियो और सम्वादवाहक यन्त्र रखते हैं जिनके द्वारा देश की महत्त्वपूर्ण सूचनाए और भेद विदेशो को भेजे जाते है। यह मिशनरी हरिजनो, आदिवासियो, नागाओ तथा अन्य-वन्य जातियो मे, घूम-घूम कर उन्हे राष्ट्रद्रोह का पाठ पढा रहे हैं। राजनीतिक प्रचार कर रहे हैं। करोडो रुपये के इनके कोष व अनाज का दुरुपयोग होता है।

अपने अधिकार की माग के लिए अब यह मिशनरी मुसलमानो का नाम भी अपने साथ जोड कर गुप्त रूप मे साम्प्रदायिकता को उभारना चाहते हैं। एक उदीयमान राष्ट्र अपने यह अभिशाप कदापि सहन नही कर सकता। सरकार को धर्म के अलावा होने वाली राजनीतिक या साम्राज्यवादी हरकतो पर कडी निगाह रखनी चाहिए। (न्यूज फीचर्स)

हरयाणा के आर्यसमाजो से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा से सम्बन्धित आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि अपने आर्यसभासदो से अपने आर्यसमाज के लिए वार्षिक शुल्क उनकी आय के शताश (१/१००) के अनुसार प्राप्त करने का यत्न करे। सभा के विधान के अनुसार सभा का आर्थिक वर्ष २९ चैत्र सम्वत् २०४२ तदनुसार १० अप्रैल १९८६ को समाप्त हो रहा है। अत इससे पूर्व जिन आर्यसभासदो का वार्षिक शुल्क आर्यसमाज के कोष मे जमा हो जावे और उनकी आर्यसमाज के सत्सगो में २५%उपस्थिति रही हो तो उन्हे अन्त-रग सभा की बैठक मे आर्य-सभासद् घोषित कर दिया जावे और उनकी सूची आर्यसमाज मन्दिर के सूचनापट्ट पर चिपका दी जावे और इसकी सूची सभा के रिकार्ड के लिए रोहतक कार्यालय मे भेज दी जाये।

स्वीकृत आर्यसभासदो को वार्षिक चुनाव के लिए विज्ञापन (नोटिस) एक मास पूर्व भेजकर विधिवत् अपने आर्यसमाज के पदाधिकारियो का चुनाव करके उसकी सूचना के साथ सभा को वार्षिक वेद-प्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी का शुल्क भेज देवे। जिन आर्य समाजो से प्राप्तव्य धनराशि प्राप्त हो जायेगी केवल उनके प्रतिनिधि सभा के आगामी वार्षिक चुनाव मे भाग ले सकेगे। जिन आर्यसमाजो को इस कार्य के लिए सभा के उपदेशक अथवा भजन मण्डलियो के प्रचार की आवश्यकता हो तो तुरन्त सभा को पत्र लिखने का कष्ट करें ताकि प्रचार का कार्य-क्रम बनाया जा सके। आर्यसमाजो के उत्सव प्राय शनि से रविवार तक होते हैं। अत सोम से बृहस्पतिवार के दिनों मे प्रचार प्रबन्ध करने मे सुविधा रहेगी।

आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब का १९७५ मे आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के आदेश तथा पजाब सभा के सर्व-सम्मत प्रस्तावानुसार बटवारा हो चुका है. इस प्रकार तीनो सभाए पजाब, हरयाणा तथा दिल्ली विधिवत् अपना कार्य कर रही हैं, परन्तु कुछ पदो के भूखे जो कि सघटन को कमजोर करने तथा धन का दुरुपयोग करने के आरोपो के कारण आर्यसमाज की सदस्यता से निकाल दिए गये थे, अब भी हरयाणा मे पजाब सभा के नाम पर आर्यजनो से धन सग्रह कर रहे हैं, उनसे सावधान रहे। पजाब सभा का कार्य क्षेत्र केवल पजाब की सीमा तक ही सीमित है। आज कल पजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र तथा मन्त्री बहन कमला आर्या है और उनका कार्यालय जालन्धर (पजाब) मे है हरयाणा मे आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब का कोई कार्यालय तथा उपदेशक आदि नही और पजाब प्रतिनिधिसभा का हरयाणा मे कोई वास्ता नही है। अत हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाज पजाब सभा के नाम पर किसी को धन न देवे। आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के पास ५ उपदेशक तथा ७ भजन मण्डलिया निरन्तर प्रचार कार्य कर रही हैं। अत हरयाणा के आर्यसमाज हरयाणा सभा के प्रचारकों द्वारा ही प्रचार करवा कर अपने सघटन को सुदृढ करें।

सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री

शोक समाचार

श्री प्यारेलाल जी आर्य भजनोपदेशक ग्राम भापडोदा का २६ जनवरी ८६ को सायकाल रोहतक मे निधन होगया। इस समाचार को सुनकर सम्पूर्ण गुरुकुल झज्जर परिवार शोक मे डूब गया। आपने अपने जीवन मे गुरुकुल झज्जर के लिए प्रचार समय एव धन आदि के रूप मे अत्यधिक सहयोग दिया। अनेकवर्षों तक गुरुकुल के मन्त्री पद पर रहते हुए कार्य किया।

सभी गुरुकुल वासियो की परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे एव पारिवारिकजनो को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

म० फतहसिह भण्डारी, गुरुकुल झज्जर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क १३ २१ फरवरी १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश मे ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

प्रस्तावित शिक्षानीति के आधारभूत सिद्धान्त

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
(पूर्वनाम—प्रि० लक्ष्मीचन्द दीक्षित, पानीपत)

१- शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के शरीर, बुद्धि और आत्मा का समन्वित विकास करना है। किसी भी शिक्षा नीति मे यह भाव सर्वत्र ओत-प्रोत रहना चाहिये।

२- देश की एकता को सुदृढ करने के लिये समूचे देश मे एक सी शिक्षा नीति या शिक्षा पद्धति होनी चाहिये। शिक्षाक्रम का निर्धारण केन्द्र द्वारा तथा उसका कार्यान्वियन राज्यो द्वारा होना चाहिये।

३- प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा रहे। परन्तु देश की एकता को बनाये रखने और शिक्षा के स्तर को ऊचा रखने के लिये विश्वविद्यालय के स्तर पर देशभर मे शिक्षा का माध्यम एक अर्थात् हिन्दी को रखना अनिवार्य है।

४- सविधान की धारा ३४१ के अनुसार हिन्दी राजभाषा के रूप मे मान्य है। तदनुसार एक दिन कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका आदि सभी क्षेत्रो मे हिन्दी का व्यवहार होना है। हिन्दी को सस्कृत-निष्ठ बनाये बिना यह सभव नही होगा। उच्चतम शिक्षा के माध्यम के रूप मे भी सस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही सक्षम होगी। देश की सभी भाषाओ का मूल सस्कृत मे है। यहा के धर्म, सस्कृति, साहित्य, इतिहास और परम्पराए सभी का आधार सस्कृत है। अत नये शिक्षा-क्रम मे माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी के लिय सस्कृत के अनिवार्य विषय के रूप मे अध्ययन की व्यवस्था होनी चाहिये। इस सदर्भ मे सविधान की धारा ३५१ भी ध्यातव्य है।

५- अग्रेजी के पठन-पाठन की व्यवस्था रहे, किन्तु किसी भी स्तर पर उसका अध्ययन अनिवार्य नही होना चाहिये।

६- भारत मे सबको समान अधिकार प्राप्त है। ऐसी अवस्था मे अल्पसख्यक और बहुसख्यक का भेद देश की भावात्मक एकता मे बाधक है। कम से कम शिक्षा के क्षेत्र मे इस अन्तर के लिये स्थान नही होना चाहिये।

७- सबको अवसर की समानता प्रदान करने के लिये आवश्यक है कि सपूर्ण शिक्षा सर्वथा नि शुल्क हो। एतदर्थ अपेक्षित धन शिक्षा कर [Education cass] लगाकर जुटाया जाये।

८- ऊच-नीच की भावना को समाप्त कर समाजवाद की स्थापना के लिये आवश्यक है कि पब्लिक स्कूलो, माडल स्कूलो तथा कैपिटेशन फीस (Capitation Fee) से स्थापित अथवा सचालित स्कूलो पर तत्काल पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये।

९- म्युनिसिपल कमेटियो, सरकारी या अर्द्ध सरकारी तथा स्वयसेवी सगठनो द्वारा सचालित स्कूलो के स्तर को ऊपर उठाया जाये। उसके लिये कतिपय देशो मे प्रचलित क्षेत्रीय स्कूलो (Neighbouring Schools) की पद्धति को अपनाया जाये। जिसके अनुसार एक क्षेत्र में रहने वाले छोटे बडे, धनी-निर्धन सभी बालको को अनिवार्य रूप से अपने ही क्षेत्र पडोस मे स्थित स्कूल मे पढना होगा।

१०- सहशिक्षा पर प्रतिबन्ध होना चाहिए। यदि वैसा करना सभव न हो तो अधिक से अधिक प्राइमरी और तत्पश्चात् स्नातकोत्तर स्तर पर ही इसकी अनुमति हो।

११- १०+२ की अवधि मे अनिवार्य धार्मिक (नैतिक) शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए। धर्मनिरपेक्ष राज्य मे धार्मिक शिक्षा का आधार वेद ही हो सकता है, क्योकि सृष्टि के आदि मे अथवा प्राचीनतम होने के कारण वेद से किसी का विरोध उत्पन्न नही होता।

१२- मात्र पुस्तको के पठन-पाठन से धर्म का ग्रहण नही होता। वह जीवन से जीवन मे सक्रमित होता है। समस्त शिक्षण सस्थाओ मे धर्मशिक्षा की अनिवार्यता पर बल देते हुए केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से १ अक्तूबर १९५५ को सभी राज्यो के शिक्षा मन्त्रियो तथा विद्यालयो के कुलपतियो के नाम भेजे परिपत्र मे कहा गया था—

'The development of moral and spiritual values is basic to all educational objectives Instruction uninspired by moral and religious values will be inadequate as a preparation for democratic citizenship The central problem of moral education is that it is one person to1/4 another by living human contacts more a matter of practice than theory It is not communicated by intellectual means alone but transmitted from दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है" "Values are caught not taught स्पष्ट है कि जब तक शिक्षक "सादा जीवन, उच्च विचार और निर्दोष आचरण' वाले नही होगे, तब तक शिक्षा का उद्देश्य पूरा नही होगा और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार रहेगा। इसलिए अध्यापको के लिए इस प्रकार की आचार सहिता तैयार होनी चाहिए और उसका उल्लघन करने वालो के लिए ऐसी कठोर दण्ड व्यवस्था होनी चाहिए जिससे शिक्षा क्षेत्र मे कोई चरित्रहीन व्यक्ति प्रवेश न कर सके और आजाये तो उसे तत्काल निकाला जा सके। अध्यापको की नियुक्ति करते समय और उन्हे स्थायी करते समय जितना ध्यान उनकी शैक्षणिक योग्यता पर दिया जाये उससे कही अधिक उनके आचार-विचार पर दिया जाये।

१३- अध्यापकों के लिए मद्य, मादक द्रव्यो (शराब, तम्बाकू) आदि का सेवन करना, सिनेमा देखना आदि सर्वथा निषिद्ध होना चाहिए।

१४- शिक्षण सस्थाओ मे तथाकथित सास्कृतिक कार्यक्रमो (Cultural programmes के आयोजनो पर रोक लगनी चाहिये।

१५- प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार कालिज स्तर पर आवासीय व्यवस्था होनी चाहिये। समस्त प्राध्यापको तथा छात्रो को कालिज परिसर मे ही रहना चाहिए। ये स्थान नगरो से बाहर होने चाहिये। छात्रो पर अधिक भार न पडे—इसके लिये सरकार मे पर्याप्त अनुदान मिले।

१६- १० अथवा १०+२ के बाद विद्यार्थी की प्रवृत्ति, अध्यापकों के परामर्श तथा माता पिता की इच्छा के अनुसार निश्चित दिशा मे डाल देना चाहिये। (शेष पृष्ठ ६ पर)

रोहतक जिले में आर्यसमाज राजद्रोही ?

—ब्र० रामवीर व्याकरणाचार्य योगशिक्षक (कन्माला)

हरयाणा प्रान्त मे एकमात्र रोहतक जिला ऐसा है जिसके निवासी अधिकाश आर्य हैं। उनमे भी अधिक सख्या क्षत्रियो (जाटो) की है। जिनमे आर्यसमाज बहुत ही लोकप्रिय है, जिले के निवासी लगभग सभी अपने को वैदिक धर्मी मानते हैं। क्षात्र धर्म यहा की रग-रग मे है। आज भी यहा के प्रत्येक गाव मे सैनिको की सख्या अधिक होती है। कुछ गाव तो ऐसे भी हैं जिनमे प्रत्येक घर में एक सैनिक अवश्य होता है। यह प्राचीन परम्परा आज तक अक्षुण्ण बनी हुई है।

बात ७ जून १९१० ई० की है इस जिले से ब्रिटिश सेना में जाट बडी सख्या मे भर्ती होगये। आर्यसमाज पर राजद्रोह का सदेह करने वाली सरकार के कुछ अधिकारी यह नही चाहते थे कि सेना मे भी आर्यसमाज का प्रभाव बढे, इसलिए रोहतक मे प्राचीन परम्परा के अनुसार ढोल पीटकर यह घोषणा कर दी गई कि आर्यसमाज से सम्बन्ध रखनेवाली सभी पुस्तके सरकार द्वारा जब्त कर ली गई हैं। इस पर रोहतक आर्यसमाज के प्रधान श्री त्यादरसिह जी आर्य ने १३ जून को रोहतक के जिलाधीश (ई० ए० ए० जोसेफ) को पत्र लिखकर निवेदन किया मुझे ऐसा ज्ञात हुआ है कि पजाब सरकार ने कुछ पत्र-पत्रिकाओं पर प्रतिबन्ध लगाया है। उसकी भ्रान्तिपूर्ण व्याख्या करते हुए आर्य समाज को बदनाम करने, हानि पहुचाने के उद्देश्य से कुछ स्वार्थी लम्पट विधर्मियो ने इस प्रकार की भ्रान्तिपूर्ण घोषणा करवाई है। ऐसी घोषणा से आर्यसमाज बदनाम होगा और सामान्य जनता यह समझने लगेगी कि यह सस्था राजद्रोही है, वह अपना सम्बन्ध विच्छेद करेगी जिससे आर्यसमाज को बडी कठिनाई का सामना करना पडेगा। यदि वास्तव मे सरकार ने इस प्रकार का कोई आदेश निकाला हो तो उसका निर्देश हमे दिया जावे कि आर्यसमाज के पुस्तकालय मे स्थित पुस्तको का क्या किया जाये? यदि सरकार ने ऐसा कोई आदेश नही निकाला हो तो पहले की गई घोषणा का खण्डन किया जाये और गावो मे ढिंढोरा पिटवाकर इसका समाधान किया जाये, जिससे कि पहले की गई घोषणा का निराकरण ठीक से हो सके और इस गलत घोषणा कराने वाले व्यक्ति का पता लगाया जाये तथा उसे उचित दण्ड दिया जाये। इससे आर्यसमाज का प्रचार करनेवालो को बहुत सहायता मिलेगी।

रोहतक के जिलाधीश की ओर से उसी दिन १३ जून को ही उपर्युक्त पत्र का अतीव सक्षिप्त उत्तर देते हुए आर्यसमाज रोहतक के प्रधान को सूचित किया गया कि आर्यसमाज की पुस्तको को जप्त करने वाले किसी सरकारी आदेश का उन्हे ज्ञान नही है और न ही मैंने सरकारी घोषणा करने का आदेश दिया है।

इस घटना पर उस समय के अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने टिप्पणी की, जिनमे से कुछ के उदाहरण दिए जाते हैं। उस समय का अग्रेजी का मुख्य पत्र वैदिक मैगजीन लिखता है। इस पत्र का सहानुभूति शून्य लहजा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमे शरारतपूर्ण और झूठी घोषणा करने वाले व्यक्ति को दण्ड देने का कोई आश्वासन नही है। आर्यो को इससे जो मानसिक पीडा हुई है, उसके लिए भी कोई चिन्ता व्यक्त नही की गई। इसमे सरकार की धार्मिक तटस्थता और लाभ-दायक नीति बनाये रखने के सरकारी उद्देश्य की कोई चर्चा नहीं है, ऐसा लगता है कि इस पत्र को लिखने वाले अनुभवी सरकारी अधिकारी को विवश होकर इस पत्र का उत्तर ऐसा लिखना पडा। यदि इस का खण्डन करने की बजाए मण्डन (पुष्टि) करनी होती तो उससे अत्यधिक प्रसन्नता होती।

उस समय के भारत मन्त्री लार्ड मार्ले भारतीयों के साथ जो सहानुभूति रखने का दावा करते थे उनका कितना बढिया प्रदर्शन है। ये नौकर शाही की तथाकथित मानवीयता को भी सूचित करती है। यदि ब्रिटिश सम्राट्, उनके उदात्तमना भारत मन्त्री, वायसराय तथा पजाब के गवर्नर सर लुईस डेन जैसे महानुभावों के सहानुभूति पूर्ण इरादे पूरे किये जाते हैं तो नौकर शाही के शासन तन्त्र को सहानुभूति और मानवीयता के तत्त्वों से उदार बनाया जाना चाहिए।''

लाहौर से प्रकाशित होने वाले सुप्रसिद्ध पत्र पजाबी ने रोहतक में एक झूठी घोषणा के कारणो का विस्तृत विश्लेषण करते हुए लिखा था कि पहले दो वर्षों में रोहतक जिले में आर्यसमाज का प्रचार बडी तेजी से हुआ है। इसके परिणामस्वरूप हजारो कट्टर पौराणिक हिन्दू आर्य बने हैं। इस जिले मे समाज की अनेक शाखायें हैं। आर्यसमाज प्रचारको के प्राय पौराणिक पण्डितों के साथ मूर्ति पूजा, श्राद्ध, जन्म-मूलक जाति प्रथा आदि विभिन्न विषयों पर शास्त्रार्थ होते रहते हैं किन्तु इनसे कभी शान्ति भग नही हुई। इसका कारण यह है कि शास्त्रार्थ करनेवालो ने कभी पुलिस की सहायता नही मागी है। मुसलमान अवश्य आर्य उपदेशको से नाराज हैं। किन्तु आर्यसमाज ने उन पर आक्षेप करने मे कभी पहल नही की है। मुस्लिम प्रचारकों ने जब-जब हिन्दू धर्म पर हमले किये हैं, हिन्दुओ को मुसलमान बनाने का प्रयास किया है तभी आर्यसमाज ने इन आक्रमणो का प्रतिरोध अपने पूरे सामर्थ्य के साथ किया है। मुसलमानो को अब ब्रिटिश शासन का सरक्षण प्राप्त है। वे अपना राजनैतिक महत्त्व समझने लगे हैं। उन्हें यह विश्वास है कि वे अग्रेजो के मित्र हैं। वे आर्यो से बदला लेने के लिये जिलाधीश के पास जाने और आर्यसमाजियो के विरुद्ध कान भरने एव उन्हे राजद्रोही सिद्ध करने की पूरी कोशिश करते हैं।

मनुस्मृति के दो-एक श्लोको की प्रकरण विरुद्ध और असगत व्याख्या करके अग्रेज अधिकारियो को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि आर्यसमाज एक प्रतिक्रियावादी ऐसा धार्मिक आन्दोलन है जिसमे बडी कट्टरता है। तनिक भी सहिष्णुता नही है। यह विदेशी शासन का उन्मूलन करने के लिए कटिबद्ध हैं। ब्रिटिश अधिकारी उनके बहकावे मे आ जाते हैं और यह भूल जाते हैं कि मनुस्मृति स्वामी दयानन्द या उनके किसी अनुयायी की रचना नही है। अपितु लाखो वर्ष पुराना ग्रन्थ है यह ब्रिटिश न्यायालयो मे हिन्दुओ का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। हमे विश्वास है कि रोहतक मे आर्यसमाज विरोधियो ने ऐसा प्रचार करके अधिकारियो के कान भर दिये हैं।

रोहतक जिले मे यद्यपि आर्यों तथा मुसलमानो मे कोई तीव्र धार्मिक सघर्ष नहीं है। फिर भी यहा ऐसे मौलवी इस्लाम का प्रबल प्रचार कर रहे हैं जो आर्यो को अपना प्रबल शत्रु समझते हैं। इस विषय मे हम कोई निश्चित सम्मति नही प्रकट करना चाहते है। हमने केवल अब तक अज्ञात तथ्य प्रस्तुत किये हैं। क्योंकि जब तक वर्त्तमान परिस्थिति की सभी बातो पर विचार न किया जाये तब तक हम जिले में की हुई उपर्युक्त घोषणा के कारणों को पूरी तरह नही समझ सकते।

इस विषय मे पजाबी पत्र का यह विचार था कि यह कार्यवाही मुसलमानो ने जिला अधिकारियो मे आर्यसमाज के विरुद्ध विषवमन करके तथा झूठी शिकायते करके करवाई है। सम्भवत किसी अविवेकी अधिकारी ने आर्यसमाज से प्रतिशोध लेने के लिए झूठ मूठ ऐसी घोषणा करवादी है। किन्तु जब आर्यसमाज ने इसके बारे में जिलाधीश से सरकारी आदेश बताने के लिए कहा तो उन्हे विवश होकर सच्ची स्थिति स्वीकार करनी पडी।

उपर्युक्त प्रमाणो से यह सिद्ध होता है कि निश्चय ही कुछ सरकारी अधिकारियो का हाथ इस षड्यन्त्र मे था। विवश होकर उसकी सफाई देनी पडी। यहा के लोगों की क्षात्र प्रवृत्ति को भी ध्यान में रखा गया। सरकार से दोषी को पकडने की माग की थी लेकिन गलती मनवाकर उसका सुधार करवालेना रोहतक के आर्यसमाजियों की बहुत बडी विजय थी।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

१ आर्यसमाज शिवाजी नगर गुड़गांव

प्रधान—सर्वश्री चन्दनसिंह, मन्त्री—विद्याभूषण शास्त्री, कोषाध्यक्ष—प्रभुदयाल चुटानी। —मन्त्री

२ आर्यकुमार सभा रादौर, कुरुक्षेत्र

प्रधान—चौ० वीरेन्द्र आर्य, उपप्रधान—सजय आर्य, मन्त्री—देवेन्द्र आर्य, उपमन्त्री—पवन आर्य, कोषाध्यक्ष-अनूप आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—चौ० दलबीर आर्य, खेलमन्त्री—अरविन्द आर्य। —मन्त्री

३ वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र

प्रधान—सर्वश्री बाबूराम गुप्ता एडवोकेट, उपप्रधान—जोगीराम आर्य, युधिष्ठिरपाल, गणेशीलाल, महामन्त्री—प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी, सगठनमन्त्री—उमेदसिह, मन्त्री—आचार्य देवव्रत जी, उपमन्त्री—प्रि० राजकुमार चौहान, चौ० गजेसिह, कोषाध्यक्ष—अजमेरसिह, सरक्षक—प्रो० शेरसिह जी सभा प्रधान (पदेन), स्वामी रुद्रवेश जी, चौ० शिवराम वर्मा, चौ० विशनसिह एडवोकेट, कृष्णलाल वधवा, ला० यशपाल जी, ला० साधुराम, ला० रुलियाराम, चौ० सत्यवेदसिह, डा० अमीरसिह, ला० पदमकुमार, कार्यकारणी के सदस्य—कुरुक्षेत्र जिला की सभी आर्य सस्थाओ के प्रधान रहेगे। —मन्त्री

४ आर्यसमाज मन्दोला, भिवानी

प्रधान—सर्वश्री मा० जगनसिह आर्य, उपप्रधान—रामदत्त आर्य, मन्त्री—मा० अमीरसिह बी० एस-सी०, उपमन्त्री-रणवीरसिह पाहील, कोषाध्यक्ष—सत्यवीरसिह आर्य प्रजापत, महासरक्षक—मा० कवलसिह आर्य एम० ए०, सरक्षक—दलजीतसिह आर्य, उपसरक्षक-धर्मसिह आर्य, सचालक—चमनलाल आर्य, उपसचालक—सत्यवीरसिह आर्य, प्रचारमन्त्री—रामकिशन आर्य पाहील, उपप्रचारमन्त्री—पहलवान लेखराम आर्य। —मन्त्री

५ आर्यसमाज बेरी, रोहतक

प्रधान—सर्वश्री सूबेदार अखेराम (बेरी), उपप्रधान—रामेहरसिह (गोच्छी), राधुराम (बेरी), महामन्त्री - इन्द्रसिह (बेरी), मन्त्री-सूबेदार हरिसिह (बेरी), उपमन्त्री-राजेन्द्रसिह (डीघल), प्रचार मन्त्री-हसराज (बाघपुर), कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश (बेरी), कानूनी परामर्शदाता—हसराज वकील (बेरी) —मन्त्री

६ आर्यसमाज कौल, जि० कुरुक्षेत्र

प्रधान—सर्वश्री ताराचन्द, उपप्रधान—किशनसिह, कपूरचन्द वर्मा एडवोकेट, महामन्त्री-एसकृष्णन, सह०मन्त्री-बलजीतसिह, कोषाध्यक्ष-रामसिह, सरक्षक महाशय खेमसिह, आडीटर - मा० प्रकाशचन्द।

७ आर्यसमाज पिंजौर, जि० अम्बाला

प्रधान-सर्वश्री रामलाल, उपप्रधान-धर्मपालसिह, वेदपाल मलिक मन्त्री प्रेमचन्द शर्मा, उपमन्त्री राजेशसिह आर्य, जयदास आर्य, कोषाध्यक्ष—रामगोपाल, पुस्तकाध्यक्ष—अनिलकुमार गुप्त।

आर्यसमाज जटौली जि० फरीदाबाद

प्रधान—सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द, उपप्रधान—चरणसिह, मन्त्री—दिवानसिह, उपमन्त्री—प्रभु हकीम, प्रचारमन्त्री-शिवचरणसिह, कोषाध्यक्ष—गोविन्दसिह, पुस्तकाध्यक्ष—व्रजमोहन।

आर्यसमाज गढी बीरबल जि० अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री चौ० महिमासिह, उपप्रधान-सुरेश, मन्त्री—कृष्णलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश।

युवा दिवस व राष्ट्रीय-सेवा-योजना शिविर

दुजाना १८ जनवरी, १९८६ को प्राचार्य श्री आर० पी० कत्याल की अध्यक्षता मे राजकीय महाविद्यालय दुजाना मे युवा दिवस बडे हर्ष व उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम अधिकारी प्रो० प्रकाशवीर दलाल ने 'युवा-दिवस' को मनाने का प्रयोजन विस्तार से बताया। इस अवसर पर कु० निशा तोमर, कु० अनिता, कु० सन्तोष व श्री महेश-प्रकाश ने अपने सारगर्भित भाषणो मे युवको को अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत किया। इससे पूर्व १५ जनवरी को एन० एस० एस० दिवस के उपलक्ष्य मे कालेज के सभी छात्रो व कर्मचारियो मे श्री दुलीचन्द गुप्ता सरपच ग्राम पचायत दुजाना द्वारा कालेज की एन० एस० एस० यूनिट के स्वय सेवको द्वारा गतवर्ष दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह मे, गाव में किये गये प्रशसनीय कार्य से प्रसन्न होकर दी गई २५० रुपये की मिठाई का वितरण किया गया। यह शिविर कार्यक्रम अधिकारी प्रो० ओमपालसिह की देख-रेख मे चला। जिसने गाव वालो की बडी वाह-वाही लूटी। स्वय-सेवको द्वारा ठीक किये गये रास्ते का नाम भी ग्राम पचायत ने एन० एस० एस० मार्ग रखने का फैसला किया है। शिविर समारोह की समाप्ति पर श्री रामलाल B D P O Jhajjar मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे। बीच मे आने वाले महानुभावो मे प्राचार्य, मेजर एम० आर० भाटिया समन्वयक म० द० वि० रोहतक, डा० जगदेवसिह, श्री जगवीरसिह, श्री यशपाल चावला, (सभी प्राध्यापक), चौ० सूरजभान Lecturer C T I Rohtak, Br ईश्वरसिह H D U Rohtak आदि के नाम विशेष रूप मे उल्लेखनीय है। इस शिविर मे कुल मिलाकर ४५ व्यक्तियो ने भाग लिया। जिसका शुभारम्भ दिनाक २२-११-८५ को गायत्री मन्त्र तथा 'सगच्छध्वम्' आदि मन्त्रो के उच्चारण के साथ किया।

निशा तोमर

ओ३म्

वेदों में योग विद्या नामक ग्रन्थ को दयानन्द पुरस्कार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा दिया जाने वाला "दयानन्द पुरस्कार" इस वर्ष वेदो में "योग विद्या" ग्रथ के रचयिता आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (डा० योगेन्द्र पुरुषार्थी) को दिया गया है। उन्हे ११०० रुपये की राशि से सम्मानित किया गया। इसी विषय पर स्वामी जी ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की थी। यह ग्रथ शोध प्रबन्ध का सशोधित प्रकाशन है। दैनिक हिन्दुस्तान तथा आर्यजगत् आदि साहित्यिक पत्रिकाओ ने इसकी प्रशसा मे विशेष समीक्षा की है। इस विषय का यह प्रथम प्रयास है, योग मे जिज्ञासा रखने वाले सज्जनों के लिए यह ग्रथ पठनीय है। उक्त ग्रथ यौगिक शोध सस्थान योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार से प्रकाशित है। ऐसे विद्वान को सम्मानित कर, सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने सराहनीय कार्य किया है।

सुमेधानन्द सरस्वती प्रधान
आर्यसमाज श्रीगगानगर, राजस्थान

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज पानीपत की यह साधारण सभा आर्य रत्न प० बिहारीलाल जी शास्त्री बरेली, चौ० बदलूराम जी पूर्व एम० एल० ए० ग्राम साघी (रोहतक), आर्य भजनोपदेशक महाशय प्यारेलाल जी भापड़ोदा (रोहतक) के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्माओ को शाति प्रदान करे। और परिवार-जनो को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे।

प्रधान—रामानन्द सिगला
आर्यसमाज पानीपत

ओ३म्

वैदिक यतिमण्डल की विजय के बढ़ते चरण

खरियार रोड, पोप जानपाल (द्वितीय) की भारत यात्रा के उपलक्ष्य मे ईसाई मिशनरियो ने उनका भव्य स्वागत एक लाख व्यक्तियो को ईसाई धर्म मे परिवर्तित करके करने की योजना बनाई थी, वह आर्य नेताओ के प्रयास मे नितात निष्फल करदी गई और उत्तर मे उडीसा प्रात के लगभग १५०० (डढ हजार) ईसाई जो किसी भी कारण से हिन्दू से ईसाई बन गये थे, उन्हें पुन आर्य (हिन्दू) बनाया गया। इस शुद्धि के कार्य को करने का प्रस्ताव वैदिकयति मण्डल ने गत मास रोहतक मे हुई बठक मे रखा था और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके इस कार्य हेतु श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती आचाय एव सस्थापक गुरुकुल आमसेना (उडीसा) को नियुक्त किया था। उनके साथ एक मास का समय श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी धूरीवालो ने भी देने को कहा था। इन दोनो ही महात्माओ ने अपना कर्त्तव्य समझ कर इस कार्य को पूर्ण यत्न से किया। महात्मा प्रेमप्रकाश जी ने देश के विभिन्न नगरो से हजारो जोडे वस्त्रो का सग्रह किया और उन्हें उन्ही शुद्ध होने वालो मे बाट दिया गया। श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने दिन-रात एक करके हजारो लोगो को शुद्धि के लिये तैयार किया। १५० व २०० किलोमीटर तक के लोगो को शुद्धि के लिये तैयार किया। आठ ट्रक रातभर उन्हे लाते रहे तथा अगले दिन भी इसी प्रकार आने जाने का कार्यक्रम निरन्तर बना रहा और दिन-भर शुद्धि तथा वस्त्र दान का कार्यक्रम चलता रहा।

यज्ञोपरात उन्हे यज्ञोपवीत देकर श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कर-कमलो द्वारा शुद्ध हुए व्यक्तियो को वस्त्र दिये गये। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष यति मण्डल व श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज आदि महात्माओ ने उन्हे आशीर्वाद व उपदेश दिया। इस शुद्धि के कार्य को आगे भी निरन्तर चालू रखने की अपील स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने बडे ही मार्मिक शब्दो मे की। उन्होने पोप साहब व ईसाइयो से भी अपील की है कि यूरोप मे ईसायत घट रही है, उन्हे वहा शिस्टर व पादरी नही मिलते, अनेक चर्च खाली पडे हैं। चर्चो की सम्पत्ति की देख-रेख करने वाला कोई नही है, चर्च बेचे जा रहे हैं। ब्रिटेन मे एक चर्च को आर्यसमाज ने खरीद कर, वहा पर आर्यसमाज मन्दिर बनाया है। इसी प्रकार अनेक जगह चर्च बिक रहे है। यदि पोप और ईसाइयो ने ईसायत को बचाना है तो उन्हे भारत मे नही, यूरोप मे ही प्रचार करना चाहिए। यदि पोप साहब यहा आकर अपने धर्म का एकपक्षीय गुणगान करते है तो निश्चित है कि यहा उसे धर्मान्तरण की हवा मिलेगी, जो कि हमारे देश और सस्कृति के विरुद्ध है। सन् १९७८ मे श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने लोकसभा मे धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक प्रस्तुत करके धर्मान्तरण की आधी को रोकने का औचित्य सिद्ध किया था, जो कि लम्बे समय तक लोकसभा मे विवाद का विषय रहा था, उसके बाद मीनाक्षी पुरम् का काण्ड हुआ। वहा भी आर्यसमाज ने ही उसका मुह तोड उत्तर दिया। अब पोप पाल के आने पर वैदिक यति मण्डल ने पुन करारा उत्तर देकर अपनी विजय पताका फहराई है।

रामवीर शास्त्री गुरुकुल झज्जर

अनोखा वाहन

एक ऐसे वाहन का निर्माण किया गया है जो सडक पर व रेल की पटरी, दोनो पर बडी सुगमता से चलाया जा सकता है। इस वाहन के १६ पहिये हैं। आठ सडक पर चलने के लिए और आठ रेल की पटरी पर चलने के लिए। चालक अपनी मर्जी से दोनो मे से किसी जगह पर वाहन को बिना कठिनाई के सुगमतापूर्वक चला सकता है। इसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र भी पहुँचा जा सकता है। इसके पहिए भी आसानी से बदले जा सकते हैं। किसी कठिनाई का सामना नही करना पडता। इसके अन्दर स्वयचालित यन्त्र भी लगे हुए हैं जो इसे चलाने में काफी सहायता करते है।

सजय मारवाडी १६७ प्रेमनगर, हिसार

(पृष्ठ १ का शेष)

१७ आजकल जब किसी को अन्य कोई काम नही मिलता तब वह नौ महीने का प्रशिक्षण प्राप्त कर, अध्यापक बन जाता है। अध्यापक वही बने जो १०+२ के बाद अध्यापक बनने का निश्चय करके तदनुसार ही बी० ए० के तीन और प्रशिक्षण के दो वर्ष की पढाई करे। अध्यापक के लिये केवल विद्यास्नातक होना पर्याप्त न होकर विद्याव्रत स्नातक होना आवश्यक है। अध्यापक के योगक्षेम का पूर्ण दायित्व सस्था के सचालको का होगा।

१८ पत्राचार पाठ्यक्रम Correspondence course तथा खुले विश्व विद्यालयो Open universites के द्वारा शिक्षा का उद्देश्य पूरा नही होता। वे केवल डिग्री प्राप्त करने के साधन हैं। एक ओर डिग्रियो का अवमूल्यन करना और दूसरी ओर डिग्रियाँ ही देने की व्यवस्था करना 'वदतो व्याघात' Salf contradication नही तो क्या है? ये सस्थाये शिक्षा के अन्तर्गत नही आ सकती।

१९. प्राचार्यो, प्राध्यापको, सचालको आदि के नैतिक स्तर को ध्यान मे रखते हुए स्वायत्तता प्राप्त महाविद्यालयो Autonomous Colleges का परीक्षण करना व्यर्थ सिद्ध होगा।

२० अध्ययनकाल मनुष्य का निर्माणकाल होता है। जो अभी स्वय नही बना, उसे समाज और देश के निर्माण की जिम्मेदारी सौपना खतरे से खाली नही होगा। समाज की गतिविधियो, देश की राजनीतिक स्थिति से अवगत कराने तथा भावी नेतृत्व के लिए समर्थ बनाने के नाम पर इस सदर्भ मे वादविवाद करने, सगठन बनाने, निर्वाचनो मे प्रवृत्त होने आदि की छूट देकर उन्हे राजनीति से और राजनीतिज्ञो को शिक्षण सस्थाओ से परे रखना सभव नही होगा। अध्ययनकाल मे विद्यार्थियो का कर्त्तव्य पुस्तको तथा गुरुजनो के माध्यम से अपनी बौद्धिकक्षमता को बढाने तथा चरित्र का विकास करने तक सीमित होना चाहिए।

२१ पारिवारिक दायित्वो, व्यावहारिक कठिनाइयो तथा बेकारी की समस्या को ध्यान मे रखते हुए, स्त्रियो को अध्यापन तथा चिकित्सा विभाग से अतिरिक्त अन्य क्षेत्रो में यथासभव नौकरी नही करनी चाहिए।

आर्यसमाज नारनौल के तत्वाधान मे लगातार उत्सवो की धूम

दिनाक ११-१२ जनवरी, १९८६ को ग्राम कवरयावास, १३-१४ को आर्यसमाज सेका, १५-१६ को ग्राम बनार, १८-१९ को ग्राम बूढवाल मे नये आर्यसमाज की स्थापना वैद्य हरिश्चन्द्र के परिश्रम से की गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित हुई। २६१ रुपये वेदप्रचार और दशांश, छ ग्राहक सर्वहितकारी के बने।

इस अवसर पर सभा के प० सुमेरसिंह की भजन मण्डली और मा० बेगराज जी, आशाराम, मा० मोहनलाल के प्रभावशाली भजन। प० कुलवन्तराय का भाषण। ब्र० विजयपाल जी आचार्य गुरुकुल झज्जर के व्यायाम प्रदर्शन हुए। जिसमे लगभग ५-६ हजार नर-नारी उपस्थित थे। प्रात काल लगभग ३५-४० यज्ञोपवीत हुये। २०-२५ आदमियो ने शराब और बीडी छोडने की प्रतिज्ञा ली। अमावस, पूर्णमासी महीने मे दो यज्ञ किया करेंगे। शीघ्र ही आर्यसमाज भवन बनाने की घोषणा हुई। आर्यसमाज बूढवाल का चुनाव निरविरोध इस प्रकार से हुआ—

प्रधान—किशनाराम आर्य, उपप्रधान—छोटूराम आर्य, मन्त्री—शिवरामसिह सुमन, उपमन्त्री—घीसाराम, प्रचारमन्त्री—विजयसिह, गोविन्दसिह, सहयोगी मन्त्री—नथरामसिह आर्य, कोषाध्यक्ष—मा० हरिसिह, अन्तरग सदस्य—श्रीमती कमलादेवी व श्रीमती सुनीतादेवी।

आर्यसमाज खरावड जिला, रोहतक का चुनाव

प्रधान—सज्जनसिह, उपप्रधान—बलवीरसिंह नम्बरदार, मन्त्री—दयानन्द, उपमन्त्री—रिछाराम, कोषाध्यक्ष—राजसिह, प्रचारमन्त्री—ईश्वरसिह शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष—दीपचन्द, प्रतिनिधि—कवलसिह।

आर्य नेताओं तथा आर्य उपदेशकों का तूफानी दौरा

सर्वहितकारी के गतांक मे १६ से २३ फरवरी तक हरयाणा के हितो की रक्षा एव शराब, दहेज बन्दी हेतु वेदप्रचार अभियान का परिपत्र प्रकाशित किया गया था।

इस तूफानी अभियान का आरम्भ १५ फरवरी की रात्रि को दयानन्दमठ रोहतक की यज्ञशाला से हुआ। इस अवसर पर सभा की भजन मण्डली प० मुन्शीराम जी, प० हरिश्चन्द्र जी, प० शेरसिह जी, प० विद्याभूषण जी ने मनोहर भजन तथा सगीत सुनाकर समय बाध दिया। १६ फरवरी को प्रात स्थानीय आर्यसमाजों शिवाजी कालोनी, झज्जर रोड, माडल टाउन, बाबरा मोहल्ला तथा प्रमनगर मे सभा के भजनोपदेशको ने सम्मिलित होकर प्रभावशाली भजनो द्वारा वेदप्रचार किया। १६ फरवरी को रात्रि को वेदप्रचार वाहन से सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी आर्यसमाज मोखरा जि० रोहतक पधारे। जहा ग्रामीण जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया। सभा के उपदेशक प० अर्जुनदेव जी सिद्धात शास्त्री तथा प० ईश्वरसिह तूफान की भजन मण्डली ने वेदप्रचारार्थ व्याख्यान तथा भजन सुनाये। राजस्थान के झुंझनू क्षेत्र से पधारे श्री भारतभूषण ने अपने व्याख्यान मे ग्रामीण जनता को परामर्श दिया कि वे ग्रामो मे खुशहाली लाने के लिए सामाजिक बुराइयों को छोड। प्रिंसिपल गुगनसिह जी ने सभा प्रधान जी का स्वागत करते हुए विश्वास दिलाया कि शराब बन्दी तथा हरयाणा के हितो की रक्षा हेतु सभा को पूर्ण सहयोग दिया जायेगा।

प्रो० शेरसिह जी सभा प्रधान ने अपने भाषण मे हरयाणा की वर्तमान स्थिति पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए बनाया कि सितम्बर १९८२ से हरयाणा रक्षावाहिनी के माध्यम स हरयाणा की जनता मे जागृति लाने का प्रयत्न किया जारहा है। भारत सरकार के गृहमन्त्री ने नई दिल्ली निवास पर जाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। मैथ्यू आयोग के गठन होने पर उसके समक्ष हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करके तथा अकालियो के ज्ञापन का प्रत्युत्तर दिया। पुस्तिकाये छपवाकर जनता मे वितरित करके जन-चेतना लाई गई। हरयाणा के कोने-कोने मे रक्षा सम्मेलन तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठके की। न्याय यात्रा मे भी चौ० देवीलाल जी को पूरा सहयोग दिया गया। अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्रों मे २-३ बार भ्रमण करके उनको प्रोत्साहित किया। आपने हरयाणा की जनता को इसी प्रकार जागरूक रहने के लिए आह्वान किया। प्रो० शेरसिह ने इस अवसर पर शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करके आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील की। शराब के ठेको को बन्द करवाकर शराब की बिक्री बन्द करवाये तथा विवाह आदि के अवसरो पर कम से कम खर्च करें। रात्रि को ही वेदप्रचार वाहन से सभा प्रधान जी तथा उपदेशक मण्डली रोहतक पहुच गई। (क्रमश)

—केदारसिह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा रक्षा-वाहिनी की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक दिनाक २३ फरवरी, ८६ रविवार को प्रात ११ बजे दयानन्दमठ, रोहतक मे होनी निश्चित हुई है। उसी दिन इस बैठक के तुरन्त बाद १ बजे हरयाणा रक्षा-वाहिनी की बैठक आमन्त्रित की गई है, जिसमे हरयाणा की वर्तमान स्थिति पर विचार करके आगामी कार्यक्रम तैयार किया जावेगा। अत सदस्य महानुभावो से निवेदन है कि इन बैठको मे समय पर पधार कर सहयोग प्रदान करें।

—सभा मन्त्री

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा संस्थाओ के उत्सव

आर्यसमाज दिल्ली का माजरा जि० अम्बाला	१९ से २४ फरवरी
वैदिक आश्रम मरोडा जि० फरीदाबाद	२१-२२-२३ ,,
आर्यसमाज मोती चौक रेवाडी जि० महेन्द्रगढ	२१-२२-२३ ,,
,, छोटी बीकानेर जि० महेन्द्रगढ	२१-२२-२३ ,,
,, खानपुर कला जि० सोनीपत	२१-२२-२३ ,,
,, दूबलधन, माजरा दूबलधन, डीघल, झज्जर	२० ,,
,, कोसली, बिरोहड, ढाकला जि० रोहतक	२१ ,,
,, मित्रोल औरंगाबाद जि० फरीदाबाद	२१-२२-२३ ,,
,, माधी जि० रोहतक	२३-२४ ,,
,, प्रेमनगर जेल रोड, रोहतक	२३ ,,
,, मनाना जि० करनाल	२८ फरवरी से २ मार्च
,, धनाना जि० हिसार	१-२ मार्च
,, कन्या गुरुकुल लोवाकला जि० रोहतक	१-२ ,,
,, नीलोखेडी जि० करनाल	४ से ८ ,,
,, नरवाना जि० जीन्द	८-९ ,,
आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक	९ ,,
आर्यसमाज सैक्टर २१-ए चण्डीगढ	८-९ ,,
,, सैक्टर ७ फरीदाबाद	८-९ ,,
,, होडल जि० फरीदाबाद	८ से १० ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	१४-१५-१६ ,,
गुरुकुल भैंसवाल जि० सोनीपत	१४-१५-१६ ,,
आर्यसमाज फरल जि० कुरुक्षेत्र	१७-१८-१९ ,,
,, गुन्दयाना जि० कुरुक्षेत्र	२१-२२-२३ ,,
,, मालवन जि० करनाल	२१-२२-२३ ,,
,, ऊचा चान्दना जि० अम्बाला	२४-२५-२६ ,,
,, अलाहर जि० कुरुक्षेत्र	२५-२६ २७ ,,
,, मन्धार जि० कुरुक्षेत्र	२६-२७ २८ ,,
,, श्रद्धानन्द नगर नई कालोनी पलवल जि० फरीदाबाद	२८-२९ ३० ,,
,, मुवाना जि० जीद	२८-२९-३० ,,
कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० करनाल	२७-२८-२९ ,,
आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत	३० मार्च से ७ अप्रैल
,, कौल जि० कुरुक्षेत्र	४-५-६ ,,
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	४-५-६ ,,
,, घरौंडा जि० करनाल	११-१२-१३ ,,
चतुर्थ वेदप्रचार समारोह एव यज्ञ सैक्टर-१३, २१६७ भवन इस्टेट करनाल	१६ से १८ मई

सर्वहितकारी का ऋषिबोध विशेषांक

गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी शिवरात्रि ऋषिबोध दिवस के अवसर पर सर्वहितकारी का ऋषिबोध विशेषाक प्रकाशित किया जायेगा।

लेखक तथा कवि महानुभावो से निवेदन है कि वे अपनी रचनाये यथा शीघ्र भेजने की कृपा करें।

सम्पादक
सर्वहितकारी साप्ताहिक, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज रादौर कुरुक्षेत्र का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री जोगेन्द्रकुमार रावल, उपप्रधान—प्रियतमसिह व महेन्द्रपाल आर्य, मन्त्री—सत्यकाम आर्य, उपमन्त्री—सुरेशकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—श्रीमती विमला बसल, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती शाता बसल, प्रतिनिधि जोगेन्द्र रावल व सत्यकाम आर्य।

स्वामी सदाचारी समाज पर एक कलंक

पजाब केसरी के दिनाक २७-१-१९८६ के अक मे श्रीमती प्रतिभा पचीसिया के प्रकाशित लेख ढोगी स्वामी सदाचारी के बारे मे पढकर मन को अति दु ख हुआ कि एक कथित समाज सुधारक एव साधु ने किस प्रकार उच्च राजनीतिज्ञो एव फिल्म अभिनेताओ को भी अपने वश मे किया हुआ था और उनकी आड मे ही दिल को दहला देने वाले दुष्कृत्य किया करता था इस दैत्य ने अपनी पत्नी मिनाक्षी के साथ क्या किया और वह कहा गई उसका अभी तक भी पता नही लगाया गया है। पुलिस द्वारा मारे गये छापे मे उनके घर से कडोम और महिलाओ के अडरवियर पाये जाना कितनी शर्मनाक बात है। साधु, सन्यासी और महात्मा लोग तो दूसरो के घरो मे अपने प्रवचनो द्वारा सुख-शाति और आनन्द की वर्षा किया करते हैं किन्तु यह ढोगी स्वामी दूसरो के घरो को उजाड कर अपने साथ रगरलिया मनाने पर मजबूर किया करता है। यह एक नासूर और समाज पर एक कलक है। स्वामी सदाचारी ने स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी, स्व० श्री सजय गाधी एव कई अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो को अपने प्रभाव मे लाकर और उनके नाम का दुरुपयोग करके देशद्रोह भी किया है। अब सरकार ऐसे दुराचारी व्यक्ति को इस प्रकार का दण्ड दे ताकि ऐसे ढोगी साधुओ को सिर उठाने का मौका ही ना मिल सके और ऐसे व्यक्ति फिर कभी किसी को लूटने का दुस्साहस न कर सके। समाज पर से ऐसे कलक को शीघ्र ही दूर करना चाहिए।

—हरिचन्द स्नेही
आर्यसमाज शाति नगर, सोनीपत

जिनकी स्मृतियां मार्ग-दर्शन करेंगी

आर्यसमाज शातिनगर सोनीपत, (हरियाणा) के पूर्व प्रधान श्री मा० रामचन्द जी का लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनाक २८-१-१९८६ को निधन हो गया। वह एक उत्साही, कर्मठ, दानवीर, कर्त्तव्य परायण एव धर्मात्मा पुरुष थे। अपने सौम्य स्वभाव से उन्होने वेदप्रचार के कार्यक्रम को घर-घर तक पहुँचाने का प्रयत्न किया। वे आर्यवीरो के भी प्रेरणा-स्रोत थे। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालया-ध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य के भ्राता का भी निधन समाचार प्राप्त हुआ। वह एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, उत्साही एव प्रेरणा-स्रोत थे।

आर्यसमाज शातिनगर, सोनीपत के समस्त सदस्य परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि उनकी दिवङ्गत आत्मा को शाति एव सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकातुर परिवार को इतनी शक्ति मिले कि वे इस दु ख एव वियोग को सहन करने मे समर्थ हो।

—हरिचन्द स्नेही

स्वामी पूर्णानन्द जी अब नहीं रहे

बडोत (मेरठ) विलम्ब से प्राप्त समाचार के अनुसार आर्यजगत के वयोवृद्ध मनीषी, विद्वद्वर्य श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जो आजीवन वैदिक सिद्धातो के गम्भीर चिन्तक एव रक्षक रहे; गत मास ता० २० दिसम्बर, ८५ को परलोक सिधार गये। पुरानी पीढी के अनुभवी विज्ञ, वेद शास्त्रो मे पारगत, स्पष्ट निर्भीक वक्ता एव कुशल लेखक, अनेक भाषाओ के ज्ञाता, प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, हैदराबाद सत्याग्रह के जत्थेदार, महर्षि के सजग पहरेदार, जो ऋषिवर के आदेशानुसार ६० वर्षो तक वैदिकधर्म की सेवा करते रहे व आर्यसमाज की नीव के पत्थर बनकर रहे। उनके निधन से आर्यजनो को एक अपूरणीय क्षति पहुँची है। परमेश्वर उस दिव्यात्मा को पुन वेदधर्म की सेवा मे समर्पित होने का अवसर प्रदान करे। उनके लेख, पुस्तके एव कार्य उनकी पावन स्मृति को स्थायित्व प्रदान करेंगे। हम भी प्रभु कृपा से उनके जीवन के आदर्शों की अभिवृद्धि कर सके ताकि स्वामी जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

रामकुमार आर्य पुरोहित
आर्यसमाज बडा बाजार, पानीपत

बराइच जिला जनपद उ०प्र० में शुद्धि कार्य

दिनाक १४-११-८५ को नानापारा जिला, बहराइच के आर्यसमाज मन्दिर मे सासारमणि को साथ लेकर कटवा बाजार में जो कपडा स्वामी सर्वानन्द जी ने दीनानगर से भेजा था, उसको नट मुसलमान हिन्दू बने थे, उन्हे वितरण किया गया। १५-११-८५ को रजाई भी वितरण की गई। १६-११-८५ को बाबागज मे जो २५ व्यक्ति मुसलमान से हिन्दू बने उनको कपडा और दवाई वितरण की गई। १७-११-८५ को शिवपुरा तहसील नानापारा, जो कि नट मुसलमान से हिन्दू बने थे उनको भी कपडा और दवाई आदि वितरित की गई। नेपाल गज के पूर्व में मौलवी परिवार बताया गया। उसमे हिन्दू नटो को मुसलमान बनाकर बसाया जाता है। उसकी भी जानकारी जिलाधीश को दी गई। और शिवपुरा के कल्लू नट को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था और फिर हमने उसको हिन्दू बना दिया, जिसमे तकरीबन २१ परिवार थे। और उसके पश्चात् वहा पर कपडा भी वितरण किया गया।

२१-११-८५ को रूपडिया राम जयन्ती कालेज मे कपडा और दवाई वितरण की गई और २४-११-८५ को एक हरिजनो के मोहल्ले में जो कि मुसलमान बनने जा रहे थे उनको रोका। उसके पश्चात् हमने जिला गौडा मे १४-१२-८५ से १७-१२-८५ तक होने वाले सम्मेलन का आयोजन किया और उसमें १७-१२-८५ को सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया गया। उसके अन्दर सग्राम गढ का जौनपुर का राजा उस समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। बहरा-इच के अन्दर मिली सोसायटी के नाम का एक बैंक खुला है जो इन जिलो मे अरब (खाडी देशो) से जो रुपया आता है उसको मुसलमान बनाने के लिए वितरण किया जाता है और हमने अनरौला मे नूरमोह-म्मद थापा, जिसकी शुद्धि के पश्चात् अशोक थापा नाम रखा गया। उसने यह जानकारी दी कि एक परिवार को चार किस्तो मे २० हजार रुपये दिये जाते है। ये आदेश खाडी देशो का हिन्दुस्तान पर लागू है। यह जानकारी बहराइच जिले में तहसील नानपरा चरधा क्षेत्र के पीलीभितीया एक तकीये मे ७०० नटो को एक ही दिन मुसलमान बनाया गया था। वह जगह मैंने स्वय जाकर देखी। वहा के लोगो से जानकारी ली कि रुपया काफी मात्रा में धर्म परिवर्तन करने वालो को दिया जाता है।

यह सब जानकारी स्वामी सेवानन्द सरस्वती के माध्यम से प्राप्त हुई।

ओमप्रकाश
प्रधान, हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरयाणा
समालखा, जिला करनाल

प्रस्ताव

विश्व वेद-परिषद् चण्डीगढ की सार्वजनिक बैठक २१-१-८६ में भारत सरकार की शिक्षा नीति के निर्माण पर जो देश के बुद्धिजीवी लोगो का मत ले रही है, उस आधार पर यह प्रस्ताव पारित किया गया कि भारत की नई शिक्षा-नीति गुरुकुल प्रणाली के आधार पर बनाई जाये।

जिसमे विद्यालय आवासीय (रेजीडेनशल) हो जहा राजा और रक के बालको को समान आहार, पहरावा और एक जैसा ही रहन-सहन आचार्यो तथा गुरुजनो की देखभाल में अपने पुत्रो-पुत्रियो के समान हो। जैसे कि माता के गर्भ मे बच्चा सुरक्षित रहता है। विशेष कर ब्रह्मचर्य शिक्षा से वीर्यवान्, बलवान् और तेजस्वी बनाये।

पाच वर्ष का बालक कन्याओ के स्कूल मे और पाच वर्ष की कन्या बालको के स्कूल मे न जाने पावे। लडको के स्कूलो मे सभी कर्मचारी पुरुष हो और कन्या विद्यालय मे सभी स्त्रिया।

शिक्षा का माध्यम राष्ट्र की हिन्दी भाषा हो और साथ मे सस्कृत व अग्रेजी तीनो भाषाये आरम्भ से ही पढाई जायें। क्षेत्रीय भाषा को भी स्थान दिया जाये। सर्वसम्मति से पारित।

राजेन्द्र मन्त्री
कृते आशुराम आर्य महामन्त्री
विश्व वेद परिषद्

मि० ए. ओ. ह्यूम और भारतीय राष्ट्रीयता

(जन्म २२ अगस्त, १८२९, मृत्यु १९१२)

—लेखक डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, पटना

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक श्री एलेन आक्टाविमन ह्यूम इंगलैंड मे जन्मे थे। भारत में अनेक पदो पर कार्य करते हुए १८८२ मे कार्यमुक्त हुए। आप ब्रिटिश शासन के परम शुभचिन्तक थे। राज्यभक्त होने के कारण ब्रिटिश शासन ने इन्हे सलाहकार समिति मे रख लिया।

१८५७ की क्रान्ति मे

जिस समय देश मे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की लपट बडी तेजी से फैल रही थी मि० ए० ओ० ह्यूम इटावा मे कलक्टर के पद पर नियुक्त थे। जब इटावा मे क्रांतिकारियो का दल पहुंचा इटावा के कलक्टर मि० ए० ओ० ह्यूम ने पुलिस और जनता से मदद चाही। किन्तु इन दोनो ने खुलेआम क्रांतिकारियो का साथ दिया। असिस्टेंट मजिस्ट्रेट डेनियल लडाई मे मारा गया। २३ मई को हिन्दुस्तानी सिपाहियो ने खजाना पर कब्जा कर लिया, जेलखाने को तोड दिया। अंग्रेजो को अपने बच्चो और स्त्रियो समेत भाग जाने का मौका दिया। लिखा है कि ह्यूम साहब एक भारतीय स्त्री का रूप धरकर इटावा से भाग निकले [दी रेड पम्पलेट भा-२ पृष्ठ ७०]। कालान्तर मे दूसरे पदो पर काम करते हुए भी ह्यूम साहब को भारतीय आक्रोश का भय लगा रहता था। अतः समय-समय पर वे ब्रिटिश हुकूमत को सावधान करते रहते थे। १८७२ मे मि० ह्यूम ने नार्थब्रुक को स्थिति की गम्भीरता के सम्बन्ध मे चेतावनी देते हुए लिखा—"हमारे और विनाश के बीच सिवाये संगीनो के और कुछ नही है" 'साम्राज्य का भाग्य अधर मे है।" उन्होने गवर्नर जेनरल को सलाह दी—"मै हजूरे आला से यह प्रार्थना करता हू कि आप इस विषय पर विचार करे कि क्या यह संभव नही है कि हमारे प्रशासन मे हमारी प्रजा की विचार और इच्छाओ मे अधिक ध्यान दिया जाये।' [नार्थब्रुक के कागजात, नार्थब्रुक के नाम ए० ओ० ह्यूम, १ अगस्त, १८७२ सचिव का पुस्तकालय।]

भयंकर खतरे की सूचना

१८७० की दशाब्दी मे बहुत कष्ट और असंतोष रहा और सरकार के सचिव के रूप मे ह्यूम को यह सूचना मिली जिससे यह विचार बना कि स्थिति बहुत भयंकर है। वे कहते है—"उस समय लार्ड लिटन के जाने के १५ महीने पहले जो प्रमाण मुझे मिले उनमे मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि एक भयानक उथल-पुथल होने वाली है। मुझे सात बडी जिल्दे दिखाई गयी जिनमे बहुत से इन्दराज थे और वे सब के सब यह दिखा रहे थे कि सबसे निम्न वर्ग के गरीब आदमी इस राय पर पहुँच चुके थे कि स्थिति सुधर नही सकती और वे समझते थे कि वे लोग भूखे मर जायेंगे। इसलिए वे कुछ कर गुजरने को तैयार थे और कुछ करने का मतलब हिंसा से था।"

[डब्लू वेडरबर्न लिखित ए० ओ० ह्यूम पृष्ठ ८०-८१] दक्षिण के दंगे इस चेतावनी के प्रमाण थे।

शासन को चेतावनी

१८७२ मे मि० ह्यूम ने नार्थब्रुक को यह चेतावनी दी थी कि ब्रिटिश साम्राज्य को एक लकवा सा मार रहा है। उन्होने लिखा—"हुजूर शायद ही समझ पाये कि हमारा शासन कितना अस्थिर है। मैं बहुत दृढता के साथ यह कहता हू कि हमारे साम्राज्य का भाग्य डांवाडोल है और किसी भी समय छोटे से बादल का कोई टुकडा जिसकी तरफ किसी का ध्यान नही जा रहा है, बढ़कर सारे देश पर छा सकता है और अराजकता और विनाश की वर्षा कर सकता है।" [१ अगस्त, १८७२ को ए० ओ० ह्यूम द्वारा नार्थब्रुक को लिखे गये पत्र से—"नार्थब्रुक कलेक्शन," इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन।]

कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य

कॉंग्रेस की स्थापना के समय ह्यूम महोदय ने अपने एक मित्र सर ऑकलैंड कॉलविन को बताया था कि उन्होने यह योजना अपने ही कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न हुई एक प्रबल बढती हुई शक्ति के निष्कासन के लिए एक सेफ्टी वल्व के उद्देश्य से बनायी थी [डब्लू वेडरबर्न लिखित ए० ओ० ह्यूम पृष्ठ-७१]।

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि कॉंग्रेस रूपी सेफ्टी वल्व का निर्माण ब्रिटिश हुकूमत की सुरक्षा के लिए किया गया था न कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए। यही कारण है कि कांग्रेस की प्रत्येक सभा की शुरुआत "गॉड सेव द किंग" की प्रार्थना से होती थी तथा सभा के अन्त मे "ब्रिटिश राष्ट्र दुनिया मे ईमानदार राष्ट्र है" के नारे लगाये जाते थे।

राष्ट्रीयता का उद्भव कैसे हुआ

कुछ भारतीय इतिहासकार राजा राममोहनराय के द्वारा भारतीय राष्ट्रीयता का प्रारम्भ मानते हैं परन्तु यह एक तथ्य है कि राजा राममोहनराय ब्रिटिश शासन को भारत के लिए एक ईश्वरीय वरदान मानते थे। अपने विभिन्न सामाजिक सुधार के कार्यो को करते हुए भी उन्होने कभी स्वराज की बात नही की क्योकि उनके विचार मे ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीयो का उन्नति करने का मार्ग सुरक्षित था। ठीक इसके विपरीत भारत के एक महान् सन्यासी महर्षि दयानन्द देश मे घूम-घूम कर प्रबल राष्ट्रीयता का प्रचार कर रहे थे।

× × × ×

देशभक्ति का प्रचार करते हुए भारत की प्राचीन महिमा का वर्णन करते समय महर्षि दयानन्द ने लिखा "यह आर्यावर्त देश ऐसा है कि इसके सदृश भूगोल मे दूसरा कोई देश नही है इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है क्योकि यही स्वर्ण आदि रत्नो को उत्पन्न करती है जितने भूगोल मे देश है सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते है कि पारसमणी पत्थर सुना जाता, यह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणी है जिसको लोहे रूप विदेशी छूते के साथ स्वर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते है।

दो विचारधाराओ की टक्कर

जिस समय मि० ह्यूम प्रबल जन आक्रोश से ब्रिटिश राज्य की रक्षा करने मे संलग्न थे ठीक उसी समय महर्षि दयानन्द पंजाब, महाराष्ट्र और बंगाल मे घूम-घूमकर भारतीयो के मस्तिष्क मे उनके प्राचीन-गरिमामय इतिहास डालकर उन्हे स्वाधीनता के पथ पर उन्मुख कर रहे थे। आज इतिहासकार भारतीय राष्ट्रीयता के सूत्रधार के रूप मे जिन महापुरुषो का उल्लेख करते हैं, उन सबो के हृदय मे देश प्रेम की आग महर्षि दयानन्द ने सुलगायी थी। मि० ह्यूम ने महर्षि दयानन्द के इस कार्य को बडी गम्भीरता से देखा था। महर्षि की योजनाओ को विफल करने के लिए मि० ह्यूम ने "भारत मित्र" पत्रिका मे उनके सिद्धान्तो का भयंकर खण्डन करते हुए कुछ लेख लिखने शुरु किये परन्तु महर्षि दयानन्द के प्रबल तर्क एवं अपूर्व पांडित्य के आगे उनकी धज्जियां उड गयी। जब ऋषि ने वेदो मे विमान विद्या का वर्णन किया तब ह्यूम ने उसका उपहास करते हुए कहा था "यह सरासर पागलपन है। भला कही मनुष्य पक्षियो की तरह आकाश मे उड सकता है ?" कारण यह कि तब तक पश्चिम मे विमान का आविष्कार नही हुआ था और आकाश मे उडने की कल्पना को साकार रूप देने वाले राइट बंधु सन् १८९२ के बाद ही प्रकाश मे आये थे।

प्रबल राष्ट्रवादी संस्था की स्थापना

१८७५ मे महर्षि दयानन्द ने बम्बई मे इतिहास प्रसिद्ध संस्था आर्यसमाज की स्थापना की। महर्षि ने इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताते हुए लिखा "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' इस तरह महर्षि ने तीन बातो की ओर लोगो का ध्यान खींचा —

१- शारीरिक उन्नति—कसरत व्यायाम एवं ब्रह्मचर्य द्वारा शरीर को बलवान् बनाना।

२- आत्मिक उन्नति—सुन्दर चरित्र अपनाकर शरीर की नश्वरता का एवं आत्मा की अमरता का ज्ञान प्राप्त करना, समय पडने पर राष्ट्र के लिए नश्वर शरीर की आहुति देने के लिए तत्पर रहना।

३- सामाजिक उन्नति—उपरोक्त दोनो तरह की उन्नतिसार्वजनिक रूप मे करके स्वतन्त्रता की प्राप्त करना । यही कारण है कि जब लन्दन टाईम्स ने क्रान्ति पर्यवेक्षण के लिये सर वेलन्टाईल शिरोल को भारत भेजा तो उन्होने लिखा—"जहाँ-जहाँ आर्यसमाज है, वहाँ-वहाँ प्रबल राजद्रोह है।' आर्यसमाज द्वारा प्रबल राष्ट्रवादी विचारो का प्रसार देखकर मि० ह्यूम ने नयी योजना अपनायी।

इडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रबल राष्ट्रवादी विचारो से प्रबुद्ध जन मानस को बचाने के लिए मि० ह्यूम ने सन् १८८५ मे बम्बई नगर मे काग्रेस की स्थापना की। जिस समय काग्रेस की सभाओ का प्रारम्भ "गॉड सेव द किग' स तथा अन्त ब्रिटिश राष्ट्र दुनिया मे ईमानदार राष्ट्र है" के नारे से होता था उसी समय महर्षि दयानन्द के द्वारा भेजे गये उनके परम शिष्य पडित श्याम जी कृष्ण वर्मा लन्दन स्थित इण्डिया हाउस मे अपने शिष्यो की बैठक की शुरुआत मराठी गीत—"राजे घरात शिरला चोर तमामी मनियला अर्थात् घर मे घुसे हुए चोर को हम राजा मानते हे', से करते थे और बैठक का अन्त—"ब्रिटिश हुकूमत ससार मे सब से बेईमान और दगाबाज हुकूमत है" से करते थे।

डा० मजूमदार ने लिखा है—"आयसमाज आरम्भ से ही उग्रवादी सम्प्रदाय था, उसका मुख्य स्रोत तीव्र राष्ट्रीयता था।"

इतिहासकारो के मत मे, बाल गगाधर तिलक, लाला लाजपतराय और गोपालकृष्ण गोखले, जिन्होने हमारे राष्ट्रीय आन्दोलनो का नेतृत्व किया, आयसमाज से प्रभावित थे। काग्रेस मे उग्रवादी भावना के आरम्भ होने का एक कारण हिन्दू धर्म की भावना थी और इसमे सन्देह नही कि आयसमाज ने उग्र भावना के निर्माण मे सहयोग प्रदान किया था।

(आधुनिक भारत एल० पी० शर्मा)

१ इन्डियन अनरेस्ट (सर वेलन्टाईल शिराल लिखित)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 | सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डॉ० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क १४ २८ फरवरी १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश मे ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य नेताओं तथा आर्य उपदेशकों का तूफानी दौरा

गताक से आगे—

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव हरयाणा रक्षा-वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह जी, सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता महाशय भरतसिह जी के साथ १७ फरवरी को प्रात. ११ बजे ग्राम पाकस्मा पधारे। यह ग्राम आर्यसमाज के इतिहास में प्रमुख भूमिका निभा चुका है। हरयाणा बनने से पूर्व इसी ग्राम में १९६४ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक चुनाव हुआ था, जिसमें पजाब, हरयाणा, हिमाचल तथा दिल्ली प्रदेश से आर्यसमाजो के प्रतिनिधि पधारे थे। उस समय ग्रामवासियो ने प्रतिनिधियो को खीर खिलाकर तथा ताजा गन्ने का रस पिलाकर आथित्य किया था। आर्य नेताओ तथा आर्य उपदेशकों का ग्रामवासियो ने १७ फरवरी को भी उत्साह पूर्वक स्वागत किया। इसी अवसर पर आर्यसमाज पाकस्मा के उत्साही नवयुवक श्री विजयपाल जी के नवजात शिशु का नामकरण सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। ग्रामवासियो ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ तथा सार्वजनिक सभा मे भाग लिया। प० तेजपाल जी की भजन मण्डली के प्रभावशाली भजनों के पश्चात् स्वामी ओमानन्द जी महाराज तथा प्रो० शेरसिह ने जनता को हरयाणा की वर्तमान परिस्थितियो से परिचित कराते हुए विस्तार से बताया कि पजाब की अकाली सरकार तथा आतकवादी आपस मे मिलकर एक नाटक रच रहे हैं। आतकवादियो द्वारा पजाब मे रास्ता रोको आदोलन तो विफल कर दिया गया, परन्तु १० दिन के अन्दर उन्होंने अमृतसर के स्वण मन्दिर पर बलात् कब्जा कर लिया और वहा से गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अधिकारियो तथा मुख्य ग्रथियो को हटाकर, वहां खालिस्तान का झण्डा फहरा दिया और अकाल तख्त के मध्य भवन को जिसे केन्द्र सरकार ने सैनिक कार्यवाही के बाद करोडों रुपये खर्च करके मरम्मत करवाई थी, उसे गिरा दिया। परन्तु पजाब की अकाली सरकार ने आज तक उनके विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही नहीं की। वास्तव मे अकाली सरकार आतकवादियो की अन्दर से सहायता करके भारत सरकार पर दबाव डालना चाहती है, ताकि राजीव लोगोंवाल समझौते के अनुसार चण्डीगढ के बदले मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट अनुसार अबोहर फाजिल्का के हिन्दी-भाषी ग्राम हरयाणा को न सौंपे जावे और लिंक नहर का निर्माण भी पूरा न हो सके। प्रो० शेरसिह ने प्रधान मंत्री को लिखे गये अपने पत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि इस नहर के न बनने से हरयाणा को प्रतिदिन ८० लाख रुपये की हानि हो रही है। राजीव लोंगोवाल समझौते के अनुसार १५ अगस्त, ८६ तक यदि इस नहर मे पानी नहीं छोड़ा जावे तो नहर के निर्माण को पूरा करने तक केन्द्र अथवा पजाब सरकार को ८० लाख रुपया हर्जाना के रूप मे हरयाणा को देना चाहिए। चण्डीगढ शाहआयोग ने हिन्दी-भाषी मानकर हरयाणा को देने की रिपोर्ट की थी। वहा की जनता प्रत्येक जनगणना में बहुमत से अपनी मातृभाषा हिन्दी लिखवाती हैं। इस अवस्था में भी चण्डीगढ़ को पजाब को देने की तैयारी हो रही है। परन्तु एक छोटे ग्राम कन्दूखेडा जिसकी जनगणना मे आतकवादियों ने अपने प्रभाव से मातृभाषा बलात् पंजाबी लिखवादी है, को पजाब सरकार तथा अकाली आतकवादी हरयाणा को न देने के लिए ऐडी से चोटी का जोर लगा रहे हैं और हिन्दी-भाषी ग्रामों को पजाब में रखकर उन पर पजाबी भाषा की पढाई को लादकर उन्हे वैदिक सस्कृति से दूर रखना ही अपना धर्म समझे बैठे हैं।

श्री स्वामी ओमानन्द जी ने केन्द्रीय तथा पजाब सरकार को परामर्श देते हुए कहा कि राष्ट्र-विरोधी गतिविधियो मे लगे हुए आतकवादियो को गिरफ्तार करके हरयाणा को जेलो में बन्द किया जावे और उन्हें जेलो मे शराब, गाजा तथा मास आदि न देकर कठोर दण्ड दिया जावे। इस प्रकार थोडे दिन के बाद ही आतकवादी क्षमायाचना करके सीधे हो सकते हैं। परन्तु भारत सरकार लातो के भूतों को बातों से मनाकर उन्हे प्रोत्साहित कर रही है और पजाब सरकार ऐसे भयकर अपराधियो को जेलो से छोडकर, उन्हें रोजगार तथा सरकारी खजाने से अनुदान दे रही है। पजाब मे आतकवादी प्रतिदिन निर्दोष जनता की हत्यायें कर रहे हैं और अकाली सरकार आतकवाद को समाप्त करने में विफल हो रही है। अत. ऐसी निपुंसक तथा राष्ट्रद्रोही सरकार को तुरन्त निलम्बित करके, वहा राष्ट्रपति राज्य लागू किया जाना चाहिए। इस अवसर पर आर्यनेताओं तथा आर्य उपदेशको ने ग्रामीण जनता को शराब तथा दहेज आदि की सामाजिक बुराइयो को समाप्त करने का आह्वान किया। विवाह-शादियो पर व्यर्थ के खर्च बन्द करके, उस बची राशि को अपने बच्चो की पढाई आदि मे व्यय करना चाहिए। यदि इन बुराइयो को तुरन्त समाप्त न किया गया तो थोड़े दिन के बाद किसान, मजदूर भूखा मरने पर विवश हो जायेगा। पूंजीपति गरीबो को शराब के नशे में बेहोश करके इन्हे बर्बाद करने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। अत: ग्रामीण जनता को अब चेतना चाहिए। इसी उद्देश्य से आर्य प्रतिनिधि सभा तथा हरयाणा रक्षा-वाहिनी की ओर से चेतना लाने के लिए ग्रामो में प्रचारार्थ तूफानी कार्यक्रम बनाया है।

पाकस्मा के समारोह के पश्चात् दोपहर बाद १ बजे आर्य नेता ग्राम आसन पधारे। वहां भी जनता ने इनका हार्दिक स्वागत किया। सभा की भजन मण्डलियों प० ईश्वरसिह तूफान तथा प० जयपाल व सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री, प० अर्जुनदेव आर्य, प० कुलवन्त आर्य ने अपने प्रभावशाली भजनो तथा व्याख्यानो द्वारा शराब तथा दहेज आदि की लानत को जड से उखाडने पर जोर दिया। स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो० शेरसिह जी ने भी अपने भाषणो में हरयाणा की वर्तमान समस्याओ पर अपने विचार रखे। उसी दिन दोपहर बाद ४ बजे आर्यनेता तथा आर्य उपदेशक ग्राम बलियाना पधारे। यहा भी पूर्व कार्यक्रम के अनुसार समारोह सफलतापूर्वक हुआ। प० सुमेरसिह की भजन मण्डली ने शराब विरोधी गीतो से समय बाध दिया। ग्रामीण जनता ने आर्यनेताओ के विचारो को ध्यानपूर्वक सुना। रात्रि को वैदिक वाहन द्वारा सभी वापिस रोहतक आ गये। १८ फरवरी को प्रात १० बजे ग्राम कन्साला मे आर्यनेताओ का शानदार स्वागत किया गया तथा उसी प्रकार जन-चेतना समारोह में ग्रामीण जनता को वर्तमान परिस्थियों से भजनो तथा व्याख्यानों द्वारा परिचित किया गया।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विस्मृति के अथाह सागर से—

हरयाणा का एक आर्यवीर

—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

हम ऋषि जीवन की अप्रकाशित सामग्री की खोज में, कुछ पुराने जीर्ण-शीर्ण साहित्य को देख रहे थे। आचार्यप्रवर सत्यप्रियजी हिसार की 'भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम व आर्यसमाज' पुस्तक (छपने जा रही है) के लिए भी कुछ खोज रहे थे, तो एक आर्यवीर की चर्चा पढकर नयनो से श्रद्धा के अश्रुकण टपकने लगे। मन में तत्काल आया कि इस चमत्कारी आर्यपुरुष की जीवनी पर अभी-अभी कुछ लिखा जावे 'सर्वहितकारी के लिए हमारी यही भेट है। हमारी प्रबल इच्छा है कि अन्य आर्य पत्र-पत्रिकाये भी इस लेख को सर्वहितकारी से लेकर प्रकाशित करे ताकि आर्य सन्तान ऐसे नररत्न के जीवन से कुछ सत्प्रेरणा लेकर आगे बढे।

इस आर्यवीर का नाम था 'महाशय गुगनरामजी'। आप कलानौर, जिला रोहतक (हरयाणा) के निवासी थे। आपका जन्म एक अहीर कुल मे हुआ। आपके परिवार के लोग सेना मे भरती होना अच्छा समझते थे। सैनिक बनकर वे अपने आपको गौरवान्वित मानते थे। महाशय जी को शिक्षा प्राप्त करने का बचपन मे अवसर ही न मिला। नौकरी के लिए इधर-उधर फिरते-फिराते आर्यसमाज का सत्सग मिला। वह आर्यसमाजी बन गये। रोहतकी होने के कारण आर्यसमाज के नाम व काम से कुछ तो परिचित थे ही।

उर्दू सीख ली—उनको अपने घर पत्र लिखना होता तो दूसरे किसी व्यक्ति के पास जाना पडता। घर की कुछ बाते, पारिवारिक रहस्य होते है। ऐसी बाते किसी से लिखवाते हुए उन्हे सकोच होता था। इस पर उन्होने सङ्कल्प किया कि जब तक उर्दू पढना-लिखना न आ जावे तब तक घर पर पत्र ही न डालूगा। कैसी कठोर प्रतिज्ञा कर ली। परन्तु इस धुन के धनी ने उर्दू सीख कर ही दम लिया। तभी अपने हाथ से घर पर उर्दू में पत्र लिखने लगे। ऐसा दृढप्रतिज्ञ व्यक्ति क्या नही कर सकता?

आर्यभाषा सीखी—आर्यसमाज का रग चढा तो आपने व्रत लिया कि आर्यभाषा सीख कर ही आर्य नाम को सार्थक करूगा। इस भले पुरुष ने भली प्रकार से हिन्दी भी पढनी-लिखनी सीख ली।

आदर्श मिशनरी गुगनराम जी—१९३० मे फिरोजपुर जेल में महाशय हेतराम नाम के एक ऋषिभक्त दरोगा जेलर थे। इन महाशय हेतराम जी ने प० विष्णुदत्त जी के घर का पता लगाया और पण्डित जी को मिलने के लिए सदेश भेजा। पण्डित जी दरोगा जी के पास गये। दोनो की परस्पर प्रीति बढती गई। यह आर्यत्व का अटूट सम्बन्ध था। महाशय हेतराम जी के साथ ही एक और सज्जन पुरुष का पण्डित जी से परिचय हुआ। यह थे जेल के वार्डन महाशय श्री गुगनराम जी। प० विष्णुदत्त जी ने लिखा है कि गुगनराम जी की वाणी मे प्रेम व रस भरा हुआ था। वह चार-पाच वर्ष फिरोजपुर मे वार्डन रहे। फिर अम्बाला जेल मे चले गये। उन दिनो उनकी आय १६ रुपया मासिक थी। वह अपने कर्त्तव्य पालन मे बडे सुदक्ष थे। भ्रष्ट साधनो से किसी से कुछ भी न लेते थे। जेल के बन्दियो पर, दरोगा वा अधीक्षक पर पहरा देना उनका कार्य था। यह कार्य वह पूरी प्रामाणिकता से किया करते थे। सोलह रुपये की स्वल्प आय मे ही अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण किया करते थे।

वह जेल मे सब विचार के लोगो से धार्मिक विषयो पर अवश्य बातचीत किया करते और सब पर अपना प्रभाव डालने मे सफल होते। वह अपनी आय का कुछ भाग बन्दियो को वा अन्य मिलने वालो को आर्य साहित्य भेट करने मे व्यय करते थे' यह उनका पक्का नियम था।

संस्कृत सीख ली—वैदिकधर्म के इस दीवाने मे वीरवर प० लेखराम जी वाली लग्न थी। एक बार प० विष्णुदत्त जी से कहा, मुझे संस्कृत पढा दे। प० जी ने उन्हे संस्कृत की पहली पुस्तक पढा दी। उसे ऐसी लग्न लगी कि जेल का पहरा देते हुए जेब मे पुस्तक रखता और पहरा देते-देते उसे याद करता रहता। अब महाशय गुगनराम जी को व्याकरण के मूलभूत नियमो का ज्ञान हो गया। वेदमन्त्रो का उच्चारण शुद्ध हो गया। फिर प० जी से चाणक्य नीति, गीता का प्रथम अध्याय पढा। अब वह अपने जन्म को सफल मानने लगा, जो वेदमन्त्रो का शुद्ध उच्चारण करने के योग्य हो गया।

महान् दानी—एक दिन वे कुछ फल वा एक रुपया लेकर पं० विष्णुदत्त जी को भेंट करने आये। पंडित जी ने पूछा, यह क्या? बोले मेरे यहां पुत्ररत्न ने जन्म लिया है। पंडित जी ने कहा, पुत्र का जन्म हर्ष की बात है परन्तु सोलह रुपये वेतन में से एक रुपया दान व दो रुपये के फल बडा दुःखदायी कार्य है। परिवार कैसे चलेगा। वह अड गये कि यह एक रुपया आर्य सामाजिक कार्यों में जहा चाहें लगावें। आज हम १/१०० देने मे भी घबराते हैं। वह कैसा अद्भुत दानी पुरुष था। पण्डित जी को उनकी इच्छा पूरी करनी पडी।

सब आर्य बन गये—उनके होते जेल के सब कर्मचारी आर्यसमाज के रग मे रग गये। सब को लेकर समाज के सत्सगो मे आया करते। उनके एक मित्र सरदारसिंह जी आर्यसमाज मे आकर दादा बस्तीराम जी के भजन झूम-झूम कर गाया-सुनाया करते थे।

फांसी की कोठरी में—१९३० ई० मे जब प० विष्णुदत्त जी जेल गये तो फासी की कोठरी मे एक व्यक्ति ने अन्त समय मे पण्डित जी को बुलवाया। जेल अधिकारियो ने उन्हे उसकी कोठरी मे भेजा। उसने कहा कि मेरी शाति के लिए आप प्रार्थना करे। पता चला कि इस व्यक्ति ने गुगनराम जी से लेकर सत्यार्थप्रकाश पढा था। गुगनराम जी से ही उसे पण्डित जी का परिचय मिला था। जब तक पण्डित जी जेल मे रहे जब किसी हिन्दू को फासी दण्ड मिलता तो पण्डित विष्णुदत्त जी को उसकी शाति के लिए अन्त समय मे गीता आदि सुनाने के लिए भेजा जाता था। गुगनराम जी के कारण पण्डित जी को जेल मे समय बिताते हुए बडा आनन्द प्राप्त हुआ। देशहित बन्दी बनना ही कम गौरव की बात न थी, यहा तो धर्म-प्रचार का भी यश लूटा।

एक बार गुगनराम की रिपोर्ट हो गई—एक दिन फासी की कोठरी के सामने ड्यूटी देनी थी। प० विष्णुदत्त जी मे बातो का रस लेते हुए वह देर से फासी की कोठरी पर पहुँचे। जमादार ने उनकी रिपोर्ट कर दी। जेल के उप-अधीक्षक मुहम्मद असमाईल गुगनराम जी के विरुद्ध कुछ कार्यवाही करने वाले थे। इन्हें भी धार्मिक आध्यात्मिक बातो में बडा रस आता था। रात एक-एक बजे तक प० विष्णुदत्त जी की कोठरी के सामने खडे-खडे चर्चा करते रहते। प० विष्णुदत्त जी ने कहा—जब आपको आध्यात्मिक बातो मे इतना आनन्द आता है तो बेचारे गुगनराम ने क्या अपराध कर दिया जो कुछ देर से पहुचा। पहले तो उप-अधीक्षक महोदय ने ननुनच किया, फिर पण्डित जी की युक्ति के सामने सिर झुका कर गुगनराम जी को कुछ न कहा।

एक नम्बरदार आर्य बना दिया—गुगनराम ने जेल में एक नम्बरदार सिख बन्दी को आर्य बना दिया। उसके पास गुरुमुखी सत्यार्थप्रकाश था। उसे इससे बडा आनन्द प्राप्त होता था। इसे श्रद्धापूर्वक पढता रहता था।

महाशय गुगनराम फिरोजपुर से अम्बाला जेल में स्थानान्तरित हो गये। वह डा० लालचन्द जी व अम्बाला नगर के श्री बद्रीप्रसाद वर्मा वकील के नाम प० विष्णुदत्त जी के पत्र ले गये। उनकी इच्छा थी कि उनका छोटा पुत्र गुरुकुल में शिक्षा पाये। प० विष्णुदत्त जी मे एक सिफारशी पत्र भी लिखवाया, परन्तु लगता है कि उनकी यह इच्छा पूर्ण न हो पाई।

इस आदर्श धर्मवीर का निधन छोटी आयु मे ही हो गया। वह रुग्ण हो गया। आर्यसमाज के कुछ लोगो ने उनके इलाज में उनकी सहायता की, परन्तु वह ७ दिसम्बर, १९३४ ई० को चल बसे। उनकी आयु तब ४० वर्ष से कम ही थी। पता नही फिर उनके परिवार का क्या बना।

श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज स्वय यत्न करें या किसी सुशिष्य को यह कार्य सौपे कि उनके परिवार का अता-पता लगाया जावे। सभव है उनके परिवार वा मित्रो मे से कोई जीवित हो, जो उस आदर्श आर्य वीर के बारे में कुछ और प्रेरणाप्रद सामग्री दे सके। यद्यपि गुगनराम कोई नेता न था, विद्वान् न था, लेखक वा वक्ता भी न था, परन्तु आर्यसमाज की नीव का एक पत्थर था। ऋषि के व्यवहारभानु के भाव को लेकर लिखे तो हम कहेंगे, भले ही वह महात्मा नही था, परन्तु धर्मात्मा अवश्य था। मिशनरी के रूप मे वह हमारा आदर्श है। सब आर्यों को ऐसे-ऐसे आर्यवीरो की जीवनिया पढनी वा पढानी चाहिएं। क्या कोई इस लघु जीवनकथा को छपवाकर बांटेगा? हमें यह सब जानकारी आर्यनेता व विद्वान् लेखक श्री प० विष्णुदत्त जी के एक अलभ्य उर्दू लेख से प्राप्त हुई है।

—वेद सदन, अबोहर-१५२११६

सम्पादकीय—

प्रो० शेरसिंह का तूफानी दौरा—

जनजागरण सप्ताह का व्यापक प्रभाव

१६ फरवरी, १९८६ से २३ फरवरी तक प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का तूफानी दौरा सफलता से सम्पन्न हुआ। १८ जन-सभाये हुई, जिनमे से तीन सभाओ मे परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी ने भी सम्बोधित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशको तथा भजनोपदेशको ने ग्रामीण जनता को शराब और दहेज की बुराइयो से बचने के लिए पचायतो के द्वारा इनको समाप्त करने के लिए जोरदार अपील की। हजारो लोगो ने बडे उत्साह से जन-सभाओ मे भाग लिया और सभी ग्रामो ने इन बुराइयो के विरुद्ध ठोस कदम उठाने का आश्वासन दिया।

इस तूफानी दौरे के तीन उद्देश्य थे। हरयाणा की जनता मे राष्ट्रीय एकता और हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए सगठित होकर पूरी शक्ति से अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए सचेत और तयार किया। २—शराब के द्वारा आर्थिक हानि, नैतिक पतन तथा समाज मे दूषित वातावरण बदला है, शरीर, मन और आत्मा मे दुर्बलता आती जा रही है। उससे परिवार और समाज तो टूटते ही है। राष्ट्र भी खोखला और कमजोर होता है। सबसे अधिक शोषण किसान, मजदूर और अन्य गरीब लोगो का है। किसान, मजदूर और अन्य कमाऊ जनता मे मद्य पान के दूषित परिणामो की चेतना पैदा करना। ३—शादियो मे फिजूल खर्ची, दहेज की घृणित प्रथा तथा महिलाओ पर होने वाले अत्याचारो को समाप्त करना तथा सुखी दाम्पत्य का मार्ग प्रशस्त करना।

प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषणो मे देश की परिस्थितियो, अकालियो और आतकवादियो की राष्ट्र-विरोधी गतिविधियो, हरयाणा के अधिकारो की चली आरही अवहेलना का विस्तार से खुलासा किया। मैथ्यू आयोग के सामने दलीलें और हरयाणा का न्याय और सच्चाई पर आधारित दावा। जिसे न मैथ्यू आयोग झुठला सका और न अकाली सरकार के वकील, लोगो को समझाया। भारत सरकार पर दबाव डालने के लिए और हरयाणा को फाजिल्का अबोहर और रावी व्यास के पानी से वचित रखने के लिए रचे गये नाटक का पर्दाफास किया। राष्ट्र विरोधी तत्वो द्वारा देश की एकता को पैदा होने वाले खतरे से बचाने तथा हरयाणा के अधिकारो की प्राप्ति के लिए सचेत रखकर आवश्यकता पडने पर बडे से बडे बलिदान के लिए तैयार रहने की अपील की। राष्ट्र और हरयाणा के हितो के लिए सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिए लोगो ने बडे उत्साह के साथ विश्वास दिलाया।

प्रो० शेरसिंह ने बताया कि आर्यसमाज कोई पन्थ या सम्प्रदाय नही, वह तो बुराइयो के खिलाफ आदोलन है। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने शराब बन्दी तथा दहेज और शादी के अवसर पर फिजूल खर्ची बन्द करने के लिए एक आदोलन छेडा है। शराब बन्दी आज गरीब, किसान, मजदूर और दूसरे कमाऊ की आजादी का प्रतीक है जैसे चरखा देश की राजनीतिक आजादी का प्रतीक था। भारत मे अपने पैसे से केवल यही गरीब और कमाऊ लोग शराब पीते है। बाकी सब चाहे सरकारी कर्मचारी हो, राजनेता हो या पूजीपति हो, सब रिश्वत की, जनता के पैसे या सरकार के पैसे की शराब पीते है। दुःख की बात है, कि गाधी के नाम लेवा आज शराब के कारखानेदारो से मिलकर सरकार के माध्यम से भारत की जनता को बर्बाद करके उसका शोषण कर रहे हैं। जनता इस षड्यन्त्र मे न फसकर अपना, अपने बच्चों का तथा समाज और राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल बनाये। सरकार के कानून के अनुसार पचायतो से प्रस्ताव करवा कर तथा जरूरत पडने पर धरना देकर शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए। जनता सभा द्वारा चलाये गये आंदोलन मे शामिल होकर सब पापो की जड शराब से अपने [illegible] तथा अपनी सन्तान को बचाकर, प्रगति और समृद्धि का मार्ग [illegible] करें। पिछले दो वर्षों मे ठेके उठवाने के लिए चलाये गये सफल [illegible] की तरह धरने देकर ठेके बन्द करवाने का आश्वासन लोगो ने दिया। आंदोलन की सफलता मे अब सन्देह नही रहा। ग्रामीण अपनी [illegible] के लिए जाग रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह ने सर्वखाप पचायत के निर्णयो पर कडाई से अमल करने की अपील पर अमल करने का आश्वासन भी मिला। विवाहो मे फिजूल खर्ची, दिखावा, सौदेबाजी तथा लडकियो पर अत्याचार के विरुद्ध आदोलन मे ही अब जान पड रही है।

तीनो उद्देश्यो की पूर्ति की दिशा में तूफानी दौरा पूरी तरह सफल रहा।

स० भरतसिंह वानप्रस्थी सयोजक हरयाणा रक्षावाहिनी

(पृष्ठ १ का शेष)

ग्राम कन्माला जि० रोहतक के बाद १८ फरवरी को दोपहर बाद आर्यसमाज गोहाना जि० सोनीपत तथा ग्राम हुमायूपुर, जि० रोहतक मे जन-चेतना समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। माननीय प्रो० साहब ने दोनो स्थानो पर हरयाणा की वर्तमान समस्या तथा दहेज तथा शराब आदि की सामाजिक बुराइयो पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। सभा की भजन मण्डलियो के भी प्रभावशाली गीतो से उपस्थित जनता को प्रभावित किया।

१९ फरवरी को प्रात १० बजे वैदिक वाहन मे ही प्रो० साहब आर्य समाज फरमाणा जि० सोनीपत के समारोह पर पधारे। ग्रामीण जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री तथा भजन मण्डली प० जयपाल पूर्व ही वहा प्रचारार्थ पर उपस्थित थे। उन्होंने शराब तथा दहेज की बुराइयो पर व्याख्यान तथा भजन सुनाये। माननीय प्रो० शेरसिंह जी ने इस अवसर पर भी हरयाणा की जनता को जागृत रहने का अनुरोध किया ताकि हरयाणा के हितो की रक्षा की जाये। ग्रामीणो को शराब तथा दहेज की बुराइयो से भी दूर रहने का परामर्श दिया। इसके बाद दोपहर बाद ३ बजे भटगाव जि० सोनीपत के समारोह पर भी पहुँचने पर प्रो० साहब का स्वागत करते हुए ग्राम के नवयुवको तथा आर्यसमाज के मन्त्री श्री महेन्द्रसिंह आर्य ने विश्वास दिलाया कि ग्राम मे शराब के ठेके पर धरणे का शीघ्र आयोजन किया जायेगा। प्रो० साहब ने अपने भाषण मे आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ का शराब बन्दी आन्दोलन मे सहयोग देने के लिए धन्यवाद दिया।

भटगाव के पश्चात् पूर्व कार्यक्रम के अनुसार प्रो० साहब ग्राम मुहाना जि० सोनीपत के समारोह पर पधारे। यहा भी बस अड्डे पर शराब का ठेका है। यहा शराब बन्दी सम्मेलन के अवसर पर सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्र शास्त्री तथा प० जयपाल जी व प० ईश्वरसिंह तूफान ने शराब की बुराइयो का व्याख्यान तथा भजनो द्वारा खण्डन किया। प्रो० साहब ने अपने भाषण मे ग्रामवासियो से शराब के ठेके पर धरणा देकर तथा सरकार को प्रस्ताव भेजकर शराब के ठेके को समाप्त कराने का मार्ग दर्शन किया।

१९ फरवरी को ही इसके बाद वैदिक वाहन द्वारा हम आर्यसमाज जूवाँ, जि० सोनीपत सायकाल अचानक पहुच गये। वहा पूर्व कोई कार्यक्रम निश्चित नही था। रात्रि ७ बजे ग्राम मे सम्मेलन की मुनादी करवादी गई। ९ से ११ बजे तक सम्मेलन हुआ। इसमे प० ईश्वरसिंह तूफान तथा जयपाल के भजनो के बाद प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा रक्षावाहिनी की ओर से हरयाणा के हितो के लिए जो कार्य किया है, उस पर प्रकाश डालते हुए जनता को जागरूक रहने की प्रेरणा की तथा सामाजिक बुराइयो से दूर रहकर धन का सदुपयोग करने की सलाह दी। श्री खजानसिंह जी ने ग्रामवासियो की ओर से प्रो० साहब का ग्राम मे पधारने तथा मार्ग-दर्शन करने के लिए आभार प्रकट किया।

२० फरवरी को ग्राम दूबलधन, माजरा दूबलधन, जहाजगढ तथा भम्भेवा जि० रोहतक मे ४ स्थानो पर सम्मेलन के भी कार्यक्रम पूर्णरूपेण सफल हुए। प्रो० साहब के विचारो को उपस्थित जनता ने ध्यानपूर्वक सुना तथा हरयाणा रक्षावाहिनी के लिए प्रो० साहब को थैलिया भेट की।

२१ फरवरी को ग्राम कोमली, बिरोहड तथा ढाकला जि० रोहतक में भी इसी प्रकार सम्मेलनो पर प्रो० साहब ने जनचेतना के लिए हरयाणा के हितों की रक्षा तथा सामाजिक बुराइयो पर प्रकाश डाला।

२३ फरवरी को आर्यसमाज प्रेमनगर, रोहतक के समारोह में भी भाग लिया। इस प्रकार १६ से २३ फरवरी का तूफानी दौरा सफल रहा।

—केदारसिंह आर्य

वार्षिक महोत्सव

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का ७१वा वार्षिक महोत्सव फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, चतुर्दशी सवत् २०४२ वि० तदनुसार ८-९ मार्च, १९८६ शनिवार, रविवार को समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। इष्ट मित्रो सहित कुलभूमि मे पधार कर महोत्सव की शोभा बढावे।

इस अवसर पर श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आमसेना (उडीसा), श्री स्वामी धर्मानन्द जी आबू पर्वत (राज०), श्री स्वामी प्रेमानन्द जी सन्यास आश्रम गाजियाबाद, श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री दिल्ली श्री प० राजवीर जी शास्त्री मोदीनगर, डा० महावीर जी शिवाजी कालिज दिल्ली, प्रिंसिपल रणजीतसिंह जी रोहतक, डा० यज्ञवीर जी प्राध्यापक रोहतक, श्री प० सुदर्शनदेव जी आचार्य रोहतक, श्री प्रो० सत्यवीर जी शास्त्री मन्त्री तथा श्री प्रो० शेरसिह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री डा० रामगोपाल जी कुलपति महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक पधार रहे हैं।

८ मार्च को "**पाणिनीय व्याकरण एव गुरुकुल**" विषय पर डा० महावीर मीमासक तथा डा० सुदर्शनदेव आचार्य के मध्य शास्त्रार्थ होगा।

८ मार्च को सायकाल ४ बजे मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा यौगिक क्रियाये योगासन, दण्ड, बैठक, लाठी, भाला, तलवार, धनुषवाण, स्तूप निर्माण के विविध प्रकार, लोहे के सरिये मोडना, जजीर तोडना, हाथ से काच पीसना, थाली फाडना, छाती पर पत्थर तुडवाना, मुग्दर चलाना, दो कारो को एकसाथ रोकना आदि शक्ति प्रदर्शन होगे।

८ फरवरी से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ हो रहा है। यज्ञ की पूर्णाहुति ९ मार्च को प्रात १० सम्पन्न होगी। यज्ञप्रेमी आर्यजन घृत सामग्री समिधा आदि पुष्कल मात्रा मे भेजकर पुण्य के भागी बनें।

उत्सव पर छात्रो का प्रवेश होगा। गुरुकुल में महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि से वेदादि शास्त्रो के अध्यापन का सुप्रबन्ध है। शारीरिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए गुरुकुल मे उत्तम वातावरण है।

वेदव्रत शास्त्री, मन्त्री

फार्म-४ सर्वहितकारी विषयक विवरण

१ प्रकाशन स्थान	सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
२ प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३ मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक
क्या भारत का नागरिक है ?	हा
४. प्रकाशक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	हा
५ सम्पादक का नाम	प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	हा
पता	सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
६ उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक साझेदार या हिस्सेदार हो।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

प्रेरक प्रसङ्ग

क्या आपकी लडकी घर वालो की इच्छा का ध्यान रखना जानती है ?

जी नही, सीख जाएगी।

क्या आपकी लडकी घर की आय को ध्यान मे रखकर अपनी आवश्यकताओ को पूरा करना जानती है ?

जी नही, क्योकि हम ही उसकी हर आवश्यकता पूरी करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं।

क्या आपकी लडकी घर की सफाई और सजावट करना जानती है ?

अजी पढने-लिखने मे इतना समय ही कहा बचता है जो वह इधर ध्यान दे स

क्या आपकी लडकी कपडे सीना, काढना वगैरा जानती है ?

क्या बात करते हैं आप ··· ।

खैर आपकी लडकी खाना बनाना तो जानती ही होगी ?

अजी उसकी भी क्या जरूरत है ? घर मे बहुत सारे नौकर-चाकर हैं। यह काम तो वे ही कर देते हैं।

क्या आपकी लडकी ईश्वर भक्ति, सध्या हवन के लिए थोडा-सा समय निकालती है ?

आप भी क्या पुरानी बाते ले बैठे हैं ·।

आपकी लडकी कैसा भोजन खाना पसन्द करती है ?

अजी उसकी पसन्द छोडिए। वैसे कभी-कभी वह मीट खा लेती है। मीट के साथ कभी-कभी शराब का इस्तेमाल भी कर लेती है। वह तो आधुनिक युग की है।

तो फिर आपकी लडकी और क्या-क्या जानती है ?

अजी साहब, यह कहिए कि वह क्या नहीं जानती। मेरी लडकी अभिनय करना जानती है, मोटर साईकल चलाना जानती है, तैरना जानती है, घुडसवारी करना जानती है, होटल तथा क्लबो में अग्रेजी ढग से खाना और बातचीत करना जानती है, बालरूम डास करना जानती है, टैनिस खेलना जानती है और फिर मैं उसकी शादी मे पचास हजार रुपये नकद भी दूंगा। बस आप यह समझिये कि मेरी लडकी तो लक्ष्मी है ·· लक्ष्मी। कहकर लडकी के पिता ने शान से गर्दन उठाई।

लेकिन खाली लक्ष्मी नही, हमे तो गृह-लक्ष्मी चाहिए, शाह जी। कहकर वर-पिता बाहर चले गए और शाह जी विस्फारित नजरो से देखते ही रह गये।

—हरिचन्द स्नेही
आर्यसमाज शातिनगर, सोनीपत

गुरुकुल धीरणवास में १४वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक १५-१६ फरवरी, १९८६ को गुरुकुल का उत्सव बडे हर्ष उल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी परमानन्द जी, रणवीर जी शास्त्री, बहन करुणा शास्त्री आदि ने विचार रखे। प० मामचन्द जी, प० अमरसिंह जी एव बहन कलावती के शिक्षाप्रद भाषण एव भजन हुए। स्वामी सर्वानन्द जी ने महात्मा चेतनदेव जी को सन्यास की दीक्षा दी और सर्वदानन्द नाम रखा। १६ तारीख को सायकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा आसनो का व्यायाम एव ब्र० रामदेव गुरुकुल झज्जर द्वारा व्यायाम प्रदर्शन हुआ, जिसमें सरिया मोडना, बेल तोडना, काच पीसना, दो कार रोकना शामिल थे। उत्सव पर हजारों की सख्या में लोग पधारे।

उत्सव पर D C. साहब हिसार भी पधारे। जिन्होंने गुरुकुल की मागे पूरी करने का वचन दिया।

अमरसिंह आर्य
कार्यकारी सभा उपदेशक

गुरुकुल आश्रम आमसेना कालाहाण्डी उड़ीसा का अष्टादश वार्षिक महोत्सव एवं विशाल शुद्धि सम्मेलन सम्पन्न

१-२-३ फरवरी, ९६ को अत्यन्त समारोह के साथ गुरुकुल आमसेना का वार्षिक महोत्सव मनाया गया। इस पावन अवसर पर यतिमण्डल की बैठक भी हुई, जिसमे आर्यो के प्रेरणा-स्रोत तपोधन स्वामी सर्वानन्द जी दीनानगर, पू० ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी, हिमाचल प्रदेश, म० प्रेमप्रकाश जी धूरी, पृथ्वीराज शास्त्री उपमन्त्री सा० आ० प्र० सभा दिल्ली, हरिदेव जी आचार्य दिल्ली, स्वामी वेदानन्द जी दिल्ली, देशपाल जी दीक्षित बिहार, गुलाबचन्द्र बसल भिलाई नगर, माता कौशल्या देवी, रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव, प० सुरेन्द्रपाल भजनोपदेशक आदि अनेक साधु, सन्यासी, विद्वानो ने आशीर्वाद प्रदान कर महोत्सव को सुशोभित किया।

इसी उपलक्ष्य मे २६ जनवरी से ३ फरवरी तक अथर्ववेद पारायण महायज्ञ का समायोजन श्री प० विशिकेशन शास्त्री के पौरोहित्य मे हुआ। इस अवसर पर सर्वप्रमुख आकर्षण केन्द्र विशाल शुद्धि सम्मेलन था। जिसमे एक हजार से अधिक ईसाई परिवारो को सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे शुद्धकर हिन्दू-धर्म मे प्रवेश कराया गया। हिन्दू-धर्म मे दीक्षित प्रत्येक सदस्य को एक-एक धोती व साडी भेंट स्वरूप प्रदान की गई। यह पोप जान पाल के भारत आगमन पर आर्यसमाज की ओर से जवाब दिया गया।

यह सारा कार्यक्रम उत्कल आ० प्र० सभा के प्रधान, गुरुकुल के आचार्य स्वनामधन्य तपोनिष्ठ, कर्मठ सन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी के सतत परिश्रम एव उनके सहयोगी अखिलेश जी उपाचार्य, डा० वामदेव जी मुख्याध्यापक व डा० व्यासदेव जी, प्रचारक सुभाषचन्द्र जी के सहयोग से ही सम्पन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर गुरुकुल की ओर से २६ जनवरी से ३ फरवरी तक श्री मुरलीधर जी वैद्य के तत्वावधान मे नि शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे हजारो निर्धन रोगियों ने समुचित लाभ उठाया।

—धूमकेतु आचार्य वेदविद्यालय दिल्ली-४९

ग्राम जोण्डवाला बागड़ का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक १६-१७ फरवरी, १९९६ को आर्यसमाज जाण्डवाला बागड (हिसार) का उत्सव बडे हर्ष उल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ, जिस में स्वामी दर्शनानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, रणवीर शास्त्री, अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी आदि के समाज मे फैली बुराइयो के खिलाफ धर्म क्या है, मनुष्य के कर्त्तव्य, आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है तथा ब्रह्मचर्य के विषय में शिक्षाप्रद प्रवचन हुए। श्री क्रांतिकारी ने विशेषकर शराब बन्दी बारे जोर दिया और आर्य प्रतिधि सभा हरयाणा के शराब बन्दी कार्यों से लोगों को अवगत कराया। इनके अतिरिक्त स्वामी जगतमुनि, प० नत्थासिंह जी, प० अमरसिंह जी, महाशय भाबेराम जी एव बहन कलावती के शिक्षाप्रद भजन हुए।

यह कार्यक्रम श्री दिवानसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द की प्रेरणा से युवा समाज मण्डल के अथक प्रयास से हो पाया। उत्सव मे निकट के गाव से सैकडो की सख्या मे नर-नारियो ने भाग लिया। उत्सव में विशेष आकर्षक कार्यक्रम यह रहा कि प्रातःकाल यज्ञ पर लगभग सैकडो नवयुवको ने यज्ञोपवीत धारण किये, साथ में शराब एव धूम्रपान को सदा के लिए तिलाजलि दी। इस अवसर पर आर्यसमाज के विद्वानों का अमिट प्रभाव रहा। पहली बार इस क्षेत्र में नवयुवको में नई जागृति आई है।

—युद्धवीरसिंह आर्य प्रधान युवा मण्डल

आर्यसमाज मन्दिर प्रेमनगर जेल रोड रोहतक की अपील

पिछले दो वर्ष से आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड, रोहतक अपने सीमित व प्रारम्भिक प्रयास से २५० वर्ग फुट के प्लाट पर मन्दिर निर्माण का कार्य चालू किये हुए है। मन्दिर की भूमि चौ० पृथीसिंह के परिवार ने आर्यसमाज प्रेमनगर को दान करदी थी। निर्माण समिति ने सज्जनों की सहायता से अब तक एक छोटा कमरा, यज्ञशाला, मुख्य द्वार, चार दिवारी तथा हैड पम्प का कार्य पूरा किया है। यज्ञशाला की छतरी व सत्सग भवन आदि के लिए लगभग एक लाख रुपये की राशि व्यय होना अनुमानित है। सभी सज्जनो से प्रार्थना है कि मन्दिर निर्माण मे सहयोग देकर पुण्य के भागी बने। आप ईंट, रेत, रोडी, लोहा, सिमेंट या नकद जैसा भी सहयोग हो, देकर उपकृत करें।

राशि आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड, रोहतक के नाम रेखाङ्कित चैक/ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजे।

पता – श्री रामप्रकाश सागवान प्रधान
आर्यसमाज प्रेमनगर-३८ जेल रोड, रोहतक

बिना आर्यसमाज बुराई ही बुराई

—लेखक रामचन्द्र आर्य बडवा, भिवानी

बिना आर्यसमाज देश मे फैली घणी बुराई।
पाप रूप अधियारे में ना देता धर्म दिखाई॥
ईश्वर को साकार बतावै, पत्थर पूजने मन्दिर जावे।
इन्सान आज धक्के खावै, पत्थर खाता दूध मलाई॥ १
मद्यशाला खुली घनेरी, गऊए धक्के खाती भतेरी।
वैरभाव मेरी तेरी मे देश भरता रहा तबाही॥ २
नारी होती फिरे विरान, होता ना आदर मान।
जला देते घर में आन, है बात बडी दुखदाई॥ ३
जन्म लेते रोज भगवान्, पावै बिरला यहा इन्सान।
पैसे मे लेते जान, गरीब जनता घणी दुख पाई॥ ४
स्टेज पर राम बन आये, जनता से पैर पुजवाये।
मद्य पीयें और मास खायें, महापुरुषों पर दोष लगाई॥ ५
पाखडी छलकर खाये, जगद्गुरु अपना नाम धराये।
ज्ञानकोष तो रिक्त पाये, पर दुनिया ठगकर खाई॥ ६
स्वार्थ मे फस जुल्म ढावै, पाप करने में ना कतरावै।
जान लेने से ना घबरावै, ऐसे पैदा हुए अन्यायी॥ ७
सत्य ईश्वर ध्यान न रहता, नमस्ते कभी ना कहता।
यज्ञ बिना दुखी रहता, जिन्दगी ख्वार कराई॥ ८
वेद मार्ग छोड दिया, सुकर्मो से मुह मोड लिया।
पाखण्ड से नाता जोड लिया, धर्म की करी मनाही॥ ९
"रामचन्द्र" कह नलवे आला, बुद्धि का कौन खोले ताला।
आर्यसमाज है रखवाला, दिया देश धर्म बचाई॥ १०

शोक समाचार

माता श्यामा देवी जी, जिनकी प्रेरणा से और दान से आर्यसमाज मन्दिर जगाधरी वर्कशाप का निर्माण हुआ, का १३-१-९६ को स्वर्गवास हो गया। वे सारा जीवन वेदानुकूल व्यतीत करते हुए, अपनी पवित्र कमाई मे से सभी वैदिकधर्म शिक्षा सस्थाओ और अनाथालयो को दान करती रही हैं। आर्यसमाज और वैदिकधर्म के प्रचार मे जीवन-भर तन, मन और धन से सेवा करती रही हैं। उनका जीवन सभी आर्यजगत् के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। वे अपनी चल और अचल सम्पत्ति के लिए श्यामा देवी धार्मिक एव धर्मार्थ ट्रस्ट बनाकर छोड गई हैं। जिसके द्वारा विधवा अनाथो की सहायता और वेदप्रचार का कार्य चलता रहेगा।

भवदीय किशनदास आर्य मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांवा का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मुन्शीराम सचदेवा, उपप्रधान—हुकमचन्द आर्य, महामन्त्री—कन्हैयालाल आर्य, मन्त्री—सोमदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष—शिवदत्त आर्य, आडीटर—केशवदेव नारग, अन्तरग सदस्य—सतपाल आर्य, चन्दनसिंह आर्य, महेश्वरदयाल लूथडा, दौलतराम खेडा, ओमप्रकाश कालडा, अशोक आर्य, रामचन्द्र आर्य, ओमप्रकाश चुटानी, किशनचन्द कोटि।

—कन्हैयालाल आर्य महामन्त्री

आर्यसमाज इसराना जि० करनाल का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री जगदीशचन्द्र गग	सुपुत्र जियालाल नैनवाले
उपप्रधान—महेन्द्रसिंह आर्य	,, चरणसिंह आर्य
मन्त्री—पहलवान रमेशचन्द्र	,, जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष—श्रीराम आर्य	,, छोटेलाल आर्य
प्रचार मन्त्री—ओमप्रकाश	,, दयाराम आर्य

आर्यसमाज प्रेमनगर, करनाल

प्रधान—सर्वश्री महाशय रामशरण आर्य, उपप्रधान—प्रतापचन्द आर्य एव रामप्रकाश खुराना, मन्त्री—उमेशचन्द्र गोयल, उपमन्त्री—धर्मवीर आर्य, कोषाध्यक्ष—गोबिन्दराम काठपालिया, पुस्तकाध्यक्ष—योगराज आर्य, लेखा-निरीक्षक—प्रेमकुमार दुग्गल।

ग्राम धनाना का वार्षिक चुनाव

प्रधान—महाशय रामसिंह आर्य, मन्त्री—राव अमरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—राव महाबीरसिंह आर्य।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज खरक कलां जि० रोहतक

प्रधान—बिशनसिंह, मन्त्री—मदनपाल, कोषाध्यक्ष—कानसिंह।

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा के विद्यार्थियो ने ३-२-१९८६ को राजकीय क्वालिटी उच्च विद्यालय पजूआणा मे आयोजित अन्ताक्षरी क्विज एव पेंटिग प्रतियोगिता मे भाग लिया। इनके परिणाम निम्न रहे-

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता—प्रथम स्थान, क्विज प्रतियोगिता—तृतीय स्थान, पेंटिग प्रतियोगिता—प्रोत्साहन।

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एक आकर्षक शील्ड एव क्विज प्रतियोगिता मे तृतीय स्थान पाने पर विद्यालय को एक आकर्षक कप प्राप्त हुआ। सभी विद्यार्थियो को प्रमाण-पत्र प्राप्त हुए। इस कार्यक्रम मे माननीय शिक्षा मन्त्री श्री जगदीश नेहरा व जिला शिक्षा अधिकारी श्री सूरजभान गुप्ता एव अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

पजूआणा स्कूल के मुख्याध्यापक श्री कर्मचन्द मेहदीरता ने हमारे विद्यालय के विद्यार्थियो के अनुशासन की प्रशसा की।

—प्रिंसिपल द्वारकादास प्रधान

आर्यसमाज गढ़ी बीरबल का वार्षिक उत्सव

२२-१-८६ से २६-१-८६ तक वेदप्रचार होता रहा, जिसमे महाशय हरलाल व मानसिंह जी आर्य हरयाणवी तथा प० पूर्णचन्द जी ढोलक कलाकार, सभा की ओर से प० शेरसिंह जी तथा चौ० नत्थासिंह जी, श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज योग आश्रम फतेपुर, स्वामी गुरुदत्त मुनि जी महाराज व डा० रघुबीरसिंह जी निर्मल व श्री रमेशकुमार जी आर्य गढ़ी बीरबल और आर्य स्कूल के ब्रह्मचारी एव कन्याये। जिन्होने बहुत सुन्दर नाटक, शराब आदि के निषेध पर, ऋषि जीवन पर, २६ जनवरी पर शहीदो की यादगार मे सुन्दर रोचक गीत सुनाकर जनता को मुग्ध किया और २० के लगभग लोगो, बच्चो व कन्याओ ने यज्ञोपवीत लिए। २३-१-८६ से २६-१-८६ तक लगातार यह उत्सव बड़े हर्ष व उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आस-पास के इलाके के लोगो ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। यहा के सरपंच ने गढ़ी से शराब का ठेका आर्यसमाज के प्रचार के प्रभाव से फौरन उठवा दिया। ५-६ घरो मे दोनो समय प्रातः साय यज्ञ होता रहा। सारे गाव पर उत्सव का बहुत प्रभाव हो गया। यहा के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने एक बहुत बडी चौपाल आर्यसमाज मन्दिर बना दी। अन्य आस-पास के राजेपुर पटेहडा व शेरगढ आदि ग्रामो मे महाशय हरलाल की भजन मण्डली प्रचारार्थ घूम रही है। लोगो पर आर्यसमाज का बडा प्रभाव हो रहा है।

प्रधानाचार्य विश्वकर्मा माडर्न स्कूल,
गढ़ी बीरबल करनाल

स्वामी रुद्रवेश द्वारा वेदप्रचार कार्य

दिनाक १५-१-८६ से आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर की ओर से प्रचार कार्य स्वामी रुद्रवेश जी की भजन मण्डली, वानप्रस्थी सहदेव जी के सहयोग से।

१५ जनवरी को सिलानी।

१६ से १८ जनवरी इमलोटा तीनो दिन तक दोनो समय यज्ञ और ६ कालेज के युवको ने यज्ञोपवीत लिए।

१९ को मिलकपुर दोनो समय यज्ञ हुआ और तीन यज्ञोपवीत हुए।

२०-२१ को सिवाना दोनो समय यज्ञ होता रहा और १० नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किये।

२२ से २४ किशोवा दोनो समय यज्ञ होता रहा और १४ यज्ञोपवीत दिये गये, जिनमे से यज्ञोपवीत धारण करने वाली ४ महिलायें भी थी। इस गाव में आर्यसमाज की स्थापना भी करदी गई।

२५-२६ को ऊण मे उत्सव, दोनो समय यज्ञ हुआ और ९ यज्ञोपवीत हुए, जिनमे एक महिला भी शामिल है। स्वामी ओमानन्द जी महाराज का ओजस्वी भाषण हुआ।

२७-२८ को स्वरूपगढ मे दोनो समय यज्ञ और प्रचार हुआ।

२९-३० को मातनहेल मे दोनो समय यज्ञ और प्रचार अर्थात् ५ नौजवानो और २ बहनो ने यज्ञोपवीत धारण किये।

३१ को नया गाव मे रात्रि को बडा प्रभावशाली प्रचार हुआ।

यह प्रचार यात्रा बहुत प्रभावशाली रही। इसमें पुरुष और महिलाये बडी सख्या मे भाग लेते रहे। रात के ११ बजे तक बड़े चाव से वैदिक प्रचार सुनते रहे। २८ जनवरी को राधा स्वामी मत वालो के साथ जमकर प्रश्न-उत्तर हुए। जब उनसे कोई जवाब नही आया तो उठकर चले गये।

वानप्रस्थी सहदेव

शोक प्रस्ताव

१६-२-१९८६ को आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा के साप्ताहिक सत्सग में श्री साधुराम जी वानप्रस्थी पुरोहित, आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा की मृत्यु पर शोक प्रकट करके प्रस्ताव पारित किया और [illegible] के कार्य की सराहना करते हुए श्रद्धाजलियां अर्पित की गई तथा [illegible] आत्मा को सद्गति के लिए भगवान् से प्रार्थना की गई। भगवान् [illegible] आत्मा को शांति प्रदान करें।

प्रधान [illegible]

आर्यसमाज के संस्कृत कवि एवं साहित्यकार—

आचार्य मेधाव्रत

—ले० डा० भवानीलाल भारतीय एम०ए०, पी-एच० डी०

संस्कृत भाषा में उत्कृष्ट काव्य रचना करने वाले आचार्य मेधाव्रत का जन्म महाराष्ट्र प्रातान्तर्गत नासिक जिले के येवला नामक ग्राम मे एक मध्यवित्त गृहस्थ श्री जगजीवन के यहा ७ जनवरी, १८९३ ई० को हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती सरस्वती देवी था। प्रारम्भिक शिक्षा येवला मे हुई। तत्पश्चात् पिता ने मेधाव्रत को उत्तरप्रदेश के आद्य गुरुकुल सिकन्दराबाद मे भेजा। कालान्तर मे यही गुरुकुल वृन्दावन मे सचालित होने लगा। यहा रहकर मेधाव्रत ने व्याकरण, साहित्य, वेद-दर्शन आदि शास्त्रों का विशद अध्ययन किया। आपके गुरुओ मे स्वामी हरिप्रसाद वैदिक मुनि, प० देवदत्त, मुन्शी नारायणप्रसाद, (महात्मा नारायण स्वामी) तथा तुलसीराम स्वामी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अध्ययनकाल मे ही अस्वस्थ हो जाने के कारण मेधाव्रत को गुरुकुलीय शिक्षा अधूरी ही रही और वे अपने जन्मस्थान येवला मे लौट आये। इन्ही दिनो इनका विवाह भी हो गया।

सर्वप्रथम कोल्हापुर नरेश शाहू छत्रपति द्वारा स्थापित वैदिक विद्यालय के आचार्य पद पर इनकी नियुक्ति हुई। पुन १९२१ से १९२६ तक के नेशनल कालेज सूरत मे हिन्दी और संस्कृत के अध्यापक रहे। १९२६ में इनकी नियुक्ति आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा के आचार्य पद पर हुई। अनेक वर्षों तक इस पद पर कार्य करने के उपरान्त आपने अध्यापन सेवा से विश्राम लिया। जीवन के अन्तिम वर्षों मे गुरुकुल चित्तौडगढ, कन्या गुरुकुल नरेला तथा गुरुकुल झज्जर मे समय-समय पर निवास कर, विद्यार्थियों को अपनी विद्वत्ता का लाभ देते रहते थे। २१ नवम्बर, १९६४ को गुरुकुल चित्तौडगढ मे ही स्वल्प रुग्णता के पश्चात् आपका निधन हो गया।

महाकवि मेधाव्रत संस्कृत के व्युत्पन्न कवि, गद्यकार तथा प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। आपने अनेक उत्कृष्ट कोटि के काव्य लिखे हैं। काव्यो के अतिरिक्त संस्कृत में नाटक तथा उपन्यास लिखने का भी आपने सफल प्रयास किया है। मेधाव्रत जी के काव्य तथा गद्य ग्रथो का विवरण इस प्रकार है—

१ दयानन्द दिग्विजय—महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षणो से युक्त यह काव्य २७०० श्लोको मे पूर्ण हुआ है। इसका पूर्वार्द्ध १९९४ वि० तथा उत्तरार्द्ध २००२ वि० मे प्रकाशित हुआ। दोनो खण्डो के हिन्दी अनुवादक क्रमश प० श्रुतबन्धु शास्त्री तथा कवि के अनुज श्री सत्यव्रत तीर्थ हैं। सम्पूर्ण काव्य २७ सर्गो मे समाप्त हुआ है।

२ ब्रह्मर्षि विरजानन्द चरितम् – दण्डी स्वामी विरजानन्द के पावन चरित को निबद्ध करने वाला यह काव्य ४२४ पद्यो मे रचा गया है। ब्रह्मचारी वेदव्रत भाष्याचार्य (वेदव्रत शास्त्री) ने इसकी हिन्दी टीका लिखी। विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर से यह काव्य २०१२ वि० मे प्रकाशित हुआ।

३ महात्ममहिममणिमञ्जूषा—महात्मा नारायण स्वामी जी के जीवन को काव्यबद्ध करने वाला यह ग्रन्थ ३७० श्लोको मे समाप्त हुआ है। इसका प्रकाशन २०१४ वि० मे प्रथम तो सुधारक मासिक पत्र के विशेषाक रूप मे, पुन विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर से उसी वर्ष पुस्तक रूप मे हुआ।

४ ब्रह्मचर्यशतक—कवि मेधाव्रत की यह कृति छात्रावस्था की है। इसमे सौ पद्य ब्रह्मचर्य महिमा के हैं। स्वामी वेदानन्द वेदवागीश ने इस की हिन्दी-टीका लिखी है। ग्रन्थ का प्रकाशन वैदिक साहित्य सदन दिल्ली से २०१० वि० मे हुआ।

५ ब्रह्मचर्य महत्त्वम्—अथर्व वेदोक्त ब्रह्मचर्य सूक्त के २६ मन्त्रो की छन्दोबद्ध व्याख्या १६४ पद्यो मे लिखी गई है। स्वामी वेदानन्द वेदवागीश ने इसकी हिन्दी टीका लिखी है। ग्रथ का प्रकाशन विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर द्वारा २०१२ वि० मे हुआ।

६. गुरुकुल शतकम्—११६ श्लोको के इस काव्य की रचना गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के महत्त्व का निरूपण करते हुए की गई है। वेदव्रत शास्त्री द्वारा लिखित हिन्दी टीका सहित यह ग्रथ प्रथम २०१७ वि० में सुधारक के विशेषाक रूप मे, पुन उसी वर्ष पुस्तक रूप मे हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित हुआ।

७ दयानन्द लहरी—१९२५ ई० मे महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर कवि ने इस अपूर्व ललित काव्य को रचना ५२ छदो मे की थी। इसका प्रथम सस्करण १९२५ ई० मे दयानन्द जन्म शताब्दी समिति द्वारा प्रकाशित किया गया। पुन २००० वि० मे श्री शरच्चन्द्र ब्रह्मचारी ने इसे येवला (नासिक) मे प्रकाशित किया। संस्कृत भाषा मे इसकी सुषमा नामक टीका प० सत्यव्रत व्याकरणाचार्य ने लिखी, जो हरयाणा साहित्य संस्थान से २०२५ वि० में प्रकाशित हुई।

८ दिव्यानन्द लहरी—५२ छदो मे रचित शिखरिणीप्रधान इस काव्य का प्रणयन कतिपय आध्यात्मिक विषयो की विवेचना को लक्ष्य में रखकर किया गया है। प० सत्यव्रत शास्त्री ने इसकी शमदा नामक संस्कृत टीका लिखी है। पुस्तक का प्रकाशन गुरुकुल चित्तौडगढ द्वारा २०१५ वि० मे हुआ।

९ ईशोपनिषत्काव्य—ईशोपनिषद् के मन्त्रों का छदोबद्ध व्याख्यान ४० पद्यो मे किया गया है।

उपर्युक्त प्रकाशित काव्य ग्रथो के अतिरिक्त कवि ने देशाभ्युदय काव्य (४५ पद्य), व्रतीन्द्र नित्यानन्द शतक (१०० पद्य), सर्वदानन्द यतीन्द्र चरितम् (५५ पद्य), सुखानन्द गिरि दर्शन (५२ पद्य), दिव्य कुञ्ज-योगाश्रम वर्णन (२७ पद्य), सत्यार्थप्रकाश महिमा (१५ पद्य) तथा सत्यार्थप्रकाश का संस्कृत अनुवाद आदि अनेक लघु काव्य भी लिखे है जो समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए।

पं० मेधाव्रत की संस्कृत गद्य रचनायें—

१ कुमुदिनी चन्द्र—यह रम्यगद्य मे लिखा गया उपन्यास है। इस का प्रकाशन प्रथम बार १९७६ वि० मे हुआ। श्री शरच्चन्द्र ने इसे २००८ वि० मे पुन प्रकाशित किया।

२ चारुचरितामृत-आर्यसमाज के कतिपय महापुरुषो के जीवन का वर्णन करने वाला यह गद्य ग्रथ कन्या गुरुकुल नरेला से लेखक के निधन के पश्चात् प्रकाशित हुआ।

३ प्रकृतिसौन्दर्यम्–६ अको में समाप्त इस नाटक को भावसदीपनी नामक हिन्दी टीका प० श्रुतबन्धु शास्त्री ने लिखी थी। प० श्रुतबन्धु शास्त्री मूलत बिहार प्रात के निवासी थे। वे आजकल अमेरिका में निवास कर रहे हैं।

४ गिरिराज गौरव—हिन्दी मे काव्य रचना करने मे भी कवि मेधाव्रत को अपूर्व व्युत्पन्नता प्राप्त थी। यह हिन्दी काव्य रचना १९८९ वि० मे प्रकाशित हुई है।

शराब के ठेकेदारों को नौजवानो की ललकार

प्रिय साथियो,

शायद आप सभी को मालूम होगा कि ठेका शराब बापोली, ब्रह्मपुर का सभी पचायतो का रेजुलेशन D C साहब करनाल को जा चुका है। ३१ माच के बाद ठेका यहा से सदा के लिए उठ जाना चाहिए। अगर कोई ठेकेदार गलत तरीके की भागदौड से अगले वर्ष के लिए छुडवाने की कोशिश करता है तो वह चलने नही दिया जाएगा और उसके हर्जे का वह स्वय जिम्मेवार होगा।

नौजवान गूजर सभा के क्रातिकारी नवयुवक बचनसिह चेची व आर्यवीर दल के ब्रह्मचारी रामस्वरूप आर्य के नेतृत्व में ५०० नौजवानो ने सकल्प लिया है कि इस पाप की जड को इस पवित्र भूमि मे से उखाड़ने के लिए भूख हड़ताल, मरणव्रत व हर तरह का सघष करेंगे। जिस भूमि को अत्यन्त कार्यकुशल व ओजस्वी नेता नलवा साहब जसे व अन्य नेतागण व हर आधुनिक सुविधायें दिलवाकर स्वर्ग बनाना चाह रहे हैं। चन्द सिरफिरे व स्वार्थी लोग सिर्फ अपना ही हित चाहकर धन कमाने की लालसा मे अपने ही भाइयो के घर उजाड कर इसे नरक बना रहे हैं। ऐसा नही होने दिया जायेगा। हमारे साथ जन सघर्ष समिति, महिला मण्डल, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्य वीरदल, नौजवान गुजर सभा, कई गुरुकुलो के साधु, सन्यासी, ब्रह्मचारी, तपस्वी अन्य सामाजिक सस्थाये, बापोली निवासी व आसपास के अच्छे, शुद्ध व पवित्र विचारो के लोगो का सहयोग है। राम और रावण के युद्ध मे जीत सदा राम की होती है रावण की नही। अच्छे कार्य के लिए परमात्मा हमारे साथ है।

इस पवित्र यज्ञ मे प्रथम आहुती डालने वाले शुद्ध व पवित्र विचारो के सेठ ताराचन्द व उनकी धर्मपत्नी के सहयोग का सभी धन्यवाद देते हैं। भाइयो इस ठेके के यहा होने से हमारे पढने वाले बच्चो पर, बहन-बेटियो, नौजवानो पर गलत प्रभाव पडता है। साय को हल्के के मौजिज व्यक्ति जो इस जहर को पीने वाले हैं उनका ड्रामा देखने को मिलता है। इससे हमारा नैतिक स्तर गिरता है। आस-पास के सभी भाइयो से अपील है कि अपने आपको अच्छे लोगो की गिनती में रखकर इस पवित्र कार्य में एकजुट होकर सहयोग दें।

—ब्र० रामस्वरूप आर्य, आर्य वीरदल हरयाणा

सम्पादक के नाम पत्र—

बच्चो के लिए नैतिक शिक्षा जरूरी

प्रिय महोदय,

सेवा में निवेदन है कि मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ कि भारतवर्ष मे सैंकडों प्रकार के स्कूल चल रहे है और नतिक-शिक्षा शिक्षा का एक अग है। जब तक हम बच्चों को नैतिक-शिक्षा नही ०० पायेगे तब तक शिक्षा अधूरी ही रहेगी। आगे चलकर नैतिक-शिक्षा के दो अग हो जाते हैं। एक वह शिक्षा पढना और एक उसका पालन करना। जहा तक अमल करने का सवाल है उस पर होना ही चाहिए। जब हम कहते हैं कि अपने मा-बाप, गुरु का सम्मान करो तो बच्चों को चाहिए कि अमली तौर से प्रतिदिन प्रात काल नियमित रूप से अपने मां बाप व गुरु का सम्मान करें। जिस प्रकार महाभारत में युधिष्ठिर से यह पूछा गया कि क्या कल का सबक याद कर लिया है? युधिष्ठिर ने मार खानी मजूर की परन्तु झूठ नही बोला। इसी प्रकार प्राचीनकाल में ताकतवर बुद्धिमान्, चरित्रवान् लोग हुआ करते थे। वे केवल ऋषि-मुनियो के उपदेश हैं और उन पर अमल करते थे। आज भी ऋषि कहलाने वाला एक ही व्यक्ति इस काल मे हुआ है महर्षि दयानन्द उसने ही व्यवहार भानु लिखकर चमत्कार के तौर पर यह दिखाया है कि नैतिक-शिक्षा लोगो के लिए जरूरी है।

—जयदेव गोयल पत्रकार, जींद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

रजिस्ट्रार समाचारपत्र द्वारा पंजि सं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 4/- फान ७८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० सत्यवीर

वर्ष १३, अङ्क १६ १४ मार्च १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा मे शराब-बन्दी आन्दोलन के बढ़ते कदम—

फ़िरोजपुर बांगर के बाद हसनगढ़ तथा बापोली मे शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

जिला रोहतक में खरखोदा सापला मार्ग पर स्थित ग्राम हसनगढ में ग्राम पचायत मे जनकल्याण युवा सेवा समिति के सहयोग से ५ मार्च बुधवार को यहा शराब के ठेके पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से धरणा आरम्भ हो गया है। सभा के उत्साही नवयुवक उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री इसकी तैयारी के लिए ४ मार्च को सायकाल यहा पहुँच गये थे। प्रातः शराब के ठेके के सामने यज्ञ किया गया। इस के पश्चात् सभा के उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी ने विधिवत् धरणे का उद्घाटन किया और धरणे पर बैठे उपस्थित नर-नारियो का आह्वान किया कि ग्राम से शराब की लानत को समाप्त करने के लिए कार्य में जुट जायें। ठेके पर शराब की बोतल खरीदने वालो को शातिपूर्ण तरीके से समझायें कि शराब के सेवन से जहा शरीर तथा चरित्र का नाश होता है वहा खून-पसीने से कमाया गया धन बर्बाद होता है। आयसमाज सदा बुराइयो को दूर करने के लिए आगे रहा है अत इसी उद्देश्य से सभा की ओर से बालावास जिला हिसार, नाहरी जिला सोनीपत, झाडसा जिला गुडगावा, फिरोजपुर बागर जिला सोनीपत के बाद अब हसनगढ जिला रोहतक मे धरणा देकर शराब के ठेके को बन्द कराने का कार्य आरम्भ किया गया है। आपने सापला से आये पुलिस दल को चेतावनी देत हुए कहा कि शराब के विरुद्ध प्रचार करना कोई अपराध नही है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता शातिपूर्ण धरणे पर तब तक बैठे रहेगे तब तक इस ग्राम से ठेका समाप्त नही हो जाता और आबकारी विभाग से लिखित रूप मे आगामी वर्ष भी ठेके की नीलामी न करवाने का आश्वासन दिया जायेगा। ग्राम की पचायत की ओर से गतवर्ष भी सरकार को शराबबन्दी का प्रस्ताव भेजा था और इस वर्ष भी प्रस्ताव भेज रखा है। परन्तु शराब का ठेका प्रस्तावो की उपेक्षा करके नीलाम करवा दिया जाता है। अब ग्राम के नर-नारी जाग चुके हैं। इस वर्ष शराब के ठेके की नीलामी का डटकर विरोध किया जायेगा। ग्राम के नवयुवक तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता गिरफ्तारियो से नही डरते। इस सम्बन्ध मे हरयाणा के मुख्यमन्त्री, आबकारी तथा कराधान मन्त्री को सभा की ओर से पत्र लिखे गये हैं।

धरणे पर सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, श्री अर्जुनदेव आर्य तथा प० तेजपाल की भजन मण्डली के शराबविरोधी व्याख्यान तथा भजनों को ग्रामीण जनता ध्यान से सुनती है। ग्राम के बच्चे ओ३म् के झण्डे के साथ प्रभातफेरियां कर रहे है। धरणे को सफल करने के लिए ग्राम रोहणा आदि के आर्य कार्यकर्त्ता भी तन मन तथा धन से पूरा सहयोग कर रहे हैं। सारा ग्राम शराब की बोतल फोड दो, शराब का ठेका तोड़ दो के जयघोषो से गूज रहा है। आशा है शीघ्र ही इस ग्राम से भी फिरोजपुर बांगर के बाद शराब का ठेका बन्द हो जायेगा। सभा के निरन्तर प्रचार से ग्रामो में चेतना तथा जागृति उत्पन्न हो रही है और हरयाणे के कोने-कोने मे शराब के ठेकों को बन्द कराने के लिए धरणा देने की तैयारिया की जारही है। ग्राम बापोली, ब्रह्मपुर जि० करनाल में भी आर्यसमाज के नेता सेठ ताराचन्द जी, श्री बचनसिंह चेची प्रधान हरयाणा नौजवान गूजर सभा, ब्र० रामस्वरूप आर्य वीरदल हरयाणा आदि सैकडो कार्यकर्त्ता शराब के ठेके को बन्द करवाने के कार्य मे जुटे हुए हैं। सभा की भजन मण्डली प० चिरञ्जीलाल जी ने यहा शराब विरोधी प्रचार किया है। सभा उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने भी यहा भ्रमण करके नवयुवको को प्रोत्साहित किया है। ग्राम पचायत ने भी सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को एक पत्र लिखकर ठेके को बन्द कराने मे मार्गदर्शन करने का अनुरोध किया है। राज्यसभा के सदस्य श्री हरिसिंह नलवा ने भी सहयोग करने का आश्वासन दिया है।

इसी प्रकार ग्राम माकडौला, गढी हरसरू, दमदमा जि० गुडगाव, ग्राम आसौधा, बिरोहड, भालौट, ढाकला, दूबलधन माजरा, साधी जि० रोहतक, ग्राम सिहोटी, भटगाव, मुहाना, जौलीलाठ जि० सोनीपत आदि मे भी वहा की पचायतें तथा नवयुवक सामाजिक कार्यकर्त्ता स्थानीय आर्यसमाजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग मे धरणा देने की तैयारिया कर रही हैं। यदि सरकार ने इन ग्रामो में पचायतो के प्रस्तावो की अवहेलना करके इस वर्ष भी शराब के ठेको की नीलामी की तो सरकार को जनसघर्ष का सामना करना पडेगा।

२३ मार्च को पिण्डारा जि० जीन्द में समस्त हरयाणा सम्मेलन

हरयाणा सघर्ष समिति के अध्यक्ष चौ० देवीलाल जी के प्रयत्नो से २३ मार्च को हरयाणा के प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थ पिण्डारा जि० जीन्द में समस्त हरयाणा सम्मेलन की तैयारिया जोर-शोर से की जारही हैं। उन्होने यह सम्मेलन अकाल तख्त अमृतसर तथा आनन्दपुर साहब में गत मास अकालियो के दोनो धडो द्वारा सरबत खालसा के नाम से आयोजित समारोहो मे पारित प्रस्तावो का प्रत्युत्तर देने के लिए आमन्त्रित किया है। इसमे क्षेत्रीय तथा नदी जल के मामले पर न्याय मागने के लिए हरयाणा की जनता की ओर से आगामी पग उठाने का कार्यक्रम तैयार किया जायेगा।

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने भी एक प्रेस वक्तव्य द्वारा हरयाणा की जनता से अपील करते हुए कहा है कि २३ फरवरी को हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक के निश्चयानुसार समस्त हरयाणा सम्मेलन को सफल करने के लिए सभी राजनैतिक दलो के कार्यकर्त्ताओ को दलगत पार्टीबाजी से ऊपर उठकर सहयोग करना चाहिए। हरयाणा के हितो की रक्षा करने के लिए सामूहिक रूप मे एकजुट होने से ही सफलता मिलेगी। आपने पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बरनाला के वक्तव्य की आलोचना करते हुए कहा है कि पजाब हरयाणा विभाजन के समय दोनो राज्यो के लिए पानी का जो बटवारा हुआ था, उसके अनुसार हरयाणा अपने हिस्से का पानी लेने के लिए अधिकारी है। प्रो० शेरसिंह ने दमदमी टकसाल के कार्यक्रम की कडे शब्दो में निन्दा करते हुए चेतावनी दी है कि यदि उन्होंने लिंक नहर की खुदाई बन्द कराने के लिए कार सेवा की तो हरयाणा मे भी इसकी प्रतिक्रिया होगी और हरयाणा के किसान अपने हितो की रक्षा के लिए बडे से बडा बलिदान करेंगे।

अकाली राजीव लौंगोवाल समझौते से [illegible]

अकालियों ने फिर अपना पुराना इतिहास दोहराया

पिछले ३० वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि अकाली समझौता करते हैं और जैसे ही उस पर अमल करने के लिए कदम उठाये जाते हैं वे अपने उस समझौते से मुकर जाते हैं और उससे बिल्कुल उल्टी माग रख देते है। २४ अक्तूबर, १९५६ मे ज्ञानी करतारसिह ने जो उस समय अकालियो के मुख्य प्रतिनिधि और उनके दिमाग माने जाते थे तथा सौदा करने मे माहिर समझे जाते थे, फाजिल्का अबोहर के १०५ गाव और दो शहरो को हिन्दी भाषी माना और कन्दूखेडा जिसको लेकर आज इतना बडा बखेडा खडा कर दिया गया, उसको भी हिन्दी क्षेत्र मे शामिल करने के लिए अपने हस्ताक्षर किये। दिसम्बर १९६५ मे अकाल तख्त पर उस दस्तावेज की तसदीक की। परन्तु १९६६ मे शाह कमीशन के सामने उसमे ठीक उल्टी माग करदी और अपने वचन मे यह कहकर फिर गये कि सरकारो ने उस पर अमल नही किया। उसी बात को १९७० मे फिर सन्त फतहसिह ने फैसले का आधार बनाया और चण्डीगढ के बदले हरयाणा को १९५६ के फैसले के आधार पर फाजिल्का अबोहर के इलाके देने की स्वय पेशकश करदी। श्रीमती गाधी ने सन्त फतेहसिह की बात मानकर अपना फैसला दे दिया। जैसे ही उस फैसले पर अमल की बात चली, फैसले से फिर मुकर गये। १९८१ मे जब पाप युद्ध (कहने के लिये धर्मयुद्ध) छेडा तब १९७० के फैसले से मुकरे ही नही, उससे उल्टी माग करदी।

नया समझौता

४ साल तक देश में लूटमार, खून-खराबा, बलात्कार, देश के सविधान और झण्डे का अपमान तथा देश को तोडने के षडयन्त्र करते रहे। २४ जुलाई, १९८५ के दिन फिर सन्त लौंगोवाल ने राजीव जी के साथ समझौता किया और फाजिल्का अबोहर का इलाका सीधा न देकर आयोग के द्वारा देने की बात मान ली। आयोग का गठन होने से पहले ही १३ अगस्त, १९८५ को अपनी हत्या से एक सप्ताह पहले यह कहा कि हरयाणा को आयोग के द्वारा अबोहर के आस पास के ५५ गाव मिल सकते है। इसका खण्डन उनके जीते जी न उन्होने किया और न ही अकाली दल ने। उस फैसले मे सन्त लौंगोवाल के मुख्य सलाहकार स० सुरजीतसिह बरनाला और स० बलवन्तसिह दोनो ही थे। जब आयोग बैठ गया और सुनवाई हुई तो फिर सन्त लौंगोवाल के बयान से मुकर गये। परन्तु आयोग ने उनकी बात नही मानी और स्पष्ट कहा कि फाजिल्का अबोहर को छोड और किसी इलाके पर वे विचार नही कर सकते, क्योकि समझौते मे इसी इलाके का सकेत है। सन्त लौंगोवाल १९८१ की जनगणना का सहारा लेकर उसी के आधार पर हिन्दी-भाषी गाँव देना चाहते थे और उनकी सख्या ५० से ऊपर बनती थी। आयोग ने अपने अधिकार क्षेत्र की सीमा से बाहर जाकर न जाने अपनी पहली धारणा छोडकर कन्दूखेडा पजाबी भाषी न होने के कारण ८३ गाव और दो शहर जिन को दो बार गिनती के आधार पर हिन्दी-भाषी मान लिया था, हरयाणा को देने मे विवशता दिखाई और मामले को उलझा दिया। आयोग ने सरकार को स्वय या दूसरे आयोग के द्वारा फैसला करवाने की सिफारिश की। आयोग ने १९८१ की जनगणना को तो धोखा माना।

२५ फरवरी, १९८० को जब मैं प्रधानमन्त्री से मिला तो ये सब बाते सक्षेप मे उनके सामने रखी और उनसे कहा कि जब ४ लाख की आबादी का और ८००० करोड की लागत का चण्डीगढ हिन्दी-भाषी होते हुए पजाब को दिया जा सकता है तो केवल एक गाव २००० की आबादी का पजाबी-भाषी होने के कारण हरयाणा को क्यो नही दिया जा सकता। यदि हरयाणा की सीमा से फाजिल्का अबोहर के गाव जोड़ने जरूरी है और कन्दूखेडा हरयाणा को अकालियो की जिद के खिलाफ नही दिया जा सकता तो राजस्थान के गाव हरयाणा को देकर उन गावों को हरयाणा से जोडा जा सकता है। नहर की खुदाई का काम भारत सरकार अपने हाथ में ले और न्यायाधिकरण रावी व्यास के पानी का बटवारा पजाब पुनर्गठन कानून १९६६ की धारा ७८ को आधार मान करे, यह प्रार्थना भी की। प्रधानमन्त्री ने ध्यान से बातें सुनकर उन पर न्यायपूर्वक फैसला करने का आश्वासन दिया।

जो पैंतरा बरनाला ने बदला है और रावी व्यास के पानी के बारे मे हरयाणा को एक बूद पानी भी न देने की बात कही तथा सतलुज यमुना जोड नहर बनाने को व्यर्थ कहा है, उससे एक नई स्थिति पैदा हो गई है। इस बदली हुई स्थिति मे प्रधानमन्त्री को ठोस सुझाव देने के लिये मैंने ७ मार्च, १९८६ को एक पत्र प्रधानमन्त्री को लिखा है। उसमें उनका ध्यान इस बात की ओर दिलाया है कि अकाली अब राजीव लौंगोवाल समझौते को छोड़ चुके हैं और यदि समझौते पर न्यायपूर्वक अमल करना है जिसका आश्वासन उन्होने दिया है तो सख्त कदम उठाने पडेंगे। पत्र मे अकालियो की इस ढिठाई और सीनाजोरी पर आश्चर्य प्रकट करते हुए लिखा है कि अकाली एक पजाबी भाषी गाव तो हरयाणा को नही दे सकते, लेकिन ७ दर्जन से ऊपर हिन्दी भाषी गाव पजाब मे रखेगे। पत्र मे उन तीन गाव के नाम भी दिये हैं जिनसे हरयाणा मे शामिल करने से फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा से जुड सकता है। उन तीन गाव के बदले मे हरयाणा राजस्थान को कुछ गाव देने को तैय्यार है। वे तीन गाँव हैं रामपुर माल्हा, भाकरावाली तथा हरिपुरा।

रावी व्यास के पानी का बटवारा

अकाली नेता जो समझौते के कर्णधारो में से थे, उन्होने समझौते की धारा ९ के दोनो भागों में यह माना है कि हरयाणा का अधिकार केवल उस पानी पर ही नही, जो उसके किसानो ने १ जुलाई, १९८५ से पहले इस्तेमाल किया है बल्कि बाकी पानी पर भी उसका पूरा अधिकार है और न्यायाधिकरण जिसका गठन अब हो चुका है, हरयाणा को कितना पानी रावी व्यास से मिलेगा, इसका फैसला करेगा। बरनाला तो सन्त लौंगोवाल के मुख्य सलाहकार थे और पिछले ७ महीने से यह मानते आरहे हैं कि हरयाणा का रावी व्यास के पानी मे हक है और उस पानी को ले जाने के लिये वे सतलुज यमुना लिक नहर बनायेंगे। परन्तु ६ मार्च को अचानक पिछली सब बातो और राजीव लौंगोवाल समझौते को ताक पर रखकर उन्होंने कह दिया कि रावी व्यास के पानी पर हरयाणा का कोई हक नही है। पजाब मे पानी की सतह नीचे जा रही है इसलिये हरयाणा को देने के लिए उनके पास पानी बिलकुल नही है और इसलिये जोड नहर बनाना बेकार है। यह कलाबाजी करना अकालियों की आदत हो नही वे इसे अपना धर्म मानते हैं। पत्र मे यह भी लिखा है कि आतकवादियो की गतिविधिया, लूटमार और उदारवादी तथा शासक अकालोदल की बाते एक मिला-जुला खेल है तथा एक नाटक है। आतकवादी और शासक अकाली दल दोनो एक ही बात बोलते हैं और सब कुछ मिलकर करते हैं, इसलिये प्रधानमन्त्री को समझ लेना चाहिये कि बरनाला सरकार उग्रवादियो के साथ यही नही कि सख्ती नही कर सकती, बल्कि मिली हुई है। इस अवस्था में आतकवादियो की लूट तथा कत्लो और राष्ट्र-विरोधी गतिविधियो को रोकने के लिये भारत सरकार को बरनाला मन्त्रीमण्डल तोडकर पजाब को फिर से फौज के हवाले करना होगा। देश की एकता और पजाब की जनता की सुरक्षा के लिये यह अब अनिवार्य हो गया है।

बरनाला के ६ मार्च, १९८६ के वक्तव्य के बाद अब आतकवादियों ने जोड नहर को जितनी खुदी है उसको मिट्टी से भरने के लिये कार सेवा की घोषणा की है। बरनाला सरकार और आतकवादियों का मिला जुला यह कदम, पजाब समझौते के अमल तथा हरयाणा के लिये ही चुनौती नही, भारत की एकता को तथा राष्ट्र को चुनौती है। हरयाणा तथा समूचे भारत को इस चुनौती का हिम्मत के साथ जवाब देना होगा।

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा [illegible]

सम्पादकीय

सर्वहितकारी और जातिवाद

हमारे पाठक श्री हरिचन्द गुप्ता दिल्ली ने सभा मन्त्री जी के नाम पत्र लिखा है जिसमें सर्वहितकारी पत्र पर जातिवाद फैलाने, जाट संस्थाओ के समाचार प्रकाशित करने तथा शिवाजी को जाट लिखने और चौ० छोटूराम जी के लेख मे जाट शब्द के प्रयोग पर आपत्ति की है।

हम सिद्धात रूप मे और निजी-जीवन मे भी जन्मजात जाति या वर्णव्यवस्था के स्थान पर कर्म के आधार पर वर्णव्यवस्था को महत्त्व देते है। सर्वहितकारी यद्यपि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक पत्र है और सभा तथा आर्यसमाज से सम्बद्ध सस्थाओ के ही समाचार आदि प्रमुखतया इसमे छपते है। पुनरपि, प्रासगिक सामयिक सूचनायें भी सामान्यतया छपती रहती है। मुझे जानकारी नही है कि विगत १३ वर्षो मे कौन-सी 'जाट सस्थाओं' के समाचार छपे हैं। यदि गुप्ता जी बतला सकेंगे तो उनका स्पष्टीकरण किया जा सकेगा।

२ जहा तक शिवाजी सम्बन्धी लेख (२८-२-८६ अक) की बात है वह सर्वखाप पचायत शोरम के पुराने रिकाड के आधार पर नायब सूबेदार लालसिह आर्य ने लिखकर भेजा है। छत्रपति शिवाजी के पिता शाह जी भोसले और दादा माला जी भोसले बलवर्धी कश्यप गोत्री जाट कुल मे पैदा हुए थे। यह एक ऐतिहासिक अनुसधान की घटना है। यदि यह सर्वखाप पचायत के चार-पाच सौ वर्ष पुराने रिकाड के अनुसार सत्य है तो इसे स्वीकार करने मे और सर्वहितकारी मे छापने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

३ १४ फरवरी के सर्वहितकारी मे 'आर्य राजनेता चौ० छोटूराम' लेख के लेखक श्री निहालसिह आर्य अध्यापक है और उनका जन्म जाट घराने मे नही हुआ। उन्होने सर्वहितकारी मे छपे डेढ पृष्ठ के लम्बे लेख मे प्रसगवश चार स्थानो पर जाट शब्द का प्रयोग किया है—

१ 'जाट की मरोड मे भी कौन घटा सकता है।' मि० जिन्ना के साथ भोजन निमन्त्रण प्रसग मे।

२ 'सत्यार्थप्रकाश को पढ ११वें समुल्लास मे ईमानदार कर्मठ जाट जी और स्वार्थी पोप जी की कथा से और दृढ आर्य बन गये।'

३ 'जाट हाई स्कूल मे सस्कृत, सध्या, हवन अनिवार्य थे।'

४ 'जाट किसानो के सगठन के लिये जाट गजट पत्र चलाया।'

लेखक या वक्ता के अभिप्राय के विपरीत भावना से वास्तविक अभिव्यक्ति नही हो सकती। श्री निहालसिह आर्य ने प्रसगवश ऊपर लिखे चार स्थानो पर जिस ढग से जाट शब्द का प्रयोग किया है उससे यह नही प्रतीत होता कि उन्होने जन्मगत जातिवाद को बढावा दिया है।

यो तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रथ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास मे गरुडपुराण की पोप लीला के प्रसग मे एक दृष्टान्त जाट जी और पोप जी का लिखा है। उसमे २२ बार 'जाट' और "जाट जी" शब्द प्रयुक्त हुआ है। गुप्ता जी की भावना के अनुसार तो "सत्यार्थप्रकाश" भी जातिवाद फैलाने वाला ग्रथ होगया और आर्यो को इसका पठन-पाठन भी नही करना चाहिये।

हरयाणा के वयोवृद्ध आर्य उपदेशक पण्डित बस्तीराम जी प्रचार यात्रा में एक गाव से दूसरे गाव मे जारहे थे। नई जूती पैर को काटने लगी। पण्डित जी ने जूती निकाल कर हाथ मे ले ली। मार्ग मे एक परिचित व्यक्ति मिला, उसने पण्डित जी को टोक दिया—"दादा आज तो जूती हाथ में ले ली।" पण्डित जी ने कहा—"देख सुसरे चमार की कहा चाम पर नजर पडी है। मेरे पास और इतना सामान है वह दिखाई नही दिया।"

प्रतीत होता है गुप्ता जी जातिवाद से ग्रसित है और उनको सर्वहितकारी में भी वही नजर आरहा है जैसे श्रावण के अन्धे को सब कुछ हरा ही प्रतीत होता है। "श्रावणान्धीभूतस्य सर्वमेव हरितायते।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती शैवमतानुयायी औदिच्य ब्राह्मण कर्षण जी लाल जी तिवाडी के घर मे काठियावाड के टकारा ग्राम मे उत्पन्न हुए। जिन आर्यों को टकारा देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे सब जानते हैं उस प्रदेश मे उस समय जाट नाम का कुछ भी नही था और न अब है। पुनरपि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश मे ११० वर्ष पूर्व गरुडपुराण की पोप लीला के खण्डन मे जाट जी और पोप जी का जो दृष्टात दिया है वह वास्तव मे एक प्रत्यक्ष देखी हुई घटना प्रतीत होती है। महर्षि दयानन्द इसमे बहुत प्रभावित हुए हैं। वे लिखते हैं कि—"जब ऐसे ही जाट जी के से पुरुष हो तो पोपलीला ससार में न चले।"

सर्वहितकारी के पाठको के लाभार्थ सत्यार्थप्रकाश का वह प्रसग यहा उद्धृत किया जाता है -

'श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान उन मरे हुए जीवो को तो नही पहुचता किन्तु मृतको के प्रतिनिधि पोप जी के घर, उदर और हाथ मे पहुँचता है। जो वैतरणी के लिये गोदान लेते है वह तो पोप जी के घर मे अथवा कसाई आदि के घर मे पहुँचता है। वैतरणी पर गाय नही जाती, पुन. किस की पूँछ पकड कर तरेगा ? और हाथ तो यही जलाया वा गाड दिया गया फिर पूछ कैसे पकडेगा ? यहा एक दृष्टात इस बात मे उपयुक्त है कि—

एक जाट था। उसके घर मे एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देने वाली थी। उसका दूध बडा स्वादिष्ट होता था। कभी-कभी पोप जी के मुख मे भी पडता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का सकल्प करा लूंगा। कुछ दिनो मे दैवयोग से उसके बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोडने का समय आ पहुँचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पोप जी पुकारा कि यजमान ! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट दस रुपया निकाल पिता के हाथ मे रखकर बोला पढो सकल्प।

पोप जी बोला वाह वाह ! क्या बाप वारम्बार मरता है ? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुड्ढी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिये।

(जाट जी) हमारे पास तो एक ही गाय है, उसके बिना हमारे लडकेबालो का निर्वाह न हो सकेगा, इसलिये उस को न दूंगा। लो बीस रुपये का सकल्प पढ देओ और इन रुपयो से दूसरी दुधारू गाय ले लेना।

(पोप जी) वाह जी वाह ! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो ? क्या अपने बाप को वैतरणी नदी मे डुबाकर दु ख देना चाहते हो ? तुम अच्छे सुपुत्र हुए ?

तब तो पोप जी की ओर सब कुटुम्बी हो गये, क्योकि उन सब को पहिले ही पोप जी ने बहका रखा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सब ने मिलकर हठ से उसी गाय का दान उसी पोप जी को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पिता मर गया और पोप जी बच्छा सहित गाय और दोहने की बटलोई को ले, अपने घर में गौ बाध, बटलोई धर पुन जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशान भूमि मे जाकर दाहकर्म कराया। वहा भी कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र सपिडी कराने आदि मे भी उसको मूडा। महाब्राह्मणो ने भी लूटा और भुकडो ने भी बहुत-सा माल पेट मे भरा। अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध माग मंग निर्वाह किया। चौदहवे दिन प्रात काल पोप जी के घर पहुचा। देखा तो पोप जी गाय दुह, बटलोई भर, पोप जी की उठने की तैयारी थी। इतने मे ही जाट जी पहुचे। उसको देख पोप जी बोला आइये ! यजमान बैठिये।

(जाट जी) तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

(पोप जी) अच्छा दूध धर आऊ।

(जाट जी) नही नही, दूध की बटलोई इधर लाओ। पोप जी विचारे जा बैठे और बटलोई सामने धरदी।

(जाट जी) तुम बडे झूठे हो।

(पोप जी) क्या झूठ किया ?

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हरयाणा में शराब के ठेकों की नीलामी

हरयाणा सरकार के आबकारी तथा कराधान विभाग की सूचना के अनुसार जिलेवार शराब के ठेको की नीलामी का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

१) अम्बाला ७ मार्च, २) कुरुक्षेत्र ८ मार्च, ३) महेन्द्रगढ १० मार्च, ४) भिवानी ११ मार्च, ५) सिरसा १२ मार्च, ६) हिसार १३ मार्च, ७) करनाल १४ मार्च, ८) जीद १७ मार्च, ९) फरीदाबाद १८ मार्च, १०) गुडगाव १९ मार्च, ११) सोनीपत २१ मार्च, १२) रोहतक २२ मार्च।

हरयाणा के आबकारी एव कराधान मन्त्री श्री कटारसिंह छोकर ने एक वक्तव्य मे घोषणा की है कि हरयाणा मे अनेक गाव पचायतो ने अपने गाव मे शराब के ठेके न खोलने के लिए राज्य सरकार को लिखा है। ऐसे गाव मे अगले वित्त वर्ष मे ठेके नही खोले जायेगे। उन्होने यह भी कहा है कि हरयाणा मे शराब की खपत दिन प्रतिदिन बढती जारही है। जब हरयाणा बना था तो इस राज्य को आबकारी से २४ करोड रुपये की आमदनी थी जो अब बढकर ११३ करोड हो गई है।

हरयाणा के जिन ग्राम पचायतो की ओर से सरकार को शराब का ठेका बन्द कराने का प्रस्ताव भेज रखा है वहा की पचायत तथा आर्यसमाजो के अधिकारियो एव सामाजिक कार्यकर्त्ताओ का कर्त्तव्य है कि वे उपरोक्त नीलामी के कार्यक्रम के अनुसार अपने-अपने जिलो के आबकारी एव कराधान कार्यालयो पर जाकर अधिकारियो से अनुरोध करे कि पचायत के प्रस्तावो के आधार पर वहा ठेके की नीलामी न करे। पचायत के कानून तथा आबकारी कराधान मन्त्री की घोषणा के अनुसार पचायतो के प्रस्तावो की अवहेलना सरकार की धीगा-मस्ती होगी और शराब के ठेकेदारो के लिए मुफ्त मे लाखो रुपये की कमाई तथा शराब खरीदने वाले किसान मजदूरो के लिए खून-पसीने की कमाई नष्ट करने का अवसर मिलेगा। अत आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता शराब बन्दी आदोलन मे सहयोग करके शराब की लानत समाप्त कराने मे सहयोग प्रदान करे।

प्रो० सत्यवीर विद्यालकार सभा उपमन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

(जाट जी) कहो तुमने गाय किस लिये ली थी ?

(पोप जी) तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिये।

(जाट जी) अच्छा तो तुमने वहा वैतरणी के किनारे पर गाय क्यो नही पहुचाई ? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बाध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी मे कितने गोते खाये होगे ?

(पोप जी) नही नही, वहा इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बनकर उसको उतार दिया होगा।

(जाट जी) वैतरणी नदी यहा से कितनी दूर और किधर की ओर है ?

(पोप जी) अनुमान से कोई तीस करोड कोस दूर है, क्योकि उञ्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैऋर्त्य दिशा में वैतरणी नदी है।

(जाट जी) इतनी दूर से तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो, उसका उत्तर आया हो कि वहा पुण्य की गाय बन गई, अमुक के पिता को पार उतार दिया, दिखलाओ।

(पोप जी) हमारे पास गरुडपुराण के लेख के बिना डाक वा तारवर्की दूसरा कोई नही।

(जाट जी) इस गरुडपुराण को हम सच्चा कैसे माने ?

(पोप जी) जैसे सब मानते हैं।

(जाट जी) यह पुस्तक तुम्हारे पुरुषाओ ने तुम्हारे जीविका के लिये बनाया है, क्योकि पिता को बिना अपने पुत्रो के कोई प्रिय नही। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी-पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुँचा दूंगा और उनको पार उतार पुन गाय को घर मे ले आ दूध को मैं और मेरे लडकेबाले पिया करेंगे। लाओ ! दूध की भरी बटलोई।

गाय बछडा लेकर जाट जी अपने घर को चला।

(पोप जी) तुम दान देकर लेते हो, तुम्हारा सत्यानाश हो जायेगा।

(जाट जी) चुप रहो, नही तो तेरह दिन लो। दूध के बिना जितना दु ख हमने पाया है सब कसर निकाल दूगा।

तब पोप जी चुप रहे और जाट जी गाय बछडा ले अपने घर पहुँचे।

जब ऐसे जाट जी के से पुरुष हो तो पोपलीला ससार मे न चल सके।

(ताम्रपत्र सत्यार्थप्रकाश ११ समुल्लास पृष्ठ २३५-२३६)

—वेदव्रत शास्त्री

हरयाणा में आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

हरयाणा के आर्यसमाजो तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव निम्न प्रकार हो रहे है। इन पर वैदिक विद्वानो के अतिरिक्त सभा के अधिकारी, उपदेशक एव सभा के भजनोपदेशक प्रचारार्थ पधारेंगे—

नई कालोनी गुडगाव	८ से १३ मार्च
गुरुकुल भेसवाल कला जि० सोनीपत	१४-१५-१६ ,,
गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	१४-१५-१६ ,,
आर्यसमाज आहूलाना जि० सोनीपत	२१-२२-२३ ,,
,, सालवन जि० करनाल	२१-२२-२३ ,,
,, पाढा जि० करनाल	२१-२२-२३ ,,
,, मन्धार जि० कुरुक्षेत्र	२६-२७-२८ ,,
,, ऊचा चादना जि० कुरुक्षेत्र	२४-२५-२६ ,,
,, अलाहर जि० कुरुक्षेत्र	२५-२६-२७ ,,
,, ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२८-२९-३० ,,
,, श्रद्धानन्द नगर नई कालोनी पलवल	२८-२९-३० ,,
,, मुवाना जि० जीद	२८-२९-३० ,,
,, मनाना जि० करनाल	२८-२९-३० ,,
,, कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० करनाल	२७-२८-२९-३० ,,
,, भाऊ अकबरपुर जि० रोहतक	३१ मार्च से २ अप्रैल
,, माडल टाउन सोनीपत	३१ मार्च से ७ अप्रैल
,, नरवाना जि० जीद	४-५-६ ,,
,, सैक्टर ९ पचकूला जि० अम्बाला	५-६ ,,
,, गुरुकुल कुरुक्षेत्र	४-५-६ ,,
,, घरौडा जि० करनाल	११-१२-१३ ,,
,, नारग जि० सोलन (हिमाचल प्रदेश)	१८-१९-२० ,,
,, श्रद्धानन्द पुरम अर्बन इस्टेट गुडगाव	२५-२६-२७ ,,
,, सोनीपत नगर	२-३-४ मई
,, सैक्टर १३ अर्बन इस्टेट करनाल	१६-१७-१८ ,,

जिन आर्यसमाजो ने अभी तक अपने उत्सव नही रखे हैं वे ऊपर लिखित तिथियो को ध्यान मे रखकर उत्सव रखें ताकि प्रबन्ध करने में सभा को सुविधा रहे।

—वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य विद्या सभा गुरुकुल काँगड़ी के समाचार

१ सहायक मन्त्री—प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार (हरयाणा) तथा श्री आशानन्द आर्य (पजाब)

२ कार्यकारिणी के सदस्य—१. श्री रामगोपाल जी शालवाले, २. स्वामी ओमानन्द सरस्वती, ३ श्री हरवशलाल शर्मा, ४ महाशय धर्मपाल आर्य सर्वसम्मति से निर्वाचित किये गये।

३ गुरुकुल कागडी फार्मेसी हरद्वार के व्यवसाय पटल का गठन—

१ श्री सूर्यदेव जी, २ ला० रामगोपाल जी, ३ डा० हरिप्रकाश जी, ४ श्री बलदेव आयुर्वेदालकार, ५ फार्मेसी के केमिस्ट, ६. एजेन्टों के प्रतिनिधि, ७ श्री योगेन्द्रपाल सेठ, ८ श्री हरवशलाल शर्मा, ९. श्री ब्रह्मदत्त जी पजाब सभा, १० प्रो० सत्यवीर शास्त्री, ११ प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार, १२ डा० रणजीतसिंह हरयाणा सभा, १३ महाशय धर्मपाल आर्य, १४ श्री सत्यदेव विद्यालकार, १५ श्री वेद शर्मा दिल्ली सभा।

४ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड द्वारा अग्रेजी में अनुदित वेदों का प्रकाशन किया जा रहा है। इसे पूरा करने के लिए डा० रणजीतसिंह जी की सेवायें लेने का निश्चय किया गया। वे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से सम्पर्क करके कार्य आरम्भ करेंगे।

डा० धर्मपाल मन्त्री

जिला हिसार मण्डल में उत्सवों द्वारा वेदप्रचार की धूम

ग्राम सातरोड कला—दिनाक २२-२३ फरवरी को ग्राम सातरोड कला का उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी जगतमुनि, वानप्रस्थ महावीर जी के समाज में फैली बुराइयो पर एव धर्म क्या है प्रभावशाली प्रवचन हुये। अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने भी लोगो को विशेष रूप से शराब एव दहेजबन्दी बारे जोर दिया। इन के अतिरिक्त प० चन्द्रभान एव महाशय झावेराम के शिक्षाप्रद भजन हुए। यह सारा कार्य बहन करुणा शास्त्री के अथक प्रयास एव सहयोग से सफल हुआ। यज्ञ पर कुछ नवयुवको ने जनेऊ धारण किये तथा साथ में धूम्रपान एव शराब न पीने का व्रत लिया।

ग्राम कवारी—दिनाक २८ फरवरी को ग्राम कवारी मे प० चिरन्जी लाल की भजन मण्डली द्वारा प्रभावशाली वेदप्रचार हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने भी विशेषकर नवयुवको को शराब एव जुआ आदि बुराइयो से दूर रहने पर बल दिया।

ग्राम धमाना—दिनाक १-२ मार्च को ग्राम धमाना में आर्यसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी, प० भगतलाल शास्त्री, बहन करुणा शास्त्री, अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने राष्ट्र रक्षा, मूर्ति पूजा नकली भगवान पच महायज्ञ शराब बन्दी एव दहेज बारे अपने विचार रखे। इनके अतिरिक्त प० चिरन्जीलाल, प० ईश्वरसिंह, प० चन्द्रभान हरिचन्द प्रचारी महाशय रिसालसिंह एव बहन कलावती के प्रभावशाली समाज मे फैली बुराइयो पर शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रात यज्ञ पर स्वामी सर्वदानन्द जी के आत्मा परमात्मा बारे प्रभावशाली व्याख्यान भी हुआ। ७ नवयुवको ने प्रभावित होकर यज्ञोपवीत धारण किये। धूम्रपान आदि बुराइयो को छोड़ने का व्रत लिया। गाव वालो की हवन के प्रति विशेष श्रद्धा थी। ८ किलो घी से हवन किया गया। इस कार्य मे महाशय रामसिंह, अमरसिंह आर्य मुन्शीराम आर्य, महावीर आर्य, रणवीरसिंह एव कर्णसिंह सरपच का विशेष सहयोग रहा। इस सारे कार्यक्रम का सचालन क्रातिकारी जी ने बडी कुशलता से किया। उत्सव मे निकट के ग्रामो के लोगो ने भी बढ-चढकर भाग लिया। सभा को ५०० रुपये दान दिया।

केदारसिंह आर्य

शुद्धि समाचार

आज दिनाक २-३-८५ को यज्ञ-हवन किया गया। आर्यसमाज सेंटस् मद्रासी स्वामी सेवानन्द की अध्यक्षता मे ६ परिवारो की शुद्धि की गई जोकि पहले ईसाई धर्म को मानते थे। शुद्धि सस्कार श्री भरतसिंह आर्य कोषाध्यक्ष व श्री सुन्दरम प्रधान टी नारायण जी के देख-रेख में सम्पन्न किया गया। शुद्धि के पश्चात् सेवानन्द सरस्वती ने शुद्धि पर बल दिया। शुद्ध हुए व्यक्तियो की सूची—

१, एल० एस० रानी एस हेमलता, २ मीरया सेलवम पुत्र जौसेफ जे० भाष्कर, ३ जे० हरिकृष्ण पुत्र जौसेफ श्री हरिकृष्ण, ४ ए० स्टेनलीराम पुत्र ए० पी० फारतार श्री विजयकुमार, ५ जेजयाकुमार पी० जीवनायन श्री अजयकुमार, ६ डी० येशुदास श्री त्याग राजन, ७ डी० पालदास श्री बाला जी, ८ सी० पालदानू श्री बाला जी, एल० पी० रानी कमला।

सेवानन्द सरस्वती
हिन्दू शुद्धि सरक्षणी सभा हरयाणा

शोक समाचार

आर्यसमाज गोदर काजाल के प्रधान श्री मोलडसिंह का स्वर्गवास २० फरवरी को हो गया। वे कुछ दिनो से बीमार चल रहे थे। उन्होने अपनी युवावस्था मे आर्यसमाज की विशेष सेवा की। गोरक्षा आदोलन तथा हैदराबाद सत्याग्रह मे भी योगदान दिया। दिवगत आत्मा को परमात्मा से शाति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

मन्त्री आर्यसमाज

शिवरात्रि

शिव रात की उस रात का ससार नया था।
घनघोर घटा रात में जीने का मजा था॥
उस रात के पर्दे मे कोई भेद छुपा था।
क्या-क्या मैं कहू, रात मे क्या-क्या था, वह क्या था॥

उस रात ने मजिल का सही मार्ग दिखाया।
उस रात ने शकर को दयानन्द बनाया॥

सब नीद के आचल मे ही लेटे थे पुजारी।
शिव पूजने वालो की थी, आखो मे खुमारी॥
शिव पाने का एक ओर, मगर काम था जारी।
इक मर्द ने आखो मे ही वह रात गुजारी॥

वह ढूढ ही लेता है जो हो ढूढने वाला।
आखिर को 'दयानन्द' ने शिव खोज निकाला॥

ससार का अधकार मिटाया था ऋषि ने।
सोई हुई जाति को जगाया था ऋषि ने।
अज्ञान के पर्दों को हटाया था ऋषि ने।
जब वेद का डका ही बजाया था ऋषि ने॥

आकाश वा पाताल ध्वनि वेद की गूजी।
कृपा से ऋषिवर की, बची देश की पूजी॥

कुछ 'नाज' तो आकाश मे धरती पै गिरे हैं।
कुछ सोये हुए है तो कई ऊघ रहे हैं॥
सन्देश दयानन्द का भी भूल गये हैं।
इस वास्ते व्याकुल है परेशान हुए है॥

आओ कि सभी मिल के जमाने को जगा दे।
फिर देश की बिगडी हुई हालत को बना दे॥

नाज सोनीपती

दूर हटे अज्ञान अन्धेरा

कभी न दीपक बुझे हमारा, प्रेम दया का समता का।
सब मे हो सद्भाव सुजाग्रत, स्रोत बहे सरसता का॥
दूर अभावो का युग भागे, सब मे हो कर्तव्य सुनिष्ठा।
सजग रहें नर-नारी निरन्तर, बढे धरा पर राष्ट्र-प्रतिष्ठा॥
चले चतुर्दिक् निर्माणों का, भारत में अविरल अभियान।
सत्य-शिवम्-सुन्दरता पूरित, आए भू पर नवल विहान॥
जाग्रत ज्योति जगे ज्योतिर्मय, दूर हटे अज्ञान अधेरा।
भारत के फिर भाग्य व्योम मे, आए सुन्दर सुखद सबेरा॥

राधेश्याम आर्य

आर्यसमाज गढ़ी बीरबल जि० करनाल का उत्सव

गत मास आर्यसमाज गढी बीरबल जि० करनाल का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सदानन्द जी, स्वामी गुरुदत्त मुनि, चौ० नत्थासिंह जो, महाशय हरलाल जी तथा सभा के भजनोपदेशक प० शेरसिंह जी ने व्याख्यानो तथा भजनो द्वारा वेदप्रचार किया। यज्ञ पर अनेक नवयुवको ने यज्ञोपवीत धारण किये तथा ग्राम के सरपच ने ग्राम से शराब का ठेका उठवाने का सकल्प किया।

मन्त्री आर्यसमाज

राष्ट्र-निर्माण और युवा-शक्ति

पिछले कई वर्षों के दौरान राजनीतिक अस्थिरता, उखाड़-पछाड़ और आपधापी के कारण सम्पूर्ण देश में कुण्ठा और निराशा का जो वातावरण बना उसमें हमारी युवाशक्ति सर्वाधिक प्रभावित हुई। उसमें एक विशेष प्रकार की निराशाजनित कुण्ठा उभर आई। यही कारण था कि स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वाले युवा खुदीराम बोस के उस कर्त्तव्य पथ को छोड़कर हमारी सामर्थ्यवान युवाशक्ति पराजित मनोवृत्ति का शिकार होने लगी। यह आश्चर्यजनक सत्य उस बात से भी उद्घाटित होता है कि पिछले बरसों में जितने भी दंगे-फसाद, लूटमार, अपराध और आतंकवादी घटनायें हुई, उसमें युवा और किशोर आयु के लोग ही या तो पकड़े गये या मारे गये। विश्वविद्यालयों अथवा अन्य स्थानों पर उच्छृंखलता के जो दृश्य देखने में आये, उनमें युवाओं ने ही बढ़-चढ़कर भाग लिया।

अब परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन हुआ है। युवा प्रधानमन्त्री के नेतृत्व में आशा की जा सकती है कि देश का युवा मानस सक्रिय होगा। उसे अपनी सम्पूर्ण आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और भावनाओं को पूरा करने का अवसर मिलेगा। आज सभी क्षेत्रों के युवा-वर्ग की आशायें उन्हीं पर टिकी है। यह वर्ग चाहे श्रमिक वर्ग हो, शिक्षित वर्ग हो या अधुनातन विज्ञान से जुड़ा वर्ग हो। गत वर्ष सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और कलात्मक स्तर पर जो निर्णय लिए गये है, उनसे भी युवा-जन को विश्वास मिला है। त्रासदी यह रहा कि युवाजनों का उच्छृंखलताजनित घटनाओं को कभी तो युवा भटकाव कहकर टाल दिया गया और कभी उसका कारण बेरोजगारी, बढ़ती आबादी अथवा शिक्षा-पद्धति में दोष बताया गया। कभी यह कहा गया कि युवा-पीढ़ी को सही सामाजिक धरातल मिल सके, ऐसा अवसर ही नहीं आया। कभी यह बताया गया कि यह उसी विनाशपूर्ण स्थिति का परिणाम है जिसने सारे संसार को अपनी लपेट में ले रखा है।

अब युवावर्ग के सामने नये आयाम खुल रहे है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति में बदलाव, आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में नई दृष्टि, विज्ञान की गति के साथ कदम बढ़ाकर चलने की योजनायें आदि सभी एक खुली दृष्टि की देन है। यह ठीक है कि देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ढांचे का गड़बड़ी का ठीक करना सहज नहीं है। पर यह कार्य युवा मानस अपने दृष्टिकोण को साफ रखकर कर सकता है। युवा शक्ति का सर्वाधिक योगदान गरीबी हटाने में हो सकता है। घर-घर तथा गांव-गांव के कोने-कोने तक जाकर सरकार की उन अनेक योजनाओं को जनसाधारण तक पहुंचाने का काम इसी युवाशक्ति का है। यह तभी सम्भव है जब उसकी दिशा निर्दिष्ट हो। २३ मार्च, १९८५ को लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में बोलते हुए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने कहा था कि 'अगर शिक्षा को और मजबूत करना है और बढ़िया करना है तो सबसे जरूरी है कि हम अध्यापकों से शुरू करें। क्योंकि वहां से ही 'एक्सीलेंसी' आ सकती है, वहीं से कौशल आ सकता है। पुनः प्रश्न उठता है कि क्या हम अध्यापकों को आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करा सके है। आज अध्यापक हड़ताल पर है। वे ट्रेड यूनियन के मार्ग पर हैं। वे आज की आपाधापी में शायद अपना ही रास्ता भूल गये हैं। उन्हें सही मार्ग अपनाना होगा, तभी तो अध्यापक युवाओं को सही दिशा निर्देश कर सकेंगे।

युवाशक्ति केवल पुरुष जाति की शक्ति नहीं है। युवतियां भी इस का अभिन्न अंग है। वे खेल-कूद, शिक्षा टेक्नोलोजी और कम्प्यूटर तक की विद्याओं में प्रवीणता प्राप्त कर रही हैं। राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका निस्सदेह सराहनीय हो सकती है। यह आवश्यक है कि वे अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य करें जिससे भारत की गरीब, पिछड़ी जनता को ऊपर उठाया जा सके। परिवार कल्याण की योजनाओं के प्रति जन-जन को सचेत करने में उनकी भूमिका के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में युवतियों के माध्यम से यह कार्य सरल हो सकता है।

आज का सबसे विकट प्रश्न राष्ट्रीय एकता का है। हमारे युवकों का वर्ग आतंक के बल राष्ट्रीय एकता को विघटित करने में लगा है। निस्सदेह धर्मान्धता उसकी भावनाओं को ईंधन देती है और वह बिना आगा-पीछे सोचे अपने स्वार्थी, धर्माधिकारियों के आदेश पर कुछ भी करने के लिए टूट पड़ता है। यह उम्र ही ऐसी होती है कि व्यक्ति कुछ करना चाहता है, फिर चाहे वह मानव कल्याण के लिए हो अथवा मानव विनाश के लिए। लेकिन आवश्यकता है उनका मार्ग निर्देश करने की। राजनेता, अध्यापक, धर्माध्यक्ष कोई भी उनको सही रास्ता नहीं दिखा पारहा है। हमने धर्मनिरपेक्षता के आदर्शों को अपनाया है। कुछ दिग्भ्रमी नेता अलग-अलग मजहबों के नाम लेकर हमें बताना चाहते है कि हम अलग-अलग है। पर ऐसा है नहीं। हम सभी भारतीय हैं। भारत हमारा राष्ट्र है। मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करना और सभी को समान अधिकार दिलाना हमारा धर्म है। युवाशक्ति इन संकीर्ण दायरों से निकलकर, मुक्त भाव से सब को समान बनाने का कार्य कर सकती है।

भारत का गुटनिरपेक्ष देशों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत उन राष्ट्रों का मार्गदर्शन कर सकता है जो किसी महाशक्ति से बन्धे नहीं हैं। भारत को सबल बनाने, उसकी आवाज को सशक्त करने में युवाशक्ति की भूमिका निर्विवाद है। हमारा नारा तो यही है कि सब समान है। विश्व कल्याण के लिए यह आवश्यक है कि निरस्त्रीकरण को पूर्णतः लागू किया जाये। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आंतरिक और बाहरी संकटों से निर्माणकारी शक्तियां उभरती हैं और गणतन्त्रात्मक राष्ट्र और अधिक संगठित और मजबूत बनता है। पर इसमें हमारी उस शक्ति का अपव्यय होता है जो राष्ट्र और मानव-कल्याण में लगायी जा सकती है।

युवाशक्ति एक और काम तेजी से कर सकती है और वह है शांति स्वतन्त्रता और समानता के लिए जेहाद। जिस क्षेत्र में भी अशांति, आतंक और घृणा व्याप्त है वहां विश्व सुरक्षा तथा शांति के लिए युवा-शक्ति कार्य कर सकती है। यह अराजकता इस बात से भी आती है कि आज विश्व को आर्थिक असुरक्षा का भय है। इसका सर्वाधिक असर विकासशील देशों पर पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि हमारे युवा अकर्मण्य न बने। वे अपना रोजगार स्वयं खोजें, वे किसी अन्य पर निर्भर न रहें। वे आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

युवाशक्ति का योगदान विकलांगों और वृद्धों की सेवा में भी हो सकता है। यदि विकलांग की सहायता करके उन्हें अपने जीवन-यापन के योग्य बनाया जा सके तो यह हमारी बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। विकलांगों को गरीबी का शिकार तो होना ही पड़ता है, उनके प्रति समाज की उदासीनता उन्हें और अधिक दुःखी कर देती है। वृद्ध घरों में रहते, हुए भी अपने आपको घर की वर्तमान धारा से कटा हुआ महसूस करते है। उनकी शारीरिक क्षमतायें भले ही कम हो गयी हों, पर उनके पास अपने जीवन का अनुभव होता है। उनके पास विषम परिस्थितियों पर काबू पाने के बाद की विजयी मानसिकता होती है। युवावर्ग को उनसे निर्देशन प्राप्त करके जीवन-युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। इससे जहां उसका अपना कल्याण होगा, वहां बूढ़े लोगों को भी वह अहसास होगा कि वे पूर्णतः अनुपयोगी नहीं हो गये हैं। समाज को उनकी जरूरत है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बीस सूत्री कार्यक्रम प्रारम्भ किया था। इससे अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़े वर्गों, कारीगरों, खेतीहर मजदूरों, महिलाओं और शहरी ग्रामीण गरीब तबके की दशा को सुधारा जा सकता है। परिवार नियोजन, पौष्टिक आहार, महिलाओं और बच्चों का कल्याण आदि इस कार्यक्रम के अंग हैं। हमारी युवाशक्ति इस कार्यक्रम को ईमानदारी से पूरा करने में बेहतर योगदान कर सकती है।

जहां बड़ों की मानसिकता, उदासी, उदासीनता के घेरे में घिर जाती हैं, वहां युवावर्ग की मानसिकता परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील होती है। आज युवावर्ग को उस प्रेरणा की तलाश है जो उनमें समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह में पूरी आस्था और ईमानदारी पैदा कर सके। युवावर्ग को देश की दृढ़ता, विकास और उसकी एकता, अखण्डता के लिए कमर कसकर सर्वस्व समर्पित करना होगा। इस कार्य को पूरा करने के लिए युवाओं को अपने भीतर छिपी शक्ति को रचनात्मक दिशा देनी होगी। इसी छिपी शक्ति का ज्ञान कराने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने २ फरवरी से ९ फरवरी, १९८६ तक आर्य युवा महा-सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें केन्द्रीय खान और इस्पात मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने युवावर्ग को अपना सही मार्ग चुनकर राष्ट्र-निर्माण में संलग्न होने की प्रेरणा दी।

(आकाशवाणी सामयिकी, ९-२-८६ से साभार)

गुरुकुल कुरुक्षेत्र को श्री चौ० सत्यदेवसिंह जी का योगदान

प्रथम वैशाख १९६९ तदनुसार १३ अप्रैल, १९१२ के शुभ दिन महाभारत की ऐतिहासिक प्रसिद्ध धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र पर युग पुरुष काषाय वस्त्रधारी सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने गुरुकुल की आधार-शिला रखते हुए भावविह्वल हो अपने उद्गारो को प्रकट करते हुए कहा था कि जिस कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में एक दिन भारत भूमि के विनाश का बीज बोया गया था उसी भूमि मे आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है। मगलमय भगवान करे कि इस ज्ञानतरु मे ऐसे सुगन्धित फूल उत्पन्न हो जो भारत भूमि को फिर से अपनी पुरानी उन्नतावस्था मे लाने मे सहायक हो।



चौ० सत्यदेवसिंह

लाला ज्योतिप्रसाद जी रईस (थानेसर निवासी) ने अपनी तमाम सम्पत्ति १०४८ बीघा भूमि तथा १००००) रु० दस हजार रुपये नकद देने के साथ ही स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा उद्घोषित वाक्यो को पूर्ण करने के लिए मानो लाला जी ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। लाला ज्योतिप्रसाद जी द्वारा आरोपित गुरुकुल रूपी कल्पवृक्ष उनके नश्वर शरीर के नष्ट होने पर भी सृष्टि पर्यन्त उनकी पुण्यस्मृति कीर्ति को आलोकित करता रहेगा।

ला० भागीरथमल, श्री नौबतराय जी अधिष्ठाता, आचार्य विष्णुमित्र जी आदि ने अनथक परिश्रम एव लग्न से इस गुरुकुल रूपी पौधे के शैशवकाल को सवारा। इनके पश्चात् प० सोमदत्त जी विद्यालकार व ला० दिवानचन्द जी रिटायर्ड डिप्टी कलैक्टर अम्बाला ने निस्वार्थ भाव से सेवा कर गुरुकुल की उन्नति की। अप्रैल, १९४२ मे आचार्य प्रियव्रत जी विद्यालकार ने कार्यभार सम्भाला। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इतिहास मे आचार्य प्रियव्रत जी का कार्यकाल सबसे लम्बा रहा है। इनके कार्यकाल मे गुरुकुल ने चहुमुखी विकास किया।

इनके पश्चात् गुरुकुल कई वर्षों तक दिशाहीन सा हो गया। हर तरह से सकट, बादल इस पर मडराये। कई उतार-चढावो का सामना करती हुई यह सस्था मार्च, १९८१ मे श्री चौ० सत्यदेवसिंह जी पूर्व पुलिस अधीक्षक (आई० पी० एस०) के हाथो मे आई। वह १५ अक्तूबर, १९८५ तक इसके प्रधान पद को सुशोभित करते रहे। नि सदेह जिस समय आपने इस सस्था को सम्भाला, उस समय यहा की तमाम व्यवस्था जीर्ण, शीर्ण हो चुकी थी। न छात्रो की उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध रहा था, न छात्रो के स्वास्थ्य की किसी को कोई चिन्ता थी, न ही छात्रो को भोजन उत्तम उपलब्ध होता था। गोशाला तो साक्षात् नरक बनी हुई थी। जिसका प्रमाण ५४ गाय तथा भैंसे होते हुए दूध मात्र १८ किलो था। छात्रो एव अभिभावको मे असन्तोष था। ऐसी विकृत उलझी हुई परिस्थिति मे चौ० साहब ने अपने कुशल प्रशासन द्वारा कठोर परिश्रम एव लग्न से इस सस्था को ऐसा मोड दिया कि आज यह सस्था स्वामी श्रद्धानन्द की इच्छाओ एव आदर्शों के अनुरूप अपने को ढालते हुए उत्तम छात्रो के निर्माण मे सलग्न है।

गत चार वर्षों मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्रो ने खेल जगत् मे जो कीर्तिमान स्थापित किये हैं वह किसी से छिपे नही हैं। दौड हो या हाकी, फुटबाल हो या बालीबाल, योग हो या कुश्ती हर क्षेत्र मे गुरुकुल के छात्र जिलास्तरीय, राज्यस्तरीय व राष्ट्रीय स्तर तक अपना नाम व गुरुकुल का नाम उज्ज्वल करते रहे हैं। जिनकी सूचनाये आपको समाचार पत्रो द्वारा समय-समय पर पढने को मिलती रही हैं। इसका कारण मात्र गुरुकुल की गोशाला एवं आहार की सुव्यवस्था एव श्रेष्ठ अनुशासन है जिसका सम्पूर्ण श्रेय मान्य चौ० साहब को जाता है। इसी प्रकार शिक्षा-जगत् में भी गुरुकुल के छात्रो का अति विकास हुआ है। श्री गायत्री विद्यालय भवन की विशाल बिल्डिंग एव भोजनालय भवन आदि का निर्माण सभी इन्हीं के प्रयत्न का कारण रहा है।

इसे हमारा दुर्भाग्य ही कहिए कि गत १५ अक्तूबर, १९८५ को चौ० साहब ने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण प्रधानपद मे त्याग-पत्र दे दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव अन्य गुरुकुल हितचिन्तक व वर्तमान प्रबन्ध समिति सदैव उनके कार्यों की प्रशसा करती रहेगी।

गत २-२-८६ रविवार को गुरुकुल कुरुक्षेत्र की प्रबन्ध समिति की बैठक श्री प्रीतमपाल जी एडवोकेट अधिष्ठाता गुरुकुल कुरुक्षेत्र की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई, जिसमे अधिष्ठाता जी ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया एव अन्य सभी सदस्यो ने अनुमोदन करते हुए चौ० साहब के गुरुकुल के प्रति दिये गये योगदान की भूरि-भूरि प्रशसा की। चौ० सत्यदेवसिंह जी इस समय गुरुकुल के वरिष्ठ सदस्य हैं एव वह पूर्व की भांति गुरुकुल को अपना सहयोग देते रहेंगे, ऐसा उन्होंने नयी प्रबन्ध समिति को आश्वासन दिया है। गुरुकुल प्रबन्ध समिति का विश्वास है कि वह चौ० साहब के आदर्शों के अनुरूप उनकी छत्र-छाया मे गुरुकुल की दिन दुनी रात चौगुनी उन्नति करने मे समर्थ हो सकेगी।

देवव्रत आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हर०)

फाजिल्का तहसील के हिन्दी-भाषी शिष्ट-मण्डल द्वारा प्रस्तुत ज्ञापन

इस तहसील के १०५ गाव व अबोहर फाजिल्का शहर को १९५६ मे पजाब सरकार व अकालीदल ने हिन्दी-भाषी माना। उसी के आधार पर स्वर्गीय प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी ने अपने २९, जनवरी १९७० के एवार्ड मे यह १०५ गाव व दोनो शहर चण्डीगढ के बदले मे हरयाणा को देने का निर्णय किया तथा इन १५ वर्षों मे इस क्षेत्र के दर्जनो शिष्ट-मण्डल स्वर्गीय प्रधानमन्त्री से मिले तो उन्होंने हर बार पक्का विश्वास दिलाया कि फाजिल्का तहसील का उपरोक्त हिन्दी-भाषी क्षेत्र चण्डीगढ के बदले मे हर हालत मे हरयाणा को मिलेगा। इसी आधार पर राजीव लौंगोवाल समझौता मे स्पष्ट उल्लेख किया गया कि श्रीमती इन्दिरा गाधी इस बात पर बल देती रही कि जब चण्डीगढ पजाब को दिया जाये तो उसके बदले मे पजाब के हिन्दी-भाषी क्षेत्र हरयाणा को दिये जायें। उनका आशय फाजिल्का तहसील के १०५ हिन्दी-भाषी गाव व दोनो शहर ही थे जो हरयाणा को दिये जाने हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ ७ का शेष)

मैथ्यू कमीशन ने २५ जनवरी के फैसले मे फाजिल्का तहसील के केवल ८३ गाव अबोहर फाजिल्का शहर ही हिन्दी-भाषी माने, जबकि इस क्षेत्र के बहुत से हिन्दी भाषी गावो के लोगो को पजाब पुलिस व अधिकारियो ने डरा-धमका कर दबाव देकर ज़बरन अपनी भाषा पजाबी लिखवाने को मजबूर किया और कन्दूखेडा-गाव मे पजाब सरकार ने अपनी भारी ताकत पुलिस, उच्चाधिकारी, सासद, मिनिस्टर, हजारो अकाली वर्कर झोककर, लाठी, तलवार, गोलो का डर दिखाकर व भारी मात्रा मे रुपया बाटकर हिन्दी-भाषी जनता को पजाबी भाषी लिखवाने को विवश कर कन्दूखेडा को पजाबी भाषी बनाया। जिससे हिन्दी भाषी फाजिल्का क्षेत्र को हरयाणा राज्य से जोडने वाली कडी को कन्दूखेडा द्वारा तोड दिया।

मैथ्यू कमीशन के आदेशानुसार हिन्दी भाषी गावों का निर्णय करने के लिए भाषा के आधार पर जनगणना कराने के लिए केन्द्रीय सरकार ने लाखो रुपये तथा हजारो कर्मचारियो का समय व शक्ति लगाई, किन्तु इस क्षेत्र के हिन्दीभाषी हरयाणा मे मिलाने मे बाधा पड गई। अत: आज इस क्षेत्र मे साम्प्रदायिक तनाव बढ गया। जिन हिन्दी भाषी लोगो ने जनगणना मे अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई उनको दण्ड देने व हानि पहुँचाने के लिए पजाब सरकार के कर्मचारियो ने कमर कसली है। अत इलाका हरयाणा मे न मिलाया गया तो यहा के हिन्दी भाषी लोगो को यहा सम्मानपूर्वक रहना कठिन होगा। वे न अपने जानमाल की रक्षा कर सकेंगे, न सुख से जीवन बिता सकेंगे। इन्हे हर प्रकार से तग किया जायेगा और मजबूर किया जायेगा कि वे यह इलाका छोडकर हरयाणा या राजस्थान भाग जाये। पजाब सरकार की दमननीति व आतक का [illegible] न कर सकने के [illegible] सीधे-साधे शान्तिप्रिय बागडी लोग अपनी जमीन जायदाद व पुश्तैनी जायदाद (घर-बार) छोडने को विवश होंगे।

इस क्षेत्र के हिन्दी भाषी धर्मभीरू कानून के पाबन्द सविधान का पालन करने वालों मे कभी भी हिंसा, दगा-फिसाद व कानून का उल्लघन नहीं किया। अतः इनकी हरयाणा मे मिलने की न्यायोचित माग पूरी होनी चाहिए। क्योंकि इस इलाके के लोगो का निकास हरयाणा और राजस्थान के हिन्दी भाषी क्षेत्रो से हुआ। इनकी वेश-भूषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, सस्कृति सभ्यता व रिश्तेदारी सभी हरयाणा से रही है। भारत के प्रजातन्त्रीय विधान मे इन चार लाख लोगो की भावनाओ को कुचल कर इन्हें हिन्दी भाषी हरयाणा मे मिलाने से क्यों वचित किया जा रहा है।

अकालियो के सम्बन्ध में यह आम धारणा रही है कि वे किसी एक बात पर टिके नहीं रहते। एक बार किसी फैसले को मानकर वे बाद में उससे मुकर जाते हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी का २९ जनवरी, १९७० का एवार्ड है, जिससे अकालियो ने सहर्ष स्वीकार कर दीवाली मनाई और बाद में उस एवार्ड को मानने से इन्कार कर दिया।

इन सब तथ्यो को ध्यान मे रखकर केन्द्रीय सरकार को फाजिल्का तहसील के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा मे मिलाने के लिए कोई मार्ग निकालना चाहिए। यही दोनो पडोसी राज्यो मे शाति व सद्भावना बनाये रखने तथा देशहित के लिए परम आवश्यक है।

तेगराम पूर्व विधायक, बहादुरराम सरपच ग्राम खीपावाली
भानीराम पूर्व पच भूमियावाली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 47 … मूल्य …



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क १७ २१ मार्च १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश मे ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

अटायल, हसनगढ़ तथा रामपुर कुण्डल में हरयाणा रक्षा तथा शराबबन्दी सम्मेलन

उग्रवादियों के दबाव में आकर हरयाणा विरोधी निर्णय स्वीकार नहीं होगा।

पंचायतों के शराब बन्दी प्रस्तावों के आधार पर ठेके रद्द किये जायें : प्रो० शेरसिंह

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह जी की अध्यक्षता मे १२ मार्च, १९८६ को ग्राम अटायल जि० रोहतक मे प्रात ११ बजे, ग्राम हसनगढ जि० रोहतक मे मे दोपहर बाद २ बजे ग्राम रामपुर कुण्डल जि० सोनीपत मे दोपहर बाद ४ बजे हरयाणा रक्षा एव शराब एव दहेज बन्दी सम्मेलनो का आयोजन किया गया। इन तीनों स्थानो पर एक दिन पूर्व सभा की भजन मण्डलियों श्री जयपाल आर्य, श्री समेरसिह आर्य तथा प० ईश्वरसिह तूफान ने रात्रि को शराब तथा दहेज आदि का सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध भजनो द्वारा प्रचार किया तथा सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री व प० अर्जुनदेव आर्य सिद्धांत शास्त्री ने भी सामाजिक बुराइयो को समाप्त करने के लिये व्याख्यान दिये।

ग्राम अटायल मे प्रो० शेरसिह जी के पधारने पर उनका स्नेह पूर्वक स्वागत किया। इस अवसर पर प्रो० साहब ने हरयाणा की वतमान स्थिति पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए अपने भाषण मे बताया कि पजाब मे उग्रवादी तत्त्व पुन. देश की सुरक्षा के लिए सकट उत्पन्न कर रहे हैं, पजाब की अकाली सरकार उन्हें काबू करने मे पूरी तरह विफल हो गई है। राजीव लोंगोवाल समझौता अकाली सरकार समाप्त करने पर तुली हुई है। हिन्दी-भाषी शहर चण्डीगढ तो लेने के लिए उतावली और बेचैन है, परन्तु एक छोटा-सा ग्राम कन्दूखेडा जिसे उग्रवादियो के सहारे से पजाबी भाषी लिखवा दिया है, उसे हरयाणा को देने से इन्कार कर रही है। मैथ्यू आयोग ने जिन ग्रामो को हिन्दी-भाषी माना है, उन्हें हरयाणा को न सोपने के लिए कन्दूखेडा का झूठा बहाना बनाया जारहा है। इसी प्रकार उग्रवादी रावी व्यास का पानी हरयाणा में लाने वाली लिक नहर की खुदाई मे रुकावटे ही नही डाल रहे अपितु अब तक हरयाणा के खर्च से जितनी नहर खोदी गई है, उसे भी कार-सेवा द्वारा मिट्टी से भरकर बन्द करने की धमकिया दे रहे हैं और अकाली सरकार उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नही कर रही है। मुख्यमन्त्री श्री बरनाला भी विधानसभा मे कह चुके हैं कि पजाब से हरयाणा को पानी नही दिया जा सकता।

प्रो० शेरसिह ने हरयाणा की जनता को जागरूक रहने का आह्वान करते हुए कहा कि अकालियों की धीगा-मस्ती का डटकर मुकाबला करने के लिए हरयाणा के सभी राजनैतिक तथा धार्मिक दलों को एकजुट हो कर सामूहिक रूप मे पग उठाना होगा। हरयाणा की जनता हरयाणा विरोधी सरकार का निर्णय स्वीकार नहीं करेगी।

शराब तथा दहेज आदि की सामाजिक बुराइयो का उल्लेख करते हुए प्रो० साहब ने कहा कि शराब के ठेकेदार सरकारी अधिकारियो से सांठ-गाठ करके उन ग्रामो में भी शराब के ठेके खोल देते हैं, जिन ग्रामो की पचायतों ने अपने ग्रामों से शराब के ठेके बन्द कराने के लिए समय पर प्रस्ताव भेज रखे हैं। इस प्रकार भोले-भाले किसान तथा मजदूरो की गाढे खून-पसीने की कमाई शराब की बोतलें खरीद कर बर्बाद कर देते हैं और शराब के ठेकेदार तथा सरकार शराब की बिक्री से मालामाल हो जाते हैं। सरकार की दोहरी नीति की आलोचना करते हुए प्रो० शेरसिह ने कहा कि एक ओर तो आकाशवाणी पर शराब के सेवन से दूर रहने का प्रचार किया जाता है और दूसरी ओर ग्रामवासियो की इच्छा के विपरीत ठेके खोलकर शराब बेची जाती है। आपने ग्रामवासियो को परामर्श दिया कि वे शराब तथा विवाह आदि के फिजूल खर्च को बन्द करके उस बची राशि को अपने परिवार तथा ग्राम की भलाई के कार्यों मे खर्च करें।

अटायल के बाद ग्राम हसनगढ जि० रोहतक मे भी वहा शराब के ठेके के सामने आयोजित शराब बन्दी सम्मेलन मे प्रो० शेरसिह ने ग्रामवासियो तथा जनकल्याण युवा समिति के कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए हरयाणा की वर्तमान स्थिति तथा शराब बन्दी अभियान में सभा को सहयोग करने की अपील की। यहा धरणे मे सहयोग करने वालो तथा निकट के ग्राम रोहणा आर्यसमाज के अधिकारियो का धन्यवाद किया। इसी अवसर पर ग्राम नाहरी जि० सोनीपत के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री होशियारसिह आर्य ने भी शराबबन्दी के छपे सरकारी चार्ट जनता को दिखाते हुए कहा कि शराब विरोधी प्रचार करना कोई अपराध नही है। अत: कार्यकर्त्ताओ को सभा के इस आंदोलन में पूर्ण सहयोग करना चाहिए।

हसनगढ के बाद ग्राम रामपुर कुण्डल जि० सोनीपत में भी इसी प्रकार सम्मेलन मे प्रो० साहब ने उपस्थित नार-नारियो को सम्बोधित किया। आर्यसमाज के अधिकारियो ने सभा प्रधान जी को विश्वास दिलाया कि हरयाणा के हितो की रक्षा तथा शराबबन्दी आंदोलन में ग्राम की ओर से तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग दिया जायेगा।

सर्वहितकारी के पाठकों से निवेदन

कागज तथा प्रेस की छपाई मूल्य मे अत्यधिक वृद्धि होने पर सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रस्तावानुसार १ अप्रेल, १९८६ से १५ रु० के स्थान पर २० रु० वार्षिक किया गया है। परन्तु जो ग्राहक महानुभाव ३१ मार्च तक अपना शुल्क मनीआर्डर अथवा सभा उपदेशको द्वारा सर्वहितकारी के कार्यालय मे भेज देगें, उन्हें ५) की बचत रहेगी।

आशा है पाठक तथा ग्राहक महानुभाव यथापूर्व सर्वहितकारी को अपना सहयोग देते रहेगे।

सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

वेदोदधि के चुने हुए फूल

जगदीश आर्य, आर्यसमाज सासाराम (बिहार)

१ "स्वराज्यस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मं दत्त।"

(यजु० १०-४)

अर्थ—हे परमात्मा तुम स्वय प्रकाशमान हो। राष्ट्र को देने वाले हो, हमे स्वराज्य वाला राष्ट्र दो।

व्याख्या—इस मन्त्र मे राष्ट्र के साथ स्वराज्य का सम्बन्ध जोडा गया है। उत्तम राष्ट्र वही है जहा स्वराज्य हो। स्वतन्त्रता राष्ट्र का प्रथम कर्त्तव्य है। इससे जनता में तेज एव ओज प्राप्त होता है।

२. वय तुभ्य बलिहृत. स्याम।

(अथर्व० १२-१-६२)

अर्थ—हे पृथिवी (राष्ट्र) हम तेरे लिये अपना बलिदान कर दें।

व्याख्या—अथर्ववेद के मातृभूमि सूक्त में यह मन्त्र आया है। हम अपने राष्ट्रहित के लिये अपने को मिटा दे, अपना त्याग करदें, यह भाव इस मन्त्र मे है। देश-रक्षा महान् व्रत है। उसकी रक्षा एव उसकी उन्नति के लिये अपने को कुर्बान कर दो, यह आदेश उस परम प्रभु का है।

३ न ऋते श्रातस्य सख्याय देवाः॥

(ऋ० ४।३३।११)

अर्थ—देवता श्रमशील व्यक्ति के ही मित्र होते हैं।

व्याख्या—ऐसी शिक्षा देकर वेद श्रम को सर्वोपरि महत्त्व देता है। देव-दैवी शक्तिया (Natural foras) परिश्रमी की सहायता करती हैं। साम्यवाद का सर्वोच्च सिद्धात 'श्रम' को महत्ता देता है। परन्तु वेद तो साम्यवाद की स्थापना के पूर्व से ही श्रम की सर्वोपरि महत्ता को स्वीकार कर रहा है। श्रम समाज का आधार होता है। समाज की सारी व्यवस्थाये श्रम को केन्द्र मानकर ही चल रही हैं। वेद की यह उद्भावना इस मन्त्राश मे व्यक्त है। भारतीय मनीषीगण श्रम को यज्ञ मानते थे। आश्रम शब्द का अर्थ ही है जो चारो ओर श्रम से घिरा हुआ हो, ब्रह्मचर्य से लेकर सयास तक श्रम की प्रतिष्ठा से घिरा हुआ है। ऋग्वेद में श्रम की महत्ता के विषय में अन्यत्र भी आया है—"इन्द्र इच्चरत सखा।" इन्द्र श्रम करने वालो का सखा है।

४ कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित।

(अथर्व० ७।५२।८)

अर्थ—मेरे दाये हाथ मे कर्म है और बाये हाथ मे विजय है।

व्याख्या—निराशावाद से ऊपर उठने के लिये इस मन्त्र मे सकेत है। जो लोग इस ऊहा-पोह में पडे रहते हैं कि सफलता मिलेगी कि नही मिलेगी। इसी सकोच मे पडे रहते हैं उन्हे वेद माता आश्वस्त कर रही है कि उठो, कर्म करो सफलता तो निश्चित है। लोक में भी कहा जाता है कि 'विजय तो मेरे बाये हाथ का खेल है।' ऊपर दिये हुये मन्त्राश मे विजय का रहस्य है। चुनोतियो का उत्तर देने की प्रेरणा है। किसी आर्य कवि का कथन है—'नर हो न निराश करो मन को।'

५ वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता ॥ (यजु० ९।२३)

अर्थ—हम अपने राष्ट्र मे जागरूक नेता बने रहे।

व्याख्या—इस मन्त्राश मे राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व वहन करने की प्रेरणा दी गई है। पुरोहित पद का अर्थ होता है—आगे रखा हुआ। "पुरोहित पुर एन दधति"। (नि० २।१२) जिसे आदर्श के रूप मे आगे रखा जाये उसे पुरोहित कहते हैं। नेता राष्ट्र का अगुआ रहता है। अत उसे राष्ट्र के प्रति सचेत रहना चाहिये।

वेद का यह मन्त्राश हमे आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा दे रहा है। राष्ट्र का हर व्यक्ति राष्ट्रीय चरित्र से भरा पूरा हो। प्रथम राष्ट्र है तब कुछ है। राष्ट्र शब्द 'रा' धातु से बनता है। इस धातु का एक अर्थ दान है, त्याग है। जिसका अर्थ है त्यागशील सस्कार। राष्ट्र शब्द 'राज-दीप्तौ' धातु से भी बनता है। जिसका अर्थ बना 'दीप्ति से दीप्तिमान् होता है वही राष्ट्र का अंग है।

६. महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति ॥ (यजु० २०।८६)

अर्थ—(सरस्वती) वेदवाणी (केतुना) सम्यक् ज्ञान प्रदान करने वाली (मह· अर्ण) ज्ञान के महासमुद्र को (प्रचेतयति) उत्तम प्रकार से जतलाती है और (विश्वा·) सब प्रकार की (धिय) बुद्धियों और कर्मों को (विराजति) नाना विधियो से प्रकट करती है।

व्याख्या—वेद ज्ञान का महासमुद्र है। सम्यक् बुद्धि तथा कर्त्तव्य, कर्मों के ज्ञान के लिये प्रतिदिन उसका स्वाध्याय करना चाहिए।

सरस्वती पद का अर्थ उणा० मे 'सरो विज्ञान विद्यतेऽस्या सरस्वती वाक्' (४।१९०) तथा निघण्टु मे भी सरस्वती को "सरस्वती वाङ्नाम" (१।११) कहा गया है। स्वामी भूमानन्द सरस्वती ने 'सरस्वती' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है—Attain powrful speech couped with know ledge of all scienas

(आर्याभिविनय का आगल अनुवाद)

७ स न· पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥ (यजु० ३।२४)

अर्थ—(अग्ने) हे जगदीश्वर (सूनवे) पुत्र को (पिता इव) जैसे पिता अच्छे-अच्छे गुणो को सिखाता है अथवा जैसे सहजता से प्राप्त होता है, वैसे आप (न) हमारे लिये (सूपायन) श्रेष्ठ ज्ञान को देने वाले और सहजता से प्राप्य होइये। आप हम लोगों को (स्वस्तये) कल्याणकारी सुख के लिये (सचस्व) सयुक्त कीजिये।

व्याख्या—(उपायन.) का अर्थ आप्टे ने A prsentgift किया है। अग्रेजी का son सन् (पुत्र) इस 'सूनवे' शब्द से ही निकला है।

परमात्मा सदा से हमारा पिता और हम सदा से ही उसके पुत्र हैं। लौकिक पिता तो पुत्र से सदा बडा होता है और पुत्र सदा ही उससे छोटा होता है। परन्तु हमारा यह आत्मिक पिता और पुत्र दोनो की आयु समान है, बराबर है, दोनों नित्य हैं। फिर भी गुण में, कर्म में और स्वभाव मे अन्तर है। लौकिक माता-पिता तो बदलते रहते हैं परन्तु वह हमारा पिता, बराबर पिता ही रहेगा।

चारों वर्णों का प्रेमपूर्वक सहयोग

८ यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत सह।
तं लोकं पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना ॥

यजु० २०।२५

जिस राष्ट्र मे ब्रह्मोपासक वैदिक विद्वान् और क्षतो से प्रजा का त्राण करने वाले क्षत्रिय हैं और वे दोनो एक दूसरे का सम्मानपूर्वक सहयोगात्मक व्यवहार करते हैं तथा जिस राष्ट्र में दिव्यगुणी लोग यज्ञाग्नि के साथ वर्तमान होते हैं, उसे पुण्य लोक समझू।

मन्त्र में बुद्धि (ज्ञान) और बल (शक्ति) का सामञ्जस्य होना चाहिए, तभी राष्ट्र पुण्यमय हो सकता है, ऐसा सकेत है। ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणो और क्षत्रियो के परस्पर सहयोग तथा यज्ञों का विधान किया है।

यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरत सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेष यत्र सेदिर्न विद्यते ॥

यजु० २०।२६

अर्थ—(यत्र) जहा जिस लोक या राष्ट्र में (इन्द्र च वायु: च) इन्द्र और वायु (सम्यञ्चौ) पूर्ण बलवान् होकर (सह चरत.) एक साथ विचरण करते हैं (त लोकम्) उस लोक समाज या राष्ट्र को (पुण्यम्) पवित्र (प्रज्ञेषम्) जानता हू (यत्र) जहा (सेदि·) अन्नादि के न मिलने से विघटन शक्तिया नही उभरती हैं, उसे पवित्र लोक समझू।

(क्रमश·)

हरयाणा के मुख्यमन्त्री के नाम सभा प्रधान का खुला पत्र

पंचायत एक्ट १९६२ में यह स्पष्ट प्रावधान है कि जो ग्राम पचायतें प्रस्ताव पारित करके अक्तूबर मास तक आबकारी तथा कराधान आयुक्त के पास भेज देवें कि उनके ग्राम मे ठेका न रहे, नया न खोला जाये, उन ग्रामो मे ठेके नीलाम नही किये जायेगे।

पिछले वर्ष ५० से अधिक ग्रामो ने अपने प्रस्ताव निर्धारित समय से पहले भेज दिये थे, परन्तु हमारे पास सूचनायें आरही हैं कि जिन ग्रामों ने प्रस्ताव पास करके समय के अन्दर भेज दिये हैं, वहा भी ठेके नीलाम किये जा रहे हैं। यह भी सूचनायें मिली हैं कि ठेकेदारो ने तथा अधिकारियो ने मिलकर कुछ ग्रामों मे अवैध शराब के केस बनाकर बहाना ढूढने का प्रयास किया है, जिससे उसकी आड मे वे ठेके नीलाम कर सकें। उनकी ऐसी चेष्टा अनैतिक ही नहीं, एक्ट के साथ भी मजाक है।

जहा ग्राम की जनता और पचायत शराब का ठेका नही चाहती और सरकार उनकी इच्छा के विरुद्ध ठेके नीलाम कर देती है, वहा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे धरना दिया जाता है। इस प्रकार ४ स्थानो पर धरने दिये जा चुके और सरकार को ठेके उठाने के लिए बाध्य होना पडा है।

हम आप से यह अनुरोध करते हैं कि आप सब जिला स्तर के आबकारी तथा कराधान अधिकारियों को तुरन्त आदेश देने की कृपा करें, ताकि शराब जो सब बुराइयो की जड है और जिससे गरीब किसान और मजदूर बर्बाद हो रहा है, उनको बर्बादी से बचाया जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने प्रदेश से इस बुराई को समाप्त करने का निश्चय किया है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शराब बन्दी अभियान आदोलन के रूप मे चलाया जारहा है।

आपको यह स्मरण करवा देना आवश्यक है कि महात्मा गाधी ने शराब के ठेके नीलाम करके राजस्व जुटाने की वृत्ति को महापाप कहा है।

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि आप सभी सम्बन्धित अधिकारियों को आदेश देकर हरयाणा की जनता के लिए हमारे इस कल्याणकारी अभियान में अपना सहयोग देंगे।

प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वैदिक वाहन द्वारा मथुरा से टंकारा यात्रा

ब्र० आचार्य आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता की अध्यक्षता में २३ फरवरी से १ मार्च तक ग्रामो, नगरो और विद्यालयो में वैदिक सिद्धातो एव राष्ट्र-भक्ति का प्रचार किया। इस प्रचार यात्रा के व्यय का पूर्ण प्रबन्ध श्री कल्याण भाई आर्य मन्त्री आर्यसमाज घाटकोपर तथा अध्यक्ष अ० भारतीय राष्ट्रीय एकता समिति मुबई की ओर से किया गया और इसके साथ ही उन्होंने स्वय भी साथ रहकर प्रचार कार्य मे सहयोग दिया। इस यात्रा में श्री धीरु भाई आर्य सूरत, श्री शकरदेव आर्य महाराष्ट्र, श्री अनिलकुमार आर्य (चण्डीगढ) आदि यात्री भी साहित्य से प्रचार का कार्य करते रहे। इस यात्रा मे मथुरा, आगरा, गुरुकुल एटा, गुरुकुल हाथरस फतेहपुर सीकरी, जयपुर, उदयपुर, पालनपुर, आबू-पर्वत, मौरवी आदि समाजो में तथा इनके आस-पास के ग्रामो मे प्रचार किया गया। देशभक्ति तथा आचार निर्माण एव सगठन के वैदिक सूक्तो को सुनकर जनता मे चेतना की नई लहर दौड गई। अनेको युवको को देश तथा सामाजिक सेवा करने की प्रेरणा मिली।

ऐसी हो सर्वकल्याणी शिक्षा नीति

आदि शिक्षा शास्त्री महर्षि दयानन्द के अनुयायी—ब्र० आर्य नरेश उद्‌गीथ भवन ६७/११ ए चण्डीगढ

जिसमे —

१—पाखण्ड, झूठे चमत्कार एव भाग्यवाद के स्थान पर "सत्यमेव जयते" वैदिक उद्‌घोष मे युक्त, सदा सत्कार्यों मे सलग्न और आत्म-निर्भर बनाने हेतु सत्यज्ञान व विज्ञान की साधना हो।

२—आलस्य, अहङ्कार तथा स्वार्थ से उत्पन्न हुए राष्ट्रद्रोह के स्थान पर- परोपकार एव पुरुषार्थपूर्वक भावना से वैदिक ऋषियो व राष्ट्रीय शहीदो के ऋण को उतारने हेतु, भारत के सच्चे गौरवमय वेद-शास्त्र तथा इतिहास के अध्यापन सहित भारतीय भाषा, भूषा, भैषज (औषधि) एव भजन की भावना हो।

३—नास्तिकता, उच्छृङ्खलता एव घमण्ड से उत्पन्न हुई आतक एव हिंसा आदि पाप बुद्धि के स्थान पर—सम्पूर्ण शांति, सर्वमैत्री तथा सर्वकल्याण हेतु, सर्वव्यापक, सृष्टिरचियता, सर्वप्रिय, न्यायकारी परम-पिता परमात्मा की आराधना हो।

४—स्वच्छन्दता, इन्द्रिय-लोलुपता एव उन्मुक्त-कामुकता से उत्पन्न हुए यौन अपराध, दुराचार, व्यभिचार, भय एव अनेको शारीरिक रोगों के स्थान पर— आत्मसयम, अनुशासन, निर्भीक वातावरण व राष्ट्र के बलवर्धन हेतु ब्रह्मचर्य की उपासना हो।

५—देश के भावी नागरिको विद्यार्थियों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए शिक्षा का आदान-प्रदान समान आसन, समान भोजन, समान शिक्षण प्राचीन भारतीय वैदिक गुरुकुलीय आश्रम प्रणाली (बोर्डिंग सिस्टम) से होना चाहिए। इसी शिक्षा-प्रणाली का अनुसरण करके 'भारत' आचार, अध्यात्म, बल एव विज्ञान में उन्नति करके ससार पर शासन करता हुआ सोने की चिडिया तथा विश्व का गुरु कहलाता था।

ऐसी शिक्षा-प्रणाली से विद्यार्थियो को चार लाभ होंगे—

१—विद्या को एकत्रित करेंगे तो कुछ और एकत्रित न करना होगा।

२—माता-पिता, गुरु एव देश के बलिदानियों के समक्ष झुकने वालो को किसी और के सामने झुकना न होगा।

३—यदि ईश्वर से भय करेंगे तो किसी और से कभी भयभीत न होगे।

४—अपने चरित्र को सुन्दर रखेंगे तो क्षणिक सुन्दरता के देने वाले रोग-कारक शृगार का गुलाम न होना होगा।

सम्पादक के नाम पत्र

७ फरवरी, ८६ के सर्वहितकारी मुख-पत्र द्वारा पता चला कि सत्यार्थप्रकाश को ताम्रपत्र मे छपवाने पर तथा उसमे दानवीरो के नाम देने पर आचार्य विश्वश्रवा जी ने आपत्ति की है।

जब स्वामी ओमानन्द जी ने आर्यजनता से अपील की थी कि ५०१ रु० देने वाले व्यक्ति का ताम्रपत्र के नीचे नाम खुदवाया जायेगा। श्री विश्वश्रवा जी ने उसी वक्त विरोध करना चाहिए था और उन्होंने अगर ऐसा अच्छा न लगा कि दानवीरों का नाम सत्यार्थप्रकाश ताम्रपत्र मे अकित करना गलत है तो बगैर नाम दिये किसी के उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को ताम्रपत्र में छपवाना चाहिए था। अगर विश्वश्रवा जी ने किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा मे दुःख है, यह विद्वान् के लिए शोभनीय नही है। स्वामी ओमानन्द अगर सत्यार्थप्रकाश ताम्रपत्र मे दानवीरो के नाम देने की घोषणा न करते तो मेरे विचार से फिर जिन लोगो ने दान दिया है उनमे से ९९ प्रतिशत लोग दान नहीं देते और सत्यार्थप्रकाश को ताम्रपत्र मे प्रकाशित करना मुश्किल हो जाता। इसलिए स्वामी ओमानन्द जी ने जो यह महान् कार्य किया है इसका किसी भी विद्वान् ने विरोध नही करना चाहिए, बल्कि अपार प्रसन्नता होनी चाहिए। स्वामी ओमानन्द और विरजानन्द के जो विचार हैं कि वेदो, शास्त्रो, उपनिषदो आदि को भी ताम्रपत्र मे छपवाने का विचार है तो आर्यजनता उनका स्वागत करेगी।

महेन्द्रसिंह प्रधान आर्यसमाज, गाव भौल जि० जींद (हर०)

भगतसिंह सरीखे क्रांतिकारियों की शहादत

लक्ष्मीचन्द आर्य मन्त्री मुकलान (हिसार)

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥
इलाही वह दिन भी होगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी जमीं होगी और अपना ही आसमां होगा॥

२३ मार्च, १९३१ को भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को फांसी दी गई थी। प्रस्तुत लेख में यह दिखाया गया है कि प्राणोत्सर्ग के लिए क्रांतिकारियों ने किस तरह आपस में होड लगा दी थी। भारतीय स्वतन्त्रता की नींव की ईंटें इन अमर शहीदों के खून से जुड़ी हैं।

मुझे दुःख है कि मैंने किसी व्यक्ति की हत्या की। परन्तु यह व्यक्ति एक बर्बर, घृणित और निकृष्ट प्रशासन का अंग था। इसलिए उसे समाप्त करना नितांत आवश्यक था। वह भारत में ब्रिटिश प्रशासन का प्रतिनिधि था। मनुष्य का खून बहाना हमारा अभीष्ट नहीं हमारा उद्देश्य ऐसी क्रांति लाना है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का सदा के लिए समाप्त करदे। जिस लाला लाजपतराय पर लाठियों का प्रहार करने के लिए भगतसिंह ने साडर्स की हत्या की, वे भगतसिंह की क्रांतिकारी नीतियों के समर्थक नहीं थे और न ही भगतसिंह लाला जी की नीतियों के। भगतसिंह तो लाला जी को प्रतिक्रियावादी मानते थे। एक सार्वजनिक सभा में भगतसिंह ने लाला जी को एक पुर्जा थमाया था। जिसमें उन्होंने लाला जी को एक "गया गुजरा" नेता कहा था। इसे सुनकर लाला जी क्रुद्ध हो उठे थे और उन्होंने भगतसिंह को रूस का एजेण्ट बताया। फिर भी जब पुलिस ने लाला जी को निदयतापूर्वक पीटा तो भगतसिंह ने उसे राष्ट्रीय अपमान समझा और इसके प्रतिशोध के लिए जान की बाजी लगाकर साडर्स की हत्या की। इस लाहौर षड्यन्त्र अभियोग में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मुख्य अभियोगी करार दिया था।

केन्द्रीय समिति की बैठक को बुलाकर भगतसिंह ने स्पष्ट कहा कि हमें लोग डाकू और लुटेरों का गिरोह समझते हैं और अब हमें दोषारोपण का मुँहतोड जवाब देने के लिए क्रांतिकारियों को कुछ बलिदान देने आवश्यक हैं और आप मुझे बलिदान करने की आज्ञा दीजिए। केन्द्रीय कक्ष में बम विस्फोट करने के लिये क्रांतिकारियों की आपस में होड लग गई। यहां तक कि उनके एक साथी श्री बटुकेश्वरदत्त ने धमकी दी कि अगर केन्द्रीय कक्ष में बम विस्फोट करने में मुझे नहीं भेजा गया तो मैं दल से नाता तोड दूंगा। "सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है"। अब न अगले बलवले है, और न अरमानों की भीड। सिर्फ मिट जाने की हसरत इक दिले बिस्मिल में है। "भगतसिंह के वकील श्री प्राणनाथ दया का प्रार्थना-पत्र लेकर जेल में राजगुरु, भगतसिंह, सुखदेव से मिलने गया। श्री प्राणनाथ ने अपनी वकीलों जैसी भाषा जाल में फसाने का प्रयास किया, लेकिन भगतसिंह ने मुस्कराते हुए कहा—यार वकीलों जैसी बात छोड सीधे तौर पर बता तू कहना क्या चाहता है। इस पर श्री प्राणनाथ ने कहा यही कि तुम लोगों का जीवन देश की अमानत है और इस देश की जनता चाहती है कि तुम गांधी जी के हाथ मजबूत करने के लिये दया का प्रार्थना-पत्र भेज दो, यह सुनकर तीनों गम्भीर होगये। सुखदेव और राजगुरु नाराजगी के साथ कुछ कहना चाहते थे पर भगतसिंह ने उन्हें आंख का इशारा करके चुप रहने को कहा और शांत स्वर में श्री प्राणनाथ से पूछा—कि किस तरह का दया प्रार्थना-पत्र तुम चाहते हो। श्री प्राणनाथ ने कहा आज रात हमारी कमेटी की मीटिंग होगी, जिसमें दया के प्रार्थना-पत्र का प्रारूप तैयार किया जायेगा। यह बात ६ मार्च, १९३१ की है। अगले दिन जब श्री महता ड्राफ्ट लेकर पहुंचे तो उन्हें देखकर भगतसिंह जोर से हस पडे और कहने लगे यार रहने दो अपना ड्राफ्ट हम लोगों ने तो अपना दया का प्रार्थना-पत्र भेज दिया है। भगतसिंह द्वारा तो दया की प्रार्थना करना तो कल्पना से परे की बात है। वह तो अपने बचाव के लिये कुछ कहने के पक्ष में भी नहीं थे।

१ सितम्बर, १९३० की बात है। भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह का मत था कि इससे पूर्व की विशेष ट्रिब्यूनल लाहौर षड्यन्त्र केस के सिलसिले में अपना कोई निर्णय दे, भगतसिंह को अपनी सफाई के लिए कुछ कहना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने तत्कालीन वायसराय के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया था कि जिस दिन साडर्स का वध हुआ, उस दिन भगतसिंह कलकत्ता थे। उसकी पुष्टि के लिए परिमहल लाहौर के मैनेजर श्री रामलाल को गवाह के रूप में पेश करने की पेशकश की। भगतसिंह को जब जेल में इस बात का पता चला तो आवेश में आगये, अपना विरोध प्रकट करने के लिये। उन्होंने तुरन्त अपने पिता को एक पत्र लिखा। इस पत्र का कुछ अंश इस प्रकार है—पूज्य पिता जी, मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आपने स्पेशल ट्रिब्यूनल को मेरे बचाव के लिये एक प्रार्थना-पत्र भेजा है। यह समाचार इतना दुःखदायी था कि मैं इसे शांत होकर भी सहन नहीं कर सकता। आपका बेटा होने के नाते मैं आपकी पैतृक भावनाओं एवं इच्छाओं का पूरा सम्मान करता हू परन्तु आपको मेरी अनुमति के बगैर ऐसा नहीं करना चाहिए था। मेरा जीवन इतना मूल्यवान नहीं, जितना आप समझते हैं। पिता जी मुझे डर है कि आप पर दोष लगाते हुए मैं कहीं सभ्यता की परिधि न लांघ जाऊं और मेरे शब्द कहीं कठोर न हो जायें। इतना अवश्य कहूँगा, यदि दूसरा व्यक्ति मेरे प्रति इस प्रकार का बर्ताव करता तो मैं उसे देशद्रोही से कुछ कम नहीं समझता। ३ मार्च, १९३१ को भगतसिंह के परिवार के सदस्य उन्हें जेल में मिलने गये। परिवार के सदस्यों के साथ उनकी अन्तिम भेंट थी। सबको विश्वास था कि अभी और भी मुलाकातें होंगी। लेकिन भगतसिंह को विश्वास था कि यह उन की अन्तिम भेंट है। उन्होंने सब के साथ अलग-अलग बात की। अन्त में अपनी माता जी को पास बुलाकर मुस्कराते हुए कहा—बेबे जी लाश लेने आप मत आना, कुलबीर को भेज देना। कहीं आप रो पडी तो लोग कहेंगे कि भगतसिंह की मां रो रही है। इतना कहकर जोर से हस पडा।

२३ मार्च, १९३१ को शाम के सात बज चुके थे। भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को उनकी कोठरियों से बाहर निकाला गया। भगतसिंह के कहने पर उन तीनों के हाथों में न तो हथकडियां लगाई गईं और न उनके चेहरे ढके गये। कोठरियों से निकल कर एक दूसरे के बगल में फांसी घर की ओर चल दिये। उनके आगे-पीछे जेल के अधिकारी चल रहे थे और भगतसिंह गाते हुए चल रहे थे—दिल से निकलेगी न मरकर, वतन की उलफत, मेरी मिट्टी में भी खुशबू-ए-वतन आएगी। फांसी के फंदे पर पहुँच कर भगतसिंह ने देखा, वहां नियमानुसार लाहौर के जिलाधीश खडे थे, इसे सम्बोधित करते हुए भगतसिंह ने कहा—वैल मिस्टर मैजिस्ट्रेट यू आर फार्चुनेट टू वी एबल टुडे टू सी हाऊ इण्डियन रेवोल्यूशनरीज कैन एम्ब्रेस डेथ विद प्लेजर फार दी सेक आफ देयर सुप्रीम आईडियल, अर्थात् मजिस्ट्रेट महोदय, आप भाग्यशाली कि आज आप अपनी आंखों में यह देख पा रहे हैं कि भारत के क्रांतिकारी किस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक अपने सर्वोच्च आदर्श के लिए मृत्यु का आलिंगन कर सकते हैं। इसके साथ ही तीनों एक स्वर में एक साथ गूंज उठे—इन्कलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। तीनों ने अपना-अपना फंदा पकडकर उसे चूमकर, फंदे को गले में डाल लिया। तख्ता गिरा और तीनों राष्ट्र की बलिवेदी पर अर्पित हो गये। तब शाम के सात बजकर ३३ मिनट का समय था, भगतसिंह ने कहा था—"भारत में होने वाली क्रांति का विजयघोष मुझे सुनाई पड रहा है। मैं क्षितिज में नई सामाजिक व्यवस्था का सूर्य उगता देख रहा हू। प्रत्येक भारतीय नागरिक को इन प्रश्नों का उत्तर देना होगा—क्या अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल ने ३० वर्ष की भरी जवानी को ठोकर मारकर इसलिये फांसी के फंदे को चूमा था कि उनकी बहिन शास्त्री देवी ८५ वर्ष की उम्र में चाय के खोखे पर बैठकर निर्वाह करे। चन्द्रशेखर आजाद ने इसलिये बलिदान दिया था कि निजी रिवाल्वर को संग्रहालय से चुरा कर वहां पर नकली रिवाल्वर रख दे और उनके बलिदान के स्थान को उखाड फेंक दें। आज अनेकों क्रांतिकारी शहीदों को इतिहास के पृष्ठों से हटाने का षड्यन्त्र रचा जारहा है। रामप्रसाद बिस्मिल ने एक ऐसा स्वप्न लिया था, ऐसा भारत बल वैदिकधर्म का ध्वज फहराएगा। जहां किसान मजदूरों को अपने अधिकारों का समान अवसर प्रदान होंगे।

(जीवन चरित्र से साभार)

ऋषिबोधोत्सव के समाचार

आर्यसमाज नरवाना के तत्वावधान में एक नये ढग से ऋषि उत्सव कार्यक्रम मनाया। जिसके अन्तर्गत १४ जनवरी मकर सक्रान्ति से नरवाना में प्रतिदिन किसी नये परिवार में यज्ञ एव सत्सग आयोजन किया गया। निरन्तर ५४ परिवारो से सम्पर्क किया। यज्ञकर्म श्री प्रेमचन्द पुरोहित करते थे। उपदेश व्याख्यान आदि का कार्य युवा आर्यनेता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी करते थे। जिनके उपदेशो की नरवाना भर मे धूम मची है।

इस अवसर पर प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी के निर्देशन मे दिनाक २७ फरवरी से ६ मार्च तक एक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे ५० व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

६ मार्च को ऋषिबोधोत्सव पर विशाल सत्सग व खुली सभा का आयोजन किया गया। जिसमे स्वामी रत्नदेव जी, स्व० निरजनदेव तीर्थ, प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी को जोशीले तथा प्रेरणादायक प्रवचन हुए। प० तेजपाल आर्य के मधुर भजन हुए। ६ मार्च को आर्य वीरदल नरवाना का चुनाव श्री रामकुमार जी की अध्यक्षता मे इस प्रकार हुआ—

नगर नायक—रामकृष्ण आर्य, शाखा नायक—वीरेन्द्र आर्य, शाखा मन्त्री—आदित्यकुमार स्वणपदक विजेता, कोषाध्यक्ष—योगेशकुमार, शाखा उपनायक—ईश्वरसिंह, निरीक्षक—रणवीरसिंह।

आर्यसमाज नरवाना जि० जींद का वार्षिकोत्सव दिनाक ४-५-६ अप्रैल को धूमधाम से मनाया जा रहा है, जिसमें पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, प० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, डा० सर्वदानन्द आर्य, स्वामी रत्नदेव, प्रा० धर्मदेव, बहन दर्शना आर्य व रणवीर आदि आर्य नेता पधार रहे हैं। इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलनो का आयोजन मुख्य होगा। ६ अप्रैल को जींद जिलाभर के आर्यों की विशाल सभा होगी। यहा जिलाभर में प्रचार कार्य की व्यापक रूप-रेखा बनाई जायेगी।

दिनांक ६-३-८६ को जिलाभर में प्रचार कार्य को बढावा देने के लिए एक जिलास्तरीय तदर्थ समिति स्वामी रत्नदेव की अध्यक्षता मे बनाई गई। जिसके सयोजक धर्मदेव विद्यार्थी होगे।

६ मार्च, १९८६ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर गन्नौर शहर की ओर से शिवरात्रि का पावनपर्व श्रद्धानन्द चौक (मेन बाजार) में ऋषि बोध उत्सव के रूप मे मनाया गया। यह कार्यक्रम प्रात ४ बजे से ६ तक प्रभात फेरी से किया गया। जिसमे सैकडो की सख्या में स्त्री-पुरुष तथा बच्चो ने बढ-चढकर भाग लिया। इसके बाद दोपहर ३ बजे श्रद्धानन्द चौक मे एक यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ हवन के बाद महात्मा प्रेमभिक्षु जी, ओमप्रकाश वर्मा जी, हरीश वधवा, आर्य आदर्श विद्यालय की छात्राओ ने ऋषि जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्यसमाज शाति नगर सोनीपत दिनाक ७-३-८६ को महा शिवरात्रि का पावनपर्व आयसमाज के युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द बोध उत्सव के रूप मे मनाया गया। दैनिक यज्ञ के पश्चात् हरिचन्द स्नेही मन्त्री आर्यसमाज ने स्वामी दयानन्द की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए इस बात पर बल दिया कि हमें उनके कार्यों एव उद्देश्यो की पूर्ति हेतु आगे बढना है उनके द्वारा प्राणी मात्र विशेष रूप से नारी जाति के लिए किये गये उपकारो की भी सराहना की गई।

आर्यसमाज कवारी की ओर से दिनाक ४ ३ ८६ को शिवरात्रि के उपलक्ष में यज्ञ किया गया। जिसमे आर्य सज्जनो एव अन्य लोगो ने काफी सख्या मे भाग लिया। आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अत्तरसिह आर्य क्रातिकारी ने शिवरात्रि एव महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। लोगो को शराब एव जुवे जैसी बुरी आदतो से दूर रहने का आग्रह किया। इसके अतिरिक्त लोगो को विशेष कर नवयुवको को आज के दिन राष्ट्र-भक्ति, धर्म एव आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने का व्रत लेने पर जोर दिया।

यज्ञ के बाद आर्यसमाज कवारी की मीटिंग हुई, जिसमे आर्यसमाज मन्दिर शीघ्र बनाने एव नये सदस्य बनाने पर विचार किया गया। जिस में निम्न पदाधिकारी भी सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान—सर्वश्री अत्तरसिह आर्य क्रातिकारी, उपप्रधान—ज्ञानीराम सरपच, महामन्त्री—इन्द्रसिह आर्य, मन्त्री—महेन्द्रसिह आर्य, कोषाध्यक्ष डा० ओमप्रकाश आर्य, सगठन मन्त्री—भरतसिह आर्य, प्रचार मन्त्री—हरिसिह आर्य।

ग्राम माकड़ौला जि० गुड़गावां मे शराब ठेका बन्द करवाने हेतु धरणा

दिनाक १३-३-८६ से गाव माकडौला जि० गुडगावा मे शराब के ठेके को बन्द करवाने हेतु नर-नारी बडे उत्साह से धरणे पर बैठे हुए हैं। गाव वालो का कहना है कि जब दो वर्ष पूर्व इस शराब ठेके को गाव माकडौला के नाम से छोडा गया है, तभी से हमारी ग्राम पचायत व नौजवानो की सुधार समिति इसके उठवाने में लगी हुई है। लेकिन हरयाणा सरकार ने गाव की बात को अनसुना कर, केवल मात्र एक ही बात को मध्य नजर रखते हुए कि यह बोडर दूराला (दिल्ली) के समीप का गाव है जिसमे दिल्ली व हरयाणा दोनो के गावों को शराब में सराबोर करे ताकि अच्छा खासा पैसा सरकार की फटी झोली मे डाला जा सके तथा मजदूर व किसान की खून-पसीने की कमाई शोषक पूंजीपति वर्ग को आसानी से मिल सके। एक तरफ ग्राम व देहात के परिवार शराब के कारण उजड कर दाने-दाने के मोहताज हो रहे हैं तो दूसरी तरफ चन्द लुटेरे इनकी मूर्छित लाशो पर अठखेलियां करते हैं। आज लोगो मे इस सघर्ष से झूझने की हिम्मत हो कहा छोडी है। सरकार रेडियो, टी० वी०, अखबार शराब आदि के कारण नग्नता व अश्लीलता को दिनो दिन बढावा दे रही है। जिससे सारा समाज चरित्रहीन व पतित हो चुका है। कम से कम इस विषय में ऐसा प्रतीत होता जारहा है कि सरकार से बातो में आशा रखना दुराशा मात्र है। इसलिए सघर्ष के रास्ते को अपनाना ही श्रेयस्कर होगा। उसी का अनुकरण कर सभी ग्रामवासियों ने यह निर्णय करके धरणा दिया है। जब से धरणा लगा है एक भी बोतल, आधा, पव्वा बिक नहीं पाया है। समस्त गाव के इस उत्साह को देखकर सफलता साफ नजर आरही है। धरणे का उद्घाटन यज्ञ मेरे द्वारा किया गया तथा उन्हीं के सयोजन मे कार्य सफलता की तरफ बढ रहा है। गांव के सरपच श्री चतुर्भुजसिंह व ग्राम की नौजवान सुधार समिति के प्रधान धर्मसिंह जी व मन्त्री भ्राता शर्मा जी व अन्य गाव के मान्य प्रनिष्ठित व्यक्ति, महिलाये व नौजवान धरणे मे बढ-चढ कर भाग ले रहे हैं। जितनो के नाम लिखे जावे थोडे हैं। अगले अंको मे गाव के सघर्ष मे भाग लेने वाले मुख्य कार्यकर्त्ताओं के बारे मे बतलाया जावेगा। सघर्ष एकता प्रगति जिन्दाबाद।

ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री
महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हैदराबाद के सत्यग्रहियों को सूचना

भारत सरकार के आदेशानुसार हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में जेल यात्रा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को पेंशन देने का निर्णय किया गया है। अत जिन महानुभावो ने इस सत्याग्रह मे जेल यात्रा की है उन्हें अथवा उनकी विधवाओ से आवेदन पत्र ३१ मई, १९८६ तक मागे गये है। अत सम्बन्धित महानुभाव अपना नाम (अथवा विधवा) पूरा पता (पूर्व तथा वर्तमान), जेल का नाम, जत्थेदार का नाम, जेल यात्रा की अवधि आदि का विवरण (प्रमाण-पत्र यदि हो तो उसकी फोटो-स्टेट प्रति) साफ-साफ शब्दो मे लिखकर यथाशीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक के पते पर भेजने का कष्ट करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

धर्मवीर पं० लेखराम बलिदान दिवस समारोह

जींद ६ मार्च। आर्य वीरदल जींद की ओर से शुद्धि के प्रणेता अमर शहीद धर्मवीर प० लेखराम आर्य मुसाफिर का ८६वां बलिदान दिवस बडे उत्साहपूर्वक मनाया गया। ६ मार्च को रात्रि मे ८ से १० बजे तक खुले मे एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमे युवा-वक्ता श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीरदल हरयाणा ने प० लेखराम के जीवन पर प्रकाश डाला और उन्हे समस्त आर्य (हिन्दू) जाति का निर्भीक पहरेदार बताया। अन्य हिन्दू सगठनो के प्रतिनिधि वक्ताओ ने भी पण्डित जी को समस्त हिन्दू जाति का निडर सेनानी और बलिदानी नेता कहकर श्रद्धाजलि दी।

इनमे श्री परशुराम जी शास्त्री का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उक्त सभा आर्य (हिन्दू) जाति के बीच एक समन्वय और सौहार्द की प्रतीक थी, जिसमे हर वर्ग से प्रतिनिधि वक्ता और श्रोता शामिल थे। प० चन्द्रभान जी आर्य के ओजस्वी भजन हुए। मण्डल के मण्डलपति श्री रामकुमार जी आर्य (नरवाना) भी उपस्थित थे। मच सचालक श्री सुभाष आर्य, सयोजक श्री सुभाष तवर, ध्वजारोहण श्री दलबीर आर्य, ने किया। समारोह की अध्यक्षता युवा आर्य नेता श्री सुरेन्द्र पूनिया ने की। नगर की सभी आय सस्थाओ ने बढ-चढकर भाग लिया और उदारतापूर्वक सहायता की। आर्य वीरदल अपनी सभी महत्वपूर्ण सभायें खुले मे करता है जिससे समाज के पक्ष मे अनुकूल वातावरण बन रहा है।

ओमकुमार आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष आर्य वीरदल हरयाणा

हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रदर्शन

मेरी पुत्री मधु के दिनाक २३-२-८६ को हुए विवाह के शुभावसर पर आर्यजगत् के जिन-जिन महात्माओ, विद्वानो, नेताओं, प्रचारको ने वर-वधू के लिये अपना-अपना आशीर्वाद, शुभकामनाये इत्यादि भेजकर सहयोग, सहायता तथा मेरा उत्साह वर्धन किया है, मैं उन सभी सज्जनों का हार्दिक धन्यवाद तथा आभार प्रकट करता हू। आप सब की कृपा से सम्पूर्ण कार्य निर्विघ्नता तथा आनन्द सम्पन्न हो गया है।

सत्यप्रिय शास्त्री एम० ए० प्राचार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा)

पुरोहितों की आवश्यकता

सुयोग्य पुरोहितो जो कि वैदिक सस्कारो को भली-भाति करवा सके, की तुरन्त आवश्यकता है। अपनी योग्यता, अनुभव तथा आयु आदि का विवरण सहित आवेदन शीघ्र भेजे।

१—सुरेशकुमार एडवोकेट मन्त्री, आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ जि० फरीदाबाद।

२—वासुदेव मन्त्री आर्यसमाज शाहाबाद मारकण्डा, जि० कुरुक्षेत्र।

पुरोहित की आवश्यकता

आवश्यकता है आर्यसमाज जीद शहर को एक योग्य विद्वान् पुरोहित की, जो सस्कार आदि कराने मे दक्ष तथा प्रवचन करने में कुशल हो। समाज की ओर से मुफ्त सर्वसुविधाओ से युक्त आवास, स्वच्छ वातावरणयुक्त स्थान, सगीतज्ञ तथा गृहस्थी को प्राथमिकता दी जायेगी, वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र सम्पर्क करे या लिखे। मन्त्री आर्यसमाज जीद शहर से। कृष्णदेव शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज जीद शहर

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज बराडा (अम्बाला) की यह साधारण सभा आदरणीय वैद्य चिरञ्जीलाल जी आर्य मन्त्री वानप्रस्थाश्रम बराडा के ३-३-८६ को स्वर्गवास हो जाने पर गहरा शोक प्रकट करती है। आप बराडा व इलाके की आर्यसमाज के प्राण थे। ईश्वर आपकी आत्मा को शाति प्रदान करे और परिवार के सदस्यो को इस भारी वियोग सहने की शक्ति दे।

डा० विलायतीराम आर्यसमाज बराडा (अम्बाला)

वैदिक विद्वानों को पुरस्कार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई ने यह निश्चय किया है कि प्रतिवर्ष आर्यजगत् के किसी भी एक ऐसे वैदिक विद्वान् को जिसने अपना समस्त जीवन वेद एव वैदिक वाङ्मय के प्रचार एव प्रसार पर समर्पित किया हो, उन्हें इक्कीस हजार रुपये की थैली, मानपत्र एव शाल द्वारा पुरस्कृत कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाये। इस पुरस्कार का आरम्भ १९८६ से किया जायेगा।

इस योजना को स्थायी बनाने के उद्देश्य से यह भी निश्चय किया गया है कि इस पुरस्कार के प्रथम समारोह पर एक वेद वेदाग पुरस्कार स्मारिका का प्रकाशन कर इससे प्राप्त होने वाली विज्ञापनो की आय से ३ लाख रुपये का एक स्थायी कोष बना दिया जाये। जिसके व्याज से यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दिया जाता रहे ताकि भविष्य में धन के अभाव से यह सुकार्य बन्द न हो जाये। साथ ही यह भी निर्णय किया गया है कि इस एकत्रित धन को इस कार्य के अतिरिक्त अन्य किसी भी कार्य मे न लगाया जाये।

आर्यसमाज की अन्तरग सभा ने यह भी निर्णय किया है कि यदि अधिक धन एकत्र हुआ तो एक और समानान्तर पुरस्कार ११०००/- (ग्यारह हजार रुपये) आर्यसमाज के समर्पित भजनोपदेशक-पुरोहित या कार्यकर्ता को भी प्रतिवर्ष देने की योजना बनाई जायेगी।

हमारी इस योजना का भारत के समस्त आर्यसमाजों, विद्वानों, सन्यासियो, दानशील व्यक्तियो और वैदिकधर्म से प्रेम रखने वालो ने भूरि-भूरि प्रशसा की है।

हम आपकी सेवा मे १० विज्ञापन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र भेज रहे हैं। कृपया इन्हें भरवा कर और इसका धन शीघ्रातिशीघ्र ३१-३-८६ से पूर्व भेजने की कृपा कर, ऐसी प्रार्थना है।

आर्यसमाज में विद्वानो को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह प्रथम अवसर है जब इस प्रकार की योजना बनाई गई है। आप द्वारा दिये या एकत्रित किये गये धन से प्रति वर्ष यह पवित्र कार्य होगा।

अत आप से प्रार्थना है कि अधिक धन एकत्र कर मार्च मास के अन्तिम सप्ताह तक भेजने की कृपा करे। ताकि आर्यसमाज स्थापना दिवस तक यह समारोह आयोजित किया जा सके।

जो व्यक्ति इस शुभ कार्य के लिए ५०००/- रुपये दें—कृपया उनका चित्र या जिनकी स्मृति में वह देना चाहे उनका चित्र एव परिचय भी साथ भेजने की कृपा कर।

कैप्टिन देवरत्न आर्य महामन्त्री

जुआ जोरों पर

गन्नौर कस्बे के श्रद्धानन्द चौक मे जुआ जोरों पर खेला जा रहा है। आने जाने वालो पर इसका बुरा प्रभाव पडता है और पाठशाला नजदीक होने के कारण विद्यार्थियो का समूह उनके पास ही खडा रहता है। गन्नौर निवासियो का थाना गन्नौर पुलिस इन्चार्ज से निवेदन है कि वे इस बुराई को रोकने के लिए शीघ्र ही कदम उठायें।

रामकुमार प्रेमान गन्नौर (सोनीपत)

आर्यसमाज मन्दौला, भिवानी का चुनाव

प्रधान—मा० जगतसिंह आर्य प्रभाकर
उपप्रधान—श्री गोपालसिंह आर्य बी० एस-सी०, बी० एड०
मन्त्री—मा० मीरसिंह आर्य बी० एस-सी०, बी० एड०
उपमन्त्री—श्री रणधीरसिंह आर्य बी० एड०
कोषाध्यक्ष—श्री सत्यवीरसिंह आर्य एम० कॉ० म०

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन द्वारा एपार्थेट की निन्दा का सुपरिणाम—

भारत सरकार से सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाए रखने की मांग

बम्बई २४ फरवरी डरबन में पिछले दिनों हुए अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। इनमें सब में प्रमुख था कि दक्षिण अफ्रीकी सरकार अपने देश में एपार्थेट यानी अश्वेतों के प्रति भेदभाव तथा अन्य प्रकार के अन्याय को तुरन्त हटाये। इसके अतिरिक्त भारत सरकार से माग की गई है कि उसके द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धो के कारण भारतवासियो की धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां रुक गई हैं, उनको तुरन्त जारी करने के लिए कदम उठाये जाये।

डरबन से यहां पहुचे हुए एक भारतीय प्रतिनिधि श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने इस बात की जानकारी दी। डरबन मे हुआ यह विशाल सम्मेलन अत्यन्त अनूठा था और इसमें भारत सरकार की अनुमति से ५ प्रतिनिधि तथा मोरिशस तथा अन्य विदेशों से ४० के लगभग प्रतिनिधि वहा पहुँचे हुए थे। इसके अतिरिक्त समूचे दक्षिण अफ्रीका से लगभग दो हजार प्रतिनिधियों ने उक्त सम्मेलन में भाग लिया। इसके अन्तिम दो दिनों का अधिवेशन पीटर मैरिट्ज बर्ग नगर मे हुआ। ये दोनों ही नगर महात्मा गाधी के कर्मक्षेत्र रहे हैं।

दक्षिण अफ्रीका मे सबसे प्रथम पहुँचे भारतीय प्रतिनिधि प० ब्रह्मदत्त स्नातक को वहा के समाचारपत्रों मे एक-एक भारतीय स्वाधीनता सेनानी आगमन बताकर दक्षिण अफ्रीका की जनता को अपने अधिकारो के लिए सघर्ष मे जुटने की प्रेरणा दी गई थी। इस सम्मेलन के सभापति प्रयाग के स्वामी सत्यप्रकाश जी थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर एक विशाल सूचना केन्द्र एवं पुस्तकालय का उद्घाटन पत्रकार ब्रह्मदत्त स्नातक ने किया।

डरबन का यह सम्मेलन दिल्ली के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे हुआ था। महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती भी मनाई गई। इतिहास में पहली बार डरबन मे श्वेत मेयरलागे ने सम्मेलन के प्रतिनिधियो को सिटी हाल में बुलाकर सार्वजनिक स्वागत किया और प्रीतिभोज दिया। दक्षिण अफ्रीका को सरकार से एपार्थेट को हटाने का प्रस्ताव वहा के प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोसे ने प्रस्तुत किया और अनुमोदन श्री त्यागी जी ने किया। सम्मेलन के अवसर पर ओ३म् ध्वजा फहराने का कार्य मोरिशस के वृद्ध आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित के हाथों हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इससे पूर्व लडन, पोर्ट लुई (मोरिशस) और नैरोबी (केनिया) मे हो चुके हैं। इस अवसर पर डरबन की वेस्ट बिल यूनिवर्सिटी में सस्कृत पर एक विचारपूर्ण गोष्ठी हुई, जिसका शुभारम्भ प्रो० प्रेलिग वाइस चासलर ने किया। दर्शन एवं सस्कृत विभाग के अध्यक्ष जर्मन प्रो० जैनजन बर्ग तथा प्रो० रामबिलास के भाषणों के अतिरिक्त भारत के श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने सस्कृत की आज के सदर्भ मे उपयोगिता पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर दो मील लम्बा मोटरो का जुलूस और झाकियां भी निकाली गई।

दक्षिण अफ्रीका मे मुसलमान और ईसाइयो की सास्कृतिक और धार्मिक आवश्यकतायें जैसे—प्रचारको और अरबी शिक्षको को भुलाना और धार्मिक साहित्य को वहा भेजना हिन्दुस्तान के अतिरिक्त पाकिस्तान और खाडी देशो से और अमेरिका से पूरी हो जाती है। परन्तु भारत के अलावा और कई देश दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुओ की सास्कृतिक और धार्मिक आवश्यकतायें पूरी नही कर सकता। स्मरणीय है भारत से बाहर दक्षिण अफ्रीका में सबसे अधिक भारतवंशी दस लाख रहते हैं। वहा पर हिन्दी, तमिल, गुजराती भाषाओ के शिक्षकों और पाठ्यपुस्तकों की बडी कमी महसूस की जा रही है और भारत द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध उसमें बाधक बने हुए हैं। इन सभी वर्गों ने इस सम्मेलन मे एक स्वर से भारत सरकार से सहायता करने का अनुरोध किया है। मोरिशस के मोहनलाल मोहित ने एक प्रस्ताव द्वारा मोरिशस के नागरिको को बिना वीसा की औपचारिकता के उन्हें भारत में प्रवेश की सुविधा देने के लिए अनुरोध किया। इसे सयोग माना जाये अथवा सम्मेलन की आवाज की सफलता मानी जाये कि इन प्रस्तावो के स्वीकृत होने के अगले मास ही दक्षिण अफ्रीका के प्रेजिडेन्ट बोथा ने अपनी राष्ट्रीय पार्लियामेंट के ३१ जनवरी को दिये उद्घाटन भाषण मे एपार्थेट की असगता को पहली बार सार्वजनिक रूप मे स्वीकार किया और भेदभाव के कानूनो को निरस्त करने की योजना की घोषणा की है। क्योंकि ३० जनवरी गाधी जी का बलिदान दिवस था और दक्षिण अफ्रीका गाधी जी की पहली कर्मस्थली रही है (१८९२-१९१३ तक), हमें ऐसा लगा कि उनकी आत्मा ने बोथा के मुह से मानो रावण के मुह से राम कहलवा दिया।

ओकारनाथ आर्य प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई

शोक समाचार

युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी के पूज्य नाना चौ० चेतराम की (कलाली निवासी) का २० फरवरी, १९८६ को आकस्मिक बीमारी से देहान्त हो गया है। वे लगभग ८० वर्ष के थे। वे निस्वार्थ समाज-सेवक तथा साधु-महात्माओ के प्रेमी थे। आर्यसमाज के प्रत्येक शुभ कार्य मे सहयोग देते रहते थे। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड गये हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को कर्म व्यवस्था के अनुसार सद्गति प्रदान करे तथा शोक-सतप्त परिवार को इस वियोगजन्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

रमेशकुमार आर्य, आर्यसमाज दातौली, भिवानी

आर्यसमाज शेपस्टन का अविस्मरणीय साप्ताहिक सत्सग

डरबन ! अपने नब्बे दिन के दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान मुझे अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन वेस्टविल यूनिवर्सिटी के सास्कृत सम्मेलन, दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती हिन्दी सम्मेलन तथा अनेक बैठको मे भाग लेने का अवसर मिला। सबसे अधिक प्रसन्नता साउथ कोस्ट के और पोटश्वेप्टम के आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सग मे एक दिन के लिए जाने पर बहुत आनन्द आया। डरबन से एक सौ किलोमीटर की दूरी पर यहा एक समुद्रतट सैलानियो के लिये स्वर्ग समान है। यहा पर मुख्यत यूरोपियन लोगो के होटल और निवास हैं। हिन्दुओ की सख्या पाच हजार होगी।

इस क्षेत्र मे पजाब, लुधियाना से गिरमिट में आया स्व० पडित ईश्वरसिह का पुस्तकालय देखने और उनके पुत्र प० आत्मदेवसिह से मिलने का सुअवसर मिला। ईश्वरसिह सिख बनकर यहा आये थे। सत्यार्थप्रकाश पढा तो ग्रथसाहब समुद्र मे प्रवाहित किया और महर्षि कृत सारे ग्रथो के अतिरिक्त वेद, निरुक्त, अष्टाध्यायी आदि समस्त ग्रंथों का गहराई से अध्ययन वे जीवन के अन्तिम १०५ सालो तक करते रहे। उन्होंने गिरमिट से छूटने के बाद, खेती डरबन के पास की और बाद में मकान और दूकान शेपस्टन मे की। उस क्षेत्र से बाहर भी वे प्रचार, शास्त्रार्थ एव यज्ञ-सस्कारो मे अपना समय लगाते। भारत से प्रकाशित होने वाली आर्य सामाजिक पत्र-पत्रिकाओ व पुस्तको को मगवाने मे अपनी सारी पेंशन की आय मुक्तहस्त से व्यय कर देते। वे भारत मे दो बार आये, उनकी एक विद्वत्तापूर्ण पुस्तिका भारत मे प्रकाशित हुई। उनके विद्वत्तापूर्ण अप्रकाशित हस्तलेखो को देखकर मैंने उस दिवगत आत्मा को प्रणाम किया। १९७३ में विशाल परिवार छोडकर वे परलोक सिधार गये।

उनकी पत्नी जीवित व स्वस्थ है। पुत्र प० आत्मदेव और पुत्रवधू आर्यसमाज व स्त्रीसमाज के प्रधान हैं। आत्मदेव जी (६८ वर्ष) मे भी पुरोहित प्रचारक का काम अपने परिवार के साथ बराबर करते हैं। समाज का विशाल भवन लगभग पूरा हो चुका है। वहीं बच्चो और युवा स्त्री-पुरुषो ने बडी सख्या में यज्ञ, भजन आदि मे जिस श्रद्धा से भाग लिया, उसे देखकर बडी प्रसन्नता हुई। मैंने अपने भाषण में माता-पिता का स्वसन्तान, स्वभाषा, धर्म सस्कृति के प्रति, कर्त्तव्य के प्रति प्रेरणा दी। स्थानीय विद्वान् प्रचारक पुरोहित प० के० एस० नायडू ने भी अपना भाषण दिया। इस देश में बच्चे भी घर मे व परस्पर गोराशाही अंग्रेजी बोलते हैं, इसलिए उनको हमने अंग्रेजी में ही भाषण देकर पूर्वजों की भाषा अपनाने की प्रेरणा दी। क्या यह उचित था ? परन्तु व्यावहारिक यही मार्ग था।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्यसमाज ऊंचा चांदना जिला अम्बाला का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री जसमेरसिंह, उपप्रधान—बलबीरसिंह, मन्त्री—क्षत्रपाल आर्य, उपमन्त्री—समेरसिंह, कोषाध्यक्ष—कपूरचन्द, प्रचार-मन्त्री—अजमेरसिंह तथा रवीन्द्रनाथ, हरिश्चन्द्र भजनोपदेशक तथा सहायक अधिष्ठाता वेदप्रचार।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भा ......भारा राज न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 40 फोन ४८१२ मूल्य मंबर् १,९६,०८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री सम्पादक-वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क १८ २८ मार्च १९८६ वार्षिक शुल्क १५) विदेश मे ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य भजनोपदेशक स्वर्गीय चौ० पथ्वीसिह "बेधड़क" का होली पर्व पर आर्यवीरों का आह्वान

आर्यवीरो बिल्कुल मत घबराना।
सत्यमेव जयते नानृतम् यह ऋषियो का फरमाना॥
हिरनाकुश बेटे प्रहलाद को सताता रहा,
कर में लेके तलवार डर भय मौत का दिखाता रहा।
डंडे बेत मुक्के तो पल-पल मे लगाता रहा,
पहाड पर से गेरे कभी आग मे जलाता रहा।
हाथ पैर बाध कभी दरख्त से लटकाता रहा,
लेकिन वीर बालक "नैन छिन्दन्ति" गाता रहा।
हसता रहा दीवाना॥ १

घूसे और जूते से और लातो से पिटता रहा,
बाप का सिपाही उसे ठा-ठा के पटकता रहा।
कोई तो हाथो को कोई पैरों को झटकता रहा,
पानी से पियासा और रोटी से भटकता रहा,
कभी-कभी सारी रात छत में लटकता रहा,
लेकिन वह प्रहलाद एक ओ३म् नाम रटता रहा।
बहुत उम्र का याना॥ २

लेकिन उस प्रहलाद ने न बाप की बुराई चाही,
पिता जी कह कह के रोजाना आवाज लाई।
हंसते और खेलते हुए ने तकलीफ ठाई,
तभी तो बालक ने सारी दुनिया पै फतह पाई।
बाप का न नाम रहा बेटे को न आच आई,
आया है प्रहलाद बनके दोबारा यहा सत्याग्राही।
दयानन्द का चौथा नियम मनमे ग्रहण करके भाई,
किया फकीरी बाना॥ ३

बन करके प्रहलाद गैर मुल्को को दिखाते रहो,
बेदर्दी से अपना माल रोजाना लुटाते रहो।
अपनी पोथी खोल-खोल विदेशो मे दिखाते रहो,
आपको जो पीटे, शीश उनको झुकाते रहो।
जान पर खेल जाओ कदम को बढाते रहो,
वही प्रहलाद का आया जमाना॥ ४

प्रहलाद की तरह से आज आमको न खाली रहे,
जिसका होवे बाग फिर उसका वही माली रहे।
नक्काली माली भगे न मालन तेरा ताली रहे,
पात पात डाली डाली बाग की हरियाली रहे।
राजाओं का राज फिर भारत का ही हाली रहे,
भारत का व्यक्ति फिर कोई भी ना ठाली रहे।
ठाली न रहेगे फिर क्यो देश में कङ्गाली रहे,
सस्कृत विद्या पढ फेर न कुचाली रहे।
व्यभिचारी मिटे क्योकि रोज देखा भाली रहे,
यज्ञ से करेंगे वारिश कोई नहीं नाली रहे।
गऊवे नही मारी जाये क्योकि उनका पाली रहे,
चोर डाकू नही होगे फिर क्यो ताला ताली रहे।
मुल्ला की ना बाग रहे पोप की ना टाली रहे,
बचपन में ना होगी शादी फिर क्यो बेवा बाली रहे।
मिटे हिरनाकुश तो क्यो प्रहलाद सवाली रहे,
लेकिन खबरदार कोई कही भी ना खाली रहे।
पृथ्वीसिह जेलखाना॥ ५

(बेधड़क की बिजली से साभार)

हैदराबाद के सत्यग्रहियों को सूचना

भारत सरकार के आदेशानुसार हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में जेल यात्रा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को पेशन देने का निर्णय किया गया है। अत. जिन महानुभावो ने इस सत्याग्रह मे जेल यात्रा की है उनसे अथवा उनकी विधवाओ से आवेदन-पत्र भेजने की अवधि बढा कर ३१ मई, १९८६ तक करदी गई है। अत' जिन्होने अभी तक अपने आवेदन-पत्र नही भेजे हैं वे अपना अथवा विधवा का नाम पूरा पता (पूर्व तथा वर्तमान), जेल का नाम, जत्थेदार का नाम, जेल यात्रा की अवधि आदि का विवरण (प्रमाण-पत्र यदि हो तो उसकी फोटोस्टेट प्रति) साफ-साफ शब्दो मे लिखकर २ प्रतियो मे यथाशीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के पते पर भेजने का कष्ट करें। ताकि हम शीघ्र ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेज सकें। सर्वहितकारी के पाठको से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के पुराने सत्याग्रहियो को इस विषय में सूचित करने की कृपा करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, रोहतक

गताक से आगे—

वेदोदधि के चुने हुए फूल

जगदीश आर्य, आर्यसमाज सासाराम (बिहार)

व्याख्या—ऊपर के मन्त्र (२०।२५) मे ब्राह्मशक्ति एव क्षात्रशक्ति के सामञ्जस्य की शिक्षा दी गई है। अत इस मन्त्र मे वैश्यो एव शूद्रो के सामञ्जस्य का उपदेश दिया गया है। मन्त्र की सगति ऊपर के मन्त्र से है।

(इन्द्र) वाणिज्य का प्रतीक है। "इन्द्रमह वाणिज चोदयामि" (अथर्व० ३।१५।१) यहा इन्द्र का वणिक याने वाणिज्य को प्रेरित करने को कहा गया है।

मन्त्र मे आया हुआ 'वायु' शब्द शूद्रत्व का प्रतीक है। शूद्र में दो अक्षर हैं—'शु'—इसका अर्थ है 'आशु'—शीघ्र 'द्र' द्रवण अर्थात् गति करना। इस मन्त्र मे 'वायु' पद लक्षणा से शूद्र अर्थ का बोध कराता है। 'वायु' गति का प्रतीक है, 'वा' धातु का अथ है गति और गन्ध (वा गति गन्धनयो) धातुपाठ। गति का एक अर्थ 'कर्म' भी है (निघण्टु)। अत वायु यहा लक्षणा से शूद्र का बोधक है। यजु० मे तपसे शूद्रम् ऐसा आया है। जो शीघ्रता से कर्म करे वह शूद्र है। (ऋ० दया० ने इस मन्त्र का आधिदैविक भाष्य किया है।)

१०. इच्छन्ति देवा सुन्वन्त, न स्वप्नाय पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्रा। (ऋ० ८।२।१८)

अर्थ—देवगण पुरुषार्थी को चाहते हैं, आलसी को नही चाहते। जो (अतन्द्रा) आलस्यहीन है, वे ही (प्रमादम) उत्कृष्ट आनन्द को (यन्ति) प्राप्त करते हैं।

व्याख्या—पुरुषार्थ ही जीवन है और आलस्य मृत्यु है। निष्क्रियता किसी को भी प्रिय नही है। आलसी व्यक्ति समाज राष्ट्र की कौन कहे, अपने परिवार ने भी अप्रिय है। सस्कृत के एक कवि ने भी कहा है—

उद्यमः साहस धैर्यं बुद्धिः शक्ति. पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देव. सहायकृत्॥

अर्थात्—उद्यम, साहस, धैर्य बुद्धि, शक्ति और पुरुषार्थ ये ६ गुण जहा रहते हैं वहा परमात्मा सहायक है। अग्रेजी के एक कवि ने कहा है God helps those who help them selves

११ प्र ण आयू षि तारिषत् (ऋग्वेद)

अर्थ—हम अपनी आयु का विस्तार करे।

व्याख्या—'आयु' शब्द 'यु' धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है मिलना और बिछुडना। 'आ' उपसर्ग है। अर्थात् चारो तरफ पूर्ण रूप से। जीवनभर सद्गुणो से मेल और दुर्गुणो से अलगाव यही 'आयु' पद का अर्थ है। वेद के इस मन्त्राश मे यह शिक्षा निहित है कि सार्थक जीवन बनाने के लिए 'आयु' का इसी अर्थ मे प्रयोग करे।

१२. अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥
यजु० ११।८३

अर्थ—(अन्नपते) अन्नो के स्वामिन् हे प्रभो! हमे (अनमीवस्य) रोगरहित और सुखकर (शुष्मिण) बलकारक (अन्नस्य) अन्न को (प्र-प्र-देहि) बहुत प्रकार से प्रदान कीजिये। (दातार) जो हमें अन्न दे रहा है, उस दाता को (तारिप) दुखो से तार दो। (न) हमारे लिये और (द्विपदे) समस्त मनुष्य और दो पंर के पक्षियो के लिये एव (चतुष्पदे) गवादि पशुओ के लिये (ऊर्ज) बल, ओज, तेज एव सामर्थ्य (धेहि) धारण कराइये।

व्याख्या—यहाँ अन्न सभी भोग्य पदार्थों का उपलक्षण है, भौतिकता का प्रतीक है। उपनिषदो एव ब्रा० ग्रथ मे भी अन्न की बडी महिमा कही गई है।

१—अन्नं ब्रह्म (तैत्तिरीय उप० ३।२)
२—अन्न न निन्द्यात् तद् व्रत (तैत्ति० भृगु० ६)
३—अन्न वै सर्वेषा भूतानामात्मा (गोपथ ब्रा० उ० १।३)

उपरोक्त मन्त्र यजु० के एकादश अध्याय का अन्तिम मन्त्र है। ऋषि दयानन्द जी महाराज इस मन्त्र के भावार्थ में लिखते हैं—"मनुष्यों को चाहिये कि सदैव बलकारी आरोग्यप्रद अन्न खावें और दूसरो को भी देवे। मनुष्य तथा पश्वादि के सुख और बल बढावें, जिससे ईश्वर को सृष्टिक्रमानुकूल आचरण से सब के सुख की सदा उन्नति होवे।

परमात्मा इस मन्त्र के द्वारा हमें रोग-रहित और बलकारक अन्न को सेवन करने का आदेश दे रहे हैं। परन्तु शोक है कि हम ईश्वर की आज्ञा का उल्लघन कर दुखी हो रहे हैं। मास, अडा, मद्य आदि का सेवन कर अपना विनाश कर रहे हैं। चिकित्सकों का कहना है कि ज्यों ही कोई प्राणी मरता है, शीघ्र ही उसके मास मे विकार उत्पन्न हो जाता है। ऐसे विकारपूर्ण मास का भक्षण कर हम रोगी और बलहीन हो रहे हैं। बल का अर्थ केवल शारीरिक ही नही है बल्कि शारीरिक एवं आत्मिक बल भी है। अन्न से ही विचार बनते हैं और विचार से ही मनुष्य में मनुष्यता आती है। अन्न के दो रूप हैं—यह खाया जाता है और यह खाने वाले को ही खा जाता है। तैत्तिरीय० मे आया है—

अद्यतेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्न तदुच्यते, 'अद् भक्षणे' धातु से अन्न शब्द बनता है। (भृगु० २।३) क्योकि यह खाया जाता है, भोगा जाता है अत यह अन्न है, इसका दूसरा रूप भी है—'अद्यते इति भूतानि' यह प्राणियों को भी खा जाता है। हम ससार के विषयों (अन्नो) को इतना भोगते हैं कि ये भोगने वाले को ही खा जाते हैं। दूध एक बलकारक, रोगनाशक पेय है। मर्यादित रूप से सेवन करने से हमारे अन्दर बल, ओज एव स्वास्थ्य को प्राप्त कराता है। परन्तु इस दूध को अगर हम स्वच्छ न कर अमर्यादित ढग से सेवन करें तो यह हमे ही खा जाता है। अर्थात् भयकर रोग-ग्रस्त होकर मृत्यु को भी प्राप्त कर सकते हैं।

कोई भूखा-प्यासा न रहे।

१३ एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत्।
अथर्व० २।२९।४

अर्थ—इस मन्त्राश मे परमात्मा मनुष्यो को उपदेश दे रहे हैं कि पृथिवी और अन्तरिक्ष मे बसने वाला कोई मनुष्य न भूखा रहे न प्यासा।

व्याख्या—सामाजिक व्यवस्था मे यह बहुत ही आवश्यक है कि समाज का कोई भी व्यक्ति भूखा-प्यासा न रहे। राज्य और समाज के अध्यक्षो एव नेताओ का यह उत्तरदायित्व है कि इस ईश्वरीय आदेश का ठीक ढग से पालन हो। अन्तरिक्ष में मनुष्य रहता है या नही, यह तो खोज का विषय है। परन्तु जो मनुष्य अन्तरिक्ष मे पहुँचते हैं उन्हे राज्य की ओर से इतना पुष्कल प्रबन्ध होना चाहिए कि वे अन्न और प्यास पीडित न हो।

१४ परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्व मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृतांऽअनु॥ (यजु० ४।२८)

अर्थ—हे अग्ने! मुझे (दुश्चरितात्) दुष्टाचरण से (परिबाधस्व) पूर्ण रूप से पृथक् कर दीजिये। (मा) मुझे (सुचरिते) धर्मयुक्त व्यवहार में (मा भज) पूर्णतया स्थापित कीजिये। (अमृतान्) मोक्ष को प्राप्त हुए विद्वानो के (अनु) अनुसरण करते हुए (आयुषा) आयु से (उद्-अस्थाम्) ऊचा उठूं। (स्वायुषा) उत्तम आयु से (उद् अस्थाम्) ऊचा उठू।

व्याख्या—इस मन्त्र में दुराचार से हटाकर सदाचार में प्रवृत्ति होने की प्रार्थना है और अमृत हुए महात्माओं के जीवन के अनुसार चलकर दीर्घायु और उत्कृष्टायु प्राप्त करने का सकल्प है।

इसी प्रकार का एक मन्त्र 'विश्वानि देव० (यजु० ३०।३) भी है। उपरोक्त मन्त्र (४।२८) में एक विशेष उपदेश परमात्मा ने दिया है कि,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शराबबन्दी संघर्ष में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की उत्तरोत्तर विजय

लगभग १ वर्ष से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने ग्रामीण आचल से शराब ठेको को बन्द करवाने के लिए सघर्ष कर आर्यसमाज के पूर्व सघर्षों की याद को ताजा कर दिया है। यह भी सत्य है कि जब-जब किसी देश, राष्ट्र, जाति मे सघर्ष का मादा खत्म हो जाता है तो वह देश राष्ट्र, जाति देखते ही देखते समाप्त हो जाया करती है। हमारी भी कुछ ऐसी ही हालत हो चुकी है। इस मृतप्राय समाज को उभारने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने शराबबन्दी सघर्ष कर एक सुव्यवस्थित एव ठोस कदम इस ओर बढाया है। जिसकी सफलता के बारे मे पाठक-वर्ग अखबार पत्रिकाओ के माध्यम से समय-समय पढता रहता है।

आप सभी इस बात को भली-भांति जानते होगे कि प्रत्येक वर्ष मार्च के महीने मे एक ओर सरकार ढोग रचकर घाटे का बजट तथा-कथित विकास के नाम से पेश करती है तो दूसरी तरफ आचारहीनता को बनाये रखने के लिए लोगो के खून-पसीने की गाढी कमाई को अगले साल के लिए शराब ठेको की नीलामी कर इसी मार्च के महीने मे अपनी फटी झोली मे डाल अपूर्व खुशी का अनुभव करती है। इसी षड्यन्त्र को मध्य नजर रखते हुए प्रो० शेरसिह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भजन मण्डलियो के साथ मिलकर हम ने तूफानी दौरे किये तथा मैंने शराबबन्दी की प्रस्तावित प्रतियो का Reminder (स्मरण-पत्र) गाव-गाव से दिलवाने का भरसक प्रयत्न भी किया। इसी कार्यक्रम के तहत जि० फरीदाबाद, गुडगावा, सोनीपत, रोहतक मे जबरदस्त विरोध प्रदर्शन ठेको की नीलामी स्थान पर क्रमश १८, १९, २१ व २२ माच को किये गये तथा उपायुक्त आबकारी एव कराधान महोदय को ज्ञापन दिये गये कि ग्रामीण जनता को बर्बादी से बचाने के लिए कही भी शराब का ठेका न खोला जावे। विरोध रैली मे लोगो ने दर्जनो ट्रैक्टरो के साथ बढ-चढ कर भाग लिया, इसी के परिणामस्वरूप निम्नलिखित गावो को शराब की नीलामी से मुक्त कर दिया गया। हसनगढ, ईशरहेडी, गुवाना, सोहटी, बामडोली, बादली, बेसी, मोखरा, भराण, छुछकवास, बिरोहड, ढाकला (रोहतक), भटगाव, मोहाना, जौलीलाठ, कथूरा, जागसी, रिठाल, रिण्डाना, फिरोजपुर बागर, फरमाणा, बीसवा मील, बारोहटा, पानची जाटान, मोहमुदपुर माजरा (सोनीपत), माकडौला (गुडगावा) आदि।

इन सभी गावो की सफलता मे मूलकारण धरने (सत्याग्रहो) का प्रभाव रहा है। हमने पहले से ही हसनगढ, माकडौला, भटगाव, ईशरहेडी, जौली मे धरणे देकर व सहयोग दिलाकर इस यज्ञ को आगे बढाया था। इन धरणो पर सभा को भजन मण्डलियो ने शराब विरोधी प्रचार किया गया।

गाव हसनगढ जि० रोहतक में दिनाक ५-३-८५ को धरणा लगाया गया। जिसमें ग्राम पचायत जनकल्याण सेवा समिति अन्य नौजवान साथी व बुजुर्गों का भरपूर सहयोग मिला। श्री चतरराम जी सरपच अपनी पूरी तन्मयता के साथ इस कार्य मे जुटे हुए थे। शायद आज के इस पतित समाज मे ऐसे एक आध ही सरपच मिलते हैं। श्री प हुकमसिह जी पच के बारे मे जितना लिखा जावे शायद थोडा होगा। श्री देवीसिह जी सैनी, चौ० नन्दलाल जी, श्री ताराचन्द जी एस० एच० ओ० आदि व्यक्ति तो इस धरणे के स्तम्भ रहे हैं। जनकल्याण सेवा समिति हसनगढ की सूझ-बूझ व सहयोग का यह परिणाम रहा कि धरणा शातिपूर्ण ढग से सफलता को प्राप्त हो सका। भ्राता ओम्प्रकाश जी, श्री वर्मा जी, के० सी० साहब, भरतसिह फौजी, अतरसिह व अन्य नौजवान साथियो का भरपूर सहयोग रहा। भाई पप्पु (रणवीरसिह) का उत्साह देखने लायक था। सभी ग्रामवासियो के सहयोग से सफलता होने पर धरणा २२-३-८६ को उठा लिया गया। रोहणा आर्यसमाज कार्यकर्त्ताओ का योगदान इस सघर्ष मे भुलाया नही जा सकता। हसनगढ मे सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी ने स्वय दोबारा पहुचकर कायकर्त्ताओ का मार्गदर्शन किया। सभा उपदेशक प० अर्जुनदेव, प० तेजपाल, प० समेरसिह के साथ यहा प्रचार करते रहे।

दूसरा इस दौरान का विशेष धरणा गाव माकडौला जि० गुडगावा में दिनाक ३-३-८६ को लगाया गया। मैंने जितना उत्साह कुछ महीने पूर्व स्त्री-पुरुष व नौजवानो मे फिरोजपुर बागर गाव मे देखा था, ठीक उससे भी बढकर अदम्य उत्साह गाव माकडौला मे १३ से १६ माच तक देखा। उसका सबसे जबरदस्त प्रमाण है कि गाव मे जितने भी १२ या १३ ट्रैक्टर थे सभी गुडगावा १९ मार्च को लगने वाली शराब नीलामी के विरोध स्वरूप पहुचे तथा धरणे के दिन से लेकर आखिर तक एक भी बोतल बिकने नही दी। यहा विशेष बात यह रही कि शराब ठेका उठने पर गाव मे शराब पीने वालो पर पूण प्रतिबन्ध लगा दिया।

माकडौला गाव के सरपच श्री चतुर्भुज जी का पूर्ण योगदान धरणे पर रहा। ग्रामीण नौजवान सुधार समिति के प्रधान व मन्त्री श्री धर्मवीरसिह व महावीर शर्मा का तथा अन्य कमेटी वर्करो का अनवरत अहर्निश सहयोग रहा। श्री ओम जी, सुरजनसिह जी, रामरख जी, लालचन्द, जयकिशन व रामप्रकाश खुराना आदि अन्य अनेक लोगो व माताओ, बहनो का विशेष योगदान रहा। १९ मार्च को सफलता मिलने पर धरणे पर आकर सम्पूर्ण ग्रामवासियो ने मिलकर शराबबन्दी के कार्यक्रम को आगे बढाने के लिए मेरे स्वागतार्थ ५०५ (पाच सौ पाच) रुपये की माला डालकर अपनी श्रद्धा व सक्रियता का उत्कृष्ट नमूना पेश किया। दो दिन १९ २० माच को प० जयपाल की भजन मण्डली का शराबबन्दी प्रचार कायक्रम भी सम्पन्न हुआ।

जि० सोनीपत के भटगाव मे शराब ठेके पर २० माच को धरणा दिया गया, जिसमे आर्यसमाज भटगाव व भारतीय जनवादी नौजवान सभा के अथक परिश्रम से २१ मार्च को सफलता के बाद उठा लिया गया। श्री महेन्द्रसिह जी आर्य इस कार्य की सफलता के लिए ३-४ महीने से अनवरत प्रयासरत थे। जिनका अपना जीवन श्रेष्ठ कार्यों के चिन्तन व क्रियान्वयन मे व्यतीत होता है। अन्य आर्यसमाज के अनेक कायकर्त्ताओ ने इसमे अपना भरपूर सहयोग दिया। नौजवान सभा जिला के प्रधान व मन्त्री श्री ब्रह्मसिह एडवोकेट तथा श्री राजपाल जी, भ्राता बिजेन्द्रसिह जी नौजवान सभा प्रधान शाखा भटगाव अन्य अनेक साथी जिन्होने बढ-चढकर भाग लिया, काय से नही नाम से विस्मृत हो गये। सोनीपत मे शराबबन्दी प्रदर्शन का श्रेय इन्ही नौजवानो व आर्यसमाज कायकर्त्ताओ को विशेषकर जाता है।

इसी प्रकार जौली मे श्री रामकिशन बी० के० यू० जि० प्रधान के स क्षण मे बाबा सेवादास का आमरण अनशन १७ से २१ मार्च तक सघर्ष की सफलता तक जारी रहा व सैकडो व्यक्ति धरणे के रूप मे बैठते थे तथा उनमे यह भी पूरी घोषणा करदी गई थी कि यदि शराब ठेके की अगले स्तर हेतु नीलामी लगादी गई तो ठेका होली पर फूक दिया जावेगा। यह बात सम्बन्धित विभाग व सी० आई० डी० को अच्छी तरह बतला दी गई है।

इसी प्रकार ईशरहेडी आदि मे भी धरणो के माध्यम से विरोध किया गया तथा उसी का परिणाम रहा कि कमजोर जगहो से शराब के ठेके उठा लिये गये।

इसी दौरान रोहतक मे विरोध प्रदशन २२ मार्च के दिन एक विशेष घटना जनता के सामने तब घटी जब साघी, आसौदा, सामाण के आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओ और आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उप-प्रधान महाशय भरतसिह ने तीनो गाव के शराब ठेको को बन्द करने की बात उपायुक्त महोदय को सुनाई तो उपायुक्त महोदय रोहतक ने आश्वासन दिया कि आपके गावो की बोली नही लगाई जावेगी तथा आपके गावो की सरकारी बोली (नीलामी) काफी बढाकर बोल दी जावेगी ताकि कोई ठेकेदार बोली न ले पाये। साथ मे ये भी कहा गया कि नीलामी मे पूर्व तीनो ठेको के बारे मे ठेकेदारो को यह सूचना दी जावेगी कि अपनी हिम्मत पर ठेके लेने पर न चल पाने की अवस्था मे सरकार जुम्मेवार नही होगी। लेकिन हमें तब आश्चर्य व अत्यन्त दु ख हुआ जब जिले के सर्वोच्च अधिकारी उपायुक्त महोदय ने अपनी ही बात की मर्यादा न रखते हुए नीलामी साय के समय करदी। सांघी व आसौदा के लोगो ने मच पर इसका विरोध किया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आज पाखण्ड खण्डन की आवश्यकता

विश्वधर्म गुरु महर्षि दयानन्द जी ने भारत भूखण्ड पर ही नही बल्कि सम्पूर्ण भूखण्ड पर वैदिक ध्वज फहराया था, लेकिन उन मुख्य से मुख्य कठिनाइयो का भी वर्णन नही किया जा सकता जो उस समय उन्होने रौदकर कुचल डाली थी। फिर भी हमने उनके द्वारा जो अनादि वैदिकपथ पुन अवलोकित हुआ को अपनाकर कुरीतियो, आडम्बरो व पाखण्डो का खण्डन अवश्य करना चाहिए। इसी प्रकार आजकल एक ऐसा सन्त नामक सम्प्रदाय हमारे आर्यावर्त मे फैल रहा है जो वेद विरुद्ध होते हुए भी हम विद्याशून्य आर्यपुत्रो को डगता जारहा है। यह एक पारिवारिक पाखण्ड जो पीढी दर पीढी चला आरहा है। आज पजाब में ही न रहकर, यह दूसरे प्रातो मे भी बढ रहा है। इस सम्प्रदाय में नाम दान की व्यवस्था के द्वारा शिष्य को ईश्वर दर्शन का झासा दिया जाता है। इसका प्रमुख नाम राधा स्वामी है जो अपने को सर्वोच्च बताकर सतगुरु कहता है तथा इसे सन्त मत की युक्ति देता है। अविद्या युक्त आर्य सन्तान इसे ही गुरु मानकर अधेरे मे घुसती जारही है। वे कपिलाचार्य जैमिनि व ब्रह्मादि महर्षि को भूल गये है। यह भी नही जानते हम कैसे विश्वगुरु थे। क्या हमारा इतिहास था ? क्या धर्म व नीतिया।

अगर इन गुरु नाम के ठेकेदारो मे सामर्थ्य है तो ये खुले आसमान के नीचे क्यो नही आते। वेदविरोधी होने के प्रति ये डरते हैं। दयानन्द सरस्वती की तरह विश्व धुनघुनो क्यो नही बजाते। वेद निन्दा केवल मुह छुपा कर करते हैं। क्यो न आर्यो के सम्मुख आते ? योग से मुक्ति नही होती। जसी बाते बनाते हैं, लेकिन मनु महाराज ने विश्व के सम्मुख किस बल पर घोषणा की थी कि आर्यावर्त से सीखो। जिसे आज भी वैज्ञानिक मानते हैं और ये सतगुरु (नाम मात्र) योग निन्दा करते हैं। शब्द के सुनने मे ही सब कुछ मान बैठे, लेकिन कोई इनसे पूछे कि शब्द सुनना ब्रह्मचर्यव्रत ही को कायम रख सकता है। यही इनकी विद्या है जिसे ये अनादि बताते हैं। शिष्यो द्वारा किये गये दुष्कर्मों के फल को ये निष्फल करके उन्हे मुक्ति देने का ढोग करते हैं। क्या ईश्वर अन्यायकारी है जो ऐसा करेगा। क्या प्रभु किसी विशेष परिवार को गुरु बनाता है। अगर ऐसा ही होता तो इस मत की परम्परा इनसे पहले पाताल में कायरत थी। आर्यो सब पाखण्ड है ये। वेद-विद्या निधि है, उसे पाकर तुम सत्य असत्य का निर्णय करो तथा इन धर्म के ठेकेदारो को कुचलो, जो आधुनिक वेद-विद्या भटके आर्यो को डगते चले जा रहे है। विद्या शून्य व्यक्ति ही ऐसे मतो मे मार खा रहे हैं। वे अपने प्राचीन इतिहास को न जानकर इन द्वारा बताये गये अपने गुरु नानक, गुरु पलटू व अन्यो को गुरु परम्परा मे पिरोकर सन्त मत को आदि मत तक कह देते हैं। इस पाखण्ड में हमारी आर्य बहने व माताये बहुत मात्रा मे होती है जो चोरी छिपे जाकर इस कुकर्म की भागी बन जाती है।

इस अव्यवस्था का मुख्य कारण अविद्या का ही है। प्राचीन भारत मे सीता सावित्री जैसी आर्याओ ने अपने पतिदेव को ही वेद-विद्या रीति से प्रथम गुरु मानकर आर्यावर्त्त मे ऐसे-ऐसे कार्य किये थे जो आज इतिहास को प्रेरित कर रहे हैं। लेकिन हम सभी अपने वैदिक कमकाड को भूलकर इसी प्रकार अधकार मे पडे हैं। कभी कभी तो हम विश्व गुरु की उपाधि से अलकृत होते थे, लेकिन आज हम उन खण्डो की नकल भी नही कर रहे जिन्हे हम अगुली पकड कर चलाया करते। यह सब हो रहा है अब हमारे साथ। अगर देव दयानन्द जी इस युग मे जन्म नही लेते तो हम कहा चले जाते। पाखण्ड मे हम इतने दब जाते कि हमे उभारने वाला उभार ही नही पाता। ऐसे होते हैं गुरु जो बिना किसी भेदभाव के सारी दुनिया को एक झण्डे नीचे लाये। जहा पर मत का मामूली-सा भी बोलबाला न हो। लेकिन सन्त मत वाले तो नमस्ते (अभिवादनशील वाक्य) को हटाकर, राधा स्वामी का उच्चारण करवाते हैं। योग द्वारा मुक्ति नही होती व वेद अविद्या भी देता है जैसे उपदेश ये सन्त देते है। लेकिन ये भूल बैठे है उस परमपिता को भी जिसने वेद विद्या के द्वारा ही मानव मात्र को उस विद्या का दान दिया। मृत्यु समय मे मनुष्य दस हजार बिच्छुओ के लडने की वेदना जितना दर्द रहता है। जैसे-जैसे पाखण्ड फैलाकर इन आर्यो को बहका कर झासा दे रहे, इन सन्तों से आर्यो बचाओ। समय आ गया है नींद में सोना आर्यों का कार्य नही। पुन इस व्यवस्था को अपनाकर भूखण्ड को आर्य धर्म का खण्ड बना दो। तुम्हारे सामर्थ्य को जग जानता है। आओ पुन वैदिकधर्म पथ चलें तथा पाखण्ड का खण्डन करके नष्ट करें।

जितेन्द्रदेव मलिक ग्रा० डा० जसराणा, सोनीपत (हर०)

हरयाणा में आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज	श्रद्धानन्द नगर पलवल जि० फरीदाबाद	२८-२९-३० मार्च
,,	मुवाना जि० जींद	२८-२९-३० ,,
,,	ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२८-२९-३० ,,
,,	मनाना जि० करनाल	२८-२९-३० ,,
,,	वहु अकबरपुर जि० रोहतक	३१ मार्च से १-२ अप्रैल
,,	माडल टाउन सोनीपत	४-५-६ ,,
,,	नरवाना जि० जींद	४-५-६ ,,
,,	टोहाना जि० हिसार	४-५ ६ ,,
,,	पचकूला जि० अम्बाला	४-५-५ ,,
,,	बिलासपुर जि० अम्बाला	४-५-६ ,,
,,	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	४-५-६ ,,
,,	घरोडा जि० करनाल	११-१२-१३ ,,
,,	नारग जि० सिरमोर (हिमाचल)	१८-१९-२० ,,
,,	अर्बन इस्टेट श्रद्धानन्द पुरम गुडगाव	२५-२६-२७ ,,
,,	स्वामी दयानन्द मार्ग कबाडी बाजार अम्बाला छावनी	२१ से २७ ,,
,,	सोनीपत शहर	२१ से २७ ,,
,,	सैक्टर-१३ अर्बन इस्टेट करनाल	१६ से १८ मई
,,	लोहारु जि० भिवानी	१७-१८ ,,

हरयाणा के जिन आर्यसमाजो ने अभी तक अपने उत्सव नही रखे हैं, कृपया वे ऊपर लिखित तिथियो को दृष्टि में रखकर रखे ताकि सभा की ओर से वहा उपदेशको तथा भजन मण्डलियो का प्रबन्ध करने में सुगमता रहे।

म० भरतसिह वानप्रस्थ सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

(पृष्ठ ३ का शेष)

ध्यान रहे यदि इस प्रकार लोगो की भावनाओ व मानमर्यादा का मर्दन स्वय एक जुम्मेवार व्यक्ति करते हैं तो कल न कोई भी इन गावों मे अप्रिय घटना इस सम्बन्ध मे होती है तो इसकी जुम्मेवारी भी उपायुक्त महोदय पर होगी। सरकार ने लोगो को चुनौती दे सघर्ष के लिए मजबूर कर दिया है। ज्यादा दिन इस घुटन को बर्दाश्त नही कर सकते। आखिर कब तक।

मैं अपने नोजवान साथी कार्यकर्ताओ से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस शोषणयुक्त समाज मे गन्दगी के कीडे बन जलालत से जिन्दगी बसर करने का प्रयत्न न करे। बल्कि नफाजत और नजाकत को ठोकर मार कर सघर्ष के रास्ते पर चलकर विकासशील शोषणमुक्त समाज की स्थापना कर नये सुखमय जीवन प्रदान करने वाले नये युग का निर्माण करे।

मैं इन धरणो तथा प्रदर्शन कार्यक्रम मे मार्गदर्शन करने के लिए सभा के माननीय प्रधान प्रो० शेरसिह जी का जितना भी आभार प्रकट करू थोडा है। उन्होने दिन-रात हरयाणा के ग्रामो मे तूफानी दौरा करके शराबबन्दी आदोलन मे नई चेतना तथा जागृति उत्पन्न की है। मैं अपनी सभा के उपदेशको तथा भजन मण्डलियो का भी हार्दिक धन्यवाद करता हू, जिन्होने धरणो पर शराब के विरुद्ध प्रचार करके ग्रामीण जनता को शराब की बुराइयो से सावधान किया। मैं शराबबन्दी आदोलन मे सहयोग देने वाले सभी कार्यकर्त्ताओ का हार्दिक धन्यवाद करता हू और जिन ग्रामो में ठेको की नीलामी करदी गई है वहा पर भी धरणा देने में सहयोग की याचना करता हू।

महेन्द्र शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आओ ! हरिद्वार मे एक बार फिर

पाखण्ड खण्डनी पताका फहराएं

ससार और भारत देश की ऐसी बिगडी दशा मे महर्षि दयानन्द का जन्म भारत की इस पवित्र भूमि पर सन् १८२३ ई० मे हुआ। विश्व और भारत की विकृत दशा को देखकर उस ऋषि के हृदय मे करुणा का सचार हुआ और उसने ससार के उपकार करने अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए पुन एक कार्यक्रम बनाया। इस दिव्यदृष्टि की उपलब्धि उन्हें तप, स्वाध्याय करने के बाद वेदो द्वारा मिली। इसलिए उन्होने वेदो के आधार पर मानवधर्म और मानव-सस्कृति का प्रचार प्रारम्भ किया और इसी निमित्त श्रेष्ठ पुरुषो का एक सगठन बनाया, जो "आर्यसमाज" नाम से जगत् मे प्रसिद्ध है।

आर्यसमाज का स्वरूप

आर्यसमाज एक 'सार्वभौम आस्तिकधर्म प्रचारक सघ' है, जो सृष्टि को रचने वाली सर्वोपरि एक दिव्य चेतना शक्ति तथा जनहित के लिए उसके दिये आदिज्ञान (कल्याणी वाणी, वेद) को स्वीकार करता है। उसी वेदज्ञान को अपने काय-कलापो, कर्त्तव्यो, विधि-विधानो व दार्शनिक सिद्धातो का आधार मानता है। यह 'सत्यसनातन वदिकधर्म' को मानव के अभ्युदय (सुख) और नि श्रेयस (शाति) का साधन मानता है।

आज फिर

सारा ससार विनाश के कगार पर खडा है।

ससार को युद्ध और सर्वनाश से बचाने के इच्छुक प्रत्येक मनुष्य को हमारा निमन्त्रण है कि वह महान् उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आर्य-समाज के सन्देश को रचनात्मक रूप देने में लग जाये।

देश, काल, व्यक्ति का आर्यसमाज की दृष्टि मे कोई भेद नही, उस का लक्ष्य है—ससार का कल्याण, मानवता का प्रचार सर्वत्र शाति और चिरव्यापी आनन्द। आप भी आइये, आर्यसमाज का निमन्त्रण स्वीकार कर, ज्ञान की ज्योति जगाने मे आर्यसमाज का हाथ बटाइए।

हम आने वाली इक्कीसवी शताब्दी का स्वागत करने की तैयारी मे वह सामान जुटाने मे लगे कि भविष्य सुख से, शाति से भरपूर हो। यह इच्छा आपकी भी है और सभी की है, इसे मूर्त रूप दीजिए। आर्य-समाज के आदोलन मे सहयोग देकर एकता, प्रेम और शाति का मार्ग प्रशस्त कीजिए। यह हमारी प्रार्थना है।

महाकुम्भ के इस मेले मे

आर्यसमाज के वेदप्रचार शिविर मे तन, मन और धन से सहयोग करते हुए अपने कर्त्तव्य-धर्म का पालन कीजिए और महर्षि दयानन्द की उस अमर पाखण्ड-खण्डनी वैदिक पताका को एक बार फिर इस धरती पर फहरा दीजिए। जिससे कुम्भ मे पधारे नर-नारी धार्मिक लाभ उठा सकें और ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुकूल आचरण स्वीकार कर अपना जीवन सफल करें।

कुम्भ मेले में आयोजित आर्यसमाज के विशाल वैदिकधर्म प्रचार शिविर में

(दिनाक १ अप्रैल से १४ अप्रैल ८६ तक)

प्रभावशाली आकर्षण

१—प्रभात फेरी एव शोभा यात्राये
२—वेद-पारायण महायज्ञ
३—योग-साधना-शिविर
४—भक्ति सगीत
५—विद्वानो के वैदिक प्रवचन
६—ब्रह्मचारियो द्वारा आसन प्राणायाम एव अद्भुत बल-प्रदर्शन
७—भव्य प्रदर्शनी
८—वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र
९—ऋषिलगर एव कार्यकर्त्ताओ को जलपान भोजन
१०—आर्य वीरदल सेवा शिविर
११—आर्यकुमारो को बौद्धिक प्रतियोगिताये
१२—वेद, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा, राष्ट्ररक्षा, मद्यनिषेध, सस्कृत भाषा आदि आदि के भव्य सम्मेलनो का आयोजन। तथा
१३—विशाल वैदिक सिद्धात-प्रशिक्षण-शिविर

महर्षि दयानन्द (महापुरुषों की दृष्टि मे)

महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियो मे, सुधारको में और भव्य पुरुषो मे एक थे। इनका चरित्र मेरे लिये ईर्ष्या का विषय है। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पडा है।
—मोहनदास कर्मचन्द गाधी

मेरा सादर प्रणाम उस गुरु दयानन्द को है—जिसका उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या आलस्य और प्राचीन, ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति मे लाना था। उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उन्होने सर्वप्रथम वेदो की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का अवलम्बन किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारो को कुजी प्राप्त की है जो युगो से बन्द थे और उस से पटे हुए झरनो का मुख खोल दिया। —अरविन्द घोष

वर्तमान समय मे सस्कृत का एक ही बडा विद्वान्, साहित्य का पुतला, वेदो के महत्त्व को समझने वाला, अत्यन्त प्रबल नैयायिक और विचारक यदि भारतवर्ष मे हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था। —मैक्समूलर

हमे वेदो के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने के लिये कि मूर्ति-पूजा वेदसम्मत नही है, स्वामी दयानन्द के उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। —विन्टरनिट्ज

स्वामी दयानन्द नि सन्देह एक ऋषि थे। उनका प्रादुर्भाव लोगों को कारागार मे मुक्त करने और जाति बन्धन तोडने के लिये हुआ था।
—पाल रिचर्ड

वह इतने अच्छे और विद्वान् आदमी थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियो के लिए सम्मान के पात्र थे। —सैयद अहमद खा

आर्यसमाज (महापुरुषों की दृष्टि मे)

१—आर्यसमाज १९वी शती का महानतम धार्मिक आदोलन है।
—ब्लन्ट, १९११ की जनगणना की रिपोर्ट

२—आर्यसमाज वर्तमान हिन्दू विचारधारा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और मनोरजक अध्याय है। —सर हैनरी काटन, न्यू इण्डिया पुस्तक मे

३—आर्यसमाज के आदोलन के साथ मेरी पूर्ण सहानुभूति है।
मैक्समूलर

४—सगठित कार्य, दृढता, उत्साह और समन्वय मे आर्यसमाज की क्षमता कोई समाज नही कर सकता। —सुभाषचन्द्र बोस

५—आर्यसमाज धार्मिक शक्ति के रूप मे समाज-सुधार के लिए कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय जीवन मे यह बात अत्यन्त महत्त्व की है जिसे भविष्य मे भुलाया नही जा सकता। —रामानन्द चटर्जी

६—आर्यसमाज एक वास्तविकता है जिसमे जन-साधारण का आश्चर्यजनक उत्थान हुआ है। —यदुनाथ सरकार

७—आर्यसमाज मेरी माता है। लाजपतराय

८—जहा-जहा आर्यसमाज है वहा-वहा जीवन ज्योति है—महात्मा गाधी

९—आर्यसमाज ने लडको और लडकियो की शिक्षा, स्त्रियो की दशा के सुधार और दलितो को ऊचा उठाने की दिशा मे बडा अच्छा कार्य किया है। —जवाहरलाल नेहरू

१०—आर्यसमाज ने हिन्दू समाज को भले आदमी के रहने योग्य बनाया। —राजगोपालाचारी

११—आर्यसमाज ने सौ सालो मे शिक्षा-समाज-सेवा और अध्यात्म के क्षेत्र मे भारी कार्य करके राष्ट्र की नीव को मजबूत किया।
—इन्दिरा गाधी

आया होली का त्यौहार

कण-कण मे उल्लास जगा है, आशाओ का सूर्य उगा है।
रूप देखकर पुण्य प्रकृति का, अब प्रमाद का दनुज भगा है॥
मनुज-मनुज के उर आगन मे, छाया आज असीमित प्यार।
आया होली का त्यौहार॥

खेत बाग-बन बने सुरम्य, लगती बसुन्धरा अब रम्य।
प्रेम, दया, ममता समरसता, के मृदुभाव प्रभृति प्रकम्य॥
प्रकृति वधू की सुन्दरता पर, होते कोटिक मन बलिहार।
आया होली का त्यौहार॥

पिकी-पपीहे का मधु गुजन, करता है जन मन अनुरजन।
मृदुल बयार बना है निर्मम, तूफानो का महा प्रभजन।
नव्य उषा की सौम्य रश्मियां, बिखराती सुख-सौरभ अपार।
आया होली का त्यौहार॥

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिर खाना (उ०प्र०)

ये भी होली कोई होली है

प्यार की मिठास नही आस की सुवास नही,
दूर-दूर पास नही रोती रगरोली है।
रग का भी काम नही चग का भी काम नहीं,
ढग है कुढग आज आग बीच झोली है।
रग मे है काच और काच मे है साच नही,
आच लग जाये ऐसी ऐसी हाट खोली है।
होली मे ठिठोली नही दुल्हिनो को डोली नही,
साच-साच बोलो ये भी होली कोई होली है। १

होली का मजा है तभी पाप जो किये थे कभी,
भूल जाये आज सभी राग और द्वेष को।
याद रहे होली बस रग भरी झोली बस,
भूल जाये आज बस जोड भाग शेष को।
तन को भी भूल जाये मन को भी भूल जाये,
भूल जाये गाव, प्रात, देश, परदेश को।
सास के शिवालय मे देह के देवालय मे,
बसता जो कस उसे मार दे हमेश को। २

होली का वो रूप नही आज वो स्वरूप नही,
छाव है तो धूप नही दिल मे न प्यार है।
फूल की जगह शूल डूब गये मस्तूल,
ढूँढती फिरे है कूल घायल बहार है।
रग मे मिला है खून प्यार को दिया है भून,
चढा है जनून आज आत्मा बीमार है।
आदमी को आदमी न देख के है खुश आज,
प्रेम के तो नाम से ही चढता बुखार है। ३

साप का भरा है विष आरती को मारती जो,
ऐसी वैसी गगरी को चौराहे पै फोड दो।
शूल हैं घृणा के उगे बगिया मे आज खूब,
चुभने से पहले ही तेज नोक तोड दो।
छोड दो नशीले छन्द तोड दो घृणा के बन्द,
जिन्दगी मे सुधासार आम-सा निचोड दो।
भेद की जो खाइया हैं पाट दो सभी ही आज,
टूट जो गया है तार आज फिर जोड दो।

—प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी' अबोहर

प्रण करो तुम आजादी बचाने का

ऐ आर्यवीर मण्डली फैल जाओ गली गली प्रचार करो वेदो का,
सिसक रही है तुम्हारी आजादी, प्रण करो तुम आजादी बचाने का।
लहू से भीग रही है, चल रही है बेवक्त की तलवारे,
खीच दो आखे दुश्मनो की, तुम बोलवाला मिटा दो बेईमानी का।
हो रहे हैं दगे फसाद मर रही है इन्सानियत दयानन्द की,
बनाओ वतन को आर्य, करके प्रचार दयानन्द की शिक्षा का।
न झुकने पाये ओ३म् का झण्डा, देखकर नीचता का ताडव,
उभार दो वतन को तुम ऊचा नाम करो महर्षि दयानन्द का।

—रामकुमार धीमान गन्नौर, सोनीपत

छः दर्शनों का द्विवर्षीय प्रशिक्षण शिविर

स्वामी सत्यपति परिव्राजक के आचार्यत्व मे एक द्विवर्षीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनाक १० अप्रल, १९८६ से आर्यवन विकास, ट्रस्ट फार्म अम्बासर जिला शाबर काठा, गुजरात राज्य मे किया जा रहा है, जिस मे छ दर्शनो का पठन-पाठन एव क्रियात्मक योग मुख्य विषय रहेगे। उक्त प्रशिक्षण मे समूचे भारत से ब्रह्मचारी एव इच्छुक स्वाध्यायशील व्यक्ति दो वर्षों के लिए वहा पहुचेगे।

उक्त प्रशिक्षण मे भाग लेने के लिए हरयाणा, पजाब, दिल्ली आदि उत्तर भारत से ब्रह्मचारी एव स्वाध्यायशील आर्य सज्जन पूज्य स्वामी जी के साथ एक अप्रल, १९८६ को गुजरात प्रात के लिए प्रस्थान करेगे। जिनका विदाई समारोह ३० मार्च, १९८६ रविवार प्रात ६ बजे सी-ब्लाक आर्यसमाज जनकपुरी दिल्ली मे आयोजित किया जारहा है।

—देसराज आर्य मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक

टंकारा मे डी ए वी शताब्दी समारोह का भव्य कार्यक्रम

वर्ष १९८६ जो कि डी० ए० वी० शताब्दी का वर्ष है, इस उपलक्ष्य मे भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे इस वर्ष डी० ए० वी० शताब्दी समारोह के कार्यक्रम मनाये जा रहे हैं। इस उपलक्ष्य मे शनिवार ८ मार्च, १९८६ को टकारा मे ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर प्रो० वेदव्यास जी की अध्यक्षता मे डी० ए० वी० शताब्दी समारोह का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ऋषि जन्म स्थली टकारा मे ७-८-९ मार्च, १९८६ को जो ऋषिबोधोत्सव (ऋषि मेला) मनाया गया, उसमे भारत के भिन्न-भिन्न स्थानो से काफी ऋषि-भक्त पधारे थे। ८ मार्च को जो यह शताब्दी समारोह का कार्यक्रम मनाया गया, इसमे पण्डाल खचाखच जनता-जनार्दन से भर गया।

टकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल ने शताब्दी समारोह के अवसर पर टकारा ट्रस्ट का उल्लेख करते हुए बताया कि—आज से २७ वर्ष पूर्व भारत के पहले न्यायाधीश एव डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री मेहरचन्द जी महाजन तत्कालीन लोकसभा स्पीकर श्री अयगर को टकारा लाये थे। तब सर्वप्रथम उस वर्ष टकारा मे ऋषि मेला मनाया गया। तब से निरन्तर प्रतिवर्ष बडी धूमधाम से यह ऋषि मेला मनाया जाता रहा है।

पुलिस अधीक्षक रोहतक की टिप्पणी पर जनता में रोष

बहादुरगढ पुलिस की इस कार्यवाही पर कि वह अवैध रूप से गोवश का निकास करने वाले दोषियो से मिलकर हरयाणा के कानून की धज्जिया उडाने से रोकना एव हरयाणा सरकार और जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है।

नजफगढ क्षेत्रीय गो सरक्षण परिषद् के अध्यक्ष श्री रघुनाथसिह जी ने पुलिस अधीक्षक रोहतक के इस कथन पर अत्यन्त खेद प्रकट किया कि गोशालाओ मे गाये रखने की अपेक्षा उत्तर प्रदेश मे ले जाकर कटाना श्रेयस्कर है।

—राधेश्याम ब्रह्मचारी कार्यालय सचिव

सर्वहितकारी के पाठकों से निवेदन

कागज तथा प्रेस की छपाई मूल्य मे अत्यधिक वृद्धि होने पर सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरग के प्रस्तावानुसार १ अप्रैल, १९८६ से १५ रु० के स्थान पर २० रु० वार्षिक किया जारहा है परन्तु जो ग्राहक महानुभाव ३१ मार्च तक अपना शुल्क मनीआडर अथवा सभा उपदेशको द्वारा सर्वहितकारी के कार्यालय मे भेज देगे, उनसे १५ रु० ही शुल्क लिया जाएगा।

आशा है पाठक तथा ग्राहक महानुभाव यथापूर्व सर्वहितकारी को अपना सहयोग देते रहेगे तथा इस मूल्य वृद्धि के लिए हमे क्षमा करेंगे।

सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

ऋषि सन्देश

यज्ञ का अर्थ क्या है ? यज्ञ के साधन कौन-कौन से हैं और उनके फल कौन-कौन हैं और कृति कैसे है। इन पर विचार करते है।

यज्ञ शब्द के तीन अर्थ हैं—देव पूजा, सगतिकरण, दान।

देव पूजा, देव शब्द का मूल अर्थ द्योतक प्रकाश स्वरूप है और वेद मन्त्रो की भी देव सज्ञा है। क्योकि उनके कारण विद्या का प्रकाश होता है। यह यज्ञ कर्म काड का विषय है। यज्ञ मे अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त का समावेश होता है। देव शब्द का अर्थ परमात्मा भी है, क्योकि उसने वेद का अर्थात् ज्ञान का और सूर्यादि जडो का प्रकाश किया है।

देव अर्थात विद्वान् ऐसा भी अर्थ होता है। पूजा शब्द का अर्थ सत्कार है। अब देव की पूजा कहने से परमात्मा का सत्कार करना यह अर्थ होता है। चेतन पदार्थों का सत्कार सम्भावित है। जड पदार्थों का सत्कार नहीं सम्भव होता है। मुख्यतत्त्व से वेदमन्त्र के पठन मे ईश्वर का सत्कार होता है। इसलिए प्राचीन आर्य लोगो ने होम के स्थल में मन्त्रों की योजना की है। इसी तरह यज्ञशाला को देवायतन कहा है। इसीलिए ब्रह्मयज्ञ अर्थात् वेद-अध्ययन भी पाच महायज्ञो मे से एक है।

सगतिकरण—अर्थात् अत्यन्त प्रीतिपूर्वक देवता का ध्यान, देवता का विचार तथा सत्पुरुषो का सग करना, इसे भी यज्ञ ही कहा है। तीसरा अर्थ दान - विद्या दान को छोड दूसरे दान नही हैं। केवल विद्या का दान ही दान है। अन्न वस्त्रादिको के दान विद्या दान की सहायता करते हैं, इसलिए उन्हे भी दान कहना उचित है, विद्या दान अक्षय दान है।

यज्ञ के फल क्या हैं—यज्ञ का रूढ्यर्थ वेदो मे काष्ठ घृतादि द्रव्यो का दहन करना है तो इसमे शका उत्पन्न होती है कि व्यर्थ ही काष्ठादि तथा घृतादि द्रव्यो को अग्नि मे क्यो जलावे ? इसका समाधान यह है कि पुष्टि, वर्धन, सुगन्ध प्रसार और नैरोग्य ये चार उपयोग होम अर्थात् हवन से होते हैं।

ये चार लाभ उपदिष्ट रीति से होने पर ही होते हैं। कहा है कि "सस्कृत हवि होतव्यमिति' योग्य रीति से यथाविधि होम करना चाहिए। एक दम मनभर घी जला दिया व चमच-चमच करके मनभर घी वर्षभर जलाते रहे तो भी होम नही होगा।

अब कोई-कोई अर्वाचीन लोग ऐसी शका करेगे कि पदार्थ का दहन होने से उनका पृथक्करण होकर उनके गुण नष्ट हो जाते हैं, तब फिर हवन से नैरोग्य कैसे उत्पन्न होगा ?

इस विषय मे हमारा प्रथम उत्तर यह है कि सब द्रव्यो मे स्वाभाविक और सयोगजन्य दो प्रकार के गुण है। उनमे स्वाभाविक गुणो का नाश कभी नही होता। सयोगजन्य गुणो के वियोग से ह्रास होता है। यदि स्वाभाविक गुण पदार्थों में न माने जावें तो समुदाय मे गुण कहा से आवेंगे।

द्वितीय—सुगन्धि जलाने से दुर्गन्धि का नाश होता है।

तृतीय—जब हम अर्क निकालते हैं तब तद्गुणविशिष्ट जैसा द्रव्य होता है, वैसा ही अर्क निकलता है। अर्क अर्थात् आसव तत्त्व अतर आदि द्रव्य।

अग्नि परमाणु मे जो गुण हैं वे अग्नि के परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म होकर मेघ मण्डल तक विस्तीर्ण होते हैं और उससे वायुशुद्धि परिणाम होता है।

अब वायु शुद्ध रहने से वृष्टि का जल भी शुद्ध रहता है। वृष्टि और वायु का बडा ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है और सब देश का जल वृष्टि से उत्पन्न होता है।

जल के स्वच्छ और वायु के भी स्वच्छ रहने से वृक्षो के फल, पुष्प, रस ये बडे ही शुद्ध और पुष्टिकारक होते हैं। इसी तरह अन्नादि सब द्रव्य शुद्ध और पुष्टिकारक होते हैं। इसलिए शरीर को सुख होकर उन से बल उत्पन्न होता है। वायु और जल की दुर्गन्धि नष्ट होकर उनमे शुद्धि और पुष्टि आ जाती है। शुद्धि और पुष्टि वर्धनादि गुण बढने से सब चराचरो को सुख मिलता है। इसीलिए कहा है कि —स्वर्गकामो यजेत सुखकाम इति शेष। इससे क्या आया कि सब आर्यजनो को विधिवत् साय व प्रात अपने घर में यज्ञ करना चाहिए और इसका प्रचार करना चाहिए। अस्तु।

होम-हवन से परमेश्वर की सेवा कैसे होती है ? जरा विचार करे कि सेवा का अर्थ प्रिय आचरण है। परमेश्वर की सेवा अर्थात् उसको जो प्रिय है, वह आचरण करने से, वह न्यायकारी होने के कारण उसके द्वारा योग्य प्रत्युपकार होता है, ऐसा एक नियम है। अब स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष अथवा विद्या और नरक अर्थात् दु ख विशेष अथवा अविद्या है। विद्या स्वर्ग प्राप्ति का तथा बुद्धि-वर्धन का कारण है।

बुद्धिवर्धन को शारीरिक दृढता अवश्य चाहिए और शुद्ध वायु, शुद्ध जल और शुद्ध अन्न के बिना शरीरदृढता कैसे प्राप्त होगी। होम-हवन से वायु शुद्ध होकर सुवृष्टि होती है। उससे शरीर निरोग और बुद्धि विशद् होती है, विद्या प्राप्त होती है अर्थात् स्वर्ग प्राप्ति सुख प्राप्त होता है। कोई-कोई शका करेंगे कि यदि वायु शुद्ध्यर्थ हवन है तो उसमे वेद-मन्त्रो के पठन की क्या आवश्यकता है।

यदि दो काम एक ही समय मे हो सकते हों तो उन्हें कर लेना चाहिए, ऐसा उद्देश्य कर प्राचीन आर्य लोगो ने जब हाथो को होमादिक द्रव्यो की व्यवस्था करने मे लगाया, तब मुँह खाली न रहे। परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना मुह से होती रहे, इसलिए पहले के ऋषि लोग वेदमन्त्र बोलते थे। इसके लिये ब्राह्मण लोगो ने वेद कण्ठस्थ आज तक किया, इसीलिए वेद-विद्या भी अबलो बनी रही है।

फिर यह भी था कि वेदपाठ करने मे परमेश्वर की भक्ति होती थी, जिससे विचार-शक्ति भी उत्पन्न होती थी।

दूसरा ऐसा भी विचार है कि जो हाथो से प्रयोग होता है, उसके जो मन्त्र उस समय कहे जाते हैं, उससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता। इससे मन्त्रोच्चारण कर्म के उद्देश्य से नही होता, किन्तु परमेश्वर की स्तुति मुंह से होती रहे, यही प्रधान उद्देश्य है और कोई-कोई मन्त्र ऐसे भी हैं जिनमे होम के लाभ कहे गये हैं। साराश यह है कि वेद-मन्त्रो के कहने से वेद की रक्षा ही मुख्य प्रयोजन है। इस प्रकार कर्मकाड बिलकुल निष्फल नही है। अस्तु।

सदेशवाहक देसराज खीरबाट २६० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

चौदह गोलियों वाला पिस्तौल

नास्तिक—ईश्वर नही है।

आस्तिक—है।

नास्तिक—मैं आपके ईश्वर को नही मानता।

आस्तिक—मानोगे, जरूर मानोगे

नास्तिक—यह सारा ससार ढोल के अन्दर पोल है, ईश्वर के उपासक आप सब ढोंगी हैं।

आस्तिक—बिलकुल नही, आप किसी ढोंगी के चक्कर मे फस गये होगे।

नास्तिक—यह पत्नी है, यह पिता है, यह बेटा है, आदि सब झूठ ही झूठ है।

आस्तिक—बिलकुल नही। लगता है, आप मूर्खों की सगति मे रहे हो।

नास्तिक —यह मुस्लिम, वह ईसाई, कोई जैन तो कोई बौद्ध सब अपना पथ बनाके, दुनिया को टीका लगा के, शानदार मन्दिर बना के, नोट जमा करके बहुत ही ऐश कर रहे हैं।

आस्तिक— हे पुत्र, आपकी शकाओ का समाधान, आपके विचारों का स्वागत, आपके मन्द बुद्धि के ताले की चाबी, हजारो हजारो किताबों का सग्रह "सत्यार्थप्रकाश" जिसे स्वामी दयानन्द महाराज ने १६ बार विष खाकर भी मानवजाति के उपकार के लिये लिखा है।

सत्यार्थप्रकाश मराठी में, हिन्दी मे, अग्रेजी मे, सिंधी मे और कई भाषाओं में मिलेगा।

मनका अन्धेरा दूर करने, पाखड को जड से काटने, बुद्धि का विकास करने के लिए, इस ग्रथ के पढने के बाद, बेटे तुम नास्तिक नही, पक्के सच्चे आस्तिक बन जाओगे।

नेणाराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज मोहन चौक, सिधुनगर-

(पृष्ठ २ का शेष)

अमृतत्व को प्राप्त आदर्श पुरुषो का आदर्श सामने रखो, जिससे तुम अपने लक्ष्य से कभी न गिर सको।

मोक्ष-सुख भोगने के पश्चात् जो लौटते है वे ही आप्त पुरुष हैं। इन्ही को आदर्श बनाने के लिये सकेत है। क्योकि जीवन को उच्चतम बनाने के लिये एक आदर्श की आवश्यकता होती हैं। अग्रेजी के प्रसिद्ध कवि 'लोगफेलो' की यह कविता भी इसी भाव को व्यक्त कर रही है—

Lives of great men all remind us we can make our lives sub lime

१५. उत्क्रामतः पुरुष मावपत्था मृत्योः पड्वीशमवमु चमान ।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्ने सूर्यस्य सन्दृश ॥

अथर्व० ८।१।४

अर्थ—हे पुरुप नागरिक (Cuhans) इस स्थान अर्थात् वर्तमान अवस्था से आगे बढ, पीछे-नीचे मत गिर। एक बार मृत्यु की पकड को भी पछाड दे। सूर्य और अग्नि के दशन कराने वाले इस लोक से मेरा सम्बन्ध न छूटे।

(द्रष्टव्य 'राष्ट्रक्षा के वैदिक साधन' ले० स्वा० वेदानन्द तीर्थ)

व्याख्या—कितनी प्रबल प्रेरणा, उद्बोधन इस मन्त्र के द्वारा परम पिता परमात्मा हमें दे रहा है। प्रतिगति का कितना प्रतिरोध है। मौत से सघर्ष करने की ललकार है, चुनौती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इस ससार को हीन समझ कर इसे त्यागने को नही कहा है।

जो लोग कहा करते हैं कि वेद इस लोक की बात नही बताता, प्रत्युत इस लोक को उपेक्षा की शिक्षा देता है वे इस मन्त्र का मनन करें, चिन्तन करें, उनका भ्रम दूर हो जायेगा। वेद वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नही रहने की शिक्षा न देकर आगे बढ़ने का निर्देश दे रहा है। Change for the sake of batter अच्छाई के लिये परिवर्तन का आदेश वेदमाता दे रही है। इस मन्त्र को विशेष मनन करने की आवश्यकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207 73 रजि० न० P kTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि सवत् १,९६०८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क २० १४ अप्रैल १९८६ वार्षिक शुल्क २०) विदेश मे ३ पौंड एक प्रति ५० पैसे

प्रभु स्तवन

त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्नमीमहे । ऋग्वेद ८।९८।११ ।

प्रस्तुत मन्त्र मे केवल दो वाक्य हैं। इस मन्त्र मे भक्त अत्यन्त स्नेह पूर्ण शब्दो मे भगवान की स्तुति कर रहे हैं। शब्दो से प्रतीत होता है कि स्तुतिकर्त्ता भक्त भगवान का सानिध्य प्राप्त कर चुके हैं। भक्तो ने पूण तथा स्वय को परमात्मा के अर्पित, प्रर्अपित कर दिया है। स्वय को प्रभु की शरण मे आश्रय में उपस्थित कर दिया है, वह प्रभु आश्रित हो गये हैं, नाम से नहीं, आचरण से, व्यावहारिक रूप से सम्पूण रूपेण, सर्वात्मना, सौभाग्यशाली हैं वह भक्त जिन्हे जीवन मे ही यह स्थिति प्राप्त हो जाये। जीवन में इससे बडा सौभाग्य का अवसर और हो भी क्या सकता है? जीवन की, मानव जीवन की अन्तिम साध यही तो है। यही लक्ष्य तो है मानव जीवन का कि वह प्रभु से सानिध्य प्राप्त करे और सानिध्य यदि जीवन में ही प्राप्त हो जाये तो फिर और शेष रहा भी क्या? फिर आगे कोई बाधा, कोई रुकावट रह ही नही जाता मोक्ष प्राप्ति मे। जब सानिध्य निकटता हो गई भक्त और भगवान मे। फिर मोक्ष में बाधा का प्रश्न ही क्या?

बाधायें तो हैं सासारिक वस्तुओ में लगाव की मोह की तथा मद की, अह की यों तो अनेक बाधायें हैं, परन्तु उन बाधाओ में सबसे भयकर हैं यही दोनो बाधाय। भयकर इसलिए कि अन्य बाधाओ की अपेक्षा इनका दूर होना कठिन हाता है, अत्यन्त कठिन दुस्साध्य और अत्यन्त दुस्साध्य। इन बाधाओ को दूर करने के लिए कठिन साधना और महान् तप की आवश्यकता है। ऐसे तक की जहा साधक के सामने केवल साध्य ही रह जाये और सब कुछ समाप्त हो जाये। ससार में सिद्धों की कमी नही है। बडे-बडे सिद्ध हैं, एक से एक बढकर। ऐसे कि जिनके बडे ठाट-बाट, बडी शान-शौकत, बड-बडे नाम। नाम ही क्यो? उपनाम भी साथ मे नाम से भी कहीं अधिक सारगर्भित, बडी-बडी विशेषताओ को प्रदर्शित करने वाले अलौकिक विशेषण। परिव्राजक है, पर गद्दीधारी, बडी भारी सम्पत्ति, कोठी, बाग, बगीची सब कुछ और जमे बठे हैं माया के साप बने। आनन्द हैं, पर जीवन नीरस, इतना नीरस कि इसकी प्राप्ति का प्रयत्न करना तो एक ओर, कभी रस शब्द के अर्थ जानने का भी प्रयत्न नहीं किया प्रतीत होता।

हम ऐसे सिद्धों की चर्चा नही कर रहे थे, यह तो ठहरे नामधारी सिद्ध। चर्चा तो हम कर रहे थे वदिकभक्तो की। आजकल वैदिक सिद्ध भी बहुत हैं परन्तु उनमें भी तो बहुत से नामधारी हैं। वास्तव मे वैदिक होना तो लोहे के चने चबाना है। टेढी खीर है, एकदम टेढी, इतनी टेढी कि जो मुह से आगे जाये भी तो। प्राय तो जाती ही नही, यदि चली जाये तो गले मे अटक जाती है, फिर भी कुछ तो वैदिक होते ही हैं। हा तो हम ऐसे ही वैदिकभक्तों के विषय मे चर्चा कर रहे थे। वैदिकभक्त की स्थिति कुछ अन्य ही प्रकार की होती है, उसके पास मोह और मद को कोई स्थान नहीं रहता। जब तक साधक के पास मोह और मद को स्थान है, तब तक वह प्रभु से दूर है अत्यन्त दूर। किवदन्ति है कि एक बार हजरत मोहम्मद खुदा से मिलने गये तो भट के समय दोनो के मध्य मे सत्तर कोश की दूरी थी और दो पर्दे पड थे। पाठक विचार कर कि यह दोनो पर्दे मोह और मद के तो नही थे? हमे तो ऐसा ही प्रतीत होता है। प्रिय पाठकगण! जब तक हम में मोह और मद है, तब तक हम भी मोहम्मद हैं, (मोह+मद) है न ठीक। मोह और मद के इन दोनो पर्दों के मध्य मे सत्तर कोश की दूरी है, दूरी तो है ही। पहले मोह का पर्दा दूर हो तत्पश्चात लम्बी यात्रा अर्थात दीघकालीन साधना की जाये, तब कही जाकर मद दूर होता है। कई अत्यन्त निर्मोही जीवन मे मिलते हैं परन्तु मद उनमे भी होता है जो अत्यन्त भयकर है। मोह और मद दोनो ही हो तब तो कहना ही क्या?

वैदिकभक्त के पास मोह और मद का क्या काम? मोह और मद रहते वैदिकभक्ति कहा? वैदिकभक्त, वैदिक साधक मोहम्मद नही, वह तो मदनमोहन होता है (मद+न+मोह+न) जिसके जीवन में न मद का कोई स्थान होता है और न मोह का। हम किसी बात को यो ही नही कहते, धुयें के बादल बनाना हमे पसन्द नही। इतिहास साक्षी है कि भगवान् कृष्ण जिनका एक नाम मदनमोहन प्रसिद्ध है। मद और मोह से नितान्त दूर थे। मद होता तो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में ब्राह्मणों के पैर धुलाने का कार्य न सम्भालते। 'चरणक्षालने कृष्णो ब्राह्मणाना ह्यभूत" (महाभारत)। कृष्ण ने मद को भी मिटा डाला था, उनमें अह नाम को भी नही था। मोह की भी कोई मात्रा कृष्ण मे होती तो वह खण्ड खण्ड भारत को महाभारत बनाने के उपरान्त इस विशाल साम्राज्य को, जिसमे वतमान भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, ब्रह्मा, नेपाल, भूटान तिब्बत, चीन और सिक्याग आदि देश भी सम्मिलित थे इसे छोडकर अध्यात्म साधना के लिए न चले जाते, अपितु पाडवो को अपनी प्रखर बुद्धि और नीतिमत्ता से धता बता देते और स्वय चक्रवर्ती सम्राट् बनकर शासन करते और राजसी सुखोपभोग भोगते किन्तु यदि ऐसा करते तो मदनमोहन नही कहलाते। विद्वान् लेखको ने उन्हे जो मदनमोहन नाम दिया है वह यथाथ ही है। वैदिकभक्त का जीवन ऐसा ही होता है। आचाय सदीपन की कुटिया में बैठकर वर्षों वेदों का जो अध्ययन किया था वह उनके जीवन में आदश रूप में प्रगट हुआ।

वैदिकभक्त को न किसी से मोह है और न मद है, वह तो केवल मात्र प्रभु को ही अपना बना चुका है तथा सासारिक मोह के साथ साथ अह को भी उसने दूर फक दिया है अत एव वह प्रभु से कह रहा है 'त्व हि न पितावसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ।' (वसो) 'वस निवासे आच्छादने च" हे सर्वत्र व्यापक, सबको वास देने वाले और सबके आश्रयदाता, सरक्षक तथा (शतक्रतो) सैकडो अर्थात बडी सख्या में,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्योपदेशक, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२

२-३ दिसम्बर, १९८४ को भोपाल के यूनियन कार्बाइड कारखाने मे घटी उस कुख्यात गैस दुर्घटना से कौन परिचित नही होगा ? सन् १९८४ जाते-जाते जो विष घोल गया था, उसके परिणाम अभी तक भोपालवासी भुगत रहे है । हजारो जाने गई वह अलग से । ६ दिसम्बर, १९८४ को दूरदर्शन समाचारो मे इस तथ्य को स्वीकारा गया कि एक लाख से भी अधिक व्यक्तियो ने आखो और फेफडो मे तकलीफ बताई है । इस विषैली गैस के प्रभाव से भोपाल मे एक नये प्रकार के कीडे देखे गये जो काटने पर बहुत दर्द करते है और दबाने से मरते भी नही आखो, फेफडो एव अन्य तात्कालिक बीमारियो के अतिरिक्त इसके दूरगामी दुष्प्रभाव भी पडे, जिनकी आशका हमने अपने कई लेखो मे समय-समय पर व्यक्त की थी । वियतनाम युद्ध मे प्रयुक्त विषैली गैसो के दुष्परिणामो की उपलब्ध जानकारी के आधार पर हमने यह आशका व्यक्त की थी कि इस गैस के दुष्प्रभाव से गर्भस्थ शिशुओ तथा भावी गर्भधारण करने वाली महिलाओ के गर्भस्थ शिशुओ पर विकृति की अत्यधिक सम्भावनाये हैं । हमारी इस आशका की पुष्टि मे समय-समय पर विभिन्न समाचार प्राप्त होते रहे हैं । नवभारत टाइम्स के ८ जनवरी, १९८५ के अक मे इस तथ्य को स्पष्ट शब्दो मे स्वीकारा गया था और बताया गया था कि भोपाल मे गर्भस्थ शिशुओ के सिर बढ गये हैं । खून मे जहरीले तत्त्वो की बहुतायत हो गई है । भोपाल के विभिन्न अस्पतालो में ४ दिसम्बर, १९८५ को गर्भपात के मामले काफी संख्या में आये । लखनऊ स्थित औद्योगिक एव विष अनुसधान केन्द्र की डा० एस० बी० चन्द्रा ने आशका व्यक्त की थी कि जिन गर्भवती महिलाओं पर मिक का असर हुआ है, उनके बच्चो मे अनेक तरह की खराबिया आ सकती हैं । डा० चन्द्रा ने कहा था कि विष अनुसधान केन्द्र के विज्ञानियो ने मिक के हर सम्भव प्रभाव को जाचने के लिए एक साल तक परीक्षण करते रहने की योजना बनाई है । इसमे कई कोणो से अध्ययन किया जायेगा । गर्भवती महिलाओ पर मिक का दूरगामी असर होने की सम्भावना का ठीक से पता लगाया जायेगा । तान्त्रिक तन्त्र पर मिक के विषैले प्रभाव का बारीक अध्ययन किया जायेगा । त्वचा पर शरीर की कोशिकाओ पर इस गैस के दूरगामी प्रभाव का अध्ययन होगा । अभी तक के अध्ययन के आधार पर त्वचा, श्वास तन्त्र मे गडबडी जैसे दमा, फेफडो की कार्यक्षमता में कमी, आखें खराब होना और गर्भस्थ शिशुओ पर खराब असर पडने के आसार है । इसके अलावा गैस से प्रभावित लोगो के जिगर व गुर्दे को भी नुकसान पहुचा है । (देखें—नवभारत टाइम्स, ९-१-८५) इसी समाचार-पत्र के २ मार्च, ८५ के अक मे श्री भारत डोगरा का लेख "जहर मे जूझ रहे लोगो का शहर" शीर्षक से छपा है । उसमे वे लिखते हैं कि गैस के कारण हजारो लोगो को फेफडो की दीर्घकालीन बीमारिया हो गई हैं । अन्य कई समस्याओ का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि "ऐसी ही एक विशेष समस्या गर्भवती महिलाओ व उनकी होने वाली सतान पर गैस के सम्भावित दुष्परिणाम की है । गर्भ गिरना, मृत बच्चे का जन्म होना, बच्चे मे विकृति होना आदि की शिकायते मिली है । यह स्थिति तो उन महिलाओ की है जो गैस दुर्घटना के समय गर्भधारण की अन्तिम स्थिति मे थी । गैस द्वारा उन महिलाओ को और भी हानि होने की सम्भावना है जो उस समय गर्भधारण की आरम्भिक अवस्था मे थी । एक तो उन पर व भ्रूण पर गैस का बुरा असर हुआ है तथा दूसरी इनमे से अधिकतर महिलायें सास आदि के कारण विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओ के कारण अनेक दवाइया खाने पर मजबूर हुईं । इन दवाइयों का भी भ्रूण पर गलत असर पड सकता है । ऐसी स्थिति मे विकृत बच्चे पैदा होने का खतरा बढ गया है । कुछ महिलाये तो बाध्य होकर गर्भ गिराने की सुविधायें खोजने लगी हैं ।" एक अन्य समाचार के अनुसार भोपाल मे गत दिसम्बर, ८४ मे हुई गैस दुर्घटना से यूनियन कार्बाइड के आस-पास रहने वाले १४ वर्ष से अधिक आयु के हर सौ जीवित लोगों में २८ के फेफडे खराब हो चुके हैं । (देखें नवभारत टाइम्स ४-५-८५)

उपरोक्त सभी दुष्परिणामो से बचने के लिए हमने अपने कई लेखों में इस बात पर बल दिया था कि भोपाल में विष के प्रभाव को दूर करने के लिए बडे-बडे यज्ञ होने चाहिये । क्योकि घृत विशेषतया गोघृत में विषनाशन की अद्भुत शक्ति है और फिर जब ३ दिसम्बर की रात्रि को भी भोपाल के दो आर्य परिवार हवन-यज्ञ करने से उस विषैले प्रभाव से बच गये तो फिर हवन-यज्ञ को अपनाना सर्वथा युक्तिसंगत और अनिवार्य है । (देखें हिन्दू ७ अप्रैल, ८५ तथा वैदिक क्रांति जून, ८५) आर्यसमाज के प्रयत्नो से वहाँ हवन-यज्ञ होते भी रहे हैं किन्तु कोई बडे पैमाने पर यज्ञ होने की बात सुनने मे नही आई । हर्ष का विषय है कि हवन-यज्ञ की वैज्ञानिकता एव महत्ता को समझते हुए सनातन धर्मावलम्बियो ने भोपाल मे एक बृहद् यज्ञ का आयोजन प्रारम्भ किया है । ५ जनवरी, ८५ के नवभारत टाइम्स मे एतद् विषयक समाचार पढ़कर बडी प्रसन्नता हुई कि भोपाल स्थित टी० टी० नगर (तातिया तोपे नगर) में एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया जारहा है, जिसमे २४ लाख १० हजार ४ सौ ४१ आहुतिया दी जायेगी और जिसमे २५ कुन्तल घृत एव अन्य सामग्री तथा व्यवस्था, भोजन दक्षिणा आदि मे छ लाख रुपये के व्यय की सम्भावना है । जो कार्य आर्यसमाज को आगे आकर करना चाहिए था, वह तथाकथित सनातनधर्म वाले कर रहे हैं । अत साधुवाद के पात्र हैं । बेशक थोडी पौराणिकता तो उसमे होगी ही, किन्तु यज्ञ के जो भौतिक लाभ हैं एव उससे पर्यावरण की जो शुद्धि होगी वह अपना महत्त्व रखती है । हमें इस बात का तो सन्तोष है कि जिस बात को सनातनधर्मी मानते नहीं थे, भोपाल की इस गैस दुर्घटना ने उन्हें उसी को मानने के लिए मजबूर कर दिया है । यह ऋषि का जादू नहीं तो फिर और क्या है ? सत्य है—

ऋषिराज ! तेज तेरा चहु ओर छा रहा है ।
तेरे बताये पथ पर ससार आ रहा है ।।

ओ३म्

नववर्ष शुभ कामना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्र तन्न आ सुव । यजु० ३०-३

अर्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखो के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण दुर्व्यसनो और दु खो को दूर कर दीजिए । जो कल्याणकारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कराइये ।

परमात्मा की अपार कृपा से सर्वहितकारी के पाठको के लिए नववर्ष २०४३ मगलकारी हो ।

विक्रम सवत् २०४३, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, बृहस्पतिवार

तदनुसार १० अप्रैल, १९८६ से आरम्भ

सृष्टि सवत् १,९६,०८,५३,०८६ .

दयानन्द सवत् १६२

—सम्पादक

गौ प्रेमियों को आवश्यक सूचना

हरयाणा में गोकशी कानूनन बन्द है, तथापि चोरी छिपे गोहत्यारे गौओ को रेल या अन्य साधनों से हरयाणा से बाहर ले जाने का प्रयत्न करते हैं । गो-रक्षक कार्यकर्त्ता उन्हे छुडा तो लेते हैं परन्तु उनके रखने तथा चारा आदि की व्यवस्था करने में कठिनता होती है । अत आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक मे इस समस्या पर विचार करने के बाद निश्चय किया गया कि गोहत्यारो से पकडी गई गायों को गोशाला जुलाना, जींद, सिसाना, सोनीपत, समालखा तथा पानीपत आदि में भेजा जाये । यहा की गोशाला के प्रबन्धकों ने छुडाई गई गायों को रखने की सुविधा देने की व्यवस्था की है । —सभा मन्त्री

वेंकट रमैया आयोग का गठन हरयाणा के हितों के विरुद्ध : प्रो० शेरसिंह

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

८ अप्रैल को हरयाणा सीमा क्षेत्र की एक आवश्यक बैठक हरयाणा भवन नई दिल्ली मे सम्पन्न हुई। इस बैठक मे हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने उपस्थित सदस्यो को बताया कि भारत सरकार द्वारा जो नया वेंकट रमैया आयोग गठित किया है और आयोग के अधिकार क्षेत्र से अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र निकाल दिये गये हैं। और नये आयोग को भी उन्ही शर्तो से बाध दिया गया है जिनसे मैथ्यू आयोग बन्धा था। अत हरयाणा को इस आयोग से कोई न्याय मिलने की सम्भावना नही है।

आपने कहा कि मैथ्यू आयोग ने अपनी रिपोर्ट मे स्पष्ट रूप से लिखा है कि भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की इच्छा के अनुसार अबोहर फाजिल्का के हिन्दी-भाषी क्षेत्र हरयाणा को देने के लिए नये आयोग का गठन किया जाये।

प्रो० शेरसिंह ने इस आयोग के गठन को हरयाणा की जनता से मजाक बताते हुए कहा कि पजाब समझौते की धारा ७ ४ के तहत जिस आयोग के गठन का प्रस्ताव है इसी के अनुरूप वेंकट रमैया आयोग का कार्य क्षेत्र होगा। अत एव ऐसे आयोग का गठन पजाब समझौते के अनुच्छेद ७ ४ के तहत नही आता। उन्होने कहा कि पजाब समझौते की भावना तो यह है कि हरयाणा को चण्डीगढ के बदले सीमा पुनर्निर्धारण के तहत आने वाले इलाको को छोडकर इलाके सौपे जाये।

प्रो० शेरसिंह ने सुझाव रखा कि इन बातो को ध्यान मे रखते हुए समिति को वेंकट रमैया आयोग का बहिष्कार करना चाहिए। उन्होने भारत सरकार पर भी आरोप लगाया कि मैथ्यू आयोग की पूरी रिपोर्ट अभी तक गुप्त रखी गई है। बैठक मे उपस्थित सभी सदस्यो ने प्रो० शेरसिंह के सुझाव के साथ सहमति प्रकट करते हुए रोष प्रकट किया। प्रो० साहब ने मुख्य मन्त्री चौ० भजनलाल को परामर्श दिया कि हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए सभी दलो की सयुक्त बैठक के प्रस्तावानुसार हरयाणा के सासदो तथा विधायको को त्याग-पत्र दे देना चाहिए, अन्यथा हरयाणा की जनता तथा भावी पीढी हरयाणा के वर्तमान नेताओ को क्षमा नही करेगी। जानकारी के अनुसार विधायको और मन्त्रियो ने चौ० भजनलाल को चेतावनी दी है कि यदि अबोहर फाजिल्का हरयाणा को नही मिलता है तो वे अपने पदो से त्याग-पत्र देने को तैयार है। बैठक के बाद प्रो० शेरसिंह ने समिति की ओर से सवाददाताओ को भी बैठक की कार्यवाही की जानकारी दी।

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के वार्षिक चुनाव की सूचना

करनाल न्यायालय के आदेशानुसार आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के वार्षिक चुनाव करने के लिए महाशय भरतसिंह जी तथा डा० रणजीतसिंह जी को आर्य सभासद सूची तैयार करने का अधिकार दिया था। सूची तैयार होने पर आर्यसमाज के नियमानुसार सूची को आर्यसमाज मन्दिर के नोटिस बोर्ड पर चिपका दिया गया है और आय सभासदो को २७ अप्रैल, १९८६ रविवार को प्रात ११ बजे होने वाले वार्षिक चुनाव मे भाग लेने के लिए विधिवत् एजेण्डा भेज दिया गया है। अत सम्बधित आर्य सभासद् यथासमय आर्यसमाज मन्दिर होली मोहल्ला करनाल पहुचकर वार्षिक चुनाव मे अपने मताधिकार का प्रयोग करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

'वेंकट रमैया आयोग का निर्णय स्वीकार न होगा'

रोहतक, ७ अप्रैल (निस)। अबोहर फाजिल्का हरयाणा सम्मिलन समिति ने चण्डीगढ के बदले हरयाणा को दिये जाने वाले हिन्दी-भाषी क्षेत्रो मे अबोहर फाजिल्का को बाहर रखने पर कडी आपत्ति करते हुए चेतावनी दी है कि यह कार्यवाही करके केन्द्र ने इस क्षेत्र के हिन्दी भाषी लोगो को गहरे सकट मे धकेल दिया है।

समिति के अध्यक्ष एव भूतपूर्व विधायक मास्टर तेगराम ने प्रधान मन्त्री तथा हरयाणा के मुख्य मन्त्री को पत्र भेजकर कहा है कि अबोहर फाजिल्का क्षेत्र के सैकडो हिन्दी भाषी गावो के लोगो पर पहले ही अकालियो के अत्याचार हो रहे थे और अब वेंकट रमैया आयोग के कार्य क्षेत्र से इन क्षेत्रो को बाहर रखने के पश्चात् तो यहा के लोगो की नींद हराम हो गई है।

मास्टर तेगराम ने हरयाणा के सभी सासदो व विधायको को लिखे एक अलग पत्र मे अपील की है कि वह अपने राजनीतिक मतभेद भुलाकर इन क्षेत्रो को हरयाणा मे शामिल कराने के लिए केन्द्रीय सरकार पर सयुक्त दबाव डाल।

विधायको के नाम अपील मे उन्होने कहा कि मैथ्यू आयोग द्वारा इन क्षेत्रो के गावों मे कराये गये भाषाई सर्वेक्षण के पश्चात तो स्थिति काफी तनावपूर्ण हो गई है।

पता चला है कि अबोहर फाजिल्का के नागरिको का एक शिष्टमण्डल जल्दी ही प्रधानमन्त्री व मुख्यमन्त्री से भेंट करके इन हिन्दी भाषी क्षेत्रो को हरयाणा मे शामिल कराने की माँग करेगा।

इधर हरयाणा सघर्ष समिति के अध्यक्ष चौ० देवीलाल ने अबोहर फाजिल्का क्षेत्रो को वेंकट रमैया आयोग के कार्य क्षेत्र से बाहर रखने की निदा करते हुए आरोप लगाया कि प्रधानमन्त्री ने अपनी जान की रक्षा के लिए अकालियो के सामने घुटने टेक दिये है।

उन्होने आज प्रात यहा कहा कि राज्य की जनता वेंकट रमैया आयोग के निर्णय को स्वीकार नही करेगी।

(दैनिक ट्रिब्यून)

हरयाणा के हितों की रक्षार्थ नेता खुलकर मैदान मे आवे

महाशय भरतसिंह सयोजक हरयाणा रक्षावाहिनी

हरयाणा रक्षावाहिनी के सयोजक महाशय भरतसिंह ने अपने एक प्रेस वक्तव्य मे कहा है कि अब समय आगया है कि हरयाणा के सभी राजनैतिक नेता आपसी मतभेद भुलाकर हरयाणा के हितो की रक्षार्थ खुलकर मैदान मे आवे।

आपने हरयाणा काग्रेस (इ) के प्रधान श्री वीरेन्द्रसिंह की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होने वेंकट रमैया आयोग के गठन का स्वागत करके हरयाणा की जनता के साथ विश्वासघात किया है। मुझे आशा थी श्री वीरेन्द्रसिंह नवयुवक नेता होने के कारण हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए मैदान मे डट जायेगे, परन्तु उन्होने अपनी कुर्सी बचाने के लिए प्रधानमन्त्री की चापलूसी करना आरम्भ कर दिया है। आपने कहा कि यदि राजीव गाधी के हाथो मे हरयाणा के हित सुरक्षित है तो वे उग्रवादियो तथा अकालियो के दबाव मे आकर उनकी अनुचित मागे क्यो मान रहे है। इस अवस्था मे तो हरयाणा को चण्डीगढ के बदले न तो अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र मिलेंगे और न ही सतलुज यमुना लिक नहर में पानी बहेगा। इस प्रकार हरयाणा को पजाब समझौते मे अत्यधिक हानि होगी। अत हमे दलगत राजनीति से दूर रहकर सयुक्त रूप से हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए बडे से बडे बलिदान के लिए तैयार होना पडेगा।

आर्यसमाज बहु-अकबरपुर जि० रोहतक का सफल वार्षिक उत्सव

श्री सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक हरयाणा सभा

हरयाणा के विश्वविख्यात जिला रोहतक का नाम आर्यसमाज के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस जिले मे अनेको आर्यसमाजो के नेता उत्पन्न हुए। जिन्होने जन्म लेकर अनेको समाज-सुधार के कार्य किये। इनमे विशेषकर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ मे उल्लेखनीय हैं—श्री प० बस्तीराम जी, प० जगदेवसिह जी सिद्धाती, भक्त फूलसिह जी, चौ० पीरसिह जी तथा अन्य अनेको आर्यसमाज के उपदेशक तथा भजनोपदेशक भी सम्मिलित हैं, इन्होने समाज-सुधार, शिक्षा प्रचार का प्रदेश में विशेष कार्य किया है। इसके साथ ही आर्यसमाज ने जितने भी आदोलन इस शताब्दी मे प्रारम्भ किये हैं उन सब मे जिले ने बढ-चढकर भाग लिया है। वह आदोलन चाहे राजनीतिक हो, चाहे समाज-सुधार का आदोलन हो, चाहे किसान आदोलन हो, उन सब मे ही इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस रोहतक के निकट बसा एक ग्राम है जिसे 'बहु अकबरपुर' कहा जाता है। यह ग्राम वैसे तो 'अठगामे' मे पडता है किन्तु 'महम की चौबीसी" का भी यह एक महत्त्वपूर्ण ग्राम माना जाता है। इसमे बन्हारा क्षत्रिय जाट बसते हैं। जिनका पैतृक व्यवसाय खेती-बाडी का रहना है। इसके साथ ही जब भी कभी हरयाणा प्रदेश को उन्नत करने के लिए कोई कार्यवाही करनी पडती है तो यहा के निवासी सदैव अगली पक्ति मे खडे पाते है।

१९३९ मे हैदराबाद मे आर्य सत्याग्रह हुआ, उसमें भी यहा के निवासियो ने बढ-चढकर भाग लिया। अनेको सत्याग्रही निजाम की जेलो मे गये।

इसके पश्चात् १९५७ मे आर्यसमाज द्वारा पजाब मे हिन्दी सत्याग्रह किया किया। उसमे भी इस ग्राम ने बढ-चढकर भाग लिया, भाग ही नही लिया, बल्कि कैरो सरकार के अनेको अत्याचारो को भी सहन किया। रोहतक मे इस सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे थे—श्री पण्डित जगदेव जी सिद्धाती, आचार्य भगवान्देव जी तथा प्रो० शेरसिंह जी। वैसे तो इस सत्याग्रह मे आर्यसमाज की जितनी सस्थायें थी वे सभी मिलकर बढ-चढकर भाग ले रही थी।

सत्याग्रह जोर-शोर से प्रारम्भ हुआ

एक ही दिन मे रोहतक में ५० हजार लोगो ने सत्याग्रह किया। रोहतक के नजदीक होने तथा आर्यसमाज के प्रति गहरी निष्ठा होने के कारण 'बहु अकबरपुर' के लोगो ने बहुत ही जोश के साथ हजारो की सख्या मे सत्याग्रह मे भाग लिया।

कैरो सरकार की पुलिस हिन्दी सत्याग्रहियो पर बडे अत्याचार ढारही थी, सत्याग्रहियो को पकड-पकड कर रात्रि के समय भूखे सत्याग्रहियो को मोटर मे बैठाकर बहुत दूर जगलो मे छोड आती थी।

ऐसी ही सत्याग्रहियो मे भरी हुई गाडी को ग्रामवासियो ने रोक कर उनके भोजन छादन का इन्तजाम किया। इससे पुलिस का गुस्सा और बढ गया। अगले दिन १५ अगस्त को पुलिस कई गाडियो मे भरकर आई और ग्राम का घेरा डालकर लोगो को पीटने लगी। ग्राम पुलिस की छावनी नजर आता था। दिनभर लोगो को खूब मारा-पीटा गया। साथ में उस समय पुलिस का डी० आई० जी० रामसिह भी साथ था। पुलिस ने यहा तक जुल्म किया कि पालने मे सोते हुए छोटे-छोटे बच्चो को भी पालने से उठाकर अपने जूतो की ठोकरो मे मारा। इधर दिल्ली मे स्वतन्त्रता समारोह मनाया जारहा था, उधर ग्रामीणो पर भारी अत्याचार हो रहे थे। इस अत्याचार का प्रतिकार किया, ग्राम के लोगो ने फिर भारी सत्याग्रह किया। इस कैरोशाही का मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज 'बहु के' कर्मठ कार्यकर्त्ता बाबू रघवीरसिह, सरपच प्रीतमसिह आदि-आदि नवयुवक मैदान में आये, जिन्होने अन्त तक सत्याग्रह में बाहर भीतर रहकर कैरो सरकार का मुकाबला किया। अन्त मे सरकार की पराजय हुई और आर्यसमाज की विजय हुई। आजकल भी हरयाणा के हितो की रक्षा करने के लिए यह ग्राम मुख्य भूमिका निभा रहा है।

लोगो मे पुन जागृति लाने तथा प्राचीन इतिहास को लोगो के सामने प्रचारित करने के लिए तथा हिन्दी सत्याग्रहियो को प्रमाणपत्रादि देकर उन्हे सम्मानित करने के लिए दिनाक ३० मार्च मे २ अप्रैल, ८६ तक आर्यसमाज का उत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस उत्सव के आयोजन का सारा श्रेय बाबू रघुवीरसिंह को है, जिन्होने दस वर्ष बाद भूली हुई स्मृति को पुन ताजा करने के लिए इस का सुन्दर समायोजन किया।

इसमे विशेष बात यह रही कि श्री रघुवीरसिह जी ने हरयाणा प्रतिनिधि सभा के सभी उपदेशको व भजनोपदेशको को सादर आमन्त्रित किया। इसके साथ ही उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वीरेन्द्र वीर जी तथा म० खेमचन्द भी पधारे। स्वामी रुद्रवेश भी अत्यन्त उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। सब भजनोपदेशको के पधारने से उत्सव आर्य सगीत सम्मेलन का रूप धारण कर गया। आपस मे सगीत की होड लग गई। प्रतियोगिता का रूप धारण कर गई। एक से एक बढकर गाने की कला प्रदर्शित कर रहा था। भजनो के माध्यम से अनेक समस्याओ का समाधान होता जारहा था। इस उत्सव मे आचार्य ओमानन्द सरस्वती विशेष रूप से सत्याग्रहियो को सम्मानित करने के लिए पधारे। सभा के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री जी तथा वेदप्रचार अधिष्ठाता म० भरतसिंह जी भी उपस्थित रहे।

३० मार्च को ग्राम की गलियो में जलूस बडा दर्शनीय रहा। ग्राम की देवियो ने भी भाग लिया। बाजे-गाजे के साथ जलूस की शोभा देखने योग्य थी। जलूस मे स्वामी रुद्रवेश नौजवानो के साथ झूम-झूमकर गाना गारहे थे। महर्षि दयानन्द व वैदिकधर्म के नारो से ग्राम गूज उठा। प्रात साय श्री अर्जुनदेव जी व श्री कुलवन्तराय जी की अध्यक्षता में यज्ञ-प्रवचन आदि होते रहे।

दोपहर तथा रात्रि को अनेक राष्ट्रीय समस्याओ पर भजन उपदेशको के प्रभावशाली भजन होते रहे। ग्रामीण इनसे बडे प्रभावित हुए, इन्होंने स्वयमेव साढे चार हजार रुपये आर्यसमाज को दान मे दिये। निकट ग्रामो से भी अनेको आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। भोजन का प्रबन्ध तथा साथ ही ग्राम के लोगो की सेवा भावना देखकर साधारण भोले-भाले किसानो के सामने स्वयमेव मेरा सिर झुक जाता था। ग्राम का नौजवान तथा किसान अब भी आर्यसमाज के आदोलन को आगे बढा सकता है। यदि आर्यसमाज भी सक्रिय होकर कोई आदोलन करने की क्षमता रखता हो।

इसी उत्सव मे ही ग्रामीणो ने भी माग की कि छ माह मे हमारे ग्रामो मे अवश्यमेव वैदिकधर्म का प्रचार किया जावे। उसे बा० रघुवीरसिंह जी ने स्वीकार किया।

यहा आर्यसमाज का अपना एक मन्दिर भी अच्छी स्थिति मे है। जहा पहले कभी आर्य पाठशाला चलती थी। इस समाज के प्रतिनिधि सदस्य सभी नवयुवक प्रचार मे सक्रिय हैं। इनमें विशेष उल्लेखनीय श्री जगदेवसिह जी मन्त्री व चौ० प्रतापसिह जी प्रधान, श्री पटेल, श्री धूपलसिह जी शास्त्री, श्री अजित् जी ब्रह्मचारी, श्री भूपसिह जी उपप्रधान, मा० मोहरसिह जी, श्री नन्दलाल जी, श्री हरिसिह जी, श्री सूरजभान नम्बरदार व खजानसिह आदि ने तन, मन, धन से सहयोग दिया। मुझे आशा और विश्वास है कि इस ग्राम के उदाहरण को सामने रखते हुए अन्य बडे बडे ग्रामो के आर्यसमाज के सदस्य भी जागकर पूर्व की भांति आर्यसमाज के इस शिथिल आदोलन को प्रगतिशील बनाने में सहयोग देंगे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वेदप्रचारादि सहायतार्थ ११०० रुपये प्रदान किये गये।

क्या यह सरकार है ?

अकाली सरकार के आने के बाद किस प्रकार प्रशासन और पुलिस नकारा होकर रह गई है, इसका प्रमाण आज जालन्धर की कचहरी मे मिल गया है। यह नही कि प्रमाण की जरूरत थी। चण्डीगढ मे विधान सभा के सामने, आनन्दपुर साहिब मे, बटाला मे, लुधियाना मे, नकोदर के गावो मे लगातार प्रमाण मिलता रहा है कि पजाब मे आज इस तथाकथित पथक सरकार का नही बल्कि आतकवादियो का बोलबाला है। लेकिन जिस प्रकार पजाब सरकार और केन्द्र सरकार चल रही थी उस से तो नजर आता था कि उन्हे स्थिति की गम्भीरता का अहसास नही था। आशा है अब दोनो का भ्रम टूट गया होगा—पजाब सरकार का कि यह मसला चण्डीगढ और पानी का है और केन्द्र का कि पजाब सरकार और उसकी पुलिस स्थिति से निपट सकती है।

जिस प्रकार आतकवादी जालन्धर की कचहरी मे छ पुलिस कर्मियो की हत्या कर अपने साथियो को छुडाकर ले गये, उससे उन सब की आखो मे पर्दा हट जाना चाहिए जो समझते थे कि यह सरकार और इस की पुलिस स्थिति से निपट सकती है। जहा तक बरनाला सरकार का सवाल है, उसे मालूम ही नही कि क्या हो रहा है। अन्दर से वह खोखली हो चुकी है। बाकी की कसर यह घटनाये पूरी कर देगी। जहा तक पुलिस का सवाल है, रिबेरियो को अवश्य यहा भेजा गया है। वह देश के अच्छे पुलिस अफसरो मे से हैं। लेकिन बेचारा रिबेरियो भी क्या करेगा ? उसने भी तो इसी फोर्स के साथ काम करना है। वर्षो के भ्रष्टाचार, राजनीतिक हस्तक्षेप और फिरकाप्रस्ती के कारण यह फोर्स खोखली हो गई है। रही सही कसर बरनाला सरकार ने पूरी करदी, जब उसने उन अफसरो और कर्मियो के विरुद्ध कदम उठाये, जिन्होने अपना कर्त्तव्य पालन करते हुए नकोदर को बचाया था। अब उन्हें दोबारा बहाल किया जारहा है। लेकिन फोर्स के मनोबल पर जो दुष्प्रभाव पडना था वह तो पड चुका है।

पजाब पुलिस की स्थिति कैसी है वह लुधियाना के काड से मालूम होता है। दरेसी ग्राऊड जहा आतकवादियो ने गोलिया चलाई वहा ही पुलिस की चौकी स्थित है। लेकिन एक भी पुलिस कर्मी ने आतकवादियों पर गोली चलाने की कोशिश नही की। एक जिसने कोशिश की, उससे गोली नही चली ! उसके बाद भी आतकवादी गोली चलाते गये। पुलिस ने उनका पीछा जरूर किया, लेकिन गलत दिशा में ! उसके बाद अगर लुधियाना के लोग पुलिस मे विश्वास न रखे तो बात समझ आती है। खन्ना में जरूर एकदम एक आतकवादी को पकड लिया गया था। लेकिन उसे लोगो ने पकडा था, चाहे अब उसका श्रेय पुलिस लेने की कोशिश कर रही है।

लेकिन जालन्धर की यह घटना सबसे गम्भीर है। इसी से मालूम होता है कि प्रशासन और पुलिस किस प्रकार खोखले हो गये हैं। न गुप्तचरो से उन्हे सूचना मिली। न कैदियो के साथ वह पर्याप्त फोर्स लेकर गये और न ही ठीक तरह से फरार आतकवादियो का पीछा किया गया। परिणाम यह कि जालन्धर की कचहरी के ठीक बीच चार पुलिस कर्मियो के शव पडे थे और दो गम्भीर रूप से घायल थे, जिनकी हस्पताल मे मृत्यु हो गई और आतकवादी अपने तीन साथियो को छुडाकर साथ ले जाने मे सफल हो गये और उन्हे मामूली खराश भी नही आई !

पजाब की समस्या एक आम कानून और व्यवस्था की समस्या नही है जिससे एक आम सरकार या एक आम पुलिस फोर्स निपट सकती है। न ही यह चण्डीगढ या पानी का मसला है, जैसे कई नादान समझते हैं और न ही यह "भावना मे बह गए नौजवानो" की समस्या है, जैसे बरनाला साहिब को गलतफहमी है। यह स्पष्ट देश के टुकडे करने का एक अति गम्भीर षड्यन्त्र है जिससे बरनाला साहिब और उनका विभाजित मन्त्री मण्डल और उनकी विभाजित पार्टी निपट नही सकती। पजाब के लोगो को इस बात का अहसास है। लेकिन श्रीमान् राजीव गाधी को नहीं है। जब तक अन्त मे उन्हे अहसास होगा तब तक न जाने और कितना खून बह चुका होगा !

चन्द्रमोहन (वीरप्रताप जालन्धर ६-४-८६)

शराबबन्दी और रूस

क्या आप जानते हैं कि रूस मे—

१—सब स्कूलो और कालिजो मे विद्यार्थियो को शराब पीने से शरीर के अग प्रत्यगो पर क्या-क्या दुष्प्रभाव होते हैं विस्तार मे पढाया जाता है।

२—खेती के फार्मों तथा फैक्टरियो मे घूम-घूमकर डाक्टर शराब के कारण स्वास्थ्य पर बुरे प्रभाव पडते हैं, इस विषय पर व्याख्यान देने जाते हैं और चित्रो द्वारा सब दिखाते हैं। ६००० डाक्टर इस काम मे विशेष रूप से और दूसरे डाक्टर साधारण रूप से इस अभियान मे जुटे हुए है।

३—१,३२,००० (एक लाख बत्तीस हजार) जन-स्वास्थ्य के कार्यकर्त्ता शराब की बुराइयो को अपने-अपने इलाको मे समझाने के काम पर लगे है। —प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

जिला सोनीपत में शराब के १४ ठेके बन्द

सोनीपत के उप-आबकारी एव कराधान आयुक्त श्री एस० के० सभ्रवाल ने आज यहा पत्रकारो को बताया कि विभाग ने चालू वित्त वर्ष के दौरान देसी शराब के १२ तथा अग्रेजी शराब के २ ठेके बन्द कर दिये हैं। यह सभी ग्रामीण क्षत्रो मे है, क्योकि ग्राम पचायतो ने इन ठेको को बन्द करने के प्रस्ताव पास कर दिये हैं। उन्होने कहा कि ८६-८७ के वित्त वर्ष के लिए शराब के ठेको की नीलामी मे २८२ करोड की रिकार्ड तोड आय हुई, जबकि ८५-८६ के दौरान इन ठेको से २ करोड १४ लाख ५० हजार रुपये की आय हुई थी। इस तरह आय मे वृद्धि ३१ ३२ प्रतिशत है, जो कि अभूतपूर्व है।

(पजाब केसरी)

अन्नदाताओं से ऋषि लंगर मे सहयोग करने की अपील

हिन्दी रक्षा आदोलन से ही हरयाणा प्रदेश के धार्मिक स्थान दयानन्दमठ रोहतक मे ऋषि लगर चल रहा है, जहा आर्यसमाज के उपदेशक, प्रचारक, विद्वान्, सन्यासी, वानप्रस्थी तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओ आदि के लिए आवास तथा भोजन की व्यवस्था है। इसके सचालन हेतु ग्रामीण किसान तथा अन्य दानी महानुभाव अन्न दान करके प्रतिवर्ष सहयोग देते हैं। अत हरयाणा के किसानो तथा दानी महानुभावो से सानुरोध अपील है कि इस ऋषि लगर को चालू रखने के लिए पूर्व की भाति अन्न का दान अथवा अन्न खरीदने के लिए नकद राशि सभा कार्यालय सिद्धाती भवन, गोहाना मार्ग रोहतक मे भेजकर पुण्य के भागी बने।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गुरुकुल करतारपुर मे प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर मे नये छात्रो का प्रवेश एक अप्रैल, १९८६ मे आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो में पढाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अग्रजी, विज्ञान, सामाजिक शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म-शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

नि शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की मात्र ३० रुपये (तीस रुपये) मासिक पर समुचित व्यवस्था, शुद्ध घृत व दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला, इस गुरुकुल की अपनी विशेषतायें हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा-पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करे।

नरेशकुमार शास्त्री
आचार्य श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर, जि० जालन्धर

आर्यसमाज बेरी भवन-निर्माण हेतु दान सूची

श्री डा० उमाकात शर्मा बेरी	१०१-००
श्री डा० दिलबागसिंह नेहरा एस डी ओ	१०१-००
श्री राजपालसिंह तवर एस ई बेरी	१००-००
दूबलघन उच्च विद्यालय के शिक्षक	१०१-००
श्री सतपालसिंह दहिया एस डी ओ नहर बेरी	५१-००
श्री कृष्णकुमार गिल जे ई बेरी	५१-००
श्री तेजसिंह देशवाल जे ई नहर बेरी	५१-००
को-ओपरेटिव बैक के कर्मचारी	५१-००
श्री सतबीरसिह VLDA बेरी	५१-००
श्री शेरसिंह VLDA बेरी	५१-००
श्री राजसिंह एस एम पशु चिकित्सालय बेरी	५१-००
श्री राजवीरसिंह VLDA चिमनी	५१-००
श्री सतबीरसिंह VLDA दुबलधन	५१-००
श्री डा० सतबीरसिंह पघाल जहाजगढ	५१-००
श्री रणवीरसिंह VLDA जहाजगढ	५१-००
श्री धमबारसिंह इन्सपेक्टर खा पू. वि बेरी	५१-००
श्री बैजनाथ VLDA दुजाना	५१-००
श्री कवलसिंह VLDA दुबलधन	५१-००
दुबलघन उच्च कन्या विद्यालय के शिक्षक	५१-००
श्री ओम्प्रकाश गरावड एस ए	५५-००

सब श्रद्धालु आर्यो से मेरी प्राथना है कि निर्माणाधीन आयसमाज मन्दिर बेरी के लिए दान देकर गिरती हुई नतिकता को रोकने मे भागीदार बने।

मन्त्री सूबेदार हरिसिंह

२१ से २३ मार्च आर्यसमाज गुन्दयाना का उत्सव

आर्यसमाज गुन्दयाना जि० कुरुक्षेत्र का उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। इसमे स्वामी गुरुदत्त मुनि जी, स्वामी धर्मानन्द जी आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ओर से श्री प० हरिश्चन्द्र सहायक अधिष्ठाता वेदप्रचार, श्री प० शेरसिंह जी, श्री प० विद्याभूषण जी तथा श्री कृष्णलाल जी रगीला, कुमारी सुनीता सुपुत्री सुखदशन जा किशनपुरा के भजन उपदेश हुए। श्री रामस्वरूप ब्रह्मचारी के प्रदशन हुए। सभा को वेदप्रचार मे ४०८) दिये गय।

सिहराम प्रधान

आर्यसमाज ऊचा चदना जि० अम्बाला

२४ से २६ माच आर्यसमाज ऊचा चन्दना जि० अम्बाला का उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डली श्री प० हरिश्चन्द्र जी, श्री प० खेलसिंह भजनोपदेशक और कुमारी सुनीता, श्री कृष्णलाल जी रगीला के भजन उपदश हुए और ब्रह्मचारी रामस्वरूप के प्रदर्शन भी हुए। चौ० सिहराम जी प्रधान आर्यसमाज गुन्दयाना ने इस उत्सव की सफलता के लिए बडी भारी सेवा की। आर्यसमाज चन्दना की ओर से सभा को २५१) वेदप्रचार मे दिये गये।

डा० छत्रपाल मन्त्री

'अच्छा खाओ, खेलो शराब तम्बाकू से बचो'

नई दिल्ली, ६ अप्रैल (प्र० ट्र०)। विश्व स्वास्थ्य सगठन ने आज से जो अपना स्वास्थ्य अभियान शुरू किया है उसका सदेश है—अच्छा खाओ, व्यायाम करो और शराब, तम्बाकू व गलत भोजन से दूर रहो।'

सगठन के आचलिक निदेशक डा० यू० कोको ने विश्व स्वास्थ्य दिवस पर अपने सदेश मे कहा हे 'स्वस्थ जीवन का राज यह है कि लोग शारीरिक श्रम करे, पौष्टिक भोजन ले और व्यक्तिगत दायित्व को समझते हुए अथपूर्ण ढग से जियें।'

सगठन के महानिदेशक डा० एच० माहले ने अपने सन्देश मे कहा है कि स्वास्थ्य ही वह दौड है जिसमे हर कोई विजेता है।

शराबियो को कांग्रेस से निकालने की मांग

नई दिल्ली, ६ अप्रैल (प्रे० ट्र०)। जो लोग खादी नही पहनने और शराब पीने से बाज नही आते वे भला काग्रेस के सदस्य कैसे हो सकते है?

बम्बई के एक क्षुब्ध काग्रेसी डा० बलवन्त कामदार ने काग्रेस (इ) अध्यक्ष श्री राजीव गाधी तथा उपाध्यक्ष श्री अर्जुनसिंह को भेजे अपने पत्र मे यह सवाल उठाया है। उनका कहना है कि काग्रेस सविधान में यह व्यवस्था है कि शराब पीने वाले लोग इसके सदस्य नही हो सकते और खादी नही पहनने वाले लोगो को इसकी सक्रिय सदस्यता नही मिल सकती। अत इन दो जरूरी हिदायतो के खिलाफ चलने वाले लोगो को उनके पदो से हटाया जाये और उनकी सदस्यता खत्म की जाये।

श्री अर्जुनसिंह को लिखे पत्र मे डा० कामदार ने कहा है—'आप कृपया विस्तार से इस बात का जवाब दे कि अगर आप पार्टी सविधान से बन्धे हैं तो इस मामले में आपने क्या घोर अनुशासनहीनता पहले कभी नही देखी है।

(दैनिक हिन्दुस्तान से)

जब महिलायें शराब के खिलाफ खड़ी हुई

कालका, ६ अप्रैल (नि० स०)। विगत दिनो स्थानीय गाधी लाईब्रेरी के नजदीक परेड मुहल्ला को आने वाली गली मे पहली अप्रैल से खुलने वाले शराब के ठेके का ज्यूं ही मुहूर्त हुआ, परेड मुहल्ला की लगभग डढ-दो सौ महिलाओ ने हल्ला बोलकर ठेका बन्द करवा दिया। उत्साही महिलाओ ने तब तक ठेके के आगे से उठने का नाम नही लिया जब तक कि ठेके के मालिक ने शराब की दुकान किसी अन्य जगह पर ले जाने का आश्वासन नही दिया। कालका के इतिहास मे यह पहली बार देखने मे आया है, जब महिलाओ की इतनी बडी भीड ने उत्साह जुटाकर किसी अच्छे काय के लिए घरना दिया हो और उसमे सफलता पाई हो।

पृष्ठ १ का शेष

असख्यो सत्कृत्यो के सम्पादन करनेवाले प्रभु! (क्रतु) कमशील और यज्ञ, यज्ञमय तथा यज्ञशील तथा "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कम" श्रेष्ठ कर्मो को करने वाला। परमात्मा कर्मशील है, वह कभी भी कर्मशीलता से पृथक् नही होता और कम भी श्रेष्ठतम यज्ञमय करता है। सृष्टि की उत्पत्ति आदि के द्वारा जीवात्माओ को उन्नति का अवसर करता तथा उनके कर्मो की यथोचित व्यवस्था द्वारा उन्हे याथातथ्य रूपेण न्यायपूर्वक कर्म फल प्रदान करता है। हे प्रभु यज्ञशील, यज्ञमय, यज्ञ, क्रतु! निरन्तर निज कमशीलता के द्वारा न्यायोचित रूप मे व्यवस्था करके जीवो को कमफल प्रदान करने के कारण तो वह क्रतु ठहरा और साथ ही असख्यो प्रकार के प्राणी-अप्राणी जगत् की तथा असख्यो जीवो के कर्मफलो का व्यवस्था रखने और न्यायपूवक उन्ह कर्मफल प्रदान करने से शतक्रतु हुआ अत एव वदिकभक्त ने पुकारा कि वसो तथा शतक्रतो। 'त्व हि न पिता पितृ पा रक्षणे तथा पालयिता पोषयिता रक्षयिता वा आप हमारे पालन-पोषण और रक्षण करने वाले पिता तथैव च 'त्व माता बभूविथ' माता निर्माता भवति—हमारे निर्माण करने वाले होने के कारण आप हमारी माता भी है। यह सासारिक माता-पिता तो कुछ काल के लिए ही माता-पिता हैं, अधिक से अधिक एक जीवन के लिए, किन्तु प्रभो! आप तो अनादि काल से हमारे माता-पिता है और अनन्त काल तक रहेगे। आपका मातृ-पितृ स्नेह तो सर्वदा हम पर बना रहता है। "अघा ते सुम्न ईमहे" हम आपको ही उत्तम मन से, पवित्र मन हो कर पुकारते है। आप जैसे समस्त जीवो पर वात्सल्यपूर्ण मातृ-पितृ स्नेह रखने वाले उत्तम प्रभु का मनन-चिन्तन करते हैं।

दे शरण अपनी प्रभु हमे, तू पिता सब ही का है ॥१॥
उत्पन्न किया है तूने जग, और प्रलयकर्त्ता भी तू।
तू ही धारण कर रहा है, तू पिता सब ही का है ॥२॥
तू ही भय-त्राता जगत् का और सुखदाता भी तू।
गा रहा महिमा जगत् यह, तू पिता सब ही का है ॥३॥
पालन करता है तू ही, पहुचाता है वृद्धि को तू।
तू ही माता विश्वभर की, तू पिता सब ही का है ॥४॥

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक सस्थान नजीबाबाद, उ०प्र०

संस्कृति, परम्परा तथा मान्यताओं को जीवित रखनेवाले हरयाणा के गुरुकुल

महावीर जैन, जैन मन्दिर गली, बाबरा बाजार, रोहतक-१२४००१

हरयाणा एक ऐसा राज्य है जहा बडे पैमाने पर भारत की प्राचीन शिक्षा-पद्धति को जीवित रखकर भारतीय सस्कृति सभ्यता, मान्यता और परम्पराओ को जीवित रखा जारहा है। हरयाणा मे ही महाभारत काल मे गुरु द्रोणाचार्य ने गुडगावा में पाडव तथा कौरव पुत्रों को अपने आश्रम मे ही शिक्षा दी थी। आश्रम में ही रहकर छात्र जीवन के हर क्षेत्र की शिक्षा पाकर अपना सर्वांगीण विकास कर लेता था। उसी शिक्षा का स्वरूप आज हरयाणा में गुरुकुलो मे पाया जाता है जहा शिक्षार्थी गुरुकुल में रहकर वही शिक्षा पारहे हैं। हरयाणा मे लगभग तीन दर्जन से अधिक गुरुकुल कार्यरत हैं। इन गुरुकुलो मे हरयाणा के ही नही अपितु भारत के हर प्रात के छात्र शिक्षा पाकर अपने आपको धन्य समझते हैं। सन् १९१२ मे लाला ज्योतिप्रसाद ने १०,००० रु० दान देकर अपने ग्राम कथल कला में स्वामी श्रद्धानन्द जी के करकमलो द्वारा प्रथम गुरुकुल की स्थापना की। इस गुरुकुल मे दिल्ली, गुजरात, बिहार, आन्ध्रप्रदेश बगाल, उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश के अनेक ब्रह्मचारी शिक्षा पाकर जा चुके हैं।

इस समय हरयाणा मे कन्या गुरुकुल खानपुर (सोनीपत), कन्या गुरुकुल सिद्धिपुर लोवा (रोहतक), मोरमाजरा (करनाल), पाढा (करनाल) और गुरुकुल करनाल महिला शिक्षा में अग्रणी हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल झज्जर (रोहतक), भैसवाल (सोनीपत), गदपुरी (गुडगावा), घरोडा (करनाल), मटींडु (सोनीपत), सिंहपुरा (रोहतक), आदर्श नगर कुरडी (हिसार), धीरणवास (हिसार), कालवा (जींद), लडरावण (रोहतक), आंधल कला (सोनीपत), कुम्बाखेडा (हिसार), सुठाणा (गुडगावा), गुलकणी (जींद), डिकाडला (करनाल) आदि गुरुकुलो में हजारो छात्र शिक्षा पारहे हैं।

गुरुकुल झज्जर सारे भारतवर्ष में अपने पुरातत्त्व सग्रहालय के कारण प्रसिद्ध है। इस सग्रहालय मे भारत की प्राचीन सस्कृति की अमूल्य धरोहर रखी हुई है। यह सग्रहालय अनुपलब्ध परातत्त्व सामग्री के सचायन की दृष्टि से भारत का सबसे मूल्यवान् सग्रहालय है। इस गुरुकुल का अपना प्रकाशन विभाग, अपनी फार्मेसी, अपना विशाल पुस्तकालय भी है। झज्जर गुरुकुल की स्थापना १९१५ मे प० विशम्बरदत्त ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा कराई थी। आचार्य भगवान्देव (वर्तमान स्वामी ओमानन्द) की कार्यक्षमता व कठिन कर्मसाधना से यह गुरुकुल उन्नति करता चला गया। इस गुरुकुल में भारत के ही नहीं अपितु विदेशो मे भी छात्र आकर शिक्षा पाते हैं। इस गुरुकुल की विशेषता यह है कि यहा के ब्रह्मचारियो को कठोर जीवनचर्या का पालन करना पडता है। इस गुरुकुल मे शिक्षार्थियो को लवण, मिर्च तथा चीनी के बिना भोजन दिया जाता है।

कन्या गुरुकुल खानपुर की स्थापना भगत फूलसिंह ने १९३६ मे की थी। इस गुरुकुल के अन्तर्गत शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय, आयुर्वेदिक महाविद्यालय, कला महाविद्यालय चल रहे हैं। सारे भारत मे यह गुरुकुल स्त्री शिक्षा के प्रसार मे प्रमुख गिना जाता है। इसकी आचार्य बहन सुभाषिणी देवी बडी योग्यता से गुरुकुल का सचालन कर रही हैं। इस कन्या गुरुकुल मे सस्कृत, धर्मशास्त्र, साहित्य, उपनिषद् वेद, राजनीति, इतिहास, नागरिक शास्त्र, पाक विद्या, सिलाई, कढाई, बुनाई आदि विषयों में अध्ययन कराया जाता है। गुरुकुल भैसवाल की स्थापना १९१९ में हुई। इसकी उन्नति मे हरयाणा के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री स्वर्गीय चौ० माडूसिंह का बडा योगदान रहा है।

चरित्र निर्माण, स्वदेश प्रेम, मानव मूल सिद्धातो की रक्षा, वैदिक ग्रंथों का अध्ययन व खोज पर अत्यधिक बल दिया जाता है।

इन गुरुकुलों ने राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार के लिए बड़ा योगदान दिया है। इन हरयाणा के गुरुकुलों में पूर्णरूप से राष्ट्रभाषा हिन्दी द्वारा शिक्षा दी जाती है तथा इनका शिक्षा माध्यम भी हिन्दी ही है। जब सारे उत्तरी भारत में अंग्रेजी तथा उर्दू भाषा का दबदबा था तब इन गुरुकुलों ने ही हिन्दी प्रचार का ध्वज फहराया और भारतीय जनता मे अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम जागृत किया। सस्कृत भाषा द्वारा ब्रह्मचारी अपनी प्राचीन सभ्यता, सस्कृति, विज्ञान उन्नति और चिकित्सा उन्नति आदि विषयो मे जानकारी प्राप्त करते हैं और प्राचीन उपलब्धियो का लाभ उठाते हैं। इन गुरुकुलो मे शिक्षा पाने वाले छात्रो को गुरुकुल मे ही रहना अनिवार्य होता है। यही नियम कन्या गुरुकुलो पर भी लागू होता है। इन गुरुकुलो मे जीवन के प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य का पालन कराया जाता है।

हरयाणा के कुछ गुरुकुलो का सम्बन्ध गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे है। शेष गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध हैं। है। इन गुरुकुलो मे निकले विद्यार्थियो को प्राप्त उपाधिया, प्रमाण-पत्र हरयाणा सरकार तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

कोई भी सस्था केवल अपने ही आर्थिक बल पर अधिक समय तक नही चल सकती। हरयाणा सरकार और केन्द्रीय सरकार को इन गुरुकुलो को अधिक आर्थिक सहायता देनी चाहिए, क्योंकि यही गुरुकुल भारतीय मान्यताओ परम्पराओ इत्यादि का पालन करना सिखाते हैं तथा जीवित रखते हैं।

हरयाणा के गुरुकुल केवल वैदिक नीति द्वारा ही शिक्षा नही देते, अपितु आधुनिक शिक्षा पद्धति का और उपलब्धियों का समावेश करके विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कराते हैं। हरयाणा के गुरुकुलो मे भारतीय सस्कृति, सभ्यता, परम्परा और मान्यता को जीवित रखने का प्रयास किया जारहा है जो कि आज के भौतिक युग में नष्ट होती जा रही है।

हैदराबाद के सत्यग्रहियों को सूचना

भारत सरकार के आदेशानुसार हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में जेल यात्रा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को पेंशन देने का निर्णय किया गया है। अत जिन महानुभावो ने इस सत्याग्रह में जेल यात्रा की है उनसे अथवा उनकी विधवाओ से आवेदन-पत्र भेजने की अवधि बढा कर ३१ मई, १९८६ तक करदी गई है। अत जिन्होने अभी तक अपने आवेदन-पत्र नही भेजे हैं वे अपना अथवा विधवा का नाम पूरा पता (पूर्व तथा वर्तमान), जेल का नाम, जत्थेदार का नाम, जेल यात्रा की अवधि आदि का विवरण (प्रमाण-पत्र यदि हो तो उसकी फोटोस्टेट प्रति) साफ-साफ शब्दो मे लिखकर २ प्रतियो मे यथाशीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के पते पर भेजने का कष्ट करे। ताकि हम शीघ्र ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेज सकें। सर्वहितकारी के पाठको से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के पुराने सत्याग्रहियो को इस विषय में सूचित करने की कृपा करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, रोहतक

गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर समाज-सुधार सम्मेलन

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

१६ मार्च को हरयाणा के सुप्रसिद्ध गुरुकुल भैसवाल जि० सोनीपत के वार्षिक उत्सव पर समाज-सुधार सम्मेलन स्वामी कर्मपाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नही है, अपितु एक आदोलन है। अत सभा की ओर से शराब तथा दहेज बन्दी आदोलन चलाया जारहा है। सभी जानते हैं कि शराब सब बुराइयो की जड है। इसके सेवन से भ्रष्टाचार पनपता है। केवल गरीब किसान मजदूर ही अपने पैसे से शराब पीता है, शेष सभी अधिकारी, राजनैतिक नेता तथा व्यापारी आदि मुफ्त की शराब पीते है। आपने पचायतो से अनुरोध किया कि अपने-अपने ग्रामो मे शराब पीने पर तथा दहेज पर पाबन्दी लगाने का प्रस्ताव करके सरकार को भेजकर भ्रष्टाचार समाप्त कराने मे सहयोग प्रदान करें और समाज-सुधार कार्यों मे ही पचायत का धन खर्च करें।

गुरुकुल के उत्सव पर हरयाणा सरकार के मन्त्री श्री जगदीश नेहरा, श्री शमशेरसिह सुरजेवाला के अतिरिक्त श्री कपिलदेव शास्त्री, आचार्य विष्णुमित्र, प० सुखदेव शास्त्री आदि विद्वानो के व्याख्यान तथा स्वामी रुद्रवेश जी, प० चिरजीलाल, प० ईश्वरसिह तूफान एव प० समेरसिह आर्य के भजन हुए। इस अवसर पर सभा को वेदप्रचार तथा शराबबन्दी आंदोलन आदि हेतु ८००) प्रदान किये गये। गुरुकुल महासभा के मन्त्री श्री धर्मवीर शास्त्री ने गुरुकुल कार्यों में सहयोग करने तथा दान देने वालों का आभार प्रकट किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक–प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क २१ २१ अप्रेल १९८६ वार्षिक शुल्क २०) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

अबोहर फाजल्का क्षेत्र की आह भरती हिंदी भाषी जनता की हरयाणा वासियों से पुकार

मैं ये पक्तिया अबोहर फाजल्का क्षेत्र की कराहती हिंदी भाषी जनता की पुकार बडे वेदनाभरे शब्दो मे लिख रहा हू कि प्रजातन्त्रीय केन्द्रीय सरकार ने इस क्षेत्र की शान्तिप्रिय जनता के साथ जो विश्वासघात किया उस तीव्र आघात को वह कैसे सहन करे।

इस क्षेत्र की हिंदीभाषी जनता पिछले १५ वर्षों से आशा लगाये थी कि भू० पू० प्रधान मन्त्री ने अपने २९ जनवरी, १९७० के एवॉर्ड में चण्डीगढ के बदले मे हरयाणा को अबोहर फाजल्का शहर व १०७ हिंदी भाषी गाव दिये जाने की जो घोषणा की थी, उसे हरयाणा अवश्य प्राप्त करेगा। इन १५ वर्षों में हरयाणा सरकार व वहा के अन्य सभी वर्ग निरन्तर मांग करते रहे कि वे चण्डीगढ के बदले में अबोहर फाजल्का क्षेत्र के सिवाय पजाब का कोई दूसरा इलाका न लेंगे। इसी प्रकार हरयाणा वालों ने साफ कहा कि यदि केन्द्रीय सरकार अबोहर फाजल्का क्षेत्र के बदले में पजाब के अन्य क्षेत्र देने के लिए कोई दूसरा आयोग नियुक्त करे तो हरयाणा वाले उसे न मानेंगे। आज तक हरयाणे वाले इसी स्टैण्ड पर अटल डटे रहे। किंतु जब से केन्द्रीय सरकार ने अब दूसरे आयोग की घोषणा की है, तब से इस क्षेत्र के लोगों को आशका होने लगी है कि क्या हरयाणे वाले अब अपना पहला स्टैण्ड बदलकर अबोहर फाजल्का क्षेत्र को छोडकर पजाब के दूसरे इलाके चण्डीगढ के बदले में लेने को तैयार हैं और इसके लिए नियुक्त दूसरे आयोग के विचारों को मानेंगे। तथा इससे अबोहर फाजल्का की हिंदीभाषी जनता के साथ भारी धोखा न होगा? इस क्षेत्र की हिंदीभाषी जनता का यह दुर्भाग्य रहा है कि पिछले २० वर्ष से इसका भाग्य त्रिशकु की तरह अन्धेरे मे भटका है। आज भी इसका भविष्य अन्धकार में है। ये न तो जीने में, न मरने मे हैं।

मैथ्यू कमीशन द्वारा भाषायी जनगणना कराकर एक नाटक रचा गया, और इस क्षेत्र की जनता के साथ एक बड़ा, क्रूर मजाक किया गया जो इनके ऊपर एक वज्रपात सिद्ध हुआ। जनगणना के बाद इस क्षेत्र में भारी तनाव बढ गया। दोनो सम्प्रदायो में सद्भावना समाप्त हो गई और हिन्दी भाषी लोग आज बरबादी के कगार पर खडे हैं। अपनी भाषा हिंदी लिखने वालो को आज यहां सम्मान पूर्वक रहना कठिन हो गया। उन्हें पग-पग पर अपमानित व जलील होना पड़ता है। जिनके पूर्वजनो ने हरियाणा व राजस्थान से आकर इस बंजर गैर आबाद बारानी इलाके को अनेको कष्ट, आपत्ति सहकर, कठोर परिश्रम कर इसे आबाद किया और लहलहाता उपजाऊ क्षेत्र बनाया उनके वशज आज अपने हर प्रकार से सम्पन्न घरो की जमीन-जायदाद छोडकर हरयाणा व राजस्थान में पलायन करने लगे। घोर सकट सामने देख कर ही कोई व्यक्ति अपने भरे-पूरे घर व सोना उगलने वाली जमीनें छोडने को विवश होते हैं।

१ क्या हरयाणा निवासी इस क्षेत्र की हिंदी भाषी जनता की इस दयनीय दशा को देख उन्हे अपने पुश्तैनी घरो मे पहले की तरह सम्मानपूर्वक रहने का कोई उपाय सोचेंगे और अपना नैतिक कर्त्तव्य समझकर इसके लिए कोई प्रयत्न उठा न रखेंगे?

२ यदि आपकी आत्मा मे आवाज उठती है कि हमारी कमजोरी, ढील व लापरवाही के कारण ही इस क्षेत्र के हिंदीभाषी उजडने को हैं, तो इसकी रक्षा का एक ही उपाय है, जी जान से जुट जाना इस सघर्ष में कि शीघ्र से शीघ्र स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी का २९ जनवरी १९७० का एवार्ड पूर्णत लागू हो, जिसके अनुसार चण्डीगढ के बदले मे हरयाणा को अबोहर फाजल्का शहर व १०७ हिंदीभाषी गाँव मिलें। पिछले १५ वर्ष से समस्त हरयाणा वालो की यह मांग रही है कि जब तक १९७० के एवार्ड के अनुसार अबोहर फाजल्का क्षेत्र हरयाणे को न मिले, तब तक चण्डीगढ पजाब को न दिया जावे। यदि केन्द्रीय सरकार इस माग को ठुकरा कर चण्डीगढ़ तो पजाब को दे दे, पर अबोहर फाजल्का क्षेत्र हरयाणा को न दे, तो क्या यह हरयाणा के साथ घोर अन्याय न होगा और उसकी साख मिट्टी में न मिल जावेगी और देश भर में उसकी कौडी जितनी कद्र न रहेगी, और हरयाणा की भावी पीढी, आज के हरयाणा के कर्णधारों को न धिक्कारेगी कि उन्होंने नपुन्सकों की भाति दबकर, डरकर अपने हको को दूसरो के हाथ गिरवी रख दिया।

इस क्षेत्र के हिन्दीभाषी तो अपने घर-बार छोडकर उजडेंगे ही, किंतु उनकी आह! हरयाणा वालों के हृदयो को सदा कुरेदती रहेगी कि जिनकी कमजोरी के कारण खुशहाल इलाके के ये लोग बरबादी की हालत में हो गए। और लोकतन्त्र की दुहाई देने वाली भारत सरकार इस क्षेत्र की चार लाख हिन्दी भाषी जनता की भावनाओ को कुचल कर इनकी बहुत पुरानी, न्यायोचित माग को ठुकरा कर क्या जनता की पुकार सुनने वाली जनवादी सरकार कहलाने का दावा करने की अधिकारी है?

क्या आज हरयाणे में है कोई सगठन, ऐसी सस्था या पार्टी अथवा वीर योद्धा जो इस क्षेत्र के हिन्दी भाषी लोगो की करुणाभरी कहानी सुनकर, हरयाणे की साख बचाने के लिए, कमर कसले कि जब तक अबोहर-फाजल्का का हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणे मे न मिलाया जावेगा, वह चैन न लेगा, प्राणपन से जुटेगा, बडी से बडी कुर्बानी देने से पीछे न हटेगा।

आज हरयाणा की साख कसौटी पर है। हरयाणा के अनखवाले वीरो की परीक्षा की घडी है। ससार देखेगा कि वे इस परीक्षा मे कहाँ तक खरे उतरते हैं।

तेगराम भू पू विधायक मन्त्री,
फाजल्का तहसील हरयाणा सम्मिलन समिति, अबोहर

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत भगवान् दयानन्द का दिव्य

सन्देश

भावी सन्तति को आर्य बनाइये !

सोहनलाल शारदा स्वाध्याय मण्डल शाहपुरा, जि० भीलवाडा (राज०)

उठो एवं जागो !

भगवान् दयानन्द ने सस्कार-विधि मे वर्णन किया है कि—"सदा स्त्री-पुरुष दस बजे शयन और प्रात चार बजे उठ प्रथम हृदय मे परमेश्वर का चिन्तन करके (प्रातरग्नि०) आदि पाच मन्त्रो से प्रार्थना करके शौच-स्नानादि क्रिया से निवृत होकर सध्या यज्ञोपासनादि नित्यकर्म यथाविधि उचित समय मे करे।" इस प्रकार वर्तने से बुद्धि पवित्र होती है और बुद्धि के पवित्र होने से महा कठिन काय भी सुगमतापूर्वक सिद्ध होते है। स्वय भगवान् दयानन्द जब ५ वर्ष के थे, तब विद्यारम्भ सस्कारोपरात, ८ वर्ष की अवस्था तक पारिवारिक कर्मकाड मे आने योग्य मन्त्र, स्तोत्र रुद्राध्यायी कण्ठस्थ कर यज्ञोपवीत सस्कार पश्चात् विधिवत् गायत्री-जप करते हुए दो वर्ष मे यजुर्वेद कण्ठस्थ पर पिताजी के आदेशानुसार शिवपुराण, शिवमाहात्म्य को जानकर महाशिवरात्रि-पर्व पर चवदह वर्ष की आयु का महाव्रत धारण कर पूजा-पाठ मैं लग गये।

लेकिन वहा चूहे के उत्पात को देखकर पिताजी से प्रश्न किया कि "क्या यह सच्चा शिव है?" प्रत्युत्तर मे पिताजी ने कहा कि—"यह महान् शिव की प्रतिकृति मात्र है।" तब मनमे सकल्प किया कि मैं सच्चे शिव की ही आराधना करूगा। इसके पश्चात् जब पितामह, भगिनी एव चाचा की मृत्यु को साक्षात् देखा तो मनमे यह प्रश्न भी उत्पन्न हुआ कि यह जीवात्मा मरकर अन्त मे कहा जाता है? क्या मृत्यु से बचने का कोई उपाय है? इन्ही दोनो प्रश्नो का समाधान गुरुओ से चाहने पर भी किसी ने ठीक समाधान नही किया। फलस्वरूप २१ वर्ष की अवस्था में घर से अधेरी रात्रि मे नगे पाव निकल गये और इन्ही प्रश्नो के समाधान हेतु सम्पूर्ण भारत छान डाला। लेकिन इन प्रश्नो का समाधान कही पर भी प्राप्त नहीं हो सका। अन्त मे समाधान मिला मथुरा मे, गुरुवर दण्डी विरजानन्द के चरणो मे निरन्तर ३। वर्ष पर्यन्त आर्ष ग्रथो का अध्ययन कर, सच्चा ज्ञान प्राप्त कर, दक्षिणा मे जीवन की आहुति समर्पण कर अवधूत बनकर सर्व वै पूर्णं स्वाहा के सिद्धात को हृदयगम करके लोककल्याण के लिए चल दिये।

श्रेष्ठ पु[illegible] ज्ञान प्राप्त [illegible]रो

अब दयानन्द जहा अज्ञानीजनो को सत्य मार्ग पर चलने एव आर्ष ग्रथो के पठन-पाठन पर बल देते हुए कई शास्त्रार्थ करने पर उद्यत हुए। सत्य सनातन आर्ष-ग्रन्थो के प्रचार मे उन्होने अपना जीवन समर्पित कर दिया। लेकिन इन भाषणो, शास्त्रार्थों से कोई विशेष कार्य नही बन पाया। तब उन्होने भावी पीढी मे वैदिक आर्ष ज्ञान बढाने हेतु जिस प्रकार आद्य जगद्गुरु शकराचार्य ने सम्पूर्ण भारत की चारो दिशाओ मे चार मठ स्थापित कर अवैदिक मतो को निर्मूल किया। इसी प्रकार भगवान् दयानन्द ने भी पुन वैदिकधर्म की स्थापना के लिये सम्पूर्ण भारत में आर्यसमाज की स्थापना कर अवैदिक मतो को निर्मूल करने का काय प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम बम्बई महानागर, पश्चात् देश-विदेश के कई स्थानो पर अपने जीवनकाल मे ही आर्यसमाजे स्थापित कर, आर्ष-ज्ञान के प्रचार-प्रसार मे आर्यजन भी प्रवृत्त होने लगे और सच्चे शिव को प्राप्त करते हुए जन्म मरण के बन्धन से मुक्त होने लगे। इसी विषय को अक्षुण बनाये रखने के लिए प्रथम पचमहायज्ञ-विधि पुन आर्याभिविनय, सस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका, आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वमतव्या मतव्य प्रकाशादि ग्रथो की सरचना की। साथ ही साथ भावी सतति को आर्य बनाने हेतु वेदागप्रकाश १४ भाग व वेदभाष्य भी लिखते रहे।

परिणामस्वरूप महर्षिकृत ग्रथो के पठन-पाठन से आर्यसमाज का प्रचार द्रुतगति से देश-विदेश मे फैलने लगा। आर्यजनो की श्रद्धा वेद व आर्यसमाज पर अटूट हुई। स्थान-स्थान पर आर्यसमाज स्थापित कर महर्षिकृत आर्षग्रंथ पठन-पाठन हेतु बडे-बडे विद्यालय एव गुरुकुल की स्थापना कर आर्यजन आर्यज्ञान प्राप्त कर व कराके अपना एव राष्ट्र का उद्धार करने मे प्रवृत्त हुए। इन्हीं की सेवा, त्याग व बलिदानो से स्वराज्य मिला। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के साथ महर्षिकृत एव आर्ष-ग्रथ का पठन-पाठन निरन्तर क्षय की ओर जाने लगा। कारण यह हुआ अनेकानेक विद्वान् पडितो ने अपनी डफली अपना राग अलापना आरम्भ किया। वैदिक-साहित्य एवं विशेष रूप से सध्या व यज्ञ के नाम से अनेकानेक पुस्तके प्रकाशित होने लगी। देखते ही देखने महर्षिकृत ग्रन्थों का स्थान इन अपूर्ण पुस्तको ने ले लिया और इन अपूर्ण पुस्तको को ही पढ-पढाकर प्रचार-प्रसार मे पूर्ण सामर्थ्य से प्रवृत्त होने लगे। लेकिन कहा जाता है कि—'मर्ज बढता ही गया, ज्यो-ज्यो दवा की।

भावी-पीढी को आर्य बनाओ !

हमारे प्रचार का विपुल साधन समाज मन्दिर विद्यालय गुरुकुल वैदिक विचारधारा की कई पत्र-पत्रिकाये साथ मे प्रचार के सभी आधुनिक वैज्ञानिक साधन टेपरिकार्ड, ध्वनि, विस्तारक यन्त्र, उपदेशक, पुरोहित, सन्यासी, वानप्रस्थ मण्डल प्रचार यात्रा में होते हुए भी कतिपय स्थानों को छोडकर जैसी लगन, उत्साह, भावना पूर्व के आर्यजनो में थी, वैसी अब नही रही। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण साप्ताहिक सत्सगो मे देखने को मिलता है। जहा कि पुरोहित वा कुछ वृद्ध पुरुष यज्ञ करने-कराते हुए मिलेंगे और सम्माननीय अधिकारी-वर्ग अन्त में मात्र उपस्थिति भुगताने हेतु आते दिखाई देवेगे। इसलिए आर्यसमाज के प्रबुद्ध मननशील हितेच्छुवर्ग के लिए अब यह चिन्ता का विषय बन रहा है, जिसका प्रत्यक्ष हमारी पत्र-पत्रिकाओ मे बराबर देखने को मिल रहा है।

श्रेष्ठ पुरुष महर्षि द्वारा ज्ञान को प्राप्त करे। इससे बचने के लिए एक ही उपाय है, महर्षिकृत ग्रन्थो का पठन-पाठन। इस शताब्दी के महापर्व पर हम व्रत लेकर जावें कि हमें कम से कम ५ आर्य विचारों के विद्यार्थी अवश्य ही तैयार करने हैं। यह कार्य तभी सम्भव हो सकेगा, जब हम महर्षिकृत ग्रन्थो के ही पठन-पाठन का सकल्प लेवेगे। इसके लिए प्रथम ५ से ८ वर्ष के बालको को आर्यसमाज के १० नियम सक्षिप्त व्याख्या सहित पुन पढाना है। नित्य सध्या यज्ञोपासनविधि महर्षिकृत ग्रन्थानुसार। इसके लिए महर्षि का दिव्य सदेश यहा है, सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास मे कि—'माता-पिता आचार्य अर्थ सहित गायत्री सध्योपासना को जो स्नान आचमन प्राणायाम की क्रिया है सिखलावें।' इससे आगे सस्कार विधि का सम्पूर्ण सामान्य प्रकरण भूमिका से मगल कार्य तक पढाना है जो जिससे वर्तमान में जो पुरोहितो की समस्या उपस्थित है उसका निराकरण हो सके। जहा महर्षि का यह सन्देश है कि—"इतना तो अवश्य ही पढ लेवे।" सो हमें सस्कार-विधि से ही पढना है। अन्य पण्डितो वा प्रकाशको की पद्धति से नही। क्योंकि सस्कार विधि ही पूर्ण एतद् विषयक ग्रथ है। अन्य इसी पर आधारित ग्रन्थ पूर्ण नहीं है। इतना पढा देने के पश्चात् आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के साथ ही साथ सत्यार्थप्रकाश का प्रथम, द्वितीय, तृतीय एव षष्ठ समुल्लास और पढाना है। वेदागप्रकाश के सम्पूर्ण १४ भाग न्यून पढावे तो प्रथम तीन भाग वर्णोच्चारण शिक्षा, सस्कृत वाक्य प्रबोध व्यवहारभानु अवश्य पढानी है, जिससे व्यावहारिक पारमार्थिक कर्त्तव्य कर्म का ज्ञान हो सके।

सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समुल्लास पढा देने से विद्यार्थियों की रुचि राजनीति की ओर लगकर धार्मिक बनते हुए समाज एव राष्ट्र का कल्याण कर सके एव शासन किस विधि से करने से वर्तमान मे फैल रही अराजकता, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, अनैतिकता इत्यादि अवगुणों को दूर कर सकें। इस प्रकार राजनीति की ओर अग्रसर होने वाले छात्रो को इसी समुल्लास के अन्त में दिव्य सन्देश देते हुए महर्षि लिखते हैं कि "वेद मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय, शुक्र नीति तथा विदुर प्रजागर और महाभारत के शाति-पर्व के राजधर्म और आपद्धर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीतिज्ञ बनकर माण्डलिक वा चक्रवर्ती राज्य करे।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पंजाब समझौते के अमल में बरनाला रोड़े अटका रहे हैं

मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट के आने के बाद पंजाब के अकाली मुख्यमन्त्री एक के बाद एक छेड़खानी करने वाले तथा उत्तेजक और भड़काने वाले वक्तव्य दे रहे हैं। पिछले महीने उन्होंने कहा कि हरयाणा को देने के लिए पंजाब के पास फालतू पानी नहीं है और इसलिए सतलुज यमुना जोड़ नहर बनाना अनावश्यक है। उनके इस वक्तव्य के बाद सिख विद्यार्थी संघ के लोगों ने खुदी हुई नहर को मिट्टी से भरने के लिए कार सेवा का एलान किया। मुझे पंजाब केसरी के सम्पादक ने बताया कि नहर में मिट्टी डालने के लिए कार सेवा शुरु कर दी गई है और उनके पास उसके चित्र भी आये हैं।

रावी व्यास के पानी के बटवारे के लिए बनाये गये न्यायाधिकरण के विधेयक को वापिस करवा के नये विधेयक को सर्व-सम्मति से दोनो सदनों में पास करवाने म वे सफल हो गये। सभी दलो द्वारा उनको समर्थन मिल गया। वह न्यायाधिकरण नये विधेयक के अन्तगत कितना न्याय हरयाणा को दे सकेगा यह समय बतायेगा।

अब उन्होंने वेंकटरमैया आयोग बनने के बाद पंजाब के हिन्दी भाषी गावो में जाकर उन पर दबाव डालकर यह कहना शुरु कर दिया है कि पंजाब मे से कोई गाव हरयाणा मे नही जाना चाहता। अबोहर फाजिल्का से मेरे पास मास्टर तेगराम के पत्र आ रहे हैं कि वहा जिन ग्रामो ने अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई उनके साथ छेड़खानी और जुल्मों का सिलसिला शुरु हो गया है।

दूसरे विरोधी दल तो सदा अकालियो का समर्थन करते आये हैं और राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में भी उन्होंने अकालियो का समथन किया तथा हरयाणा को न्याय देने के लिए किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा लोकदल के नेता श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा ने हरयाणा को न्याय देने की बात तो कही परन्तु अकालियो की आपत्तिजनक और हरयाणा विरोधी गतिविधियों के लिए कुछ नही कहा। हमारे हरयाणा के लोकदल के संघष समिति के नेताओ ने तो साफ ही कह दिया कि उनकी न अकालियो से लड़ाई है और न उनसे गिला है, उनकी लड़ाई भारत सरकार से या भजनलाल से है। वे विरोधी दल के नाते दोनो से लड़ने का अधिकार तो रखते हैं, परन्तु अकालियो की ज्यादतियों हरयाणा के इलाके और पानी को हड़पने की (अपने लिखित वायदों से मुकर कर भी) गतिविधियो के लिए भी दोषी दूसरो को ठहराते हैं, उनको नही। इस बात मे क्या तुक है, मैं ही क्या कोई भी विचारशील व्यक्ति नही समझ पा रहा। दुःख की बात है कि हमारे कुछ भाई तो अपना कर्त्तव्य किए बिना जो हो जाए उसी का स्वागत करेंगे और कुछ लोग अकालियो की लल्लोचप्पो में लगे हैं, हरयाणा के हितो की रक्षा में नही। हमारे इस प्रकार के स्वाथपूण तथा दलगत राजनीति से प्रेरित व्यवहार के कारण हो वही रहा है जो अकाली चाहते हैं। और हर कदम पर हरयाणा अपमानित हो रहा है। क्या हरयाणा के प्रतिनिधि जनसेवक और अन्य विचारशील व्यक्ति गम्भीरता से इस दशा पर विचार करेंगे?

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षा वाहिनी

मेवात में गोहत्या रोकने के लिए पंचायत तलब

होडल, 17 अप्रैल (निस)। होडल आर्यसमाज मंदिर में चौ० राजेन्द्रसिंह की अध्यक्षता में मेवात मंडल वेद प्रचार समिति द्वारा गठित गऊ रक्षा समिति की एक विशाल बैठक हुई जिसमें प्रमुख लोगो ने हिस्सा लिया।

बैठक में मेवात क्षेत्र में बढ़ती हुई गो-हत्या पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए नेताओं ने इसे हरयाणा के माथे पर कलंक बताया। बैठक में निर्णय लिया गया कि अब मेवात क्षेत्र में गो-हत्या बरदाश्त नहीं की जायेगी, इसके लिये प्रोग्राम निश्चित किया कि ७ मई तक सभी पालो-सबल, चोबीसी, तेवतीया हसनपुर मिसरोलिया, तंवर की पंचायत बुलाकर गो हत्या बंद कराने के लिये ठोस कदम उठाये जायें। गौए कसाइयों को न बेची जायें और कसाइयों को गावों में न घुसने दिया जाये

बैठक में मांग की गयी कि फिरोजपुर झिरका के पास बना बूचड़खाना सरकार तुरन्त बंद कराये। (दैनिक ट्रिब्यून)

नारी जाति सावधान

बम्बई, 13 अप्रैल (प्रेट्र)। समाज शास्त्री महिला अधिकारों के पक्षधर आर० पी० रवीन्द्र को आशंका है कि जन्म से पूर्व शिशु के लिंग का पता चलाने, मर्जी से लड़का या लड़की पैदा करने की तकनीक और नवीन प्रजनन तकनीकों के विकास के परिणामस्वरूप महिलाओं के सामाजिक स्तर को भारी खतरा पैदा हो सकता है।

एक स्वयंसेवी संगठन के लिये तैयार किये गये अपने शोधपत्र में इस समाज शास्त्री ने लिखा है कि हम एक ऐसे युग की ओर बढ रहे हैं जिसमें नयी तकनीकों के कारण औरत से जीने का अधिकार भी छिन सकता है। शिशु के जन्म से पूर्व यह पता चल जाने के कारण कि गर्भस्थ शिशु लड़की है, गर्भ गिराये जाने लगे हैं और समाज मे इसका विरोध नहीं हो रहा है।

यही नही किराये की कोख में बच्चे पालने की तकनीक का विकास मातृत्व की अधिक क्षमता रखने वाली औरतो को बच्चे पैदा करने वाली मशीन बना सकता है। इससे अमीर देशो की बांझ औरतें अपनी पसन्द के बच्चे तो प्राप्त कर सकेंगी, लेकिन गरीब देशो में मातृत्व का वैसे व्यापारीकरण हो जायेगा, जैसे मुर्गियो का हो रहा है।

उन्होंने लिखा है कि 10 वष पहले तक भारत में गर्भपात की कल्पना से भी लोग कांप उठते थे, लेकिन अब यह पता चल जाने पर कि गर्भ में लड़की है, गर्भपात आम होने लगे हैं।

(दैनिक ट्रिब्यून से)

प्रेमनगर रोहतक में आर्य वीर दल का संगठन

१३ अप्रैल १९८६ को आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड रोहतक में "आर्य वीर दल" की शाखा का विधिवत् गठन किया गया। अध्यक्षता श्री रामप्रकाश जी सांगवान एडवोकेट ने की तथा संयोजन व्यायाम प्रशिक्षक आर्य वीर दल रोहतक श्री वेदप्रकाश जी ने किया।

शाखा गठन के बाद शारीरिक प्रशिक्षण का अभ्यास व प्रदर्शन श्री "ओमदर्शन" जी ने किया जिसम योगासन, प्राणायाम, नाड़ी रोकना, लाठी चलाना आदि सम्मिलित था। श्री "सर्वजीत सांगवान" मुक्केबाज (राष्ट्रीय रजत पदक विजेता) तथा श्री शशी भूषण अन्तर्विश्वविद्यालय मुक्केबाज के मध्य मुक्केबाजी का मनमोहक प्रदशन हुआ। श्री वेदप्रकाश जी ने दल के इतिहास व उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए युवको का आह्वान किया कि वे शारीरिक व मानसिक रूप से पुष्ट हो। श्री महावीर जी शास्त्री ने भी दल को सम्बोधित किया। पूरे रोहतक नगर से आर्यवीर व आर्य सदस्य उपस्थित थे। बाद में प्रमनगर चौक तक जलूस भी गया।

आकाशवाणी रोहतक से सुनिये

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से श्री सुखदेव शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक का भाषण—

"घटती धरती बढ़ते लोग"

विषय पर सांय 7 बजे

दिनांक 28 अप्रैल 1986 को वार्ता प्रसारित होगी।

आर्यसमाज सांघी जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान–श्री भलेराम, उपप्रधान–श्री चन्द्रसिंह, मन्त्री–श्री सुरेन्द्रसिंह पंच, उपमन्त्री–श्री जगवीरसिंह नम्बरदार, कोषाध्यक्ष–श्री चन्दरसिंह पुस्तकाध्यक्ष–श्री रामभजसिंह, प्रचार मन्त्री, श्री ओमप्रकाश।

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सभी दलों की एकता आवश्यक

आजकल हरयाणा गम्भीर परिस्थियों से गुजर रहा है। राजीव-लोगोवाल पजाब समझौते को लागू करवाने लिए पजाब की अकाली सरकार कडवा-कडवा थू तथा मीठा-मीठा हुअम लोकोक्ति पर आचरण कर रही है। पजाब समझौते के अनुसार चण्डीगढ के बदले हरयाणा को हिन्दीभाषी क्षेत्र मिलने हैं। अकाली चण्डीगढ को तो लेने के लिए उतावले है परन्तु उसके बदले हिन्दीभाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का आदि देने को तैयार नही हैं। शाह आयोग ने खरड तहसील तथा चण्डीगढ को हिन्दीभाषी क्षेत्र मानते हुए हरयाणे को देने की सिफारिश की थी। उस समय अकालियों के नेता सन्त फतेहसिंह ने चण्डीगढ हरयाणा को देने पर मरणव्रत की धमकी दी। उनकी जान बचाने के लिए सन् १६७० में तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने चण्डीगढ पजाब को तथा उसके बदले हिन्दीभाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का एवार्ड दिया। इस एवार्ड से हरयाणा को घाटा रहा। चण्डीगढ के निर्माण पर हरयाणा ने ४०% व्यय वहन कर रखा है। यह अब ५ लाख की आबादी से अधिक का भारत का सुन्दरतम नगर है। परन्तु राष्ट्रहित को दृष्टि मे रखते हुए हरयाणा ने प्रधानमन्त्री का निर्णय स्वीकार कर लिया। इसके विपरीत पजाब में अकालियों ने धर्मयुद्ध छेड दिया और इस पर अमल नहीं होने दिया। वे चण्डीगढ के साथ-साथ अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र भी पजाब मे रखना चाहते थे। लोकसभा मे जब इस विषय पर बहस हुई तो हरयाणा का पक्ष उस समय के क्रान्तिदल में ३ सासदो (प० प्रकाशवीर शास्त्री प० रघुवीरसिंह शास्त्री तथा प० शिवकुमार शास्त्री ने लिया था। उस समय लोकसभा में शेष सभी विरोधी दलो के सासदो ने पजाब के पक्ष का समर्थन किया। इस कारण हरयाणा का पक्ष कमजोर रहा और अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र नही मिल सके।

हरयाणा के हितो की रक्षा लिये के जनमत तैयार करने के लिए सब से पूर्व हरयाणा रक्षावाहिनी मैदान में कूदी। हरयाणा के कोने-कोने में कार्यकर्त्ताओ की बैठके तथा सार्वजनिक सभाओ का आयोज किया। स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में नई दिल्ली मे गृहमन्त्री के निवास पर प्रदर्शन करके अपनी मागो का ज्ञापन प्रस्तुत किया। मैथ्यू आयोग के गठन होने पर उसके समक्ष भी हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा का पक्ष बहुत ही प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत किया।

उधर हरयाणा सघर्ष समिति के प्रधान चौ० देवीलाल ने न्याय यात्रा करके सारे हरयाणा में जागृति उत्पन्न की। दिल्ली में लाखो की हाजरी के साथ लोकसभा के सामने शक्ति प्रदर्शन किया। इस न्याय यात्रा मे हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह तथा हजारो कार्यकर्त्ता भी सम्मिलित हुए। इसके पश्चात् रास्ता रोको आन्दोलन में भी हरयाणा की जनता ने अपने सघटन का परिचय दिया। इसी प्रकार जीन्द में हरयाणा वासियो ने समस्त हरयाणा सम्मेलन मे कई लाख की सख्या में पहुचकर पजाब के अकालियो के सरबत खालसा सम्मेलनो का मुंहतोड उत्तर दिया। इस विशाल शक्ति तथा सघटन का प्रभाव सारे राष्ट्र पर पडा। यह सिद्ध हो गया कि हरयाणा की जनता न्याय प्राप्ति के लिए जाग चुकी है।

मैथ्यू आयोग ने अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को दे दी परन्तु अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हिन्दी भाषी मानते हुए भी बीच में एक पंजाबी भाषी ग्राम कन्दूखेडा पडने के कारण ये क्षेत्र हरयाणा को देने की सिफारिश नहीं कर सका इस प्रकार समस्या उलझ गई। पजाब सरकार यदि उदारता दिखाते हुए एक पजाबी भाषी ग्राम अन्य हिन्दी भाषी ग्रामो के साथ हरयाणा को देने पर सहमत हो जाती तो उसे उसी समय चण्डीगढ मिल जाता और हरयाणा को अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हस्तान्तरित हो सकते थे। परन्तु पजाब सरकार तथा पंजाब के सभी राजनैतिक दल सघटित होकर हरयाणा को न्यायोचित माग के विरोध मे डट गये। परन्तु हरयाणा के राजनैतिक दलो ने सगठित न होकर अलग अलग बोलियाँ बोलनी आरम्भ कर दी। चौ० वीरेन्द्रसिंह के काग्रेसी धडे ने कहना शुरु कर दिया कि हमे केवल पानी चाहिए। अबोहर फाजिल्का कहीं रहे, इसमे कोई अन्तर नही आता। दूसरी ओर भारत सरकार ने चण्डीगढ के बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र छाटने के लिए वेंकटरमैया आयोग की नियुक्ति कर दी और उसके कार्यक्षेत्र से अबोहर फाजिल्का निकाल दिया गया। इससे हरयाणा तथा अबोहर फाजिल्का की जनता में रोष की लहर फैल गई। हरयाणा सघर्ष समिति ने इस आयोग के गठन तथा कार्य क्षेत्र का विरोध किया। हरयाणा भवन नई दिल्ली में हरयाणा सरकार द्वारा स्थापित सर्वदलीय सीमा आयोग की उप-समिति की बैठक में हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह के प्रयत्नों से आमसहमति होगई कि हरयाणा वेंकटरमैया आयोग की कार्यवाही का बहिष्कार करेगा। बैठक के प्रस्ताव की प्रति प्रधान मन्त्री को भी भेज दी गई। इस बैठक में मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल तथा चौ० वीरेन्द्रसिंह अध्यक्ष प्रदेश हरयाणा कांग्रेस भी उपस्थित थे। परन्तु बाद में पता नही किस दबाव अथवा लालच में चौ० वीरेन्द्रसिंह ने इस आयोग का स्वागत करने का वक्तव्य दे दिया। उधर हरयाणा की स्वास्थ्य राज्य मन्त्री करतार देवी ने इस आयोग का खुलकर विरोध किया। इसी प्रकार हरयाणा के अन्य मन्त्री श्री जगदीश नेहरा, श्री लक्ष्मनदास अरोडा तथा कई विधायको ने भी रमैया आयोग का बहिष्कार करने सम्बन्धी वक्तव्य दिये।

इस से पूर्व प्रधान मन्त्री ने राष्ट्रीय एकता परिषद् की जो बैठक बुलाई थी, उसमें लोकदल के नेता श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा को छोडकर किसी भी केन्द्रीय राजनैतिक दल के नेता ने हरयाणा के पक्ष का समर्थन नही किया और एक बार पुन १६७० वाली कहानी दुहराई गई जबकि केवल ३ शास्त्रियों (क्रान्ति दल के मासदों) ने हरयाणा के पक्ष में आवाज उठाई थी। इसबार भी लोकदल को छोडकर सभी दलो के नेताओ ने पजाब के पक्ष में आवाज उठाई।

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह को वह आशका पूरी हुई जब उन्होंने न्याय यात्रा के अवसर पर रामलीला मैदान नई दिल्ली की विशाल जन-सभा में हरयाणा के राजनैतिक दलो के नेताओं से अनुरोध किया था कि वे अपने केन्द्रीय नेताओं को हरयाणा के पक्ष का समर्थन करने को कहें। परन्तु भारतीय जनता तथा जनता पार्टी के हरयाणा के नेताओं ने इस ओर ध्यान नही दिया। परिणाम यह हुआ कि आज केन्द्रीय स्तर पर लोकदल को छोडकर किसी भी दल के नेता हरयाणा की न्यायोचित मागों का समर्थन नहीं करते। जब इस समस्या पर लोक सभा मे बहस होगी तो लोकदल के सिवाय सभी दलों के नेता अकालियों के पक्ष मे रहेंगे। इस प्रकार हरयाणा का पक्ष लोकसभा में कमजोर होगा। काग्रेस दल के जो हरयाणा के सासद हैं एक आध को छोडकर वे भी आजकल चुप्पी साधे बैठे हैं। यदि उन्हें हरयाणा के हितों की रक्षा की चिन्ता होती तो अब से पहले ही उन्होंने पूरी शक्ति के साथ लोकसभा तथा उस से बाहर हरयाणा के पक्ष में बोलना चाहिए था।

अत. आवश्यकता है कि हरयाणा के सभी राजनैतिक दलों को आपसी मत भेद भुलाकर एक मच पर एकत्रित होकर हरयाणा की न्यायोचित मांगों को मनवाने के लिए बड़े से बडे बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अन्यथा हरयाणा की विरोधी शक्तियाँ अपने षड्यन्त्र में सफल होंगी। यदि हरयाणा कमजोर हुआ तो सारे भारत की अखडता खतरे में पड जायेगी। हरयाणा को चण्डीगढ अबोहर फाजिल्का तथा पानी भी नहीं मिल सकेगा।

—प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार सभा उपमन्त्री

सभा की ओर से शराब के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन



२२ मार्च १९८६ को जिला रोहतक के शराब के ठेकों की नीलामी का आयोजन था। इसके विरोध में सभा के उप प्रधान महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी के नेतृत्व मे शराब विरोधी बैनरो के साथ प्रदर्शन किया गया। चित्र में सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, कार्यालय अध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य, लिपिक श्री वीरेन्द्रसिंह, श्री शेरसिंह आदि कार्यकर्त्ता दिखाई दे रहे हैं।

राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन

दनुज वृत्तियो के सहारक।
पाप ताप के अहे निवारक।
आर्य बने, जग आर्य बनाया।
सत्य धर्म के थे उद्धारक,

वसुधा के कण-कण में तुमने।
भरा चेतना का स्पन्दन।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन ॥

दूर किया सीताओ का दुख,
त्यागा राजमहल का सुख,
जीवन में कर्त्तव्य पथो से,
नहीं हुए थे तनिक विमुख

शोषित-पीडित दीन जनों का।
नष्ट किया दारुण क्रन्दन।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन ॥

वेदों के तुम थे अनुगामी,
मानवता के रक्षक, हामी,
आर्य सुसस्कृति की लहराई,
जयी पताका, तुमने स्वामी,

स्वर्गसदृश निर्मित कर भू को।
किया मातृभूमि का वन्दन।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन ॥

आर्यसमाज पंचकूला का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज सैक्टर ६ पचकूला का द्वितीय वार्षिक उत्सव बडे उत्साह पूर्वक ३१-३-८६ से ६-४-८६ तक मनाया गया। ३१ मार्च से वेदकथा आयोजित की गई तथा यजुर्वेद परायण यज्ञ हुआ। ५ अप्रैल को बच्चो की भाषण प्रतियोगिता हुई जिस में पंचकूला के विभिन्न स्कूलो के विद्यार्थियो ने भाग लिया। ६ अप्रैल को मुख्य समारोह यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् हुआ। इस में चण्डीगढ के लगभग सभी आर्यसमाज सम्मिलित हुए। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानो के प्रवचन हुए तथा उच्चकोटि के भजनोपदेशको ने मनोहर भजन सुनाये।

इस अवसर पर स्मारिका भी प्रकाशित की गई जिसका विमोचन स्वामी वेदानन्द जी ने किया जिन्होने समारोह की अध्यक्षता भी की।

जयदेव आहूजा

आर्यसमाज के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं प्रेमचन्द के पाठकों से एक निवेदन

सर्वहितकारी द्वारा आपसे अपनी एक योजना के लिए आपका सहयोग चाहता हू। आप सभी हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचन्द के नाम से परिचित हैं। प्रेमचन्द आर्यसमाज के अनेक वर्षों तक सदस्य रहे और अपने कई उपन्यासो तथा कहानियो में उन्होंने नायको को आर्यसमाज का सदस्य बनाया। उन्होंने स्वामी दयानन्द को कई लेखों में प्रशसा की और उनके अनेक सुधार कार्यक्रमों को साहित्य का विषय बनाया। जीवन के अन्तिम दौर में वे ११ अप्रैल, १९३६ को लाहौर पहुचे और उन्होने पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के अर्द्धशताब्दी समारोह का उद्घाटन किया। इस प्रकार प्रेमचन्द जीवन पर्यन्त आर्यसमाज से सम्बद्ध रहे।

प्रेमचन्द पर मैं बिगत बीस वर्षों से शोध-कार्य कर रहा हू। अब तब प्रेमचन्द पर मेरी नौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब मैं उन पर जो नया शोध-कार्य कर रहा हू, उनके लिए मुझे अनेक उपन्यासो, कहानी सग्रहो, नाटको, अनुवादो, बाल-पुस्तको आदि के प्रथम सस्करणो की आवश्यकता है। आर्यसमाज के अनेक शहरो मे पुराने पुस्तकालय है जहा पुरानी पुस्तकें तथा पुरानी पत्रिकाए सुरक्षित हैं। इन पुस्तकालयो में प्रेमचन्द की पुस्तकें (प्रथम सस्करण) तथा उनके द्वारा सम्पादित पत्रिकाए, "हस तथा जागरण" के अक अवश्य ही सुरक्षित होंगे।

मेरी सभी पुस्तकालयाध्यक्षो तथा प्रेमचन्द के प्रेमी पाठकों से प्रार्थना है कि वे इस सम्बन्ध में आवश्यक सूचना देने की कृपा करें। मेरा निवेदन है कि वे पुस्तकालय में उपलब्ध प्रेमचन्द से सम्बद्ध सामग्री की जानकारी प्रदान करें जिससे मुझे अपने शोध-कार्य में सहायता मिल सके।

प्रेमचन्द के पाठको के पास भी प्रेमचन्द की पुस्तकों के प्रथम सस्करण तथा "हस" एव "जागरण" के अक हो सकते हैं। उनसे मेरा आग्रह है कि वे उपलब्ध सामग्री की सूचना देने की कृपा करें। सूचना प्राप्त होने पर मैं सम्बन्धित व्यक्ति अथवा पुस्तकालयाध्यक्ष से सम्पर्क करूगा।

डा० कमल किशोर गोयनका
ए०/९८, अशोक बिहार फेज प्रथम
दिल्ली-११००५२

सूरत में आर्यसमाज स्थापना दिवस

आज दिनाक १०-४-८६ को अनेकों नर-नारियों की अत्यधिक उपस्थिति के बीच आर्यसमाज स्थापना का १११वा वर्ष तथा नव-संवत्सरोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ आर्यसमाज सूरत में सुसम्पन्न हुआ, जिसमें प्रवन तथा मौलिक व्याख्यान भी हुये।

हरिओ३म् आचार्य

आर्यसमाज सैक्टर २३ फरीदाबाद में वेद प्रचार

आर्यसमाज सैक्टर २३ न्यू टाउन फरीदाबाद की ओर से दयानन्द पब्लिक स्कूल में ६ से ११ अप्रैल तक श्री स्वामी ध्यानानन्द जी द्वारा वेद प्रवचन हुए। उन्होंने वर्तमान शिक्षा नीति पर भी प्रकाश डाला।

नोनकरण आर्य मन्त्री

आर्यसमाज मनाना (करनाल) का दूसरा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मनाना का द्वितीय वार्षिक उत्सव दिनांक २८ २६ ३० मार्च को बडी धूमधाम से मनाया गया। श्री रणवीर जी शास्त्री एम० ए० द्वारा २८-३ ८६ को सुबह यज्ञ व प्रवचन से उत्सव आरम्भ हुआ। दोपहर बाद बडी प्रभावशाली शोभा-यात्रा निकाली गई। शोभा-यात्रा में आगे आगे बण्ड बजता हुआ चल रहा था पीछे तीन घुडसवार ओ३म् ध्वज फहराते शान से चल रहे थे उनके पीछे श्रद्धेय रणवीर जी शास्त्री के नेतृत्व में समालखा आयसमाज के अधिकारीगण व अन्य आय अपना बनर व ओ३म् ध्वजा लिए चल रहे थे। तदुपरान्त आयसमाज बडा बाजार पानीपत की ओर से स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के पीछे आय समाज मनाना का बनर व ओ३म् पताकाय लिए आय नवयुवक जयघोष के नारे लगाते चल रहे थे अन्त मे पाच ट्रक्टर ट्रालियो मे महिलाय व बच्चे लाउडस्पीकरो मे आय भजन व गीत गारहे थे। शोभा-यात्रा उप रात सभा मण्डप मे श्री जयपाल आय भजनोपदेशक व श्री रामनिवास आय भजनोपदेशक के ५ बजे तक भजन हुए रात्रि ८ ३० से ११ ३० तक उपरोक्त दोनो भजनोपदेशको द्वारा मधुर भजन व तीव्र प्रहार पाखण्ड पर किये। स्वामी धर्मानन्द सरस्वती का प्रभावशाली भाषण राष्ट्र सेवा व गऊ सेवा पर हुआ। शांति पाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

दिनाक २९ ३ ८६ को ८ ०० बजे यज्ञ शुरु हुआ। काफी नवयुवको ने यज्ञोपवीत धारण किये तथा विभिन्न बुराइयो को छोडने का सकल्प लिया। श्री रणवीर जी शास्त्री के प्रवचन उपरात श्री रामनिवास जी ने ईश्वर भक्ति से ओत प्रोत भजन सुनाये। लगभग ११ बजे शांतिपाठ से यह सभा सम्पन्न हुई। फिर २ बजे उपरोक्त भजनीको के भजन हुए। रात्रि मे भी सुन्दर भजन व खण्डन-मण्डन कायक्रम चला। श्री धर्मसिह पाठी ने विभिन्न बुराइयो से आगाह किया तथा राष्ट्र-सेवा मे तत्पर रहने को कहा।

दिनाक ३० ३ ८६ को सुबह यज्ञ हुआ। शास्त्री जी की प्रेरणा से ३० नवयुवको व युवतियो ने यज्ञोपवीत लिये। विभिन्न बुराइया छोडने का व्रत लिया। इसी प्रकार दोपहर बाद की सभा मे मनोहर भजन हुए। स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती ने वदिकधम व आयसमाज के बारे मे उपस्थित जनसमूह को बडी सरल भाषा मे जानकारी दी जिससे लोगो पर बडा असर पडा। स्वामी जी ने राष्ट्र एकता के लिए काम करने की सलाह दी रात्रिकालीन सभा मे भी श्री रामनिवास जी आय व जयपाल जी आय के सुन्दर भजन हुए श्री रणवीर जी शास्त्री का प्रभावशाली भाषण हुआ जिसमे उन्होने आयसमाज को एक आदोलन बताया तथा विभिन्न पाखण्डो जसे राजनीतिक पाखण्ड धार्मिक पाखण्ड सामाजिक रिवाजो मे पाखण्ड से लडने की प्ररणा दी। इस तरह यह उत्सव अन्य त कामयाब रहा और लोगो पर एक अमिट छाप वदिकधम की पडी आयसमाज मनाना की ओर से आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १६५ रुपये वेदप्रचार हेतु, ५१ रुपये दशाश तथा २० रुपये सर्वहित कारी हेतु दिये।

उपमन्त्री आयसमाज मनाना

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल कुरुक्षत्र में ६ से ११ वष के बालको के प्रथम से तृतीय श्रेणी मे प्रवेश १ अप्रल से ३० अप्रल तक आधुनिकतम नि शुल्क आवास शिक्षा स्वानुशासनात्मक सुरुचिपूर्ण वातावरण मे शारीरिक बौद्धिक विकास हेतु प्रति १३ बालको पर एक अध्यापक हरयाणा और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अष्टम एव दशम श्रेणी की परीक्षाय।

देसी घी, दूध फलो से पुष्ट स्वास्थ्यवधक भोजन शुल्क मात्र १३५ रुपये मासिक। अधिक जानकारी गुरुकुल कार्यालय से सम्पक कर।

—आचाय

पंजाब में हिन्दुओं का जानमाल असुरक्षित
राज्य सरकार सर्वथा असमर्थ

केन्द्र से सुरक्षा की माग

नई दिल्ली २२ मार्च। आज यहां आय प्रादेशिक सभा की बैठक में पजाब की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए केन्द्रीय सरकार से मांग की गई कि इस समय आतकवादियों के कारण पजाब के हिन्दुओं का जान-माल सवथा असुरक्षित हो गया है। राज्य सरकार सवथा निकम्मी सिद्ध हो चुकी है। इसलिए केन्द्र सरकार हिन्दुओ की सुरक्षा की जिम्मे वारी सम्भाले।

डी० ए० वी० कालेज मनेजिंग कमेटी चित्र गुप्त रोड पर हुई इस सभा में पजाब के विभिन्न स्थानो से आय शिक्षा-सस्थाओ के प्रतिनिधि भारी सख्या मे उपस्थित थे।

सभा में पारित एक प्रस्ताव में कहा गया है कि आतकवादियो के बेगुनाह लोगो की हत्या आयसमाज की शिक्षण सस्थाओं और हिन्दुओं के धार्मिक स्थानों पर जबरदस्ती कब्जा करने का सिलसिला शुरु किया है उसके कारण हिन्दू अपने आपको असुरक्षित समझने लगे हैं। जाल न्धर बटाला कपूरथला और नकोदर में जो कुछ हुआ उससे पजाब की पुलिस का निकम्मापन भी स्पष्ट हो चुका है। यदि केन्द्र सरकार ने समय रहते कदम नही उठाया तो हालत काबू से बाहर हो सकती है।

आय प्रादेशिक सभा की ओर से तार द्वारा प्रस्ताव की प्रति प्रधान मन्त्री गृहमन्त्री आतरिक सुरक्षा मन्त्री और पजाब के राज्यपाल एव मुख्यमन्त्री को भेजी गई है। हरयाणा की आय प्रादेशिक सभा की ओर से भी इसी प्रकार की तार सब सम्बद्ध अधिकारियों को भेजकर अवि लम्ब कायवाही की माग की गई है।

महात्मा हसराज दिवस समारोह २० अप्रैल १९८६ को

हर वष की भाति इस वष भी २० ४ ८६ रविवार को महात्मा हसराज दिवस तालकटोरा गाडन इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में प्रातः ९ बजे से दोपहर १ बजे तक स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की अध्य क्षता में मनाया जारहा है।

समारोह मे आयसमाज के प्रसिद्ध विद्वान एव भारत सरकार के मन्त्री महोदय महात्मा हसराज जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करगे।

हर वष की भाति इस वष भी कुलाची हसराज माडल स्कूल, अशोक विहार एव हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग के छात्र छात्राओं द्वारा महात्मा हसराज जी के जीवन पर सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत किया जायेगा।

रामनाथ सहगल मन्त्री आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

तपोवन में वृहद्-यज्ञ २१ अप्रेल से

देहरादून २२ माच। वदिक साधन आश्रम तपोवन मे वृहद्-यज्ञ एव साधना शिविर २१ अप्रल से २७ अप्रल तक चलेगा। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ होंगे। अन्य विद्वानो के अतिरिक्त प० शिवाकात जी उपाध्याय नई दिल्ली के प्रवचन सप्ताहभर चलेंगे।

उल्लेखनीय है कि तपोवन के अप्रल तथा अक्तूबर में प्रतिवष होवे वाले वृहद यज्ञो के अवसरो पर दूरस्थ स्थानो से भी नर-नारी बडी सख्या में आते हैं

देवदत्त बाली मन्त्री वदिक साधन आश्रम, तपोवन

मिटा दो अपने लेख से उग्रवादियो की चमकती तलवारों को।
उठा दो अपने लेख से आयसमाज की महान् शक्ति को।
उभार दो अपने लेख से वतन की लडखडाती तकदीर को।
बना दो अपने लेख से आयवीर ससार को।

—रामकुमार चौहान
गांव गन्नौर, जिला सोनीपत (हर०)

गाय का दूध

—व्ही० के० पण्डित, कृषि निदेशक, सभाही (म०प्र०)

प्रसिद्ध जीव विज्ञानी डा० एस० ए० पीपन्स ने गोदुग्ध पर किये गये परीक्षणो के बाद यह पाया कि मनुष्य की प्रकृति के लिए गाय का दूध ही सबसे निरापद और पौष्टिक सम्पूर्ण आहार है, जिसमें सभी जीवनदायी तत्त्व पाये जाते हैं। यदि कोई और आहार न लिया जाये तथा केवल गाय के ही दूध का सेवन किया जाये तो व्यक्ति न केवल स्वस्थ, पुष्ट और सशक्त जीवन व्यतीत कर सकता है, वरन् उसका स्वभाव भी सात्त्विक, मनोवाछित गुणो से ओत-प्रोत हो सकता है।

डा० पीपन्स ने अपने प्रयोगो मे यह भी पाया कि गोदुग्ध मे खनिज, लवण, विटामिन तथा अन्य पोषक तत्त्व, अन्य पशुओ के दूध की तुलना मे अधिक व पूर्णत सन्तुलित होते हैं। भैंस के दूध मे पाया जानेवाला प्रोटीन बडी कठिनाई से पचता है, जब कि गाय के दूध मे पाया जाने वाला प्रोटीन सुपाच्य होता है। उसमे विटामिन ए० बी० और डी० की मात्रा भी अधिक रहती है। शरीर में सतत उत्पन्न होते रहने वाले टाक्सिन्स और रोग-जन्य विषो का निवारण करने वाले जो इन्जाइम्स गाय के दूध मे होते है, वे भैंस के दूध मे नही पाये जाते।

पोषण और स्वास्थ्य की दृष्टि से अद्वितीय गोदुग्ध मनुष्यो के लिए एक अच्छी खुराक है।

गाय के दूध के समान पौष्टिक और अत्यन्त गुणकारी पदार्थ दूसरा कोई नही है। यह मृत्युलोक का अमृत है। मनुष्य की बाल अवस्था से वृद्ध अवस्था तक गाय के दूध की अत्यन्त आवश्यकता है। मा के दूध का एकमात्र विकल्प गाय का दूध है। नवजात शिशु जो किसी कारणवश मा का दूध नही पी पाते उनके लिए गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ है।

मनुष्य को शक्ति और बल देने वाला गाय के दूध से श्रेष्ठ अन्य कोई पदार्थ त्रिभुवन मे मिल नही सकता है। गाय का दूध अत्यन्त स्वादिष्ट, रुचिकर, कान्तिदायक बुद्धि बढाने वाला, हृष्ट पुष्ट बनाने वाला, वायु, पित्त, विष, दाह रक्तपित्त श्वास, मनोव्यथा, जीर्ण-ज्वर, पाडु, अम्लपित्त, (एसिडीटी) क्षयरोग, अतिश्रम गर्भपात, नेत्ररोग, वायु रोग आदि अनेक रोगनाश करता है।

—कृषक जगत् से

हैदराबाद के सत्याग्रहियो को सूचना

भारत सरकार के आदेशानुसार हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में जेल यात्रा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को पेंशन देने का निर्णय किया गया है। अत जिन महानुभावो ने इस सत्याग्रह मे जेल यात्रा की है उनसे अथवा उनकी विधवाओ से आवेदन-पत्र भेजने की अवधि बढा कर ३१ मई, १९८६ तक करदी गई है। अत जिन्होने अभी तक अपने आवेदन-पत्र नही भेजे है वे अपना अथवा विधवा का नाम पूरा पता (पूर्व तथा वर्तमान), जेल का नाम, जत्थेदार का नाम, जेल यात्रा की अवधि आदि का विवरण (प्रमाण-पत्र यदि हो तो उसकी फोटोस्टेट प्रति) साफ-साफ शब्दो मे लिखकर २ प्रतियो मे यथाशीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के पते पर भेजने का कष्ट करे। ताकि हम शीघ्र ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेज सकें। सर्वहितकारी के पाठको से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के पुराने सत्याग्रहियो को इस विषय मे सूचित करने की कृपा करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, रोहतक

एक अच्छा काम

आजकल देहातो मे सारा दूध बिकने के लिए बाहर जाता है और ग्रामीण बच्चो को पीने के लिए दूध उपलब्ध नही होता। इस करुण दशा से दुखित होकर श्री पाडुरग शास्त्री के कुछ अनुयायियो ने सौराष्ट्र के एक गाव मे अच्छा काम प्रारम्भ किया। उन्होने गाव से जो दूध बाहर जाता था, उसे ठीक दाम देकर खरीदना शुरु किया। दूध बेचने वालो को घाटा नही और फिर उन्हे गाव में से ही पैसा मिलना शुरु हुआ। गाव को आवश्यक दूध मिलने के बाद जो भी दूध अधिक होता था उसे गाव के बाहर बेचते थे लेकिन दृष्टि यह रहा कि घर के बच्चे बिना दूध के रहे और बाहर वाले इस दूध से मौज उडाये, ऐसी स्थिति नही होने दे। इन लोगो ने दही, छाछ और घी बनाना भी शुरु किया और प्रतीक रूप से थोडे से पैसे लेकर गाव के लोगो को बेचना शुरु किया। दूध मे से जो भी चीजे बनाई जा सकती हैं, बनाकर किफायती दाम से बेचना शुरु किया। गाव के लोगो का आनन्द बढ गया। उन्हें दूध और दूध से बनी हुई अन्य चीजे वाजबी भाव से मिलने लगी।

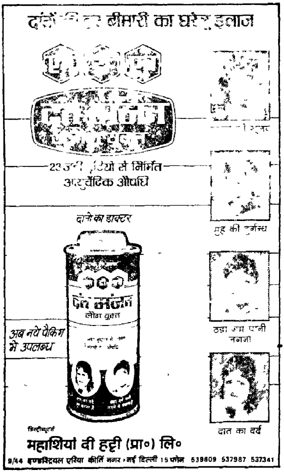
पशुपालन और गोसवर्धन में रुचि रखने वाले सब के लिये गोरस का यह प्रयोग आदर्श है।

—नलिन मेहता

होलिका पर्व

आर्यसमाज कवारी की तरफ से होलिका पर्व के उपलक्ष मे सायकाल यज्ञ किया गया। आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अनन्तसिंह आर्य क्रातिकारी ने होलिका पर्व क्यो मनाया जाता है, इसका क्या महत्त्व है, पर प्रकाश डाला। साथ मे नवयुवको को शराब जैसी बुराई से दूर रहना चाहिये। महिलाओ को भी अभद्र तरीके से पुरुषो के साथ फाग नहीं खेलना चाहिए। महाशय मनसाराम एव महाशय रिसालसिंह के शिक्षाप्रद भजन हुए।

—मन्त्री आर्यसमाज कवारी



(पृष्ठ २ का शेष)

शुभ सकल्प

इसके लिए महान् "निर्वाण-शताब्दी समारोह पर्व" पर प्रत्येक मनीषी आर्य विद्वान् महानुभावो का यही कर्त्तव्य है कि उपरोक्त पुस्तको के एतद विषयक महत्त्वपूर्ण अशो की सरल सुबोध टीकायें कर लागत मूल्य पर पुस्तके विद्यार्थियो के पठन-पाठन के लिए प्रस्तुत करने का विचार लेकर जाये। वैदिक साम्राज्य स्थापित करने के लिए भगवान् दयानन्द के इस समुल्लास के अन्त मे दिये हुए दिव्य सदेश को भी ध्यान में रखना है कि—"वय प्रजापते प्रजा अभूम (यजु० १८-२९) हम प्रजापति परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा, हम उसके किंकर भृत्यवत् है। वह कृपा करके अपनी सृष्टि मे हमको राज्याधिकारी करे और हमारे हाथो से अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावें।

अत आर्यो ! हमे नई पीढी को सुयोग्य, धार्मिक, ज्ञानी, आर्यपूर्ण राजनीतिज्ञ बनाना है। अकर्मण्य बनकर, हाथ पर हाथ धरकर नही बैठे रहना है। लेकिन ऐसे महाशय तैयार करने हैं जो आगे चलकर निष्काम कर्मयोग को जानकर विधानसभा, लोकसभा मे जाकर देश मे फैली हुई अराजकता, साम्प्रदायिकता, स्वार्थपरायणता को त्यागकर धार्मिक वैदिक साम्राज्य स्थापित करने मे सहयोगी बन सके। इसके लिए हमारे पास साधन तो प्रचुर मात्रा मे हैं, केवल आवश्यकता है शुभ-सकल्पवान् कर्मठ कार्यकर्त्ताओ की।

शिवरात्रि विशेषांक वाह ! वाह

सभा के मुख-पत्र "सर्वहितकारी" का शिवरात्रि विशेषाक प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव मे सुन्दर एव आकर्षक था। सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। बाकी लेख भी पठनीय थे। 'सर्वहितकारी' आर्यजगत् का वह एक मात्र पत्र है जो वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढाने के लिए कृत-सकल्प है। इस पत्र के विशेषाको की बडी धूम रहती है। यह अक भी उन्ही विशेषाको की शृखला में एक नई कडी है।

यह पत्र बडी तेजी के साथ लोकप्रियता की ओर अग्रसर हो रहा है। आशा है कि एक दिन यह पत्र उच्चकोटि के पत्रो मे अपना महत्त्वपूर्ण स्थान लेगा। इस विशेषाक की सफलता हेतु बधाई।

रामकुमार आर्य, आर्यसमाज दुल्लागढ गोहाना (सोनीपत)

आर्यसमाज हांसी का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हासी मे ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष मे ३ मार्च से ८ मार्च तक आचार्य वेदप्रकाश जी दिल्ली वालो की कथा तथा श्री सुल्तानसिंह व खुशीराम जी के मधुर भजन हुए।

मन्त्री आर्यसमाज हासी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

र० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि सम्वत् १,९६,



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३ अङ्क २२ २८ अप्रल १९८६ वार्षिक शुल्क २०) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

वेदज्ञान शिक्षा

ले०—स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती

धर्म का स्वरूप

प्रश्न—धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर—धर्म उन स्वाभाविक गुणो का नाम है कि जिनका होना वस्तु की सत्ता को स्थिर रखता है जिनके न होने पर वस्तु की सत्ता स्थिर नहीं रह सकती ।

प्रश्न—हमें दृष्टात देकर समझा दो।

उत्तर—जिस प्रकार गर्मी और तेज अग्नि का धर्म है जहा अग्नि होगी वहा गर्मी और तेज अवश्य होगा जब गर्मी और तेज न होगा तो आग न रहेगी।

प्रश्न—और दृष्टात दो।

उत्तर—जिस प्रकार मनुष्य के जीवन के वास्ते शरीर के अग और प्राण हैं। यदि कोई अग कट जावे तो मनुष्य के जीवन का नाश न होगा परन्तु प्राणों के न रहने पर मनुष्य का जीवन कभी न रहेगा।

जीव और अनादि पदार्थ

प्रश्न—क्या जीव का धर्म प्राण धारण करना है ?

उत्तर—जीव का धर्म ज्ञान और प्रयत्न अर्थात् ज्ञान के अनुसार काम करना है

प्रश्न—जीव को काम करने की आवश्यकता क्यो हुई ?

उत्तर—इसलिए कि जीव अल्पज्ञ है जिससे उसको दु ख उत्पन्न होता है। अत दु ख को दूर करने के लिए जीव को कम करने की आवश्यकता है

प्रश्न—दु ख का लक्षण क्या है ?

उत्तर—आवश्यकता का होना और उसकी पूर्ति के साधन का न होना दु ख है अथवा स्वतन्त्रता का न होना दु ख है।

प्रश्न—दु ख के अर्थ तो तकलीफ हैं ?

उत्तर—दु ख और तकलीफ दो पर्यायवाची शब्द हैं जो लक्षण दु ख का है वही तकलीफ का भी है।

प्रश्न—दु ख का कोई प्रमाण देकर समझाओ

उत्तर—जिस प्रकार एक मनुष्य घर मे बैठा है उसे कोई कष्ट नही यदि उसे घर से निकलने को बलपूर्वक रोक दिया जाये तो वह बन्धन ही दु ख है। जब जब क्षुधा लगे और भोजन न मिले तो दु ख है। यदि भोजन मिल जाये तो कष्ट नही। इसी प्रकार बहुत से उदाहरण मिल सकते हैं।

प्रश्न—जीव अल्पज्ञ क्यो है ?

उत्तर—एकदेशी अर्थात् परिच्छिन्न होने से अल्पज्ञ है।

प्रश्न—जीव दु ख से किस प्रकार छूट सकता है ?

उत्तर परमेश्वर को जानने और उसकी आज्ञानुसार काय करने से।

ईश्वर

प्रश्न—ईश्वर एक है या अनेक ?

उत्तर—ईश्वर एक है

प्रश्न—ईश्वर कौन है ?

उत्तर—जो इस जगत को रचने वाला पालने वाला और नाश करने वाला है वह ईश्वर है।

प्रश्न—ईश्वर के होने में क्या प्रमाण है ?

उत्तर जगत की प्रत्येक वस्तु का नियमानुसार काय करना और इन नियमो के परीक्षार्थ वेद जसे पूर्ण शास्त्र का होना

जगत के बनाने मे न्याय तथा दया इन दो गुणो का उपयोग

प्रश्न—ईश्वर को जगत के रचने की क्या आवश्यकता थी ?

उत्तर—उसकी स्वाभाविक दया और न्याय की प्रेरणा ही जगत बनाने का हेतु है।

प्रश्न न्याय और दया तो किसी दूसरे पर होती है क्या ईश्वर के अतिरिक्त और वस्तु भी जगत से पहले थी जिसके न्याय और दया की प्रेरणा से जगत् बना

उत्तर—ईश्वर के अतिरिक्त प्रकृति और जीव अनादि पदार्थ हैं अर्थात ईश्वर प्रकृति और जीव तीन वस्तु अनादि हैं जीवो पर दया और न्याय के लिए ईश्वर जगत को रचता अर्थात उत्पन्न करता है

प्रश्न—क्या जगत से जीव और प्रकृति पृथक हैं ?

उत्तर—जीव और प्रकृति अनादि हैं और जगत उत्पन्न किया हुआ है

प्रश्न—यदि जीव और प्रकृति परमेश्वर के उत्पन्न किये हुए नहीं हैं तो ये परमेश्वर के आज्ञाकारी किसने किये हैं ?

उत्तर—परमेश्वर अपने सर्वोत्तम गुण आनन्द और सर्वज्ञता आदि के कारण से इन पर अनादि से राज्य करता है।

उत्पत्ति का अर्थ

प्रश्न—जो लोग परमेश्वर को प्रकृति और जीव आदि का रचने वाला कहते हैं, क्या उनका विचार असत्य है ?

उत्तर—उत्पन्न करने का अर्थ प्रकट करने का है अभाव से भाव मे लाना नही क्योकि बिना शरीर मे आये जीव का और बिना काय जगत बने प्रकृति का ज्ञान नहीं हो सकता इसलिए जो शरीर और जगत् का रचने वाला है वही उत्पन्न करने वाला है।

कहां शब्द

प्रश्न—ईश्वर कहां है ?

उत्तर—'कहां' शब्द एकदेशी वस्तु के लिए आता है। क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है, इसलिए ईश्वर 'कहां' है, यह प्रश्न ही अयुक्त है। जैसे कोई कहे—दूध में सफेदी कहां है तो कहेंगे कि प्रत्येक स्थान में। यदि कोई कहे कि दही में मक्खन कहां है ? उत्तर होगा कि प्रत्येक स्थान में। यदि कोई कहे कि मिश्री में मिठास कहा है ? जवाब होगा कि प्रत्येक स्थान में। इसी तरह जो वस्तु प्रत्येक स्थान में रहती हो उसके लिए उत्तर होगा कि प्रत्येक स्थान में जगह-जगह। कारण यह होगा कि 'कहां' कहने का अर्थ किसी एक स्थान को ज्ञात करने का है, अत यह प्रश्न अयुक्त है।

दीखता क्यो नहीं

प्रश्न—यदि ईश्वर प्रत्येक स्थान मे है तो हमारे देखने मे क्यों नही आता ? क्योंकि दूध में सफेदी हम नेत्र से देखते हैं, मिश्री मे मिठास हम जिह्वा से ज्ञात करते हैं।

न दीखने के ६ कारण

उत्तर—वर्तमान वस्तु के दृष्टि न आने के ६ कारण होते हैं। प्रथम वस्तु हमारे नेत्र से बहुत समीप हो। जैसे सुरमा नेत्र से बहुत निकट होने के कारण दृष्टि मे नही आता। दूसरे विशेष दूर होने से दृष्टिगोचर नहीं होता। तीसरे-अति सूक्ष्म होने से, जैसे परमाणु अर्थात् जर्रे विद्यमान होने पर भी दृष्टिगत नहीं होते। चौथे-बहुत बडा होने से, जैसे हिमालय। पाचवें-इन्द्रिय अर्थात् चक्षु आदि में दोष आ जाने से, जैसे अन्धे को दूध में सफेदी दृष्टिगोचर नही होती। छठे-अन्तर या आवरण होने से, जैसे हम दीवार के उस ओर की वस्तुओं को देख नही सकते।

ईश्वर के न दीखने मे दो कारण

प्रश्न—इन छ कारणो में से ईश्वर के हमे न दिखाई देने का कौन सा कारण है ?

उत्तर—क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है, इस कारण जीव के अन्दर बाहर होने से बहुत ही समीप है और दूसरे वह बहुत ही सूक्ष्म है। यही दो कारण हैं जिनसे ईश्वर हमें दृष्टिगोचर नहीं होता।

प्रश्न—जो बहुत ही निकट हो उसके दृष्टिगोचर न होने का क्या कारण है ?

उत्तर—क्योंकि मनुष्य को प्रत्येक वस्तु के देखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है, इसलिए जब तक नेत्र और वस्तु के मध्य में प्रकाश की किरणे न हो तब तक नेत्र से विशेष समीप होने के कारण देख नही सकते। नेत्र और सुरमे के मध्य प्रकाश की किरणे नही, अत उसको भी नही देख सकते।

दर्पण

प्रश्न—तो क्या हम ईश्वर को किसी प्रकार जान भी सकते हैं ?

उत्तर—हा ईश्वर को हम जान सकते हैं।

प्रश्न – किस प्रकार ?

उत्तर—जिस प्रकार से नेत्र के सुरमे को जान सकते हैं उसी प्रकार परमेश्वर को भी जान सकते हैं।

प्रश्न—नेत्र के सुरमे को देखने के लिए तो केवल एक शीशे की आवश्यकता है। शीशा हाथ मे लिया और नेत्र का सुरमा नजर आया।

उत्तर—जिस प्रकार नेत्र के सुरमे को देखने के लिए बाह्य शीशे की आवश्यकता है, वैसे ही ईश्वर को ज्ञात करने के लिए भी एक आतरीय शीशा है।

प्रश्न—वह आतरीय शीशा कौन-सा है ?

उत्तर—मन अर्थात् मनुष्य का हृदय, जिससे परमेश्वर को मालूम कर सकते हैं।

प्रश्न—मन क्या वस्तु है ?

उत्तर—मन वह भीतरी और सूक्ष्म वस्तु है जिसके कारण हमें एक समय में दो वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता।

प्रश्न—मन प्रकृति से बना है या अप्राकृत है तथा नित्य है या अनित्य ?

उत्तर—मन प्रकृति से बना है। उत्पत्ति वाला है। नित्य नहीं है।

प्रश्न—मन तो प्रत्येक मनुष्य के पास है, फिर प्रत्येक मनुष्य को दृष्टिगोचर क्यों नहीं होता ?

उत्तर—यदि शीशे और नेत्र के मध्य में प्रकाश न हो तो शीशे की उपस्थिति में भी सुरमे का ज्ञान नही होता।

आवरण और उसका निवारण

प्रश्न—मन और ईश्वर के मध्य कौन-सा आवरण है जिसके कारण ईश्वर हमें दृष्टिगोचर नही होता ?

उत्तर—अविद्या का आवरण जब तक विद्या के प्रकाश से दूर न हो तब तक ईश्वर दृष्टिगोचर नही हो सकता।

प्रश्न—अविद्या के दूर करने का उपाय क्या है ?

उत्तर—'सत्यविद्या'।

प्रश्न—क्या कोई असत्यविद्या भी है ?

उत्तर—'विद्या' शब्द ज्ञान का दूसरा नाम है और ज्ञान दो प्रकार का होता है—एक उत्पत्ति वाले पदार्थों का जानना, दूसरे नित्य पदार्थों का जानना। जो उत्पत्ति वाले पदार्थ हैं वे सब विकारी हैं, इस वास्ते उनका जानना भी परिणामी है। उसी को असत्य विद्या भी कहते हैं। क्योंकि सत्य कहते हैं नित्य को यानि जो तीन-तीन काल में रहे। लेकिन परिणामी की सत्ता स्थिर नहीं रहती, इसलिए अनित्य है।

तीन प्रकार का ज्ञान

प्रश्न—ज्ञान कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर-ज्ञान तीन प्रकार का होता है—विद्या, अविद्या, सत्यविद्या।

प्रश्न—अविद्या किसे कहते हैं ?

उत्तर—पदार्थ के यथार्थ तत्त्व को न जानकर उलटा ख्याल करना उसी को अविद्या कहते हैं।

प्रश्न—अविद्या गुण है या द्रव्य ?

उत्तर—अविद्या गुण है।

प्रश्न—अविद्या जीव का स्वाभाविक गुण है या नैमित्तिक ?

उत्तर—अविद्या नैमित्तिक है, स्वाभाविक नही।

प्रश्न—यदि अविद्या नैमित्तिक गुण है तो उसकी उत्पत्ति का क्या कारण है ?

उत्तर—इन्द्रियों की कमजोरी और सस्कार की खराबी अविद्या की उत्पत्ति का कारण है ?

प्रश्न—अविद्या से किस प्रकार का ज्ञान होता है ?

उत्तर—चेतन यानी ज्ञान वाले जीवात्मा को अचेतन प्रकृति का कार्य जानना, नित्य यानी अनादि वस्तुओ को उत्पत्ति वाली और उत्पत्ति वाली को अनादि समझना। शरीर आदि अपवित्र पदार्थों को पवित्र और दु ख देने वाले पदार्थों को सुख का कारण और दु ख को सुख समझना इस प्रकार का ज्ञान अविद्या कहलाती है।

प्रश्न—विद्या किसे कहते हैं ?

उत्तर—विद्या चेतन जीवात्मा के ज्ञान का नाम है, जो अविद्या के गुण से पृथक् हो और जिस ज्ञान से कि जितने परिणाम होते जायें उसी प्रकार से शुद्ध परिणामी ज्ञान हों उसे विद्या कहते हैं।

प्रश्न—सत्यविद्या किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो सर्वज्ञ ईश्वर का अपरिणामी ज्ञान है। जो ज्ञान देश, काल और वस्तु के भेद से बदलता नहीं उसे सत्यविद्या या वेद कहते हैं।

प्रश्न—सत्यविद्या और विद्या का भेद किसी दृष्टांत से समझाओ।

उत्तर—जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश मनुष्यों के लिए संसार के आदि में ईश्वर ने उत्पन्न किया है, वह प्रत्येक मनुष्य के लिए एक-सा है परन्तु मानुषी सृष्टि का प्रकाश दीपक, लेम्प, गैस, बिजली आदि अनेक भांति का है वह प्रत्येक गृह के लिए पृथक्-पृथक् भांति का है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

बड़े मियां तो बड़े मियां, छोटे मियां सुबहान अल्लाह

बलवन्तसिंह बोले—

पंजाब के सब दलों ने मोहर लगादी

— प्रो० शेरसिह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

पहिले बरनाला बोले—कहा हरयाणा मे कोई गाव नही जाना चाहता। हिन्दी भाषी गावो पर फाजिल्का अबोहर मे तो कहर ढा रखा था, अब दूसरे हिन्दी भाषी इलाको को भी आतकित करने पहुच गये। परन्तु राजपुरा, समाना और पटियाला तहसील के लोगो, वहा से १९७१ में चुने गये ससद सदस्य श्री सतपाल कपूर और इस क्षेत्र के हिन्दू सगठनो ने हरयाणा मे शामिल किये जाने की जोरदार माग करदी। इस पर छोटे मिया पजाब के वित्तमन्त्री स० बलवन्तसिह बौखला गये और पजाब समझौते की धारा ७४ के अनुसार सीमा समायोजन आयोग की नियुक्ति की माग करदी। साथ ही यह भी कह दिया कि चण्डीगढ के बदले हरयाणा को इलाका देने की बजाये केवल ८,००० एकड जमीन दे दी जाये। पजाब के सभी राजनैतिक दलो ने एक स्वर से उनके प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया।

मैंने तो प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री को पहिले ही पत्र लिख दिया था कि यदि वेंकट रमैया आयोग उन गावो मे से ही कुछ गाव हरयाणा को दे सकता है जो धारा ७४ के आधीन नियुक्त किया जाने वाला सोमा समायोजन आयोग के द्वारा हरयाणा को हर हालत मे मिलने वाले हैं तो फिर इस आयोग का कोई काम नही रह गया और वह निरथक हो गया। स० बलवन्तसिह की सीमा समायोजन आयोग तुरन्त बिठाये जाने की माग ने तो वेंकट रमैया आयोग को निरथक बनाकर रख दिया है। इसके बाद वेंकट रमैया आयोग का काम केवल मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट पर विचार करके उस आयोग की इस सिफारिश को लागू करना रह गया, जिसमे न्यायमूर्ति मैथ्यू ने श्रीमती इन्दिरा गाधी का इरादा और उनकी मन्शा को पूरा करने के लिए लिखा है। यह तो पजाब समझौते में साफ-साफ लिखा है कि हरयाणा को चण्डीगढ के बदले दिये जाने वाले इलाके और सीमा समायोजन आयोग के द्वारा हरयाणा को मिलने वाले इलाके बिल्कुल अलग-अलग होगे। एक मायने मे तो स० बलवन्तसिह ने वेंकट रमैया आयोग की आखे खोल दी और बता दिया कि उन का और सीमा समायोजन आयोग का काम और इलाके अलग-अलग हैं।

अब वेंकट रमैया आयोग के पास श्रीमती इन्दिरा गाधी का इरादा पूरा करने के लिए केवल फाजिल्का अबोहर का इलाका रह गया। यह आयोग या तो कन्दूखेडा समेत अबोहर फाजिल्का हरयाणा को दे। यदि वह ऐसा न कर सका तो हालत वही पहुँच जायेगी, जहा २६ जनवरी, १९८६ को मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट आने पर हो गई थी।

चण्डीगढ तो पजाब को तभी दिया जा सकता है, जब हरयाणा को बदले में इलाका मिल जाये। सन्त फतहसिह की पेशकश और उसके आधार पर इन्दिरा जी का फैसला तथा पजाब समझौते की धारायें ७२ और ७३ का इसके सिवाये और कोई अर्थ नही हो सकता। हरयाणा को बदले में इलाका न दिया जाये तो सन्त फतहसिह की पेशकश के आधार पर किया गया फैसला खत्म और चण्डीगढ हिन्दी भाषी होने के नाते तथा शाह आयोग की रिपोर्ट के अनुसार हरयाणा का भाग बन जाता है। उस हालत में पजाब अपनी राजधानी कही और बनाये। पजाब को यदि राजधानी के लिए राजपुरा के १३ गाव बहुत उपयुक्त लगते है तो वहीं बना ले। पजाब तो हरयाणा को एक पजाबी भाषी गाव देने को तैयार नही, हरयाणा तो पजाब सरकार के द्वारा स्वीकृत ये १३ हिन्दी भाषी गाव भी बडे उदार हृदय से समस्या के समाधान के लिये और सीमावर्ती प्रदेश मे शाति की स्थापना के लिए खुशी-खुशी दे देगा।

रावी ब्यास के पानी में हरयाणा का हक और सतलुज यमुना जोड नहर के बारे में अकालियों की नीयत तो सब जानते हैं, उनके अदलते-बदलते वक्तव्यो का झूमा-झूमी खेल जरूर देखने वाला है। आज एक बात कहना और फिर उससे मुकर जाना, अकालियो का पुराना शौक और धन्धा है। यह काम निस्सकोच करने के वे आदी हो चुके हैं। बरनाला जी ने पहले तो जोड नहर का काम १५ अगस्त, १९८६ तक पूरा करने के आश्वासन दिये। फिर नहर की निशानदेही को बदलवाने की माग के बहाने से काम रोक दिया। उसका फैसला हो गया और फिर काम तेज करने का आश्वासन दे दिया। एक दिन अचानक कह डाला कि पजाब के पास तो फालतू पानी ही नही है, फिर नहर बनने की क्या तुक है। हरयाणा तो जैसे फालतू पानी के लिए ही भिखारी की तरह हाथ फैलाये खडा हो। अकाली विद्यार्थियो के सगठन ने कार सेवा के द्वारा नहर को मिट्टी से भरने का काम शुरु कर दिया उनके वक्तव्य से प्रेरणा लेकर। अब फिर नहर का काम पूरा करवाने का वायदा दे रहे हैं। अभी तक एक तिहाई जमीन, जिस पर नहर खुदनी है, सरकार ने अपने कब्जे मे तो नही ली है और उधर किसान यूनियन मे आदोलन शुरु करवा दिया। नाटकीय ढग मे यूनियन के कुछ लोग जेल में भी भेज दिये। सब जानते हैं कि प्रकाशसिह बादल के कहने पर यूनियन के लोग आदोलन खडा कर रहे है। मुख्यमन्त्री पद के लिए चाहे बरनाला और बादल झगडते हो, परन्तु हरयाणा का अधिक मे अधिक इलाका तथा पानी छीनने मे दोनो एक हैं।

दुख की बात यह है कि हरयाणा के राजनैतिक नेता अपनी अन्दरूनी लडाई मे लगे हैं और हरयाणा के अधिकारो और हितो के लिए एक स्वर से नही बोलते। अपना-अपना ही बेसुरा राग अलापते है। पजाब के सभी दलो के लोग तो हरयाणा के साथ अन्याय करने मे भी एक स्वर से बोलते हैं, परन्तु हरयाणा के नेता न्याय के लिए भी एक सम्मिलित आवाज नही लगाते।

हरयाणा के सभी दलो के नेताओ से मेरा अनुरोध है कि वे शीघ्र इकट्ठे होकर व्यक्तिगत मान-अपमान की बात भुलाकर न्याय के लिए सर्वसम्मत माग करे। यदि हरयाणा न्याय प्राप्त करने मे असफल होता है तो किसी का मान नही रहता, सब का ही अपमान होगा। पजाब मे जो खेल चल रहा है उसमें हरयाणा का अपमान होना और उसका कमजोर होना, राष्ट्र को भी कमजोर करेगा और यदि अन्याय करने वालो के होसले बढे तो राष्ट्र के लिए खतरा भी बढेगा।

वैशाखी का उत्सव मनाया गया

दिनाक १४-४-८६ रविवार को आर्यसमाज गन्नौर शहर मे वैशाखी का पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया। प्रात ८ बजे से १० बजे तक हवन हुआ, उसके बाद मुण्डन सस्कार किया गया और इसके बाद महात्मा प्रेम भिक्षु जी, दिवान बेलाराम जी, ओम्प्रकाश वर्मा, हरीश जी वधवा, रामस्वरूप वर्मा, स्वामी दयानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डाला और अन्त मे शाति पाठ के बाद लगर का आयोजन किया गया।

—ओम्प्रकाश वर्मा मन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर

वैदिक साधु आश्रम पंजाब का वार्षिक महोत्सव

वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड रोपड के पवित्र प्रागण में १८ मई रविवार को विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जारहा है। जिसमे पजाब प्रात की आर्यजनता एकत्र होकर वर्तमान परिस्थितियों मे पजाब प्रान्त में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्य को कैसे आगे बढाया जाये। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री स्व सर्वानन्द जी महाराज प्रधान वैदिक यतिमण्डल होंगे। अत आर्यजन सपरिवार इष्ट मित्रो दलबल सहित रोपड पहुच कर इस १८ मई के सम्मेलन में भाग लें।

स्वा वेदानन्द सरस्वती
अध्यक्ष वैदिक साधु आश्रम, रोपड़

हरयाणा को न्याय दिलाने के लिए प्रो० शेरसिंह द्वारा प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री को पत्र

जानकार सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी तथा गृहमन्त्री श्री नरसिंहराव को एक पत्र लिखकर माग की है कि अकाली सरकार द्वारा वेंकट रमैया आयोग के सम्मुख जो उलझने खडी की जारही हैं उन्हे दूर किया जाए। मैथ्यू आयोग की भाति यह आयोग भी स्पष्ट निर्णय देने मे सकोच न करे।

प्रो० शेरसिंह ने अपने पत्र मे अनुरोध किया है कि जब अकाली दो हजार की आबादी वाला छोटा-सा ग्राम कन्दूखेडा हरयाणा को नही देना चाहते तो फिर चण्डीगढ जिसकी आबादी 5 लाख से अधिक है, और शाह आयोग ने चण्डीगढ के साथ पूरी खरड तहसील को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर हरयाणा को दिया था, तो उसे भी पजाब को नही देना चाहिए। पजाब को अपनी नई राजधानी अन्य स्थान पर ढूढ लेनी चाहिए।

आपने अपने पत्र मे स्पष्ट किया है कि वेंकट रमैया आयोग को चण्डीगढ के बदले हिन्दीभाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को देना चाहिए क्योकि चण्डीगढ के बदले अन्य क्षत्र तलाश करना कठिन है।

पजाब सरकार हिन्दीभाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का दिये बिना मुफ्त मे चण्डीगढ को लेना चाहती है, इस अन्याय को हरयाणा की जनता कदापि स्वीकार नही करेगी। अब अकाली सीमा आयोग की माग करके सारी समस्या को पुन उलझाने का यत्न कर रहे है।

श्री प्रियव्रत और श्री सन्तराम को गोवर्धन पुरस्कार

जयपुर १० अप्रैल। सघड विद्या सभा ट्रस्ट ने १९८६ का गोवर्धन पुरस्कार ज्वालापुर के आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति तथा समाज-सेवी और लेखक श्री सन्तराम को देने की घोषणा की है।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री गोवर्धन बलभद्र कुमार हूजा ने यहा पुरस्कार समिति के निर्णय की जानकारी देते हुए बताया कि इससे पूर्व १९८१ मे आचार्य रामप्रसाद वेदालकार, १९८२ मे डा० भवानीलाल भारतीय, १९८३ मे प० विश्वनाथ, १९८४ मे विद्यामार्तण्ड प० सत्यकाम तथा १९८५ मे वेदमार्तण्ड प० भगवदत्त पुरस्कृत हुए।

उन्होने बताया कि श्री प्रियव्रत को इसी माह होने वाले गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के दीक्षात समारोह मे पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। श्री सन्तराम को दिल्ली मे समारोह आयोजित कर पुरस्कार दिया जायेगा।

श्री हूजा ने बताया कि सघड विद्या सभा ट्रस्ट प्रारम्भ में डेरागाजी खान जिले के सघड तहसील के निवासियो की शिक्षा हेतु बना। १९४७ मे देश विभाजन के समय ट्रस्ट ने गुडगाव मे एक शिक्षण सस्थान की स्थापना की। अब जयपुर से सचालित इस ट्रस्ट द्वारा हर वर्ष शिक्षा, समाज सुधार एव वैदिक साहित्य के क्षेत्र मे पुरस्कार दिये जाते है। समाज सेवा के कार्यो के अतिरिक्त ट्रस्ट तेरह पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है।

पुरस्कार प्राप्त ८५ वर्षीय श्री प्रियव्रत गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं। उनकी पुस्तकें वेदोद्यान के चुने हुए फूल तथा वेद का राष्ट्रीय गीत पुरस्कृत हो चुकी हैं।

दूसरे पुरस्कार विजेता ९९ वर्षीय श्री सन्तराम इस शताब्दी के प्रथम दशक से लेखन और सम्पादन के क्षेत्र मे "सन्तराम बी० ए०" के नाम से प्रसिद्ध है। आपकी करीब सौ पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं और इन पर अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। १९२२ मे कालेज छोडने के उपरान्त आपने जातपात तोडक मण्डल बनाया। आपने अपना समस्त जीवन जातिप्रथा के विरोध में लगा दिया। आखे खोने के बावजूद आप समाज सेवा के कार्यों मे लगे हुए हैं।

सघड विद्यासभा ट्रस्ट
जयपुर

आज के परिवेश में आर्य विद्यालयों की भूमिका

यह खुशी की बात है कि भारत मे प्रत्येक धर्म वालो ने आर्य-समाज की देखा-देखी शिक्षण सस्थाए खोली हैं। जैसे सनातन धर्म विद्यालय, जैन विद्यालय आदि। इस प्रकार हिन्दू विद्यालयो की सख्या तो दिन-प्रति दिन बढ गई, परन्तु धीरे-धीरे धर्मशिक्षा जो पढाई जाती थी, अब वह नाममात्र रह गयी है।

आर्य शिक्षण सस्थाए भी इस उदासीनता की शिकार हो गयी हैं, जबकि आर्यसमाज ने ही सर्व-प्रथम शिक्षा क्षेत्र मे पहल की थी। तथा उसके माध्यम से ही आर्य कन्याविद्यालय खोले गये थे। जिसके माध्यम मे धर्म शिक्षा विधिवत् दी जाती थी। जो कि प्रत्येक विद्यालय मे अनिवार्य होती थी। आज जब हम डी० ए० वी० स्थापना की शताब्दी मना रहे हैं, तो इस उपेक्षा को देखकर हैरानी होती है। यह जो पतन की स्थिति देखने में आ रही है उसके लिए प्रबन्धक समितिया और प्राचार्य सबसे अधिक जिम्मेदार हैं। हमारी प्रान्तीय भाषाए भी कुछ अश तक उत्तरदायी हैं। प्रबन्धक समिति एव प्रधानाचार्य सरकारी अधिकारियो को दोष देकर अपने आपको बचाना चाहते है। जो कि निराधार है। सच तो यह है कि सरकार की ओर से शिक्षा देने को मनाही नही है। और न ही कोई सरकारी अधिकारी ऐसी बात कहेगा। क्योकि आज भी ऐसे आर्य विद्यालय हैं, जहा पर धर्म शिक्षा दी जाती है।

वस्तुत समस्या यह है कि हमारी प्रबन्धक समितियो ने अन्य विचार वाले पदाधिकारी चुने जाने के कारण वह धर्म के प्रति उदासीन हैं हमें यह कहते हुए गर्व तो होता है कि "हम हिन्दू बाहुल्य राज्य में रहते हैं और वही धर्म सकट ग्रस्त है" जो कि उत्तरोत्तर जटिल होता जा रहा है। दूसरी ओर अन्य धर्म वाले इस काम के लिये जुटे हुये हैं।

इस शताब्दी के अवसर पर हमें गम्भीरतापूर्वक इस पर विचार करना होगा तथा वस्त स्थिति को समझना होगा। अत तमाम प्रान्तीय सभाओ, प्रबन्धक समितियो तथा आर्य विद्यालयो के प्रधानाचार्यो मे निवेदन है कि वह अपने विद्यालयों में धर्म शिक्षा प्रारम्भ करें तथा प्रत्येक विद्यार्थी को सन्ध्या हवन आदि का अभ्यास करावें। प्रत्येक विद्यार्थी को धर्म पुस्तक सुलभ हो सके, यह प्रयास होना चाहिये। यदि हमारे बच्चे धर्म प्रेमी बन जायेंगे तो वैदिक धर्म की ओर कोई आख न उठा सकेगा, क्योकि उसी से ही देशभक्ति उत्पन्न होगी।

प्रभु से प्रार्थना है कि हम सब को सद्बुद्धि दे कि हमारे अन्दर वह भाव पैदा हो, कि हम इस कार्य को पूरा करने का का सकल्प ले सकें, तथा यह ध्यान रखें कि विद्यालय राष्ट्र निर्माण के लिये चलाये जा रहे हैं। वैदिक धर्म की जय।

वेदमित्र हापुडवाले
सदस्य हरयाणा विद्या सभा

किला मोहल्ला सुधार सभा का चुनाव

किला मोहल्ला सुधार सभा (पजीकृत) रोहतक का वार्षिक चुनाव डाक्टर नरेन्द्र प्रेमी चुनाव अधिकारी की अध्यक्षता मे २०-४-८६ को हुआ। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—डाक्टर अर्जुनदास मिगलानी

उप प्रधान—श्री भगवान दास

महा सचिव—श्री ऐस० के० कक्कड

सचिव—श्री तेज सिंह

सहायक सचिव—श्री कृष्ण लाल

खजानची—डा० लक्ष्मी नारायण

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्यसमाजो तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का आर्थिक वर्ष ३१ मार्च, १९८६ को समाप्त हो चुका है। अत आर्यसमाज अपने आर्य सभासदो से उनकी आय (वार्षिक) का शताश (१००वा भाग) जो भी बनता है, शुल्क रूप मे प्राप्त करे तथा अन्तरग सभा की बैठक में अपने आर्यसमाज के नियमानुसार आर्यसभासद् स्वीकार करे उनकी सूची आर्यसमाज के सूचना पट पर चिपका कर आर्यसमाज के वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) हेतु १५ दिन का नोटिस (एजेण्डा) आय सभासदो को भेज देवे। साधारण सभा की बैठक मे आर्यसमाज के पदाधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो का चुनाव करके उनकी एक सूची सभा के पत्र सर्वहितकारी मे प्रकाशनाथ भेज देवे।

आर्य सभासदो मे वर्षभर मे उनके शुल्क से जो आय हुई है उसके दसवे भाग (दशाश) की राशि जो भी बने तथा वेदप्रचार कम मे कम १०१ रुपये तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क २० रुपये सभा के नाम मनिआर्डर द्वारा भेज देवे। यदि प्रचार की माग हो तो आप १५ दिन पूर्व सभा को पत्र लिखने का कष्ट करे, ताकि समय पर प्रचार प्रबन्ध हो सके।

अन्तरंग तथा रक्षावाहिनी की बैठकों की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक सिद्धाती भवन रोहतक मे ११ मई रविवार को प्रात १० बजे तथा हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक दोपहर बाद १ बजे होनी निश्चित हुई है। अत सम्बन्धित महानुभाव इस बैठक मे सम्मिलित होने का कष्ट करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

माकडौला तथा हसनगढ़ के बाद बड़सी में आर्यजनता की विजय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से १९८४ से प्रदेश में शराब बन्दी आदोलन चलाया जारहा है। पचायत कानून के अनुसार जो पचायते समय पर शराबबन्दी के लिए प्रस्ताव पास करके रजिस्ट्री द्वारा हरयाणा के आयुक्त आबकारी एव कराधान विभाग के कार्यालय मे भेज देती हैं, उन ग्रामो मे शराब के ठेको की नीलामी नही हो सकती, परन्तु कुछ स्थानो पर शराब के ठेकेदार शराबी अधिकारियो मे साठ-गाठ कर के प्रस्तावो को रद्दी की टोकरी मे डलवा कर ठेको की नीलामी कराने में सफल हो जाते हैं। उन ग्रामो मे यदि जागरूक आर्य कार्यकर्त्ता इस प्रकार के ठेको को समाप्त करने के लिए कमर कस लेते हैं और ठेको पर धरना देकर सघर्ष मे जुट जाते हैं तो २-३ सप्ताह मे ही ठेकेदार तथा शराबी सरकारी अधिकारियो के पाव उखड जाते हैं। इस प्रकार के अनुभव १९८४ मे ग्राम कवारी जि० हिसार, १९८५ मे ग्राम नाहरी जि० सोनीपत, ग्राम झाडसा जि० गुडगाव तथा १९८६ मे ग्राम हसनगढ जि० रोहतक, ग्राम माकडौला जि० गुडगाव आदि में शराब के ठेको पर धरना देकर सफल रहे हैं। इन स्थानो पर जहाँ शराब विरोधी निरन्तर प्रचार हुआ है वहाँ आर्यसमाजो की स्थापना भी की गई है ताकि प्रतिवर्ष प्रचार होता रहे।

मार्च १९८६ मे आर्यजनता की ओर से शराब के ठेको की नीलामी के अवसर पर जिलेवार प्रदर्शन किये गये थे। उपायुक्त कराधान एव आबकारी अधिकारियो को ज्ञापन दिये गये थे, परन्तु फिर भी कुछ ग्रामों मे ठेको की नीलामी करदी गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने ग्राम बडसी जि० भिवानी मे ग्राम पचायत तथा युवा क्लब के साथियो के सहयोग से १ अप्रैल, १९८६ को धरना प्रारम्भ करवा दिया। ठेके के सामने ओ३म् के झण्डो के साथ दो शामयाने तथा कनातें लगाकर वहा सत्सग का रूप दे दिया गया। प्रतिदिन यज्ञ, सत्सग तथा रात्रि को आर्य भजनोपदेशको के शराब विरोधी भजन होते रहे। फसल की कटाई का आवश्यक कार्य होने के बावजूद ५० के लगभग आर्य नर नारी हर समय उपस्थित रहते रहे। धरने को सफल करने में ग्राम की महिलायें भी किसी से पीछे नही रहीं, उन्हे सबसे अधिक कष्ट सहना पडा है। ग्राम मे ठेके पर शराब पीने वाले अनेक व्यक्तियो ने घर से महिलाओ के जेवर आदि बेचने आरम्भ कर दिये थे और वे शराब के नशे मे अपनी स्त्रियो को पीटने भी थे। इस प्रकार ग्राम मे शराब के ठेके को उखाडने में जिन आर्य महिलाओं ने विशेष भूमिका निभाई है, उनमें माया देवी, सन्तती देवी, सावित्री देवी, हश्यारी देवी, चन्द्रपति, राजपति, बादामो, गगा देवी, कमला, प्रेम देवी, केसर देवी, मेवा देवी आदि हैं जो धरने पर बैठकर शराब विरोधी गीत गाती रही तथा शराब खरीदने वालो को समझा कर वापिस भेजती रही। इसी प्रकार ग्राम के युवा क्लब के सदस्य तथा पचायती भी धरने को सफल करने के लिए दिन-रात जुटे रहे। उनमे प्रमुख रहे सर्वश्री बलवन्तसिह धबड, जोगीराम सरपच, गगासहाय सरपच, हवलदार भाना, रणजोतसिह राठी, सेठ द्वारकाप्रसाद, प्रीतसिह, बसन्तसिह, लीतूराम पच, फूला पण्डित, रामचन्द्र डिपो होल्डर, महेन्द्रसिह धेबड, सूबेसिह, जोगीराम, भोला, फतेहसिह धडकल, राजमल दलाल आदि।

आर्यसमाज हासी के कार्यकर्त्ताओ ने भी बहुत ही लगन तथा परिश्रम पूर्वक काय किया। १३ अप्रैल को एक मैटाडोर मे चौ० प्रतापसिह जी तथा प० भगनलाल शास्त्री के नेतृत्व मे एक जत्था ग्राम मे आया। कार्यकर्त्ताओ के सिर पर केसरिया टोपिया थी और हाथो मे ओ३म् के झण्डे तथा शराब विरोधी बैनर थे। ग्राम मे जलूस निकाला गया, जिस मे सैकडो बच्चो तथा महिलाओ ने भी साथ दिया। शराब विरोधी जयकारो से आकाश गूज उठा।

आर्यसमाज के उपदेशको महात्मा अग्निदेव जी, स्वामी सुमेधानन्द, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी एव सभा की भजन मण्डली प० चिरजीलाल जी के अतिरिक्त प० तुशीराम, प० सुलतानसिह, प० रामकिशन, प० रामरत्न ने प्रात यज्ञ पर तथा रात्रि को वेदप्रचार के भजनो द्वारा शराब तथा दहेज आदि सामाजिक कुरीतियो का जमकर खण्डन किया। उनके प्रचारस्वरूप ठेके पर एक भी बोतल की बिक्री नही हो सकी। ठेकेदार ने पुलिस का भी सहारा लिया परन्तु आर्यजनता की सगठन शक्ति के सम्मुख ठेकेदार ने विवश होकर हथियार डाल दिये। स्थानीय विधायक तथा मन्त्री श्री अमरसिह को स्वय आर्यजनता के दरबार में हाजिर होकर शराब का ठेका समाप्त करवाना पडा। यह आर्यजनता की शानदार विजय है।

सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री भी जि० रोहतक, सोनीपत, करनाल तथा गुडगाव का भ्रमण करके शराब के ठेको पर धरना देने की तयारी कर रहे है। इस प्रकार हरयाणा मे शराबबन्दी आदोलन प्रगति पर है।

प्रो० सत्यवीर विद्यालकार सभा उपमन्त्री

हर्ष सूचना

कन्या गुरुकुल नरेला की मेधाविनी स्नातिका कुमारी सुषमा आर्या (व्याकरण इतिहासाचार्या) ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता मे 'महर्षि दयानन्द और राष्ट्रीय एकता' विषयक निबन्ध पर सर्वद्वितीय स्थान लेकर २५०) पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्राप्त किया है। यह पुरस्कार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति द्वारा गुरुकुल कागडी के वार्षिकोत्सव पर ११ अप्रैल, १९८६ को प्रदान किया गया।

सर्वहितकारी पत्र की ओर से कुमारी सुषमा को हार्दिक बधाई दी जाती है।

—सम्पादक

मंगलमय हो नव संवत्सर

मगलमय हो नव सवत्सर आए नया विहान,
महिमण्डल पर शाति-सुखो का छाये नया वितान।
प्रेम, दया, ममता, समता, समरसता हो सचारित,
मानव मे मानवता पूरित सद्गुण हो सपादित।
सत्य धर्म की विजयपताका अवनी पर लहराए,
नव सवत् मे ईश कृपा से, जन-जन मे नव जीवन आए।

वैदिक आश्रम गूगोढ जि० रोहतक का १४वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

२५ मार्च मंगलवार को होली पर्व के उपलक्ष में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर के नेतृत्व में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ यह पर्व मनाया गया। इस शुभ अवसर पर स्वामी व्रतानन्द जी व स्वामी शरणानन्द जी महाराज की प्रेरणा से नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन भी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने किया। तदनन्तर विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें समीपस्थ ग्रामों के श्रद्धालु भक्त बाल, वृद्ध, वनिताओं ने पुष्कल घृत, सामग्री आदि का दान देकर बड़ा सहयोग किया। श्रद्धालुओं का निरन्तर तांता-सा लगा रहा। यज्ञोपरांत विद्वानों व प्रचारकों के भजन व उपदेश भी बहुत ध्यान से सुने। इस शुभ अवसर पर लोगों ने यज्ञ में आहुति डालकर अपने दुर्गुण छोड़ने की प्रतिज्ञा की। अभ्यागतों का भोजन का उत्तम प्रबन्ध आश्रम की ओर से किया गया, जिसमें निम्नलिखित व्यक्तियों का विशेष सहयोग रहा। श्री जगमालसिंह सरपंच, उमरावसिंह, लक्ष्मन, बलबीरसिंह, रामकुमार, सुरजीतसिंह, तुलसी नम्बरदार, केप्टन हीरालाल, मा० रामनिवास, बहन चन्द्रवती, श्रीमती कस्तूरी देवी व ग्रन्चाई आदि माताओं का भी सहयोग सराहनीय रहा।

भोजनोपरांत श्री वीरकुमार जी वकील की अध्यक्षता में ब्र० विजयपाल जी मुख्याध्यापक गुरुकुल झज्जर का भव्य शक्तिप्रदर्शन हुआ जो कि दर्शनीय था। तदनन्तर होली पर्व के उपलक्ष में होली गायकों द्वारा होली के सुन्दर भजन गाए गये। कुल मिलाकर बहुत ही सुन्दर व अच्छा उत्सव हुआ। सब का धन्यवाद भी गांव की ओर से किया गया।

ग्रीष्मकालीन युवक निर्माण शिविर

हिमालय की सुरम्य घाटियों में स्थित महर्षि कण्व की तप स्थली व वीर भरत की जन्मभूमि से बहुचर्चित, रोमांचकारी ग्रीष्मकालीन अवकाश में आर्य युवकों के शारीरिक व बौद्धिक विकास हेतु महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओतप्रोत करने व राष्ट्र का सच्चा सिपाही बनाने के उद्देश्य से 'विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर" आगामी १३ जून से २२ जून, १९८६ तक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज के संरक्षण में व युवा हृदय सम्राट् ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार जिला पौड़ी गढवाल, उत्तरप्रदेश में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आयोजित किया जारहा है।

शिविर संचालक परिषद् महासचिव श्री अनिलकुमार आर्य ने बताया कि महात्मा आर्य भिक्षु (ज्वालापुर) भी दस दिन शिविर में रहकर युवकों को मार्ग-दर्शन देंगे। ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त (आधुनिक भीम) व श्री धर्मवीर आदि योग्य व्यायाम-शिक्षकों द्वारा आसन-प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बाक्सिंग का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

शिविर प्रवेश शुल्क ५०) रुपये होगा। शुद्ध भोजन व आवास की निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। न्यूनतम आयु सीमा १५ वर्ष रखी गई है। इच्छुक युवक परिषद् मुख्य कार्यालय . आर्यसमाज कबीर बस्ती, दिल्ली-७ अथवा प्रांतीय कार्यालय गुरुकुल कण्वाश्रम, डाकखाना कलाल घाटी कोटद्वार, जिला पौड़ी गढवाल पिन-२४६१४९ से सम्पर्क करें। वेशभूषा सफेद कमीज, सफेद सेंडो बनियान, सफेद कपड़े के जूते, सफेद निक्कर, सफेद जुराब, केसरिया जांघिया, लंगोट, काली बेल्ट, ६ इंच की कृपाण युवकों के लिए अनिवार्य है।

योग साधना शिविर

इसके अतिरिक्त योग-साधकों के लिए "योग साधना शिविर" भी इस स्थान पर इन्हीं तिथियों में लगेगा। सफेद कुर्ता, कटिवस्त्र, लंगोट साधकों के लिए अनिवार्य वेशभूषा रहेगी। आयु सीमा ६५ वर्ष रहेगी।

राधेश्याम शास्त्री कार्यालय प्रबन्धक

आर्यसमाज नाहरी जि० सोनीपत का विशेष कार्य

१—प्रत्येक रविवार को पारिवारिक वैदिक सत्संग होता रहा है, जिसमें यज्ञ-हवन के पश्चात् वेदकथा एवं आर्यसमाज की मान्यताओं पर प्रकाश डाला जाता रहा है।

२—गांव का शराब का ठेका आर्यसमाज के सत्याग्रह से समाप्त कराया गया, जिसका अनुकरण करके भाड़सा एवं औचन्दी बोडर आदि के ठेके बन्द हुए।

३—आस-पास के गांवों में नशा-विरोधी प्रचार करके ग्राम पंचायतों को ठेका बन्द करने हेतु प्रस्ताव पारित करके आबकारी विभाग को भेजने की प्रेरणा दी, जिसके फलस्वरूप आस-पास के अनेक शराब के ठेके बन्द हुए।

४-दिनांक २७-३-८६ को आर्यसमाज नाहरी ने ग्राम नाहरा में प्रांतीय नशाबन्दी समिति के सहयोग से शराबबन्दी प्रचार सम्मेलन तथा विचारगोष्ठी का आयोजन किया तथा नशाबन्दी प्रदर्शनी भी लगाई गई। उसी ग्राम नाहरा वासियों को आर्यसमाज की स्थापना के लिए प्रेरित किया गया।

५—आर्यसमाज नाहरी की ओर से महिलाओं में जागृति के लिए गांव के बीच में एक भव्य समारोह का आयोजन करके कुरीतियों को दूर करने के लिए कल्याणी संस्था की अध्यक्षा श्रीमती सरला मौदगिल ने अपने प्रभावशाली विचार रखे।

६—आर्यसमाज नाहरी के निमन्त्रण पर स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में कन्या गुरुकुल नरेला की कन्याओं ने गांव की सभी गलियों में सायंकाल फेरी लगाई तथा गांव की नीमो वाली मुख्य चौपाल में अग्निहोत्र (यज्ञ) का आयोजन किया। तत् पश्चात् कन्याओं ने शराब विरोधी गीत गाये और विदुषी कन्याओं ने भाषण दिये। अन्त में स्वामी ओमानन्द जी ने समाज में फैली हुई कुरीतियों पर अपने प्रभावशाली विचार रखकर आर्य ग्रामीण जनता को सत्य मार्ग दिखाया।

७—वैदिक प्रचार के विख्यात आदि कवि श्री प्रकाशवीर व्याकुल के संगीत प्रवचन हुए और आर्यजगत् के विख्यात सन्यासी एवं योगी श्री स्वामी सत्यपति जी के तीन प्रवचन हुए, जिस पर स्वामी जी ने वैदिक-धर्म, ईश्वर, योग, ज्ञान आदि के विषय में सारगर्भित प्रवचन किये।

रामस्वरूप आर्य

शुद्धि समाचार

आज तिथि ८-२-८६ को ग्राम पारागांव राजिम (म०प्र०) में हरिजन बस्ती में उपरोक्त समिति के महामन्त्री श्री स्वामी सेवानन्द जी की अध्यक्षता व समिति के कोषाध्यक्ष श्री भरतसिंह आर्य की उपस्थिति में हवन तथा प्रचार का कार्यक्रम किया गया। इस बस्ती के समीप ईसाई लोगों ने अपना गिरजाघर बनाने के लिए कुछ जमीन खरीदी हुई है और हरिजनों व गरीब लोगों में प्रचार का कार्य करते रहते हैं। यहां के मुख्य लोगों ने हमें अपना प्रचार करने हेतु बुलाया। बहुत से लोगों ने ईसाई धर्म त्यागकर स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया। यज्ञ में वैदिकधर्म को न त्यागने व ईसाई लोगों से सतर्क रहने की आहुतियां डलवाई गई। धर्म उपदेश के पश्चात् स्वामी जी ने इन गरीब लोगों में कपड़ा, जो कि अधिकांश महात्मा प्रेमप्रकाश पुरी (पंजाब) वाले ने प्रदान किया था, वितरण किया।

सेवानन्द महामन्त्री
हि० शु०.स० समिति हरयाणा समालखा, करनाल

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

हरयाणा में शराबबन्दी आंदोलन के बढ़ते कदम—

ग्राम बड़सी जि० भिवानी का शराब का ठेका समाप्त

आर्य जनता को जानकर हर्ष होगा कि ऐतिहासिक ग्राम बडसी जिला भिवानी में १ अप्रैल, १९८६ से महिला मण्डल तथा आजाद युवा क्लब एवं पचायतों के पूर्ण सहयोग से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए धरना दिया हुआ था। धरने पर प्रतिदिन प्रात यज्ञ एव मध्याह्न एव रात्रि को भजन तथा उपदेश होते रहे। धरने पर नर-नारी फसल के समय के बावजूद उत्साह से भाग लेते थे। आरम्भ से ही आर्यसमाज हासी की भजन मण्डली एव भिवानी वेदप्रचार मण्डल की भजन मण्डली का सराहनीय प्रचार कार्यक्रम रहा। बाद में १४-४-८६ से १८-४-८६ तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रसिद्ध भजन मण्डली प० चिरञ्जीलाल ने शराब विरोधी एव समाज में फैली अन्य कुरीतियों के बारे में भजन सुनाये और साथ में आर्यसमाज का इतिहास एव क्रातिकारियो की कथा रखी, जिसका लोगो पर अच्छा प्रभाव पडा। समय-समय पर प० भरतलाल शास्त्री, चौ० प्रतापसिंह आर्य, स्वामी सुमेधानन्द जी, महात्मा अग्निदेव जी एव अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने अपने विचार रखे। क्रातिकारी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी कार्यक्रम से अवगत कराया। साथ में ग्राम बडसी को इतिहास की कडी मे जोडा। १८ दिन मे कुरुक्षेत्र के मैदान में धर्म एव अधर्म का युद्ध हुआ था। १८ दिन ही बुराई के खिलाफ ग्राम बडसी मे सघर्ष चला।

जनशक्ति के आगे झुककर १८-४-८६ को सायकाल ४ बजे चौ० अमरसिंह मन्त्री हरयाणा सरकार वहा पधारे। लोगो के रोष को ध्यान मे रखकर मन्त्री जी ने शराब के खोखे को ट्रक में डलवाकर शराब का ठेका समाप्त करवा दिया। लोगो मे प्रसन्नता की लहर दौड गई। बच्चो ने शराब विरोधी एव आर्यसमाज अमर रहे के नारो मे आकाश गुजा दिया। इस सारे कार्यक्रम में सरस्वती आर्या, सावित्री आर्या, चन्द्रपति आर्या, माया आदि का विशेष सराहनीय कार्यक्रम रहा। प्रतिदिन यज्ञ पर घृत एव महिलाओ को इकट्ठा करके लाती, बाद मे पचायत के कहने पर आजाद युवा क्लब के प्रधान बलवन्तसिंह ने माईक द्वारा गाव में मुनादी की कि शराब निकालने वाले एव बेचने वाले पर ५०० रु० दण्ड एव बताने वाले को १०० रु० इनाम दिया जायेगा।

सारा गाव आर्यसमाज के प्रभाव मे आगया। वहा पर विधिवत आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने आर्यसमाज एव महिला आर्यसमाज की स्थापना करदी है।

सुरेन्द्रसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बडसी, जि० भिवानी

ग्राम राखी शाहपुर में शराबियों का आतंक

ग्राम राखी शाहपुर जिला हिसार के प्रमुख आदमियो के नाम का शराबबन्दी बारे एक पत्र दिनाक १६-४-८६ को मेरे नाम मे आया। जिसमे हरफूल पुत्र जिसुख, फलाराम पुत्र टोडाराम, बलबीर पुत्र शेरसिंह, मागेराम पुत्र दुनीचन्द, कृष्ण शर्मा, स्वरूपा आर्य पुत्र धर्नासिह, श्री करतार पुत्र सूरजमल, जिलेसिंह पुत्र मगल, प्रताप पुत्र मोलू, छोटेराम पुत्र खड़गा आदि के नाम थे। उन्होंने आरोप लगाया कि नारनौंद के ठेकेदार जबरन जगदीश सुनार के घर शराब बेचते हैं। शराबियों ने गाव में आतक मचा रखा है। मैं भी दिनाक २०-४-८६ को वहा गया। वास्तव में उपरोक्त कार्यक्रम ज्यो का त्यो मिला। मुझे दिन में भी दो-चार शराबी गाव की गलियो में घूमते मिले दिन के १० बजे। मैंने दो-चार नवयुवकों एव हरफूल को प्रेरित किया कि आप सगठित होकर ठेकेदार की जीप को गाव में न घुसने दें और इन शराबी तत्त्वों का डटकर मुकाबला करें। साथ में डी० सी० एव एस० पी० को इस बारे सूचना देवें।

अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्यसमाज जेल रोड प्रेमनगर रोहतक

प्रधान–सर्वश्री रामप्रकाश सांगवान, उपप्रधान–ओम्प्रकाश सयाना, सत्यवीरसिंह देशवाल, मन्त्री—महावीरसिंह शास्त्री, उपमन्त्री—जयसिंह राणा, कृष्णसिंह, कोषाध्यक्ष विद्यानन्द दागी, पुस्तकाध्यक्ष—रामदेव शास्त्री।

आर्यसमाज सालवन जि० करनाल

प्रधान—सर्वश्री ओम्प्रकाश, उपप्रधान—धर्मसिंह, मन्त्री–राजवीरसिंह, उपमन्त्री—देवव्रत, कोषाध्यक्ष—ब्रह्मप्रकाश, पुस्तकाध्यक्ष—वेदव्रत

आर्यसमाज गन्नौर शहर जि० सोनीपत

प्रधान—सर्वश्री जयदेव जतोई वाले, उपप्रधान–आत्मदेव, मन्त्री–ओम्प्रकाश, उपमन्त्री—प्रताप, कोषाध्यक्ष—मनोहरलाल, रामस्वरूप, पुस्तकाध्यक्ष—राजपाल, प्रचारमन्त्री–प्रेमनाथ, लेखानिरीक्षक–रामलाल

आर्यसमाज बड़सी जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री बलवन्तसिंह, उपप्रधान—प्रीतसिंह, डा० महेन्द्रसिंह, मन्त्री—सुरेन्द्रसिंह आर्य, उपमन्त्री–सुरेशकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष–सेठ द्वारकादास आर्य, प्रचारमन्त्री—भानाराम आर्य, सरक्षक—स्वामी अग्निदेव जी।

महिला आर्यसमाज बड़सी

प्रधान—सर्वश्रीमती सरस्वती आर्या, उपप्रधान—मायादेवी आर्या, मन्त्री—चन्द्रपति आर्या, प्रचारमन्त्री—सावित्री आर्या, कोषाध्यक्ष—कमला देवी आर्या, सघटन मन्त्री—हुश्यारीदेवी आर्या।

अपील

सब सज्जनों से प्रार्थना है कि जो आदिवासी मध्यप्रदेश मे किसी कारण से ईसाई बन रहे हैं, उनको पुन: अपने धर्म मे लाने के लिए एक कमीज और एक धोती पुरुषो के लिए तथा माताओ के लिए एक साड़ी, एक ब्लाउज तथा एक पेटीकोट देने से पुन: वैदिकधर्म मे आ सकते हैं।

अत आप सब पुन यश कमाने के लिए इनको सहायता के लिए दिल खोलकर दान देवें ताकि हिन्दू वैदिक राष्ट्र सदा चमकता रहे। आप यह दान कपडे तथा धन के रूप मे निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं।

स्वामी सेवानन्द जी या श्री ओम्प्रकाश जी प्रधान
हिन्दू शुद्धि सरक्षण समिति, कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर
समालखा मण्डी, जिला करनाल

हैदराबाद के सत्याग्रहियों को सूचना

भारत सरकार के आदेशानुसार हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में जेल यात्रा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को पेंशन देने का निर्णय किया गया है। अत जिन महानुभावो ने इस सत्याग्रह मे जेल यात्रा की है उनमे अथवा उनकी विधवाओ से आवेदन-पत्र भेजने की अवधि बढा कर ३१ मई, १९८६ तक करदी गई है। अत जिन्होने अभी तक अपने आवेदन-पत्र नही भेजे है वे अपना अथवा विधवा का नाम पूरा पता (पूर्व तथा वर्तमान), जेल का नाम, जत्थेदार का नाम, जेल यात्रा की अवधि आदि का विवरण (प्रमाण-पत्र यदि हो तो उसकी फोटोस्टेट प्रति) साफ-साफ शब्दो में लिखकर २ प्रतियो मे यथाशीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के पते पर भेजने का कष्ट करें। ताकि हम शीघ्र ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेज सकें। सर्वहितकारी के पाठको से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के पुराने सत्याग्रहियो को इस विषय में सूचित करने की कृपा करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धाती भवन, रोहतक

(पृष्ठ ६ का शेष)

ईश्वरीय ज्ञान क्यों चाहिए ?

प्रश्न—क्या ईश्वरीय ज्ञान के बिना मनुष्य अपने जीवनोद्देश्य पर नहीं पहुंच सकता ?

उत्तर—कदापि नही। जिस प्रकार प्रकाश के बिना नेत्र अपने काम को पूरा नहीं कर सकते, ऐसे ही बुद्धि ईश्वरीय ज्ञान की सहायता के बिना अपना काम नही कर सकती।

प्रश्न—नेत्र को काम के लिए प्रकाश की आवश्यकता है, चाहे वह सूर्य का हो या लैम्प का। इसी प्रकार बुद्धि को विद्या की सहायता चाहिए, चाहे वह मनुष्य की बनाई हुई हो या ईश्वर की।

उत्तर—जबकि मनुष्य का जीवनोद्देश्य बहुत कठिन और जीवन का समय बहुत न्यून है, इस कारण ईश्वरीय ज्ञान के साधन से ही मनुष्य कृतकार्य हो सकता है। जिस प्रकार कोई मनुष्य दीपक को हाथ में लेकर दौडकर नही चल सकता, परन्तु सूर्य के प्रकाश में दौड़ सकता है।

प्रश्न—क्या कारण है कि मनुष्य सूर्य के प्रकाश में दौड़कर चल सकता है और दीपक का प्रकाश लेकर दौडकर नही चल सकता ?

उत्तर—जैसे दीपक का प्रकाश पवन को सहन नही कर सकता, ऐसे ही मनुष्य की विद्या तर्क को सहन नही कर सकती। दीपक के बुझ जाने का भय चलने वाले को रोकता है और दूर तक देखने की शक्ति का न होना भी रोकने वाला है। इसी प्रकार मनुष्य की विद्या केवल ज्ञान की भांति है, जिसे कोई-कोई 'ईमान' कहते है और जिस मार्ग पर विद्या की सहायता से चलें, उसे 'धर्म' कहते है, लेकिन धर्म और ईमान से कोई भी जीवनोद्देश्य पर नहीं पहुंच सकता बल्कि धर्म और ज्ञान से पहुँच सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि सवत् १,९६,०८,५३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक –प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क २३ ७ मई, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

विश्व कल्याण कर्ता–यज्ञ

ले०—पण्डित वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर ४५२००७ (म०प्र०)

यज्ञ–विश्व का आधार तत्त्व

विश्व के जीवन एव विश्व के स्वास्थ्य के लिए यज्ञ-होम-हवन परम आवश्यक है। यज्ञ-हवन की क्रियाशीलता और उपयोगिता का आध्यात्मिक क्षेत्र मे अर्थात् अपने शरीर, प्राण, मन आदि पर अद्भुत प्रभाव होता ही है तथा आधिभौतिक और आधिदैविक क्षेत्रो मे भी स्वाभाविक रूप से महत्त्वपूर्ण होता है। यज्ञ समस्त जड तथा चेतन सृष्टि का प्राण-पोषक तथा जीवन प्रदाता है। सृष्टि के जीवन का प्रमुख वैज्ञानिक आधारभूत तत्त्व यज्ञ ही है। मानव सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व भी इस सृष्टि मे, प्राकृतिक तत्त्वो और पदार्थों मे, प्रत्येक पिण्ड मे यज्ञ चल रहा था और अब भी चलता रहता है तथा भविष्य में भी प्रलय पर्यन्त चलता ही रहेगा। अत. यज्ञ सनातन तत्त्व है, सनातन कर्म है और सनातन धर्म है। स्वभाव ही धर्म माना गया है। अत यज्ञ सदा वहार, सर्व समृद्धि-कारक एव परम श्रेष्ठ विज्ञान है।

चराचर सृष्टि की उत्पत्ति यज्ञ से

पुरुष-सूक्त के मन्त्रो मे बताया है कि परमात्मा के यज्ञ मे विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ और उनके भोक्ता जीव सृष्टि की भी उत्पत्ति हुई। समस्त ज्ञान-विज्ञान एव कर्त्तव्यो के प्रेरक, सर्वज्ञानमय वेद भी प्रकट हुए और इनके उपयोक्ता साध्य, देव, ऋषि, मनुष्यादि भी उत्पन्न हुए। इन उत्पन्न ऋषि-मुनियो ने सृष्टि मे यज्ञो के विविध कर्मों के वैज्ञानिक प्रवाहो तथा उनके प्रभावो को देखा और यज्ञ के विज्ञान को समझ कर यज्ञ प्रारम्भ किये और उनका प्रचलन स्थापित किया। यज्ञ के प्रारम्भिक विज्ञान का सूत्ररूप मे प्रतिपादक मन्त्र पुरुषसूक्त मे—

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोस्यासीदाज्य ग्रीष्म इध्म. शरद्धवि ॥

यह है। इसमे यज्ञ के तीन आधारभूत तत्त्व बताये हैं—१) आज्य, २) इध्म और ३) हवि। आज भी यज्ञ के लिए यही तीन पदार्थ उपयोग मे लिये जाते हैं।

यज्ञ के आधारभूत तीन पदार्थ

सृष्टि के प्रारम्भ के प्राकृतिक यज्ञ में बसन्त ऋतु ही आज्य थी, ग्रीष्म ऋतु ही इध्म थी और शरद् हवि थी। आज भी घृत का सग्रह बसन्त मे अच्छा होता है। ईंधन का सग्रह ग्रीष्म मे ही अच्छा होता है और औषधि वनस्पतियो का परिपाक शरद् मे ही ग्राह्य है। प्रकृति के अनुरूप देवो, साध्यो, ऋषियो एव मनुष्यो ने यज्ञ को अपने जीवन में धारण कर नित्य एव नैमित्तिक कर्मों मे यज्ञो का अनुष्ठान धर्मरूप मे प्रारम्भ किया तो आज्य के रूप मे गोघृत को ग्रहण किया। इध्म अर्थात् ईधन के लिए कतिपय यज्ञिय वृक्षो ने समिधायें ग्रहण की तथा हवि के रूप में औषधियो, वनस्पतियो को ग्रहण कर हवि की मान्यता स्थापित की। इन्हीं तीन आधारभूत पदार्थों का उपदेश यजुर्वेद अध्याय तृतीय के प्रथम मन्त्र मे भी निम्न प्रकार है—

समिधाग्नि दुवस्यत-घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥

अर्थात् समिधाओ से अग्नि प्रदीप्त करो, प्रदीप्त अग्नि की घृत से सेवा करो और उस प्रबुद्ध अग्नि मे, प्रदीप्त अग्नि मे हव्य पदार्थों की आहुति प्रदान करनी चाहिए।

यज्ञ का आधार तत्त्व–अग्नि का गुण

यज्ञ के उपर्युक्त तीनो पदार्थ शोधक हैं। अग्नि परम शोधक है। घृत भी परम शोधक है तथा हव्य पदार्थ भी शोधक एव पुष्टिकर्ता है। परन्तु घृत और हव्य पदार्थ जब अग्नि में प्रयुक्त होंगे तभी उससे विविध प्रकार का लाभ होगा। इसलिए ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र मे ही सर्वप्रथम अग्नि की साधना करने के लिए उसके गुणो का प्रकाश किया गया है—

अग्निमीडे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतार रत्नधातमम् ॥

अर्थात् अग्नि की आराधना करो, अग्नि के गुणो का निरन्तर अनुसधान करो, अग्नि से सम्भावित कार्यो को जानकर उसका प्रयोग कला-यन्त्रो मे करके विविध सुख प्राप्त करो। यह अग्नि पुरोहित है– तुम्हारी कामनाओ की पूर्ति के लिए विविध रूप मे रचनाकार्यसाधक इन्जीनियर तुल्य है। यह विविध सुखो का सगतिकर्ता है। यह विविध ऋतुओ का निर्माता है। यह हव्य पदार्थो को ग्रहण कर, उनका प्रसारण करता है और विविध प्रकार के रत्नो का निर्माता एव दाता है। इसी प्रकार अग्नि के सहस्रो अदभुत गुणो का भण्डार वेद है।

यज्ञ की अग्नि का आधारभूत पदार्थ–इध्म

यज्ञ के लिए समिधा परम आवश्यक है। समिधा के बिना अग्नि की स्थापना एव स्थिरता नही। समिधाओ मे ही अग्नि प्रकट होती और उसी मे निवास करेगी। समिधाये ऐसे वृक्षो की यज्ञ मे प्रयुक्त होती हैं, जिनमे प्रदूषण कम और ऊर्जा तथा आरोग्यता विशेष होती है तथा अगार होने पर उनसे कोयला न बनकर भस्म ही बन जाती है। ऐसी समिधाये पलाश, पीपल, आम, विककत, गुलर आदि वृक्षो की होती हैं। कामना भेद से भी समिधाओ का प्रयोग होता है। सब कामनाओ के लिए पलाश अर्थात् ढाक की समिधा श्रेष्ठ है। रोगनाशार्थ आक की समिधा उपयोगी है—विशेष रूप से वात एव कफज रोगो मे अति लाभकारी है। खैर की समिधा धन लाभ के लिए, पीपल की समिधा प्रजा लाभ के लिए, शमी अदृष्ट दोषों के शमन के लिए उपयोगी है।

यज्ञ का दूसरा आधारभूत पदार्थ-घृत

केवल समिधाओं तथा अग्नि से ही यज्ञ नही हो सकता। समिधाओं

से प्रदीप्त ज्योतिर्मय अग्नि मे घृत की आहुतिया देने से वह इच्छित समय तक प्रदीप्त रह सकती है। दीपक मे जैसे घृत या तेल रहने से दीपक की रूई की बत्ती दीर्घकाल तक ज्योतिर्मय बनी रहती है उसी प्रकार समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि के लिए घृताहुतिया अति आवश्यक हैं। अग्नि एव घृताहुतियो से समृद्ध ज्वालाओ मे वर्च, ऊर्जा वायुमण्डल मे, अन्तरिक्ष मे दसो दिशाओ मे व्याप्त होकर अणु परमाणु मे वैद्युतिक शक्ति सचारित करके नई ऊर्जा, स्फूर्ति तथा जीवन का सचार करती है। अपवित्रता को भी दूर करती है। घृत मे परम शोधक शक्ति है। शरीर में व्याप्त विष को दूर करने मे प्रसिद्ध है। इसके इसी गुण के कारण यज्ञ द्वारा समस्त अन्तरिक्ष को शुद्ध निर्विष एव शक्ति-सम्पन्न करने के लिए आहुति रूप मे प्रयुक्त होता है।

यज्ञ का तीसरा पदार्थ-हवि

समिधाओ से प्रदीप्त अग्नि मे घृताहुति देने से विश्व के पर्यावरण मे शोधन एव पुष्टि होती है, परन्तु और भी अधिक लाभ तथा इच्छित विशेष लाभ प्राप्ति के लिए हव्य द्रव्यो का भी प्रयोग करना चाहिए। हव्य द्रव्यो के लाभ और प्रभाव को घृताहुति बढा देती है। द्रव्य पदार्थ जिन जिन विशेष प्रयोजन के लिए यज्ञ मे प्रयुक्त होगे वे उन-उन कामनाओ की पूर्ति करेंगे। अत यज्ञ द्वारा इच्छित पर्यावरण बनाया जा सकता है। वेद ने अग्नि को ऋत्विज् ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र मे बताकर इच्छित ऋतु निर्माता पर्यावरण निर्माता का महत्व प्रकट किया है। हव्य पदार्थों के गुणज्ञान के आधार पर ही यज्ञ सब कामनाओ की पूर्ति करने में समर्थ हो जाता है। इसलिए यज्ञाग्नि मे यजमान कहता है—सर्वान् कामान्त्समर्धय— अर्थात् यज्ञाग्नि इष्ट फल प्रदाता है—अत हमारी सब कामनाओ की पूर्ति करे।

हव्य पदार्थों के बारे मे वेद का निर्देश

हव्य पदार्थों के बारे मे वेद मे अनेक स्थानो पर वर्णन है। अथर्ववेद काड ८ के सूक्त २ के छठे मन्त्र मे हव्य पदार्थों का निम्न रूप मे वर्णन है—

जीवला नघारिषा जीवन्तीमोषधीमहम्।

त्रायमाणा सहमाना सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये॥

अर्थात् जीवन देनेवाली, कभी हानि न करनेवाली, स्फूर्ति प्रदान, जीवन की रक्षा करनेवाली, रोगो को दबानेवाली, बलवती औषधिया यज्ञ मे जीवन की रक्षा और वृद्धि के लिए होम के द्रव्यो के रूप मे प्रयुक्त करनी चाहिए। ऐसी औषधियो के हव्य रूप मे प्रयोग करने से यज्ञ सब प्रकार से रक्षा करनेवाला, सब दोषो का अर्थात् प्रदूषणादि का विनाशक होकर ससार का महोपकारक, जीवनदाता तथा समृद्धि करनेवाला हो जाता है।

उक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ के लिए मन्त्र भी आवश्यक हैं

उक्त तीनो पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ मे मन्त्रो की आवश्यकता का प्रतिपादन वेद मे किया है, जैसा कि निम्न मन्त्र से प्रकट है—

उप प्रयन्तो अध्वर मन्त्र वोचेमाग्नये।

आरे अस्मे च शृण्वते॥ (यजु० अध्याय-३ मन्त्र ११)

यज्ञ मे पहुचकर अग्नि के लिए मन्त्रो का उच्चारण इस प्रकार करे कि जिससे दूरस्थ एव समीपस्थ सभी जन सुन सकें। अत यज्ञ मे मन्त्र बोलना आवश्यक है। यज्ञकर्त्ताओ को मन्त्र तो बोलना ही चाहिए, जोर से बोलना चाहिए, परन्तु अन्य जो भी यज्ञ मे भाग लें, उपस्थित हो, उनको भी मन्त्र बोलना चाहिए। मन्त्र याद न हो तो स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर मे करनी चाहिए। मन्त्र की ध्वनि यज्ञ मे करने से यज्ञ से निर्मित आरोग्यप्रद प्राणो का प्रवेश एव सचार शरीर की नस-नाडियो मे होने लगता है तथा अशुद्धिया निकल जाती हैं। अत यज्ञ के लिए उपर्युक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त मन्त्रोच्चारण भी आवश्यक है।

यज्ञ सृष्टि का स्वभाव है

यज्ञ कार्य सृष्टि स्वभाव एव नियम के अनुकूल है। नित्य सूर्योदय होता है, दिन होता है, प्रकाश होता है और ताप व्याप्त होता है। ताप से वायुमण्डल में विभिन्न गतिया प्रारम्भ होने लगती हैं। सृष्टि का जीवन, चराचर जगत् का प्राण और आत्मा सूर्य ही है। सूर्य से ही प्राणों का प्रवाह चलता रहता है। वेद में "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" मन्त्र वाक्य सूर्य के महत्त्व को प्रकट करता रहता है। उसी प्रकार हमारे लिए यह अग्नि भी महत्त्वपूर्ण है। इसमे भी वही सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा सिद्ध किये जा सकते हैं। अग्नि तत्त्व ही यज्ञ का आधारभूत प्रधान तत्त्व है तथा प्रधान कार्यकर्त्ता है। अत वेद ने इसको पुरोहित कहा। यही प्रधान देव तत्त्व है। सर्वकार्य-साधक है। वह हव्य द्रव्य पदार्थों को इतस्तत ले जाने वाला है। पवित्रकर्ता है। प्रवहमान होने से व्यापक रूप से गतिकर्ता है, पावक है, प्रदूषणादि का शोधक है सर्वार्थ साधक है। अग्नि मे जब यज्ञ किया जाता है तो उसकी शक्ति, प्रभाव एव प्रमाण असीमित होने लगता है। यज्ञ सृष्टि प्रवाह के अनुकूल होने से ही महत्त्वपूर्ण है तथा हमारी सब कामनाओ की पूर्ति करनेवाला हो जाता है।

यज्ञ द्वारा पर्यावरण मे शोधन प्रक्रिया

यज्ञ ब्रह्माड को शुद्ध एव पुष्ट करता है। ससार को जीवन देता है। अग्नि मे होमा हुआ पदार्थ वायुमण्डल मे शीघ्र व्याप्त हो जाता है। व्याप्त हो जाने से अन्तरिक्षस्थ ताप एव विद्युतादि अग्नियो तथा सूर्य रश्मियो द्वारा ताप की तीव्रता, उग्रता एव ताप की परिवर्तित स्थितियो का होमा हुआ पदार्थ सूक्ष्म रूप से उत्तरोत्तर ऊपर गति करता है और ताप की न्यूनता से वह नीचे की ओर भी गति करता है। इस प्रकार होमे हुए पदार्थों की गति यज्ञ के द्वारा ऊपर-नीचे की ओर क्रमश होने लगती है और एक प्रकार की घर्षण क्रिया प्रारम्भ होने लगती है, जिस से प्रदूषणो का निवारण कार्य शीघ्र होने लगता है। परिणामत -शन्नो वात पवताम् सुखकारी वायु चलने लगती है। अत प्रदूषणो के निवारण के लिए यज्ञ अत्यन्त सुगम तथा श्रेष्ठ साधन है तथा इसको वैज्ञानिक कार्य समझ कर अगीकार करना चाहिए।

पवित्रता-सृष्टि का स्वभाव है

सृष्टि के पदार्थों का स्वभाव शुद्धता एव पवित्रता का है। प्रदूषण स्वभाव नही है। अपितु यह तो विकार है, अस्वाभाविक है। अत उसका निवारण कार्य भी सहज हो है। होम मे होमे हुए पदार्थ सुगन्धित, रोगनाशक और पुष्टिप्रदाता होने से उनका घर्षण वायुमण्डल मे यज्ञ मे बारम्बार आहुति प्रदान करने से सहज मे ही होने लगता है। यज्ञाग्नि मे आहुति देते ही अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल मे घर्षण क्रिया प्रारम्भ हो जाती है तथा बार-बार आहुति देने से घर्षण अर्थात् मार्जन, शोधन क्रिया का क्षेत्र स्वत ही विशाल होता जाता है। यज्ञ की समाप्ति पर तापक्रम क्रमश घटने से पृथिवी की ओर घर्षण क्रिया होने लगती है। रात्रि और दिवस के तापमानो मे भी यज्ञ की इस क्रिया को स्वभावत सरक्षण और बल प्राप्त होता है तथा प्रदूषणो का विशुद्धिकरण होता जाता है।

यज्ञ से विश्व मे आरोग्यता एव पुष्टि

यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध एव पुष्ट होता है—यह ध्रुव सत्य है। वायुमण्डल मे ही मेघो का निर्माण होता है। यज्ञ की आहुति से उत्पन्न उष्मा, वाष्प एव धूम्र का सयोग अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल में प्रविष्ट होकर मेघमण्डल मे स्थित हो जाता है और मेघमण्डल के जलो को शुद्ध एव सस्कारित कर वृष्टि का हेतु बन जाता है। वायु एव वृष्टि जल की शुद्धता से पृथ्वीस्थ वृक्ष, वनस्पति, अन्न, फलादि शुद्ध, पुष्ट एव आरोग्यता प्रदान करने वाले हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ से विश्व का महोपकार होता है। आज के समय मे प्रदूषण की समस्या उग्र तथा आक्रामक रूप में भी उपस्थित होती जाती हैं। इसकी शाति भी यज्ञ से ही होगी। प्रदूषणो की समस्या का निराकरण यज्ञ ही है। यज्ञ प्रतिदिन घरों में होने के साथ-साथ औद्योगिक प्रतिष्ठानो मे भी अनिवार्य रूप से यज्ञ होने चाहियें, तभी प्रदूषणो का व्यापक रूप से निराकरण होगा। अथर्ववेद काण्ड ८, सूक्त २ के मन्त्र २८ में बताया है कि—यज्ञाग्नि विविध कष्टों में पार लगाने वाली है, प्रदूषणो का नाश करने वाली है, घातक तत्त्वों

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दिव्य हमारा देश है

महिमण्डल मे सुन्दरतम जिसका स्वर्णिम परिवेश है।
देवो की यह पुण्य भूमि-सा, दिव्य हमारा देश है॥

उत्तर मे गिरिराज हिमालय जिसका जाग्रत है प्रहरी,
सतत सुनाती गीत विजय के यमुना, गगा, कावेरी,
पैरो का प्रक्षालन करता रहता हिन्द महासागर,
ज्ञान प्रभा से किया प्रभासित है जिसने सम्पूर्ण चराचर।

अवनी तल पर जिसका गौरव, रहा सदा सविशेष है।
देवो की यह पुण्य भूमि सा, दिव्य हमारा देश है॥

भगत, सुभाष, शिवा राणा की है यह पावनतम धरती,
पद्मिनियो सी जहा पगारा करती रहती सदा सती,
कही हिमाच्छादित पर्वत है कही गहनतम है घाटी,
चन्दन सी शीतल उपजाऊ है जिसकी पावन माटी।

सौम्य सरस-समरसता पूरित प्रियतर सदा स्वदेश है।
देवो की यह पुण्य भूमि-सा, दिव्य हमारा देश है॥

राम, कृष्ण, गौतम गार्गी ने है गौरव गरिमान किया,
दया, विवेकानन्द, तिलक ने, है जिस पर अभिमान किया,
वेद-ऋचाओ के मधुरिम स्वर आदि काल से गूंज रहे,
सत्य, अहिंसा, त्याग, तपो के अमृत स्वर है कूज रहे।

जिसकी संस्कृति आभा भू पर, अविरल रही अशेष है।
देवो की यह पुण्य भूमि-सा, दिव्य हमारा देश है॥

सिहनाद कर रही जहा पर, अर्जुन की है धनुटकार,
दसो दिशाये कपा रही है, आल्हा ऊदल की ललकार,
काश्मीर, कर्नाटक, केरल शोभित जहा हिमाचल है
तमिलनाडु, बगाल, उडीसा, आन्ध्र जहा अरुणाचल है।

नव आलोक बिखेरा करता, अनुदिन जहा दिनेश है।
देवो की यह पुण्य भूमि-सा, दिव्य हमारा देश है॥

—राधेश्याम आर्य
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

हैदराबाद के सत्याग्रहियो को सूचना

भारत सरकार के आदेशानुसार हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे जेल यात्रा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को पेशन देने का निर्णय किया गया है। अत जिन महानुभावो ने इस सत्याग्रह मे जेल यात्रा की है उनसे अथवा उनकी विधवाओ से आवेदन-पत्र भेजने की अवधि बढा कर ३१ मई, १९८६ तक करदी गई है। अत जिन्होने अभी तक अपने आवेदन-पत्र नही भेजे हैं वे अपना अथवा विधवा का नाम पूरा पता (पूर्व तथा वर्तमान), जेल का नाम, जत्थेदार का नाम, जेल यात्रा की अवधि आदि का विवरण (प्रमाण-पत्र यदि हो तो उसकी फोटोस्टेट प्रति) साफ-साफ शब्दो मे लिखकर २ प्रतियो मे यथाशीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के पते पर भेजने का कष्ट करें। ताकि हम शीघ्र ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेज सके। सर्वहितकारी के पाठको से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के पुराने सत्याग्रहियो को इस विषय मे सूचित करने की कृपा करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल

प्रधान—श्री रलियाराम वकील

उपप्रधान—वैद्य [illegible]राम, नरदेव शास्त्री, चौ० लालसिह व श्री प्रेमपाल सिन्धु।

मन्त्री मा० जसवन्तसिह

उपमन्त्री—श्री महाराज कृष्ण चोपडा श्री सुभाषचन्द्र गुप्त, सतीश-कुमार गर्ग व श्री लक्ष्मीनारायण कावालिया

प्रचारमन्त्री—श्री बलदेव कृष्ण आर्य

[illegible]

पुस्तकाध्यक्ष—मा० धर्मचन्द

कोषाध्यक्ष—[illegible] बजाज, आडिटर—मा० अमरसिह

सम्पत्ति निरीक्षक—ईश्वरसिह, सहायक सम्पत्ति निरीक्षक—श्री कुलदीपसिह व श्री [illegible] सिह।

अन्तरग सदस्य—[illegible] वर्मा, दयालसिह नम्बरदार, केवलकृष्ण आर्य [illegible] [illegible]कुमार, शिवकुमार सगला, जसमेरसिह, कवर-सिह, [illegible] आमप्रकाश वकील, मेहरसिह, सियासिह, रमेशचन्द्र [illegible] दीवान [illegible], ओमप्रकाश अरोडा, यज्ञदत्त आर्य, कर्मसिह, [illegible] हरिश्चन्द्र [illegible], चमनलाल बजाज, मा० ईश्वरसिह, नरेन्द्रकुमार [illegible], ओमप्रकाश, पवनकुमार वकील, राम-लुभाया, [illegible]लाल, महेन्द्रसिह।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री अन्तराम, मा० बनारसीदास, अन्तप्रकाश, वेदप्रकाश गुप्त, मूलचन्द।

आर्यसमाज काठमण्डी आर्यनगर सोनीपत

प्रधान—महाशय रूपचन्द, उपप्रधान—महाशय चन्द्रसिह आर्य, श्री भद्रसेन शास्त्री, मन्त्री—श्री सत्यवीरसिह शास्त्री, उपमन्त्री—श्री दयानन्द अध्यापक, कोषाध्यक्ष—श्री किशनचन्द आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ज्ञानसिह, लेखानिरीक्षक—श्री जयभगवान।

(पृष्ठ २ का शेष)

को नष्ट करने वाली है। पीडाओ को हरने वाली, शुद्धिकर्ता तथा महौषध है। यजुर्वेद अध्याय एक के मन्त्र ८वें मे अग्नि को धूरसि—सब दोषो को नष्ट करने वाला, सम्नितमम्—शुद्धि का हेतु कहा है। मन्त्र ९ मे अपहत रक्ष.—दुर्गन्ध्यादि दोपो का नाश करने वाला बताया है। उसको यज्ञ ऊपर चढा देता है। इस प्रकार अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है।

यज्ञ जीवन है-प्रदूषण जीवन विनाशक है

प्रदूषणो से रोग होते है और मृत्यु भी हो जाती है—यह एक सर्वजन विदित सत्य है। यह प्रदूषण वायु मे फैलकर जन-सहारक हो जाता है। वायु मे प्रदूषण व्याप्त हो जाने से वह जल मे, वृक्ष—वनस्पतियो मे तथा पृथ्वी के ऊपरी भाग एव पृथ्वी के भीतर भी प्रविष्ट हो जाता है। इसी प्रकार स्थान-स्थान पर यदि यज्ञ होगे तो उनका अश घृत के साथ शक्तिशाली बनकर वायुमण्डल मे व्याप्त होगा, जिससे प्रदूषणो का निवारण तत्काल होगा और रोगो का शमन भी होगा, प्राणिमात्र को ही नही, अपितु वृक्ष, वनस्पति आदि तथा पृथ्वी, जल आदि का भी शोधक एव पुष्टिकारक सिद्ध होगा। इस प्रकार यज्ञ विश्व के जीवन का निर्माता एव विश्व का कल्याण करने वाला सिद्ध हो सकेगा।

हम सब आर्य

हम सब आर्य भारत को, ऊचा करके दिखलायेगे।
हम सब आर्य भारत को, सोने का देश बनायेगे।
हम सब आर्य दुःख मे भी, कभी भी न घबरायेगे।
हम सब आर्य काटो को, हसकर गले लगायेगे।
हम सब आर्य ऊच-नीच के, भेदभाव को मिटायेगे।
हम सब आर्य प्यार का, पेड सदा उगायेगे।

अशोककुमार गर्ग
मकान न० १५०, आठ मरला, पानीपत

अनमोल वचन

चरित्र मनुष्य का सर्वस्व है।
अपनी गलती से चौक उठना महान् चरित्र का लक्षण है।
आचारहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नही कर सकते।
अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है।
झूठ इन्सान को जलील कर देता है।
देसी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्म-हत्या है।
निर्धनता कोई पाप नही।

अशोककुमार गर्ग
मकान न० १५०, आठ मरला, पानीपत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK

सृष्टि संवत् १,९७,०८,५३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक –प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क २४ १४ मई, १९८९ वार्षिक शुल्क २०) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

आर्यसमाज के संन्यासी

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

मेरा एक लेख 'आर्यसमाज किस ओर' शीर्षक से सर्वहितकारी मे छपा है। मुझे तो वह अंक मिला नही, पता नही किस अक मे छपा है, किन्तु सिवानी मण्डी (हरयाणा) के श्री हनुमानप्रसाद जी ने उसके सम्बन्ध मे एक पत्र मुझे लिखा है, जिससे पता चला कि वह लेख ७ अप्रैल के अक मे छपा है।

मेरे इस लेख का उद्देश्य था आर्यजनो के सामने आर्यसमाज की वर्त्तमान स्थिति का सिंहावलोकन प्रस्तुत करना, जिससे आर्यजन वस्तु स्थिति और उसके परिणामों से सावधान हो और वाछित सुधार हो, किन्तु हनुमानप्रसाद जी ने मेरे लेख का विरोध किया है। वह अपने को पूरा समाज ... बैठे हैं। उन्होने लिखा है कि पचास वर्ष पहले आर्यसमाज का प्रचार संन्यासी घर-घर जाकर किया करते थे। अब मठ, आश्रम, गुरुकुल और सस्थान बना-बनाकर अध्यक्ष बने बैठे हैं। उनका यह भी कहना है कि अब सौ मे से पाच ही मिलेंगे, जो कोई न कोई मठ यानी सस्थान बनाये न बैठे हो। आगे लिखते हैं कि विद्वान् सन्यासी आप एक भी बता दे, जो अपना मठ, जिसको गुरुकुल कहे, आश्रम कहे, कुटी कहें या सस्थान कहें, न बनाये बैठा हो। उनका यह भी कहना है कि बीसियों सन्यासियों को मैं जानता हू, जिन्हे मरने का टाइम नहीं, ६ महीने पहले बुक कराओ तो इनका वचनामृत प्रसाद पाओ वरना नही। आम आदमी तो इन मठाधीशों के दर्शनो से वचित रहता है। एक भी ऐसा विद्वान् साधु नहीं मिलेगा, जो बिना बुलाये जाकर प्रचार करे। पण्डितों पर भी वह इतने ही बरसे हैं। पत्र की भाषा और शब्दो को अशुद्धियो पर ध्यान दिया जाये तो यही परिणाम निकलता है कि ऐसे अयोग्य तथा नासमझ व्यक्ति के पत्र का उत्तर देने से समय को नष्ट करना ठीक नहीं। परन्तु क्योंकि प्रश्न आर्यसमाज के मिशन सम्बन्धी है, अत लिखने लगा हूँ, जिससे अन्य अनेक बन्धुओ को सोचने तथा सन्यासी की उपयोगिता को समझने का अवसर मिले।

उन्होने एक वाक्य यह भी लिखा है कि वैदिकधर्म का प्रचार क्या केवल गृहस्थियो का ही काम है, आपका नही। उनके विचार से सस्थाओ वाले सन्यासी मुस्लिमलीग आदि का प्रचार कर रहे हैं, वैदिकधर्म का नहीं। वैदिकधम का प्रचार उनकी समझ से वही कर सकता है, जो द्वार-द्वार जाकर अलख जगाये और भिक्षा मागकर पेट भरते-भरते जीवन बिता दे। उन्होने महर्षि स्वामी दयानन्द जी को भी मूर्ख ही समझा है, जिन्होंने आर्यसमाजो की स्थापना की, नही तो उन्हे द्वार-द्वार भीख मागने खाने में जीवन समाप्त कर देना चाहिए था। परन्तु उन्हे क्या पता कि महर्षि ने वैदिकधम के प्रचार को सगठित होकर चलाने के लिये आर्यसमाज के रूप मे ठोस आधार दिया है। यह दुर्भाग्य है कि आर्यसमाज महर्षि के स्वप्न को साकार नही कर पारहा है, अन्यथा आर्य समाज योजनाबद्ध ढग से कार्यक्रम बनाकर विद्वानो के भाषणो और साहित्य वितरण व विशेष अवसरो पर जन-सम्पर्क द्वारा ग्राम-ग्राम मे वैदिकधर्म का सन्देश पहुचा सकते हैं।

जब सन्यासियो की कमी है, तब तो बुलाकर भी कुछ आर्यसमाजो मे ऐसा दुर्व्यवहार होता है, जैसा कि मैंने अपने पूर्व लेख मे लिखा था, किन्तु सन्यासी द्वार-द्वार जाकर प्रचार करते तो भीतर से उत्तर मिला करता कि हम अपने घर को देखे, बच्चो को सम्भाले या तेरा उपदेश सुने। अभी भी कही-कही को छोडकर जिस दिन सन्यासी आदि उपदेश-कर्त्ताओ को भोजन कराने का अवसर आता है तो बेचारा समाज का मन्त्री दुःखी हो उठता है। जिस घर मे भोजन को कहलाता है, वही से नकार हो जाता है। उस दिन किसी की घरवाली बीमार होती है, किसी की कही सहेली आदि के घर गयी होती है। जैसे कि उस दिन उसके परिवार वाले निराहार ही रहेगे। एक के बीमार होने या बाहर जाने से घर मे भोजन ही नही बनेगा।

उनकी दृष्टि मे पचास वर्ष पहले के आर्य सन्यासी नित्य ही उनके घर रोटी मागने और उपदेश करने जाते होंगे। सर्वश्री स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वा० सर्वदानन्द, स्वा० दर्शनानन्द, स्वा० ब्रह्मानन्द, स्वा० त्यागानन्द स्वा० व्रतानन्द, स्वा० केवलानन्द और महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज उनके द्वार पर तो सैंकडो-सैंकडो बार गये ही होगे। उनके नगर तथा आस पास के ग्रामो में भी आये दिन चक्कर काटते रहे होगे।

यदि इन महापुरुषो ने सस्थायें न बनायी होती तो यह जितना कार्य सम्पादन कर गये, वह न कर पाये होते। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कागडी, इन्द्रप्रस्थ आदि गुरुकुलो द्वारा स्वा० दर्शनानन्द जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल बदायूं, गुरुकुल सिकन्दराबाद आदि खोल कर, स्वा० त्यागानन्द जी ने गुरुकुल अयोध्या स्थापित कर स्वा० सर्वदानन्द जी ने हरदुआ गज साधु आश्रम में गुरुकुल चलाकर, स्वा० ब्रह्मानन्द जी ने गुरुकुल एटा स्थापित कर, स्वामी व्रतानन्द जी ने गुरुकुल चित्तौडगढ प्रारम्भ कर, स्वामी केवलानन्द जी ने निगमागम सस्कृत विद्यालय गज द्वारा और महात्मा नारायण स्वामी ने गुरुकुल वृन्दावन, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, नारायण आश्रम रामगढ स्थापित कर तथा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने दयानन्दमठ दीनानगर और दयानन्द मठ रोहतक आदि के द्वारा जो वैदिकधर्म और आर्यसमाज की सेवायें की हैं तथा जो शतश वैदिक विद्वान् तैयार किये हैं, वह आर्यसमाज के इतिहास की थाती बनकर अमर और चिरस्मरणीय स्थान प्राप्त किये हुए हैं।

वर्तमान समय मे भी स्वामी ओमानन्द जी की गुरुकुल झज्जर के माध्यम से की गई सेवाओ का मूल्याकन वही कर सकते है जो बुद्धिमान् लोग हैं। हीरे का मूल्य जोहरी ही पहचानता है, हनुमान के प्रसाद से यह आशा नही की जा सकती। कन्या गुरुकुल नरेला के लिए अपनी पैतृक सम्पत्ति की पूर्णाहुति देकर जो सर्वमेध किया है, क्या वह नारी जाति मे वेद-विदुषिया तैयार करने का महोपकारक कार्य नही है ? मेरे जैसे सस्थान वाले भी यदि द्वार-द्वार भटक कर जीवन दे देते तो श्री

हनुमानप्रसाद जैसे लोगो को तो अवश्य प्रसन्नता होती, किन्तु प्रत्येक बुद्धिवादी और विचारक यही कहता कि स्वामी वेदमुनि अच्छे साधु थे, किन्तु किया कुछ भी नही, केवल मागने-खाने और भाषणों मे ही जीवन समाप्त कर दिया। अब सभी विचारक—आर्यसमाजी ही नही अपितु आर्यसमाजेतर लोग भी—जिन्हे मेरा थोडा-सा भी परिचय प्राप्त है, वह जानते हैं कि वेदमुनि क्या कर रहा है ? है तो बात आत्मश्लाघा की, किन्तु जब प्रसग उपस्थित हो ही गया तो इतना निवेदन कर दूं कि अब तक छोटे-बडी चालीस से अधिक पुस्तके प्रकाशित होकर जनता के हाथो मे पहुच चुकी है। न केवल वेद-विषयक अपितु शिक्षा, पारिवारिक जीवन, इतिहास तथा राष्ट्रीय समस्याओ पर भी, विशेषकर राष्ट्रद्रोही यवनो के उत्तरो के रूप मे। अभी भी सैकडो पृष्ठ की सामग्री तैयार रखी है, केवल धनी दानियो का सहयोग अपेक्षित है। साढे चार सहस्र पृष्ठ की सामग्री मेरी हस्तलिखित यवनो द्वारा सेंध लगाकर मालिनी नदी मे डुबा दी गई।

तीन वर्ष निरन्तर सरिता जैसी कुख्यात पत्रिका के आर्य सभ्यता, सस्कृति तथा भारतीय महापुरुषो के पवित्र जीवनो पर किये गये गन्दे आक्षेपो के 'पुण्य लोक' मासिक निकाल कर उत्तर दिये, जिसके परिणाम स्वरूप उस समय केवल अठारह मास की अवधि मे ही सरिता की ग्राहक सख्या ४८४०० से घटकर ४४२०० रह गई थी। परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि आर्यसमाज मे घुसे क्लबवादियो तथा हनुमान जी जैसी सूझ-बूझ रखने वाले लोगो के कारण 'पुण्य लोक' के कार्य का मूल्याकन नही हुआ। जिसके परिणामस्वरूप तीन वर्ष मे ही ऋण मे दबकर सस्थान को 'पुण्यलोक' बन्द करना पडा। गुरुकुल कागडी पर किये गये सरिता के आक्षेपो के उत्तरो के सदर्भ मे उसका प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था।

मेरे जैसे मठाधीशो को तो स्वर्ण सिंहासन मिल गये, इन सस्थाओ के द्वारा। जो अहर्निश मारे-मारे फिरने, विरोधी विचारधारा वालो की दृष्टि मे काटे की भाति खटकते और कई बार विरोधियो की गोलियो का निशाना और छुरे का शिकार होते होते बचे तथा अब भी कई अपने परायो की क्रूर दृष्टिया अवसर की खोज मे हैं। स्वा० श्रद्धानन्द और भक्त फूलसिंह जी जो गोलियो का शिकार हुए, वह पत्र लेखक महोदय की दृष्टि मे अपने परिवार पोषण के कारण हुए होगे और सन् १९५१ से लेकर अब तक मेरी हत्या की जो योजनायें बनी तथा जो आक्रमण मुझ पर किये गये, वह भी किसी सम्पत्ति के बटवारे को लेकर नही अपितु आर्यसमाज के मिशन के कारण ही हुए।

अब भी सन् १९८० से उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जनपदो मे मुसलमानो की राष्ट्रद्रोही गतिविधियो के विरुद्ध लेखो व भाषणो द्वारा जो जन-जागरण का कार्य कर रहा हूं और उत्तराखण्ड के सीमात क्षेत्र को नागालैंड न बनने देने के जिस कार्य मे लगा हू, उसमे मेरा परिवार पोषण नही हो रहा। इस समय भी वह सस्थान ऋणभार मे दबा हुआ १०० रुपये मासिक के एक खण्डहर मे चल रहा है। भवन तो क्या ? कही एक इच भूमि भी सस्थान के नाम पर नही है। ऋण लेकर लोग परिवार पोषण करते हैं और हम आर्यसमाज के कार्य के लिए ऋण लेते हैं किन्तु इस प्रकार के आक्षेपकर्ता अपनी नादानो मे कार्य करनेवालो को हतोत्साहित कर आर्यसमाज को हानि पहुचाने को प्रत्येक समय समुद्यत रहते है।

मेरे द्वारा स्थापित वैदिक सस्थान नजीबाबाद के माध्यम से अब तक पिछडे और दलितवर्ग के अनेक बच्चे शिक्षित होकर तथा आर्य बनकर शिक्षा क्षेत्र, प्रशासन तथा अन्य केन्द्रीय सरकार के अनेक उच्च पदो पर कार्य कर रहे है। उन सब की घरेलू परिस्थितियो, उनके शिक्षा-काल तथा उनके पदो का विवरण देकर लेख के कलेवर को नही बढाना चाहता।

सस्थान बनाकर कार्य करने का अर्थ है, योजनाबद्ध ढग से कार्य करना। जिनके पास कोई योजना नही तथा जो योजना बनाने और उन्हे कार्यरूप मे परिणत करने की योग्यता नही रखते, वह सस्था नही बना सकते। इन सस्थाओ के द्वारा आर्यसमाज का जो ठोस कार्य हुआ है, वह द्वार-द्वार घूमने वाले सन्यासी नही कर सकते। ६-६ महीने पहले बुकिंग उन्ही की होती है, जिनके पास कुछ है। जो जनता को कुछ देने की योग्यता नही रखता, उसकी बुकिंग तो कोई हनुमान प्रसाद जैसी ही सूझ-बूझ रखने वाला करेगा।

मैंने अपने पिछले लेख में उल्टी-सीधी आहुतिया देकर जल्दी-जल्दी यज्ञ समाप्त करने की बात भी लिखी थी। उसके लिये भी हनुमान जी ने ब्राह्मणो, सन्यासियो के अभाव का ही रोना रोया है। ऐसा लगता है उन्होने घर बैठे ही समाधिस्थ होकर आत्मसाक्षात् द्वारा यह सब ज्ञान प्राप्त किया है अन्यथा वास्तविकता यह है कि आर्यसमाजियो को कितना ही समझा लो, वह यज्ञ के विषय में तो किसी भी विद्वान की बात सुनने को तैयार नही। समझाने पर उल्टे लडने तथा अपमानित करने को तैयार हो जाते हैं। कई समाजो मे स्वय कार्यकर्त्ताओ, स्वय हम से माग की कि हमारी यज्ञ-पद्धति और मन्त्र पाठ ठीक कराइये। हमने सप्ताह-भर बताया सिखाया। जिस दिन हम यात्रा की तैयारी मे लगे, उनकी फिर वही रफ्तार बेढगी।

अनेक समाजो मे तो कार्यकर्त्ताओ ने हम मे पूर्व-सुधार कराके गये विद्वानो की उल्टी शिकायत की और कहा जो कोई आता है वह अपना ही चलाता है। अब तक तो हम ऐसे ही करते आये है। मैंने स्वय सस्कारविधि दिखाकर उन्हे समझाया कि जिस विद्वान् ने आपको बताया है, ठीक ही बताया है। अब तक आप भ्राति मे रहे, ऋषि के विधानानुसार विद्वान ने ठीक ही बताया है। इतने पर भी अडे रहते और कहते हैं कि अब तक तो हमारे यहा ऐसे ही होता रहा, क्या अब तक इस प्रकार करनेवाले सभी मूर्ख थे ? एक-दो स्थानो पर तो मुझे कहना पडा कि हा, जो आर्यसमाज के प्रवर्त्तक और यज्ञ-पद्धति निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती के विधान के विरुद्ध यज्ञ करते और कराते रहे हैं, वह नितात मूढ थे और हैं। आर्यसमाज की यज्ञ और सस्कार पद्धतियो के निर्माता ऋषिवर दयानन्द हैं और कोई नही और जो उसमे फेर-बदल करता तथा अपनी भूल को सुधारने को तैयार नही होता, वह या तो दयानन्द द्रोही है अथवा अविद्याग्रस्त अन्धविश्वासी—वैदिकधर्मी आर्य कदापि नही।

आर्यसमाजो मे अधिकाश स्थानो पर अविद्याग्रस्त मुसलचन्द अधिकारी बने बैठे हैं। मन्त्री और प्रधान बनने की लडाइया तथा मुकदमे लडते रहे तथा उनके आर्यसमाजो की गाडी उनके टुकडो पर पलकर सन्यासी खीचते रहे। गृहस्थ किस रोग की औषधि है ? आर्यसमाजी बनते ही दान-दक्षिणा मे परले दर्जे की कजूसी करेगे। अपना एक भी बेटा आर्यसमाज के मिशन के लिए नही देंगे, उपदेश और परामर्श देंगे सन्यासियो को। सन्यासियो को यह करना चाहिए, वह करना चाहिए। पौराणिको में दान, जप, तप सब यजमान के लिये, पण्डित जी के लिए कुछ नही और आर्यसमाज मे त्याग, तपस्या, धर्म, कर्म सब सन्यासियों और उपदेशको के लिए, यजमानो के लिये कुछ नही।

घरवालो और सन्तानो तक को आर्यसमाजी नहीं बना पाते। घरों में न आर्य पर्व-पद्धति के अनुसार पर्व करते हैं, न सस्कार-विधि के अनुसार बच्चो के सस्कार कराते हैं। पच्चीस पैसे मासिक देकर आर्यसमाज के नेता बनने और आर्य सन्यासियो व आर्योपदेशको को आदेश देने तथा अपमानित करने के लिये अधिकृत हो जाते हैं। किसी विरले अपवाद ... बात नही कहता अन्यथा सभी सन्यासी प्राय पौराणिक घरो से आर्यसमाज के क्षेत्र मे आये हैं। आर्यसमाजियो द्वारा अवहेलना उपेक्षा, अपमान तिरस्कार सहकर और आर्यसमाज के मिशन के लिए दिन-रात ठोकरे खाकर अपने और पराये सभी की ओर से आघात और मृत्यु के झझट मोल लेकर आर्यसमाज के कार्य मे प्राणपण मे जुटे हैं किन्तु सिद्धानानभिज्ञ सिद्धातहीन तथा काला अक्षर भैंस बराबर किसी भी विषय पर विचार करने की योग्यता से सर्वथा रहित व्यक्ति किसी आर्यसमाज की सदस्य पजिका मे साधारण से चन्दे के बल पर नाम लिखा कर, उन जीवनदानीजनो की इस प्रकार प्रताडना करने के अधिकारी हो जाने का दम भरते हैं, यह आर्यसमाज का दुर्भाग्य है और यही कारण है कि आर्यसमाज मे सन्यासियो और विद्वान् उपदेशको का अभाव होता जाता है।

अपने बच्चो को तो यह चन्दा बहादुर वकील, डाक्टर, प्रोफेसर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज को ठीक से समझा जाए

लेo—यशपाल आर्यबन्धु, आर्योपदेशक, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

उन्नीसवी शताब्दी के सर्वाधिक प्रगतिशील बौद्धिक आदोलन आर्य समाज के कार्यों, प्रवृत्तियो एव लक्ष्य को लेकर न केवल जनसाधारण मे अपितु पठित समुदाय मे भी विभिन्न प्रकार की भ्रातिया व्याप्त हैं। पौराणिक समुदाय तो आर्यसमाज को सदैव अपना शत्रु मानता रहा है, ईसाई और मुसलमान भी इसे इसी दृष्टि से देखते हैं। ब्रिटिश शासको को आर्यसमाज एक ऐसी षड्यन्त्रकारी सस्था के रूप मे दिखाई देती थी, जो मानो अग्रेजी राजसत्ता का मूलोच्छेद करने के लिए ही कृतसकल्प हो। कुछ लोग आर्यसमाज को एक सुधारवादी आदोलन के रूप देखते हैं तो कोई हिन्दू पुनरुत्थानवादी आदोलन की सज्ञा देते हैं। तात्पर्य यह है कि कोई आर्यसमाज को किसी रूप मे देखता है, तो कोई किसी रूप मे। इसी प्रसग मे जब हम पडित जवाहरलाल नेहरू की प्रतिक्रिया जानने का यत्न करते हैं तो हम पाते है कि वे इसे ईसाइयत एव इस्लाम की प्रसारवादी गतिविधियो का नियन्त्रण करने हेतु जन्मी सस्था के रूप मे स्मरण करते हैं। पर वास्तविकता यह है कि आर्यसमाज न तो ईसाई और मुसलमानो का ही विरोधी है और न ही हिन्दुओ का। वह तो विशुद्ध मानवतावादी सार्वभौम आदोलन है। वस्तुत आर्यसमाज का आदोलन किसी देश, जाति, सम्प्रदाय अथवा वर्ग तक सीमित न रहकर मानवमात्र का कल्याण करने हेतु दृढसकल्प रखने वाले लोगो का सगठन है। इसीलिये इसके नियमो का निर्धारण करते समय ससार का उपकार करने को ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया गया है। आर्यसमाज की नीतिया और प्रवृत्तिया सर्वजनोपयोग सार्वभौम तथा सर्वकालीन हैं तथापि जिस भारत देश में आर्यसम्यता का जन्म और अम्युदय हुआ, वैदिक शिक्षाओ के प्रचार प्रसार मे जिस देश ने अपना सर्वाधिक योगदान किया, उस देश के प्रति भी उसका दायित्व किसी प्रकार कम नही है। अत. इस दृष्टि में आर्यसमाज आदोलन को समझने की आवश्यकता है।

आर्यसमाज की भी यही चाहना है कि उसे ठीक से समझा जावे। वह चाहता है कि लोग यह भली-भाति हृदयगम करले कि आर्यसमाज कोई मत, मजहब या सम्प्रदाय नही अपितु मतो, पथो आदि से मुक्ति दिलाने वाला विशुद्ध मानवतावादी आदोलन है। यह वह आदोलन है कि जो बुद्धिवाद का समर्थन करता हुआ वेद की ओर लौट चलने का आह्वान करता है। आर्यसमाज चाहता है कि उसे समझने मे कोई भूल न करे। इसके सस्थापक ने सुस्पष्ट उद्घोष किया था कि—'मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है किन्तु जो सत्य है, उसको मानना मनवाना और जो असत्य है, उसको छोडना छुडवाना मुझको अभीष्ट है।" सत्य तो यह है कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषि-महर्षि जिस वेद—प्रतिपादित सत्य सनातन-धर्म को मानते-मनवाते चले आये है, ऋषि दयानन्द ने उसी धर्म की ही व्यवस्था दी है, एव उसी के प्रचार-प्रसार के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की है। इस प्रकार आर्यसमाज की स्थापना कर, महर्षि दयानन्द ने लुप्तप्राय वैदिकधर्म को ही पुन प्रतिष्ठित करने का सत्प्रयास किया है। महर्षि ऐसे सर्वमान्य सिद्धात एव सार्वजनिक धर्म को सत्य सनातन धर्म की सज्ञा देते है एव उसी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होने आर्य-समाज को गठित किया था। वस्तुत उन्होने कोई गुरु गद्दी का मठ नही बनाया था। इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज लाहौर के श्री शारदा-प्रसाद ने यह प्रस्ताव रखा था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती को आर्य-समाज के सस्थापक की पदवी से विभूषित किया जाये तो महर्षि ने यह कर उक्त प्रस्ताव ठुकरा दिया कि—मैंने कोई नया पथ चलाकर गुरु गद्दी का मठ नही बनाया है। मै तो मतवादियो के मठो से स्वतन्त्र करना चाहता हू। ऐसी पदवियों से अन्त में हानिया हुआ करती हैं।" यहा तक कि आर्यसमाज लाहौर की कार्यकारिणी को अपने प्रभाव से मुक्त रखने के लिए उन्होने कोई सम्मति केवल इसी आधार पर देनी स्वीकार नहीं की थी कि वे उसके सभासद् नहीं थे। सभासद् न होते हुए भी उन की बात को कोई टाल नही सकता था किन्तु वे स्वय ही एक उदाहरण प्रस्तुत कर उसे सर्वथा लोकतान्त्रिक आदर्श देना चाहते थे। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो धार्मिक जगत् में लोकतान्त्रिक आदर्शों की सस्थापना का यह प्रथम अवसर था। पाठक विचारे कि कितना ऊचा आदर्श है कि सस्थापक धर्मसम्बन्धी व्यवस्था तो देता है किन्तु सचालन—व्यवस्था सम्बन्धी किसी भी विषय पर अपनी सम्मति देने से सर्वथा इन्कार कर देता है। वह सगठन को पूर्ण स्वतन्त्र रखना चाहता है। वह चाहता है कि निर्वाचित सदस्यो को कार्य करने का पूर्ण एव स्वतन्त्र अवसर प्राप्त हो सके। अत वह उसमे कोई हस्तक्षेप उचित नही समझता। यही बात यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि महर्षि कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चलाना नही चाहते थे। वे वेदमत के ही उद्धारक एव प्रचारक थे। तभी उन्होने आर्यों के लिए वेदो को पढना-पढाना और सुनना-सुनाना अनिवार्य किया था।

आर्यसमाज का उद्देश्य भी भूली-बिसरी वेद-विद्या का प्रचार है। बम्बई मे प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय पजीकर्त्ता रजिस्टरार को जो घोषणा-पत्र दिया गया था वह इसमे प्रमाण है। उसमे आर्य-समाज का उद्देश्य ससार मे वेद-विद्या का प्रचार-प्रसार ही बताया गया था और वेद किसी जाति विशेष अथवा देश विशेष के लिए हैं नही। न ही यह किसी काल विशेष के लिए ही हैं। तात्पर्य यह कि वेद देश, जाति और काल आदि के बन्धनो से मुक्त है। यही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान और समस्त ज्ञान-विज्ञान का और भाषा का आदि मूल है। जब वेद सार्वभौम हैं तो वेदो का प्रचारक आर्यसमाज भी सार्वभौम आदोलन हुआ। वेद की शिक्षायें भी मानवमात्र के लिए हैं, अत वेद का प्रचारक आर्यसमाज भी मानवमात्र के लिए है। वेद का उद्घोष श्रेष्ठ मानव अर्थात् आर्य बनाना है, आर्यसमाज का उद्देश्य भी यही है। अत आर्य-समाज किसी सकुचित एव सीमित क्षेत्र से आबद्ध नही। ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। अत आर्यसमाज का आदोलन सम्पूर्ण ससार के लिए है। उसे एक देशीय अथवा किसी जाति अथवा वर्ग विशेष के लिए कहना, उसके प्रति घोर अन्याय होगा। आवश्यकता इस बात की है कि इस सार्वभौम आदोलन को ठीक से समझा जावे और फिर इसे सहयोग देकर ससार के उपकार के महद् कार्य मे भागीदार बना जावे।

वैदिक साधु आश्रम रोपड़ का वार्षिक महोत्सव

वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड रोपड (पजाब) मे १८ मई रविवार को विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन हो रहा है। सम्मेलन मे पजाब की आर्य जनता एकत्र होकर, गम्भीर विचार करके इस विषय पर ठोस निर्णय लेगी कि वर्तमान परिस्थिति मे महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के कार्यो को कैसे सुचारु रूप से आगे बढाया जाये।

इस अवसर पर सभी अन्य सम्प्रदायो के साधु सन्यासियो की भी एक पृथक् महत्त्वपूर्ण गोष्ठी होगी, जिसमे जाति, राष्ट्र और देश की शाति, एकता और अखण्डता के लिये पजाब मे सर्वधर्मसद्भावना के प्रसार का अभियान तेजी से चलाने का निर्णय लिया जायेगा।

वेदानन्द सरस्वती अध्यक्ष
वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड, रोपड

आर्यसमाज लोहारू का उत्सव

लोहारू आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव १७-१८ मई को होना निश्चित हुआ है। इसमे श्री वीरेन्द्र, श्री रामस्वरूप जी वैद्य, पं० चिरजीलाल जी, सुमेरसिह जी, प्रो० ओमकुमार जी, श्री सुखदेव जी शास्त्री, स्वामी ओमानन्द जी, श्री हीरानन्द जी आर्य विधायक आदि व्यक्ति पधार रहे हैं।

शीशे के मकानों में रहने वालों को दूसरों पर पत्थर फेंकने से पहले—

८ दिसम्बर, १९८५ की साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' पत्रिका मे एक लेख 'एक घटना और एक दुर्घटना' के नाम से प्रकाशित हुआ तथा इस का लेखन श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेद मन्दिर बरेली ने किया। इसी के प्रत्युत्तर में एक लेख श्री राजवीर शास्त्री तथा श्री विरजानन्द दैवकरणी का साप्ताहिक 'सर्वहितकारी' के ७ फरवरी, १९८६ के अक में पढने को मिला।

सत्य, तर्क व न्याय सगत लेखो द्वारा जो स्पष्टीकरण श्री विरजानन्द और श्री राजवीर जी ने दिया नि सदेह वह इस कार्य के लिये बधाई के पात्र है। इन लेखो के पढने के बाद सभी आर्य सज्जन कम से कम इस बात से तो जरूर सहमत होगे कि दिखावटी विद्वत्ता की चादर ओढकर ओछे हथकडे अपनाकर दुर्भावनावश श्री विश्वश्रवा व्यास जी अपनी झूठी मान मर्यादा तथा स्वाभिमान बढाने हेतु ही पूजनीय श्री स्वामी ओमानन्द जी जैसे तपस्वी साधु पर दोषारोपण करने पर लगे हुए हैं। दूसरी बात इन लेखो द्वारा यह भी स्पष्ट हो जाती है कि श्री विश्वश्रवा व्यास जी का अपना कोई चरित्र नही है। गुरुकुल का चन्दा हजम करने वाला विद्यार्थियो के अमूल्य जीवन से खिलवाड करने वाला महेश योगी के टुकडो पर पलनेवाला तथा सत्य के सिद्धातो को कुछ चादी के टुकडो के एवज मे गिरवी रखनेवाला आर्य कहलाने का अधिकारी कदापि नही बन सकता।

अत अब समय आगया है, सभी आर्य सज्जन शाति से विचार कर ऐसे आडम्बरी लेखक का आर्यसमाज से बहिष्कार करे, ताकि भविष्य मे कोई ऐसा दु साहस न कर सके। ऐसा करने पर ही आर्यसमाज की भलाई है।

ऐसा करने से जहा एक ओर आर्यसमाज की भलाई होगी, वही दूसरी ओर पूजनीय श्री स्वामी ओमानन्द जी जैसे और तपस्वी साधुओ मे अधिक उत्साह जागृत होकर स्वामी दयानन्द जी के अधूरे कार्यो को पूरा करने का साहस मिलेगा।

अन्त मे श्री विश्वश्रवा व्यास जी से नम्र निवेदन करूगा कि शीशो के मकानो मे रहने वालो को दूसरो पर पत्थर फेकने से पहले तनिक सोचना चाहिए। वह साहस कर पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी से क्षमा याचना करे। मुझे पूरा यकीन है, स्वामी ओमानन्द जी उन्हे फिर क्षमा कर देगे।

—ले० होश्यारसिंह

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल वेद मन्दिर मताना डिग्गी फतेहाबाद जि० हिसार हरयाणा मे नये छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। गुरुकुल मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की विशारद एव शास्त्री कक्षाओ को पढाने हेतु उत्तम एव योग्य आचार्यो की व्यवस्था है। गुरुकुल फतेहाबाद से ३ किलोमीटर हिसार की ओर दिल्ली मार्ग पर स्थित है। भोजन शुल्क १००) मासिक है। निर्धन व मेधावी छात्रो के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। इच्छुक छात्र प्रवेश हेतु निम्न पते पर शीघ्र सम्पर्क करे।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वेद मन्दिर मताना डिग्गी, फतेहाबाद, हिसार, हरयाणा

सत की जीत

धन्य हैं वे महापुरुष, जो घर-घर बाटे प्रीत।
रामजी होवे सत की जीत, जो जन-जन की सेवा करता।
निर्मोही वे प्रीत, रामजी होवे सत की जीत।
मानवता की वीणा बजती, बजे मधुर सगीत।
रामजी होवे सत की जीत, जो ये भगवे चोले पहने।
डोले इनकी नीत, रामजी होवे सत की जीत।

डा० अनिलकुमार पवांर

शुद्धि समाचार

दिनाक २३ ४-८६ को ग्राम बगड जिला झुझनू में यज्ञ (हवन) किया गया और मुसलमान नटो ने अपनी स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया। समाज मे इज्जत और रोटी, बेटी का सम्बन्ध बनाया गया। तत्पश्चात् उनके हाथ से ग्रामीणों ने प्रीतिभोज ग्रहण किया। यह कार्यवाही सेवानन्द सरस्वती हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरयाणा कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर समालखा द्वारा सम्पन्न हुआ और सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे यह कार्यवाही की गई। श्री मागेराम भजनोपदेशक के सहयोग से यह शुद्धि कार्य किया गया।

	प्राचीन नाम	नवीन नाम	पिता का नाम	सख्या
१	गुलाम	गुलाबसिंह	नौरग	१५
२	अमरू	अमरसिंह	नौरग	८
३	विरजा	विरजानन्द	नौरग	१०
४	हेमू	धर्मपाल	नौरग	१२
५	रेमू	रमेश	अमरसिंह	७
६	ओमप्रकाश	ओमप्रकाश	गुलाबसिंह	२
७	रोहिताश	रोहिताश्व	गुलाबसिंह	६
८	हीमा	हरीसिंह	गुलाबसिंह	८
९	गन्नी	ज्ञानोराम	विरजानन्द	६
१०	बलवीर	बलवीरसिंह	विरजानन्द	२
११	महेन्द्र	महेन्द्रसिंह	धर्मा	४
१२	तारा	ताराचन्द	गुलाबसिंह	१
१३	वेदप्रकाश	वेदप्रकाश	गुलाबसिंह	३

योग—८४

राष्ट्रीय आत्मोद्बोधन

यह आसुरी षड्यन्त्र घर मे क्यो आग लगा बैठे हो।
औरो को क्यो कोस रहे जब खुद ही चोर बसा बैठे हो।
सपनो की दुनिया मे सोये, सारे घोडे भाग गये जब।
तब हठमेली करते थे, अब दोनो हाथो को जोड रहे हो।

तोड दिये तब बन्धन सारे, अब टूटे तारो को जोड रहे।
पर अब भी सत्य को छोड रहे, कर गुणा भाग बस जोड रहे।
कर्म स्तुत्य कह देते पर स्थिति को दे मोड रहे क्यो।
डर अपराधी छोड रहे तुम, यो कर अनर्थ क्यो घोर रहे।

काम क्रोध तृष्णा के मारे, बसे हुए अब भी हत्यारे।
तुम रोब दिखाते औरो पर, घर के ये सब काम विसारे।
झाडू दे दो हटे बुराई गहो भलाई, इन्द्रिय सयत् हो जायें-
मन के घोडे बाधो सारे, यों मनमीत बनो न प्यारे।

मनका कौतुक बडी कुटिलता कौशल यो न दिखलाओ।
अपना भेद दिखाया घृणित, भले बनो न मन फुसलाओ।
वहाना वहशीपन है पर दशता औरो के गात नही।
घात नही टिक सकती जग मे, यह सत्य न झुठलाओ।

हिंसा पापाचार बडा है, पागल बना सियार खडा है।
गोहत्या नरहत्या पशुवध न जाने क्यो अनाचार बढा है।
पाखण्ड द्वन्द्व कुरीति अनीति के प्रेत की मेट दो छाया।
मारो विकार स्यार को, धारो वेदाचार को धर्म यह बडा है।
मारो "स्यार जो खडा है।

मेधाव्रत सन्यासी शिव शास्त्री एम०ए०, शिमली

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

ग्राम बड़सी जि० भिवानी में १ अप्रैल ८६ से शराब के ठेके पर धरना विधिवत् आरम्भ

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गाव बडसी जि० भिवानी मे आजाद युवा क्लब के प्रधान श्री बलवन्तसिंह जी एव ग्रामीण महिला मण्डल की प्रधान श्रीमती मेवा देवी के नेतृत्व मे १ अप्रल १९८६ से शराब के ठेके पर धरना विधिवत् आरम्भ हो चुका है। धरने पर प्रात प्रतिदिन प० भरतलाल शास्त्री द्वारा यज्ञ किया जाता है। एक अप्रैल से ही प० खुशीराम एव प० सुलतानसिंह के शराब के विरोध मे [illegible]प्रद भजनो का कार्यक्रम भी निरन्तर चल रहा है। धरने पर लगभग ५० नर-नारी हर समय रहते हैं। धरने पर अब तक वैदिक प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा। १० सपत्नीक जोडो ने जनेऊ धारण किये, ३० खूंखार शराबियो ने शराब न पीने का व्रत लिया। जिनमे गाव के नम्बरदार एव सरपच भी शामिल हैं।

दिनाक ६ ४ ८६ का दृश्य देखते ही बनता था। पहले यह ठेका श्री रामचन्द्र जी के मकान मे था, जब भाईचारा पचायत ने उसे अपने मकान से इस ठेके को उठाने पर मजबूर किया तो ठेकेदार पुलिस के सहयोग से जब यह ठेका की बोतल उठाकर गाव से लगभग दो एकड दूर, मिलकपुर रोड पर पी० डब्लयू० डी० को जमीन मे एक खोखे मे ले गया तो गाव वाले हजारो की सख्या मे धरना स्थल पर आगये। साथ में अपने धरना के आसमाने उठाकर उस खोखे के सामने ले आये। शराब का ठेका बन्द करो, बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं आदि नारे लगाते हुए महिलाओ का समूह उस भागते हुए ठेके की तरफ उमड पडा। युवा क्लब के प्रधान श्री बलवन्त एव महात्मा अग्निदेव जी ने हाथ जोडकर भीड को काबू किया। पुलिस वाले एव ठेकेदार बुरी तरह डर गये। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि उसी दिन से वह खोखा बन्द पडा है। धरना स्थल पर लोग काफी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। लोगो मे काफी रोष है। बडसी ग्राम मे दो पचायत हैं। दोनो सरपच श्री जोगीराम एव श्री गगासहाय सरपच पूरी तरह युवामण्डल के साथ है। श्री भानाराम आर्य एव महात्मा अग्निदेव जी गाव मे बच्चो से शराब विरोधी नारे लगवाते हैं आज दस दिन से किसान मजदूर अपना कोमती समय निकालकर धरने पर बैठे हैं। इस भ्रष्ट एव लालची सरकार के कानो मे जू तक नहीं रेगी [illegible] युवा क्लब के प्रधान श्री बलवन्तसिंह ने आश्वासन दिलाया कि जब तक यह पाप का अड्डा नही उठेगा, धरना जारी रहेगा।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

महात्मा हंसराज दिवस रविवार, २० अप्रैल ८६ को स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, समस्त डी०ए०वी० सस्थाओ एव अन्य आर्य सस्थाओ की ओर से त्यागमूर्ति महात्मा हसराज दिवस रविवार, २० अप्रैल, १९८६ को प्रात ९ से दोपहर १ बजे तक आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में तालकटौरा गार्डन, इण्डौर स्टेडियम, नई दिल्ली मे बडे समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस समारोह मे महात्मा जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने वालो में मुख्य रूप से श्री पी० शिवशकर वाणिज्य मन्त्री, श्री वी०एन० गाडगिल सूचना एव प्रसारण मन्त्री, श्री रामनिवास मिर्धा सचारमन्त्री एव गृह राज्यमन्त्री, श्री रामचन्द्र विकल ससदसदस्य, श्री डा० एल० एम० सिघवी प्रसिद्ध न्यायविद्, श्री प्रो० शेरसिंह भू०पू० राज्यमन्त्री एव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्रीमती प्रभात शोभा पडित आदि थे।

रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज रानीला जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री रामफल आर्य, उपप्रधान—मा० रामचन्द सागवान, मन्त्री—गुरुमुखसिंह, कोषाध्यक्ष—छाजूराम आर्य।

आर्यसमाज भुंगारका जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—सर्वश्री कृष्णकात शर्मा, उपप्रधान—सोहनलाल, मन्त्री—जगराम आर्य, उपमन्त्री—मुकटचन्द, प्रचारमन्त्री—प्यारेलाल गजब, कोषाध्यक्ष-दयानन्द, लेखानिरीक्षक-कप्तान कन्हैयालाल, पुस्तकाध्यक्ष-ईश्वरसिंह।

आर्यसमाज भांडवा जि० भिवानी

प्रधान सर्वश्री विजयेन्द्र आर्य प्रभाकर, मन्त्री—धर्मपाल आर्य वीर शास्त्री, कोषाध्यक्ष—आजाद आर्य आजाद एम०ए०, पुस्तकाध्यक्ष-बीरसिंह आर्य धर्मभक्त, लेखानिरीक्षक—प्रेमसिंह आर्य प्रेमी।

आर्य वीरदल गुड़गांव

नगर नायक—सर्वश्री शिवदत्त आर्य, उपनगर नायक—सोमदत्त आर्य, मन्त्री—लाजपत आर्य, उपमन्त्री—हर्षवर्धन आर्य, लेखानिरीक्षक-ओमप्रकाश मदान, कोषाध्यक्ष-भारतभूषण आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष—ईश्वरचन्द शास्त्री, अमीलाल शास्त्री।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीरदल हरयाणा की माग पर दिनाक २३ मई से ३१ मई तक डी०ए०वी० कालेज पुण्डरी मे एक विशाल आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है। इस शिविर मे कुरुक्षेत्र तथा निकटवर्ती जिलो के आर्यवीर भाग लेंगे। शिविर की सफलता हेतु प्रि० राजकुमार चौहान की अध्यक्षता मे एक समिति बनादी गई है जिसके सयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी होगे। अत सभी आर्यसमाजो, आर्य सस्थाओ से निवेदन किया जाता है कि अपने-अपने गाव से, कम से कम पाच नवयुवको को प्रशिक्षण दिलाने भेज और शिविर को सफल बनाने के लिए हर प्रकार का सहयोग देवे। शिविर शुल्क २० रुपये होगा।

आर्यवीर शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन मे आर्यसमाज नरवाना के तत्वावधान मे दिनाक २ जून से १५ जून तक एक आर्यवीर उप-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है। शिविर मे केवल वे आर्यवीर भाग लेगे, जिन्होंने इससे पूर्व एक सामान्य शिविर किया हो या दल की शाखा के नियमित सदस्य हो, नये आर्यवीरो के लिए प्रथम वर्गीय शिविर प्रत्येक जिले मे होगा। इन शिविरो से चुने हुए आर्यवीर भी इस शिविर मे भाग ले सकेंगे। इस शिविर मे चुने जानेवाले आर्यवीरो को १६ जून से २६ जून तक गुरुकुल झज्जर मे शिक्षक प्रशिक्षण शिविर के लिए भेजा जायेगा। अत इच्छुक नौजवान यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

आर्यवीर अधिकारी प्रशिक्षण शिविर

गतवर्ष की भाति इस वर्ष भी २७ जून मे एक सप्ताह का प्रशिक्षण शिविर किसी ठण्डे पहाडी स्थान पर लगाया जायेगा। जिसमे केवल आर्य वीरदल के अधिकारी ही भाग ले सकेंगे। इस शिविर मे वर्षभर के कार्यों की रूपरेखा तैयार की जायेगी। इस विषय मे आप अपनी सम्मति श्री धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्यसमाज नरवाना जि० जींद को यथाशीघ्र भेजकर कर्म में सहयोग करें।

मदुरे मे ईसाइयों की शुद्धि

दिनाक २३-२-८६ को शहर मदुरे (तामिलनाडू) के आर्यसमाज मन्दिर मे सायकाल ६ बजे हवन-यज्ञ के शुभ अवसर पर श्री नारायण स्वामी व श्री एस० जी० वामनामूर्ति एम०ए०,एल०एल०बी० प्रधान आर्यसमाज मदुरे (टी०एन०), श्री जगन्नाथ मैनेजर व श्री दुर्गाप्रसाद जी कैशियर जिन्दल ब्रादर्स मदुरे (टी०एन०) के सहयोग से और श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता व श्री भरतसिह आर्य (हरयाणा) की उपस्थिति मे तीन ईसाई परिवारो ने स्वेच्छापूर्वक वैदिकधर्म ग्रहण किया। बिरादरी मे इज्जत, रोटी, बेटी का व्यवहार कराया। स्वामी सेवानन्द सरस्वती जी महामन्त्री हि० शु० स० समिति हरयाणा ने अपने भाषण मे वैदिकधर्म (हिन्दू) की विशेषताये पोपपाल के आगमन व शुद्धि पर अधिक बल दिया और बताया कि हमारे मन्दिर, मठ, तीर्थ, धन, मकान व इज्जत आबरू इत्यादि तभी बच सकते हैं, जबकि इस देश मे हिन्दू होगे। इसी प्रकार श्री भरतसिह आर्य कोषाध्यक्ष हि० शु० स० समिति हरयाणा ने भी अपने प्रवचन मे यहा के लोगो को विदेशी मिशनरियो के जाल से सतर्क रहने, वैदिकधर्म का प्रसार करने व शुद्धि अभियान को जारी रखने पर अधिक जोर दिया और हरयाणा की तरफ से उनका धन्यवाद किया। इस समारोह पर स्वामी सेवानन्द सरस्वती ने वैदिक साहित्य व दवाई इत्यादि वितरण की और उन्हे आश्वासन दिया कि समय-समय पर हमारी समिति आप लोगो को हर प्रकार की सहायता करेगी।

सपरिवार शुद्ध हुए व्यक्तियों की सूची

क्रमाक	पुराने नाम	नये नाम
१-	आई जोह बीरतो	१- आई शिवानन्दन
२-	डी० अनबालागेन	२- डी० सुन्दरा राजन
३-	एस० जाकोब-जेग्ज	३- डी० रामकुमार

मूर्ति-पूजा

मेरे नाम से किसी सर्वहितकारी के पाठक ने गुमनाम पत्र "मूर्ति पूजा व्यर्थ नही है" के शीर्षक से पत्र लिखा है और शका समाधान सर्वहितकारी मे पढना चाहा है। इसलिये मैं अपने गुमनाम भाई को सबसे पहले यह सलाह देना चाहता हू कि वे गुमनाम न रहे। उभर कर आगे आयें और अपनी शका का निवारण करें। मूर्ति पूजा के हक मे मेरे गुमनाम भाई ने बडे बडे मन्दिरो और ज्यादा पैसो का ही एव पूजीपतियो का ही रौब दिखाया है। कोई प्रमाणित बात नही लिखा, फिर भी मैं यह स्पष्ट कहना चाहूगा कि मूर्ति-पूजा निरा ढोग व पाखण्ड है। भारत को गुलामी की जजीरो मे जकडने वाली ये सबसे पहली कडी है और इस मूर्ति-पूजा का आज के इस वैज्ञानिक युग मे कोई औचित्य नहीं रह गया है। यह तो स्वार्थी, ठगो और बदकारो का निकम्मापन है और इस के अलावा कुछ भी प्राप्त नही होता।

दूसरा प्रश्न उसने लिखा कि परमात्मा है या नही ? इस प्रश्न का उत्तर तो वो अपने आप से ही पूछते तो अच्छा था, क्योंकि परमात्मा को बिचौलिया नही जचता। आत्मा से परमात्मा का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है, जितना सूर्य से प्रकाश का। अत आप आस्तिक बने और आत्मा और परमात्मा के विषय मे चिन्तन करें। अपने आप से ही यह प्रश्न हल हो सकता है। साथ मे मूर्ति-पूजा के खण्डन के लिए आप सत्यार्थप्रकाश का ग्यारहवा समुल्लास अवश्य पढे और मानसिक उलझन को दूर करने के लिये आप सत्यार्थप्रकाश को कम से कम २१ बार अवश्य पढ़ें। अगला पत्र गुमनाम से न लिखे, नाम से लिखें।

आपका भाई

अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी प्रधान आर्यसमाज कवारी

आर्यसमाज चरखी दादरी के बढ़ते कदम

आर्यसमाज चरखी दादरी का वार्षिकोत्सव दिनाक २६-४-८६ से २८-४-८६ तक पिछले दिनों में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया है। इसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी वेदमुनि जी, आचार्य सुदर्शनदेव, प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री प्रतिनिधि सभा, श्री राजवीर शास्त्री तथा ओम्प्रकाश जी खतौली वाले, भजनोपदेशक श्री शोभाराम प्रेमी, प० लक्ष्मणसिंह बेमोल, प० मुन्शीराम शर्मा, प० ईश्वरसिंह तोफान तथा महाशय अमरचन्द जी आदि महानुभावों ने वेदप्रचार मे बढ-चढकर उपदेश, प्रवचन तथा व्याख्यान दिये। यहा के पदाधिकारी एव कार्यकर्त्ता बडे ही जागरूक एव प्रगतिशील है। इन दिनो बहुत से महत्त्वपूर्ण धार्मिक सम्मेलन भी किये गये, जो कि राष्ट्रीयता के अनुरूप थे। विशेषाकर्षण यह है कि शास्त्रार्थ का भी आयोजन हुआ था।

शास्त्रार्थ अब भी जीवित है

पिछले दिनो दिनाक २९-४-८६ को आर्यसमाज चरखी दादरी में एक शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ, जो पिछले ३८ वर्षों के बाद फिर से आर्यसमाज में एक साहस एव अपने उद्गारों को प्रस्तुत करने का शुभ अवसर उपलब्ध हुआ। इसमें प्रो० सत्यवीर शास्त्री प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदय ने मच का सचालन किया तथा बडे सूझ-बूझ के साथ श्रोताओ को 'मूर्ति-पूजा एव अवतारवाद' के बारे में अवगत कराया। यह शास्त्रार्थ आर्यसमाज च० दादरी की ओर से आर्यसमाज एव सनातनधर्म के मध्य हुआ। इसमें यह साबित किया कि आर्यसमाज वेदानुकूल चलने वाला है तथा आडम्बरो की पोल का भाडा फोड दिया।

हरिश्चन्द्र लाम्बा उपमन्त्री आर्यसमाज च० दादरी

ग्रामीणों द्वारा शराब के ठेके पर घेराबन्दी

जीद, ७ मई (निस)। जिला जीद के गाव बाता के निवासी गाव में खुला ठेका बन्द करवाने के पक्ष में हैं।

ठेका बन्द न होने पर गाव के निवासियो ने बस स्टैंड बाता पर ठेके का घेराव कर रखा है और ग्रामीण ठेके के पास धरना दिये हुए बैठे हैं। पचायत मे भी ठेका बन्द करने के लिए प्रस्ताव पास कर दिया है, मगर पता नही क्यो सरकारी अधिकारी इस सम्बन्ध मे कार्यवाही नहीं कर रहे।

यह जानकारी गाव के सरपच श्री बचनसिंह ने हमारे सवाददाता श्री रमेशकुमार को दी।

दैनिक भारत जननी रोहतक से साभार

आर्यसमाज तिगड़ाना (भिवानी) का चौथा वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज तिगडाना ने अपना चौथा वार्षिक उत्सव श्री बनारसी दास जी तायल की प्रधानता मे १६ अप्रैल से २० अप्रैल ८६ तक मनाया। इस उत्सव मे सामवेद पारायण यज्ञ किया गया। प० भरतलाल शर्मा शास्त्री, प० शोभाराम प्रेमी, प० चिरजीलाल जी आदि विद्वानो के विचारो से ग्रामवासी बडे प्रभावित हुए। महिलाओ की उपस्थिति बडी सराहनीय रही। २० अप्रैल को मध्याह्न समय चरित्र-निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया, जो बडा सफल रहा। कई लोगो ने यज्ञ पर धूम्रपान, मद्यपान आदि बुराइयो को छोडने का व्रत लिया और यज्ञोपवीत भी धारण किया।

आर्यसमाज घरौंडा का वार्षिकोत्सव व योग शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज घरोडा (करनाल) का वार्षिकोत्सव दिनाक ११ से १३ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस उत्सव की विशेष सफलता इस बात मे रही कि योग शिविर को उत्सव से पूर्व लगाया गया। जो कि आर्यसमाज मे नवयुवको के आगमन की सुदृढ व स्वच्छ परिपाटि को प्रोत्साहन देता है। ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री ने योग-शिविर का सचालन बडे ही उत्कृष्ट ढग से किया है। हम यह चाहते हैं, यदि प्रत्येक आर्यसमाज वार्षिकोत्सव से पूर्व योग-शिविर का आयोजन करे तो कितना अच्छा हो। प्रथम दिन २ बजे नगर कीर्तन मे बडे उत्साह से स्त्री, पुरुष, नौजवान बच्चो ने भाग लिया। उत्सव मे निम्नलिखित विद्वानो व भजनोपदेशको ने उपदेश व भजनो के माध्यम से वेदामृत का पान कराया। सर्वश्री ब्र० महेन्द्रसिह जी शास्त्री, प० चन्द्रसेन जी वैदिक मिश्नरी, प० सुरेशकुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर, ओम्प्रकाश जी वर्मा, प० शोभाराम जी प्रेमी, प० हरिश्चन्द्र जी व चिरजीलाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा की भजन मण्डलिया, स्वामी गोरक्षानन्द जी व उनकी ही सुपुत्री बहन उर्मिला जी। सभा को १३०० रुपये सहयोगार्थ दिया गया।

सुभाषचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज घरौडा

होली-पर्व के उपलक्ष्य में प्रीतिभोज

दिनाक २६-३-८६ की रात्रि ८-३० बजे आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला मे प्रिसिपल हसराज जी भसीन की अध्यक्षता मे होली का पर्व वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। जिसमे सैकडो की सख्या मे बालक, युवा देवियो तथा बुजुर्गों ने भाग लिया। हवन के पश्चात् महिला समाज ने कीर्तन किया, उसके बाद श्री यज्ञपाल जी शास्त्री ने होली के वैदिक, सामाजिक पौराणिक रूप पर प्रकाश डालते हुए होली के पर्व को पवित्र रूप से मनाने पर बल दिया। अन्त मे प्रधान जी ने होली-पर्व की पवित्रता पर प्रकाश डालते हुए सभी का धन्यवाद किया। शाति पाठ के बाद प्रीतिभोज के साथ यह कार्यक्रम बडी धूमधाम के साथ समाप्त हुआ।

गुरुदत्त मन्त्री आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला, रोहतक

गावो विश्वस्य मातर

गोआदि पशुओ के नाश से राजा-प्रजा दोनो का विनाश हो जाता है। —महर्षि दयानन्द

हरयाणा के भाइयो गउओं को काटने से बचाओ

हरयाणा सरकार ने हरयाणा प्रात से बाहर गाय, बछडे, बैल ले जाने पर रोक लगा रखी है और परमिट सिस्टम समाप्त कर दिया है। यदि कोई व्यापारी प्रात से बाहर गोवश ले जाता है तो वह कानूनी अपराधी है। फिर भी इस नियम का उल्लघन करके राजस्थान के बनजारे आदि व्यापारी पैदल या ट्रको द्वारा चोरी छिपे गउओ को यमुना पार ले जाते हुए पकडे गये हैं। हरयाणा मे प्रतिदिन सैकडो गाय, बैल उत्तर प्रदेश ले जाकर बगाल, केरल आदि के बूचडखाना मे भेजे जाते है।

अत गोवश को कसाईखानो मे जाने से रोकने के लिए पूरा प्रयत्न गाव-गाव नगर-नगर मे हो। गाय तथा इसके वश की जान बचाना और अपनी सरकार के कानून का पालन करना कराना हमारा सबका धर्म है। आप सब भाई पचायत कर, अपने-अपने गाव या शहर मे यह प्रबन्ध करे कि आपके गाव या नगर की सीमा से गाय, बछडे, बैल जमना पार न ले जाये जावे। पुलिस अधीक्षक या उपायुक्त महोदय अथवा सम्बन्धित पुलिस अधिकारियो को तुरन्त सूचना दे, पुलिस तुरन्त कार्यवाही करेगी। —सेवक डा० रघबीर गोप्रमी

नोट—इस कार्य में कोई रुकावट या कठिनाई आये तो निम्नलिखित पते पर सूचना भेजने की कृपा करें।

डा० रघबीर गोप्रेमी गाव व डा० खरावड, रोहतक।

या इन्द्रसिह मलिक एम० ए० गाव गतौली, जीद

प्रेम से सब पढ़ा करो सर्वहितकारी

प्रेम से सब पढा करो सर्वहितकारी जी।
रोहतक से छपवाकर भेजे परोपकारी जी॥

हरयाणे की प्रतिनिधि जागृति दिलाने वाली,
डूबती हुई किश्ती को तट पे लगाने वाली,
प्रोफेसर शेरसिह जी मेहर की निगाह डाली,
जगह-जगह गायको को भजनो की मण्डलिया घाली,
बदलते विचारधारा सुन के नर-नारी जी,
जिन्दगी बनाने चले बनके व्रतधारी जी।१

कई वानप्रस्थी बने कइयो ने सन्यास धार,
गायत्री के मन्त्रो से यज्ञ की हो धुआधार,
कई देशभक्त बने छोड दिये घर बार,
भूखे और प्यासे रहे विषयो को रहे मार,
लेकिन हमारे मनमे हुई एक शका भारी जी,
पढा सुना स्वामी जी की फिल्म जा उतारी जी।२

भू-मण्डल मे नाम उनका सभी जगह गाया जा,
शर्म की बात उनको रील मे दिखाया जा,
जब भी हम मचो पर बोले फिल्म को बिसराया जा,
रील के चलने से हम को नीचा ही दिखाया जा,
माने हुए भूमण्डल मे अखण्ड ब्रह्मचारी जी,
नाचने वालों ने सारी बात ना विचारी जी।३

आर्य लोभी ना होते बेशर्मी की कमाई के,
गाया करे गीत हम तो उन्नति और भलाई के,
बच्चा सुखी रहे लागू हो पढाई के,
सुण्डाराम झण्डे रहे राष्ट्र स्वतन्त्रताई के,
सर्वहितकारी मैं लिखना मति न्यारी-न्यारी जी,
दया की दृष्टि रखना वेद के विहारी जी।४

वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार का चुनाव

अध्यक्ष—सर्वश्री श्रीमती जनक बत्रा, उपाध्यक्ष—चुन्नीलाल लाम्बा, महामन्त्री—अर्जुनदेव शास्त्री, मन्त्री—प्रीतमलाल, राजपाल, कोषाध्यक्ष—वीरेन्द्रकुमार रावल, पुस्तकालयाध्यक्ष—चुन्नीलाल लाम्बा, लेखानिरीक्षक—डा० आत्मस्वरूप असीजा, प्रचारमन्त्री—बन्सीधर आर्य, सहायक प्रचारमन्त्री—रमेशकुमार गाधी।

गृह मामलो सम्बन्धी मन्त्रालय

स्वतन्त्रता सेनानियों के ध्यानार्थ

प्रेस विज्ञापन (१ ८६) भारत सरकार ने १-८-१९८० से प्रभावी स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन स्कीम के अधीन सम्मान-पेंशन देने के उद्देश्य के लिए, आर्यसमाज आदोलन १९३८-३९ को मान्यता देने का निर्णय किया है, जो स्वतन्त्रता-सघर्ष के एक भाग के रूप मे, भूतपूर्व हैदराबाद राज्य मे चला था। अत सरकार ने यह फैसला किया है कि इस आदोलन मे भाग लेने वाले और भाग लेनेवाले स्वर्गीयो के योग्य आश्रित, निर्धारित प्रपत्र पर अपने आवेदनपत्र, अपेक्षित दस्तावेजो के साथ, सभी तरह से परिपूर्ण, ३० जून, १९८६ को या पहले भेज दे।

आवेदनपत्र की एक प्रति सम्बद्ध राज्य सरकार यू०टी० प्रशासन को भेजी जाए और दूसरी उप सचिव गृह मन्त्रालय, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-११०००३ को रजिस्टड डाक द्वारा भेज दे।

आवेदनपत्र उपसचिव, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, गृहमन्त्रालय, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली से नि शुल्क व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा प्राप्त किये जा सकते है। ये प्रपत्र सम्बद्धराज्य सघ-शासित क्षेत्रो के प्रशासन के मुख्य सचिव से भी प्राप्त किये जा सकते है।

३० जून, १९८६ के बाद प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार्य न होंगे।

केवल ऐसे स्वतन्त्रता सैनिको को ही आवेदन करना चाहिए, जिन्होने आर्यसमाज आदोलन मे भाग लिया और जो स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान-पेंशन स्कीम १९८० के अधीन पेंशन दिये जाने के योग्य हैं।

सी/डीएवीपी ५६१ (८६)/८६

(पृष्ठ २ का शेष)

और इन्जिनियर बनाते है। उपदेशक और सन्यासी क्या विदेशो से आयात किये जायेगे? स्वय वानप्रस्थ भी नही बनते, जिसकी अनिवार्यता है, सन्यासी तो क्या बनेंगे? घर से कोई सन्यासी, वानप्रस्थ निकले तो सन्यासियो का मूल्याकन कर सकेंगे और उनका सम्मान करेंगे नही तो सूखे टिक्कडो का अधिकारी ही सन्यासी को समझते रहेंगे। घर पर पडे बुढापे तक सन्तानो से अपमानित होते रहेंगे, वानप्रस्थ बनने के नाम पर साप सूघ जाता है। प्रत्येक आर्यसमाजी सन्तानो को घर सौपकर, वानप्रस्थ बनकर निकले। अपने निकटतम समाज को ही आश्रम बनाकर ग्राम-ग्राम प्रचार करे। इसके लिए तैयार नही, आर्य सन्यासियो पर छीटाकशी करनी आती है। किमधिकलेखेन।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचाय प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

पंजाब सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क २५ २१ मई, १९८९ वार्षिक शुल्क २०। विदेश में ५ पौंड एक प्रति ५० पैसे

मैथ्यू आयोग की भांति वेंकट रमैया आयोग भी हरयाणा को कुछ नहीं दे सकेगा

—प्रो० शेरसिह प्रधान हरयाणा रक्षावाहिनी

रोहतक १२ मई—कल दयानन्दमठ, रोहतक मे हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमे हरयाणा के कोने-कोने से कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए। इस अवसर पर हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह ने कार्यकर्त्ताओ को बताया कि जिस प्रकार मैथ्यू आयोग के हाथ बाध दिये थे और एक छोटे से पजाबी भाषा वाले ग्राम कन्दूखेडा के कारण सैकडो हिन्दी-भाषी ग्राम हरयाणा को नही दे सका, इसी प्रकार वेकट रमैया आयोग के अधिकार क्षेत्र से अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र निकालकर इसके भी हाथ बाध दिये है। अत यह भी हिन्दी-भाषी क्षेत्र हरयाणा को नही दे सकेगा। ऐसी स्थिति मे हरयाणा रक्षावाहिनी ने निश्चय किया है कि इस आयोग के सम्मुख हरयाणा का दावा प्रस्तुत नही किया जायेगा। आपने हरयाणा सरकार को भी सुझाव दिया है कि जब यह आयोग हरयाणा को कुछ दे ही नही सकता तो इस आयोग का बहिष्कार करना चाहिए और अगले सीमा आयोग को ही हरयाणा का दावा प्रस्तुत करके न्याय प्राप्त करने का यत्न किया जाये। प्रो शेरसिह ने मैथ्यू आयोग द्वारा अबोहर फाजिल्का क्षेत्रो मे जनगणना कराने के परिणाम पर चर्चा करते हुए कहा कि जिन ग्रामो ने अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई थी, उन्हे हरयाणा मे सम्मिलित कराना तो दूर रहा, पजाब सरकार तथा अकाली कार्यकर्त्ता उन ग्रामवासियो को इसका दण्ड दे रहे हैं। भारत सरकार को चाहिये कि उस हिन्दी-भाषी जनता को अकालियो की गुलामी से शीघ्र आजाद कराये।

हरयाणा को पानी का भी उचित भाग मिलना चाहिये और पजाब के विभाजन से पूर्व हरयाणा के किसानो को जितना पानी मिलता था और जो आबियाना दिया जाता था, उसको आधार मानकर ही ट्रिब्यूनल को पानी का बटवारा करके हरयाणा की जनता को न्याय देना चाहिए।

सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई का निर्माण कार्य भारत सरकार को अपनी देख-रेख में किसी निगम द्वारा सेना की उपस्थिति में शीघ्र करवाना चाहिये।

खालिस्तान की घोषणा का उल्लेख करते हुए प्रो० साहब ने भारत सरकार से माग की कि राष्ट्रद्रोही तथा भारत के टुकडे करने वालो के विरुद्ध कडी से कडी कार्यवाही करके पजाब मे शांति स्थापित करनी चाहिये। प्रो० शेरसिह के इस प्रस्ताव का सभी ने समर्थन किया।

इस अवसर पर अबोहर के भूतपूर्व विधायक मा० तेगराम जी ने हरयाणा के कार्यकर्त्ताओ से अबोहर फाजिल्का की हिन्दी-भाषी जनता को हरयाणा में मिलाने के लिए पूरा सहयोग प्रदान करने की अपील की। पजाब जि० सगरूर के ग्राम अनदाना के सरपच चौ० भलेराम ने बताया कि हमने वेंकट रमैया आयोग से जिला सगरूर के २१ तथा जिला पटियाला के १६ ग्रामों को जिनकी भाषा हिन्दी तथा खान-पान, रहन-सहन आदि हरयाणवी है को पजाब से निकालकर हरयाणा मे मिलाने के लिये दावा किया है।

चौ० धर्मसिह राठी पूर्व विधायक ने सुझाव दिया कि यदि पजाब सरकार हरयाणा को हिन्दी-भाषी गाव तथा नहरो के लिये पानी नही दे तो हरयाणा की सीमा मे कोयला तथा पैट्रोल पजाब को भेजना बन्द कर दिया जाये। ईंट का जवाब पत्थर से देने पर ही अकाली सन्मार्ग पर आ सकते।

रघुवीरसिह प्रचारमन्त्री हरयाणा रक्षावाहिनी

आकाशवाणी रोहतक से अश्लील रागनियो के प्रसारण पर तुरन्त पाबन्दी लगाई जाये

आर्य प्र० स० ह० की अन्तरग सभा का प्रस्ताव

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

रोहतक १२ मई, ११ मई रविवार को ११ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक, सभा के कार्यालय सिद्धाती भवन दयानन्दमठ, रोहतक मे सभा प्रधान प्रो० शेरसिह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। बैठक मे अम्बाला के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री पन्नालाल आर्य तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प० ओम्प्रकाश जी त्यागी पूर्व सासद के निधन पर शोक-प्रस्ताव पास किया तथा खडे होकर मौन श्रद्धाजलि भेट की गई।

आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने हेतु सभा के वेदप्रचार विभाग मे प० मुरारीलाल बेचन की मेवात मण्डल तथा प० राजबल भजनोपदेशक की अम्बाला मण्डल मे नियुक्तिया की गई है। वेदप्रचार मण्डलो के गठन के लिए एक उप समिति को रिपोर्ट करने का कार्यभार सौंपा गया कि सभी सगठनो, उप-प्रतिनिधि सभाओ क्षेत्रीय आर्य सभाओ, आर्य केन्द्रीय सभाओ तथा वैदिक सत्सग सभाओ का एकीकरण किस प्रकार किया जाये, ताकि वेदप्रचार कार्य सामूहिक ढग से हो सके।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा आकाशवाणी रोहतक से हरयाणा की सस्कृति के नाम पर अश्लील रागनियो के प्रसारण का घोर विरोध किया गया। आकाशवाणी की स्थापना के १० वर्ष पूर्ण होने के समारोह पर लडकियो के नाच तथा गन्दी रागनियो की भी निन्दा की गई। भारत सरकार के प्रसारण मन्त्री से अनुरोध किया गया कि गन्दी रागनियो के प्रसारण पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाये।

शराब के ठेको पर धरना देने के अभियान को भी तीव्र करने का निश्चय किया गया।

प्रो सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

भगवती जागरण वरदान नहीं, एक महाभिशाप है

—राजवीर शास्त्री

उत्तर भारत में आजकल भगवती जागरण (माता शेरावाली) का प्रचार बढता जारहा है। आज की बढती हुई महगाई की मार से पीडित धार्मिक जनता इस बहुत व्यय साध्य, अनाचारवर्धक तथा भारतीय सस्कृति के विध्वसक कर्म को भी इसलिये कराते हैं कि सम्भव है शेरा वाली माता हमारे से प्रसन्न होकर हमारे घर को लक्ष्मी से भरपूर कर देगी। किन्तु वे भोले-भाले व्यक्ति यह कभी विचार नही करते कि यह जागरण है क्या बला? भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि दी है कि वह जो कुछ भी करे विचारकर करे, किन्तु धन की भूख ने इसे बिल्कुल ही अन्धा ही कर दिया है, जिससे ग्रस्त मानव धार्मिक वृत्ति को सर्वथा त्यागकर धर्म विरुद्ध अमानवीय कार्यो मे ही प्रवृत्त होता आरहा है। भगवती जागरण कराने वाले कौन हैं? क्या ये भगवान् की भक्ति स्वय भी जानते हैं? क्या इनके पास किसी प्रकार का ज्ञान है? अथवा कोई चमत्कार है, जिससे भोली-भाली धार्मिक जनता की खून-पसीने की कमाई को दिन दहाडे डाके की तरह घर से लूटकर ले जाते है? जिस किसी घर पर जागरण कराने वालो की काली घटा घिर आती है, वे चाहे भूखे रहे या कर्जा करे, किन्तु इनको बहुमूल्य वस्त्रो व तरह तरह के मेवो की भेट चढाते ही है और सारी सारी रात लाऊडस्पीकर लगाकर तथा शराब के नशे मे धुत होकर ये निशाचरो की भाति इस प्रकार गर्जते हैं कि पडौसी, मोहल्ले की तो बात ही क्या, सारे शहर को ही सोने नही देते। भगवान् ने रात्रि विश्राम के लिए बनाई है, किन्तु ये सारी-सारी रात न स्वय सोते और नही मोहल्ले वालो को ही सोने देते। परीक्षा के दिनो मे तो ये पढने वाले छात्रो के लिए साक्षात् काल के तुल्य विघातक ही बन जाते है। क्या इनसे भगवान् या भगवती प्रसन्न हो सकते हैं?

और जिस चमत्कारपूर्ण कहानी को जागरण कराने वाले भोली-भाली धार्मिक जनता को सुनाते हैं, उस पर यदि थोडा भी ध्यान दिया जाये तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये लोग जागरण के बहाने हिन्दुओ के घरो मे नास्तिकता, हिंसक वृत्ति के जहरीले बीज बो रहे हैं, जिससे आनेवाली भारत की युवा पीढी राम कृष्ण की भक्ति से विमुख होकर रावण-कंस की भाति दुराचारो मे लग जाये। पाठकों के समक्ष हम इस कहानी के कुछ उदाहरण यहां दे रहे है, जिन पर वे निष्पक्ष होकर विचार करें कि कहीं हम अथवा हमारे बन्धु भक्ति के नाम पर महापाप मे तो नहीं लग रहे हैं। ये जागरण कराने वाले जो रूप मे शेरावाली माता की महिमा के गाने पंजाबी या हिन्दी मे सुनाते है, जो श्रोताओ को मुग्ध करने के कारण बनते है, किन्तु जिस तारामती की कहानी आधी रात के बाद सुनाते है, वह क्या है? इस पर यदि ध्यान दें तो यह स्पष्ट हो जाये कि यह कहानी मनगढन्त है और एक मधुर महाविष है। देखिये इस कहानी के कुछ दोष—

१) मनगढन्त कहानी होने से मिथ्या है—राजा हरिश्चन्द्र सूर्यवंश मे श्री रामचन्द्र जी से भी पूर्व हुए थे। उनकी पत्नी तारा से इस कहानी का सम्बन्ध जोडकर, कहानी बनाने वाले ने इस कहानी को बहुत प्राचीन सिद्ध करने का प्रयास किया है। ऐसा किसी प्राचीन पुस्तक मे उल्लेख न होने से यह कहानी मनगढन्त ही है। अन्यथा राजा हरिश्चन्द्र से परवर्ती श्रीराम के समय मे भी इसका प्रचलन और वाल्मीकि रामायण मे भी इसका उल्लेख अवश्य मिलता। किन्तु ऐसा रामायण मे कहीं भी उल्लेख नही है और सीताहरण जैसे दुखद अवसरो पर श्रीराम भी शेरोवाली मा का ही स्मरण करके क्यो नही भयकर युद्ध से बच पाये और उसके बाद महाभारत के समय श्रीकृष्ण क्यो युद्ध कार्य मे लगे? क्या उन्हे देवी के चमत्कारो का बोध नही था? यथार्थ मे इस मिथ्या कहानी का किसी प्राचीन ग्रथ मे उल्लेख नही है। यह तो आख के अन्धे और गाठ के पूरे लोगो को ठगने के लिये ही एक मनगढन्त कहानी बनाई है। अन्यथा ये देवीभक्त अनेक वर्षों से पजाब मे उपद्रव करने वाले आतकवादियो का अन्त कराकर देवी के चमत्कार क्यो नही दिखलाते? क्या देवी आजकल इतनी गाढी निद्रा में सोई पडी है कि अपने प्रदेश के भक्तो की भी रक्षा नहीं कर सकती?

२) पापों की जननी शराब तथा मांस का प्रचार करने से देवी जागरण पापों की जड है—मद्यपान को धर्म शास्त्रों में महापाप माना है और हिंसामूलक व स्वस्थ्य नाशक होने से मास-भक्षण भी राक्षसी भोजन है। किन्तु जिस कहानी में देवी का प्रसाद ही शराब व मास का हो, फिर उसके भक्त उसके खाने से कैसे बच सकते हैं? देखिये कहानी के कतिपय उद्धरण—

क) 'उसी समय तारा ने भगतो को कहा कि जल्दी प्रसाद का भोग माता जी को लगाओ। भगतो ने उस समय माता महाकाली जी को मास मदिरा आदि का भोग लगाया।' (पृ० २६)

ख) तारा तू मुझे अपनी झोली दिखा, जिसमे तूने मास, मदिरा आदि भर रखा है।' (पृ० २७)

घर

ग) 'तारा ने कहा अब बेटे और घोडे को काटकर टुकडे-टुकडे करके किसी बर्तन मे डालकर पकाना है।' (पृ० २९) राजा ने अपने बेटे तथा घोडे को काट-काटकर टुकडे-टुकडे किये। (पृ० ३०) तभी मा की शक्ति से उस बर्तन के नीचे आग जली और बर्तन में पडे बेटे और घोडे के टुकडे पककर तैयार हो गये। तब तारा ने महाकाली जी को भोग लगाया और राजा जी को उसमे से प्रसाद के तौर पर दिया — राजा जी ने प्रसाद को खाना शुरु किया।' (पृ० ३१)

३) ईश्वरीय नियमो के विरुद्ध मिथ्या चमत्कार दिखाकर भक्तों का ठगना ही उद्देश्य—सृष्टि मे यह ईश्वरीय नियम सर्व प्रत्यक्ष है कि जो जीव मृत्यु का ग्रास हो गया, वह फिर उस शरीर में वापिस नहीं आता। अन्यथा मरना एक बच्चो जैसा ही खेल होने से किसी को दुखकारी न हो सके। श्रीराम के भाई लक्ष्मण तो मेघनाद की शक्ति नामक शस्त्र से बेहोश ही हुए थे, उस समय श्रीराम का विलाप करना और वीर बालक अभिमन्यु की मृत्यु पर उत्तरा के महाविलाप करने पर श्रीकृष्ण का भी विलाप करना इस बात को ही पुष्टि करता है कि मृत्यु के पश्चात् कोई भी शक्ति मृतक को जीवित नही कर सकती। किन्तु भगवती के जागरण करने तथा कराने वालो को इससे क्या प्रयोजन? उनका तो चमत्कार दिखाकर भक्तो से धनार्जन करना ही मुख्य उद्देश्य होता है। अन्यथा आजकल भी कितनी अकाल मृत्युये हो रही हैं, उन्हे ये देवी भक्त क्यों नही जीवित करवाते है। क्या देवी का चमत्कार अब कुण्ठित हो गया है। देखिये इस कहानी के मृतको को जीवित करने के कतिपय चमत्कार-

क) तब राजा ने तारा से कहा कि अब मुझ से पुत्र वियोग नही सहा जाता, तू मेरे पुत्र को जीवित करवा दे। (पृ० ३१) राजा के इतने विलाप को देखकर तारा ने फिर मा को याद किया। (पृ० ३१) मा ने उसी समय राजा के घोडे तथा बेटे को जीवित कर दिया। (पृ० ३१)

ख) मा ने अपने भक्त की पुकार को सुना और कुछ ही क्षणों में अकबर के कटे घोडे के कटे हुए शीश को धड के साथ लगा दिया गया। (पृ० १०)

४) अनाचार व अत्याचार को बढावा—आजकल देश मे वैसे ही हिंसावृत्ति बढ रही है और पारस्परिक सहयोग स्नेहादि के भाव समाप्त होकर द्वेषवृत्ति अपनी चरम सीमा पर पहुच रही है। इन अशाति के मूल कारणो मे जहा अन्य बहुत से कारण हैं, वहा भगवती जागरण जैसे जघन्य कृत्य भी सहयोगी बन रहे हैं। जिनके द्वारा मदिरा व मास का देवी प्रसाद का महत्त्व बताना, पुरुषार्थहीनता के परमद्योतक फलित ज्योतिष को बढावा देना, अपने प्राणप्रिय पुत्रो की भी बलि चढाना जैसे हिंसा कृत्यो की महिमा बताई जाती है। जिनसे प्रभावित होकर देश मे तान्त्रिको को बढावा मिल रहा है और वे पुत्रहीन स्त्रियो को पुत्र प्राप्ति के प्रलोभन देकर उनसे क्या-क्या अनर्थ नही कराते हैं? धधकती चिताओं पर रोटी बनवाकर खिलाना, किसी पुत्रवती माता के बच्चे की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सभा राज्य सरकारें गोवंश रक्षा कानून पंगुपन समाप्त करें

नई दिल्ली—हाजी उसमान भाई, हुसेन भाई कुरेशी तथा अन्य विरुद्ध गुजरात राज्य सिविल अपील न० ७३४ ३९ आफ १९८० उच्चतम न्यायालय ने व्यय महित रद्द कर तथा सिविल अपील १९८५ आफ १९७० अहमदाबाद नगर निगम की स्वीकार कर सम्पूर्ण गोवंश हत्या निरोध कानून बनाने के लिए सरकारों का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

इस अपील मे अखिल भारतीय गो-सरक्षण परिषद् ने अपने एडवोकेट श्री एस०एस० खण्डूजा जी के द्वारा ६० पृष्ठ लिखित तर्क प्रस्तुत किये थे। इसमे श्री टी०यू० मेहता एव श्री विश्वम्भरलाल जी खन्ना ने परिषद् की ओर से पैरवी की थी। इन दोनो अपीलो की सुनवाई के समय परिषद् के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज एव परिषद के अन्य कार्यकर्त्ता भी उच्चतम न्यायालय मे थे।

उच्चतम न्यायालय की सविधान पीठ ने दोनो निणयो मे स्पष्ट कर दिया कि गोवंश हत्या बन्द करने से कसाइयो के मूल अधिकारो अनुच्छेद १९ १ (जी) एव अनुच्छेद १४ का हनन नही होता।

इस सविधान पीठ मे सुप्रीमकोट के न्यायमूर्ति ओ० चिनप्पारेड्डी, न्यायमूर्ति इ०एस० वेकट रमया, न्यायमूर्ति बालकृष्ण रड्डी, न्यायमूर्ति आर०बी० मिश्रा, न्यायमूर्ति वी० खालिद सम्मिलित थे।

इन ऐतिहासिक निणयो के प्रकाश मे परिषद् के अध्यक्ष स्वामी श्री हरि जी महाराज ने राजकीय सरकारो से अनुरोध किया है कि वह अपने पगु कानूनो को सम्पूण हत्या बन्द करने वाले कडे कानूनो मे परिवर्तन कर साधु समाज द्वारा कुम्भ मेला हरिद्वार मे लिए निर्णय पर पुष्प चढाकर अपना कत्तव्य पालन करते हुए देश की ऊर्जा सकट से रक्षा करे।

राधेश्याम ब्रह्मचारी कार्यालय सचिव

पूणे के इतिहास मे प्रथम बार

महर्षि दयानन्द के पुणे (महाराष्ट्र) के प्रवचन के पश्चात् लगभग सौ वर्ष के पश्चात् उनके अनुयायी वदिक प्रवक्ता ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी द्वारा श्रीमती एव श्री शम्भुनाथ जी आर्य (बख्शी), लेफ्टिनेण्ट कर्नल पाषाण के सब सहयोग से तथा पाषाण निवासी श्री कलाम रणपिसे (मराठे) के पुरुषाथ से दिनाक २० अप्रैल से ३ मई तक यज्ञ एव वेदप्रचार हुआ। नहरू ममोरियल हाल 'पुणे' एन०डी०ए०, सनातन धर्म मन्दिर आफीसर कालोनी, एच० आर० डी० (मिलिट्री) मुसगाव, पाषाण गाव, सुत्रवाडी ग्राम, बावदान ग्राम, सोमेश्वर ग्राम, भुगाव, सोमेश्वर गाव, मिलेट्री आफिसर कालोनी पाषाण, ई०आर०डी० आफिसर कालोनी रामनगर तथा ए०आर०डी० आफिसर कालोनी, एन०डी०ए० रोड पर लगभग १५ दिन तक वेद ही मानवधर्म, यज्ञ से ही मानव कल्याण, निराकार पूजा, वैदिक राज्य से ही विश्व शाति आदि सिद्धातो पर मार्मिक प्रवचन हुवे। प० विश्वदेव जी पिपरी का मराठी भाषा मे भजनो तथा प्रवचनो का सहयोग रहा।

इसके साथ स्थानीय बच्चो को वैदिक सिद्धातो तथा सध्या हवन के मन्त्रो का शुद्ध पाठ सिखाया गया। अनेको लोगो ने अण्डा, मास बीडी, सिगरेट, तम्बाकू को छोडने तथा प्रात उठने, बडो को नमस्ते करने, व्यायाम योग आसन करने, सध्या करने का व्रत लिया। लेफ्टिनेट कनल साहब भी दनिक यज्ञ करने लगे।

बीड (महाराष्ट्र) 'सोमयाग महायज्ञ' पर हजारो की उपस्थिति मे दिनाक ७-५-८६ के जीवन को यज्ञमय बनाओ, सन्तान को यज्ञमय बनाओ, राष्ट्र को यज्ञमय बनाने का आह्वान किया।

आर्यसमाज किल्लेधारुर (महाराष्ट्र) के १०६वे वार्षिकोत्सव पर ब्र० आर्य नरेश जी ने दुर्व्यसन छोडने तथा दैनिक हवन यज्ञ करने का व्रत लिया। जिससे श्री सोमनाथ आर्य दैनिक यज्ञ करने लगे।

—ब्र० आर्य नरेश

आर्यनेता पंजाब की सद्भावना यात्रा पर

आजकल पजाब की जनता आतकवाद के चुगल मे फस रही है। समाचारपत्रो मे एक दिन भी ऐसा पढने को नही मिलता कि वहा शान्ति रही हो। उग्रवादी तत्त्व अवसर मिलते ही बेकसूर लोगो का निमम हत्याए कर रहे है। इस भय के वातावरण के कारण सैकडो परिवार पजाब छोडकर हरयाणा मे आने लगे है। इस गम्भीर समस्या के कारण आर्य नेता १५ मई से पजाब के भ्रमण पर गये हैं। इस सद्भावना यात्रा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले, उपप्रधान श्री वन्देमातरम तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह आदि सम्मिलित है। इन्होने लुधियाना, होशियारपुर, जालन्धर, अमृतसर आदि नगरो का भ्रमण किया है। इस यात्रा का पूरा विवरण सर्वहितकारी के आगामी अक मे प्रकाशित किया जायेगा।

बालावास मे साप्ताहिक सत्संग

दिनाक ११-५ ८६ को ग्राम बालावास मे श्री हेतराम आर्य के घर पर साप्ताहिक सत्सग का आयोजन किया गया। यज्ञ के बाद श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी एव ब्र० सजयकुमार आर्य के प्रवचन हुए बाद मे श्री क्रातिकारी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज बालावास की एक मीटिंग हुई। जिसमे जून मास के दूसरे सप्ताह मे अपना स्थल आर्यसमाज मन्दिर मे ब्र० व्यायाम प्रशिक्षण शिविर लगाने बारे विचार किया गया।

मन्त्री आर्यसमाज बालावास

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का जो वार्षिक अधिवेशन रविवार, १ जून को होने वाला था, उस दिन डी०ए०वी० स्थापना दिवस चण्डीगढ मे मनाये जाने के कारण अधिवेशन की तिथि मे परिवर्तन कर दिया गया है। अत अब यह अधिवेशन शनिवार ३१-५-८६ को प्रात मे ९ बजे तक एव तत्पश्चात् २ से साय ४-३० बजे तक आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे होगा।

अत आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की आर्यसमाजो के समस्त प्रतिनिधियो एव प्रतिष्ठित सभ्यो से निवेदन है कि वे यह परिवर्तित तिथि अपनी डायरी मे अकित कर लेवे।

रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

श्रीमद्दयानन्द आर्षविद्यापीठ का परीक्षा परिणाम

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे सम्बद्ध श्रीमद्दयानन्द आर्षविद्यापीठ के अन्तगत मार्च १९८६ की वार्षिक परीक्षा के १९-५-८६ को घोषित परिणाम के अनुसार दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली का छात्र गजेन्द्रकुमार सवप्रथम ७४ ६७ प्रतिशत, गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ का छात्र यशपाल सर्वद्वितीय ७२ १६ प्रतिशत, आर्य कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली की छात्रा कु० विद्योत्तमा सर्वतृतीय ७० ८४ प्रतिशत अक प्राप्त कर अपने विद्यालय को गौरव प्रदान किया।

—जीवानन्द

वजीराबाद जि० गुडगांव में २५ मई से १ जून तक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण योग शिविर का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे गाव वजीराबाद (गुडगाव) के हाई स्कूल मे एक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण योग शिविर का आयोजन किया जारहा है। आज देश का युवक कर्तव्य परायणता, आचार सहिता, त्याग बलिदान, न्याय, सघर्ष अर्थात् भारतीय संस्कृति के रास्ते को तिलाजलि देकर पाश्चात्यो की गली-सडी षडयन्त्रकारी सस्कृति का शिकार बन पथ भ्रष्ट होता जारहा है। आज नवयुवक जानवर की तरह स्वार्थ-पूर्ण आत्म केन्द्रित और आदर्शहीन जिन्दगी जीने के लिए मजबूर कर दिया गया है। आज युवको के सामने जिन्हें आदर्श के नमूने के रूप मे पेश किया जाता है, वे हैं सारी दुनिया के छटे हुए दगाबाज दलाल व ऐसे भाडे के खूनियो के नमूने जिनके काले कारनामे लेखनी लिख नही सकती। तो फिर युवको मे व्यक्ति केन्द्री मानसिकता, उद्दण्डता और खुदगर्जी की मनोभावना क्यो नही बढेगी। आज हम एक सक्रमण काल से गुजर रहे हैं। पुराना आदर्श सड चुका है, किंतु नया क्रातिकारी वैदिक आदर्श अभी जनता तक पहुच नही पाया है। परिणामस्वरूप निराशा छाई हुई है, उदासीनता पनप रही है। लेकिन फिर भी भारत का वर्तमान समाज नवीन विचारधारा को जन्म देने के लिए आज प्रसववेदना मे व्याकुल है। तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि 'ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना"। जो सामाजिक समस्याय जिनके दिल मे दर्द पैदा नही करती और समाज प्रगति की भावना मे जिनकी आखो से नींद गायब नही हो जाती, ऐसे आदर्शवादी मुस्सकृत लोगो से दूर रहे।

नवयुवको! इसलिए इस महान् ऐतिहासिक जिम्मेदारी को समझो, इसके लिए आपका योग शिविर मे भाग लेना अत्यन्तावश्यक है।

इस आयोजन मे कर्मयोगी श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज आचार्य गुरुकुल झज्जर, स्वामी सुधानन्द जी कासन, प्रो० शेरसिह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य सत्यप्रिय जी मुनि तिजारा, स्वामी प्रेमानन्द जी कन्हई, आचार्य ब्र० विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर, प० ईश्वरचन्द्र जी शास्त्री गुडगाव, प० रणवीर जी शास्त्री समालखा, श्री सुरेशकुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, डा० वीरेन्द्रसिह दहिया सोनीपत, श्री बलवानसिह योगाचार्य साघी तथा अन्य अनेक सन्यासी, विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

योग शिविर में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थी २५ मई साय को हाई स्कूल वजीराबाद मे पहुच जावे। प्रवेशार्थी की आयु १४ से २५ वर्ष तक हो। सभी युवक अपने साथ ऋतु अनुकूल बिस्तर, प्लेट, कटोरी, गिलास, चम्मच, लोटा, सफेद या खाकी निकर अथवा सफेद या लाल कच्छा, लगोट, सैंडो बनियान, लाठी (कान तक की), सफेद, खाकी व नीला जूता, सफेद जुराब अवश्य लावे।

प्रवेश शुल्क केवल मात्र १५) प्रति प्रवेशार्थी तथा भोजनादि का प्रबन्ध नि शुल्क होगा।

विशेष —१ जून को प्रात ८ बजे से ११ बजे तक विद्वानो के भाषण, व्यायाम प्रदर्शन, ब्र० विजयपाल जी द्वारा कार रोकना, लोहे की बेल तोडना, गले के नाजुक स्थान मे सरिये मोडना, हाथो से काच पीसना आदि प्रदर्शन किये जायेगे।

शिविर सचालक	सयोजक
ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री	खजानसिह
महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	(अध्यापक)

सर्वश्री छत्तरसिह बोहरा वजीराबाद, चौ० खजानसिह एडवोकेट सरपच झाडसा, प्रेमसिह प्रधान आर्यसमाज वजीराबाद, गुरदयाल मे० पचायत मन्त्री आर्यसमाज वजीराबाद, रघुबीरसिह सरपच वजीराबाद, सतपाल आर्य मन्त्री आ० स० जै० गुडगाव।

व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर नरवाना

(२ जून से १५ जून, ८६) नवयुवकों को आर्यसमाज मे दीक्षित कर स्थान-स्थान पर सार्वदेशिक आर्य वीरदल की शाखायें चलाने के लिए व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर २ जून से १५ जून तक आर्यसमाज नरवाना जि० जीद हरयाणा में सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान उपसचालक डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन मे लगाया जारहा है।

भारतभर के उन आर्यवीरो को आह्वान किया जाता है जिन्होंने पहले कही एक शिविर मे प्रशिक्षण लिया हो या स्थानीय शाखा की नियमित सदस्यता का प्रमाण-पत्र रखते हो, ऐसे आर्यवीरो को शिक्षक के रूप मे प्रशिक्षित करना इस शिविर का उद्देश्य रहेगा, ताकि वे शाखा चलाने व नवयुवको को आकर्षित करने मे समर्थ हो सके।

शिविर प्रवेश शुल्क १५ रुपये होगा, परन्तु सुदूर प्रातो से आने वालो पर यह शुल्क शिथिल रहेगा। भोजन, आवास तथा प्रशिक्षण नि शुल्क होगा। शिविरार्थी को अपने साथ एक खाकी नीकर, दो सफेद सैंडो बनियान, सफेद कमीज, गौरे जूते, सफेद जुराब, लाठी तथा आवश्यकतानुसार बिस्तर व बर्तन लाने होगे। सभी आर्यसमाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओ, आर्य वीरदल के अधिकारियो से अनुरोध है कि ऐसे उपयुक्त एव पात्र युवको को खोजकर उन्हे प्रेरणा एव आर्थिक सहयोग करके शिविर मे प्रशिक्षण हेतु अवश्य भेजे।

इस शिविर को सफल बनाने के लिए केवल जि० जींद के सभी आर्यसमाजो एव शाखाओ के अधिकारियो से अनुरोध किया जाता है कि दिनाक २५ मई रविवार प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में आवश्यक बैठक है। पधार कर सहयोग करें। —प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी

क्यों न रोको

हम क्यो लड रहे हैं?
जब विजय मिलनी है सबको,
एक दिन मौत की।

हम क्यो खडे कर रहे हैं?
इमारत बारूद की,
जिसे फट जाना है किसी क्षण।

रोक रहे हैं क्यो?
हम पानी के बहाव को,
जिसे टूट जाना है एक दिन।

वो बम क्यो बना रहे हैं?
पागलो की तरह,
जो खुद कैद हैं उसमें।

क्यो लड रहे हैं?
वो उसी कुर्सी के लिए,
जबकि उसके करीब कई कुर्सियां हैं।

क्यो न रोको इन सबको?
वरना शब्दकोष मे 'रोको' शब्द,
लिखना रुक जायेगा।

क्यो मुझे वो शक्स उल्टा नजर आरहा है?
जबकि पृथ्वी अपनी धुरी पर,
सही चल रही है।

अनिलकुमार मगला 'पिंकी' बम्बई (मुंबई)

शोक सभा

श्रद्धेय हैडमास्टर श्री अमरचन्द जी मलिक प्रधान सात बास खाप देपल निवासी का ९ मई सन् १९८६ वार शुक्रवार को स्वर्गवास होगया है। २० मई सन् १९८६ वार मगलवार को प्रात: ९-०० बजे उनके निवास स्थान गाव देपल मे शाति यज्ञ व शोक सभा हुई।

सात बास खाप स्वामी कर्मपाल प्रधान
सर्वजातीय सर्वखाप पचायत

इराडी आयोग

नई दिल्ली, १३ मई। पजाब, हरयाणा और राजस्थान में नदी जल वितरण के लिये नियुक्त इराडी आयोग कल से पजाब का चार दिवसीय दौरा शुरु कर रहा है।

राजीव लोगोवाल करार के अन्तर्गत नियुक्त इराडी आयोग को रावी व्यास नदियो के जल को तीनो राज्यो मे मात्रा तय करनी है, लेकिन करार के अनुच्छेद ९ १ के अनुसार यह मात्रा १ जुलाई १९८५ को तीनो राज्यो के किसानो द्वारा इस्तेमाल किये जा रहे पानी मे कम न होगी। पजाब के अनुसार १ जुलाई को उसने ९४ लाख एकड फुट पानी का इस्तेमाल किया। जबकि हरयाणा ने १३ लाख एकड फुट और राजस्थान ने ५७ लाख १० हजार एकड फुट पानी का इस्तेमाल किया। १ जुलाई को इस्तेमाल किये पानी की मात्रा पजाब के मामले मे उसे निर्धारित मात्रा से कही अधिक है, जबकि हरयाणा के मामले मे उसे निर्धारित पानी के आधी मात्रा से भी कम और राजस्थान के मामले मे निर्धारित मात्रा का तीसरा हिस्सा था।

पजाब द्वारा १ जुलाई १९८५ को इस्तेमाल किया जारहा पानी यदि कम नही किया जाता तो फालतू पानी इतना भी न बचेगा कि हरयाणा व राजस्थान के दस-दस गावो के लिए भी काफी हो।

इराडी आयोग के सदस्य श्री ई०वी० इराडी, बालकृष्ण मेनन और श्री एच०ए०एम० अहमदी हरयाणा और राजस्थान का दौरा कर चुके हैं। आयोग ने तीनो राज्यो को कहा है कि वे करार के अनुच्छेद ९ १ के मुताबिक अपने दावे २८ मई तक दाखिल कर दें। इन दावो पर बाकायदा सुनवाई २९ मई से शुरु होगी।

सबसे पहले हरयाणा अपने दावो पर बहस शुरु करेगा। फिर पजाब उसका जवाब देगा। राजस्थान इन दोनो के बाद अपने प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगा। हरयाणा और पजाब दोनो ने अपने दावो की वकालत के लिये गैर राजनीतिज्ञ विशेषज्ञ नियुक्त किये है। जबकि राजस्थान का मामला राज्य के मन्त्री श्री हीरालाल देवपुरा रखेगे।

भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह ने इराडी आयोग को ज्ञापन मे कहा है कि पजाब का १ जुलाई १९८५ को इस्तेमाल पानी का दावा गलत है। इसकी जाच होनी चाहिए। इसके लिए आबियाना वसूली देखी जा सकती है। आयोग के हरयाणा दौरे के दौरान किसानो ने उसे कई ज्ञापन दिये थे। बताया जाता है कि आयोग के सदस्यो ने हरयाणा के सूखे खेत देख हमदर्दी भी जाहिर की थी।

—दीवान द्वारका खोसला

कुरुक्षेत्र व रोहतक विश्वविद्यालयों में संस्कृत पर आघात

कुरुक्षेत्र, १३ मई (नन्हा) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के डीनो द्वारा गत दिवस अपनी बैठक में बी ए स्तर पर संस्कृत को एक 'इलेक्टिव' विषय के रूप में समाप्त करने के निर्णय से यहा सस्कृत के अध्ययन पर भारी आघात पहुचा है। इस प्रकार १० हजार छात्र सस्कृत के अध्ययन से वचित हो जायेगे तथा ७५ अध्यापको को अपने पदो से हटना पडेगा।

हरयाणा सस्कृत परिषद् ने इस निर्णय को सस्कृत विरोधियो के षड्यन्त्रो का परिणाम बताया है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय उस समय लिया गया है जबकि प्रदेश सरकार लाखो रुपया सस्कृत के विकास पर खर्च कर रही है। परिषद् ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति को ज्ञापन देकर माग की है कि सस्कृत के बारे मे यथास्थिति बनाये रखी जाये।

गीता प्रचार समिति के अध्यक्ष डा० शातिस्वरूप शर्मा ने भी विश्वविद्यालय के इस निर्णय पर गहरी चिंता प्रकट की है। उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्थापना मूलत. सस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में हुई थी। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना भी वेदो तथा सस्कृत के विद्वान् महर्षि दयानन्द की स्मृति में की गई थी। इस प्रकार सस्कृत से किया गया यह व्यवहार इन दोनों विश्वविद्यालयो की स्थापना के मूल उद्देश्यो पर कुठाराघात है।

(पजाब केसरी जालन्धर से साभार)

नव जवान देश के

नवजवान देश के, चलो जननी पुकारती।
सपूत मातृभूमि के! है मातृभू कराहती॥

बढ रहा है दल असुर, बढ रहे कुधर्म तत्त्व,
नष्ट हो रहा सुधर्म, नष्ट हो रहे सुतत्त्व,
बढ रहे बिखर रहे हैं आज आसुरी कुतत्त्व,
मत्य-धर्म अस्त व्यस्त, अस्त है सुचिर ममत्व,

वेद ध्वज लिए बढो समस्त भू पुकारती।
सपूत मातृभूमि के! है मातृ-भू कराहती॥

राम कृष्ण अश हे! बढे चलो, बढे चलो,
शिवि दधीचि वंश हे! बढे चलो, बढे चलो,
व्याप्त दिव्यभूमि पर नृशस मेटते चलो,
लक्ष्य है अतीव दूर, शक्ति से चढे चलो,

क्लान्त-श्रात राष्ट्र आत्म है, तुम्हे पुकारती।
सपूत मातृभूमि के! है मातृ-भू कराहती॥

धनुर्बाण हाथ ले, बढो तुम कर्ण पार्थ हे।
असत्य तुम हटो स्वय, हटो महान स्वार्थ हे।
बढे सुपन्थ पर चलो, विनष्ट कर कुपथ जो,
बिखेरते प्रभा चलो, प्रदीप्त है, ज्वलन्त जो,

दयार्द्र आहजन मनो की, आज है पुकारती।
सपूत मातृ-भूमि के! है मातृ-भू कराहती॥

—राधेश्याम आर्य

ईश्वर भक्ति

शेर—भरोसा कुछ नही इस जिन्दगानी का,
इन्सा की जिन्दगी है एक बुलबुला पानी का।

क्या करने आया था तू क्या कर रहा है,
बदियो की पड अपने सर धर रहा है।

माता गर्भ मे वादा था तेरा।
उल्टा जब लटका हुआ था सर तेरा।
हीरा जन्म पा के तूने प्रभु को भुलाया है।
क्या करने ...

विषियो मे फसकर तू जीवन गवा रहा,
पूजी तू अपनी सारी, इसमें लूटा रहा,
खोटे तू कर्म सारे, जग मे कमा रहा,
नेकी काम तूने कोई न कमाया है।
क्या करने ...

सगे सम्बन्धी जिनको, खुश तू कर रहा,
जिनके लिए पाप-कर्म तू कर रहा,
तिजोरिया जो इनके लिये तू सब भर रहा,
किसी ने तेरा यहा साथ नही निभाना है।
क्या करने— ...

अब भी समय लाज जन्म सुधार हो,
पापो की गठडी अपने सर से उतार ले,
लेखा तेरा प्रभु जी ने सारा वहा चुकाना है।
क्या करने... ...

लाजपतराय आर्य फिल्लौर मिल, गन्नौर शहर

हरयाणा मे आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज कनीना जि० महन्द्रगढ		२४-२५ मई
,,	नातनोड कला जि० हिसार	२१ से २६ ,,
,,	कयारी जि० हिसार	२७ से २६ ,,
,,	मातनहेल जि० रोहतक	२६ से १ जून
,,	फूसगढ जि० करनाल	३० से १ ,,
,,	रोहतक रोड रामनगर जीद	३० मई से १ ,,
,,	नारनौल जि० महेन्द्रगढ	१ से ३ ,,
,,	ब्याना जि० करनाल	२ से ४ ,,
,,	गन्नौर शहर जि० सोनीपत	६ ७-८ ,,
,,	बूबका जि० कुरुक्षेत्र	६-७-८ ,,
,,	गधौली जि० अम्बाला	६-७-८ ,,

जो आयसमाज अपने वार्षिक उत्सव अथवा प्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, वे ऊपर लिखित तिथियो को छोडकर शेप तिथियो मे रखकर शीघ्र सूचित करे, ताकि सभा को उपदेशक तथा भजन मण्डलियो का प्रबन्ध करने मे सुविधा रह।

महाशय भरतसिह वानप्रस्थी वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाजो के वार्षिक चुनाव

आयसमाज सोनीपत नगर

प्रधान- सवश्री वेदप्रकाश एडवोकट, उपप्रधान—पजुराम आय, रामगोपाल आय, मन्त्री- सत्यदव शास्त्री, उपमन्त्री—देवदत्त आय, महासिह शास्त्री, कोषाध्यक्ष—कवरभानु आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-सत्यप्रकाश सुखेजा, कोषाध्यक्ष—देवप्रिय आय।

आर्यसमाज हसनपुर जि० फरीदाबाद

प्रधान—सवश्री रामनिवास, उपप्रधान—धमपाल, मन्त्री—वीरेन्द्र-कुमार, उपमन्त्री—प्यारेलाल, कोषाध्यक्ष—प्रमचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—डा० दयानन्द।

सर्वहितकारी के प्रकाशन की सराहना

माननीय व्यवस्थापक सवहितकारी नमस्ते ! मुझे सर्वहितकारी साप्ताहिक निरन्तर प्राप्त हो रहा है। इसके लिए आपका धन्यवाद। इस पत्र मे वैदिक विद्वानो के लेख, उच्चकोटि के कवियो का प्रभावशाली कवितायें तथा वेदमन्त्रो की व्याख्या और विशेषकर हरयाणा के पक्ष मे जो आवाज आप अपने लेखो द्वारा उठा रहे है, वह अत्यन्त सराहनीय है। मै इस पत्र का आजीवन सदस्य बनना चाहता हू। अत कितनी राशि भेजू, लिखने की कृपा करे। सम्प्रति २०) वार्षिक शुल्क मनीआडर द्वारा भेज रहा हूँ।

जगदीशचन्द शाहबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन शीघ्र होने वाला है। अत अभी तक जिन आर्यसमाजो ने वार्षिक वेद-प्रचार दशाश तथा सर्वहितकारी का शुल्क सभा को नही भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे मनीआडर अथवा सभा के उपदेशको द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा कर। जिन आर्यसमाजो से प्राप्तव्य राशि प्राप्त हो जायेगी, उन आयसमाजो के प्रतिनिधियो को ही सभा के अधिवेशन का एजेण्डा भेजा जायेगा।

अपने आर्यसमाज के वार्षिक चुनाव की भी सूचना सभा के पत्र सर्वहितकारी मे प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

स्वप्न साकार करना अभी शेष है

देश के नवजवानो ! बढे ही चलो
स्वप्न साकार करना अभी शेष है।

मुक्ति हमको मिली राजनीतिक अभी
मानसिक दासता से कसा है वतन।
आर्य संस्कृति मिली जारही धूल मे,
हो रहा है सुतत्त्वो का अविरल पतन।
देख लो ! रो रहा मूल्य मनुजत्व का,
भेदभावो का होता यहा विष वमन।

खडा है दनुजता दुकूलो पर देखो,
बुलाता सभय हो तुम्हें, देश है।

बुलाती तुम्हे आर्य संस्कृति की गरिमा,
बढे तुम चलो सत्य पथ पर चिरन्तन,
कही भी धरा पर पुन रह न जाए-
किसी भी मनुज का करुणार्द्र क्रन्दन।
दया, प्रेम, समता, सुगमता, सफलता,
का होवे धरा पर पुन नम्र वन्दन।

मनुजता से पूरित हो प्रिय भूमि सारी,
यही पूज्य ऋषियो का सन्देश है।

प्राण-पण से है प्यारी हमे मातृ-भू,
आख उसको दिखाये, कहा ? कौन है।
देश के सनिको के समक्ष यह धरा-
व्योम, तारे, समुद्र सभी मौन है।
जयगान गाते हैं झरने यहा,
हिन्द सागर कही पर, कही सोन है।

युगो से रही शौर्य शक्ति हमारी,
क्षितिज मे, धरा पर सदा शेष है।

अशिक्षा का दानव हटे देश मे
श्रम-परिश्रम की होवे यहा अर्चना।
जगे वेद की ज्योति फिर से धरा पर,
हो सत्यम् शिवम् सुन्दरम् वन्दना।
ललकार दो दानवो वृत्तियो को-
कर दो, धरा पर न आवे, मना।

गरजते जलधि सा उठो वीर पुत्रो।
बुलाता, तुम्हारा, तुम्हे देश है।
देश के नवजवानो ! बढ ही चलो।
स्वप्न साकार करना अभी शेष है।

—राधेश्याम आर्य

सेवा

सेवा, धर्म ईमान है। मानवता का मान है॥
सेवा मे ही शान है। सेवा से उत्थान है॥
मानव बनकर मान बढाओ। वेदो का फरमान है॥
सेवा कार्य मे जुटा रहे तो। मानव का सम्मान है॥
सेवा मे सन्तुष्ट रहे मन। सेवा ऐसा ज्ञान है॥
सेवा भारती हरयाणे का। सेवा कार्य महान् है॥
दीन-दुखी के दुख हरने का। सेवा सफल विधान है॥
सेवा भाव नहीं है जिसमें। वह भी क्या इन्सान है॥
सेवा एक है उत्तम मेवा। सचमुच स्वर्ग समान है॥
सेवा का निष्काम कर्म ही। सर्वोत्तम बलिदान है॥
'नाज' उदार हृदय से खोजो।
सेवा मे भगवान् है॥

—'नाज' सोनीपती

गृह मामलों सम्बन्धी मन्त्रालय

स्वतन्त्रता सेनानियों के ध्यानार्थ

प्रेस विज्ञापन (१/८६) भारत सरकार ने १-८-१९८० से प्रभावी स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन स्कीम के अधीन सम्मान-पेंशन देने के उद्देश्य के लिए, आर्यसमाज आंदोलन १९३८-३९ को मान्यता देने का निर्णय किया है, जो स्वतन्त्रता-संघर्ष के एक भाग के रूप में, भूतपूर्व हैदराबाद राज्य में चला था। अत सरकार ने यह फैसला किया है कि इस आदोलन मे भाग लेने वाले और भाग लेनेवाले स्वर्गीयो के योग्य आश्रित, निर्धारित प्रपत्र पर अपने आवेदनपत्र, अपेक्षित दस्तावेजो के साथ, सभी तरह से परिपूर्ण, ३० जून, १९८६ को या पहले भेज दें।

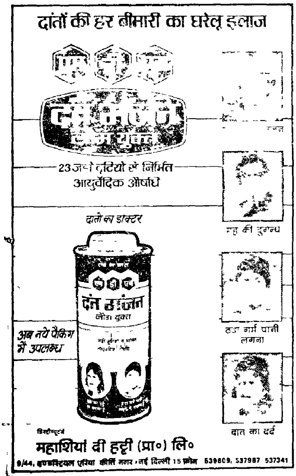
आवेदनपत्र की एक प्रति सम्बद्ध राज्य सरकार/यू०टी० प्रशासन को भेजी जाए और दूसरी उप सचिव, गृह मन्त्रालय, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-११०००३ को रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।

आवेदनपत्र उपसचिव, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, गृहमन्त्रालय, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली से नि शुल्क व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा प्राप्त किये जा सकते है। ये प्रपत्र सम्बद्धराज्य/संघ-शासित क्षेत्रो के प्रशासन के मुख्य सचिव से भी प्राप्त किये जा सकते है।

३० जून, १९८६ के बाद प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार्य न होंगे।

केवल ऐसे स्वतन्त्रता सैनिको को ही आवेदन करना चाहिए, जिन्होने आर्यसमाज आदोलन में भाग लिया और जो स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन स्कीम १९८० के अधीन पेंशन दिये जाने के योग्य हैं।

सी/डीएवीपी ५६१ (८६)/८६



सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

(दिनाक 26 मई 1986 से 1 जून 1986 तक) गाव मातनहेल के स्कूल मे बच्चो एव नवयुवको के शारीरिक, मानसिक एव चारित्रिक विकास के लिए 26-5-86 से 1-6 86 तक सदाचार एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे शिविरार्थियो को आसन-प्राणायाम, दण्ड-बैठक, स्तूप आदि अनेक भारतीय व्यायामो का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा देश-भक्ति, माता-पिता की सेवा, सदाचार, आहार-व्यवहार, ब्रह्मचर्य, धर्म-कर्म आदि की शिक्षा भी प्रतिदिन दी जाएगी। इन सबके प्रशिक्षण के लिए निम्नलिखित शिक्षक एव विद्वानो को आमन्त्रित किया गया है

समस्त भारत मे विख्यात आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज, प० श्री पूर्णदेव जी विद्यावाचस्पति, श्री शेरसिंह जी 'शेर' एम० ए०, प० श्री विद्याधर जी शास्त्री, श्री दयानन्द जी शास्त्री, श्री सुखदेव जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा। इनके अतिरिक्त प० रामरिख जी आर्य प्रचारक, कुवर तेजपाल जी एव उत्तर भारत के मशहूर गायक श्री सहदेव जी 'बेधडक' की भजन मण्डलिया भी पधार रही है।

आप सब इस कार्यक्रम मे सादर आमन्त्रित है। सबसे प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम की सफलता के लिए तन-मन-धन से सहयोग करे तथा अपने प्रिय पुत्रो के शारीरिक एव चारित्रिक विकास के लिए कैम्प मे प्रवेश दिलाएँ।

सयोजक	शिविर सचालक
ग्राम मातनहेल निवासी	राजपाल

प्राणिवध या राष्ट्रवध यह ?

श्री मे गजन नस्यार्थी शिव शास्त्री एम० ए०, शिरानी

प्राणिवध या राष्ट्रवध यह क्रूर कालिमा आई है।
हरगिज बन्द हो जाना चाहिए न देश बचेगा भाई यह।
रुदन मचाकर कोस कोस कर विवश प्राणी मरते है-
अन्याय की गहराई रात्रि पर क्यो दाग रही परसाई है।

अपना हित छोटा भी, बडा पैमाना उसका बनना।
स्वार्थ बुद्धि की तत्परता से ही सब पापभाव है तनता।
अपने हिताभास को बात, घृणित नृशंसता की बात, मानने क्यो ठीक ?
तडपतो की तडपन मे तडपा, कृपा करो बन्धु ! मागता मै भीख।
रोक दो अनाचार वामाचार के परिहास दीखने लुभावने है सारे इनका।

बदलते परिवेश मे प्यारे मेरे देश मे अश्वपति का उद्घोष हो।
बुराई के विरोध मे भारी आक्रोश हो, भारी जनरोष हो।
राम कृष्ण की धरती, दयानन्द मनु की सस्कृति दरवेश हो।
सर्वेश से डरने लगे सब, निर्मूल पाप वासना हो जोश मिश्रित होश हो।

मारना निर्दोषो का अनबोलो उपकारी हितकारी पशुओ का।
यह क्या काम बन गया इन्सान का जो था नरभक्षी हिंसक दस्युओ का।
कृतघ्नता का दोष लाकर करते जितना जोश, रोष प्रभु का मिलेगा-
पर वायु भरने वालो
रक्त पै पलने वालो ! कराहते जीवो की होली जलाने वालो सम्भलो-
करता है कर्म जो न पास मे जायेगा, पिलाता है औरो को निश्चय ही
पिलेगा।

पाप वृक्ष निश्चय ही हिलेगा।
धर्म पुष्प निश्चय ही खिलेगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

हत्या करके उसके खून से स्नान करना, अपने मृतक पितरो की शाति के लिए अपने प्राणप्रिय पुत्रो को देवी की भेट करना, देवी-देवताओ को प्रसन्न करने के लिए अपने अबोध बच्चो तथा पारिवारिकजनो को मारकर बलि देना इत्यादि घटनाये दैनिक-पत्रो मे प्राय पढने को मिलती हैं। क्या इन जघन्य कृत्यो की प्रेरणा भगवती जागरण की तारा की कहानी से नही मिल रही है। जिसमे तारा के पति ने अपने पुत्र को मारकर तथा पकाकर उसका देवी को भोग लगाया और उसका ही प्रसाद खिलवाया गया है। जिसमे पाखण्डी ज्योतिषी के बहकाने से एक अबोध बालिका को सन्दूक मे बन्द करके नदी मे फिकवाया गया है और पतिव्रता स्त्रियो को क्या पतिव्रत धर्म से पतित करने की कुशिक्षा देने के लिए ही अपने पति से छिपकर तारा का जागरण मे जाना, वहा से प्रसाद रूप मे प्राप्त पके मास को तथा मदिरा को पति से छिपाने के लिए देवी से प्रार्थना करवाना और तारा के विषय मे पुत्र के मुख से यह कहलवाकर कि तुम तारा को नही जानते, वह तुम्हे इस पन्थ के विषय में कभी नही बतायेगी, इत्यादि बातो का वर्णन नही है?

इस प्रकार धार्मिक भक्तिपरायण भारतीय जनता से मेरा यही निवेदन है कि यह लेख किसी से ईर्ष्यावश नही लिखा गया है, किन्तु वैदिक भक्ति से विमुख करके भक्ति के नाम पर जो अनर्थ, पाखण्ड तथा कुरीतियो का प्रचलन होने लगा है, उन पर गम्भीरता से विचार करने के लिए ही लिखा है। क्या श्रीराम व श्रीकृष्ण के भक्त व श्रद्धालुजन अपनी आदर्श परम्पराओं तथा प्राचीन संस्कृतियो को छोड़कर इन सद्यः प्रचालित अन्धविश्वासो से अपने को नही बचायेंगे? क्या नास्तिक वाममार्ग की भाति मद्य मास के प्रसाद का प्रचार करने वालो से बचकर 'अहिसा परमो धर्म.' के आदर्श की रक्षा नही करेगे? क्या रामायण, गीता को श्रद्धा से पढ़ने वाले सनातनधर्मी बन्धु इन नवीन तथा भारतीय सस्कृति के विध्वसक प्रचारको से धार्मिक भोली भाली जनता को जाग्रत करके अपने कर्त्तव्य का पालन नही करेगे? जिस सस्कृति का विध्वस विदेशी अत्याचारी शासको के राज्यकाल मे भी नही हुआ, क्या उसका विध्वस अपने ही अन्दर घुसकर प्रचार करने वालो को देखकर सहृदय सच्चे भारतीयो के हृदय लेशमात्र भी द्रवित नही होगे? इत्यादि अनेक प्रश्नो का समाधान ढूढने के लिए सभी वेदभक्तो को निष्पक्ष होकर विचार करना चाहिए, अन्यथा न हम रहेंगे और न हमारी सस्कृति और फिर हाथ मलते ही रहना पडेगा।

—राजवीर शास्त्री

(१ प्रस्तुत उद्धरण सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित 'माता मेरा वाली' पुस्तक से लिए हैं।)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ७८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क २६ २८ मई, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ५० पैसे

भारतीय छः दर्शनों का परिचय

—[illegible]

भारतीय दर्शनो की सबसे बडी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है। उनका उद्देश्य नाना प्रकार के दुःखो से पीडित मनुष्यो को राग-द्वेष और अविद्या से छुडाकर मोक्ष प्राप्ति करा देना। व्युत्पत्ति—शास्त्र के अनुसार दर्शन का अर्थ है—'दृश्यतेऽनेन इति दर्शनम्' जिसके द्वारा देखा जाये। क्या देखा जाये? वस्तु का तात्विक स्वरूप। इस जगत का सच्चा स्वरूप क्या है? यह जड है या चेतन? इस ससार मे हमारा कर्तव्य क्या है? जीवन को श्रेष्ठ, सुन्दर और सुखी बनाने के साधन क्या है? हम कौन है? परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है? इन और इस प्रकार के प्रश्नो का उत्तर देना दर्शनो का कार्य है।

१—न्याय दर्शन का परिचय—न्याय दर्शन के आदि प्रवर्तक महर्षि गौतम है। महर्षि गौतम से पूर्व का कोई ऐसा ग्रथ नही, जिसमे तर्क, प्रमाणवाद आदि का नियमबद्ध विवेचन हो। इस ग्रन्थ मे पाच अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय मे दो दो आह्निक हैं और ५३८ सूत्र है। प्रथम अध्याय मे उद्देश्य तथा लक्षण और अगले अध्यायो मे पूर्वकथन की परीक्षा की गई है। 'न्याय' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थो मे होता है, परतु दार्शनिक साहित्य में न्याय का अर्थ है—'नीयते प्राप्यते विवक्षितार्थ सिद्धिरनेन इति न्यायः' जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्धि की जा सके, जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्धात पर पहुचा जा सके, उसी का नाम 'न्याय' है।

२—वैशेषिक दर्शन का परिचय—वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद है। खेतो से अन्न के कण बीनकर अपने उदर की पूर्ति करने के कारण उनका यह नाम पडा था। इस ग्रन्थ मे दस अध्याय हैं। प्रत्येक में दो दो आह्निक हैं और सूत्रो की सख्या ३७० है। महर्षि कणाद ने भी पहले ही अध्याय मे अपने दर्शन का उद्देश्य बतला दिया है। वह उद्देश्य है निःश्रेयस अथवा मोक्ष की प्राप्ति। वैशेषिक का अर्थ है—"विशेष पदार्थमधिकृत्य कृत शास्त्र वैशेषिकम्' विशेष (पृथिव्यादि परम सूक्ष्म भूततत्त्वों का नाम विशेष है) नामक पदार्थ को मूल मानकर प्रवृत्त होने के कारण इस शास्त्र का नाम वैशेषिक है।

३—साख्य दर्शन का परिचय—साख्य दर्शन के रचयिता महर्षि कपिल हैं। इस ग्रन्थ मे छः अध्याय हैं। सूत्रो की सख्या ४५१ है और प्रक्षिप्त श्लोको को मिलाकर ५२७ है। इस दर्शन का उद्देश्य प्रकृति और पुरुष की विवेचना करके उनके अलग-अलग स्वरूप को दिखलाना है। प्राय गणनार्थक 'सख्या' मे साख्य शब्द की व्युत्पत्ति मानी जाती है, परन्तु इसका सुन्दरतम और वास्तविक अर्थ है विवेकज्ञान। 'सख्या' शब्द सम्पूर्वक 'चक्षिङ् ख्यात्र्' धातु से बनता है, जिसका अर्थ है 'सम्यक् ख्यानम्' अर्थात् सम्यक् विचार। इसी को विवेक बुद्धि कहते है। जब मनुष्य विवेक द्वारा यह जान लेता है कि पुरुष आत्मा और परमात्मा प्रकृति से भिन्न है, तब उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। "ईश्वरासिद्धे' आदि सूत्रो को देखकर कुछ लोग महर्षि कपिल को नास्तिक कहते हैं, परन्तु इस सूत्र मे तो उन्होने जगत् के उपादानभूत कारण को असिद्ध बताया है। 'स हि सर्ववित सर्वकर्ता' आदि सूत्र महर्षि कपिल को परम आस्तिक बता रहे है।

४—योगदर्शन का परिचय—योगदर्शन महर्षि पतजलि की रचना है। इस ग्रन्थ के चार पाद है। सूत्रो की सख्या १९४ है। आकार की दृष्टि से यह दर्शनो मे सबसे छोटा है परन्तु महत्त्व की दृष्टि से सब दर्शनो मे महान् है। योग शब्द के अर्थ अनेक है। योग शब्द का अर्थ जोडना, मिलाना भी होता है। (युजिर् योगे, युज समाधौ) से योग शब्द सिद्ध होता है। योग दर्शन मे यह शब्द दोनो ही अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है।

५—मीमासा दर्शन का परिचय—मीमासा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि जैमिनि हैं। इस ग्रन्थ मे बारह अध्याय है, जिसमे साठ पाद है। सूत्रो की सख्या २७३१ है। इस प्रकार आकार मे यह दर्शन सबसे बडा है। अन्य पाचो दर्शन एक ओर और अकेला मीमासा एक ओर होने पर भी मीमासा दर्शन का पलडा भारी है। इस दर्शन का जिज्ञास्य विषय धर्म है। धर्म का ज्ञान वेदाध्ययन से होता है, क्योकि धर्म के विषय मे केवल वेद ही प्रमाण है। धर्म अथवा वेदार्थ विषय विचार को मीमासा कहते है। इस दर्शन मे वेदार्थ का विचार होने से इसे मीमासा दर्शन कहते है। इस दर्शन मे यज्ञो की दार्शनिक दृष्टि से व्याख्या की गई है। कुछ लोगो का विचार है कि मीमासा मे यज्ञो मे पशु हिसा का उल्लेख है परन्तु यह धारणा सर्वथा भ्रान्त है। मीमासा मे पशुओ का वध नही, पशुओ के दान का उल्लेख है। मीमासा वेद को सर्वोपरि मानता है। जब वेद मे मास-भक्षण और पशु हिसा का निषेध है, तब महर्षि जैमिनि उसका समर्थन कैसे कर सकते थे?

६—वेदान्त दर्शन का परिचय—इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि व्यास है। इस दर्शन मे चार अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय मे चार-चार पाद है। सूत्रो की सख्या ५५५ है। इस दर्शन का उद्देश्य वेद के परम तात्पर्य परमात्मा के बतलाने मे है। ब्रह्म के साक्षात्कार से ही स्थिर शान्ति और परम आनन्द - मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेदान्त शब्द का अर्थ है—'वेदस्य अन्त अन्तिमो भाग इति वेदान्त'' वेद के अन्तिम भाग (उपनिषदो) का नाम वेदात है। उपनिषद् ही वेद के अन्तिम सिद्धात को खोलती है। इसलिये वेदात दर्शन भारतीय अध्यात्मशास्त्र का मुकुटमणि माना जाता है। उपनिषदो के ज्ञान को व्यवस्था मे लाने के लिए ही इस दर्शन का निर्माण हुआ है।

दर्शनो का काल दर्शन कब लिखे गये, इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। दर्शनकारो ने इस विषय मे कोई लिखित प्रमाण नही छोडा है, परन्तु एक बात सुनिश्चित है कि सभी दर्शन ऋषियो द्वारा प्रणीत है और ऋषियो का युग महाभारत तक अविच्छिन्न रहा है। अत दर्शन महाभारत से पूर्व और महाभारतकाल के आस पास लिखे गये। इस प्रकार दर्शनो का समय आज से कम से कम पाच हजार वर्ष पूर्व है। पाश्चात्य लेखको द्वारा निर्दिष्टकाल सर्वथा भ्रामक, तथ्यो से दूर और युक्तिशून्य है।

हिन्दू शिक्षण संस्थओं में हिन्दी की अवहेलना

ले०—श्री जगन्नाथ, सयोजक राजभाषा कार्य केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद एक्स०वाई०-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

जब आज़ादी के लिए संघर्ष किया जारहा था और सरकारी शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया जारहा था, उस युग में आर्यसमाजों, सनातनधर्म संस्थाओं और अन्य धार्मिक संस्थाओं की ओर से स्थान-स्थान पर शिक्षण संस्थायें खोली जारही थी, जो कि विद्यार्थियो मे राष्ट्रीयता देश-प्रेम तथा संस्कृति और हिन्दी भाषा के प्रति अनुराग पैदा करती थी। ऐसी संस्थाओं मे वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय और डी०ए०वी० कालेजों तथा स्कूलो का विशेष स्थान था। किन्तु बडे आश्चर्य की बात है कि अब इन हिन्दू शिक्षण संस्थाओं द्वारा अंग्रेजी को अनावश्यक रूप से अधिक महत्त्व दिया जारहा है। हाल ही मे भारत सरकार के एक उच्च अधिकारी ने नई दिल्ली के एक डी०ए०वी० स्कूल के वार्षिक उत्सव मे भाग लिया था और उन्होने स्कूल के प्रिंसिपल को जो पत्र लिखा है उसके आवश्यक अंश नीचे दिये जारहे हैं—

आपके वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम जिस सुव्यवस्थित और सुचारु रूप मे कार्यान्वित किया गया था वह न केवल प्रभावशाली था अपितु प्रशंसनीय भी था। आपके स्कूल की गतिविधियो का ब्यौरा सुनने के बाद यह भास हुआ कि आपके संरक्षण मे आपके विद्यालय ने बहुत ही उच्चकोटि का निष्पादन का परिचय दिया है—परन्तु एक बात जो मुझे अखरी वह थी, समारोह के सचालन का माध्यम जो अंग्रेजी मे हो रहा था। इससे पूर्व आपका निमन्त्रण जो अंग्रेजी मे छपा हुआ था, उसे देखकर भी मुझे अचम्भा-सा हुआ। मेरे विचार से यदि समारोह का सचालन हिन्दी के माध्यम मे होता तो समारोह की गरिमा अधिक बढती मैं स्वयं डी०ए०वी० स्कूल का विद्यार्थी रहा हू और इस संस्था का नाम लेते ही राष्ट्रीयता, देश की एकता और भारतीयता की झलक सामने आ जाती है। यह भी सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द जी ने हजारो पुस्तको का अध्ययन करने के पश्चात् जो अपना सदेश "सत्यार्थप्रकाश" मे दिया वह हिन्दी के माध्यम से ही दिया। यह भी किसी से भूला हुआ नही है कि उत्तरी भारत मे और विशेषकर अविभाजित पंजाब में आर्य समाज एवं डी०ए०वी० संस्थानो ने शिक्षा के सम्बन्ध मे जो भी कार्य किया था, उसी के फलस्वरूप हिन्दी को इस क्षेत्र मे गौरवमय स्थान प्राप्त हो सका था।

मुझे नही मालूम कि डी०ए०वी० संस्थान ने किस आशय से माडल स्कूलो की स्थापना की है। संभवत शिक्षा के क्षेत्र मे एक नई दिशा देने हेतु, परन्तु मेरा यह भी विश्वास है कि इस दिशा-निर्धारण मे जो संस्थान के मूलभूत आधार हैं—जैसे कि राष्ट्रीयता, देशप्रेम, राजभाषा के प्रति अनुराग इत्यादि के प्रति शिथिलता नही आयेगी। मेरा यह भी विश्वास है कि माडल स्कूल की स्थापना पब्लिक स्कूल की पद्धति को ग्रहण नही करेगी, क्योंकि आजकल के पब्लिक स्कूल न केवल विवाद का विषय है, अपितु राष्ट्रीयता की कसौटी पर भी खरे नही उतरते।

हमारी राजनैतिक स्वतन्त्रता, आर्थिक उन्नति और सामाजिक परिवर्तन निष्फल रहेंगे, जब तक कि हम मानसिक दासता से ऊपर नही उठेंगे। इस मानसिक दासता का कारण है हमारी अंग्रेजियत मनोवृत्ति। हर भारतीय का स्वाभिमान इस बात का तकाजा करता है कि वह स्वेच्छा से सिर ऊंचा करके बैठ सके। अभी तक अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर ही नही, अपितु राष्ट्रीय मंच पर भी अधिकतर अंग्रेजी के माध्यम को ही अपनाया जारहा है। परन्तु अब यह आभास उच्च क्षेत्रों मे भी होने लगा है कि हमे अपने कार्यकलापो मे अपनी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

यह कहना वास्तविकता की अवहेलना होगी कि हिन्दी मे कार्य-कलाप करने की क्षमता नही। अब तो यान्त्रिक उपकरण भी द्विभाषी रूप मे देश मे ही उपलब्ध होने लगे हैं और उनका प्रयोग भी हो रहा है। निकट भविष्य मे दूर सचार व्यवस्था भी द्विभाषी रूप मे ही होने वाली है। यह भी हमारा विश्वास है कि हमे अंग्रेजी के प्रति कोई द्वेष-भाव नही रखना चाहिए, क्योंकि यह भाषा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की भाषा है और अन्तर्राष्ट्रीय मंच से सम्पर्क रखने के कारण इससे हम दूर नही रह सकते। परन्तु प्रश्न हिन्दी को राजभाषा के रूप मे अपना उचित स्थान ग्रहण करने का है जो न केवल यह एक संवैधानिक प्रावधान है, बल्कि हर भारतीय के स्वाभिमान और देश की एकता से जुडा हुआ प्रश्न है।

२—उक्त विचारो मे हमे अपनी ओर से कुछ और नहीं जोडना है। पाठको से केवल यही निवेदन है कि केन्द्रीय सरकार के एक उच्च अधिकारी के उपरोक्त विचारो पर वे गम्भीरता से मनन करेंगे और अपने प्रभाव का प्रयोग करते हुए ऐसा प्रयत्न करेंगे, जिससे कि हिन्दू संस्थायें अंग्रेजी के एजेण्ट बनना बन्द करके वास्तविक रूप में राष्ट्रीयता तथा भारतीयता की पोषक संस्थायें बन जायेंगी।

वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न

श्री प० गोरधनलाल जी आर्य कन्माला निवासी के सुपुत्र श्री आचार्य रामवीर शास्त्री, स्नातक गुरुकुल झज्जर का शुभ विवाह १२ मई, १९८६ को वैदिक रीति से दिसोर खेडी निवासी प्रसिद्ध वैद्य श्री हरीराम जी वशिष्ठ आयुर्वेदाचार्य के घर बवाना मे सम्पन्न हुआ। इस विवाह संस्कार को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव जी तथा कर्मकाडी पडित श्री देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री, नरेला ने बहुत ही अच्छे और प्रभावी ढंग से सम्पन्न कराया। सनातनधर्मी ब्राह्मणो मे इस संस्कार को देखने की बहुत तीव्र जिज्ञासा थी, आचार्य सुदर्शनदेव जी तथा श्री देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री ने मन्त्रों की व्याख्या बहुत ही सुन्दर ढंग से की। सभी दर्शक शांत बैठे सुनते व देखते रहे। साथ-साथ शंका समाधान होता रहा। इस संस्कार में किसी भी तरह का अपव्यय नही किया गया। गाजेबाजे से रहित सभी लेन-देन के व्यवहार केवल एक-एक रुपये से ही सम्पन्न हुए। संस्कारोपरान्त प० गोरधनलाल जी आर्य द्वारा निम्न संस्थाओं को दान दिया गया—

५०१) महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, रोहतक
१०१) कन्या गुरुकुल नरेला
१०१) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
५१) गोशाला बवाना

विवाह संस्कार के एक सप्ताह पश्चात् आर्यसमाज के तपोनिष्ठ प्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने वर-वधू को उनके निवास ६५ए समयपुर दिल्ली में यज्ञोपरान्त सद्गृहस्थी कर्त्तव्यपरायणता की प्रेरणा देते हुए आशीर्वाद दिया और उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामनायें की।

—कृष्णकुमार समयपुर

सनौली बार्डर से गोमांस भेजने की निन्दा

स्वामी धर्मानन्द जी आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत ने सनौली तहसील पानीपत के मार्ग से कैराना (उ०प्र०) के होटलों के लिए गोमांस ट्रक भेजे जाने की निन्दा करते हुए भारत सरकार से मांग की है कि इस पर तुरन्त रोक लगाई जाये।

सम्पादकीय

पंजाब की सद्भावना यात्रा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल जिसमे मेरे अलावा सा० आ० प्र० सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले, श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, श्री बी० किशनलाल, श्री राजगुरु शर्मा, श्री मनमोहन तिवाडी आदि थे। १५ मई, १९८६ की प्रात दिल्ली से चला। हमने लुधियाना, होशियारपुर, जालन्धर, अमृतसर, बटाला, तरनतारन पट्टी तथा सीमावर्ती अमृतसर और गुरुदासपुर जिले के कुछ गावो मे जाकर हजारो लोगो से मिलकर पजाब की परिस्थिति का अध्ययन किया। जो लोग आतकवादियो द्वारा मारे गये, उनके परिवारो से भी हम लोग मिले, सरकारी अधिकारियो से तथा अनेक सिख और हिन्दुओ के प्रतिष्ठित महानुभावो से भी मिले। अनेक सस्थाओं के कार्यकर्त्ताओ तथा आतकित जनसाधारण से तो सभी स्थानो पर मिलकर विस्तार से बाते की।

हम सब कुछ देख और सुनकर इस नतीजे पर पहुँचे कि पजाब में जो नरसहार लूटमार हो रही है, पोस्टर छापकर लगाये जारहे है, धमकी भरे हजारों लोगो को रोज पत्र मिल रहे हैं, महिलाओ की असमत बचाने के लाले पडे हुए हैं और लोग पजाब छोडकर हजारो की सख्या मे आ चुके हैं तथा लाखो आने का तैयारी मे है, इन सबके पीछे एक सोची समझी योजना है। इस योजना मे अमरीका, इगलेंड और पाकिस्तान का हाथ साफ साफ दिखाई दे रहा है। १८ और २५ वर्ष के बीच की आयु के नवयुवक जो एक प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करके रग मे रग दिये जाते हैं, वे आगा-पीछा नही देखते। विदेशो के पैसे मे, विदेश में या देश मे प्रशिक्षण पाकर नये से नये हथियारो से सुसज्जित ऐसे दिशाभ्रमित नवयुवक ही अधिकतर औजार बनाये गये है। इनके साथ मिल गये हैं अनुभवी तस्कर और असामाजिक तत्त्व, जिनके साथ गहरे सम्बन्ध हैं, अनेक अकाली दल के नेताओ और मन्त्री मण्डल के सदस्यो तक के। सिख होमलेंड की बात तथा अनेक छोटे-बडे मुद्दो को उछाल कर जनसाधारण की भावनाओ को भडकाने के साथ-साथ शहरी सिखो को, शहरी हिन्दुओ के भगाये जाने के बाद कारखानो और व्यापार पर पूरे कब्जे का लालच तथा हिन्दू जमीदारो के चले जाने के बाद सिख जमीदारो को उनकी जमीन की मलकियत का लोभ दिया जाता है। पुलिस तथा कुछ अन्य महकमो के कर्मचारियो का तस्करो और असामाजिक तत्त्वो के साथ पुराना तालमेल और ऊपर से मजहबी जोश। ये सब लोग जाने अनजाने, स्वार्थ सिद्धि तथा जनून से प्रभावित होकर यदि एक साथ मिलकर किसी चीज का बीडा उठा ले तो जो माहौल उससे बनेगा, वह माहौल आज पजाब मे, विशेष रूप से सीमावर्ती इलाको मे देखने को मिलता है। इस माहौल मे यदि अपने सम्बन्धियो, मित्रो या जाननेवालो का सहारा लेकर किसी जगह चले जाये या चलने की तैयारी करने लगें तो उसे न गलत कहा जा सकता है और न अस्वाभाविक। कुछ लोग वही निश्चित होकर बसे रहने के लिए यदि आतकवादियों की शर्त मानकर अमृत छक लें, सिख बन जाये तो भी कोई आश्चर्य नही।

पजाब छोडकर चले जाने की तैयारी मे लगे लोगो को हमने कहा कि वे धैर्य से तथा सगठित होकर इस मुसीबत का मुकाबला करें और हमने यह आश्वासन भी दिया कि हम भारत सरकार से आतकित जनता को शीघ्र सुरक्षा प्रदान करने के लिये प्रार्थना करेंगे और दबाव डालेंगे। परन्तु राज्य सरकार और उसकी नौकरशाही पर तो लोगो का बिल्कुल विश्वास उठ चुका, हालाकि बहुत-सी जगह कुछ अधिकारी जी-जान से उनकी सहायता कर रहे हैं, परन्तु सब कुछ चाहने पर भी वे बहुत थोडा कर पाते हैं। उतने भर से लोगो में टिकने का साहस नही पैदा होता। भारत सरकार कब और क्या करेगी, इस पर भी उनको सन्देह है। लोगों का कहना अन्त में यही होता था कि कहने से उनको थोडा दिलासा तो मिलता है, परन्तु वे टिक तभी पायेगे, जब भारत सरकार ठोस, मजबूत और कारगर कदम उठायेगी। बरनाला के बार बार यह कहने पर कि उनकी पथिक सरकार है और पश्चाताप के लिये ग्रथियो के आदेश पर जूते साफ करने का काम बरनाला द्वारा किये जाने पर तो लोगो के हौसले बिल्कुल खत्म से ही हो गये लगते है। असन्तुष्ट अकालियो का अतिवादियो से गठजोड तो अब खुलकर सामने आगया। लोगो का भरोसा बरनाला और उसके साथियो पर भी नही जमता, क्योकि उसके मन्त्री मण्डल के कुछ सदस्य आज भी तस्करो और आतकवादियो को बचाने मे सलग्न हैं।

यदि पजाब मे हिन्दुओ का पलायन नही रुका तो सारे देश का वातावरण बिगडने की सम्भावना स्पष्ट दिखाई दे रही है। अनेक प्रदेशो मे उसकी प्रतिक्रिया हो सकती है और जो शक्तिया पजाब मे खेल, खेल रही हैं, उनके लिए दूसरे प्रदेशो मे दियासलाई जलाकर आग लगाना कठिन नही। उनका उद्देश्य तो पूरा तभी होता है कि पजाब मे मार-काट पलायन बढ और उसकी प्रतिक्रिया के रूप मे देश के अनेक प्रदेशो में वैसा ही हो। वे हरयाणा तथा अन्य प्रदेशो मे कानून व्यवस्था ही नही, उनकी अर्थ-व्यवस्था को भी हिला देना चाहते हैं।

पजाब मे जो कुछ हो रहा है, उसको पजाब की समस्या कहना एकदम गलत है। राजीव लोगोवाल समझौते के अमल के साथ उसको जोडना गलत ही नही, एक शरारत है और ऐसे शरारती व्यक्ति की बात में फसना भयकर भूल है। यह समस्या भारत की एकता और अखण्डता पर सीधा प्रहार है। इसके पीछे एक सुनियोजित षड्यन्त्र है, भारत के दुश्मनो का, जो इस देश को अस्थिर करना चाहते हैं और तोडने मे लगे हुए हैं। सीमावर्ती अमृतसर, गुरुदासपुर और फिरोजपुर जिलो मे उनकी सारी शक्ति लगी हुई है और यदि इन जिलो को अशात क्षेत्र (disturbed area) घोषित करके, सेना ने बहुत शीघ्र नही सम्भाला, तो देश की सुरक्षा का गम्भीर खतरा पैदा हो जायेगा। जो शक्तिया इस क्षेत्र मे आज लगी हैं, यदि उनकी मदद से शत्रु थोडे से इलाके मे भी बढ जाये और कब्जा करले तो देश की अखण्डता तोडी जा सकती है।

सारी परिस्थितियो को देख और सुनकर हम इस नतीजे पर पहुचे हैं कि समय आगया है, अब भारत सरकार सीमावर्ती पजाब के तीन जिलो को सेना के हवाले कर दे और सख्त से सख्त कदम उठाकर तथा लोगो को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करके हिन्दुओ के पलायन को रोके और जो लोग चले आये हैं उनको पूरा सरक्षण देकर वापिस ले जाकर बसाये।

—प्रो० शेरसिंह

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक का वार्षिकोत्सव १४ से १८ मई तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। १४ मई से प० विद्याव्रत जी शास्त्री ने प्रात तथा सायकाल यज्ञ करवाया तथा रात्रि को सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य ने वेदोपदेश किया। इस अवसर पर सभा की नव नियुक्त प्रभावशाली भजन मण्डली प० मुरारीलाल बेचैन के दोनो समय प्रात सायकाल मनोहर भजन होते रहे। स्वामी रामकृष्ण जी ने भी अपने वैदिक प्रवचनो द्वारा लाभान्वित किया।

१८ मई रविवार को ब्रह्मचारी ओमदर्शन ने योगशक्ति प्रदशन किया, जिसमे योगासन, लोहे के सरियो को मोड़ना, नाडी रोकना, हथेली पर काच पीसना, पीतल की थाली तोडना, छाती पर पत्थर तुडवाना आदि आकर्षक कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर प्रीतिभोजन का भी आयोजन किया गया। आर्यसमाज की ओर से सभा को ५०१) वेद-प्रचारार्थ प्रदान किये।

स्वामी सेवानन्द जी द्वारा आकाशवाणी रोहतक से प्रसारित वार्ता—

शराब से सर्वनाश

यह तो सभी लोग जानते हैं कि शराब पीने से बुद्धि नष्ट होती है, शराब अन्दर और अकल बाहर यह बात बडे-बूढे और बुद्धिमान् कहते आये हैं। इसमे सभी का एक मत है, हृदय, मस्तिष्क और मन शराब मे ये सभी कमजोर होते हैं। कातिहीन और तेजहीन हो जाता है, शरीर रोगो का घर और मन कुकर्म करने को तैयार हो जाता है। शरीर आलसी कामी क्रोधी हो जाता है। यह ताकत का नाश करके उमर को कम कर, मनुष्य को मौत के मुँह मे ले जाती है। पीने वाले को चोर, जार, जुवारी कायर, क्रूर पापी और मासाहारी बना देती है। दुनिया का कौन-सा पाप है जो पीनेवाले मे नही करवाती। मनुष्य के कीमती जीवन को भी मिट्टी मे मिलाकर इस लोक और परलोक दोनो को बिगाडती है, इसलिये भारत के धर्माचार्यों ने इसका खण्डन किया। पहले कई लोग यह प्रचार करते थे कि मदिरापान से रोग दूर होते हैं और दवाई के तौर पर इसका इस्तेमाल कर लेना चाहिए। आज विश्व मे यूरोप और अमेरिका के अच्छे-अच्छे और बडे बडे डाक्टर इस मिथ्यावाद की पोल खोलने लगे हैं, इस निष्कर्ष पर पहुचे है कि शराब किसी भी रूप मे स्वास्थ्यवर्धक और जीवनदायिनी नही है और शराब किसी रोग को दूर नही करती, इसलिये यह औषधि नही है। परन्तु शराब विष (जहर) है, जो हृदय मस्तिष्क गुर्दे और फेफडो को भयकर क्षति पहुचाती है, पागलपन का मुख्य कारण शराब है। गले के कैसर को और मृगी को बढाती है, उपर्युक्त कारणो से यूरोप और अमेरिका के डाक्टरो ने उनका प्रयोग चिकित्सा मे बन्द कर दिया है। शराब पीने से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक और नैतिक पतन होता है और समाज का सारा ढाचा बिगड जाता है, बडे-बडे राष्ट्र और जातिया किस प्रकार शराब ने घरघाट की नही छोडी, जबकि सब ऐश्वर्य मिट्टी मे मिला दिया। इस पापी शराब ने बडे-बडे साम्राज्यो का सर्वनाश कर डाला। इसकी झाकी नीचे की पक्तियो मे पढेगे तथा इससे शिक्षा लेकर ससार मे शराब को समूल नष्ट करने का प्रयत्न करेगे, जिससे इसका कोई नाम लेवा और पानी देवा न रहे। ऋषियो के पवित्र आर्यावर्त्त (भारत) को इस पापिनी के पजे मे निकालना हम सब का मुख्य कर्त्तव्य है। यदि देश मे शराब रही तो हम नही रहेगे, न ही हमारे देश मे कुछ बचेगा। इस डायन का नाम व निशान सारे ससार मे मिटाकर छोडना है। इसी धारणा को धारण करके हमे कटिबद्ध हो जाना चाहिए। फिर देखते है कि कौन माई का लाल शराब पीयेगा। यदि एक सौ सच्चे सेवक भी सगठित होकर इस पवित्र कार्य को करने में जुट जाये तो वह दिन दूर नही जब राजा अश्वपति की घोषणा सब ओर से फिर सुनाई देने लगेगी।

जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है, कहना चाहिए कि उस के सामने विनाश मुँह फाडे खडा इतिहास मे इस बात के कितने ही प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी मे मिल गये। प्राचीन भारत का इतिहास हमे बताता है कि पराक्रमी यादव जाति जिसमे कृष्ण ने जन्म लिया था। इसी बुराई के कारण नष्ट हो गई। रोमन साम्राज्य के पतन का एक सहायक कारण शराबबन्दी मे देरी कराके अपनी प्रतिज्ञा शब्दो मे चाहे भग न कर रही हो, परन्तु उसकी भावना को जरूर भग कर रही है।

गाव मे शादी के समय मे कई लोग शराब पीते हैं और गाव की शोभा खराब करते हैं और फिर धरती को बेच देते हैं, कई किस्म की कुरीतियो से ग्रामीण जनता को खराब कर देते हैं और शराब बिमारी का घर बन जाती है, शराब पीनेवाले की पत्नी भी उससे हमेशा दु.खी रहती है, बच्चे भी खराब हो जाते हैं, समाज मे इज्जत भी नही रहती, शराबी आदमी का कोई भरोसा भी नही करता और बच्चो का खून पीता है और समाज का कोई भी आदमी उसे अच्छी नजर से नही देखता। बाप शराबी है तो बच्चे भी उसकी नकल करने लगते हैं। आगे चलकर वह भी शराबी बन जाता है और आस-पास के परिवार भी खराब हो जाते हैं।

साधारण में असाधारण

दीवान भीमसेन गुडगाव

भगवान् की मानव उत्पत्ति यद्यपि असाधारण गिनी जाती है परन्तु नन्हे जीव-जन्तु भी हमे शिक्षा लाभ देते हैं। यह भी विचारने योग्य है। डा० पिटरकौर शास्त्री के अनुसार चीटिया सदेश प्रसारित करने में विशेष प्रक्रिया करती हैं। ज्यू ही उन्हे किसी खाद्य-पदार्थ की जानकारी होती है तुरन्त ही वह अन्य जाति को एक विशेष प्रकार का रासायनिक स्राव छोडती है, जिससे खाद्य मे सजातीय चीटिया झट मे स्थान विशेष कर एकत्रित हो जाती हैं तथा मिलजुल कर खाद्य बाट खाने मे समुचय सहयोग का उदाहरण देती हैं। गिलहरियो में सकेत का आदान-प्रदान के विषय मे ब्रिटेन के भूतपूर्व कृषि मन्त्री बतलाते है कि दो नर-गिलहरी सकेत वितरित करने मे सहयोग का एक असाधारण रीति के अनुसार, एक अपनी पूछ ऊपर करता है और दूसरा नीचो करता है। इस सकेत से कहीं एक साथ चलने का प्रस्ताव बनाया जाता है। पूंछ ऊपर करने वाला प्रस्ताव पेश करता है तथा दूसरा पूंछ नीचे करके अपनी सहमति का उत्तर देता है। इस ढग से एक नर-गिलहरी की पूछ को घुमाना, आखो को टोरना, दूसरे की आखो का फैलाना, एक का अपने कान खडे करना, दूसरे को नीचे करना, पारस्परिक शाति तथा प्रस्ताव लेना देना एक सवाद बनता है। परिवार के मुखिया के समान समूह के समूह साकेतिक भाषा मे समाचार विचार लेते देते हैं। यह सकेत ऋतु के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ बताते हैं। बसन्त मे कान खडा करना, पूंछ उठाने का तात्पर्य अधिक फल सग्रह करने का अधिकार लेना है। अपनी मादा का सहयोगी चुनाव उमगो से भरा जीवन व्यतीत करने का प्रमाण है। डाक्टर कार्पेन्टर बन्दरो के विचार स्वभाव के विशेष बताते है कि कुछ बन्दरो का मिलकर वृक्ष की डाली को हिलाना यह बताता है कि उस वृक्ष पर उनका अधिकार लेना है। अपनी मादा का सहयोगी बनाना चुनावो उमगो से भरा जीवन व्यतीत करने का प्रमाण है तथा दूसरी जाति पर साकेतिक आदेश से हटवाने का आग्रह करते हैं। ब्रिटेन के चिडिया घर की अधिष्ठात्री ने चौदह प्रान्तो की भिन्न जातियो में खाद्य पदार्थों की परखा उपयोग्यता का उदाहरण देती है। कुत्तो का घ्राण शक्ति मे खाद्य को सूघना, उस पर पेशाब करके परखना, फिर वस्तु को ग्रहण करना एक विचित्र ढग जमाना है। घ्राण शक्ति द्वारा चुनाव कुत्तो मे एक विशेष साधन करार पाया है। सहानुभूति प्रेम प्रदर्शन तावेदारी कुत्तो मे एक विशेष माना गया है। इस्लामाबाद (पाकिस्तान) के समीप एक ट्रक तीव्रगति से जा रहा था। सडक पर बैठी एक कुतिया अपने बच्चे को दूध पिला रही थी, परन्तु दुर्भाग्य से कुतिया ट्रक की लपेट मे आकर वही मर गई, उसका बच्चा विस्मयपूर्ण असहाय निराश हो रहा था। ऊपर वृक्ष पर बैठी एक बन्दरिया तुरन्त नीचे आ गई। ममतावश उस कुतिया के बच्चे को अपनी छाती से लगा लिया तथा दूध पिलाती रही। उनकी घनिष्ठता और बढ गई। मा-बेटे का सम्बन्ध हो गया। कुछ समय पश्चात् पिल्ला मर गया, जिसका प्रभाव बन्दरिया पर बुरा पडा, यहा तक कि उसने खाना-पीना छोड दिया।

दरिद्र अफ्रीका के गेम वार्डन को शिकार का बडा शौक था। एक बार एक झील पर पानी पीते चिते को उन्होने मार दिया। पास आने पर ज्ञात हुआ कि वह मादा चित्ता थी, जिसके थनो से दूध बह रहा था, इधर-उधर देखने से पास की झाडी मे दो शिशु चित्ते खेल रहे थे। मा को न पाकर वे इधर-उधर हताश हो रहे थे। चुनाचे गेम वार्डन उन्हें घर ले गये। उनके हाउस की कुतिया अपने पिल्लो को दूध पिला रही थी। चित्ते के बच्चे व्यथा मे कुतिया की तरफ देखने लगे। कुतिया भी भाप गई। वह तुरन्त बच्चो के समीप पहुच उनको दूध पिला पाई। प्यार बढ गया, कुतिया को अधिक दूध लगा दिया, गेम वार्डन ने चित्ते के बच्चे को देखकर कभी शिकार द्वारा न मारने की शपथ ली तथा विचित्र परिवार वहा बन गया। प्रभु की लीला विचित्र है। ये मानव देखता नही, समझता नही तथा पाठ प्राप्त नहीं करता। मध्यप्रदेश में एक राहगीर एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहा था। विश्राम के पश्चात्

(शेष पृष्ठ ५ पर)

एक मरुद्यान यह भी

अमरनाथ राय, अखिल भारतीय अफीम नशा निवारण केन्द्र

इस विषाक्त वातावरण में अफीम नशा निवारण केन्द्र की स्थापना एवं शिविर का संचालन एक कठिन चुनौती थी, जिसे प्रो० नारायणसिंह ने अदम्य साहस से स्वीकार किया। उन्होंने डा० भीमराज व्यास और मनश्चिकित्सक डा० देवराज पुरोहित जैसे समाजसेवियों के समक्ष अपनी योजना रखी। काफी विचारमंथन के बाद परीक्षण के तौर पर १९७९ में जोधपुर से २५ कि०मी० दूर स्थित छोटे से गांव मागकलाव में अफीम नशा निवारण का प्रथम शिविर आयोजित किया गया। शिविर में अफीम के नशेबाजों को लाने की जी-तोड़ कोशिश की गई। बड़ी मुश्किल से १५-२० लोगों को शिविर में लाया गया। १० दिन तक उनकी सूक्ष्म जांच, निरीक्षण तथा किंचित् औषधियों की सहायता से उन्हें अफीम दिये बगैर रखा गया। शिविर के समापन पर जब अफीमची नशे से पूर्णरूपेण मुक्त होकर अपने अपने घर को लौटे तो मानो एक चमत्कार हो गया। इस सफलता से प्रेरित होकर नारायणसिंह ने डा० भीमराज पुरोहित, डा० देवराज व्यास, श्री रामदत्त थानवी और उपचारि वनीता कुमारी सरीखे समाजसेवी लोगों तथा लाइन्स क्लब, रोटरी क्लब, डा० सम्पूर्णानन्द चिकित्सा महाविद्यालय और मानसेवा सदन जैसी स्वयं सेवी संस्थाओं के सहयोग से अभी तक २२ शिविरों का आयोजन किया है। इन शिविरों में राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, प्रभृति प्रांतों के लगभग १५०० लोगों का उपचार किया गया तथा हजारों लोगों का नाम नशा निवारण उपचार के लिए पंजीकृत किया गया है।

सीमित साधनों की वजह से प्रत्येक शिविर में ३०० अफीमचियों को भर्ती किया जाता है। परन्तु आवश्यकता एवं सुविधाओं की उपलब्धियों के अनुसार कई शिविरों में ५० से १०० रोगी व्यक्ति भी शामिल किये जाते हैं। शिविर में अफीमचियों के खाने, आवास और उपचार का सारा खर्च अखिल भारतीय अफीम नशा निवारण केन्द्र वहन करता है। शिविर में भर्ती के बाद दो-तीन दिन तक अफीम न मिलने के कारण रोगी को दस्त, कब्जियत, उल्टी मूर्च्छा, पेट दर्द बदन दर्द मुंह नाक और आंख से पानी गिरने की शिकायत होने लगती है। उनके शारीरिक तनाव पर काबू पाने के लिए १५-२० लोग विशेष रूप से लगाये जाते हैं ताकि अफीमची सहशिविरार्थियों से मारपीट न करें अथवा स्वयं को शारीरिक हानि न पहुंचायें। प्रारम्भिक पांच दिनों तक उन्माद के शमन की दवा करके उन्हें मानसिक शक्ति उपलब्ध कराते हैं। परन्तु नशा निवारण अंग्रेजी दवाइयों का कतई प्रयोग नहीं किया जाता। पांचवें दिन के बाद रोगियों में आत्म शक्ति का संचार होने लगता है तथा बाद में आजीवन अफीम का सेवन न करने की शपथ लेकर वे एक विकट अभिशाप से मुक्त होकर सहर्ष अपने-अपने घरों को लौट जाते हैं।

(क्रमश)

(पृष्ठ ४ का शेष)

चलते-चलते उसका बटुवा, जिसमें दो हजार रुपये थे वहीं गिर गये। ऊपर पेड़ पर बैठे बन्दर की दृष्टि उस पर पड़ी, नीचे आकर उसने पर्स को सम्भाल लिया। कुछ समय पश्चात् वही यात्री बटुवे की तलाश में उसी वृक्ष के समीप आया। इतने में बन्दर ने उसे पहचान लिया। उसने पर्स उस यात्री को दे दिया। बन्दर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने आदि की भेंट करता हुआ यात्री अपने मार्ग पर चल दिया। ये साधारण घटनायें कोई चाहे तो भूमिका विशेष बनाते हैं तथा साधारण वर्ग में असाधारण व्यवहार हमें भगवान् की लीला के उपासक बनाते हैं।

हैदराबाद के आर्यसमाज आंदोलन में भाग लेने वाले महानुभावों को आवश्यक सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने प्रेस विज्ञापन द्वारा हैदराबाद के आर्यसमाज के आंदोलन में भाग लेने वालों से गृह-मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित आवेदन-पत्र भरकर मंगवाये हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में गृह-मन्त्रालय से उक्त आवेदन-पत्र आगये हैं। अतः इच्छुक महानुभाव रोहतक कार्यालय पधारकर, आवेदन-पत्र लेकर उन्हें भरने का कष्ट करें। इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से भी सम्पर्क किया जा रहा है। आवेदन-पत्र भरवाने के कार्य में यथा-सम्भव सभा की ओर से सहयोग किया जायेगा। —प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

डीग जि० कुरुक्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना

१६ से १८ मई तक ग्राम डीग जि० कुरुक्षेत्र में स्वामी रुद्रवेद जी के भजन तथा स्वामी कर्मपाल जी, प्रो० भागसिंह आर्य एवं श्री बिशनसिंह एडवोकेट के समाज सुधार, शराब एवं दहेज आदि विषयों पर व्याख्यान हुए। आर्यसमाज के प्रचार से प्रभावित होकर आर्यसमाज की स्थापना हो गई और अनेक युवकों ने बुराइयां छोड़ने का व्रत लेकर यज्ञोपवीत धारण किये। स्वामी रुद्रवेश जी की देख-रेख में आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—स० निशानसिंह नैन, उपप्रधान—श्री जयकुमार पहलवान, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—श्री जोगेन्द्रसिंह, प्रचारमन्त्री—श्री रामनिवास आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री भागमल नैन।

डीघल जि० रोहतक में वैदिकधर्म प्रचार

पहलवान चन्द्रदेव जी तथा श्री महेन्द्रसिंह जी के प्रयत्नों से ग्राम डीघल जि० रोहतक में २०-२१ मई को वैदिकधर्म प्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा की ओर से पं० मुरारीलाल जी बेचैन की भजन मण्डली ने मनोहर तथा प्रभावशाली भजन हुए और सभा को १०२) वेदप्रचारार्थ प्रदान किये गये।

गुरुकुल सिंहपुरा-सुन्दरपुर का चुनाव

आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा-सुन्दरपुर की कार्यकारिणी का चुनाव ३० मार्च को सर्वसम्मति से निम्न प्रकार से हुआ—

स्वामी इन्द्रवेश—संरक्षक
प्रधान—रणवीरसिंह सिंहपुरा कलां
उपप्रधान—पं० चन्द्रस्वरूप टिटोली, चौ० दरयावसिंह सिंहपुरा कलां
मन्त्री—मास्टर महासिंह टिटोली
उपमन्त्री—मास्टर बलदेवसिंह चमारिया
कोषाध्यक्ष—बलवन्तसिंह सुन्दरपुर
पुस्तकाध्यक्ष—रामकिशन सुन्दरपुर
प्रबन्धक—रामेहर एडवोकेट सोनीपत रोड, रोहतक

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होने वाला है। अतः आर्यसमाजें अपना वार्षिक चुनाव करके प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का शुल्क शीघ्र भेज देवें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

स्वामी दयानन्द जी की महिमा

दयानन्द आये यहा धन्य उनका यहा आना।
याद करेगी दुनिया उनके वेदो का तराना ॥ टेक ॥

हमारी जिन्दगी सवारी, कुमार्ग से हटाके,
दिखा दिया सुमार्ग हमे ज्ञान दीप दिखाके।
ऋषि तूने वेदो को प्रभु की वाणी माना ॥१

उनका धर्म ही यही था अन्धकार को मिटाना,
मूर्ति-पूजा, सती-प्रथा सभी को हटाना।
धर्म वैदिक हमारा मत इसको भूल जाना ॥२

चार वेद छ शास्त्रो का ज्ञान फिर फैलाया,
जीवन श्रेष्ठ बनाने हेतु सत्यार्थप्रकाश बनाया।
सिखाया देश धर्म पर प्याला विष का पी जाना ॥३

आर्य बनो तुम क्यो इधर-उधर ने डोलो,
कहे रामस्वरूप ओ३म् के झण्डे के नीचे होलो।
योग से टोहलो प्रभु को 'बलवन्त' का ये गाना ॥४

बलवान्सिह आर्य ठसका जि० अम्बाला

कविता कुंज

दहेज-प्रथा

चल रहा सघर्ष वर्षो से,
दहेज-प्रथा को मिटाना।
पर मिट न सके,
कुछ कर ना सके।

खुद लेते दहेज,
देते उपदेश।
सारे देश मे सभी जातियो में,
लाखो को मरते देखा है।
इस दहेज को पूरा कर न सके,
बेच दिया घरबार।

करते है युवक युवती कोर्ट मैरिज,
पर समाज उनकी निन्दा।
करता है बार-बार॥
इस दहेज के बन्धन मे,
आत्म-हत्या होती हैं अनेक।

पर इसका प्रभाव नही पडता,
कहते हैं जनसख्या ही कम होती है।
बच्चो को तालीम दे न सके।
भूखो को रोटी खिला न सके॥

तन पर कपडा नही।
पेट मे टुकडा नही॥
कैसे देवें हम मोटर कार।
मागा है तुमने दहेज अपार॥

कुछ सोचो कुछ समझो,
कैसे होगा सबका उद्धार।
छूटेगा कैसे यह कलक,
होगा कैसे इसका सहार॥

डा० अनिलकुमार पवार
ग्राम अकौढा कला, पोस्ट खेडी कला-२४७६६३,
जि० सहारनपुर (उ०प्र०)

तुमको अशेष प्रणाम

वेद के पावन पथिक ! तुमको अशेष प्रणाम।
तुम धरा के अमर सुत ! तुम भूमि के अभिमान,
होगया पाकर तुम्हे दृढ धरणि का पवमान,
वेद का डका बजा तुम बन गये महान्,
कर गये निज कम से, वसुधा ललित ललाम।
वेद की पावन ऋचाओ, से हुए हम रम्य,
धार बरसाई सुधा की हुई मही सुरम्य,
मुक्ति है उनको मिली जो थे अतीव अक्षम्य,
था यही सदेश सारे कम हो निष्काम।
जारहा था तिमिरमय पथ पर बढा ससार,
मिट गया था मनुजता का, सत्य का सब सार,
तम जमाए था प्रभा पर, हो अभय अधिकार,
मार्ग दिखलाया समुज्ज्वल, स्वणसा अभिराम।
नारिया थी देश मे असहाय हो, अति दीन,
करुण थी उनकी कहानी, सौम्य सुखविहीन,
वर्ण-आश्रम की व्यवस्था होगई थी हीन,
दे नया सगीत तुमने, था गुजाया साम।
बन गया था श्राप, इस भू का सतत वरदान,
धूल मे मिलते, गए सब पुण्य से अरमान,
ज्ञान का यह पुञ्ज भारत, था बना नादान,
फिर मनुष्यो को बताया ओ३म् का शुचि नाम।
'ऋषि दयानन्द' का धरा पर अमर होगा काम॥
वेद के पावन पथिक ! तुमको अशेष प्रणाम॥

—राधेश्याम आर्य मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

पं० उदयवीर जी शास्त्री को वेद-वेदांग पुरस्कार

आयसमाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा निर्धारित वेद-वेदाग पुरस्कार समिति ने वष १९८९ के लिए आर्यजगत् के प्रख्यात विद्वान् श्री प० उदयवीर जी शास्त्री का चयन किया है। ९२ वर्षीय पूज्य पण्डित जी ने अपना सम्पूण जीवन वैदिक वाङ्मय के प्रचार-प्रसार में समर्पित किया है। आर्यसमाज के इतिहास में किसी वेद के विद्वान् को पुरस्कृत करने का यह प्रथम समारोह है।

आदरणीय पण्डित जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, उपदेशक विद्यालय लाहौर, नेशनल कालेज लाहौर, ओरियण्टल कालेज जालन्धर मे प्राचार्य के पदो पर सुशोभित रहे।

आपने शास्त्री, वेदाचार्य, न्याय, साम्य, वैशेषिक, योगतीर्थ, विद्या-भास्कर आदि अनेक उपाधिया प्राप्त की तथा वैदिक वाग्मय के निम्न ग्रथो की रचना भी की—

१ साख्य दर्शन का इतिहास, २ वेदात दर्शन का इतिहास, ३ साख्य सिद्धात का इतिहास, ४ वेदात दर्शन भाष्य, ५ साख्य दर्शन भाष्य, ६ वैशेषिक दशन भाष्य, ७ न्याय दशन भाष्य, ८ योग दर्शन भाष्य, ९ मीमासा दशन भाष्य, १० प्राचीन साख्य दर्शन भाष्य।

ऐसे सम्माननीय विद्वान् के अभिनन्दन मे यह प्रथम समारोह १५ जून के आस-पास आयोजित किया जायेगा। पूज्य पण्डित जी के जीवन सम्बन्धी सस्मरण जो सज्जन भेजना चाहें, वह सीधे "आर्यजगत् साप्ताहिक" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली को भेज सकते हैं। उसकी प्रतिलिपि आर्यसमाज साताक्रुज को अवश्य भेज देवें।

आर्यसमाज साताक्रुज द्वारा आयोजित इस प्रथम अभिनन्दन समारोह मे पूज्य प० उदयवीर जी शास्त्री को २१००० रुपये की थैली, अभिनन्दन-पत्र, रजत ट्राफी तथा शाल भेट कर सम्मानित किया जायेगा।

समारोह मे जो सज्जन पधारना चाहें, निजी व्यय पर अवश्य पधारें।

—कैप्टन देवरत्न आर्य महामन्त्री

माकड़ौला जि० गुड़गांव में ८ जून से १५ जून तक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण योग शिविर का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में गाव माकडौला (गुडगाव) के हाई स्कूल मे एक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण योग शिविर का आयोजन किया जारहा है। आज देश का युवक कर्त्तव्यपरायणता, आचार सहिता, त्याग बलिदान, न्याय, सघर्ष अर्थात् भारतीय सस्कृति के रास्ते को तिलाजलि देकर पाश्चात्यो की गली-सडी षड्यन्त्रकारी सस्कृति का शिकार बन पथ-भ्रष्ट होता जारहा है। आज नवयुवक जानवर की तरह स्वार्थ-पूर्ण आत्म-केन्द्रित और आदर्शहीन जिन्दगी ने के लिए मजबूर कर दिया गया है। आज युवको के सामने जिन्हें आदर्श के नमूने के रूप में पेश किया जाता है, वे हैं सारी दुनिया के छटे हुए दगाबाज दलाल व ऐसे भाडे के खूनियो के नमूने जिनके काले कारनामे लेखनी लिख नही सकती। तो फिर युवको मे व्यक्ति केन्द्री मानसिकता, उद्दण्डता और खुदगर्जी की मनोभावना क्यो नही बढ़ेगी। आज हम एक सक्रमण काल से गुजर रहे हैं। पुराना आदर्श सड चुका है, किन्तु नया क्रान्तिकारी वैदिक आदश अभी जनता तक पहुच नही पाया है। परिणामस्वरूप निराशा छाई हुई है, उदासीनता पनप रही है। लेकिन फिर भी भारत का वतमान समाज नवीन विचारधारा को जन्म देने के लिए आज प्रसववेदना से व्याकुल है। तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि "ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना"। यानी सामाजिक समस्याये जिनके दिल में दर्द पैदा नही करती और समाज प्रगति की भावना से जिनकी आखो से नीद गायब नही हो जाती, ऐसे आदर्शवादी सुसस्कृत लोगो से दूर रहे।

नवयुवको! इसलिए इस महान् ऐतिहासिक जिम्मेदारी को समझो, इसके लिए आपका योग शिविर मे भाग लेना अत्यन्तावश्यक है।

इस आयोजन में कर्मयोगी श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज आचार्य गुरुकुल झज्जर, स्वामी सुधानन्द जी कासन, प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य सत्यप्रिय जी मुनि तिजारा, स्वामी प्रेमानन्द जी कन्हई, आचार्य ब्र० विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर, प० ईश्वरचन्द्र जी शास्त्री गुडगाव, प० रणवीर जी शास्त्री समालखा, श्री सुरेशकुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, डा० वीरेन्द्रसिंह दहिया सोनीपत, श्री बलवानसिंह योगाचार्य साघी तथा अन्य अनेक सन्यासी, विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे है।

योग शिविर मे भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थी ८ जून साय को हाई स्कूल माकडौला मे पहुच जावे। प्रवेशार्थी की आयु १४ से २५ वर्ष तक हो। सभी युवक अपने साथ ऋतु अनुकूल बिस्तर, प्लेट, कटोरी, गिलास, चम्मच, लोटा, सफेद या खाकी निकर अथवा सफेद या लाल कच्छा, लगोट, सैडो बनियान, लाठी (कान तक की), सफेद, खाकी व नीला जूता, सफेद जुराब अवश्य लावे।

प्रवेश शुल्क केवल मात्र १५) प्रति प्रवेशार्थी तथा भोजनादि का प्रबन्ध नि शुल्क होगा।

विशेष —१५ जून को प्रात ८ बजे से ११ बजे तक विद्वानो के भाषण, व्यायाम प्रदर्शन, ब्र० विजयपाल जी द्वारा कार रोकना, लोहे की बेल तोडना, गले के नाजुक स्थान से सरिये मोडना, हाथो से काच पीसना आदि प्रदर्शन किये जायेगे।

शिविर सचालक	सयोजक
ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री	खजानसिंह
महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	(अध्यापक)

सर्वश्री चतुर्भुज सरपच माकडौला, चौ० दलीपसिंह सुखराली वाले, धर्मवीरसिंह, महावीरसिंह प्रधान व मन्त्री ग्रामीण युवा सुधार समिति, रामरख जी, ओम जी, नवयुवक साथी ज्ञानसिंह एव समस्त ग्रामीणवासी।

गृह मामलो सम्बन्धी मन्त्रालय

स्वतन्त्रता सेनानियों के ध्यानार्थ

प्रेस विज्ञापन (१/८६) भारत सरकार ने १-८-१९८० से प्रभावी स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन स्कीम के अधीन सम्मान-पेंशन देने के उद्देश्य के लिए आर्यसमाज आदोलन १९३८-३९ को मान्यता देने का निर्णय किया है, जो स्वतन्त्रता-सघर्ष के एक भाग के रूप मे, भूतपूर्व हैदराबाद राज्य में चला था। अत सरकार ने यह फैसला किया है कि इस आदोलन मे भाग लेने वाले और भाग लेनेवाले स्वर्गीयो के योग्य आश्रित, निर्धारित प्रपत्र पर अपने आवेदनपत्र, अपेक्षित दस्तावेजो के साथ, सभी तरह से परिपूर्ण, ३० जून, १९८६ को या पहले भेज दे।

आवेदनपत्र की एक प्रति सम्बद्ध राज्य सरकार/यू०टी० प्रशासन को भेजी जाए और दूसरी उप सचिव, गृह मन्त्रालय, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-११०००३ को रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दे।

आवेदनपत्र उपसचिव, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, गृहमन्त्रालय, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली से नि शुल्क व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा प्राप्त किये जा सकते है। ये प्रपत्र सम्बद्ध राज्य/सघ-शासित क्षेत्रो के प्रशासन के मुख्य सचिव से भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

३० जून, १९८६ के बाद प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार्य न होगे।

केवल ऐसे स्वतन्त्रता सैनिको को ही आवेदन करना चाहिए, जिन्होने आर्यसमाज आदोलन मे भाग लिया और जो स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान-पेंशन स्कीम १९८० के अधीन पेंशन दिये जाने के योग्य हैं।

सा/डीएवीपी ५६१ (८६)/८६

करणीय

१ ओ३म् परमात्मा का सर्वमान्य नाम एव प्रतीक है। अत सभी आर्य ओ३म् का चिह्न (ॐ) अपने घर मे प्रमुख स्थान पर रखे।

२ हम हिन्दू सूर्य को प्रकाश का देवता मानते हैं।

३ हम हिन्दुओ ने तुलसी को वनस्पति जगत् मे सर्वाधिक पवित्र माना है। इसलिए हमारे घरो मे तुलसी का पौधा अपेक्षित है।

४ नारी का मातृवत् सम्मान करना चाहिए।

५ गौ, गगा और गायत्री के माहात्म्य को हमने युगो युगो से स्वीकारा है। इसे बनाये रखना हमारा कर्त्तव्य बनता है।

६ बिना श्रम के दूसरो का खानेवाला चोर। जिसका है उसको दिये बिना खाये वह चोर। शक्ति होते हुए भी अतिथि सत्कार न करे वह चोर। स्वय के लिए बनाकर खाये वह चोर। अग्नि मे आहुति दिये बिना खाये वह चोर।

—अशोककुमार गर्ग मकान न० १५० आठ मरला, पानीपत

विशाल शुद्धि समारोह और आपका कर्त्तव्य

भारत सरकार की धर्म-निरपेक्षता तथा तुष्टीकरणपरक नीति का लाभ उठाकर हमारे देश मे धर्म के नाम पर विदेशी शक्तिया बहुत पहले से ही षडयन्त्र करती आरही है। इसी धर्म की आड मे इन शक्तियो ने १९४७ मे देश के टुकडे किये। आज भी जहा-जहा ईसाई मुसलमानो की अधिकता है, वहा विदेशी शक्तिया तोड फोड एव लडाई-झगडे कराती रहती हैं। इसका एक ही उपाय है कि इस देश के सभी निवासी वैदिक सस्कृति को अपनी सस्कृति तथा यहा के पूर्वजो को अपने पूर्वज मान।

इसी भावना को लेकर वैदिक यतिमण्डल एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षण मे यतिमण्डल के कर्मठ सदस्य गुरुकुल आमसेना (उडीसा) के आचार्य एव उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने जोरदार ढग से शुद्धि का कार्य शुरु कर रखा है। स्वामी जी ने गत फरवरी ८६ मे पोपपाल के भारत आगमन पर भी एक विशाल शुद्धि समारोह गुरुकुल आमसेना मे आयोजित किया था। अब पुन अगले महीने जून के प्रथम सप्ताह मे ५ हजार ईसाइयो को वैदिकधर्म मे दीक्षित करने का कार्यक्रम है। यह कार्य अति परिश्रम एव व्ययसाध्य है। सभी वैदिक सस्कृतिप्रेमी देशभक्त सज्जनो से अनुरोध है कि इस महान् कार्य मे अधिक से अधिक सहायता देकर पुण्य के भागी बनें और विदेशी शक्तियो के षड्यन्त्रो के चगुल से देश और अखडता की रक्षा करने मे योगदान कर, अपनी देशभक्ति का परिचय दे।

सहायता श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना, जि० कालाहाडो (उडीसा) ७६६१०४ के पते पर भेजें।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान परोपकारिणी सभा,
अजमेर।

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल दयानन्दमठ,
दीनानगर।

टिप्पणी—शुद्धि के कार्यक्रम में लगभग ८० कि०मी० दूर तक के शुद्ध होनेवाले व्यक्तियो को गुरुकुल आमसेना खरियार रोड लाना और फिर भेजना होता है। इस व्यय के अतिरिक्त परिवार मे से स्त्री और पुरुष को एक साडी और एक मर्दानी धोती देनी होती। बच्चो और स्त्री पुरुषो के भोजन की तीन समय तक की व्यवस्था अपेक्षित है। शुद्ध होने वाले तो तैयार हैं। अन्य व्यवस्था भारत भक्तो और अखण्डता प्रेमियो ने करनी है। सम्पर्क स्थापित कीजिए—वेदानन्द वेदवागीश प्रचारमन्त्री
वैदिक यतिमण्डल
दयानन्दवेद विद्यालय, ११९ गौतम नगर,
नई दिल्ली ४९, फोन ६५७२३४

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P RTK
[illegible]



ओ३म् विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक —प्रो० [illegible] शास्त्री सभा मन्त्री   सम्पादक [illegible]   सह-सम्पादक [illegible]

वर्ष १२, अङ्क [illegible]   [illegible] १९८५   वार्षिक शुल्क [illegible]   [illegible] एक प्रति [illegible] पैसे

श्री भजनलाल के स्थान पर, श्री बन्सीलाल हरयाणा के मुख्यमन्त्री बने
प्रदेश के हितों की रक्षा के लिए गतिविधियां तेज हो गईं
सभी राजनैतिक दल हलचल में। हरयाणा की प्रतिष्ठा दांव पर

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

भारत सरकार ने वेंकट रमैया आयोग का गठन करके चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को पंजाब के क्षेत्र से हिन्दी भाषी क्षेत्र छांटने का कार्य भार सौंपा गया, परन्तु उसके अधिकार से अबोहर फाजिल्का को बाहर रखा। भारत सरकार के इस निर्णय से हरयाणा की जनता में निराशा फैल गई। मैथ्यू आयोग ने अबोहर फाजिल्का तथा उसके ग्रामों को हिन्दी भाषी माना, परन्तु कन्दूखेड़ा एक छोटा-सा पंजाबी भाषी ग्राम उनके मार्ग में अड़चन बन जाने से, ये हिन्दी-भाषी क्षेत्र हरयाणा को नहीं मिल सके। इसी प्रकार नये आयोग वेंकट रमैया के भी अबोहर फाजिल्का के सम्बन्ध में हाथ बांध दिये गये। गत मास ११ मई को रोहतक में हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी, उसमें सर्वसम्मति से प्रस्ताव किया गया था कि वेंकट रमैया आयोग के सामने पेश न होकर इसका बहिष्कार किया जाये। क्योंकि ये हरयाणा को अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र दे ही नहीं सकेगा। प्रस्ताव में हरयाणा सरकार से भी अनुरोध किया गया कि वेंकट रमैया आयोग के स्थान पर तीसरे बनने वाले सीमा आयोग के समक्ष अपना केस प्रस्तुत करे परन्तु हरयाणा सरकार ने इस आयोग के समक्ष पंजाब के हिन्दी-भाषी ४८३ ग्रामों को हरयाणा को देने की मांग की। इसके समर्थन में अपने तर्क भी दिये और चौ० भजनलाल ने भारत सरकार से भी अपील करते हुए कहा कि पंजाब को चण्डीगढ़ देने से पूर्व हिन्दी-भाषी क्षेत्र तथा हरयाणा के हिस्से का पूरा पानी एवं सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई का कार्य केन्द्र अपने हाथ में लेकर कार्य शीघ्र करवाये ताकि नहर में पानी चालू हो सके। उधर भारत सरकार ने २१ जून चण्डीगढ़ पंजाब में हस्तान्तरण करने की घोषणा करदी और वेंकट रमैया आयोग की अवधि १० जून तक बढ़ा दी ताकि क्षेत्रीय विवाद पर हरयाणा तथा पंजाब में कोई समझौता हो सके।

पंजाब के पूर्व राजपाल तथा वर्तमान कांग्रेस (आई) के उपप्रधान श्री अर्जुनसिंह ने जिन्होंने राजीव लोंगोवाल समझौता करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, भी श्री भजनलाल पर दबाव डालना आरम्भ कर दिया कि पंजाब समझौते के अनुसार चण्डीगढ़ पंजाब को सौंपने के कार्य में सहयोग देवें और अबोहर फाजिल्का तथा अन्य हिन्दी-भाषी ग्रामों की मांग पर जोर न देवें।

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने इस सम्बन्ध में हरयाणा को न्याय दिलाने के सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी, केन्द्रीय मन्त्री मण्डल के वरिष्ठ सदस्यों, श्री अर्जुनसिंह तथा विरोधीदलों के प्रमुख नेताओं से सम्पर्क किया और उनसे अनुरोध किया कि चण्डीगढ़ पंजाब को देने से पूर्व सुनिश्चित किया जाये कि हरयाणा को पंजाब के हिन्दी-भाषी क्षेत्र तथा हरयाणा के हिस्से का पूरा पानी दिया जाये और नहर की खुदाई का कार्य केन्द्र अपने हाथ में लेकर उसका कार्य चालू किया जाये। आपने हरयाणा के सांसदों तथा विधायकों पर जोर दिया कि अपने प्रदेश के हितों की रक्षा के लिए अपनी आवाज केन्द्र तक पहुंचावें अन्यथा हानि होने पर हरयाणा की जनता माफ नहीं करेगी। उधर हरयाणा संघर्ष समिति, हरयाणा जनता पार्टी ने भी हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए आंदोलन तेज कर दिया। परिणामस्वरूप श्री भजनलाल ने हरयाणा की मांगे न माने जाने की सम्भावना के डर से मुख्यमन्त्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। उनके स्थान पर श्री बन्सीलाल ने मुख्यमन्त्री का पद ५ जून को सम्भाल लिया है। प्रो० शेरसिंह ने श्री बन्सीलाल को बधाई देते हुए आशा की है कि वे हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए प्रभावशाली पग उठावेंगे।

सत्यार्थप्रकाश गुण वर्णन

ले० – मा० रामचन्द्र आर्य, आर्य निवास, बड़बा (भिवानी)

चौपाई सत्यार्थप्रकाश पढे जो कोई, आत्म-ज्ञान प्राप्त होई।
करें चिन्तन सो होई विवेका, मिटे अन्धविश्वास अनेका।
सब ग्रंथन का सार बताया, पढ इसको ज्ञान पाया।
सत्यसार निष्पक्ष विचारी, पढ ले पक्का मनधारी॥

दोहा—अमूल्य ज्ञान का कोष यह पढ सत्यार्थप्रकाश।
बुद्धि शुद्ध हो गई दूर हटे अन्धविश्वास॥

चौपाई—पाखण्डवाद मिटे अन्धियारा, पढे इसको बारम्बार।
वैदिक संस्कृति का रक्षक, पाखण्ड का दम भक्षक।
बार-बार पढे जो कोई, मलिन आत्मा अति शुद्ध होई।
रामचन्द्र अति सुख पाये, पढ इसको आर्य कहलाये॥

दोहा—ज्ञान बढे अन्धकार मिटे करता जो स्वाध्याय।
मनमें धारण कर सदा पाखण्ड दूर हटाये॥

आवश्यकता है

वैदिक उपदेशक विद्यालय में अनुभवी अवकाश प्राप्त शिक्षक की। ग्राम नलवा, जि० हिसार, हरयाणा में पत्र-व्यवहार मेरे ही से करें।

पुष्करलाल आर्य
१२१ कोटन स्ट्रीट कलकत्ता-७

आर्यजगत् की समस्या एवं समाधान

ले॰—स्वामी जीवनानन्द सरस्वती, रोहतक

चिरकाल से यह अनुभव कर रहा था कि आर्यसमाज एवं वैदिकधर्म के प्रचारक विशेषतया सन्यासी, वानप्रस्थी तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी शारीरिक शक्ति के साथ प्रचार करते हुए यथासमय भोजन आछादान प्राप्त करके जीवनयापन करते रहते है। किन्तु जब शारीरिक शक्ति क्षीण होने पर चलने फिरने मे असमर्थ हो जाने मे उनकी प्रचार यात्रा मन्द अथवा समाप्तप्राय हो जाती है तो आर्यजन उनकी सुध नही लेते हैं। अपितु रोगग्रस्त हो जाने पर तो उनसे दूर ही भाग जाते हैं। परिणामत वही सन्यासी विवश होकर अपने त्यक्त परिवार का आश्रय लेते हैं। समाज के ध्यान न देने के कारण उन्ही के पारिवारिकजन उन्हे अपने घर ले जाकर उनकी चिकित्सा तथा अन्य सुख सुविधा की व्यवस्था करते है। क्या यह आर्यसमाज के लिए कलक नही है।

मै कई आश्रमो के स्वामियो (सस्थाओ) तथा प्रबन्धको से पत्रव्यवहार एव मौखिक वार्तालाप करके इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि ऐसी व्यवस्था न तो कही है और न ही होने की सम्भावना है।

लगता है आज तक किसी प्रातीय अथवा शिरोमणि (सार्वदेशिक) आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस विषय पर विचार नही किया है। अस्तु

इस विचार से बहुत से आर्यजन सहमत तो हैं, किन्तु क्रियात्मक रूप देने मे हिचकिचाते हैं। इसीलिये मैं आर्यजगत् का ध्यान आकृष्ट करने के लिए घोषणा कर रहा हूँ कि—

वैदिकधर्म का प्रचार करने वाले समर्थ तथा असमर्थ (प्रचार कार्य से थके हुए वृद्ध अथवा रोगी) सन्यासी, वानप्रस्थी तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी 'वैदिक यति आश्रम' (केन्द्र) मे इतस्तत प्रचार यात्रा से निवृत्त होकर आवास, भोजन तथा चिकित्सा की निशुल्क सेवा प्राप्त कर सकेंगे।

ऊपरलिखित लक्षणयुक्त वैदिक यतिगण पत्र व्यवहार अथवा साक्षात्कार से सम्पर्क स्थापित करके अपनी समस्या का समाधान लेने का प्रयास करें।

पता—वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर, रोहतक

आर्यवीरों को आह्वान

जागो वीरो भारत मा के, जननी ने आह्वान किया।
उसके प्रति निभा फर्ज, जिसने जीवन दान दिया॥

ना कर किसी की चाहे कितनी बाधा आये।
कठिन परिश्रम और विद्या मे भारत खुशहाल बनाये।
इसी माग पर चलकर वीरो ने देश का ऊचा मान किया॥१

बढा आगे है जब कोई विपदा ने जाल बिछाये।
समाज देश के लिए कितनो ने कष्ट उठाये।
हटे नही बढे आगे हरदम काटो से प्यार किया॥२

दयानन्द के बन अनुयायी सोया देश जगाना है।
अज्ञानता मे फसे भाइयो को धम याद दिलाना है।
प्रेरणा ले उसकी बढो जिसने विष का पान किया है॥३

साम्प्रदायिकता की दीवार तोड वेदधर्म अपनाना है।
मिल करके दोबारा आर्य सस्कृति को लाना है।
घर-घर मे वेद का जला देना तुम दिया॥४

वैरभाव त्याग आपस के वेदो को पढो पढाओ।
विद्या के प्रकाश से धरा पर आर्यराज लाओ।
'रामचन्द्र' आह्वान करो यदि तुमने वेदामृत पिया॥५

रामचन्द्र आर्य 'नलवा' आर्य निवास, बडवा (भिवानी)

आकाशवाणी कार्यक्रम

दिनाक २३ ६-१९८६ को प्रात ७ ३० बजे डा॰ सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की 'महाभारत कालीन सामाजिक स्थिति' विषयक वार्ता प्रसारित होगी। पाठक सुनकर लाभ उठावें।

—सत्यवीर शास्त्री

आर्य वीरदल रोहतक का वार्षिकोत्सव

आर्य वीरदल आर्यकुमार सभा रोहतक नगर का ३३वा वार्षिकोत्सव दिनाक १८-५-८६ से २५ ५-८६ तक बडे समारोह के साथ किला रोड पर मनाया गया, जिसमे महात्मा प्रेमभिक्षु, प्रो उत्तमचन्द शरर, प विश्वामित्र, चौ॰ रामेहर एडवोकेट, स्वामी कर्मपाल के सुन्दर उपदेश हुए तथा प॰ जयदेव जतोई वाले, प॰ लछमनसिंह बेमोल (सहारनपुर) की भजन मण्डली ने अपने मनोहर भजन व गीत सुनाये।

दिनाक १८-५-८६ मध्याह्नोत्तर भाषण प्रतियोगिता मे विद्यालय स्तर के १५ तथा महाविद्यालय स्तर के २ प्रतियोगियो ने भाग लिया। १९-५ ८६ से २२ ५-८६ तक वेदकथा हुई। इसके बाद उत्सव में आर्यवीर सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आध्यात्मिक सम्मेलन तथा समाज-सुधार सम्मेलनो का आयोजन किया गया। २५-५-८६ को प्रात काल के सत्सग के बाद ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया। वार्षिक उत्सव का समापन २५-५-८६ को साय ७ बजे पारितोषिक वितरण तथा व्यायाम और शक्ति-प्रदर्शन के साथ सम्पन्न हुआ।

—मुल्कराज आर्य

ग्राम सातरोडकलां मे वेदकथा सम्पन्न

दिनाक २० मई से २६ मई तक ग्राम सातरोडकला जि॰ हिसार में वेदकथा का आयोजन विधिवत् सम्पन्न हुआ। वेदकथा मे स्वामी चन्द्रदेव जी ने लोगो को बडे सरल ढग से यज्ञ पर वेदमन्त्रो की व्याख्या द्वारा समझाया। मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है, देश मे कसा राजा होना चाहिये, सुखी गृहस्थ का जीवन जीने की कला पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसके अलावा स्वामी सर्वदानन्द जी ने भी तीन सूत्रीय कार्यक्रम ईश्वर, जीव प्रकृति पर प्रकाश डाला। श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी ने भी शराबबन्दी बारे एव देश की बिगडती हुई स्थिति पर विचार रखे तथा सारे कार्यक्रम का विधिवत् सयोजन किया। प॰ भरतलाल शास्त्री एव चौ॰ प्रतापसिंह आर्य ने भी अपने विचार रखे।

इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक प॰ चिरजीलाल जी एव स्वामी जगतमुनि तथा महाशय झाबेराम जी ने भजनो के माध्यम से प्राचीन क्रातिकारियो का इतिहास एव शिक्षाप्रद समाज-सुधार पर भजन रखे। लोगो पर इस वेदकथा के माध्यम से प्रचार का अच्छा असर रहा। लोगो ने विद्वानो की भूरि-भूरि प्रशसा की। इस कार्यक्रम में महिलाओ ने बढ-चढकर भाग लिया। यह सारा आयोजन करुणा शास्त्री की लग्न एव प्रयत्न से सफल हुआ। सभा को ४०० रु॰ दान दिया।

—मन्त्री आर्यसमाज सातरोड कलां

व्यायाम प्रशिक्षण शिविर हिसार

२२ जून से २९ जून, ८६ नवयुवको को आर्यसमाज मे दीक्षित कर राष्ट्र रक्षार्थ प्रेरणा देने हेतु स्थान-स्थान पर सार्वदेशिक आर्य वीरदल के तत्वाधान मे नवयुवको को चरित्रवान् बनाने के लिए व्यायाम प्रशिक्षण शिविर लगा रहा है। दयानन्द कालेज हिसार के छात्रावास में भी डा॰ आचार्य देवव्रत जी के निर्देशन मे एक शिविर रखा गया है। ब्रह्मचारी कृष्णपाल जी एव श्री सत्यकाम आर्य युवको को शारीरिक प्रशिक्षण देंगे। जिससे युवको का पूर्ण विकास हो सके। बौद्धिक प्रशिक्षण आर्यजगत् के अनेक उच्चकोटि के विद्वानो द्वारा दिया जायेगा।

शिविर शुल्क मात्र १० रु॰ रखा गया है। भोजन, आवास एव प्रशिक्षण नि शुल्क होगा। सभी शिविरार्थी अपने साथ एक खाकी नीकर, दो सफेद सैडो बनियान, सफेद जुराब एव सफेद जूते लावे।

शिविर मे पहुँचने की सूचना १८-६-८६ तक निम्न पते पर भेजें—

शिविर सयोजक सीताराम आर्य
कार्यालय वेदप्रचार मण्डल, बालसमन्द रोड, हिसार (हर॰)

वारणावत में महात्मा के दर्शन

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

६ मार्च, १९८६ को कन्या गुरुकुल खानपुर कला जि० सोनीपत से एक गाडी मे सवार होकर हम गुरुकुलवासी कुछ देव देविया ब्र० कृष्णदत्त के वारणावत आश्रम मे दिन के एक बजे पहुंचे।

यह आश्रम बडौत से लगभग १५ मील दूर होगा। जब हम वहा पहुचे उस समय उस टीले से लाउडस्पीकर से प्रसारित महर्षि दयानन्द के गुणो मे ओतप्रोत एक गीत गाया जारहा था। उसको सुनकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। एक महान् पुरुष के पुरुषार्थ से आज उस ऊंचे टीले पर महान सुधारक महर्षि दयानन्द के गुणो के गान मे वहा का सारा वातावरण शात, गम्भीर, पवित्र तथा स्वर्गीय बना हुआ था। उस आश्रम को देखकर हमारे इतिहास मे वर्णित पुरातन आश्रमो की याद आती थी।

वह आश्रम एक ऊचे टीले पर, जो टीला एक पर्वत के आकार का है, उस पर स्थित है। ब्रह्मचारी जी के वहा पहुचने से पहले वह डाकुओं तथा लुटेरो का अड्डा बना हुआ था उस टीले पर स्थान-स्थान पर यवनो द्वारा कबर बनाई हुई थी। ब्रह्मचारी जी ने अपने जीवन की परवाह न करके उस स्थान को स्वर्गीय बनाने का निश्चय किया। अत सबसे प्रथम आपने अपने भक्तो समेत उस स्थान पर यज्ञ कराकर उस स्थान को पुनीत बनाया।

पाडवो के उस ऐतिहासिक स्थल को इतिहासिक बनाने का निश्चय करके वहा स्थान-स्थान पर अनधिकार से निर्मित कबरो को साफ कराया तथा वहा की उस भयङ्करता को दूर कर, स्वर्गीयता उत्पन्न की। ट्रैक्टरो बुलडोजरो की सहायता से उस ऐतिहासिक भूमि को बसने योग्य बनवाया।

उस आश्रम में जाकर उसके भवनो पर चढकर हमने वहा का दृश्य देखा, जो अतिरमणीय लगा। पूर्व दिशा की ओर हिंडन नदी तथा उससे पश्चिमी की ओर कृष्णा नदी उस आश्रम को मानो अपनी सुन्दर आकृति से, सुन्दर बनाने मे सहयोगिनी बनी हुई दिखाई दे रही थी।

वारणावत नगर उस आश्रम के उत्तर की ओर है। महात्मा कृष्ण-दत्त उस ऊचे आश्रम मे बैठकर मानो उस नगर की भी रक्षा करते से दिखाई देते हैं। वहा पर पाच यज्ञशालाये बनी हुई है। तीन यज्ञशालाओ में अथर्व, साम, यजुर्वेद के मन्त्रो से यज्ञ हो रहा था। दो यज्ञशालायें ऋग्वेद के मन्त्रो मे ध्वनित हो रही थी। नारायणमुनि जी ज्वालापुर वनस्थ विद्वान् हैं, उनकी देख रेख मे यज्ञ का काय चल रहा था। वेद के मन्त्रो की ध्वनि से वायुमण्डल ध्वनित हो रहा था। अनेक देविया उस यज्ञ मे श्रद्धा मे ओतप्रोत होकर सामग्री को आहुतिया डालकर अपने जीवन को पुनीत कर रही थी। उस ऊची भूमि पर स्थित आश्रम से मन्त्रो की ध्वनि कई-कई मील तक सुनाई देती थी। श्रद्धालुभक्त भी जो उस अमृतमयी ध्वनि को श्रवणकर अमरता के आनन्द को अनुभव कर रहे थे।

ब्रह्मचारी जी से मैंने प्रार्थना की कि आप हमको कोई ऐसा आदमी दो जो हमको यहा की पूर्णतया जानकारी देने में समर्थ हो। उन्होने उसी समय एक भारी शरीर वाले तथा वृद्ध शीतलदेव जी शास्त्री को जो उस आश्रम के कोषाध्यक्ष भी हैं, हमारे साथ कर दिया। उनका भारी शरीर तथा वृद्ध शरीर हमारे साथ चलने मे पूर्णतया समर्थ न था। अत एक अन्य सज्जन श्री भवरसिंह जी को हमने साथ लिया, जो दाहा गाव निवासी थे, उनके साथ हम उस स्थल को देखने चल पडे।

सबसे प्रथम वे हमको एक मन्दिर मे ले गये, जिसके अन्दर यवनो की तीन कबर बनी हुई थी। हमारे प्रश्न करने पर कि मन्दिर मे कबर क्यो बनी हैं। इसका उत्तर देते हुए भवरसिंह जी ने बतलाया कि इन तीन मुसलमानो ने २२ आर्य महिलाओ के साथ सर्पुद्दीन और उसके साथियो ने बलात्कार कर, उनको एक कुए में मारकर डाल दिया था, ये उनकी ही कबरें यवनों ने बनाई हैं। इस अत्याचार की घटना को सुनकर हमारे रोंगटे खडे हो गये।

भवरसिंह जी ने बतलाया कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने ही एक दिन प्रवचन मे कहा था कि इस टीले मे मन्दिर के पास मिट्टी मे दबा हुआ एक कुआ है। जिसमे यवनो ने २२ आर्य ललनाओ के साथ बलात्कार कर, फिर मारकर इस कुए मे डाल दिया था। इसे खुदवाओ। उनके कथनानुसार उस स्थान पर उस कुए को खोदा गया। खुदने पर वह कुआ मिला और उसको पूरी तरह साफ [illegible] लिया गया। आज उसी कुए से सारे आश्रम को पानी दिया जाता है। उस कुए का पानी सर्दी मे गर्म तथा गर्मी मे शीतल रहता है तथा पीने मे बड़ा स्वादु है।

अब उस कुए को ब्रह्मचारी जी ने सुरक्षित [illegible] [illegible]

उसके पश्चात् श्री भवरसिंह जी हमको पाडवो वाली सुरग के समीप ले गये जो कि दक्षिण की ओर पूर्वाभिमुख है। यह कितनी दूर तक खोदी गई है, इसको देखने के लिये मैंने अपने युवा प्रिय धर्मवीर जी प्राध्यापक टक्नीकल कालेज मे कहा। वे युवा उसमे घुसे, परन्तु कुछ दूर चलने पर देखा कि सुरग मार्ग अवरुद्ध किया हुआ है। अत उनको वापिस बुला लिया गया।

इतने काल तक यह सुरग कैसे रह गई, यह समझ मे तो नही आया, परन्तु सुरग अवश्य बनी हुई है। इसे चाहे और किसी ने बनवाया हो या वही प्राचीन सुरग हो। इस काम को तो अन्वेषणकर्त्ता ही जानने का प्रयत्न करेगे। उस सुरग को देखकर मेरे सामने महाभारत का काल सकल्पो मे आ खडा हुआ। ससार मे कितने आदमी आते हैं और चले जाते हैं, नाम उन्ही का रहता है, जो अपने पीछे कोई विशेष योग्यता या विचित्रता छोड जाते है। मुझे महाभारत ग्रथ से बहुत प्रेम है। मैने महाभारत ग्रथ बारह सौ पृष्ठ का हिन्दी मे लिखकर अपने पास रखा हुआ है, जो धनाभाव मे नही छप सका है। सम्भव है कोई भक्त या धनी इस काम को पूरा करे। यह सब भविष्य का विषय है।

मैने महाभारत मे पढा है कि लाक्षागृह मे रहते हुए पाडवो को सन्देह हो चला था कि इस महल मे हमको पुरोचन द्वारा दग्ध करके मारने के लिए लाया गया है। इसकी सूचना उनको विदुर जी से भी मिल गई थी। अत वे शिकार के व्याज से वहा के वनो मे दूर दूर तक घूमकर आया करते थे।

आज वहा न कोई वन है, न कोई राक्षस है। अब तो वहा पर गेहू की खेती ही दिखाई देती है। वन का तो वहा पर कोई नामोनिशान नही है। समय के साथ कभी वन की अधिकता तथा जन की अधिकता होती है। यह विधि विधान है।

वहा पर ब्रह्मचारी जी ने मुहानन्द सस्कृत महाविद्यालय नाम से एक विद्यालय भी चालू किया हुआ है, जिसमे बनारस सस्कृत महाविद्यालय की परीक्षाये दिलाई जाती हैं। अभी वहा पाच अध्यापक तथा एक सौ सत्तरह ब्रह्मचारी है, जो प्राचीन गुरुकुल पद्धति मे अध्ययन अध्यापन करते कराते हैं। ब्रह्मचारी जी स्वय एक हजार मन अन्न सग्रह गुरुकुल के लिए करते है। ब्रह्मचारी जी ने अपने पुरुषार्थ से डेढ सौ बीघा भूमि आश्रम की करली है, एक ट्रैक्टर भी है, गोशाला भी है, काम चलाऊ भवनो का भी निर्माण किया जा चुका है। छात्रो से मासिक केवल नाम मात्र तीस रुपये ही लेते हैं। इस महगाई के युग मे उनका इस प्रकार सस्था चलाना आश्चर्य का ही काम माना जावेगा।

ब्रह्मचारी जी के जीवन से आस-पास के देव-देविया तथा दूर-दूराज के व्यक्ति भी प्रभावित हैं, वे उनकी इस सेवा से, तप से अलौकिकता से प्रभावित होकर उनको सम्भालते रहते हैं। उस आश्रम को अपना आश्रम मानकर उसकी सहायता करते हैं। उनको रुपये अर्पण कर, अपने को धन्यवादी मानते हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ऐसी हो सर्वकल्याणी शिक्षा-नीति

शिक्षाशास्त्री महर्षिदयानन्द के अनुयायी—ब्र० आर्यनरेश
उद्गीथ भवन ६७/११ ए चण्डीगढ़

जिसमें—

१—पाखण्ड, झूठे चमत्कार एवं भाग्यवाद के स्थान पर "सत्यमेव जयते" उद्घोष से युक्त, सदा सत—कार्यों में सलग्न और आत्मनिर्भर बनाने हेतु सत्यज्ञान व विज्ञान की साधना हो।

२—आलस्य, अहङ्कार तथा स्वार्थ से उत्पन्न हुए राष्ट्रद्रोह के स्थान पर—परोपकार एवं पुरुषार्थपूर्वक भावना मे वैदिक ऋषियो व राष्ट्रीय शहीदो के ऋण को उतारने हेतु, भारत के सच्चे गौरवमय वेद-शास्त्र तथा इतिहास के अध्यापन सहित भारतीय भाषा, भूषा, भैषज (औषधि) एव भजन की भावना हो।

३—नास्तिकता उच्छृङ्खलता एव घमण्ड से उत्पन्न हुई आतक एव हिंसा आदि पाप वृद्धि के स्थान पर—सम्पूर्णशांति, सर्वमैत्री तथा सर्वकल्याण हेतु, सर्वव्यापक, सृष्टिरचयिता सर्वप्रिय, न्यायकारी परमपिता परमात्मा की आराधना हो।

४—स्वच्छन्दता, इन्द्रिय लोलुपता एव उन्मुक्त-कामुकता से उत्पन्न हुए यौन-अपराध दुराचार, व्यभिचार, भय एव अनेकों शारीरिक रोगो के स्थान पर—आत्मसयम अनुशासन, निर्भीक वातावरण व राष्ट्र के बलवर्धन हेतु ब्रह्मचर्य की उपासना हो।

५—देश के भावी-नागरिको विद्यार्थियो के सर्वांगीण-विकास के लिए शिक्षा का आदान-प्रदान प्राचीन भारतीय-वैदिक गुरुकुलीय-आश्रम-प्रणाली (बोर्डिंग सिस्टम) से होना चाहिए। इसी शिक्षाप्रणाली का अनुसरण करके 'भारत' आचार, अध्यात्म, बल एव विज्ञान मे उन्नति करके ससार पर शासन करता हुआ सोने की चिड़िया तथा विश्व का गुरु कहलाता था।

ऐसी शिक्षा-प्रणाली से विद्यार्थियो को चार लाभ होंगे—

१ विद्या को एकत्रित करेंगे तो कुछ और एकत्रित न करना होगा।

२ माता पिता गुरु एव देश के बलिदानियो के समक्ष झुकने वालो को किसी और के सामने झुकना न होगा।

३ यदि ईश्वर से भय करेगे तो किसी और से कभी भयभीत न होंगे।

४ अपने चरित्र को सुन्दर रखेंगे तो क्षणिक सुन्दरता के देने वाले रोग कारक शृगार का गुलाम न होना होगा।

गीत

ऐ मेरी जाने तमन्ना ऐ मेरे प्यारे वतन,
सोचता हूँ तेरे आंचल पे कोई गीत लिखू।

आज राम की मूरत है तेरी आंखो मे,
हमने सीता का सराफत है तेरी आंखो मे,
मीरा तुलसी की मोहब्बत है तेरी आंखो मे,
सोचता हू तेरे काजल पे कोई गीत लिखू।

तेरी पूजा है इबादत है हसीन ताजमहल,
तेरे किरदार की अज़मत है हसीन ताजमहल,
तेरी तस्वीर ऐ मोहब्बत है हसीन ताजमहल
सोचता हू तेरे छलबल पे कोई गीत लिखूं।

मौजे गगा मे झलकती है जवानी तेरी,
हुसने जमना मे टपकती है निशानी तेरी,
तेरे झरनो मे बरसती है रवानी तेरी,
सोचता हू तेरी हलचल पे कोई गीत लिखू।

अशोककुमार गर्ग

प्रतिभाशाली योग चैम्पियन : दीपचन्द

राजकीय बहुतकनीकी सस्थान झज्जर मे सिविल इन्जिनियरिंग द्वितीय वर्ष के छात्र दीपचन्द ने अपने छात्र जीवन मे ही अनेक प्रांतीय तथा राष्ट्रीय उपलब्धियां हासिल करके हरयाणा का नाम पूरे देश में किया है। हरयाणा के फरीदाबाद जिले के एक छोटे से गाव मादकौल के इस २० वर्षीय युवक को इसीलिये ८ से ६ नवम्बर तक दिल्ली मे होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता मे भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया है।

श्री दीपचन्द को योग की प्रेरणा अपने शिक्षक श्री प्रतापसिंह जी से मिली और उसके बाद इस युवा योगी ने अनेक योग प्रतियोगिताओ में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वे जालन्धर मे सम्पन्न अखिल भारतीय योगासन प्रतियोगिता के अपने वर्ग मे स्वर्णपदक, चण्डीगढ़ मे सम्पन्न उत्तरी भारत योगासन प्रतियोगिता में रजत पदक और अमरावती (महाराष्ट्र) मे आयोजित अखिल भारतीय योगासन प्रतियोगिता मे हरयाणा के लिए कास्यपदक जीत चुके है। श्री दीपचन्द पलवल मे आयोजित अखिल हरयाणा योगासन प्रतियोगिता मे अपने वर्ग मे प्रथम रह चुके हैं। इसी से प्रेरित होकर आकाशवाणी रोहतक से गत दिनो उनका साक्षात्कार 'योग के विकास' के बारे मे प्रसारित किया गया।

श्री दीपचन्द युवा योग सघ हरयाणा प्रात के सचालक तथा अन्त तकनीकी सस्थान आर्य छात्र मोर्चा के सयोजक भी हैं। एक प्रश्न के उत्तर मे श्री दीपचन्द जी ने बताया कि हमारी सरकार योग को उचित प्रोत्साहन नही दे रही है तथा विभिन्न प्रचार माध्यमो द्वारा भी योग की उपेक्षा बरती जाती है। सरकार से उनका कहना है कि सरकार अन्य खेलो की भांति योग को भी मान्यता दे तथा एक योग निदेशालय स्थापित किया जाये। श्री दीपचन्द जी का मत है कि एशियाई तथा ओलम्पिक खेलो मे जिम्नास्टिक की तरह योग को भी शामिल किया जाये। उनके अनुसार योग को शिक्षा प्रत्येक शिक्षण सस्था मे अनिवार्य घोषित की जाये।

श्री दीपचन्द जी का कहना है कि भटकी हुई युवा मानसिकता को योग के माध्यम से ही ठीक मार्ग पर लाया जा सकता है। क्योंकि योग मे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक बल बढ़ता है। उनका कहना है ऋषि-मुनियो की इस विरासत को हमे बनाये रखना होगा तथा आपसी मनभेद मिटाकर योग के विकास के लिये कार्य करना होगा।

—सजीव मगला, पलवल

आ गया प्रभात

स्वर्णिम रञ्जित उषा की निर्मल,
मृदु मुस्कान लिए आती।
तिमिराच्छादित वसुन्धरा पर-
नव आलोक प्रसून बिखराती।
ज्योतिर्मयी लहरियां करती-
भू का कण-कण आत्मसात्!
आ गया प्रभात॥

रवि किरणो ने किया पराजित,
जग का घना अन्धेरा।
तोड़ दिया है तिमिर सैन्यके-
सेनापति का घेरा।
पुलकित हुआ सहस धरती के-
प्राणिमात्र का गात-प्रगात।
आ गया प्रभात॥

कुल-कुल बोल रहा है खगदल,
स्वर-समस्वर हो उठी दिशायें।
चहक रहे है शिशु पक्षी के-
बहक रही जागरण कथायें।
उठो बिहसते बाल सूर्य सम-
बिगत हुई है रजनी-रात।
आ गया प्रभात॥

—राधेश्याम आर्य

गताक से आगे—

एक मरुद्यान यह भी

अमरनाथ राय, अखिल भारतीय अफीम नशा-निवारण केन्द्र

जिन्हें नई रोशनी मिली

उदाहरणस्वरूप हाजी खा को देखे। अफीम का आदि होने के पूर्व उसके पास १२०० बीघे की कृषि भूमि थी। परन्तु अफीम की बुरी लत ने उसे ११२० बीघे जमीन बेचने पर मजबूर कर दिया। शिविर में आने से पूर्व वह प्रतिदिन डेढ तोला अफीम लेता था। अब उसने पूरी तरह से अफीम खाना छोड दिया है तथा पोकरण जसलमेर मे नये उत्साह से अपना जीवन शुरू किया है। १८ वर्षीय शाहजहा अफीमची साथियो के ससर्ग मे पडकर रोज आधा तोला अफीम खाने लगा था। अब उसे अफीम के नाम से ही घृणा है। विकलाग फौजी तारसिह इन्दा प्रतिदिन एक तोला अफीम का सेवन करता था। भारत पाक युद्ध मे अपना हाथ गवाकर गाव लौटा था। गाव के वातावरण ने उसे अफीमची बना दिया, आज वह अफीम का दास नही है। बम्बई के एक कपडा मिल मे रसायनो के पद पर कार्यरत एस०एन० मिश्र काम के आधिक्य के कारण अफीम खाने लगा। फिर उसे अपनी गलती का आभास हुआ और वह माणकलाव के शिविर मे भर्ती हो गया। आज वह बडे मजे मे नशा सेवन के बिना अपना समय बिता रहा है। दिल्ली का अशोककुमार अपनी सेक्स ताकत बढाने के लिए अफीम खाने लगा। उसकी लत छुडाने के लिए घरवालो ने तग आकर उसे कमरे मे बन्द कर दिया तो उसने दीवार मे अपना सर फोड दिया। अब अफीम से वह पूरा परहेज करता है। दिल्ली के ही ५५ वर्षीय अमीरचन्द खेडा की यह धारणा थी कि वे अफीम की अपनी आदत जीवनपर्यन्त छोड नही सकते। शिविर मे वे अपने पुत्र के साथ आये ताकि अफीम छोडने के प्रयास मे यदि उनकी इहलीला समाप्त हो जाये तो पुत्र उनका अन्तिम सस्कार वही कर सके। शिविर मे उन्होने उपचारिका नीताकुमारी को अपनी धर्मपुत्री बना लिया। अब वे अफीम से आजाद हैं। आदर से भावविह्वल होकर वे नारायणसिंह जी को अपना "इष्टदेव" कहते है। दिल्ली के ही रमेश अरोडा, हरिराम तथा राजेन्द्र चौधरी ने भी माणकलाव शिविर मे ही अफीम से मुक्ति पाई है। गढवाल के एक चिकित्सक अफीम के आदी थे, परन्तु नौकरी की विवशता से वे शिविर मे दाखिल नही हो सकते थे। उन्होने केन्द्र से पत्राचार द्वारा मार्ग निर्देश प्राप्त किया और उसके अनुसार अपनी चिकित्सा की। उन्हे अफीम से मुक्ति मिल गई। अपने अनुभव के आधार पर उन्होने कई स्थानीय लोगो की चिकित्सा की। बहुचर्चित प्रेमलता काड के अभियुक्त जुगलकिशोर ने कारागार मे अफीम खाना सीख लिया। जेल से बाहर आने पर भी वह अफीम खाता रहा शिविर मे उपचार के बाद उसे अपनी इस बुरी आदत से छुटकारा मिल गया। इन्ही से मिलती-जुलती कहानी है ऐसे सैकडो लोगो की, जिनकी जिन्दगी को केन्द्र ने नई रोशनी दी है।

केन्द्र की योजनायें

अफीम से छुटकारा पाये इन लोगो मे से अधिकाश लोग शिविर मे आने से पूर्व अपनी मुक्ति के प्रयास मे कई हकीम, वैद्यो की शरण मे मुक्ति की इच्छा रखते थे, लेकिन अफीम के बारे मे गलतफहमी के कारण कोई कोशिश नही की थी। आज ये लोग शिविर मे आत्मशुद्धि प्राप्त कर अफीम निवारण के आदर्श सदेशवाहक बन गये है तथा इनसे असख्य अफीमचियो को प्रेरणा प्राप्त हुई है। यही कारण है कि आज केन्द्र के पास ऐसे हजारो लोगो के नाम पजीकृत हैं जो आगामी शिविरो मे शरीक होकर अफीम के दैत्य के चगुल से छुटकारा पाने को लालायित हैं। स्पष्ट है कि समस्या की व्यापकता एव गम्भीरता को देखते हुए, केन्द्र के कार्य के विस्तार की नितात आवश्यकता है। स्वय प्रो० नारायणसिंह राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे शिविरो के आयोजन का विचार रखते है। अफीम सेवन का व्यापक सर्वेक्षण करना, अफीमचियो के परिवारो की यथोचित सहायता एव मार्गदर्शन प्रदान करना, सचल शिविरो का अन्यान्य स्थलो पर सचालन तथा प्रचार माध्यमो द्वारा लोकशिक्षण करना, केन्द्र की भावी योजनाओ मे शामिल है। इसकी अपना औषधि-निर्माणशाला स्थापित करने की भी योजना है, जहा देसी जडी बूटियो से आवश्यक औषधियो का निर्माण सेवाभावी लोगो, सस्थाओ तथा सरकार के सहयोग एव सहायता की अपेक्षा है। हाल ही मे विश्व स्वास्थ्य सगठन का ध्यान भी केन्द्र की गतिविधियो की ओर गया है। राजस्थान चिकित्सक सघ के माणकलाव मे स्थायी अस्पताल के निर्माण एव वित्तीय सहायता के लिए राज्य सरकार के विचारार्थ एक योजना पेश की है। यदि केन्द्र को समाज का वाछित सहयोग यथासमय प्राप्त हो सका तो इसमे कोई सदेह नही कि इस केन्द्र ने अफीम निवारण का जो अभियान चलाया है, निकट भविष्य मे ही सामाजिक क्रान्ति के अभिनव सदेश को सफलतापूर्वक देश के कोने कोने मे पहुचा सकेगा एव मारवाड का छोटा-सा गाव माणकलाव अफीम का पावन तीर्थस्थल बन जायेगा।

(युगवार्ता से साभार)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर मे आर्य वीरदल का वार्षिक शिविर

१६ जून से २५ जून तक गुरुकुल झज्जर मे सार्वदेशिक आर्यवीर प्रशिक्षक एव प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमे उन्ही युवा छात्रो को भाग लेना है जो समाज मे रहते हुए अपने आपको कुप्रवृत्तियो से बचा सकते है तथा दूसरो को कैसे बचा सकते है। इस शिविर मे योग्य विद्वान शिक्षको द्वारा बौद्धिक, सैद्धान्तिक एव शारीरिक प्रशिक्षण दिया जायेगा, जो नवयुवक गुरुकुल मे किसी भी कारण से पढ न सके और पढने के इच्छुक थे, उनके लिए ये दस दिन का सुनहरी अवसर है। लाभ उठाव, भोजन तथा आवास आदि की सब समुचित व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की जायेगी। ऋतुअनुकूल वस्त्र-पात्र आदि अपने साथ लावें। शिविर का प्रवेश शुल्क केवल बीस रुपये होगा।

२५ जून को समापन समारोह मे पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल जी वानप्रस्थ, श्री बालदिवाकर जी हस, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह जी, शिविर सचालक डा० देवव्रत जी व्यायामाचार्य आदि ख्याति प्राप्त विद्वान् नवयुवको को आशीर्वाद एव पुरस्कार देगे। इच्छुक नवयुवक १५ जून को साय तक पहुच जावे।

विजयपाल आर्य

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा सचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महा विद्यालय टकारा जिला राजकोट, सौराष्ट्र मे ग्रीष्मावकाश आरम्भ हो गया है। नया सत्र प्रथम जुलाई १९८६ से आरम्भ होगा।

सस्कृत के साथ मैट्रिक परीक्षा अथवा तत्समकक्ष सस्कृत परीक्षा (अग्रजी के साथ) उत्तीर्ण, ब्रह्मचारी, विनम्र भारतीय (वैदिक) साहित्य सस्कृति और भूमि के प्रति निष्ठावान् छात्रो को प्रवेश मिलता है। प्रवेश फार्म और नियमावली ५ रु० भेजकर मगवाये। यथाविधि भरकर भेज और २५ जून तक स्वीकृति प्राप्त कर लेने वाले छात्रो के लिए स्थान सुरक्षित रहेगा।

यहा पर महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य अन्य ग्रथ तथा दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण, निरुक्त, सस्कृत, अग्रजी विज्ञान, सामान्य ज्ञान, आयुर्विज्ञान का भी ज्ञान दिया जाता है।

शिक्षा भोजन, आच्छादन, क्रीडा औषधि नि शुल्क है। शिक्षाकाल चार वर्ष है। —धर्मवीर विद्यालकार आचार्य

हरयाणा के आर्यसमाजो से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होने वाला है। अत आर्यसमाजे अपना वार्षिक चुनाव करके प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी का शुल्क शीघ्र भेज देवे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

गृह मामलो सम्बन्धी मन्त्रालय

स्वतन्त्रता सेनानियों के ध्यानार्थ

प्रेस विज्ञापन (१'८६) भारत सरकार ने १-८-१९८० से प्रभावी स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन स्कीम के अधीन सम्मान-पेंशन देने के उद्देश्य के लिए, आर्यसमाज आंदोलन १९३८-३९ को मान्यता देने का निर्णय किया है, जो स्वतन्त्रता संघर्ष के एक भाग के रूप मे, भूतपूर्व हैदराबाद राज्य मे चला था। अत सरकार ने यह फैसला किया है कि इस आदोलन मे भाग लेने वाले और भाग लेनेवाले स्वर्गीयो के योग्य आश्रित, निर्धारित प्रपत्र पर अपने आवेदनपत्र, अपेक्षित दस्तावेजो के साथ, सभी तरह से पूरित, ३० जून, १९८६ को या पहले भेज दे।

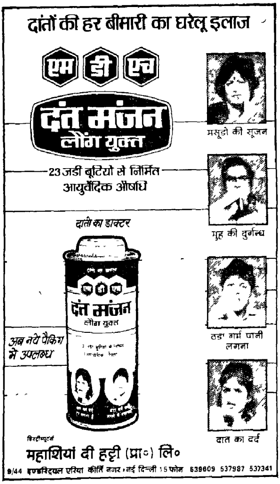
आवेदनपत्र की एक प्रति सम्बद्ध राज्य सरकार/सं०रा० प्रशासन को भेजी जाए और दूसरी उप सचिव, गृह मन्त्रालय, स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-११०००३ को रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दे।

आवेदनपत्र उपसचिव स्वतन्त्रता सेनानी सभाग, गृहमन्त्रालय, फर्स्ट फ्लोर, लोकनायक भवन, नई दिल्ली से निशुल्क व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा प्राप्त किये जा सकते है। ये प्रपत्र सम्बद्ध राज्य/संघ-शासित क्षेत्रो के प्रशासन के मुख्य सचिव से भी प्राप्त किये जा सकते है।

३० जून, १९८६ के बाद प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार्य न होंगे।

केवल ऐसे स्वतन्त्रता सैनिको को ही आवेदन करना चाहिए, जिन्होने आर्यसमाज आदोलन मे भाग लिया और जो स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान-पेंशन स्कीम १९८० के अधीन पेंशन दिये जाने के योग्य हैं।

सो/डीएवीपी ५६१ (८६)/८६



हैदराबाद के आर्यसमाज आंदोलन में भाग लेने वाले महानुभावों को आवश्यक सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने प्रेस विज्ञापन द्वारा हैदराबाद के आर्यसमाज के आंदोलन मे भाग लेने वालो से गृह-मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित आवेदन-पत्र भरकर मगवाये है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे गृह-मन्त्रालय से उक्त आवेदन पत्र आगये है। अत इच्छुक महानुभाव रोहतक कार्यालय से आकर, आवेदन-पत्र लेकर उन्हे भरने का कष्ट करे। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से भी सम्पर्क किया जा रहा है। आवेदन-पत्र भरवाने के कार्य मे यथासम्भव सभा की ओर से सहयोग किया जायेगा। —प्रो० सत्यव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

बिन विद्या के बिगड़ा ये देश हमारा

बिन विद्या के बिगड़ा ये देश हमारा।
कभी तो था ये जग से भी न्यारा ॥टेक

सादा खान पान, पहरान था, थी वेदो की उजियारी।
स्वाग, सिनेमा, नशे विषयो की थी ना ये बिमारी॥
समझें थे धर्म को प्यारा ॥१॥ बिन विद्या ...

था आपस मे प्रेम कभी ना फलती थी बेईमानी।
आज दुष्ट को सजा नही दीन के संग काणा-काणी॥
क्योकि रिश्वत का चक्र सारा ॥२॥ बिन विद्या ...

विद्या बिन अब धर्म नही, धर्म बिन रही शर्म नही।
घर मे मूर्खों की फर्म रहे क्योकि ठीक चाल-चलन नही॥
आज धर्म डुबा दिया सारा ॥३॥ बिन विद्या

थे प्रसन्न योग करे थे योग से जाते रोग सभी।
आज दुखी है क्योकि भोगी भोग से होते रोग सभी॥
इस कारण दुखी जग सारा ॥४॥ बिन विद्या

चूक गये तो दुख पाओगे सुनो धर्म इन्सान का।
श्रेष्ठ बनो खुद वैदिकधर्मी आचरण बना सन्तान का॥
'बलवन्त' बार-बार समझारा ॥५॥ बिन विद्या ...

श्री बलवन्तसिंह आर्य, ग्राम ठसका, नारायणगढ, अम्बाला

अनमोल वचन

१ ससार खराब नही है किन्तु मन अशुद्ध होने के कारण जगत् बिगड़ा हुआ नजर आता है।

२ पुत्र तो केवल कुल को तारता है। पुत्री लायक हो तो पिता और पति दोनो कुलो को तारती है।

३ दूसरे के सुख मे सुखी होना ही प्रेम का लक्षण है।

४ स्वामी दयानन्द की मर्यादा का पालन करो।

५ किसी के गुरु बनने की इच्छा मत रखो, गुरु बनना हो तो मन के गुरु बनो।

६ गरीब होना गुनाह नही है। गरीबी में भगवान् को भूल जाना गुनाह है।

७ जिसका भोजन अच्छा नही होता, उसका भजन भी अच्छा नही होता।

८ मनुष्य जो चाहे बन सकता है।

९ धन का सग्रह मत करो – दान करो।

१० मन की शांति के लिए प्रतिदिन यज्ञ करो।

—ए० के० गर्ग, पानीपत

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बालावास जि० हिसार

प्रधान—सर्वश्री सूबेदार हरचन्द आर्य, उपप्रधान—मोहनलाल आर्य, मन्त्री—भागचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री—निहालसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—हेतराम आर्य।

आर्यसमाज सुठल जि० अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री ईश्वरसिंह, उपप्रधान—नरेशकुमार, मन्त्री—चन्दनसिंह, कोषाध्यक्ष—अमरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—मनीराम।

आर्यसमाज खिजराबाद जि० अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री जगदीशराय वालिया, उपप्रधान—महीपालसिंह, मन्त्री—विनोदकुमार गुप्त, प्रचारमन्त्री—चन्द्रशेखर गुप्त उपमन्त्री—जगदीशचन्द फतेपुरी, कोषाध्यक्ष—वीरेन्द्रकुमार गुप्त।

आर्यसमाज सैक्टर ७ फरीदाबाद

प्रधान—सर्वश्री लखपतराय, उपप्रधान—हरवशलाल पंडित, एच० एल० आनन्द, मन्त्री—विनय पंडित, उपमन्त्री—बलवीरसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—ए० सी० कश्यप, कोषाध्यक्ष—जगन्नाथ सोई, पुस्तकाध्यक्ष एवं सम्पदा अधिकारी—जगदीश बधाना।

आर्यसमाज शांति नगर सोनीपत

संरक्षक—सर्वश्री—रामलाल मदान, प्रधान—जयकृष्णदास वैद्य, कार्यकर्त्ता प्रधान—किशनचन्द, उपप्रधान—खानचन्द, देवीदयाल प्रातिश, महामन्त्री—हरिश्चन्द्र स्नेही, संगठन मन्त्री—मा० वेदप्रकाश, उपमन्त्री—वेदप्रकाश आर्य, डी० ए० वी० विद्यालय प्रबन्धक—ज्ञानचन्द बजाज, कोषाध्यक्ष—मेहरचन्द वलेचा, पुस्तकाध्यक्ष—यशपाल मदान।

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बालावास जि० हिसार	८ से १४ जून
,, रेलवे रोड यमुनानगर जि० अम्बाला	४ से ८ ,,
,, बूबका जि० कुरुक्षेत्र	१३-१४-१५ ,,
,, खुर्मपुर जि० सोनीपत	१४-१५ ,,
,, दादूपुर छावनी जि० अम्बाला	१९-२० ,,
,, बालधन कला जि० महेन्द्रगढ	२०-२१ २२ ,,
,, खेड़ी सुलतान जि० रोहतक	२१ २२-२३ ,,

वैदिक संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन

वैदिक संस्कार शिक्षण शिविर आचार्य सुदर्शनदेव जी के नेतृत्व में (दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुना नगर) २३ से २८ जून।

नोट—आर्यसमाज के सभी उपदेशकों, भजनोपदेशकों, पुरोहितों तथा कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि इस शिविर में सम्मिलित होने के लिए अपने नाम आचार्य दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर जि० अम्बाला के पास भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा लेवें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

श्री ओमप्रकाश त्यागी के निधन पर शोक सभायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प० ओमप्रकाश त्यागी के निधन पर स्त्री आर्यसमाज जींद, आर्यसमाज जींद जंकशन तथा आर्यसमाज रामनगर जींद में शोक सभायें की गईं और उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए प्रभावशाली आर्यनेता, आर्य वीरदल का पुनरुद्धारक और सुयोग्य सांसद बताया गया।

सरला गोयल मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज जींद शहर

अम्बाला मण्डल के उत्सव

आर्यसमाज किशनपुरा जि० अम्बाला

आर्यसमाज किशनपुरा का उत्सव १६-१७-१८ मई को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज, महाशय लक्ष्मणसिंह जी बेमाल श्री बलराज पंजाब भजनोपदेशक, श्री प० राजवल जी आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, बहन राजबाला भजनोपदेशक तथा कुमारी सुनीता आर्या सुपुत्री सुखदर्शन जी आर्य के भजनोपदेश हुए। हजारों की संख्या में जनता ने धर्म लाभ उठाया। सभा को १०१) वेदप्रचार में प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज सबीलपुर

आर्यसमाज सबीलपुर जि० अम्बाला का उत्सव २३ से २५ मई, ८६ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज, स्वामी निर्मल जी, स्वामी देव जी तथा स्वामी गुरुदत्त मुनि जी महाराज, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से प० हरिश्चन्द्र, प० राजवल जी, प० बनारसीलाल जी भजनोपदेशक पधारे। कई सज्जनों ने यज्ञोपवीत भी लिये और कुमारी सुनीता आर्या के भी भजनोपदेश हुए, सभा को वेदप्रचार में ४०१) प्राप्त हुए।

आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड रोहतक की सूचना

आर्यसमाज दुर्गा कालोनी प्रेमनगर रोहतक का नाम बदलकर आर्य समाज प्रेमनगर जेल रोड रोहतक कर दिया गया है।

श्री धनपतराय तथा श्री खजानसिंह को अनुशासनहीनता तथा धन के दुरुपयोग करने के आरोप में आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया गया है, परन्तु उन्होंने आर्यसमाज की पुरानी रसीद बुकें नये पदाधिकारियों को न सौंपकर उनसे सर्वसाधारण जनता से धन-संग्रह कर रहे हैं और उसका हिसाब भी नहीं देते। अतः आर्यजनता उनसे सावधान रहे।

—महावीर शास्त्री मन्त्री

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्यसमाज सैक्टर-७ फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव दिनांक २०-४-८६ को आर्यसमाज के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेक महात्माओं, उपदेशकों, भजनोपदेशकों ने समस्त आर्य सदस्यों को अपने विचारों से अभिभूत किया। सुन्दर सुरीले भजनों को सुनकर आर्यगण मन्त्र मुग्ध हो गये थे। सर्वश्री आत्मानन्द जी, कन्हैयालाल मेहता, लाजपतराय आदि विद्वानों के विचारों से सभी ने धर्म लाभ उठाया।

इसके पश्चात् आर्यसमाज भवन की यज्ञशाला का उद्घाटन विधिवत् रूप से श्रीयुत सुरेन्द्र आर्य, मलिक परेश गैस सिलेंडर कम्पनी फरीदाबाद ने अपने करकमलों द्वारा सम्पन्न किया।

इस अवसर पर अनेक आर्य नर-नारी एवं बच्चों ने प्रत्येक कार्यक्रम को रुचिपूर्वक सुना। समस्त कार्यक्रम प्रातः ८ बजे से लेकर १ बजे तक सुनियोजित ढंग से चला।

वेदप्रचारक की आवश्यकता

गुडगावा जिले के मेवात क्षेत्र के ग्रामों में साईकल पर घूम घूमकर वैदिकधर्म का प्रचार करने हेतु जो सत्संग, हवन, भजनों द्वारा प्रचार कर सके, के लिये २ प्रचारक एवं स्वामी शान्तानन्द आश्रम मरोड़ा, नजदीक पिनगवा जिला गुडगावा हेतु एक विद्वान् या शास्त्री या जो सामान्य कार्य, सत्संग, यज्ञ आदि के कार्य में निपुण हो की आवश्यकता है।

भोजन व आवास के अतिरिक्त योग्यतानुसार मासिक दक्षिणा दी जावेगी। निम्न पते पर पत्राचार करें।

पदमचन्द आर्य मन्त्री
आर्य वेदप्रचार मण्डल नगीना, गुडगावा

(पृष्ठ ३ का शेष)

हमारे भाई बन्धु बनवारीलाल जी ने भी उसी समय एक सौ एक रुपया दान में दिया। दानी तो सर्वथा दान देना अपना धर्म और कर्त्तव्य मानता है।

ब्रह्मचारी जी ने हम से कहा कि आप लोग दूर से आये हैं, आज यहीं ठहरें। मैंने कहा कि ब्रह्मचारी जी ! बात तो ठीक है परन्तु हमारे पास रात्रि को ओढने के वस्त्र नहीं हैं। क्योंकि हम ठहरने के लिये नहीं आये। इस पर ब्रह्मचारी जी ने कहा—कि वस्त्रों का प्रबन्ध भी कर दिया जावेगा। हमने कहा कि इसके लिये आपको धन्यवाद। फिर कभी आपके आश्रम में आवेंगे। आज तो आप हमको अवकाश प्रदान करें। इस प्रकार प्रार्थना करके और उनसे अनुमति मांगकर हम वापिस गुरुकुल के लिये वहां से चार बजे चलकर ठहरते हुए नौ बजे रात्रि को गुरुकुल में आगये।

ब्रह्मचारी जी बहुत कम बोलते हैं। भगवान से आपको घूमते दिखाई देंगे, साधारण वेशभूषा में रहते हैं, बिना बतलाये आपको कोई पहचान न सकेगा। उनका उत्सव ६ मार्च से १६ मार्च, १९८६ तक हुआ, सबको पूरी, खीर, आलू की सब्जी प्रदान करते हैं। यह सिलसिला सातों दिन चलता रहता है। इस प्रकार आपका यह कार्यक्रम तेरह वर्षों से चालू है। पर उस सन्त का सारा काम शांति से उसी प्रकार चल रहा है। यह आपका प्रभु प्रेम है। प्रभु पर विश्वास कर, काम करने वालो के काम प्रभु ही सम्भालता है। यदि यह देखना हो तो ब्रह्मचारी जी के आश्रम में जाकर यह सब देखा जा सकता है।

मुझे तो ब्रह्मचारी जी के आश्रम से, कार्य से, भावना से प्रेरणा मिली है। हम आर्यों को परस्पर प्रीतिभाव से रहना चाहिये। आतिथ्य की ओर भी विशेष ध्यान आर्यसामाजिक संस्थाओं का होना चाहिये। वैदिकधर्मियो को दानशील होना चाहिये। आर्यसामाजिक संस्थाओं को अपना घर मानकर उनको धनदान, अन्नदान, समयदान, विचारदान देकर अपने को सफल बनाना चाहिए।

वैदिकधर्म का जो उद्देश्य था, उसको हम पूरा करने मे असमर्थ से हो गये हैं। ब्रह्मचारी जी के आश्रम में जाकर, उनसे प्रेरणा लेकर महर्षि दयानन्द के कार्य को पूरा करना प्रत्येक आर्य का उद्देश्य होना चाहिये।

उस दिन तीन बजे ब्रह्मचारी जी का प्रवचन भी हुआ। उसमें उन्होंने शिवरात्रि को लक्ष्य करके कहा कि शिव नाम सूर्य का है, राजा का है, विद्वान् का है। शिव सूर्य प्रकाश फैलाता है, शिव राजा प्रजा की दु:ख रूप अन्धकार से रक्षा करता है। शिव रूप विद्वान् अन्धकार रूपी अज्ञान को दूर कर, प्रकाश रूपी रात में डालता है। इस प्रकार उनका प्रवचन बड़ा प्रभावशाली रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक

ईश्वर पाप करने से रोकता क्यों नहीं

अन्य अवैदिक मतो की भांति आर्यसमाज यह तो नही मानता कि हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्म, ईश्वर की प्रेरणा या मर्जी से होते हैं। न ही वह यह मानता है कि मनुष्य तथाकथित शैतान के बहकावे मे पाप करता है। फिर मनुष्य पाप क्यो करता है ? इसका उत्तर महर्षि के शब्दो में इस प्रकार है —"अब कोई-कोई ऐसी भी शका करे कि मनुष्य को पाप वासना ही क्यो हुई। तो उसका इतना ही समाधान है कि परमात्मा ने मनुष्यो को स्वतन्त्रता दी है और स्वतन्त्रता के जो-जो परिणाम होवगे, उन्हे भी स्वीकार करना चाहिए।" तात्पर्य यह है कि महर्षि इस स्वतन्त्रता का विकार मानते हैं। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र और फल भोगने मे ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है। स्वतन्त्र होने के साथ-साथ जीव अल्पज्ञ भी है और फिर हमारी इन्द्रिया बहिर्मुखी होने से विषयो की ओर दौडती हैं और मनका उन विषयो के साथ सहयोग होने से मनुष्य पाप मे प्रवृत्त हो जाता है। इन्द्रियो के विषयो का ध्यान करते-करते मनुष्य का उन विषयो के साथ एक प्रकार का सग उत्पन्न हो जाता है। विषयो के निरन्तर सग या ध्यान से उनके प्रति एक लगाव या कामना उत्पन्न हो जाती है। कामना के उत्पन्न होने पर उसकी पूर्ति की चिन्ता होती है और पूर्ति मे बाधा उपस्थित होने पर क्रोध उत्पन्न होता है और फिर क्रोध से मूढ भावो की उत्पत्ति होती है और मूढ भावो से अन्तोगत्वा बुद्धि का नाश हो जाता है। बुद्धि नाश से विवेक ही समाप्त हो जाता है। फिर पाप-पुण्य का, अच्छे-बुरे का कोई ध्यान ही नहीं रहता।

आर्यसमाज यह भी मानता है कि कर्म का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है, वे क्षमा नहीं होते। किन्तु एक प्रश्न आर्य लोग भी उत्सवो पर शंका-समाधान आदि के समय पूछ लिया करते हैं। वह यह कि ईश्वर कर्मों से रोकता क्यों नहीं ? यह नहीं कि वह पाप के विचार हमारे मन में उठने ही जान न पाये। सर्वज्ञ होने के नाते वह उसी क्षण जान जाता है कि जिस क्षण पाप के भाव हमारे मनमें उठने लगते हैं और वह सर्वशक्तिमान् भी है। ऐसी बात भी नही कि वह रोक न सके, फिर वह पाप कर्म करने से रोकता क्यो नही ?

इससे तो इन्कार किया ही नहीं जा सकता कि ईश्वर सर्वज्ञ होने के नाते तत्काल हमारे भावों को भी जान जाता है एव हमारे कर्मों का भी द्रष्टा है। पर सर्वशक्तिमान् का यह कदापि अर्थ नही कि ईश्वर जो चाहे सो करे। नहीं ! वह अपनी व्यवस्थाओ का उल्लघन नही करता। वह अपने नियमो को नही तोडता। ईश्वर की एक व्यवस्था है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने मे परतन्त्र है। अर्थात् ईश्वर ने जीवो को कर्म करने मे स्वतन्त्रता दे रखी है। करे न करे, चाहे उलटा करें या सीधा, वह उसमें हस्तक्षेप नही करता। इस पर प्राय लोग आपत्ति किया करते हैं वह यह कि प्रथम तो पाप करते से ईश्वर रोकता नही और जब लोग पाप कर चुकते हैं तो फिर उसका फल दण्ड के रूप में देता है। यह कहा का न्याय है ? ईश्वर को पहले ही रोक देना चाहिये और जब देख रहा है कि कर्ता पाप करने जारहा है तो उस समय तो मूकदर्शक बना रहता है और बाद में दण्ड देता है। अत ईश्वर को न्यायी कहना उचित नही।

इसका समाधान यह है कि ईश्वर ने प्रथम ही अपनी वेदाज्ञाओ द्वारा मानवमात्र को विधि और निषेध, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध करा दिया है। साथ मे यह भी अच्छी तरह जता दिया है कि बुरे कर्म का फल दु ख एव अच्छे कर्म का फल सुख के रूप मे मिलता है। इतना करने के बाद कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की तो क्या बुरा किया है और फिर अपने इसी नियम के अनुसार कर्म कर चुकने के बाद, अच्छे कर्म वालो को सुख और बुरे कर्म वालो को दु ख देता है तो क्या बुरा करता है। लोक व्यवहार मे भी हम नित्य यही देखते हैं, पर वहा आपत्ति नही करते। उदाहरण के लिये एक अध्यापक का पुत्र परीक्षा मे बैठा है। उसके पिता ही उसके परीक्षक भी हैं। अब परीक्षा के दौरान निरीक्षण करते हुए पिता यह देख रहे है कि बालक प्रश्न का उत्तर गलत लिख रहा है, किन्तु वे वहा उसे गलत उत्तर लिखने के लिये रोकता नही। यदि वह उसे रोकता है तो पक्षपाती ठहरता है और न्याय व्यवस्था भग होती है। अपने पुत्र को गलत उत्तर लिखने से न रोकने पर भी, जब वह उत्तर पुस्तिकाओ को जाचता है तो अपने पुत्र के गलत उत्तर के फलस्वरूप उसके अक काटना उसका कर्त्तव्य कर्म है। वह उसका धर्म है। इसमें अन्याय की कोई बात नही, अपितु अक न काटना ही अन्याय अथवा पक्षपात है, अत अधर्म है। यहा भी तो पिता एक मूकदर्शक ही बना हुआ था और फिर उसने भी अक काटे ही, इस पर भी वह अन्यायी नहीं माना जाता तो फिर ईश्वर पर ऐसा दोषारोपण क्यो।

इस पर भी हमारा कथन है कि ईश्वर पाप कर्म से अवश्य रोकता है किन्तु उसके रोकने का प्रकार दूसरा है। वह हाथ नहीं बाध देता, अपितु हमारे हृदय में सकेतो के द्वारा यह अवश्य जता देता है कि जो कर्म हम करने जारहे हैं, वह करने योग्य है कि नही। वह पाप है या पुण्य। जब हम कोई कुकर्म करने लगते हैं तो हमारे हृदय मे भय, शका और लज्जा उत्पन्न होने लगती है। यह ईश्वर की ओर से सकेत है, न करने के और जब कोई अच्छा कर्म करने लगते हैं तो आनन्द और उत्साह की अनुभूति होती है, यह स्वीकृति है उस कर्म के करने की। अब हम ही अपनी कर्म स्वतन्त्रता के कारण ईश्वर को इन प्रेरणाओ की अवहेलना करदे तो इसमे ईश्वर का क्या दोष और जब कुकर्म किये है तो उनका फल तो दण्ड के रूप मे भोगना ही होगा। इसमे अन्याय की कोई बात नही। जब कुकर्म किये हैं तो उनका फल दण्ड के रूप मे मिलना अनिवार्य है। मनुष्य को करते समय सोचना चाहिये कि मैं कैसे कर्म कर रहा हू क्योकि—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अग्निहोत्र से प्रदूषण दूर किया जा सकता है—

प्रदूषण समाप्त करने की वैदिक पद्धति

ले०—श्री के० पी० नारायण (अंग्रेजी लेख का हिन्दी अनुवाद)

दिनाक २,३ दिसम्बर, १९८४ की रात्रि को एक अध्यापक महोदय श्री एस० एल० कुशवाह ने लगभग १.३० बजे अपनी पत्नी श्रीमती त्रिवेणी के वमन होने की आवाज को सुन, शीघ्र ही उनके बच्चो को घुटन, आखो मे जलन, सीने मे दर्द और खासी प्रारम्भ हो गई। जब उन्होने अपने घर से बाहर झाक कर देखा तो उन्हें लोग घबराहट मे भागते हुए दृष्टिगत हुए। उन भागते हुए लोगो मे से किसी एक ने श्री कुशवाह से कहा कि लगभग एक मील दूर यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री में गैस का रिसाव हो गया है।

उन्होने जब लोगो की भीड के साथ सम्मिलित होने और भागने का निश्चत किया, तब उनकी पत्नी श्रीमती त्रिवेणी ने सुझाव दिया कि अब अग्निहोत्र प्रारम्भ कर दिया जाये और उन्होने तत्काल अग्निहोत्र प्रारम्भ कर दिया और २० मिनट के अन्दर-अन्दर उस विषैली गैस के चिन्ह समाप्त हो गये।

श्री एम० एल० राठौर भोपाल रेलवे के समीप अपने परिवार अर्थात् अपनी पत्नी, चार बच्चे, माता जी और भाई के साथ रहते हैं, जहा कि दर्जनो लोग इस विषैली गैस से मृत्यु को प्राप्त हो गये थे। राठौर ने जो पाच साल पहले से ही अग्निहोत्र करते आरहे थे। अग्निहोत्र प्रारम्भ कर दिया तथा त्र्यम्बक होम के साथ इसको करते रहे।

ये दो उदाहरण है जो अग्निहोत्र के करने से भोपाल के गैस पीडित लोगो के गैस के प्रभाव से बचने पर प्रकाश डालते हैं। अग्निहोत्र से कितने महानुभावो को लाभ हुआ है, इस सम्बन्ध मे भोपाल मे पता लगाने का प्रयत्न किया जारहा है।

अग्निहोत्र वैदिक होम का एक सबसे लघु रूप है। अग्निहोत्र की पवित्र अग्नि प्राकृतिक सिद्धातो पर आधारित है। अमेरिकन दार्शनिक बैरी राथनर जो पूना विश्वविद्यालय मे अग्निहोत्र पर शोधकार्य कर रहे हैं, ने कहा है कि जहा भी वह किया जाता है वहा के वातावरण मे एक विशिष्ट प्रभाव फैलता है तथा मानव मस्तिष्क पर एक विशिष्ट भेषजीय प्रभाव रखता है। आयुर्वेद मे भैषज मूल रूप से विद्यमान है।

बहुत से लोग अब स्वीकार करते है कि भोपाल मे ऐसी घटनाओ का होना एक प्रारम्भिक कडी है तथा प्रदूषण अब एक शक्ति बन चुकी है, जो शीघ्र ही ग्रहो के सन्दर्भ मे अपरिवर्तनशीलता के समीप की स्थिति हो चुकी है।

एक हल प्रस्तुत किया जा चुका है और तेरह वष से प्रत्येक द्वीप मे अग्रगामी अध्ययन चलाया जा चुका है, यह जानने के लिए कि अग्निहोत्र का प्रदूषण पर क्या प्रभाव पडता है, क्योकि यह मानव मस्तिष्क, मिट्टी और हमारे शरीर पर प्रभाव डालता है। प्रदूषण पर विश्व स्तर पर आक्रमण किया जाना चाहिए। भोपाल मे यूनियन कार्बाइड प्लाट केवल विचारणीय विषय नही है। राथनर ने कहा कि विचारणीय विषय तो सौर-ग्रहो के विनष्ट होते हुए वातावरण का है।

आदि ज्ञान वेद से इस ग्रह के प्रदूषण को दूर करने का एक हल प्राप्त होता है। आज जिस परिस्थिति का हम सामना कर रहे हैं, उसमें इसका प्रयोग करने का उद्देश्य है। 'नगरो का विनाश' नामक वैदिक लेखन विभाग मे उस स्थिति का विवरण है, जिससे सारे नगर नष्ट हो जायेंगे। हम मे से बहुत से लोग ऐसे हैं जो विवरणो को जो कुछ सम्भव है उसकी अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक बताने का प्रयत्न करते होगे, वे आज इन बातो के लिए अन्यथा दृष्टिकोण रखते हैं। कोई कहता है कि पूर्व और पश्चिम यूरोप का आधा वन दस साल पहले यदि समाप्त हो जाता तो उसने जीर्ण होने का लेबल लगा लिया होता। कौन देखेगा उस समय को, जबकि हम पानी की बूंदे प्रयोगशाला मे यह जानने के लिए भेजेंगे कि इसमें कितना एसिड है और यह हमारी नदियो और मिट्टी को सुरक्षित रख सकेगा या नही।

राथनर ने कहा कि सक्षेप मे यह प्रश्न एक ऐसा प्रश्न है जो जीवन पद्धति पर एक प्रश्न चिह्न उपस्थित करता है। बहुत समय से मेरी यह राय है कि हमें हमारे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन-पद्धति की ओर गम्भीरता से ध्यान देना प्रारम्भ कर देना चाहिए और यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि कहा तक हम प्रकृति के साथ मेल खाते हुए रहते हैं। हम प्रकृतिस्थ हैं, इसलिए हमारा इससे मेल खाते हुए जीवित रहने का प्रश्न उस स्थिति में हो जाता है।

श्री राथनर के अनुसार ससार मे शायद बहुत से इसी प्रकार के चिह्न हैं, जिनमे मे भोपाल को भी कोई अपना दृष्टि बिन्दु बना सकता है। मैं व्यक्तिगत रूप से हो लेता हू कि मुझे अपने आपको और अपने परिवार को प्रदूषण से सुरक्षित रखने के लिए क्या करना चाहिए। अन्य महानुभाव सर्वसाधारण और विस्तृत भाव से कह सकते हैं कि सरकार को अपने नागरिको की सुरक्षा के लिए क्या करना चाहिए।

श्री राथनर दृढतापूर्वक कहते हैं कि अग्निहोत्र ने प्रदूषण पर विजय पाई है। आज ससार मे ऐसी कोई भाषा नही है जो अग्निहोत्र की पद्धति मे उपकार करनेवालो की सख्या बता सके। विशेष रूप मे चार देशो में अग्निहोत्र पद्धति फैलाने की अद्भुत प्रगति को अकित किया गया है। वे हैं यू० एस० ए०, चिल्ली, पोलेंड और पश्चिमी जर्मनी। यू० एस० ए० के पूर्वी और पश्चिमी किनारे पर जहा 'न्यू एज' का आदोलन हुआ वहां अग्निहोत्र पद्धति से चिकित्सा करनेवाले विद्यमान हैं। अमेरिका इस पर गर्व कर सकता है कि यह केवल मात्र एक प्रस्थान है, जहा चौबीस घण्टे ९ दिसम्बर, १९७९ से ६॥ वर्ष से भी अधिक समय से बिना रुके होम होता रहा है। यह स्थान बल्टीमोर मेरीलेंड है जो अग्निहोत्र प्रेस फार्म से जाना जाता है। वाशिगटन के डी० सी० व्हाइट हाउस से कार द्वारा एक घण्टे की दूरी पर स्थित है।

वाशिगटन डी० सी० के दक्षिण पश्चिम एक डेढ घण्टे की कार चालन पर पहला 'अग्नि मन्दिर' स्थित है। मडीशन वरजीनिया के वैदिक अग्नि शुद्धता को पुनर्जीवित करने के लिए। वरजीनिया स्टेट के ब्रिस्टाइन पर्वतो में एक क्षेत्र स्थित है जो यू० एस० ए० मे सबसे कम प्रदूषित है। इसका उद्घाटन २२ सितम्बर १९७३ मे हुआ था जो अग्निहोत्र के पश्चिम देशो मे प्रथम बार प्रारम्भ होने से कुछ समय बाद ही हुआ था। यहा से ही इस गृह के चारो कोनो मे फैल चुका है। एक अग्नि मन्दिर केवल एक कमरा है, जिसमे शाति रहती है और अग्निहोत्र रोजाना सूर्योदय और सूर्यास्त पर किया जाता है। यहा कुछ भी नहीं पूजा जाता। उसमें कोई पुजारी नही है। इस द्वीप के चारों तरफ ऐसे सैकडो स्थान हैं। यद्यपि अग्निहोत्र भीतर या बाहर कहीं भी किया जा सकता है परन्तु यदि यह एक शात कमरे में किया जाये तो एक [illegible] परिणाम उपस्थित हो जाता है।

चिल्ली के एंडीज पर्वतो में एक विशिष्ट अग्नि मन्दिर स्थापित किया गया है। यहा सहस्रो व्याधियो से मुक्ति प्राप्त हो चुकी है। घायल और बीमार पशु भी अपने सहज स्वभाव से उस स्थान पर आते हैं और वहा तब तक रहते हैं, जब तक वे स्वस्थ न हो जाये। अभी हाल मे एक प्राण लेवा बर्फीले तूफान से जहा अग्निहोत्र करने वाले परिवार रहते थे, बिलकुल अछूते रह गये (जैसा कि भोपाल में अग्निहोत्र करने वाले यूनियन कार्बाइड दुर्घटना से दिसम्बर ८४ मे बच गये।)

पोलेंड मे एक वैज्ञानिक वर्ग है जो होम चिकित्सा का अगुआ है। देश में सतरह स्थान हैं, जहाँ होम पर आधारित केन्द्र प्रारम्भ किये जा चुके हैं। जब प्रथम बार अग्निहोत्र प्रारम्भ किया गया तो एक अच्छी लग्न उत्पन्न हो गई थी और जब इसके सम्बन्ध में सूचित किया गया कि केवल मात्र वे हो लोग जो शीघ्र ही अग्निहोत्र चिकित्सा पद्धति को

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय

वेंकट रमैया आयोग की सिफारिशे

वेंकट रमैया आयोग की सिफारिशें जनता के सामने आगई। चर्चा तो १५ हजार एकड भूमि (जितनी भूमि मे चण्डीगढ बसा है) और भारत सरकार चण्डीगढ जैसी राजधानी बनाकर हरयाणा को चण्डीगढ के बदले मे दे। परन्तु १५ हजार एकड से बढकर भूमि तो ७० हजार एकड करदी तथा राजधानी के लिए भूमि अधिग्रहण करके उसके निर्माण का सब काम भारत सरकार करे। आयोग ने यह भी कहा है कि ७० हजार एकड के लगभग भूमि जितने ग्रामो की बनती है, उसका निर्णय एक नया आयोग करे।

पजाब समझौते के भाग ७-३ मे स्पष्ट लिखा है कि चण्डीगढ पजाब को तथा उसके बदले मे दिये गये गाव हरयाणा को एक साथ ही दिये जायेगे। परन्तु यह भी घोषणा की जाती रही है कि चण्डीगढ पजाब को २१ जून, १९८६ को जरूर मिल जायेगा। यह सम्भव तभी हो सकता है, जब ७० हजार एकड भूमि मे जो और जितने गाव बनते हैं, उनका निर्णय पजाब तथा हरयाणा मिलकर कर लेवें। यदि ऐसा नही हो सका और नया आयोग बनाना पडा तो २१ जून तक उस आयोग द्वारा निर्णय असम्भव है। उस हालत मे चण्डीगढ भी पजाब को २१ जून को नही दिया जा सकता। वह तभी दिया जा सकेगा, जब हरयाणा को दिये जानेवाले गावो का फैसला आयोग द्वारा कर दिया जाये।

यदि ऐसा नही किया गया तो वह वेंकट रमैया आयोग की सिफारिशो तथा स्वय तथाकथित पजाव समझौते का उलघन होगा। ऐसा लग रहा है कि क्षेत्रीय विवाद का मामला अभी टलेगा।

हरयाणा को अपने निर्माण के बाद जब-जब विवाद खडे हुए, पूरा न्याय नही मिल सका। पजाब के अकाली, अल्पसख्यक होने का वास्ता देकर, साम्प्रदायिक भावना भडका कर, हिंसात्मक तथा राष्ट्र की एकता को तोडने की गतिविधिया अपनाकर सारे देश को सिर पर उठा लेते हैं और एक दबाव का वातावरण बना डालते है। पजाब के बाकी लोग उनकी हा में हा मिला देते हैं। पजाब मे जो अशाति अकाली फैलाते हैं, उसको शात करने के लिये चारो ओर से कुछ ले देकर फैसला करने की बात चल पडती है और उसके साथ राष्ट्र का हित जुड जाता है। अधिकतर विरोधीदल, अकालीदल को अपना साथी मानकर, राष्ट्रहित का सहारा लेकर, उनकी मदद मे उतर आते हैं। इन दोनो का मुकाबला हरयाणा तभी कर सकता है, जब वहा के सभी दलो के नेता और कार्यकर्त्ता अपने दलगत स्वार्थों को पीछे डालकर प्रदेश की बात एक होकर मजबूती से कहे। हरयाणा रक्षावाहिनी ने ३ वर्ष तक यही प्रयास किया, परन्तु लोग दलगत राजनीति से ऊपर नही उठ पाये, परन्तु होता है इससे उलटा। हरयाणा के हित पीछे डाल दिये जाते हैं और बहुत सारी शक्ति एक दूसरे को नीचा दिखाने मे लगादी जाती है। हरयाणा के कुछ विरोधीदलो की सघर्ष समिति ने हरयाणा के हित के मुद्दो को पीछे डाल दिया और मुद्दा बना लिया, भजनलाल को हटाने का। वे हट गये, मिठाई भी देवोलाल जी ने बाट दी, पर क्या उतने से हरयाणा के हित सुरक्षित हो गये। ऐसे वातावरण मे हरयाणा को पूरा न्याय न मिल सका तो कोई आश्चर्य की बात नही। जिस प्रदेश के कुछ नेताओ की नीयत यह हो कि उस प्रदेश को न्याय न मिले तो वे लोगो को भडका कर उनकी लाशो पर धन और वोट बटोर सकें, उसको न्याय कैसे मिल सकता है।

पजाब और हरयाणा के सम्बन्ध मे जो निर्णय होने चला है, उसमे विरोधीदल भी शामिल हैं, उनके परामर्श से सब कुछ हो रहा है। अधिकतर विरोधीदलो का झुकाव अकालियो के हक मे है, हरयाणा को न्याय देने के लिये नही। एक बात मुझे जरूर नजर आई कि भारत सरकार के शीर्षस्थ लोग और कुछ विरोधीदलो के भी सुलझे हुए लोग हरयाणा को पूरा न्याय देने का आश्वासन तो नही देते, परन्तु उसके घाटे को अधिक से अधिक पूरा करने की बात जरूर मानते हैं और कहते भी हैं। इसीलिये यह आशा जरूर लगती है कि कुछ अश तक हरयाणा का घाटा पूरा करने का प्रयास होगा।

कुछ अश तक घाटा पूरा तभी हो सकता है यदि—

१) राजधानी के लिये जमीन अधिग्रहण करके, केवल दफ्तरो के भवन या कर्मचारियो के भवन ही नही, भारत सरकार राजधानी में चण्डीगढ के बडे हस्पताल (P G I) जैसा बनाय, हाईकोर्ट का भवन, इन्जीनियरिंग कालिज तथा विश्वविद्यालय भी बनाये।

२) सतलुज यमुना जोड नहर का काम भारत सरकार तुरन्त अपने हाथ मे लेकर २६ जनवरी, १९८७ तक उसमे पानी चला दे।

३) इराडी प्राधिकरण १५ अगस्त, १९८६ तक रावी व्यास के पानी का ३५ लाख एकड फुट मे अधिक हरयाणा का हिस्सा उसे दे देवे।

—प्रो० शेरसिंह

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की वास्तविक स्थिति

१० जुलाई, १९७५ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का विभाजन आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने तीन भागो पजाब, हरयाणा तथा दिल्ली की राजकीय सीमाओ के अनुसार कर दिया और सयुक्त पजाब सभा को भग कर दिया। १४ सितम्बर, १९७५ को अम्बाला छावनी मे पजाब, हरयाणा तथा दिल्ली तीनो प्रतिनिधि सभाओ की साधारण सभा ने सर्वसम्मति से विभाजन को स्वीकार करते हुए, प्रस्ताव किया कि पजाब सभा के नाम पर जो अचल सम्पत्ति है वह, जिस प्रातीय सभा के क्षेत्र मे स्थित है, उसी प्रातीय सभा की सम्पत्ति होगी। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद मे स्थित होने के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पत्ति तथा सस्था है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने भी हरयाणा सभा को पत्र लिखकर दे रखा है कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पजाब सभा विभाजन के पश्चात् हरयाणा सभा की सम्पत्ति है। हरयाणा सभा ने इस सम्पत्ति और गुरुकुल पर अवैध कब्जा छुडवाने एव स्वामी शक्तिवेश द्वारा सभा की सम्पत्ति का दुरुपयोग करने से रोकने के लिए फरीदाबाद के न्यायालय मे अभियोग कर रखा है।

स्वामी शक्तिवेश ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के एक बोगस मुख्तार आम द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की सम्पत्ति का ९९ वर्ष का पट्टा लिखवा लिया और एक लाख रुपये से ऊपर मासिक किराये की राशि को जाली रसीदो से प्राप्त करके उसे निजी स्वार्थ एव राजनैतिक कार्यों मे खर्च करने लग गये। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के नाम पर घी दूध आदि को डकार गये। इस प्रकार उन पर साधारण जनता मे भी भ्रष्टाचार के आरोपो की चर्चायें चलने लगी। हरयाणा के एक विधायक श्री रोशनलाल आर्य ने ११ दिसम्बर, १९८५ को उनसे बलात् कब्जा करके अपना अधिकार कर लिया। उन्होने दावा किया मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अधिकार दिया है। स्वामी शक्तिवेश ने गुरुकुल पर पुन अपना कब्जा करने के लिए असामाजिक तत्त्वो का सहारा लेकर २२-२३ मई, ८६ को गुरुकुल मे प्रविष्ट हो गये, परन्तु फिर ३ जून को श्री रोशनलाल आर्य के साथियो ने गुरुकुल पर धावा बोलकर कब्जा लेने का प्रयत्न किया। समाचारपत्रो में छपे एक समाचार के अनुसार इस झगडे मे स्वामी शक्तिवेश का एक साथी मारा गया।

इन गम्भीर परिस्थितियो को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने, हरयाणा के मुख्यमन्त्री, फरीदाबाद के जिलाधीश तथा पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखकर माग की कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पत्ति है, परन्तु स्वामी शक्तिवेश तथा उनका विरोधीपक्ष गुरुकुल पर बलात् कब्जा करने की कार्यवाही मे सभा की सम्पत्ति को नष्ट कर रहे है और गुरुकुल की करोडो रुपये की सम्पत्ति को अपने स्वार्थ हेतु हडपने का षडयन्त्र कर रहे हैं। हरयाणा सभा वैधानिक रूप से गुरुकुल की रक्षा हेतु अदालती कार्यवाही कर रही है। अत जब तक न्यायालय से निर्णय न हो जावे, तब तक सभा को सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु रिसीवर की नियुक्ति की जावे। विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है। सभा के अनुरोध पर फरीदाबाद के पुलिस अधीक्षक ने गुरुकुल की सम्पत्ति के लिए झगड रहे दोनो पक्षो से गुरुकुल की सम्पत्ति का नियन्त्रण अपने अधिकार मे ले लिया है। आशा है शीघ्र रिसीवर की भी नियुक्ति हो जायेगी। भरतसिंह सभा उपप्रधान

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले २२ जून को संन्यास लेंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले आगामी २२ जून, १९८६ को संन्यास ग्रहण करेंगे। संस्कार समारोह का आयोजन सम्मिलित रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से किया जा रहा है। दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब) के कर्मकांडी संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी उन्हें दीक्षा देंगे।

श्री शालवाले गत १२ साल से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। इस समय उनकी आयु ७९ वर्ष है। उन्हें आशा है कि संन्यास ग्रहण करने के बाद वे आर्यसमाज तथा हिन्दू जाति की सेवा के लिए अपना अधिक समय दे सकेंगे। उनका कहना है कि यदि भारत में गृह युद्ध रोकना है तो भारत सरकार को चाहिए कि वह पंजाब को सेना को सौंप दे।

श्री शालवाले ने संन्यास परम्परा का पूरा पालन करेंगे। उनका वेश भगवा होगा तथा दण्ड धारण करेंगे, अपने पास पैसा नहीं रखेंगे और अपने परिवार में नहीं रहेंगे। दिल्ली के किसी उपनगर भवन में वह अपना निवास रखेंगे।

स्वामी दयानन्दकृत यजुर्वेद भाष्य में देवता तत्त्व पर पी-एच०डी०

महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के तत्वावधान से श्रीमती वसुन्धरा रिहानी एम० ए०, बी० ए० (आनर्ज) ने पीठाध्यक्ष प्रो० भवानीलाल जी भारतीय के सुयोग्य निर्देशन में इस वर्ष १९८६ "स्वामी दयानन्दकृत याजुषभाष्य में देवता तत्त्व" विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की।

वैदिक देवतावाद की समस्या अपने आप में एक अति जटिल और दुरूह समस्या है। विभिन्न वेद विद्वान् इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न धारणायें रखते हैं। विज्ञ शोधकर्त्री ने प्रकृत समस्या पर पौरस्त्य और पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर स्वामी दयानन्द अभिमत देवत तत्त्व पर विचार करते हुए अग्नि, विष्णु प्रभृति वैदिक देवों के स्वरूप निर्धारण का अनुपम प्रयास किया है। शोध का यह कार्य अतीव परिश्रमसाध्य, मौलिक एवं वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तोत्री ने वैदिक देव स्वरूप विवेचन के सन्दर्भ में एक नवीन पथ-प्रशस्त किया है जो कि भविष्य में इस पद्धति से शोध करनेवाले शोधार्थियों का मार्ग प्रदर्शन करेगा।

वेंकट रमैया आयोग की रिपोर्ट पर अकाली नेता क्या कहते हैं

१—संयुक्त अकालीदल अ० भा० सिख छात्र महासंघ के दोनों गुटों ने वेंकट रमैया आयोग की रिपोर्ट की आलोचना करते हुए कहा है कि ७० हजार एकड़ जमीन तो क्या, एक इंच जमीन भी हरयाणा को नहीं दी जायेगी।

२—असंतुष्ट अकाली नेता प्रकाशसिंह बादल ने भी कहा है कि हमें पहले ही यही उम्मीद थी कि केन्द्र पंजाब के साथ अन्याय करेगा।

३—शि० गु० प्र० कमेटी के सचिव भीमसिंह ने आरोप लगाकर पंजाब के साथ घोर अन्याय करने का आरोप लगाया है।

४—सुरजनसिंह ठेकेदार ने कहा कि एक इंच धरती भी हरयाणा को नहीं दी जायेगी, चाहे कितना ही रक्त क्यों न बहाना पड़े।

(दैनिक ट्रिब्यून १४ जून, १९८६)

यमुनानगर का वेदप्रचार समारोह सम्पन्न

यमुनानगर आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर द्वारा वेदप्रचार का कार्यक्रम बड़ी कुशलतापूर्वक दिनांक ४ जून, ८६ से ८ जून, ८६ तक चलता रहा। इस कार्यक्रम में सामवेद पारायणयज्ञ प्रातः व सायंकाल चलता रहा। जिसकी पूर्णाहुति रविवार ८ जून की प्रातः में पड़ी। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वागीश्वर थे तथा वेदपाठी सर्वश्री प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, प० रामस्वरूप शास्त्री, प० जयदेव शास्त्री, प० सुरेन्द्र शास्त्री, ब्रह्मचारी रामस्वरूप व ब्रह्मचारी नरेन्द्र थे। प्रातः, मध्याह्नोपरान्त व रात्रि को पूज्य आचार्य वागीश्वर जी की वेदकथा होती रही। दिनांक ७ जून को महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें निकटस्थ क्षेत्रों के अनेक आर्य नर-नारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसी सम्मेलन में अन्य वक्ताओं के अतिरिक्त श्रीमती शान्ताबाई आर्या का भी प्रेरणादायक उपदेश हुआ।

दिनांक ७ जून की रात्रि व ८ जून, ८६ को प्रातःकाल में आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ज्वालापुर के बहुत प्रभावशाली व्याख्यान हुए। इनके अतिरिक्त स्वामी धर्मानन्द जी का भी एक व्याख्यान हुआ तथा ब्र० महेश जी शास्त्राचार्य व महाशय हरलाल जी की भजन मण्डली के सुमधुर भजन व राष्ट्रीय गीतों ने लोगों का आह्लादित किया।

दिनांक ८ जून को सार्वजनिक ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भी राशि भेजी जा रही है।

—इन्द्रजीतदेव उपमन्त्री

हैदराबाद आर्यसमाज के सत्याग्रहियों से निवेदन

जिन महानुभावों ने १९३८-३९ के हैदराबाद के आर्यसमाज के सत्याग्रह में भाग लिया था, उनकी पेन्शन हेतु आवेदनपत्र भरकर भेजने की अन्तिम तिथि ३० जून, १९८६ है। सभा के कार्यालय में आवेदनपत्र भरवाये जा रहे हैं। अतः जिन्होंने अभी तक आवेदनपत्र भरकर नहीं भेजे हैं, उन्हें सूचना मिलते ही तुरन्त रोहतक पधार कर आवेदनपत्र प्राप्त करने चाहिए। आर्यसमाज के अधिकारियों को अपने नगर तथा ग्राम के सत्याग्रहियों को इस सम्बन्ध में तुरन्त सूचित करना चाहिए।

—सभा मन्त्री

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री आचार्य डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य के नेतृत्व में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर निकट गादीपुर, जि० अम्बाला में २२ से २९ जून, १९८६ तक वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आर्यसमाज के उपदेशक भजनोपदेशक तथा कार्यकर्त्ताओं को संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इच्छुक सज्जन ऋतु के अनुसार अपने बिस्तर आदि साथ लावें।

आचार्य श्रीमद्दयानन्द उपदेशक
महाविद्यालय निकट गादीपुर, जि० अम्बाला

आर्यसमाज बालधन कलां जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—मा० अमरसिंह आर्य, मन्त्री—प्रो० रमेशकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री नत्थूराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री शिवराम आर्य।

नशीले पदार्थों से बिगड़ती भावी-पीढ़ी

—कृष्ण मित्र

भारतीय जनमानस मे पिछले एक दशक से नशीले पदार्थों का जितना उपयोग बढा है, उससे ऐसा लगता है कि धीरे धीरे आध्यात्मवाद का विश्व गुरु कहलाने वाला देश नशीली वस्तुओ के द्वारा ह्रास की चरम सीमा तक पहुचने वाला पूर्वी देशो मे सबसे पहला और बडा देश होगा।

प्रयोगों के शिकार

नशीले पदार्थों में हैरोइन, पेथेडोन, मार्फीन, अफीम, मैन्ड्रिक्स, कोकीन आदि विशेष रूप से युवा-पीढ़ी मे अपनी जडे जमाने मे सफल हुऐ है। अब इसमे 'स्मेक' नाम और जुड गया है। वास्तव मे स्मेक अब नशीली वस्तुओ का सामूहिक नाम हो गया है। विश्व के बडे-बडे देश इसी स्मेक के अपराधीकरण से चिन्तित है। सम्पूर्ण अपराध जगत् किसी न किसी प्रकार से शराब गाजा अफीम और हैरोइन जैसे नशीले पदार्थों के एक देश से दूसरे देश मे लाने और ले जाने वाले अनधिकृत व्यवसाय से जुडा है और इसी कारण विश्व के बडे-बडे अपराधी इन नशीले पदार्थों के द्वारा लाखो और करोडो की तस्करी करते है। इस तस्करी मे भारतीय अपराधवृत्ति के लोग भी कम सख्या मे नही हैं।

नशीले पदार्थों का सेवन प्राय प्रारम्भ मे एक प्रयोग के रूप मे किया जाता है। कुछ पेशेवर अपराधी कच्ची उम्र के वयस्क या अवयस्को पर इसका प्रयोग करते है। धीरे-धीरे ऐसे युवक स्मेक की लत के इतने शिकार हो जाते हैं कि उससे छुटकारा पाना उनके लिए असम्भव हो जाता है। नशा न मिलने पर ये चोरी, डकैती, हत्या और इसी प्रकार के अपराध करते हैं तथा उससे प्राप्त धन को नशीले पदार्थों के सेवन मे लगा देते हैं।

युवक ही नही, इसमें १२ से १४ वष तक के बच्चे भी शामिल हो जाते हैं और वे अपने घरो से ही विभिन्न प्रकार की वस्तुयें चुराकर अपना नशा पूरा करते हैं और इन बच्चो की नशे की आदत से पूरा परिवार बर्बाद हो जाता है।

विवाहित लोग अपने बाल-बच्चो का पालन-पोषण छोडकर नशा करने के लिए दिनभर की मजदूरी को नशीली वस्तुये खरीदने मे बर्बाद कर देते हैं। पति अपनी पत्नी के जेवर बेच देता है और पुत्र अपने माता पिता तथा घरवालो की वस्तुये बेच देते है। नशा करने वाले ये युवक धीरे-धीरे आस-पडोस के लोगो को भी अछूता नही छोडते। क्योकि यह नशा उसकी विवशता बन चुका होता है। विश्वविद्यालय के युवक-युवतियों और उनसे सम्बन्धित मित्रो मे नशीली वस्तुओ का सेवन एक प्रकार का फेशन बनता जारहा है, जो भविष्य में पूरे देश के लिए एक चरित्र पीढ़ी के निर्माण का कारण बन सकता है।

नशीले पदार्थों के स्रोत स्थान

वैसे तो पूरा देश नशीले पदार्थों के लिये चर्चित हो चुका है। आये दिन हवाई जहाज के अड्डो पर, बस स्टेड या रेलो पर और पैदल सीमा प्रदेशो के आस-पास नशीली वस्तुओ का यह व्यापार निरन्तर वृद्धि की ओर है, परन्तु नशीले पदार्थों के इस घृणित व्यापार के लिए बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास जैसे महानगरो के साथ-साथ गोवा, इम्फाल, वाराणसी, हरिद्वार की कन्दरायें तथा अमृतसर, चण्डीगढ और सीमावर्ती प्रदेश राजस्थान के रेगिस्तान मुख्य रूप से चर्चित स्थान हैं।

मजदूरी करनेवालो से लेकर बडे-बडे घरानो में यह नशीली वस्तुये पर्याप्त मात्रा मे प्रयोग मे लाई जाती है। नशा किसी अमीर के लिए ही नही, अपितु गरीब के लिये भी उतना ही जानलेवा है जितना इसके सेवन का प्रभाव बढता जाता है। पुलिस द्वारा नशीले पदार्थों के व्यवसाय में लगे अपराधियो की धर-पकड के बावजूद यह धन्धा जोरो से चल रहा है। जो अपराध १६८१ में केवल औसत १० अपराधियो तक सीमित था, वही १६८३-८४ मे निरन्तर २५० और एक हजार तक की सख्या मे पहुँच गया था।

१६८० मे कुल १६३ अपराधी इस धन्धे मे मात्र दिल्ली मे पाये गये थे, वही बढते-बढते अब यह सख्या सैकडो मे हजारो तक पहुच गई है। जब दिल्ली की तिहाड जेल मे ही नशीले पदार्थों के सेवन के किस्से गली मुहल्ले के चर्चा का विषय बन चुके हैं, तो भला देश के अन्य भागो में इस पूरी व्यवस्था का क्या कहना।

भुक्तभोगियों के अनुभव

नशीले पदार्थों का सेवन करनेवाले अनेक अस्वस्थ व्यक्तियो से बातचीत के दौरान जो एक बात सामने आई है, वह यह है कि प्रत्येक नशा करने वाला अपनी इस बुरी आदत को छोडना चाहता है मगर अपनी शारीरिक और मानसिक कमजोरी के कारण छोड नही पाता। उसके हाथ, पैर, उसके सिर, शरीर भर मे एक विशेष पीडा का अनुभव होना है और वह विवश होकर अपनी इस लत को पूरा करने के लिये कुछ भी व्यापार करने को तैयार हो जाता है। उसके बाल-बच्चे, पत्नी, माता पिता उसकी इस स्थिति से परेशान होकर कभी कभी स्वय भी उसके लिये नशीले पदार्थों की व्यवस्था करते है, अन्यथा मरणासन्न अवस्था मे पहुचा वह हताश, निराश व्यक्ति भीख तक मागने लगता है, जेब काटता है, चोरी करता है, मगर अपना नशा पूरा करने का उपाय करता है।

भारत सरकार ने नशा छुडाने के लिए ऐसे विभिन्न केन्द्रो की स्थापना की है। ऐसे रोगी इन केन्द्रो मे उपचारार्थ दाखिल भी होते हैं। वे अपनी आदत पर पाश्चात्ताप करते हैं, नशा छोडना चाहते हैं, मगर उनकी विवशता उन्हें मजबूर करती है। काश! हमारा समाज इस बुराई के प्रति कोई आंदोलन चलाता। (युगवार्ता)

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज नीमड़ी जि० भिवानी

प्रधान-सर्वश्री रामस्वरूप वानप्रस्थ, मन्त्री-सूरजमल, कोषाध्यक्ष-राजबीर आर्य।

आर्यसमाज बामला जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री बख्तावरसिंह, मन्त्री—गाहड़सिंह, कोषाध्यक्ष—मा० भलेराम आर्य।

आर्यसमाज सांगा जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री मनीराम, मन्त्री—कर्णसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—जगदीश सरपच।

आर्यसमाज बोंदखुर्द जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री महावीरसिंह, मन्त्री-कप्तान जयसिंह, कोषाध्यक्ष-प्रभुसिंह।

आर्यसमाज मीरपुर जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—सर्वश्री भूरसिंह, मन्त्री—शीशराम आर्य, कोषाध्यक्ष—मुन्शीराम आर्य।

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक

प्रधान—सर्वश्री रामलाल, उपप्रधान—जगदीश आहूजा, प्रशात मुनि, मन्त्री—बलराज, उपमन्त्री—दरबारीलाल मस्ताना, कोषाध्यक्ष-चरणसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—धर्मपाल शास्त्री।

आर्यसमाज फोगाट जि० भिवानी

प्रधान—सर्वश्री प्रतापसिंह, मन्त्री-रामकरण, कोषाध्यक्ष—श्रीमती हीरादेवी।

राष्ट्र रक्षा एवं ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर दयानन्द कालेज हिसार मे २२ से २९ जून तक

सार्वदेशिक आर्य वीरदल शाखा, हिसार द्वारा लगाये जारहे इस शिविर मे डा० आचाय देवव्रत जी के निर्देशन मे श्री कृष्णपाल एव श्री सत्यकाम आर्य द्वारा निम्नलिखित विषयो मे प्रशिक्षण दिया जायेगा—

योगासन-प्राणायाम	जूडो कराटे	लाठी
योगासन-क्रियाये	रायफल ट्रेनिंग	भाला
तलवार	पी० टी० अभ्यास	त्रिशूल

इसके अलावा देश के उच्चकोटि के विद्वानो एव बौद्धिक शिक्षको द्वारा नौजवानो को इस सप्ताह मे प्रतिदिन निम्नलिखित विषयो मे शिक्षा दी जायेगी —

प्रतिदिन स्वाध्याय करने	ब्रह्मचर्य का पालन करने
धूम्रपान, मद्यपान से बचने	दिनचर्या बनाकर कार्य करने
साम्प्रदायिक दगो मे बुद्धि से काम लेने	माता-पिता एव बडो का सम्मान करने
सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध लडने	वैदिक सस्कृति के प्रचार-प्रसार

शिविर के नियम :

१- इस शिविर मे केवल १०० नौजवानो को जिनकी आयु १६ से २५ वष तक होगी, प्रवेश दिया जायेगा।

२- प्रवेशार्थी वैदिक सस्कृति का जिज्ञासु तथा प्रशिक्षण लेने का पूर्ण इच्छुक हो।

३- शिविर में भोजन, आवास, प्रशिक्षण निशुल्क रहेगा। शिविरार्थी को केवल १०) प्रवेश शुल्क तथा रायफल ट्रेनिंग लेने वाले विद्यार्थियो को १२ रुपये होमगार्ड हिसार के लिए खच देना होगा।

४- प्रवेशार्थी निम्नलिखित समान लाये —

१) खाकी निकर सफेद (सैंडो) बनियान, २) सफेद जुराबे तथा सफेद कपडे के जूते, ३) दरी, चादर आदि, ४) डायरी, पैन।

ब्रह्मचर्य शक्ति प्रदर्शन

२९ जून, १९९६ को प्रात ८ से ११ बजे तक दयानन्द कालेज के छात्रावास मे ही शिविर समापन समारोह मे उच्चकोटि के विद्वानो, नेताओ द्वारा भाषण के साथ साथ विद्यार्थी निम्नलिखित ब्रह्मचय के तेज का प्रदशन करेगे।

हाथ से कद्द को पीसना, चलती हुई कार को रोकना, लोहे के सरिये की हाथ से चूडी बनाना, एक क्विटल का एरन छाती पर रखकर लोहा कुटाना, मोटी जजीर को तोडना, गले से भाला मोडना, थाली को हाथ से चीरना, फुटबाल के ब्लॅडर को नाक से हवा भरकर फाड डालना।

शिविर मे भाग लेने वाले विद्यार्थी अपना नाम शिविर सयोजक सीताराम आर्य वेदप्रचार मण्डल बालमसन्द रोड, हिसार। फोन ५०५३ को भेजे। २८ जून को साय ५ वजे नगर मे शोभायात्रा निकाली जायेगी।

प्रार्थी

प्रिंसिपल एस आर्य	हरिसिंह सैनी	सीताराम आर्य	प विश्वमित्र
	शिविर सरक्षक	शिविर सयोजक	बौद्धिक शिक्षा प्रबन्धक

प्रवेश सूचना

श्रीमद्दयानन्द उपदेश महाविद्यालय यमुना नगर, निकट (शादीपुर) अम्बाला, हरयाणा मे शिक्षा सत्र ९६ ९७ हेतु प्रवेश आरम्भ है। प्रवेश के इच्छुक छात्र जो हाई स्कूल उत्तीर्ण हो, श्री प्रधानाचार्य जी से पत्र व्यवहार कर।

भोजन, शिक्षा और निवास सर्वथा नि शुल्क है।

बहादुरगढ़ में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

हर वर्ष की भाति आत्मशुद्धि आश्रम में २३ जून सोमवार से २९ जून रविवार तक यौगिक क्रियाओ सहित ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन अत्यन्त उत्साह के साथ किया जारहा है।

इस शुभ अवसर पर अनेको उच्चकोटि के साधु, सन्यासी, ब्रह्मचारी यौगिक क्रियाओ, आसन प्राणायाम, नेती धोती, कुंजर, वस्ती क्रिया आदि के कुशल ज्ञाता शिक्षक पधार रहे हैं। इच्छुक बन्धुओ के लिए यह सुअवसर है। स्वय पधारे और अन्यो को प्रेरित करे।

ब्रह्मचय प्रशिक्षण शिविर मे पूर्ण रूप से भाग लेने वाले १४ वर्ष की आयु से ऊपर के विद्यार्थी थाली, कटोरी, चम्मच, कापी, पैंसिल, कदानुसार लाठी, दो लगोट, तौलिया, लाल नेकर, सैंडो बनियान, कपडे के जूते (पीटीशूज) ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लेकर आये। भोजन व स्थान का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। अत शिविर में भाग लेने के लिए शिविर शुल्क २५) रुपये और अपना पूरा पता आश्रम के पते पर १५ जून तक भेज देना चाहिए, अन्यथा आप इस शुभावसर से वचित रह जायेगे।

स्वामी धर्ममुनि मुख्याधिष्ठाता
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ, रोहतक

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल, जि० मुजफ्फर नगर (उ०प्र०) मे जो सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से मान्यता प्राप्त है, जुलाई से प्रवेश आरम्भ है। इस गुरुकुल मे प्रथमा (कक्षा ६) से शास्त्री (बी० ए०) तक सभी विषयो (हिन्दी, सस्कृत, साहित्य, व्याकरण, वेद, दर्शन तथा अग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल का अध्ययन कराया जाता है। पाचवी पास छात्र प्रवेश के पात्र हैं। शिक्षा के साथ-साथ यौगिक क्रियाये, आसन, व्यायाम तथा धार्मिक शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है। शिक्षा एव आवास की निशुल्क व्यवस्था है। मध्यमा के निर्धन छात्रो व योग्यतम छात्रो को ५० रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उत्तम जलवायु, सुरक्षित वातावरण, सादा रहन-सहन एव सात्विक आहार यहा की अपनी विशेषता है। यहा के आचार्यवृन्द योग्य और कुशल अनुभवी है। अत एव आप अपने पुत्रो को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु अविलम्ब सम्पर्क करे। —स्वामी आनन्दवेश प्रबन्धक

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल जि० मुजफ्फर नगर (उ०प्र०)

गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश प्रारम्भ

आश्रम पद्धति से चलने वाले गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे ६ वर्ष से ८ वष तक की आयु के बालको का प्रवेश १ जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है।

गगा के तट पर विद्यालय का विशाल प्रागण, बालको के खेल-कूद तथा सामूहिक व्यायाम के लिए आदर्श स्थान है। योग्य अध्यापको द्वारा उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म-शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

शिक्षा नि शुल्क है। पूरी जानकारी के लिए ५ रुपये का मनीआर्डर भेजकर नियमावली प्राप्त करे।

सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कागडी, हरिद्वार

(पृष्ठ १ का शेष)

करता था सो क्यो किया, करके क्यो पछताये।
बोये पेड बबूल के आम कहा से खाये॥

अत यह आक्षेप कि ईश्वर पाप करने से रोकता नही और फिर भी दण्ड दे देता है, इसलिए वह दयालु न होकर अन्यायकारी है, सर्वथा भ्रात एव मिथ्या धारणा है। ईश्वर पूर्णत न्यायकारी और दयालु है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उसकी न्याय व्यवस्था और दया को समझें।

(पृष्ठ २ का शेष)

प्रारम्भ करना चाहते हैं, कल की सभा में उपस्थित हो और तब २०० से अधिक वैज्ञानिक उपस्थित हुए।

यू० एस० ए० के पश्चात् पश्चिम जर्मनी दूसरा देश है, जिसने अग्निहोत्र अधिक अपनाया है। यहां पर अग्निहोत्र की राख पर शोध कार्य किया गया और आज तक चल रहा है। दर्जनो बाह्य बीमारिया इसकी राख के प्राथमिक प्रयोग से ठीक हो गई हैं। दूसरे कारणो के लिए यह क्षेत्र और भी ठोस कार्य कर रहा है। १९८४ पतझड की ऋतु में शीघ्र ही बर्बाद होते हुए वन के मर रहे वृक्षो पर अग्निहोत्र और होम के प्रभाव को जानने के लिए तीन माह का परीक्षण किया गया। इसके परिणाम का १९८६ के मध्य तक पता लग जाना चाहिए। वाशिंगटन के अग्निहोत्र विश्वविद्यालय की होमोपचार पद्धति पत्रिका के प्रकाशन के आधार पर ही जर्मनी ने यह परीक्षण प्रारम्भ किया। जिसमे यह विवरण दिया गया था कि बीमार पौधो और मनुष्य को स्वस्थ करने मे ताम्बे का अग्निहोत्र पात्र कितना मूल्यवान् है। जब बहुत से देशो के लोग अग्निहोत्र और होम मे ८०० प्रतिशत अन्न की वृद्धि अनुभव करने लग जायेंगे, तब अनुशासित परीक्षण प्रारम्भ करने के लिए उद्यत होगे।

अग्निहोत्र के लिए जो अंश आवश्यक हैं वे बहुत न्यून और साधारण हैं। एक ताबे के पात्र मे जो ६"×६"×६" का होता है। उसमे सुखाये गये गोबर के कडे, शुद्ध घृत और थोडे से चावल की आहुति दी जाती है। चावल को उसके रासायनिक ढाचे के कारण चुना है। गाय का गोबर वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध हो चुका है कि यह मडाद को रोकनेवाला गुण रखता है। असली घृत एक विशिष्ट गुण रखता है जो अपना ही एक प्रभाव रखता है। ताबा भी एक विशिष्ट गुण रखता है, जिसके बारे मे प्राचीनकाल से ही ऐसी मान्यता है। केराला मे भोज आदि मे चावल एक बडे ताबे के पात्र मे पकाया जाता है, जिसमे उस पानी को भी ताबे के पात्र मे रखा जाता है, जिससे पानी मे एक विशिष्ट गुण आ जाता है। सूर्योदय और सूर्यास्त भी एक महत्त्व रखते हैं। सूर्यास्त के समय बहुत-सी अग्निया, विद्युत् तेजोमय तत्त्व और विलक्षण शक्तिया जो सूर्य से आती हैं, सारा समय पृथ्वी को प्राप्त होती रहती हैं। अतीव तेज प्रभाव उसकी एक किरण मे है, जहा सूर्य उदित होता है। सूर्यास्त के समय ये प्रभाव बहुत तेजी से कम हो जाता है।

ससार मे पहला स्थान जहा अग्निहोत्र एक बडे पैमाने पर अपनाया गया, भोपाल में है। श्री एम० जी० पोद्दार ने कार्य शुरु किया था। उस को अपने जीवन के १५ वर्ष पूरे करने के लिए।

१९७२ मे श्री वसन्त प्राजपे ने वाशिगटन में ऐसा यज्ञ प्रारम्भ किया और तब से बिना रुके हुए यात्रा कर रहे हैं प्रत्येक द्वीप में इसका प्रचार कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय होम चिकित्सा पद्धति शोध सस्थान जिसमे वह और श्री बैरी राथनर प्रकल कोट (भट्टा) में सम्बन्धित हैं, वह अपनी ही तरह की एक सस्था है जो होम चिकित्सा पद्धति जीवशक्ति, जीव उत्पत्ति शास्त्र औषधि निर्माण मौसम की यन्त्रो द्वारा जानकारी देने का वेदो के अनुसार ससार का अति प्राचीन विज्ञान है।

२००० वर्ष के अनुसधान का विवरण जो जिम्मीकार्टर द्वारा स्थापित जाच सम्बन्धी सघ ने प्रकाशित किया है, ने प्रदूषण से विश्व विनाश चित्रित किया। प्रदूषण के कारण होने वाले क्रम निर्जन कर देने वाले जल की न्यूनता से लेकर तापक्रमण उलट पुलट होने तक, एक के बाद एक होनेवाली दुर्गति बडी सरलता से दूर की जा चुकी है। बैरी राथनर ने सोचते हुए बात कही कि इक्कीसवीं सदी अभी पन्द्रह वर्ष दूर है। निश्चित तिथि बताना तो एक वाक् छल होगा, शक्ति का अपव्यय और भयप्रद भी हो सकता है। भोपाल काड बतलाता है कि कितना हानिकारक और कितना आपत्तिजनक हो सकता है। अग्निहोत्र होम चिकित्सा पद्धति ही वह मार्ग बता सकती है जिससे ऐसी प्रदूषित करनेवाली गैसो से बचा जा सकता है।

('मधुर लोक' दिल्ली, मई ८६ से साभार उद्धृत)

हैदराबाद के आर्यसमाज आंदोलन में भाग लेने वाले महानुभावों को आवश्यक सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने प्रेस विज्ञापन द्वारा हैदराबाद के आर्यसमाज के आदोलन मे भाग लेने वालो से गृह-मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित आवेदन-पत्र भरकर मगवाये हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे गृह-मन्त्रालय से उक्त आवेदन-पत्र आगये हैं। अत इच्छुक महानुभाव रोहतक कार्यालय पधारकर, आवेदन-पत्र लेकर उन्हे भरने का कष्ट करें। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से भी सम्पर्क किया जारहा है। आवेदन-पत्र भरवाने के कार्य मे यथा-सम्भव सभा की ओर से सहयोग किया जायेगा। —प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

अपने देश के लिए

जन्म-जन्म देशभक्त बने हम,
मातृ-भूमि की सेवा करे हम,
जीये तो देश के लिए,
मरे तो देश के लिए,
तोप या गोली लगे तो देश के लिए,
कुछ करे या ना करे तो देश के लिए,
मगर दुश्मनो को न छोडे देश के लिए,

कुछ बनकर दिखाये, कुछ करके दिखाये,
अपने देश का नाम रोशन करके दिखाये।

जाये न इस धरा से किसी दूसरी धरा पर,
जाये तो इस धरा के लिए व्यर्थ न जाये,
वहा हमे कुछ करके दिखलाना है,
वहा हमें न जाना है अपने स्वार्थ के लिए,
वहा जाकर अपने हिन्दुस्तान को दिखलाना है।

वहा त्याग कर दिखाये शाति विश्व मे कर दिखाये।
अपने देश का नाम रोशन करके दिखाये॥

अनिलकुमार मगला 'पिकी'

आर्यावर्त्त युवक परिषद् वजीराबाद (गुड़गावां) का ब्रह्मचर्य योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे आर्यावर्त युवक परिषद वजीराबाद गुडगावा का ब्रह्मचर्य योग प्रशिक्षण शिविर २५ मई से १ जून, ८६ तक ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री अत्तरसिह जी बोहरा, गुरुदयाल जी मन्त्री आर्यसमाज वजीराबाद, प्रेमसिह जी प्रधान आर्यसमाज वजीराबाद ने दिन-रात एक करके शास्त्री जी का सहयोग कर शिविर को सफल बनाया। मा० बलवीरसिह जी, मा० जगदीश, सुरेशकुमार, मा० महावीर, श्री हंसराज बोहरा, मा० जगमालसिह व सुरेन्द्रसिह आदि उत्साही नौजवान कार्यकर्त्ताओ ने शिविर की व्यवस्था मे हाथ बटाया। श्री रघुनाथसिह यादव, चौ० रार्यसिह सोलकी न्यू कालोनी आर्यसमाज, श्री रामसिह नवलसिह पूठकला दिल्ली, श्री प्रेमसुख वजीराबाद गोल्डन उद्योग भाडसा, वेदपाल कार्यकारी अभियन्ता, चौ० राजेन्द्रसिह सरपच गुडगाव, आचार्य सत्यप्रिय तिजारा (राज०) ने क्रमश १०१ व ५१ रुपये प्रदान कर सराहनीय योगदान दिया। श्री बलवान्सिह योगाचार्य जी ने ७ दिन अथक परिश्रम कर योगासन सूत्रनेती, धोती, जलनेती, दण्ड बैठक, कुश्ती जुडो, कैराटे व लाठी आदि की अनेक क्रियाये अल्पकाल मे इस ढग से करवाई कि आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल भज्जर व अध्यक्षपद को अलकृत कर रहे चौ० रघुनाथसिह जी यादव खेरा प्रधान आर्यसमाज नजफगढ ने अपने वक्तव्यो मे आश्चर्य प्रकट किया। शिविर के मध्य मे आचार्य सत्यप्रिय जी वैदिकाश्रम तिजारा (राज०), वैद्य श्रीचन्द गुडगावा, मुख्याध्यापक कश्मीरीलाल वर्मा न्यू कालोनी गुडगावा आदि अनेक विद्वानो ने शिविरार्थियो को वेद, शास्त्र, यज्ञ, संस्कृति, ब्रह्मचर्य, शरीर स्वास्थ्य, नैतिक आदि विषयो पर अपने विचार रखे। ब्र० ओमदर्शन जी रोहतक ने भी ५ दिन तक योग शिविर प्रशिक्षण मे सहयोग दिया। समापन समारोह के दिन १ जून को प्रात ८ बजे प० रणवीर जी शास्त्री समालखा के ब्रह्मत्व में यज्ञ का सम्पादन व उपदेश हुआ।

९ बजे श्री रघुनाथसिह जी की अध्यक्षता में समारोह प्रारम्भ हुआ। जिसमे स्वामी प्रेमानन्द, प० हरिश्चन्द्र खेरा निवासी, प० मुरारीलाल बेचैन के भजनोपदेश हुए तथा बाद मे मुख्य आमन्त्रित अतिथि प० रणवीर जी शास्त्री का ओजस्वी भाषण हुआ, जिसमें स्वामी ओमानन्द जी महाराज व प्रो० शेरसिह जी की अनुपस्थिति की कमी को अनुभव नही होने दिया। अन्त में ब्र० विजयपाल जी आचार्य द्वारा व्यायाम प्रदर्शन जीप रोकना, लोहे के छ सात सूत के सरिये मोडना, काच पीसना, लोहे की बेल तोडना, छाती पर पत्थर तुडवाना आदि किया गया, जिसमें लोगो के आश्चर्य का ठिकाना नही रहा।

इस शिविर की विशेषता यह रही कि दो नौजवानो को शिक्षक के रूप में मान्यता दी गई। जिन्होंने प्रतिदिन शाखा लगाने की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया। आर्यसमाज नजफगढ व आर्यसमाज वजीराबाद (गुडगावा) ने पचास पचास (१००) रुपये मासिक वजीराबाद के शिक्षक ब्र० सतीशकुमार को नियुक्त किया तथा इसी प्रकार जनौला गाव मे ब्र० सुबेसिह को भी नियुक्त किया गया। जिसका सचालन मा० खजानसिह जी करेंगे तथा दोनो गावो के नवयुवको हेतु शीघ्रातिशीघ्र पुस्तकालय स्थापित किये जारहे हैं।

ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री
महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49



ओ३म्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री

वर्ष १३, अङ्क २,   २१ जन १९८६

अग्निहोत्र क्यों करें ?

अग्नि मे आहुत किया गया पदार्थ सम्बन्धी क्रिया को अग्निहोत्र कहते हैं। वैदिक विचारधारा मे अग्निहोत्र का बडा महत्त्व है। इसे हवन भी कहते हैं। प्रत्येक शुभ कार्य का प्रारम्भ हवन से होता है। महर्षि दयानन्दकृत १६ सस्कारो मे अग्निहोत्र का मुख्य स्थान है। सस्कारो मे हवन का वही स्थान है, जो स्थान भोजन बनाने मे पानी का। अग्निहोत्र का वैज्ञानिक आधार क्या है? ऋषि इसे अपने जीवन मे अभिन्न अग क्यो बनाये रखते थे?

मुख्यतौर पर अग्निहोत्र के चार उद्देश्य कहे जाते हैं, जो ये हैं—१ वैयक्तिक तथा सामाजिक वायुमण्डल को शुद्ध करना, २ वैयक्तिक तथा सामाजिक रोगो को दूर करना, ३ रोग के कीटाणुओ को नष्ट करना, ४ वृष्टि की कमी को दूर करना।

सबसे पहले समझ लेने की बात यह है कि अग्नि मे डाला हुआ पदार्थ नष्ट नही होता। अग्नि स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म रूप मे परिवर्तित कर देता है। यज्ञ करते हुए अग्नि मे घी, गुगल, जायफल, जावित्री, मुनक्का आदि जो कुछ डाला जाता है, वह सब परमाणुओ से टूट टूटकर सारे वायुमण्डल मे व्याप्त हो जाता है।

उदाहरणार्थ—जब तक मिर्च को आप जेब मे डाले रहेंगे कुछ नही होगा, ज्योहि आप अग्नि मे डाल देते हैं, तो देखिए—आपकी परेशानी कितनी बढ जाती है। मनु जी ने तो सच ही कहा है—

"अग्नौ हुत हवि सम्यक् आदित्य उपतिष्ठति।"

अर्थात् आग मे डालने से हवि सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाती है। अग्नि परिमाणात्मक (Quantitative) तथा गुणात्मक (Qualitative) भी परिवर्तन करता है। सूक्ष्म परमाणुओ मे विभक्त हो जाने से औषधियो का भी गुण बढ जाता है। अग्निहोत्र का यह आधारभूत सिद्धात है। इस सिद्धात को आयुर्वेद, एलोपैथी, होम्योपैथी आदि सब चिकित्सा पद्धतिया स्वीकार करती हैं।

मनुष्य का स्वास्थ्य उसके शुद्ध रुधिर पर आश्रित है। रुधिर जितना शुद्ध होगा, व्यक्ति उतना ही स्वस्थ होगा। शरीर मे रुधिर का सचार तो हृदय से होता है, परन्तु अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने का काम फेफडे का है। जैसे खाना पेट से हजम होकर, रुधिर बनकर शरीर में खपता है, वैसे यह रुधिर जिस पर स्वास्थ्य तथा जीवन निर्भर है, फेफडो द्वारा शुद्ध होकर शरीर मे सचार करता है तथा हमे जीवनी शक्ति प्रदान करता है। अगर फेफडो में शुद्ध तथा पौष्टिक वायु पहुँचेगी तो व्यक्ति स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल होगा। अगर फेफडो में अशुद्ध कीटाणु मिश्रित अपौष्टिक हवा पहुँचेगी तो व्यक्ति अस्वस्थ कुरूप तथा बेडौल होगा।

ये शुद्ध तथा पौष्टिक हवा कहा से आयेगी। ये सब हमे अग्निहोत्र से ही मिल सकती है। उपरोक्त तथ्यो को ध्यान मे रखकर हमे सोच लेना चाहिए कि हम लोगो को अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिये।

आर्यसमाज नाहरी प्रगति के पथ पर बढ़ते कदम

आर्यजगत् को यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज ग्राम नाहरी (सोनीपत) ने इस वर्ष के आरम्भ मे यह निश्चय कर लिया था कि पारिवारिक सत्सग हर रविवार को वर्ष १९८६ में किसी आर्य परिवार मे आयोजित किया जायेगा। जिसमे अग्निहोत्र यज्ञ आदि वैदिक प्रवचन की व्यवस्था होनी चाहिए। इसी सकल्प के अनुरूप यज्ञ तथा वेदप्रचार अधिक से अधिक, यहा तक कि सप्ताह मे दो-दो तीन तीन परिवारो मे हो रहा है जिसके फलस्वरूप लोगो की रुचि तथा आस्था वैदिकधर्म मे नित प्रति बढती जारही है।

अब आर्य परिवारो की ओर से यह माग की जारही है कि ग्राम नाहरी मे आर्यसमाज के प्रचार कार्यों को तीव्रगति देने के लिए आर्य-समाज मन्दिर की अति आवश्यकता है। ग्रामीण आर्य परिवारो के इस शुभ विचार का आदर करते हुए आर्यसमाज नाहरी की कार्यकारिणी ने आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण हेतु धन-सग्रह (दान द्वारा) करने का निर्णय किया है। जिसको सर्वसम्मति से पारित किया गया।

आर्यसमाज नाहरी ने यह भी निर्णय किया है कि चालू वर्ष मे आस पास की ग्रामीण जनता मे जागृति पैदा करने के लिए तथा वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु (जलसा) महोत्सव किया जाये। सदस्यो की आशा है कि ईश्वर कृपा से हमारे दोनो कार्य भली-भाति सम्पन्न हो जायेगे।

—रामस्वरूप आर्य

आर्यसमाज रोड रामपुरा कोटा राजस्थान का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रामेश्वर भूलियान, उपप्रधान—श्रीकृष्ण जीसा[illegible], बिरधीचन्द, श्रीमती रुक[illegible]णी देवी, मन्त्री—वैद्य भगवतीप्रसाद श्याम, उपमन्त्री—रामदयाल, [illegible] बाहेती, कोषाध्यक्ष—कल्याणमल मित्तल, पुस्तकालयाध्यक्ष—ब्रजनन्दन मठसीगलग, आर्य वीर दल अधिष्ठाता—श्यामबिहारी भार्गव, लेखाअकेक्षक—प्रह्लादकृष्ण भार्गव।

आर्यसमाज में नवचेतना के लिए संस्कार आवश्यक

ले०—शिवकुमार शास्त्री

संस्कारों के क्रम में चौथा संस्कार जातकर्म है। इस संस्कार को भी लोग भूल गये। आर्यसमाज के प्रचार से केवल इतनी मधु जागृति हुई कि लेकर सोने की सलाई अथवा उस काम आ सकने वाले किसी सोने के आभूषण से बच्चे की जिह्वा पर घर में पढ़ी लिखी कोई देवी अथवा पुरुष 'ओ३म्' लिख देता है। इस संस्कार को सांगोपांग पांच प्रतिशत आर्यसमाजी भी कठिनाई से सम्पन्न करते होंगे।

संक्षेप में इसकी रूपरेखा निम्न है।

बच्चे के जन्म लेने पर दाई अथवा नर्स के द्वारा बच्चे के शरीर की शुद्धि तथा नाड़ी छेदन होने पर यज्ञवेदी तैयार करके पुरोहित को यथाविधि आसनादि देकर यज्ञ प्रारम्भ करे। निर्दिष्ट आहुतियां देने पर सामवेद मन्त्र ब्राह्मण के दो मन्त्रों से दो आज्याहुति प्रसूता के विशेष गुणों की परिचायक हैं। इसके पश्चात् बालक को मधु चटाने की विधि प्रारम्भ करें कुमार जात पुराऽन्यैरालम्भात् सर्पिर्मधुनी हिरण्यनिकाषं हिरण्येन प्राशयेत्॥ अर्थात् उत्पन्न हुए बालक को दूसरों के गोद में लेने से पूर्व घृत और शहद को सोने के साथ घिसकर सोने की शलाका से खिलावे। खिलाने की विधि यह है कि घृत की एक बूंद और मधु की तीन बूंद इस अनुपात से उसे तैयार कर। यहां संस्कार विधि में 'बराबर' शब्द का प्रयोग गुजराती भाषा का है। जिसका अर्थ है उचित' यदि बराबर का अर्थ समभाग किया जावे तो यह बड़ी भूल होगी। क्योंकि मधु और घृत समान मात्रा में मिलकर विष बन जाते हैं। अतः आयुर्वेद की दृष्टि से घी से मधु तीन गुणा अधिक होना चाहिए।

मधु के तैयार होने पर उसमे सोने की सलाई से बच्चे की जीभ पर 'ओ३म्' लिखकर बच्चे के दाहिने कान में वेदोऽसीति तेरा गुप्त नाम वेद है, ऐसा सुना के उस मधु को सात मन्त्रों को बोल के सात बार चटावे। उन मन्त्रों में प्रथम मन्त्र 'प्र ते ददामि' का भाव है कि तू सौ वर्ष तक इस संसार में सानन्द रह। दूसरे मन्त्र 'मेधां' ते दधामि धारणावती बुद्धि का तू स्वामी हो। तीसरे मन्त्र में 'भूस्त्वयि दधामि' तेरे लिए प्राणदाता प्रभु को मैं स्मरण करता हूं। चौथे मन्त्र में भुवस्त्वयि दधामि' दुःख हर्ता प्रभु को मैं स्मरण करता हूं। पांचवा मन्त्र 'स्वस्त्वयि दधामि' सुखस्वरूप प्रभु को मैं स्मरण करता हूं। छठा मन्त्र भूर्भुवः स्वस्सर्वं त्वयि दधामि' जो ईश्वर प्राण-रक्षक, दुःख नाशक और गति का आधार है, उसका मैं स्मरण करता हूं। सातवां मन्त्र 'सदसस्पतिमद्भुत' ज्ञान के स्वामी, आश्चर्यस्वरूप, आनन्ददायक, जीवमात्र के अभिलषणीय ईश्वर से मैं मेधा धारणावती बुद्धि की प्रार्थना करता हूं, इस प्रकार निर्दिष्ट मन्त्रों से बार बार मधु चटाकर, चावल और जौ को शुद्ध कर पानी से पीसकर वस्त्र से छानकर एक पात्र में रख के, हाथ का अंगूठा और अनामिका से थोड़ा-सा लेकर 'इदमाज्यम्, इदमन्नम् इदमायु इदममृतम्' साम मन्त्र ब्राह्मण के इस मन्त्र का उच्चारण करके बच्चे के मुख में एक बिन्दु छोड़ देवे। मन्त्र का भाव स्पष्ट है, यह पेय कान्तिदायक है, यही खाने के योग्य पदार्थ है, यही आयु को बढ़ाने वाला है, यह उत्तम रसायन है।

इसके पश्चात् बच्चे को दीर्घायु के लिए ९ मन्त्रों के जाप का विधान है, जिसमें प्रभु, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा वेद का अध्ययन और उसके अनुसार आचरण ज्ञानी दीर्घजीवी विद्वानों का सत्संग, ऋषि और महात्माओं का उपदेश, माता और पिता के परामर्श के अनुसार आचरण और यज्ञ का अनुष्ठान, इन नौ के अनुसार विचार और आचरण होने पर निश्चित ही यह बालक स्वस्थ सुखी और दीर्घायु होगा।

इस विधि के बाद आशीर्वाद के तीन मन्त्र जिनमें दो ऋग्वेद के और एक पारस्कर गृह्य सूत्र का है, बोलने का विधान है। मन्त्र बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसलिए उनका उल्लेख करना हितकर होगा।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्॥
ऋ० २।२१।६

शब्दार्थ—(इन्द्र) हे धनों के अधिपति प्रभो! (श्रेष्ठानि द्रविणानि) अति प्रशंसनीय धनों को, जिनके अर्जन में कोई छलछिद्र और किसी का उत्पीडन और शोषण न हो (अस्मे) हमारे उपयोग के लिए (धेहि) दो और (दक्षस्य) कर्म करने के (चित्तम्) सामर्थ्य को दीजिये। इसके अतिरिक्त हमें (सुभगत्वम्) प्रसन्न रहने की योग्यता दीजिये। (तनूनाम् अरिष्टिम्) नीरोग शरीर दीजिये (वाचः स्वाद्मानम्) मीठी वाणी दीजिये। (अह्नाम् सुदिनत्वम्) हमारे लिए दिन प्रसन्नता और हर्ष का सन्देश लेकर आवें। यह मन्त्र इतना भावपूर्ण और उदात्त उपदेश से भरा हुआ है कि इसके अनुसार धनादि उपभोग की वस्तुओं के अर्जन में जो हम चुस्ती चालाकी बरतते हैं वे ही हमारे भाग्य को कण्टकाकीर्ण कर देते है। इसके साथ ही हमें जीने की कला भी बताई। हमें सदा प्रसन्न रहना चाहिए। यह गुण पैसे से नहीं आता। पैसे वाले तो निन्यानवे के फेर में पड़े रहते हैं और दुःखी रहते हैं। यह बड़ी विचित्र सी बात है। ठीक कहा है किसी उर्दू के शायर ने —

जिसको खुश रहने के सामान मुयस्सर सब हैं।
उसको खुश रहना भी आये यह जरूरी तो नहीं॥

वाणी के माधुर्य की बात कह के तो जीवन को रसमय बनाने का संदेश दिया। इससे अगले मन्त्र में भी बहुत उत्तम भाव है। प्रार्थना की गई है कि हमें वह धन दे जो 'विश्ववारस्य भूरे राय' सबसे स्वीकार करने योग्य और पुष्कल धन दो जिसका सब हिलमिल कर उपयोग करें।

इसके पश्चात् गृह्य सूत्र का आशीर्वचन क्रमानुसार है। "अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्रुतं भव। वेदो वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम्। हे बालक ईश्वर करे कि तू पत्थर के समान दृढ़ हो, दुष्टों के लिए परशु और वज्र के समान हो, अपने स्वरूप से चमचमाते होने के समान तेजस्वी और प्रभावशाली हो। तू मेरा पुत्र मेरा ही दूसरा रूप है। केवल पुत्र संज्ञा मात्र से भिन्न है। प्रभु कृपा करे कि तू शतायु हो।

यह जातकर्म चतुर्थ संस्कार की संक्षिप्त रूपरेखा है।

अध्यापक अपने मूल-कर्त्तव्य को सम्भालें

माननीय अध्यापकगण! मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि हरयाणा बचाओ, मुहिम चलाओ। हरयाणा में आपसे बेहतर तथा फैलाव में दूसरा कोई भी वर्ग नहीं है, जो हरयाणा को सम्भाल सके। अतः आप कर्णधार बनें।

अतः हमने संकल्प लेना है कि १९८६ के वर्ष में लोगों में पुरानी संस्कृति को जागृत करें। शराब ने जो हानि आज हरयाणा की की है, उसे सहन करने की शक्ति हरयाणा में नहीं है। आर्थिक अवस्था हरयाणा की काढ़ा पानी पीने की है। जमा धन के नाम पर कुछ नहीं है। सरकार को ध्यान नहीं है। यह साधारण प्राकृतिक साधनों वाला प्रान्त नष्ट हो जावेगा। भूमि पर भार काफी आ चुका है। रोहतक, सोनीपत, गुडगांव, फरीदाबाद, करनाल में तो भूमि जोतने के लिए भी आज किसान तरसता है। प्रति परिवार दो एकड़ भूमि से कम औसत आती है। इतनी थोड़ी जोत के लिए साधन भी नहीं जुटाया जा सकता है।

मैं अपने बुद्धिजीवी भाइयों से प्रार्थना करता हूं कि वे सर्वहितकारी पत्र में क्षेत्र की उन्नति हेतु लेख लिखकर अध्यापकों को जागृत करें। आर्य प्रतिनिधि सभा से हर अध्यापक को सम्पर्क करना चाहिए। दयानन्दमठ को देश का हितकारी स्थान बनाने का यत्न करना चाहिये। इस स्थान को सब अपना कल्याणकारी स्रोत समझें। सेवा-निवृत्त अध्यापकों को यहां अपना अधिक से अधिक समय देकर कर्तव्य का पालन करना चाहिए। सेवा-निवृत्त अध्यापक वानप्रस्थ भले ही न लें, पर अपने आप को वानप्रस्थी के तुल्य अवश्य बना लें। अध्यापक जो भी अपनी सभा करें, वे इसी स्थान पर करें तथा इस स्थान को अपना कल्याणकारी स्थान बना लें। मैं आशा करता हूं कि आप हरयाणा के उत्थान हेतु शीघ्र ही अच्छा कदम उठाकर अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। पुनः हर अध्यापक को सर्वहितकारी का ग्राहक बनना चाहिए।

दीपचन्द सेवा-निवृत्त अध्यापक

अबोहर फाजिल्का क्षेत्र की हिन्दी-भाषी जनता के प्रति घोर विश्वासघात

ले०—तेगराम भू०पू० विधायक अबोहर

जब से हरयाणा अलग राज्य बना, तभी से हरयाणा कांग्रेस (इ) सरकार लगातार मांग करती रही कि अबोहर फाजिल्का का हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा में मिलाया जावे; क्योंकि इसके निवासी हिन्दी भाषी हरयाणा, राजस्थान से आकर आबाद हुए। जिनकी भाषा, वेशभूषा, रहन-सहन, रीति रिवाज आदि सब कुछ हरयाणा व राजस्थान निवासियों-सा ही है। इनके पुराने गांव व परिवार अभी भी वहां हैं।

हरयाणा में कांग्रेस (इ) ही नहीं, अन्य सभी पार्टियों सामाजिक संगठन व संस्थायें एक स्वर से इस क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने की मांग करती रहीं। इसीलिए स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने २९ जनवरी, १९७० के एवार्ड में चण्डीगढ के बदले में अबोहर फाजिल्का शहर व १०५ हिन्दी भाषी गांव हरयाणा को देने की घोषणा की। तभी से हरयाणा सरकार तथा यहां की जनता केन्द्रीय सरकार से मांग करती रही कि यह एवार्ड यथाशीघ्र ज्यों का त्यों लागू करे, चण्डीगढ तभी पंजाब को दिया जावे, जब वह हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को दिये जावें। इस प्रकार हरयाणा कांग्रेस अब तक इस स्टैंड पर अटल रही कि अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को सौंपे बिना, चण्डीगढ पंजाब को न दिया जावे।

किन्तु अब वेंकट रमैया आयोग ने अबोहर फाजिल्का क्षेत्र की चर्चा किये बिना ही २१ जून को चण्डीगढ पंजाब को देने का निर्णय दिया तो हरयाणा की कांग्रेस (इ) सरकार मन्त्रियों, सांसदों, विधायकों व कांग्रेस नेताओं ने केन्द्रीय सरकार के आगे आत्मसमर्पण कर, आंख मूंद कर भी वेंकट रमैया आयोग की रिपोर्ट पर अंगूठा लगाने में क्षणभर की भी देरी न की। इस बात की भी प्रतीक्षा न की कि प्रतिपक्ष पंजाब की इस आयोग की रिपोर्ट पर क्या प्रतिक्रिया होती है। अतः २१ जून को शहर चण्डीगढ पंजाब को देना स्वीकार कर लिया। अबोहर फाजिल्का क्षेत्र लेने का जिक्र करने का साहस तक न किया।

इन १५ वर्षों में केन्द्रीय सरकार निरन्तर यह आश्वासन देती रही कि १९७० का एवार्ड ज्यों का त्यों कायम है। वह अक्षरशः लागू होगा। किन्तु बिना कोई तर्क दिये या कारण बताये १९७० के एवार्ड को रद्द कर हरयाणा व पंजाब सरकार को विश्वास में लिए बिना ही प्रधानमन्त्री ने केवल एक व्यक्ति के साथ नये सिरे से पंजाब समझौता कर, उस भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के एवार्ड को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया जिनके प्रति आज की कांग्रेस सरकार गहरी श्रद्धा प्रकट करती है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री से लेकर केन्द्रीय व सभी कांग्रेस (इ) शासित राज्यों के मन्त्री मण्डल व सांसद श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। किन्तु उनके एवार्ड को एकदम रद्द कर देने पर किसी कांग्रेसी, विशेषतः हरयाणा की कांग्रेस (इ) सरकार व नेताओं के मुख से एक शब्द भी न निकला कि इस १९७० के एवार्ड को तुरन्त लागू कर दिया जावे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है, स्थायी यादगार है। उनके एवार्ड को रद्दी की टोकरी में फेंका। श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति गहरा विश्वासघात तथा घोर निरादर है।

वेंकट रमैया आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में ये शब्द अवश्य कहे कि 'भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हरयाणा को चण्डीगढ के बदले में अबोहर व फाजिल्का के १०५ गांवों की ३ लाख ५९ हजार एकड भूमि देने पर सहमति प्रकट की थी।' किन्तु इससे आगे रमैया आयोग की लेखनी रुक गई। वह यह लिखने का साहस न कर सके कि स्वर्गीय प्रधानमन्त्री की इच्छानुसार २१ जून को चण्डीगढ पंजाब को देने के साथ ही फाजिल्का तहसील के १०५ गांवों की ३ लाख ५९ हजार एकड भूमि हरयाणा को दी जावे। दुःख तो इस बात का है कि हरयाणा सरकार ने अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को तो भुलाया, तिरस्कृत किया ही, किन्तु रमैया आयोग द्वारा ३ लाख ५९ हजार एकड भूमि की बजाये, केवल ७० हजार एकड भूमि देने के जबानी वायदे पर हमने खुश होकर चटपट आयोग की रिपोर्ट पर स्वीकृति दे दी। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि हरयाणा सरकार उसके शासकों का मनोबल इतना गिर जावेगा ये इतने Demovalise हो जावेंगे कि जिस क्षेत्र अबोहर फाजिल्का के लिये २० वर्ष में मांग करते रहे, अब उसको रोने के लिए उनके मुंह से एक भी शब्द न निकला।

चण्डीगढ पंजाब को तथा उसके बदले में पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र साथ साथ हरयाणा को हस्तांरित करने का पंजाब समझौता नहीं टूटना क्या हरयाणा सरकार इसे भी सहन कर लेगी। इसके विरुद्ध आवाज न उठायेगी ?

अकाली कन्दूखेडा देना नहीं चाहते तो फिर चण्डीगढ के निकट—

मनीमाजरा आदि का ७॥ हजार एकड़ क्षेत्र किस मुंह से मांगते है ?

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

रोहतक १९ जून —आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने अपने प्रेस वक्तव्य में कहा है कि जब अकाली सरकार ने हरयाणा को एक छोटा-सा पंजाबी भाषी ग्राम कन्दूखेडा नहीं दिया तो फिर चण्डीगढ के निकट के मनीमाजरा आदि हिन्दी भाषी ग्राम जिनका क्षेत्रफल ७॥ हजार एकड के लगभग है और जिनमें चण्डीगढ का रेलवे स्टेशन एवं कुछ पहाडी क्षेत्र भी है को वे किस मुंह से पंजाब के लिए मांग रहे हैं ? अकाली कड़वा कड़वा थू तथा मीठा-मीठा हजम करने की कहावत पर चल रहे हैं। शाह कमीशन ने चण्डीगढ तथा खरड तहसील का हिन्दी भाषी भाग हरयाणा में मिलाने की सिफारिश की थी परन्तु इन्दिरा गांधी ने संत फतेहसिंह की जान बचाने के लिए चण्डीगढ पंजाब को तथा अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को देने का एवार्ड दिया था, परन्तु अकाली सरकार चण्डीगढ को लेने के लिए उतावली है और उसके बदले अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र तो दूर रहे वे अन्य हिन्दी भाषी ग्राम भी देने के लिए अनेक प्रकार के बहाने बना रही है।

प्रो० शेरसिंह ने बरनाला सरकार की हठधर्मी की निन्दा करते हुए उन्हें सद्भावना दिखाने का परामर्श दिया है। समझौता तभी होता है जबकि बदले में बराबर की दनदारी की जाये, परन्तु वे हरयाणा से लेने की बातें करते हैं। बदले में कुछ भी देने को तैयार नहीं हैं।

क्या समाज-सुधार थोपा नहीं जाता ?

ले०—डा० भवानीलाल भारतीय

मुस्लिम महिला तलाक विधेयक पर हुई लोकसभा की बहस के दौरान सत्तापक्ष के वक्ताओं और मन्त्रियों ने यह बात अनेक बार कही कि किसी भी वर्ग के लिये सुधार का कानून तभी बनाया जा सकता है यदि उसी समाज के लोग उस सुधार के लिए माग करे। सरकार किसी भी वर्ग या समाज पर सुधारो को थोप नही सकती। इस सम्बन्ध मे विचार करने पर कई मुद्दे सामने आते है। किसी भी रूढिवादी समाज से यह आशा करना बेकार है कि वह सुधार के लिये कानून बनवाने की माग स्वय आगे होकर करेगा। वस्तुत सामाजिक सुधारो के लिये कानून बनाने का काम तो शासन को स्वय आगे होकर करना पडता है। सतीप्रथा को बन्द करने के लिए कानून बनाने की माँग रूढिवादी हिन्दुओ ने कभी नही की, किन्तु तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बटिक को इस पाशविक प्रथा को समाप्त करने के लिए कानून बनाना पडा। विधवा विवाह को वैध घोषित करने के लिए अग्रेजी सरकार ने रूढिवादियो के विरोध के बावजूद १८५० ई० मे ही कानून बनाया और इसी प्रकार १९२९ मे बालविवाह को रोकने के लिए शारदा एक्ट बनाया। यद्यपि काशी के पौराणिक पण्डितो ने इसे हिन्दुओ की सामाजिक प्रथाओ मे हस्तक्षेप कहा था।

लोकमन्य तिलक इस विचार के अवश्य थे कि विदेशी सरकार को भारतवासियो के सामाजिक मामलो मे कानूनी दखल देने का कोई अधिकार नही है। इसलिये उन्होने सहवास अनुज्ञा बिल का विरोध किया था, किन्तु गोरी सरकार ने उनकी बात की तनिक भी परवाह नही की और सहवास बिल पास कर दिया। मुस्लिम महिला बिल पर बहस के समय गृहमन्त्री ने यह कहा था कि ईसाइयो और हिन्दुओ में तो एक पत्नी प्रथा का धार्मिक दृष्टि से पालन किया जाता है। यदि मुसलमान भी बहुविवाह के विरोध मे अपनी राय दे तो कल ही ऐसा कानून बनाया जा सकता है। मन्त्री महोदय को यह पता नही कि हिन्दू शास्त्रो मे बहु-विवाह के विरोध मे कोई स्पष्ट आदेश नही है। जबकि पौराणिक और मध्यकालीन इतिहास मे बहुपत्नीवाद की चर्चा सर्वत्र आती है। यदि आज हिन्दू कानून के अनुसार किसी हिन्दू को एक पत्नी के जीवित रहते दूसरे विवाह की आज्ञा नही है तो यह हिन्दू समाज का प्रगतिशील और युगसापेक्ष दृष्टि का ही द्योतक है, जबकि पढे-लिखे मुसलमानो का भी शरियत के आधार पर बहु-विवाह को जायज करार देने की बात कहना उनकी प्रतिगामी दृष्टि तथा रूढिबद्ध विचारो का परिचायक है।

अच्छा तो यह होता कि भारत सरकार मुसलमानो मे व्याप्त अशिक्षा, दरिद्रता, तगखयाली, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव आदि को दूर करने के लिए उपयुक्त कदम उठाती। केवल यह कह देना ही काफी नही है कि शासन सामाजिक सुधार के लिए तभी कदम उठा सकता है, जबकि उसकी माग हो। भारतीय सविधान के निर्देशक तत्त्वो मे ही जब समस्त देशवासियो के लिये एक सी आचार सहिता तथा एक ही प्रकार के कानूनो की बात कही गई है तो बेचारी मुसलमान नारियो को उनके न्यायोचित अधिकारो को प्राप्त करने से क्यो वचित किया जाता है।

स्मरण रखना होगा कि क्रातिकारी सुधार तो शासन को अनिवार्यत करने ही होते है। क्या अनिवार्य शिक्षा को लागू करने, जातपात के भेदभाव तथा अस्पृश्यता जैसे दोषो को समाप्त करने के लिए सरकार कानून बनाकर इन्हे जनता पर अनिवार्यत नही थोपेगी। इस प्रसग मे मुस्लिम सत्य शोधक मण्डल के भूतपूर्व कार्यकर्त्ता स्व० हमीद दलवई का यह कथन बार-बार स्मरण हो आता है कि भारतीय मुसलमानो का यह दुर्भाग्य रहा कि उनमे राममोहनराय, दयानन्द और गाधी जैसे उदार-चेत्ता समाज सुधारक उत्पन्न नही हुए और ये लोग सदा ही कट्टरपथी मौलवियो के शिकार होते रहे और वे लोग इन्हे बलि का बकरा बनाते रहे।

पुस्तक समीक्षा

जून मास में सर्वहितकारी में समालोचनार्थ निम्नलिखित दो पुस्तकें प्राप्त हुई हैं।

१) "व्याकरण-शास्त्रम्" (द्वितीय खण्ड)
(दशगणात्मकम्)
"विशारदशास्त्रिपरीक्षोपयोगिसस्करणम्"
मूल्य २० रुपये

२) "बालसस्कारविधि"
(महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रतिपादित)
'विशारदपरीक्षोपयोगि सस्करणम्'
मूल्य १० रुपये

प्रकाशिका—श्रीमती सुशीला आर्या

सचालिका—सस्कृत सेवा सस्थान

८०/३२ हरिसिह कालोनी (सुनारिया मोड), रोहतक-१२४००१

इन दोनो ही पुस्तको के क्रमश रचयिता एव अनुवादक आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् गुरुकुल झज्जर एव गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक डा० सुदर्शनदेव आचार्य ग्राम पो० बालन्द (रोहतक), अध्यक्ष सस्कृत-विभाग, राजकीय महाविद्यालय, गोहाना (सोनीपत) हैं।

दोनो ही पुस्तकें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, पजाब एव कुरुक्षेत्रादि विश्वविद्यालयो से विशारद मध्यमा, शास्त्री आदि परीक्षोदधि उत्तीर्ण करने हेतु जलपोत के समान सहायक हैं। दोनो ही पुस्तको के विषयो को विद्वान् लेखक ने स्पष्ट, सरल एव शुद्ध सस्कृत मे निबद्ध किया है। छपाई का कागज उत्तम है। "व्याकरण शास्त्रम्' के अन्त में यदि अकारादिक्रम से धातु एव सूत्र सूची भी जोड दी जाती तो बहुत सुविधा होती। मुद्रक के रूप में आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द-मठ रोहतक के स्वामी श्री वेदव्रत शास्त्री ने शुद्ध, सुन्दर एव सुपाठ्य मुद्रण करके पुस्तको की शोभा को अत्यधिक बढाया है। सुयोग्य शिष्य ने गुरु दक्षिणा के रूप मे अपनी दोनो ही पुस्तकें आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी, प्रसिद्ध इतिहासविद्, तपोधन श्रद्धेय गुरुवर, पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर (रोहतक) की सेवा में समर्पित की हैं।

ये पुस्तके छात्रो, अध्यापको, गुरुकुलो, विद्यालयो, महाविद्यालयो एव पुस्तकालयो के लिए सग्रहणीय हैं। डा० सुदर्शनदेव आचार्य को इन रचनाओ के लिए हार्दिक बधाई।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

गोगामेड़ी मे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

ग्राम परलीका मे २२ से २९ जून तक (वैदिक साधु आश्रम गोगामेडी) की ओर से १०० युवको का प्रशिक्षण शिविर लगाया जारहा है। जिसमें युवको को सत्य सनातन वैदिकधर्म के सिद्धातो की शिक्षा दी जावेगी तथा शारीरिक विकास के लिए योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, कुश्ती तथा लाठी चलाना आदि व्यायामो का प्रशिक्षण दिया जावेगा। आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वानो एव व्यायामाचार्यो द्वारा आठ दिन तक युवको के आत्मिक, शारीरिक एव सामाजिक विकास के लिए यह प्रशिक्षण दिया जारहा है। युवको को ऐसे सुनहरे अवसर का पूर्ण लाभ उठाकर जीवन सफल बनाना चाहिए। वर्तमान मे देश को चरित्रवान् युवको की आवश्यकता है। प्रवेश पाने वाले युवक शीघ्र ही वैदिक साधु आश्रम गोगामेडी से सम्पर्क करे। प्रवेश शुल्क २५) होगा। भोजन की व्यवस्था शिविर मे ही होगी।

(साथ लाने हेतु आवश्यक सामान)

१ बनियान सैडो, २ निकर (हाफ पेन्ट), लगोट २, लोटा १ तथा समयानुकूल बिस्तर साथ लावें।

नोट —शिविरार्थी को पूरा समय शिविर स्थल पर ही रहना होगा।

—स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती शिविर अध्यक्ष

पुण्य तिथि पर विशेष—

पं० विश्वप्रिय जी शास्त्री

(गुरुकुल झज्जर के आदर्श उपाध्याय)

आपका जन्म २१ अप्रैल १९२१ ई० में जिला बिजनौर के लेदरपुर ग्राम में हुआ। आपके पिता श्री फतेहसिंह ग्राम के मुखिया थे। आपके चार भाई-बहन थे। आप सबसे छोटे थे। आपके बडे भाई प्रसिद्ध पहलवान थे, जिनका यौवन अवस्था मे ही स्वर्गवास हो गया। आपके भाई खेमसिंह अब भी ग्राम के मुखिया हैं। आपकी बहन बसन्ती का भी यौवन अवस्था मे ही स्वर्गवास हो गया था। आपकी बाल्यावस्था मे ही आपकी माता जी का देहान्त हो गया था। अत आप मातृस्नेह से वंचित रहे। बडी अवस्था मे आपने शिक्षा आरम्भ की। ग्राम मे विद्यालय नही था, अत नदी को पार करके समीपवर्ती शेरकोट उपनगर मे आप पढने जाते थे। आप बुद्धिमान् होने के कारण कक्षा में सदा सर्वप्रथम रहते अत छात्रवृत्ति भी मिलती और फीस भी माफ रहती थी।

आपने विद्यालय मे १९३७ मे मिडल परीक्षा उत्तीर्ण की। १९३८ से १९४५ तक श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री के चरणो मे बैठकर दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली मे अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि आर्ष ग्रथो का अध्ययन किया। सन् १९५१ मे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्यारत्न, १९५५ मे एजूकेशन बोर्ड उत्तर प्रदेश से हाई स्कूल, १९५२ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य रत्न, १९५५ मे पजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, १९६३ मे दरभगा विश्वविद्यालय से आचार्य परीक्षा योग्यतापूर्वक उत्तीर्ण की।

दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली मे व्याकरण महाभाष्य आदि की शिक्षा पूर्ण करके अपने सहपाठी ब्रह्मचारी भगवान्देव (ओमानन्द सरस्वती) के आग्रह पर सन् १९४६ मे आपने गुरुकुल झज्जर मे उपाचार्य पद पर कार्यभार सम्भाला। यहा आपने बडी निष्ठापूर्वक लगातार दस वर्ष तक पाणिनीय व्याकरण का बडी योग्यता एव कुशलतापूर्वक अध्ययन कार्य किया। इसी सेवा काल मे सन् १९४६ मे गुरुकुल सामनी की स्नातिका जयावती देवी के साथ वैदिक रीति से विवाह किया। जिसकी कुक्षि मे आपको धीरा, वेदप्रिय, ब्रह्मप्रिय, सर्वप्रिय, आनन्दप्रिय तथा विजयप्रिय नामक पुत्री एव पुत्ररत्न प्राप्त हुए।

आपके सहपाठी ब्रह्मचारी हरिशरण जी ने भी आचार्य भगवान्देव जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज सेवा का व्रत पालन किया। इसी प्रकार आपके सहपाठी प० सुरेन्द्रकुमार जी तथा प० श्रुतिकात जी भी संस्कृत शिक्षा के कार्य मे आजीवन कटिबद्ध रहे।

आपने गुरुकुल झज्जर मे अध्यापन तप के द्वारा निम्नलिखित विद्वानो को तैयार किया। उस समय मा० धर्मसिंह तथा फतेहसिंह भण्डारी भी आचार्य भगवान्देव जी के साथ जी-जान से जुटे हुए थे।

१ श्री यज्ञदेव जी शास्त्री लूलोठ रोहतक वर्तमान-संस्कृत अध्यापक।
२ वेदव्रत जी शास्त्री घासीकावास झुंझुनु, वर्तमान सम्पादक सर्वहितकारी
३ सुदर्शनदेव जी आचार्य बालन्द, रोहतक वर्तमान-सभा उपमन्त्री
४ राजवीर जी शास्त्री फजलगढ, मेरठ वर्तमान-सम्पादक दयानन्द सन्देश
५ सत्यव्रत जी शास्त्री सुलतान बाजार हैदराबाद वर्तमान प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय
६ महावीर जी मीमासक सल्हावास? सोनीपत, वर्तमान प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय
७ सत्यवीर जी शास्त्री डालावास, भिवानी वर्तमान-सभा मन्त्री
८ सोमवीर जी चमराडा, करनाल वर्तमान-राजकीय चिकित्सक
९ मनुदेव जी शास्त्री डालावास, भिवानी वर्तमान-संस्कृत अध्यापक
१० यशपाल आचार्य सतनालीकावास, महेन्द्रगढ वर्तमान संस्कृत प्राध्यापक
११ मनुदेव जी योगी फरमाणा, रोहतक वर्तमान सत्यपति परिव्राजक
१२ धर्मपाल शास्त्री बोरी, उस्मानाबाद, हैदराबाद वर्तमान प्राध्यापक (संस्कृत)
१३ धर्मव्रत शास्त्री चुडेला झुंझनु वर्तमान उपाचार्य केन्द्रीय विद्यालय
१४ वेदपाल शास्त्री झोझूकला, महेन्द्रगढ वर्तमान संस्कृत अध्यापक।

आप कुशल अध्यापक के साथ-साथ उच्चकोटि के लेखक भी थे। आपके लेख सुधारक वैदिकधर्म, अग्रवाल, वेंकटेश्वर, दयानन्द सन्देश, आर्यमित्र, आर्य, वीर अर्जुन, सम्राट्, राष्ट्रवाणी आदि पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते थे। आपके आज निम्नलिखित लेख उपलब्ध हैं—

१ पजाब का हिन्दी आदोलन।
२ महर्षि दयानन्द और स्वराज्य।
३ मलेरिया का उपाय।
४ काल का निर्धारण (सृष्टि सवत्)।
५ शारीरिक पतन का कारण तम्बाकू।
६ गीता और अहिंसा।
७ संस्कृत की व्यापक ध्वनिया।
८. राजनीति और महर्षि दयानन्द।
९ दहेज प्रथा।
१० महर्षि दयानन्द और दहेज।
११ महर्षि दयानन्द और गोरक्षा।
१२ जन्दावस्ता और वेद।
१३ हिन्दी-रक्षा सत्याग्रह।
१४ उचित उपाय (हिन्दी रक्षा)।
१५ वास्तविक दर्पण।
१६ चाय का मानव देह पर दुष्प्रभाव।
१७ क्या वेद मे वशिष्ठ का इतिहास है?
१८ भाषाओ का विकास।
१९ महाभारत कालीन अद्भुत शस्त्रो की झाकी।

सन १९५७ मे आपने अध्यापन कार्य पूरा करके आचार्य भगवान्देव जी की अनुमति से गुरुकुल झज्जर से आकर नजफगढ तथा हसराज हायर सैकण्ड्री स्कूल दिल्ली मे शिक्षण कार्य किया। १९ जून, १९६५ मे हैजा रोग से आपका स्वर्गवास हो गया। आर्यसमाज मे आज आप जैसे व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् एव लेखक दृष्टिगोचर नही होते।

हे गुरुवर! तेरे चरणो मे मेरा है शत-शत प्रणाम।
ज्ञान-अजन की शलाका से खोल दिया नेत्र महान्॥

सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री

शोक प्रस्ताव

सेवा में,

श्रीमान् प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्दमठ, रोहतक बडे दुःख के साथ लिख रहा हूँ कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद (हरयाणा) मे नाजायज कब्जा करने वालो ने झगडा करके एक आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री (छगनलाल) वानप्रस्थ इन्द्रमुनि जी को लाठी तथा गोली से मार दिया। जो कि उसका स्वर्गवास आल इण्डिया मैडीकल इन्सटिच्यूट मे दिनाक ७६८६ को हो गया, सो बडे दुःख की बात है। अत आपसे प्रार्थना है कि ऐसे पवित्र स्थान को ठीक किया जाये, ऐसी आपसे प्रार्थना है।

मन्त्री आर्यसमाज सेक्टर-२३ न्यू टाउन, फरीदाबाद

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को पेंशन सम्बन्धी आवेदन-पत्र भरने मे कठिनाइयां

हाल ही मे भारत सरकार के स्वाधीनता सेनानी सम्मान प्रभाग ने १९३८-३९ के निजाम रियासत मे आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वालो को पेंशन देने की घोषणा की थी। आवेदन की अन्तिम तिथि ३० जून है। उस समय २८००० लोगो ने सत्याग्रह में भाग लिया था। पर अभी तक केवल २००० व्यक्तियो ने अपने आवेदन-पत्र गृह-मन्त्रालय को भेजे है। गत ४७ सालो मे अधिकाश व्यक्ति दिवगत हो चुके, कुछ अत्यन्त वृद्ध या विकलाग है। बहुत से पश्चिमी व पूर्वी पाकिस्तान मे विवरण छूट जाने के कारण आवेदन नही कर सके। बाकी बचे अधिसख्य आवेदनकर्त्ताओ को बारम्बार लिखने पर भी जेलो मे सर्टिफिकेट नही भेजे जा रहे है, जो कि फार्म भरने की आवश्यक शर्त है। उस सत्याग्रह का सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया था। सभा ने सरकार से माग की है कि आवेदको की पात्रता सभा द्वारा नियत समिति द्वारा प्रमाणित होने पर स्वीकार की जाये। इस विषय मे अभी तक सरकार का उत्तर न आने और आवेदन की अन्तिम तिथि ३० जून निकट आ जाने के कारण लोगो मे भारी बेचैनी है।

भारत सरकार के ऊचे पद से अवकाश प्राप्त श्री ब्रह्मदत्त स्नातक की गृह-मन्त्रालय का व्यक्तिगत फाइल मे निजाम रियासत की चारो जेलो के गजटेड अफसर द्वारा प्रमाणित प्रतिलिपिया मौजूद है। व स्वय भी गजटेड आफिसर थे। पर रिटायर होने के बाद उनकी मूल प्रतिया गुम है। अब गृहमन्त्रालय मूल प्रतिलिपियो की माग कर रहा है। श्री स्नातक जेल अधिकारियो से मूल प्रतिया प्राप्त करने के लिए हैदराबाद रवाना हो गये है। उनके साथ जेल के साथी भूतपूर्व ससदसदस्य और पूर्व अध्यक्ष रेलवे सर्विस कमीशन श्री नरदेव स्नातक, हाथरस के वैद्य सुरेशचन्द्र और मथुरा कालेज के श्री राजेन्द्रसिह वर्मा भी है। इसके अतिरिक्त अजमेर से भी कई व्यक्ति इसी काय के लिए इन दिनो वहाँ पहुच रहे है।

आवेदन करने के लिए बहुत थोडा समय देने, भूतपूर्व हैदराबाद रियासत के अब अलग-अलग राज्यो मे बट जाने, रियासत की जेलो मे रिकार्ड उपलब्ध न होने और जेल अधिकारियो की ओर से अभी तक कोई उत्तर न आने के कारण अधिकाश आर्य सत्याग्रही परेशान हैं। आर्यजनता की माग है कि आवेदन करने की तारीख ३० जून के बजाये ३१ अगस्त, १९८६ रखी जाये और गृहमन्त्रालय की ओर से हैदराबाद की जेलो के अधिकारियो को आदेश दे दिया जाये कि वे आवेदनकर्त्ता आर्य सत्याग्रहियो के जेल सर्टिफिकेट तुरन्त भेजे। अन्यथा आर्य सत्याग्रहियो को पेंशन देने की सारी योजना ही व्यर्थ हो जाने का खतरा है।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल जि० कुरुक्षेत्र के तत्वावधान मे डी० ए० वी० कालेज पुण्डरी मे एक दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसका सचालन आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी ने किया। शिविर मे लाठी, तलवार, छुरा दण्ड बैठक तथा भारतीय व्यायामो का प्रशिक्षण दिया गया। दीक्षात समारोह की अध्यक्षता ला० अमरसिह जी शोरेवाले ने की। मुख्य अतिथि कर्नल मदनगोपाल जी ने पुरस्कार वितरण किया। शिविराध्यक्ष प्रि० राजकुमार चौहान ने सब का धन्यवाद किया। गुरुकुल झज्जर के ब्र० रामदेव द्वारा शक्ति प्रदर्शन किया गया। आर्यवीरो के प्रदर्शन को सभी ने सराहा। वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री बाबूराम जी ने आगामी वर्ष मे ५०० आर्यवीरो का शिविर लगाने की घोषणा की। —उमेद शर्मा मन्त्री

उपव्यायाम शिक्षक शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन मे आर्यसमाज नरवाना मे उपव्यायाम शिक्षक शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे महाराष्ट्र आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, पजाब, दिल्ली, हरयाणा आदि स्थानो के लगभग १५० आर्यवीरो ने भाग लिया। प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी के सफल सयोजन से लगे इस शिविर ने युवा-पीढी मे नवचेतना का कार्य किया। दीक्षात समारोह मे जीद के अतिरिक्त उपायुक्त श्री रणजीतसिह आई ए एस ने पुरस्कार वितरण किया। समारोह की अध्यक्षता नरवाना के एस डी एम श्री राधाकृष्ण जी ने की। व्यायाम प्रदर्शन की सर्वत्र सराहना की गई। आर्यवीर रामकिशन, आदित्य, योगेश, वीरेन्द्र, नरेन्द्र, रणवीर, जयप्रकाश, वीरभान, अनिल आदि ने शिविर को सफल बनाने मे दिन रात एक करके मेहनत की। आर्यसमाज नरवाना के अधिकारियो का योगदान सराहनीय रहा। —रामकुमार आर्य मण्डलपति जीद

पंजाब को चण्डीगढ़ सौंपने से पूर्व पानी वितरण का भी फैसला किया जाये नहर निर्माण का कार्य भारत सरकार अपने हाथ मे लेवे : प्रो० शेरसिह

(कार्यालय निज सवाददाता द्वारा)

रोहतक २१ जून —पजाब सरकार के अनुरोध पर २१ जून को पजाब को चण्डीगढ तथा हरयाणा को उसके बदले मे हिन्दी भाषी क्षेत्र स्थानान्तरण करने की अवधि १५ जुलाई तक बढाये जाने के भारत सरकार के निर्णय पर हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि जब चण्डीगढ का मामला कुछ समय के लिए टल ही गया है तो पानी विवाद के समाधान के लिए गठित इराडी आयोग को भी अपनी रिपोर्ट १५ जुलाई तक प्रस्तुत कर देना चाहिए ताकि पानी वितरण के फैसले पर राजीव लोंगोवाल के समझौते के अनुसार १५ अगस्त को उस पर भी अमल हो सके। इराडी आयोग इस कार्य हेतु राजस्थान, हरयाणा तथा पजाब का भ्रमण पूरा कर चुका है। अत इस विवाद को भी तुरन्त निपटाया जा सकता है।

प्रो० शेरसिह ने भारत सरकार पर जोर देते हुए कहा है कि सतलुज यमुना लिंक नहर के निर्माण का कार्य पजाब सरकार पर न छोडकर यथाशीघ्र अपने हाथ मे लेना चाहिए, ताकि इसका निर्माण कार्य समय पर पूरा किया जाये।

प्रो० शेरसिह ने देसाई आयोग के कार्य क्षेत्र के बारे मे भारत सरकार से अनुरोध किया है कि पूर्व आयोगो की भाति इसके भी हाथ न बाधे जाये और इसे अपने कार्य के लिए खुली छूट दी जानी चाहिए। जल्दबाजी मे कोई भी पग न उठाया जाये।

अकालियो की हठधर्मी की आलोचना करते हुए, आपने कहा कि उन्होंने आज तक किसी भी आयोग के फैसले पर अमल नही किया। इसी कारण हरयाणा सदा ही घाटे मे रहा है। अत भारत सरकार को उनकी अनुचित तथा हरयाणा विरोधी माग स्वीकार नही करनी चाहिए। हरयाणा की जनता जो कि शातिप्रिय तथा राष्ट्रहितैषी है को यदि प्रोत्साहित नहीं किया जाता तो उसे समझौते मे हानि भी नही पहुचानी चाहिए। शाह आयोग ने चण्डीगढ हरयाणा को तथा इन्दिरा गाधी ने चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का निर्णय किया था, परन्तु अकाली बदले मे कुछ भी हरयाणा को देना नही चाहते। भारत सरकार को उनके हिंसक आदोलनो के आगे झुकना नही चाहिए।

प्रवेश तथा आवश्यकता

१—गुरुकुल आर्यनगर हिसार, हरयाणा मे नवीन छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी के अनुसार है। जलवायु उत्तम तथा स्वास्थ्यप्रद है। अपने बालको को गुरुकुल मे प्रवेश कराने के इच्छुक माता-पिता निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करे तथा नियमावली मगवाये।

२—गुरुकुल मे एक ऐसे आचार्य अथवा शास्त्री उत्तीर्ण अध्यापक की आवश्यकता है, जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी एव शास्त्री कक्षाओ को सस्कृत साहित्य तथा सस्कृत व्याकरण पढाने में पूर्णतया समर्थ हो। वेतन योग्यतानुसार सन्तोषजनक दिया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्नलिखित पते पर पत्र लिखे अथवा मिले।

आचार्य गुरुकुल आर्यनगर
पो० आर्यनगर, जि० हिसार (हरयाणा)

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

विदेशों में आर्यसमाज का प्रचार

गत वर्षों मे मैंने देश-विदेश की अनेक यात्रायें की हैं। इन यात्राओं के मध्य आर्यसमाज की स्थिति का अध्ययन मेरा प्रिय विषय रहा है। मैंने यह अनुभव किया है कि बुद्धिजीवी वर्ग आर्यसमाज से उदासीन हो रहा है। पर उसके हृदय मे आर्यसमाज के लिए तडप है। वह आर्यसमाज को दिशानिर्देश करने के लिए लालायित है। उसके पास आर्यसमाज को और अधिक सक्रिय करने के लिए अनेक सुझाव है।

यह बताने की आवश्यकता नही है कि आज देश सांस्कृतिक दृष्टि से खोखलेपन का अनुभव कर रहा है। पश्चिम के अन्धानुकरण के कारण वह किंकर्तव्यविमूढ है। वह भटक रहा है और उसे कोई मार्ग नही सूझ रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्यसमाज ने देश का सांस्कृतिक नेतृत्व किया था। सच बात यह है कि वह आज भी ऐसा कर सकता है। यदि आर्यसमाज से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुडा बुद्धिजीवी वर्ग दृढ संकल्प लेकर खडा होकर आर्यसमाज को गतिशील बना दे तो देश का कायापलट हो सकती है।

मैं चाहता था कि दिसम्बर १९८६ से मार्च १९८७ के मध्य कभी आर्यसमाज से सम्बद्ध एव आर्यसमाज के हितैषी बुद्धिजीवियो, प्राध्यापको, चिकित्सको, लेखको पत्रकारो, अभियन्ताओ आदि का एक सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमे देश-विदेश की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्यसमाज को भावी भूमिका पर विचार किया जाये।

३१ मई, १९८६ को साय ५ बजे स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता मे उक्त सम्मेलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक प्रारम्भिक बैठक आयोजित की गई थी, जिसमे श्री क्षेमचन्द्र सुमन, डा० कृष्णलाल, प्रो० वेदव्रत, डा० सत्यदेव चौधरी, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री मागेराम, प्रो० आदित्य आर्य, श्री गम्भीर, श्री सक्सेना, डा० कृष्णा चतुर्वेदी, श्रीमती पुष्पा आदि अनेक बुद्धिजीवी एकत्र हुए और सभी ने उक्त सम्मेलन का आवश्यकता अनुभव की। वहा यह विचार भी बना कि बुद्धिजीवियो के एक विराट् सम्मेलन से पूर्व भूमिका रूप मे प्रादेशिक स्तर पर सम्मेलन आयोजित किये जाये और बुद्धिजीवियो को आर्यसमाज के कार्य मे सक्रिय किया जाये।

मुझे विश्वास है कि आप भी आर्यसमाज को गति देने के लिए उक्त प्रकार के सम्मेलन को आयोजित करने के पक्ष मे होगे।

१) आपसे निवेदन है कि आप अपने प्रदेश के बुद्धिजीवियो की एक [सू]ची हमारे पास भेजे। २) यदि आप अपने यहा एक उक्त प्रकार का [स]म्मेलन आयोजित कर सके तो अक्तूबर मास के बाद कभी वह आयोजित करे और उसकी हमे सूचना भी दे। ३) उक्त सम्मेलन के सम्बन्ध [मे] आपके जो भी सुझाव हो, वे लिखित रूप से भेजे अर्थात् उस सम्मेलन [के] विचारणीय विषय क्या है। ४) हम उक्त सम्मेलन के सम्बन्ध में एक [रा]ष्ट्रीय समिति का गठन करना चाहते है, आप अपने प्रदेश से कुछ नाम [व] पते भेजे, ताकि हम उसमे से कुछ नामो का चयन कर सके। ५) आप [भ]ी प्रादेशिक स्तर पर एक कार्य समिति का गठन करे।

—प्रशात वेदालकार ७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कागडी विश्वविद्या[ल]य से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलनेवाली अखिल भार[त]ीय शिक्षण सस्था है। १म से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। १६ [ज]ुलाई, १९८६ से एम० ए० की कक्षायें भी प्रारम्भ हो रही हैं।

उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, [स]ाईस, सगीत, गृह विज्ञान, सास्कृतिक गतिविधि सस्था की आधारभूत [वि]शेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान, आधुनिक सुविधाओं सहित बडे छात्रावास, तीसरी कक्षा से सस्कृत एव अग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इण्टर उत्तीर्ण, कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष मे दाखिल हो सकती हैं। शिक्षा नि शुल्क दी जाती है। ७ जुलाई से नवीन कन्याओ का दाखिला शुरु है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) भेजकर नियमावली मगा सकते हैं।

—दमयन्ती कपूर आचार्या

हैदराबाद के आर्यसमाज आंदोलन मे भाग लेने वाले महानुभावो को आवश्यक सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने प्रेस विज्ञापन द्वारा हैदराबाद के आर्यसमाज के आदोलन मे भाग लेने वालो से गृह-मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित आवेदन पत्र भरकर मगवाये है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे गृह-मन्त्रालय से उक्त आवेदन-पत्र आगये है। अत इच्छुक महानुभाव रोहतक कार्यालय पधारकर, आवेदन-पत्र लेकर उन्हे भरने का कष्ट करे। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से भी सम्पर्क किया जारहा है। आवेदन-पत्र भरवाने के बारे मे यथा सम्भव सभा की ओर से सहयोग किया जायेगा।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश—अनमोल खजाना

लें०—मा० रामचन्द्र आर्य, बडवा (भिवानी)

ज्ञान का अनमोल खजाना, पढना कभी भूल न जाना।
पढकर जीवन सफल बनाना, अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश को ॥

भ्रम जाल को मेटनवाला, बुद्धि का खोल दे ताला।
धर्म का है रखवाला, पढ हरेक समुल्लास को ॥१

प्यारे न्यारे विषय बताये, उदाहरण से समझाये।
पाखण्ड का तम हटाये, फैलाता है प्रकाश को ॥२

आर्य सस्कृति बचाई, दिखलादी हर सच्चाई।
अज्ञान की करी सफाई, ना पाखण्ड रहता पास को ॥३

दयानन्दकृत ग्रन्थ अमूल्य, कोई ना इसके तुल्य।
पढनेवाला कभी न भूले, सत्य वेद के साराश को ॥४

सत्य असत्य का ज्ञान कराया, ईश्वर का सही स्वरूप बताया।
अन्धविश्वासो का किया सफाया, फेला दिया धर्म के प्रकाश को ॥५

आजादी का अमर प्रणता, हर हिन्दू प्रेरणा लेता।
देशभक्ति की शिक्षा देता, बढावे आत्मविश्वास को ॥६

मजहबो का कर सफाया, वेदधर्म को फैलाया।
निराकार प्रभु बताया, मिटा पुराण की बकवास को ॥७

कितनों ने पढ़ प्रेरणा पाई, आजादी की करी लडाई।
भाग गये यवन ईसाई, सुन देशभक्ति एलान को ॥८

सच्ची सच्ची बताई बात, ना किया कहीं पक्षपात।
पाखण्डियो पर किया आघात, ले वेदो के विश्वास को ॥९

धर्म प्रेमी पढ लग्न से, भक्ति करले सच्चे मन से।
पाप धोले अपने तन से, बचाले वेदधर्म खास को ॥१०

"रामचन्द्र आर्य" कहता, पढनेवाला मूर्ख ना रहता।
ये वेदामृत का दरिया बहता, ना वृथा खोना सास को ॥

महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा में प्रवेश

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा (सौराष्ट्र) द्वारा सचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा में नवीन छात्रो का प्रवेश २५ जून से १० जुलाई तक होगा।

—धर्मवीर विद्यालकार आचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का ... मुख पत्र

आर्य भारत के आदिवासी (मूल निवासी) है

पराधीनता के युग मे—जब भारत पर अग्रेजो का शासन था तो उन्होने दीर्घकाल तक भारत पर शासन करने की दृष्टि मे भारत के इतिहास और उसकी सस्कृति को मिटाने के लिये योजनाबद्ध कार्य आरम्भ किया।

एक ओर तो लार्ड मैकाले की योजनानुसार एक शिक्षापद्धति भारत मे प्रारम्भ की जो अभी तक चल रही है जिसका उद्देश्य भारत मे अग्रेजी राज्य के लिये लिपिक तैयार करना था और उस शिक्षा-पद्धति मे पढाये जाने के लिये भारतीय इतिहास के नाम पर भारतीय इतिहास मे नितान्त असम्बद्ध तथा भारतीय इतिहास विरोधी स्व-कल्पित इतिहास लिखवाकर भारतीयो को पढाना प्रारम्भ किया। जिससे भारतीय अपने इतिहास से प्राप्त होने वाले अतीत गौरव को भूल जाये।

दूसरा कार्य अग्रेजो ने भारतीय सस्कृति को मिटाने का प्रारम्भ किया और इस कार्य के लिये जर्मन अध्यापक मैक्समूलर को इगलैड मे बुला कर उससे भारतीय सस्कृति के मूलाधार वेदो के भ्रष्ट अर्थ कराने प्रारम्भ किये। अग्रेज यह समझते थे कि इस कार्य से भारतीयो के मन मे वेद के प्रति घृणा उत्पन्न करके तथा तत्पश्चात् भारतीयो को ईसाई-यत के रग मे रगकर ब्रिटिश साम्राज्य को भारत मे स्थायी किया जा सकेगा।

किन्तु खेद तो यह है कि अग्रेजो के चले जाने के पश्चात् तीन शताब्दि बीत जाने पर भी अभी तक भारतीयो को वही शिक्षा मिल रही है और इतिहास के नाम पर वही कुछ पढना पड रहा है जिसके परिणामस्वरूप इस शिक्षा और इतिहास से अनुप्राणित भारत के वर्तमान तथाकथित इतिहासवेत्ता अभी भी भारत को आर्यो का आदिदेश और आर्यो को भारत के मूल निवासी मानने को तैयार नही। यह लोग इतने कूप-मण्डूक हो गये हैं कि इन की यह कूप-मण्डूकता दुराग्रह का रूप धारण कर चुकी है। इतना दुराग्रह कि भारतीय पक्ष को सुनने, उसके प्रमाण जान लेने के पश्चात् निरुत्तर होकर भी बिना किसी तर्क और प्रमाण के अपनी बात पर अडे रहते है। यह निकृष्ट कोटि की हठवादिता और दुराग्रह है। इससे जहा यह लोग जान पूछकर स्व-इतिहास से अनभिज्ञ रहना चाहते हैं वहा भावी सन्ततियो को भारतीय इतिहास और सस्कृति से अनभिज्ञ रखने के दुष्प्रयास मे लिप्त रह कर जाति को पतन और विनाश के गर्त्त मे धकेलने का पाप भी करते हैं।

हमारा कहना यह है कि आर्य भारत के मूल निवासी है। आर्यो के यहां के मूल निवासी होने के कारण ही इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त है। यदि आर्य कहीं बाहर से यहा आये होते और उनके आने से इस देश का नाम आर्यावर्त्त होता तो आर्यों के आने से पहले कोई अन्य नाम होना चाहिये था। परन्तु तथ्य यह है कि आर्यावर्त्त से पहले इस देश का कोई दूसरा नाम नही था।

समस्त भूगोल मे कोई भी भूखण्ड ऐसा नही है कि जहा पर मनुष्य रहते हो और उसका कोई नाम न हो। मनुष्य के रहने की बात छोडिये यदि किसी ऐसे भूखण्ड का मानव को पता लग जाता है कि जिस पर मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी आदि भी न पाये जाते हो तो वह उसका भी कोई नाम रख लेता है। फिर यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है कि इस भूखण्ड मे आर्यो से पहले मनुष्यो की एक बडी सख्या निवास करती थी किन्तु इतने पर भी इस का कोई नाम नही था। क्या यह इतिहास और भूगोल दोनो के साथ उन्हे स्वीकार न करने का मिथ्या व्यवहार नही है? तथा क्या यह इतिहास और भूगोल को न समझने की अल्प बुद्धि तथा ऐतिहासिक और भौगोलिक अयोग्यता का प्रमाण नही है?

एक और बात यह है कि यह देश आर्यों का आदि देश तो है ही साथ ही आर्यों का केन्द्र भी है। यह इतिहास की सत्यता भी आर्य शब्द मे ही निहित है। आर्य आवर्त्त अर्थात् आर्यो का केन्द्र। इससे यह सिद्ध होता है कि न केवल यह देश आर्यो का आदि देश ही है अपितु आर्यो का केन्द्र भी यही है। इसी भूखण्ड से आर्य लोग भूगोल के अन्य भागो में जाकर बसे और कालान्तर मे जलवायु के प्रभाव तथा स्वमूल आर्यावर्त्त से दूर हो जाने तथा दीर्घकाल बीतने पर आर्यपरम्परा से विच्छिन्न हो जाने पर विविध जातियो मे विभक्त हो गये।

वास्तविकता यही है कि भारत आर्यो का आदि देश है और आर्य यहा के मूल निवासी है तथा द्रविड, कोल, किरात, शक, यवन कम्बोज आदि सभी आर्यो के क्षत्रिय वर्ण मे से है और खान-पान आचार-विचार आदि मे भ्रष्ट हो जाने के कारण यह सब लोग अलग-अलग वर्गो मे विभाजित हो गये तथा पृथक्-पृथक् नामो से पुकारे जाने लगे।

यह पश्चिमी दृष्टिकोण के इतिहासज्ञ सिन्धुघाटी की सभ्यता को आर्यो से प्राचीन कालीन बताते है। इनका कहना है कि आर्यो ने आकर सिन्धु सभ्यता को विनष्ट किया। यह भी कहते हैं कि सिन्धु-सभ्यता पाँच सहस्र वर्ष पुरानी है। स्वर्गीय डा०सम्पूर्णानन्द के अनुसार वेदो का समय अठारह सहस्र वर्ष पुराना है। यदि सिन्धु-सभ्यता को पाच सहस्र वर्ष पुराना मान भी लिया जाए तो भी आर्यसभ्यता तथाकथित सिन्धुसभ्यता से तेरह सहस्र वर्ष पुरानी सिद्ध होती है। दूसरी ओर इस समय ईसवी सन् १९८६ मे कलि सवत ५०८६ चल रहा है अर्थात् महाभारत को जो कि कलियुग के प्रारम्भ से पहले और द्वापर के अन्त मे हुआ था। कम से कम ५१०० वर्ष बीत रहे है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत

युद्ध सिन्धु-सभ्यता से कम से कम एक शताब्दि पूर्व अवश्य हुआ था। महाभारत आर्य इतिहास है। यह न तो सिन्धुघाटी की सभ्यता का इतिहास है और न द्रविड-इतिहास।

सिन्धु-घाटी की खुदाई में जो सील मोहरे मिली हैं उनमें से एक सील पर एक वृक्ष का चित्र है। उस वृक्ष पर दो पक्षी चित्रित हैं। एक उस वृक्ष के फलों को खा रहा है और दूसरा उसे खाते हुए को देख रहा है, स्वयं खा नहीं रहा है। इस सील के चित्र का आधार ऋग्वेद का वह मन्त्र है जिसमे प्रकृति को वृक्ष मानकर उस पर जीवात्मा और परमात्मा को पक्षी-रूप में वर्णित किया है और इस प्रकार यह दिखाया गया है कि जीव प्रकृति के बने हुए पदार्थों को भोगता है और परमात्मा केवल उसका द्रष्टा है। मन्त्र इस प्रकार है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

ऋग्वेद १।१६४।२०

यह सील यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्य-सभ्यता सिन्धु-सभ्यता से पुरानी है। यदि यह मान लिया जाय कि सिन्धु-घाटी के लोग इन मुहर का प्रयोग करते थे, यह उन्ही की मुहर है तो यह स्वय सिद्ध हो जाता है कि सिन्धु-सभ्यता आर्य-सभ्यता का उत्तरकालीन रूप मात्र है।

एक और बात ध्यान देने की यह है कि उक्त खुदाई मे शिवलिंग पाये गये हैं। हिन्दुओं अर्थात् वैदिक आर्यों को छोडकर शिवलिंग पूजा अन्यत्र कहीं नहीं होती। इसमें भी यही सिद्ध होता है कि सिन्धु-घाटी वासी आर्यों मे पृथक् कोई अन्य जाति नही थी।

यह भी ध्यान देने की बात है कि वैदिक आर्यों मे मूर्ति-पूजा जैनियो से चली है, इससे पहले आर्य लोग मूर्तिपूजक नही थे। आचार्य शकर ने अनीश्वरवादी जैनियो की नंगी मूर्तियो की ओर से तात्कालिक सर्व-साधारण जनता का ध्यान हटाने और वैदिक धर्म के ईश्वरवाद की ओर लाने के लिए शृंगारमय लक्ष्मीनारायण की मूर्तियो का प्रचलन कराया था। तत्पश्चात् वही विविध मूर्तियों की पूजा के रूप मे प्रचलित होती गयी। स्मरण रहे कि जैनमत केवल २५०० वर्ष का है और शंकराचार्य का प्रादुर्भाव तब हुआ, जब जैनमत बडे वेग के साथ भारत मे फैल रहा था। सिन्धु-घाटी की खुदाई मे शिवलिंग का पाया जाना यह सिद्ध करता है कि सिन्धु-सभ्यता २५०० वर्ष से भी अर्वाचीन ही है, प्राचीन नहीं। इस प्रकार महाभारत इस तथाकथित सिन्धु सभ्यता से न्यूनाधिक लगभग तीन सहस्र वर्ष पूर्व का सिद्ध होती है।

डा० फतहसिंह का मत है कि सिन्धु सभ्यता उपनिषद्कालीन है। उपनिषदें वेद से बाद की हैं। उपनिषदो मे सबसे पहली ईशोपनिषद् थोड़े से रूपान्तर के साथ यजुर्वेद का चालीसवा अध्याय ही है। इससे भी आर्य-सभ्यता सिन्धु-सभ्यता से बहुत प्राचीन सिद्ध होती है।

महामहोपाध्याय श्री पण्डित सदाशिव शास्त्री के मत मे "महाभारत युद्ध के पश्चात् भारतीय सभ्यता ह्रासोन्मुख हुई। सिन्धु-घाटी से प्राप्त अवशेष इसी विनष्ट वैदिक सभ्यता के चिह्न हैं।"

आधुनिक युग-प्रवर्त्तक तथा उन्नीसवी शताब्दी के अद्वितीय वैदिक विद्वान् महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे महाभारत युद्ध से एक सहस्र वर्ष पूर्व ही अर्थात् ईसा से कम से कम सवा चार सहस्र ४२५० वर्ष पूर्व आर्यसभ्यता में विकृति आना स्वीकार करते हैं। यह बात महर्षि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखी है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण १८७५ ई० मे प्रकाशित हुआ था। अब १९८६ ई० मे इसे प्रकाशित हुए एक सौ ग्यारह १११ वर्ष की अवधि बीत रही है। इस प्रमाण से भी आर्यसभ्यता उक्त तथाकथित सिन्धु सभ्यता से बहुत पुरानी सिद्ध होती है।

इन्ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास के अन्त में युधिष्ठिर से यशपाल पर्यन्त ४१५७ वर्ष राज्य करने वाले राजाओं की क्रमबद्ध सूची दी है। यशपाल पृथ्वीराज चौहान की पाचवीं पीढी मे वर्णित है। पृथ्वीराज को अब लगभग एक सहस्र वर्ष का काल बीत रहा है। इस प्रकार महाभारत पाच सहस्र वर्ष से अधिक सिद्ध होता है। रामायण युद्ध जो महाभारत से पहले हो चुका है, उसे एक करोड़ इक्यासी लाख उनन्चास सहस्र छियासी १,८१,४९,०८६ वर्ष बीत रहे हैं। इसमें वायुपुराण उत्तरार्द्ध नौवा अध्याय का अडतालीसवां श्लोक प्रमाणस्वरूप नीचे उद्धृत है।

त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपस: क्षयात्।
राम दाशरथि प्राप्य सगण: क्षयमीयिवान्॥

अर्थात् २४वें त्रेता युग मे जब रावण का सामर्थ्य क्षीण हुआ तो वह दशरथ के राम को प्राप्त होकर उसके द्वारा परिवार व बन्धु-बान्धवो सहित विनष्ट हो गया।

लेख का कलेवर अधिक बढ़ाना हमें अभिप्रेत नहीं है, अन्यथा यदि रामायण से आगे वर्णन किया जाए तो आदि सृष्टि तक ही आर्य-सभ्यता का इतिहास पहुँचेगा। हमारा उद्देश्य इस लेख में केवल यह सिद्ध करना था कि सिन्धु सभ्यता यदि कोई थी तो वह अर्वाचीन ही थी और भारत के मूल निवासी आर्य ही हैं, कोई अन्य जाति नहीं। आर्य जाति ही विश्व की सर्वप्रथम सबसे प्राचीन और आदि कालीन मानव जाति है। सिन्धु-घाटी की सभ्यता नाम की कोई सभ्यता कभी नही थी। कही किसी खुदाई में किसी समय के अवशेष निकल आने से किसी ऐतिहासिक तथ्य की कोई विशेष उपलब्धि नही कही जा सकती। किसी स्थानविशेष पर किसी बस्ती के खण्डहर कुछ क्षेत्रीय वस्तुओं तथा खण्डहर होने से पूर्व की किसी ऐतिहासिक वस्तु की प्राप्ति का साधन भले ही बन जाए किन्तु किसी जातिविशेष के इतिहास वर्णन का साधन सिद्ध हो, यह कल्पना मिथ्या है और केवल आर्य जाति को अर्वाचीन तथा भारत मे आक्रान्ता सिद्ध करने और स्वय को इतिहास में महत्त्व-पूर्ण स्थान दिलाने के लिए योरोप निवासियो का कपोल कल्पना पर आधारित इतिहास निर्माण का मिथ्या और श्रमफल प्रयास है।

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं अन्य समस्त भारतवासी भी आर्यसन्तान ही हैं और कालान्तर में आर्य लोग देशाटन, पर्यटन और व्यवसाय आदि की दृष्टि से भूमण्डल के अन्य क्षेत्रो में गये तथा उनमें से बहुत से लोग वहीं बस गये। देश-काल की परिस्थितियो से उनके आचार-विचार और खान-पान में परिवर्तन हुआ। वही आर्य सन्तान विविध नामो से पृथक्-पृथक् जातियो के रूप में विभक्त हो गयी और उन्ही में से कुछ लोग पुन भारत आये, जो इतिहास मे यवन-तुर्क आदि नामो से जाने जाते हैं।

अन्त में आर्य जाति की प्राचीनता के प्रमाण में हम आर्य परिवारों में विवाह आदि सस्कारो के अवसरो पर पुरोहितो द्वारा उच्चारण किया जाने वाला सकल्प-सूत्र देकर इस लेख को समाप्त करते हैं। यह सकल्प आर्य इतिहास को लगभग दो अरब वर्ष का बताता है, जो मानव जाति की आयु का प्राचीनतम इतिहास है।

प्रागैतिहासिक काल की कल्पना करने वाले और आर्य जाति को इतिहास विज्ञान से अनभिज्ञ कहने वाले इतिहासविदाभास जन इस सूत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ें और मनन करें तथा यदि उनमे थोडी भी नैतिकता है तो अपने दुराग्रह और मिथ्याभिमान को छोडकर सत्य को स्वीकार करें। आर्य जाति ने आदि सृष्टि से वर्तमान काल तक के अपने इतिहास तथा ऐतिहासिक स्रोत और इतिहास-सूत्र को इस सकल्प-सूत्र के रूप में ग्रथित करके सुरक्षित कर रखा है। सूत्र निम्न प्रकार है—

ओ३म् तत्सत् श्रीब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणेऽमुकसंवत्सरायनर्तु मास-पक्षदिननक्षत्रलग्नमुहूर्तेऽत्रेद कृत्य क्रियते।

अर्थ—ओ३म् तत्सत् परमेश्वर का इन शब्दों में स्मरण करके यह कहा गया है कि "ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के दूसरे प्रहर में सृष्टि के अर्द्ध भाग के निकट अट्ठाईसवां कलियुग और उसका प्रथम चरण अर्थात् प्रारम्भ है। इसके आगे वर्ष, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, नक्षत्र, लग्न, मुहूर्त का विधान है, जो सस्कार के अवसर पर उस काल के अनुसार जोड दिया जाता है।"

इस सब को गणित की रीति से जो सज्जन जानना चाहे, वह महर्षि स्वामी दयानन्दकृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के "वेदोत्पत्ति विषय" को पढकर जान लें। स्थानाभाव से यहा उसका वर्णन नहीं किया जा रहा है। अलमति-विस्तरेण।

दो बातें आज पंजाब समस्या के सम्बन्ध में चर्चा का विषय बनी हुई हैं—

(१) पजाब के तीन सीमावर्ती जिले अमृतसर, गुरुदासपुर और फिरोजपुर सेना के हवाले कर दिए जाए।

(२) पजाब मे बरनाला सरकार को हटाकर राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये।

इन दोनो प्रश्नो पर प्रो० शेरसिंह जी, अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी से अपने विचार देने की प्रार्थना की गई।

—सम्पादक

उनके विचार :—

प्रश्न (१) बहुत से नेता तीन जिलो को सेना को सौपने पर आपत्ति उठाते हैं कि कानून व्यवस्था बहाल करने के लिए सेना का उपयोग करना एक बुरी मिशाल कायम करेगा, फिर हर जगह ही सेना की माग होने लगेगी। यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि पजाब की आतकवादी समस्या केवल कानून व्यवस्था ढीली होने की ही नहीं है, पजाब में जो कुछ हो रहा है, वह तो अमरीका, इगलैण्ड, पाकिस्तान आदि देशो का भारत को अस्थिर करने और तोडने का एक सुनियोजित षड्यन्त्र है। पजाब के सीमावर्ती जिलो में तो पाकिस्तान मे प्रशिक्षित आतकवादी सिख युवक, पाकिस्तानी घुसपैठिये, तस्कर तथा समाज विरोधी तत्त्व मिलकर, विदेशी शक्तियो के धन तथा आधुनिकतम हथियारो को इस्तेमाल करके देश को तोडकर खालिस्तान बनाने का खुले आम नारा लगा रहे हैं। पाकिस्तानी घुसपैठिये तो अब गुरुद्वारो मे ग्रन्थी बनकर बैठने की खबरे आरही हैं। इन्ही जिलो से हिन्दुओ को निकालने का क्रूर अभियान चल रहा है। यदि यह सब कुछ चलता रहे और अमरीका द्वारा दिए नए से नए हथियारो से लैस पाकिस्तानी भारत पर आक्रमण कर दे, तथा आतकवादी पाकिस्तानी घुसपैठिये, तस्कर और समाज विरोधी तत्त्व मिलकर बडे पैमाने पर तोड-फोड की कार्यवाही कर दें तो देश की सुरक्षा को बहुत बडे खतरे का सामना करना पडेगा। क्या कोई देश अपनी सुरक्षा के लिए इतना बडा खतरा मोल ले सकता है। पजाब के तीन सीमावर्ती जिलो गुरुदासपुर, अमृतसर और फिरोजपुर को सेना के हवाले करना, राष्ट्र की सुरक्षा और एकता को बचाने के लिए अनिवार्य हो गया है। इसको टालना देश को खतरे मे डालना होगा।

प्रश्न (२) पिछले दो महीनो में जो निर्मम हत्याये, लूटमार और पजाब के हिन्दुओ का हरयाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशो मे पलायन हो रहा है, उनको रोकने मे बरनाला सरकार बुरी तरह असफल रही है। स्वय श्री बरनाला ने इसे स्वीकार किया है। इसके कुछ कारण हैं—

(क) पजाब मे हत्याओ, लूटमार और पलायन को रोकने की बजाय श्री बरनाला पहले तो "पश्चात्ताप" के नाम पर ग्रन्थियो द्वारा दिए गए दण्ड के तहत जूते और बरतन साफ करने मे लगे रहे, और अब तोहडा और बादल को मनाने के लिए "वर्लताप" (वार्तालाप का पजाबी रूप) मे लगे हुए हैं, और उनको खुश करने के लिए देसाई आयोग के बारे मे उन्ही की भाषा बोलने लगे हैं।

(ख) पजाब के पुलिस अधीक्षक श्री रोबेरियो के अनुसार बरनाला मन्त्रिमण्डल मे घोषित अपराधी भी शामिल हैं, तथा कई मन्त्री तस्करो, अपराधियो, आतकवादियो के साथ मिले हुए हैं और जब पुलिस ऐसे लोगो को पकडती है तो उन्हें छुडवा देते हैं। पजाब पुलिस का काफी बडा प्रतिशत भी तस्करो तथा आतकवादियो से मिला हुआ है। बरनाला न तो अपने साथी मन्त्रियो को उनकी गतिविधियो से रोक सकते है और न तस्कर और आतकवादियो से मिले हुए पुलिस कर्मचारियो को। अकाली दल में फूट के कारण श्री बरनाला अपने मन्त्रियो पर हावी नही बल्कि उनके मन्त्री उन पर हावी हैं। मन्त्री पद देकर ही अनेक सदस्यो को वे अपने साथ रखे हुए हैं। यह उनकी राजनैतिक मजबूरी है। इसी राजनीतिक मजबूरी के कारण वे पुलिस के कर्मचारियो को छेडते हुए घबराते है और रोबेरियो पर भी अकुश रखना पड रहा है।

(ग) पलायन को रोकने के लिए बरनाला जी के कितने ही वक्तव्य आते रहते हैं, परन्तु उनसे पजाब के हिन्दुओ का घर छोडकर दूसरे प्रान्तो मे जाना नही रुका, बल्कि बढ रहा है। लोगो को उनकी नीयत पर भी शक है। वे कहते हैं कि यदि वे उनको वापिस ले जाना चाह रहे हैं तो उनको उन्होने आने ही क्यो दिया, और आज भी आने दे रहे हैं। यदि बरनाला सरकार दिल से यह चाहती है कि पजाब से हिन्दुओं का पलायन रुक जाये तो उनको यह चाहिए था कि पजाब के शहरो में ही हिन्दुओ की बस्तियो के साथ शरणार्थी कैम्प खोल देते, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस तथा सीमा सुरक्षा बल का पहरा वहा लगा देते। जब तक सीमावर्ती जिलो की देहातो और कस्बो में सुरक्षा का सतोषजनक प्रबन्ध नही हो जाता, तब तक उन कैम्पो में उन्हे रखा जाता। आर्यसमाज तथा सनातन धर्म के मन्दिरो में भी जनता के पैसे से पजाब के शहरो मे ही शरणार्थियो को काफी सख्या मे रखा जा सकता था, वहा भी सरकार सुरक्षा का प्रबन्ध कर देती। जब स्थिति सामान्य जैसी हो जाती तब उनको अपने घरो मे वापिस भेज दिया जाता। परन्तु ऐसा कोई काम पजाब सरकार ने नही किया। पजाब सरकार इसके लिए भारत सरकार से भी मदद ले सकती थी, और सारे भारत की जनता भी इसमे दिल खोलकर सहायता देती। पलायन का तुरन्त रोकना इसलिए आवश्यक है कि उसके चलते देश के दूसरे भागो में भी साम्प्रदायिक शक्तियां दगे भडका सकती हैं। यदि ऐसा होता है तो उससे देश की दुश्मन शक्तियो और खालिस्तानियो का खेल सफल हो सकता है।

मैंने जो तीन मुख्य कारण बताए, यदि उनके सन्दर्भ मे सोचें और बरनाला सरकार की असफलता जिसको उन्होने स्वय कबूल किया है, उसकी रोशनी मे देखे तो दो ही विकल्प रह जाते है। एक तो यह कि बरनाला साहब एक भद्र और सज्जन व्यक्ति होने के नाते, असफल होने के कारण स्वय अपने पद से त्याग पत्र दे देवें। दूसरा यह कि उनके इन्कार करने पर, जैसा कि उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, भारत सरकार यह दुखदाई कदम उठाये और उनकी सरकार को तोडकर राष्ट्रपति शासन लागू कर दे।

यदि पलायनवादी नीति पजाब सरकार और भारत सरकार अपनायेगी, तो उसमे देश की सुरक्षा और एकता को खतरा बढता जायेगा। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अधिक देर करने से कही हालात पर काबू पाना मुश्किल न पडे। मैं यह इसलिए कह रहा हू क्योकि मैं एक सप्ताह घूमकर पजाब के हालात अपनी आखो से देखकर आया हू।

मैं यह स्पष्ट कर दू कि मैं बरनाला सरकार को हर हालत मे हटाने का पक्षधर नहीं हूँ। ऊपर जिक्र किये हुए तीन कारणो को दूर करके, उस सम्बन्ध मे ठोस कदम उठाकर यदि बरनाला सरकार एक सप्ताह के भीतर ठोस नतीजे दे सके, तो उसकी मदद भारत सरकार और देश के सब लोगो को करनी चाहिए। परन्तु यह आशा लगाना मृगमरीचिका ही लगती है। वैसे उद्देश्य बरनाला सरकार को हटाना नही, उद्देश्य तो हत्याओ तथा पलायन को रोकना है तथा देश की सुरक्षा और एकता को सुदृढ करना है।

आकाशवाणी रोहतक से प्रसारित—

महाभारत कालीन सामाजिक स्थिति

महाभारत कालीन सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालने वाला सम्पूर्ण साहित्य आज उपलब्ध नही है। उस समय की सामाजिक स्थिति से सम्बन्ध रखने वाला केवल एक ही ग्रन्थ महाभारत नाम से प्राप्त होता है। महाभारत एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह भारतवर्ष की एक अतुल सम्पत्ति है। जगत् प्रसिद्ध गीता भी इसी का एक भाग है। महाभारत के द्वारा तत्कालीन सामाजिक स्थिति को प्रामाणिक रूप से जाना जा सकता है

भारतवर्ष के लम्बे इतिहास मे महाभारत का काल विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इस काल मे भारतवर्ष किसी दृष्टि से तो उन्नति के शिखर पर चढा हुआ और किसी दृष्टि से बहुत अवनत हुआ प्रतीत होता है।

राजनीतिक दृष्टि से महाभारत कालीन भारत बहुत उन्नत प्रतीत होता है। उस समय सम्पूर्ण भारत राजनीतिक शासन की दृष्टि से एक हो चुका था। हस्तिनापुर सम्पूर्ण देश की राजधानी था। युद्धनीति, शस्त्र-अस्त्रविद्या, भौतिक विज्ञान, शिल्प, वाणिज्य, व्यवसाय और यातायात का प्रबन्ध आदि मे महाभारत कालीन समाज बहुत उन्नति कर चुका था, किन्तु सदाचार की दृष्टि से महाभारत कालीन समाज को बहुत उन्नत नहीं कहा जा सकता। महाभारत के युद्ध से बहुत समय पूर्व ही इस देश के निवासियो का सदाचार प्राचीनकाल की अपेक्षा अवनत होने लगा था।

महाभारत मे जुए का प्रचलन, राक्षस विवाह मद्य-मास का सेवन आदि बुराइया भारतवासियो मे प्रवेश कर चुकी थी किन्तु इन बुराइयो को घृणा की दृष्टि से ही देखा जाता था। सामाजिक आचार को उन्नति और पवित्रता के लिये प्रशासन की ओर से भरसक प्रयत्न किया जाता था। उस समय महर्षि व्यास और पितामह भीष्म जैसे विद्वान् भी विद्यमान थे। ये लोग सामाजिक आचार की उन्नति के लिये कटिबद्ध थे।

महाभारत काल मे स्त्रियो की अवस्था अच्छी नहीं थी। भरी सभा मे सती द्रौपदी का चीरहरण महाभारत कालीन समाज पर सबसे बडा कलक है। इसी प्रकार राक्षस-विवाह और बहु विवाह आदि निन्दनीय प्रथाओं के उदाहरण भी महाभारत कालीन समाज मे पाये जाते है।

इसमे सन्देह नहीं कि महाभारत के युद्ध मे भारतवर्ष को बहुत धक्का पहुचा। जिसका परिणाम यह हुआ कि सम्राट् युधिष्ठिर के पश्चात् भारतवर्ष का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। यह विशाल देश नाना भागो मे विभक्त हो गया। अलग २ प्रान्तो पर भिन्न-२ वश राज्य करने लगे। किन्तु यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि भारतवर्ष की वर्तमान राजधानी दिल्ली नगर की नीव सम्राट् युधिष्ठिर ने ही रखी थी। इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली को भारत वर्ष की राजधानी बनने का सौभाग्य महाभारत काल मे ही प्राप्त हुआ।

महाभारत के युद्ध मे नाना प्रान्तो की सेनाए लाखो की सख्या में सम्मिलित हुई। उस समय स्थिर सेना थी स्थिर सेना का प्रबन्ध परिपूर्ण था। सब सैनिको को समय पर वेतन दिया जाता था। सभापर्व मे नारद-युधिष्ठिर से पूछते हैं कि "क्या तुम अपने सैनिको को पूरा वेतन और उनके भोजन का भाग ठीक समय पर देते हो ?

देश पर आपत्ति आने पर देश के नवयुवक स्वय सेवक बनकर सेना मे भरती होते थे। बहुत से स्वय सेवक बिना वेतन लिये ही देश प्रेम के वशीभूत होकर सेना मे सेवा करते थे। उद्योग पर्व मे भीष्म पितामह कहते है—मै सेना के सब कार्यो से परिचित हू। मै स्थिर वैतनिक सैनिको और अवैतनिक स्वय सेवको से भी कार्य करा सकता हू।" उस समय साधारण नवयुवक भी व्यूहरचना तथा शस्त्र-चालन का अभ्यास किया करते थे।

महाभारत काल मे सेनाये दुर्गों मे रहती थी और उनमे सेना विभाग के डाक्टर भी रहते थे। जब भीष्म पितामह शरशय्या पर पडे हुये थे तब शल्य क्रिया और लोह कीलो को निकालने मे चतुर अनेक सुशिक्षित वैद्य सब सामग्री तथा औजार लेकर उपस्थित हुए। इस पर भीष्म पितामह कहने लगे कि सब वैद्यो को उचित धन देकर उन्हें सन्तुष्ट करो। मैने क्षात्र धर्म मे रहकर यह प्रशान्त परमगति प्राप्त की है, अब मुझे वैद्यो से क्या प्रयोजन है'।

महाभारत काल में शक्ति, तोमर, तलवार, पट्टिश, प्रास, परिघ, भिन्दिपाल, शतघ्नी अर्थात तोप, लगुड, लोहगोलक, गदा, शूल मुद्गर, ऋष्टि, नखर, कुठार, क्षुरप्र, नालिकास्त्र अर्थात् बन्दूक आदि नाना प्रकार के शस्त्र-अस्त्रो का प्रयोग किया जाता था। अन्तर्धान अस्त्र तथा मशीन अर्थात बिजली से चलने वाले अस्त्र भी विद्यमान थे।

युद्ध के लिये कुछ नियम निर्धारित थे। जिनका दृढता से पालन किया जाता था। एक राजदूत या सन्देशवाहक का जीवन बहुत ही पवित्र होता था। उसे कारागार मे रखना भी महापाप समझा जाता था। जब दुर्योधन ने दूत रूप मे आये श्रीकृष्ण को कैद करना चाहा तब धृतराष्ट्र कहने लगे 'हे राजन्' ऐसा मत करो। श्रीकृष्ण इस समय दूत बनकर आया है, यह हमारा प्रिय सम्बन्धी भी है। उसने कोई अपराध नही किया फिर उसे किस प्रकार कारागार मे डाला जा सकता है।

महाभारत काल मे रण की विशेष रूप से शिक्षा दी जाती थी। उन्हे व्यूह रचना का भी अभ्यास कराया जाता था। द्रोणपर्व मैं व्यूहरचना का वर्णन मिलता है कि भारद्वाज वश में उत्पन्न द्रोणाचार्य ने चक्र सहित शकट व्यूह बनाया जो ४८ मील लम्बा और २० मील चौडा था। इस व्यूह मे अनेक राजा और वीर अपने-अपने स्थान पर नियत किए गए। हाथी-घोडो के समूह भी इसमे लगाए गए। इसका अगला भाग सुई के समान सूक्ष्म था और इस सूचीमुख मे वीर कृतवर्मा को नियुक्त किया गया।

इस प्रकार शस्त्र-अस्त्रो का वैभव, सम्पत्ति, सेना-सज्जा, युद्ध के नियम, युद्ध के समय पारस्परिक वर्ताव आदि सभी बात महाभारत कालीन समाज एव सभ्यता की उच्चता को प्रकट करती है।

महाभारत काल मे राष्ट्र के शासन आदि कार्यों में साधारण जनता की सम्मतियो का बहुत बल था। जब कभी किसी राजा ने साधारण जनता की आवाज की उपेक्षा की, वह अवश्य नष्ट हो गया। प्रजा की दुःखभरी आहो ने राज्य के राज्य उलट दिये। प्रजा की सम्मति चाहे नियमानुकूल हो चाहे नियम के प्रतिकूल सब अवस्थाओं मे उसमे इतना बल होता था कि उस पर ध्यान दिये बिना काम ही नही चल सकता था। महाभारत काल के गुरुजन भीष्म और द्रोण आदि प्राचीन काल के वसिष्ठ और विश्वामित्र आदि के प्रतिनिधि थे जो जनता के प्रतिनिधि रूप से कार्य करते थे। वे न्यायमार्ग को छोडकर निरङ्कुश आचरण करने वाले राजाओं की प्रबल निन्दा करते थे। वे न्यायानुकूल और प्रजा की इच्छा के विरुद्ध न चलने के लिये राजा को बाधित करते थे। महात्मा पृथु ने धर्मपूर्वक शासन करते हुए प्रजा को प्रसन्न किया। इस लिये उसे राजा कहा जाने लगा। जो प्रजा को राजी रखता है वही राजा कहाता है। राजा विविंश के १५ पुत्रो में से सबसे बडे पुत्र खनीनेत्र ने अपने भाइयो को बहुत तग किया और एक बडी सेना लेकर सारा राज्य अपने अधीन कर लिया किन्तु वह इतने विशाल राज्य को सम्भाल नही सका। प्रजा उससे असन्तुष्ट होगई। प्रजा ने उसे अपदस्थ करके बडे पुत्र सुवर्चा को सिंहासन पर बैठाया। सुवर्चा ने प्रजा को बहुत सुख दिया। वह अपने पिता को अपदस्थ देखकर वह सत्याचरण से युक्त होकर प्रजा के हित की दृष्टि से राज्य करने लगा।

राजा ययाति अपने बाद अपने सबसे छोटे पुत्र पुरु को राज्य देना चाहता था। इस पर प्रजा के प्रतिनिधि लोगो ने कहा कि हे राजन्! अपने ज्येष्ठ पुत्र यदु को छोडकर तुम पुरु को क्यो युवराज बनाने लगे हो। इस पर ययाति ने कहा—हे प्रजा के प्रतिनिधि लोगो! यदु ने मेरी आज्ञा नही मानी अत विद्वानो के अनुसार वह मेरा पुत्र कहाने योग्य

नहीं है। पुत्र को माता-पिता की धर्मानुकूल आज्ञा का अवश्य पालन करना चाहिये। यदु आदि ने मेरी आज्ञा न मानकर मेरा अपमान किया है, केवल पुरु ने ही मेरी आज्ञा को माना है। अत मेरा उत्तराधिकारी पुरु ही है। इस पर सबने कहा—जो पुत्र गुणवान् और माता-पिता का हित करने वाला है वह छोटा होता हुआ भी राज्य का अधिकारी है।

राजा प्रतीप के तीन पुत्र थे। इनमे देवापि वाल्हीक बीच का और शान्तनु छोटा था। देवापि पितृभक्त और नागरियो का प्रिय होते हुए भी कुष्ठ का रोगी था। राजा प्रतीप ने देवापि को युवराज नियुक्त करने का निश्चय किया किन्तु प्रजा और उसके प्रतिनिधि लोगो ने राजा के इस विचार का विरोध किया कि कुष्ट होने के कारण हम उसे राजा बनाना पसन्द नही करते। प्रजा की यह माग सुनकर राजा को बहुत दुःख हुआ। देवापि भी दुःखी होकर वन म चला गया। इस पर प्रतीप का द्वितीय पुत्र वाल्हीक राजगद्दी पर बैठा। उसने अपने वृद्ध पिता की मृत्यु पर राज्य छोड दिया तब शान्तनु ने राज्य कार्य सम्भाला।

महाभारत काल मे व्यवस्थापिका सभा Sacislative counell का वर्णन भी मिलता है। महाभारत शान्ति पर्व मे पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर के सम्मुख एकसत्तात्मक राज्य के दोषो का वर्णन करके प्रजा के प्रतिनिधि लोगो की सभा बनाने की आज्ञा दी और कहा कि इस सभा मे चारो वर्णों के लोगो का प्रतिनिधित्व होना चाहिये।

महाभारत के शान्ति पर्व मे राजा के कर्त्तव्यो का उपदेश करते हुये ऋषि उतथ्य राजा मान्धाता को कहते हैं—हे राजन्! कमजोर की, तपस्वी की और साप की दृष्टि बहुत असह्य होती है इसीलिये तुम कमजोर को कभी मत सताओ। बलवान् राजा यदि दुर्बल का अपमान करे उसे मारे या उसे गाली दे तो घटना-चक्र मे तैयार हुआ दण्ड उस राजा का नाश कर देता है इसलिये हे मान्धाता! यदि तुम बली हो तो कमजोर के अधिकार को मत हथियाओ। क्यो कि जैसे आग घरो को जला देती है वैसे दुर्बल की दृष्टि कही तुम्हे भस्म न कर दे। जब राजा अपने वचन शरीर और कर्म मे न्यायाचरण का दावा करता है तब उसे अपने पुत्र का भी अपराध क्षमा नही करना चाहिये। राजा का धर्म है कि वह अपने भाग मे से भी दुर्बलो को देकर उन्हे शक्तिशाली बनावे। राजा का कर्त्तव्य है कि वह जहा साधारण प्रजा को सुखी कर वहा अभागे अनाथ और वृद्धो के आसू पोछे। वह सदा अनाथ, वृद्ध, असहाय और विधवाओ की रक्षा करे। उनकी आजीविका का प्रबन्ध करे।

राजा युधिष्ठिर इस प्रकार के धर्मात्मा राजा थे जो धर्मराज कहलाए। इनका विशाल राज्य हिन्दूकुश पर्वत से लेकर कुमारी अन्तरीप तक फैला हुआ था। कुछ अन्य देश भी इनके अधीन थे। जैसा कि महाभारत के सभा पर्व मे लिखा है कि महाराज युधिष्ठिर के अभिषेक पर चोल, पाण्ड्य, अफगानिस्तान, (कन्धार), (फारस), चीन, काश्मीर, रोम, अग, वग, कलिङ्ग, लका, तिब्बत, अफ्रीका और बर्बर इन सब देशो के राजा अपने अपने हिस्से का कर लेकर इन्द्रप्रस्थ आये थे।

महाभारत के सभा पर्व मे सिहपुर और उत्तरीय यूरोप के विजय का भी वर्णन मिलता है।

महाभारत काल मे राजा के आय के मुख्य साधन भूमि की उपज, खान, समुद्र और वनो की उत्पत्ति थी। इनकी आय पर राजा कर लगाता था। प्रजा पर लगाये करो से जो आय होती थी, उसका उद्देश्य राजा की वैयक्तिक आय नही था। राजा प्रजा की आय का जो छटा-भाग लेता था, वह प्रजा के सार्वजनिक सुख के लिये ही होता था। महाभारत शान्ति पर्व मे लिखा है—हे कुरुनन्दन! बुद्धिमान राजा प्रजा की रक्षा के लिये उनकी आय का छटा-भाग कर के रूप मे ले। शान्ति पर्व मे राजा को कर ग्रहण के विषय मे सावधान किया गया है कि कई कर्मचारी प्रजा को लूटने वाले और पापाचारी होते है। राजा उनसे सदा प्रजा की रक्षा करे। वह उत्पत्ति और श्रम को देखकर ही कर निश्चित करे। वह लोभ मे पडकर, बहुत कर बढाकर अपने राष्ट्र के व्यवसाय पर कुठाराघात न करे। कर बहुत बढा देने वाले राजा से प्रजा द्वेष करती है। जैसे गौ को अधिक दुह लेने से बछडा भी काम का नही रहता इसी प्रकार प्रजा पर अधिक कर लगा देने से राष्ट्र की आगामी आय बहुत कम हो जाती है, अत राजा को चाहिये कि वह प्रत्येक नागरिक, राष्ट्रवासी, उपनिवेश तथा अधीन देशवासियो से अनुकम्पा पूर्वक उचित कर प्राप्त करे।

महाभारत काल मे जगल और चरागाहे राजा की सम्पत्ति नहीं गिने जाते थे। जगल मे बसने, विचरने तथा पशुओ के चराने मे प्रजा को पूर्ण स्वतन्त्रता थी। कृषिप्रधान भारतीयो को इससे बडा सुख था।

महाभारत काल मे धन और वैभव की दृष्टि से भारत वर्ष खूब सम्पन्न देश था। साथ ही इस समय आचार और व्यवहार की प्राचीन मर्यादाये ढीली होती जा रही थी। जो देश भौतिक ऐश्वर्य मे खूब सम्पन्न हो जाता है उसके निवासी स्वाभाविक रूप मे विलासी बन जाते है। इसी समय भारतवासियो के वैयक्तिक तथा सामाजिक आचार मे अवनति प्रारम्भ हुई। वेदज्ञ विद्वानो की न्यूनता, बहु-विवाह, नरबलि, वेश्यागमन, जुआ भरी सभा में देवियो का अपमान ये सब बुराइया महाभारत काल मे समाज मे बढने लगी।

स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा तत्पश्चात् आपस के विरोध मे लडकर नष्ट हो गये। क्योकि परमात्मा की इस सृष्टि मे अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगो का राज्य बहुत दिन नही चलता और यह ससार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढता है। इससे देश में युद्धविद्या आदि कौशल और सेना इतनी बढे की उसका सामना करने वाला भूगोल मे दूसरा न हो तब उन लोगो का पक्षपात और अभिमान बढकर अन्याय बढ जाता है और जब ये दोष हो जाते हैं तब परस्पर में विरोध होकर वे नष्ट हो जाते हैं, अथवा उनसे अधिक दूसरे छोटे कुलो मे से कोई ऐसा समर्थ पुरुष खडा होता है जो कि उनका पराजय करने मे समर्थ होवे। जैसे मुसलमानो की बादशाही के सामने शिवाजी और गुरु गोबिन्दसिह ने खडे होकर यवनो के राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया। इसी प्रकार इस शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया की अब तक भी यह देश अपनी पूर्व दशा मे नही आया। क्योकि जब भाई का भाई मारने लगे तब विनाश होने मे क्या सन्देह है।

क्या थे और क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आज मिलकर हम विचार ये समस्याए सभी॥

सुदर्शनदेव आचार्य सभा—उपमन्त्री

कन्या गुरुकुल देहरादून मे प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण सस्था है। १म से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। १६ जुलाई १९८६ से एम० ए० की कक्षाये भी आरम्भ हो रही हैं।

उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, साईंस, सगीत, गृह विज्ञान, सास्कृतिक गतिविधिया सस्था की आधारभूत विशेषताए हैं। विस्तृत सुविधाओ सहित बडे छात्रावास, तीसरी कक्षा मे सस्कृत एव अग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इण्टर उत्तीर्ण कन्याये भी प्रथम वर्ष मे दाखिल हो सकती हैं।

७ जुलाई से नवीन कन्याओ का दाखिला शुरु है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) भेजकर नियमावली मगा सकते हैं।

—दमयन्ती कपूर, आचार्या

वानप्रस्थी बृजमुनि की धर्मपत्नी का निधन

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक के पूर्व प्रधान वानप्रस्थी बृजमुनि (डा० बजनाथ कुन्द्रा) की धर्मपत्नी का २३ जून ८६ को लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। उनकी आयु लगभग ६५ वर्ष थी। वे भी आर्यसमाज तथा समाज सुधार के कार्यो मे भाग लेती रही थी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवारजनो को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभा मन्त्री

चण्डीगढ़ हिन्दी-भाषी है, हरयाणा इसके बदले पंजाब को एक इंच भी भूमि नहीं दे सकता :

—प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

हिन्दुस्तान टाइम्स दैनिक में समाचार छपा है कि शासक अकाली दल के क्षेत्रों में चण्डीगढ़ के बारे में पुनर्विचार चल रहा है कि वे चण्डीगढ़ छोड़ने को तैयार हैं यदि हरयाणा उनको उसके बदले में एक लाख एकड़ भूमि का इलाका दे देवे।

आज तक किसी ने भी चण्डीगढ़ के हिन्दी भाषी होने पर आपत्ति नहीं की है। १९६१ से लेकर १९८१ तक की सभी जनगणनाओं से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो गया है कि चण्डीगढ़ हिन्दी-भाषी है। शाह आयोग ने बड़े विस्तार से इस प्रश्न पर विचार किया और हिन्दी-भाषी होने के नाते चण्डीगढ़ समेत खरड़ तहसील हरयाणा को दिए जाने की सिफारिश की। पंजाब का पुनर्गठन भाषा के आधार पर ही हुआ था, इसलिए चण्डीगढ़ हरयाणा का अंग है। यह कारण था कि सरदार दर्शनसिंह फेरुमान जैसे स्वतन्त्रता सेनानी की लम्बी भूख हड़ताल के बाद मृत्यु होने पर भी श्रीमती इन्दिरा गांधी ने चण्डीगढ़ पंजाब को नहीं दिया। कोई भी राज अध्यक्ष किसी बड़े से बड़े व्यक्ति की हठ पर उसकी जान बचाने के लिए एक प्रदेश की राजधानी दूसरे प्रदेश को नहीं दे सकता।

इसीलिए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पंजाब को चण्डीगढ़ देना तभी माना, जब सन्त फतहसिंह ने स्वयं पेशकश की कि चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को फाजिल्का अबोहर का इलाका दे दिया जाए।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यदि चण्डीगढ़ पंजाबी-भाषी होता तो हरयाणा उसके बदले में एक इन्च भूमि नहीं मांग सकता था। उस अवस्था में हरयाणा केवल अपनी राजधानी के लिए भारत सरकार से धन मांग सकता था।

अकाली तथा पंजाब सरकार १९८१ की जनगणना को विश्वसनीय मानते हैं। शाह आयोग ने अपने सभी फैसले १९६१ की जनगणना के आधार पर किये थे, और उनके निर्णय को किसी ने चुनौती नहीं दी थी। पचास से अधिक गांवों की भाषायी जांच करने के पश्चात् मैथ्यू आयोग भी इस नतीजे पर पहुँचा कि १९८१ की जनगणना तो धोखा था। फिर चण्डीगढ़ तो १९८१ की जनगणना के आधार पर भी हिन्दी-भाषी बनता है और इसी कारण से हरयाणा का ही कायदे से एक अंग है।

यदि अकालियों के नये विचार के अनुसार चण्डीगढ़ हरयाणा को दे दिया जाए, जिसका कि वह अंग है, तब पंजाब चण्डीगढ़ के बदले में एक इन्च भूमि की भी मांग नहीं कर सकता। पंजाब अपनी राजधानी के लिए भारत सरकार से धन अवश्य मांग सकता है, और उस अवस्था में हरयाणा खुले दिल से पंजाब को धन देने के लिए भारत सरकार से आग्रह करेगा।

हिन्दी टाईपिस्ट की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय में एक हिन्दी टाईपिस्ट की तुरन्त आवश्यकता है।

इच्छुक महानुभाव अपना आवेदन पत्र योग्यता, अनुभव आदि के विवरण सहित सभा कार्यालय में भेजें। वैदिकधर्मी विचारधारा एवं मिशनरी भावना से कार्य करने वाले को प्राथमिकता दी जायेगी।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, गोहाना मार्ग, दयानन्द मठ, रोहतक।

प्रकाशसिंह बार-बार पैंतरा-बाजी करके बदलसिंह बन रहे हैं

(प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी)

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने श्री प्रकाशसिंह बादल के उस वक्तव्य की कठोर आलोचना की है, जिसमें उन्होंने कहा था कि हरयाणा को ७० हजार एकड़ तो क्या ७ हजार एकड़ भूमि भी नहीं देनी चाहिए। उन्होंने रहस्योद्घाटन किया है कि श्री प्रकाशसिंह बादल के राजनैतिक गुरु ज्ञानी करतारसिंह थे। उन्होंने उनके साथ १९५६ में अबोहर फाजिलका के क्षेत्र को हिन्दी-भाषी क्षेत्र माना था और १९६६ में पंजाब तथा हरयाणा के प्रमुख नेताओं की बैठक में जिसमें प्रकाशसिंह बादल आदि तथा मैं (प्रो० शेरसिंह) तथा चौ० देवीलाल आदि उपस्थित थे, ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये थे कि हिन्दी-भाषी ग्राम छांटने समय एक नहीं अपितु दो ग्राम भी बीच में पंजाबी भाषी आजावें तो उन्हें भी हरयाणा में मिला दिया जाए। इस प्रकार उन्होंने कन्दूखेड़ा ग्राम को १२५ ग्रामों के साथ हरयाणा में सम्मिलित करने पर श्री प्रकाशसिंह बादल ने अपने हस्ताक्षर किये थे। इस दस्तावेज की प्रति भारत सरकार के गृह मन्त्रालय को गत सप्ताह दी गई है परन्तु प्रकाशसिंह बादल इन हिन्दी भाषी ग्रामों को पंजाब में ही रखने के लिए आतंकवादियों को उकसा रहे हैं। पंजाबी नेताओं की ओर से इस समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले केवल अब बादल जीवित हैं। अतः उन्हें अपने हस्ताक्षरों का सम्मान करना चाहिए।

श्री प्रकाशसिंह बादल ने १९८४ में चण्डीगढ़ में भारत के संविधान को जलाकर राष्ट्र विरोधी कार्य किया था और विधायक बनने पर राष्ट्र की एकता और अखण्डता के प्रति निष्ठा रखने की शपथ उठाई है परन्तु अब वे खालिस्तान समर्थकों के साथ मिलकर राष्ट्र के टुकड़े करना चाहते हैं।

इस प्रकार वे बार-बार अपना स्टैण्ड बदलकर पैंतराबाजी करके प्रकाशसिंह बादल के स्थान पर सरदार बदलसिंह बनते जा रहे हैं। उनका ग्राम बादल भी उनके पूर्व समझौते के अनुसार हरयाणा में ही आता है।

उनकी राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी गतिविधियों की जितनी भी निन्दा की जाए, वह थोड़ी है।

हरयाणा के आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज जहर जि० करनाल	१, २, ३ जुलाई
,, खारवन जि० अम्बाला	३० जून, १, २ जुलाई
,, बादली जि० रोहतक	१, २, ३ जुलाई
,, गुरुथला जि० गुड़गावां	३० जून, १ जुलाई
,, मालव जि० ,,	२, ३ ,,
,, तावडू जि० ,,	४, ५, ६ ,,
,, हसनपुर जि० फरीदाबाद	७, ८ ,,
,, प्रेम नगर, जेल रोड, रोहतक	५, ६ ,,
,, सालवन जि० करनाल (वेद सप्ताह)	८ से १४ अगस्त

हरयाणा के जो आर्यसमाज अपने वार्षिक उत्सव अथवा वेद सप्ताह जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर मास में रखना चाहते हैं, वे यथा शीघ्र अपनी तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें, ताकि समय पर उपदेशकों तथा भजन मण्डलियों का कार्यक्रम बनाया जा सके।

सभा मन्त्री

श्री रामगोपाल शालवाले स्वामी आनन्दबोध बने

(सुखदेव शास्त्री द्वारा)

२२ जून १९८६ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले वानप्रस्थ का सन्यास दीक्षा समारोह आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। समारोह मे हजारो की सख्या में जनता उपस्थित थी। दीवान हाल का विशाल भवन खचाखच भरा हुआ था। बाहर सडको पर भी श्रोता उपस्थित थे।

यज्ञ वेदी पर भारत भर के प्रसिद्ध विद्वान् वेदो के मन्त्रो का उच्चारण कर रहे थे। अनेको सन्यासी मच पर उपस्थित थे। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सन्यास दीक्षा देने के लिए सर्वोच्च आसन पर विराजमान थे। स्वामी सुमेधानन्द जी हिमाचल से, मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती शालवाले जी के साथ हो होता के रूप में उपस्थित थे। प्रो० शेरसिह जी प्रधान हरयाणा सभा, श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, श्री स्वामी दीक्षानन्द जी, श्री पण्डित शिवकुमार जी शास्त्री, डा० सूर्यदेव जी, स्वामी धर्मानन्द जी उडीसा, दिल्ली मे सुदूर के भी अनेक सन्यासी व विद्वान विराजमान थे। यज्ञ सम्पन्न होने पर सन्यास की दीक्षा देते हुए स्वामी सर्वानन्द जी ने रामगोपाल जी शालवाले का नाम "आनन्दबोध स्वामी" रखा, काषाय वस्त्र तथा कमण्डल-दण्ड प्रदान किए।

सन्यास की दीक्षा देते हुए स्वामी सर्वानन्द जी ने कहा—तुम्हे आज से पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा छोडनी होगी तथा समाज सेवा का कार्य लगातार करना होगा। स्वामी जी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि वैसे तो यह सन्यास दीक्षा समारोह भी लोकैषणा के समान ही है, किन्तु इसका यह उद्देश्य समझा गया कि इस समारोह से अन्य सज्जन भी प्रेरणा लेकर वानप्रस्थ तथा सन्यास की दीक्षा लेकर आर्यसमाज के कार्य को करने मे अग्रसर हो। यदि धनीमानी परिवार के लोग सन्यास लेकर वेदप्रचार का कार्य करने लगे तो उसका प्रभाव तेज होता है। स्वामी ओमानन्द जी को सम्बोधित करते हुए कहा कि शालवाले जी यदि इससे पहले ही सन्यास लेकर कार्य करते तो और भी अच्छा होता। किन्तु अब भी उन्होने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। अब तक अनेक वर्षों के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने सन्यास दीक्षा ली है। दीक्षा गुरु स्वामी सर्वानन्द जी के बारे में बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि इस समय सारे भारत में उन जैसा कर्मठ विद्वान् त्यागी तपस्वी सन्यासी कोई भी नही है।

स्वामी जी ने धनियो से धन देने की सक्षिप्त अपील करते हुए कहा कि यदि धनिक व्यक्ति ग्यारह-ग्यारह सौ रुपये भी दे दे तो उडीसा आदि मे बहुत अधिक प्रचार हो सकता है। धन के अभाव मे ईसाईयत का मुकाबला नही हो सकता।

हरयाणा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह ने भी सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक धर्म प्रचार के क्षेत्र मे सन्यासी कार्य न करेगे तब तक प्रचार के कार्य में प्रगति नहीं होगी।

स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री वन्देमातरम्, आचार्य हरिदेव, श्री पण्डित शिवकुमार जी शास्त्री ने भी सभा को सम्बोधित किया। श्री राजगुरु जी शास्त्री ने भी अपने विचार रक्खे।

अन्त में नवदीक्षित स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने स्वामी सर्वानन्द जी के प्रति आदरभाव प्रकट किया और कहा कि जो दीक्षा मुझे दी गई है मैं उसका जीवन भर पूरा पालन करूगा। महर्षि दयानन्द के कार्य को आगे बढाने में मैं अपना सब कुछ अर्पण कर दूगा। पजाब के अन्दर जो कुछ भी हो रहा है, उस समस्या को सुलझाने मे मैं पूरा प्रयत्न करूगा।

पश्चात् दैनिक यज्ञ तथा शान्तिपाठ एव जयघोषो के साथ दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ।

स्वर्गीय प० तालेराम आर्य की स्मृति मे

वेद प्रचार का आयोजन सम्पन्न

आर्यसमाज कवारी की तरफ से दिनाक २७ मई से २९ मई १९८६ तक स्वर्गीय प० तालेराम जी आर्य की स्मृति मे वेद प्रचार का आयोजन विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न विद्वानो ने भाग लिया—सर्वश्री स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी परमानन्द जी, स्वामी जगतमुनि जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, प० प्रभुदयाल जी, प० भरतलाल जी शास्त्री, मा० शेरसिह जी आदि।

आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी ने प्रात यज्ञ के बाद प० जी के जीवन एव कार्यों पर सक्षिप्त प्रकाश डाला। बाद मे उपरोक्त सभी विद्वानो ने समय-समय पर पधार कर प० जी के गुणो का वर्णन किया। उसे एक सच्चा समाज सुधारक एव ईश्वर भक्त बताकर सच्ची श्रद्धाजलि दी। इसके अतिरिक्त विद्वानो ने यम-नियम, धर्म क्या है, आर्यसमाज क्या है क्या चाहता है देश किस तरफ जा रहा है बढते हुए भ्रष्टाचार, शराब बन्दी दहेज बन्दी, नारी शिक्षा, शिक्षा मे आमूल-चूल परिवर्तन, ब्रह्मचर्य मनुष्य का कर्तव्य, सुखी गृहस्थ के बारे मे विचार रखे।

[illegible] के शिक्षाप्रद क्रान्तिकारी भजन हुए। [illegible] का कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय एव प्रेरणाप्रद रहा। सभा को [illegible] रु० दान दिए।

[illegible]सिह आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज कवारी

हैदराबाद के आर्यसमाज आदोलन मे भाग लेने वाले महानुभावो को आवश्यक सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने प्रेस विज्ञापन द्वारा हैदराबाद के आर्यसमाज के आदोलन में भाग लेने वालो से गृह-मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित आवेदन-पत्र भरकर मगवाये है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे गृह-मन्त्रालय से उक्त आवेदन-पत्र आगये हैं। अत इच्छुक महानुभाव तुरन्त रोहतक कार्यालय पधारकर, आवेदन-पत्र लेकर उन्हे भरने का कष्ट करे। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से भी सम्पर्क किया जारहा है। आवेदन-पत्र भरवाने के कार्य मे यथा-सम्भव सभा की ओर से सहयोग किया जायेगा। पासपोर्ट साइज के दो चित्र भी साथ लावें।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

माकडौला (गुडगावा) का योग शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में आर्यावर्त युवक परिषद् माकडौला (गुडगावा) का ब्रह्मचर्य योग प्रशिक्षण शिविर ८ जून से १५ तक ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री चतुर्भुज जी सरपच मकडौला, धर्मवीर जी प्रधान ग्रामीण युवा सेवा समिति, श्री रिसाल सिह जी, रामरख जी, श्री ला० जयकिशन जी, श्री रामप्रकाश जी खुराना आदि अनेक ग्रामवासियो ने तन मन धन स सहयोग दिया। शिविर के बौद्धिक कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु स्वामी सत्यप्रिय जी वैदिकाश्रम तिजारा, वैदिक प्रवक्ता प० रणवीर जी शास्त्री समाल्खा, प० सुरेशकुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्रीचन्द जी वैद्य गुडगावा, प० मुरारी लाल जी बेचैन की भजन मण्डली आदि विद्वानो ने अपने ओजस्वी विचारो से शिविरार्थियो को लाभान्वित किया। ब्र० महेन्द्रसिह जी शास्त्री ने अपने कुशल नेतृत्व मे शिविर के दौरान नौजवानो को उद्बोधित किया। जिससे बुढेडा कालियावास माकडौला वजीराबाद के लडको ने अपनी शाखा को पूर्ववत् चलाते रहने का पूर्ण उत्साह से आश्वासन दिया। ब्र० सतीश जी शिक्षक वजीराबाद गुडगावा जिन्हे आर्यसमाज वजीराबाद व नजफगढ (दिल्ली) का १०० रुपये आर्थिक सहयोग प्राप्त है, माकडौला शिविर मे शिक्षक के रूप मे सहयोग दिया।

संयोजक मा० खजानसिह
आर्यावर्त युवक परिषद्

आर्यसमाज महावीर गधौली जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव

वैद्य श्री गेन्दाराम मन्त्री आर्यसमाज माडल कालोनी के प्रयत्नो से नवीन आर्यसमाज महावीर गधौली जि० अम्बाला का प्रथम वार्षिक उत्सव ६,७,८ जून १९८६ को बडी धूम-धाम से मनाया गया और उत्सव बडा ही सफल रहा। ग्राम के सभी नर-नारियो ने बडे उत्साह से भारी संख्या मे प्रचार सुना और सभी अतिथियो की सराहनीय सेवा की। श्री यज्ञप्रिय शास्त्री जी ने ब्रह्मा के पद को सुशोभित किया और सभी यजमानो पर पुष्पो की वर्षा करके उत्साह बढाया। इस उत्सव मे निम्नलिखित विद्वानो एव भजनोपदेशको ने भाग लिया आचार्य देवव्रत जी गुरुकुल कुरुक्षेत्र, प्रो० निर्मल अजमानी डी० ए० वी० कालेज यमुनानगर, स्वामी निगमानन्द जी, स्वामी सदानन्द, श्री यज्ञप्रिय शास्त्री जी, श्री रामस्वरूप शास्त्री जी, श्री ब्र० महेश जी योगी वैदिक साधना आश्रम यमुनानगर स्वामी धर्मानन्द जी पानीपत, आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री सुरेशकुमार जी शास्त्री, प० हरिश्चन्द्र जी, प० राजबल जी, प० समेरसिह जी प० बनारसीलाल जी भजनोपदेशक पधारे। कुमारी सुनीता के भी भजन हुए। समाज की ओर से ४०१ रुपया वेदप्रचार सभा को दिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49

सृष्टि संवत् १,९६०८,५



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक – प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक – वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ३१   ७ जुलाई, १९८६   वार्षिक शुल्क २०)   आजीवन शुल्क २०१)   विदेश मे ७ पौंड   एक प्रति ५० पैसे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान–

महात्मा आनन्दबोध सरस्वती द्वारा दिया गया प्रेस वक्तव्य

दिल्ली २५ जून जैसा कि आप सब जानते ही हैं, मैंने कुछ दिन पूर्व ही वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार अपने जीवन के चतुर्थ एव अन्तिम अध्याय में प्रवेश किया है और भविष्य में एक सन्यासी का जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया है। गाधी जी ने इस वर्णाश्रम व्यवस्था की सराहना करते हुए कहा था—

"यह (वर्णाश्रम व्यवस्था) वैदिकधर्म की मानव जाति के लिए एक अमूल्य एव अनुपम देन है।'

इसके ऊपर आचरण करने के बाद ही ससार के लोग इसके महत्त्व को समझ सकेंगे। मैं आशा करता हू कि वह समय शीघ्र आएगा। सन्यास ग्रहण करने से मेरा यह मन्तव्य नही है कि मैं अपनी समस्त जिम्मेदारियो को त्याग कर किसी वट-वृक्ष के नीचे अथवा किसी कन्दरा में या किसी पुण्य सलिला नदी के तट पर बैठकर एकान्तवास करते हुए केवल ईश्वराधना मे ही अपना सारा समय व्यतीत करू। अपने परम गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर मैंने निश्चय किया है कि अब सारे पारिवारिक बन्धनो से मुक्त होकर मै अपना सारा समय देश, जाति और धर्म की सेवा में समर्पित करदूं।

हमारा देश आजकल एक बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा है। उसकी एकता और अखण्डता खतरे में है। उत्तर और दक्षिण दोनो ही भागो मे हमारी सस्कृति पर आक्रमण किये जारहे हैं। पजाब मे हम आतरिक और बाह्य दोनो ओर से विघटनवादी ताकतो से लड रहे है। पश्चिम के तथाकथित गणतन्त्रवादी देश यह नहीं चाहते कि भारत एक शक्तिशाली देश बनकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में "तीसरी ताकत" को किसी प्रकार की सहायता करे। इसके लिए वे तरह-तरह के भारतविरोधी षड्यन्त्र में लगे हुए हैं। मैंने पिछले दिनों पजाब का विस्तृत दौरा किया था। वहा समाज के अनेक नेताओ से मिला। उन लोगो से भी बातचीत की, जो उग्रवादियो के अत्याचारो के शिकार हुए हैं। मैंने वहा के अल्पसख्यक हिन्दुओ को सुरक्षा की तलाश में अपना घरबार, जमीन जायदाद छोडकर पजाब से बाहर के लिए पलायन करते हुए देखा है। एक बहुत ही साधारण गणना के अनुसार पाच हजार से अधिक व्यक्ति अब तक पजाब छोडकर अन्यत्र जा चुके है। पजाब की प्रातीय सरकार कुछ एकड जमीन प्राप्त करने के लिये सघर्ष कर रही है। जबकि वहा की निरीह-निर्दोष हिन्दू जनता आये दिन आतकवादियो की गोलियो की शिकार हो रही है। श्री बरनाला जिस नीति पर चलते हुए कार्य कर रहे हैं, उससे तो यही प्रतीत होता है कि वे स्वय भी यही चाहते हैं कि पंजाब की बिगडी हुई स्थिति इस तरह उस समय तक चलती रहे, जब तक खालिस्तान का स्वत: निर्माण न हो जाये।

पजाब मे मैंने जो कुछ देखा, उससे मुझे बडी पीडा हुई है। वहा के हिन्दुओ की दुर्दशा ने मुझे जल्दी से जल्दी सन्यास आश्रम मे प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया था। अब मैं पूर्ण रूप मे स्वतन्त्र और बन्धन रहित होकर पजाब और देश को बचाने के लिये अपना जीवन भी दाव पर लगा सकता हूँ।

२२ जून, १९८६ को ही अपराह्न में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक भी हुई। जिसमे पजाब की बिगडती हुई स्थिति पर विचार विमर्श किया गया। इस बैठक मे देश के अन्य भागो से भी विशिष्ट प्रतिनिधि आमन्त्रित किये गये थे। विचार विमर्श के पश्चात् सार्वदेशिक सभा इस निर्णय पर पहुची है कि पजाब की स्थिति को और अधिक बिगडने से बचाने के लिए निम्न कार्यवाही करना आवश्यक है—

१—बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त किया जाये, क्योकि वह पजाब की स्थिति को सम्भालने के लिये हृदय से कृत-सकल्प नही है। उस समय जबकि वहा उग्रवादियो द्वारा प्रतिदिन निर्दोष हिन्दू अल्पसख्यक मौत के घाट उतारे जारहे है। बरनाला सरकार का ध्यान कुछ एकड क्षेत्रीय लाभ के लिये सघर्ष करने मे लगा हुआ है।

२—पजाब मे तुरन्त राष्ट्रपति शासन लागू करते हुए, उसे सेना के हवाले किया जाये।

३—और वहा ऐसी परिस्थितिया पैदा की जाये, जिसमे वहा की कानून और सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ हो सके और जो अल्पसख्यक प्रात छोडकर बाहर चले गये है, वे पुन अपने घरो को लौट सकें।

इस अवसर पर अन्तरग सभा के सदस्यो ने एक प्रस्ताव भी पारित किया। जिसके अनुसार केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया जाये कि वह पजाब की स्थिति को सुधारने के लिए बरनाला सरकार से केवल बातचीत के भरोसे न रहकर इस दिशा मे कोई ठोस और प्रभावी कदम उठाये। यदि केन्द्रीय सरकार हमारी आवाज न सुने तो उस दशा मे सीधी कार्यवाही करते हुए सत्याग्रह किया जाये। इस विषय मे कुछ सदस्यो का विचार था कि सत्याग्रह सामूहिक हो, कुछ केवल चुने हुए व्यक्तियो द्वारा ही सत्याग्रह के पक्ष मे थे। कुछ की राय थी कि इसके लिये आमरण अनशन किया जाये। यदि ऐसा करना परिस्थितिवश आवश्यक हो। इस सभा में यह भी तय किया गया कि पजाब की स्थिति पर विचार करने के लिये आर्यसमाज के सभी क्षेत्रीय और जिला स्तर के कार्यालयो को एक परिपत्र भेजा जाये, जो इस समस्या पर ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद अपने सुझाव प्रस्तुत करें। इसके लिये सभा के सभी केन्द्रो के कार्य-

(शेष पृष्ठ ३ पर)

बढ़ती भूखमरी और अनाज के पहाड़

लेखक—शीतलाप्रसाद तिवारी

अनाज उत्पादन से विकसित और विकासशील सभी राष्ट्र परेशान हैं। अन्तर केवल इतना है कि अल्पविकसित तथा विकासशील राष्ट्र उत्पादन बढ़ाने के लिए परेशान हैं तो विकसित राष्ट्र उसके रख-रखाव और उत्पादन कम करने के लिए परेशान हैं। कैसी विडम्बना है कि एक तरफ अफ्रीकी देशों में अन्न की कमी के कारण बच्चे भूख और कुपोषण के शिकार हो रहे हैं तो दूसरी तरफ पश्चिमी देश विपुल अन्न भंडारण से परेशान हैं। इथोपिया अन्न की कमी से जितना कराह रहा है, उतना ही विकसित देश अन्न भंडारण से। पिछले वर्ष यूरोपीय आर्थिक समुदाय के पास ११ मिलियन टन के मक्खन के भण्डार के साथ ६ मिलियन पौंड की कीमत का अनाज का पहाड़ था। इस अनाज के पहाड़ को कम कैसे किया जाये इस पर वार्ता करने के लिये यूरोपीय साझा बाजार के सदस्य राष्ट्र गतवर्ष एकत्र हुए। उनके इस पहाड़ को भूखमरी वाले देश आयात करके तो कम नहीं कर सकते। क्योंकि उनके पास खरीदने की क्षमता नहीं है और सस्ते दर पर ये विकसित राष्ट्र निर्यात नहीं कर सकते। इसलिए यह उपाय सूझ रहा है कि उत्पादन पर अधिक कर लगाकर उत्पादनकर्त्ताओं को हतोत्साहित कर, अनाज के बढ़ते भण्डार को रोका जा सकता है।

दूसरी तरफ भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति जिमीकार्टर की देख-रेख में अफ्रीका देशों घाना, तन्जानिया, जाम्बिया में उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत की तरह की "हरितक्रान्ति योजना" लागू की जा रही है। उनका विचार है कि जिस योजना ने अन्नविहीन हिन्दुस्तान को अन्न विपुल हिन्दुस्तान बना दिया वह योजना अफ्रीका को भी अन्नविहीन से अन्न परिपूर्ण बना सकती है।

अव्यावहारिक अन्न योजना

अन्न भण्डारण की यह समस्या विदेशों में ही नहीं, बल्कि अब भारत में भी हो गई है। हमारे देश में ३.५ करोड़ टन का अनाज भंडार है जो इस दशक के अन्त तक ४ करोड़ टन हो जायेगा। इस समय ७५ लाख टन अनाज गोदामों से बाहर सड़ रहा है जबकि हमारे देश में हर चौथा व्यक्ति भूख से व्याकुल रहता है। इस तथ्य के बावजूद कि इतना अनाज १९६६ में अमरीका से आयात करने के लिए हमें एड़ी से चोटी तक की ताकत लगानी पड़ी थी। हमारे देश में यह अन्न बर्बाद हो रहा है। हमारे देश में ३६.९ प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे (३०० रुपये से कम आय में) अपना जीवनयापन कर रहे हैं। हर व्यक्ति यह तर्क दे सकता है कि जब देश में इतना अनाज है तो कोई भूखा क्यों रहे? अमीर गरीब सब बांटकर क्यों नहीं खाते? परन्तु यह कथन कहने में जितना आसान है, करने में उतना ही कठिन। बांटना भी चाहे तो किस तरह बांटे। वह अनाज का पहाड़ जो दिखाई देता है, वह हरयाणा, पंजाब और प० उत्तर प्रदेश के किसानों के कारण है। अब यदि बाजार में अनाज का खरीद मूल्य कम कर दिया जाये तो कौन किसान गेहूं बोना चाहेगा? इसके बाद इन किसानों का जो आंदोलन खड़ा होगा, उसकी कल्पना आप स्वयं कर सकते हैं। इसके बाद भी यह निश्चित नहीं है कि अनाज का पहाड़ खड़ा करने वाले किसानों को गर्त में मिलाकर बिहार और गुजरात के लोगों की भूख मिटाई जा सकती है। दौड़ में भाग लेने के लिये पैर में पट्टी बांधने से तो काम चलेगा नहीं, इसलिए सरकार कितनी ही सस्ते और नियन्त्रित मूल्य की दुकानें खोल दे, परन्तु भूख मिटाने के लिये पराक्रम तो करना ही पड़ेगा।

अनाज के पहाड़ को कम करने के लिए अधिक कर लगाकर उत्पादन कम करके पहाड़ कम किया जाये। यह विचार भारत की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। इसलिए हमारी सरकार ने पश्चिमी देशों की तरह नहीं सोचा। लेकिन निर्यात करने का विचार उसके दिमाग में अवश्य आया। कहने का अर्थ यह है कि यदि देश के भूखे लोग अनाज खरीदने की सामर्थ्य नहीं रखते तो कोई बात नहीं। हम विदेश में उनको बेच देंगे, जिनके अन्दर खरीदने की क्षमता है। मगर भारत का गेहूं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में महंगा पड़ता है। अर्जेनटाईना और अमेरिका क्रमशः १२७२ और १६३२ टन रुपये में जरूरतमन्द देशों को गेहूं मुहैया करा सकता है, जबकि भारत को चाहिये १८०० रु० टन। भारत १६२ रु० वसूली मूल्य पर खरीदता है और ४५ रु० रखरखाव पर खर्च करता है, परन्तु राशन की दुकानों में १७१ रु० में २७० रु० की लागत का गेहूं नहीं बिक पाता। सुरक्षा व्यवस्था पर ८० अरब रु० बैंकों ने लगा रखा है, जिसका ब्याज ही एक अरब रु० होता है। जब इतने भारी खर्च के कारण बेचना ही पड़े तो घाटा खाकर बेचो। हमारी सरकार ने सोचा पाकिस्तान को अपना गेहूं बेच दें, लेकिन पाकिस्तान के शासकों ने सोचा कि भारत का अन्न खाकर क्या भारत जैसी राजनीति स्वतन्त्रता की मांग जनता नहीं करेगी? इधर रूस ने २५ लाख टन गेहूं लेने की बात की थी। लेकिन ५ लाख टन लेने के बाद उसने भी अपनी झोली का मुंह बन्द कर लिया। चीन (विश्व का सबसे बड़ा देश) अन्न के मामले में अब आत्मनिर्भर है। देश के भूखे लोग अन्न खरीद नहीं सकते, क्योंकि खरीदने के पैसे उनके पास नहीं हैं।

पहाड़ खड़ा करने वाले गर्व से कह सकते हैं कि यह पहाड़ उनके पराक्रम का फल है। यह सच भी है। लेकिन रासायनिक खाद जिस पर ४ हजार करोड़ प्रतिवर्ष खर्च हो रहा है और अब तक ८०० करोड़ की "सब सिडी" उर्वरक पर दी जा चुकी है, यह कहां से आता है? इसकी अदायगी भूखे और पहाड़ खड़ा करने वाले मिलकर करते हैं। इसके बाद उत्पादन को बढ़ाने वाला दूसरा तत्त्व है पानी। भाखड़ा नांगल में सारे देश का पैसा लगा है। इसके बाद विश्व जनसंख्या में दूसरा बड़ा देश इनके उत्पादन के लिये निःशुल्क और आरक्षित बाजार है। बिजली की कमी को पूरा करनेवाला कोयला दूसरे राज्यों से आता है। गेहूं बिके अथवा सड़े, परन्तु इसका गेहूं सरकार उचित मूल्य पर ही खरीदती है। उसके अलावा इस पहाड़ को खड़ा करने में चावल उत्पादक राज्यों का भी बड़ा योगदान है। हालांकि यह बात अलग है कि "हरित क्रांति" ने जितना गेहूं क्षेत्रों को प्रभावित किया, उतना चावल उत्पादक क्षेत्रों का नहीं। क्योंकि १९८६ में चावल उत्पादक राज्य बिहार और तमिलनाडू का हिस्सा अनाज भण्डार में क्रमशः ९१ तथा ६१ था, परन्तु अब यह प्रतिशत ६१ और ४२ पर पहुंच गया है। जिस दिन हरित क्रांति चावल क्षेत्रों को उतना ही प्रभावित करेगी तो भण्डारण की समस्या और भी जटिल होगी।

काम के बदले अनाज योजना

भण्डार को समाप्त करने के लिए एक बहुत बढ़िया विचार सूझा कि काम के बदले अनाज योजना लागू कर निर्माण कार्य इतना कर दिया जाये कि देश का नक्शा ही बदल जाये और गांवों को शहर जोड़ने का नारा यथार्थ हो सके। इस योजना के अनुसार १९८१ में २१ लाख टन अनाज वितरण हुआ, परन्तु एकाएक यह योजना खटाई में क्यों पड़ गई, कारण अज्ञात है। क्योंकि इसके बाद १९८४ तक मात्र ८ लाख टन के अनाज का आवंटन इस योजना के अन्तर्गत हुआ। कारण शायद यह हो कि इस योजना के अन्तर्गत कार्य कागज पर नहीं, अपितु यथार्थ में होता है। रुपया खाया जा सकता है, परन्तु अनाज कितना खाया जा सकता है? जब सरकार भण्डारण के खर्च से परेशान है तो कोई अन्य भण्डारण कैसे कर सकता है।

इसके बाद वृक्षारोपण की योजना अपनाई गई। जिससे प्रदूषण की समस्या तो हल होगी ही, भूख की समस्या भी हल होगी। क्योंकि लोग वृक्षों की लकड़ी से भी अपनी जीविका चला सकते हैं, परन्तु यह सोच बिल्कुल नया है, लागू होने में कितना समय लगेगा, इसे तो लागू करने वाले ही जान सकते हैं।

तिलहन उत्पादन बढ़ाया जाये

चावल, गेहूं तो पैदा कर लिया, पर उसको खाया किस से जाये।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ २ का शेष)

कर्त्ताओं की एक मीटिंग देहली में १२ और १३ जुलाई, १९८६ को बुलाई गई है। उस समय इस दिशा में आगे की कार्यवाही पर अन्तिम निर्णय लिया जायेगा।

इस वक्तव्य को समाप्त करने से पूर्व मैं कुछ बातें स्पष्ट करना चाहूंगा। आर्यसमाज ने सदा ही केन्द्रीय सरकार के उन सभी प्रयत्नों में सहयोग दिया है, जिसके द्वारा उसने देश के विघटनवादी तत्त्वों को समाप्त करने की योजना बनाई है। इस समय भी हम सरकार के साथ टकराव के पक्ष में नहीं हैं। लेकिन अब देश की एकता और अखण्डता के लिए प्रतीक्षा करते हुए खतरों को देखकर हमारी सहनशीलता समाप्त होती जा रही है। ... पाकिस्तान ... उग्रवादियों ... पंजाब पाकिस्तानी ... से ... नहीं है। ... यह पाकिस्तान ... रहा है। केन्द्रीय ... जोर नीति सारे देश ... साम्प्रदायिकता के आधार पर ... कर देगी। हिन्दुओं में धीरे-धीरे यह भावना घर करती जा रही है कि अपने जीवन, सम्मान और सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए उन्हें स्वयं ही प्रयत्न करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। इसी भावना के अनुसार वे धीरे-धीरे एक हिन्दू-ध्वज के नीचे संगठित होकर एक शक्तिशाली दल का निर्माण चाहते हैं। देश के सभी राजनैतिक संगठन पद और सत्ता के लालच में अपनी नैतिकता से इतने गिर गये हैं कि अब हिन्दुओं का उनकी किसी भी बात पर विश्वास नहीं रहा।

हमारी आशंका है कि देश के विघटनवादी तत्त्व कुछ विदेशी ताकतों के सहयोग और समर्थन से सारे देश में फैलकर हमारे राजनैतिक ढांचे को तोड़कर देश को और विभाजित करने का प्रयत्न करेंगे। आर्य समाज जो देशभक्तों का एक सामाजिक संस्था है, इस विनाश का मूक-दर्शक बनकर नहीं रह सकता। हम समझते हैं कि देश की सुरक्षा के लिए अधिकतम बलिदान देने का समय आ गया है और हमें किसी भी कीमत पर इसकी रक्षा करनी है। मैं देश की सभी सामाजिक संस्थाओं और राजनैतिक संगठनों से, वे चाहे किसी भी विचारधारा को मानते हों, यह अपील करता हूँ कि इस कठिन समय में आगे आकर पंजाब को बचाने का प्रयत्न करें। यदि पंजाब बचेगा तो तभी देश भी बच सकेगा अन्यथा इसका विघटन अवश्यम्भावी है।

आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

वेदप्रचार पखवाड़ा १ से १५ जुलाई ८६

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने १५ दिन का वेदप्रचार का कार्यक्रम देहातों में करना निश्चित किया है। अतः आप निम्न कार्यक्रमानुसार इस अवसर का लाभ उठाएं—

७ और ८ जुलाई बड़ा खाड़ा (शेरी) (सोनीपत)
९ जुलाई छोटा खाड़ा (सोनीपत)
१० ,, माडी (करनाल)
११ ,, चमराडा (करनाल)
१२ ,, पलड़ी (करनाल)
१३ ,, मच्छरौली (करनाल)
१४ ,, झटीपुर (करनाल)
१५ ,, जाटल (करनाल)
१६ ,, बिन्झौल (करनाल)

इस कार्यक्रम में स्वामी प्रेमानन्द जी वैदिक सन्यासाश्रम गाजियाबाद, ब्र० नन्दकिशोर गीता आश्रम हरिद्वार, राजस्थान हरयाणा के जानेमाने प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव आर्य आदि पधार रहे हैं। वैदिक सिनेमा भी दिखाया जायेगा और वैदिक साहित्य भी वितरित किया जायेगा। यज्ञोपवीत दिये जायेंगे। विद्यालयों में भी जायेंगे।

मुन्शीराम बिन्झौल प्रधान
वेदप्रचार ट्रस्ट पानीपत एल-६७३, माडल टाऊन पानीपत (करनाल)

शोक सन्देश

७२ वर्षीय महाशय रिसालसिंह आर्य ग्राम रबारी निवासी दिनांक २९-६-८६ को अचानक परलोक सिधार गये। आंखों से जन्मजात अन्धे होते हुए भी लगभग ५० साल तक भजनों द्वारा आर्य जनता को जागृत किया। प्रभु भक्ति ... समाज सुधार के गीत उनके जीवन के ... थे ... कि एक बार ... कर लिया करते थे ... जीवन अवैतनिक ... सेवा की। श्री ... आर्य ... उनके गुरु थे। ... जोहरीसिंह ... स्वामी ... प्रचार ... पारिवारिक यज्ञ ... समाज के उत्सव में ... दिखाते थे। उनकी अचानक मृत्यु से सारे गांव में शोक छा गया। आर्यसमाज रबारी के तो महाशय जी ... ही थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी

कुरुक्षेत्र के आर्य नेता श्री रुलियाराम जी का कार दुर्घटना में निधन

आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) के वरिष्ठ उपप्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य श्री रुलियाराम जी सर्राफ का २९ जून रविवार को संगरूर जाते समय कार दुर्घटना में निधन हो गया। आपकी आयु ६० वर्ष के लगभग थी। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो सकेगी।

आपने बचपन से ही आर्यसमाज की सेवा तन, मन तथा धन से बहुत ही लगन के साथ की। समाज-सुधार के कार्यों में आपने सदा ही उदारतापूर्वक दान दिया। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संचालन में भी आपका प्रमुख योगदान रहा।

उनकी स्मृति में सप्ताहभर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। ६ जुलाई को आर्यसमाज मन्दिर तथा ७ जुलाई को उनके निवास स्थान पर शोक सभायें की गई और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिचितजनों को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

शोक समाचार

हमारी पूज्य माता जी श्रीमती सरस्वती देवी अग्रवाल धर्मपत्नी ला० मुन्शीराम जी अग्रवाल का स्वर्गवास दिनांक २३-६-८६ को हो गया है।

रस्म पगड़ी ४-७-८६ को दोपहर बाद २ बजे हमारे निवास स्थान आर्यसमाज गली अनाज मण्डी बहादुरगढ़ में सम्पन्न हुई। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

पुत्र
शम्भुदयाल, बालकिशन, छाजूराम, रामभज, श्रीकिशन

आर्यसमाज ब्याना जि० करनाल का उत्सव

आर्यसमाज ब्याना में २-३ जून को वेदप्रचार हुआ। जिसमें प० सुरेशकुमार शास्त्री, प० राजबल जी आर्य, प० सुमेरचन्द की भजन मण्डली के भजनोपदेश हुए। जिसमें १३१) वेदप्रचार में प्राप्त हुए।

नई शिक्षा-नीति कुछ चुनौतियां

ले०—डा० बलवीरसिंह आचार्य संस्कृत-प्रवक्ता, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

देश की आजादी के बाद से शिक्षा-नीति में परिवर्तन करने की बात अनेक बार जोर पकड चुकी है तथा अंग्रेजों द्वारा अपने स्वार्थपूर्ति हेतु प्रचलित शिक्षा नीति को परिवर्तित करने के लिए अब तक तीन आयोग गठित किये जा चुके हैं। प्रथम आयोग डा० राधाकृष्णन की अध्यक्षता मे विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा पर विचार करने के लिये गठित किया था। द्वितीय आयोग डा० मुदलियार की अध्यक्षता मे सेकेण्डरी शिक्षा पर विचार करने के लिये गठित किया था तथा तृतीय आयोग कोठारी की अध्यक्षता मे गठित किया था, जिसने समूची शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन किया था।

इन अध्ययनो और आजादी के बाद के अनुभवो के आधार पर १९६८ मे शिक्षा-नीति प्रस्ताव बना, जिसके आधार पर अब शिक्षा दी जारही है, परन्तु ८ वर्ष व्यतीत होने पर भी वर्तमान शिक्षा-नीति देश मे सामाजिक आर्थिक विकास मे कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नही ला पाई है और न ही वर्तमान शिक्षा-प्रणाली से सक्षम तथा जागरूक नागरिक पैदा हो रहे हैं। आज एक बार फिर हम बडे जोर शोर से नई शिक्षा नीति लागू करने की बात कह रहे है तो देशवासी बडी आशा व उत्सुकता मे इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि नई शिक्षा देश के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। इस शिक्षा-नीति से चार करोड से भी ज्यादा बेरोजगारो, छात्रो की अनुशासनहीनता तथा मात्र नौकरी के लिये उपाधियां प्राप्त करनेवालो की भीड मे तो कमी आयेगी ही, साथ ही देश के सम्मुख जो विकट समस्यायें मुह बाये खडी हैं, जिनसे देश के विभाजित होने का भी खतरा पैदा हो रहा है, उनका समाधान भी नई शिक्षा में दीक्षित देश के भावी कर्णधार स्वय कर लेगे।

आज देश के सम्मुख अनेको विकट समस्याये हैं। यदि समय रहते इन समस्याओ का समाधान नही किया गया तो देश अराजकता के कगार पर पहुच जायेगा। जिनमे प्रमुख हैं—जातीयता की समस्या, प्रांतीयता की समस्या, साम्प्रदायिकता की समस्या, भाषा की समस्या तथा निरक्षरता व गरीबी की समस्या।

जातीयता की समस्या इस देश मे जिस प्रकार विकराल रूप धारण करती जारही है। उससे ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले कुछ वर्षों में भारत का प्रत्येक व्यक्ति जातीयता के नाम पर विभाजित होकर देश से ऊपर अपने निजी स्वार्थों को रखेगा। वही राष्ट्र सबल बनता है, जहा के व्यक्तियो की पहचान उस राष्ट्रवासी के रूप मे हो। यदि देशवासियो की पहचान जाति के आधार पर होने लगे तो यह देश का दुर्भाग्य होता है। जब से भारतवर्ष मे जातीयता ने पैर जमाये है, तब से इसका पतन प्रारम्भ हुआ है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जातीयता के नाम पर यहा की आम जनता ही नही, राजा महाराजा भी विभाजित हो गये और देश को परतन्त्र बना दिया। आज जातीयता की समस्या इतना भयकर रूप धारण करती जारही है कि लोगो के सोचने के तौर तरीके ही बदल गये हैं और अब तो लोग जातीयता से भी एक कदम आगे बढकर गोत्र तक मैं विभाजित होते जारहे हैं। जिस जाति का व्यक्ति सत्ता में प्रभावशाली होता है, वह योग्यता को पीछे रखकर अपनी जाति के लोगो को बढावा देने मे नही चूकता।

इस समस्या को बढावा देने मे हमारी लोकतन्त्रीय प्रणाली का अनुचित ढग से प्रयोग करनेवाली राजनीतिक पार्टियो का सबसे बडा हाथ है। चुनाव के समय व्यक्ति की योग्यता के मानदण्डों को एक तरफ रखकर उम्मीदवारो का चयन इस आधार पर किया जाता है कि चुनाव क्षेत्र में किस जाति के लोग ज्यादा रहते हैं और कौन व्यक्ति उनके अधिक से अधिक मत प्राप्त कर सकता है। पार्टिया भी क्या करें, वे भी ऐसा करने के लिए विवश हैं। क्योकि लोग वोट अपनी जाति के व्यक्ति को ही देते है। यह समस्या यही से जन्म लेती है। जब उनकी जाति का उम्मीदवार जीतकर जाता है तो यह स्वाभाविक है सत्ता मे आने के बाद वह उनके जायज नाजायज कामो का समर्थन करें। यदि नई शिक्षा नीति इस समस्या के समाधान में प्रभावशाली हो सकेगी तो देश का काफी कल्याण होगा।

दूसरी समस्या प्रांतीयता की है। प्रांतों का विभाजन इसलिये हुआ था ताकि देश का शासन विकेन्द्रित करके सुचारु रूप से चलाया जा सके। लेकिन धीरे धीरे उन प्रांतों का भी कई क्षेत्रीय कारणो से विभाजन हुआ। जिसका ताजा उदाहरण हरयाणा और पजाब का विभाजन है जो भाषा के आधार पर हुआ। इस प्रकार के विभाजनों से राष्ट्र की एकता को ठेस पहुँची तथा देश के दुश्मनो को एक मौका मिला है फूट डालने का और उन्होने इस काम में कमी भी नही रखी।

पजाब और हरयाणा का विवाद सारी दुनिया को मालूम है। इस विवाद से परेशान प्रबुद्ध नागरिक अब यह सोचने को विवश होने लगे हैं कि यदि पजाब और हरयाणा को मिला दिया जाये तो सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। न तब जल बटवारे की समस्या रहेगी, न चण्डीगढ की समस्या रहेगी और न ही कन्दूखेडा की समस्या रहेगी। इस प्रकार का विवाद पजाब और हरयाणा मे ही खडा हुआ हो ऐसी बात नही, समय-समय पर अन्य प्रांतो के विवाद भी समाचार-पत्रो की सुर्खियो में आते रहते हैं। यदि समय रहते प्रांतीयता की इस पहचान को समाप्त करके एकमात्र देश की पहचान बनाने का प्रयत्न नही किया गया तो इसके परिणाम और घातक हो सकते हैं।

तीसरी समस्या साम्प्रदायिकता की है, जो हमारे सम्पूर्ण राष्ट्रवाद की भावना और हमारे नैतिक मूल्यो को घुन की तरह खाये जारही है। बहुत प्राचीन समय से देश में विभिन्न मान्यताओ के लोग एक साथ रहते आये हैं। आज भी रह रहे हैं परन्तु आज की सोच में और प्राचीन समय की सोच में जमीन आसमान का अन्तर हो गया है।

प्राचीन समय से इस देश मे ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करनेवाले लोग भी रहते थे और ऐसे लोग भी रहते थे, जो ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नही करते थे। इन विभिन्न मान्यताओ के रहते हुए भी देश को सर्वोपरि मानते थे और इस प्रकार के नरसहार का विचार भी नहीं करते थे जैसा कि आज देखने को मिलता है। आज भारतवर्ष में विभिन्न व्यक्तियो मे पूछते हैं तो कोई अपने को हिन्दू, कोई मुसलमान और कोई ईसाई बताता है, परन्तु कोई इस बात को कहने में गर्व अनुभव नहीं करता है कि मैं भारतवासी हू। यदि कही राष्ट्रीय-ध्वज अथवा किसी राष्ट्रीय पुरुष की प्रतिमा का अपमान किया जाता हो तो किसी को तनिक भी परेशानी नही होती, परन्तु यदि कहीं किसी सम्प्रदाय की धार्मिक पुस्तक अथवा धर्मस्थल का अपमान करने की झूठी सूचना भी फैला दी जाये तो पूरे देश में एक तूफान सा आ जाता है। लूटमार, हत्यायें और आगजनी की न जाने कितनी घटनायें, कुछ ही घण्टो मे हो जाती हैं। सारा देश इन घटनाओ को बडी विवशता से देखता रहता है। इन झगडो को देखकर ऐसा लगता है कि यह कोई एक देश नहीं, अपितु जितने सम्प्रदायो के लोग यहा रहते हैं, उतने ही देश हैं। आजादी के चार दशक बाद भी इन परिस्थितियों को देखकर यह लगता है कि हम अपनी राष्ट्रीय पहचान नहीं बना पाये हैं।

इस शिक्षा-नीति में इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि इस शिक्षा में दीक्षित युवावर्ग भारत से इस साम्प्रदायिकता के विषधर को उठाकर समुद्र में फेंक दें।

चौथी समस्या भाषा की है। कितनी विडम्बना की बात है कि आजादी के चार दशक बाद भी हमारा देश अपनी एक भाषा को नही अपना सका है। आज राजनीतिक भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति भले ही मिल गई है, लेकिन देश पर अंग्रेजी साम्राज्यवाद का साया अभी भी वैसे का वैसा ही बना हुआ है। सम्पूर्ण देश पर अंग्रेजी का शासन हावी है। आज हम अपनी भाषा में न लिखते हैं, न पढते हैं, न सोचते हैं। किसी भी सरकारी कार्यालय में जब जाते हैं तो ऐसा लगता है जैसे हम लन्दन के किसी कार्यालय में बैठे हों। लिपिक से लेकर अधिकारी तक एक भी व्यक्ति देश की भाषा में काम करता दिखाई नही देगा। जब हम नई शिक्षा-नीति लागू करने जारहे हैं तो सबसे पहले यह

सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि हमें कौन-सी भाषा के माध्यम से नई शिक्षा पढानी है। यह बात न तो राष्ट्र के सम्मान के अनुकूल है और न हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य का ही संकेत है कि हम अपनी शिक्षा का माध्यम एक विदेशी भाषा को बनायें। जबकि हमारे देश मे हिन्दी जैसी समृद्ध भाषा है जो सारे संसार का नेतृत्व कर सकती है। इससे बडी और शर्मनाक क्या बात होगी कि यहा का निवासी जब न्यायालय मे जाकर न्याय सुनता है तो उसे वहा एक विदेशी भाषा सुनने को मिलती है। किसी कार्यालय मे जाता है तो सारी फाईल अग्रेजी मे लिखी मिलती हैं। यहा का कोई भी निवासी उच्चतर अध्ययन करना चाहता है तो उसे अंग्रेजी का सहारा लेना पडता है। जो कि हमारी दासता के प्रतीक के रूप में अभी तक यहा पर विराजमान तो है ही, साथ ही इससे सबसे बडी हानि यह भी हो रही है कि देश के अनेक प्रतिभासम्पन्न शिक्षित युवा जब मैडिकल, कालेजे', आई० टी० आई० प्रतिष्ठानो, इन्जनीयरिंग कालेजो से अंग्रेजी के माध्यम से सम्पूर्ण विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त करके आते हैं तो अधिकतर देश की आम जनता को अपने ज्ञान से लाभान्वित करने की अपेक्षा पाश्चात्य देशो की चकाचौंध से प्रभावित होकर वहा पलायन कर जाते है। इस कार्य मे उनका सबसे बडा सहायक है अंग्रेजी ज्ञान। इस प्रकार देश को जहा एक वैज्ञानिक डाक्टर या इन्जनियर को बनाने में जो व्यय करना पडता है, न तो उसका लाभ मिलता है और न उस धन की क्षति-पूर्ति ही हो पाती है तथा विदेशियो को बिना किसी परिश्रम के अच्छे से अच्छे वैज्ञानिक और डाक्टर मिल जाते हैं।

सारी तकनीकी ज्ञान की पुस्तके एक विदेशी भाषा मे होने से इस देश का जनसाधारण उनमे कोई लाभ नही उठा पाता। यदि सभी प्रकार की पुस्तके हिन्दी तथा अन्य भाषा मे उपलब्ध हों तो नवीनतम वैज्ञानिक खोज से जनसाधारण का भी परिचय रहेगा। जिससे देश प्रगति की ओर शीघ्रता से बढने लगेगा।

इन समस्याओ के अतिरिक्त देश मैं बढती हुई निरक्षरता भी राष्ट्र के सामने एक बडी चुनौती है। जिसको मिटाये बिना राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। क्योंकि राष्ट्रीय उन्नति में शिक्षा के महत्त्व का अपरिहार्य स्थान होता है। जिस राष्ट्र के नागरिक जितने शिक्षित होंगे, वह राष्ट्र उतना ही उन्नतिशील होगा। इसी महत्त्व को स्वीकार करके १९४७ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सविधान निर्माताओ ने संविधान के अनुच्छेद ४५ में व्यवस्था की थी कि राज्य इस बात का प्रयास करेगा कि सविधान के लागू होने से १० वर्ष मे १४ वर्ष तक का कोई बच्चा निरक्षर न रहे। उनके लिये नि शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जाये। इस व्यवस्था के अनुसार १९६० में देश में से निरक्षरता समाप्त हो जानी चाहिये थी परन्तु आकडे कुछ दूसरा ही चित्र प्रस्तुत करते हैं। जिनके अनुसार इस समय देश मैं निरक्षरो की सख्या लगभग ४४ करोड है और इससे भी अधिक चिन्ता की बात यह है कि इसमें निरन्तर वृद्धि हो रही है। १९८१ के अनुसार देश में साक्षर ३६ २३ प्रतिशत थे तथा निरक्षर ६३ ७७ प्रतिशत, १९४५ में निरक्षरों की सख्या ३० करोड थी तथा १९८१ में यह बढकर ४३ करोड ७० लाख हो गई है। इस गति से यदि चलते रहे तो २००० में ५० करोड अनपढ लोग हमारे देश में होंगे। तब ससार के १५ से १९ वर्ष की आयु वाले अनपढो की सख्या का ५४ प्रतिशत से भी अधिक भारत में जी रहा होगा।

निरक्षरता की इस समस्या को बढाया है नीति निदेशक सिद्धातों के अनुचित प्रयोग ने। सविधान में समानता की बात पर बहुत बल दिया गया है परन्तु जब कोई नीति लागू की जाती है तो संविधान के समानता के सिद्धांत को एक तरफ रख दिया जाता है। इसका अपवाद शिक्षा-नीति भी नहीं है। देश की ७२ प्रतिशत जनता गाव में रहती और २८ प्रतिशत शहरो में, परन्तु शिक्षा पर जो व्यय होना है उसका ५६ प्रतिशत शहरों में व्यय कर दिया जाता है। शेष बचा ४४ प्रतिशत गाव वालों में व्यय किया जाता है। इससे अधिक समानता के सिद्धान्त का मखौल उडानेवाली बात और क्या होगी। इसी कारण गाव के स्कूलो में वे सुविधायें नहीं हैं जिनसे उनका मानसिक विकास और उनकी पढाई ठीक ढग से हो सके। १९८२ के सर्वेक्षण के अनुसार देश की आधे से अधिक प्राइमरी स्कूलों की इमारतें कच्ची हैं लिए चटाइया या टाटपट्टिया नही हैं। ४० प्रतिशत स्कूलो मे ब्लैक बोर्ड नही है। ५० प्रतिशत स्कूलो मे बच्चो के पढने के लिए पुस्तकें नहीं हैं। यहा पर यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए कि ये स्कूल देहातो मे ही हैं, शहरो के स्कूलो की ऐसी हालत नही है।

शिक्षा व्यय मे इस असमानता का सबसे भयंकर परिणाम देश की गरीब जनता को भुगतना पडा। खर्चा वहन करने के सामर्थ्य के अभाव मे अधिकतर गरीब बच्चे या तो स्कूल में प्रवेश ही नही ले पाते या वे बीच मे ही अध्ययन छोड देते है। एक सर्वेक्षण के अनुसार सैकण्डी कक्षा मे पढने वाले ७७ प्रतिशत छात्र आय के हिसाब से ऊपरी २० प्रतिशत घरो से आते हैं। महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयो मे ८० प्रतिशत छात्र अच्छी आय वाले घरो मे होते हैं।

इस असमानता का दूसरा दुष्परिणाम यह भी हुआ कि शिक्षा में पिछडने के साथ साथ गाव वालो की उत्पादनक्षमता भी बहुत कम हो गई। राष्ट्रीय आय का ४० प्रतिशत ही गावो मे उत्पादन होता है जिस से उनकी गरीबी निरन्तर बढती जारही है तथा शहर वालो की आय से उनकी आय काफी कम है। इस समय देश में ३० करोड लोग निर्धनता की रेखा मे नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे हैं अर्थात् उनकी वार्षिक आय ५०० रुपये से भी कम है। यानि प्रतिदिन एक रुपया पैंतीस पैसे के लगभग ही वे कमा पाते हैं। क्या आज के महगाई के युग मे १ ३५ पैसे से कोई अपना जीवनयापन कर सकता है? नई शिक्षा-नीति लागू करने के साथ-साथ यह भी कदम उठाना अनिवार्य है कि देश मे शिक्षा पर समान रूप से खर्च किया जाये तथा देश से निरक्षरता को मिटाने के लिए यह आवश्यक है कि पढने का सबको समान अधिकार हो, चाहे वह गरीब हो, चाहे अमीर हो। जब तक वह पढना चाहे उसका सारा व्यय सरकार वहन करे। इस प्रकार जो व्यय हो उसको सरकार शिक्षाकर के रूप मे देशवासियो से प्राप्त कर सकती है। शिक्षाजगत् में जो दुहरे मानदण्डो के स्कूल चल रहे हैं, इनको भी समाप्त किया जाना चाहिए। इनसे देश का कुछ भी कल्याण नहीं हो रहा है। उल्टे एक नई तरह की श्रेणी बनती जारही है। जिनके पास पैसा है वे अपने बच्चो को महगे से महगे कन्वेंट स्कूलो मे पढाते हैं। वहा से पढकर आये छात्रो की सोच एकदम विपरीत होती है। ये ही छात्र आगे चलकर देश मे बडे-बडे नौकरी के पदो को येन-केन प्रकारेण हथिया लेते हैं। इनको न तो देश की सही तस्वीर का पता होता है, न देश की सस्कृति का। गरीब अपने बच्चो को ऐसे स्कूलो मे पढाने के लिए विवश हैं। जहा हर प्रकार का अभाव होता है। फिर उनके बच्चे प्रतियोगिताओ की दौड मे कन्वेंट स्कूलो के बच्चो की कैसे प्रतिस्पर्धा करेंगे। सरकार का यह कर्तव्य है कि देश का प्रत्येक नागरिक चाहे अमीर हो या गरीब। सबके बच्चो को एकसे स्कूलो मे पढाने की व्यवस्था करे ताकि सही प्रतिभावाले छात्र भी आगे आयें। मैं कन्वेंट स्कूलो का विरोध नही कर रहा हू, मैं तो उनका पूरा समर्थक हू, परन्तु जैसे कन्वेंट स्कूलो में पूंजीपतियो बडे अधिकारियो और मन्त्रियो के बच्चे पढते हैं, उसी प्रकार के कन्वेंट स्कूलो में, खेतो में खून पसीना एक करने वाले किसानो, मजदूरो और ३० करोड उन लोगो के बच्चों के पढने की व्यवस्था भी होनी चाहिए, जो निर्धनता की रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जब एकसमान शिक्षा में दीक्षित भारत के भावी नागरिक आयेंगे तो उनके सोचने का ढग बिल्कुल अलग होगा और वे सही अर्थों मे प्रांतीयता, जातीयता, साम्प्रदायिकता जैसी कुभावनाओ से ऊपर उठेंगे। यदि ऐसी व्यवस्था नई शिक्षा-नीति में होगी तो इस शिक्षा-नीति की सार्थकता दिखाई देती है और इससे उपर्युक्त समस्याओं का समाधान भी होगा और यदि ऐसी व्यवस्था नहीं की गई तो यह नीति भी उसी प्रकार निरर्थक हो जायेगी जैसे कि पहली नीतियां होती आई हैं।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर मे आर्य वीरदल शिविर सम्पन्न

गुरुकुल झज्जर मे १६ जून मे डा० देवव्रत जी व्यायामाचार्य की देख रेख मे चल रहे सार्वदेशिक आर्य वीरदल प्रशिक्षक शिक्षण शिविर का समापन समारोह श्री ओमप्रकाश जी तल्याण दिसोर खेडी निवासी की अध्यक्षता मे उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती थे। स्वामी जी ने शिविर मे आये हुए नवयुवको को सम्बोधित करते हुए अपील की कि वे समय और देश की परिस्थितियो को देखते हुए आगे आय और देश की अखण्डता के लिये कार्य कर। प्रधान जी ने नवयुवको को प्रमाण पत्र व पुरस्कार भी दिये तथा शिविर के सचालको को २५००) सभा की ओर से देने की घोषणा की। शिविर मे आये हुए नवयुवको को चौ० प्रियव्रत जी ठेकेदार ने तथा हैदराबाद के वीर सेनानी सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्र जी वन्देमातरम् ने भी सम्बोधित किया। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने भी नवयुवको से हृदयस्पर्शी अपील की कि वे ब्रह्मचारी रहकर समाज मे फैली कुरीतियो को भस्मसात् करने के लिये दृढ-प्रतिज्ञ होकर मैदान मे निकल। सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधानसचालक श्री बाल-दिवाकर जी हस ने भी युवको को उत्साहित किया और सब का धन्यवाद किया। इस समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी, जो कि गुरुकुल के कुलपति भी हैं, उन्होने भी नवयुवको को सम्बोधित करते हुए, पजाब की स्थिति से अवगत कराकर, कुछ कर गुजरने की प्रेरणा दी। श्री सुखदेव शास्त्री हरयाणा सभा भी उपस्थित थे। अन्त मे समारोह के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी तल्याण ने भी सम्बोधित किया और शिविर हेतु ५१००) नकद दिये।

इस शिविर मे दस दिन निरन्तर विद्वानो के उपदेश बौद्धिक प्रशिक्षण मे होते रहे। जिसमे मुख्य रूप से पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक यतिमण्डल दीनानगर पजाब, श्री स्वामी धर्मानन्द जी उडीसा तथा समय समय पर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने भी नवयुवको को प्रेरणाप्रद उपदेश दिये। अन्य विद्वानो के उपदेश भी समय-समय पर होते रहे। इस शिविर मे सभी प्रातो के १६४ नवयुवको ने भाग लिया। १० शिक्षक इन्हे निरन्तर सिखाते रहे हैं। रहने तथा भोजन आदि का उत्तम प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से था। शिविर तथा समापन समारोह बहुत ही अच्छे ढग से सम्पन्न हुआ।

—रामवीर शास्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

इस दिशा मे एक मुहिम चलाना अभी शुरु ही हुआ है, जिससे "दाल रोटी खाओ" का मुहावरा सम्भव हो सके। गरीबी रेखा से नीचे जीने वाला तो रोटी खरीद सकता है। लेकिन उसको खाने के लिये दाल अथवा सब्जी खरीदना उसकी सीमा से बाहर है। यदि अनाज का पहाड खडा करने वाले किसान अपना करिश्मा दलहन व तिलहन के क्षेत्र मे दिखा सके तो अधिक सफलता पाई जा सकती है। इस दिशा मे उच्च-कोटि उत्पादन योजना (हाईयील्ड वैराइटी प्रोग्राम) के द्वितीय चरण मे काफी गति मिली। लेकिन उच्च उत्पादकता तकनीक उतनी विकसित नही है, जितनी गेहूँ अथवा चावल की। कारण स्पष्ट है कि दाल का जो महत्त्व हिन्दू बाहुल्य देश हिन्दुस्तान मे है, वह अन्य देशो मे नही। यदि इस दिशा मे एक बार पुन. "हरित क्रांति" योजना जसी मुहिम चलाई जाये तो न केवल गेहू के बढते भण्डार का रोका जा सकता है, अपितु हम दलहन और तिलहन के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर हो सकते हैं।

(युगवार्ता)

विदेशों मे भारतीय संस्कृति का प्रचार

११।६ राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आज कहा कि विश्व शांति के लिए निशस्त्रीकरण की बहुत आवश्यकता है। भारत ही विश्व को शांति का पाठ पढा सकता है।

राष्ट्रपति आज यहा डा० प्रशात वेदालकार तथा उनके साथियो को इटली, फ्रास व स्विट्जरलैंड की शांति पदयात्रा में भाग लेने के लिए जाने वाले एक प्रतिनिधि मण्डल को सम्बोधित कर रहे थे। इस यात्रा का उद्देश्य निशस्त्रीकरण का प्रचार करना है। यह यात्रा २० दिनो तक चलेगी, जिसमे विश्व के अनेक देश शामिल होगे। भारत से २५ सदस्यो का प्रतिनिधि मण्डल जायेगा।

डा० प्रशात व उनकी धर्मपत्नी डा० सरोज दीक्षा विद्यालंकार (प्राध्यापिका श्यामाप्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय, दिल्ली) को लदन आर्यसमाज से निमन्त्रण मिला है। ये इन देशो के अतिरिक्त इगलैंड, हालैंड, बेल्जियम तथा पश्चिम जर्मनी मे भी जायगे, जहा वे वैदिक व भारतीय सस्कृति का प्रचार व प्रसार करगे।

डा० प्रशात उक्त देशो मे भारतीय सस्कृति का प्रचार करने वाली सभी सस्थाओ मे जाकर वहाँ भारतीय सस्कृति के और अधिक प्रचार की सम्भावनाओ का पता लगायगे। साथ ही वे वहां के विश्वविद्यालयो में हिन्दी, सस्कृत तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओ की स्थिति एव वहाँ भारतीय दर्शन तथा पुरातत्त्व विषयक अध्ययन का सर्वेक्षण करेंगे।

डा० प्रशांत ने अपनी प्रथम यूरोप यात्रा के अवसर पर यूरोपवासियो के लिये अपनी एक पुस्तक 'धर्म इन मोडर्न सोसायटी' भी लिखी है। जिसमे आज के जीवन मे धर्म की प्रासगिकता पर प्रकाश डाला है। पुस्तक से स्पष्ट है कि भारत आज भी पश्चिम को बहुत सिखा सकता है।

—डा प्रशात वेदालकार ७१२ रूपनगर, दिल्ली-७

मण्डी डबवाली में यजुर्वेद यज्ञ

७।६-८६ से १५।६-८६ तक लाला दीवानचन्द जी सिंगला ने अपने निवास स्थान मण्डी डबवाली मे पूरे यजुर्वेद का यज्ञ कराया। जिसके ब्रह्मा श्री ओम्प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल) भटिण्डा थे। रात्रि को हर रोज धर्मप्रचार होता था। इस शुभ अवसर पर लाला दीवानचन्द जी ने नीचे लिखे अनुसार दान दिया—

गुरुकुल आश्रम भटिण्डा को भवन के लिए	५१००-००
आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा को श्री तरसेमचन्द जी एव श्री दीवानचन्द के मित्र सम्बन्धियो द्वारा	५००-००
शहीदी परिवार सहायता हिन्द समाचार जालन्धर द्वारा	७२५-०८
आर्यसमाज मण्डी डबवाली	१०१-००

श्री हनुमान जी मन्दिर लगर के लिए एक बोरी गेहूँ।
यज्ञ एव प्रचार बहुत सफल रहा। —ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी

आर्यसमाज दादुपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक १९, २०, २१ जून को आर्यसमाज दादुपुर जि० अम्बाला का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। लगभग ४० वर्ष के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक प० हरिश्चन्द्र जी के प्रयत्न से पुन आर्य-समाज का चुनाव करके यह उत्सव रखा गया। १९-६-८६ से प राजबल जी बेढब की भजन मण्डली द्वारा वेदप्रचार आरम्भ किया गया तथा स्वामी सदानन्द जी व बहिन उर्मिला आचार्या के वैदिक प्रवचन हुए। उत्सव मे प० अजीतसिंह शास्त्री का सहयोग भी सराहनीय रहा।

दिनाक २१-६-८६ रात्रि १० बजे ब्रह्मचारी ओमदर्शन जी द्वारा योगशक्ति प्रदर्शन किया गया। जिसमें लोहे के सरियो को गले से मोडना, थाली फाडना, बेल तोडना, काच पीसना, छाती पर पत्थर तुडवाना आदि मुख्य रहे। गाव के नवयुवको पर प्रदर्शन का काफी अच्छा प्रभाव रहा। आर्यसमाज के अधिकारियो ने भविष्य में इसी प्रकार उत्सव मनाने का सकल्प लिया।

मन्त्री आर्यसमाज दादुपुर हैड

हरयाणा प्रांतीय आर्यवीर महासम्मेलन २७, २८ सितम्बर को रोहतक में

पलवल आर्य वीरदल हरयाणा का दसवा प्रातीय महासम्मेलन गतवर्षों की भाति इस वर्ष २७, २८ सितम्बर, शनि तथा रविवार को प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर रोहतक मे धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इसमे प्रातभर से २००० आर्यवीर पूर्ण गणवेश मे उत्साहपूर्वक भाग लेंगे। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध मूर्धन्य विद्वान्, आर्य सन्यासी तथा हजारो आर्य प्रतिनिधि पधारेंगे। सम्मेलन में आर्यवीर क्षात्रशक्ति का प्रदर्शन करते हुए, बिना दहेज विवाह करने का सकल्प लेकर प्रेरणास्रोत बनगे।

अजीतकुमार आर्य महामन्त्री आर्य वीरदल हरयाणा

आर्यसमाज गन्नौर का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर का २९वा वार्षिकोत्सव ६ ७, ८ जून को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जिसमे प० ओमप्रकाश वर्मा, प० प्रकाशचन्द शास्त्री, डा० बलबीरसिंह जी आचार्य प० सूर्यप्रकाश पाठक, श्रीमती उर्मिला देवी, श्रीमती कचन जी मलिक, महात्मा प्रेमभिक्षु जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, प्रो०गुलाब जी, श्री रामस्वरूप वर्मा, हरीश जी दीवान बेलाराम जी दीवान इन सब ने बढ-चढकर इस समारोह मे भाग लिया।

प्रेमनाथ आहूजा
प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज गन्नौर शहर

नया दौर

दिनाक १५-६-८६ को गाव मुताना, त० पानीपत, जि० करनाल के गाव में चौ० जयसिंह आर्य के निवास स्थान पर सायकाल दिनाक १४ ६-८६ को ७-५० बजे से १०-५० बजे तक प्रवचनो का कार्यक्रम चलता रहा। स्वामी धर्मानन्द जी का आर्यसमाज की राष्ट्र को देन विषय पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ तथा श्री रामकुमार जी पुरोहित आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का गायत्री महिमा के ऊपर ओजस्वी व्याख्यान हुआ। १५-६-८६ को प्रात काल ८ बजे से ९ बजे तक श्री रामकुमार जी के पौरोहित्य में यज्ञ का आयोजन किया गया तथा युवको ने यज्ञोपवीत धारण किये।

यज्ञ के उपरात स्वामी धर्मानन्द जी का 'मृत्यु से भय क्यों' इस विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। सभी कार्य चौ० जयसिंह जी, ला० रामानन्द जी सिंगला प्रधान आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत तथा चौ० भरतसिंह जी ने विशेष सहयोग दिया तथा शाति पाठ के साथ सत्सग सम्पन्न हुआ।

मन्त्री आर्यसमाज मुताना, जि० करनाल

आर्य विवाह संस्कार सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री मुन्शीलाल जी जहागीरपुर (रोहतक) के सुपुत्र श्री जगदीश आर्य का विवाह सस्कार हासी निवासी पूर्व मन्त्री श्री अमरसिंह जी की पुत्री के साथ दिनाक १८-६-१९८६ को वैदिक-रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह सस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य, श्री भरतलाल जी शास्त्री, प० कुलवन्तराय आदि विद्वानो ने विधि-व्याख्या पूर्वक कराया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वर तथा वधू पक्ष की ओर से ७२) दान दिया गया। —केदारसिंह आर्य

योग प्रशिक्षण एवं वेद प्रवचन

दिनाक १ जून से १९ जून तक भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी द्वारा प्रयाग, कानपुर (लाजपत नगर), श्रीगगा नगर व महानगर (लखनऊ) गोरखपुर सैनिक विहार, पजाबी बाग दिल्ली तथा वेद मन्दिर चादपुर मे वेदप्रचार सम्पन्न हुआ। इसमें चार व्यक्तियो ने दैनिक यज्ञ और अनेको ने चाय आदि तामसिक पदार्थ छोड़कर दैनिक सन्ध्या व्यायाम व प्रात उठकर बडो को नमस्ते करने का व्रत लिया। —कार्यालय अध्यक्ष

शोक समाचार

आर्यसमाज रैजिमेंट बाजार, अम्बाला छावनी के प्रधान श्री ज्ञानचन्द जी सैनी का निधन दिनाक २१-६ ८६ को हो गया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। उनकी आत्मा की शाँति व सद्गति के लिए अन्तिम श्रद्धाजलि व हवन-यज्ञ का कार्यक्रम दिनाक ३० ६ ८६ सोमवार को आर्यसमाज रैजिमेंट बाजार, अम्बाला छावनी मे सायकाल ३-३० बजे हुआ।

ग्राम बालावास में धरना स्थल पर ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिनांक 8 जून से 14 जून 1986 तक ग्राम बालावास (हिसार) में ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्थानीय गाव बालावास, कवारी, मुहजादपुर, रामायण, नहला, सातरोड कला के 37 निष्ठावान् नवयुवको ने भाग लिया।

इस शिविर में योग्य व्यायाम शिक्षक श्री शेरसिंह आर्य एम० ए० द्वारा नवयुवको को सदाचार, आसन, व्यायाम, दण्ड, बैठक, स्तूप आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी मस्तानानन्द जी, प० भरतलाल शास्त्री, प्रो० ओमकुमार आर्य आदि ने नवयुवको को ब्रह्मचर्य, राष्ट्ररक्षा गोपालन, धर्म क्या है? आर्यसमाज क्या है क्या चाहता है? शराब, दहेज, सुखी गृहस्थ, महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रो० साहब ने ग्राम बालावास को एक तीर्थ बताया क्योंकि क्रान्तिकारी जी के नेतृत्व में पाप के अड्डे को खत्म करने के लिये 6 मास तक संघर्ष चला। अनेक विद्वान् यहा पधारे।

श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने नवयुवको एव लोगो को शराब एव जुए जैसी बुराई को सदा सदा के लिये छोडने पर बल दिया। विशेष कर ग्राम बालावास के लोगो को ललकार कर कहा कि गाव मे शराब न पडने दें। न ही इसे पीयें। क्रान्तिकारी ने इस शिविर का विधिवत् सचालन एव सयोजन किया।

शिविर में प० चिरंजीलाल चौ० नत्थासिंह, महाशय रिसालसिंह के शिक्षाप्रद एव क्रान्तिकारी भजन हुवे। जिसका युवकों पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा। हवन पर कई नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किये तथा शराब एवं धूम्रपान सदा के लिये छोडने का व्रत लिया। सायकाल प्रचार मे निकट के लोगों ने बढ़ चढ कर भाग लिया। श्री हेतराम आर्य, श्री भागचन्द आर्य, श्री हवलदार मोहनलाल आर्य, सूबेदार हरचन्द आर्य निहालसिंह आर्य, पहलवान रामपाल आर्य, बीरसिंह सरपंच का विशेष सहयोग रहा। सभा को 200 रु० दान दिया।

मन्त्री आर्यसमाज
बालावास

सांजरवास में वैदिक सत्संग

दिनाक २९-५-१९८६ को ग्राम साजरवास (भिवानी) में श्री वै रामनारायण जी आर्य के घर एक वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी संजयदेव जी ने पधारकर यज्ञसम्बन्धी उपदेश किया तथा ग्रामीण व्यक्तियों, विशेषकर युवको को आर्यसमाज में दीक्षित होने का आह्वान किया। इस अवसर पर कई युवको ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये तथा यज्ञ में अपने दुर्व्यसन छोडने सम्बन्धी आहुतिया दी। इस प्रकार यज्ञ एव वैदिक सत्सग का यह कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

ब्र० सत्येन्द्र आर्य
सभा उपदेशक, ग्राम साजरवास (भिवानी)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक–प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ३२ १४ जुलाई, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ३ पौंड एक प्रति ५० पैसे



वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम तथा श्रद्धापूर्वक मनावें

हरयाणा के आर्यसमाजो से सभामन्त्री जी की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री ने हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से अपील करते हुए कहा है कि प्राचीनकाल से वर्षा ऋतु मे ऋषि मुनि, महात्मा तथा विद्वान् महानुभाव वेदप्रचार का आयोजन करते थे। अत आर्यसमाज वर्षा ऋतु में वेदप्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करे, ताकि सभा प्रबन्ध कर सके। वेद का प्रचार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम मे लिखा है कि "वेद सब सत्य-विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" अत: आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भी अपने विधान की धारा ६ (क) में अंकित है कि "इस सभा के सीमा क्षेत्र में तथा आवश्यकतानुसार अन्य प्रदेशो मे वैदिकधर्म प्रचार की व्यवस्था करना" सभा का उद्देश्य है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को गौरव है कि वर्तमान समय में सभा के वेदप्रचार विभाग में अन्य प्रान्तीय सभाओं से अधिक संख्या मे उपदेशक तथा भजनोपदेशक नियमित पूरे समय के लिए दिन-रात वेदप्रचार कार्य कर रहे हैं। प्रति सप्ताह ४५ स्थानो पर आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सवो अथवा वेदप्रचार सप्ताहो पर उपदेशक तथा भजनोपदेशको के कार्यक्रम बनाकर सफल वेदप्रचार का प्रबन्ध किया जा सकता है। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग मे निम्नलिखित उपदेशक तथा भजनोपदेशक वेदप्रचार कार्य कर रहे हैं—

१ प० चन्द्रसैन जी वैदिक मिशनरी, २ प० सुखदेव शास्त्री सिद्धात वाचस्पति, ३ प० सुरेशकुमार शास्त्री एम० ए०, ४ ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, ५ ब्र० सजयदेव वैदिक प्रवक्ता, ६ श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, ७ प० अर्जुनदेव आर्य सिद्धात शास्त्री, ८ प० कुलवन्तराय आर्य (उपदेशक), ९ प० विद्याभूषण आर्य, १० प० शेरसिंह आर्य, ११ प० बनारसीलाल आर्य, १२ प० राजबल बेढब (भजनोपदेशक), १३ प० मुन्शीलाल आर्य, १४. प० चिरजीलाल आर्य, १५ प० हरिश्चन्द्र आर्य, १६ प० समेरसिंह आर्य, १७ प० ईश्वरसिंह तूफान, १८ प० जयपाल आर्य, १९ प० मुरारीलाल बेचैन, २० प० तेजपाल आर्य, २१ प० रणवीरसिंह बेधड़क (भजन मण्डलिया)।

इनके अतिरिक्त सभा के अधिकारी तथा अन्य विद्वान् भी वेदप्रचार कार्य मे सहयोग कर रहे हैं। अत हरयाणा के आर्यसमाजो के अधिकारियों से सभा मन्त्री जी ने अनुरोध किया है कि वे अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार अपने यहा ७ दिन या कम से कम ३-४ दिन का वेदप्रचार का आयोजन करके कम से कम १५ दिन पूर्व सभा को पत्र लिखकर सूचित करे ताकि सभा की ओर से उपदेशको तथा भजनोपदेशको का कार्यक्रम बनाया जाये।

कुछ आर्यसमाज पहले स्वतन्त्र उपदेशक तथा भजनोपदेशको को आमन्त्रित करते हैं और उनकी किसी कारणवश इन्कारी मिल जाने पर फिर सभा से प्रबन्ध करने के लिए सम्पर्क करते हैं और स्वतन्त्र उपदेशको की अपेक्षा सभा के उपदेशको को धनराशि भी कम देते हैं। इस प्रकार सभा को प्रबन्ध करने मे कठिनाई तथा आर्थिक हानि होती है। सभा को भेजा गया धन सभा के वेदप्रचार को सुदृढ करने के लिए उपयोग होता है। सभा की ओर से प्रभावशाली उपदेशक तथा भजनोपदेशको की सेवाये प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है।

सभामन्त्री जी ने अन्त मे आशा व्यक्त की है कि हरयाणा के आर्य समाज वेदप्रचार कार्य में सभा को उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान करेंगे।

ग्राम स्वराज्य संस्थान रजि० हिसार, हरयाणा द्वारा स्थापित–

बाल विकास निकेतन अनाथालय

गांव रामायण, पो० झण्डेरी, हिसार

उन अनाथ एव गरीब बच्चो के प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं–

निर्देश

१—जिन बच्चो के माता-पिता जीवित नहीं हैं और अनाथ हैं।

२—जिन बच्चो के पिता नही या माता नही और गरीब हैं।

३—केन्द्र मे प्रवेश हेतु बच्चो की उम्र कम से कम तीन वर्ष अधिक से अधिक १४ वर्ष होनी चाहिये।

४—बाल-बालिकाओं को केन्द्र मे ही रहना होगा।

इच्छुक अभिभावक बच्चे का प्रवेश हेतु सादे कागज पर प्रार्थना-पत्र अपनी सम्पूर्ण स्थिति का उल्लेख करते हुए प्रवेश पत्र फार्म गाव रामायण से प्राप्त करके २४ जुलाई, १९८६ तक प्रबन्धक के नाम वापिस जमा करवा दे। उपरोक्त शर्तों पर बच्चो का चयन किया जायेगा। चुने हुए बच्चो को संस्थान भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षण आदि की व्यवस्था करेगा।

—रामकुमार भारद्वाज अध्यक्ष

प्राचीन वीर हरयाणा के स्वदेश रक्षक पंचायती मल्लयोद्धा

निहालसिंह आर्य

शरीरबल की आवश्यकता—

हमारे मनुष्य जीवन में ईश्वर भक्ति, यज्ञानुष्ठान, धर्म तथा स्वदेश रक्षा की बहुत आवश्यकता है। इन गुणों का धारण हमारे उत्तम स्वास्थ्य, बलवान् शरीर पर ही आधारित है। शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। अर्थात धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है। घृतेन तन्त्र वर्धस्व, अश्मा भवतु तन्तु, बल उपास्व, वीरभोग्या वसुन्धरा आदि शास्त्रीय वचन शरीरबल की ही शिक्षा पर बल देते हैं। महादेव महर्षि दयानन्द ने भी आत्मिक सामाजिक उन्नति से पहले शारीरिक उन्नति बताई है। अत हमे अपने नियमित व्यायाम, मल्लकला, ब्रह्मचर्य, पौष्टिक भोजन आदि साधनो से अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट, सबल तथा निरोग रखना चाहिए। इन्ही सद्गुणो से हमारे प्राचीन आर्यावर्त के शूरवीर पराक्रमी महाबली आर्य राजा सार्वभौम पूज्य शासक रहे थे। गणतन्त्रीय वीर हरयाणा में भी अखाडो मे बहुत सदाचारी, धार्मिक, स्वदेशरक्षक निरामिषभोजी महाबली आर्य मल्ल हुए हैं जो पचायती अखाडो मे प्रशिक्षण लेते थे।

विशाल हरयाणा के राष्ट्र-रक्षक मल्ल—

प्राचीन हरयाणा में हरद्वार, कुरुक्षेत्र, रोहतक, मेरठ, मथुरा, सम्भल, मुरादाबाद आदि स्थानो पर पचायती अखाडो में मल्ल तथा युद्ध-विद्या सिखाई जाती थी। यह सर्वखाप पचायत धर्मदेव राजा हर्षवर्धन ने कन्नौज में स० ७०० विक्रमी मे सगठित की थी, जिसका मुख्य कार्यालय बालायन खाप जि० मुजफ्फरनगर के सौरम ग्राम मे स० १३६२ वि० से है। जिसके वर्तमान महामन्त्री ८६ वर्षीय चौ० कबूलसिंह आर्य इतिहासज्ञ हैं।

हमारे तैमूरी आक्रमण के अवरोधक मल्ल—

स० १४५५ वि० १३९८ ई० मे भारत में नाममात्र की शक्तिहीन बादशाहत थी। फिरोजशाह तुगलक के दो पौत्र राजगद्दी पर परस्पर लड रहे थे। महमूद से हारकर उसका भाई अफगानिस्तान होता हुआ समरकन्द पहुँचा। उसने भारत पर आक्रमण के लिए तेमूर लगडे को निमन्त्रण दिया। तेमूर भी यही चाहता था। अत उसने १४५५ वि० में ढाई लाख सेना से भारत पर आक्रमण कर दिया। उसके पास ७५ हजार घुडसवार थे। वह मुलतान, भटिण्डा, कैथल, कान्ही पुट्ठी होता हुआ पानीपत आया। दिल्ली से महमूद के सेनापति मल्लू पठान ६० हजार पैदल, १५ हजार सवार, १५० हाथी लेकर पानीपत मे तेमूर से जा भिडा, परन्तु उसी के दुष्ट सेना अधिकारियो के कारण हारकर दिल्ली भाग आया। वहा भी तेमूर ने आकर, उसे मारकर दिल्ली को लूटना आरम्भ कर दिया। इस विकट समय मे हरयाणा के चार स्थानो बेरी, गोलिया बादली, शिशौली बालायन तथा मदपुर (बुलन्द शहर) सर्वखाप पंचायत की चार सभाये हुई। फिर सारे विशाल हरयाणा की बडी पचायत मेरठ के चौगामे निरपडा, दाहा, दोघट, टीकरी के मध्य २२५ बीघे वाले बाग में पचायती चतुर्कूप प्याऊ पर निरपडा के योद्धा देवपाल राणा की प्रधानता मे हुई। कार्तिकबदी पचमी की इस पचायत के ८० हजार चुनिन्दा वीर अस्त्र-शस्त्रधारी मल्लो मे पाच मन भार से कम का कोई नही था। प्रधान सेनापति योगराज ४५ वर्षीय बालब्रह्मचारी सस्कृत विद्वान् ६३ धडी भार का शूरवीर था। जो ८४-८४ ग्रामो की कैराणा कलसियान तथा शिशौली बालायन खापो की सीमा के ग्राम के चौ० बलवन्तसिंह गूर्जर का सुपुत्र था और एक समय मे गौ का २२ सेर दूध, चार सेर चूत, डेढ सेर घी तथा तीन पाव शहद, बादाम, खाता-पीता सात्विक अन्न आहारी था। इसका भार केवल ऊट ही ओट सकता था। ४० हजार वीरागनाये तथा १८-२० वर्षीय २० हजार कुमार लडके भी तैयार किये गये। वीरागनायें भोजन, दूध, पट्टी बाधने, तुरही रणसिंगे बजाने तथा शत्रु को रसद भोजन छीनने का कार्य भी करती थी। ५०० गुप्तचर घुडसवार भी तैयार किये थे।

चौगामे की इस महापचायत मे स्वदेश रक्षा, शस्त्र धारण, झपट्टा मार युद्ध आदि सात नियम निश्चित किये थे। दिल्ली के चारो ओर सौ सवा सौ कोश के योद्धा इकट्ठे हो गये। हिसार से पश्चिम मे कोसी ग्राम के ५३ धडी भार के योद्धा धोला भगी को उपप्रधान सेनापति, ६ सेनापति, १० उप-सेनापति, २० सहायक सेनापति तथा पाच वीरागना सेनापति, ये ४३ निर्वाचित किये गये।

६ सेनापति—गजेसिंह गठवाला, तुहीराम राजपुत्र, मेदा रवा, सरजू ब्राह्मण, उमरा तगा, दुर्जनपाल अहीर मेरठ के बलेणी ग्राम का ३५ वर्ष का विकट योद्धा था।

१० उप-सेनापति—धारी गडरिया, भौंदू सैनी, कुन्दन कोली जाट, हुल्ला नाई, भाना जुलाहा, अमनसिंह पुण्डीर राजपुत्र, नत्थू पुण्डीर, दुल्ला धाडी गोलिया बादली का, माமचन्द गूजर, कलवा कहार। दुल्ला धाडी गोलिया हिसार दादरी से मुलतान तक के धाडे मारकर मुलतान की गद्दी का सरदार था। इसका नाम रणवीर दुल्लाधाडी था, ५१ धडी का था। एक सौ युद्ध लड चुका था। तीन बार सेनापति बना था।

२० सहायक सेनापति—सूबेदार माडू गूजर, शम्भू गूजर, नानू राजपुत्र, हरवश राजपुत्र, गगू रोड, गोकुलदास कायस्थ, लालू वैष्णव, अभयराम वैरागी, बलदेवा रवा, मूला जोगी, नागू चमार, रतिया जोगी, अलमा तगा, चन्दन पवार जाट, रहतू वैश्य, जोगराज धीमान, अमना जाट, छतरा राजपुत्र, पलटू कहार, कल्लू तेली, चन्द्रदत्त भट्ट वीर कवि नियुक्त किया था। यह सारी योजना चौगामे की इसी पचायती सभा में बनाई थी। ईश्वर प्रार्थनोपासना तथा भारत भूमि की जय से सभा पूर्ण हुई।

ये पचायती सेनाये पानीपत, दिल्ली, मेरठ, तुगलुकपुर, सहारनपुर, हरद्वार में तेमूरी सेना से डटकर लडी थी। दिल्ली को निर्दयता से काटते लूटते समय तेमूरी ५२ हजार सेना पर, २० हजार पचायती वीरो ने रात के तीन बजे भीषण आक्रमण करके, नौ हजार तेमूरी सेना को गाजर मूली की तरह काटकर जमना में फेंक दिया। इसी प्रकार तीन दिन झपट्टा मार लडाई में तग आकर तेमूर मेरठ की ओर भाग पडा। मार्ग में वीर मल्लों ने टिकने नही दिया। तेमूर मेरठ के युद्ध मे भोजन छोड कर भाग खडा हुआ। तेमूरी सेना लडती रहती और भागती रहती थी। जहा रात को रुकती, पचायती सेना झट धावा बोल देती। दोनो ओर के सैनिक समाप्त होते रहे। वीर देविया खाद्य सामग्री पहुचाती तथा शत्रु का रसद छीनती रही। ५०० घुडसवार मल्लो को सारी सूचना देते रहते थे। तेमूरी सेना भूख से विलख उठी और भागते हुए मार्ग के ग्रामो को नष्ट करती जाती थी। तेमूर तग आकर सेना व्यूह बनाकर लडते भिडते हरद्वार की ओर भाग गया और रसद न मिलने के कारण घायल तथा बन्दियों को कतल करवा देता था। पचायती मल्ल सेना आगे, पीछे, बराबर से निरन्तर मारकाट करती रही। मल्ल वीर सेनापति दलबल का सुचारु सचालन करते थे।

पथरीगढ हरद्वार का युद्ध—

हरद्वार से पाच कोश दक्षिण में पथरीगढ के मैदान में पचायत के २५ हजार योद्धाओ ने तेमूर के घुडसवार जत्थे पर तीर, भालो से भयकर धावा बोल दिया, बडा भीषण युद्ध हुआ। इसी जत्थे में तेमूर था तब गोलिया बादली के ४७ धडी भार के बालब्रह्मचारी हरवीर गोलिया ने मुस्लिम सैनिक का भेष भरकर तेमूर की छाती मे जोर से भाला मारा। तेमूर गिरता-गिरता उसके सरदार खिजर ने सम्भाल लिया। हरवीर पर शत्रु के एकदम ६० भाले और ५ तलवारो के वार से ५२ घाव आये। वीर भूमि पर गिर पडा। प्रधान सेनापति योगराज ने जभी २२ हजार मल्लयोद्धो के साथ शत्रु पर प्रबल धावा बोलकर ५ हजार शत्रुओं को काट डाला और अपने हाथों से स्वय इस अचेत जवान हरवीर को उठाकर यथास्थान पहुँचाया, परन्तु यह वीर कुछ घडियो के पश्चात् वीरगति को प्राप्त हुआ। योगराज को बहुत दुःख हुआ। हरवीर २२ वर्ष का दर्शनीय वीर था।

(क्रमश:)

सम्पादकीय

हरयाणा के हितों की सुरक्षा से जुड़ी है सबकी हारजीत

बडे दुःख की बात है कि हरयाणा के हितो को पीछे डालकर चौ० देवीलाल जी ने अपनी हारजीत मुख्यमन्त्री की सार्वजनिक सभाओ मे गडबड डालकर उनको उखाडने के साथ जोड ली है। जीद के सम्मेलन मे भी उन्होने हरयाणा के हितो को पीछे डालकर भजनलाल के त्याग-पत्र को ही मुख्य मुद्दा बना लिया था। सम्मेलन का मुख्य मुद्दा बताते समय उन्होने बुद्धि से कम काम लिया। इसलिये जब भजनलाल जी का त्याग-पत्र दूसरे कारणो से हो गया तो वे देखते ही रह गये। २१ जून को चण्डीगढ के हस्तातरण के अन्तिम फैसले की प्रतीक्षा किये बगैर, केवल उसकी सम्भावना को लेकर बन्द का आह्वान भी बहुत बुद्धिमत्ता का नही था। चण्डीगढ का हस्तान्तरण भी जब दूसरे कारणो से रुक गया तो संघर्ष समिति के नेताओ को बन्द के काम को रोकने के लिए लोगो को घूम घूमकर कहना पडा।

हरयाणा के हितो की बात भी चाहे देवीलाल जी और उनकी समिति करती हो, परन्तु हरयाणा के हित उनके लिये मुख्य मुद्दे नही हैं और न ही हरयाणा के हितो पर एक के बाद एक प्रहार करने वाले अकालियो मे उनका झगडा और न उनसे उनको कोई शिकवा। यह बात उन्होने जीद में भी कही और रोजाना कहते हैं। अप्रेल १९६६ मे अकाली नेताओ और हरयाणा के नेताओ के लिखित समझौते की बात देवीलाल जी जरूर करते है, जिसमे यह स्पष्ट लिखा था कि यदि दो गाव भी दस या उससे अधिक गाँव के हस्तातरण को रोकते तो हस्तातरण नही रुकना चाहिये। उस पर प्रकाशसिह बादल के हस्ताक्षर हैं, परन्तु देवीलाल जी को उन पर कोई गिला-शिकवा नही है, न उनसे झगडा है। वे चाहे पानी की एक बूंद भी हरयाणा को न दिये जाने की बात करे या केवल ७००० एकड जमीन चण्डीगढ के बदले तो भी उनसे कोई झगडा नही। झगडा उनसे है जो पानी देने की बात करते हैं, नहर की खुदाई के रुकने से चिंतित हैं और हरयाणा को बदले मे इलाका दिये बगैर पजाब को चण्डीगढ नही दे रहे। चण्डीगढ के बदले कम इलाका देने या थोडा पानी देने की बात के विरोध मे प्रबल आवाज उठाने की बात तो समझ में आती है। लेकिन जो लोग यह सब कुछ करने के लिए धर्मयुद्ध आदोलन, धमकी, मारकाट और देशद्रोह तक कर रहे हैं उनसे न कोई झगडा, न कोई शिकवा यह बात हरयाणा की जनता के गले के नीचे कैसे उतरती है, यह मेरे लिए एक आश्चर्य जरूर है।

एक तथ्य तो इन सब गतिविधियो से स्पष्ट हो जाता है कि देवीलाल जी तो अकालियो के साथ हैं, यहा तक कि एशियाई खेलो में गडबड करने से अकालियो को रोकने और दिल्ली के दगो के बारे मे वे वही भाषा बोलते हैं जो अकाली समय समय पर बोलते रहते है। चौ० देवीलाल जी के दो वरिष्ठ साथी एक पूर्व मन्त्री और दूसरे ससदसदस्य से मैंने यह बात की और उनसे कहा कि यदि अकाली बातचीत के द्वारा हरयाणा का पूरा अधिकार देने की बात मान लेते हैं और रुकावट केवल भजनलाल जी हैं तो मामला बहुत सरल है, मैं नही समझता कि इस रुकावट को दूर करने मे प्रधानमन्त्री आनाकानी करेगे। उनको कहना पडा कि अकाली उनकी बात कहा मानते हैं। नतीजा यह निकला कि देवीलाल जी चाहे अकालियो के साथ हो, अकाली उनके साथ नही है।

देवीलाल जी इस बात को जानते भी हैं और मानते भी हैं, परन्तु राजनैतिक हथकण्डे अपनाने मे वे अकालियो को गुरु मानते हैं। अकाली लूटमार, हिंसा, आतक, गुरुद्वारो मे हथियारो का भण्डारण, उन पर कब्जा, सब कुछ करके यह वक्तव्य देते हुए न हिचकिचाते हैं और न शर्म महसूस करते हैं कि यह सब कुछ भारत सरकार अकालियो को बदनाम करने के लिए स्वय करवा रही है। देवीलाल जी के साथी भी वही भाषा बोल रहे हैं, वे भी रोहतक में बसे, जीपें जलाना, दुकान जलाना, लूटना, पुलिस पर हमले करना, सब कुछ करके अब कह रहे हैं कि यह सब कुछ संघर्ष समिति को बदनाम करने के लिये सरकार करवा रही है।

संघर्ष समिति के भाई आतकवादी भाषा और गतिविधियो से जनता को उत्तेजित करने में कुछ समय के लिये चाहे सफल हो जाये और उत्तेजित जनता की फिलहाल वाहवाही ले लेवे, परन्तु यह सब कुछ करते हुए, उनको यह नही भूलना चाहिए कि पजाब के अकालियो के, हरयाणा के लोगो के निशाने एक नही हो सकते हिंसा करनेवाले पजाब के उग्रवादियो का निशाना तो भारत को अस्थिर करना और तोडना और इस काम के लिए उनको भारतविरोधी शक्तियो से धन, साधन, प्रशिक्षण, हथियार सब कुछ मिलता है और वे उन शक्तियो का काम पूरा करने के लिए उनका हथियार मात्र हैं। हरयाणा का इतिहास देशभक्ति का इतिहास है। हरयाणा राष्ट्र की एकता और सुरक्षा के लिए सदा बलिदान देता आया है और आज भी उग्रवादियो के इरादे मिट्टी मे मिलाने के लिए कृत-सकल्प है। इसलिये हरयाणा के किसी भी आदोलन के वे तौर तरीके नही हो सकते जो देशद्रोही उग्रवादियो के है, या उन तथाकथित नरमपथी अकालियो के हैं जो देशद्रोहियो की हिंसक गतिविधियो का लाभ उठाकर अपनी अनुचित मागे मनवाना चाहते है।

एकजुट होकर प्रदेश के लाखो नागरिको के द्वारा मजबूती से कही हुई बात और उसके लिए शातिपूर्ण प्रदर्शन का प्रभाव कोई कम होता है, प्रजातन्त्र मे ऐसी बात मानना और प्रचारित करना उचित नही है।

हरयाणा की ओर से कमी तो यही रही कि बार-बार अपील करने पर भी तीन वर्ष तक तो एकजुट होकर कुछ बोले ही नही। बोले तो तब जब पजाब समझौता हो गया और उसमे भी मुख्य मुद्दा हरयाणा के हितो की बजाये, मुख्यमन्त्री हटाने का बना डाला। फाजिल्का अबोहर कन्दूखेडा पर हमारे जैसे चन्द लोगो को छोडकर समिति के भाइयो ने तो बिल्कुल ध्यान ही नही दिया। अपने शासनकाल मे क्या किया, क्या नही किया, उसका महत्त्व तो बहुत है। क्योकि किया होता तो अवस्था दूसरी ही होती, परन्तु तब नही किया तो अब तो करना चाहिये था। अब भी जो करना था वह तो किया नही और दलगत राजनीति को लेकर दोषारोपण, अराजकता करने मे लग गये, असल मुद्दा छोड दिया। अब फिर हिंसा और सार्वजनिक सभाओ में गडबड का व्यक्तिगत हारजीत का मुद्दा ले बैठे।

ऐसा लगता है शीघ्र ही एक और आयोग बनेगा। उसका स्वरूप तो कुछ दिन मे सामने आयेगा, परन्तु ऐसा यत्न अभी से होना चाहिये कि उस आयोग के सामने हरयाणा का एकजुट होकर मजबूती से पक्ष रखा जाये। हरयाणा के हितो का प्रश्न किसी एक दल या दलो का मामला नही, वह तो हरयाणा के सवा करोड लोगो तथा उनकी आने वाली सन्तानो के हितो का प्रश्न है और यह प्रश्न सब दलो का समान रूप से है। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर एकजुट होकर अपने अधिकारो के लिए हरयाणा वासियो को मिलकर अपनी ठोस बाते कहनी चाहिये, समय की यही माग है। सभी हरयाणावासियो की हारजीत इसमे है। हम यह न भूले कि हम अपने अधिकारो के लिए सघर्ष करते हुए राष्ट्र की एकता बनाये रखने के लिए और भारत को एक महान् राष्ट्र और महान् शक्ति बनाने के लिए एक पवित्र प्रयास कर रहे हैं।

—प्रो० शेरसिंह

फेफड़ों को नष्ट करने वाली बीड़ी से सावधान

भजन

क्या पिजे ऐसी वस्तु को जिससे ताकत घटी रहे।
पल पल पड़े जरूरत जिसकी और पैसे की कमी रहे॥
कई तरह की लगे बिमारी, मास मास और आतो में।
खासी को जननी बडी बदबू करती मुंह दातो मे।
पीते हो खुद खुश्की को दिल मे कैसे नमी रहे।
पलपल पडे ... ॥१

बड-बडे धनवानो को माचिस तक मागते देखा है।
जली हुई आधी बीडो को कानो मे टागने देखा है।
चिगारी से जगह जगह कुर्ते की झोली जली रह।
पलपल ॥२

खून-पसीने का पैसा बीडो का धुवा बना दिया।
साठ वर्ष के जीवन मे कितने पसे को जला दिया।
अगर तुम हिसाब लगाओ तो इक लाख से भी कम न रहे।
पलपल ॥३

दूध दही घी भले ना मिले बीडी लेनी पडे अचूक।
घर आगन मन्दिर ना देखे जगह-जगह पर दे ये थूक।
दूर रहो गन्दी आदत मे छोडो जब तक छुटी रहे।
पलपल ... ॥४

अत्तरसिह आर्य क्रातिकारी सभा उपदेशक

आर्य वीरदल वैदिक साधनाश्रम शादीपुर का पन्द्रह दिवसीय शिविर सम्पन्न

दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर (यमुनानगर) मे श्री मदनलाल वासदेव प्रधान व श्री वैद्य रामलाल जी की अध्यक्षता मे ८-६-८६ से २३-६-८६ तक सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे गाव मण्डौली, फतेहपुर, महमुदपुर, शादीपुर आदि ग्रामो के ५० बच्चो ने भाग लिया।

इसमे शिक्षक श्री देवेन्द्रदत्त भारद्वाज ने लाठी चलाना जुडोकराटे, योगासन, कुश्ती आदि का प्रशिक्षण दिया।

इसमें समय-समय पर निम्नलिखित महानुभावो ने बौद्धिक रूप में शिक्षणार्थियो को सैद्धान्तिक, सामाजिक, बौद्धिक ज्ञान से ओतप्रोत कराया। श्री सत्यदेव जी वर्मा, श्री स्वामी विज्ञानानन्द, स्वामी सदानद, स्वामी निगमानन्द, यज्ञप्रिय शास्त्री, अमरनाथ मल्होत्रा, जयदेव शास्त्री, प० हरिश्चन्द्र भजनोपदेशक, रामस्वरूप शास्त्री।

अन्त मे २३-६-८६ को श्री आचार्य सुदशनदेव जी के करकमलो द्वारा ५० आर्यवीरो को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

रामस्वरूप शास्त्री

वेदोपदेशक विद्यालय मे प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय बृजघाट जि० गाजियाबाद मे प्रवेश आरम्भ है। कक्षा १०वी (हाई स्कूल) पास सौम्य शिष्ट चरित्रवान् तथा आजीवन वैदिकधर्म प्रचार के इच्छुक युवक पत्र-व्यवहार करे।

पत्र व्यवहार का पता
ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर
वेदोपदेशक विद्यालय बृजघाट, गाजियाबाद (उ०प्र०)
—आचार्य

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के अन्तर्गत चल रहे विद्यालयो में धर्म-शिक्षा मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी—

धर्म-प्रवेशिका सत्र १९८५-८६ का परीक्षा परिणाम

नाम	पिता का नाम	विद्यालय का नाम	प्राप्तांक	स्थान
उज्जली बलमान	श्री कृष्णकुमार बलमान	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	८०	प्रथम
गीता निभावन	श्री चन्द्रभान निभावन	आर्य कन्या उच्च विद्यालक कालका	७७	द्वितीय
राजीव कौशिक	श्री डी० एल० कौशिक	बाल मन्दिर दयानन्द माडर्न माडल टाउन, सोनीपत	७७	द्वितीय
डोली चौहान	श्री टीकाराम चौहान	आर्य विद्या मन्दिर उच्च विद्यालय न्यू कालोनी गुडगाव	७६	तृतीय
मंजु	श्री सत्यनारायण	आर्य कन्या उच्च विद्यालय नरवाना, जीद	७४	चतुर्थ
योगेश गुप्ता	श्री राजपाल मदान	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	७४	चतुर्थ
पूनम नासा	श्री परसोतलाल नासा	आर्य विद्या मन्दिर उच्च न्यू कालोनी, गुडगाव	७४	चतुर्थ
		धर्माधिकारी		
शालमी	श्री रत्नचन्द	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	६८	प्रथम
ममता जैन	श्री अशोककुमार	आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी	६७	द्वितीय
कविता रानी	श्री देवराज	आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी	६५	तृतीय
नीरज	श्री अशोककुमार	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	६४	चतुर्थ
रचना रानी	श्री राजेन्द्रकुमार बाली	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	६४	चतुर्थ
सीमा रानी	श्री जगदीशलाल	आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी, अम्बाला	६४	चतुर्थ
सत्यप्रकाश	श्री ओम्प्रकाश	आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा	६४	चतुर्थ
		भूषण		
अनुराधा गुप्ता	श्री नत्थूराम	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	८०	प्रथम
इन्द्रजीतकौर	श्री प्रीतमसिंह	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	८०	प्रथम
विजयपाल	श्री बलदेवराज	आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा	७८	द्वितीय
सुनीता	श्री रामचन्द्र	आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका	७३	तृतीय
अशोककुमार	श्री महताबसिंह	आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत, करनाल	७२	चतुर्थ

—प्रि० लाभसिंह प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सव तथा वेदप्रचार सप्ताह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे आर्यसमाजो में निम्नलिखित स्थानो पर वार्षिक उत्सव तथा वेदप्रचार सप्ताहो का आयोजन किया गया है—

आर्यसमाज धुर्मपुर जि० सोनीपत	१८ से २० जुलाई
भक्त फूलसिंह बलिदान जयन्ती कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत	६-७ अगस्त
आर्यसमाज सावलन जि० करनाल	८ से १४ ,,
आर्यसमाज मुवाना जि० जीन्द	२१ से २७ ,,

हरयाणा के आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे वार्षिक उत्सव अथवा वेदप्रचार सप्ताहो का आयोजन करके शीघ्र सभा को सूचित करे ताकि प्रबन्ध करने मे सभा को सुविधा रहे। जिन आर्यसमाजो की प्रबन्ध कराने की माग पहले प्राप्त होगी, उनका प्रबन्ध भी उनकी इच्छा के अनुसार पहले किया जायेगा।

महाशय भरतसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक का द्वितीय वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक का द्वितीय वार्षिक उत्सव बडी धूम-धाम से मनाया गया। सम्मेलन मे शिक्षा, वेद, दहेज शराब आदि के बारे में नीतियो व मान्यताओ पर अनेक विद्वानो ने अपने विचार विश्लेषणात्मक ढग से रखे। सम्मेलन मे "राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" के मच से पजाब को सेना के हवाले करने की माग की गई तथा धर्म निरपेक्षता की नीति पर पुनर्विचार की भी माग उठी। सम्मेलनो को स्वामी ओमानन्द, स्वामी धर्मानन्द, स्वामी कीर्तिदेव, डा० तुलसीराम, डा० यज्ञवीर, श्री कृष्णलाल परुथी, प्रो० सत्यवीर, श्री राममेहर विधिवक्ता, प० श्यामसुन्दर, श्री विद्याव्रत शास्त्री, श्री सुरेश तथा श्रीमती ताराभारती नन्दा, बहन सुमित्रा आर्या, डा० सुदर्शनदेव आचार्य, महेन्द्रसिंह शास्त्री प्रतिनिधि सभा महोपदेशको ने सम्बोधन किया। श्री ईश्वरसिंह, जयपालसिंह, श्री मुन्शीराम तथा प० सुमेरसिंह जी आदि भजनोपदेशको ने मधुर सगीत से धर्मप्रेमी सज्जनो को भावविभोर किया।

सम्मेलन मे स्वतन्त्रता सेनानी माता लक्ष्मीदेवी जी आर्या का अभिनन्दन किया गया। सम्मेलन का अन्तिम आकर्षण योगशक्ति प्रदर्शन तथा मुक्केबाजी का रहा। योग-प्रदर्शन मे श्री ब्र० ओमदर्शन ने योगासन, प्राणायाम द्वारा नाडी रोकना, आख व गले से नुकीले सरिये मोडना, बेल तोडना, हथेली पर काच पीसना आदि का प्रदर्शन किया गया। मुक्केबाजी का मुकाबला राष्ट्रीय रजत पदक विजेता श्री सर्वजीत सागवान तथा सेना के चैम्पियन श्री बलवन्तसिंह के मध्य रहा। यह बडा प्रभावी रहा। इस मुकाबले में श्री सर्वजीत विजयी रहे।

महावीरसिंह शास्त्री मन्त्री

प्रवेश सूचना

आर्य हिन्दी सस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी) जो महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है। ३६ वर्ष से हिन्दी एव सस्कृत की लगातार सेवा कर रहा है। हिन्दी की प्रभाकर एव सस्कृत की विशारद व शास्त्री कक्षाओ का प्रवेश १ जुलाई, १९८६ से प्रारम्भ है।

१—छात्र एव छात्राओं को अलग-अलग पढाया जाता है।

२—छात्राओ के लिये छात्रावास का पूर्ण प्रबन्ध है।

ऋषिपाल आर्य आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)

पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी से आशायें

श्री प० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी

आर्यसमाज के इतिहास मे पचासो सन्त हुए। सब का नाम लिखू तो लम्बी सूची बन जायेगी। अब जिस सन्त का नाम लिखने लगा हूँ— वे वर्तमान आर्यसमाज मे प्रधान नेता रहे ला० रामगोपाल जी शालवाले इतने लम्बे अरसे तक कोई भी नेता आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान नही रहे थे। सौभाग्य इन्ही को प्राप्त है। इनकी कार्यशैली, लगनशीलता बहुत कम नेता मे रही। दो-चार विद्वान और दो-चार सन्तो को छोडकर अब इनका सम्मान किसी से कम नही। लोकसभा के सदस्य भी रहे। सारी सभाओ मे आर्यसमाज को मुख्य स्थान दिया। राजनीति क्षेत्रो मे भी आर्यसमाज पर आच नही आने दी। मीनाक्षीपुरम और मारीशस मे लन्दन मे आर्यसमाज के महासम्मेलनो को सफल बनाया। १९७५ में विकट समय मे यकायक बाम्बे से दिल्ली मे आर्यसमाज की शताब्दी आर्यजनो के सहयोग से सफलतापूर्वक मना, ससार को अचरज मे डाल दिया।

भारत की राजधानी दिल्ली को उस समय आर्यनगरी बना दिया। आज दिल्ली में ३०० से ऊपर आर्यसमाज हैं। इस कार्य मे योगदान आपका है। आप सार्वदेशिक सभा के सहयोग को भी भुलाया नही जा सकता। स्वामी सत्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, पूज्य स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी के योगदान को भी भुलाना गलती होगी।

२२-६-८६ की तिथि भूली न जायेगी। ला० रामगोपाल जी शालवाले एक अनोमानी दानी को वैराग्य होना ये ऋषि भक्ति का परिचय है। एक महान् समाज सुधारक सन्त, ये जब श्री रामचन्द्र जी कहलाते थे। मैं भी इनके चरणो मे दयानन्दोपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन मे पढता रहा। सिद्धात शिरोमणि में पास हुआ। इस तपस्वी को भी वैराग्य हुआ, स्वामी सर्वानन्द जी जो समाज की सेवा मे लीन हैं।

ऐसी वैराग्य की भावना ला० रामगोपाल जी में हुई। अब स्वामी आनन्दबोध रखा गया। भगवान् करे जैसा मूलशकर को शिवरात्रि को बोध हुआ। इन्हे भी समय ने बोध करा दिया। स्वामी आनन्दबोध जी महाराज से आसरा है सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कमियो बुराइयो को दूर करने का सकल्प करें। भारत के आर्य सन्तो को इकट्ठा करे, समाज सुधार करे। अब तो सार्वदेशिक सभा को और भी चमकायेगे। हैदराबाद मे गये जेल के वीरो वास्ते गृह विभाग से मिलकर कार्य हर अवस्था में कराये। प्रान्तीय सभाओ की समस्याये सुलझाये। पजाब का आर्यसमाज एव हिन्दू सकट मे है, छाती तानकर आगे निकलें। श्री राजीव गाधी जी से मिलकर १९७० का इन्दिरा एवार्ड हर कीमत पर लागू कराये। सारा देश इस मामले मे आपके साथ है। आपका ये सन्यास अच्छा रग लायेगा। विधान सभाओ मे, लोकसभा मे अच्छे योग्य आदमी आये। आप आर्यसमाजी तो है ही, बल्कि हिन्दू मात्र के सन्त हैं। एकता और अखण्डता पर अपना जीवन निछावर करदे, पजाब को शान भारत की एकता के लिये हम आपके साथ हैं। १९७० के एवार्ड बदले यदि आपको भूख हडताल रखनी पडे तो मैं भी आपके साथ बैठने को तैयार हू। जोश और होश के साथ आप देश की सेवा कर सकते है। आपके सन्यास से आर्यसमाज मे विशेषतया जागृति आई है और आएगी। इसीलिये मैंने लिखा स्वा० आनन्दबोध जी से आशायें।

नोट—पूज्य प्रो० शेरसिंह जी प्रधान व हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आपके साथ है।

आर्यसमाज बादली जि० रोहतक का उत्सव

आर्यसमाज बादली का ४९वा वार्षिक सम्मेलन बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ है, जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य हरिदेव जी की अध्यक्षता मे गौतमनगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया तथा व्यायाम प्रदर्शन जिसमे लाठी चलाना, भाला चलाना, तलवार चलाना, सरिये मोडना आदि का प्रदर्शन हुआ। भजनो का कार्यक्रम प० तेजपाल आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ, जो बहुत अच्छा रहा। जिसमे उन्होंने दहेज प्रथा तथा सामाजिक कुरीतियो पर अच्छा प्रकाश डाला। —मन्त्री

आर्यसमाज कौल जि० कुरुक्षेत्र का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज कौल का वार्षिक उत्सव ३०-३१ मई व १ जून, ८६ को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। चौ० नत्थासिह तथा प० रामनिवास जी के क्रांतिकारी भजनो व उपदेशो तथा प्रचारो ने धूम मचा दी। इस उत्सव मे बडे-बडे आर्यसमाजी साधु, महात्मा व विद्वान् पधारे तथा बडे-बडे आर्य विचारधारा के नेताओ ने अपने प्रवचन रखे। समाज मे व्याप्त सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक व आर्थिक कुरीतियो व बुराइयो का खण्डन कर विशुद्ध आर्य प्रणाली का प्रचार किया गया। इससे लोगो पर बहुत प्रभाव पडा। उन्नीस युवा छात्रो ने यज्ञोपवीत धारण किये। इन्होने आर्य प्रणाली के अनुसार जीवनयापन का प्रण लिया। आर्यसमाज कौल की ओर से काश्मीर, पजाब, सिंध, बगलादेश व पूर्वी राज्यो मे हिन्दुओ के कत्लेआम तथा श्रीलका मे योजनाबद्ध तरीके से हिन्दुओ के किये जा रहे नरसहार की निन्दा अति कडे शब्दो मे की गई। आर्यसमाज कौल ने वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र तथा यहा उत्सव मे पधारने वाले भजनोपदेशको तथा साधु महात्माओ की दिल खोलकर दक्षिणा के रूप मे आर्थिक सहायता की। यहा के प्रचार से प्रभावित होने पर वक्ताओ व प्रचारको ने इसी तरह के प्रचार अधिक पैमाने पर करवाने की सलाह दी। आर्यसमाज के अधिक से अधिक प्रचारक व भजनोपदेशक तैयार करने पर बल दिया गया।

—एस० कृष्णन् महासचिव आर्यसमाज कौल

सर्वखाप पंचायत २० जुलाई, १९८६

गांव थाना कलां निकट (खरखोदा) सोनीपत में

गाव थाना कला निकट खरखोदा खाप दहिया, जि० सोनीपत मे पिछले कई वर्षों से गाव की आपसी पार्टीबाजी से नौ कत्ल हो चुके हैं जिसके कारण थाना कला के सभी निवासियो तथा उनके रिश्तेदारो की जिन्दगी बडी खतरे मे चल रही है। कई जवान विधवाये घर बैठी हैं। रोज पुलिस कचहरी व जेल गाव के लिए बन चुकी है। इस विनाश से बचाने के लिये कई बार दहिया खाप ने व निकट की खापो ने पचायत करके आपसी समझौता करवाना चाहा परन्तु गाव का दुर्भाग्य ही रहा।

अब दहिया खाप के लिखित अनुरोध पर तथा गाधरा, अटायल, खरावड व कारोर गावो के सामूहिक सहयोग से गाव थाना कला मे २० जुलाई, १९८६ रविवार को सभी खापो, तपो, बारहो की विशाल सर्व-खाप पचायत होगी। इस पचायत मे इस कत्लेआम को बन्द करके, थाना गाव को पचायती फैसले से बसाया जावेगा।

सभी खापो, तपो, बारहो के प्रधान अपनी अपनी खाप मे चिट्ठी फाडकर सभी गावो मे सूचना जरूर भेज दीजिये।

नोट—रास्ता थाना कला गाव, खरखोदा कस्बे के पास है। खरखोदा सोनीपत-रोहतक रोड, सापला-सोनीपत रोड पर है।

निवेदक स्वामी कर्मपाल प्रधान
सर्वजातीय सर्वखाप पचायत

आर्य वीरदल अधिकारी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

२६ जून से १ जुलाई तक सार्वदेशिक आर्य वीरदल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत की अध्यक्षता मे गुरुकुल कण्वाश्रम पौडी गढवाल (उ०प्र०) मे आर्य वीरदल अधिकारी शिविर लगाया गया। जिसमे गत वर्ष के कार्यों का लेखा-जोखा कर, आगामी वर्ष के कार्यक्रम की रूपरेखा पर एक रिपोर्ट तैयार की गई। इस रिपोर्ट को आर्य वीरदल हरयाणा की कार्यकारिणी में विचार के लिए भेजा जायेगा। ब्र० विश्वपाल जयन्त आधुनिक भीम का सहयोग सराहनीय रहा। इस शिविर का सयोजन आर्य वीरदल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी जी यथाशीघ्र आर्य युवा सगठनो के प्रतिनिधियो की एक बैठक बुलाकर एक रचनात्मक कार्यक्रम बनायेंगे। इसके लिए विभिन्न सगठनो के अधिकारियो से सम्पर्क आरम्भ कर दिया गया है। २७ २८ सितम्बर को रोहतक मे आर्यवीर महासम्मेलन की तयारिया आरम्भ की जारही हैं।

वैदिक संस्कार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में श्री दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर (अम्बाला) मे दिनांक २३-६-८६ से २९-६-८६ तक डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री की अध्यक्षता मे वैदिक सस्कार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसका सचालन प० हरिश्चन्द्र जी सह वेदप्रचार अधिष्ठाता अम्बाला मण्डल ने किया। इसमे सभा के उपदेशको के अतिरिक्त यमुनानगर, रोहतक चिडिया (भिवानी), नारनौल, मुजफ्फरनगर आदि के अनेक आर्य सज्जनों ने भाग लिया।

डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य ने आर्य यज्ञ पद्धति के साथ-साथ मुण्डन नामकरण, उपनयन तथा विवाह सस्कार का प्रशिक्षण दिया। वैदिक सध्या के मन्त्रों की सुन्दर ढग से व्याख्या करके समझाया। ईश्वर, वेद, वदिक धर्म की विशेषतायें तथा प्राचीन शिक्षा पद्धति आदि विषयो की समीक्षा की। प० हरिश्चन्द्र जी श्री राजबल, श्री [illegible], श्री शेरसिह, श्री विद्याभूषण, श्री चिरजीलाल के ईश्वर भक्ति आदि विषयों भजन होते रहे और प० कुलवन्तराय जी ने यज्ञ की व्यवस्था मे सहयोग दिया। स्वामी सदानन्द सरस्वती, स्वामी निगमानन्द, प० वागीश्वर जी विद्याभास्कर, ब्र० महेश, ब्र० रमेश शास्त्री के शिक्षाप्रद प्रवचन हुए। ब्र० नरेशकुमार का उपनयन सस्कार किया गया। २८ ६ ८६ को वेद-प्रचार को उन्नति के लिए एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के प्रबन्धक स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती, वैद्य रामलाल, वैद्य नेत्रदाराम, यज्ञप्रिय शास्त्री, रामस्वरूप शास्त्री का इस शिविर को सफल बनाने मे अपूर्व एव प्रशसनीय योगदान रहा है।

दिनाक २९-६-८६ को दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय की ओर से ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

व्यवस्थापक दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय
वैदिक साधन आश्रम शादीपुर, यमुनानगर (अम्बाला)

आर्य वीरदल हिसार के प्रशिक्षण शिविर का समापन

हिसार २९ जून दयानन्द कालेज हिसार के छात्रावास मे चल रहे एक सप्ताह के राष्ट्र रक्षा एव ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह आज प्रिंसिपल एस० आर्य दयानन्द कालेज की अध्यक्षता मे बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे मुख्य अतिथि दानवीर श्री नन्दकिशोर गोयनका थे। इस अवसर पर विद्यार्थियो ने दहेज न लेने की शपथ ली तथा योगासन, लाठी, भाला, छुरी, स्तूप आदि का आकर्षक प्रदर्शन किया। आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने ब्रह्मचर्य-शक्ति प्रदर्शन के चमत्कारी प्रदर्शन करे। अपनी गर्दन से ६ सूत तक के सरिये को मोडना, मोटी जजीर तोड डालना, हाथ से काच पीसना, पीतल की थाली को हाथ से चीरना, छाती पर एक क्विटल का एरन रखकर लोहा कूटना आदि प्रदर्शन किये गये। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जन-समूह तथा नौजवानो ने वैदिक धर्म के प्रति अपनी ही धरती पर सौतेला व्यवहार को अनुभव किया। क्योकि शिविर सयोजक श्री सीताराम आर्य ने बताया कि २८-६-८६ को एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया जाने वाला था, परन्तु प्रशासनिक अधिकारियो द्वारा इसकी अनुमति न दिये जाने पर यह स्थगित करना पडा।

सूचना

पलडा निवासी श्री फूलसिह आर्य की दो पुत्रियो सन्तोष व पुष्पा का विवाह सस्कार डहीना निवासी श्री सत्यवीर जी के सुपुत्र श्री रणवीरसिह एव श्री नरेन्द्रसिह जी के सुपुत्र श्री सूरजभान के साथ २२ जून को सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १५०) दान दिया गया।

महर्षि दयानन्द और यज्ञ

—वेदानन्द वेदवागीश

महर्षि दयानन्द ने यज्ञ के प्रसङ्ग में कुछ नवोन मौलिक देनें प्रदान की हैं। अग्निहोत्र के लिए उन्होने चार प्रकार की सामग्री और अग्राह्य का भी वैदिक विधान किया है। "त्वगस्य मासमभवन्नलाजा" यह अग्राह्य सामग्री का द्योतक है। 'घृत तीव्र जुहोतन' मे केसर कस्तूरी घृत मे मिलाकर उसे 'तीव्र' गुणविशिष्ट किये जाने का प्रावधान है। अधिकतर महर्षि ने अपने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ग्रन्थो मे यज्ञ से वायु, जल और इनसे खाद्य पदार्थ का शोधन होता है—प्रतिपादित किया है।

'अग्निहोत्र जुहुयात् स्वर्गकाम ' स्वर्गकामो यजेत। इन वाक्यो के आधार पर महर्षि दयानन्द प्रतिपादित अग्निहोत्र से सुखोपलब्धि का प्रतिषेध कदापि सम्भव नही है। वायु, जल, खाद्यान्न की पवित्रता से शरीर आरोग्य होते हैं और निरोग देह जीवन को सुखी बनाते ही हैं।

महर्षि दयानन्द ने सस्कार विधि में यज्ञपात्रो का भी निर्देश किया है। स्वण और रजत-निर्मितो को ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है। सम्पत्तिमान् जन तो ऐसे पात्रो का प्रयोग करने मे कठिनाई अनुभव नही करेगे। सम्भवत देश स्वतन्त्र होने पर स्वर्णिम भूमि बन जायेगी। ऐसी कल्पना महर्षि दयानन्द जी की रही हो। वैदिक शुद्ध-पवित्र शासन हो तो यह धारणा पूरी उतर भी सकती है।

जो याग मे प्रयुक्त होने वाले पात्र वहा दर्शाये हैं—उनमे मे एक-दो पात्रो का ही हम प्रयोग करते हैं। अधिसख्यक यज्ञपात्र कहा उपयुक्त हैं—यह आर्यसमाज में प्रचलित नहीं है।

गुरुकुल एटा में श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने अनेक यज्ञपात्र बनवाकर इकट्ठे किये थे, परन्तु उनका प्रयोग वहा भी कदाचित् न किया गया होगा। फिर महर्षि द्वारा निर्दिष्ट ये पात्र व्यर्थ हैं ? क्या ऐसा माना जावे। हम तुच्छ बुद्धिवालों के लिए उनकी अनुपयुक्तता मान बैठना स्वय को धोखा देना होगा। ऋषिजन कभी भी निरर्थक प्रलाप नहीं किया करते। 'व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्' महर्षि पतजलि द्वारा सकेतित इस सूत्र से जब हम महर्षि स्वामी दयानन्द को टटोलते हैं तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के प्रतिज्ञा विषय मे हमे निम्न शब्द पढने को मिलते हैं—

अत्र वेदभाष्ये कर्मकाडस्य वर्णन शब्दार्थत करिष्यते। परन्त्वेतैर्वेदमन्त्रै कर्मकाण्डविनियोजितैर्यत्र यत्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत् कर्त्तव्य तत्तदत्र विस्तरतो न वर्णयिष्यते। कुत ? कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेयशतपथब्राह्मणपूर्वमीमासाश्रौतसूत्रादिषु यथार्थं विनियोजितत्वात्। पुनस्तत्कथनेनानृषिग्रन्थवत् पुनरुक्तपिष्टपेषणदोषापत्तेश्च। तस्माद् युक्तिसिद्धो वेदादिप्रमाणानुकूलो मन्त्रार्थानुसृतस्तदुक्तोऽपि विनियोगो ग्रहीतु योग्योऽस्ति।

अर्थ—इस मेरे किये जाने वाले वेदभाष्य मे मुझ द्वारा शब्दो और उनके अर्थपूर्वक कर्मकाड का वर्णन किया जायेगा। किन्तु कर्मकाड मे विनियुक्त इन वेदमन्त्रो मे जहा-जहा अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध तक जो-जो करणीय हैं, विस्तार से उसका लेखन यहा नही किया जायेगा। क्यो ? कर्मकाड प्रक्रिया का ऐतरेय शतपथ ब्राह्मण, पूर्वमीमासा और श्रौतसूत्रो मे ठीक-ठीक विनियोग कर दिया गया है। फिर उसका कथन करने से मेरा वेदभाष्य ऋषि-प्रणीत नही रहेगा और पुनरुक्त कथित को पुन कहना भी कहलायेगा। पिष्ट-पेषण—पिसे हुए को फिर पीसना इस दोष से भी आपत्ति उठने वाला होगा। इस कारण युक्तियो से सिद्ध, वेदादि प्रमाणो के अनुकूल मन्त्रार्थ से अविचलित उन द्वारा कथित भी विनियोग ग्रहण करने योग्य है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के इस उद्धरण से स्पष्ट है कि पूर्वाचार्यों द्वारा कृत विनियोग सर्वथा पूर्ण है और आचार्य दयानन्द द्वारा किया गया विनियोग भी उसमें ग्राह्य है अथवा ऋषि दयानन्द प्रदर्शित विनियोग में उनका भी ग्रहणीय है।

इस चर्चा के परिप्रेक्ष्य मे वाध्य होकर यह कहना पडता है कि सस्कारविधि-निर्दिष्ट यज्ञ पात्र अश्वमेधात यागो में काम आने वाले ही पात्र हैं। यह भी ध्वनित होता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती अश्वमेधात यागो को करणीय मानते थे। बीड (महाराष्ट्र) मे ३१ अप्रैल, १९८६ मे १० मई तक हुए सामयाग मे मैंने स्वय ये पात्र प्रयुक्त होते देखे हैं। परन्तु व सब काष्ठ के बने हैं, स्वर्ण-रजत के नही।

अब आर्यसमाज को यह सोचना होगा कि अश्वमेधातयागो का प्रचलन कैसे हो। यह ठीक है कि हम उसी बात को अङ्गीकार करते आये हैं जिसका विधान ऋषि दयानन्द ने किया है। परन्तु यह कहना भी धोखे मे रखना हा है कि जिन वेदपारायणयज्ञो का विधान ऋषि ने नहीं किया, उन्हे हम क्यो करते जाते हैं ? किसी कामना से किये जाने वाले यज्ञ मे यजुर्वेद के ३९वें अध्याय के अन्त्येष्टि मन्त्रो से आहुति देने की क्या तुक है ? यजमान पठित नही है तो यह मेरे जसे पारायणयज्ञ कराने वाले का अभद्र व्यवहार मुझे ही नरक मे नही पहुचा देगा।

मैंने ये विचार विद्वानो के सम्मुख प्रस्तुत किये है। वे अपने सुझाव दे।

महर्षि दयानन्द संस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय टेल मार्ग गाजियाबाद (उ०प्र०) में १ जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द सस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय पटेल माग गाजियाबाद में एक जुलाई से छात्रो के नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। अत: गुरुकुलीय शुद्ध वातावरण मे उत्तम शिक्षा के साथ बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक एव चारित्रिक विकास तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने बच्चो का प्रवेश करायें।

विशेषता

१–यहा आश्रम व्यवस्था के अनुसार सस्कृत, हिन्दी, गणित, विज्ञान, अग्रेजी आदि सभी आधुनिक विषयो के अध्ययन की पूर्ण व्यवस्था है।

२–शिक्षा न शुल्क दी जाती है।

३–गुरुकुल को एम० ए० समकक्ष आचार्य तक सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

४–गुरुकुल एक रजिस्टड सस्था है।

५–भोजन एव आवास तथा शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है।

६–पचम श्रेणी उत्तीर्ण छात्र का ही प्रवेश हो सकेगा।

निवेदक प्रबन्धक एव प्राचार्य

संस्कृत में आई० ए० एस० आदि परीक्षा उत्तीर्ण की

बिशनदास गम्भीर मन्त्री आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४

संस्कृत की उपयोगिता की सफलता का एक ज्वलन्त उदाहरण हमारे सम्मुख है। इस वर्ष की संघ लोकसेवा आयोग की सिविल सर्विस परीक्षा में एक प्रत्याशी ने सभी विषयों के उत्तर संस्कृत में देकर सफलता प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। उसने यह सिद्ध कर दिया है कि सभी आधुनिक विषयों के उत्तर संस्कृत में सुविधापूर्वक दिये जा सकते हैं। इससे पहले भी अनेक संस्कृत के छात्र संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय इतिहास और दर्शन विषय लेकर सफलता प्राप्त करते रहे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि संस्कृत के अध्ययन से सभी भारतीय भाषाओं में अधिक अच्छी योग्यता बनती है और विचाराभिव्यक्ति सशक्त होती है। यदि इस परीक्षा में विद्यार्थी हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं के साथ संस्कृत भी रखें तो वह सोने पर सुहागे का काम करेगी।

प्राय आधुनिक शिक्षा-पद्धति में शिक्षित लोगों में तथा आर्यसमाजियों में भी संस्कृत के प्रति एक उपेक्षावृत्ति है। वे संस्कृत को मृत भाषा कहने से भी बहुधा संकोच नहीं करते और इसकी शिक्षा को अर्थहीन मानकर इसकी ओर ध्यान नहीं देते। यही कारण है कि नई शिक्षा पद्धति में संस्कृत के अध्ययन अध्यापन को बहुत हानि पहुंचाई जा रही है, परन्तु वहां इस तथ्य को भूल जाते हैं कि न केवल संस्कृत वेदों आदि प्राचीन शास्त्रों की भाषा है, अपितु वह सभी भारतीय भाषाओं में जीवित है। वास्तव में संस्कृत न कभी मृत भाषा थी, न है, न होगी। हां, यह कहना अधिक उचित होगा कि हम जैसे स्वत्वहीन मृतप्राय लोगों की भाषा होने के कारण उसे मृतकों, मरे हुए लोगों की भाषा कहा जा सकता है। हमें नई शिक्षा-पद्धति में संस्कृत की अनिवार्य शिक्षा की मांग (१०+२) तक अवश्य करनी चाहिए। जिससे, कि इस भाषा के ज्ञान के द्वारा सभी भारतीय भाषाओं के निकट पहुंचा जा सके और इससे क्षुद्र भाषा विवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता सुदृढ हो। महर्षि दयानन्द ने इसी कारण संस्कृत शिक्षण के महत्त्व पर बल दिया है। महात्मा गांधी ने भी संस्कृत की आवश्यकता को दोहराया है।

हमें संस्कृत का तथा भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिए। उनका अपने जीवन में प्रयोग करना चाहिये और बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में ऊंची कक्षाओं में भी संस्कृत लेकर सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/KTK 49 फोन ४८

। १,६६ ०८,५३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ३३ २१ जुलाई, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

भारतीय दर्शनों की विशेषता

—प० धर्मदेव "मनीषी" दर्शनाचार्य गुरुकुल कालवा

भारतीय दर्शनों की सबसे बडी विशेषता उनका व्यावहारिक पक्ष है। उनका उद्देश्य है—नाना प्रकार के दु.खों से पीडित मनुष्यों को राग-द्वेष और अविद्या से छुड़ाकर मोक्ष की प्राप्ति करा देना।

भारतीय दर्शन की दूसरी विशेषता है—आशावाद। दु खमय वर्तमान से असन्तोष हुए बिना सुखमय भविष्य की कल्पना दुराशामात्र ही है। इस जगत् पर दृष्टिपात करने पर विवेकीजन इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि यह ससार नितांत दु खमय है। इस दु ख का कारण द्रष्टा और दृश्य का सयोग है, इस दु ख को दूर करना है और दुःख को दूर करने के लिए मार्ग खोजना है। इस प्रकार भारतीय दर्शन वर्तमान दशा से असन्तोष प्रकट कर उसके सुधारने का प्रयत्न करता है।

भारतीय दर्शन की तीसरी विशेषता है—नैतिक व्यवस्था में विश्वास। मनुष्य जो कर्म करता है उनका लोप नही होता, अपितु उन कर्मों से एक 'अपूर्व' की सृष्टि होती है। यही अपूर्व फलोत्पत्ति का प्रधान कारण है। न्याय-वैशेषिक में इसी 'अपूर्व' को अदृष्ट की सज्ञा दी है।

भारतीय दर्शन की चौथी विशेषता है—कर्म सिद्धात। मनुष्य जो-भी कर्म करता है उसका नाश कभी नही होता तथा जिस फल को हम भोग रहे हैं, वह पूर्वजन्म में किये हुए कर्म का ही फल है। कर्म सिद्धात को स्वीकार कर मनुष्य जहा एक ओर पाप करने से बच जाता है, वहा दूसरी ओर शुभ कर्मों के अनुष्ठान से अपने आगामी जीवन को उच्च, दिव्य एव महान् बना सकता है।

भारतीय दर्शन की पाचवी विशेषता है—मोक्ष मार्ग का निर्देश। ...र में बन्धन का कारण है अविद्या। अविद्या से बन्धन होता है और ...न से मुक्ति। जीवनयापन के दो मार्ग हैं—प्रेय और श्रेय। मनुष्य प्राय: ...तत. रमणीय पदार्थों की ओर आकृष्ट होकर ससार में प्रवृत्त होता ... इस प्रवृत्ति का मूलकारण है—राग और द्वेष। यह प्रेय मार्ग मनुष्य ...अधोगति का कारण है। श्रेय मार्ग मनुष्य के मगल का मूल है। दर्शन-... इस मगल मार्ग पर आरूढ होने के लिए यम-नियम आदि अष्टांग ... का विधान करते हैं। मनुष्य को जैसे भी हो, इस ससार के उच्छेद ...लिए त्रिविध तापों से छूटने के लिए, ब्रह्म की प्राप्ति के लिए महान् ...न एव पुरुषार्थ करना चाहिए।

...रतीय दर्शन की खोज का विषय रहा है 'आत्मा'। उपनिषदों ने ... में कहा है—'आत्मा वा अरे द्रष्टव्य:'। अरे! वह आत्मा ही ... योग्य, दर्शन करने योग्य है। बृहदारण्यक उपनिषद् २।४ में एक ... कथा है। जब दार्शनिकशिरोमणि याज्ञवल्क्य गृहस्थाश्रम का ...त्याग कर संन्यास में प्रविष्ट होने लगे, तब उन्होंने अपनी भार्या ...यी को बुलाकर कहा—"मैं इस गृहस्थाश्रम में पड़े रहना नही चाहता, परलोक साधन करना चाहता हू। आओ मैं कात्यायनी और तुम्हारे ...ए अपने धन का विभाजन करदूं।" याज्ञवल्क्य की बात सुनकर विदुषी मैत्रेयी ने पूछा—'यदि यह सारी पृथिवी धनधान्य से परिपूर्ण होकर मेरी हो जाये तो 'कथ तेनामृता स्याम्' क्या मैं उससे अमरत्व को प्राप्त कर सकूंगी?' महर्षि ने उत्तर दिया—जैसे साधनसम्पन्न व्यक्ति सुख-चैन से जीवन निर्वाह करते हैं, वैसा ही तुम्हारा जीवन भी हो जायेगा। 'अमृतत्वस्य तु न आशा अस्ति वित्तेन' धन-धान्य से अमरत्व पाने की तो तनिक भी आशा नहीं है।' तब मैत्रेयी ने कहा—"येनाह नामृता स्या किमह तेन कुर्याम्" जिस धन से अमरत्व की प्राप्ति नही हो सकती, उसे लेकर क्या करू गी।" इस उत्तर को सुनकर दार्शनिकशिरोमणि याज्ञवल्क्य नें मैत्रेयी को जो आध्यात्मिक उपदेश दिया वह भारतीय धर्म तथा दर्शन के इतिहास में सदा अमर रहेगा। उन्होंने कहा—

"पति-पति के लिए प्यारा नही होता, अपितु आत्मा के लिये। पत्नी पत्नी के लिए प्रिय नही है, प्रत्युत आत्मा के लिए। पुत्र-पुत्र के लिए प्यारे नही होते, अपितु आत्मा के लिए प्रिय होते हैं। ससार की समस्त वस्तुयें उनके लिए प्रिय नही होती, अपितु आत्मा के लिए प्रिय होती हैं। अत सबसे प्रिय वस्तु आत्मा है—

आत्मा वा अरे द्रष्टव्य श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेद सर्व विदितम ॥

"मैत्रेयी! उस आत्मा का ही दर्शन करना चाहिए, श्रवण करना चाहिए, मनन करना चाहिए और निदिध्यासन (निरन्तर ध्यान) करना चाहिये। क्योकि आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन तथा विज्ञान से सब कुछ जाना जा सकता है।"

आत्मतत्त्व का श्रवण करना चाहिये, श्रुति वाक्यो से मनन करना चाहिए, तार्किक युक्तियों से और निदिध्यासन करना चाहिए, योग प्रतिपादित उपायो से।

भारतीय दर्शनो को दो भागो में विभाजित किया गया है—आस्तिक और नास्तिक। चारवाक, जैन और बौद्ध ये तीनो नास्तिक दर्शन हैं। न्याय, वैशेषिक, साख्य, योग और पूर्व मीमासा और वेदात—ये छ: आस्तिक दर्शन हैं।

दर्शन कब लिखे गये, इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। दर्शनकारों ने इस विषय में कोई लिखित प्रमाण नही छोडा है, परन्तु एक बात सुनिश्चित है कि सभी दर्शन ऋषियों द्वारा प्रणीत हैं और ऋषियों का युग महाभारत तक अविच्छिन्न रहा है। अत दर्शन महाभारत से पूर्व और महाभारतकाल के आस-पास लिखे गये। इस प्रकार दर्शनो का समय आज से कम से कम पाँच हजार वर्ष पूर्व है। पाश्चात्य लेखको द्वारा निर्दिष्टकाल सर्वथा भ्रामक तथ्यो से दूर और युक्ति-शून्य है।

प्राचीन वीर हरयाणा के स्वदेश रक्षक पंचायती मल्लयोद्धा

—निहालसिंह प्राचीन

गताक से आगे—

इस राष्ट्र-रक्षक यज्ञ मे वीर आहुति—

मेरठ युद्ध में वीर दुर्जनपाल ग्रहीर दिल्ली दरवाजा के निकट अपने २०० सैनिक मल्लो सहित स्वर्ग सिधारे थे। हरद्वार युद्ध मे तेमूरी निजी-रक्षक लश्कर से भिडन्त में अपने १९० वीर साथियो सहित धोला भगी बलिदान हो गया। हरद्वार के तीसरे युद्ध में वीर योगराज कई कोस तक तेमूरी सेना में घुसकर कालाग्नि प्रचण्ड रूप होकर तीव्र मारकाट करता हुआ ओझल हो गया। उसे ४५ घाव आये, परन्तु होश मे रहा और सारे युद्ध को समाप्ति विजय देखकर ऋषिकेश में स्वर्ग सिधार अमर हो गया। वही गगा तट पर पीछे लाखो योद्धा मल्लवीरो ने शास्त्र रीति से उसका दाह सस्कार किया था। हरद्वार से खदेड कर पचायती सेना अम्बाला से भी आगे दूर तक तेमूरी सेना को लडते हुए भगा आई। बीच मे घायल बलिदान होने पर एक कछवाहे गोत्रीय वीर ने तथा तवर गोत्रीय जाट धीर ने क्रमश उपप्रधान, प्रधान सेनापति का पद सम्भाला था। फिर इनके बदले मे तीसरे स्थान पर एक रवे वश के और एक सैनी वश के योद्धाओ ने उपप्रधान तथा सेनापति पद सम्भाला था, परन्तु ३८ में से ३३ सेनापति वीरगति पा गये थे। पचायती मल्ल सेना के ३५ हजार मल्ल तथा वीरागनाये घायल और वीरगति पाकर भारत माता की रक्षा में बलिदान हो गये। तेमूर की ढाई लाख में से एक लाख साठ हजार (१६००००) सेना मार दी। उसकी आशाओ पर पानी फेर दिया था और उसके अधिकाश घोडे छीन लिए थे। विशाल हरयाणा के इन अमर बलिदानी वीर मल्लो का इतिहास स्वर्णाक्षरो में लिखा जाएगा। इन सबको शत-शत प्रणाम है। खेद है कि इस वीर इतिहास की उपेक्षा औरगजेब शासन में की गई। तेमूर ने 'मलजात तेमूरी' पुस्तक में अपनी ही अधिक प्रशसा करके यह भी लिखा है कि मैं हरद्वार के युद्ध मे मरता-मरता बचा था। (ये लेख सक्षेप से लिखा है)

हरयाणा के मल्लो द्वारा विजयनगर को सैन्य प्रशिक्षण-

भारत के दक्षिण मे एक सौ मण्डनो का बहुतवनी सम्पन्न हिन्दू राज्य तुगभद्रा नदी के तट पर विजय नगर था, जो सन् १३३६ से १५६६ ई० तक रहा। उसको बीदर, बरार, बीजानगर, अहमद नगर और गोलकुण्डा के पाच मुस्लिम बहमनी शासक तग करते रहते थे। तब विजयनगर का यात्री साधु हरिगिरि हरयाणा को हरद्वार सभा स० १४७६ वि० में आया था। उसने हरयाणा के पचायती वीर मल्ल को देखकर, विजय नगर के राजा देवराय द्वितीय (सन् १४१९ से १४४६ ई०) को इन मल्लो की वीरता बताई। राजा ने एक प्रार्थना-पत्र द्वारा सर्वखाप पचायत के प्रधान से कुछ मल्ल मागे थे। तब पचायत के प्रधान मल्ल निरीक्षक ने हरयाणा से विजय नगर में कुछ प्रशिक्षक मल्ल भेजे थे, जिन के ६ नेता ये थे। १) शकरदेव जाट, २) शिवदयाल गूजर, ३) शीतलचन्द रोड, ४) चण्डीराम रवा, ५) औकाराम बढो जागडा, ६) ऋषलदेव कोली जाट। इन मल्लो ने दक्षिण भारत के वीरो में प्रशिक्षण से अपूर्व बल का सचार कर दिया था, तब सन् १४४४ ई० में ईरान का दूत अब्दुल रजाक तथा उसका मुन्शी हुसन अब्बास विजयनगर में थे। हुसन अब्बास हरयाणा मे भी आया था। उसने अपने लेख में लिखा है—

१—उत्तर भारत मे हरयाणा जन्नत (स्वर्ग) का स्थान है, जहा घी, दूध को नदिया बह रही है। अतिथि और यात्रियो को पानी के स्थान पर दूध पिलाया जाता है। जगल गायो से भरे पडे हैं। बैल बडे बलिष्ठ हैं।

२—यहा के पहलवान् जितेन्द्रिय, सदाचारी, नम्र स्वभाव, तेजस्वी हैं, प्रेम का व्यवहार करते हैं।

३—किसी प्रकार का नशा भग, शराब आदि बिलकुल नही छूते। भोजन, घी, दूध, फल और मेवे मिठाई है। सात्विक और पवित्र दिनचर्या है। पराई स्त्रियो को माता बहन के समान आदर की दृष्टि से देखते हैं।

४—विजय नगर की सेना को प्रतिदिन आठ घण्टे प्रशिक्षण (परेड) देते हैं। शरीर को पानी-पानी बना डालते हैं।

५—सायकाल को इनकी मल्ल कला को देखकर यहा दक्षिण के भारतीय आश्चर्य में भर जाते हैं।

६—इन मल्लो में ५ मल्लों का वजन पचास धडी से ऊपर है। शरीर सुडोल और सुगठित है। इनकी शिक्षा और आचरण सुधार से विजय नगर की सेना बलवती हो गई है और कई युद्धो में बहमनी राज्यों की सेना को हराया है। प्रत्येक मल्ल को पाच-पाच पुरुष व्यायाम कराते हैं।

७—हथियार चलाना, जगल में भ्रमण करना, व्यायाम करना, ईश्वर की उपासना करना और सैनिको में भाषण देना इनके दैनिक कार्य हैं।

८—इन मल्लों के भाषण बडे वीर रसपूर्ण होते हैं। इनको पचायती मल्ल नाम से पुकारते हैं। ये सोते कम हैं।

९—ये लोग नाच रग गाने बजाने तमाशे आदि मनोरजो से सदा दूर रहते हैं। पूर्वजो और महापुरुषो की जीवनी और ऐतिहासिक कथाओ को सुनते सुनाते हैं।

१०—जब ये ग्राम अथवा नगर में होकर चलते हैं तो नीची दृष्टि होती है। लोग दौड दौडकर इनको आदर से देखते हैं।

११—वास्तव में ये मल्ल वीर सन्यासी ही हैं।

१२—ये युद्ध कलाओ के पूर्ण विशेषज्ञ हैं। विदेशी शस्त्र अस्त्र चालन क्रिया भी जानते हैं। नवीन अस्त्रो के भी ज्ञाता हैं। इनका जीवन पवित्र ही है। दक्षिण के राजा राव रक इनको देवता समझते हैं। इनकी वीरता दूर तक छाई हुई है।

इन वीरो का जीवनवृत्त, शक्ति, सदाचार देखकर गौरव प्राप्त होता है।

उपरोक्त पत्र की भाषा यहा नही दी गई है।

यहा विदेशी आक्रान्ता की रोक तथा आन्तरिक देशसेवा की ये दो वीर घटनाओ का विवरण दिया है। पचायती इतिहास में हरयाणा के वीर मल्लो की बहुत गाथायें लिखित हैं प्रभु कृपा से हमारा देश पुन सशक्त बने।

प्रस्ताव

आर्यसमाज पलवल नगर (हरयाणा) आज यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित करता है कि पजाब प्रात में अल्पसख्यक हिन्दुओं की रोना हो रही हत्याये एव उनका पजाब से पलायन अत्यन्त दु:ख का विषय है। आर्यसमाज इसके लिए पजाब सरकार की सख्त निन्दा करता तथा केन्द्र सरकार से अनुरोध करता है कि वह पजाब में शीघ्र ही सेना भेजे, ताकि वहां स्थिति सामान्य हो सके तथा अल्पसख्यको की रक्षा हो सके।

आशा है आप इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करेंगे।

हर्षदेव आर्य मंत्री
आर्य समाज पलवल नगर, हरयाणा

सूचना

गुरुकुल में रोहतक विश्व विद्यालय की विशारद तथा शास्त्रीकक्षायें खुल रही हैं। हाई स्कूल उत्तीर्ण छात्र प्रवेश ले सकते हैं। ५) प्रवेश शुल्क, १००) सुरक्षा धन तथा १००) मासिक भोजन शुल्क होगा।

आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वेद मन्दिर मताना डिग्गी, फतेहाबाद (हिसार)

आर्यसमाज का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

दिल्ली १७ जुलाई, १९८६। आज प्रातः ६ बजे आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल २५ मिनट के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में निम्नलिखित सदस्य शिष्टमण्डल में शामिल थे—प्रो० शेरसिंह, श्री सूर्यदेव, प० राजगुरु शर्मा, श्री जगदीशप्रसाद वैदिक, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री ब्रजमोहन और चौधरी लक्ष्मीचन्द।

शिष्टमण्डल ने एक ज्ञापन प्रधानमन्त्री को दिया। ज्ञापन में निम्नलिखित मुद्दे उठाये गये—

१—पजाब से हिन्दुओ का पलायन तुरन्त रोका जाये। जो लोग देहात से उखड कर आते हैं, उनको पजाब के शहरो में ही भारत सरकार द्वारा स्थापित शिविरो मे रखने के प्रबन्ध किये जायें तथा उन विस्थापितो को वही सहूलियतें दी जायें जो १९८४ मे सिख विस्थापितो को दी गई थी।

२—अमृतसर, गुरुदासपुर, फिरोजपुर जिलो के सीमा से लगे २५ मील तक के क्षेत्र को सेना के हवाले किया जाये, ताकि पाकिस्तान से लगी सीमाओं को प्रभावी रूप से सील किया जा सके।

३—पंजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये, जिससे अल्पसख्यको में विश्वास पैदा हो सके, ताकि वे पलायन न करे तथा उग्रवादियों का सफाया किया जा सके।

४—सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने मिजोरम समझौते के सम्बन्ध में फैलाई जारही अनेक भ्रातियो को ओर प्रधानमन्त्री का ध्यान आकृष्ट किया और उनके निराकरण पर जोर दिया। प्रधानमन्त्री जी ने ध्यान से सब बातें सुनकर कहा—

क) पजाब से पलायन करके आये विस्थापितो को वे सब सहूलियतें दी जायेंगी जो १९८४ में दगा पीडित सिख विस्थापितो को दी गई थी।

ख) पाकिस्तान की सीमाओ को सील करने के लिए कितने क्षेत्र को सेना अपने हाथ में ले, इसके बारे में भारत सरकार शीघ्र तजवीज बना रही है।

ग) भारत सरकार बरनाला सरकार को सक्रिय ही नही कर रही, बल्कि सब प्रकार की सहायता दे रही है, ताकि हिन्दुओं का पलायन रोका जा सके और उग्रवादियो का सफाया किया जा सके।

घ) मिजोरम के बारे में सब फैलाई जारही भ्रातिया निराधार हैं। वहां कोई विशेष खर्चा या विशेष प्रावधान किये जाने की बात नहीं है और सब कुछ सविधान के अन्तर्गत ही किया जारहा है।

ङ) हरयाणा को रावी व्यास के पानी का उचित हिस्सा मिले, इसके लिए भारत सरकार सब आवश्यक कदम उठा रही है।

प्रधानमन्त्री को दिया गया ज्ञापन

माननीय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित देश के सभी क्षेत्रो के आर्यसमाजो नेताओं का एक सद्भावना मण्डल कुछ समय पूर्व पजाब के दौरे पर गया था, जिसका उद्देश्य—

१—पजाब की स्थिति का अध्ययन करना और

२—उन सम्भावनाओं का पता लगाना था, जिनके द्वारा उस प्रात में रहने वाले सभी वर्गों में एक बार फिर भाईचारे की भावना पैदा कर वहा पुनः सामान्य परिस्थितिया पैदा की जा सकें।

अपने दौरे से लौटने पर इस सद्भावना मण्डल ने सार्वदेशिक सभा को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिस पर सभा ने गम्भीरतापूर्वक विस्तार से विचार किया। परिणामस्वरूप पजाब समस्या के बारे मे सभा जिस निर्णय पर पहुची है, उसे इस ज्ञापन के द्वारा आपके समक्ष प्रस्तुत किया जारहा है।

बरनाला सरकार

जब बरनाला मन्त्रिमण्डल का गठन हुआ था, तब पजाब के हिन्दुओं ने भी अकाली पार्टी को चुनाव के समय अपना समर्थन दिया था और आशा की थी कि पजाब के सभी निवासियो के साथ चाहे वे किसी जाति या धर्म के मानने वाले हो, समान व्यवहार किया जायेगा, किन्तु दुःख की बात है कि यह आशा पूरी नही हुई।

श्री बरनाला ने कार्य करने का अपना अलग ही ढग निकाला है, जिस पर ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। तभी उनकी कार्य प्रणाली के पीछे छिपे उनके असली उद्देश्य को समझा जा सकता है।

इस समय पजाब मे जो सरकारी तन्त्र कार्य कर रहा है, उसमें सिखो की सख्या बहुत अधिक है। जो उग्रवादी पहले गिरफ्तार किये गये थे, उन्हे बरनाला मन्त्रिमण्डल ने न केवल जेल से मुक्त कर दिया, अपितु उन्हें पुलिस तथा अन्य प्रमुख सरकारी महकमो मे नियुक्त भी किया।

बरनाला सरकार प्रकारातर से 'पथ की सरकार' बन गई है, जो सिख ग्रथियों के आदेशानुसार केवल सिखो के हितो के लिए ही काम कर रही है। इससे एक ऐसी परिस्थिति पैदा करदी गई है जिसमें पजाब का हिन्दू यह सोचने पर विवश है कि अब वहा उसका कोई स्थान नही है और उसे अपने जीवन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना घर द्वार छोड़कर किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर चले जाना चाहिए। हिन्दुओ का पजाब से पलायन शुरु हो चुका है, लेकिन अब तक बरनाला सरकार ने उसे रोकने के लिए कोई प्रभावी कदम नही उठाया और न ही उन्हे पजाब में सम्मानपूर्वक अपना जीवनयापन करने का आश्वासन दिया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दृष्टि मे बरनाला सरकार ने न केवल भारतीय सविधान की मूलभावना की उपेक्षा की है, बल्कि वह हिन्दुओ के सामूहिक नरसहार को रोकने मे भी सर्वथा असफल रही है। हमारे पास यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त कारण हैं कि पजाब सरकार जानबूझ कर इस प्रकार के कार्य कर रही है, जिससे धीरे-धीरे वहा खालिस्तान का स्वत निर्माण हो जाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आपसे माग करती है कि बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके पजाब को खालिस्तान बनने से रोका जाये और वहा हिन्दुओ का नरसहार बन्द किया जाये।

वास्तव में यह बडे दुःख की बात है कि देश मे अन्यत्र रहने वाली अन्य अल्पसख्यक जातियो को तो विशेष रूप से सरक्षण दिया जाता है, लेकिन पजाब के हिन्दुओ के साथ जो वहा पर अल्पसख्यक हैं, जानवरो से भी बुरा व्यवहार किया जाता है। जहा पर वे कम सख्या में है, वहा तो वे कष्ट भोग हो रहे हैं, लेकिन जिन स्थानो मे उनकी सख्या अधिक है वहा पर भी उनकी दशा अच्छी नही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अब तक यह नही समझ सकी है कि ऐसे सिखो को जिनका अपराधी रिकार्ड है, कानून तोडने पर भी गिरफ्तार क्यो नही किया जाता है? जबकि हिन्दुओ को केवल अपनी सुरक्षा के लिए शिव सेना जैसे सगठन बनाने पर गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाता है। इस प्रकार की असयत परिस्थितियो का तुरन्त अन्त होना चाहिए।

पंजाब समस्या की गम्भीरता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह दृढ विश्वास है कि खालिस्तान एक सगठित शक्ति बन चुका है और कुछ विदेशी ताकते हमारे देश को विघटित करने के लिए उसका उपयोग कर रही है। हमारे जैसी सामाजिक और धार्मिक सस्था की अपेक्षा सरकार के पास तो इस बात के प्रबल प्रमाण होने चाहिए कि खालिस्तान की माग के पीछे किन-किन विदेशी शक्तियो का षड्यन्त्र काम कर रहा है। यह मानना सत्य नही है कि कुछ आतकवादियो को समाप्त कर देने मात्र से खालिस्तान का

आदोलन असफल हो जायेगा। इसकी जडें विदेशों में हैं और तथाकथित अकाली एव अन्य शक्तिया इस आदोलन को समाप्त होते देखना नहीं चाहती।

पजाब की समस्या पाकिस्तानियों की सहायता से केवल खालिस्तान बनाने की समस्या तक ही सीमित नहीं है, किन्तु वहा की जनता और भारत सरकार के सामने एक बहुत गहरा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र उपस्थित है, जिसका एकमात्र उद्देश्य हमारे देश को खण्डित करना और उनमें पृथकता की भावना उभारना व इस प्रकार अलग स्थान की मांग करना है। जनता में इस प्रकार एक भावना पैदा करना है कि वे एक पृथक् जाति (कौम) है और उन्हें एक अलग राज्य की माग करने का अधिकार है। परिस्थिति वास्तव मे बहुत गम्भीर है। इसलिए सभा केन्द्र से अनुरोध करती है कि इस पर वह सही दृष्टिकोण से विचार करे और तुरन्त समुचित कार्यवाही करे। इस विषय में सभा निम्न मागें केन्द्र सरकार के सामने प्रस्तुत करती है—

१—बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके सविधान की रक्षा की जाये और पजाब मे हिन्दुओ का नरसहार समाप्त किया जाये। बादल ने तो पुस्तक रूप मे भारतीय सविधान को जलाया था, लेकिन बरनाला उसकी मूलभावना को ही समाप्त कर रहे हैं।

२—पजाब में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दृष्टि में न तो बरनाला और न बादल और न कोई अन्य पार्टी पजाब विधान सभा में बहुमत प्राप्त करने में समर्थ है। वर्तमान परिस्थिति में फिर से चुनाव करना भी खतरे से खाली नही है। सभा का मत है कि राष्ट्रपति शासन कम से कम ५ वर्ष के लिए लागू किया जाये। उसके लिए सविधान में आवश्यक सशोधन किया जा सकता है।

३—पजाब के तीनो सीमावर्ती जिले अमृतसर, गुरुदासपुर और फिरोजपुर तुरन्त सेना को सौंप दिये जायें। यह न केवल हमारे पडौसी देश की अमैत्रीपूर्ण गतिविधियो को देखते हुए आवश्यक है, बल्कि इसलिए भी आवश्यक है कि भारत विरोधी अन्य विदेशी शक्तिया भी हमारे देश के खिलाफ इसी क्षेत्र के द्वारा कार्य कर रही है।

४—पजाब और काश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रो मे भूतपूर्व (सेवा निवृत्त) सैनिक परिवारो को बसाया जाना चाहिए, जिससे वहा के हिन्दुओ तथा देश की सीमाओ की सुरक्षा की जा सके।

५—पजाब के उन शहरी क्षेत्रो मे जहा हिन्दू अधिक सख्या मे हो, शिविर लगाकर अन्य उपद्रवग्रस्त क्षेत्रो मे आने वाले हिन्दुओ को रखा जाये, जिससे पजाब के हिन्दू पजाब मे हो रहें और उन्हें अन्य प्रान्तो मे न भागना पडे। वहा उनकी सुरक्षा के कडे प्रबन्ध किये जावे।

यह सारा कार्य केन्द्रीय सरकार अपने हाथ मे लेवे और जो हिन्दू पजाब छोडकर अन्य प्रान्तो मे चले गये हैं, उन्हे वही सुविधाये प्रदान की जाये जो बरनाला सरकार पजाब मे आनेवाले सिखो को प्रदान कर रही है तथा भारत के अन्य प्रातो की सरकारें भी १९८४ के दगो के तथाकथित सिख पीडितो को दे रही है।

६—चण्डीगढ को केन्द्रशासित प्रदेश ही रहने दिया जाये। सभा की दृष्टि मे निम्नलिखित कारणो से आवश्यक है—

क) चण्डीगढ का निर्माण सयुक्त पजाब प्रदेश की राजधानी के रूप में हुआ था। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह न तो पजाब और न हरयाणा की राजधानी के रूप में उपयुक्त रहेगा।

ख) चण्डीगढ के अधिकाश निवासी गैर सिख नागरिक हैं, जो पजाब में नही जाना चाहते हैं। उनके दृष्टिकोण को भी नजर अन्दाज नही करना चाहिए।

७—भारत सरकार को दमदमी टकसाल और आल इण्डिया सिख स्टूडेंट फैडरेशन के नेताओ से किसी भी रूप में वार्तालाप आरम्भ करने के विचार का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए। इस प्रस्ताव को उन लोगों ने हवा मे उछाला है जो देशद्रोहियो के साथ छिपे रूप में मिले हुए हैं और जो राष्ट्रीयध्वज का अपमान करते हैं। जिन्होने भारतीय सविधान की प्रतियों को जलाया है और जो खुलेआम पर विद्रोह का झण्डा उठाये खडे हैं। दमदमी टकसाल के नेताओं ने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की है कि वे पृथक् प्रधान, पृथक् सविधान और पृथक् ध्वज चाहते हैं। उन्हें जब तक यह प्राप्त नहीं होगा, वे चैन से नहीं बैठेंगे।

८—शहाबुद्दीन जैसे लोगों पर कडी नजर रखना जरूरी है, जो अपने वक्तव्यो द्वारा यह धमकी दे रहे हैं कि उनके अपने सम्प्रदाय के लोग, जिनकी संख्या इस देश में १० करोड है और जो आबादी का साढे बारह प्रतिशत है। एक प्रतिशत सिख अल्पसख्यक समुदाय की तुलना में देश के समक्ष अधिक भयकर स्थिति उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। ऐसे वक्तव्य देश को और अधिक सकट की स्थिति में डाल सकते हैं।

इस सभा ने सरकार के ऐसे सभी प्रयासों मे अपना सहयोग किया है, जिनसे देश की अखण्डता सुरक्षित रहती हो और अभी भी अपना सहयोग देते रहने को यह सभा तत्पर है, परन्तु जब देश की सुरक्षा को खतरा हो और हिन्दुओ की जो इस देश में बहुमत में हैं उनकी प्रतिदिन हत्या की जारही हो, यह सभा मूकदर्शक नही रह सकती। अत एव हमारा आपसे निवेदन है कि आप तुरन्त ही प्रभावी कार्यवाही करें।

गत १२-१३ जुलाई को देश के प्रमुख आर्य नेताओ एव कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। जिसमें पजाब की स्थिति पर विस्तार से विचार किया गया। इस सम्मेलन ने एक आठ सदस्यीय समिति का गठन किया है। जिसका उद्देश्य स्थिति की समीक्षा करके भावी कार्यक्रम का निर्माण करना है। इस सम्मेलन ने यह भी निर्णय किया है कि सम्पूर्ण भारत में आगामी १५ अगस्त, १९८६ को पजाब बचाओ, देश बचाओ दिवस मनाया जाये।

हमें आशा है कि सरकार हिन्दू समाज मे फैल रहे जनआक्रोश को शात करने के लिए प्रभावी कदम उठावेगी।

सेवा में,
माननीय श्री राजीव गाधी
प्रधानमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

भवदीय
हस्ताक्षर–आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
पूर्व नाम रामगोपाल शालवाले

हिन्दी भाषी इलाके मिलने पर चण्डीगढ़ पंजाब को : प्रधानमन्त्री

दिल्ली कार्यालय, भाषा व वार्ता द्वारा

नई दिल्ली, १८ जुलाई। प्रधानमन्त्री राजीव गाधी ने आज घोषणा की कि पजाब के निर्धारित हिन्दी भाषी इलाके हरयाणा को देने पर ही पजाब को चण्डीगढ का हस्तातरण सम्भव है। उन्होने कहा कि इस मामले में दोनो पक्षो को स्वीकार समाधान ही लागू हो सकता है।

सुबह यहा काग्रेस ससदीय दल की बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री गाधी ने कहा कि पजाब में आतकवादियो से साठगाठ रखने वाले या उनकी तारीफ करने वाले तत्वो के साथ कोई बातचीत नही की जायेगी। उनका इशारा असतुष्ट अकाली नेताओं सर्वश्री प्रकाशसिह बादल, गुरचरणसिह टोहरा और अमरेन्द्रसिह की ओर था।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि ऐसे लोग देश के हिमायती नही हो सकते जो मारे गये आतकवादियों के भोग समारोहों मे शामिल होते हैं। उन्होंने कहा कि बातचीत केवल उन्हीं लोगों से हो सकती है जो देश के सविधान के दायरे में काम करते हैं और देश की अखण्डता का समर्थन करते हैं।

उन्होंने कहा कि पजाब सरकार ने चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को दिये जाने वाले इलाके के निर्धारण के लिए न्यायमूर्ति देसाई के पैनल के गठन को नामजूर कर दिया है। इसलिये हस्तातरण में कुछ विलम्ब होगा। लेकिन जल्दी ही इस समस्या के हल होने की आशा है।

(दैनिक ट्रिब्यून १९-७-८६)

विवाह संस्कारों के अवसर पर विशेष—

वैदिक विवाह संस्कार का महत्त्व

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य जीवन की पूर्ण सफलता के लिए सोलह सस्कारो का विधान किया है, सस्कारों के सम्बन्ध में "सस्कार-विधि" में पूर्णरूप से लिखा गया है।

महाभारत के युद्ध के बाद इन पाच हजार वर्षों में महर्षि ने ही जन्म लेकर खोई हुई सस्कार प्रणाली का पुर्नविधान किया है। सभी सस्कार लुप्त हो चुके थे। वेदो से, स्मृतियो से, गृह्यसूत्रो से प्रत्येक सस्कार के विधि विधान को निकाल कर १६ सस्कारो का प्रचलन किया है।

इन सस्कारो में विवाह सस्कार का भी अपना विशेष महत्त्व है। विवाह की परिभाषा लिखते हुए महर्षि लिखते हैं—

'विवाह" उसको कहते हैं कि जो पूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत, विद्या, बल को प्राप्त तथा सब प्रकार से शुभ गुण, कर्म, स्वभावो में तुल्य परस्पर प्रीति-युक्त हो के सन्तानोत्पत्ति और अपने वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करने के लिए स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध होता है।

योग्यता वर और कन्या की

विवाह के समय वर और कन्या की कितनी योग्यता होनी चाहिए, इस विषय में ससार के, सविधान के आदि निर्माता राजर्षि मनु जी ने लिखा है—

वेदानधीत्य वेदौ वा वेद वापि यथाक्रमम्।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्॥

अर्थात् ब्रह्मचर्य से चारो वेद, तीन अथवा दो या एक वेद को यथा-वत् पढकर अखण्डित ब्रह्मचर्य का पालन करके गृहाश्रम को धारण करे।

जिस व्यक्ति ने अपने शरीर, मन तथा आत्मा की ब्रह्मचर्याश्रम में रहकर उन्नति करली है, वही गृहस्थ में जा सकता था। कन्या के विषय में भी अथर्व० ११।५।१८ मे कहा है कि—

ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम्—अर्थात् ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या पढकर कन्या युवा पति को प्राप्त करती है। विवाह की आयु कन्या को १६ वर्ष, लडके की २५ वर्ष होनी चाहिए। ऐसा आयुर्वेद तथा वेद और महर्षि दयानन्द की मान्यता है। विवाह की योग्यता के विषय मे अथर्व-वेद में कहा गया है—

"अनास्था पूता पवनेन शुद्धा शुचय शुचिमपियन्ति लोकम्—अर्थात् जिनकी हड्डिया न दिखती हो, जो चरित्र से पवित्र हो, प्राणायाम आदि की क्रिया मे अपने को पवित्र कर चुके हो। उसके पश्चात् ही वे पवित्र गृहस्थ लोक में प्रवेश के अधिकारी हो सकते हैं। प्रवेश के विषय में ऋग्वेद १०।८५।४० में भी ऐसा ही कहा गया है। यही पवित्र प्राचीन वैदिक आदर्श था कि जो गृहस्थ होना चाहे वह पहले अपने ब्रह्मचारी होने का प्रमाण-पत्र पेश करे और जो ऐसा प्रमाण-पत्र प्रस्तुत न कर सके उसके साथ कोई पिता अपनी पुत्री का विवाह न करे, आजकल यह शर्त असम्भव दिखाई देती है किन्तु प्राचीनकाल में यह शर्त अत्यन्त सरल थी। वेद के आदेशानुसार ही सारे समाज की व्यवस्था की जाती थी। राजा इसका पालन कराता था।

आज अखबारो मे शादी के इश्तिहार निकलते हैं—"लडका चाहिए जो २५ हजार कमाता हो, विलायत से लौटा हो" यदि आज वैदिक काल होता, इन्हीं अखबारों में लिखा यह होता—"एक ब्रह्मचारी चाहिए" और अगर उस समय भी विदेश ऐसा ही होता, जैसा कि आज है, तो विज्ञापन मे साफ लिखा ये होता—विदेश से लौटा हुआ नहीं होना चाहिए।"

आज तो जो लडका बिगडने लग जाता है, माता पिता उसका विवाह जल्दी कर देते हैं, परन्तु वेद के अनुसार तो जो बिगडी हुई सन्तान होती थी, उसके विवाह की कोई आशा ही नही रहती थी। विवाह का अधिकार नहीं होता था। बिगडे हुए को समाज के बिगाडने का कोई अधिकार नहीं था।

यदि आज भी ऐसे लोगों पर विवाह का प्रतिबन्ध लग जाये तो परिवार नियोजन भी स्वय ही हो जाये और बिगडी सन्तान भी पदा न हो सके। वैदिक आदर्श के अनुसार टूटी-फूटी सन्तान उत्पन्न करने की सख्त मनाही है। वेदो मे स्त्री को "वीरसू" कहा गया है। वीर सन्तान उत्पन्न करनेवाली हो। पुरुषो को भी कहा गया है—ऐसी सन्तान पैदा करो जो "स्वाना वीरतम जायताम्" आने वाली सन्तान इतनी वीर हो कि जितनी पिछली पीढी मे से एक भी न हुई हो। इस प्रकार वेद के एक मन्त्र में और भी लिखा है कि - अनून पूर्णो जायताम् अश्लोणोऽपिशाच-धीत –अर्थात् सन्तान न्यूनता रहित हो, पूर्ण हो और वह पिशाच अर्थात् बुरे विचारो की न हो। वेद के अनुसार विवाह का आदर्श ऐसी श्रेणी को जन्म देना है, जो समाज को अपने गुणो मे पवित्र बना सके। आज तो बिना योग्यता की सन्तान समाज को अपग, पिशाच, कायर, कमजोर करने में पूरा सहयोग दे रही है। इसी ध्येय की पूर्ति के लिए ही महर्षि दयानन्द ने विवाह सस्कार का महत्त्व सस्कारविधि में लिखा है।

वर कन्या की परीक्षा

इस प्रकार वर कन्या की योग्यता देखकर परीक्षापूर्वक विवाह होना योग्य है।

वर कन्या की योग्यता के विषय में परीक्षा को कसौटी देते हुए महर्षि गौतम ने कहा है—

"कुल च शील च सनाथता च, विद्या च वित्त च वपुर्वयश्च एतानि सप्त विचिन्त्य देया कन्या बुधै. शेषमचिन्तनीयम्" अर्थात् ये सात गुण यदि वर मे हो तो विद्वानो को कन्या का विवाह कर देना चाहिए। सब से प्रथम—कुल अर्थात् उत्तम खानदान हो। दूसरा उत्तम चरित्र—शील स्वभाव हो। तीसरा –सनाथता अर्थात् सम्पन्न हो पूर्ण हो। चौथा—विद्वान् हो। पाचवा—धनवान्, जमीन, जायदाद आदि हो। छठा—स्व-स्थ सुन्दर शरीर हो। सातवा—विवाह के योग्य आयु हो।

इस प्रकार की कसौटी पर कसकर परीक्षा करके विवाह होना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वाग्दान (सगाई) मे पूर्व लडका लडकी की आमने-सामने करके प्रश्नोत्तर पूर्वक परीक्षा करने की बात लिखी है। इसके साथ ही मनु ने भी १० कुलो मे विवाह करना निषेध लिखा है। वह सारा प्रकरण सस्कारविधि मे पढा जा सकता है।

किन्तु आज तो कोई योग्यता अथवा परीक्षा नही की जाती है। लडके वाले लडकी को देखने जाते हैं, जहा उन देखने वालो में लडका नही होता। विवाह तो लडके लडकी का है किन्तु—विवाह से पूव उनका साक्षात्कार भी नहीं हो पाता। कम मे कम पत्र-फोटो द्वारा ही साक्षा-त्कार कराया जा सकता है किन्तु ऐसा भी नही हो पाता। ऐसा न होने से विवाह के पश्चात् कई कन्याये छोड दी जाती हैं। उनके रूप रग की समानता, विद्या की समान योग्यता आदि का तो आरम्भ में ध्यान करके अवश्यमेव उनका "मिलान" कर लेना चाहिए। कुछ लोग दान दहेज ज्यादा देकर लडकी की योग्यता को छिपा देते हैं। समान वर समान कन्या के फार्मूले को ध्यान में रखना ही चाहिए।

इस प्रकार योग्यता एव परीक्षा करने के बाद ही विवाह सस्कार होना चाहिए। इसी से विवाह सस्कार का महत्त्व बढ जाता है।

स्वयंवर की प्रथा

विवाह कैसे हो? योग्यता, परीक्षा लडके लडकी की इच्छा को जान-कर, मानकर विवाह हो, यह ऐसा मामूली काम नही है जो अनपढ़ नाई के भरोसे पर छोडा जा सकता है? वेद में इस बारे मे निश्चित आदेश पाया जाता है। ऋग्वेद ७।३।१७।१२ में स्पष्ट लिखा है—

(क्रमश.)

धर्म और मत

जितेन्द्रदेव मलिक

आधुनिक युग में धम और मत मे अन्तर न समझ कर ही अव्यव स्था पैदा हो गई है। धम और मत के अथ का ज्ञान हमें नहीं रहा। इसी कारण विश्व में अनेक मतमतान्तर खड़ हो गये। विशेष आकषण भी इन मतो मे आपसी विरोध का ही है। कोई अपने को हिन्दू, कोई मुसलमान, कोई ईसाई धर्मावलम्बी बताता है। लेकिन महत्त्व से बहुत दूर कि धम क्या और मत क्या ?

वस्तुत धम केवल एक ही हो सकता है। उसका कोई अलग खण्ड नही हो सकता। धम की परिभाषा को बदला नही जा सकता। तो फिर ये भिन्न धम क्यो ? ये धम नही मतमतान्तर है जो विश्व को बन्धुत्व से पीछे हटाते हैं न कि विश्व मे शान्ति व प्यार का बढावा देते हैं। एक हिन्दू किसी दूसरे मतवाले से घृणा करता है इसी प्रकार अन्य मत वाला एक हिन्दू का मान्य नही करता। फिर ये धम से बहुत दूर होगे। ठीक है ये मत तो मानव द्वारा कुछ विशेष कमकाड ही होते हैं जो ठीक नही हो सकते। उनमे प्रमाण न होने के कारण ग्रहण करने योग्य गुण नही हो सकते लेकिन धम की परिभाषा एक ही होती है जो इस प्रकार है— जो वदिक हो अटल हो व विज्ञानयुक्त हो। जसे परमेश्वर की आज्ञा पालन धम तथा आज्ञा का पालन न करना अधम। विधि यह धम। निषेध यह अधम न्याय यह धम अन्याय यह अधम। इसी प्रकार जो सत्य है वही सत्य धम है अर्थात सत्य ही धम है। वेद का अथ भी सत्य है। सो एक ही सत्य धम वेदधम हो सकता है जो सनातन गुण रखता है। जब धम की इस परिभाषा को विश्व समझ लेगा तो न कोई हिन्दू न कोई कथोलिक, न कोई ईसाई न कोई मुसलमान रहेगा। विश्व मे कितना सुन्दर व पवित्र प्यार होगा उनमे ये मतमतान्तर नाम की कोई रुकावट बीच मे पद का काय नही करेगी। सारा विश्व व्यवस्थित हो जायेगा। अव्यवस्था का नामोनिशान नही रहेगा।

अब विभिन्न मतो मे अधमपूण विषयो पर एक दृष्टि डालते हैं। एक मत हिंसा मे विश्वास करता है तो दूसरा उसमे विश्वास नही करता इसका वज्ञानिक तथ्य ही इसका निणय करेगा। सो हिंसावृत्ति से यह विश्व शान्तिप्रिय नही रह सकता। इसमे अव्यवस्था की स्थिति हो जायेगी। सभी जीव एक समान है। जहा पर उनमे विश्वबन्धुता पदा हो अगर वहा आपस में हिंसा करे तो यह असत्य ही है। सो मुसलमान आदि मत वाले अन्य मत वालो को काफिर की सज्ञा देते हैं। इससे सभी को ही समझना चाहिए कि हमे इस्लाम मत को ग्रहण करना चाहिए या नही। अत अब कमकाडो पर आइये। कोई मत एक पुस्तक विशेष को सिर ही झुकाता है। वह उसकी अच्छी या बुरी शिक्षाओ को पढना भी अपना धम नही समझता है। कोई किसी योग की पुस्तक को आगे रख सिर झुकाता ही रहे। ताकि उसकी विघ्नादि पर अगर न चले तो वह योगी कसे हो सकता है। सो यह भी सवविदित है कि जड से ज्ञान नही हो सकता। इसी प्रकार अन्य अनेक मतवालो ने अपने को विशेष कमकाड द्वारा स्वय को अन्धेरे मे रखा है।

अत धम व मत के अथ को समझकर ही पाखण्ड का खण्डन व आर्ष का मण्डन किया जा सकता है। सा वेदोक्त धम तो बहुत हैं लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसका विशेष वणन किया है।

अहिंसा—केवल पशुवादि न मारना ही इसका अथ नही है बल्कि वर त्याग ही अहिंसा है। इसमे व्यास महर्षि ने भी कहा है कि— सवथा सवदा सवभूतानामनभिद्रोह अहिंसा ज्ञया। धम के अन्य दस लक्षण इस प्रकार हैं—

धृत्ति क्षमा दम स्तेय शौर्चामि द्रयनिग्रह ।
धोर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धमलक्षणम् ॥

धृति—अर्थात धय। राज्य जाये तो भी धम का त्याग न करना। लेकिन आधुनिक युग में एक राज्याध्यक्ष अपने राज्य के लिए कितना अधम करता है। रामराज्य की अनोखी व्यवस्था की कल्पना हम आज नहीं कर सकते। सो राजा तो धम का मूल ही होता है। सो आज यहीं से रोग चल पडा है।

क्षमा—सहनशीलता। बडे ने कोई अपकृत्य किसी बड व्यक्ति के लिए किया तो उसको छोटे ने सहन कर लिया, यह क्षम नही। बल्कि क्षमा तो इससे उल्टा ही होगा। जिस प्रकार देव दयानन्द ने जहर देने वाले को भी धन देकर भगा दिया। इससे बडा क्षमादान विश्व में आज तक शायद ही किसी महापुरुष ने किया हो।

दम—मन को वृत्तियो का निग्रह करना। जो मन की वृत्तिया मानव को कई बड-बड दोष देती हैं, जिससे कई कुकम करने पड जाते हैं सो दमनाम मनसोवत्तिनिग्रह की उक्ति काय मे लानी चाहिए।

अस्तेय—अन्याय से धनादि ग्रहण करना। इस प्रकार के कृत्य से मानव मे अव्यवस्था फलती है तथा कही कहीं पर इसी कम के अन्तर्गत चोरी इत्यादि की घटना करनी पडती हैं। सो कर चोरी व कालाबाजारी से अन्याय ही फलता है।

इन्द्रिय निग्रह—समस्त इन्द्रियों को धम मे बाधना। आधुनिक युग मे विज्ञानवेत्ता भी इस दोष मे लिप्त होते पर इस दोष को नही मानते। सो इसके कारण ही लाखो अपराध बीमारिया व अन्य कुकम फलते हैं। कामेन्द्रिय को वश न करके ही आज जनसख्या को बढाया व हरेक मानव बीमारी के शिकजे में जकडा हुआ है।

धी सब प्रकार बुद्धि को बलवान् बनाना चाहिए। शरीर बल से बुद्धिबल अत्यावश्यक है।

विद्या—यथाथ दशन ही विद्या है। आधुनिक युग में यह दोष विशेष है। सो प्रत्येक मानव के लिए विद्या प्राप्ति के लिए सुविधा अनिवाय हो। बालविवाहादि का खण्डन भी इसी मत को लेकर किया जाता है।

अक्रोध—क्रोध को वश मे करना। क्रोध से ही आज ससार मे पर माणु बम्ब व हवाई प्रक्षेपास्त्र से प्रतिपल का खतरा खडा कर लिया है।

अगर मानवमात्र इन मतमतान्तरो से निकल कर अपने सनातनधम का पालन करे तो विश्व मे शान्ति स्थापित की जा सकती है। पाखण्डों के लोप होने पर विश्व उद्यम कर सकता है। आशा है आयजन प्रस्तुत लेख मे मतमतान्तरों के पचड से ऊपर उठकर धम की शरण मे आयेंगे।

शुभ विवाह संस्कार

श्री केदारसिंह आय सभा कार्यालयाध्यक्ष के भतीजे श्री सुखबीर सिंह सुपुत्र स्वर्गीय श्री धर्मसिंह जी ग्राम जुआ, जि० सोनीपत का शुभ विवाह सस्कार ग्राम मुरथल जि० सोनीपत निवासी श्री जागेराम की सुपुत्री सुनीता के साथ १६ जुलाई ८६ को सभा उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री ने वदिक रीति के अनुसार सम्पन्न करवाया। बारात में केवल २५ बाराती थे। दोनो पक्षो की ओर से सादगी का प्रदशन किया गया।

जिला फरीदाबाद आर्य महासम्मेलन

आय महासम्मेलन २६ २७ २८ सितम्बर, १९८६ को आर्यजगत के उच्चकोटि के सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आयसमाज पलवलनगर के तत्वावधान में समारोह पूवक मनाया जा रहा है। जिसके स्वागताध्यक्ष चौ० राजेन्द्रसिंह बीसला एडवोकेट भूतपूव विधायक होगे।

कृष्णकुमार मुटानी स्वागत मन्त्री

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज चरखी दादरी

सरक्षक—सर्वश्री सत्यनारायण शर्मा, प्रधान—डा० रामनारायण बावला, उपप्रधान—हरिश्चन्द्र गोड, मन्त्री—श्यामसुन्दर एम० ए०, उपमन्त्री—हरिश्चन्द्र लाम्बा एम० ए०, बलवीरसिह एम० ए०, कोषाध्यक्ष—रिमूराम आर्य, सहकोषाध्यक्ष—गोविन्दराम, पुस्तकाध्यक्ष—सत्यपाल आर्य अध्यापक, सहपुस्तकाध्यक्ष—कुलदीप आर्य, लेखानिरीक्षक—मेहरचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री—चन्द्रदेव शास्त्री, मुख्य निरीक्षक—डा० बिहारीलाल अनेजा, अन्तरग सदस्य—म० हरजसराय, सजय मिश्र, यज्ञकर्त्ता—नेवराज आर्य।

आर्यसमाज बूबका (कुरुक्षेत्र)

प्रधान—चौ० समर्यसिह, उपप्रधान—सोमनाथ, मन्त्री—ताराचन्द, उपमन्त्री—भगतराम, खजाची—धर्मपाल, पुस्तकाध्यक्ष—हुकमचन्द, बनारसीलाल, आर्य वीरदल—शेरसिह, अन्तरगसदस्य—सत्यपाल आर्य, अमरसिह, जगमालसिह, रणसिह, देवराज, रामकुमार एम० ए०, सेवाराम आर्य, ईश्वरसिह, सोमनाथ सरपच, जगदीशचन्द्र, रलियाराम, रमेशकुमार, कालूराम, बाबूराम, मामराज।

आर्यसमाज हरिसिंह कालोनी, रोहतक

प्रधान—सर्वश्री रामचन्द्र आर्य, उपप्रधान—दरियावसिह आर्य, मन्त्री—ब्र० ओम्दर्शन आर्य, उपमन्त्री—महावीर शास्त्री, कोषाध्यक्ष—ह्वासिह रगा, सरक्षक—प० सुदर्शनदेव आचार्य।

आर्यसमाज खारवण (अम्बाला)

प्रधान—सर्वश्री इन्द्रदत्त शर्मा, उपप्रधान—डा० सत्यप्रकाश गोयल सरपच, मन्त्री—राजेश्वरप्रसाद M A Bed, उपमन्त्री—श्यामराज आर्य, प्रचारमन्त्री—ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष—स्वर्णलाल, पुस्तकाध्यक्ष—सुन्दरलाल, लेखाकार—कृष्णलाल, सरक्षक-दौलतराम, अन्तरगसदस्य—स्वामी सुमेरचन्द यात्री, मदनलाल।

आर्यसमाज बहादुरगढ़ मण्डी

प्रधान—सर्वश्री ला० रामकिशनदास लोहिया, उपप्रधान—ला० रोशनलाल गुप्त, मन्त्री—ला० शम्भुदयाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष-मनोहरलाल गाबा, पुस्तकाध्यक्ष—ला० रामकुमार गुप्त।

आर्यसमाज कनीना, जि० महेन्द्रगढ़

प्रधान—सर्वश्री म० सेढूराम, उपप्रधान—मामचन्द मेम्बर, मन्त्री—प० माधवसिह आर्य, उपमन्त्री—श्यामसुन्दर बसल, कोषाध्यक्ष—कृष्णप्रकाश, पुस्तकाध्यक्ष—रमेश।

वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बेगा, जि० सोनीपत का वार्षिक उत्सव २० जून से २२ जून तक सम्पन्न हुआ। उत्सव में अनेक विद्वानो के भाषण हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशकों एव भजनोपदेशको ने पधार कर जनता को अपने उपदेशो से कृतार्थ किया। सभा को दान रूप ५०० रु० प्राप्त हुए।

सूचना

मा० श्री रामनारायण जी एम० ए० फरमाणा निवासी (सोनीपत) स्वाध्यायशील एव वृष्टियज्ञ के विशेषज्ञ विद्वान् हैं। उन्होने अभी-अभी राजस्थान तथा गुजरात में वर्षायज्ञ के सफल प्रयोग किये हैं। इन्होने महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार वर्षायज्ञ की सामग्री तैयार करके इस विषय में विशेष जानकारी प्राप्त की है।

आर्यसमाज पलवलनगर

प्रधान—सर्वश्री प० नत्थीराम आर्य, उपप्रधान—रामनरेश मग्गू, लालचन्द, मन्त्री—जगवीरसिह गिरधर, उपमन्त्री—किशनचन्द व हर्षदेव आर्य, कोषाध्यक्ष—लखीराम आर्य, भण्डारी—लाजपतराय मुटानी, निरीक्षक—मदनलाल वर्मा।

दयानन्द उच्च विद्यालय

प्रधान—सर्वश्री बा० रामेशरदत्त मगला, प्रबन्धक—कृष्णकुमार मुटानी, कोषाध्यक्ष—प० चम्पालाल कौशिक।

दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय एवं योग-आश्रम

प्रधान-सर्वश्री सत्यपाल आर्य, मन्त्री-हरिश्चन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष-श्रीचन्द मगला।

आर्यसमाज इस्लामनगर (रामनगर) जि० करनाल

प्रधान—सर्वश्री बनवारीलाल आर्य, उपप्रधान-रामेश्वरदास आर्य, मन्त्री—कृष्णलाल आर्य, उपमन्त्री—नजेोन्द्रसिह आर्य, कोषाध्यक्ष—सूरतसिह आर्य।

प्रांतीय आर्य युवकदल महासम्मेलन

प्रातीय आर्य युवक दल हरयाणा का प्रथम प्रातीय महासम्मेलन ४ व ५ अक्तूबर, ८८ शनि तथा रविवार को भारत के ऐतिहासिक व औद्योगिक नगर पानीपत मे आर्य कालेज (बस स्टैंड के सामने) के विशाल मैदान मे बडी धूमधाम के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है।

४ अक्तूबर शनिवार को ५००० आर्य युवक एक विशाल शोभायात्रा मे अपने सगठन का परिचय देंगे।

शोक प्रस्ताव

आर्य हाई स्कूल थानेसर की प्रबन्धक कमेटी, इस क्षेत्र के महान् आर्य नेता, आर्यसमाज थानेसर के उपप्रधान, अनगणित आर्य सस्थाओ के सस्थापक सदस्य व आर्य हाई स्कूल थानेसर की प्रबन्धक कमेटी के वरिष्ठ सदस्य श्री रुलियाराम जी के असमय, अचानक निधन पर अत्यन्त दु:ख व शोक प्रकट करती है। यह दु ख हम सब के लिए असहनीय है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनको सद्गति देवे और उनको आत्मा को शाति प्रदान करें और उनके परिवार को उनकी जुदाई का यह महान् कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

दो मिनट के लिए मौन खडे होकर दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि भेंट की गई और उनकी आत्मा की शाति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—डा० रामप्रसाद मल्होत्रा प्रबन्धक
आर्य हाई स्कूल थानेसर (कुरुक्षेत्र)

शोक समाचार

यह समाचार बडे खेद के साथ पढा जायेगा कि गुरुकुल नरेला की प्रथम स्नातिका सावित्री शास्त्री के पूज्य पिता स्वामी सुधारानन्द सरस्वती का ८५ वर्ष की अवस्था मे दिनाक ७-७-८६ को प्रात ४ बजे स्वर्गवास हो गया है। आर्यसमाज शिवाजी कालोनी के प्रधान श्री घनश्यामदास आदि सदस्यो तथा महिलावर्ग ने अन्त्येष्टि क्रिया तथा शाति-यज्ञ में विशेष रूप से भाग लिया। भगवान् दिवगत आत्मा को कर्म-व्यवस्था अनुसार सद्गति प्रदान करे।

—सुदर्शनदेव आचार्य

बाबू जगजीवनराम दिवंगत

पुरानी पीढी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता बाबू जगजीवनराम का, जिनके परिचय के लिए उनका नाम लेना ही पर्याप्त है, ६ जुलाई को दिन के दस बजकर बीस मिनट पर निधन हो गया। अगले दिन उनके ग्राम चन्दवा, जि० भोजपुर में उनकी अन्त्येष्टि करदी गई। इस अवसर पर राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह और प्रधानमन्त्री राजीव गाधी भी उपस्थित थे।

आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा का शानदार मैट्रिक परीक्षा परिणाम

इस वर्ष हमारे विद्यालय का मैट्रिक परीक्षा परिणाम ८..४% रहा। राजेन्द्रकुमार जिन्दल सुपुत्र श्री निरजनदास जिन्दल ने ६९२ अंक लेकर छात्रवृत्ति प्राप्त की और स्थानीय सिरसा के स्कूल के लडको में प्रथम स्थान प्राप्त किया। १० विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

—प्रि० द्वारकाप्रसाद
आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा, हरयाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० /RTK   फोन ४८१२   मुद्रित मूल्य १,६६,०८,५३,०८७



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ३५   ७ अगस्त, १९८६   वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ५० पैसे

दर्शनों में जीव कर्त्ता और भोक्ता है

—पं० धर्मदेव "मनीषी" स्नातकाचार्य गुरुकुल कालवा

वेदान्त दर्शन

कर्त्ता शास्त्रार्थवत्त्वात् २।३।३३

(शास्त्रार्थवत्त्वात्) शास्त्र के सार्थक होने से (कर्त्ता) जीव कर्त्ता है।

शास्त्र में जीव के कर्मों का उपदेश है। यथा—यज्ञ करे, दान करे, असत्य न बोले इत्यादि। इस कारण जीवात्मा कर्त्ता है। यदि स्वतन्त्र कर्त्ता न होता तो शास्त्र में कर्मों का विधि निषेध न होता।

व्यपदेशाच्च क्रियाया, न चेन्निर्देशविपर्यय। २।३।३६

(क्रियाया) लौकिक वैदिक कर्म में (व्यपदेशात्) कथन से (च) भी (न चेत्) नहीं तो (निर्देशविपर्यय) बताना व्यर्थ होगा।

यदि जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र कर्त्ता न हो तो उसको कोई विधि निषेध शास्त्र में न होने चाहियें परन्तु शास्त्र में—अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित्कृषस्व। इत्यादि विधि निषेध है कि जूआ मत खेल, खेती अवश्य कर। जूआ खेलने का निषेध, खेती करने का विधान इस बात का प्रमाण है कि वेद जीवात्मा को स्वतन्त्रता से कर्म करनेवाला कर्त्ता मानता है, तभी तो उसको विधि निषेध करता है।

यदि कहो कि जीवात्मा कर्त्ता है तो कभी कर्म का त्याग न करेगा, किन्तु कभी मुक्ति न होगी। तो उत्तर—

यथा च तक्षोभयथा २।३।४०

(च) और (यथा) जैसे (तक्षा) बढई (उभयथा) दोनो प्रकार का पाया जाता है।

इसी प्रकार जीवात्मा भी दोनो अवस्था में रहता है—जब देहेन्द्रिय साधनो से काम करता है, तब उसके फल भोगता है, परन्तु जब अन्त:करण बहिष्करणो को छोड देता है तब कुछ नहीं करता और मुक्ति का आनन्द अनुभव करता है। जैसे बढई जब बिसोला आदि हथियारो से काम करता है तब उनके प्रभाव से सुख-दु:ख भोगता है, परन्तु जब अकेला सब हथियार पृथक् रखकर विश्राम लेता है तब कुछ नहीं।

भोक्त्रापत्तेरविभागश्चेत् स्याल्लोकवत् २।१।१३

(भोक्त्रापत्त.) भोक्ता=जीवात्माओ को आपत्ति=रुकावट से आने से (चेत्) यदि कहो कि (अविभाग) भोक्ता और भोग्य का पृथक् व्यवहार न बनेगा? तो उत्तर—(स्यात्) हो जायेगा (लोकवत्) जसे स्थिति काल में होता है, तद्वत्।

यदि कहो कि प्रलय में सब प्राकृत पदार्थो का लय ब्रह्म में हो जाने से भोक्ता—जीवात्माओ को भोक्तापने में आपत्ति होगी, वे किसके भोक्ता होगे, क्योंकि भोग्य पदार्थो और भोक्ता का विभाग तो उस समय रहेगा नहीं? उत्तर यह है कि (स्यात्) हो पडा हो, यह कोई दोष नही, भोग्य न रहने से समय विशेष में लोक—ससार में भी तो भोक्ता लोग भोक्ता नही रहते। इसी प्रकार प्रलय में (स्यात्) सही। इसको कोई दोष या आपत्ति नहीं कह सकते।

न्याय दर्शन

न कर्मकर्तृसाधनवैगुण्यात् २।१।५६

(न) ऐसा नही हो सकता, (कर्मकर्तृसाधनवैगुण्यात्) कर्म, कर्त्ता तथा साधन—कारणो में वैगुण्य—अपूर्णता होने से।

प्रीतेरात्माश्रयत्वादप्रतिषेध ४।१।५२

(प्रीते) सुख के (आत्माश्रयत्वात्) आत्मारूप आश्रय में रहने के कारण (अप्रतिषेध) स्वगरूप पारलौकिक सुख फल का निषेध नहीं हो सकता।

वैशेषिक दर्शन

प्रवृत्तिनिवृत्ती च प्रत्यगात्मनि दृष्टे परत्र लिङ्गम् ३।१।२०

(प्रवृत्तिनिवृत्ती च) प्रवृत्ति और निवृत्ति (प्रत्यगात्मनि) अपने-अपने आत्मा में (दृष्टे) देखी जाती है। (परत्र) पराये में (लिङ्गम्) वही लिङ्ग है।

जिस प्रकार रागोत्पन्न प्रयत्न प्रवृत्ति और द्वेषोत्पन्न प्रयत्न—निवृत्ति अपनी आत्मा में देखी जाती है। इसी प्रकार हितकारक कामो में प्रवृत्ति और अहितकारक कामो में निवृत्ति देखकर दूसरो की आत्मा का लिङ्ग से अनुमान करना चाहिये कि मेरे समान इनकी प्रवृत्ति निवृत्ति आदि चेष्टाये हैं। इसलिये अवश्य मेरे समान इनमें भी एक पृथक्-पृथक् आत्मा है।

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थसन्निकर्षात् सुखदु खे ५।२।१५

आत्मेन्द्रियमनोर्थसन्निकर्षात्) आत्मा—जीवात्मा इन्द्रिया नाक कान आदि मन और विषय रूपादि के परस्पर छूने से (सुखदु खे) सुख और दु ख होते हैं। अर्थात् आत्मा मन से छूता है, मन इन्द्रियो से छूता है और इन्द्रिया विषयो से छूती है। इस प्रकार विषयो का सुख और दु ख आत्मा तक पहुचता है।

सांख्य दर्शन

अविवेकाद्वा तत्सिद्धे कर्तु फलावगम १।१०६

(वा) अथवा अविवेकात्-तत्सिद्धे) अविवेक से पुरुष का कर्तृत्व-सिद्धि अर्थात् जब तक विवेक न हो तब तक तो कर्ता है हां, विवेक से पूर्व तो पुरुष कर्ता है हो, अत (कर्तु फलावगम) कर्ता पुरुष को फल प्राप्ति—भोग प्राप्ति होती है।

भोक्तृभावात् १।१४३

(भोक्तृभावात् पुरुष में भोक्तृभाव—भोगने की प्रवृत्ति है, भोग्य शरीर है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

विवाह सस्कारो के अवसर पर विशेष—

वैदिक विवाह संस्कार का महत्त्व

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गताक से आगे—

राष्ट्रभृत, जयाहोम, अभ्यातान होम

विवाह सस्कार मे पाणिग्रहण से पहले १२ आहुतिया राष्ट्रभृत की तथा १३ आहुतिया जयाहोम की एव अभ्यातानहोम की १८ आहुतिया घी की दी जाती हैं। इनका अभिप्राय यही है कि गृहस्थी बनने पर प्रत्येक नव दम्पति का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने राष्ट्र का भरण पोषण करे, अपने देश को शक्तिशाली विजयी बनाये, इसलिए वे राष्ट्रभृत यज्ञ करते है। राष्ट्रभृत होम के मन्त्रो से प्रार्थना करते हैं—

स न इद ब्रह्म क्षत्र पातु—वह परमात्मा हमारे देश के ब्राह्मण व क्षत्रियो की रक्षा करे, हमारी विजय हो। तीसरा होम अभ्यातान है—जिसका अर्थ है—अपनी सर्वविध उन्नति, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्ति का विकास हो।

विवाह सस्कार मे भी राष्ट्र की उन्नति, उसकी विजय तथा सर्वांगीण विकास को प्रमुख मानकर उसे इस पवित्र अवसर पर भी भुलाया नही जाता।

२. पाणिग्रहण

यहा से विवाह सस्कार की मुख्य क्रियाओ का प्रारम्भ होता है। पाणिग्रहण के छ मन्त्रो को पति-पत्नी का दाया हाथ ग्रहण करके मन्त्र बोलता है—गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्—

इन मन्त्रो की भावनाये बहुत ऊची हैं, पति कहता है—मैं ऐश्वर्य तथा सुसन्तान आदि सौभाग्य की वृद्धि के लिए तेरे हाथ को पकडता हू। मेरे साथ बुढापे पर्यन्त सुख से जीवन व्यतीत कर। तू मेरी धर्म से पत्नी है, मैं तेरा धर्म मे पति हू। मैं सदैव तेरी रक्षा करूगा। इन प्रतिज्ञा मन्त्रो को बोलने के पश्चात् कन्या का भाई अपनी बहन का दाया पाव पत्थर पर लगाने के लिए कहता है।

३. शिला आरोहण

भाई द्वारा शिला पर पाव लगवाने के पश्चात् वर पारस्कर गृह्य-सूत्र का मन्त्र पढता है—आरोहेममश्मानमश्मेव त्व स्थिरा भव।

इसका भाव यह है कि पति का कहना है कि गृहस्थ जीवन में कभी आपत्तिया और सकट आ जाये तो तुम्हे स्थिर रहना चाहिए। भाई का भी बहन के लिए यही कहना है कि बहन तुम पतिकुल मे जारही हो, वहा जाकर कोई ऐसा कार्य न करना जिससे हमारे कुल की बदनामी हो। वर कन्या दोनो खडे होकर चार प्रदक्षिणा करने के लिए तैयार होते हैं। पीछे से भाई खील और जाटी के सूखे पत्ते अपनी बहन की अजलि मे डालता है। वह—अर्यमण देव कन्या आदि मन्त्रो से कुण्ड में उन्हें डालती है। इस क्रिया मे पति उसकी सहायता करता है।

इन मन्त्रो का अभिप्राय यह है कि हे न्यायकारी प्रभो! आप मुझे पितृकुल से छुडा रहे हैं परन्तु मैं पतिकुल मे सदैव स्थिर रहूं, वहा से कभी भी अलग न होऊ, मेरी यही कामना है कि मेरा पति दीर्घजीवी हो। मेरे परिवार के लोग धनधान्य मे समृद्ध हो। यहा खील और शमी पत्र का बडा महत्त्व है। लाजा धान्यरूपा होती हैं। उसमें तुष और चावल का मेल होता है। इसमें वधू तुष के समान है और वर चावल के समान है। जब तक दोनो मिले रहेंगे तब तक दोनो की रक्षा है। जब तक तुष चावल से मिला रहता है वह चावल के ही भाव बिकता है। चावल से अलग होने पर उसका कोई मूल्य नही रहता। इसी प्रकार स्त्री भी जब तक पति के साथ रहती है, तभी तक उसकी शोभा है। उधर धान तुष से अलग होने पर चावल बनकर महगा बिकता है किन्तु अपनी उत्पादक शक्ति खो बैठता है। उत्पादक शक्ति के लिए चावल को तुष का ही सहारा लेना पडता है। इसी प्रकार सन्तान के इच्छुक को अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। शमीपत्र का भी बहुत ही गहरा महत्त्व है। पुत्रहीन स्त्री के लिए—

शमी वृक्ष पर उत्पन्न हुए पीपल की जड के क्वाथ से पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा वेद मैं भी आया है। मन्त्र है—शमीमश्वत्थमारूढस्तत्र पुस्वन कृतम्। इस मन्त्र पर गहन विचार की आवश्यकता है।

अब लाजाहोम करते हुए चार प्रदक्षिणायें की जाती हैं। इन चारों प्रदक्षिणाओ पर वर को सदैव आगे रखना चाहिये ऐसा वेदो तथा गृह्यसूत्रो का स्पष्ट आदेश है जैसे—'अग्रे गच्छतु प्रजानन्' वर को चारों प्रदक्षिणाओ मे सदैव आगे चलना चाहिये। जब प्रदक्षिणा के लिये चलने लगे तो वर को वधू का दाया हाथ पकड कर प्रदक्षिणा करनी चाहिये। इन चारो प्रदक्षिणाओ मे किसी मैं भी फिर से पत्थर से पाव न लगाना चाहिये। इन प्रदक्षिणाओ में 'गठजोडा' फटका नही बाधना चाहिये। ये चार प्रदक्षिणाये इस बात की द्योतक हैं कि वर-वधू का गृहस्थाश्रम इतना आदर्श हो कि उसकी कीर्ति चारो दिशाओ मे विस्तृत हो। इन्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारो पदार्थों की प्राप्ति हो। ये चारो वेदों के ज्ञाता हो। चारो वर्णों और आश्रमो के प्रति इनकी निष्ठा हो।

सप्तपदी

यह विवाह सस्कार की अन्तिम मुख्य विधि है। इस समय वर के उपवस्त्र के साथ वधू के उत्तरीय वस्त्र की गाठ बाध दी जाती है—इसे गठजोडा कहते हैं। इस गठबन्धन का इतना ही प्रयोजन है कि स्त्री और पुरुष दोनो ही इस पवित्र गठबन्धन मे बधकर दोनो परस्पर सहयोगी होते हुए गृहस्थ धर्म का पालन करेंगे। वैसे भी यह ग्रथिबन्धन दो हृदयों का ग्रथिबन्धन है। वैदिकधर्म में तलाक नही है। आज से वर-वधू दोनों एक हुये, इन दोनो का सम्बन्ध कभी टूटेगा नही।

पति का पतित्व भी सात पग रखने पर ही पूरा होता है। सप्तपदी के बिना विवाह सस्कार अधूरा है। मनु ने भी कहा—

पतित्व सप्तमे पदे। सप्तपदी क्या है? गृहस्थ जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने का सातसूत्री कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के बिना गृहस्थ जीवन अधूरा ही रहता हैं, बेकार ही रहता है।

सप्तपदी का पहला सन्देश

ओ इषे एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।
पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टय:।

१. इषे

जीवन में सबसे प्रथम कर्त्तव्य अन्नप्राप्ति के लिये प्रयत्न करना है। प्रत्येक गृहस्थी के लिये अन्न पहली आवश्यकता होती है। अन्न के अभाव में न महमानों की सेवा, न अन्य धर्म कार्य तथा अपना भी पालन पोषण असम्भव है।

इस मन्त्र में दूसरी बात कही है—तू मेरी अनुव्रता हो, पतिव्रता हो। तीसरी बात—धर्मरक्षा में परमात्मा तेरी सहायता करे। चौथी बात—हम दोनो मिलकर बहुत से पुत्रों को प्राप्त करें। वेद ने दस सन्तान तक पैदा करने की आज्ञा दी है किन्तु साथ ही वेद का यह आदेश भी है कि—दशवीर सर्वगण स्वस्तये—सब का कल्याण करने के लिये दस वीर पुत्र पैदा हो। यहा दस के साथ वीर शब्द का तात्पर्य यह है कि सन्तान वीर हो, कायर कमजोर, निर्बल, दीनहीन सन्तान न हो। सातों पगो में यह पहला कदम है कि अपने घर को अन्न के भडारों से भरने के लिये अन्न पैदा करना। (क्रमश:)

सम्पादकीय

अकालियों की पैंतरेबाजी—राष्ट्रपति शासन अनिवार्य

वैसे तो अकालियो की राजनीति का इतिहास पेंतरेबाजी से भरा पडा है, परन्तु तथाकथित पजाब समझौते के बाद भी उन्होने कम पेंतरे नही बदले। पजाब समझौते की धारा ७ मे स्पष्ट उल्लेख है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी के फैसले का आदर करते हुए चण्डीगढ के बदले मे हरयाणा को पजाब का ऐसा हिन्दी भाषी क्षेत्र दिया जायेगा, जो सीमा समायोजना में दिये जाने वाले इलाके से भिन्न होगा। वह इलाका कौन सा होगा, उसके बारे मे स्वय सन्त लोगोवाल ने फिरोजपुर बार एसोसियशन मे दिये गये अपने १३ अगस्त, १९८५ के भाषण मे अबोहर के चारो ओर स्थित ५५ गाव का स्पष्ट रूप से ऐलान किया। मेथ्यू आयोग ने भी अपनी रिपाट मे स्पष्ट शब्दो मे कहा कि वह इलाका केवल फाजिल्का अबोहर का क्षेत्र ही होना चाहिए और इसीलिये उन्होने उसी इलाके तक सीमित रहकर भाषाई सर्वेक्षण करवाया। अकालियो ने राजपुरा तहसील के १३ गाव चण्डीगढ के बदले मे देने की पेशकश की, परन्तु उन्होने अपनी रिपोर्ट मे उनकी पेशकश पर विचार करने से इन्कार करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि इन ग्रामो के बारे मे धारा ७४ के आधीन गठित होने वाला सीमा समायोजन आयोग ही विचार कर सकता है। वेंकट रमैया आयोग ने भी १९६१ और १९८१ की दोनो जनगणनाओ मे हिन्दी भाषी होने के नाते ३१ गाव जिनका क्षेत्रफल ४५,००० एकड बनता है, हरयाणा को चण्डीगढ के बदले देने की सिफारिश नही की, बल्कि स्पष्ट रूप से यह कहा कि ये गाव तो हरयाणा को सीमा समायोजन आयोग को हर हालत मे देने ही पडेंगे। चण्डीगढ के बदले में तो ७०,००० एकड क्षेत्र के दूसरे गाव ही देने पडेंगे, चाहे उनमे से कुछ पजाबी भाषी भी हो।

पजाब समझौते मे यह स्पष्ट लिखा था कि आयोग जो भी फैसला करें वह अन्तिम होगा और उसमे कोई अदला-बदली नही हो सकती, परन्तु मेथ्यू आयोग के द्वारा पहचान किये हुए हिन्दी भाषी ८५ गाव और दो नगर हरयाणा को देने से तो अकाली यह कहकर छुट्टी पागये कि एक गाव पजाबी भाषी कन्दूखेडा हरयाणा और ८५ गाव के बीच मे आगया। मथ्यू आयोग ने इन गावो को हरयाणा को देने का भार अपने ऊपर न लेकर भारत सरकार और राज्य सरकारो पर डाल दिया था। वेंकट रमैया आयोग की सिफारिश को बाकी अकालियो ने तो पूरी तरह नामन्जूर कर दिया। श्री बरनाला उन ४५ ००० एकड क्षेत्र के ३१ गाव हरयाणा को देने का राग अलापते रहते हैं, जिनके बारे मे वेंकट रमैया आयोग ने कहा है कि ये गाव तो हरयाणा को हर हालत मे मिलेगे ही, इनके अतिरिक्त ७० हजार एकड क्षेत्र के गाव हरयाणा को चण्डीगढ के बदले मे दिये जाये। तथाकथित पजाब समझौते के अनुसार आयोग की रिपोट अक्षरश मानने के लिए बाध्य होते हुए भी अकालियो ने दोनो आयोगो की सिफारिशो को नाकारा बना के रख दिया है और मुजाइका यह है कि समझौते पर अमल न करने का आरोप भारत सरकार पर लगाये जारहे है। हरयाणा के साथ दोनो आयागो ने भी पूरा न्याय नही किया और जो किया उस पर अमल नही हुआ। फिर भी इल्जाम यही है कि हरयाणा को अनुचित लाभ दिया जारहा है।

रावी व्यास के पानी के बटवारे के निणय के लिये गठित इराडी न्यायाधिकरण की सिफारिशे तो अभी दो महीने के बाद आनेवाली हैं, परन्तु उनको न मानने के लिए अभी से अकाली नेताओ ने बोलना शुरु कर दिया है। सतलुज यमुना जोड नहर का काम १५ अगस्त, १९८६ को पूरा हो जाना चाहिये था, ऐसा पजाब समझौते मे स्पष्ट लिखा है। परन्तु यदि पजाब के हाथ में ही यह काम रहा तो अगला १५ अगस्त ही नही उससे अगला भी आ सकता है। जोड नहर का काम पूरा तभी होगा जब भारत सरकार इसे अपने हाथ में लेकर युद्ध स्तर पर काम करे।

पजाब समझौते के पीछे मूल भावना तो यह थी कि पजाब मे पूर्ण रूप से शाति हो, आतकवाद समाप्त हो और हिन्दू सिख मिलकर पहले की तरह भाई-भाई बनकर रहें। समझौते के फलस्वरूप अकालियों की सरकार तो बन गई, परन्तु न आतकवाद से छुटकारा मिला, न भाई चारे की भावना बहाल हुई और न ही शाति और सद्भावना पनप सकी। अकालीदल पंजाब मे फैले आतक, हिन्दुओं के पलायन को रोकने के लिये राजनीतिक स्तर पर जनमानस को साथ लेकर उग्रवादियो को अलग थलग करने मे बुरी तरह असफल ही नही हुआ, बल्कि दो खेमो मे बटकर वे वही बोली बोलने लगे, जो आतकवादी और पृथक्तावादी बोल रहे थे। बादल तोहडा तो बोलने ही लगे, बरनाला सरकार के मन्त्री भी उनसे पीछे नही रहे और अब तो स्वय बरनाला भी उनकी लकीर पर चल पडे हैं।

गुरुद्वारो की पवित्रता की रक्षा करने के लिये तथा वहा कानून व्यवस्था लागू करने के लिए, बरनाला ने पुलिस को भेज तो दिया, परन्तु उसके बाद 'पश्चात्ताप' के रूप मे एक सप्ताह मुख्य ग्रन्थियो के आदेश से जूते साफ किये। अपनी सरकार को पथिक सरकार घोषित करके पथ का अनुशासन मानकर राष्ट्र के सविधान की सम्प्रदाय निरपेक्षता और उसके आधीन ली हुई अपनी शपथ का मजाक उडाया।

जब श्री बरनाला प्रतिदिन होनेवाली हत्याओ और हिन्दुओ के पलायन को रोकने मे पूरी तरह असफल हो गये तो भारत सरकार पर आरोप लगाने लगे कि पाकिस्तान से आये घुसपैठियो को सीमा पर भारत सरकार नही रोक पाती। इसीलिये ये सब घटनायें घट रही हैं। सीमाओ की नाकाबन्दी के लिये अनेक बार वक्तव्य दिये। जब पश्चिमी सीमा को नाकाबन्दी (सील) करने के लिए सविधान के अनुच्छेद २४९ का सहारा लिया गया, तब उसके विरोध मे आ खडे हुए और बादल, तोहडा के साथ मिलकर राज्यो के अधिकारो तथा आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव की दुहाई देने लगे।

लूटमार अत्याचारो और हत्याओ से त्रस्त जब गाव से हिन्दू भागनें लगे तो उनके लिये पजाब मे ही शिविर खोलकर, कानून व्यवस्था बहाल करके उन्हे वापिस भेजने की बजाये, उनको पजाब से बाहर आने दिया और फिर उनको वापिस ले जाने का नाटक भी रचा।

अब यह बिल्कुल स्पष्ट होगया है कि अकालियो ने न केवल तथाकथित पजाब समझौते की भावना को, बल्कि उसके शब्दो की भी धज्जिया उडाकर रख दी है। उनके पैंतरे बदलते ही रहते हैं और निकट भविष्य मे और भी बदलने वाले है। पजाब समझौते को अकालियो ने मार डाला है और भारत सरकार उसको उसी प्रकार छाती से लगाये हुए है, जैसे बादरी अपने मृत बच्चे को छाती से चिपकाये घूमती रहती है। इस बात की बहुत बडी सम्भावना है कि सविधान के अनुच्छेद २४९ के आधान यदि भारत सरकार ५ किलोमीटर की पट्टी बनाकर सीमाओ की नाकाबन्दी राष्ट्र की सुरक्षा के लिए करती है तो बरनाला सरकार त्यागपत्र दे दे, परन्तु इस सम्भावना से भी आखे बन्द नही की जानी चाहिये कि अकाली सरकार अन्दर बैठकर भारत सरकार की योजना को असफल बनाने का निणय ले लेवे। यदि ऐसा हो तो भारत सरकार ने स्वय राष्ट्रपति शासन लागू कर देना चाहिये और राष्ट्र की सुरक्षा को होने वाले सम्भावित खतरे से राष्ट्र को बचाना चाहिए।

समय आगया है जब भारत सरकार मृत समझौते का मोह छोडकर उसकी अन्तिम क्रिया की घोषणा करे। इस मृत समझौते का सहारा लेकर देशद्रोह को उचित ठहराने के लिए बरनाला और उनके साथी एडी चोटी का जोर लगाते रहवे हैं। समझौते का कोहरा अब राष्ट्रीय एकता की भीषण समस्या को धुधला रहा है। यह कोहरा छटे तो लोगो का वास्तविक स्वरूप खुलकर सामने आये, मित्र और शत्रु की पहचान हो और फिर सारे देशप्रेमी मिलकर राष्ट्र की एकता को दरपेश खतरों का मजबूती से मुकाबिला करें। तथाकथित पजाब समस्या के जो सर्वसम्मत समाधान थे, १९७० का श्रीमती इन्दिरा गाधी का निर्णय और १९७६ का रावी व्यास के पानी के बटवारे का फैसला, उनको अविलम्ब

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तको का नाम		मूल्य
१	दी वेदाज (अग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जो		१-००
२	दी प्रिसिपल्ज आफ आर्यसमाज— प० चमूपति एम०ए०		१-५०
३	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालकार		१-००
४	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह		१-००
५	ईसाइयो की प्रचार प्रणाली—प० जगत्कुमार शास्त्री		००-१०
६	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—प ओम्प्रकाश त्यागी		००-५०
७	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी		००-२५
८	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रो की व्याख्या)—प० चमूपति एम०ए०		३-००
९	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रथ (आर्य शहीदो का परिचय)		४-५०
१०	हरयाणा के आयसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह		५-००
११	पजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद		२ ००
१२	आदश धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री		२-००
१३	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचाय		३-००
१४	स्मारिका (हरयाणा प्रातीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)		१-००
१५	मूर्तिपूजा—सम्पादक प० जगदेवसिंह सिद्धाती		००-५०
१६.	वेदस्वरूप निर्णय	,,	००-७५
१७	वेदाविर्भाव	,,	१-००
१८	वेदभाष्य पद्धति	,,	१-००
१९	ईसाई पादरियो की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द		०-१०
२०	निहारिकावाद और उपनिषद्—प० चमूपति एम०ए०		०-५०
२१	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती		०-२०
२२	सत्यार्थप्रकाश	,,	६-००
२३	महर्षि दयानन्द आत्मकथा	,,	०-५०
२४	हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल		१ ००
२५	बड—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती		१-५०
२६	वीर हेमू	,,	००-७५
२७	पीपल	,,	१-५०
२८	मिर्च	,,	१-५०
२९	श्लीपद वा हाथी पाव की चिकित्सा—स्वा० ओमानन्द जी		०-२०
३०	बिच्छू विष चिकित्सा	,,	०-५०
३१	लवण	,,	१-२५
३२	विदेशो मे मैंने क्या देखा	,,	२-५०
३३	नैरोबी यात्रा	,,	१-५०
३४	ब्रह्मचर्य साधन ६-११	,,	१०-००
३५	,, १-२	,,	१-००
३६	,, ३	,,	१ ००
३७	,, ४	,,	२-५०
३८	,, ५	,,	२-००
३९	,, ६	,,	३-००
४०	,, ७ ८	,,	२-००
४१	,, ९	,,	३-००
४२	,, १०	,,	१-५०
४३	,, ११	,,	२-००
४४	हल्दी	,,	१-५०
४५	नीम	,,	१-२५
४६	प० गगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु		१-५०
४७	नास्तिक मत समीक्षा—प० हरिदेव सर्राफ		००-१५

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

हैदराबाद के सत्याग्रहियों के मामले शीघ्र निबटाये जायें

प्रधानमन्त्री से मुलाकात में पेंशन का प्रश्न उठाया गया

भारत सरकार द्वारा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वालो के लिए आवेदन-पत्र भेजने की अन्तिम तारीख ३० जून तय की गई। तब तक निर्धारित फार्मों को भरकर भेजा जाना था और इसके साथ ही जेल का प्रमाण-पत्र, न्यायालय का निर्णय और प्रार्थी के साथ यदि कोई वर्तमान अथवा भूतपूर्व सासद या विधायक जेल/जेलो में रहा हो तो उनका प्रमाण-पत्र प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट द्वारा प्रमाणित कराना अनिवार्य था।

इस सभा में बहुत से लोगो ने भारत सरकार को आवेदन-पत्र भेजने के अतिरिक्त यहा भी एक दो बार आवेदन-पत्र भेजे हैं। सभा ने ऐसे आवेदको के नाम भारत सरकार को (जो ३० जून तक प्राप्त हुए थे) भेज दिये। सभा को भेजने वालो मे बहुतो ने अपने जेल जाने और रिहा होने की तारीखें, जेलो के नाम, पिता का नाम, आयु, पत्नी अथवा अविवाहिता पुत्री जैसे आश्रितो का विवरण, जेल जाने के समय का पता और वर्तमान पता आदि कुछ भी विवरण नही दिया। ऐसी दशा में आवश्यकता पडने पर इस सभा द्वारा प्रमाणीकरण कैसे सम्भव है? अत: इस सभा को इस बारे में आश्वस्त किया जाना आवश्यक है। बहुत से भाइयो ने तो जेल का प्रमाण-पत्र पाने के लिये आवेदन तक नही किया। वैसे अनेक जेलो से बहुत से लोगो को हमारी जानकारी में प्रमाण-पत्र पहुँच गये हैं और पहुच रहे हैं। नही आने पर रिमाइण्डर भेजने चाहिए।

ज्ञात हुआ है कि कतिपय सत्याग्रहियो को सरकार से पेंशन स्वीकृत होकर पिछली राशि भी मिल गई है। बाकी मामले भी जल्दी निबटाये जायेगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वा० आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार को पाच व्यक्तियो के नाम भेजकर सत्याग्रहियो को प्रमाणित करने के लिए एक समिति गठित करने का सुझाव दिया है। १७ जुलाई को प्रधानमन्त्री राजीव गाधी से भेट होने पर सरकारी मशीनरी को चुस्त करने के लिए और बचे-खुचे सत्याग्रहियों के मामले शीघ्र निबटाने के लिए एक नोट दिया गया।

स्वतन्त्रता सेनानियो को दी जाने वाली पेंशन के सम्बन्ध में वर्तमान नियमो के अनुसार भुगती हुई सजा की अवधि न्यूनतम पाच मास से ऊपर होने पर केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार तथा उससे कम होने पर केवल राज्य सरकारे पेंशन देती हैं। इस विषय मे किसी नियम का परिवर्तित होना सम्भव नही। कुछ लोगो ने जान बूझकर अपने जेल जाने की तारीखे इस प्रकार लिखी हैं, जिससे उनके कारावास को पाच छह मास समझा जा सके। याद रहे, शपथ-पत्र और नैतिकता की दृष्टि से यह उचित नही है।

ब्रह्मदत्त स्नातक

शोक सन्देश

आर्यसमाज बडथल (नीलोखेडी) के कर्मठ कार्यकर्ता श्री नत्थुराम आर्य के आकस्मिक निधन से इस क्षेत्र में अपूर्णनीय क्षति हुई है। हम दिवगत आत्मा को सद्गति एव उनके वियोग से सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक शोक सवेदना प्रकट करते हैं।

इस अवसर पर समस्त कार्य प० रामदेव शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस क्षेत्र की जनता ने समस्त कार्य की प्रशसा की।

—चौ० मगतराम मन्त्री आर्यसमाज बडथल

(पृष्ठ १ का शेष)

चिदवसाना मुक्तिस्तत्कर्मार्जितत्वात् ६।५५

(भुक्ति-चिदवसाना) भोग चित्-चेतन पुरुष में अवसान सस्थान आश्रय लेना है—पुरुष के निमित्त है, पुरुष के लिए है। क्योंकि (तत्कर्मार्जितत्वात्) पुरुष के तत्कर्मार्जित होने से, तत्कर्म-उस अहङ्कार के कर्म, तत्कर्म—अहङ्कार के कर्मार्जित उपार्जित—आचरित सचित जिसके लिये वह तत्कर्मार्जित पुरुष उसके तत्कर्मार्जित होने से—अहङ्कार के कर्म पुरुष के लिये सचित होने से अथवा उस पुरुष के लिये कर्म तत्कर्म तदर्थ कर्म अर्जित किये जिसने वह तत्कर्मार्जित अहङ्कार उस अहङ्कार के कर्म से अर्जित होने से। दोनो विग्रहो में अहङ्कार ही पुरुष के लिये कर्मों का अनुष्ठान करता है उसके परार्थ होने से, पुरुष के लिए होने से कुठार की भाति करण उपकरण साधन अहङ्कार पुरुष का है "न व्यापकत्व मनस करणत्वादिन्द्रियत्वाद्वा वास्यादिवच्चक्षुरादिवत्॥ साख्य ५।६९। अत पुरुष भोक्ता है। कहा भी है "भोगापवर्गार्थं दृश्यम्" योग २।१८॥

योग दर्शन

द्रष्टा दृशिमात्र शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्य २।२०

द्रष्टा केवल ज्ञानमात्र शुद्ध अर्थात् ज्ञान-विज्ञान सुख-दुखादि सम्पूर्ण धर्मों का अनाश्रय होने पर भी बुद्धि के सम्बन्ध से उन धर्मों का आश्रय, बुद्धि वृत्ति के अनुसार देखने वाला पुरुष है।

प्रकाशक्रियास्थितिशील भूतेन्द्रियात्मक भोगापवर्गार्थं दृश्यम् २।१८

प्रकाश, क्रिया, स्थिति स्वभाव वाले तीनो गुण, भूत और इन्द्रिय रूप भोग और मोक्ष प्रयोजन वाले जो हैं वह दृश्य कहलाते हैं।

तदर्थ एव दृश्यस्यात्मा २।२१

उस द्रष्टा पुरुष के लिये ही दृश्य का स्वरूप है।

ते ह्लादपरितापफला पुण्यापुण्यहेतुत्वात् २।१५

वह जाति, आयु, भोग, पुण्य, पाप रूपकारण द्वारा उत्पन्न होने से सुख तथा दुख फल वाले हैं।

मीमांसा दर्शन

प्रकरणविशेषादसयुक्तप्रधानस्य।१। सर्वेषा वा शेषत्व स्यात्तत्प्रयुक्तत्वात्।२। आरादपीति चेत्।३। न त द्वाक्य हि तदर्थत्वात्।४। लिङ्गदर्शनाच्च।५। फलसयोगात्तु स्वामियुक्त प्रधानस्य।६। चिकीर्षया च सयोगात् ७। तथाऽभिधानेन।८। तद्युक्ते तु फलश्रुतिस्तस्मात्सर्वचिकीर्षा स्यात्।९। गुणाऽभिधानात्सर्वार्थमभिधानम्।१०। (अध्याय ३। पाद ७। सूत्र १ से १०)

अर्थ—वेदि आदि धर्म प्रधान यज्ञ के हैं, अङ्गो के नही। प्रकरण की विशेषता से यही सिद्ध होता है। १।

समाधान—वेदि का खनन आदि प्रधान तथा अङ्ग के धर्म हैं। क्योंकि धर्म-धर्मी भाव का वाक्य से नियम है, प्रकरण से नही। २। शका—यदि कहे कि प्रधान यज्ञ के साथ पढा जाता है, इसलिये वेदि "पिण्डपितृयाग" के भी होने चाहियें? ३। समाधान—के वाक्य प्रधान और अङ्ग दोनो के लिए ही वेदि आदि के विधायक हैं, इसलिये उक्त कथन ठीक नही। ४। इसी प्रकार के लक्षण देखे जाते हैं। ५। यजमान से सम्बन्धित सस्कार प्रधान यज्ञ के अङ्ग हैं, क्योकि सस्कारों का सम्बन्ध फल से होता है। ६। और 'सौमिकी' सज्ञा वाली वेदि प्रधान कर्म का अग है, क्योंकि इच्छाओं द्वारा उसका उसी से सम्बन्ध होना माना जाता है। ७। पूर्वपक्ष—'सौमिकी' के प्रधान कर्म का अग होने के समान 'अभिमर्शन' भी प्रधान आहुति का अग है। उसका ऐसा ही वर्णन मिलता है। ८। समाधान—अगयुक्त प्रधान में फल श्रवण मिलता है। इसलिये अग और प्रधान दोनो की इच्छा है। ९। अभिमर्शन का विधान अग और प्रधान दोनों के लिए है। इसमें पूर्णमासी और अमावस्या पद से काल कहा गया है, आहुति नही कही गयी। १०।

दीक्षा दक्षिण तु वचनात्प्रधानस्य। ११। निवृत्तिदर्शनाच्च। १२। यथा यूपस्य वेदि। १३। देशमात्र वाऽशिष्टेनोकवाक्यत्वात्। १४। सामिधेनीस्तदन्वाहुरिति हविर्धानयोर्वचनात्सामिधेनीनाम्। १५। देशमात्र वा प्रत्यक्ष ह्यर्थकर्मसोमस्य। १६। समाख्यान च तद्वत्। १७। शास्त्रफल प्रयोक्तरि तल्लक्षणत्वात्तस्मात् स्वय प्रयोगे स्यात्। १८। उत्सर्गे तु प्रधानत्वाच्छेषकारी प्रधानस्य तस्मादन्य स्वय वा स्यात्। १९। अन्यो वा स्यात् परिक्रयाम्नानाद्विप्रतिषेधात्प्रत्यगात्मनि। २०। (अध्याय ३। पाद ७। सूत्र ११ से २०)

अर्थ—दीक्षा और दक्षिणा प्रधान कर्म के अग हैं। ऐसा वचन पाया जाता है। ११) तथा निरूढ पशुबन्ध सज्ञा वाले यज्ञ में दीक्षा के निवृत्त होने से यही मानना ठीक है। १२) पूर्व पक्ष—जैसे दीक्षा और दक्षिणा प्रधान कर्म के अग कहे गये हैं, वैसे ही वेदि को भी यूप का अग समझना चाहिये। १३) समाधान—अर्द्ध यन्त्र वेदि शब्द को देशमात्र का उपलक्षण समझना चाहिये। क्योकि अर्द्ध बहिर्वेदि के साथ वही वाक्य प्रयुक्त हुआ है। १४) सोम कूटा जाने वाला शकट सामिधेनियो का अग है, ऐसे वचन मिलते हैं। १५) समाधान—ज्योतिष्टोम याग का अग कहा जाने से वह शकट अपने से सम्बन्धित देश विशेष का उपलक्षण मात्र है। १६) तथा शकट सज्ञक देश विशेष के उपलक्षण के समान हविर्धान को ज्योतिष्टोम का अग कहना भी सार्थक है। १७) अग्निहोत्रादि कर्मा का फल अनुष्ठान करने वाले को मिलता है। इसलिये उन अग्निहोत्रादि का स्वय अनुष्ठान करना चाहिए। १८) पूर्वपक्ष—यजमान का मुख्यत्व दक्षिणा में अपेक्षित है सर्वत्र नही। इसलिये दक्षिणा को छोडकर सभी अगो का अनुष्ठाता यजमान से भिन्न ऋत्विज या स्वय ही होता है। १९) समाधान—यजमान के सिवाय ऋत्विज भी शेष अग कर्मों के अनुष्ठाता हैं। उन कर्मों के अनुष्ठान के लिये ऋत्विजों का परिक्रय कहा है। वह परिक्रय स्वय में विरोधी होने से नही होता। २०।

इस प्रकार दर्शनो में जीव को कर्त्ता तथा भोक्ता माना है।

हरयाणा के शिरोमणि आर्य उपदेशक पं० समरसिंह वेदालंकार का निधन

आर्यजनता को यह जानकर अति दुख होगा कि हरयाणा के शिरोमणि आर्य उपदेशक प० समरसिंह जी वेदालकार का २९ जुलाई को निधन हो गया है। उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी। आपका जन्म ग्राम सीक जि० करनाल के एक किसान परिवार मे हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेशों से प्रभावित होकर गुरुकुल कागडी में वैदिक शिक्षा ग्रहण की और वहा से वेदालकार की उपाधि प्राप्त करके अपना मुख्य उद्देश्य वैदिकधर्म का प्रचार प्रसार बना लिया।

पाकिस्तान बनने से पूर्व आप आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब में उपदेशक बन गये। आपने प्रचार का मुख्य केन्द्र हरयाणा बनाया और हरयाणा वेदप्रचार मण्डल का कार्यालय आर्यसमाज जींद बनाकर अपने सहयोगी भजन मण्डलियो के साथ हरयाणा के कोने-कोने मे आर्यसमाजो की स्थापना तथा वार्षिक उत्सव करवाये। पाकिस्तान बनने के बाद आपने राजनीति मे भाग लेकर विधायक के रूप मे भी आर्यसमाज का प्रचार कार्य बन्द नही किया। सभा के अनुरोध पर आपने प० रामस्वरूप शात के निधन होने पर हरयाणा वेदप्रचार मण्डल के अधिष्ठाता पद को पुन सम्भाल लिया और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के विभाजन तक बहुत ही लगन तथा परिश्रम से कार्य करते रहे। हरयाणा सभा के गठन के बाद उन्हे वेदप्रचार विभाग सम्भालने के लिए अनुरोध किया गया परन्तु उन्होंने अस्वस्थ रहने के कारण यह कार्यभार सम्भालने में असमर्थता प्रकट करते हुए अवैतनिक रूप में सभा के आवश्यक कार्यक्रमो में समय देना स्वीकार किया और अन्तिम समय तक उन्होंने अपने वचन को निभाया। इस योगदान को सदा स्मरण रखा जायेगा। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति सम्भव नही है। सभा मन्त्री जी ने उनके निधन होने पर उनके परिवार को पत्र लिखकर शोक सवेदना प्रकट की है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग से दुखी परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आत्मरक्षा प्रशिक्षण शाखायें

आर्यसमाज हिन्दू जाति की रक्षा करने और उसे सबल एवं सुदृढ बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य करता रहा है। इस वर्ष भी मई/जून में सार्वदेशिक आर्य वीरदल ने देशभर मे प्रशिक्षण शिविर लगाकर हमारे नौजवानो को योगासन, लाठी, भाला, तलवार, बन्दूक तथा जुडोकराटे का प्रशिक्षण दिया। इसी कडी में अब स्थान-स्थान पर पिछली शाखाओ को सुदृढ करने तथा नई शाखाओ को लगाये जाने का कार्य किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य वीरदल हिसार मण्डल ने श्री कृष्णपाल व्यायाम शिक्षक तथा अन्य शिक्षको, विद्वानो के माध्यम से हिसार जिले मे विभिन्न स्थानो पर लगभग एक सप्ताह तक नौजवानो को आसन प्राणायाम, लाठी, भाला, जुडोकराटे का प्रशिक्षण देकर नियमित शाखाये शुरु करने के काम को आगे बढाया है।

शाखाये शुरु करने का काम इस प्रकार है --

तिथि	समय	स्थान
१४-७-८६ मे	प्रात ५ से ६ साय ५ से ७	हाई स्कूल सातरोड (खास)
२२ „	„	सी ए वी हाई स्कूल हिसार
३०	प्रात ६ से ७॥ साय ५ से ७	ग्राम गोरखपुर, हिसार
६-८ „	„	ग्राम कनोह, हिसार
१४ „	„	पटेलनगर हिसार
२० „	„	हाई स्कूल आर्यनगर, कुरडी
२८ „	„	गुरुकुल आर्यनगर, हिसार
५-९ „	„	हाई स्कूल सोसवाला, हिसार
१२ „	„	ग्राम शाहपुर, हिसार
१६ „	„	कवारी, हिसार

अत १२ से २५ वर्ष तक के नौजवान अपने निकटतम शाखाओ मे प्रशिक्षण लेकर नियमित शाखाये शुरु करे। योग्य नौजवानो को उन शाखाओ का अधिकारी नियुक्त किया जायेगा।

—सत्यकाम आर्य शाखाध्यक्ष

आर्यवीरो का अनुकरणीय कार्य

१ तथा २-७-८६ को कुछ मुसलमान पजाब से बहुत बडे बैलो को खरीदकर उत्तर प्रदेश ले जारहे थे। कुल बैल २३ थे। जो दो ट्रकों में तथा कुछ पैदल ले जारहे थे। ये सारे बल ग्राम गढी बीरबल मे आर्य वीरदल के युवको ने पकड लिये। इस कार्य मे इन्द्री थाने की पुलिस ने भी बडी सहायता की और आर्यसमाज गढी बीरबल के प्रधान श्री महमासिह जी ने भी बडा योगदान दिया और ग्राम गढी बीरबल के लोगो ने भी बडी सहायता की। ये सभी बैल पुलिस तथा हस्पताल वालो ने मिलकर गाव मे वितरण कर दिये और आर्य वीरदल के युवको ने यह शपथ ली है कि हम भविष्य मे भी इसी प्रकार के कार्य करते रहेगे।

कृष्णलाल आर्य वैदिक पाठशाला गढी बीरबल करनाल, हरयाणा

स्नातको की अत्यावश्यक बैठक

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) के सभी स्नातक बन्धुओ को सूचित किया जाता है कि १९ अगस्त, १९८६ को श्रावणी के पावनपर्व पर स्नातक मण्डल की अत्यावश्यक बैठक प्रात ८ बजे गुरुकुल झज्जर, रोहतक मे आयोजित की जारही है।

सभी स्नातक बन्धुओ से नम्र प्रार्थना है कि ठीक समय पर पधार कर कृतार्थ करें।

निवेदक

चन्द्रपालसिंह राणा
कोषाध्यक्ष

रणवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री
स्नातक मण्डल गुरुकुल झज्जर, रोहतक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे वेदारम्भ संस्कार

गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे वेदारम्भ सस्कार १७ अगस्त, १९८६ रविवार को होना निश्चित किया गया है। इस शुभावसर पर श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के सचालक श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती वेदोपदेश करेंगे।

—रणजीतसिंह आचार्य

आर्ष गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय टटेसर-जौंती, दिल्ली मे प्रवेश

नये सत्र के दाखिलो की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त, १९८६ तक है। माता पिता एव अभिभावको से प्रार्थना है कि यथाशीघ्र अपने बच्चो को दाखिल करवाये। स्थान सीमित होने के कारण सभी को दाखिला (Admission) नही दिया जा सकता है। इस गुरुकुल की विशेषता यह है कि प्राचीन सभ्यता एव संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक विषयो का अध्ययन भी होता है।

नोट—नागलाई से ७०१, ९४१ न० रूट बस व रेलवे स्टेशन दिल्ली से ११४ न० बस तथा नरेला व औचन्दा बोर्डर से ७०१ न० रूट की बस सीधी गुरुकुल टटेसर उतारती हैं। —सन्तराम आर्य मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल टटेसर-जौंती, दिल्ली-८१

आर्य वीरदल के लिए सुझाव चाहिए

सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरयाणा ने एक सब कमेटी बनाकर मुझे यह कार्य सौंपा है कि आर्यजनता से समाचारपत्रो के द्वारा सुझाव लिए जाये। आर्य वीरदल को आगे किस प्रकार बढाया जाये। नवयुवको को कौन-सा रचनात्मक कार्य दिया जाये। कृपया निम्नलिखित विषयो पर सुझाव भेजे।

१. कोई राष्ट्रीय समस्या। २ कोई ग्रामीण समस्या।

३ आर्यसमाजो को सुदृढ बनाने मे क्या योगदान दिया जाये।

४ दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिये सरकार को सहयोग दिया जाये या लिया जाये।

आर्यजनता से प्रार्थना है कि अपने सुझाव ३० अगस्त तक नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करे।

नोट—जिनके सुझाव सर्वश्रेष्ठ होगे, उन्हे आर्य वीरदल पुरस्कृत करेगा। —सीताराम आर्य
कार्यालय आर्य पब्लिक स्कूल बालसमन्द रोड,
हिसार फोन ५०५३

(पृष्ठ ३ का शेष)

लागू किया जाये, ताकि अकालियो की राष्ट्रविरोधी हरकतें बन्द हो।

हरयाणा सचेत रहे

हरयाणा ने तो सदा सद्भावना को बनाये रखा है और आज भी इतने तनावपूर्ण वातावरण मे भी सयम से काम लिया है। यदि १९७० के श्रीमती इन्दिरा गाधी के फैसले और पानी के १९७६ के फैसले पर ठीक-ठीक अमल हो जाये तो हरयाणा हृदय से स्वागत करेगा और सब प्रकार का सहयोग देगा, परन्तु यदि अकाली नहर के बनने में या पानी का पूरा भाग हरयाणा की भूमि पर आने मे रुकावट डाले और भाखडा तथा व्यास के बाधो के माध्यम से आनेवाली बिजली मे रुकावट डालें तो हरयाणा को भी सचेत रहकर उसका उचित जवाब देना चाहिए। हरयाणा की धरती से पजाब में बिजली पैदा करने के लिए कोयला तथा डीजल, पैट्रोल आदि तेलो का जाना उस समय तक रोक देना चाहिये, जब तक कि हरयाणा को उसका पूरा पानी और बिजली बिना रुकावट के मिलने लगे। हरयाणा के लोग पजाब द्वारा किये गये अन्याय के कारण तो हानि उठाते ही हैं, यदि उस अन्याय का प्रतिकार करने के लिये पजाब को उचित जवाब देने की बजाये, गलत आदोलन द्वारा अपनी ही सम्पत्ति की हानि करते हैं, तो उससे बढ़कर कोई मूर्खता नहीं हो सकती। हरयाणा को अपने और राष्ट्र के हितो के लिये ही नही रहना चाहिये, बल्कि इनकी सुरक्षा के लिये बुद्धिमत्ता से काम लेना चाहिये। —प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

आचार्यकुल लोवा कलां का पञ्चविंशतितम: स्थापनादिवसोत्सव:

आचार्यकुल (कन्या महाविद्यालय) लोवा कला का पच्चीसवा स्थापनादिवसोत्सव १९ अगस्त श्रावणी पर्व पर बडे समारोहपूर्वक मनाया जावेगा। उत्सव में बडे-बडे विद्वान्, सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। सभी सज्जन सम्मिलित होकर लाभ उठावें।

उत्सव का कार्यक्रम

प्रात ६ बजे से ८ बजे तक यज्ञ।
प्रात ८ ,, १० ,, वेदोपदेश।
प्रात १० ,, १२ ,, भजन कथा।
दोपहर १२ ,, १ ,, भोजन विश्राम।
दोपहर १ ,, ५ ,, शिक्षा सम्मेलन।

१—सस्था का परिचय—यह सस्था शिक्षा मे अपना विशेष महत्त्व रखती है। कन्याओ को आर्ष ग्रथ पढाये जाते हैं।

२—२४ वर्ष की आयु तक उत्तम ब्रह्मचर्य की उपलब्धि कराई जाती है।

३—व्याकरण आचार्य की १७ कक्षाओ तक की पढाई कराई जाती है।

४—आचार्य तक की पढाई की सरकारी परीक्षायें काशी विश्व विद्यालय से कराई जाती हैं।

५—गवर्नमेंट यूनिवर्सिटी की सस्कृत एम० ए० की परीक्षाये भी कराई जाती हैं।

६—शिक्षा नि शुल्क दी जाती है। केवल भोजन व्ययमात्र लिया जाता है।

७—६ वर्ष मे ऊपर आयु की कन्यायें प्रविष्ट की जाती हैं।

८—प्रवेश पर वर्षभर का भोजन व्यय तथा प्रवेश शुल्क एक साथ ११०० रुपये लिया जाता है।

९—सस्था के पच्चीस वर्ष पूरे होगये हैं। अत इसकी रजत जयन्ती मनाई जावेगी।

१०—रजत जयन्ती पर इस सस्था को पाच लाख रुपयो की आवश्यकता है, क्योंकि यह सस्था सरकार से किसी प्रकार का अनुदान लिए बिना चलाई जारही है।

शुभेच्छु—मानाचार्य सरस्वती सस्थापक

स्वतन्त्रता दिवस अंक

सर्वहितकारी का आगामी अक १४ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस अक प्रकाशित किया जायेगा। इसमें आर्य विद्वानो के लेख तथा कवितायें प्रकाशित होंगी तथा इसमें व्यापारी महानुभाव अपने कारोबार का विज्ञापन देकर लाभ उठावे। —व्यवस्थापक

पं० सोमदत्त विद्यालंकार दिवंगत

गुरुकुल कागडी की पुरानी पीढी के सुयोग्य स्नातक, अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जो महाराज के दामाद, गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी के पूर्व सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व आचार्य और मुख्याधिष्ठाता, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, सुलेखक और सुवक्ता 'भाई जी' के नाम से प्रसिद्ध प० सोमदत्त विद्यालकार का ८६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। १८ जुलाई को पचकुइं रोड के श्मशानघाट पर वैदिक विधि से उनकी अन्त्येष्टि हुई। २१ जुलाई को आर्यसमाज बस्ती हरफूलसिंह में शातियज्ञ और शोक सभा हुई, जिसमे दिवगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की गई। शोकसभा में आर्यजनता और स्नातक बन्धु अच्छी सख्या में उपस्थित थे।

सिवानी मण्डी में युवा जागृति एवं वैदिकधर्म का प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी ने दिनाक ५-६-७ जुलाई, १९८६ को ग्राम सिवानी मण्डी, भिवानी का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने युवको का आह्वान किया कि वे राष्ट्र रक्षा के लिए आगे आयें तथा आर्यसमाज में दीक्षित हो। आर्यसमाज ने सदा ही राष्ट्र रक्षा में अद्भुत योगदान दिया है। आज जबकि चारो ओर मे इस्लामी सगठन एव ईसाई मिशनरिया तथा आतरिक विद्रोही, राष्ट्र एव पवित्र वैदिकधर्म को मिटाने के लिए कृत-सकल्प हैं। आर्यवीरो के महान् बलिदान की आवश्यकता है।

७ जुलाई को आर्यसमाज मन्दिर में तथा डा० हेतराम लाठीवाल के घर पर पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी जो का यज्ञविषयक प्रभावशाली उपदेश हुआ। इन कार्यक्रमो मे आर्यसमाज सिवानी मण्डी के मन्त्री श्री हनुमान आर्य का सहयोग प्रशसनीय रहा। इस प्रकार सिवानी मण्डी (भिवानी) मे युवा जागृति एव वैदिकधर्म का यह प्रचार कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

—ब्र० सत्यपाल आर्य
आर्य वीरदल सिवानी मण्डी

आर्य हमारा नाम है, सत्य हमारा कर्म।
ओ३म् हमारा देव है, वेद हमारा धर्म॥

सब प्रकार से अपनी उन्नति करना चाहें तो आर्यसमाज के सत्सगों मे अवश्य पधारें। अधिक जानकारी के लिए निकटवर्ती आर्यसमाज से सम्पर्क करें।

हरयाणा में वेदप्रचार सप्ताहों का कार्यक्रम

आर्यसमाज गोरखपुर जि० हिसार	४-५ अगस्त	
,, खोखा जि० हिसार	६ ७-८	,,
भक्त फूलसिंह बलिदान उत्सव कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत	६-७	,,
आर्यसमाज सालवन जि० करनाल	८ से १४	,,
,, प्रेमनगर जेल रोड, रोहतक	१५ से १९	,,
,, ठोल जि० कुरुक्षेत्र	१५ से २१	,,
,, नारायणगढ जि० अम्बाला	१४ से १६	,,
आचार्य कुल लोवाकलॉं जि० रोहतक	१६	,,
आर्यसमाज शिवाजी नगर गुडगाव	१९ से २५	,,
,, सोनीपत शहर	२४ से २७	,,
,, चरखी दादरी जि० भिवानी	२६ २७	,,
,, नीलोखेडो जि० करनाल	२३ से २७	,,
,, मुवाना जि० जींद	२१ से २७	,
,, बहु अकबरपुर जि० रोहतक	२५ से ३१	,,
,, महर्षि दयानन्द मार्ग कबाडी बाजार अम्बाला छावनी	१९ से २७	,,
,, महेन्द्रगढ	३०-३१	,,
,, मैन बाजार बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	१३-१४ सितम्बर	
,, पिंजोर जि० अम्बाला	१९ से २१	,,
,, कालका जि० अम्बाला	२१ से २८	,,
,, शेखपुरा खालसा जि० करनाल	२६ से २८	,,

जो आर्यसमाज अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह रखना चाहते हैं वे सभा से पूर्व तिथियां नियत करवा लेवें, ताकि उपदेशको का प्रबन्ध करने में सभा को सुविधा रहे। —वेदप्रचाराधिष्ठाता

तपोवन मे राष्ट्र-भृत यज्ञ २ से ५ अक्तूबर तक

देहरादून। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में राष्ट्र-भृत यज्ञ २ अक्तूबर से ५ अक्तूबर तक भव्यता और श्रद्धा से आयोजित करने की तैयारियां आरम्भ हो गई हैं। इस यज्ञ के लिये २१ कुण्ड बनाये जारहे हैं और चारो वेदो से चुने हुए राष्ट्र-विषयक मन्त्रों से विशेष यज्ञ किया जायेगा। जिसके ब्रह्मा वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के सरक्षक महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ और संयोजक पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होंगे। वेदपाठ करने वालों में अन्य विद्वानों के अतिरिक्त गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी भी होंगे।

इस अवसर पर लगाये जाने वाले योगसाधना-शिविर के सचालक होगे योगधाम ज्वालापुर के पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती।

यज्ञ में पीत वस्त्र धोती कुर्ता आदि अनिवार्य होगा। यदि कोई दुर्व्यसन हो तो उसका परित्याग आवश्यक होगा। आवास तथा भोजन की सेवा आश्रम की ओर से निःशुल्क होगी। ऋतु अनुसार वस्त्र बिस्तर तथा लोटा आदि बर्तन अपने साथ लावें। यजमान बनने के इच्छुक सज्जन तथा देविया कुण्ड आरक्षित कराने के लिये महात्मा दयानन्द जी से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

सभी आर्यसमाजो से प्रार्थना की जाती है कि इस सूचना को अपने-अपने यहा प्रसारित कराने का कष्ट करे। —देवदत्त बाली मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी तपोवन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ३८ २८ अगस्त, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २००) विदेश में ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

मूर्ति-पूजा का खण्डन

(ले० जयदेव 'मनीषी' दर्शनाचार्य गुरुकुल कालवा)

वेदांत दर्शन—

"आवृत्तिरसकृदुपदेशात्" ४।१।१

(असकृत्) बारम्बार (उपदेशात्) उपदेश से (आवृत्ति:) पुन:-पुन: अभ्यास का आवृत्ति सूचक है।

ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी उपदेश वेदांत शास्त्र में अनेक बार किया गया है, तद्वत् विद्यार्थी को लगातार ध्यान लगाकर विद्याभ्यास—ब्रह्म विद्या का अभ्यास करना चाहिये।

"लिङ्गाच्च" ४।१।२

(लिङ्गात्) लिङ्ग से (च) भी।

"भूय एव मा भगवान्विज्ञापयतु" छा० ६।८।७

इत्यादि वाक्यों में भूय:—बार-बार उपदेश का लिङ्ग पाया जाता है। इससे भी आवृत्ति सिद्ध है।

"आत्मेति तूपगच्छन्ति ग्राहयन्ति च" ४।१।३

(आत्मा इति) आत्मा है, ऐसा जानकर (तु) तो (आगच्छन्ति) स्वयं समझते (च) और (ग्राहयन्ति) दूसरों को समझाते हैं यथा—

"यस्यात्मा शरीरम्" ॥ बृह० ॥ आत्मा—जीवात्मा जिस परमात्मा का शरीर है। "एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृत:"। बृह० ३।७।३। यह अन्तर्यामी तेरा—जीव का आत्मा है। 'अहं ब्रह्मास्मि' मेरा—जीव का आत्मा ब्रह्म है।

"त्वं वा भगवो देवतेऽहमस्मि अहं वा त्वमसि।"

हे भगवन् देव! तू मैं हूं वा मैं तू हूं। इत्यादि।

स्वामी शंकराचार्यादि अद्वैतवाद का तात्पर्य आत्मोपासना में भी यही लगाते हैं कि आत्मा परमात्मा का स्वरूप से एक है। परन्तु ऐसा होता तो यह वाक्य कैसे संगत होते कि—

एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृत ॥ बृह० ३।७।३

त आत्मा सर्वान्तर। बृह० ३।४।१

यह अमर अन्तर्यामी तेरा आत्मा है।

सबका अन्तर्यामी यह तेरा आत्मा है।

यह तेरा न कहकर (तू) ही कहना चाहिये था।

प्रश्न—तब तो मूर्ति आदि प्रतीक में भी व्यापक ब्रह्म को आत्मा रूप से उपासना करना ठीक है?

उत्तर—नहीं क्योंकि—

"न प्रतीके न हि स:" ४।१।४

(प्रतीके) प्रतीक—मूर्ति आदि में (न) आत्मोपासना नहीं बनती (हि) क्योंकि (स:) वह प्रतीक (न) आत्मा नहीं है।

अपने आत्मा—जीव में तो आत्मोपासना हो सकती है। क्योंकि—वह आत्मा—आपा है परन्तु जड़ प्रतीक में आत्मोपासना इसलिये नहीं हो सकती कि वह उपासक का आत्मा—आपा नहीं, भिन्न है।

महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' के एकादश समुल्लास में 'मूर्ति पूजा' के सोलह दोष दिखलाते हैं, वे यहां प्रस्तुत किये जाते हैं—

प्रश्न—साकार में मन स्थिर होता है और निराकार में स्थिर होना कठिन है, इसलिये मूर्ति पूजा रहनी चाहिये।

उत्तर—साकार में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता, क्योंकि उसको मन झट ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घुमाता और दूसरे में दौड़ जाता है और निराकार परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता किन्तु उसी के गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता, क्योंकि जगत् में मनुष्य स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में लगावें, क्योंकि निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है। इसलिये मूर्ति पूजा करना अधर्म है। दूसरा—उसमें करोड़ों रुपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उसमें प्रमाद होता है। तीसरा—स्त्री पुरुषों का मन्दिरों में मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं। चौथा—उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मानके पुरुषार्थ रहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गंवाता है। पांचवां—नाना प्रकार की विरुद्ध स्वरूप नाम चरित्र युक्त मूर्तियों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होके विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ा के देश का नाश करते हैं। छठा—उसी के भरोसे में शत्रु का पराजय और अपना विजय मान बैठे रहते हैं। उनका पराजय होकर राज्य स्वातन्त्र्य और धन का सुख उसके शत्रुओं के स्वाधीन होता है और आप पराधीन भठियारों के टट्टू और कुम्हार के गधे के समान शत्रुओं के वश होकर अनेकविध दु:ख पाते हैं। सातवां—जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन वा नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान करता है, वैसे ही जो परमेश्वर के उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्तियां धरते हैं, उन दुष्ट बुद्धि वालों का सत्यानाश क्यों न करे? आठवां—भ्रांत होकर मन्दिर-मन्दिर देशदेशान्तर में घूमते-घूमते दु:ख पाते, धर्म

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सार्वजनिक सेवा हेतु समर्पित—

स्व० श्रीकरण शारदा का प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व

—ले० डा० भवानीलाल भारतीय

अजमेर के सुप्रसिद्ध शारदा परिवार की आर्यसमाज तथा उसके प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के प्रति अपूर्व निष्ठा प्रारम्भ से ही रही है। श्री करण शारदा के दादा श्री रामविलास शारदा तो अपने चचेरे भाई श्री हरविलास शारदा के साथ ऋषि दयानन्द की मृत्यु शैया पर भी उपस्थित थे और उन्होने उस महाप्राण व्यक्ति के महाप्रस्थान को अपने चम चक्षुओ से देखा था। श्रीकरण जी के पिता चादकरण शारदा चाहे जन्म की दृष्टि से वैश्य कुल मे ही उत्पन्न हुए थे किन्तु उन्हे क्षत्रियोचित गुण स्वभाव मे ही प्राप्त थे। उनका सम्पूर्ण जीवन देश, जाति और धर्म की रक्षा तथा उत्थान हेतु ही समर्पित था। उन्होने धनोपाजन, यहा तक कि जीविकोपार्जन की ओर भी कभी व्यवस्थित रीति से ध्यान नही दिया था। वे महान् स्वप्नद्रष्टा थे, अत जीवनभर देश सेवा और आयसमाज के माध्यम से वैदिकधर्म को लोकव्यापी बनाने के लिए ही प्रयत्नशील रहे। महात्मा गाधो के असहयोग आदोलन मे भाग लेकर कारावास भोगना तथा राजस्थान के रजवाडो मे आजादो का शखनाद करने के लिए सेठ जमनालाल बजाज तथा गणेशशकर विद्यार्थी जैसे नेताओ के सहयोग से राजपुताना मध्यभारत सभा की स्थापना करना यह बताता है कि वे स्वदेशवासियो के राजनैतिक हितों के सरक्षण के लिए बडे से बडा बलिदान करने के लिए भी सदा तत्पर रहते थे। स्व० श्रीकरण जी ने मुझे खुद बताया था कि उनके पिता तो प्राय सार्वजनिक कार्यों मे भाग लेने के कारण अजमेर से बाहर ही रहते थे, उनकी माता सुखदा देवी की मृत्यु बहुत पहले ही हो गई थी। अत अपने छोटे बहिनो की नित्य प्रति की देखभाल का दायित्व भी उन पर ही था। उन दिनो उन के परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत सन्तोषप्रद नही थी। ऐसी स्थिति में चादकरण शारदा अपनी सन्तानो को देशभक्ति एव समाज सेवा के आदर्श के अतिरिक्त और क्या दे सकते थे।

स्व० शारदा जी चादकरण जी के सबसे बडे पुत्र थे। उनका जन्म आषाढ कृष्णा प्रतिपदा १९७६ वि० (१४ जून १९१९) को बडौदा में हुआ। पितृकुल की ही भाति शारदा जी का मातृकुल भी समाजसेवा की दृष्टि से यशस्वी तथा आदरणीय था। उनके नाना मास्टर आत्माराम जी यद्यपि मूलत अमृतसर के निवासी थे किन्तु बडौदा के प्रगतिशील नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड के द्वारा आमन्त्रित होकर वे उक्त राज्य मे हरिजनोत्थान तथा शिक्षा प्रचार का काय कर रहे थे। शारदा जी का जन्म अपने नाना के घर पर ही हुआ। यह घर उन दिनो भूत बगले के नाम से जाना जाता था, क्योंकि प्रचलित विश्वास के अनुसार उसमे भूत रहते थे।

शारदा जी की शिक्षा अजमेर तथा आगरा में हुई। जिन दिनों वे आगरा कालेज मे एल० एल० बी० कर रहे थे उन दिनो देश में भारत छोडो आदोलन अपने उत्कर्ष पर था। देशभक्ति का भाव तो शारदा जी को विरासत मे मिला था। अत वे कालेज से निष्कासित किये जाने की चिन्ता न करते हुए इस आदोलन मे कूद पडे। इसी वर्ष उनका विवाह बरार केसरी (विदर्भ केसरी) देशभक्त स्व० श्री ब्रजलाल बियाणी की पुत्री कमला जी से हुआ। भारत के दो देशभक्त एव समाजसेवी परिवारो का यह आदश सम्बन्ध था।

कालातर में शारदा जी ने अजमेर मे वकालत करना आरम्भ किया किन्तु वे सार्वजनिक गतिविधियो मे भी निरन्तर भाग लेते रहे। प्रारम्भ में वे काग्रस के सदस्य तथा कायकर्ता रहे किन्तु इस सस्था की कतिपय नीतियो से खिन्न होकर वे जनसघ मे सम्मिलित हो गये। आपातकाल के दौरान उन्हे नवम्बर १९७५ में कारावास में डाल दिया गया। निरन्तर १८ मास तक जेलयातना भोगकर वे दिसम्बर ७६ के अन्त में अस्वस्थ होने के कारण पेरोल पर रिहा हुए। १९७७ के मार्च मे सम्पन्न चुनावो मे उन्होने जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में अजमेर मे ससद के लिए चुनाव लडा और एक लाख से अधिक मतो से विजयी रहे। उनका सांसद का कार्यकाल यद्यपि स्वल्प ही रहा किन्तु इसी अवधि में उन्होंने अपने नगर तथा चुनाव क्षेत्र के हित के अनेक कार्य किये।

शारदा जी ने मुझे स्वय बताया था कि इस शताब्दी के छठे दशक में वे उच्च वेतन पर बिडला उद्योगो मे सेवा हेतु जाने के लिए तत्पर थे किन्तु परोपकारिणी सभा के तत्कालीन प्रधान महाशय कृष्ण ने उन्हें कहा कि यदि वे अजमेर से चले जायेंगे तो स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के कार्यों को बडी हानि पहुचेगी। अत. महाशय जी की प्रेरणा और परामर्श से शारदा जी ने अपने वैयक्तिक हित को तिलाजलि देकर सभा के कार्य को ही प्राथमिकता दी और वे सर्वात्मना परोपकारिणी सभा को समुन्नत करने मे जुट गये। उनके सुदीर्घ मन्त्रित्व काल मे इस सभा ने विविध दिशाओ में जो उन्नति की है उसका मूल्याकन आवश्यक है। सभा की आय में वृद्धि के लिए दयानन्द मार्केट का निर्माण, प्रतिवर्ष ऋषि मेले का आयोजन, परोपकारी मासिक का प्रकाशन, ऋषि दयानन्द के ग्रथों का सुरुचिपूर्ण मुद्रण एव प्रकाशन तथा सर्वोपरि १९८३ ई० में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि की निर्वाण शताब्दी का सफल आयोजन शारदा जी के कृतित्व के मील पत्थर कहे जा सकते हैं।

मैं शारदा जी के व्यक्तिगत सम्पर्क में तो तभी से आने लगा जब मैं नियमित रूप से ऋषि मेलो में उपस्थित होने लगा था। किन्तु १९६९ में मेरे अजमेर के गवर्नमेंट कालेज मे स्थानान्तरण के पश्चात् तो मैं शारदा जी के निकट सहयोगी के रूप मे परोपकारिणी सभा की प्रवृत्तियों में भाग लेने लगा। मुझे उन्हें निकट के देखने के अनेक अवसर मिले थे और मैंने अनुभव किया कि वे एक निष्ठावान कार्यकर्त्ता, ऋषि दयानन्द के श्रद्धावान् भक्त तथा अथक परिश्रमी थे। सभा के प्रशासन तथा उसके वित्तीय साधनो को सचालित करने में वे पूरी रुचि लेते थे। यही कारण है कि अनेक सकटों मे भी उन्होंने सभा को आर्थिक दृष्टि से विपन्न होने से बचाया और उसके साधनो एव सम्बलों में वृद्धि की। देश के अनेक सम्पन्न व्यापारिक घरानो से व्यक्तिगत सम्बन्ध तथा परिचय होने के कारण वे सभा को प्रभूत मात्रा में दान दिलाने में सहायक होते थे। यही कारण है कि कई लाख रुपयो की विशाल एव भव्य यज्ञशाला दयानन्द उद्यान में बन सकी और निर्वाण शताब्दी हेतु लाखों रुपये सरलतापूर्वक एकत्र हो गये।

वे विगत अनेक वर्षों से हृदयरोग से पीड़ित थे। वे यह भी जानते थे कि उनके रोगग्रस्त शरीर ने उनके जीवन को किस बिन्दु तक पहुँचा दिया है, तथापि वे कर्त्तव्यपालन से कभी पीछे नही हटे। गत अप्रेल को २८ तारीख को जब सभा की कार्यकारिणी की बैठक में हमने उन्हे पर्याप्त स्वस्थ देखा तब तो किसी को इस बात की आशका तक नही थी कि वे इतने जल्दी हम से बिछुड जायेंगे। मेरे उनसे आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध थे, जिन्हें लिपिबद्ध करना कठिन है। आर्यसमाज के प्रति उनकी सेवायें सदा आदर की दृष्टि से देखी जायेंगी।

अन्तरंग सभा की बैठक में महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक २४ अगस्त को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा सर्वप्रथम उग्रवादियों द्वारा पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वैद्य की कायरता पूर्वक की गई हत्या की निन्दा की गई और उनके अतिरिक्त अन्य दिवंगत आर्य महानुभावों को दो मिनट खड़े होकर मौन श्रद्धांजलि दी गई। बैठक में अन्य विशेष उल्लेखनीय निम्न प्रकार निश्चय भी किये गये—

१- नये उपदेशकों की सभा में नियुक्तिया—

सभा के वेद प्रचार कार्य का विस्तार करने के लिए ब्र० सजयदेव जी, ब्र० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री को उपदेशक तथा श्री स्वामी देवानन्द जी, श्री रणवीरसिंह बेधड़क को भजनोपदेशक पदों पर नियुक्तियां की हैं। ब्र० सजयदेव जी का प्रचार क्षेत्र जि० भिवानी, महेन्द्रगढ़ तथा ब्र० हरिश्चन्द्र शास्त्री का प्रचार क्षेत्र जि० फरीदाबाद एवं गुड़गांव रहेगा। इनके साथ एक-एक भजन मण्डली को भी नियुक्त किया गया।

२- आकाशवाणी रोहतक से समाज सुधार के लिए विद्वानों तथा भजनोपदेशकों के कार्यक्रम प्रसारण हेतु कार्यक्रम—

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन हेतु वैदिक विद्वानों तथा प्रभावशाली भजनोपदेशकों के नामों की सूची भेजी गई है और केन्द्र निदेशक महोदय से अनुरोध किया गया है कि हरयाणा की संस्कृति के संरक्षण हेतु समय-समय पर वैदिक विद्वानों की वार्ता तथा भजन मण्डलियों के समाज सुधार सम्बन्धी लोकगीतों के प्रसारण की व्यवस्था करें।

३- जिलेवार वेद प्रचार समितियां बनाने का कार्यक्रम—

हरयाणा के प्रत्येक जिले में आर्यसमाज के प्रचार को सुचारु रूप से करने के लिए जिले के प्रमुख तथा लगनशील आर्य कार्यकर्त्ताओं पर आधारित वेद प्रचार समिति के सदस्यों को मनोनीत किया जायेगा। सभा के अन्तरंग सदस्यों में से जिलेवार एक सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता नियुक्त करके एक उपदेशक तथा एक भजन मण्डली को वेद प्रचारार्थ उस जिले में रखा जायेगा। प्रत्येक जिले में आर्य महा सम्मेलनों के आयोजन करने की भी योजना बनाई गई है। चौ० राजेन्द्र-सिंह पूर्व विधायक बल्लबगढ़ के प्रस्तावानुसार जि० फरीदाबाद की ओर से पहला जिला आर्य महासम्मेलन पलवल शहर में २८ से २९ सितम्बर को रखा गया है। इसकी तैयारी आरम्भ कर दी गई है।

४- प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती का ८९वीं जयन्ती समारोह—

प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती की जयन्ती पर एक साहित्यिक गोष्ठी षड्दर्शन समन्वय पर १० अक्तूबर को तथा ११ अक्तूबर को श्री सिद्धान्ती जी का जन्म दिवस गत वर्षों की भान्ति धूमधाम से मनाने का कार्यक्रम बनाया गया। बैठक में आर्य संगीत सम्मेलन तथा भजन प्रतियोगिता के कार्यक्रम की भी स्वीकृति दी गई।

५- महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय में महर्षि दयानन्द वैदिक शोध संस्थान स्थापित करने की मांग—

महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक के कुलपति से एक प्रस्ताव में अनुरोध किया गया है कि पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़ तथा कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय की भान्ति महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक में भी महर्षि दयानन्द की विचारधारा तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ शोध संस्थान की स्थापना करके सभा की पुरानी मांग को पूरा करें ताकि महर्षि दयानन्द के नाम पर बना विश्व विद्यालय वैदिक साहित्य के प्रचार का मुख्य केन्द्र बनाया जा सके।

६- गोरक्षा सम्मेलनों का आयोजन—

हरयाणा प्रदेश में गोहत्या पर कानूनन पाबन्दी है, परन्तु चोरी छिपे कसाई व्यापारी यमुना के मार्गों से हरयाणा से गौओं को उत्तर-प्रदेश तथा बंगाल में भेजते रहते हैं। इस प्रकार गौनिर्यात रोकने के लिए वातावरण तैयार करने तथा गोरक्षा के प्रचारार्थ यमुना के किनारों पर बने पुलों के पास गोरक्षा सम्मेलन रखने की योजना की स्वीकृति दी गई है। चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक ने पानीपत के निकट सनौली में इस प्रकार के गोरक्षा सम्मेलन की तैयारी करने का कार्यभार सम्भाल लिया है।

७- धर्मनिरपेक्ष के स्थान पर सम्प्रदायनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग करने का अनुरोध—

भारतीय संविधान के संस्कृत संस्करण में सम्प्रदायनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग किया गया है। अतः सभा ने भारत सरकार से अनुरोध किया है कि धर्मनिरपेक्ष के स्थान पर सम्प्रदायनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग किया जाये। धर्म और सम्प्रदाय शब्द में दिन रात का अन्तर है।

८- आर्यसमाजों में अभियोग करनेवालों की सदस्यता समाप्त करने का नियम—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रस्तावानुसार आर्यसमाज के जो सभासद परस्पर में विवादों के निवारण के लिए अदालतों में अभियोग चलायेंगे अथवा सभा से सम्बद्ध आर्यसमाज को स्वतन्त्र रूप से रजिस्टर्ड (पंजीकृत) करवायेंगे, उन सभासदों की प्राथमिक सदस्यता समाप्त करने का प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया है। प्रस्ताव में आर्यसमाज के अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने वाद-विवाद सभा के माध्यम से समाप्त करावें। सभा के विधान में एक न्याय सभा का प्रावधान पूर्व ही किया हुआ है।

९- सभा का वार्षिक अधिवेशन २९ अक्तूबर को रोहतक में निश्चित—

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का आगामी वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) २९ अक्तूबर रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में होना निश्चित किया गया है। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन किया गया है कि वे वेद प्रचार दशांश की प्राप्तव्य धनराशि यथाशीघ्र सभा को भेज देवें। —प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल में वनमहोत्सव

आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा में दिनांक ९-८-१९८९ को ठाकुर बहादुरसिंह जी M L A की अध्यक्षता में वनमहोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर जिला सिरसा युवा कांग्रेस के प्रधान श्री होशियारीलाल जी, डा० आर० एस० सांगवान प्रबन्धक, श्री द्वारकाप्रसाद जी जिन्दल प्रिंसिपल एवम् ठाकुर बहादुरसिंह जी ने वनों के महत्त्व पर अपने ओजस्वी विचार रखे। विद्यालय सह प्रबन्धक श्री नित्यानन्द जी ने सबका हार्दिक धन्यवाद किया तत्पश्चात् विद्यालय के प्रांगण में २० पौधे भी लगाए गए।

बरनाला सरकार ने अल्पसंख्यक समुदाय का विश्वास खो दिया है

अकालियों ने पंजाब समझौते को समाप्तप्राय कर दिया अतः १९७० का एवार्ड तुरन्त लागू किया जाये। प्रो० शेरसिंह

रोहतक २६ अगस्त। गत २४ अगस्त को दयानन्द मठ रोहतक में रक्षावाहिनी की मीटिंग हुई जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने की। इस मीटिंग में हरयाणा के कोने-कोने से नेता पधारे। इस अवसर पर जो प्रस्ताव पारित किए गए इस प्रकार हैं —

१—प्रथम प्रस्ताव में कहा गया है कि पंजाब की बरनाला सरकार एक धर्मनिरपेक्ष सरकार की तरह नहीं अपितु पंथक सरकार के रूप में कार्य कर रही है। इसने अपनी निष्ठा देश के संविधान के प्रति व्यक्त करने की बजाए पंथ के प्रति व्यक्त की है। इस सरकार में शामिल कई मन्त्रियों के तस्करों एवं अलगाववादियों से सबन्ध हैं। इस सरकार ने पंजाब में आबाद अल्पसंख्यकों का विश्वास खो दिया है और अपनी जान-माल की सुरक्षा न होने के कारण ये अल्पसंख्यक समुदाय के लोग देश के अन्य भागों में जाने के लिए विवश हुए हैं। बरनाला सरकार उन लोगों को यथोचित सुविधाएं प्रदान करने में भी असमर्थ रही है जो पंजाब के हो गांवों से पंजाब के शहरों और कस्बों में अपनी सुरक्षा के लिए आए हैं। पंजाब से हिन्दुओं के पलायन के कारण देश के अन्य भागों में भी तनाव, रोष की भावना जन्म ले रही है जिससे वहां भी अशान्ति पैदा होने का खतरा पैदा हो गया है।

इसके अलावा बरनाला सरकार ने पंजाब में भारत पाक सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने के विधेयक के बारे में भी राज्यसभा में अड़चनें डाली। इन सब तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी ऐसा अनुभव करती है कि देश को अलगाववादियों, तस्करों तथा अन्य समाज व राष्ट्रविरोधी तत्त्वों से सुरक्षित करने के लिए यह आवश्यक है कि पंजाब में बरनाला सरकार को चलता करके वहां अविलम्ब राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये।

२—इस मीटिंग में पारित दूसरा प्रस्ताव था कि मैथ्यू, वेंकटरमैया आयोगों की सिफारिशों को नकारते हुए तथा देसाई आयोग का बहिष्कार करके, साथ ही एसवाईएल नहर की खुदाई के कार्य में अड़चनें पैदा करके अकालियों ने पंजाब समझौते को खत्म कर दिया है, तथा अब इस मृत शिशु को जिसे इसकी माता ने ही मारा है, पिता द्वारा गोद में उठाए रखने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। इसलिए हरयाणा रक्षावाहिनी का विचार है कि केन्द्र सरकार को तथाकथित पंजाब समझौते को दफनाते हुए स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी के अबोहर-फाजिलका वाले १९७० के एवार्ड को लागू कर देना चाहिए। इराडी ट्रिब्यूनल के समक्ष पंजाब सरकार के वकील द्वारा दिये गए संकेत इस बारे में काफी हैं कि अकाली सरकार इराडी ट्रिब्यूनल की सिफारिशों को नकार देगी, आयोगों एवं ट्रिब्यूनल की सिफारिशें अकालियों के लिए भी मान्य हैं, किन्तु वे यदि इन लिखित वायदों से पीछे हटते हैं तो भारत सरकार को रावी-व्यास के बारे में अपना १९७६ का फैसला क्रियान्वित कर देना चाहिए।

३—तीसरा प्रस्ताव—इस सभा में यह पारित किया गया कि हरयाणा रक्षा वाहिनी राज्य सभा में अधिनियम २४९ के बारे में कई राष्ट्रीय स्तर के राजनैतिक दलों द्वारा अदा की गई भूमिका की तीव्र शब्दों में निन्दा करती है। जो उन्होंने राष्ट्रविरोधी तत्त्वों की हिमायत करके प्रकट की है। इस बारे में लोकदल, जनता पार्टी द्वारा किए गए रोल पर रक्षावाहिनी को बहुत दुःख हुआ है जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर के नेताओं चौ० चरणसिंह व मोरारजी देसाई की देशभक्ति की नीति के विरुद्ध अकालियों का समर्थन किया। जिसकी वजह से इस अधिनियम को आगे के लिए टालना पड़ा।

देश आज भीषणतम संकटों से गुजर रहा है और कई बाहरी ताकतें राष्ट्रविरोधी तत्त्वों के साथ लगी हुई हैं जो देश को खण्डित कराना चाहती हैं। इसलिए हरयाणा रक्षावाहिनी पुरजोर शब्दों में भारत सरकार से अपील करती है कि वह यथाशीघ्र आर्डीनेन्स जारी करके पश्चिम सीमा पर सुरक्षा पट्टी की व्यवस्था करे। सीमा पर वर्तमान स्थिति का तकाजा है और साथ ही यह प्रजातांत्रिक कदम उठाना वैसे भी आवश्यक है ताकि सीमा पार से देश के अन्दर प्रवेश करनेवाले तस्करों, हथियारों एवं राष्ट्रविरोधी तत्त्वों की घुसपैठ को रोका जा सके। इस कदम को सुरक्षा के हित में तुरन्त उठाना आवश्यक है जिससे पंजाब एवं देश में आतंकवादी गतिविधियों पर प्रभावी ढंग से अंकुश लग सके।

हरयाणा रक्षावाहिनी की इस बैठक में उपस्थित नेता चौ० धर्म-सिंह राठी पूर्व विधायक, प्रिंसिपल लाभसिंह पानीपत, चौ० राजेन्द्रसिंह पूर्व विधायक, ला० लच्छमनदास बल्लबगढ़, प० पारब्रह्म परमार्थी, राव रामचन्द्र आर्य रेवाड़ी, वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य नारनौल, श्री बलदेव कृष्ण आर्य करनाल, डा० रणजीतसिंह आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र, प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार जाट कालेज हिसार, ला० छबीलदास, ला० बदरीप्रसाद आर्य जीन्द, वैद्य रामलाल आर्य यमुनानगर, डा० मनोहर लाला आर्य कैथल आदि ने इन प्रस्तावों का समर्थन किया तथा हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह द्वारा हरयाणा की जनता का निडरतापूर्वक मार्गदर्शन करने के लिए आभार प्रकट किया। प्रो० साहब से अनुरोध किया कि वे भारत सरकार पर जोर डालें कि यदि पंजाब सरकार २ अक्तूबर तक नहर की खुदाई पूरी न करे तो हरयाणा की सीमा से पंजाब को कोयला तथा डीजल की सप्लाई बन्द कर देवे। सभी कार्यकर्ताओं में इस बात पर रोष था कि जब अकाली एक पंजाबी भाषी ग्राम कन्दूखेड़ा हरयाणा को नहीं देना चाहता तो फिर पंजाब को अबोहर-फाजिलका के १०५ हिन्दी भाषी ग्राम भी नहीं देने चाहिए। बैठक में उग्रवादियों द्वारा भारत के पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वैद्य की तथा पंजाब के निर्दोष हिन्दुओं की हत्या की निन्दा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—महाशय भरतसिंह संयोजक हरयाणा रक्षावाहिनी

आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज प्रेमनगर जेल रोड रोहतक में १५-८-८६ से १९-८-८६ तक वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया।

आचार्य सुदर्शनदेव जी ने १५-८-८६ को ईश्वर विषय पर वैदिक प्रमाणों सहित विचार रखे। १६,१७-८-८६ को स्वामी धर्मानन्द जी ने वैदिक वर्ण व्यवस्था व शुद्धि विषय का विचार बड़े हृदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किए। अन्तिम दिन रक्षाबन्धन पर स्वामी जीवनानन्द जी महाराज ने परस्पर एक होकर धर्म, देश तथा मानवता की रक्षार्थ शपथ सभी सज्जनों को दिलवाई। सभी उपस्थित सज्जनों ने परस्पर रक्षा सूत्र बांधे। प्रधान श्री रामप्रकाश सांगवान विधिवक्ता ने स्वामी जी महाराज को रक्षा सूत्र बांधा। पूरे सप्ताह श्री प० मुशीराम जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा समाज पुरोहित प० मनफूलसिंह जी के मनोहारी जोशिले भजन होते रहे। १५१ रु० सभा को दान दिया गया।

—मा० ईश्वरसिंह प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

जिला भिवानी मे वैदिक धर्म प्रचार की धूम

"वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" इस उद्देश्य को सामने रखते हुए ही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक एव युवाविद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी तथा सभा के युवा भजनोपदेशक प० तेजपाल जी आर्य दिन-रात आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्यक्रमो मे जुटे हुए हैं। मा० कुलवन्तराय जी आर्य सभा उपदेशक का भी इस कार्य में योगदान रहता है। दिनाक ६ जुलाई से ३१ जुलाई तक निम्नलिखित ग्रामो मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया –

१- ५-६ जुलाई—सिवानीमण्डी (भिवानी) २- ७ ८ जुलाई—नलवा (हिसार) ३- ९-१० ११ जुलाई—नीमली (भिवानी) ४- १२-१३ जुलाई बोन्दकला (भिवानी) ५- १४-१५ जुलाई—साजरवास (भिवानी) ६- १६-१७ जुलाई—रानीला (भिवानी) ७- १८ १९ जुलाई—मन्दौला (भिवानी) ८- २०-२१-२२ जुलाई—छिल्लर (भिवानी) ९- २३-२४-२५ जुलाई—चिडिया (भिवानी) १०- २६ जुलाई—नन्दगाव (भिवानी) ११- २७ जुलाई—रूपगढ (भिवानी) १२- २८-२९ जुलाई—नई अनाज मण्डी (भिवानी) १३- ३०-३१ जुलाई- पैंतावास खुर्द (भिवानी)।

इन अवसरो पर अनेक युवको ने यज्ञोपवीत लिए, अपने दुर्व्यसनों को छोडने का व्रत लिया तथा आर्यसमाज के सम्पर्क में आए। कई व्यक्तियो ने अमावस्या तथा पूर्णमासी को यज्ञ करने का व्रत लिया। इस प्रकार यह कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली रहा।

—बनीसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज चिडिया जिला-भिवानी (हरयाणा)

योगिराज ! है तुम्हें प्रणाम !!

–राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

विश्वजयी ! हे वेद धनी तुम !
तुम थे सिद्धि-निधि के सार।
कालजयी हे ! वीर व्रती तुम।
तुममें थी नव शक्ति अपार।

सत्य-शिवम्-सुन्दरम् तुम्हारा।
था व्यक्तित्व सुलक्षित ललाम।
योगिराज ! है तुम्हे प्रणाम॥

ज्ञानी-विज्ञानी-बलशाली,
तुम थे भारत के अभिमान।
शक्ति अपरिमित, सत्साहस से,
बने तुम्ही युग के भगवान्।

कस तथा शिशुपाल, जरासध-
का कर डाला काम-तमाम।
योगिराज ! है तुम्हे प्रणाम॥

अमृतमय उपदेश तुम्हारे,
गीता मे हैं सचित।
सारा विश्व तुम्हारे बल से-
व विवेक से परिचित।

कृष्ण ! तुम्ही ने जागृति का।
सदेश गुजाया ग्राम ग्राम।
योगिराज ! है तुम्हें प्रणाम॥

पंजाब मे की जा रही हत्याओ की निन्दा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार १५ अगस्त, १९८६ को हरयाणा के आर्यसमाजो मे पजाब बचाओ, देश बचाओ दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आतकवादियो द्वारा की जा रही हत्याओ की निन्दा की गई।

१-आर्यसमाज खरकडा जि० रोहतक २-आर्यसमाज कासनी जि० रोहतक ३-आर्यसमाज सेक्टर ७, फरीदाबाद ४-आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक।

इन आर्यसमाजों ने एक प्रस्ताव पास करके भारत सरकार से माग की है कि पजाब में बरनाला सरकार को तुरन्त निलम्बित करके राष्ट्रपतिराज किया जाये तथा पाकिस्तान से लगती सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाकर सेना के सहारे आतकवाद को समाप्त किया जाये।

शोक-समाचार

डा० धर्मचन्द जी लखित कुरुक्षेत्र शनिवार १६-८-८६ को स्वर्ग सिधार गये हैं।

उनकी आत्मा की शान्ति के लिए हवन यज्ञ तथा रस्म पगडी (किरया) २८-८-८६ वीरवार को निवास स्थान गीता कालोनी (गीता हाई स्कूल के सामने) कुरुक्षेत्र मे की गई। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

ग्राम कुम्भा (हिसार) में वेद प्रचार सम्पन्न

दिनाक १५, १६, १७ अगस्त, १९८६ तक ग्राम कुम्भा मे वेद प्रचार का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी एव मैंने ईश्वर की सत्ता, यज्ञ क्या है, सत्सग से लाभ, आर्यसमाज क्या चाहता है, शराब सब पापो की जड है, आदि विषयो पर विचार रखे। इनके अतिरिक्त प० ईश्वरसिंह तूफान के शिक्षाप्रद भजन हुए।

प्रतिदिन प्रात काल चोगाड में यज्ञ किया गया। जिसमें गाव के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने मा० फूलसिंह जो ने हुका न पीने का व्रत लिया। श्री रणसिंह नम्बरदार एव भूतपूर्व सरपच ने शराब न पीने का व्रत लिया। साथ में दोनो ने जनेऊ धारण किये। कुछ अन्य नवयुवको ने भी यज्ञोपवीत धारण किये। ग्रामवासियो की यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा जुड गई। दोनो दिन प्रभुकृपा से यज्ञ के बाद अच्छी वर्षा हो गई। वेद प्रचार का गाव में अच्छा प्रभाव रहा।

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

गिनती में वेद व विद्वानों के मत

एक दो तीन चार पांच से सूत्र बीस बनाये।
वेद और विद्वान् एक स्वर से यही गाये॥

एक ईश्वर निराकार जिसने सारा जग बनाया।
एक धर्म है मानव का ये वेदों में बतलाया।
दयानन्द एक था जिसने सोया देश जगाया।
एक लिखा सत्यार्थ प्रकाश जो सच्चा ज्ञान दर्शाये।

पति पत्नी दो रह प्रेम से उत्तम सन्तान बनायें।
धर्म कर्म दो नियम मानव को बतलाये।
सत्य और असत्य दो सत्यार्थ प्रकाश बताएँ।
दया और आनन्द शब्द दो थे दयानन्द कहलाये ॥२॥

तीन अक्षर का नाम सुनहरा ओ३म् बतलाया।
तीन काल में जाना जाता जिसने धर्म बचाया।
तीन शिक्षक हो उत्तम जब होज्या भाग सवाया।
तीन कृति अमर प्रभु सूर्य चांद पृथ्वी बनायें॥

वेद बताए चार जो है ज्ञान का भण्डार।
पांच बताएं तत्त्व जो है जीवन का आधार।
पांच महायज्ञ करने से होते उत्तम विचार।
'रामचन्द्र' पांच कली में ऋषि मत अपनाएं।

—लेखक मा० रामचन्द्र आर्य, आर्य निवास—बडवा (भिवानी) 125045

कविता

मेरे देश की भोली जनता, मुसलमान कृष्टान बने।
भारत भारत भारत के, कैसे मन्त्री प्रधान बने॥

अन्धा धुन्ध दुकान चल रही गली गली भगवानों की।
करें कीर्तन टल्लो बज रही स्याने और दीवानों की।
राधा कृष्ण नाम ले लेकर क्या पूछो उन गानों की।
कितनी अक्ल खराब हुई है इन मति मन्द लजानों की।
चक्र सुदर्शन भूल गए केवल मुरली की तान बने॥ १

चाट रहे जो माल रात दिन होटल के टोटल जारी।
खारी बोतल व शराब अन्डे मुर्गों की तरकारी।
क्वारी सी नहीं कोई दीखती घूम रही नंगी नारी।
कितनी ख्वारी नित्य डूबता जाता बेडा सरकारी।
नेता अभिनेता, अभिनेता नेता बे पहचान बने॥ २

ध्यान देश का नहीं रत्ती भर भर जाए उनकी झोली।
धर्म कर्म मा बाप हवन और सन्ध्या में मारो गोली।
हमजोली वो फिल्म तितलिया उनके संग नाचे टोली।
नारी नर सी, नर नारी से देखो कैसी हद होली।
चोली दामन के चक्कर में किस प्रकार शैतान बने॥ ३

भोग विलासी दुराचार का बाज रहा खुलकर डंका।
फका कर के हया शर्म का नहीं रही कोई शंका।
भर भर स्वांग नचाते उनको हुए वीर जो रण बंका।
करी जिन्हों ने भस्म अनेकों युग युग सोने की लंका।
आज मन्दिरों में शिव, विष्णु पत्थर के हनुमान बनें। ४

बीस रुपए ठग दश पैसे मन्दिर में आन चढ़ाता है।
रिश्वत ब्लैक बेईमानी कर कर भगवान् मनाता है।
तालों में भगवान् बन्दकर निश दिन नाच नचाता है।
"व्याकुल" कवि गीत गाता पर सुनता कहा विधाता है।
खाता न हिन्दू हिन्दू को तो किस का अहोसान बने। ५

रचयिता
प्रकाशवीर व्याकुल
आर्यसमाज नया बास दिल्ली—६

(पृष्ठ १ का शेष)

संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीडित होते, ठगों से ठगाते रहते हैं। नववाँ—दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार लड़ाई बखेड़ों में व्यय करते हैं जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है। दशवाँ—माता-पिता आदि माननीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं। ग्यारहवाँ—उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता वा चोर ले जाता है तब हाय—हाय करके रोते रहते हैं। बारहवाँ—पुजारी परस्त्रियों के संग और पुजारिन परपुरुषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री पुरुष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं। तेरहवाँ—स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरुद्धभाव होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। चौदहवाँ—जड का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड बुद्धि हो जाता है, क्योंकि ध्येय का जडत्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है। पन्द्रहवाँ—परमेश्वर ने सुगन्धि युक्त, पुष्पादि पदार्थ वायु जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं, उनको पुजारी जी तोड़-ताड़ कर नष्ट कर जाते उन पुष्पों की कितने दिन तक सुगन्धि आकाश में चढ़कर वायु जल की शुद्धि करता और पूर्ण सुगन्धि के समय तक उसका सुगन्ध होता, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल सडकर उल्टा दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। क्या परमात्मा ने पत्थर पर चढाने के लिये पुष्पादि सुगन्धि युक्त पदार्थ रचे हैं, सोलहवाँ—पत्थर पर चढे हुए पुष्प चन्दन और अक्षत आदि सबका जल और मृत्तिका के संयोग होने से मोरी वा कुण्ड आकर सडके इतना उससे दुर्गन्ध आकाश में चढता कि जितना मनुष्य के मल का, और सहस्रों जीव उसमे पडते उसी में मरते और सडते हैं। ऐसे-ऐसे अनेक मूर्तिपूजा करने में दोष आते हैं। इसलिये सर्वथा पाषाणादि मूर्तिपूजा सज्जन लोगों को त्यक्तव्य है और जिन्होंने पाषाणमय मूर्ति की पूजा की है, करते हैं, और करेंगे, वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे हैं और न बचेंगे।

यजुर्वेद अध्याय ३२, मन्त्र ११ में परमेश्वर की व्यापकता इस तरह दर्शाई है—

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वा प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि स विवेश॥

(परीत्य भूतानि) जो परमेश्वर आकाशादि सब भूतों में तथा (परीत्य लोकान्) सूर्यादि सब लोकों में व्याप्त हो रहा है, (परीत्य सर्वा०) इसी प्रकार जो पूर्वादि सब दिशा और आग्नेयादि उपदिशाओं में भी निरन्तर भरपूर हो रहा है, अर्थात् जिसकी व्यापकता से एक अणु भी खाली नहीं है, (ऋतस्या०) जो अपने भी सामर्थ्य का आत्मा है, (प्रथमजा) और जो कल्पादि में सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला है उस आनन्दस्वरूप परमेश्वर को जो जीवात्मा अपने सामर्थ्य अर्थात् मन से यथावत् जानता है, वही उसको प्राप्त होके (अभि स विवेश) सदा मोक्ष सुख को भोगता है।

दर्शनकार तथा वेद मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१	दी वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज – पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३	आर्यसमाज की विचारमाला—पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार	१-००
४	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
५.	ईसाइयों की प्रचार प्रणाली—पं० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
६	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण–पं० ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
७	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५
८.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)–पं० चमूपति एम०ए०	३-००
९	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४ ५०
१०	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
११	पंजाब का आर्यसमाज—प्रिं० रामचन्द्र जावेद	२ ००
१२.	आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री	२ ००
१३	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१४	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१५	मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१६.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
१७	वेदाविर्भाव ,,	१-००
१८	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
१९	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती–स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२०	निहारिकावाद और उपनिषद्—पं० चमूपति एम०ए०	०-५०
२१.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२२	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२३	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२४	हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१ ००
२५	बड—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२६	वीर हेमू ,,	००-७५
२७	पीपल ,,	१-५०
२८	मिर्च ,,	१-५०
२९	श्लीपद वा हाथी पांव की चिकित्सा—स्वा० ओमानन्द जी	०-२०
३०	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३१	लवण ,,	१-२५
३२	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३३	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३४	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३५	,, १-२ ,,	१-००
३६	,, ३ ,,	१-००
३७	,, ४ ,,	२-५०
३८	,, ५ ,,	२-००
३९	,, ६ ,,	३-००
४०	,, ७ ८ ,,	२-००
४१	,, ९ ,,	३-००
४२	,, १० ,,	१-५०
४३.	,, ११ ,,	२-००
४४	हल्दी ,,	१-५०
४५	नीम ,,	१-२५
४६	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४७	नास्तिक मत समीक्षा—पं० हरिदेव सर्राफ	००-१५

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

अपनी सन्तान को धार्मिक बनाइये

आजकल छात्र तथा छात्राओं को अपने प्राचीन वैदिकधर्म के सम्बन्ध में जानकारी नहीं है। उन्हें सिनेमा के अभिनेताओं के नाम तो याद हैं परन्तु अपने देश के ऋषि मुनियों तथा महापुरुषों के नाम याद नहीं हैं, जिन्होंने अपने त्याग, तपस्या तथा पुरुषार्थ से अपने राष्ट्र की वैदिक संस्कृति को जीवित रखा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या परिषद् की ओर से आर्य विद्यालयों में पढने वाले छात्र छात्राओं को वैदिकधर्म की जानकारी कराने के लिए आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डा० रणजीतसिंह जी आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र से धर्म प्रवेशिका मूल्य ३) तथा धर्म भूषण मूल्य ५) पुस्तकें प्रकाशित करवाई हैं। अतः आप यदि अपनी सन्तान को धार्मिक बनाना चाहते हैं तो इन पुस्तकों को मंगवाकर उन्हें पढने के लिए देकर वैदिकधर्म से परिचित करावें। ये पुस्तकें हरयाणा के आर्य विद्यालयों तथा गुरुकुलों में धर्म-शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी नियत की गई हैं।

प्राप्ति स्थान
प्रणेता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज कालका जि० अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री महेन्द्रलाल, उपप्रधान—रामधन, हंसराज सूद, मन्त्री—सुरेन्द्रपाल, उपमन्त्री—खेमचन्द प्रचार, रामकृपाल शर्मा कार्यालय उपमन्त्री, कोषाध्यक्ष-पूर्णचन्द, पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती चंचल गुप्ता।

आर्यसमाज बल्लभगढ फरीदाबाद

प्रधान—सर्वश्री बाबूराम, उपप्रधान-महेन्द्रकुमार बोहरा, पूर्णचन्द, मन्त्री—सुरेशकुमार एडवोकेट, उपमन्त्री—जयचन्द, सुरेशचन्द, कोषाध्यक्ष—सुभाषचन्द्र, विद्यालय प्रबन्धक—डा० राजेन्द्रप्रसाद गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—नवलकिशोर।

आर्यसमाज सैक्टर २३ न्यू टाउन फरीदाबाद

प्रधान—सर्वश्री महावीरप्रसाद मंगला, उपप्रधान—शांतिस्वरूप खुराना व चूहड़मल डाबर, मन्त्री नोनकरण, उपमन्त्री—प्रमोदकुमार भल्ला, कोषाध्यक्ष—हरप्रसाद गर्ग।

आर्य वीरदल हरयाणा का दसवां प्रांतीय महासम्मेलन

दिनांक २७-२८ सितम्बर, १९८६ शनि तथा रविवार को छोटूराम पार्क, रोहतक में आर्यसमाज के मूर्धन्य तपस्वी सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे बड़े समारोहपूर्वक हो रहा है। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध जी सरस्वती, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् प० शिवकुमार जी शास्त्री, प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प० बालदिवाकर जी हंस प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीरदल, प्रसिद्ध साहित्यकार प० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार, युवा क्रांतिकारी वक्ता डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० वेदप्रताप वैदिक सहसम्पादक नवभारत टाइम्स, डा० रामप्रकाश जी अध्यक्ष रसायन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़, युवा प्रेरणास्रोत श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी एवं प्रसिद्ध क्रांतिकारी भजनोप-देशक श्री वेगराज जी 'वेग' आदि विद्वान पधार रहे हैं।

शनिवार दिनांक २७-९-८६ को आर्य वीरदल के सहस्रों "वीरों की रैली तथा आर्यों का जलूस," आर्यवीर सम्मेलन रविवार दिनांक २८-९-८६ को वेद सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन विशेष आकर्षण के केन्द्र होंगे।

पंजाब तथा समूचे देश की परिस्थितियों पर आर्यसमाज के सुलझे हुए विचार सुनने एवं आर्य संगठन का परिचय देने के लिए सहस्रों की संख्या में रोहतक पधारिये।

निवेदक :

जगदीश मित्र आर्य
संयोजक

[illegible]कुमार आर्य
महामन्त्री

पलवल में विशाल आर्य महासम्मेलन

का आयोजन २६-२७-२८ सितम्बर, १९८६ शुक्रवार, शनिवार, रविवार को जिला फरीदाबाद की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से विशेष धूमधाम से किया जा रहा है।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने वैदिकधर्म के प्रचार एवं प्रसार को संगठित होकर चलाने के लिए आर्यसमाज के रूप में ठोस आधार दिया है।

राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता तथा विघटनकारी शक्तियों ने एक बड़ी चुनौती का रूप धारण कर लिया है।

सम्मेलन में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासीगण, राष्ट्र-नेता, भजनोपदेशक पधार रहे हैं। जिससे समस्त जनता को वैदिक सिद्धांतों की, नैतिक मूल्यों की व राष्ट्र-रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द के सन्देश व आदर्शों से अवगत होने का सुनहरी अवसर मिलेगा। इस विशाल आर्य महासम्मेलन के मुख्य आकर्षण —वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन तथा व्यायाम प्रदर्शन एवं विशाल शोभायात्रा के विशेष कार्यक्रम होंगे।

—राजेन्द्रसिंह भू०पू० विधायक स्वागताध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK ।   फोन ७८८१२   दूरभाष १,८६०८ ४३,८८७



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० सुखबीर

वर्ष १३, अङ्क ३८ ... सितम्बर १९८६   वार्षिक शुल्क २०)   आजीवन शुल्क २००)   विदेश में ३ पौंड   एक प्रति ५० पैसे

आतंकवादियों को कुचलने का वैदिक सिंहनाद

लेखक—सोमपाल शास्त्री वेद मन्दिर ज्वालापुर, हरिद्वार

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥
अथर्व० कां० १ सू० १६ मं० ४

(यदि) यदि (नः) हमारी (गाम्) गाय को (हंसि) मारता है (यदि अश्वम्) यदि घोड़े को मारता है (यदि पूरुषम्, यदि पुरुष को मारता है (तं त्वा) उस तुझ आततायी को (सीसेन) सीसे की गोली से (विध्यामः) हम बींध देते हैं। (यथा) जिससे तू (नः) हमारे (अवीरहा) वीरों का वध न करनेवाला (असः) होवे।

आज मेरे राष्ट्र का हर तरह से हनन किया जारहा है, राष्ट्र पर चारो ओर से असुरो ने आक्रमण कर दिया है। हर तरह से असुर मेरे राष्ट्र को नोच लेना चाह रहे हैं। कोई मेरे राष्ट्र की पृथिवी को बाट लेने की बात करके इसकी अखण्डता का हनन करना चाह रहा है। कोई गाय सदृश उपकारी पशुओ का हनन कर रहा है, ताकि मेरा राष्ट्र बल रहित एव दुग्ध व धनधान्य से वचित रहकर पतन के गहनगर्त मे गिर जाये। इतना ही नही यह असुरो का आक्रमण मेरे राष्ट्र सैनिको के सुरक्षा साधनों तक भी हुआ है, मेरे राष्ट्र सैनिको के हथियारो को ध्वस्त करने का प्रयास किया जारहा है।

यह असुर शक्तिया मेरे राष्ट्र के अश्वो को समाप्त करने पर भी तुली हैं, यह शक्तिया मेरे राष्ट्र की द्रुत सचार व्यवस्था को भी नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाह रही हैं, जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र मे व्याप्त अश्व की भाति द्रुत-सचार व्यवस्था पगु हो जाये तथा असुरो को अपने पापकर्म करने का अवसर मिल जाये। यह घृणित चाल यही तक सीमित नही है, सर्वाधिक शोचनीय विषय तो यह है कि मेरे राष्ट्र मे बसने वाले सभ्य पुरुषो पर भी नित्य प्राणघातक हमला किया जारहा है, राष्ट्रहित मे सर्वस्व न्यौछावर करने को उद्यत वीर, धीर पुरुषो का रक्त बहाया जारहा है। कितने हो निर्दोष, निष्पाप, राष्ट्रभक्त सुशील, सभ्य, सुसस्कृत भद्र पुरुषो के रक्त से ये असुर अपने आपको नित्य कलकित कर रहे हैं। चारो ओर त्राहि-त्राहि मची है, अब तो यह घृणित कृत्य असह्य हो उठा है, राष्ट्र-भक्त भद्र जनता अपने प्राणो की सुरक्षा की प्रत्याशा मे इतस्तत पलायन करती फिर रही है। इतना अनर्थ होने पर भी शासको को कुछ अवगत ही नही हो पारहा है कि राष्ट्र में असुरो का साम्राज्य किस चरम सीमा तक पहुच गया है।

आज मैं देख रहा हू कि असुर प्रवृत्तिया मेरे राष्ट्र को पतन की ओर ले जारही हैं। कही राष्ट्रद्रोह है, कही मानव रक्त बहाया जारहा है, कही अविश्वास की भावना है, कही स्वार्थवृत्ति है, कहीं एक दूसरे को नीचा दिखाने की बेढगी चाले हैं। लेकिन मैंने इन्हे समझ लिया है, मैं इनसे सख्ती के साथ निपटूंगा। मैं अपने राष्ट्र मे किसी भी निर्दोष की हत्या सहन नहीं कर सकता, मैं मानव-रक्त को सडको, गलियारो, बाजारो मे प्रवाहित होता नही देख सकता। मैं चाहता हू कि किसी भी निर्दोष का एक कतरा रक्त भी धरती मा के वक्षस्थल पर न पडे। क्या तुम जानते नहीं हो? मा के वक्ष पर उसी के पुत्र का रक्त गिरने से मा पर क्या बीतेगी? क्या तुम्हे मा के उपकार याद नही है? जब तुम्हारा एक भी आसू आखो से निकलने को होता था तब तुम्हारी मा क्या कुछ करने को उद्यत नही हो जाती थी? उस मा को मत सताओ, उसकी ममता का ध्यान करो।

ऐ राष्ट्रद्रोह से युक्त असुर प्रवृत्ति के हत्यारो, मैं तुम्हे अपने राष्ट्र से खदेड कर ही दम लूगा। मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचान गया हू। अब मैं तुम्हारा सर्वनाश ही करूगा। मैं तुम्हें तुम्हारे पुत्र-पौत्रो तक से रहित कर दूंगा, मै तुम पर प्राण-घातक शस्त्रो से वार करूगा, सीसे की गोली से छलनी कर दूंगा, बन्दी बनाकर कारागार में डालूगा, तुम्हे ताडित करूगा। ऐ राष्ट्रद्रोह के पक्ष मे स्वय को कलकित करने वाले असुरो तुम शीघ्र ही मेरे राष्ट्र से पलायन कर जाओ, किन्ही पर्वत मालाओ मे जाओ, वहा जाकर अपने आपको समाप्त करदो, गहन वनो मे जाकर वृक्षो से टकराओ। कुछ भी करो लेकिन मेरी धरती मा को घृणित कृत्यो से कलकित न करो। मेरे राष्ट्र को अशान्ति, दु:ख, दारिद्रय, कलह, वैमनस्य, विद्रोह का अड्डा मत बनाओ। मेरा मन राष्ट्रभावो से ओतप्रोत है। राष्ट्रवेदी पर मैं तथा मेरे राष्ट्र के निवासी अपना सवस्व न्यौछावर करने को उद्यत है। राष्ट्र को सशक्त एव उन्नत करने के लिए मैं सर्वस्व बलिदान के पथ पर बढना चाहता हू। मैं चाहता हू कि मेरे राष्ट्र के सभी निवासी पूर्ण राष्ट्र-भक्त हो, परस्पर मित्र भाव से बर्तते हो, जिससे मेरे राष्ट्र मे सुख और शाति का साम्राज्य हो।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस

नई दिल्ली २५ अगस्त महर्षि दयानन्द की १६३वी जन्मतिथि पर शुक्रवार, १२ सितम्बर १९८६ को वेदसस्थान (सी-२२, राजौरी गार्डन) मे प्रसिद्ध वेदज्ञ डा० फतहसिंह का भाषण "दयानन्द जैसा मैंने उन्हें समझा" विषय पर होगा। समारोह के मुख्य अतिथि श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती होगे और अध्यक्षता प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार करेंगे। समय ६-३० से ९-०० बजे रात्रि होगा।

आर्य संस्कृति के रक्षक योगिराज कृष्ण

कई बहन-भाई प्राय पूछा करते हैं कि क्या आर्यसमाज राम और कृष्ण को मानते हैं। वह इसलिए पूछते हैं कि उनके ख्याल मे आर्यसमाज राम और कृष्ण को नही मानते, इस प्रकार का घोर भ्रम उनमें है। वास्तव में यदि देखा जावे तो राम और कृष्ण को तो केवल आर्यसमाज ही मानता है और कोई उनके मुकाबले मे इतने ऊचे आदर्शवादी इन महापुरुषो को नही मानता, जितना कि आर्यसमाज मानता है। आओ हम योगिराज कृष्ण के जीवन का अध्ययन करे।

जन्म

कंस श्रीकृष्ण जी के पिता वसुदेव को जेल मे बन्द कर स्वय मथुरा मे राज्य करने लगा। इसी जेल मे श्रीकृष्ण जी का जन्म भाद्रपद वदि अष्टमी को हुआ। कस की बहन देवकी के पेट से जिस दिन श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ, देवयोग मे उसी दिन यशोदा रानी के पेट से कन्या का जन्म हुआ। कस के अत्याचारो मे सारी प्रजा दुखी थी। अत वसुदेव ने अपने पुत्र को नन्द जी के घर गोकुल मे भेजकर, उसकी कन्या को लाकर, अपने पास जेल में रखकर कह दिया कि कन्या का जन्म हुआ है, वह कन्या राजा कस ने मरवादी। बहुत समय के पश्चात् कस को पता चला कि वसुदेव का पुत्र कृष्ण गोकुल मे जीवित है।

छात्र अवस्था

आपने ऊपर पढ ही लिया कि श्रीकृष्ण जी का जन्म कैसी कठिन परिस्थिति में हुआ था। अब श्रीकृष्ण जी ने आचार्य सदीपन के यहा रह कर धनुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की तथा आचार्य अङ्गिरस के चरणों मे बैठकर ब्रह्मविद्या की प्राप्ति की। इन गुरुकुलो में वह अपने सहपाठी सुदामा आदि के साथ वन से समिधा और फल आदि लाते और गोपालन एव गुरु सेवा में समान रूप से तत्पर रहते थे। पढाई के समय से पूर्व ही उनमे नेता तथा लोकनायक के गुण दृष्टिगोचर होने लग गये थे, क्योकि श्रीकृष्ण ने अपनी बुद्धिमत्ता और पराक्रम से अनेक आपत्तियो से लोगों को मुक्त कराया था। स्नातक बनने के पश्चात् वह चक्रवर्ती राज्य की स्थापना मे जुडकर इसका श्रीगणेश मथुरा से किया।

प्रथम पग

श्रीकृष्ण ने पहला लक्ष्य अत्याचारी कस को बनाया। कस को मारकर यादवो के सघ की पुन स्थापना कर अपने नाना उग्रसेन को मथुरा का राजा बनाया।

दूसरा पग

जब श्रीकृष्ण ने कस को मारकर उनकी स्त्रियों 'अस्ति' और प्राप्ति को उनके पिता जरासन्ध के घर पहुँचा दिया तब जरासन्ध चढ आया। श्रीकृष्ण ने उसे २ बार हराया।

ब्रह्मचर्य पालन मे महान् तप

श्रीकृष्ण जी ने ४८ वर्ष की आयु में रुक्मिणी से विवाह किया। विवाह के पश्चात् भी पति-पत्नी का पुत्र की प्राप्ति के १२ वर्ष तक इकट्ठे रहते हुए ब्रह्मचर्यपूर्वक हिमालय पर्वत के दामन में तपस्या करना बडा भारी सयम का सूचक है। उन्होने जीवन पर्यन्त एक विवाहित रुक्मिणी को पत्नी के रूप में रखा। १६००० गोपिया तथा मक्खनचोर एव स्त्रियो के नहाते समय उनके कपडे उठाने की घटनायें निराधार और इनके अति पवित्र जीवन पर धब्बा लगाने वाली स्वार्थी लोगो की लिखी हुई है।

महाभारत युद्ध को रोकने का यत्न

श्रीकृष्ण के जीवन की यह भी बडी विशेषता है कि उन्होने एलची बनकर कई बार कौरवो को समझाया और यत्न किया कि किसी प्रकार सन्धि हो जावे और खून की नदिया न बहे, परन्तु जब सफलता न मिली तो अपनी सेना तथा धन कौरवो को और स्वय अकेले पाडवो की ओर होकर, श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन का सार्थी बनकर बडी राजनीति से सत्य पक्ष पाडवो को विजय दिलाई।

योग की विभूतियां

जयद्रथ वध के समय श्रीकृष्ण ने दृष्टि अनुबन्ध द्वारा सूर्य अस्त होने का बोध लोगो को कराया।

निर्लोभता

श्रीकृष्ण ने कस को मारकर, स्वय राज न करके उग्रसेन को मथुरा का राजा बनाया और जरासन्ध का वध करके उसके पुत्र सहदेव को राजा बनाना, उनका लक्ष्य अन्याय और अत्याचार को मिटाना था।

आदर्श मैत्री भाव

गुरुकुल के समय का अपना सहपाठी निर्धन अवस्था मे जब श्रीकृष्ण को मिलने गया। यह मैत्री प्रेम अब तक मानव के लिए प्रेरणा का आधार रहा है।

नीति मे निपुण

जब कर्ण के रथ का पहिया निकालते समय कर्ण ने अर्जुन को कहा कि धर्म आज्ञा नही देता कि निहत्थे पर तीर चलाओ। मुझे रथ का पहिया निकाल लेने दो तब तक रुको।

उस समय योगिराज कृष्ण ने ललकार कर कर्ण को कहा कि जब भीम को विष दिया था तब तुम्हें धर्म याद न आया। २—जब एक वस्त्र धारण द्रौपदी को घसीट कर भरी सभा मे लाये तब धर्म क्यो भूल गये। ३—तेरह वर्ष बीतने पर भी पाडवो को राज्य न देना भी तो अधर्म है। ४—जब सात-सात महरथियो ने मिलकर निहत्थे अभिमन्यु की हत्या की थी, तब तेरा धर्म कहा चला गया था। यह कहकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा कि धर्म तुमको कर्ण वध के लिए पुकार रहा है। अत अर्जुन ने अपने तीरो से कर्ण को समाप्त कर दिया।

सेवा का अनुपम नमूना

युधिष्ठिर के यज्ञ में आये सभी विद्वानो के चरण धोने की जुम्मेवारी श्रीकृष्ण ने ली थी। महर्षि दयानन्द ने श्रीकृष्ण जी के जीवन के बारे मे तो अति उत्तम लिखा कि श्रीकृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई भी पाप कार्य नही किया। परमपिता परमात्मा हमें बुद्धि दे कि हम उनके पवित्र जीवन से शिक्षा प्राप्त करें और जो अज्ञानी और स्वार्थी लोगो ने उनके जीवन पर लाछन लगाने का यत्न किया है, उसको भी दूर करने मे समर्थ हो सकें।

ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी
अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा

आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा को दान

लाला अमरनाथ अशोककुमार जी भटिण्डा ने श्रावणी पर्व पर अपने घर हवन-यज्ञ कराया। इस शुभ अवसर पर श्री लाला अमरनाथ जी ने ५००) आर्य वानप्रस्थ आश्रम को दान दिये।

ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी
आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा

सम्पादकीय

सुरक्षा पट्टी और बरनाला सरकार की बहानेबाजी

श्री सुरजीतसिंह बरनाला पंजाब की पश्चिमी सीमा में भारत सरकार के सुरक्षा पट्टी बनाये जाने के प्रस्ताव का विरोध किसी न किसी प्रकार का बहाना करके कर रहे हैं। पंजाब के पुलिस प्रमुख श्री रिबेरियो ने बधाई का पात्र बनने के लिए घोषणा की है कि वे ९ मास के अन्दर पंजाब से उग्रवाद समाप्त कर देंगे। उनके प्रयत्नों की तो सराहना की ही जानी चाहिये, परन्तु श्री बरनाला ने उनकी घोषणा का सहारा लेकर सुरक्षा पट्टी न बनाने के लिए भारत सरकार पर दबाव डालना आरम्भ कर दिया है। वे एक तीर से दो शिकार खेलना चाहते हैं। वे एक ओर असन्तुष्ट अकालियों को कह रहे हैं कि यदि भारत सरकार ने सुरक्षा पट्टी बनाई तो वे मुख्यमन्त्री पद का त्याग कर देंगे। इस प्रकार वे अकालियों को खुश करके अपनी गद्दी को बनाये रखना चाहते हैं, दूसरी ओर वे भारत सरकार को डरा रहे हैं कि यदि सुरक्षा पट्टी बनाई गई तो पंजाब में उग्रवाद समाप्त नहीं हो सकेगा अपितु और भयंकर रूप धारण कर लेगा। परन्तु वे अपनी गद्दी के लालच में भूल जाते हैं कि यदि पंजाब में पाकिस्तान की सीमा के साथ सुरक्षा पट्टी न बनाई गई तो पाकिस्तान से आतंकवादी प्रशिक्षण प्राप्त करके बेरोक टोक भारत में घुसपैठ करते रहेंगे और तस्कर भी मालामाल होकर देशद्रोही शक्तियों का सहारा देकर राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता के लिये खतरा बन जायेंगे।

गत सप्ताह आतंकवादियों ने जालन्धर के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश श्री गैन्द की दिन दहाड़े निर्मम हत्या करके जनता पर प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया है कि उग्रवादियों के विरुद्ध न्यायालयों में जो भी गवाही देगा, कोई वकील उनके विरुद्ध पैरवी करेगा और जो न्यायाधीश उनके विरुद्ध न्याय के अनुसार कार्यवाही करेगा, उन सबकी हत्या करदी जायेगी। क्या बरनाला सरकार उग्रवादियों की इस प्रकार की धोगामस्ती को जारी रखकर न्याय व्यवस्था को समाप्त नहीं कर रही ? उग्रवादी बड़े से बड़े अधिकारी की हत्या करके पाकिस्तान की सीमा में घुस जाते हैं और वहां से हथियार चलाने तथा तोड़फोड़ करने का प्रशिक्षण प्राप्त करके भारत की सीमा में घुस जाते हैं। ये राष्ट्र विरोधी सब कार्यवाहियाँ सुरक्षा पट्टी बनने से ही बन्द हो सकती है। यदि राष्ट्र की सुरक्षा तथा अखण्डता को बनाये रखना है तो जितनी जल्दी हो सके सुरक्षा पट्टी बलात् बना देनी चाहिए।

—प्रो० शेरसिंह

हिसार में आर्य वीरदल की शाखायें पुनः आरम्भ

हिसार के सी० ए० वी० हाई स्कूल में श्री सीताराम आर्य ने पिछले दिनों जून में शिविर लगाकर पुनः आर्य वीरदल को पुनर्जीवित कर दिया है। अब हिसार शहर के अन्दर कैम्प के हाई स्कूल में दोनों समय दैनिक शाखा लग रही है, जिसमें लगभग ७० लड़के भाग लेते हैं। इस शाखा को श्री ईशकुमार जी व अशोककुमार जी चला रहे हैं। इसके अलावा हिसार जिले में कई शाखायें नियमित चल पड़ी हैं। जिनमें कुल आर्य वीरों की संख्या ३५० के लगभग है। इन सभी शाखाओं को श्री सीताराम आर्य व उनका लड़का सत्यकाम आर्य नित्य सम्भालते हैं। जिससे बौद्धिक भी मिलता रहता है। अन्य दूसरे विद्वानों को भी भेजते रहते हैं।

— कृष्णपाल आर्य
व्यायाम शिक्षक प्रांतीय आर्य वीरदल, हरयाणा

२० सूत्री कार्यक्रम में नशाबंदी को भी सम्मिलित किया जाये

भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को एक पत्र लिखकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने २० सूत्री कार्यक्रम का स्वागत करते हुए मांग की है कि २० सूत्री कार्यक्रम में परिवार नियोजन के साथ नशाबन्दी को भी सम्मिलित किया जाये।

२० सूत्री कार्यक्रम में कृषि उत्पादन पर जोर दिया गया है। कृषि का उत्पादन बढ़ाने से जहां किसानों को लाभ होगा, वहां राष्ट्र भी सम्पन्न होगा। इसी प्रकार परिवार नियोजन से बढ़ती हुई जनसंख्या को सीमित किया जा सकता है। परन्तु राष्ट्र में शराब तथा अन्य प्रकार के नशों के सेवन करने से भारत का नवयुवक कमजोर ही नहीं हो रहा, अपितु नैतिक पतन की ओर जा रहा है। कृषि उत्पादन बढ़ जाने से किसानों में सम्पन्नता आ सकती है। यदि किसानों के परिवारों से शराब की बढ़ती हुई बीमारी को रोका न गया तो उनकी सम्पन्नता फिर नष्ट हो जायेगी।

प्रो० साहब ने अपने पत्र में जोर देकर प्रधान मन्त्री से अनुरोध किया है कि २० सूत्री कार्यक्रम में नशाबन्दी कार्यक्रम को भी सम्मिलित करके शराब तथा अन्य नशों पर पाबन्दी लगाई जाये, तभी राष्ट्र सम्पन्नता की ओर बढ़ सकता है। राष्ट्र का नवयुवक तभी स्वस्थ रह सकता है, जबकि वह विभिन्न नशों से दूर रहे। राष्ट्र में गरीबी मिटाने के लिए शराब जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहना पड़ेगा। प्रधान मन्त्री को सभा प्रधान ने आश्वासन दिया है कि शराबबन्दी कार्यक्रम में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता पूर्ववत् सहयोग करते रहेंगे। आर्यसमाज के प्रचारक भी शराब आदि के सेवन को बन्द कराने के लिए दिन रात प्रचार कार्य में संलग्न हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्रामों में शराब के विरुद्ध जनमत तैयार करवा कर पंचायतों से शराब पर प्रतिबन्ध लगवाने के लिए प्रस्ताव पास करवाये जाते हैं। आर्यसमाजों के उत्सवों पर शराबबन्दी सम्मेलन भी आयोजित होते हैं।

आदमी

जो भी चाहे कर दिखाये आदमी।
दो जहाँ में नाम पाये आदमी॥
आदमीयत का तकाजा है यही।
आदमी के काम आये आदमी॥ १

आदमी को जब सताये आदमी।
किस तरह फिर चैन पाये आदमी॥
आदमी में आदमीयत है कहां ?
आंख में किसकी समाये आदमी॥२

मकर से पैसा कमाये आदमी।
ढोंग दुनिया में रचाये आदमी॥
अपना उल्लू सीधा करने के लिए।
और को उल्लू बनाये आदमी॥ ३

देश पर कुर्बान जाये आदमी।
आन पर मिटना सिखाये आदमी॥
खेल जाये आप अपनी जान पर।
दार पर भी मुस्कराये आदमी॥ ४

पाप को जड़ से हिलाये आदमी।
धर्म की जय जय बुलाये आदमी॥
घूंट पीकर जहर के मर्दाना वार।
वेद का डंका बजाये आदमी॥५

सोई किस्मत को जगाये आदमी।
मुश्किलें आसाँ बनाये आदमी॥
चीर कर धरती का सीना बार-बार।
खाक से सोना उगाये आदमी॥

—नाज सोनीपती

ग्राम पंचायतें शराबबन्दी के प्रस्ताव सरकार को भेजे

—प्रो० शेरसिंह

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा के आर्यसमाजों तथा ग्राम पंचायतों से अनुरोध किया है कि वे सितम्बर मास में अपने तथा निकट के ग्रामों की पंचायतों में शराब के ठेके आगामी वर्ष में समाप्त करवाने हेतु प्रस्ताव पारित करवा कर आयुक्त आबकारी एवं कराधान हरयाणा चण्डीगढ़ के पते पर भिजवा देने का कष्ट करें। ग्रामों में प्रतिदिन शराब पीने की बीमारी बढ़ती जा रही है, जिन सम्पन्न परिवारों में शराब प्रवेश कर लेती है, उन्हें बर्बाद कर देती है। शराब सेवन करने से अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयों का प्रसार हो रहा है।

शराबबन्दी प्रस्ताव का प्रारूप

हमारे ग्राम .... तह० .... जि० .... ग्राम सभा (पंचायत) ने अपनी बैठक .... को .... सरपंच की प्रधानता में की गई। जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किये हैं —

यहां की ग्राम सभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दूकान तुरन्त बन्द करदी जाये और भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाये, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां की शराब की दूकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठायेंगे। सधन्यवाद।

विनीत

ग्राम पंचायत सदस्य

हस्ताक्षर

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां रजिस्टर्ड ए० डी० से हरयाणा के मुख्यमन्त्री, जिला उपायुक्त तथा मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक को अवश्य भेज देवें। जिन पंचायतों ने गतवर्ष प्रस्ताव समय पर हरयाणा सरकार को भेज दिये थे। उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की गई थी। अतः सितम्बर मास तक पंचायतों से प्रस्ताव करवा कर भिजवाने के लिए पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

आर्यसमाज च० दादरी में श्रीकृष्ण जन्मअष्टमी महोत्सव सम्पन्न

दिनांक २६-२७ अगस्त, १९८६ को आर्यसमाज दादरी (भिवानी) की ओर से "श्रीकृष्ण जन्मअष्टमी महोत्सव" बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र को योगिराज श्रीकृष्ण जी जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। सभा के भजनोपदेशक प० चिरंजीलाल जी आर्य के मधुर भजन हुए, जिनके माध्यम से उन्होंने श्रीकृष्ण जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला।

२७ अगस्त को सायंकाल ४ बजे आर्यसमाज मन्दिर में आर्यसमाज दादरी के अधिकारियों एवं युवकों की ब्रह्मचारी सजयदेव की अध्यक्षता में एक बैठक की गई, जिसमें शीघ्र ही "आर्य वीरदल" की स्थापना करने का निश्चय किया गया।

—मा० श्याममुन्दर आर्य
मन्त्री आर्यसमाज च० दादरी, भिवानी

हरयाणा में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज मुवाना जि० जीन्द

ग्राम मुवाना जि० जींद में दिनांक २१ अगस्त से २७ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार सप्ताह में भाग लेने के लिए सभा के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री तथा श्री तेजपाल आर्य भजनोपदेशक की मण्डली पधारी। २१ अगस्त को प्रातःकाल यज्ञ से सप्ताह आरम्भ हुआ। बहुत अधिक संख्या में नरनारी और आर्य सज्जनों ने यज्ञ में आहुति डाली। रात्रि को श्री सुखदेव जी शास्त्री का वेदों के पठन पाठन के महत्त्व पर बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन वेदमन्त्रों के आधार पर हुआ। श्री तेजपाल आर्य के मनोहर भजन हुए। इसी प्रकार प्रातः सायं नियमपूर्वक प्रवचन एवं भजन संगीत होते रहे। ग्रामीण जनता इस प्रचार से बहुत ही प्रभावित हुई। मुवाना के उत्साही अध्यापकों तथा अन्य किसानों एवं साधारण जनता ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

विशेष कर सुखदेव शास्त्री के प्रभावशाली वेद प्रवचनों की चर्चा रही। सभा को सहायतार्थ ५५१ रु० वेदप्रचारार्थ प्रदान किये गये। ७० छात्रों व छात्राओं ने यज्ञोपवीत धारण किये।

—मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी

१८ से २७ अगस्त तक आर्यसमाज कबाड़ी बाजार महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी में वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। इस शुभावसर पर आचार्य ज्ञानेन्द्र जी शास्त्री, प० देवदत्त जी द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा कृष्ण जन्मअष्टमी का पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया गया। सभा की ओर से स्वामी देवानन्द जी एवं प० मुरारीलाल बेचैन के प्रभावशाली भजन होते रहे। आर्यसमाज की ओर से सभा को ६०१) वेदप्रचारार्थ प्रदान किये गये।

— मन्त्री आर्यसमाज

श्री दयानन्दमठ प्रबन्धकारिणी सभा रोहतक

प्रतिवर्ष की भांति श्रीदयानन्दमठ प्रबन्ध कारिणी सभा रोहतक की ओर से २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी मनीषानन्द जी के वेदप्रवचन तथा श्री रणवीरसिंह जी बेधड़क, प० तेजपाल जी तथा स्वामी देवानन्द जी एवं प० मुरारीलाल की भजन मण्डली के मनोहर भजन हुए। ३१ अगस्त को दोपहर बाद आर्य पारिवारिक सत्संग सभा की ओर से भी सत्संग का आयोजन किया गया। सभा को २००) वेदप्रचारार्थ प्रदान किये गये।

—मा० मेघराज आर्य

आर्यसमाज थानेसर जि० कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज थानेसर की ओर से २८ से ३१ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक प० सुरेश शास्त्री, ब्र० सजयदेव जी के वेदप्रवचन तथा प० चिरंजीलाल एवं प० रणवीरसिंह बेधड़क के भजन हुए। —मन्त्री आर्यसमाज

आर्यनगर जि० हिसार में आर्य वीरदल की स्थापना

आज ३०-८-८६ को आर्यनगर जिला हिसार में विधिवत् आर्य वीरदल की स्थापना के लिए एक समारोह श्री रामजीलाल चेयरमैन की अध्यक्षता में हुआ। यज्ञ के बाद ३० नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किये और प्रतिज्ञा ली कि हम आर्य श्रेष्ठ बनेंगे। उसके बाद श्री रामजीलाल जी, प० रविदत्त शास्त्री, स्कूल के मुख्याध्यापक श्री चतरसिंह ने नवयुवकों को आशीर्वाद दिया। श्री सीताराम आर्य ने यज्ञोपवीत के बारे में समझाया और आर्य वीरदल की शाखा के लिए लड़कों को प्रेरित किया। इस समय इस शाखा में ६० नवयुवक हैं।

—सत्यकाम आर्य शाखाध्यक्ष आर्य वीरदल हिसार

योगिराज कृष्ण जी की जन्माअष्टमी पर एक चिन्तन

सत्यकाम आर्य शाखा अध्यक्ष, आर्य वीरदल, हिसार

महर्षि दयानन्द जी की कलम ने किसी को नही बक्शा, किन्तु जब योगिराज की बारी आई तो ऋषि लिखते हैं कि योगिराज कृष्ण ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई बुरा कर्म नही किया, क्या यह साधारण प्रमाण-पत्र है।

जितने महापुरुष हुए हैं सब की मिट्टी पलीत उनके भक्तो ने की है, जितना बुरा कृष्ण जी के भक्तो ने कृष्ण जी के साथ किया है उतना तो कोई नही कर पाया। इन्होने तो हद ही करदी है। राम के भक्तो ने राम की रामलीला बनाकर राम सीता से भीख मगवाई, राम स्वय मूर्तिपूजक नही थे उनकी मूर्ति बनाकर प्रशाद खाना शुरु किया। गुरुनानक के भक्त गुरु के उपदेशो का सरेआम उल्लघन कर रहे हैं। गुरुनानक जो स्वय हिन्दू थे। आज उनके भक्त, उनकी सन्तान (हिन्दुओ) को समाप्त करना चाहते है। महात्मा गाधी ने कहा था यदि मुझे एक घण्टे के लिए भी राज मिल जाये तो मैं कलम को पहली नोक से शराब को बन्द करदू। किन्तु आज इनके भक्त शराब पीते हो नही, शराब से ही नोट कमा रहे हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने कहा था कि लडके और लडकियो की पाठशाला एक दूसरे से दो कोस यानी (पाच किलोमीटर) दूर हो। पाच वर्ष का लडका लडकियो की पाठशाला मे, पाच वर्ष की लडकी लडको की पाठशाला मैं ना जा पाये। किन्तु ये दयानन्द के भक्त कहलाने वाले डी० ए० वी० वाले दयानन्द के नाम पर कालेज खोलकर एक ही बैंच पर १८-१८ साल के नौजवान लडके और लडकियो को बैठाकर दयानन्द के सिद्धानो की खुली धज्जिया उडा रहे हैं।

फिर भी कृष्ण जी के भक्तो मे तो सभी नीचे हैं। कौन-सा लाञ्छन होगा जो कि कृष्ण के भक्तो ने कृष्ण पर ना लगाया हो। जैसे—

१—मक्खनचोर कहकर चोर बनाया।

२—उसकी ब्याहता रुक्मिणी को छोडकर उसे उसकी मामी राधा के साथ खडा कर, राधा रमरण हरि गोबिन्द जय-जय कहकर परस्त्री गामी बनाया।

३—गोपियो के साथ नाचने वाला नचार बनाया।

४—गोपियो के कपडे उठाकर उनके अग देखकर स्त्रीगामी बनाया।

५ "मैं पनिया भरने कैसे जाऊ रास्ते में खेते नन्दलाल," यह कहकर गुडा बनाया।

योगिराज कृष्ण जी के भक्तो से प्रार्थना है कि वे आज जन्मअष्टमी पर कृष्ण जी को अच्छी तरह समझे। कहा तो वो कृष्ण जिसने शादी के बाद भी स्वय नौजवान तथा अपनी जवान पत्नी रुक्मिणी के साथ १२ साल तक स्पर्श नही किया। इन भक्तो ने नाना प्रकार के आरोप लगाकर कृष्ण जी के जीवन को कलकित किया है। कृपया भगवान् के नाम पर कृष्ण जी को क्षमा करें।

वैदिक प्रचार सम्पन्न

२० जुलाई से २० अगस्त तक आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य ब्र० आर्य नरेश द्वारा आजाद मार्कीट, आर्यसमाज आदर्श नगर रेलवे कालोनी किशनगज विकासपुरी, उत्तमनगर तथा माडल बस्ती (दिल्ली), पेहवा फरीदाबाद, करनाल तथा यमुनानगर (हरयाणा), मोहाली (पजाब), किरतपुर, वेद मन्दिर सहारनपुर नकुड तथा झगेरन (उत्तर प्रदेश) मे योग यज्ञ व वेद विज्ञान पर प्रवचन हुए। युवापीढी को क्रातिकारियो का ऋण उतारने की प्रेरणा दी गई। पाच व्यक्तियो ने दैनिक यज्ञ करने का व्रत लिया। अनेको युवको ने व्यायाम करने व चाय छोडने का सकल्प किया।

नोट —२९ अगस्त से आगे प्रचारयात्रा हिमाचल मे रहेगी।

कार्यालय . उद्‌गोश साधना स्थली, ४९ माडल बस्ती, दिल्ली-५

दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर

आर्यवन विकास फार्म, रोजड, साबरकाठा, गुजरात मे ६ दर्शनो के अध्ययन अध्यापन व वैदिक योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम उत्तम रीति से चल रहा है। अनेक ब्रह्मचारी योगदर्शन व्यास भाष्य को पढाने मे समर्थ हो गये है।

अनेक ब्रह्मचारियो की आध्यात्मिक उन्नति बहुत उच्चकोटि की बन गई है। इनमे से कई अब योग प्रशिक्षण करने मे भी समर्थ हैं। यहा १२ बजे से रात्रि ७-३० बजे तक सस्कृत मे ही वार्तालाप होता है।

दिनचर्या, व्यवहार, विचार, लक्ष्य आदि मे यथासभव आदर्शों की स्थापना की जा रही है। वर्तमान मे साख्य दर्शन (ब्रह्ममुनि परिव्राजककृत सस्कृत भाष्य) चल रहा है। अपने ढग का यह एक विशिष्ट कार्य है जहाँ दर्शनो के विद्वान बनने के साथ-साथ ईश्वर को जानने समझने व साक्षात्कार करने के लिए ही मुख्य लक्ष्य बनाकर प्रयास किया जा रहा है।

—सत्यपति परिव्राजक

वेद पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज रामनगर, रोहतक रोड जीद ने अपना वेद पर्व राष्ट्रीय पर्व १५ अगस्त से साम्कृतिक पर्व श्रावण १९ अगस्त, ८६ तक मनाया। इस दौरान सुबह ७ ३० से ९-३० तक यज्ञ, हवन, भजन, उपदेश होते रहे और रात्रि में भी ८ से १० बजे तक प्रतिदिन भजन तथा वेदोपदेश होता रहा। बडी सख्या मे श्रोतागण लाभान्वित हुए तथा प्रत्येक ने कार्यक्रम को भूरि-भूरि प्रशसा की।

उल्लेखनीय है कि इस पुनीत अवसर पर आर्य वीरदल जीद ने स्थानीय प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प० चन्द्रभान जी को सम्मानित किया। पडित जी को ५०१), एक गर्मशाल तथा अभिनन्दनपत्र भेट किया गया। आर्यवीरो ने अपने त्यागी, तपस्वी, कर्मठ भजनोपदेशक का सम्मान करके एक अनुकरणीय मिसाल कायम की है। युवापीढी अपने बुजुर्गों का सम्मान करे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करे, यही इस सम्मान समारोह का विशेष अभिप्राय था।

ओमकुमार आर्य मन्त्री

वार्षिक चुनाव

खरमाण जि० रोहतक मे आर्यसमाज की स्थापना

सभा के उपदेशक प० अर्जुनदेव आर्य सिद्धात शास्त्री तथा म० रणवीरसिह वेधडक के प्रचार स्वरूप १७ अगस्त, ८६ को आर्यसमाज की स्थापना हो गई है। वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार किया गया—

प्रधान—सर्वश्री हजारीलाल, उपप्रधान—मागेराम आर्य, मन्त्री—म० रतीराम, कोषाध्यक्ष—रिसलदार रामानन्द।

आर्यसमाज दुल्हेड़ा जि० रोहतक

सभा के उपदेशक प० अर्जुनदेव आर्य तथा म० रणवीरसिह बेधडक के प्रचार के अवसर पर आर्यसमाज दुल्हेडा, जि० रोहतक का चुनाव २० अगस्त को निम्न प्रकार किया गया—

प्रधान—सर्वश्री मा० रिसालसिह, मन्त्री—ईश्वरसिह सरपच, कोषाध्यक्ष—जगदेवसिह, उपमन्त्री—नफेसिह, पुस्तकाध्यक्ष—बलवीरसिह

आर्यसमाज मुलाना जि० अम्बाला

प्रधान—सर्वश्री हकीम सत्यगुप्तनाथ, मन्त्री—सुरेन्द्रकुमार डोगरा, कोषाध्यक्ष—हरिश्चन्द्र आर्य।

आर्यसमाज सोहना जि० गुडगांव

प्रधान—सर्वश्री मेघराज आर्य, उपप्रधान—अमरसिह वर्मा, मन्त्री—अशोककुमार वर्मा, प्रचारमन्त्री—रामकिशन, भोजन मन्त्री—मदनलाल, कोषाध्यक्ष—धर्मवीर, सरक्षक—प्यासीराम आर्य।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाज डीग का स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज डीग जि० कुरुक्षेत्र द्वारा १५ अगस्त का राष्ट्रीय पर्व बड़ी धूमधाम एव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सरपंच श्री ब्रजलाल ने समारोह की अध्यक्षता की। ध्वजारोहण के तुरन्त पश्चात् राष्ट्रीय गीत तथा देशभक्ति के नारे लगाये गये। आर्यसमाज डीग के व्यायाम शिक्षक श्री बलबीरसिंह आर्य द्वारा तैयार की गई व्यायाम टीम ने आसन प्रदर्शन किये, जो प्रशसनीय एव सराहनीय रहे। आर्य वीरदल कैथल के युवको ने तलवार, चाकू आदि के चमत्कारिक कौशल दिखाये।

खेल प्रतियोगिताओं मे समस्त गाव के खिलाडियो ने बढ-चढकर भाग लिया। दोपहर बाद वेदमन्त्रो द्वारा सास्कृतिक प्रोग्राम का उद्घाटन किया। कविता, भजन, मोनोएक्टिंग के अतिरिक्त भाषण प्रतियोगिता भी हुई, जिसका विषय था 'राष्ट्रीयता व आर्यसमाज।

शाम को पारितोषिक वितरण समारोह किया गया। खेल विजेताओ के अतिरिक्त राजकीय हाई स्कूल डीग के मेधावी छात्रो तथा सुयोग्य अध्यापको को प्रोत्साहन हेतु इनाम दिये गये। आर्यसमाज डीग ने श्री रामनिवास आर्य को सर्वश्रेष्ठ उपदेशक तथा श्री जयकुमार पहलवान् को सर्वश्रेष्ठ खिलाडी घोषित किया।

अन्त मे प्रधान श्री विशनसिंह नैन ने ग्रामवासियो को उत्सव की सफलता हेतु धन्यवाद किया। भ्रातृभाव, सद्भावना, राष्ट्रीयता एव धार्मिक भावनाओ को हृदयगम करने को कहा। ग्राम पचायत डीग से आर्यसमाज मन्दिर के लिए जमीन मागी, ताकि गाव मे शीघ्र आर्यसमाज मन्दिर तथा व्यायामशाला बनाई जा सके। साप्ताहिक यज्ञ को निश्चित एव लगातार जारी रखने की अपील की। युवको को वैदिक जीवन पद्धति अपनाने तथा देव दयानन्द के स्वप्नो का भारत बनाने पर बल दिया।

ओम्प्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज डीग

रक्षाबन्धन पर्व

दिनाक १९-८-८९ को आर्यसमाज कवारी की तरफ से बडे हर्ष व उल्लास के साथ मनाया गया। प्रातःकाल यज्ञ किया गया। यज्ञ पर प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी जी ने रक्षाबन्धन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री महेन्द्रसिंह आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुए। बाद मे प्रधान जी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज कवारी की सभा हुई, जिसमें निम्न विषयो पर विचार किया गया।

२३-२४ अगस्त को गाव में महिला सत्सग को सफल बनाने बारे।

२-१९ सितम्बर से २५ सितम्बर को गाव मे व्यायाम प्रशिक्षण शिविर को सफल बनाने बारे।

३—आर्यसमाज मन्दिर कवारी के भवन निर्माण कार्य को शीघ्र चालू करने पर विचार किया गया।

४—आर्यसमाज के सगठन को मजबूत बनाने हेतु नये सदस्य बनाना।

५—गाव मे दो चार खूखार शराबियो की शराब छुडाने बारे विचार।

६—गाव के बस अड्डे एव जोहड पर और वृक्ष लगाने पर विचार।

इन्द्रसिंह आर्य, आर्यसमाज कवारी, जि० हिसार

आर्यसमाज ठोल कुरुक्षेत्र मे वेदप्रचार महोत्सव सम्पन्न

दिनाक १५-८-८९ से १८-८-८९ तक आर्यसमाज ठोल मे वेदप्रचार महोत्सव बडे ही उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा विद्वान् ब्रह्मचारी सजयदेव जी की वेदकथा एव व्याख्यान होते रहे। प० राजबल बेढब, प० मुरारीलाल बेचैन, प० बनारसीलाल जी के मधुर भजन हुए।

ब्रह्मचारी जी ने अपने व्याख्यान मे बताया कि ससार की समस्त समस्याओ का समाधान वेद द्वारा ही सम्भव है। उन्होने युवा वर्ग का आह्वान किया कि वे आर्यसमाज मे दीक्षित हो तथा राष्ट्र-रक्षा का पवित्र सकल्प लें। इस अवसर पर अनेक युवको ने यज्ञोपवीत लिए तथा अपने जीवन को अच्छा बनाने का व्रत लिया।

आर्यसमाज ठोल की ओर से ५०१) सभा को दान दिया गया।

मन्त्री आर्यसमाज ठोल, जिला कुरुक्षेत्र, हरयाणा

आर्यसमाज सालवन, करनाल मे वेद-सप्ताह सम्पन्न

दिनाक ८ अगस्त से १४ अगस्त, १९८९ तक आर्यसमाज सालवन का 'वेदप्रचार सप्ताह' बडे ही समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा विद्वान् प० सुरेशकुमार शास्त्री एव ब्रह्मचारी सजयदेव जो ने पधार कर वेदोपदेश किया। प० चिरजीलाल जी तथा प० सुमेरसिंह जी के मधुर भजन होते रहे। बहिन उर्मिला आर्य का उपदेश भी हुआ।

इस अवसर पर अनेक युवक युवतियो ने यज्ञोपवीत लिए तथा आर्यसमाज के सम्पर्क मे आये। सभा को ८५०) के लगभग दान दिया गया।

राजबीरसिंह मन्त्री आर्यसमाज सालवन, (करनाल)

आर्य वीरदल कनौह हिसार

आर्य तो एक ही बहुत होता है। दीपक जहा जलेगा वही रोशनी होगी, चाहे शहर हो, गाव हो, चाहे जगल हो उसका काम तो रोशनी देना है। गाव कनौह के अन्दर एक ऐसा नौजवान है जिसको ऋषि की लगन लगी हुई है। ऋषि दयानन्द ने ना तो कभी खुद सुख की सास ली और जिसको उसकी फटकार लग गई ना वह सुख से बैठ सकता है। जिस गाव मे कभी आर्यसमाज का प्रचार नही हुआ, कोई सहयोगी नही बल्कि घर की आर्थिक दशा भी अनुकूल नही। जन्मजात ब्राह्मण होने के कारण विरोध होना भी स्वाभाविक ही था, फिर भी इस सिरफिरे नौजवान हुश्यारसिंह ने आर्य वीरदल हिसार के शिविर मे ट्रेनिंग लेकर स्वय शिक्षक बनकर अपने गाव मे आर्य वीरदल की स्थापना करके दोनों समय की शाखा लगानी शुरु करदी। जिसकी स्थापना पर श्री सीताराम आर्य हिसार ने आकर हवन के पश्चात् आर्य वीरदल का इतिहास व इसकी जरूरत पर लोगो मे व्याख्यान दिया और गाव वालो का शका समाधान किया। श्री कृष्णपाल जी ने एक सप्ताह रहकर शाखा मे आने वाले नौजवानो को ट्रेंड किया। इस शाखा में लगभग ७० लडके हैं। इसका सारा श्रेय अकेले इस नौजवान को जाता है।

सत्यकाम आर्य शाखा अध्यक्ष, आर्य वीरदल हिसार

आर्यसमाज नारनौल मोहल्ला संघीवाडा का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री बा० नरेन्द्रसिंह एडवोकेट, उपप्रधान—डा० मूलचन्द आर्य, महाशय मोतीराम आर्य, मन्त्री—बा० बलबीरसिंह एडवोकेट, उपमन्त्री—रामनरेश गर्ग, सत्यादेवी आर्या अध्यापिका, कोषाध्यक्ष—हरिश्चन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—मा० छाजूराम शर्मा, प्रचारमन्त्री—म० जगमालसिंह बेधडक, लेखानिरीक्षक—प० रामनिवास शर्मा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१	दी वेदाज (अग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जो	१-००
२	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज - प० चमूपति एम०ए०	१-५०
३	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालकार	१-००
४	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
५	ईसाइयो की प्रचार प्रणाली—प० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
६	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण–प ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
७	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५
८	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रो की व्याख्या)–प० चमूपति एम०ए०	३-००
९	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रथ (आर्य शहीदो का परिचय)	४-५०
१०	हरयाणा के आयसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
११	पजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१२	आदर्श धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१३	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचाय	३ ००
१४	स्मारिका (हरयाणा प्रातीय आयसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१५	मूर्तिपूजा—सम्पादक प० जगदेवसिंह सिद्धाती	००-५०
१६.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
१७	वेदाविर्भाव ,,	१-००
१८	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
१९	ईसाई पादरियो को आर्यसमाज को चुनौती–स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२०	निहारिकावाद और उपनिषद्—प० चमूपति एम०ए०	०-५०
२१.	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२२	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२३	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२४	हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१ ००
२५	बड—स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२६	वीर हेमू ,,	००-७५
२७	पीपल ,,	१-५०
२८	मिर्च ,,	१-५०
२९	श्लोपद वा हाथी पाव की चिकित्सा—स्वा० ओमानन्द जी	० २०
३०	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३१	लवण ,,	१-२५
३२	विदेशो मे मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३३	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३४	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३५	,, १-२ ,,	१-००
३६	,, ३ ,,	१-००
३७	,, ४ ,,	२-५०
३८	,, ५ ,,	२-००
३९	,, ६ ,,	३-००
४०	,, ७-८ ,,	२-००
४१	,, ९ ,,	३-००
४२.	,, १० ,,	१-५०
४३.	,, ११ ,,	२-००
४४	हल्दी ,,	१-५०
४५.	नीम ,,	१-२५
४६	प० गगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४७	नास्तिक मत समीक्षा—प० हरिदेव सर्राफ	००-१५

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धातो भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

अपनी सन्तान को धार्मिक बनाइये

आजकल छात्र तथा छात्राओ को अपने प्राचीन वैदिकधर्म के सम्बन्ध में जानकारी नही है। उन्हें सिनेमा के अभिनेताओ के नाम तो याद हैं परन्तु अपने देश के ऋषि मुनियों तथा महापुरुषो के नाम याद नही हैं, जिन्होंने अपने त्याग, तपस्या तथा पुरुषार्थ से अपने राष्ट्र की वैदिक सस्कृति को जीवित रखा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या परिषद् की ओर से आर्य विद्यालयो में पढने वाले छात्र छात्राओ को वैदिकधर्म की जानकारी कराने के लिए आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डा० रणजीतसिंह जी प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र से धर्म प्रवेशिका मूल्य ३) तथा धर्म भूषण मूल्य ५) पुस्तके प्रकाशित करवाई हैं। अत आप यदि अपनी सन्तान को धार्मिक बनाना चाहते है तो इन पुस्तको को मगवाकर उन्हे पढने के लिए देकर वैदिकधर्म से परिचित करावे। ये पुस्तके हरयाणा के आर्य विद्यालयो तथा गुरुकुलो मे धर्म-शिक्षा के पाठ्यक्रम मे भी नियत की गई हैं।

प्राप्ति स्थान
प्रणेता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज सिलारपुर तोताहरी जि० महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री रामेश्वरदयाल, उपप्रधान–रामचन्द्र आर्य थानेदार, मन्त्री—राधेश्याम आर्य, उपमन्त्री—जितेन्द्रकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—मामचन्द नम्बरदार, पुस्तकाध्यक्ष—रतीराम आर्य, सरक्षक—महाशय जगमालसिंह बेधडक, लेखानिरीक्षक—उमराव सरपच।

हरयाणा के आर्यसमाजों में वेदप्रचार सप्ताहों की धूम

आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सव एव वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाये जारहे हैं, जिनकी सूची निम्न प्रकार है—

श्री दयानन्दमठ रोहतक	२८ से ३ सितम्बर
आर्यसमाज बडवा जि० भिवानी	५-६-७ ,,
,, माडल टाउन सोनीपत	८ से १४ ,,
,, बहु अकबरपुर जि० रोहतक	२५ से २८ ,,
,, मेन बाजार बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	१३-१४ ,,
,, बीकानेर छोटी जि० महेन्द्रगढ़	१९-२१ ,,
,, बुडिया जि० अम्बाला	१९ से २१ ,,
,, पिंजोर जि० अम्बाला	१९ से २१ ,,
,, कालका जि० अम्बाला	२१ से २८ ,,
,, भोगपुर कनालसी जि० अम्बाला	२६ से २८ ,,
,, शेखपुरा खालसा जि० करनाल	२६ से २८ ,,
जिला आर्य महासम्मेलन पलवल जि० फरीदाबाद	२६ से २८ ,,
प्रातीय आर्य वीरदल सम्मेलन रोहतक	२६ से २८ ,,
गुरुकुल आर्यनगर जि० हिसार	५ से १२ अक्तूबर
आर्यसमाज खानपुर कला जि० सोनीपत (चतुर्वेदयज्ञ)	२ से २६ ,,
,, जंतपुर जि० रोहतक	४-५ ,,
श्री सिद्धाती जयन्ती पर षड्दर्शन समन्वयगोष्ठी सिद्धाती भवन दयानन्दमठ रोहतक	१०-११ ,,
कन्या गुरुकुल पचगाव जि० भिवानी	१८-१९ ,,
आर्यसमाज प्रेम मोहल्ला तावडू जि० गुडगाव	१७ से १९ ,,

—वेदप्रचाराधिष्ठाता

वैदिक यतिमण्डल

अखिल भारतीय वैदिक यतिमण्डल दीनानगर (गुरदासपुर) का सम्मेलन दिनाक २७-२८ सितम्बर, १९८६ को दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में होगा। सभी दूरदराज के नैष्ठिक, वनी और सन्यासी २६ सितम्बर शुक्रवार सायकाल तक पहुचने की कृपा करे।

भोजन निवास की व्यवस्था दयानन्दमठ रोहतक मे ही रहेगी।

निवेदक
प्रचारमन्त्री वै० य० म० वेदानन्द वेदवागीश
११९, गौतमनगर, नई दिल्ली-४९

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 4 — सवत १,६६ ०८,२३,०८७



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक —प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४० १८ सितम्बर, १६८६   वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

कनागतो के अवसर पर सामयिक महत्त्वपूर्ण लेख—

क्या मृतक-श्राद्ध व तर्पण वेद विरुद्ध है ?

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास मे भारतवर्ष के सभी मतमतान्तरो के खण्डन तथा मण्डन का विधान करते हुए "मृतक श्राद्ध तथा तर्पण का भी खण्डन किया है। तथा उसका सही स्वरूप बताते हुए श्राद्ध तथा तर्पण का मण्डन भी किया है। किसी पौराणिक ने सवाल उठाते हुए महर्षि से पूछा है कि क्या गरुड पुराण भी झूठ है ? महर्षि ने तुरन्त उत्तर दिया—हा, असत्य है। प्रश्नकर्त्ता ने फिर पूछा—फिर मरे हुए जीव की क्या गति होती है ? महर्षि ने कहा—जैसे उसके कर्म हैं। पौराणिक प्रश्नकर्त्ता ने फिर पूछा—जो यमराज राजा, चित्रगुप्त मन्त्री, उसके बड भयकरगण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीर वाले जीव को पकड कर ले जाते हैं, पाप पुण्य के अनुसार नरक स्वर्ग मे डालते हैं, उसके लिए दान पुण्य श्राद्ध तर्पण गोदान आदि वैतरणी नदी तैरने के लिए करते हैं, ये सब बाते झूठ क्योकर हो सकती हैं ? महर्षि ने उत्तर दिया—ये सब बाते पोपलीला के गपोडे है। महर्षि ने बडे युक्ति प्रमाणो द्वारा मृतक श्राद्ध तर्पण के विषय का बडा खण्डन किया। उन्होंने कहा—"श्राद्ध तर्पण, पिण्ड प्रदान उन मरे हुए जीवो को तो नही पहुचता, किन्तु मृतको के प्रतिनिधि पोप जी के घर अथवा कसाई आदि के घर मे पहुँचता है, वैतरणी पर गाय नही जाती। पुन किसकी पूँछ पकड कर तरेगा ? और हाथ तो यही जलाया वा गाड दिया गया, फिर पूछ को कैसे पकडेगा। इतना खण्डन करके महर्षि ने इसे और भी स्पष्ट करने के लिए एक जाट का दृष्टात दिया है—

दृष्टात के अन्त मे महर्षि ने लिखा—जब ऐसे ही जाट जो कैसे पुरुष हो तो पोपलीला ससार मे न चले। इस प्रकार महर्षि ने मृतक श्राद्ध तर्पण, गोदान आदि के दान देने का बडा खण्डन किया है। युक्ति [illegible] से खण्डन सुनकर प्रश्नकर्त्ता ने फिर पूछा—जब तुम्हारे कहने से यमलोक और यम नही हैं तो मरकर जीव कहा जाता ? और इनका न्याय कौन करता है ? महर्षि ने उत्तर दिया—तुम्हारे गरुड पुराण का कहा हुआ तो अप्रमाण है, परन्तु जो वेदोक्त है कि—यमेन, वायुना, सत्यराजन् इत्यादि वेद वचनो से निश्चय है कि यम नाम वायु का है। शरीर छोड वायु के साथ अन्तरिक्ष में जीव रहते हैं और जो सत्यकर्त्ता पक्षपात रहित परमात्मा धर्मराज है, वही सबका न्यायकर्त्ता है।" यह सुनकर प्रश्नकर्त्ता ने फिर कहा—तुम्हारे कहने से गोदानादि दान किसी को न देना और न कुछ दान पुण्य करना ऐसा सिद्ध होता है। परमर्षि ने उत्तर दिया—यह तुम्हारा कहना सर्वथा व्यर्थ है, क्योकि सुपात्रो को, परोपकारियो को परोपकारार्थ सोना, चादी, हीरा, मोती, माणिक, अन्न जल, स्थान, वस्त्र आदि दान अवश्य करना उचित है, किन्तु कुपात्रो को कभी न देना चाहिए।

सत्यार्थप्रकाश मे लिखित इस लम्बे प्रकरण को देने का यही अभिप्राय है कि जीवित माता-पिता, अतिथि, विद्वान् की श्रद्धापूर्वक सेवा भोजनादि द्वारा तृप्ति-तर्पण अवश्यमेव करनी चाहिए, मरने के पश्चात् तो मृतक को ये चीजे पहुँचाई नही जा सकती।

श्राद्ध तो जीवित का हो सकता है, क्योकि श्राद्ध शब्द का अर्थ निघन्टु अ० ३, ख० १० मे लिखा है कि ' श्रत् सत्यम्" अथवा श्रद्दधाति यथा सा श्रद्धा, श्रद्धया यत् क्रियते तत् श्राद्धम्—सत्य का ग्रहण हो जिस से उसका नाम श्रद्धा है। श्रद्धा से जो किया जाये उसको श्राद्ध कहते हैं। श्रद्धा से सेवा करना, जीते हुओ मे ही घट सकता है मरे हुओ मे नही, क्योकि जब तक वह विद्यमान अर्थात् सामने न होवे, तब तक सेवा नहीं हो सकती। इसलिए मृतको की न सेवा हो सकती है और न कोई भी वस्तु पहुचाई जा सकती है।

गुरु ग्रथ साहब मे भी ऐसा ही लिखा है—

जीवित पितर न माने कोऊ मूए श्राद्ध कराही।
पितर बपरे को क्या पावे कौआ कूकर खाई।

इसी सम्बन्ध मे नानक जी की एक कथा आती है। नानक जी एक दिन हरद्वार गये। वहा गगा पर लोग अपने मरे हुए पितरो का जल से तर्पण कर रहे थे। नानक जी ने उनसे पूछा—भाई, यह क्या कर रहे हो ? लोगो ने उत्तर दिया—कि हम अपने मृत पितरो को जल देते है। नानक ने पूछा—तुम्हारे पितर कहा हैं ? उन्होने उत्तर दिया—पितृलोक में। तब नानक जी गगा में प्रवेश करके उस ओर जल फेंकने लगे, जिस ओर लोगो के कपडे पडे थे। लोगों ने कहा—महाराज ! यह क्या कर रहे हो, आपने तो हमारे कपडे भिगो दिये। तब नानक कहने लगे-मेरा कर्तारपुर पजाब में खेत है, उसको जल देता हू। लोगो ने कहा—इतनी दूर खेतो मे पानी कैसे पहुचेगा, तो उन्होने उत्तर दिया—कि जिस स्थान का हमको पता भी विदित है वहा नही पहुँचेगा तो तुम्हारे पितरो को जिनका कुछ पता भी नही है कैसे पहुचेगा ? इस बात को सुनकर लोग चुप हो गये।

कुछ पाखण्डी लोग यह भी कहते हैं कि दानवीर राजा कर्ण ने यह श्राद्ध का कार्य चलाया था, इसीलिए ही पन्द्रह दिन का नाम "कनागत" पड गया है। वे कहते हैं कि राजा कर्ण बडा दानी था, वह सोने का ही दान करता था। जब वह मरा तो स्वर्ग में गया। उसे स्वर्ग में खाने को अन्न न मिला, उसे सोना ही सोना मिला, कर्ण ने अत्यन्त दु खी होकर धर्मराज से पूछा—महाराज ! मैं भूखा मरता हू, क्या उपाय करू, तो धर्मराज ने उत्तर दिया—कि तूने अन्न का दान नही दिया, इसलिए तुझे यहा स्वर्ग मे सोना ही मिलेगा, अन्न नही।

(क्रमश)

विभा-कारन्त प्रकरण-सन्दर्भ

उच्चवर्ग की अनैतिकता के संरक्षण का अभियान ?

—धर्मपाल शर्मा

पिछले दिनो कारन्तविभा काड काफी चर्चित रहा। प्रख्यात रग-कर्मी ब०व० कारन्त पर आरोप है कि उन्होने अपनी रगकर्मी शिष्या विभा को जलाकर मार डालने की कोशिश की। इस प्रसग मे यह सब भी प्रकाशित हुआ कि किस प्रकार ५७ वर्षीय पद्म श्री प्राप्त महान् कलाकर्मी ब०व० कारन्त के विभा से प्रणय सम्बन्ध रहे और किस प्रकार इन सम्बन्धो की दुखद परिणति हुई। यह कोई पहली घटना नही है, जबकि किसी ख्यातिनाम पद्मश्री प्राप्त व्यक्ति ने कोई अपराध किया हो और उसकी व्यापक चर्चा हुई हो। यह स्वाभाविक ही है कि जो व्यक्ति किसी भी क्षेत्र मे सम्मानित और चर्चित होगा, उसके द्वारा हुए किसी अपराध की भी वैसी ही व्यापक चर्चा होगी। एक दशक पूर्व प्रख्यात नेत्र विशेषज्ञ एव राष्ट्रपति के नेत्र चिकित्सक पदमश्री प्राप्त डा० जैन के अपराध की भी ऐसी ही व्यापक चर्चा हुई थी। इसके अतिरिक्त विदेशों में भी प्रोफ्यूमो कोलर काड जैसी घटनायें अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन चुकी हैं।

इसलिए श्री कारन्त के कथित अपराध को प्रेस द्वारा प्रमुखता से छापे जाने पर कुछ रगकर्मियो, नाट्यकारो, लेखक-साहित्यकारो और फिल्म अभिनेताओ का सगठित और आक्रोशपूर्ण विरोध कुछ ऐसे प्रश्न छोड जाता है, जिन पर सामाजिक सदर्भ मे विचार मन्थन करना आवश्यक हो जाता है। कलाकर्मियो द्वारा कारन्त के बचाव के लिए चलाये गये आदोलन से उनकी जो मानसिकता उजागर हुई है, वह राष्ट्रीय स्वास्थ्य के लिए बहुत घातक है। गिरीश कर्नाड, एम० के० रैना, जे० स्वामीनाथन और प्रकाश झा जैसे विख्यात कलाकर्मियो और १५० के लगभग रचनाकारों ने जिस प्रकार एक समूह बनाकर कारन्त को बचाने का अभियान चलाया, पुलिस और प्रेस की निन्दा की, न्याय व्यवस्था में दखल दिया और कानून को हाथ में लेने की कोशिश की, उस प्रवृत्ति से यह जाहिर हुआ कि कलाकार अपने को आम आदमी से विशिष्ट मानकर अपराध करने की छूट चाहते हैं। वे यह विशेषाधिकार चाहते हैं कि कलाकर्मी होने के कारण उनके अपराधो की उपेक्षा की जानी चाहिए। इस आदोलन के द्वारा उन्होंने यह भी दर्शाने की कोशिश की कि वे कारन्त के सिद्ध दोष होने पर अपना सुरक्षा कवच टूटने के भय से भी ग्रस्त है।

प्रेस के विरुद्ध बावेला

प्रेस के विरुद्ध इस वर्ग को शिकायत है कि प्रेस ने कानून को अपने हाथ में लेने की कोशिश की है और विभा-कारन्त काड को सनसनीखेज बनाकर कारन्त को जबरदस्ती कठघरे में खडा करने की कोशिश की है। वे प्रेस पर कानून को हाथ में लेने का आरोप लगाते समय यह भूल जाते हैं कि कानून कारन्त ने अपने हाथ मे लिया था, प्रेस ने नही, और प्रेस केवल कानून को मदद करने के लिए तथ्यो को सामने लाकर पेश करने मात्र का काम करता है। यह काम प्रेस ने पहली बार नही किया है। अन्तुले काड, कुओ आयल काड चर्बी घोटाला काड और ऐसे कितने ही राष्ट्रीय आर्थिक सामाजिक अपराधो को प्रेस ने साहस के साथ उजागर करके जनतन्त्र के चौथे स्तम्भ होने का सबूत दिया है। उस समय रगकर्मियो ने प्रेस की निन्दा नही की। भारत ही नही, अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस ने भी वाटरगेट जसे अन्तर्राष्ट्रीय काड को उजागर कर अपने कर्त्तव्य को निभाया तो दुनियाभर में प्रेस को सराहा गया।

प्रेस के विरुद्ध दूसरी शिकायत इन रगकर्मियो और चित्रकारों को यह रही है कि प्रेस ने कारन्त को निजी जिन्दगी मे झाकने की धृष्टता की है। किन्तु ये लोग निजी जीवन और सामाजिक जीवन के बीच जो फासला है उसे विस्मरण कर रहे हैं। कारन्त के प्रणय प्रसग के बारे में पहले से सब कुछ जानते हुए भी प्रेस ने इस प्रसग को कभी उजागर नही किया था, लेकिन प्रणय की विफलता या उससे उपजे किसी असन्तोष के कारण किसी 'विभा' की हत्या कर देना, किसी 'कारन्त' का निजी मामला नहीं रह जाता। कोई निजी प्रणय प्रसग जब राष्ट्र या समाज के हितो या आदर्शों को चोट पहुचानेवाले अपराध की सज्ञा ले लेता है तो समाज को उसकी जाच पडताल करने का पूरा अधिकार होता है।

समाजसेवा का तर्क

इन रगकर्मियो और सस्कृति कर्मियों का तर्क है कि कारन्त ने समाज को बहुत कुछ दिया है, उन्होने कला जगत् को समृद्ध किया है। अत ऐसे व्यक्ति के साथ सामान्य आदमी जैसा व्यवहार करना गलत है। उनकी मान्यता है कि जिस व्यक्ति ने समाज को बहुत कुछ दिया है और समाज ने बदले मे उसे अनेक विशेषाधिकार दिये हैं उसे अपराध करने का विशेषाधिकार भी मिलना ही चाहिए।

यहा समाज को कुछ देने के तर्क का विश्लेषण करते समय ये रगकर्मी एकागी चिन्तन करते हैं, ध्यातव्य है कि जैसे-जैसे कोई व्यक्ति अपने किसी सेवाकर्म के माध्यम से समाज को कुछ देता है, समाज उसी अनुपात में उसे धन पद और मानसम्मान के रूप में हाथोहाथ प्रतिदान देता रहता है। इसलिए समाज को कुछ देने के बाद व्यक्ति का समाज पर कोई ऋण नही रह जाता और यदि कोई समाजसेवी ऐसा सोचता है कि समाज पर उसका ऋण चढ गया है तो यह उसका बौद्धिक बौनापन और दम्भ ही है। इसे सस्कारहीनता भी कहा जा सकता है।

इसके विपरीत जिस व्यक्ति को समाज ने सम्मानित किया है, ऋणी वह व्यक्ति ही होता है, क्योंकि उसने जो कुछ समाज को दिया है, पाया तो इसी समाज से है। प्रख्यात साहित्यकार कमलेश्वर ने एक भेंटवार्ता में इस तथ्य को बडे दिशाबोधक रूप में व्यक्त किया है। उन्होंने भेंटकर्ता को एक प्रश्न के उत्तर में अपनी बताते हुए इसमें पाच हजार साल और जोड दिये। उत्सुक पत्रकार ने जब इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि मुझे इस समाज के ज्ञानकोष की पाच हजार साल पुरानी विरासत भी तो मिली है, इसलिए मैं पाच हजार पचपन साल का हुआ न। किसी ज्ञानवृद्ध की समाज के प्रति ऐसी विनम्रता ही उसके सस्कारित होने की परिचायक हो सकती है, समाजसेवा के दम्भ की घोषणा नही। दुर्भाग्य यह है कि इन रगकर्मियों ने अपनी आखों पर दम्भ की पट्टी बाधकर स्वय को विराट मान लिया है और ये कलाकर्मी विराट् समाज को बौना समझते हैं। किन्तु ऐसे चिन्तन से क्या समाज बौना हो जाता है? ऐसे रगकर्मियो या रचनाकारों को समाज इतिहास के गर्त में उठाकर फेंक देता है, जो विनम्र होकर उसकी आराधना नहीं करते।

अत इन रगकर्मियो को इस वास्तविकता को समझना चाहिए कि समाज द्वारा उपकृत व्यक्ति को समाज के प्रति जवाबदेही अधिक जाती है। उससे सामान्य मनुष्य की अपेक्षा अधिक सन्तुलित प्रतिक्रियाओ की आशा की जाती है। एक आम आदमी प्रतिक्रियावश अपनी प्रेमिका पर तेजाब फेंक दे, उसे जला दे या हत्या करदे तो समझा जा सकता है कि उसका स्तर इतना ही है, वह सन्तुलित मानसिक विकास नही प्राप्त कर सका, किन्तु एक कलाकर्मी दार्शनिक या चिंतक से ऐसे क्षणो मे यही अपेक्षा की जाती है कि वह अपने श्रेष्ठ सस्कारो के आलोक में सगत निर्णय ले और सुकरात की तरह विष देनेवाले को धन्यवाद दे या विषपान करानेवाले को ऋषि दयानन्द की तरह अभयदान दे। सस्कृतिकर्मी से निकृष्ट प्रतिक्रिया की अपेक्षा कभी नही की जाती। और फिर कलाकार का तो धर्म ही सस्कृति का उन्नयन तथा विकृति का उन्मूलन है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय

बरनाला सरकार की हिमाकत

२९-३० अगस्त, १९८६ को पाकिस्तान की सीमा पर सीमा सुरक्षा दल के साथ मुठभेड में १० आतकवादी, डेरा बाबा नानक के पास मारे गये। इसको लेकर बादल गुट के लोगों ने वावेला मचा दिया और २५ सितम्बर को बड प्रदर्शन की धमकी दे दी। उधर कुछ अकालियो ने अपने आप ही तथाकथित जाच करके मनमानी रिपोट दे दी। जबकि पजाब के पुलिस अधीक्षक श्री रिबेरो और सीमा सुरक्षा दल के आई० जी० जाच करके अपनी रिपोट दे चुके हैं। अब बरनाला सरकार ने अपने तीन मन्त्रियो की एक जाच कमेटी भारत सरकार के मना करने के बावजूद बना डाली। सब लोग जानते हैं कि बरनाला सरकार के मन्त्री कैसे दूध के धोये हैं। उनके सम्बन्ध तस्करो और आतकवादियो के साथ आज पजाब का ही नही, देश का बच्चा-बच्चा जानता है। ऐसी रिपोर्ट का क्या मूल्य होगा, यह भी सब जानते हैं। यदि लुटेरो, कातिलो, तस्करो और राष्ट्र द्रोहियो को सीमा सुरक्षा बल जसे राष्ट्र सुरक्षा के सगठनो के द्वारा मुठभेड मे मारे जाने पर उनकी जाच शुरु की जायेगी, तो ऐसे तत्वो से राष्ट्र सुरक्षा करने का क्या उत्साह ऐसे सगठनो मे बाकी रहेगा, यह समझना कठिन नही। यह सब जानते हुए भी, और भारत सरकार के विरोध के बावजूद यदि बरनाला अपने मन्त्रियो की जाच कमेटी बनाते हैं, जिनके बारे मे पजाब के पुलिस अधीक्षक की खुली रिपोर्ट आ चुकी, तब वे राष्ट्र को एकता की कितनी चिता करते हैं और आतकवाद को मिटाने का कितना सकल्प उनके हृदय मे है, यह स्पष्ट हो जाता है।

हम बहुत दिनो से बरनाला सरकार को भग करके राष्ट्रपति शासन को बात इसोलिये करते आरहे हैं, क्योकि हमे बरनाला सरकार की नियत पर शक है और ऐसी घटनाओ से उसकी पुष्टि होती है। अब बरनाला सरकार की हिमाकत बर्दाश्त करना राष्ट्रहित मे नही है।

—प्रो० शेरसिह

नसबन्दी और नशाबन्दी

जब देश आजाद हुआ तब भारत की जनसख्या ३४ करोड के करीब थी। १९८१ मे बढकर वह ६८ करोड से अधिक हो गई और आज वह ७५ करोड तक पहुच गई है। जितनी जनसख्या आस्ट्रेलिया महाद्वीप की है, उतनी और उससे अधिक भारतवर्ष में हर वर्ष बढ जाती है, इसीलिये यह कहा जाता है कि भारत हर वर्ष एक नया आस्ट्रलिया बसा देता है। जनसख्या की यह बाढ यदि रुकी नही तो हर गाव मे १० वर्ष मे एक नई बस्ती और हर शहर में दजनो बस्तिया बसाते बसाते जगल भी कटने जायेगे और खेतो की जमीन भी सिकुडती जायेगी। आज भी भारत मे ३० करोड से अधिक लोगो को दिन मे दो बार पेट भर के रोटी नही मिल रही, करोडो लोग झोपडियो मे और लाखो लोग आसमान के नीचे सोते हैं। जगलो के कट जाने से वायुमण्डल मे प्रदूषण बढ रहा है, शहरो की आबादी बढने से और उद्योगो के कचरे मे नदियो म प्रदूषण बढ रहा है। न देहातो मे पीने के लिए अच्छा पानी उपलब्ध है और न शहरो मे। नई-नई बीमारिया बढ रही हैं। पौष्टिक भोजन सर्वसाधारण के लिये स्वप्न बनता जारहा है। प्रति व्यक्ति की एक दिन की दूध की खपत १।। छटाक तक पहुच गई है। शुद्ध घी के दर्शन दुर्लभ होते जा रहे हैं। यदि जनसख्या की बाढ नहा रुका तो भूख, बीमारी, कुपोषण, बेरोजगारी एक भयानक रूप धारण कर लेगी। सोमित साधनो के दोहन की होड मे मनुष्य पशुओ की ही नही, अपने प्यारे से प्यारे साथियो से स्पर्धा करके लड मरेगा और फिर भी उसके कुछ हाथ नही लगेगा। इसी बीभत्स दृश्य की सम्भावना से अपने राष्ट्र को बचाने के लिये चीन ने जनसख्या की बाढ को रोकने के लिये यह नियम बनाया है कि लडका हो या लडकी केवल एक ही सन्तान होनी चाहिए। जमीन थोडी होने पर भी चीन भारत के मुकाबले दो गुना से अधिक अन्न पदा करता है, परन्तु वह अपने आने वाले बच्चो को भूख के कुपोषण और बीमारियो से बचाने के लिए अपनी जनसख्या को बढने से बिल्कुल रोक देना चाहता है और ऐसी नीति अपना रहा है जिससे अगली शताब्दी के ५० वर्षों में वह अपनी जनसख्या घटा सके। भारत अभी ऊघ रहा है और यदि उसने इस बाढ को नही रोका तो अगली शताब्दी के ५० वर्षों मे हमारी जनसख्या चीन से दोगुनी हो जायेगी और अन्न की पैदावार आधी से कम।

मैं केवल सरकारी कार्यक्रमो और कानून के द्वारा इस समस्या के समाधान के पक्ष में नहीं हू। जिस ढग की नौकरशाही हमारे देश मे है, उनके रवैये से यह समस्या सुलझने की बजाये बिगड सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र की जनता इस समस्या को समझे और पूरा राष्ट्र चीन की तरह से नीति बनाये और २० सूत्री कार्यक्रम से दो बच्चो के परिवार की नीति लागू करने की बात प्रधानमन्त्री ने कही है सारा राष्ट्र उसको एक व्यक्ति, एक दल या सरकार की नीति नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के लोगो द्वारा स्वीकृत इस नीति को अपनाये और जी-जान से लागू करे। बच्चो, महिलाओ का कल्याण और गरीबी मिटाने का यह सबसे बडा कार्यक्रम होगा, और यह सारे राष्ट्र का कार्यक्रम होना चाहिये। नसबन्दी करवाये बिना सयम से सोच समझ कर भारत का नागरिक दो बच्चो से अधिक पैदा न करने का सकल्प ले और जो इस सकल्प को न निभा सके, वह अपनी इच्छा मे अपना या अपनी धर्मपत्नी का आपरेशन करवा ले।

जिस प्रकार बच्चो के और महिलाओं के कल्याण के लिये तथा गरीबी मिटाने के लिये परिवार नियोजन और परिवार कल्याण तथा दो से अधिक बच्चे पैदा न करने का कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण है, उससे भी बढकर 'नशाबन्दी' का कार्यक्रम है। जब परिवार में कमाने वाला पुरुष अपनी कमाई शराब तथा दूसरे नशो मे बर्बाद करता है, तब उसके बच्चे और उनकी मा दाने दाने के लिये तरसने पर मजबूर होते हैं। भूख उन को सताती है, कुपोषण के वे शिकार बनते हैं, बीमारिया उनको घेर लेती हैं और वे भी चोरी, जेबकतरी तथा समाज विरोधी कामो मे लगने लगते हैं तथा महिलाओ को भी अपने शरीर को बेचने के लिए मजबूर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्यवीर महासम्मेलन २७-२८ सितम्बर को रोहतक मे

सर्वदल सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरयाणा का १०वा प्रातीय महासम्मेलन २७ २८ सितम्बर, १६८६ दिन शनि रविवार को छोटूराम पार्क रोहतक मे हो रहा है।

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी महाराज होगे। इनके अतिरिक्त स्वामी डा० सत्यप्रकाश जी सरस्वती स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा, प० बालदिवाकर जी हस प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीरदल, प० शिवकुमार जी शास्त्री भू०पू० ससदसदस्य, प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा डा० वेदप्रताप जी वैदिक, (पी० टी० आई० भाषा), डा० रामप्रकाश जी (चण्डीगढ), श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी एव प० बेगराज जी बेग आदि विद्वान् पधार रहे हैं।

शनिवार २७ सितम्बर को २ बजे विशाल शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों मे गुजरेगी, जिसमे हजारो आयवीर पूर्ण गणवेश मे तथा प्रान्तभर से आर्य प्रतिनिधि भाग लेगे।

आर्यवीर सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रम इस सम्मेलन के विशेष कार्यक्रम होगे।

रोहतक नगर को दुल्हन की तरह सजाया सवारा जारहा है। देशभर के आर्य प्रतिनिधियो के इस सम्मेलन मे भाग लेने की सम्भावना है।

सम्मेलन के सयोजक श्री जगदीश मित्र आर्य तथा स्वागताध्यक्ष श्री राममेहर जी एडवोकेट रोहतक होगे।

भोजन तथा निवास की नि शुल्क सुविधाजनक व्यवस्था करदी गई है। आर्य विद्वानो के सन्देश सुनने तथा आर्यसगठन शक्ति का परिचय देने के लिए रोहतक पहुचे।

अजीतकुमार आर्य
मन्त्री आर्य वीरदल, हरयाणा

(पृष्ठ ३ का शेष)

होना पडता है। किसी भी देश मे होनेवाली दुर्घटनाओ, जुर्मों, रिश्वतखोरी, कामचोरी, काम में अकुशलता, उत्पादकता में कमी और अन्य बुराइयो के लिये यदि कोई चीज सबसे अधिक जिम्मेदार है तो वह नशाखोरी है। रूस ने इस बात को जान लिया, इसलिये नशाबन्दी का जो कार्यक्रम रूस में आज चल रहा है वह सभी समझदार राष्ट्रो की आख खोलने के लिए काफी है। भारत जैसा गरीब राष्ट्र क्या एक वर्ष मे १०,००० करोड रुपये नशाखोरी मे और गन्दी नालियो में बहाने की ताकत रखता है?

देश में भूख बीमारी, कुपोषण चरित्रहीनता घूसखोरी, उत्पादकता की कमी आदि बीमारियो से राष्ट्र को बचाने के लिए और करोडो बच्चो और महिलाओ को गरिमा का जीवन देने के लिये मैंने भारत सरकार और प्रधानमन्त्री के पास परिवार कल्याण और नियोजन के लिये एक विधेयक (कानून) का मसौदा तैयार करके भेजा है और नशाबन्दी को २० सूत्री कार्यक्रम मे शामिल ही नही करना, बल्कि उसे सबसे अधिक महत्त्व देकर लागू करने का सुझाव दिया है। मुझे खुशी है कि इस दिशा मे भारत सरकार ने गम्भीरता से विचार करना आरम्भ कर दिया है।

—प्रो० शेरसिंह

महर्षि दयानन्द स्पोर्टस क्लब रावौर जि० कुरुक्षेत्र

प्रधान—सर्वश्री विनीत भाटिया, उपप्रधान—करण राणा, मन्त्री—प्रमोद शर्मा, उपमन्त्री—विनोद रहित, कोषाध्यक्ष—सुबोध गुप्त।

हिन्दी दिवस पर प्रकाशनार्थ—

जय हिन्दी, जय भारती

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

जो भारत के भाग्य भाल की,
चमक रही शुचि बिन्दी है।
कोटि-कोटि जन-जननी भाषा,
हिन्दी है वह हिन्दी है॥

सस्कृत मा की पावन पुत्री,
जिसकी पावन परिभाषा।
आचल मे है रही सजोए,
मानवता की अभिलाषा॥

चन्द स्वरो सग जो गूंजी है,
लेकर तूफानी इतिहास।
प्राकृत से अपभ्रश पालि तक,
जिसका क्रमश हुआ विकास॥

जगनिक की ओजस्वी वाणी-
मे जो हुई विभूषित है।
इस धरती का कण कण जिसके-
जयगानो से पोषित है॥

है पाथेय बनी जिसकी रज,
जिसमे भूषण का गर्जन।
तुलसी की जिसमें आभा है,
अमर शहीदो का सर्जन॥

ब्रजरस धार मे जिसकी मिलती,
सूर काव्य की धारा है।
मनुष्यता से सपोषित जो,
वह साहित्य हमारा है॥

दयानन्द से ऋषियो ने है,
जिस हिन्दी को दुलराया।
गाधी ने, अरविन्द तिलक ने,
जिसको मा का रूप बनाया॥

पत महादेवी दिनकर से,
जिसके जाग्रततम प्रहरी।
जिसका जय सगीत सुनाती,
गगा गोदावरी गहरी।

लगभग चौदह बहने इसकी,
बहुत बडा परिवार है।
इसकी रक्षा हित कोटिक जन,
कटि बाधे तैयार है।

उसी भव्य हिन्दी की आओ,
चलें उतारें आरती।
कोटि-कोटि जन मिलकर गायें,
जय हिन्दी, जय भारती॥

पंजाब में उग्रवाद समाप्त करने के लिए बरनाला सरकार को पदच्युत किया जाये—आर्यनेताओं की मांग

दिल्ली १० सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह निश्चित मत है कि पंजाब में उग्रवादियो की गतिविधियो को समाप्त करना रिबेरो और उनके पुलिस दलो की शक्ति के बाहर की चीज है। जिन उग्रवादियो के विरुद्ध कार्यवाही की जारही है, उनकी रणनीति का निर्माण और सचालन पाक जनरल कर रहे हैं। सरकार को चाहिए कि पंजाब समस्या के इस पहलू को नजर अन्दाज नही करे।

बरनाला की रथिक सरकार उग्रवादियो की गतिविधियो को पूर्ण रूप से मिटाने को अपना मन नही बना पारही है और उसकी हरकतो से ऐसा प्रतीत होने लगा है कि वह चाहती है कि स्थिति ऐसे ही बनी रहे ताकि जनता तग आकर खालिस्तान की माग स्वीकार करे। पंजाब मे सुरक्षा पट्टी का निर्माण सम्बन्धी केन्द्र के निश्चय का विरोध करना बरनाला सरकार के इसी विचार का सबूत है।

बादल और टोहरा ग्रुप के अकाली उन उग्रवादियो के भोग कार्यक्रमो मे भाग लेने जाते है, जो पुलिस कार्यवाही मे मारे जाते हैं। इससे न सिर्फ इन उग्रवादियो को शहीदो का दर्जा मिलता है, अपितु खालिस्तान की माग को भी खुली मदद मिलती है।

हमारी दृष्टि मे बरनाला और बादल के दोनो ग्रुप एक ही सिक्के के दो चेहरे हैं और वे अपने-अपने ढग से उग्रवादियो की माग को साकार रूप देने मे सक्रिय हैं।

इन परिस्थितियो मे सुरक्षा पट्टी के निर्माण में केन्द्र द्वारा की जा रही देरी देश को भावी सकट की ओर ले जारही है। हम बिना सकोच कह सकते हैं कि प्रधानमन्त्री निजी ढग से देशहित मे ही सोचते हैं, परन्तु इनके सलाहकार उन विचारो के कार्यान्वयन में बाधा प्रस्तुत करते है। लोगो का अभिमत इस प्रकार बनता जारहा है। उग्रवादियो की गतिविधियो को यदि तत्काल नही रोका गया तो स्थिति और बिगड जायेगी। इस दिशा मे विलम्ब देश के लिए बहुत घातक होगा।

सभा को इस बात की सूचनायें प्राप्त हो रही हैं कि तमाम उग्रवादी चाहे उनका राजनीतिक लक्ष्य कुछ भी हो, एक हो रहे हैं और अपने आपको सुसगठित करके देश व्यापी कोई न कोई विद्रोह खडा कर देंगे। आध्रप्रदेश में कुछ ऐसे स्थान हैं जहा नक्सल उग्रवादी सक्रिय हैं। सिख उग्रवादियो को आश्रय भी दे रहे हैं। यह भी समाचार मिला है कि केरल राज्य में उग्रवादियो के लिए कुछ प्रशिक्षण केन्द्र खुले हैं, जहा आधुनिक मारकयन्त्रो के उपयोग आदि में प्रशिक्षण दिया जारहा है।

सभा इस सम्बन्ध मे एक समिति बन रही है जो सारा देश घूमे और जनता के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करेगी।

सभा सरकार का ध्यान एक विशेष परिस्थिति की ओर आकर्षित करना चाहती है। इस देश की राष्ट्रीय जाति हिन्दू यह समझने लगे हैं कि अल्पसख्यको को खुश करके उनके हितों को कुचला जारहा है। यह अल्पसख्यक मजहब के नाम पर विशेष रूप से पनप रहे हैं। इनकी धमकियो के सामने सरकार भी झुकती जारही है। देशहित की दृष्टि से यह ठीक नहीं। विदेशी जो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हमारी स्पष्टोक्तियो को पसन्द नही करते, प्रजातन्त्र के उसूलों की रक्षा के लिए हमारे अभियान को पसन्द नही करते, और रगभेद नीति सम्बन्धी हमारे विरोध को सहन नही कर सकते। परोक्ष रूप से इन अल्पसख्यको के हौसले बढा रहे हैं। इसके कारण देश के सामने एक खतरनाक परिस्थिति पैदा हो चुकी है। सिख उग्रवादियों के साथ साथ मुस्लिम साम्प्रदायिकता कब व्यापक रूप से सिर उठायेगी, कहा नही जा सकता। यह हो सकता है कि देश की हालत इतनी बिगड जाये कि सरकार देश के कुछ भागों में धारा ३५२ के तहत इमरजेंसी की घोषणा करने के लिए बाधित हो जाये।

सभा का यह सुझाव है कि देश जिन परिस्थितियो से गुजर रहा है, उसको दृष्टि में रखते हुए देश के पूरे राजनीतिक पक्ष तथा सत्तारूढ पक्ष अपने-अपने विवादो को भूल जाय। देशहित पार्टीहित से सर्वोपरि मान लें। कुछ काल के लिए वोट (VOTE) की राजनीति को छोडकर, एक होकर इस खतरे का मुकाबला करने के लिए डट जायें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सरकार के सामने निम्न माग पेश करती है—

१ बरनाला की रथिक सरकार को तत्काल पदच्युत करे।
एक मतनिरपेक्ष (सक्युलर) राज्य मे रथिक सरकार के लिए कोई स्थान नही रह सकता है।
बरनाला सरकार की गतिविधियो से इस बात का स्पष्टीकरण होता है कि वे पंजाब मे जनता को तकलीफो को सदा बनाये रखना चाहते है।

२ जेसलमेर से काश्मीर तक सुरक्षा पट्टी का निर्माण अविलम्ब करे और जहा-जहा इसकी जरूरत हो, वहा-वहा भी ऐसी सुरक्षा पट्टी बनाई जाये।

३ उग्रवादी जो पंजाब मे गिरफ्तार होते हैं उन्हे देश के अन्य कोनो मे भेजा जाये।

इन पर मुकदमे चलाने के लिए विशेष ट्रिब्यूनल बनाये जाये, जो पंजाब के बाहर ही काम करेंगे।

जोधपुर जेल मे स्थित सैनिक भगोडो की रिहाई की माग देशद्रोह के सदृश ही है। ऐसी माग करनेवालो पर कडी निगाह रखी जाये और देशद्रोह में सहयोग देने वालो के साथ जिस ढग का बर्ताव होना चाहिए वैसे बरता जाये।

आनन्दबोध सरस्वती	वन्देमातरम रामचन्द्रराव	प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली		आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष के उपलक्ष मे १४ से १८ सितम्बर, ८६ तक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हो रहा है, जिसमें हरयाणा एव पंजाब प्रान्तो के डी० ए० वी० कालेजो से १०० युवक आकर प्रशिक्षण लेंगे। इस शिविर में युवको को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक शिक्षण वैदिक सिद्धान्तो के अनुरूप दिया जावेगा। यह शिविर दयानन्द कालेज, हिसार के लखपतराय छात्रावास में सम्पन्न होगा।

शोक समाचार

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख स्नातक श्री धर्मव्रत शास्त्री, एम ए चुड़ेला झुझनू (राजस्थान) निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती अध्यापिका का देहान्त ४२ वर्ष की आयु मे २७ अगस्त १९८६ को हो गया। आप श्री वेदव्रत शास्त्री के बडे भाई स्व० श्री बजलाल आर्य चिड़ावा निवासी की सुपुत्री थी।

श्री धर्मव्रत जी केन्द्रीय विद्यालय हिण्डन गाजियाबाद मे उपाचार्य पद पर राजकीय सेवा मे हैं। आपके दो पुत्र और एक पुत्री हैं। ईश्वर दिवगत आत्मा को शान्ति एव शोकसतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—प्रधान सम्पादक

आर्य गौरव शिवाजी

—ब्र० सजयदेव आर्य निवास दालोली, पो० चिडिया (भिवानी)

जिस समय आर्य-धर्म विधर्मी-शासन को अत्याचार घनघटा से आच्छादित हो रहा था, आर्य-द्रोही यवन-सम्राट् औरगजेब दिल्ली के राज्य सिंहासन पर आरूढ होकर समग्र आर्यावर्त पर अपना आधिपत्य विस्तार कर रहा था। सारे देश मे मुगलो की तूती बोल रही थी। वीर प्रसूता भारत-भूमि की क्षात्र-शक्तिया प्राय छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। आर्यों के धार्मिक भावो पर कुठाराघात हो रहा था। मन्दिरो को विध्वस कर उनके स्थान पर मस्जिदो का निर्माण हो रहा था, जजिया जैसा कठोर कर आर्यों पर लगाया गया था। आर्य कुमारिया तथा सुन्दरी कुल ललनायें बलपूर्वक बादशाह तथा उसके कर्मचारियो के हरम मे लाकर उनकी विषय भोग की सामग्री बनाई जारही थी तथा अत्याचारो से प्रपीडित आर्य महिलाये ठण्डी सास भर-भरकर सिसक रही थी—क्या उस समय भारत आर्यवीरो से शून्य हो गया था? जिस आर्यावर्त का सारे ससार पर चक्रवर्ती साम्राज्य था, उनके एक निर्देशनमात्र से सम्पूर्ण दिग्मण्डल काप उठता था। वहा उन्ही प्राय सन्तानो के सम्मुख हजारो बहनो और माताओ के ऊपर ऐसे भीषण अत्याचार हो, और उनका प्रतिशोध लेने वाला कोई न हो? क्या मा भारती की गोद मे ऐसा कोई लाल नही था, जो अबलाओ को उन विधर्मियो के हाथो रक्षा करता?

धार्मिक आर्यजनता अपने शिखासूत्र परित्याग करने के लिए बाध्य की जारही थी, बहुत-सी जातिया तथा सम्प्रदाय भीषण अत्याचार को सहन करने मे असमर्थ होकर धर्म भ्रष्ट हो रहे थे। गोभक्त आर्यों के सम्मुख गौओ की हत्या करके उनके हृदय को व्यथित किया जारहा था, आर्यों के धर्म-ग्रथो का अग्नि-सस्कार किया जारहा था। आर्यजाति अन्याय और अत्याचार की चक्की मे पिस रही थी तथा वह सर्वथा निःसहाय और निरुपाय होकर घृणित जीवन व्यतीत कर रही थी। ऐसे समय मे प्रबल-प्रतापी, पराक्रमशाली, महाराष्ट्र कुल केसरी, आर्य गौरव महावीर शिवाजी का उदय मराठा प्रदेश मे हुआ। उनके उदय से यवनो का अत्याचार तिमिर धीरे-धीरे विलीन होने लगा। अत्याचार की प्रचण्डगति शिथिल होने लगी। अत्याचारी शासक औरगजेब की आशाओ पर पानी फिर गया। बार-बार पराजित होकर शाति के स्थान पर अशाति का साम्राज्य भोगने लगा। अर्धमृत एव हताश आर्यजाति मे पुन जीवन का सचार हुआ। यदि शिवाजी का उदय नही हुआ होता तो आज आशा नही थी कि यह भारत हिन्दुओ का भारत कहलाता। यहा एक सम्पूर्ण इस्लामी राज्य स्थापित हो गया होता।

वीर शिवाजी वीरता के साथ-साथ विद्याप्रेमी भी थे। वे कविता भी करते थे और विद्वानो का बहुत सम्मान करते थे। मुसलमान फकीरो का भी वे उचित सम्मान करते थे।

शिवाजी मे अलौकिक प्रतिभा थी। राज-काज मे, प्रजापालन में, सैन्य-सचालन तथा सगठन मे, महामदान्ध शत्रुओ का दमन करने मे उन्होने जो प्रतिभा दिखाई है, उसकी तुलना नही की जा सकती। परन्तु मुसलमान इतिहासकारो ने शिवाजी के साथ जो अन्याय किया है, वह सम्भवत किसी दूसरे के साथ नही किया गया होगा। एक स्वतन्त्र हिन्दू राज्य का महाराष्ट्र मे स्थापित होना किसी यवन इतिहास लेखक को कितना खल सकता है, इसका अनुमान एक सामान्य व्यक्ति भी कर सकता है। भारत मे इतने विशाल साम्राज्य के रहते हुए भी एक साधारण जागीरदार जिसकी मुराद उसके सामने कुछ भी नही हो। एक स्वतन्त्र राज्य जननी जन्मभूमि तथा धर्म की रक्षा के लिए स्थापित करे, क्या यह उनके लिए दुःख की बात नही है। यदि यवन इतिहासकारो ने वीर केसरी को एक 'पहाडी चूहा' कहा तो इसमे आश्चर्य ही क्या है। यदि शिवाजी नीति से काम नही लेते तो क्या सम्भव था कि एक साधारण मनुष्य इतने बडे मुगल साम्राज्य के समक्ष उस समय खडा हो सकता, जिस समय भारत के बडे-बडे योद्धा एव आर्यवीर केवल अपने बलपराक्रम के भरोसे लडते-लडते वीरगति को प्राप्त कर गये थे। इसलिए उन्होंने जिस नीति का अवलम्बन किया था, वह सर्वथा न्यायसगत थी।

शिवाजी केवल वीर एव साहसी योद्धा ही नही थे, बल्कि सच्चे धर्मात्मा भी थे। उनकी धार्मिक नीति बडी ही उदार थी। हिन्दू, मुसलमान या कोई भी हो, उनके पूज्य स्थानो के लिए उनके हृदय मे आदर था। उन्होने नियम बना दिया था कि जहा कही उनके सैनिक लूटमार करें वहा मस्जिदे न तोडी जायें, कुरान नष्ट न किये जायें तथा महिलाओं को कोई कष्ट न पहुचाया जाये। सन् १६६४ ई० मे जब कल्याण नामक प्रदेश लूटा गया, तब सेनापति आवाजी सोनदेव ने वहा के गवर्नर मौलाना अहमद की पुत्रवधू को जो एक परम सुन्दरी रमणी थी, शिवाजी के सम्मुख उपस्थित किया। उस युवति को देखकर वैदिक सस्कृति के परम भक्त शिवाजी ने कहा - 'यदि मेरी माता भी इतनी सुन्दर होती तो सम्भव था मैं इतना कुरूप न होता।' उसको सम्मानपूर्वक उसके सम्बन्धियो के पास भेजकर भारतीय सस्कृति की महानता को प्रस्तुत किया।

पर शोक! महाशोक! ५ अप्रैल, १६८० को भारत का भाग्य फूट गया। उसका सौभाग्य सिन्दूर धुल गया। इस अशुभ घडी मे आर्य गौरव वीर शिवाजी सदा सर्वदा के लिए इस प्रकार ससार से विदा हो गये। भारत का वह देदीप्यमान रत्न खो गया। आर्य धर्म का वह स्तम्भ सर्वदा के लिए टूट कर गिर गया। आर्यजाति अनाथ हो गई। गौब्राह्मण तथा स्त्रियो का आश्रयदाता इस ससार से विदा हो गया।

छत्रपति वीर शिवाजी की मृत्यु के समय उनका राज्य उत्तर में चार सौ मील लम्बा तथा १२० मील चौडा था, तथा दक्षिण मे आधा कर्नाटक उनके अधीन था।

आज जबकि मतान्ध इस्लामी सगठन तथा विदेशी ईसाई मिशनरिया वैदिक सस्कृति को नष्ट करने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है। आवश्यकता है आर्यवीर सगठित हो तथा आर्य सस्कृति को विनाश से बचाये।

पलवल मे विराट् आर्य महासम्मेलन

(हमारे विशेष सवाददाता द्वारा)

पलवल (निस) हरयाणा के ऐतिहासिक नगर पलवल मे दिनाक २५ से २७ सितम्बर तक फरीदाबाद जिला आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय लिया गया है। यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा निश्चित किये गये जिला आर्य महासम्मेलन की पहली कडी है। पलवल सहित जिले के सभी आर्यसमाजो तथा आर्यसस्थाओ ने सम्मेलन की तैयारी आरम्भ करदी है। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष पूर्व विधायक चौ० राजेन्द्रसिंह बीसला एडवोकेट ने हमारे सवाददाता को बताया कि सम्मेलन मे प्रसिद्ध आर्य किसान नेता तथा लोकसभाध्यक्ष डा० बलराम जाखड के आने की भी पूरी सम्भावना है। इसके अलावा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), स्वामी दीक्षानन्द, स्वामी ओमानन्द सरस्वती (अध्यक्ष परोपकारिणी सभा), प्रसिद्ध पत्रकार श्री के० नरेन्द्र तथा प० क्षितिश वेदालकार, बहन मीरा यति, श्री प्रणव शास्त्री, श्री जयप्रकाश (पूर्व इमाम बेतिया) इनके अलावा प्रसिद्ध आर्यनेता प्रो० शेरसिंह भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा अध्यक्ष हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा तथा महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री आदि सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे। श्री बेगराज 'बेग', श्री महेशचन्द शास्त्री सगीतरत्न, प० मुरारीलाल बेचैन आदि के प्रभावशाली भजन होंगे। २६ सितम्बर को एक विशाल शोभा-यात्रा का आयोजन होगा तथा २८ सितम्बर को रात्रि ८०० बजे युवा सम्मेलन होगा, जिसमें एक कवि सम्मेलन भी होगा। इसके अलावा राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन इस समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे।

स्वास्थ्य चर्चा—

EYE-FLU आंखों का रोग

(Conjunctivitis)

आंखो का यह रोग आजकल बहुत फैला हुआ है। बहुत से लोगो की आखें लाल और सूजी हुई हैं। समाचारपत्रो से पता लगता है कि देश के बहुत से भागो मे यह रोग फैला हुआ है। यह छूत का रोग है और कष्टदायक भी। किसी रोगी की आखो में आखें डालकर देखने से भी यह रोग लग सकता है। यहा तक कि रोगी से हाथ मिलाने से भी यह छूत लग सकता है। अत इससे बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है।

सावधानिया :

१—किसी रोगी की आखो में आखे डालकर न देखे।

२—किसी रोगी से ज्यादा देर तक हाथ न मिलायें।

३—किसी रोगी का कोई कपडा, तौलिया, रूमाल आदि इस्तेमाल न करें।

४—धूप का चश्मा इस्तेमाल करें।

यदि यह रोग लग जाये तो निम्नलिखित होम्योपैथिक दवाइया रोग लक्षणो के अनुसार प्रयोग करें। बहुत जल्दी आराम आ जायेगा।

१—युफ्रेशिया-३० (EUPHRASIA-30) आखो में खुजली, जलन, आखो मे रेत के कण का अनुभव, जोर से मलने को जी चाहे, आखो मे जो पानी निकले वह चमडी पर भी खुजली करे। दिन मे चार बार दे।

२—बैलाडोना-२०० (BELLA DONNA-200) आखो में गर्मी, रक्तिमा (बहुत लाली) और जलन, रोशनी मैं आखें न खोल सकना, पानी बहना, मुह भी लाल, सिरदर्द हो तो यह दवाई लाभकारी है। दिन मैं दो बार दें।

३—एपिस-३० (APIS-30) आखो मे दूसरे लक्षणो के साथ-साथ डक जैसी चुभन होती है। यह इसका विशेष लक्षण है। दिन मे चार बार दें।

४—अर्जेन्टम नाइट्रिकम-३० (ARGENTUM NITRICUM-30) आखो में अन्य लक्षणो के साथ इस दवाई का एक विशेष लक्षण है कि आखो में कीचड 'गीद' आना, चिपचिपा गीद। सवेरे उठते समय आखे चिपक जाती हैं। (रोगी मीठा खाने का बहुत शौकीन होता है।) दिन में चार बार दें।

बायोकैमिक दवाई (BIOCHEMIC)

काली म्युर ६=४ गोलिया

फरम फास १२=४ गोलिया

मिलाकर दिन मे चार बार दे। यह भी लाभकारी हैं। खाने की दवाई के साथ-साथ आखो मे डालने की दवाई का भी प्रयोग करे तो ज्यादा अच्छा है।

क: १—Eye Lotion—युफ्रेशिय मदर टिंकचर १० बूद, डिस्टल्ड वाटर या गुलाब जल १ औंस मिलाकर रखे, और दिन में ३-४ बार दो दो बूंद आखो मे डालें। शीशी फ्रिज मे रखकर ठण्डी करने के बाद प्रयोग करे।

२—साफ पानी में फिटकडी सफेद—एक दो मिनट के लिए घोलकर रख ले और eye lotion की तरह भी इस्तेमाल करें।

३—साफ गगा जल—फ्रिज मे रखकर ठण्डा करके eye lotion की तरह ही इस्तेमाल कर सकते हैं।

४—फ्रिज में रखे ठण्डे पानी से आखे धोने से भी लाभ होता है।

परहेज—अचार, खटाई, लाल मिर्च, तेज मसाले, कच्चा प्याज, लहसन आदि का प्रयोग मना है। धूप वाले चश्मे का प्रयोग करें।

मुफ्त सलाह लेने के लिये मिलें—

डा० अर्जुनदास मिगलानी

प्रधान किला मोहल्ला सुधार सभा, रोहतक

पं० समरसिंह वेदालंकार को श्रद्धांजलि

७ अगस्त १९८६ के सर्वहितकारी के अक से यह जानकर अति दुःख हुआ कि पूज्य गुरुजी का निधन २९ जुलाई, ८६ को होगया। मैंने आज से ठीक १४ वर्ष पहले जब मैं आर्य हिन्दी सस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी में पढता था, विशारद की तैयारी कर रहा था, तब अप्रैल १९७२ में आपके दर्शन सर्वप्रथम आर्यसमाज लोहारु के वार्षिक उत्सव पर किये थे और मैंने यज्ञोपवीत भी आपके हाथो मे लिया था। तदनन्तर अनेक बार मुझे आपके पवित्र दर्शनो का अवसर उपलब्ध होता रहा और आप से शका-समाधान भी कराता रहा। आप सदैव मुझे बेटा कहकर पुकारते थे। आपका निधन मेरे लिए बडे दुःख का कारण बना है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग से दुःखी परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अजीतसिंह शास्त्री सुपुत्र श्री दलीपसिंह आर्य

गाव काकडोली हुक्मी, जिला भिवानी

२—यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि भाई समरसिंह जी का स्वर्गवास हो गया है। गुरुकुलीय जीवन मे उनसे मेरा गहरा सम्बन्ध रहा था। जब वो पजाब कौंसिल के सदस्य थे तो लाहौर में प्राय उनसे भिन्न-भिन्न विषयो पर चर्चा होती थी। बहुत कुशाग्रबुद्धि और सुपठित थे। उनके चले जाने से एक और अभाव हो गया है। बहुत ही ईमानदार और सच्चे आर्य थे। उनके निधन से गुरुकुलीय परिवार में एक और क्षति हो गई है। कृपा करके उनके परिवार तक मेरी हार्दिक सवेदना पहुचा दे। आपकी सभा को जो इस दुर्घटना से हानि हुई है, उसकी पूर्ति कभी नही हो सकती। अपने सहयोगियो तक मेरी सवेदना पहुचायें। परमात्मा उन्हें सद्गति प्रदान करेंगे। प्रभु की लीला के आगे हम सब नतमस्तक हैं। उसकी इच्छा पूरी हुई, सबको नमस्ते।

सत्यदेव विद्यालकार

एन-३१, ग्रेटर कैलाश-१ नई दिल्ली-४८

आर्य वीरदल हिसार के लिए व्यायाम शिक्षक चाहिए

जो हिसार में स्थायी रूप से रहकर हिसार की शाखाओ को नियमित रूप मे चला सके। जो कुछ बौद्धिक भी दे सके। उचित वेतन के साथ स्थान, बिजली, पानी फ्री होगे। तुरन्त अपने खर्चे से मिलें या पत्र-व्यवहार करे।

सीताराम आर्य, बालसमन्द रोड, हिसार



आज का युवावर्ग किस ओर

सत्यकाम शाखा अध्यक्ष, आर्य वीरदल, हिसार

जब कोई व्यक्ति रास्ते में आगे बढता हुआ जब किसी चौराहे या दुराहे पर पहुच जाता है, तब उसके सामने यह समस्या पैदा होती है कि अपनी मंजिल को प्राप्त करने के लिए किस मार्ग की ओर बढना चाहिये। इसी प्रकार आज ससार में नौजवानो के सामने दो रास्ते आते हैं, एक भौतिकवाद तो दूसरा आध्यात्मिकवाद का पहला रास्ता नास्तिकता, अधर्म, अन्याय, असत्य व राक्षसी प्रवृत्ति का है। तथा दूसरा मार्ग त्याग, धर्म, न्याय सत्य व देवता प्रवृत्ति का है। बहुत दुःख को बात है कि आज का नवयुवक त्याग, धर्म व न्याय के मार्ग को त्याग कर नास्तिकता अधर्म, अन्याय के मार्ग को पकडता जारहा है।

इस रास्ते पर जानेवाले नवयुवको का नारा है। "खाओ पियो मौज उडाओ" खूब भोगो का भोग करो, यह शरीर और लोक ही सब कुछ है, आत्मा परमात्मा आदि कुछ नही है। इसलिए "खाओ पियो करो आनन्द भाड मे जाये परमानन्द" इस सिद्धात को मानने वालो का मत है "यह दुनिया है तुम्हारी इस दुनिया के ले लो मजे"।

आज के बालको, किशोरो तथा युवको मे फैली हुई यह भावनाये राष्ट्र के लिए अभिशाप हैं, हमारी सभ्यता की दिवारे गिरने को हैं। पता नही पूरी इमारत कब धराशाही हो जाये।

आज के राष्ट्र का सारा भार युवको पर है, राष्ट्र का वास्तविक धन युवक है, आज के बालक कल का भावी निर्माता है। युवको को चाहिए कि वे देश को नया जीवन देनेवाली अच्छी भावनाओ को धारण करें। आज के बालक अपने आपको आर्यवीर बनायें। ताकि वे भविष्य में देश की रक्षा कर सकें। हर युवक अपने आपको देश का पहरेदार समझे।

हरयाणा की आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) २६ अक्तूबर को रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। जिन आर्यसमाजो ने अभी तक वेदप्रचार दशांश की प्राप्तव्य राशि नही भेजी है, वे तुरन्त भेज देवें। आर्यसमाजों मे पृथक् से भी डाक द्वारा पत्र लिखे जारहे हैं। आर्यसमाज अपने वार्षिक चुनाव की भी सूचना भेजने का कष्ट करें।

सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK ९

दूरभाष : १,६६,०८,१३,०८७

ओ३म् विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३ अङ्क ४२ २८ सितम्बर, १९८९ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

कनागतो के अवसर पर सामयिक महत्त्वपूर्ण लेख—

क्या मृतक-श्राद्ध व तर्पण वेद विरुद्ध है ?

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे—

असल में तो लोग "पितर" शब्द के अर्थ को भी अब तक इसके अर्थ रहस्य को भी न समझ कर विपरीत अर्थ ले लेते हैं। सामान्य लौकिक जगत् में पितृलोक यमलोक के अधीन माना जाता है—जैसा कि शतपथ १३।४।३।६ में भी कहा—यमो वैवस्वतो राजेत्याह तस्य पितरो विश —अर्थात् विवस्वान् यमराज है और पितर उसकी प्रजाये हैं। शरीर में यम का एक स्थान गर्दन है। इस प्रकार गर्दन आदि यम स्थानों के अधीन शरीर की जितनी शक्तियां पालन-पोषण आदि का कार्य कर रही हैं, वे सब पितर कहला सकती हैं। उदाहरण के रूप में कुछ संकेत देते हैं—

जिस प्रकार मानव समाज की क्षत्र शक्ति और वैश्य शक्ति को शतपथ ७१।१।४ मे "क्षत्र वै यमो विशः पितर" इस प्रकार यम और पितर मे विभक्त किया है। इसी प्रकार मानवीय शरीर के विभाग किये जा सकते हैं। इस आधार पर हमारा पेट वैश्य है और वह पितर स्थानीय है। उदर मे जो आमाशय क्षुद्रान्त्र, बृहदन्त्र, ग्रहणी, यकृत्, अग्न्याशय आदि शक्तियां भोजन का रसादि मे परिवर्तित कर देती हैं। ये सब हमारे शरीर में विद्यमान पितर हैं। उदर मे अपने आसनो पर विराजमान हुए-हुए पितृयज्ञ कर रहे हैं। इनके सम्बन्ध में ब्राह्मण ग्रन्थो मे कहा है कि—'ऊष्मभागा हि पितर' तै० १।३।१०।६ अर्थात् शरीर का जो अग्न्याशय आदि ऊष्म भाग है, वह पितर कहलाता है। इसी प्रकार तै० १।३।१०।७ मे भी कहा है—"हरणभागा हि पितर" अर्थात् रसादि को हरण करनेवाले रस अकुरिकायें आदि भी पितर हैं।

इसी प्रकार यजु० ३२ में भी कहा है—नमो व पितरो रसाय नमो व: पितर शोषाय। हे पितरो ! तुम्हारा रस बनाने और उसका शोषण कर लेने की प्रक्रिया के लिए नमस्कार हो। आगे भी कहा है—"ऊर्जं वहन्तीरमृत घृत पय कीलाल परिस्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्" अर्थात् अमृत, घृत, दूध, अन्नादि से मेरे पितरो को तृप्त करे। इस प्रकार वेद के इन पवित्र मन्त्रो का यथार्थ अर्थ करना चाहिए। यहा पितर शब्द मरे हुओं का नहीं, जीवितों का वाचक है। घी, दूध, अन्नादि से पितर अर्थात् माता-पिता आदि को तृप्त करना ही मन्त्र का आशय है।

अब रही बात वैतरणी नदी की। वह नदी कहीं पर भी नहीं है। काल्पनिक है, क्योंकि गरुड पुराण अ० ३। श्लोक २६ में उसका वर्णन ऐसे है—

नीयन्ते गुप्तुं कामं त महावैतरणी नदीम्।
शतयोजनविस्तीर्णां पूयशोणितसकुलाम्॥

यह है वह नदी। जो यमलोक के मार्ग में बताई जाती है। जिसका विस्तार १०० योजन अर्थात् चार सौ कोश चौडी और पीप व खून से भरी हुई है। ये असम्भव बातें हैं, झूठे गपोडे हैं। अत मृतक श्राद्ध व तर्पण करना वेद विरुद्ध है। जीवित माता-पिता, अतिथि, विद्वान् आदि की सेवा पचायतन पूजा है। ऐसा श्राद्ध व तर्पण तो प्रतिदिन करना ही चाहिए। इसमें पन्द्रह दिन के कनागतों से क्या लाभ। खीर, हलवा आदि तो प्रत्येक पर्व त्यौहार पर बनाकर भोजन अवश्य करना चाहिए, किन्तु बेचारे मरे हुओ के नाम पर बनाकर न खाना चाहिए।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २६ अक्तूबर को रोहतक में होना निश्चित हुआ है। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा के उपदेशकों अथवा मनीआर्डर द्वारा भेजने की कृपा करे, ताकि उनके प्रतिनिधियो की सेवा में समय पर अधिवेशन का एजेण्डा आदि भेजा जा सके। जिन आर्यसमाजो ने अभी तक अपना वार्षिक चुनाव नहीं किया है, वे भी आर्यसमाज के नियम उपनियम के अनुसार चुनाव करके सभा को भेज देवें।

हरयाणा की पंचायतों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा सरकार के आदेशानुसार जो ग्राम पचायत ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के लिए प्रस्ताव पारित कर देगी और हरयाणा के कराधान एव आबकारी विभाग के आयुक्त को चण्डीगढ तथा उसकी प्रतियां जिला अधिकारियो के पास भेज देगी, उनके ग्रामो में अगले वर्ष शराब के ठेके नहीं स्वीकार होगे। अत. पचो, सरपचो तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध मे पचायतो से प्रस्ताव पारित करवाकर शराबबन्दी कार्यक्रम में सहयोग देवे की कृपा करें।

—सभा मन्त्री

महात्मा फूलसिंह

—आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

अमर बलिदाता महात्मा फूलसिंह जी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, उनके सिद्धातो पर अत्यन्त विश्वास करने वाले, स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह गुरुकुल पद्धति पर पूर्ण विश्वास करनेवाले, महात्मा गांधी की तरह सादगी, सचाई, सफाई को महत्त्व देने वाले महापुरुष थे।

गरीबो के परम रक्षक, जाति-पाति के भेदभाव से सर्वथा दूर, यश मान की परवाह किये बगैर सतत कर्मशील, सर्वदा ऊचे विचारो में विहार करनेवाले देवपुरुष थे।

उनके जीवन मे कुछ ऐसी विशेषतायें थी जो अन्य पुरुषो मे मिलनी कठिन हैं। निर्धन परिवार मे उत्पन्न होकर भी आपके विचार दानशील धनी पुरुषो के समान थे। कभी भी घबराहट को स्वीकार न करते थे। कितना ही कष्ट आ पडे, परन्तु आप अपने निश्चित कार्यक्रम को छोडने का नाम न लेते थे। कोई व्यक्ति कभी भी जानकार, अनजान आकर अपने कष्ट को उनके सामने कहे, उसे दूर करने के लिये अपने जीवन की बाजी लगा देते थे। आलस्य का तो मानो उनके पास ठहरने का स्थान ही नही था। दिन में मैंने उनको कभी लेटे हुए नही देखा। यदि बैठे हैं और अकेले हैं तो लिखते दिखाई देते थे। इलाके के श्रद्धालुजन उनको घेरे रहते थे। अपने कष्ट की कहानी सुनाकर लोग यह अनुभव करते थे कि अब हमको इस दु ख से मुक्ति मिल जावेगी। जिस भी कार्य मे, आदोलन मे लग जाते थे वह कार्य पूरा न हो, ऐसा कोई भी स्वीकार न करता था। जितना-जितना उनके समीप कोई रहता था, उतना-उतना उनका भक्त हो जाता था। ऐसा प्रतीत होता था, मानो प्रभु ने उनको गुणो का प्रसार करने के लिए ही बनाया था।

माहरा गाव, जिला रोहतक मे उत्पन्न होकर आठवी तक उर्दू भाषा मे शिक्षा प्राप्त की, पुन पटवारी बने। कुछ बुरे सग से कुछ दिन के लिये मास भक्षण तथा रिश्वत आदि के दोष आये, परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी से यज्ञोपवीत प्राप्त कर वैदिकधर्म के प्रचार के आप दीवाने बन गये। जो दोष कुसग से आगये थे, उनको महात्मा मुन्शीराम की तरह त्याग कर जीवन का उद्देश्य समाज सुधार, वैदिकधर्म का प्रचार गुरुकुल सचालन मे व्यतीत किया। इन कार्यों के अतिरिक्त मानो उनके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रहा। उनका एक-एक क्षण वैदिकधर्म के प्रचार के लिये था।

बुवाने लाखू मे रहते, पटवार की सर्विस करते जब आपको पता लगा कि समालके गाव मे बूचडखाना खुलेगा तब सारे इलाके मे घूम-घूमकर इसका विरोध कराया, तथा कई सहस्र व्यक्तियो समेत पहुच कर अपनी सर्विस की चिन्ता किये बिना बूचडखाना बन्द करवाया।

मोठ गाव में जो हिसार जिले में है, तेईस दिन का कठोर अनशन व्रत करके सारी पजाब सरकार को बेबश कर गरीब हरिजनो का कुआ बनवाया, जिसको न बनने देने की बाजी मुसलमान राजपूत लगाये हुए थे। बडे-बडे नेता महात्मा गाधी जैसे भारत के रत्न भी उनकी सहायता के लिये दौडे हुए आये।

हैदराबाद के हिन्दुओ की रक्षा के लिये जो आर्य सार्वदेशिक सभा ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया था, रोहतक में उसके सर्वेसर्वा आप ही थे। आपके ही कारण रोहतक जिला सत्याग्रह में सबसे अधिक सत्याग्रही भेजने में सफल हुआ। यवनो ने रुकावट डालने के अनेक प्रयत्न किये, परन्तु आपकी तपस्या तथा उग्रता के आगे वे अपने आपको ठहराने मे समर्थ न हो सके।

पचायतो के सचालन में आपका बहुत बडा सहयोग था। समय-समय पर पचायतो के द्वारा निकृष्ट रिवाजो को, व्यर्थ के खर्चो को रोकने के लिए आपने अनेक प्रयत्न किये।

अपने को सकट में डालकर आपने पाच या छ अनशन अपने जीवनकाल मे किये। उजडे हुए ग्रामीणो के घरो को बसाया। बुरे पुरुषो की बुराई को दूर करने के लिए कभी-कभी आप अग्नि के समान प्रदीप्त हुए दिखाई देते थे। मुसलमानों द्वारा एक कुवारी कन्या को उठा लेने पर आपने वह उग्ररूप धारण किया कि मुसलमानो की पचायत ने उन के सामने क्षमायाचना की। उस लडकी को उनके माता-पिता को दिलाया। जिससे वे माता-पिता जीवन पर्यन्त आपके कृतज्ञ बने रहे।

बालकों का गुरुकुल खोलकर आपके मनमें एक भावना आई कि बालकों के गुरुकुल की तरह बालिकाओं की शिक्षा के लिए भी कोई गुरुकुल या शिक्षण केन्द्र खोलना चाहिए। इस भावना को लेकर आपने खानपुर कला, जिला सोनीपत में एक गुरुकुल या शिक्षण केन्द्र खोला, जो इस समय उत्तर भारत का विशाल शिक्षण केन्द्र है। जहा पर छात्रावास में भी दो हजार छात्रायें रहती हैं।

आप साधु थे परन्तु अन्याय को या जुल्म को सहन नहीं कर पाते थे। जो मुसलमान अपने दबाव से उलटे-सुलटे काम करने में तैयार रहते थे उनको भी शिक्षा के लिए उचित दण्ड देकर उनका कल्याण करते थे। भय उनके पास फटकता ही नहीं था। लोभ को आप जानते ही नही थे। जीवन सर्वथा आपका सत्य से ओतप्रोत था।

जब कभी गुरुकुल में आते थे उस समय आप अपने हृदय के उद्गार भावनाओ मे ओतप्रोत होकर प्रकट करते थे। वे उपदेश मुझे आज भी स्मरण हैं। उनको भावना का उनसे ज्ञान होता था। वे हमको उपदेश देते हुए कहा करते थे—

मेरे बच्चो! महर्षि दयानन्द द्वारा जो रास्ता दिखलाया हुआ है, उससे अच्छा रास्ता कोई नही है। ससार में अग्नि लगी हुई है, मैं चाहता हू कि तुम उस अग्नि को बुझाओगे। मैं नहीं चाहता कि तुम धनी बनो। तुम सच्चे उपदेशक, सच्चे अध्यापक तथा समाज सुधारक बनो, तभी मुझे आत्मशांति मिलेगी। बुद्ध भगवान् के चेलो की तरह घूम-घूमकर वैदिकधर्म का प्रचार करो, दु खिया लोगो के दु खों को दूर करो। मैं चाहता हूं कि तुम सुख को त्याग कर ससार को सुखी करो। मेरे तो बहुत से लोग जो पापाचार में फसे हुए हैं, विरोधी हो चुके हैं। पता नही कब मेरे जीवन को ले बैठें। मेरे काम को तुम पूरा करोगे।

ये उपदेश आज भी मेरे कानों में घूमते हैं और समय-समय पर प्रेरणा देते रहते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी जब गुरुकुल से दिल्ली आ बैठे थे, तब पीपे में शुद्ध घृत उनके पास पहुचाते थे। आर्यसमाज के गणमान्य उपदेशकों की धन से या अन्य प्रकार से सेवा करना आप अपना परम धर्म मानते थे।

ऐसे महापुरुष का बलिदान १४ अगस्त श्रावण शुक्ला दो को हुआ था। अब की बार सात अगस्त श्रावण शुक्ला दो सन् १९८९ को गुरुकुल खानपुर कलां, जिला सोनीपत में हुआ। ऐसे महापुरुष के बलिदान दिवस को मनाने के लिये उनकी कर्मभूमि तथा बलिदान भूमि मे पहुचना चाहिए। प्रभु ऐसे सच्चे समाजसेवक वैदिकधर्म को पुन दे, यही बार-बार प्रार्थना है।

सम्पादकीय

व्यसनों से मुक्ति का अभियान

व्यसनों से मुक्ति की लहर आज संसारभर मे चल रही है। शराब और दूसरे मादक द्रव्यों की लत व्यसन के रूप मे इतनी फैल चुकी है कि सभी राष्ट्र व्यसनों के कारण दुर्घटनाओ, अपराधो, टूटे हुए परिवारो, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, चरित्रहीनता, उत्पादकता मे कमी, सुरक्षा व्यवस्थाओ मे लापरवाही आदि से इतने परेशान हैं कि अपने समाज और राष्ट्र का हित व्यसनो से मुक्ति मे देखने लगे हैं। इसलिये हीरोइन, चरस, स्मैक तथा अन्य मादक द्रव्यों की तस्करी को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर केवल विचार विमर्श ही नही, बल्कि अनेक व्यवस्थायें भी मिलकर कर रहे हैं। रूस ने तो पूरा अभियान चलाया है, शराब तथा मादक द्रव्यो से बच्चो तथा नवयुवको को बचाने का विशेष रूप से और सभी नागरिको का सामान्य रूप से।

१९८४ मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा को व्यसनों, विशेष रूप से शराब से मुक्ति दिलाने का आदोलन आरम्भ किया था। हिसार, रोहतक, सोनीपत और गुडगाव जिलो में १९८४ और १९८५ में धरने भी दिये गये। महिलायें और बच्चे क्योंकि अपने पति तथा पिता के व्यसन के कारण अपार कष्ट झेलते हैं, इसलिये महिलाओं ने पुरुषो के साथ मिलकर पुरुषो से भी बढ-चढकर इन धरनो में भाग लिया और सभी जगह उनको सफलता मिली। मार्च १९८६ में सभा के आदोलन के फलस्वरूप ५० के लगभग ठेके देहात से उठ गये।

पजाब में १९६२ में एक कानून बना था कि जिस गांव की पचायत अक्तूबर मास में अपना प्रस्ताव सरकार को भेजकर यह प्रार्थना करे कि उसमें ठेका है तो नही रहना चाहिये और नहीं है तो नया नहीं खुलना चाहिये तो सरकार को यह कानूनी जिम्मेदारी है कि वह अगले वर्ष मार्च में उस गाव मे ठेका न चलाये या न चलने दे।

किसान और मजदूर ही तो ऐसे भोले हैं जो अपनी खून-पसीने की कमाई से शराब खरीद कर पीते हैं और मिलावट के कारण जहर पीकर उनको जीवन से भी हाथ धोना पडता है। पिछले दो वर्षों मे काफी चेतना हरयाणा की देहात मे आई है। मेरा सभी पचायतो से यह अनुरोध है कि वे शीघ्र से शीघ्र और महीने के अन्दर-अन्दर अपने प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भेज देवें, ताकि इस लानत से उनको छुटकारा मिले।

चीन के माओ त्से तुग ने अफीम और उससे बननेवाले सभी मादक द्रव्यो से चीन का पूर्ण रूप से मुक्ति दिला दी। आज चीन का नागरिक पूर्ण रूप से अनुशासन में रहकर उन्नति के मार्ग में आगे बढ रहा है। जिस चीन के लोगो को नशेबाज, ढीला-ढाला, कमजोर और हल्का-फुल्का समझते थे और कहते थे कि भारत का एक जवान वहा के तीन-तीन आदमियो को बगल में लेकर भाग सकता है, उसी चीन के नवयुवक और नवयुवतियां पूरे एशियाभर मे खेलो में सबसे आगे हैं। दिल्ली मे हुए एशियाड खेलो मे भारत का कहीं नम्बर ही नही था और अब कोरिया के शहर सियोल मे होने वाले खेलो में भारत किसी भी खेल में टिक नहीं पारहा है। कारण साफ है, चीन ने व्यसनो से बहुत हद तक मुक्ति पा ली। हिप्पियो और नशेबाजों को देश मे घुसने नही दिया, नागरिकों को पौष्टिक भोजन दिया और सयम और अनुशासन का जीवन दिया। दोनो महाशक्तियां अमरीका और रूस उसकी खुशामद कर रहे हैं। रूस ने भी नशाबन्दी का कार्यक्रम अपनाया है और इसमे तनिक भी सन्देह नहीं कि वह और अधिक शक्तिशाली देश बनकर उभरेगा।

हरयाणावासियो से आमतौर पर और किसान मजदूर जो नशो के आसाना से और बडी सख्या मे शिकार बने हुए हैं, उनसे विशेषतौर पर मेरा आग्रह है कि वे शराब के व्यसन से शीघ्र से शीघ्र छुटकारा पायें। यह उनके लिए स्वर्ण अवसर है कि वे पचायतो के द्वारा प्रस्ताव पास करके शराब के ठेके बन्द करवा देवें। भूतपूर्व सैनिको से भी प्रार्थना है कि वे शराब के परमिट लेकर शराब की बोतलो में मिलावट करके उसे गाव मे बेचकर लोगो के चरित्र, मर्यादाओ तथा स्वास्थ्य के साथ खिलवाड न करें। मैं प्रधान मन्त्री जिनके पास स्वय रक्षा विभाग भी है, इस सम्बन्ध मे लिख रहा हूँ कि भू०पू० सैनिको को सस्ती शराब देने की बजाये, सस्ता कपडा, बीज, खाद आदि दें।

—प्रो० शेरसिंह

पंजाब मे उग्रवादियों द्वारा निरन्तर हत्यायें

पजाब की अकाली सरकार आतकवाद समाप्त करने मे असफल हो चुकी है। वहा लगभग प्रतिदिन उग्रवादियो द्वारा निर्दोष नर-नारियो की हत्यायें की जारही हैं।

१६ सितम्बर को फिल्लौर में शिवसेना के उपप्रधान श्री विजय-मोहन की हत्या की गई।

१८ सितम्बर की डेरा बाबा नानक में पूर्व पुलिस कर्मचारी श्री कुन्दनसिंह की हत्या करदी गई।

१९ सितम्बर को भगता जेहडवाला में एक किसान श्री कुन्दनलाल की हत्या करदी गई।

२० सितम्बर को तरनतारन के ग्राम चोटाला मे दो व्यक्तियो तथा जालन्धर के ग्राम हजारा में एक व्यक्ति तथा दोराहा मे एक व्यक्ति की हत्या करदी गई।

२१ सितम्बर को मालेरकोटला में हिन्दु सुरक्षा सेना के नेता श्री सुरेन्द्र शर्मा की गोली मारकर हत्या करदी गई।

२२ सितम्बर को थाना मेहता के ग्राम माहसमपुरा में एक कुयें से एक सिरविहीन धड बरामद किया गया।

२३ सितम्बर को गुरदासपुर के ग्राम बरमाड मे एक महिला और उसके बेटे की हत्या करदी गई।

२४ सितम्बर को मुकेरिया के निकट पजाब के पूर्व मन्त्री श्री डा० केवलकृष्ण के भाई को घायल करके उसका स्कूटर छीन लिया गया।

२५ सितम्बर को उग्रवादियों ने कम्युनिष्ट नेता श्री दर्शनसिंह कैनेडियन पूर्व विधायक की हत्या की, अमृतसर के कोट करनेलसिंह में एक युवक और महिला ने एक अपराधी को छुडवाने के लिए गोलियो की बौछार करके हत्या करदी।

आश्चर्य यह है कि अपराधी अपराध करके भाग जाते हैं। पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने मे असफल रहती है।

नामकरण संस्कार

सभा के महोपदेशक प० चन्द्रसैन जी की सुपुत्री श्रीमती सुषमा आर्या के नवजात शिशु का नामकरण सस्कार ५ अक्तूबर को उनके निवास मकान न० २२८२ शकुर बस्ती राजा पार्क, दिल्ली-३४ मे होगा।

आर्यवीर सम्मेलन रोहतक

(आर्यों के सगठन को परीक्षा)

इस वर्ष सदा की भाति हरयाणा आर्य वीरदल का प्रातीय सम्मेलन २७ २८ सितम्बर को रोहतक के ऐतिहासिक नगर में समारोह से मनाया जारहा है। आर्य वीरदल का प्रत्येक सैनिक इसे सफल बनाने के लिए प्रयास कर रहा है। इसमे सन्देह नहो कि प्रति वर्ष यह सम्मेलन आर्यों के उमडते प्रेम सगठन तथा उठतो उमगो का परिचायक होता है। प्रात भर से आर्यबन्धु झूम-झूमकर इसमे भाग लेते है और नई उमग और उत्साह लेकर लौटने हैं। प्रात से बाहिर पजाब तथा हिमाचल के बन्धु भी इसमे भाग लेकर आर्यों के महान् सगठन में योग देते हैं। पिछले सम्मेलन में एक भाई मध्यप्रदेश के गुनानगर से इसमें भाग लेने को आये, मैं उसे देखकर बिस्मित भी हुआ और आनन्दित भी। वस्तुत आर्यों का सगठन अपनी विशेष ख्याति रखता है और इधर रोहतक आय वीरदल के कर्मठ सैनिक सेवा सुश्रूषा प्रबन्ध आदि में भी दूसरे नगरो को चुनोती भी प्रस्तुन कर देते हैं।

सर्वप्रथम मै दल के सैनिको से प्रार्थना करूगा कि वे और अधिक तीव्रता से अपने काय को ले चले। महात्मा हसराज और स्वामी श्रद्धानन्द की यह यादगार हमे तपस्वो जीवन तथा बलिदान की पूत भावना से स्वय ही ओतप्रोत कर देतो है। दिन थोडे हैं कार्य अधिक है। आर्यजनता की हम से अपेक्षायें बहुत हैं, हमारा सगठन आर्यों के लिए न केवल हर्ष को वस्तु हो अपितु गौरव की भी। २७ सितम्बर को मध्याह्न तक रोहतक में हम पहुँच जायें, हमारी वेशभूषा नगर निवासियों को हमारा और हमारे सम्मेलन का परिचय स्वय दे दें। आय वीरदल आर्य-समाज का भविष्य है, बलिदानियो की धरोहर है, तपस्वियो की यादगार है, जो समाज के लिए मरमिटने की तडप जगा देता है, आइये पूरे जोश और उमग से इसमें भाग लेने के लिए सभी साथियो को अभी से प्रेरित करें।

इस वर्ष यह सम्मेलन एक विशेष महत्त्व रखता है। इसके प्रधान इस बार हरयाणा के एक तपस्वो निर्भीक साधु होगे, जिन्होंने अपना सर्वस्व आर्यसमाज की बलिवेदी पर भेट कर दिया है, जिनको जमीन जायदाद, ओढना, बिछौना केवल और केवल आर्यसमाज है। जिनके गुरुकुल प्रेम की गाथायें आज भी व्यक्ति को किसी प्राचीन युग के सन्त की याद दिलाती हैं और सबसे बढ़कर जो शापादपि शरादपि का मन्तव्य मानता है। जो ब्राह्मण तो है, समय आने पर क्षत्रिय भी है और सच मानिये आर्यसमाज मे इन दोनो शक्तियो का प्रतोक या तो स्वामी श्रद्धा-नन्द जी हुए हैं या यह हमारे सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामो ओमानन्द जी। उनका व्यक्तित्व जादू का असर रखता है। हरयाणा को जनता उनके स्वागत सत्कार में सहस्रों की सख्या में रोहतक मे एकत्रित होगी। मैं दूसरे प्रातों के आयबन्धुओं से निवेदन करूगा कि वे भी एक बार इस महात्मा के व्यक्तित्व के चमत्कार को देखने के लिए रोहतक पधारें। सम्मेलन मे आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वनामधन्य श्री स्वामो आनन्दबोध जी की आर्यवीरो को अपना आशीर्वाद देने के लिए रोहतक पधार रहे हैं। उन्होंने अभी-अभी श्री स्वा० सर्वानन्द जी से सन्यास लिया है। उनकी सूझ-बूझ, उनकी दीवानगी और त्याग आर्यों के लिये आदर्श रूप है। देश की समस्याओ को सुलझाने में आर्यसमाज क्या योगदान दे रहा है, शायद यह सब पूज्य स्वा० आनन्दबोध जी से सुनने में न केवल समाज सम्बन्धी कई शकायें दूर हो जायेंगी। अपितु देशसेवा का स्वरूप भी उजागर होगा। इसी प्रकार विशुद्ध आर्यसमाजी दृष्टि से समस्याओ पर प्रकाश डालने की क्षमता वाले गम्भीर वक्ता श्री प्रो० शेरसिह जी, प० क्षितीश जी, श्री वैदिक जी, श्री हस जी भी सम्मेलन की शोभा को द्विगुणित करेंगे।

आर्यजनता से मेरा अनुरोध है कि लाग काम छोडकर भी आर्यों को इस वाहिनी को अपना आशीर्वाद देने के लिए वे रोहतक पहुचे। हर पिता को प्रसन्नता अनुभव होगी, जब वह अपने आर्यपुत्रो को दयानन्द के मिशन के लिए बढते हुए पायेगा। इसमे सन्देह नही कि आर्य वीरदल की युवाशक्ति प्रबुद्ध है, सोत्साह है, परन्तु पिता का आशीर्वाद तो पुत्र को नवजीवन प्रदान करता है। आर्यबन्धु इस विषय में कृपणता से काम न लें। आज हमारे सामने काश्मीर, पजाब, मिजोरम, विदेशी सस्कृति के माननेवालो के षड्यन्त्र, देश की सुरक्षा सम्बन्धो कई समस्याये हैं। आइये हम इन पर बुद्धिमत्तापूर्वक रोहतक में विचार करें, नई दिशा लें, आर्यों के सगठन का स्वरूप जनता के सम्मुख रखें, अपने मान्य नेताओं का हृदय से स्वागत करें और आर्यसमाज मे आशावाद का नवप्रभात लाये। आर्य वीरदल हरयाणा का यह प्रयास है तो श्रीराम जी के पुल बनाने में गलहरी का तुच्छ सहयोग, परन्तु श्रद्धा तथा भावना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, इसे भूलियेगा नही। आशा है कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् मनीषी, गम्भीर वक्ता प० शिवकुमार जी शास्त्री भी सम्मेलन में पधारेंगे।

—उत्तमचन्द शरर

स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और भारत सरकार के स्वा-धीनता सेनानी सम्मान योजना प्रभाग, गृह मन्त्रालय ने हैदराबाद में आर्यसमाज के सत्याग्रह १९३८-३९ के लिए आवेदनपत्रो के पहुचाने की अन्तिम तारीख ३० जून ८६ निश्चित की थी। इस सभा के कार्यालय में (सूचना नही मिलने के आधार पर) ३० जून के बाद भी अपने आवेदन-पत्र कुछ सत्याग्रही भेज रहे हैं। ऐसे आवेदको को भविष्य में अपने आवेदन निर्धारित फार्म की दो प्रतियो पर भारत सरकार के गृह मन्त्रा-लय (स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना प्रभाग), लोकनायक भवन, नई दिल्ली को भेजने चाहिए।

इस सभा द्वारा अतीत में दिये गये बहुत-से भाइयों के प्रशस्तिपत्र पाकिस्तान, सिंध या पूर्वी बगाल में रह गये या नष्ट हो गये अथवा कुछ के खो भी गये हैं। ऐसे आवेदकों को कारावास के प्रमाणपत्र पाने के लिए जेलों से गिरफ्तारी, तबादले और रिहाई को तारीख के साथ पिछले व वर्तमान पते और पिता के नाम के साथ जेलों के सुपरिंटेंडेंटो को आवेदन करना चाहिए। इस प्रकार के बहुत-से प्रमाणपत्र ठीक सूचना भेजने वालो को डाक द्वारा भी मिल गये हैं। स्मरणपत्र भेजना भी उचित होगा ५-३-३९ से १७-८-३९ तक कारावास भुगताने वाले गुरुकुल वृन्दावन का आवेदनपत्र भारत सरकार द्वारा सभवत. इसलिए खारिज कर दिया गया कि उन्होंने रिहाई का कारण (निजाम से समझोता) नही लिखा था।

मोटे अनुमान से ८० प्रतिशत और कहीं-कही के जत्थे के शत प्रति-शत सत्याग्रही दिवगत हो चुके हैं ऐसो दशा में उनकी पत्नियो को पेंशन दिलाने के लिए समाजो को सहायता करनी चाहिए। स्मरण रहे कि अधिकतर केन्द्र शासित क्षेत्रों (यथा दिल्ली) मे केवल ५-६ मास कारावास वालो को पेंशन देने का प्रावधान है। भिन्न राज्यो में सजा की अवधि और पेंशन की मात्रा अलग-अलग हैं। उनके बारे मे आवेदकों को सम्बन्धित राज्य सरकारो से जानकारी लेनी चाहिए।

जेलों का प्रमाणपत्र पाने के लिए स्यव आवेदको को ही प्रार्थनापत्र भेज कर प्रयत्न करना होगा। इस सभा में पेंशन की प्रगति जानने के बारे मे बहुत-से पत्र आते हैं। सभा इस बारे में पूरा प्रयत्न कर रही है, परन्तु २३ जुलाई १९८६ को लोकसभा में बताया गया था कि वहां ७३००० से अधिक आवेदनपत्र भिजवाने के लिए शेष थे, जिन्हें १५ अगस्त तक निबटाने के लिए लोक सभा को आश्वासन दिया गया। अभी उनकी स्थिति भी स्पष्ट नहीं है। हैदराबाद के आर्यसमाज के आन्दोलन (३८-३९) का मामला तो उसके बाद का है। इस विषय मे जो भी प्रगति होगी उसकी सूचना पत्रों में दे दी जायेगी। प्रत्येक को अलग-अलग उत्तर देना मुश्किल है।

ताजा सूचना के अनुसार विचाराधीन आवेदन पत्रो की सख्या ६१ हजार तक पहुँची। इनमें से केवल दो हजार के लिए पेंशन स्वीकृत हुई है अर्थात् स्वीकृत आवेदनो की सख्या तीन प्रतिशत से भी कम है। सरकार आर्य सत्याग्रहियो के लिए ६ महीने के कारावास की शर्त में ढील देने को तैयार नही, इसलिए आर्य सत्याग्रहियो के स्वीकृत आवेदनो का प्रति-शत भी कम होने की आशका है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
सर्वदेशिक साप्ताहिक से साभार

आर्य समाज की गतिविधियाँ

पंजाब में सैनिक शासन आवश्यक है

देहरादून ८ सितम्बर वैदिक क्रान्ति परिषद् के अध्यक्ष एवं युवा आर्यनेता डा० आनन्द सुमन ने विगत माह स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त से ५ सितम्बर तक हरयाणा, पंजाब व जम्मू काश्मीर के नगर व ग्रामों का सघन प्रचार प्रवास किया। इस प्रकार यात्रा का उद्देश्य पंजाब व काश्मीर के हिन्दुओं की स्थिति का अवलोकन करना था। डा० सुमन ने प्रवास से यहां लौटने के बाद एक वक्तव्य में कहा है कि पंजाब की समस्या धार्मिक या भाषाई नहीं है यह मात्र राजनैतिक समस्या है। १९८४ में सैनिक कार्यवाही के बाद जो लोग उग्रवाद को बढ़ावा दे रहे हैं वह अकाली असंतुष्ट गुट के कार्यकर्ता हैं। पंजाब में कांग्रेस (इ) व अकाली दल के वोटों की लड़ाई में हिन्दुओं को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ रही है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सिक्ख समुदाय चैन से है, अनेकों सिक्खों ने भी राजनीति की इस दुर्गन्धभरी लड़ाई में अपने प्राणों को न्यौछावर किया। आवश्यकता यह है कि पंजाब में बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त किया जाना चाहिये क्यों कि अनेक उग्रवादी अकाली मन्त्रियों के यहां ठहरते हैं। पुलिस में कई अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्ति भी हैं। पंजाब में डा० सुमन ने अमृतसर, बटाला, फतेहपुर चुड़िया नौशहरा, तरनतारन मुक्तसर, सलेमपुर, लुधियाना, समराला, जालन्धर, फगवाड़ा व अन्य स्थानों पर हिन्दू व सिक्खों से सम्पर्क किया। क्रान्ति प्रकाशन की ओर से हिन्दू विस्थापित परिवारों में १५ हजार रुपये की सहायता राशि वितरित की गई। पंजाब के अनेक सिक्खों ने भी डा० सुमन के कार्यक्रमों में सहयोग दिया व उनके प्रवचनों को सुना। डा० सुमन ने पंजाब के दौरे में वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप, जगदीश टागड़ी अध्यक्ष शिव सेना फगवाड़ा जेल, विजयकुमार सम्पादक पंजाब केसरी, ज्ञानी साहिबसिंह स्वर्ण मन्दिर, सरदार करतारसिंह अकाली दल तरन्तरान, सरदार मुच्चासिंह जालंधर व अनेक हिन्दुओं तथा सिक्खों से भेंट की व उनके विचारों को एक पुस्तक के रूप में तैयार कर रहे हैं। जम्मू कश्मीर में जम्मू गांधी नगर, कोहाड़ गढ़वा, राजोरी पुन्छ में मुस्लिम गूजरों में डा० सुमन ने वैदिकधर्म का प्रचार किया। वहां के नागरिकों को डा० सुमन ने क्रान्ति प्रकाशन की ओर से २ हजार सत्यार्थप्रकाश नि शुल्क वितरित किये। जम्मू काश्मीर में डा० सुमन के प्रचार से मुस्लिम गूजरों में वैदिकधर्म के प्रति भावना बनी है। आशा है कि उन लोगों को शीघ्र ही वैदिकधर्म में दीक्षित किया जायेगा। इस प्रवास में डा० सुमन ने अम्बाला व चण्डीगढ़ में भी प्रचार किया। कुल मिलाकर इस प्रचार-यात्रा की सर्वत्र प्रशंसा हुई है।

तपोवन आश्रम देहरादून प्रचार विभाग क्रांति प्रकाशन

स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वार्थभाव को छोड़ जिन्होंने परमार्थ अपनाया।
मीठी बात कही उसको भी जिसने जहर पिलाया॥

दया करो दीन दलित पर दर्द देश का जानो।
याद करो परमेश्वर को प्यारे अपने को पहचानो।
नगा भूखा रहे न कोई मेहनत कर सब खायें।
दलितजनों की चीख पुकारें उठो बन्द करायें।
सभी जनों में राष्ट्र-प्रेम हिन्दी का प्यार जगाना।
रहनी-सहनी स्वच्छ बनाना सादा भोजन खाना।
स्वर्ग यहीं है नरक यहीं वेद हमें बतलाते।
दो काल में सध्या करना वेदों के गुण गाता।

सत्यकाम आर्य शाखा अध्यक्ष आर्य वीरदल हिसार

ग्राम खोखा में वेदप्रचार सम्पन्न

दिनांक ६-७-८ अगस्त, ८६ को ग्राम खोखा (हिसार) में वेदप्रचार का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल यज्ञ किया गया। सायंकाल स्वामी सर्वदानन्द जी एवं श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी के प्रवचन हुए। साथ में प० ईश्वरसिंह तूफान के शिक्षाप्रद भजन हुवे। जिसका गांव के नवयुवकों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा। क्रान्तिकारी जी ने विशेष कर नवयुवकों को शराब न पीने एवं गांव में शराब न पड़ने देने का आग्रह किया। यज्ञ पर ३१ नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये और शराब न पीने एवं प्रतिदिन व्यायाम करने का व्रत लिया, सभा को १८० रु० दान दिया।

कर्णसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज खोखा

ग्राम गोरखपुर में व्यायाम प्रशिक्षण शिविर एवं वेदप्रचार सम्पन्न

दिनांक ३० जुलाई से ५ अगस्त, १९८६ तक गोरखपुर (हिसार) में शिविर एवं वेदप्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें श्री कृष्णपाल आर्य व्यायाम शिक्षक द्वारा बच्चों को आसनों का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन सुबह-शाम ४२ नवयुवकों ने व्यायाम में भाग लिया। आखरी चार-पांच तारीख को वेदप्रचार का कार्यक्रम किया गया। जिसमें स्वामी सर्वदानन्द जी एवं अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने विचार रखे। प० ईश्वरसिंह के भजन हुये। श्री ओमप्रकाश आर्य एवं श्री चन्दुराम आर्य के घर पर पारिवारिक यज्ञ किया गया, जिसमें २८ नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये। ५ खुखार शराबियों ने शराब न पीने का व्रत लिया। इस सारे कार्यक्रम का क्रान्तिकारी जी ने अच्छे ढंग से सचालन एवं सयोजन किया। सभा को १०० रु० दान दिया।

निहालसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज गोरखपुर

आर्यसमाज की प्रगति के लिए कुछ सुझाव

१. आर्य वीरदल कैसे आगे बढ़े

आर्य वीरदल ने आज तक अपनी शक्ति राष्ट्रीय सेवक संघ की तरह केवल शहरी क्षेत्र तक ही सीमित रखी है। लेकिन आज के माहोल में शहरी लोगो को धार्मिक तो बनाया जा सकता है सैनिक नही, चाहे हम कितने भी प्रयत्न क्यो न करलें।

इसलिये यदि आर्य वीरदल को आगे बढना है तथा "कृण्वन्तो विश्वार्यम्" के उद्घोष को चरितार्थ करना है तो आर्य वीरदल को गाव-गाव में जाना होगा।

प्रारम्भ मे आप किसी भी ऐसे गाव मे चले जाइये, जहा उच्च विद्यालय हो, वहा आप प्रार्थना सभा मे जाकर राष्ट्र-रक्षा की आवश्यकता क्यो, आदि विषयो पर अपने वक्तव्य दीजिये। प्रचार के तौर पर पर्चे तथा साहित्य वितरित कीजिये। कोई हैरानी नही होगी कि अगले ही दिन आपको सैकडो नवयुवक आर्यवीर बनने के लिये तैयार मिले।

आरम्भ में वहा दो सप्ताह के लिये एक ऐसा व्यायाम शिक्षक नियुक्त करदें, जो कि व्यायाम के साथ-साथ बौद्धिक ज्ञान भी दे सके और नवयुवकों की भ्रातियों और शकाओ का समाधान करके उनका शारीरिक तथा मानसिक दोनो प्रकार का विकास कर सके।

उसके बाद वहीं के किसी नवयुवक को विशेष प्रशिक्षण देकर वहा का स्थानीय शिक्षक नियुक्त करदें, जो कि प्रतिदिन उस शाखा को चलाता रहेगा। किन्तु समय-समय पर अधिकारियों को इन शाखाओ को सम्भालते रहना पडेगा, नहीं तो शाखा बन्द भी हो सकती है।

बेहतर रहेगा कि प्रत्येक छ शाखाओं पर एक शिक्षक को नियुक्ति की जाये। एक सप्ताह में हर शाखा को एक दिन शिक्षक सम्भाले, जिस से नवयुवकों का उत्साह बना रहेगा तथा शाखायें नियमित रूप से चलती रहेंगी और फिर तो किसी शाखा के बन्द होने का सवाल ही पैदा नही होता। शिक्षक को भी सप्ताह में एक दिन अवकाश का मिल जायेगा।

अब रही शिक्षक के खर्चे के वहन की समस्या यदि हम हिसाब लगायें तो एक शिक्षक व ६ शाखाओ का खर्च वर्ष मे लगभग १२,००० रुपये होगा। एक शाखा के हिस्से वर्ष का खर्च २,००० रुपये आयेगा और २,००० रुपये का अर्थ हुआ १२ बोरी अनाज (गेहू), जो कि फसल कटाई के समय पर उस गाव से आसानी से दान के रूप मे प्राप्त की जा सकती है और यही नही १२ के स्थान पर ५० बोरी अनाज भी इकट्ठा किया जा सकता है।

२. आर्यसमाज मजबूत कैसे हो

वर्त्तमान आर्यसमाज को मजबूत करने की बात को तो सोचना ही व्यर्थ है। न तो अब इसमें किसी प्रकार का सुधार हो सकता है और न ही अब ये अपनी ही सस्था आर्य वीरदल को सम्भाल सकता है। आज इन आर्यसमाजो के ९० प्रतिशत अधिकारी गैर आर्य हैं, या तो मूर्तिपूजक हैं या जनसघी 'काग्रेसी' हैं। आर्य वीरदल की बहुत-सी शाखाये तो इन नामधारी आर्यों ने ही बन्द करवाई हैं और आर० एस० एस० की शाखायें लगवाई हैं। हिसार में इसका एक उदाहरण सी० ए० वी० हाई स्कूल का आपको मिल जायेगा।

आज आर्यसमाज के पुनरुत्थान की आवश्यकता है और यह तभी हो सकता है जब आर्य वीरदल गाव-गाव में जाये, क्योंकि भारत की कुल जनसख्या का ४/५ भाग ग्रामीण जनसख्या का है। गाव में लगी आर्य वीरदल की शाखाओ से निकले नौजवान जब आफिसर, क्लर्क, दूकानदार आदि बनकर शहरो मे भी आयेंगे तो सर्वत्र आर्यसमाज का नाम होगा और "कृण्वन्तो विश्वार्यम्" का नारा गूंज उठेगा। इस प्रकार ४० वर्षों बाद आर्यसमाज का एक नया ही रूप होगा।

३. ग्रामीण समस्यायें

ग्रामीण समस्याये वैसे तो बहुत हैं, लेकिन एक मुख्य समस्या है आपसी पार्टीबाजी की। गुटो की समस्या पीढी दर पीढी चलती आरही है। इसके कारण लोगों का आपसी तनाव बना रहता है। यह समस्या हल हो सकती है। यदि हम दोनो गुटों के नौजवानो को इकट्ठा करके उन्हें धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा देंगे तो पीढी दर पीढी चलती आरही उनकी शत्रुता तथा बैर कम होगा और फिर शनै-शनै वे एक मच पर ही इकट्ठा होना शुरु हो जायेंगे, जिससे एकता बढगी।

दूसरी मुख्य समस्या यह है कि गाव मे कुछ ऐसे असहाय बुजुर्ग होते हैं जिनके पास न जायदाद होती है और न ही औलाद। इसी प्रकार कुछ विधवाये होती हैं जिनके बच्चे होते हैं और कुछ विकलाग लोग भी होते हैं। सरकार इन लोगो को पैंशन के रूप मे आर्थिक सहायता देती है लेकिन ये बेचारे सरकार तक पहुँच नही पाते। आर्यवीर इस कार्य में उन लोगो का सहयोग कर सकते हैं। प्रत्येक गाव मे कोई आर्य युवक या शिक्षक अपने पास फार्म रखे और ऐसा कोई भी व्यक्ति जो असहाय या दीन है, उसका फार्म भरवाकर सरकार को भेज दे तो इससे असहायों की आशीष तो मिलेगी ही, साथ ही गाव के लोगो की सहानुभूति भी आर्य वीरदल के साथ होगी। इस कार्य के बल पर गाव में अपने पैर भी जमा सकेंगे।

४. दहेज-प्रथा कैसे समाप्त हो

अब तो दहेज का विष गावो में भी फैल चुका है, लेकिन गावों से भी इसका उन्मूलन हो सकता है। यदि आर्य वीरदल दहेज विरोधी बारे गावो में प्रचार करें, क्योंकि जो देहाती तबका है वो प्रचार से भी आसानी से मान जाता है। दूसरे भाईचारे के नाते और भाईबन्धी से भी उनका बल दिया जा सकता है। यदि कोई इस बात का विरोध करे या न मानें तो कुछ सरकार का भय देकर भी मनवाया जा सकता है और आवश्यकता पडने पर सरकार का सहयोग भी लिया जा सकता है।

सजय गुप्ता सुपुत्र श्री दलीपसिह
मकान न० १६३, प्रेमनगर, हिसार-१२५००१

ग्राम कंवारी (हिसार) मे आर्य महिला सत्संग सम्पन्न

दिनाक २३-२४ अगस्त, १९८६ को ग्राम कवारी में आर्य महिला सत्सग का आयोजन किया गया। आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रातिकारी के घर पर रात्रि को ८ से १० बजे तक सत्सग का कार्यक्रम चला। इसके अतिरिक्त मा० जयपालसिंह आर्य, श्री चरणसिंह जी एव श्री हरिसिंह आर्य के घर पर पारिवारिक यज्ञ किया गया। इस सारे कार्यक्रमो मे सभी वर्गों की महिलाओ ने बढ चढकर भाग लिया। जिसमें विदुषी बहन करुणा शास्त्री जी एव क्रातिकारी जी ने महिलाओ को नारी जाति के कर्त्तव्य एव अधिकारो से अवगत कराया। विशेष कर भूत-प्रेत, मूर्तिपूजा श्राद्ध, दहेजप्रथा आदि को छोडने एव नारी शिक्षा, सदाचार, सध्या, यज्ञ, सगठन तथा प्रेमपूर्वक रहने पर बल दिया। महाशय मनसाराम तथा श्री महेन्द्रसिंह आर्य के प्रेरणाप्रद समाज सुधार के भजन हुये। कई बहनो एव माताओं ने यज्ञोपवीत धारण किये। इस प्रोग्राम मे श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती सन्तोष आर्या, श्रीमती हरदेई आर्या, ताई नीम्बो तथा बहन वीरमती आर्या का विशेष योगदान रहा।

ग्राम बालावास मे दिनाक २४-८-८६ दोपहर बाद २ से ५ बजे तक प्रधान जी की लग्न एव प्रेरणा से आर्य महिला मण्डल की सभा हुई। कवारी से भी कई महिलायें इस सभा में सम्मिलित हुईं। बहन करुणा शास्त्री का प्ररणाप्रद व्याख्यान हुआ। इस कार्य में बालावास महिला मण्डल की प्रधाना श्रीमती शाति आर्या एव श्रीमती भगवानी आर्या का विशेष सहयोग रहा। दोनों ग्राम की महिलाओं ने हर महीने सत्सग करवाने का बहन करुणा को आश्वासन दिया।

इन्द्रसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कवारी

अगर सरकार शराबबन्दी नहीं कर सकती तो कुर्सी छोड़ दे

आज के युग में शराब पीना एक फैशन बन गया है शराब पिये बिना आम आदमी की गिनती समाज के सभ्य पुरुषों में नही की जाती है। जो व्यक्ति शराब नही पीता उसका जीवन व्यर्थ समझा जाता है। हालांकि यह बात हर मनुष्य जानता हैं कि शराब के पीने के बाद व्यक्ति अपने मानसिक सतुलन व शारीरिक सतुलन दोनों को खो देता है। ऐसे में वह अपनी दिनचर्या को भूल जाता है तथा धन व स्वास्थ्य दोनो का ही नाश करता है। अलग-अलग प्रकार की शराब पीने वाले व्यक्ति भिन्न- भिन्न प्रकार के रोगो से ग्रस्त हो जाते हैं शराब के पीने से फेफड़े व आखें खराब हो जाती हैं। शराब पीने के बाद व्यक्ति आम-तौर पर लडाई झगडे व गाली गलौच करता है और ज्यादातर मार खाकर ही घर बैठ जाता है। शराबी व्यक्ति को आप सडक या नालियो के अन्दर गिरे हुए देख सकते हैं। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है शराबी व्यक्ति एक किस्म से जिन्दा लाश ही बन जाता है। इस शराब के कारण बडे-बडे खानदानी घर भी रसातल मे चले जाते हैं।

शराब घर का नाश यह कहावत बडी पुरानी है।
जड इसकी कटवानी है, हर घर में शराबबन्दी करवानी है॥

शराब- बन्दी मे विश्वास रखने वालो को अपनी आवाज नशाबन्दी के खिलाफ सरकार के कानो तक पहुचानी ही होगी। सरकार कभी-कभी बहरी हो जाती है उसके कान खोलने के लिए हमें कोई राष्ट्रव्यापी आन्दोलन छेडना ही होगा। ठीक वैसा रास्ता जो कि राजस्थान में श्री गोकुल भाई ने चलाया था। तथा ठीक उसी तरह का रास्ता हरयाणा के अन्दर भी श्री अतर सिह आर्य की देखरेख में चला था। उन्होनें हमारे सामने बहुत बडा आदर्श स्थापित किया था कि जिस आत्मविशवास, कर्मठता व साहस के साथ वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सघर्ष करते रहे ठीक उसी प्रकार हमको भी उनकी दिखाई गई शराब- विरोधी नीतियो पर चलना है।

हरयाणा के अन्दर शराब के ठेकेदार ढोल बजाकर यह कहते हैं कि "पीओ और जीओ" तथा लोगो को शराब पिलाते हैं हालाकि शराब पीने वाला व्यक्ति जीता नही है जीता तो शराब का ठेकेदार है जो मुनाफा कमाता है शराब पीने वाला तो मरता है।

गाधी जी ने कहा था कि अगर मुझे एक घण्टे के लिए सारे भारत का तानाशाह बना दिया जायें तो पहला काम मैं यह करूगा कि तमाम शराब खानो को बिना मुआवजा दिये ही बन्द कर दूगा।"

आखिर में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि अगर सरकार शराब-बन्दी नही कर सकती तो उसे कुर्सी छोड देनी चाहिये। हमे शराब-बन्दी के लिए बिगुल बजाना ही होगा।

गुरेन्द्रसिंह साहरण (मन्त्री) आर्यसमाज सातरोड खास, हिसार।

कन्या गुरुकुल बनारस का रजतजयन्ती समारोह

नई दिल्ली ११-९-१९८६ मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल का रजत जयन्ती समारोह २४,२५,२६ अक्तूबर १९८६ समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है इस, अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी, महात्मा, विद्वान् और आर्य नेता पधार रहे है आर्य भाई बहनों से प्रार्थना है कि अधिक अधिक से अधिक सख्या में बनारस में पधारकर समारोह की शोभा बढायें तथा गुरुकुल के अधिकारियो का उत्साह बढायें।

आर्य परिवारो को बनारस ले जाने के लिये २२-१०-१९८६ शाम को ६ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मन्दिर मार्ग, ग्रेटर कैलाश तथा अशोक विहार दिल्ली से स्पेशल बसें चलेंगी जो २८-१०-८६ वापिस आयेंगी। यात्री लखनऊ, प्रयाग, अयोध्या, बनारस तथा कानपुर के ऐतिहासिक स्थान भी देख सकेंगे। चलने वाले भाई आर्यसमाज हनुमान रोड फोन ३११२८० तथा आर्यसमाज मन्दिर मार्ग फोन ३४३७१८ से सपर्क करे। रजत जयन्ती की सफलता आर्य भाई बहिनों के सहयोग पर निर्भर है।

—रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक आर्ययात्रा

ऋषि मेला १९८६

समस्त आर्यजगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि सदा की भाति इस वर्ष ऋषि मेला दिनाङ्क ७, ८ व ९ नवम्बर, '८६ शुक्रवार, शनिवार रविवार को ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड अजमेर में सोल्लास मनाया जायेगा

दिनाक ५ मे सामवेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। यज्ञ का समय प्रात ७ बजे से ९ बजे तथा साय ४ बजे से ६ बजे तक रहेगा। इस अवसर पर आगन्तुक विद्वान् महानुभावो तथा प्रतिष्ठित भजनोपदेशको के वेदोपदेश, भजन एव प्रवचन होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति दिनाक ९ को प्रात १० बजे सम्पन्न होगी।

इस मेले मे आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाशजी सरस्वती तथा श्री डा सत्यदेवजी, डा. भवानीलालजी भारतीय चण्डीगढ आदि विद्वानो के प्रवचन तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशको के भजनोपदेश होगे। सभी धर्मप्रेमी बन्धु सादर सपरिवार आमन्त्रित हैं। निवास व भोजन की नि शुल्क व्यवस्था ऋषि उद्यान में रहेगी।

इस वर्ष ऋषि उद्यान में आर्य वानप्रस्थ आश्रम का शुभारम्भ श्रावणी मे होगया है इस अवसर पर इच्छुक महानुभावो को वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा प्रदान की जायेगी। जो वानप्रस्थी व सन्यासी महानुभाव इस आश्रम में निवास करना चाहते हो, वे मत्री परोपकारिणी सभा से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

अपने समाज से अधिक मे अधिक सख्या मे पधारें।

अपने शुभागमन की सूचना परोपकारिणी सभा कार्यालय। अवश्य देवे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान	डॉ भवानीलाल भारतीय सयुक्त मत्री
पन्नालाल बाहेती कोषाध्यक्ष	प्रो धर्मवीर कार्यकारी मत्री

महर्षि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश की प्रशंसा

लेखक—मांगेराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

प्रभु विनति

प्रशंसा मैं क्या करूं, शब्द नहीं मेरे पास।
दीनबन्धु मुझे ज्ञान दो, यही मेरी अरदास ।।१

प्रशंसा कैसे लिखूं, नहीं बुद्धि नहीं ज्ञान।
फिर भी लिखने बैठगा, धर ईश्वर का ध्यान ।२

बल, बुद्धि और ज्ञान का, एक वही भण्डार।
'राम' उसी से मांगता, देवे बन दातार ।।३

ज्ञान दिया बुद्धि दई, दिये अटूट विचार।
उसकी दया अपार से, कविता हुई तैयार ।।४

प्रशंसा

सत्यार्थप्रकाश मे, लिखा सत्य का सार।
जो सज्जन पढते इसे, पावें आनन्द अपार ।।१

आनन्दकन्द लगोट बन्ध, दयानन्द ऋषिराज।
सत्यार्थप्रकाश जिन्होने रचा, सब ग्रन्थन का ताज ।२

जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी था, था पूर्ण विद्वान्।
अपनी प्रतिभा बुद्धि से, किया वेद व्याख्यान ।।३

धर्म, कर्म, बन्ध मोक्ष का, वर्णन किया अपार।
ईश जीव, प्रकृति का, खूब किया विस्तार ।।४

सब ग्रन्थन मन्थन किये, खेंच निकाला सार।
सत्य सनातन शोध कर, दिया ग्रंथ मे डार ।।५

सत्यार्थ ही विचारिये, उठके प्रात काल।
आत्मशुद्धि होय तब, कटे भ्रम के जाल ।।६

दयानन्द महान् था, महान् किया जिस काम।
मगल अमृत ज्ञान का, पिला गया हमें जाम ।।७

चौदह गोली का यही, एक बना पिस्तौल।
सत्य कसौटी है यही, सबकी खोले पोल ।।८

अमर ग्रंथ सत्यार्थ है, सब रत्नो की खान।
अमर ऋषि भी है मेरा, सुन लो सन्त सुजान ।।९

'मांगे' सतगुरु हैं तेरे, दयानन्द महाराज।
जिनकी दया अपार से, सुधरे सारे काज ।।

रचियता—मांगेराम आ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/73 रजि० न० P/RTK फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४३ ७ अक्तूबर, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा के स्वीकृत सदस्यों की सेवा में

वार्षिक साधारण सभा की बैठक का एजेण्डा (कार्य सूची)

माननीय महोदय, सादर नमस्ते

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २६ अक्तूबर, १९८६ रविवार को प्रात ११ बजे सभा कार्यालय दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक में होना निश्चित हुआ है। अत. सभा के सभी स्वीकृत प्रतिनिधि महानुभाव यथासमय पधार कर कृतार्थ करें।

विचारणीय विषय

१—गतवर्ष दिवगत हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रस्ताव

२—गत अधिवेशन १९ मई, १९८५ की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

३—सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, सर्वहितकारी, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला, महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र आदि के गत वर्ष के आय-व्यय की सम्पुष्टि तथा वर्ष स० २०४३-४४ के प्रस्तावित आनुमानिक आय व्यय की स्वीकृति।

४—सम्वत् २०४३-४४ (सन् १९८६-८७) के लिये सभा के अधिकारियों, अन्तरग सदस्यों, विद्या सभा हरयाणा, विद्या सभा गुरुकुल कागडी, राजार्य सभा व न्याय सभा, ३ वर्ष हेतु सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

५—वेदप्रचार तथा आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने तथा मद्यबन्दी आन्दोलन पर विचार।

६—श्री प जगदेवसिंह सिद्धान्ती स्मारक भवन निर्माण को पूरा करने पर विचार।

७—अन्य आवश्यक विषय सभापति की अनुमति से

विशेष ज्ञातव्य

१—सभापति को विचारणीय विषयो के क्रम मे अन्य आवश्यक परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार होगा।

२—आवास तथा भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से दयानन्दमठ रोहतक में होगी।

भवदीय

सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

सर्वहितकारी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक साधारण अधिवेशन का एजेण्डा प्रकाशित किया जारहा है। सभा से सम्बन्धित जिन आर्यसमाजो ने अभी तक वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को नहीं भेजा है, वे गतवर्ष की राशि के अनुसार प्राप्तव्य धनराशि यथाशीघ्र मनीआर्डर अथवा सभा उपदेशको द्वारा तुरन्त भेज देवें, ताकि उनके गत वर्ष के प्रतिनिधियो को सभा के चुनाव का एजेण्डा नियमानुसार समय पर भेज दिया जाये। यदि सभा से सम्बन्धित कम से कम एक वर्ष हुए किसी आर्यसमाज ने गतवर्ष अपने प्रतिनिधि फार्म भरकर किसी कारणवश नही भेजे थे, वे भी इस वर्ष अपने प्रतिनिधि सभा को भेज सकते हैं। सभा कार्यालय से फार्म मगवाकर उसे नियमानुसार भरने के पश्चात् प्राप्तव्य वेद प्रचार आदि धनराशि के साथ शीघ्र से शीघ्र सभाकार्यालय में भेज देवें, ताकि सभा आवश्यक जाच पड़ताल करने के पश्चात् उनके प्रतिनिधि स्वीकार करके उन प्रतिनिधियो को भी एजेण्डा आदि भेज सके। कुछ आर्यसमाज अधिवेशन के दिन ही फार्म के साथ अपने प्रतिनिधियों को भेजते हैं, परन्तु उसी समय उनकी आवश्यक जाच करना कठिन हो जाता है, इस बार इस प्रकार भेजे गये किसी आर्यसमाज के प्रतिनिधियो को स्वीकार नहीं कर सकेंगे। अत: सम्बन्धित जो आर्यसमाज अपने प्रतिनिधि इस बार भेजना चाहते हैं, वे सभाकार्यालय में पूर्व ही सम्पर्क करके अपने प्रतिनिधि नियमानुसार स्वीकार करवा लेवें।

जिन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सभा द्वारा पूर्व स्वीकृत हैं, परन्तु उन आर्यसमाजो की ओर से इस वर्ष की वेदप्रचार, दशाश आदि की प्राप्तव्य राशि अभी तक नहीं भेजी है, वे भी अपना गतवर्ष का हिसाब देखकर धनराशि तुरन्त सभा को भेज देवे, ताकि उनके प्रतिनिधियो को भी एजेण्डा भेज दिया जावे।

जिन आर्यसमाजों के स्वीकृत प्रतिनिधियो से सम्बन्धित आर्यसमाजों की ओर से प्राप्तव्य राशि प्राप्त हो चुकी है उनके पास एजेण्डा डाक द्वारा भेजा जारहा है। सभा के अधिवेशन में प्रवेश करने के लिए प्रवेश-पत्र २५ अक्तूबर को अधिवेशन स्थल पर दे दिया जायेगा। अत प्रतिनिधि गण अधिवेशन के समय से कम से कम एक घंटा पूर्व कार्यालय में पहुँचकर अपने प्रवेश पत्र प्राप्त करने का कष्ट करें।

आशा है आर्यसमाज हरयाणा में आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने के लिए अपने प्रतिनिधियो को भेजेंगे उनके सुझाव तथा सहयोग से सभा का भविष्य उज्ज्वल होगा।

निवेदक

सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

शराब का मस्तिष्क और शरीर पर कुप्रभाव

हर प्रकार की शराब में अल्कोहल होता है। शराब का मुख्य अन्श इथाइल अल्कोहल ही होती है। इथाइल अल्कोहल स्वच्छ बेरंगी और तरल होती है तथा उसमें एक विशेष प्रकार की गन्ध होती है। सिर्फ इथाइल अल्कोहल कोई नहीं पीता या तो अन्य नशीले पदार्थों में इसे मिलाया जाता है या फिर साफ की गई स्प्रिरिट के साथ प्रयोग में लाया जाता है। शराब तैयार करने और नशीली वस्तुए बनाने की रीति बहुत पहले से लोगो को मालूम है परन्तु उसे उबाल-छानकर साफ करने की कला इतनी पुरानी नही है।

जिस प्रकार अन्न हमारी छोटी-२ अंतडियो में समा जाता है, उसी तरह नशीले पेय के रूप में ली जानेवाली अल्कोहल जिस्म मे जाकर मिल जाती है। और जब यह पच नही पाती तो बडी तेज गति से नाडियो और अन्तडियो मे फैलने लगती है। अल्कोहल ग्रहण करने के ढाई घंटे के अन्दर-१ पचनेन्द्रियो में इसका कोई भाग शेष नही रहता। हमारे खून में अल्कोहल है या नही, इसका पता इसे पीने के कुछ मिनटो के बाद ही लगा लिया जाता है। खून मे अल्कोहल का अधिकतम प्रभाव शराब पीने के आधे घंटे बाद से लेकर दो घंटे तक होता है इसीलिये अल्कोहल से खून पर ज्यादा असर इसी अरसे मे महसूस होता है। खून की नाडियो मे से होती हुई अल्कोहल जब तक पेट मे नही पहुच जाती, तब तक आदमी बेहोश नही होता और ऐसी बेहोशी का असर होने मे कितना समय लगता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस समय पेट मे गये हुये अनाज को किस्म और मात्रा क्या है। अन्न पेट मे होने के कारण अल्कोहल की घुलने की क्षमता कम हो जाती है, चरबी वाले अन्न के बाद अल्कोहल का असर इस बात पर निर्भर करता है कि अल्कोहल किस हद तक तेज या मध्यम असर वाली थी।

कम नशीले पेय में मिलायी गयी अल्कोहल देर में जज्ब होती है, इसीलिये एक मात्रा में ली गयी अल्कोहल का अलग-अलग असर हो सकता है। खून पर अल्कोहल का प्रभाव, निम्नलिखित बातो पर निर्भर करता है—

१ ली गयी अल्कोहल की मात्रा २ अल्कोहल की तीव्रता ३ अल्कोहल पीने की अवधि ४ व्यक्ति का वजन ५ पेट में उस समय अनाज की मात्रा ६ अल्कोहल पीने की आदत का होना या न होना ७ अल्कोहल पीने के बाद शरीर की हालत, यानी आराम किया गया या श्रम करना पडा।

पचनेन्द्रियों से अल्कोहल जब निकलता है तो भाप बनकर समाप्त होने से कुछ पहले तक वह धातु के रूप मे ही रहता है। शरीर में व्याप्त पानी में वह अलग अलग मात्रा मे जज्ब होता है और फिर किसी भी धातु पर उसका क्या प्रभाव पडता है यह उस धातु मे पाई गई पानी की मात्रा पर निर्भर करता है। शरीर के अन्य हिस्सों के मुकाबले में रक्त पर अल्कोहल का प्रभाव सबसे ज्यादा पडता है, इसका भी यही कारण है इस तरह खून में पहुची हुई अल्कोहल की मात्रा से ही यह पता लगाया जा सकता है कि खून में अल्कोहल कितनी पहुची है और शरीर के हिस्सो मे कितनी मात्रा मे। पेशाब में अल्कोहल की मात्रा रक्त में उसकी मात्रा की अपेक्षा ३० प्रतिशत अधिक होती है।

लगभग २ से १० प्रतिशत तक अल्कोहल, बिना किसी तबदीली के फेफडो, गुरदो और त्वचा से निकल जाती है। शेष अल्कोहल, शरीर मे वायु युक्त-प्राण बनकर रह जाती है। साधारण वयस्क आदमी के जिस्म में से लगभग १० सी सी अल्कोहल प्रति घंटा निकलती है। अल्कोहल के श्वासो में परिवर्तित होने का मुख्य स्थान गुरदा होता है ऐसा भी सिद्ध हो चुका है कि अल्कोहल को श्वासो में बदल कर अन्त मे नष्ट किया जा सकता है। फिर प्राणवायु पानी मे परिवर्तित हो जाती है। इस सारे क्रम में शरीरको काफी शक्ति भी विनष्ट होती है अल्कोहल के पूरी तरह वायु-युक्त-प्राण होने तक वह शरीर में ही रहती है और तब तक जिस्म के अलग-अलग हिस्सो के कार्यों पर उसका निश्चित असर होता है।

अल्कोहल का हमारी अन्तडियो पर पडने वाला कुप्रभाव

अल्कोहल का सबसे ज्यादा असर पेट पर पडता है। यह असर कितना होता है इस बात पर निर्भर करता है कि पेट की धातुओं और रक्त में कितनी अल्कोहल जमा हुई है। इच्छा, वासना, स्मृति, लक्ष्य और बुद्धि के कामों पर इसका बुरा असर होता है। स्नायु और सवेदनक्षमता पर भी अल्कोहल अपना घातक प्रभाव डालता है।

जैसा कि पहले माना जाता था कि हमारी इन्द्रिया शराब के असर से ताजगी प्राप्त करती हैं, यह गलत धारणा थी कि अल्कोहल के प्रभाव से शरीर की थकावट दूर होती है। किन्तु अल्कोहल का प्रभाव दिमाग के ऊपरी केन्द्र पर तत्काल अनुभव किया जा सकता है। जब इस केन्द्र का काम रुक जाता है तभी ज्यादा कच्ची भावना उत्पन्न होती है और आदमी का कार्य तथा व्यवहार किसी छोटे बच्चे के समान हो जाता है। लगता ऐसा है कि अल्कोहल के प्रभाव से स्वय तत्परता और आत्म-विश्वास वास्तविक नही होता उल्टे, मनुष्य का सोचने समझने और निर्णय करने की शक्ति बहुत कम हो जाती है। जो काम बडी सरलता और सहजता से होना चहिये, उसमे बार-बार गल्तिया और भूलें होने लगती हैं और शरीर में निबलता-सी बढने लगती है। यह केवल अल्कोहल के घातक असर का ही परिणाम होता है। बढते हुये नशे से उसका असर गहरा होता जाता है और अन्तत सारी इन्द्रिय-रचना ठडी पडने लगती है।

अल्कोहल का तीव्र नशा

अल्कोहल के नशे को चार भागों में बांटा जा सकता है:—

१—लगभग एक औंस अल्कोहल लेने से आदमी नशे की पहली हालत को पहुँचता है। जिस आदमी का वजन १३० पौंड है उसके खून में प्रत्येक सी सी के पीछे ०५ मिलीग्राम अथवा ०.०५ प्रतिशत अल्कोहल जमा होती है। अल्कोहल लेने के बाद आदमी खुद को बहुत खुश महसूस करता है। उसे लगता है मानों धरती से बहुत ऊपर उठ चुका है और ऊंचाई पर बैठा हुआ है। साथ ही उसकी सामान्य बुद्धि भी नष्ट होने लगती है। वह मन पर नियन्त्रण खो बैठता है और बिना सोचे-विचारे मन मे आये हर काम को करने लग पडता है। फिर हालत यहा तक आ पहुचती है कि उसके लिये माचिस की तीली जलाना भी मुश्किल हो जाता है। सीधा चलना उसके लिये कठिन हो जाता है और वह कहीं स्थिर खड़ा नही हो सकता। कोई विचार उसके मन में नही आता और न ही वह अपने मन को स्थिर रख पाता है।

२—नशे की दूसरी अवस्था वह होती है जब आदमी के लिये चलने अथवा कपड़े बदलने में भी किसी अन्य व्यक्ति की सहायता जरूरी हो जाती है। उसे बात-बात में गुस्सा आने लगता है, वह चिडचिडे स्वभाव का ही हो जाता है, फिर अचानक ठहाके मारने लगता है। उसके पेशाब में तीव्र दुर्गन्ध आती है। उसे इतनी पहचान ही नहीं रहती कि वह अभी-अभी किससे बात कर रहा था कि क्या कह रहा था।

३—नशे की तीसरी अवस्था में शराबी बेहोशी को सी हालत में रहने लगता है। उसकी सास तेज-तेज और तीव्र गति से चलने लगती है, उससे ठीक बोला नहीं जा सकता और जो आदमी उसकी मदद को पहुचता है, वह उसी पर औंधा जा गिरता है।

४—और फिर वह अन्तिम स्थिति आती है जबकि शराबी का सारा जिस्म लुजपुंज हो जाता है। सास बन्द होने लगती है, और उसकी मृत्यु का अन्देशा होने लगता है। सक्षेप में अल्कोहल का प्रभाव आरम्भ से अन्त तक नशीला और घातक रहता है। क्रमशः

—अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के सौजन्य से।

सम्पादकीय

प्रधानमन्त्री की हत्या की साजिश

सुरक्षाबलों की लापरवाही नहीं—अपराध

जिस महापुरुष ने किसी को शत्रु नही समझा, और जो फिर भी उनका शत्रु बना, उससे भी प्रेम किया, जिसने अहिसा (विश्वव्यापी प्रेम) को ही भगवत् प्राप्ति का साधन समझा, उसको स्वय अपने ही देश के और भारतीय सस्कृति के नामलेवा की गोलियो का शिकार बनना पडा।

उनकी समाधि पर ही जहा लोग उनको श्रद्धाजलि अर्पित करने आते हैं और विशेष रूप से गाधी जयन्ती पर जब लोग उनको याद करते हैं और भजन-कीर्तन के द्वारा ईश्वर भक्ति और विश्वव्यापी प्रेम की धुनो से प्रेम, सद्भावना तथा मानवसेवा का वातावरण बनता है, ऐसे पुनीत अवसर पर राष्ट्र के प्रथम नागरिक की हत्या का प्रयास होता है, इससे बढकर भारत राष्ट्र के लिये लज्जा की बात नहीं हो सकती। राष्ट्र का यह सौभाग्य मानना चाहिये कि प्रधानमन्त्री व राष्ट्रपति बच गये, अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र विफल होगया।

अलगाववादी और आतकवादी तो भारत विरोधी शक्तियो से प्रेरणा तथा पोषण पाकर इस राष्ट्र को अस्थिर ही नही बाटना भी चाहते हैं। वे पजाब में और दूसरे स्थानो पर उन शक्तियो से पैसा, हथियार तथा प्रशिक्षण पाकर गुरेला युद्ध छेडे हुए हैं। वे तो अपने निकृष्ट उद्देश्यो की प्राप्ति के लिये अपने स्वामियो के आदेश लेकर सब प्रकार स सक्रिय हैं। हमारे सुरक्षा बलो और खुफिया ऐजेंसियो को उनकी गतिविधियो का पता है, उनको अपने काम के लिये प्रशिक्षण और साधन भी दिल खोलकर दिये जारहे हैं, फिर भी राष्ट्र के वरिष्ठतम नेताओ और अधिकारियों पर आक्रमण कैसे हो जाते हैं और उनकी हत्यायें कसे हो जाती हैं।

मैं इन सरकारी सगठनो की हिमाकत को लापरवाही नहीं मान सकता, यह एक अपराध है। आतकवादी अपने काम मे सफल होते है तो इसलिये कि सरकारी सगठनो मे उनकी पहुच ही नही, किसी न किसी कर्मचारी से उनकी गाठ-साठ और मिली भगत है। कोई अचानक कार्यक्रम बन जाता है और अपना तयारी का बड़े पैमाने पर मरने का अवसर न मिल पाये तो कोई बहाना मिल भी सकता है, सुरक्षाबलों का पूरा तालमेल न हो पाये, यह भी सम्भव है। परन्तु ऐसे कार्यक्रम के समय आतकवादियो को भी अपनी योजना बनाने मे कठिनाई होती है। दोनो की कमियां एक दूसरे को काटकर थोडा बहुत बचाव का ढग बना देती हैं। परन्तु जिस कार्यक्रम के बारे पूरे सालभर से अपराधियो को पता है कि जिस व्यक्ति पर आक्रमण करना है, उसको निश्चित तारीख पर, निश्चित समय पर, निश्चित मार्ग से, निश्चित स्थान पर पहुचना है। शत्रु अपनी पूरी योजना, सभी अपेक्षित साधन जुटाकर तसल्ली से बना सकता है। जब सुरक्षाबलो के पास भी उतना ही समय है और सब साधन भी हैं तो क्या उनको सभी प्रकार के खतरे का मुकाबिला करने के लिये सम्बन्धित क्षेत्र को पूर्ण रूप से सुरक्षित करने की योजना बनाने और उसको लागू करने के लिए अपेक्षित कदम उठाने में क्या कठिनाई हो सकती है। राजघाट पर होनेवाले गांधी जयन्ती के कार्यक्रम के अवसर पर यदि रास्ते से ३० फुट के अन्दर बैठकर भी कोई आतकवादी गोली चला सकता है, और सुरक्षाबलो के लोग तथा दूसरे लोग घायल हो जाते हैं तो क्या इस हिमाकत को लापरवाही कहा जा सकता है ? यह अपराध है और जघन्य अपराध है। ऐसे अपराधियो को क्या निलम्बित कर देना काफी है ? जिन अधिकारियो की सीधी जिम्मेदारी थी, उनकी वर्दी उतार कर उनको घर बिठा देना चाहिये। बडी गहराई से सारे मामले की जांच होनी चाहिए और जो लोग इस षड्यन्त्र मे परोक्ष रूप से भी शामिल पाये जायें, उनको कठोर से कठोर दण्ड देना चाहिए।

एक घण्टा पहिले गोलिया चलें और पूरा तामझाम होते हुए भी फिर उसी स्थान से गोलिया चलें और वार किया जावे, प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति पर, और सुरक्षाबलों के सोगों की नींद न टूटे यह क्या तमाशा है ? ससारभर के राष्ट्रो के लोग हैरान हैं कि यह कैसा सुरक्षा प्रवन्ध ?

आतकवादियो और राष्ट्रद्रोहियो तथा अकालीदल के दोनो घडो और हिंसा और देश के विभाजन पर उतारू साम्प्रदायिक सगठनो की बहुत खुशामद हो चुकी। जितनी ढील दी गई, मिन्नत समाजत की गई, उससे राष्ट्र पर रोज खतरा बढता रहा। एक प्रधानमन्त्री को मारा गया, दूसरे पर वार किया गया। भू०पू० सेनाध्यक्ष को मारा गया और वर्तमान को खुली धमकी दी जारही है। पानी सिर से गुजर चुका है। अकाली दल की सरकार भग की जाये, राष्ट्रपति शासन लागू हो। देशद्रोहियो और उनसे मिले हुए सरकारी अधिकारियो को सख्ती से कुचला जाना चाहिये।

—प्रो० शेरसिंह

फरीदाबाद जिलास्तरीय आर्य महासम्मेलन पलवलनगर सम्पन्न

(निज सवाददाता द्वारा)

दिनांक २७-२८ सितम्बर को जिलास्तरीय आर्य सम्मेलन पलवल नगर, जिला फरीदाबाद मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में आर्यसमाज के अनेक प्रभावशाली उपदेशक वक्ता सम्मिलित हुए। जिनमें श्री प्रणव जी शास्त्री आगरा, श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक सभा हरयाणा, श्री मुरारीलाल जी बेचैन भजनोपदेशक सभा, तथा श्री वेगराज जी भजनोपदेशक उत्तर प्रदेश, श्री महेशचन्द्र जी सगीताचार्य उ०प्र० आदि नें अनेक सम्मेलनो मे अपने विचार प्रकट किये।

राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन मे प्रो० शेरसिंह जो सभा प्रधान, श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली से पधारे। प्रो. शेरसिंह जी ने सम्मेलन में बोलते हुए देश की अनेक समस्याओ के समाधान की चर्चा की। राष्ट्रीय समस्याओ पर विचार प्रकट करते हुए उन्होंने शराब, दहेज तथा अन्य बुराइयो को उखाड फेंकने की चर्चा की। विशेषकर शराब के बारे में आंदोलन करने की आर्य सदस्यो को प्रेरणा दी। इस प्रकार उत्साह एव सफलतापूर्वक यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें निश्चय किया गया कि ऐसे सम्मेलन अन्य जिलो में भी किये जावें। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष चौ० राजेन्द्रसिंह एडवोकेट पूर्व एम०एल० ए० के साहसपूर्ण कार्यों से इलाके में आर्यसमाज का प्रचार जोरो से किया गया। इनके ही अथक परिश्रम से पलवल के निकटस्थ १५ ग्रामों मे वैदिकधर्म प्रचार धूमधाम से किया गया।

रोहतक में आर्य वीरदल का प्रांतीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न

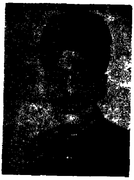
२७-२८ सितम्बर को रोहतक में आर्य वीरदल हरयाणा का वार्षिक सम्मेलन धूमधाम मे सम्पन्न हुआ। २७ को नगर में शोभा यात्रा निकाली गई। सभा की मण्डलिया भी सम्मिलित हुइं।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने करते हुए आर्य वीरदल के सैनिको को उग्रवाद का मुकाबला करने का आह्वान किया और भारत सरकार को सुझाव दिया कि उग्रवादियो को हरयाणा की जेलो मे बन्द करके उनकी शराब मास आदि की सप्लाई बन्द की जावे। इस प्रकार वे माफी मागने पर विवश हो सकते हैं।

राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध, प्रो० शेरसिंह, स्वामी सत्यप्रकाश, प० क्षितीशकुमार वेदालकार, श्री रामप्रकाश, श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी आदि नेताओ ने सम्बोधित किया।

—केदारसिंह कार्यालयाध्यक्ष

चौ० माड़ूसिंह की द्वितीय पुण्य वर्षी



कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, जि० सोनीपत में ७ अक्तूबर, १९८६ मंगलवार को निष्काम सेवक, कर्मयोगी, देवतास्वरूप स्वर्गीय चौ० माड़ूसिंह मलिक की दूसरी पुण्य वर्षी मनाई जा रही है। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी, साधु, महात्मा एवं भजनोपदेशकों, हरयाणा सरकार तथा केन्द्र सरकार के नेताओं को भी निमन्त्रित किया गया है। जिनके पधारने की हमें पूर्ण आशा है।

श्री फूलचन्द जी (मुलाना) लोक-निर्माण मन्त्री हरयाणा इस समारोह की प्रधानता करेंगे।

विशेषता —इस अवसर पर राष्ट्र एकता सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा।

सुभाषिणी आचार्या

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान्

पं० जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धांती की ८६वीं जयन्ती



आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धांती की ८६वीं जयन्ती १२ अक्तूबर, ८६ को विजयादशमी के पर्व पर प्रातः ११ बजे सिद्धांती भवन दयानन्दमठ, रोहतक में धूमधाम से प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में मनाई जा रही है।

श्री सिद्धांती जी ने अपना सारा जीवन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में व्यतीत करके जनता की शानदार सेवा की है। आर्यसमाज द्वारा सचालित हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा, गोरक्षा आंदोलन तथा हरयाणा राज्य की स्थापना के संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उत्तर भारत के नगरों तथा ग्रामों में घूम-घूमकर वैदिकधर्म का प्रचार किया। इनके योगदान को स्मरण करने तथा श्रद्धांजलि देने के लिए प्रतिवर्ष इनकी जयन्ती मनाई जाती है।

इस शुभावसर पर हरयाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से षड्-दर्शन समन्वय विषय पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया है। इसमें हरयाणा के कोने-कोने से वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। सभा की प्रसिद्ध भजन मण्डलियां भी अपने प्रभावशाली संगीत प्रस्तुत करेंगी।

आपसे अनुरोध है कि इस शुभावसर पर अपने मित्रों के साथ पधार कर जयन्ती समारोह तथा गोष्ठी में सम्मिलित होकर शोभा बढ़ावें। कार्यवाही प्रातः १० बजे यज्ञ से आरम्भ होगी।

निवेदक प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा के आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव तथा वेद सप्ताह

आर्यसमाज गुरुकुल आर्यनगर जि० हिसार	५ से १२ अक्तूबर
" खानपुर कलां जि० सोनीपत (चतुर्वेद पारायणयज्ञ तथा सत्संग)	२ से १६ "
" चरखी जि० भिवानी	१३-१४ "
" भाडवा जि० भिवानी	१५-१६ "
" कन्या गुरुकुल पचगांव जि० भिवानी	१८-१९ "
" घराड़यापुर जि० करनाल	१७-१८-१९ "
" प्रेम मोहल्ला तावडू जि० गुड़गांव	१७-१८-१९ "
" हेली मण्डी जि० महेन्द्रगढ़	१७-१८-१९ "
" मतलोढा जि० हिसार	२०-२१ "
" सैक्टर-३२ चण्डीगढ़	२० से २६ "
" रामनगर गुड़गांव	२० से २६ "
" कालका जि० अम्बाला	२६ से २ नवम्बर
कुरुक्षेत्र गोशाला कैथल	७ से ९ "
आर्यसमाज खानपुर जि० महेन्द्रगढ़	७ से ९ "
" जवाहरनगर पलवल फरीदाबाद	१४ से १६ "
" नारनौल जि० महेन्द्रगढ	२०-२१ "

—वेदप्रचाराधिष्ठाता

डाहौला (जींद) में वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक महाशय ईश्वरसिंह तूफान के भजनों और उपदेशों से ग्रामीणों पर अच्छा प्रभाव रहा। हर रोज सवेरे यज्ञ होता रहा। जिसमें कई नौजवानों को यज्ञोपवित दिये गये। यह कार्यक्रम १२-९-८६ से १५-९-८६ तक चला।

मा० कपूरसिंह आर्य (२१६४)
मन्त्री आर्यसमाज डाहौला

आर्य वीरदल हरयाणा के प्रांतीय महासम्मेलन रोहतक में स्वीकृत प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या १

आर्य वीरदल हरयाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन देश की समस्त आर्यसमाजों से प्रार्थना करता है कि वे अपने समाज में हर मूल्य पर आर्य वीरदल की स्थापना करें। आर्य वीरदल आर्यसमाज का भविष्य है। हमारे नवयुवक इस माध्यम से आर्यसमाज के पवित्र मिशन को सफल बनाने के लिए अग्रसर हो सकते हैं।

प्रस्ताव संख्या २

आज हमारी युवापीढ़ी पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगने को गलत नीतियों पर चलती हुई मादक द्रव्यों का प्रयोग बाहुल्यता से करने लगी है। इस प्रकार नशीले पदार्थ हमारी युवापीढ़ी को जो कि कल के राष्ट्र का भविष्य है, खोखला कर रहे हैं।

आर्य वीरदल हरयाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन केन्द्र एवं प्रान्तीय सरकारों से अनुरोध करता है कि पूरे भारत में नशाबन्दी अविलम्ब लागू की जाये।

प्रस्ताव संख्या ३

आर्य वीरदल हरयाणा का यह प्रान्तीय महासम्मेलन महर्षि दयानन्द के मिशन को चालू रखने तथा उसमें गम्भीरता से गहन अध्ययन करने के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में तत्काल दयानन्दपीठ स्थापित करने का अनुरोध करता है। हरयाणा भी इस पवित्र कार्य में पूरा सहयोग प्रदान करे।

अजीतकुमार आर्य

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती

चौ०—पाखण्ड के दम भक्षक, वैदिक संस्कृति के रक्षक।
देव दयानन्द नाम धराये, गुरु विरजानन्द से ज्ञान पाये।
वेदज्ञान की जोत जलाई, आर्यजाति आन बचाई।
वेदो का प्रचार कर दिन्हा, पाखण्डो से लोहा लिन्हा।।

दो०—वेद सत्य ज्ञान है जो धर्म का आधार।
मूर्तिपूजा व्यर्थ है कहा ऋषि ने विचार।।

चौ०—ओ३म् पताका ली हाथ में, वेदज्ञान की पोट साथ में।
लिखकर नेक ग्रन्थ नाना, सत्य असत्य सही व्याखाना।
मिथ्या कलक मिटाया राम कृष्ण को सही बताया।
निर्भय अडिग सत्य पुजारी, सही बात मुख से उचारी।

दो०—सत्य-असत्य का ज्ञान कराने लिखा सत्यार्थप्रकाश को।
पाखण्डो की पोल खोल दी बचाया देश नाश को।

चौ०—आजादी के बन प्रणेता, यें राष्ट्रीय महान् नेता।
स्वतन्त्रता का उद्घोष किन्हा, परतन्त्रता को बोल दिन्हा।
अनेक वीर सुन उपदेशा, देशहित केसरी वेशा।
बलिदान देने की ठानी, अंग्रेज हिलेन को मनमानी।

दो०—आजादी के उद्घोषक तुम थे निर्भय राष्ट्रीय नेता।
वेद को सर्वोपरि मान बने शास्त्रार्थो के विजेता।

चौ०—सुन वेद सत्य उपदेशा, पापों ने बदला वेषा।
जगन्नाथ को पास बुलाई, भोजन में विष मिलवाई।
कर ध्यान स्वर्ग सिधारा, वैदिक संस्कृति का रखवारा।
मन धरही पढ़ सत्यार्थप्रकाशा, ओ३म् निराकार की आशा।

दो०—हुए शिकार पोपों के वे दयानन्द महान्।
मानवमात्र के कल्याणार्थ दे गए वेद का ज्ञान।।

लेखक
मा० रामचन्द्र आर्य "नखवा,,
आर्य निवास बडवा(भिवानी)

शुद्धि समाचार

दिनाक २३-६-८६ को गाव गोविन्दपुर, जि० झुन्झुनू राजस्थान में यज्ञ किया गया और स्वामी देवानन्द सरस्वती के प्रयत्नो से यवन नटों ने स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया और यज्ञ मे आहुतिया दिलाई गई कि हम मास, मदिरा आदि का त्याग करके आर्यसभ्यता को अपनायेंगे और उनके हाथ से प्रीतिभोज वितरण करवाया गया और बिरादरी में इज्जत दिलाई गई। इसमें भाग लेनेवाले व्यक्ति मल्लाहराम, ब्रजलाल, मांगेराम गाव भालोट, जि रोहतक के रहनेवालो के सहयोग से यह शुद्धि की गई।

पुराना नाम	नया नाम	सदस्य
गुलमा	जुगलाल	१६
बन्दू	बजरगलाल	१५
सुभाना	सुन्दरलाल	१७
छेला	छेलुराम	१८
कबूला	कबूलसिंह	१४

—ओमप्रकाश प्रधान

दिनाक ४-४-८६ को समालखा आर्यसमाज में बाबू ओमप्रकाश की अध्यक्षता में बी० बी० भारती जी पहले कलकत्ता चर्च के बिशप थे। उन्होंने अपनी इच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया। सेवानन्द सरस्वती के प्रयत्न द्वारा यह शुद्धि की गई, और उसके हाथ से प्रसाद वितरण किया गया। —बी० बी० भारती

आर्य वीरदल का शिविर

आर्य वीरदल खदरी का दस दिवसीय शिविर श्री विद्यासागर व श्री सुखदर्शनलाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस शिविर में २० वीरो ने भाग लिया, जिसमें उन्होंने श्री देवेन्द्रदत्त भारद्वाज शिक्षक से योगासन, लाठी आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया और श्री वैद्य रामलाल, श्री रामस्वरूप शास्त्री व श्री गेन्दाराम आर्य ने अपने प्रवचनो से वीरो को ओतप्रोत किया, तथा उन्हें यज्ञोपवीत तथा भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का पूर्ण ज्ञान दिया गया। वीरो ने देश तथा अपनी संस्कृति पर चलने का सकल्प लिया। श्री रमेशकुमार शास्त्री ने भी अपने पवित्र प्रवचनों से वीरो को सम्बोधित किया।

व्यवस्थापक
श्री रामस्वरूप शास्त्री

श्री नवनीतलाल जी एडवोकेट अस्वस्थ

श्री नवनीतलाल जी एडवोकेट, जिन्होंने अपनी अधिकाश आयु आर्यसमाज की सेवा में लगादी है, आजकल अस्वस्थ हैं। पहले ये गगाराम हास्पिटल में भर्ती हुए थे, अब ये अपने घर (१६/१ निजामुद्दीन "ईस्ट") के नजदीक ही "जयपुरिया एस्टेट प्लास्टिक सर्जरी क्लीनिक के रूम न०—१२० निजामुद्दीन "ईस्ट" नई दिल्ली में भर्ती हैं। परमात्मा उनको शीघ्र स्वस्थ करें। —रामनाथ सहगल

शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का शताब्दी समारोह दिनाक १७ से २० अक्तूबर, १९८६ शुक्रवार से सोमवार तक प्रकाशवीर शास्त्री नगर (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ में समारोहपूर्वक मनाया जारहा है।

कृपया समस्त आर्यबन्धु अधिक से अधिक संख्या में सम्मेलन में सम्मिलित होने की कृपा करें, तथा अपना अमूल्य आर्थिक सहयोग चैक/ड्राफ्ट तथा धनादेश द्वारा भेजने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ

शोक समाचार

अजातशत्रु, स्नेह और वात्सल्य की साक्षात्मूर्ति ममतामयी माँ श्रीमती शमाकौर धर्मपत्नी राव मगलसिंह पूर्व सरपच खानपुर के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज खानपुर उनके शोक सतप्त परिवार को सान्त्वना तथा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। माताजी का सारा परिवार ही आर्यसमाजी, राष्ट्रभक्त तथा धार्मिक परिवार है। भगवान् इनके परिवार को मगलमय, सुखी और शान्ति से ओतप्रोत रखे।

धर्मपाल आर्य
प्रधान आर्यसमाज खानपुर, त० नारनौल, जि० महेन्द्रगढ।

आर्यसमाज ग्राम मतलौढा (हिसार) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—सर्वश्री दयानन्द जी शास्त्री, उपप्रधान—रघुवीरसिंह, मन्त्री—बलवन्तसिंह शास्त्री, उपमन्त्री—मा० वीरभान, कोषाध्यक्ष—डा० इन्द्रसिंह, प्रचारमन्त्री—महीपाल शास्त्री।

नूरपुर मुगलान (करनाल) का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री कृष्णचन्द्र, मन्त्री-रणवीरसिंह उप[illegible] कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश, प्रचारमन्त्री—रामसिंह, पु[illegible] आर्य।

ऋषि सन्देश

मनुष्य जो कर्म करता है उसके तीन रूप बन जाते हैं। फल, प्रारब्ध तथा वासना। मनुष्य जो कर्म करता है उसका फल कुछ इस जन्म मे पा लेता है और कुछ अगले जन्म मे पाता है, जो अगले जन्म मे फल पता है, उसे प्रारब्ध कहा जाता है। परन्तु उस कर्म से जो वासना बनती है वह मनुष्य के चित्त के साथ लग जाती है और बढती जाती है, जैसे किसी व्यक्ति ने चोरी की और पकडा गया, और राज्य व्यवस्था से दड भोग लिया, परन्तु उस चोरी की वासना चित्त मे बैठ जाती है और मनुष्य को प्ररणा करने लगती है—कर चोरी जिसके अधीन हो कर ममुष्य फिर चोरी करता है, और इस प्रकार वासनाये दो हो जाती हैं, फिर इसी प्रकार उनके अधीन कार्य करता रहता है। और वासना बढ जाती हैं, और कई जन्मो तक पीछा नही छोडती। इन वासनाओ से पीछा छुडाने का साधन क्रियायोग है। इनको क्रियायोग से नष्ट किया जा सकता है।

क्रियायोग क्या है ?

तप.स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोग.। योग २।१

अर्थ—तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान, इन तीनो को क्रिया योग कहते हैं।

तप—सुख, दु ख, शीत उष्णादि द्वन्द्वो को सहारने और हितकर तथा परिमित आहार और कम इन्द्रियो को बस मे करना तप कहलाता है। ऋषि याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी को उपदेश देते हैं। हे मैत्रेयी ! दुन्दुभि पर जब चोट देते हैं, तब उससे शब्द निकल-निकल कर बाहर आते हैं। इन शब्दो को यदि कोई पकडना चाहे तो पकड नही सकता। इन्हे पकडना चाहो तो दुन्दुभि को पकड लो, या दुन्दुभि बजानेवाले को पकड लो, और बस यह ढोलका-सा तमोगुणी शब्द पकडा जाता है। ठीक इसी तरह आत्मा इन्द्रियों को पीटकर ससार के ढोलके-से तमोगुण रूपी शब्द उत्पन्न कर रहा है। ससार को पकडना हो तो इन्द्रियों को पकड़ लो और इससे बढ़कर आत्मा को पकड़ लो। शख जब पूरा जाता है तो उससे निकले शब्दों को अलग से नही पकडा जा सकता। इन्हे पकडना हो तो शख को पकड लो या शख को पूरने वाले को पकड लो और बस, यह शखका-सा रजोगुण रूपी शब्द पकडा जाता है। इसी प्रकार ससार के शख (आत्मा के-से रजोगुण-रूपी शब्द को पूरने वाले) का पकड़ लो उसने यह शख पूर रखा है।

जब वीणा बजाई जाती है, तब उससे निकले हुए शब्दो को अलग से नही पकड़ा जा सकता, उन्हे पकडना हो तो वीणा को पकड लो, या वीणा बजाने वाले को पकड लो, और बस वह वीणाका-सा सत्त्वगुणी शब्द पकडा जाता है। इसी प्रकार इस जगत् के वीणा के से सत्त्वगुण-रूपी शब्द को बजाने वाले आत्मा को पकड लो, उसी ने यह तार बजाये हैं। भाव यह है कि यदि इन्द्रियो के विषयों को पकडना हो तो इन्द्रियो को पकड लो, या इन्द्रियो को चलानेवाले मन को पकड लो। मन इन्द्रियो का मालिक है और इन्द्रिया मन की दासी हैं। मन इन्द्रियो को चलाता है, उन से कार्य लेता है, परन्तु एक समय में केवल एक ही इन्द्रिय से काय ले सकता है, और उसी एक काय से मन को हटाना योग है, और उसका केवल मात्र उपाय स्वाध्याय है। स्वाध्याय से मन की क्रोडा इन्द्रियों से हटाकर उसको आत्मक्रीड़ बनाया जा सकता है।

स्वध्याय—ओकार आदि ईश्वर के पवित्र नामो का जाप और वेद, उपनिषद् आदि शास्त्रो के अध्ययन का नाम स्वाध्याय है। जब मनुष्य स्वाध्याय मे लग जाता, और मनन करते-करते अपने चित्त का पाठ करने लग जाता है, और उस मे लगो बुरी वासनाओ को जान जाता, और उन से बचाने के लिये सदा भगवान् से प्राथना करता है, और प्रयत्न भी करता है। और स्वध्याय से सात्त्विक सुख मिलता है। ईश्वरप्रणिधान फल की इच्छा छोडकर केवल ईश्वर को प्रसन्नता के लिये वेदोक्त कर्मों के करने का नाम ईश्वरप्रणिधान कहते हैं। इन तीनो का नाम योग शास्त्र में क्रियायोग है, क्योकि यह स्वय क्रियारूप तथा योग के साधन हैं, इनके करने से अस्थिर चित्त वाला भी योग को प्राप्त हो जाता है। यद्यपि योग के साधन यम, नियमादिक भी क्रियात्मक होने से क्रियायोग हैं, परन्तु अशुद्ध चित्त मन्द अधिकारी भी शीघ्र ही सम्प्रज्ञात समाधि तथा उसके तीनो साधनों को प्राप्त हो जाता है। अत एव यम नियमादिकों से उत्कृष्ट होने के कारण प्रथम इन तीनो का उपदेश किया है। इसलिये योगारूढ पुरुष को इस क्रियायोग का अनुष्ठान करना परमावश्यक है। उक्त क्रियायोग का फल क्या है ?

समाधिभावनार्थ.—क्लेशतनूकरणार्थश्च। योग २।२

अथ—उक्तक्रियायोग समाधि को सिद्ध करता और अविद्यादि क्लेशो को शिथिल करता है। क्रियायोग का प्रथम फल यह है कि इसके अनुष्ठान से चित्तशुद्धि द्वारा सम्प्रज्ञात समाधि की प्राप्ति होती है, और दूसरा फल यह है कि प्रकृति पुरुष विवेक के प्रतिबन्धक जो अविद्या आदि क्लेश हैं यह इसके अनुष्ठान से निबल हो जाते हैं, अर्थात् अनादिकाल से अविद्या आदि क्लेश तथा शुभाशुभ कर्मों की वासना से रजोगुण, तमोगुण की वृद्धि का हेतु जो चित्त मे पापरूप मलिनता है जिससे चित्त सर्वदा विक्षिप्त रहता है वह क्रियायोग के अनुष्ठान से निवृत्त हो जाती है और उसके निवृत्त होने से शुद्ध हुआ चित शीघ्र ही समाधि को प्राप्त होता है। भाव यह है कि जब मनुष्य निष्काम होकर उक्त क्रियायोग का सेवन करता है, तब चित्त विक्षेप के कारण पूर्वोक्त पाप से निवृत्त होकर एकाग्र अर्थात् समाधिनिष्ठ हो जाता है और समाधि के प्रतिबन्धक अविद्या आदि क्लेश निर्बल हो जाते हैं, अर्थात् फिर प्रतिबन्धक नही रहते। इससे सिद्ध हुआ कि योग की इच्छा वाला विक्षिप्त पुरुष समाधि की सिद्धि और क्लेशो की निवृत्ति के लिये क्रियायोग का अनुष्ठान करे।

—दसेराज खीरबाट
२९० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

स्वामी दयानन्द सरस्वती के विषय मे—

मैथिलीशरण गुप्त का पत्र

आजकल राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शताब्दी समारोह मनाये जारहे हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर कवि सम्मेलन, गोष्ठी, वार्तालाप आदि प्रसारित हो रहे हैं। गुप्त जी ने हिन्दी साहित्य को दजनो ग्रथरत्न प्रदान किये हैं। उनमें उनकी "भारत भारती" एक अद्वितीय कृति है।

स्वर्गीय गुप्त जी ने २७।। वर्ष पूर्व एक पत्र श्रीयुत प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को लिखा था, वह मेरे पुराने सग्रह मे है। नीचे पत्र की प्रतिलिपि दी जाती है।

—वेदव्रत शास्त्री

श्रीराम

६ नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली
५-३-५९

प्रिय शास्त्री जी,

प्रणाम। कृपा पत्र मिला। आभारी हू। धन्यवाद।

वैष्णव कुल का होने पर भी मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपने देश का महापुरुष मानता हू। उनके लिए मेरे मन में श्रद्धा है। कौन उनके महान् कार्य स्वीकार न करेगा ?

अभी कुछ दिन पूव झासी में एक पजाबी परिवार मे मित्रता के नाते गया था। वहा मेरे मित्र के पौत्र का यज्ञोपवीत सस्कार था। जिस बालक को यज्ञोपवीत दिया जारहा था, वह अपनी माता को ममी और पिता को पापा कहा करता था। वेषभूषा का कहना ही क्या ? आज उसका वटुवेश देखकर मुझे कौतुहल ही हुआ। उपरात वेदी मे हवन के साथ वेदध्वनि सुनकर मैंने मन ही स्वामी को प्रणाम किया और कहा—

जो आज वेदध्वनि गूंजती है
कृपा उन्ही की यह कूजती है।

और क्या लिखूं। मेरी हार्दिक शुभकामना स्वीकार कीजिए।

आपका
मैथिलीशरण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तको का नाम	मूल्य
१	दी वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज— प० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रो की व्याख्या)-प० चमूपति एम०ए०	३-००
४	निहारिकावाद और उपनिषद्—प० चमूपति एम०ए०	०-५०
५	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालकार	१-००
६	निजाम की जेल में—लेखक प० क्षितोश	२०-००
७.	ईसाइयो की प्रचार प्रणालो—प० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण-प ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रथ (आर्य शहीदो का परिचय)	४-५०
१०	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धम-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४	पजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२ ००
१५	आदश धातु रूपावली—महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचाय	३ ००
१७	स्मारिका (हरयाणा प्रातीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८	मूर्तिपूजा—सम्पादक प० जगदेवसिंह सिद्धाती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२	ईसाई पादरियो की आर्यसमाज को चुनौती-स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६	हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७	बड - स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८	वीर हेमू ,,	००-७५
२९	पीपल ,,	१-५०
३०	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लोपद वा हाथी पाव की चिकित्सा—स्वा० ओमानन्द जी	० २०
३२	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३	लवण ,,	१-२५
३४	विदेशो मे मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५	नेरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६	ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ,,	१०-००
३७	,, १-२ ,,	१-००
३८	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०	,, ५ ,,	२-००
४१	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६	हल्दी ,,	१-५०
४७	नीम ,,	१-२५
४८.	प० गगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९	नास्तिक मत समीक्षा—प० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धाती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा की पंचायतों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा सरकार के आदेशानुसार जो ग्राम पचायत ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के लिए प्रस्ताव पारित कर देंगी और हरयाणा के कराधान एव आबकारी विभाग के आयुक्त को चण्डीगढ़ तथा उसकी प्रतियां जिला अधिकारियो के पास ३१ अक्तूबर तक भेज देंगी, उनके ग्रामो में अगले वर्ष शराब के ठेके नहीं स्वीकार होगे। अत पचो, सरपचों तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध मे पचायतों से प्रस्ताव पारित करवाकर शराबबन्दी कार्यक्रम में सहयोग देने की कृपा करें।

—सभा मन्त्री

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान मिले

भारत को स्वतन्त्र हुए उन्तालीस वर्ष पूर्ण हो चुके हैं, चालीसवां वष चल रहा है। लेकिन इतने बडे अन्तराल के उपरान्त भी आज हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दो, राष्ट्र-भाषा के पद पर पूर्णत पदारूढ नहीं हो सकी है। हमारी राष्ट्र-भाषा राजनीति के पक में फसकर छटपटा रही है। हमारी राष्ट्र भाषा सरकार की उपेक्षापूर्ण व ढुलमुल नीति के कारण अपने अस्तित्व पर आसू बहा रही है। आज भी हमारी पराधीनता की प्रतीक 'अंग्रेजी, हिन्दी के घर मे अनधिकृत रूप से पटरानी बनी हुई है। क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के चक्कर में फसकर हमारे राष्ट्रीय राजनेता हिन्दी का उपहास कर और करा रहे हैं। जबकि हिन्दी सम्पूर्ण राष्ट्र की सर्वमान्य राष्ट्रभाषा बन चुकी है। देश के नब्बे प्रतिशत व्यक्ति हिन्दी बोलते और समझते हैं। हिन्दी का व्याकरण व साहित्य विश्व की समस्त भाषाओं से अधिक उत्कृष्ट है। फिर भी यहा तक कि हमारी ससद में भी हिन्दी का मजाक उडाया जाता है। जो अविवेक व दुर्भाग्यपूर्ण है।

राधेश्याम आर्य

दस दिवसीय राष्ट्रीय-सेवा योजना शिविर

बेरी २८ सितम्बर, १९८६। रोहतक से लगभग ३० किलोमीटर दूर बेरी कस्बे में राजकीय महाविद्यालय दुजाना की एक एन एस एस यूनिट के दस दिवसीय विशेष शिविर के समापन समारोह का आयोजन कालेज के प्राचार्य श्री आर० पी० कन्याल की अध्यक्षता मे किया गया। यह शिविर दिनाक १९-९-८६ को गायत्री मन्त्रोच्चारणपूर्वक श्री प्रकाशवीर दलाल की देख-रेख मे शुरु किया गया था। समापन समारोह के अवसर पर महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कला, जिला सोनीपत के प्रधान तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री स्वर्गीय चौ० माडूसिंह के सुपुत्र चौ० जगजीतसिंह मलिक मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने स्वयसेवको द्वारा किये गये सामाजिक काय की भूरि-भूरि प्रशसा की और उन्हें पुरस्कार दिये। इससे पूव गाव बेरी की तरफ से चौ० रामचन्द्र तथा चौ० सुरेन्द्रसिंह लोर ने छात्रो द्वारा किये गये काम को बेरी, शेरिया और मदाना के लोगो के लिए बडा राहत देने वाला काम बताया। जिससे दस किलोमीटर तक का कम सफर करना पड़ेगा। इस शिविर के दौरान छात्रों ने लगभग ३०० फुट लम्बे, ३० फुट चौडे और तीन से चार फुट तक गहरे आम रास्ते को मिट्टी डालकर ऊचा किया है। जिससे ट्रैक्टर, बैलगाडी, साईकिल आदि आराम से आ जा सकते हैं। गाववालों में श्री कृष्णसिंह, श्री सुरेन्द्रसिंह तथा श्री रवीन्द्रसिंह उर्फ बबलू का सहयोग सराहनीय रहा। इस शिविर का विस्तृत विवरण देते हुए कार्यक्रम अधिकारी ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया और प्राचार्य महोदय के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया। शिविर में कुल मिलाकर लगभग ५० स्वयसेवको ने नियमित रूप से भाग लिया। अन्त मे शातिपाठपूर्वक समारोह के समापन की घोषणा की गई।

दलेलसिंह (कोमस), शेरसिंह बी० ए० २

शोक समाचार

आर्यबन्धुओ को यह जानकर खेद होगा कि आर्यसमाज के कमठ कार्यकर्त्ता श्री उमरावसिंह जी आर्य मातनहेल (रोहतक) का दिनाक १० ९-१९८६ को स्वर्गवास होगया है। दिनाक २१-९-८६ को उनके निवास स्थान मातनहेल मे शान्तियज्ञ किया गया। जिसमे श्रद्धेय स्वामी 'ओमानन्द सरस्वती, श्री राममेहर एडवोकेट, प्रो० जयदेव गुरुकुल कागडी, प्रो० बलबीर आचार्य आदि सन्यासी एव विद्वान् उपस्थित थे उनकी सुपुत्री श्रीमती सुषमा, कृष्णा, सुखदा स्नातिका गुरुकुल नरेला' भी सम्मिलित थी। इस यज्ञ में दिवगत आत्मा की सद्गति एव शोकतप्त परिवार की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

सुदर्शनदेव आचार्य
सभा उपमन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P RTK 45   दि १,६६ ०८,५३,०८७



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४४   १८ अक्तूबर, १९८६   वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

विजयादशमी आश्विन सुदि दशमी

हुआ प्रकृति का निर्मल जीवन, स्वच्छ गम्य सब पन्थ गए बन।
निर्मल व्योम मे छिटके तारे, मुदित हुए हैं जिगमिषु सारे॥

—(श्री गिरधर शर्मा 'नवरत्न')

विजयार्थी विजयार्थ चले हैं, व्यापारी भी चल निकले हैं।
विजयादशमी दुन्दुभि बाजी, नरपतियो ने सेना साजी॥
क्षात्र-तेज मे वीर भरे हैं, वे उत्साह शक्ति प्रेरे हैं।

—(श्री सिद्धगोपाल काव्यतीर्थ कविरत्न)

जगतीतल में भारतवर्ष ही एक ऐसा भूखण्ड है जहा वर्षा की ऋतु अन्य ऋतुओ से पृथक् होती है। अन्य देशों मे शीत (जाडा) और उष्ण (गरमी) दो ऋतुयें (मौसम) होती हैं? उनमे ही समय समय पर वर्षा भी होती रहती है। किन्तु भारत में जाडा, गरमी और बरसात के तीन मौसम वर्ष के चार चार मास रहते हैं। वर्षा के चातुर्मास्य (चौमास) में वर्षा का इतना प्राचुर्य रहता है कि उसमे बगाल आदि कई देशो मे तो जल थल एक हो जाता है। भारत के अन्य प्रातो का नदिया भी बाढ से उमड पडती है। नाले- तलैया जल से परिपूर्ण हो जाते है। आने-जाने के सारे मार्ग कीचड और जल से भरे रहते हैं। चार मास तक शकट आदि (गाडी तागो) वाहनो का यानायात प्राय रुका रहता है। किसान अपने गाडी तागो को उहेल (पृथक्-पृथक् करके) रख देते है। प्राचीन भारत में तो जब यहां सडको वा राजमार्गों की बहुतायत न थी, वर्षा-काल में यात्रायें बिलकुल ही बन्द रहती थीं। राजन्यवर्ग की विजय यात्रा और वैश्यो की व्यापार यात्रा वर्षा के चातुर्मास्य में रुकी रहती थी। वर्षा के अवसान पर जब शरदृऋतु का प्रवेश होता था, तो इन अवरुद्ध यात्राओं का पुन. प्रारम्भ होता था।

अब नदियो को गाध (उथला) करती हुई और मार्ग के कीचडों को सुखाती हुई शरदृऋतु का पदार्पण हो गया है। जलाशयो में कुमुदिनिया (कुई) खिल रही है। मिवृष्ट (बरसे हुए हल्के मेघ सूर्य के मार्ग में से हट गये हैं, इसलिए उसका प्रताप चारो दिशाओं मे फैलने लगा है। शरद्-ऋतु की साम्राज्ञी कुमुदिनी के छत्र और खिले हुए कांस के चमर से शोभा पारहे हैं। स्वच्छ चादनी आंखो को अतीव आनन्द देती है। स्थल पर हसों की पक्तिया, आकाश में ताराओ और जलाशयो मे कुमुदिनियो पर श्वेतता छाई हुई है। ईखें बढकर लम्बी और सघन हो गई हैं और उनके खेतो की छाया में मैढो पर बैठे हुए गोपालबाल मधुर गीत गारहे हैं। अगस्त्य नामक तारे के उदय होते ही जलाशय स्वच्छ हो गये हैं। गाड़ियों के बैल वर्षाभर छूटे रहकर और यथेष्ट घास चरकर खूब तयार हो गये हैं। उनके ठाठ मोटे होकर बडे सुन्दर प्रतीत होते हैं। वे आनन्द से उन्मत्त होकर खोरू खोद रहे हैं—वप्रक्रीडा कर रहे हैं। सीगो से नदियों की ढागों को ढा रहे हैं। शारद (सप्तपर्ण) वृक्ष के पुष्प खिल रहे हैं और उनमें हाथी के मद की-सी गन्ध आरही है। चारों ओर शरत्-श्री विराज रही है। ऐसे समय में ही, इन दिनों ही—दिग्विजय यात्रा और व्यापार यात्रा के पुन प्रारम्भ की तैयारिया होती हैं। विजयादशमी उत्सव का समारोह समारम्भ होता है। बरसात मे जग लगे हुए योद्धाओ के खड्गादि शस्त्र और कवच सघर्षण द्वारा (सैकल करके) स्वच्छ और शाणित किये जाते हैं, जिनकी चमक आखो मे चकाचौंध उत्पन्न करती है। अश्वो और हाथियो की सज्जा सामग्री (बल्गा=लगाम, इयाण=लगाम) आभूषण और होदे आदि का सस्कार और सुधार किया जाता है। चतुरगिणी सेनाये सुसज्जित की जाती हैं।

वैश्यो (कृषको और व्यापारियो) के चार मास से उडले पडे हुए शकटादि वाहन धावन (धोने और पोछने) और तेल मर्दनादि द्वारा बाध जोडकर यात्रा योग्य सन्नद्ध किये जाते हैं। तथा व्यापारियो की दुकानो पर लेखनी मसिपात्र आदि लेखन उपकरण स्वच्छ किये जाते हैं, और नये बहीखाते और बस्ते बदले जाते हैं। सक्षेपत. प्रत्येक व्यवसायी अपने उपकरणो का परिमार्जन और सन्नहन (Equipping) करता है। इन सारे कार्यों की तैयारी आश्विन सुदि प्रतिपदा से आरम्भ करके आश्विन सुदि विजयादशमी तक पूरी हो जाती है। इस लघु लेखक को स्मरण है कि उसकी बाल्यावस्था में उसके पिता के यहा विजयादशमी से एक सप्ताह पूर्व से शस्त्रों के सैकल का कार्य होता रहता था।

विजयादशमी के दिन यज्ञशाला के द्वार देश में सुसज्जित, सशस्त्र, चतुरगिणी (अश्व, हाथी, रथ तथा पदाति) को क्रमबद्ध खडा करके उनकी नीराजना विधि (आरती) की जाती है। नीराजनाविधि में स्वस्ति और शान्तिवाचनपूर्वक बृहत्होम यज्ञ होता है, जिसमें क्षात्र धर्म के वर्णनपरक मन्त्रो से विशेष आहुतिया दी जाती हैं।

वैश्यवर्ण या अन्य व्यवसायी भी इसी प्रकार अपने व्यवसाय के वाहन आदि उपकरणो को सुसज्जित और परमार्जित रूप मे यज्ञशालाओ में क्रमबद्ध उपस्थित करके नीराजना का अनुष्ठान करते थे। यह कृत्य पूर्वाह्न मे होता था। सायकाल के समय राजन्यगण अपनी सज्जित सेना सहित सजधज से विजय यात्रा का नियमबद्ध उपक्रम करते थे। वैश्य भी अपने वाहनो में बैठकर इसी प्रकार व्यापार-यात्रा का प्रारभ सूचक अनुष्ठान करते थे। विजयादशमी के दिन से दिग्विजय यात्रा और व्यपार यात्रा निर्बाध चल पडती थी। इसी प्राचीन दिग्विजय यात्राओं

(शेष पृष्ठ ७ पर)

शराब का मस्तिष्क और शरीर पर कुप्रभाव

गताक से आगे—

अल्कोहल लेने का मुख्य उद्देश्य चिन्ता, फिक्र से मुक्ति पाना और मन पर सामाजिक रूढियो और आत्मालोचना के दबाव से छुटकारा पाना समझा जाता है। निर्णय शक्ति, भले-बुरे का विचार और आत्मसयम से शराबी को आजादी मिल जाती है, इसीलिये असली हालत की जानकारी उसे बहुत कम रह जाती है।

अल्कोहल पिये आदमी को कुछ समय के लिये ऐसा लगता है कि वह चिन्ताओ से मुक्त होगया और एक खास किस्म का वक्ती उल्लास और धैर्य उसे अनुभव होने लगता है। केवल बीमार आदमी को ही मानसिक भय की स्थिति से छुटकारा पाने की तीव्र इच्छा नही होती बल्कि दिनभर की जल्दबाजी करने वाले कामो मे लगा हुआ व्यापारी भी दिन का काम खत्म होने पर फौरन छुटकारा पाने के लिये बेचैन हो उठता है। परन्तु यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि नशे से शक्ति की प्राप्ति कदापि नही होती, उलटे बाद में कार्यक्षमता में तीव्र ह्रास हो जाता है।

अल्कोहल के लगातार इस्तेमाल के फलस्वरूप आदमी के शरीर में बहुत से दु ख-रोग भी घर करने लगते हैं, आखे जलने लगती हैं, मिचली सी आती हैं, भूख खत्म हो जाती है। थकावट, बहुत पसीना आना और जिस्म में कपकपी शुरु हो जाना आदि शराब के अधिक इस्तेमाल का ही नतीजा होता है। और फिर निराशा को दूर करने के लिये क्षणिक ताजगी और फुर्ती पाने के लिये आदमी अधिक शराब पीने लगता है, जिससे कष्ट बढता है, फिर ज्यादा शराब पीकर उन कष्टो को दूर करने का वह प्रयत्न करता है। इसतरह घातक जानलेवा दुश्चक्र शुरु हो जाता है। आदी हो जाने के बाद आदमी चाहने पर भी आसानी से दुष्चक्र से निकल नही पाता और अन्तत काल उसे ग्रस लेता है।

नशीली आदत का खतरा

असली बात तो यह है कि अल्कोहल का चाहे जो परिणाम होता हो, यह एक ऐसी गन्दी आदत है जो एक बार मुंह से लगी, छूटती नही। इसकी जबरदस्त ख्वाहिस गुलामी में बदल जाती है और व्यक्ति की यह अवस्था सचमुच अधोगति का लक्षण है।

अल्कोहल पीने पर पेट में आग-सी (गैस्ट्रोटस) लग जाती है। अल्कोहल चाहे किसी भी मात्रा में ली जाये, यह बहाना सर्वथा भ्रामक है कि यह पाचनशक्ति के लिये टानिक के रूप में लाभ पहुँचाती है।

श्वास क्रिया पर अल्कोहल का प्रभाव

अल्कोहल दिमाग और श्वास क्रिया पर इतना बुरा असर करता है कि किसी भी समय श्वास क्रिया बन्द हो जाने और मृत्यु होने का खतरा बना रहता है।

हृदय पर और रक्तचालन पर अल्कोहल कापरिणाम

कितनी भी मात्रा में इसका प्रयोग करने से अतत रक्तचालन घट जाता है और नाडी की चाल धीमी पडने लगती है।

अल्कोहल के प्रभावस्वरूप रक्त की नाडिया फैलने लगती हैं। इसीलिये शराबी के शरीर की त्वचा लाल हो उठती है। इसका प्रभाव आतरिक रक्तेन्द्रियो की अपेक्षा शरीर की रक्त नाडियो पर ज्यादा होता है।

ज्यादा अल्कोहल लेने से पेट मे काफी तकलीफ हो जाती है, और हमारी अस्थिमज्जा उत्तेजक बन जाती है। इससे थोडी देर के लिये रक्त चाप बढने लगता है। कभी-कभी बेहोश आदमी को थोडी मात्रा में अल्कोहल दिया जाता है। हालांकि इस उपाय से कही अधिक अच्छा यह होता है कि मूर्छित व्यक्ति के चेहरे पर पानी के छीटे मारकर उसे होश में लाया जाये।

शरीर के तापमान पर अल्कोहल का प्रभाव

क्योंकि त्वचा के साथ लगी रक्तेन्द्रिया अल्कोहल के प्रभाव से फैलने लगती हैं, इसीलिये शरीर का तापमान कम हो जाता है। जब त्वचा में भरपूर रक्त हो तो आदमी को ज्यादा गर्मी अनुभव होती है। लेकिन वास्तव में इससे शरीर की उष्णता खत्म हो जाती है और साथ ही त्वचा में रक्त के इर्द-गिर्द की हवा से सम्बन्ध रहता है, इसीलिए अल्कोहल लिये हुये व्यक्ति को उस व्यक्ति को अपेक्षा जिसने अल्कोहल नही ली होती, अत मे ठड ज्यादा सताती है।

अल्कोहल और गुरदा

चूकि अल्कोहल को आक्सीजन में बदलने की सबसे पहली क्रिया गुरदे मे ही होती है, इसीलिये अल्कोहल का गुरदे पर खास असर पड़ता है। शराबी का गुरदा अक्सर बिगडा रहता है।

अल्कोहल गुरदे के लिये वैसे भी अत्यन्त हानिकारक है। जो लोग नियमित रूप से शराब का सेवन करते हैं, उन्हे "सायहोसिस" नामक बीमारी लग जाया करती है।

चमड़ी पर अल्कोहल का प्रभाव

अल्कोहल का शरीर की त्वचा पर काफी दु खदायी प्रभाव पडता है। पानी वाली किसी भी चीज से अल्कोहल का सम्बन्ध जुडने पर पानी बाहर निकल आता है। इससे चरबी घटकर त्वचा सख्त और काली पडने लगती है। और ज्यो-ज्यो त्वचा को तकलीफ होती है त्यो त्यो गले, पेट, जीभ और तालु मे भी कष्ट होने लगता है तथा चेहरे पर झुर्रियां पडनी शुरु हो जाती हैं।

अन्य इन्द्रियो पर प्रभाव

अल्कोहल का रति सम्बन्धी कार्यों पर जो कुछ प्रभाव पडता है उसका मुख्य परिणाम यही होता है कि आदमी सयम और सावधानी खो बैठता है। जो लोग शराब के आदी हैं, उनकी जननेन्द्रियो मे विकृति आ जाती है और तीव्रता से स्तम्भन व रतिक्रिया सम्बन्धी कमजोरिया होते जाने के प्रमाण मिलते हैं।

अल्कोहल और रोग

अल्कोहल और रोगों की उत्पत्ति के बीच काफी गहरा सम्बन्ध है। शराब मनुष्य का स्वास्थ्य बिगाड देती है। शरीर की रोगनिरोधक क्षमता कम हो जाती है और जलवायु का तीखा प्रभाव महसूस होने लगता है। इस प्रकार रोग आसानी से शरीर पर कब्जा कर लेते हैं, और एक बार जब वे शरीर पर हावी हो जाते हैं, तो उन्हें हटाना असम्भव हो जाता है। अल्कोहल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जो रोग होते हैं, उनमें प्रमुख 'गैस्ट्रिटस', गुरदे का रोग (सायहोसिस) कुछ मानसिक रोग, मानसिक विकृति या पागल (पेलग्रापालिग्युरीटिस) आदि हैं। फिर, अधिक मात्रा में शराब पीने से मनुष्य की आयु भी बहुत कम हो जाती है।

विषैला अल्कोहल

अधिक मात्रा में ली गयी शराब आदि नशीली वस्तुएं आदमी को सुस्त मुलक्कड और उलझा हुआ-सा बना देती हैं। साथ ही उनके अंगों में शिथिलता आ जाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि फिर अगर अधिक मात्रा मे अल्कोहल लिया जाये तो भी वह अपना गुण यानी अधिक स्फूर्ति और ताजगी लाना भी खो बैठती है। आदमी पर उसका कोई उत्तेजक प्रभाव नही होता। नियमित शराब पीने वाले व्यक्ति पर शराब का बस यही असर होता है कि वह अधिक दुखी और चिन्ताग्रस्त बन जाता है, और अन्तत मानसिक दृष्टि से वह लगभग खत्म हो जाता है।

क्या अल्कोहल भी अन्न है

अल्कोहल से यदि शरीर में कुछ शक्ति का सचार-सा होता अनुभव भी हो, तो भी वह स्थायी शक्ति नही होती। वह भ्रामक शक्ति ही होती है। शराब पीकर प्राप्त की गयी शक्ति को मात्र कुछ ही घड़ियों तक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

श्री देवीदास जी आर्य

मानवीय श्री देवीदास जी आर्य का कार्य-कलाप अद्भुत है। परमात्मा श्री देवी-दास आर्य को फलता फूलता रखे। वह आर्य जाति की बहुमूल्य सपत्ति हैं। अकेले ही भयावह स्थानो पर छापा मारकर भगाई लडकियो को शत्रु और गुड्डो के हाथो से छुडा लाने का वीरता व साहसपूर्ण इनका काय अनुपमेय है।

वीर हनुमान् ने समुद्र को चीरकर सती, साध्वी, तपस्विनी सीता जी का पता लगा लिया था। किन्तु आज के इस राक्षसप्रधान युग मे सहस्रो अबलाओ का उद्धार हमारे वीर श्री देवीदास आर्य ने कर दिखाया है।

राम कथा के साथ सदैव के लिये हनुमान् जी जुडे रहेगे। इस आज के पापबाहुल्य युग मे आर्यसमाज और आयजाति के रक्षा कार्य का सेहरा श्री देवीदास आय के सिर बधा है। इनकी वीरता सर्वत्र प्रशसनोय है। परमात्मा उन्हे दीर्घायु प्रदान करे।

उनका जन्म ३ जून १९२६ ईस्वी को सिन्ध प्रान्त की प्रसिद्ध व्यापारिक नगरी सक्खर मे हुआ जो सिधु नदी के किनारे बसी हुई है। आयसमाज का सक्खर मे बडा जोर था सक्खर मे सिन्धु नदी के दोनो किनारों के मध्य भाग मे एक छोटे से टापू पर हिन्दुओ का रमणीक तीर्थस्थान था जिसे "सधाबेला कहा जाता था। अब वह पाकिस्तान मे किसी पीर फकीर के नाम से जोड दिया होगा। सिध और पजाब, बलोचिस्तान तथा सीमा प्रान्त ने भी पाकिस्तान की माग नही की थी। सिध में अल्लाहबख्श की मिनिस्ट्री प्रो काग्रेस थी। सीमा प्रान्त तो कट्टर कागेसी प्रान्त था जिसके मुख्यमन्त्री डाक्टर खान थे, वहा के उच्च नेता अब्दुलगफ्फार खान सरहदी गांधी के नाम से प्रसिद्ध हैं। पजाब मे भीम सेन, खिजर हयात खान की काग्रेस सयुक्त मिनिस्ट्री थी। बलोच तो अंग्रेज के कट्टर शत्रु थे।

बहावलपुर, कलात तथा दीगररियासतें भारत मे शामिल होनी थी। तब पाकिस्तान की गुजायश कहाँ थी? वहाँ तो मुसलिम लीग मैदान में थी ही नही। हिन्दु मुसलमान घुलमिल कर रहते थे। एक दूसरे की रक्षा करते थे। सुख-दुख व्याह शादी मे उनका चोली दामन का साथ था।

मेरे गांव के आर्यसमाज का सभासद् हकीम अब्दुलहक्क सर्वथा निरामिष भोजी, कट्टर आय था। आर्यसमाज और मसजिद को दीवारे साझी थी।

मैंने पजाब के अपने अधिष्ठातृकाल मे सभा की ओर से मौलवी शेरमुहम्मद को उपदेशक रूप से नियत कर रखा था। वह आर्यसमाज के उत्सवो मे वैदिकधर्म, आयसमाज के गुणगान मे दहाड़ते थे। मैंने उनका एक गीत ऋषिवर और वेद की प्रशसा का छपवा दिया था जो सहस्रों की संख्या में हिन्दु मुसलमानो मे बांटा गया था जो कबर परस्ती, मूर्तिपूजा के विरुद्ध तथा ऋषि दयानद और आयसमाज की प्रशंसा मे था।

महर्षि पाणिनि की क्रीडास्थली तक पाकिस्तान की राजधानी फैली हुई है। जहां अष्टाध्यायी और व्याकरण के मूलभूत १४ सूत्रो का आविष्कार हुआ था। आज पाणिनि ऋषि की जाति के लोग पठान (पुष्टान्न) कहलाते हैं। आगलकुटिल, कुचक्र के कारण ही हिन्दु मुसलमानों के प्रेम प्यार और परस्पर के भाईचारा में अन्तर आता जा रहा है। इसी के परिणामस्वरूप पाकिस्तान भारत की अदला बदली में लाखों मौत के घाट उतरे, सहस्रो अबलाओ पर आघात पहुचा। युद्धो की भूमिका बन्धो और विनाशलीलाओ का चीत्कार हुआ। जनता स्थानान्तरित हुई और हमारे वीर श्री देवीदास आर्य सक्खर से कानपुर के वासी बने। यही सक्खर कभी राजा दाहर के राजधानी के निकट का व्यापारिक केन्द्र था जो रोहडी और हैद्राबाद सिंध के मध्य मे है। यहीं पर सक्खर स्टेशन के पास सिंध नदी पर पुल बधा है जो भारत को बलोचिस्तान के साथ जोड़ता था और अब पाकिस्तान का शाह रग है तथा सिबी स्टेशन से ईरान जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह सिबी कभी राजा शिवि की राजधानी होने से सिबी अपभ्रंश हो गया।

मेरे वीर देवीदास आर्य इसी भारत की पश्चिमी आर्यभूमि से स्थानान्तरित किये जाकर कानपुर आकर बस गये। कानपुर आर्यों का गढ है। इस गढ को दृढतम बनाने मे दिवगत पू० प० विद्याधर जी शास्त्री, स्वर्गीय प० प्रकाशवीर शास्त्री, वर्तमान मे प० लक्ष्मणकुमार जी शास्त्री प० विजयपालसिंह शास्त्री तथा देवीदास जी आर्य और अनेक आय शिरोमणियो का हाथ है। यही कानपुर महर्षि दयानन्द सरस्वती के चरण पडने के साथ-ही अगडाई लेने लगा और आज आर्यों की स्थली बनता सा दिखाई देता है। आर्यों को मुसलमानो से कोई वैर नही, न था, न है, न होगा। यह भी आर्य ऋषियो की सन्तान हैं। हमारे वीर देवीदास आर्य मुसलिम महिलाओ के उद्धार मे भी पीछे नही रहे।

यदि किसी मुसलिम कन्या के साथ बलात्कार से बचाने की कोई घटना आई तो हमारे वीर ने तब भी अपनी जान जोखिम मे डालकर उसके उद्धार करने से मुख नही मोडा।

समाज कटको का शिकार कोई मुसलिम देवी हो या हिन्दु देवी हो, श्री आर्य पूर्ण सेवा सहायता में तत्पर दृष्टिगत होते हैं। यही उनका सच्चा वीरत्व है और यही आर्यसमाज की शान है। तभी तो श्री देवीदास आर्य महिला उद्धारक की पदवी से विभूषित हैं।

हमारे वीर मे सैकडो गुण हैं। मैंने केवल एक ही की ओर इंगित किया है। उनके अद्भुत कार्यों का सक्षिप्त ब्योरा निम्न प्रकार है—

(१) जन्म ६ जून १९८६ सिन्धु प्रान्त के सिन्धुनद पर स्थित सक्खर नगर।

(२) उन्होंने अपने प्राणो को सकट में डालकर निजी साधन व अपने खर्चे पर अढाई सहस्र से अधिक अपहृत कन्याओ व महिलाओ का उद्धार किया।

(३) उनमें पाच सौ से अधिक कन्याओं को वेश्याओ के चगुल से छुडाकर समाज में सम्मान का जीवन प्रदान किया।

(४) पाच सौ अनाथ व पतन का शिकार बनी कन्याओ के विवाह स्वय पिता बनकर कन्या दान कराये।

अत. वह भारत मे अपने ढग के एकमात्र महिलाउद्धारक सिद्ध हुए हैं जिन्होंने बडे से बडे सघटनो से अधिक, व्यक्तिगत साधनों द्वारा निष्ठा, पवित्रता, सत्यता के साथ निष्कलक होकर महान् कार्यों को सम्पन्न किया।

(५) श्री आर्य ने पन्द्रह सौ वृद्ध, स्त्री, पुरुषो, विधवाओ के जीवन के निर्वाह हेतु सरकारी पेंशन की व्यवस्था कराई।

(६) पच्चीस सौ से अधिक विधर्मियो की स्वधर्मान्तरित करके उनके हितसाधक बने।

(७) पचास से अधिक सार्वजनिक भ्रष्टाचारो का भांडाफोड किया।

(८) अनेक वर्षों तक नगरपालिका के सदस्य रहे।

(९) श्री आर्य उत्तर प्रदेश सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उत्तर प्रदेशस्थ सिन्धी सभा के सरक्षक, केन्द्रीय आर्यसभा, आर्य कन्या इण्टर कालिज गोविन्द नगर के सस्थापक व प्रबन्धक है। तीन सहस्र कन्यायें शिक्षा प्राप्ति में सलग्न हैं।

(१०) आप सिद्धान्त शास्त्री व विद्यावाचस्पति हैं।

(११) श्री आर्य अब तक विभिन्न सामाजिक आन्दोलनो में पद्रह बार जेलयात्रा कर चुके हैं। वह आपात स्थिति में भी १९ मास बदी रहे।

(१२) माननीय महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने शील्ड देकर उन्हें मान दिया है।

(१३) आप पत्रकार व ओजस्वी वक्ता हैं। उनका पता—आर्य निवास गोविन्द नगर कानपुर है। फोन न० २१७९०५ है।

यह आकडे, उनके प्रकाशित हो चुके हैं।

—शान्ति प्रकाश आर्योपदेशक,
४५६ बरकत नगर, जयपुर।
(राजस्थान)

पितरों के श्राद्ध भारत से बाहर भी

—कुमार योगी

मृत पूर्वजों की आत्मा के प्रति सम्मान-प्रदर्शन की प्रथा प्राय सभी जातियो मे किसी न किसी रूप में पाई जाती है। विशेषकर समस्त पूर्वी देशों में पूर्व-पुरुषो की स्मृति में वर्ष मे किसी निर्दिष्ट दिन, पूजा-नुष्ठान आदि आवश्यक कर्तव्य समझा जाता है इस सम्बन्ध में चीन और जापान का स्थान भारत के बाद ही है।

चीन और जापान के लोगो को यह विश्वास है कि परलोकगत आत्मा वर्ष में एक दिन फिर मर्त्यलोक में आती है और अपने पूर्व वासगृह में पदार्पण करती है। इस विश्वास के कारण चीन और जापान निवासियों ने वर्ष में एक दिन निश्चित कर लिया है और इस दिन वे आशा करते हैं कि उनके पूर्व पुरुष अपने घर में लौट आयेंगे।

अत एव मृतकों के आगमन के इस कल्पित दिन चीन और जापान वासी विपुल समारोह के साथ एक उत्सव का अनुष्ठान करते हैं। घर के एक कमरे में मृत व्यक्ति के लिए नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ थालियो में सज्जित करके रख दिये जाते हैं। खाद्य पदार्थों में फल-फूलादि से लेकर विविध प्रकार के मिष्ठान्न एव व्यजन होते हैं। भोजन के साथ साथ मृतक के विश्राम के लिए एक सुखप्रद शैय्या की भी व्यवस्था की जाती है। आचमन और हाथ-पाव धोने के लिए नाना प्रकार के पत्रे भी रख दिये जाते हैं। साराश यह है कि परलोकगत आत्मा को अपने पूर्व वासगृह मे लौटने पर किसी प्रकार की असुविधा मालूम नही हो और अपने जीवित वशजों की ओर से श्रद्धा-प्रदर्शन में उसे किसी प्रकार की त्रुटि नही दीख पड़े—इस पर ध्यान रखकर सब प्रकार की व्यवस्था की जाती है।

वासगृह की साज-सज्जा तो होती ही है, इसके सिवा समाधि-स्थान की साज-सज्जा और भी आडम्बर के साथ की जाती है। चीन और जापान वासियो का विश्वास है कि मृतक की आत्मा रात के सिवा और किसी समय नही आती। इसलिए सध्या के बाद ही वे दल के दल अपने पूर्व -पुरुषो के समाधि-स्थल के लिए प्रस्थान करते हैं। वहा भी श्रद्धा-भाव निवेदन करने के लिए थालो मे सजाकर खाद्यपदार्थ ले जाते हैं। इस समय का एक विशेष दृश्य होता है, इनके हाथों में कागज के रग-बिरगे झाड-फानूस, लालटेन आदि किसी के हाथ में एक, किसी के हाथ में दो। एक साथ ही बहुत से मनुष्य चलते हैं, जिससे एक विराट जुलूस सा मालूम पडता है।

समाधि स्थल पर पहुचकर वहा खाद्य पदार्थ, फूल-माला, कागज के रगीन फानूस, लालटेन आदि सजाकर रख देते हैं। फिर अभिवादन, पूजार्चन आदि समाप्त करके घर लौटते हैं और सारी रात खान-पान के उत्सव में बिता देते हैं।

मृत आत्मा किसी भी समय घर में आ सकती है–इस ख्याल से घर के सब दरवाजे और खिडकियाँ खोलकर रखते हैं। स्वय भी रात-भर जागकर मृत आत्मा के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं। इस उत्सव के समय कागज की बनी रगीन लालटेनों का इतना अधिक व्यवहार किया जाता है कि उस देश मे उस उत्सव का नाम ही "दीपोत्सव" पड गया।

पूर्वीय देशो के समान पश्चिम के बहुत से देशों में भी मृत व्यक्ति की आत्मा के पुन लौटने का विश्वास बद्धमूल पाया जाता है। इटली और जर्मनी में भी प्रतिवर्ष एक दिन इस उद्देश्य से निर्दिष्ट रहता है। इन देशो में भी मृत आत्मा के उद्देश्य से खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ अर्पित किये जाते हैं। घर के सब दरवाजे और खिडकियां खोलकर रखी जाती हैं। अधिकाश लोगो का यह विश्वास होता है कि मृत आत्मा रात्रि के अन्तिम पहर में आती है, एक पहर तक घर में रहती है और प्रात काल पूर्वाकाश में प्रथम किरण-रेखा प्रकाशित होने के पूर्व ही लौट जाती है। वर्ष की जिस ऋतु में मृतकों की आत्माओं के आगमन का दिन निर्दिष्ट किया गया है, उस समय प्राय आधी-पानी का जोर रहता है। इसीलिए सर्वसाधारण में यह धारणा फैल गयी है कि मृत की आत्मा आधी पानी को वाहन बनाकर सहज ही इस पृथ्वी पर आ पहुँचती है। इस दिन आकाश में बादल देखकर वे प्रसन्न हो जाते हैं और आत्मा के कमरे में आगमन का चिन्ह ढूढने में तत्पर हो जाते हैं। रात्रि के शेष में जब मुर्गे की बांग सुनी जाती है, तो वे सज्जित कमरे की ओर सशकित दृष्टि से देखते हैं। वायुवेग से खिडकी का पर्दा उडने या बिछौने की चादर उलटाने पर वे उल्लासित हो उठते हैं और यह विश्वास करते हैं कि अवश्य ही मृत आत्मा आ गयी है। इसके सिवा वे यह भी विश्वास करते हैं कि आत्मा वहां आकर अपने अपने समाधि-स्थल में प्रवेश करती है और उसके चतुर्दिक् घूमती है। इसीलिए वे इस दिन अपने घरो को तो दीपमालिका से सुसज्जित करते ही हैं, किन्तु समाधि-स्थानो में किसी प्रकार की रोशनी नहीं करते। अधकार में चुपचाप वे दल बाधकर गिरजा और समाधि स्थल में आवागमन करते हैं।

यह उत्सव-दिन यूरोप में "आगमन-दिवस" के नाम से प्रचलित है। इस दिन यूरोपवासी अपने को वेशभूषा से सुसज्जित करते और प्र समारोह के साथ आहार-विहार करते हैं। वेल्स में इस उत्सव के दिन प्रत्येक परिवार में एक अद्भुत खेल खेला जाता है। बालक-बालिकाओं के स्नान के एक बडे टब को पानी से भरकर "ड्राइग-रूम" में लाया जाता है। जल में कई सेब फेंक दिये जाते हैं। बालक-बालिका उस टब को घेर कर एक दूसरे के साथ पकडे हुए बैठ जाते हैं। तब इस बात की बाजी लगती है कि कौन दांत से पकडकर एक सेब को जल से निकालता है। सबसे पहले इस कार्य को करने में जो सफल होता है, उसके लिए वह वर्ष सौभाग्य-सूचक समझा जाता है।

अमेरिका मे इस दिन वासगृह को सुसज्जित नहीं किया जाता और न मृत के लिए खाद्य पदार्थ आदि रखे जाते हैं। वहाँ के लोग सारा दिन खान-पान में बिता देते हैं। सध्या-काल में तरबूज के आकार का नकाब पहनकर या हाथ में लेकर रास्ते में घूमते-फिरते हैं। फिर लौटकर परिवार के सब छोटे बडे स्त्री-पुरुष एकत्र होकर मृत व्यक्ति की क्षेम-शान्ति के उद्देश्य से ईश-प्रार्थना करते हैं। (युगवार्ता से साभार)

नोट — जैसे भारत में मृतक श्राद्ध की अन्धपरम्परा प्रचलित है उसी प्रकार यह अज्ञान का भूत विदेशों में भी किसी न किसी रूप में पाया जाता है। वेदज्ञान के अभाव में नाना प्रकार की भ्रान्तियों से ससार ग्रसित है। वेद प्रचार के द्वारा ही इनका दूर किया जाना सम्भव है। —सम्पादक

सुरक्षा पट्टी बनायी जाय

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि पाकिस्तान हमारे देश में अस्थिरता का वातावरण पैदाकर, उसके विकास को अवरुद्ध कर देना चाहता है। कुछ सिर-फिरे देशद्रोही आतकवादियों को प्रशिक्षण देकर पाकिस्तान भारत के निर्दोष हिन्दुओं का खून बहवा रहा है ऐसा करके पाकिस्तान, सिखों के लिए अलग राष्ट्र का रास्ता साफ कर 'बगला देश' निर्माण का बदला लेना चाहता है। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण एव हास्यास्पद है कि जिन सिखों का निर्माण हमारे धर्मगुरुओं ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किया था, उन्हीं में से कुछ लोग महान् गुरुओं के उपदेशों व आदेशों को भूलकर निर्दोष हिन्दुओं की ही हत्या कर रहे हैं। पाकिस्तान की भारत-विरोधी हरकतों को रोकने के लिए भारत पाक सीमा पर पट्टी का निर्माण करना आज एक राष्ट्रीय आवश्यकता है। सीमा सुरक्षा पट्टी बनाने से ही पाकिस्तानी गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है। बरनाला का उतना ही समर्थन करना चाहिए, जितना राष्ट्रीय हित में हो। केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि वह पजाब समझौते को ताक पर रखकर सर्वप्रथम शान्ति एव सुरक्षा की व्यवस्था करे।

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर
(उ० प्र०)

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

पंजाब समस्या पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का संयुक्त वक्तव्य

कुछ समय से सरकारी क्षेत्र में तथा कुछ बुद्धिजीवियों मे यह धारणा जड पकडती जारही है कि हमारे देश में आतकवाद एक चिरस्थाई व्याधि के रूप मे हमारे बीच बस चुकी है और हमें ऐसा लगता है कि सदा इसकी काली छाया में ही जीवित रहना होगा। यह भावना दुर्भाग्यपूर्ण है और हमारी दृष्टि में आत्मघाती भी है।

वास्तव में जो व्याधि आज हमें परेशान किये हुए है वह आतकवाद है। परोक्ष रूप से यह पाकिस्तान का हमारे ऊपर आक्रमण है। कुछ विचारहीन सिख नौजवानो का हमारे विरुद्ध उपयोग किया जारहा है। सार्वदेशिक सभा यह नही मानती कि सरकार को इसकी सूचना नहीं है। लेकिन हमें चिता इस बात की है, जानते हुए भी सरकार क्यों ऐसा कदम नहीं उठाती जो हमारे पडोसी के आक्रमण से हमारे देश की रक्षा कर सके। यदि सरकार समझती है कि देश की आन्तरिक परिस्थितिया ऐसा कोई कदम उठाने में बाधक हैं तो हम समझते हैं कि आन्तरिक सुरक्षा के लिए जो प्रयत्न सरकार कर रही है, वह उस खतरे के अनुरूप नहीं है, जो सीमा के उस पार से हमारे सामने खडा है। हमारी आन्तरिक सुरक्षा उस समय तक दृढ नही हो सकती, जब तक पजाब मे उस सरकार का शासन है जो खुलेआम देशद्रोह को प्रोत्साहन दे रही है।

स्वाधीनता से पहले पुरानी हैदराबाद रियासत का कासिम रिजवी जो अपने आपको रजाकारों की सेना का "फील्डमार्शल" कहा करता था, नारा लगाओ दिल्ली में लाल किले पर चलो, जल्दी ही हम वहां आसफिया झण्डा फहरायेंगे"

आज सिख आतंकवादी इस प्रकार का नारा लगा रहे हैं और हिन्दुओं को हर तरह से सताने का प्रयत्न कर रहे हैं। उस समय भारत सरकार ने रजाकारों का दमन करके उनका नामोनिशान ही मिटा दिया था और वहा का आसफिया राज्य आज भारत का अभिन्न अग बन चुका है। पजाब की स्थिति भी उसी प्रकार की कार्यवाही की मांग कर रही है। इसमें देर करने से केवल हमारे देश के शत्रुओ को ही लाभ होगा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित एक समिति पजाब तथा देश के अन्य भागो की स्थिति को देखने के लिए वहा का दौरा कर रही है। सभा "पजाब बचाओ दिवस" का भी देशव्यापी स्तर पर आयोजन करेगी, जिससे जनता में विघटनवादी तत्त्वो से टक्कर लेने की भावना पैदा हो सके।

सार्वदेशिक सभा सरकार को इन विघटनवादी तत्त्वो से लडने मे हर सम्भव सहायता प्रदान करेगी, जिससे देश की एकता और अखडता की सुरक्षा की जा सके। सविधान में जो भी अनुच्छेद व धारायें देश को भाषा, सस्कृत और धर्म के आधार पर विभाजित करती हो या किसी प्रान्त विशेष को विशिष्ट दर्जा प्रदान करती हो उन सबको रद्द कर देना चाहिये। श्री राजीव गाधी धर्मनिरपेक्षता के भारतीय स्वरूप की चर्चा करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं होना चाहिये कि बहुसख्यक समुदाय की रोटी छीनकर अल्पसंख्यको को बाट दी जाये।

सार्वदेशिक सभा चाहती है कि भारत सरकार अब बहुसख्यक समुदाय की भावनाओं को भी समझने का प्रयत्न करे।

हिन्दी वाले हिन्दी से दूर क्यों ?

नित्य प्रति अनेक कार्यक्रमों में हिन्दीवालों द्वारा ही अग्रेजी का पोषण करना क्या सकेत दे रहे हैं? कही ऐसा तो नहीं कि उनमें हीनता की भावना घर करती जारही हो। यदि ऐसा है तो विचारणीय है।

ठीक है कि हिन्दी ने आज की स्थिति तक आने के लिए लम्बी यात्रा तय की है और अभी भी न जाने कितनी यात्रा और करनी पडेगी। यात्रा का अन्त दूर तक दिखाई नहीं देता। अनन्त यात्रा में थक जाना, निराश हो जाना या मन में हीनता की भावना आ जाना अस्वाभाविक नहीं।

मझधार मे ही थक जाने से यात्रा पूर्ण कैसे होगी? आशा-निराशा, उत्थान पतन, आरोह-अवरोह तो जीवन के अभिन्न अग हैं। इनसे घबराना क्या ?

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश जब किसी के हाथ में ही नहीं है तो उससे निराशा या हीनता क्यों ?

हमारे हाथ में है प्रयास करना, दृढता से करते जाइए, करते जाइए। दृढता के आगे ससार झुकता है।

हमें दृढना से, किन्तु नम्रता से अपनी बात कहते रहना है। आखिर पतझड के बाद बसन्त आता ही है।

—श्री रघुनन्दनप्रसाद शर्मा
महामत्री, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स वाई ६८,
सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३

आर्यसमाज नया बाजार भिवानी का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री देशबन्धु गुप्त शास्त्री, उपप्रधान—जगदीश, मन्त्री—नरेन्द्रकुमार प्रभाकर, कोषाध्यक्ष—गौरधराय पसारी, मन्त्री स्त्री समाज—श्रीमती सुशीला।

आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा कुरुक्षेत्र का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री जीवनदास बधवा, उपप्रधान—धर्मदेव, मन्त्री—नरेन्द्रभूषण, सहमन्त्री—निहालचन्द, कोषाध्यक्ष—गीतासागर।

आर्यसमाज राजलू गढ़ी (सोनीपत) का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री रामस्वरूप आर्य, मन्त्री-निगाहियासिह, कोषाध्यक्ष—मायाराम आर्य।

सम्पादकीय

क्या आतंकवाद समाप्ति की ओर है ?

प्रधानमन्त्री, पजाब के मुख्यमन्त्री और पजाब पुलिस के अधीक्षक श्री रिबेरो के आशावादी वक्तव्यो के बावजूद जनता के हृदय में यह विश्वास नही जम रहा कि पजाब मे आतकवाद समाप्ति की ओर है। यह ठीक है कि पिछले महीनो मे कुछ आतकवादी मारे गये हैं और कुछ पकडे गये है। परन्तु नये नवयुवको का प्रशिक्षण जारी है, और मारे गये तथा पकडे गये आतकवादियो की क्षतिपूर्ति उन नवयुवको द्वारा काफी हद तक होती रहती है। आज सूचना आई है कि विदेशो में बसे खालिस्तान और आतकवाद के समर्थक सिख तथा दूसरे लोग करोड़ो रुपया और नये से नये कारगर हथियार आतकवादियो के पास भेज रहे हैं। इगलेण्ड के साथ भारतमूल के अपराधियो को सौंपने की सधि तथा उससे सम्बन्धित कानून पर भारत का समझौता खटाई मे पड गया है। अमरीका, इगलेण्ड, कनाडा, पाकिस्तान आदि देश एक तरफ दोस्ती का हाथ बढाते है और दूसरी तरफ नीचे नाचे खालिस्तानियो की मदद भी करते रहते हैं। भारत को अस्थिर करने मे कुछ देश अपने अपने ढग से लगे हुए हैं। पाकिस्तान तो एक प्रकार से खुलकर ही लगा हुआ है।

२ अक्तूबर को गाधी जयन्ती के अवसर पर प्रधानमन्त्री की हत्या का जो षड्यन्त्र किया गया, उसमे विदेशी शक्ति का हाथ था, यह स्वय प्रधानमन्त्री ने विदेशी पत्रकारो को दिये गये साक्षात्कार मे कहा है। उन्होने यह भी कहा है कि उनके पास इसके ठोस प्रमाण मौजूद हैं।

विदेशी शक्तिया तो भारत को कमजोर करने और तोडने मे लगी हुई हैं हो, भारत में भी साम्प्रदायिक शक्तिया उनसे पीछे नही हैं। हिंसा मे विश्वास रखने वाले अलगाववादी सगठन सिखो में तो अनेक हैं जो भारत में और भारत से बाहर पूरी तरह सक्रिय हैं, कश्मीरियो का भी एक आतकवादी सगठन इगलेण्ड मे सरगरम है, वह भारतीय दूतावास के अधिकारी की हत्या भी कर चुका है। अब शिवसेना आदि सगठनो का बहाना लेकर दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम ने 'आदम सेना' के नाम से एक साम्प्रदायिक अर्धसैनिक सगठन बना लिया है। राष्ट्रविरोधी गतिविधियो के कारण पिछले दिनो २० के करीब ईसाई मिशनरियो को भी देश से निकालना पडा है और इसी प्रकार अरब देशों के भी कुछ लोगो को देश से निकालना पडा है। स्पष्ट है कि साम्प्रदायिक शक्तिया भी विदेशी शक्तियो के षड्यन्त्र में उनका साथ दे रही हैं। छुटपुट साम्प्रदायिक दगो की घटनाए तो स्थानीय कारणो से कही कही होती रहती हैं। परन्तु आज साम्प्रदायिकता राष्ट्र की सुरक्षा और एकता के लिये बडी चुनौती बन चुकी है।

सरकारी कर्मचारियो में थोडी बहुत साम्प्रदायिक भावना तो सदा पनपती रही है। परन्तु आज तो सेना, अर्धसैनिक बल और पुलिस तक भी उससे अछूते नही रह गये हैं। पिछले सप्ताह जालन्धर पजाब आर्मड पुलिस के मुख्यालय में आतकवादियों द्वारा घुसकर श्री रिबेरो पर घातक हमला, इस बात का ज्वलत प्रमाण है कि पजाब पुलिस में आतकवादियो के समर्थक मौजूद हैं। ऐसे पुलिस कर्मचारी पुलिस की नौकरी से निकाले जाने पर उग्रवादियो के अगुवा बनकर सामने आ गये हैं। रिबेरो की हत्या के लिये किये गये षड्यन्त्र और आक्रमण में पुलिस से निकाले हुए लोग शामिल थे, यह बात रोज समाचार पत्रो मे पढने को मिल रहा है। दुःख की बात तो यह है कि ऐसे कर्मचारियो, तस्करो समाजविरोधी तत्त्वो और आतकवादियो की पीठ पर पजाब मन्त्रीमण्डल के मन्त्री भी हैं। ऐसे तत्त्वो को छोडने से इन्कार करने पर मन्त्री पुलिस अधिकारियो पर अनेक लोगो के सामने हमला करके हथियार छीनकर मारते और वरदी फाड देते हैं। श्री बरनाला उनके रहमो-कर्म पर हैं, और श्री रिबेरो और उनके जानी दुश्मन उन मन्त्रियों की एक साथ पीठ थपथपाते रहते हैं। बरनाला जी की स्थिति अजीब है, पाकिस्तान से लगी सीमाओ को सील करने की बात भी कहते हैं और सुरक्षा पट्टी का विरोध भी। एक तरफ पथ के अलमबरदारों को खुश रखना चाहते हैं और दूसरी तरफ भारत सरकार को। सत्ता मोह से ग्रसित, 'तलवार की धार पे धावने' वाले व्यक्ति से और आशा भी क्या की जा सकती है।

अलगाववाद और आतकवाद की समस्या ने जो रूप धारण कर लिया है और जिस प्रकार की शह उनको बाहर से मिल रही है, उससे निबटने के लिये केवल रिबेरो और उनकी पुलिस और सुरक्षा बल काफी नही हैं वे भी पूरे उत्साह से अपने काम में लगे रहें और उनको सब प्रकार का प्रोत्साहन भी मिले। परन्तु अब यह अनिवार्य हो गया है कि —(१) पाकिस्तान से लगती सीमा को सील करके सुरक्षा पट्टी बना कर उसे सेना के हवाले किया जाये। (२) बरनाला मन्त्रीमण्डल को तोडकर राष्ट्रपति शासन तुरन्त लागू किया जाये। (३) कारगर विदेश नीति के द्वारा आतकवादियो और अलगाववादियो का सम्बन्ध विदेशी शक्तियो से तोड़ा जाये। (४) अतिविशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा का पूरा पूरा और ठोस तथा सुस्पष्ट प्रबन्ध हो।

प्रो० शेरसिंह

आर्यसमाज सिरसा के चुनाव की सूचना

आर्यसमाज सिरसा का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) १९ अक्तूबर १९८६ रविवार को प्रात. आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में होगा। अतः आर्यसमाज के सभासदों से निवेदन है कि समय पर पधारें।

मन्त्री आर्यसमाज

हरयाणा के आर्य समाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन २६ अक्तूबर १९८६ रविवार प्रातः दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न होगा।

सभा कार्यालय की ओर से उन पूर्वस्वीकृत प्रतिनिधियों की सेवा में एजेण्डा तथा बजट डाकद्वारा भेज दिया है जिन आर्यसमाजों की ओर से वेद प्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को प्राप्त हो चुका है। जिन आर्यसमाजों की ओर से अभी तक प्राप्तव्यधन राशि नहीं भेजी गई है उनके प्रतिनिधियों को भी एजेण्डा इस आशा पर भेजा जा रहा है कि उनके समाजों से २६ अक्तूबर से पूर्व प्राप्तव्य राशि प्राप्त हो जाएगी।

२६ अक्तूबर को उन ही प्रतिनिधियों को प्रवेश पत्र दिये जायेंगे, जिनके आर्यसमाजों से प्राप्तव्यधन राशि अधिवेशन के समय से पूर्व प्राप्त हो जायेगी।

अत सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने किसी एक प्रतिनिधि को एक दिन पूर्व २५ अक्तूबर को प्राप्तव्यधन राशि के साथ सभा कार्यालय में भेज देवें, ताकि उनका हिसाब पूरा करके उनके प्रवेश पत्र उन्हें अधिवेशन से पूर्व दे दिये जावें। इस प्रकार सभा के प्रतिनिधियों तथा सभा कार्यालय को सुविधा रहेगी। आशा है आर्यसमाजें हरयाणा में आर्यसमाज का सघटन सुदृढ करने के लिए सभा के अधिवेशन में समय पर पहुँचकर सहयोग देंगे।

सत्यवीर शास्त्री,
सभा मन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

इस्तेमाल किया जा सकता है। परन्तु अगर बीमार होकर कोई उसका प्रयोग करना चाहे तो वह सम्भव नहीं होता, और फिर अगर इससे कुछ कथित ताकत आती भी है तो साथ ही नशा भी है। शरीर की शक्ति के लिये अल्कोहल का प्रयोग करना न तो बुद्धिमानी है और न ही किसी पौष्टिक खाद्य पदार्थ का स्थान ले सकता है। अल्कोहल में आवश्यक कैलरीज तो कम होती ही हैं, पर बिटामिन, प्रोटीन, लोहा, आदि अन्न से प्राप्त होने वाले तत्त्व इनमे नही होते। शराब आदि कभी भी पौष्टिक पदार्थों का स्थान नही ले सकती। वह बस घोडे में चाबुक की मार की तरह होती है। चाबुक कोई खाद्य पदार्थ तो होता नहीं।

मानव शरीर की समृद्धि के लिये आवश्यक समझे गये खाद्य-पदार्थों में अल्कोहल की कही गिनती नही की गई। इसका तात्पर्य यही है कि अल्कोहल आवश्यक पुष्ट खाद्यपदार्थ कदापि नही है।

दवाई के रूप में अल्कोहल का प्रयोग

अल्कोहल एक जबर्दस्त और तीव्र वेग से प्रभाव डालने वाली घोलक वस्तु है। पर वह बीमारी के लिये गुणकारी औषधि हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। कई लोगो की यह गलत धारणा है कि शराब से शरीर में जोश बढता है और बीमारियो का मुकाबला करने की शक्ति पैदा होती है। शराब को शक्तिदाता मानने की लोगो की इस गलत धारणा के पीछे न तो कोई ठोस प्रमाण है और न ही इनमें कुछ सच्चाई ही है। अल्कोहल का दवाई के रूप में प्रयोग निम्नलिखित दशाओ में होता है :—

१ - एंटीसेप्टिक (कीटनाशक) के रूप मे वह बाह्य रूप से प्रयोग मे लायी जा सकती है।

२—अलग-अलग दवाइयो के मिश्रण के लिये अल्कोहल का अच्छा-खासा इस्तेमाल होता है। इसके सम्मिश्रण से अनेको दवायें तैयार की जाती हैं, फिर भी ऐसी समस्त औषधियो में अल्कोहल का अंश बहुत ही अल्प मात्रा में होता है। ऐसी औषधियो के निरन्तर सेवन से उसमें सम्मिलित दवायें तो अपना प्रभाव करना छोड ही बैठती हैं, इसके साथ ही आदमी एल्कोहलिक (मद्यपी) अलग से बन जाता है। अल्कोहल मिश्रित दवाये भी अन्त में हानिकारक ही सिद्ध होती हैं।

यह एक प्रमाणित और मान्यता प्राप्त तथ्य है कि अल्कोहल से प्राप्त होने वाली शक्ति या स्फूर्ति ज्यादा टिकी नही रहती और प्रयोग में आने वाले पौष्टिक खाद्यान्नो का स्थान न तो अल्कोहल कभी ले सकता है और न ही इस नशीली वस्तु का उपयोग उन शरीरवर्द्धक खाद्य पदार्थों के बराबर होता ही है। अलबत्ता शरीर के बिभिन्न भागों में यह अपना घातक प्रभाव करता रहता है और मनुष्य को अपना गुलाम बनाकर अधोगति के ऐसे मार्ग पर डाल देता है जिससे छुटकारा सम्भव नहीं हो पाता। व्यक्ति एवं समाज को अल्कोहल के किसी भी रूप में पेय सेवन से अपने आपको बचाना होगा। अन्यथा शीघ्र अथवा थोडा समय लेकर उसका सर्वनाश होना सुनिश्चित है।

नशा किये इन्सान के लक्षण व क्रमिक दशायें

१ नशा करने वाला व्यक्ति नशा करने के बाद माचिस जलाने में दिक्कत अथवा विशेष परेशानी महसूस करता है।

२ नशा करने वाला व्यक्ति अपने को सबसे उच्च व्यक्ति मानता है।

३. नशा करने वाला चलने-फिरने और कपडे उतारने में दूसरे व्यक्ति की सहायता चाहता है।

४ गुस्से में भरकर चिल्लाना, रोना, और बार बार पुकार कर अपना समय गुजारता है।

५ अपने को सीधा खडा होने में कठिनाई अनुभव करता है।

६ नशे वाला चलते समय कम्पन और खतरा महसूस करता है।

७ के आदि के कारण शराबी निढाल हो जाता है।

८ नशा करने वाला जड अवस्था में पडता जाता है और कभी कै करता है और कभी निद्रा में खो जाता है।

९ अन्तिम अवस्था में नशा करनेवाला चेतना शून्त हो जाता है। और उसे स्पर्श ज्ञान भी नहीं रहता तथा लकवे में मौत हो जाने का खतरा हो जाता है।

१० नशा करने वाला प्रात जागने पर शरीर में दर्द, सरदर्द, बदन टूटना और चक्कर आदि के रोग में अपने को ग्रस्त पाता है।

—अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के सौजन्य से।

(पृष्ठ १ का शेष)

के स्मारक रूप में अवशेष आज तक सायकाल के समय ग्राम सोमोल्लंघन यात्रा रूप से भारत के महाराष्ट्र आदि अनेक प्रान्तो में प्रचलित है।

इस अवसर पर प्रजाए अपने प्रभुओ की सेवा मे रोकडा रुपये के रूप मे उपायन (भेट) प्रस्तुत करती थी और वे भी उनको बहुमूल्य उपहार और पारितोषिको से पुरस्कृत करते थे।

जनसाधारण में इस समय परस्पर एक-दूसरे से गृह पर जाकर मिलने-भेंटने की प्रथा का भी प्रचार था। इसमे जहा वर्ष भर के मिथोमनोमालिन्य वा मतमुटाव को मेटना अभिप्रेत था वहा दीर्घयात्रा पर जाने मे पूर्व वयस्को, सम्बन्धियो और सखियो का अन्तिम साक्षात्कार भी उद्दिष्ट था।

प्राचीन काल मे विजयादशमी का शुद्ध स्वरूप इतना ही प्रतीत होता है। पीछे से इस पर्व के आनन्दावसर पर श्रीरामचन्द्र के अभ्या-भिनय वा रम्य रामलीला के प्रदर्शन का प्रचार चल पडा और जिसने विकृत रूप धारण किया।

दीर्घकाल के विजयादशमी के पर्व पर रामलीला के रचे जाने के कारण जनता मे यह मिथ्या धारणा बद्धमूल हो गई है कि विजयादशमी के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम सूर्यवंशावतंस श्रीरामचन्द्र ने राक्षसराज रावण का वध करके लका पर विजय प्राप्त की थी। वाल्मीकि रामायण के अवलोकन से इस चिरकालीन कल्पना का नितात निराकरण होता है। उपर्युक्त ग्रन्थ के अनुसार श्री पण्डित हरिमगल मिश्र एम० ए० कृत 'प्राचीन भारत' के परिशिष्ट में जो रामचरित की घटनाओ की तिथियो की दो जन्त्रिया दी गई हैं उनसे रावणवध की तिथिया क्रमशः वैशाख कृष्ण चतुर्दशी और उक्त ग्रथ में ही उद्धृत प० महादेवप्रसाद त्रिपाठी कृत "भक्ति विलास" के आधार पर फाल्गुन सुदि एकादशी गुरुवार ज्ञात होती है। श्री पडित हरिशकर जी दीक्षित अपनी त्योहार पद्धति में इस विषय में इस प्रकार लिखते हैं कि "रामायण का कथन इस विश्वास का विरोध करता है। वाल्मीकि रामायण में यह स्पष्ट लिखा है कि आज के दिन महाराजा रामचन्द्र ने पम्पापुर से लंका की ओर प्रस्थान किया और चैत्र की अमावस्या को रावण का वध कहा गया है। इससे यह स्पष्ट विदित होता है कि श्री महाराजा रामचन्द्र की विजय तिथि चैत्र कृष्णा अमावस है। आश्विन शुक्ला दशमी को श्री महाराज रामचन्द्र का विजय दिन मनाना वाल्मीकि रामायण से तो सिद्ध होता नही और न गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण से यह सिद्ध होता है कि यह दशमी श्री रामचन्द्र जी की विजय तिथि है। भाषा की रामायण से भी यह बिदित होता है वर्षा ऋतु के चार मास पर्यन्त रामचन्द्र जी का निवास पम्पापुर ही में रहा। वर्षा ऋतु के बीतने पर श्री हनुमान जी सीता देवी की खोज में गये हैं। इसके पश्चात् ही श्री रामचन्द्र जी का जाना विदित होता है। अत एव जनता का यह विश्वास कि श्री रामचन्द्र जी ने आश्विन शुक्ला दशमी को रावण का वध किया है, निर्मूल प्रतीत होता है।"

उपर्युक्त अवतरणो से पूर्ण प्रमाणित होता है कि कम से कम विजयादशमी रावणवध और लका विजय की तिथि नही है।

(आर्यपर्व पद्धति से)

आर्यसमाज सांजरवास (भिवानी) का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री सत्येन्द्र आर्य, उपप्रधान—मालसिंह, मन्त्री—सत्यप्रकाश, सचिव—सत्यवीरसिंह एवं रणवीरसिंह।

आर्यसमाज समालखा मण्डी का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज समालखा मण्डी, जिला करनाल का वार्षिक उत्सव २६-२७-२८ सितम्बर, १९८६ को स्थानीय गुड़ मण्डी मे बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। २६ सितम्बर शुक्रवार को बाद दोपहर दो बजे प० बिहारीलाल जी आर्य द्वारा ध्वजारोहण के उपरात पडाल से विशाल शोभा-यात्रा शुरु हुई, जो कस्बे के मुख्य-मुख्य भागो से होती हुई, ५ बजे साय पडाल मे ही समाप्त हुई। इस शोभा-यात्रा मे कस्बे एव आस-पास के ग्रामीण अचल की आर्यजनता के साथ क्षेत्रीय आर्य शिक्षण सस्थाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

तीनो दिन प्रात काल वैदिक विद्वान् प० रणवीर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न होता रहा। समारोह में शास्त्री जी के अतिरिक्त सर्वश्री आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र, सुरेशकुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा प्रभृति विद्वानों तथा शोभाराम प्रेमी, चौ० नत्थासिंह, प० ताराचन्द वैदिक तोप, बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल गणियार (महेन्द्रगढ़) तथा तेजपाल जी की भजनमण्डलियों ने उत्सव में सम्मिलित विशाल जनसमुदाय को शाश्वत वैदिक मान्यताओं से परिचित करवाकर उन पर चलने की प्रेरणा प्रदान की।

इस आयोजन की सफलता मे आर्ययुवको का विशेष योगदान रहा, जिसकी क्षेत्रभर में चर्चा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वेदप्रचारार्थ ५००) प्रदान किये गये।

मन्त्री आर्यसमाज समालखा मण्डी, जिला करनाल

शोक समाचार

आर्यसमाज मतलौडा (करनाल) के उपमन्त्री श्री किशोरीलाल जी बत्तरा के पिता श्री लक्ष्मणदास जी बत्तरा का स्वर्गवास दिनांक १६-९-८६ को हो गया है। आप एक धर्म-प्रेमी व्यक्ति थे। आपके अति प्रिय ग्रन्थ, वेद तथा गुरुग्रथ साहब थे। आप १०६ वर्ष के होने के बावजूद भी स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर तथा मधुरभाषी व्यक्तित्व के मालिक थे। आपकी प्रेरणा से ही आपका पूर्ण परिवार धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है, और श्री किशोरीलाल जी के जेष्ठ पुत्र आर्यसमाज के कार्यों में सबसे बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—पूर्णचन्द आर्य मन्त्री

आर्यसमाज बरौली (अम्बाला) का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री मा० तेजपालसिंह, उपप्रधान—चौ० नौराताराम, मन्त्री—ओम्प्रकाश, उपमन्त्री - बरखाराम, कोषाध्यक्ष—रामकरण, प्रचारमन्त्री—मा० कृपालसिंह, सगठन मन्त्री—जागीरसिंह, सलाहकार—म० बाबूराम, मा० श्रद्धाराम, लछमनदास, गेन्दाराम, सुन्दरलाल, मिस्त्री पूर्णचन्द, चमनलाल।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

आर्यसमाज ... द्वारा ?/RTK 49 ...८८१२ दृष्टि ... १,९६,०८,२३...



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक –प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४५ २१ अक्तूबर, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती योगिराज कृष्ण की भान्ति कर्मयोगी तथा निष्कलंक थे। हरयाणा के ग्रामों में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का श्रेय श्री सिद्धान्ती जी को है। श्री सिद्धान्ती जी की ८९वीं जयन्ती पर आर्यनेताओं के उद्गार

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

आर्यजगत् के विख्यात विद्वान् स्वर्गीय प० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य की ७९ वीं जयन्ती आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक में विजयादशमी पर १२ अक्तूबर १९८६ रविवार को श्रद्धापूर्वक मनाई गई। कार्यवाही प्रात· १० बजे यज्ञ के साथ आरम्भ हुई।

सर्वप्रथम सभा के भजनोपदेशक प० मुन्शीलाल धर्मपाल, प० तेजपाल तथा प० जयपाल बेधडक की भजन मण्डलियों के आर्यसमाज के सिद्धान्तो पर सगीत हुए।

सभा के मन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री ने श्री सिद्धान्ती जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने अपना कार्य एक सैनिक के रूप में प्रारम्भ किया। सेना में रहते हुए भी शराब, मास आदि दुर्व्यसनों से बचे रहे। सस्कृत पढने के लिए सेना की नौकरी छोडकर गुरुकुल मटिण्डू मे पढते तथा पढाते समय पजाब विश्वविद्यालय लाहौर से शास्त्री तथा दयानन्द उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन से सिद्धान्त भूषण परिक्षाए उत्तीर्ण की। वहा उनका आर्यसमाज के फील्ड म ...ल स्वामी स्वतन्त्रानन्द तथा चौ० छोटूराम जी से सम्पर्क हो गया। गुरुकुल किरठल जि० मेरठ को अपना प्रचार केन्द्र बनाकर उत्तरी भारत के नगरो तथा ग्रामो में वैदिक धर्म का प्रचार तथा प्रसार किया। शायद ही ऐसा नगर अथवा ग्राम का आर्यसमाज अथवा गुरुकुल का उत्सव होगा जिसमें श्री सिद्धान्ती जी का व्याख्यान न हुआ होगा। वे उन ग्रामो में पैदल भी गये, जिन ग्रामों में सवारी का साधन नही था। श्री सिद्धान्ती जी ऐसी सरल भाषा मे व्याख्यान देते थे, जिसे ग्रामीण भी रुचि के साथ सुनते थे। उनसे पूर्व ग्रामीण आर्यसमाजो के उत्सवो पर भजन मण्डलियो के भजन ही प्राय ध्यान से सुने जाते थे। परन्तु श्री सिद्धान्ती जी ने ग्रामीण शैली में वेदों तथा सत्यार्थप्रकाश की बाते समझाकर व्याख्यान की प्रथा को चालू किया। पाकिस्तान बनने से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वेदप्रचार विभाग जालन्धर डिविजन तक ही सीमित था। जीन्द के वेद प्रचार मण्डल में केवल ३,४ भजन मण्डलियां ही प्रचारार्थ नियुक्त थी। श्री सिद्धान्ती जी जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री चुने गये तो उन्होंने रोहतक मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का उपकार्यालय स्थापित करके सारे हरयाणा में वेदप्रचार का प्रबन्ध करवाया। पजाब सभा का वार्षिक अधिवेशन भी हरयाणा के ग्रामीण आर्यसमाजो पाकस्मा, भापडोदा जि० रोहतक में भी आयोजित करवाकर सभा के इतिहास में नया मोड दिया। हरयाणा सभा ने उनकी स्मृति मे ही सभा के कार्यालय का नामकरण सिद्धान्ती भवन किया है तथा प्रतिवर्ष उनकी जयन्ती मनाई जाती है।

कप्तान दलीपसिंह ग्राम डीघल ने श्री सिद्धान्ती जी को अपनी श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि वे भारतभर के उच्चकोटि के विद्वानो में शिरोमणि थे। वे वेदो का उपदेश करते थे तथा उन पर स्वय भी आचरण करते थे। उन्होंने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, कुण्डली बूचडखाना हटाओ आन्दोलन, हरयाणा प्रदेश निर्माण आन्दोलन आदि में तन मन तथा धन से सक्रिय रूप मे भाग लेकर आर्यसमाज को जीवित जागृत सस्था बनाया।

सर्व खाप पचायत के मन्त्री शोरम जि० मुज्जफरनगर (उत्तर प्रदेश) से पधारे श्री सिद्धान्ती जी के सहयोगी चौ० कबूलसिंह ने इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप मे श्री सिद्धान्ती जी के गुणो तथा विशेषताओ का वर्णन करते हुए बताया कि श्री सिद्धान्ती जी ने अपना यौवन उत्तर प्रदेश मे वैदिक धर्म का प्रचार तथा प्रसार करने में व्यतीत किया था। उन्होने अनेक बार सर्व खाप पचायतो में भाग लेकर जनता का मार्गदर्शन किया तथा न्यायालयो में उपस्थित होकर वैदिक सिद्धान्तो की व्याख्या करके अनेक समस्याओ का समाधान करवाया। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हें पगडिया भेंट की गईं। वे ऋषि दयानन्द के सच्चे शिष्य थे। उन्होने सदा सत्य तथा न्याय का पक्ष लिया तथा गुरुकुल किरठल में तपस्या करके प० रघुवीरसिंह शास्त्री जैसे सस्कृत के महान् विद्वानो को तैयार किया जिन्होने लोकसभा तथा विदेशों में जाकर सस्कृत में धाराप्रवाह व्याख्यान देकर आर्यसमाज तथा गुरुकुलो का नाम उज्ज्वल किया।

सभा के उपदेशक प० सुखदेव शास्त्री से अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए श्री सिद्धान्ती को महान् सैनिक, महान् विद्वान, महान् उपदेशक, महान् समाज सुधारक तथा महान् राजनैतिक नेता बताया। श्री सिद्धान्ती जी ने सत्यार्थप्रकाश का १०० से अधिक बार पारायण किया अत उन्हे सत्यार्थप्रकाश कण्ठस्थ सा हो गया था। वे अपने व्याख्यानो में सत्यार्थप्रकाश के किस सम्मुलास मे किस पृष्ठ पर क्या लिखा है का उदाहरण देकर सरल भाषा में समझाया करते थे। अपने व्याख्यान के पश्चात् शका समाधान का भी उपस्थित जनता को अवसर दिया करते थे।

सभा के पूर्व मन्त्री एव गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डा० रणजीत

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हिन्दी के व्यवहार का क्षेत्र विस्तृत करने में प्रयत्नशील कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कार देने की योजना

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है तथा राष्ट्र के गौरव का प्रतीक है। हिन्दी की सेवा राष्ट्र की सेवा है। यह सेवा अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से कर रहे हैं, कुछ शिक्षक के रूप में, कुछ लेखक के रूप में तथा कुछ स्वय अपना काम हिन्दी में करके। ऐसे भी व्यक्ति हैं जो दूसरो को भी अपना कामकाज हिन्दी मे करने की प्रेरणा देते रहे हैं।

इन सभी क्षेत्रो मे की जा रही सेवा का अपना-अपना महत्व है। यह प्रसन्नता की बात है कि समाज अच्छे शिक्षको, अच्छे लेखको आदि को सम्मानित कर रहा है तथा विभिन्न सस्थाओ तथा सरकारो द्वारा उन्हे पुरस्कार दिए जा रहे हैं। परन्तु हिन्दी के उन मूक सेवको को सम्मानित करने की अभी व्यवस्था नही है जो विभिन्न सस्थाओ, सगठनो तथा व्यक्तियो से सम्पर्क करते रहकर इस बात का प्रयत्न करते रहे हैं कि जीवन के सभी क्षेत्रो में अधिकाधिक काम हिन्दी में हो। इन व्यक्तियो के परिश्रम का अनेक क्षेत्रो में अच्छा प्रभाव हुआ है तथा जहा पहले हिन्दी मे काम होने की कल्पना ही नही की जाती थी, वहां हिन्दी में काम होने लगा है और हिन्दी के प्रयोग की मात्रा बढती जा रही है।

हरिबाबू कसल धर्मार्थ ट्रस्ट ने उपर्युक्त प्रकार के हिन्दी सेवियों का सम्मान करने का विचार किया है। उसकी रूप रेखा इस प्रकार है :—

1) इस सम्मान द्वारा उन व्यक्तियों की सेवाओ को मान्यता दी जाए जिनकी प्रेरणा से अधिकतम सस्थाओं, सगठनों तथा व्यक्तियों ने अपना अधिकतम काम हिन्दी मे करना शुरु किया है।

२) सम्मान हेतु प्रारम्भ मे प्रतिवर्ष ११०० रु० नकद राशि तथा एक शाल प्रदान किया जाए। ट्रस्ट के साधन बढ जाने पर सम्मान राशि में वृद्धि हो सकती है।

३) देश की विभिन्न सस्थाओ का सहयोग प्राप्त करके तथा समाचार-पत्रो मे विज्ञप्ति आदि प्रकाशित करके ऐसे व्यक्तियो के विवरण एकत्रित किए जाए जिन्हें उपर्युक्त सम्मान देने के विषय में विचार किया जा सकता है।

४) विवरण द्वारा निम्नलिखित तथ्य प्राप्त किए जाए —
पिछले वर्ष में तथा उससे पूर्व के दो वर्षों मे हिन्दी व्यवहार का क्षेत्र विस्तृत करने तथा उन क्षेत्रो मे हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए किन-किन से सम्पर्क किया, क्या क्या प्रयत्न किए, उन प्रयत्नो का क्या परिणाम हुआ, क्या उल्लेखनीय प्रगति हुई, कार्य मे क्या-क्या बाधाए आई, उनका निराकरण किस प्रकार किया गया, आदि।

५) इस सम्मान के लिए किसी व्यक्ति को हिन्दी का लेखक, शिक्षक थवा स्नातक आदि होना आवश्यक नही होगा। पात्रता के लिए इस बात का भी भेद नही किया जाएगा कि उसका व्यवसाय क्या है अथवा वह किसी प्रकार का कोई अन्य पुरस्कार ले चुका है।

६) जिस व्यक्ति को इस योजना के अन्तर्गत सम्मानित किया जाएगा, उसे उस वर्ष से आगे के दो वर्षों में पुन इसी सम्मान के लिए नही विचारा जाएगा।

७) सम्मान योग्य व्यक्ति का चयन करने के लिए ट्रस्ट एक निर्णायक समिति का गठन करेगा। यह समिति आवश्यक सूचनाए प्राप्त करके अपने विवेकानुसार निर्णय करेगी तथा वह निर्णय सर्वमान्य होगा।

- जाहिर है कि इस योजना की परिकल्पना के अनुसार सम्मान योग्य व्यक्ति का चयन प्रतिवर्ष करना आसान नही होगा, किन्तु वह काम असम्भव भी नही है। उद्देश्य यही है कि हिन्दी की निस्वार्थ सेवा करने वाले कार्यकर्त्ताओ के प्रति हम साकेतिक रूप में अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा उनका उत्साह बढा सकें, जिससे ऐसे कार्यकर्त्ताओं की सख्या में वृद्धि हो। पाठको की दृष्टि में जो ऐसे व्यक्ति हों जो इस योजना के अन्तर्गत सम्मान के पात्र हो उनके विवरण इस पते पर भेजने का कष्ट करें।

सुधाशु कंसल
सचिव,
हरिबाबू कसल, धर्मार्थ ट्रस्ट,
ई ९/२३ बसन्त बिहार, नई दिल्ली-११००५७

गुरुकुल काँगड़ी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की मूल्य सूचि

१ अग्निहोत्र	श्री देवराज विद्यावाचस्पति	५-००
२ ब्राह्मण की गौ	श्री अभय विद्यालंकार	३-००
३ वैदिक वन्दना गीत	श्री सत्यकाम विद्यालंकार	१०—००
४ वैदिक कर्त्तव्य शास्त्र	श्री धर्मदेव विद्यावाचस्पति	१०-००
५ आत्म मीमासा	श्री नन्दलाल खन्ना	१०-००
६ ईशोपनिषद्भाष्य	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१०-००
७ आध्यात्म रोगो की चिकित्सा	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१०-००
८ वक्तृत्वकला की प्रगति	श्री इन्द्रविद्या वाचस्पति	५-००
९ वैदिक स्वप्न विज्ञान	श्री भगवद्दत्त वेदालकार	६-००
१० विष्णु देवता	श्री भगवद्दत्त वेदालकार	५-००
११ ऋषिदेव विवेचन	श्री भगवद्दत्त वेदालकार	५-००
१२ वेद विमर्श	श्री भगवद्दत्त वेदालकार	५-००
१३ ऋषि रहस्य	श्री भगवद्दत्त वेदालकार	५—००
१४ भारतवर्ष का इतिहास तृतीय भाग	श्री आचार्य रामदेव	१२-००
१५ ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार	श्री स्वामी श्रद्धानन्द	३-००
१६ गुरुकुल की आहुति	श्री क्षितोश विद्यालकार	१-२५
१७ स्तूप निर्माण कला	श्री नारायण राव	१५-००
१८ प्रमेह श्वास, अर्शरोग	श्री रामरक्ष	५-००
१९ आहार	श्री रामरक्ष	८-००
२०. जलचिकित्सा विज्ञान	श्री देवराज विद्यावाचस्पति	४-५०
२१. पाणीनयाष्टकम्	श्री गगादत्तशास्त्री	२०-००
२२ आर्य भाषा पाठावली	श्री भवानीप्रसाद	२-५०
२३ सोम	श्री बुद्धदेव विद्यालकार	२-००
२४ शतपथ में एक पथ	श्री बुद्धदेव विद्यालकार	२-५०
२५ बिखरे हुए फूल	श्री बुद्धदेव विद्यालकार	१-००
२६ प्रार्थनावली		१-१५
२७ इन्द्र विद्यावाचस्पति	श्री सत्यकाम, अवनीन्द्र	१०-००
२८ स्वा श्रद्धानन्द जी के धर्मोपदेश (१ भाग)	श्री लब्भूराम नैय्यर	३-००
(२ भाग)	श्री लब्भूराम नैय्यर	५—००
२९. गुरुकुल के स्नातक		३-००
३० महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन	श्री प्रो जयदेव वेदालङ्कार	१५-००
३१ वेदों की वर्णन-शैलिया	श्री डा. रामनाथ वेदालङ्कार	५०-००

पता —पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी
पि २४९४०४ (सहारनपुर)

कैप्टन देवरत्न
स मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी

सम्पादकीय

गोर्बाचेफ का रूस

१९६२ मे मास्को मे विश्वशान्ति सम्मेलन हुआ था। भारत के सभी प्रान्तो और सभी दलो के १०० सदस्य उस शिष्टमण्डल मे गये थे। एक दिन हम लोग लेनिनग्राड के बाजार मे पैदल जा रहे थे। पटरी पर अचानक एक दूकान से निकलकर एक व्यक्ति हमारे बीच मे आकर 'मीरूमीर' 'मीरूमीर' चिल्लाने लगा। रूसी भाषा के इस शब्द का अर्थ है 'शान्ति ही शान्ति' हम लोग बडे प्रभावित हो रहे थे कि शान्ति के लिए कितनी तडप वहा के लोगो मे है। हम उससे पहले दूसरे महायुद्ध मे मारे गये लोगो की एक बडी समाधि देखकर आये थे। हमे बताया गया था कि दूसरे महायुद्ध में इस नगर की १८ लाख जनसख्या मे से ६ लाख बच्चे, बूढे और जवान मरे। एक ९ वर्ष की लडकी की डायरी भी दिखाई गयी, जिसमे उसने अपने भाई, माता, पिता के एक एक करके मरने की दर्दनाक कहानी लिखी थी। यह ठीक है कि वहा के लोग युद्ध मे त्रस्त थे और शान्ति चाहते थे। परन्तु जैसे लडखडाते हुए एक एक भारतीय से वह लिपट रहा था और सरदार कपूरसिंह को तो ऐसा लिपटा कि छुडवाना हो मुश्किल हो गया। तब हमारे साथ चल रहे दुभाषिये ने बताया कि यह शराब पीकर पागल हो गया है, आप लोग इससे बचिये। बडी कठिनाई से स० कपूरसिंह को हम लोगो ने उससे छुडवाया। १९६२ मे रूस मे शराब का बहुत चलन था। महिलाए कम पुरुष अधिक शराब पीते थे। हमारे शिष्टमण्डल मे भी दो चार को छोडकर सब सदस्य शराब पर टूट कर पडते थे। हमारे लोग तो उनसे भी आगे निकल जाते थे और जब उनसे पीछा छुडाने के लिए हमको अपने लोगो को रुकने के लिए कहना पडता था। परन्तु जब दोनो तरफ पीने वाले हों तो कौन शरमाये और कौन रुके। यह था २४ वर्ष पहिले के रूस का दृश्य।

भारत के जाने माने बगाली पत्रकार भवानीदास गुप्त आजकल अग्रेजी दैनिक पत्र मे लेखमाला लिख रहे हैं। वे अभी रूस से लौटकर आये है। १९८२ मे भी चार वर्ष पहिले वह रूस होकर आये थे। परन्तु जब से गोर्बाचिफ ने रूस की बागडोर सभाली है, इन १५ महीनो मे उस देश का नक्शा बदल गया है। उन्होने अपने लेख मे लिखा है कि १९८२ में सडको, गलियो, प्लेट फार्मो, सीढियो पर शराब मे धुत्त लोग देखने को मिलते थे, लेकिन आज कही भी जाइये किसी भी गली, मोहल्ले, होटल, खोखे आदि पर कही भी शराब पीये हुए आदमी के दर्शन नही होते। २१ वर्ष तक की आयु के आदमी को शराब तो क्या बीयर खरीदने की इजाजत नही। विद्यार्थी तो शराब के नजदीक भी नही जा सकता। एक महिला ने उनसे कहा कि गोर्बाचिफ के शासनकाल में महिलाये बहुत खुश हैं। घर के बजट का १५ फीसदी से ऊपर पैसा शराब की खरीद मे चला जाता था, अब वह पैसा बच गया, आज महिलायें भी सुखी है और परिवार भी सुखी। परिवारो मे शान्ति तो है ही बिखराव भी रुक गया है।

एक और सूचना मिली है कि रूस के लोगो की योगासनों, प्राणायाम आदि के लिए रुचि बढ रही है। वायुसेना के अफसर श्री राकेश शर्मा जब अन्तरिक्ष में रूसी राकेट में गये थे, तब स्वस्थ रहने के लिए वे योगासन, प्राणायाम करते थे, उसके बाद से रुचि और भी बढ गई है। अन्तरिक्ष मे जाकर बीमार पडना तो बहुत खतरनाक है, इसलिए रूस और अमरीका दोनों में ही योगासनो तथा प्राणायाम का कार्यक्रम स्कूलो, कालिजो विश्वविद्यालयो आदि मे खूब चल रहा है।

एक अजीब विडम्बना है कि ससार के उन्नत राष्ट्र तो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रखने के लिये भारत की ओर देख रहे हैं और उस सस्कृति की ओर दौडे आ रहे हैं और भारत के लोग उल्टी दिशा में जा रहे हैं। जो उनके पास है और जिसके लिये ससार के देश लालायित हैं वे उससे विमुख होते जा रहे हैं, और जिस सस्कृति से तग आकर भारत की ओर चल पडे, उसी सस्कृति के पीछे भारत के लोग और विशेष रूप से नवयुवक दौड रहे हैं।

—प्रो० शेरसिंह

सभा के प्रतिनिधि महनुभावों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के प्रतिनिधि महानुभावो की सेवा मे सभा की २६ अक्तूबर को होने वाली साधारणसभा का एजेण्डा तथा प्रस्तावित बजट की प्रतिया डाक द्वारा भेज दी गई हैं। यदि किसी प्रतिनिधि का पता बदल जाने अथवा डाक की गडबडी के कारण एजेण्डा आदि न मिल सके तो सर्वहितकारी में प्रकाशित सूचना के अनुसार वे २५ अक्तूबर की साय तक अथवा २६ अक्तूबर को प्रात ८ बजे तक सभा कार्यालय रोहतक में पधारें तथा कार्यालय से अपना एजेण्डा तथा प्रवेश पत्र प्राप्त कर लेवे। आजकल सभा का कार्यालय प्रात ८ बजे से रात्रि १० बजे तक खुला रहता है। अत जिन आर्यसमाजो ने अभी तक प्राप्तव्य वेद प्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क जमा नही करवाया है वे भी अपने एक प्रतिनिधि को २५ अक्तूबर तक रोहतक कार्यालय भेजकर शेष धनराशि कार्यालय मे जमा करवाकर प्रवेश पत्र प्राप्त कर लेव ताकि २६ अक्तूबर को सभा कार्यालय को प्रवेश पत्र आदि देने में असुविधा न हो।

हरयाणा मे आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ तथा प्रभावशाली बनाने के लिए प्रतिनिधि महानुभावो का सहयोग अपेक्षित है।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री

लालची दुल्हे को ठुकराया होने वाली पत्नी ने !

यमुनानगर, १५ अक्तूबर (निस)। एक स्वाभिमानी युवति माला ने अपने होने वाले लालची पति को ठुकरा दिया और उसे अपने घर पर बारात लाने से मना कर किया। यह घटना प्रोफेसर कालोनी नई आबादी वाले क्षेत्र मे घटी।

यह शादी अम्बाला कैंट में सम्पन्न होने वाली थी। इस से पूर्व लडके वालो ने लडकी वालो को अम्बाला कैंट से बुलाकर कहा था कि लडकी ने लडके को लिखित रूप से आश्वासन दिलाया था कि वह लगन के समय एक वी सी, आर पाच हजार रुपए, एक अगूठी और सोने की वालो की चैन भिजवाएगी। मगर ऐसा कुछ नही हुआ।

परेशान होकर लडको वाले अम्बाला कैंट चले गए और घर मे रोना शुरु हो गया। जब यह सारी बात लडकी को पता चली तो वह अम्बाला कैंट से अपने अभिभावको को साथ लेकर सीधी अपने होने वाले पति की कोठी पर प्रोफेसर कालोनी के नई आबादी क्षेत्र मे पहुची और वहा मौहल्ले के लोगो और अन्य रिश्तेदारो को इकट्ठा कर अपने होने वाले पति को बुलाकर पूछने लगी कि आप जिस लिखित आश्वासन की बात कर रहे हैं, कृपया वह दिखाए। होने वाला पति बोला कि वह अन्दर रखा है और मैं अभी लाता हू, मगर वह कुछ भी दिखा नही सका। इस पर लडकी ने सबके सामने उसे ठुकरा देने की घोषणा की।

लडकी सिचाई विभाग हरयाणा यमुनानगर कार्यालय मे लिपिक के पद पर कार्य करती है।

मोहल्ले तथा विभाग के लोग लडके वालो के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने की माग कर रहे है। लडके वाले एक उद्योगपति बताए जाते हैं। शहर मे इस घटना की खूब चर्चा है।

आवश्यकता

गुरुकुल को एक आचार्य की तत्काल आवश्यकता है जो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की विशारद तथा शास्त्री कक्षाओ को पढा सके। वेतन योग्यतानुसार। इच्छुक अभ्यर्थी पूर्ण विवरण सहित प्रार्थना पत्र भेजें अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वेद मन्दिर फतेहाबाद, हिसार।

शराब का यह दरिया कब रुकेगा ?

जहा दूध घी की नदिया बहती थीं और कहावत मशहूर थी 'देशो मे देश हरयाणा जहाँ दूध,घी का खाना' ऐसे सात्विक, पौष्टिक भोजन को खाकर जहाँ हरयाणा के युवक वीरता में बेजोड माने जाते थे, वहाँ आज शराब का दौर हुआ, यहाँ का युवक शराब में डुबकी लगाने लगा। शराब के प्रचार मे सरकार भी पीछे ने रही। गाव-गाव में शराब के ठेके खोल दिये, करोडो रुपये कमाये, विकास के कार्यों में लगाने के बहाने से। ठेकेदार शराब भी क्यों पीछे रहते। घटिया, नकली, जहरीली शराब बनाकर लोगो को पिलाई। जिससे ऐसी प्राण-घातक शराब पीकर कालावाली, जीन्द के इलाके में अनेको युवको की मृत्यु हुई, बहुत से अन्धे हो गए। शराब पीकर ही व्यक्ति चोरी, डाका, हत्या, व्यभिचार आदि जघन्य अपराध करता है, क्योंकि शराब के नशे मे मदहोश होने से उसकी आत्मा की आवाज दब जाती है ऐसे अपराध रोकने मे।

शराब के इस विनाशकारी प्रभाव को देखकर हरयाणा के प्रबुद्ध लोगों की चेतना जागी कि यदि शराबखोरी के इस बढते प्रसार को न रोका गया, तो हरयाणा निवासियो का शरीर, बल, बुद्धि व धनादि सब नष्ट हो जावेगा। इसके विरुद्ध आवाज उठाने मे पहल की हरयाणा के आर्यसमाज ने। श्री स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिंह प्रधान हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व मे शराबखोरी के विरुद्ध जोरदार अभियान शुरु कर दिया। सभी आर्यसमाजो, सभा के सभी प्रचारको को, उपदेशको व भजनीको को शराबखोरी के विरुद्ध जुट जाने का निर्देश दिया। आर्यसमाजो के उत्सवो पर शराबबन्दी सम्मेलन किये गए। गावो मे शराब के ठेके उठवाने के लिए पचायतो से प्रस्ताव पारित कराये, शराब के ठेको पर धरने तथा भूखहडताल व प्रचार सभाए की गईं। सघर्ष जारी है—एक ओर आर्यसमाज कृत-सकल्प है हरयाणा वासियो को विनाशकारी शराब से मुक्ति दिलाने को, दूसरी ओर हरयाणा सरकार व उसके ठेकेदार शराब, इसकी अधिकाधिक बिक्री कर धन कमाने की होड मे। देखें इस सघर्ष मे कौन जीते।

आज यह स्थिति है हरयाणा प्रदेश की, जो ऋषि-मुनियो की कर्म भूमि रही हैं। जहा नित्य बडे-बडे यज्ञ होते थे। घर घर दुधारू गौयें होती थी, जिनका गोरस ग्रहण कर यहा के लोग बलवान् योद्धा होते थे। अब जरा पजाब की ओर दृष्टि डालें, वहा शराबखोरी की कैसी स्थिति है। अमृतसर, जालन्धर, गुरदासपुर, लुधियाना आदि पजाब के इन इलाको मे सरे आम शराब पीने मे किसी को शर्म या झिझक नही होती, वहा तो कोई घर ऐसा नही रहता जिसमे शराब की बोतल न खुल जाती हो। लेकिन राजस्थान व हरयाणा से लगनेवाला फाजिल्का तहसील का क्षेत्र जिसमें बागडी कहलाने वाले लोग आबाद हैं वह भी अब शराबखोरी में पजाब के दूसरे इलाको से पीछे नही रहा। इस बागडी क्षेत्र में पहले किसी युवक को सरे आम शराब पीने की हिम्मत न होती थी। घर वालो से छिपकर ही वह शराब भले ही पीता। पर अब वह बन्धन, वह शर्म या झिझक दूर हो गई। अब इस क्षेत्र मे भी घर-घर मे मांय शराब का दौर शुरु हो जाता है। मेरा एक कार्यकर्ता ३-४ मील दूर के गाव में रहता है जो अबोहर सीड फार्म मे होकर आता है। वहा के किसानो का नाजायज शराब निकालने का धन्धा है। जो शराब के पीपे भर कर रास्ते मे बैठ जाते हैं और आने जाने वालो को शराब बेचने मे जबरदस्ती भी करते हैं। इस कार्यकर्ता के गाव वाले इन्ही से रोजाना शराब खरीदकर ले जाते हैं। उसने बताया कि मेरे सिवाय गाव का कोई घर नही जहा रोजाना शराब न पी जाती हो।

इस इलाके मे बिशनोइयो की काफी आबादी है। इस सम्प्रदाय में सब प्रकार के नशे पूर्णत निषिद्ध हैं। किन्तु अब बिशनोई भी खुले आम शराब पीने लगे। उन्हे रोकने की हिम्मत किसी भी प्रमुख बिशनोई नेता की नही। एक धनी सिख ने मुझे अपने पुत्र की बारात में चलने को विवश किया। मैं क्या देखता हूं कि वधू-पक्ष की ओर से शराब की प्याऊ लगी है, हर कोई बाराती इच्छानुसार शराब पीवे। इस क्षेत्र में धनी लोग लडके की शादी पर सब बारातियों को ह्विस्की की पार्टी देते हैं। गांव वाले लडके की शादी में बोरियों में शराब भी ले आते हैं तथा शाम को बारातियो को उनके ठहरने के स्थानों में जा कर बोतलें बाटते हैं।

इस क्षेत्र में न आर्यसमाज, न अन्य कोई धार्मिक या समाजसेवी सस्था ही जो हरयाणा की तरह यहा शराबखोरी के विरुद्ध अभियान चलाये। प्रतिवर्ष धनी घरों के अनेक युवक अत्यधिक शराब पीकर अकाल मृत्यु के ग्रास बनते हैं। शादी पर भी यहा के सम्पन्न व्यक्ति कई-कई लाख रुपये खर्च करते हैं। यह क्षेत्र पजाब में सबसे उपजाऊ व सम्पन्न माना जाता है। पर यहा बहता शराब का यह दरिया इसे रसातल में ले डूबेगा। यहां शराबखोरी के विरुद्ध कोई आवाज उठावे, तो नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुने ? इस क्षेत्र की रक्षा राम, कुदरत या भावी होनहार भले ही करे। यही सोचकर मन मसोसना पडता है।

—तेगराम, पूर्व विधायक अबोहर

षड्दर्शन समन्वय गोष्ठी सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सिद्धान्ती भवन रोहतक में १२ अक्तूबर को आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् एवं नेता पूर्व सासद स्वर्गीय श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती की ८६ वीं जयन्ती के अवसर पर यज्ञ की कार्यवाही के पश्चात् "षड् दर्शन समन्वय" पर एक गोष्ठी का डा० तुलसीराम जी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की अध्यक्षता मे हरयाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजन किया गया। इसमें निबन्ध प्रस्तुत करने वाले विद्वान् थे—

१ श्री डा रणजीतसिंह जी गुरुकुल कुरुक्षेत्र २ श्री डा महावीर जी दिल्ली विश्वविद्यालय ३ श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक हरयाणा सभा ४ श्री सुरेशकुमार जी शास्त्री महोपदेशक हरयाणा सभा। ५ श्री महेन्द्रसिंह जी शास्त्री महोपदेशक हरयाणा सभा ६) श्री प्रो सत्यवीर जी शास्त्री राजकीय महाविद्यालय भिवानी ७) श्री प्रो दयानन्द जी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार।

उपरोक्त विद्वानो ने अपने अपने विषय पर दर्शनो पर अत्युत्तम योग्यतापूर्ण निबन्ध प्रस्तुत किए।

डा० रणजीतसिंह जी ने अपना निबन्ध प्रस्तुत करते हुए कहा—मोक्ष विषय मे दर्शनो मे आपस में कोई विरोध नही है। डा० महावीर ने अर्वाचीन और प्राचीन दर्शनो की व्याख्या करते हुए—कहा नव्य और प्राचीन दर्शन शास्त्रकारो का पारस्परिक विरोध बहुत अधिक है। श्री सुखदेव शास्त्री ने अपने निबन्ध में बताया कि मुक्ति और उसके साधनों पर दर्शनों में परस्पर पूर्ण सहमति है। श्री सुरेश जी शास्त्री तथा श्री महेन्द्रसिंह जी शास्त्री ने भी अपने निबन्ध और दर्शनो पर विचार प्रस्तुत किए। श्री दयानन्द आचार्य नें भी षड्दर्शन समन्वय और महर्षि दयानन्द नाम से निबन्ध प्रस्तुत किया। सभा के भजनोपदेशक प० जयपाल तथा मुन्शीलाल ने भी इस अवसर पर मनोहर भजन सुनाये।

अन्त मे डा० तुलसीराम जी ने भी अपना अध्यक्षीय भाषण दिया। गोष्ठी को पूर्णत सफल बताया। प्रो० सत्यवीर जी शास्त्री सभामन्त्री ने गोष्ठी मे आए विद्वानो का धन्यवाद किया। गोष्ठी में सम्मिलित सभी महानुभावो ने सहभोज किया।

यज्ञवीर, सयोजक षड्दर्शन समन्वय गोष्ठी

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

हिसार में आर्य वीर पर्व

सार्वदेशिक आर्य वीरदल हिसार के सचालक श्री सत्यकाम आर्य ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य वीर दल की ओर से आर्य वीर पर्व आज २३० बजे श्री राममेहर जी एडवोकेट (रोहतक) की अध्यक्षता में गुरुकुल आर्यनगर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें मुख्य वक्ता स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल झज्जर) व प्रो० राम विचार जी (हिसार), श्री मजयदेव जी आर्य (भिवानी) थे। श्री वेगराज जी व चिरजीलाल जी भजनोपदेशक के भजन हुए। इस अवसर पर श्री सीताराम आर्य ने हिसार आर्य वीर दल की गतिविधियो पर प्रकाश डालते हुए आगे का प्रोग्राम बताया कि हमे किस तरह आर्य वीर दल को आगे बढ़ाना है। और गुरुकुल के आचार्य श्री रामस्वरूप जी शास्त्री का आर्य वीर दल हिसार को पूर्ण सहयोग मिला।

हजारों नवयुवकों द्वारा शराब छोड़ने व दहेज न लेने का संकल्प

राजा महेन्द्रप्रताप नगर (कभावला) दिल्ली में ४-५ अक्तूबर को विश्वजाट युवा सम्मेलन का यज्ञ द्वारा शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर देश विदेश के हजारो नवयुवको ने भाग लिया।

सम्मेलन मे सामाजिक कुरीतियो व बुराइयो का प्रबल विरोध किया गया तथा हजारो नवयुवको ने शराब छोडने व दहेज न लेने का सकल्प लिया। इस समारोह की भरतपुर के युवराज अरुणसिंह व पटियाला के महाराजा अमेन्द्रसिंह ने भी पधार कर शोभा बढाई। सम्मेलन में नब्बे प्रतिशत आर्यसमाजियों की उपस्थिति देखने को मिली। युवा सगठन को अधिक से अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए रचनात्मक कदम उठाने का निर्णय लिया गया तथा प्रान्तीय स्तर पर कमेटियो का पुनर्गठन करने का निश्चय किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने सामाजिक बुराइयो से बचने के लिए नवयुवको को ललकारा। इस समारोह की अध्यक्षता कैप्टन चौ० भगवानसिंह आई ए एस ने की तथा कार्यवाही का सचालन व अन्य व्यवस्था प्रि० होश्यारसिंह ने की।

इस अवसर पर श्री वीरेन्द्रसिंह जी सदस्य लोकसभा पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष हरयाणा ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए यह स्वीकारा कि ९० प्रतिशत जाट आर्यसमाजी होते हैं, इस प्रदेश को सामाजिक बुराइयो से बचाने एव शिक्षा क्षेत्र मे उच्च उठाने मे महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज का बड़ा योगदान रहा है।

चन्द्रपालसिंह राणा

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत में महायज्ञ

आर्यसमाज शान्तिनगर (चार मरला) सोनीपत के प्राङ्गण मे विश्व कल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण महायज्ञोत्सव २०-१०-१९८६ से २६-१०-१९८६ तक विदुषी सुश्री प्रज्ञादेवी जी आचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय बनारस (काशी) उ, प्र के ब्रह्मत्व मे हो रहा हैं।

कार्यक्रम :—प्रातः ६-०० से ९-३०—यज्ञ भजन एवम् उपदेश।
साय ३-०० से ६-००—यज्ञ भजन एवम् उपदेश।
रात्रि ८ ३० से १०-६० बजे—भजन एव उपदेश।

यज्ञ की पूर्णाहुति २६-१०-८६ रविवार ११-३० बजे के पश्चात् ऋषि लगर होगा। पधारनेवाले महानुभाव सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी, ओमप्रकाश आर्य, सारस्वत मोहन मनीषी, के० नरेन्द्र, चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी, लक्ष्मणसिंह बेमोल, आशानन्द आर्य एवम् अनेक विद्वान् सन्यासी तथा महात्मा पधार रहे हैं।

दर्शनाभिलाषी :
हरिचन्द स्नेही (महामन्त्री)

रोहतक में ऋषि-निर्वाण दिवस

रोहतक नगर के सभी आर्यसमाजों, आर्य सस्थाओ के सम्मिलित प्रयास से आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्वावधान मे आर्यसमाज के प्रवर्तक, आधुनिक युग के समाज सुधारक स्त्री जाति एव अछूतोद्धार के प्रबल समर्थक-महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का बलिदान दिवस रविवार दि २६ अक्तूबर १९८६ को अपराह्न २ से ५ बजे तक राजकीय प्राथमिक माडल स्कूल के प्रागण मे पुलिस लाइन ग्राउड के सामने सोत्साह मनाया जायेगा।

इस अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान प वीरेन्द्र सत्यम् विद्यावाचस्पति (मेरठ), आचार्य बलदेव जी, डा तुलसीराम जी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा प नन्दलाल जी 'मधुर' भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

— निवेदक —

देशराज आर्य, मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक।

आर्य वीरों की नजर मे देश की तस्वीर (भजन)

उठ आर्य वीर बना तस्वीर ऐसी अपने देश की।
एक हो हम सब आर्य जड मिटे क्लेश की॥

एक ईश्वर को माने सारे जो है निराकार।
जड पूजा को छोड करें मानवता से प्यार
सारा राष्ट्र हो निरोगी उठे यज्ञ की महकार।
वेदो के अनुसार बने सबके उत्तम विचार।
आर्य राष्ट्र बना दो करो यज्ञ हमेश की॥१॥

मात-पिता गुरु अतिथि विद्वान् का करे सत्कार।
आज्ञाकारी सन्तान बने शिष्य हो सेवादार।
धर्म अधर्म समझें सारे दें पाखण्ड को ललकार।
मृतक श्राद्ध छोड करें जीवित से हो प्यार।
झूठी भक्ति छोड प्रार्थना करें सभी विश्वेश की॥२॥

वेदविरुद्ध मत ना हो समझें वेद धर्म एक।
नेक बने दुनिया सारी करे कार्य नेक।
सदाचार के नियम का पालन करे हरेक।
वेदपाठी हो सारे बढता रहे सारे विवेक।
देशभक्त हो सारे चिन्ता हो सिर्फ देश की॥३॥

"रामचन्द्र" कहे ऐसा देश बनाना वीरो तुम्हारे हाथ है।
शुभ कर्म में साझा करलो ईश्वर तुम्हारे साथ है।
पाखण्डवाद अन्धविश्वास का करना तुम्हे नाश है।
सत्य असत्य जानो सारे ऋषि ग्रन्थ तुम्हारे पास हैं।
धर्म की पहचान करो ये बात ठेस की॥४॥

पता —आर्यनिवास बडवा (भिवानी)
रचयिता—मा० रामचन्द्र आर्य "नलवा"

"उठो ! पुनः हुंकार करो"

महिमण्डल को फिर से देकर,
वेदों का सुन्दर सदेश ।
सत्य-शिवम् से आपूरित कर
दिया, धरित्री का परिवेश ।

भारत के सोते गौरव को,
जगा, पुन गतिमान् किया ।
दिव्य आर्यों के अन्तस् को,
अमृत सा वरदान दिया ।

विस्मृत था अस्तित्व हमारा,
राष्ट्र आत्मा थी कुण्ठित ।
सत्य धर्म का शस्त्र सुपावन,
हुआ धरा पर था लुण्ठित ।

ऋषिवर ने तत्क्षण स्थापित
पावन आर्यसमाज किया ।
स्वतन्त्रता का उद्घोषक बन,
पन्थ प्रशस्त स्वराज किया ।

फिर क्या था ? भारत का—
भू पर, शख निनाद लगा होने ।
दम्भ-दनुजता का कुतत्त्व—
अपना अस्तित्व लगा खोने ।

नव्य चेतना, दिव्य शक्ति ले,
लेने लगी नवल अगडाई ।
'उत्तिष्ठत जाग्रत' के स्वर से—
जाग उठी भारत तरुणाई ।

स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर,
शीश चढाने आर्य लगे ।
वेदो के पावन प्रकाश से,
तिमिर भरे अनुताप भगे ।

वरदानों में प्रत्यावर्तित—
हुए जननी के सब अभिशाप ।
गलत रूढियो—पाखण्डो की—
नष्ट हुई मदपूरित भाप ।

जड़ें हिली फिर, भू पर फैले,
अन्धभरे विश्वासो की ।
कलिया खिली मनुजता पूरित,
सत्य भरी नव आशो की ।

स्वतन्त्रता का सूर्य उगा, पर
तिमिर हृदय मे छाया है ।
मानवता सकट मे फिर है,
दानव मन हर्षाया है ।

अमृतसुत ! अब रश्मिरथी बन,
उठो ! पुन हुकार करो ।
मानव-मन में मानवता का,
वैदिक मन्त्रोच्चार करो ।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का,
स्वप्न अभी तक रहा अधूरा ।
विश्वजनित अभिलाषा मधुरिम—
तुम्हें अभी करना है पूरा ॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

स्वर्गीय सिद्धान्ती जी के जन्मदिन पर गीत

थे सिद्धान्ती जी भारत विभूति, उनका जन्मदिन मनाते रहेंगे।
शमा वेदों की जलती रहेगी, तो साधक भी आते रहेंगे ॥
आज सिद्धान्ती जी जन्मदिन है प्यारा,
जो था भारत का चमकता सितारा
सादगी मे थे गाधी जी से साधु,
उनसे प्रकाश पाते रहेंगे ।१। थे सिद्धान्ती जी...।
दिल में उनके इक यह झलक थी,
विश्व आर्यम् की प्यारी तड़प थी
माननीय नेताओ से भी विनय है,
उनकी नीति अपनाते रहेंगे ।२। थे सिद्धान्ती जी
प्रजातन्त्रीय आज का भारत,
एकता की गई हिल इमारत
आर्यो राजनीति मे आओ,
वरना सदा हार खाते रहेंगे ।३। थे सिद्धान्ती जी ।
आज सभा में कई विद्वान् है सितारे,
बन सकते हैं पथदर्शक हमारे
यह कर्मवीरता का समय है,
देशभगति निभाते रहेंगे ।४। थे सिद्धान्ती जी...।

चौ० माडूसिंह स्मृति दिवस समारोह

सात अक्तूबर को यहा कन्या गुरुकुल खानपुर के प्रागण मे आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान तथा गुरुकुल महासभा के पूर्व प्रधान स्वर्गीय चौ० माडूसिंह जी का स्मृति दिवस समारोह श्री स्वामी कर्मपाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। वक्ताओ ने चौधरी माडूसिंह को श्रद्धाजलि भेंट की। इस अवसर पर कन्याओ की भाषण प्रतियोगिता भी हुई । कन्याओ ने नारी-शिक्षा, आर्यसमाज, भक्त फूलसिंह तथा चौधरी माडूसिंह की गुरुकुल के प्रति की हुई सेवाओ की मुख्य रूप से चर्चा की। स्मृति दिवस पर बोलने वाले अन्य वक्ता थे श्री महेश्वर जी शास्त्री, श्री कपिलदेव जी शास्त्री, श्री प्रकाशवीर जी विद्यालकार, श्री आ० विष्णुमित्र जी, जमादार रियालसिंह जी, सभा प्रधान श्री जगजीतसिंह जी एडवोकेट, चौ० शेरसिंह जी मलिक, मा० तुहीराम जी, श्री सुखदेव जी शास्त्री, श्री तेजपाल जी भजनीक के भजन तथा कन्या गुरुकुल की छात्राओ के भी सगीत भजन-भाषण हुए। कन्याओं को भाषण प्रतियोगिता के लिए पारितोषिक भी वितरित किए गए।

—सुखदेव शास्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

सिंह ने श्री सिद्धान्ती जी द्वारा किये गये महान् कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि वे जितने सादा थे उतने ही महान् विद्वान् थे। उन्होंने सम्राट् पत्रिका का प्रकाशन करके वैदिक सिद्धान्तो तथा भारतीय संस्कृति का जो प्रचार किया वह इतिहास के पन्नो मे सदा स्मरण रहेगा। उन्होने लोकसभा का चुनाव ओ३म् झण्डे के नीचे लड़ा। हार जाने वाले प्रत्याशी द्वारा न्यायालय में अभियोग किये जाने पर ओ३म् के झण्डे को भारतीय संस्कृति का चिन्ह सिद्ध किया। श्री सिद्धान्ती जी ने अनेक पुस्तकों की रचना करके आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन किया। अन्त में अध्यक्षीय भाषण मे महाशय भरतसिंह जी ने श्री सिद्धान्ती जी के सम्बन्ध में अनेक संस्मरण सुनाये तथा उन्होंने नवयुवको का आह्वान करते हुए आर्यसमाज के कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेने का परामर्श दिया। इस अवसर पर श्री टीकाराम जी शास्त्री ने कविता सुनाकर अपनी श्रद्धाजलि भेंट की।

आर्यसमाज की प्रगति के लिए सुझाव

प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की गति-विधियों की ओर समस्त भारत का आर्यसमाज आशाभरी दृष्टि से देखता है क्योकि हरयाणा आर्यसमाज का गढ है अत आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को समूचे भारत वर्ष के लिए कोई रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहिए। इसके लिए अनिवार्य है कि अधिवेशन में सभी प्रतिनिधि मिल बैठकर विचारोपरान्त एक रचनात्मक ठोस कार्यक्रम बनायें। मैं यहा कुछ सुझाव प्रतिनिधियों के विचारार्थ प्रस्तुत कर रहा हू कि हम सभी अपना उत्तरदायित्व समझकर अपनी भूमिका का निर्वाह करें।

(क) वर्तमान अर्थप्रधान युग मे जहा धार्मिक पाखण्ड उत्तरोत्तर बढता जा रहा है वहा धन कमाने के लिए व्यक्ति अनेक निम्न कोटि के ढग अपनाकर मानवीय मूल्यो का नैतिक पतन करता जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज की वैदिक व्यवस्था ही एकमात्र उपाय है जिससे जन्मना जातपात तथा आर्थिक विषमता मिट सकती है अत वैदिक धर्म का प्रचार अधिक तीव्र एव प्रभावी ढग से होना चाहिए। प्रचार तन्त्र पर भी विचार करना अनिवार्य है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि बन्द पडे आर्यसमाजों का पुनर्गठन किया जाये तथा नये आर्य-समाज बनाकर और अधिक व्यक्तियो को आर्य बनाया जाये। इस कार्य को सरल बनाने के लिये जिला स्तरीय वेद प्रचार मण्डल या जिला आर्य उपसभा बनाकर जिले भर मे प्रचार कार्य चलाया जाये। यह काम तहसील तथा ब्लाक स्तर तक अपनाया जा सकता है। यह निश्चित ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की तरफ एक ठोस कदम होगा।

(ख) आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास से जुडे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति शनै:-शनै कम होते जा रहे हैं परन्तु उनके स्थान पूर्ति हेतु वैसे त्यागी व्यक्तियो का नितान्त अभाव है। नये सदस्य भी कम बनाये जा रहे हैं। सभा को चाहिए कि प्रत्येक वर्ष आर्य सभासद् गणना कराकर आगामी वर्ष के लिए नये बनाये जाने वाले सदस्यों बारे निश्चित योजना बनाये और युवा पीढी को आगे लाने के लिए प्रयास करे। इसके लिए आर्य परिवार तथा आर्य शिक्षण सस्थाओं को आधार बनाया जाये। विद्यालयो महाविद्यालयों मे सभा के उपदेशक तथा अधिकारी आर्य विचारगोष्ठिया, कार्यशालाये आयोजित करे। सौभाग्य से सभा से सम्बन्धित अनेक प्रोफेसर शिक्षाविद् यह कार्य सरलता से कर सकते है। सभा शिक्षक रखकर शिविरो का आयोजन भी करे। युवको को आकर्षित करने के लिए कुछ प्रतियोगितायें भी की जायें। इस सबके लिए सभा स्वय कोष निर्धारित करे और युवको के प्रोत्साहन सम्बन्धी निर्देश अधीनस्थ समाजो को देकर स्थानीय आर्यसमाजों मे भी बजट बनाया जाये।

(ग) दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के विभाजन के उपरान्त आज तक इसके विद्यालय, महाविद्यालयो तथा गुरुकुलो आदि का सगठन नही हो पाया है परिणामत. इन विद्यालयो में भी आर्यसमाज की उपेक्षा आरम्भ हो गई है। सभा को इन शिक्षण सस्थाओ का एक राज्य स्तरीय बोर्ड गठित कर शिक्षा पद्धति तथा प्रशासन को अपने हाथ मे लेकर स्थानीय पार्टीबाजो को समाप्त करना चाहिए और सभी शिक्षण सस्थाओ को वैधानिक रूप से सम्बन्धित कर इन्हें आर्यसमाज के वैदिक विचारधारा के मच के रूप में विकसित करे। विद्यालयो के सगठन सम्बन्ध में डी ए वी अच्छा उदाहरण है अत: वहां पार्टीबाजी होने की कम सम्भावना है जबकि स्वतन्त्र समाज द्वारा विद्यालय आदि का न तो समुचित विकास हो पाता है बल्कि स्थानीय व्यक्तियो के स्वार्थपूर्ति के साधन बन जाने के कारण व्यर्थ मतभेद के जन्मस्थल बनने की सम्भावना अधिक रहती है। इस विषय में प्रभावी पग उठाने की अधिक अवश्यकता है।

(घ) आर्यसमाज का जनसम्पर्क एव प्रचार प्रसार के साधनों की ओर ध्यान देना भी अनिवार्य है इसके लिए प्रचार शैली अन्दोलनात्मक ढग से विकसित की जाये। प्रमुख तथा आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य जनसाधारण तक पहुचना अनिवार्य है। उच्चकोटि का साहित्य अत्यधिक महगा होने के कारण जनसाधारण क्रय करने में असमर्थ रहता है जिसके कारण अनेक उपयोगी पुस्तकें पुस्तकालयो में ही शोभा पाती रहती हैं। सभा को सस्ता साहित्य प्रकाशित करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त सुझावो को अपनाने से यह आशा की जा सकती है कि हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, के उद्घोष को सार्थक कर सकेंगे। यह भी उचित है कि आर्यसमाज के समयदानी उपदेशको की उत्तम व्यवस्था कर सम्मानजनक ढग से व्यवस्था हो ताकि अन्य समयदानी प्रचारक भी इस क्षेत्र मे उत्साह से आगे बढ सकें। आशा है सभा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर सम्माननीय प्रतिनिधि गण उपरोक्त बातो पर अवश्य विचार कर क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगे।

—प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी,
अधिष्ठाता, आर्य वीर दल हरयाणा।

आर्यसमाज शाहाबाद (मारकण्डा) बढ़ते कदम पर

दिनाक २९ सितम्बर से ५ अक्तूबर तक आर्यसमाज शाहाबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र मे वेदप्रचार सप्ताह बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमे नित्यप्रति प्रात काल ७ ३० बजे से ९ ३० बजे तक यजुर्वेद के मन्त्रो द्वारा प० इन्द्रमणि शास्त्री जी की अध्यक्षता में यज्ञ रचाया गया। रात्रि ८ ३० बजे से १० ३० बजे तक आचार्य देवव्रत जी M A गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा प० चन्द्रसेन जी के प्रवचन होते रहे और प० हरिश्चन्द्र जी के सुमधुर भजनो द्वारा नव-युवको पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा।

डा० नरेन्द्र भूषण मन्त्री

गोरक्षा अभियान

दक्षिण हरयाणा के मेवात क्षेत्र मे चल रहे उटावड, सिगार, आली मेव, साकरस, घोडावली, रूपडाका आदि पचासो अवध बूचडखानो मे हजारो गौ काट दी जाती हैं। श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री उपदेशक आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा, हेतराम आर्य महाशय रूपचन्द आदि आर्यो ने थाना पुनाहाना, नगीना, हथीन के सहयोग से अनेक स्थानो पर छापा मारकर लगभग ५०० गौओ को कब्जे मे लिया व अनेक कसाइयो को गिरफ्तार किया, अनेक भाग गये।

गाव मासद थाना नगीना जि० गुडगाव में २५० गौ पकडी। थाना अधिकारी राव सोमदेव का सहयोग सराहनीय रहा। गाव सिहरी थाना पुनाहना गुडगाव में ३६ गौ पकड़ी गई २ गौ कट चुकी थी ५४ गौ सिगार थाना पुनाहाना में पकडी गई।

गांव रिठड में २३ गौ पकडी गई। कसाई भी पकड लिये गये। गाव उटावड थाना हथीन फरीदाबाद मे २-१०-८६ को ५४ गौ पकडी गई।

इस प्रकार यह गौ रक्षा अभियान जारी है। अमर शहीद कान्हा गोशाला बहीन जि० फरीदाबाद में ये गौ रखी गई हैं। गोशाला मे आर्थिक सकट है लेकिन लोगो में बहुत उत्साह है। सहयोग के इच्छुक व्यक्ति गोशाला बहीन के पते पर सम्पर्क करे।

स्वर्ण जयन्ती समारोह तथा चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

दिनाङ्क ९ नवम्बर रविवार से ७ दिसम्बर रविवार ८६ तक। इस पावन अवसर पर वर्तमान समय के सन्दर्भ मे विद्यालय की प्रगति और नूतन स्नातको का दीक्षान्त समारोह तथा अन्य भव्य सम्मेलनो का आयोजन एव अनेक सन्यासियो मूधन्य विद्वानो, भजनोपदेशक तथा सुलझे हुए देश के विचारशील विचारको का पदार्पण।

आय नर-नारी इस अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं। निमन्त्रण के साथ आप से तन-मन-धन से सहयोग की विशेष अपील है।

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय,
११९ गौतम नगर, नई दिल्ली।

निवेदक—

चौ० दलीपसिह
प्रधान

आचार्य हरिदेव
आचार्य

आर्य स्कूल सिरसा का छात्र चित्रकला में प्रथम

रोटरी क्लब (Mid Town) द्वारा जनता भवन में दिनाक २८-९-१९८६ रविवार प्रात १०.०० बजे चित्रकला प्रतियोगिता एवम् सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल के कमल कुमार एव जितेन्द्र वर्मा ने चित्रकला प्रतियोगिता में क्रमश प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया। सुलेख प्रतियोगिता में कृष्ण कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/7 अंक 49 फोन ४६१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४६ २८ अक्तूबर, १९८६ वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ७ पौंड एक प्रति ५० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

सर्वसम्मति से प्रो० शेरसिंह प्रधान, आचार्य वेदव्रत शास्त्री मन्त्री, श्री बद्रीप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष एवं आचार्य ऋषिपाल पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

रोहतक २६ अक्टूबर, आज यहां दयानन्द मठ रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा (वार्षिक चुनाव) बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर हरयाणा के आर्यसमाजों के ५०० के लगभग प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम गत वर्ष दिवंगत आर्य महानुभावों तथा अबोहर फाजिलिका क्षेत्र में उग्रवादियों द्वारा २५ अक्टूबर को अंधाधुन्ध गोलियों से किये गये शहीदों को २ मिनट खड़े होकर मौन श्रद्धांजलियां अर्पित की गई। इसके पश्चात् गत वर्ष के आय-व्यय तथा अधिवेशन की कार्यवाही की सम्पुष्टि, वेदप्रचारादि सभा के विभागों के लिये वर्ष ८६-८७ का १० लाख २३ हजार ६०० रुपयों का बजट और एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से श्री सुरजीतसिंह बरनाला की पथक सरकार को तुरन्त हटाने तथा पंजाब की सीमा में पाकिस्तान से शिक्षित होकर उग्रवादियों की घुसपैठ रोकने के लिए सुरक्षापट्टी बनाने की मांग की। प्रस्ताव में भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३० को भी समाप्त करने की मांग की गई। जिसके अन्तर्गत अल्पसंख्यक सम्प्रदाय को विशेष आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक अधिकार दिये हुए हैं। इस प्रकार बहुसंख्यक घाटे में रहते हैं। अब सभी सम्प्रदायों को बराबर अधिकार तथा सुविधा देने के लिए मानवता अधिकार आयोग बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

एक अन्य प्रस्ताव में हरयाणा प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी तथा गोहत्या पर प्रतिबन्ध के कानून का कड़ाई से पालन करते हुये गोहत्यारों तथा गोनिकासी करने वालों को कठोर से कठोर दण्ड देने की मांग की गई।

आगामी वर्ष के लिए चुनाव का विषय प्रस्तुत होने पर श्री महेश्वरसिंह शास्त्री ने प्रधान पद के लिए प्रो० शेरसिंह जी का नाम प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव का समर्थन श्री रतीराम वैद्य, डा० योमानन्द, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, मा० बद्रीप्रसाद आर्य, श्री कपिलदेव शास्त्री, श्री धर्मसिंह राठी तथा प्रो० सत्यवीर ने किया। प्रधान पद के लिए कोई अन्य नाम प्रस्तुत न होने पर प्रो० शेरसिंह जी को पुनः सर्वसम्मति से चौथी बार सभा का प्रधान चुना गया। शेष पदाधिकारी तथा अन्तरङ्ग सदस्यों का निर्वाचन भी सर्वसम्मति से निम्नप्रकार किया गया।

१ प्रधान—प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मंत्री १४ एम साकेत नई दिल्ली
२. उपप्रधान—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी रोहतक
३ उपप्रधान—बहिन सुभाषिणी देवी कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत
४ उपप्रधान—श्री लक्ष्मनदास आर्य बल्लबगढ फरीदाबाद
५ मन्त्री—आचार्य वेदव्रत शास्त्री रोहतक
६. उपमन्त्री—प्रो० सत्यवीरसिंह विद्यालंकार जाट कालेज हिसार
७ उपमन्त्री—डा० सुदर्शनदेव आचार्य राजकीय महाविद्यालय गोहाना
८ कोषाध्यक्ष—मा० बद्रीप्रसाद आर्य जीन्द शहर
९ पुस्तकाध्यक्ष—आचार्य ऋषिपाल चरखीदादरी जिला भिवानी।

अन्तरंग सदस्य

१. स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक
२ श्री रामानन्द सिंगला पानीपत जिला करनाल
३ प्रो० सत्यवीर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय भिवानी
४, डा० रणवीरसिंह सागवान सिरसा
५. वैद्य रामलाल यमुनानगर जिला अम्बाला
६ दीवान भीमसेन नई कालोनी गुडगांव
७ श्री राजेन्द्रसिंह पूर्व विधायक फरीदाबाद
८ श्री पारब्रह्म परमार्थी रिवाड़ी जिला महेन्द्रगढ
९ महाशय फतेसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर रोहतक
१० श्री भूपेन्द्रसिंह मलिक एडवोकेट आर्य नगर रोहतक
११. श्री महेश्वरसिंह शास्त्री सील जिला करनाल
१२. श्री सत्यदेव शास्त्री सोनीपत शहर
१३. श्री राजकुमार आर्य नरवाना जिला जीन्द
१४. श्री सत्यदेवसिंह पूर्व पुलिस अधीक्षक कुरुक्षेत्र
१५ श्री कृष्णचन्द आर्य गुड़गांव
१६. श्री ओमप्रकाश दिसावरखेड़ी जिला रोहतक
१७. महाशय ताराचन्द आर्य नारनौल जिला महेन्द्रगढ
१८. डा० यज्ञवीर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक
१९. डा० रणजीतसिंह नारनौंद जिला हिसार
२० डा० मनोहरलाल आर्य कंथल जिला कुरुक्षेत्र
२१ श्री धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक पानीपत करनाल
२२ श्री देवराज विद्यालंकार गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत
२३ श्री रणवीर शास्त्री आसन जिला रोहतक
२४ डा० रघुबीरसिंह सेवानिवृत्त सहायक कराधान एवं आयकर अधिकारी रोहतक

(शेष पृष्ठ-९ पर)

1 नवम्बर हरयाणा दिवस पर विशेष

स्वतन्त्रता की लड़ाई का अग्रदूत : हरयाणा

शूरवीरों की धरती हरयाणा कई निर्णायक लडाइयों की अग्रदूत रही है। चाहे स्वतन्त्रता सग्राम हो चाहे भारत-पाक या भारत-चीन युद्ध। यहा के लोगो ने अपना गौरवपूर्ण इतिहास बनाए रखा है। स्वतन्त्रता सग्राम मे हरयाणा के देशभक्तों का योगदान किसी से छिपा नही है। १८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम मे राव तुलाराम, समदखा, महाराजा नाहरसिह एव कृष्णगोपाल आदि वीरो ने अपनी जान हथेली पर रखकर युद्ध लडे। हरयाणा के विभिन्न स्थानो पर विद्रोह की लपटें दिखाई देने लगी।

१८५७ में विद्रोह के समय सबसे पहले बिगुल भी हरयाणा से ही बजा था। १० मई १८५७ को मेरठ के प्रसिद्ध सैनिक विद्रोह से लगभग ९ घटे पूर्व अम्बाला छावनी में ६० वी तथा ५ वीं नेटिव इन्फेन्ड्री ने अग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजाया था। जिसे तुरन्त दबा दिया गया। १८५७ की असफल क्राति के बाद अग्रेजी सरकार ने हरयाणा में पूरी शक्ति के साथ दमनचक्र चलाया। १८५८ में अग्रेजो सरकार ने बदले की भावना से हरयाणा के टुकडे कर दिए। यमुना और सतलुज के बीच का हिस्सा मिला दिया गया। दोआब को अवध प्रान्त से जोड दिया। १९१२ में दिल्ली क्षेत्र को हरयाणा से अलग कर दिया और इस प्रकार अ ग्रेजो ने हरयाणा का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया।

हरयाणा मे राष्ट्रीय आन्दोलन तथा समाज सुधार आन्दोलन भी साथ चले। हरयाणा में ही आर्यसमाज आन्दोलन सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ।

१८८५ में बम्बई में आयोजित काग्रेस के सर्वप्रथम अधिवेशन में भाग लेने वाले ७२ प्रतिनिधियों मे से हरयाणा के लाला मुरलीधर मगला एडवोकेट भी थे जो मूलरूप से फरीदाबाद जिले के पलवल नगर के निवासी थे और बाद मे अम्बाला आकर बस गए थे। १८८६ में कलकत्ता में हुए काग्रेस के द्वितीय अधिवेशन में भी हरयाणा से लाला मुरलीधर मगला प० दीनदयाल शर्मा और बाबू बालमुकन्द गुप्त डेलीगेट के तौर पर शामिल हुए। लाला मुरलीधर तो कलकत्ता अधिवेशन के मच से बोले भी थे। राजनैतिक कारणो से जेल जाने वाले पहले भारतीय भी लाला मुरलीधर मगला ही थे जिन्हें १८८६ में ही अग्रेजी सरकार ने कैद किया था। भारत मे स्वदेशी की वकालत करने वाले पहले भारतीय भी लाला मुरलीधर ही थे। जिन्होने गांधी जी द्वारा स्वदेशी का नारा बुलन्द करने से तीन दशक पूर्व ही कांग्रेस के १८९१ के नागपुर अधिवेशन में जोर देकर कहा था कि स्वदेशी को अ ग्रेजी सरकार के विरुद्ध एक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया जाए। लाला मुरलीधर ने ही १८८५ में पजाब और उत्तरी सीमान्त प्रान्त में निर्वाचित विधान परिषद् स्थापित करने की माग की थी।

१८८८ मे काग्रेस के इलाहाबाद मे आयोजित चौथे अधिवेशन मे पजाबकेसरी लाला लाजपत राय ने हिसार के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की पहली गिरफ्तारी भी १९१९ में हरयाणा के पलवल नगर मे हुई थी जब उन्होने तत्कालीन पजाब प्रान्त के गवर्नर के प्रतिबध आदेशों का उल्लघन करके पजाब में प्रवेश किया था।

जलियावाला बाग गोलोकाड की सबसे तीखी प्रतिक्रिया भी हरयाणा में हुई थी तथा अग्रेजो सरकार ने रोहतक में आयोजित जलसे में भाषण करने पर पाच वकीलों चौ० छोटूराम, लाला श्यामलाल, लाला लालचन्द जैन, चौ० नवलसिह और खान मुदताक हुसैन पर सरकार से विद्रोह करने के मुकदमें बनाए। असहयोग अन्दोलन में भी हरयाणा वासी सबसे आगे रहे। प० श्रीराम शर्मा का नाम इस विषय में उल्लेखनीय है।

असहयोग आन्दोलन के बाद १९३० तथा १९३२ में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चला। इसमें हरयाणा की जनता ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन मे भी हरयाणा के सैकडों देशभक्तों ने जेल की यात्रा की जबकि हैदराबाद में हुए आर्यसमाज सत्याग्रह में भी हरयाणा वासी अग्रणी रहे। हरयाणा के प० नेकीराम शर्मा तथा प० मौलीचन्द्र शर्मा के नाम भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में उल्लेखनीय हैं।

—सजीव कुमार मगला, आर्य कुटीर कानूगोयान
पलवल—१२११०२ (हरयाणा)

(पृष्ठ १ का शेष)

२५ श्री हरकिशनसिह टिटोली रोहतक
२६ श्री जयपालसिह आर्य नगला साधान जिला कुरुक्षेत्र

अन्त में प्रो० शेरसिह सभा प्रधान ने पुन प्रधान का कार्यभार सौंपे जाने पर सभी प्रतिनिधियो का हार्दिक धन्यवाद करते हुए विश्वास दिलाया कि वे प्रदेश में आर्यसमाजो के सगठन को सुदृढ़ करने का पूरा प्रयत्न करेगे और वेदप्रचार का प्रसार करके प्रदेश मे शराबबन्दी, गोरक्षा तथा व्यसन मुक्ति आन्दोलन जारी रखा जाये। श्री स्वामी ओमानन्द जी ने आर्यसमाज के कार्यों में सभी मतभेद भुलाकर प्रतिनिधियों को सभा अधिकारियो के साथ सहयोग करने की अपील की। राष्ट्ररक्षा तथा समाज सुधार के कार्यों के लिये सभी की दृष्टि आर्य समाज पर है।

शेष चुनाव की सूचना आगामी अ क में प्रकाशित की जायेगी।

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

गुरुकुल शुकताल का वार्षिक महोत्सव

वैदिक योगाश्रम शुकताल का बाइसवा वार्षिक महोत्सव आश्रम के विशाल प्रांगण में कार्तिक शुक्ल द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार १३ से १६ नवम्बर १९८६ तक भारी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा।

महोत्सव में अनेक विद्वानो-महात्माओ-भजनोपदेशकों केन्द्रीय एव प्रान्तीय नेताओ तथा गणमान्य अधिकारियो को आमन्त्रित किया गया है।

स्वामी आनन्दवेश (बलदेव नैष्ठिक)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हिसार की कार्यकारिणी का गठन

जिला सचालक श्री सत्यकाम आर्य ने अपनी कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार किया। सरक्षक—श्री हरिसिंह सैनी (बीज वाले) व सीताराम आर्य, सहसचालक श्री हरिसिंह आर्य, उपनगरनायक श्री० वीरसिंह, मत्री श्री सजय मारवाडी, उपमन्त्री श्री चेतन आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष स्वामी रामानन्द, कोषाध्यक्ष सजय गुप्ता, शाखा नायक ईश-कुमार।

—सत्यकाम आर्य जिला सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल
बाल समण्ड रोड़, हिसार

शोक समाचार

श्री विजयसिह जी मलिक प्रौढ़ शिक्षाधिकारी रोहतक की दुर्घटना से २० अक्तूबर को मृत्यु हो गई।

श्री विजयसिह मलिक का जन्म ग्राम अटायल जिला रोहतक के आर्यसमाजी परिवार में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल मटिण्डु में हुई थी। वे अच्छे अध्यापक तथा अच्छे शिक्षा अधिकारी भी थे। सर्वहितकारी परिवार उनके शोकसतप्त परिवार के लिए अपनी सहानुभूति प्रकट करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उन्हें परमात्मा सद्‌मति प्रदान करे।

सम्पादकीय

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी सम्मेलन

लखनऊ में १७, १८, १९ तथा २० अक्टूबर को उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी सम्मेलन अत्यन्त सफल रहा। उत्तरप्रदेश से ही नहीं दूसरे प्रदेशों तथा मारिशस और दक्षिणी अफ्रीका से भी प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए। उत्तरप्रदेश के तो कई जिलों के आर्य-समाज के कार्यकर्त्ता और सदस्य पधारे। पहिले दिन ही विशाल पण्डाल भरा हुआ था। १८ अक्टूबर को शोभायात्रा में तो लोग उमड़ पड़े। जलूस बहुत लम्बा था और लगभग ६ घण्टे जलूस को अपना रास्ता तय करने में लगे। हाथी, घोड़े, मोटरसाईकल, स्कूटर, ट्रैक्टर, ट्रक आदि अनेक वाहनों तथा २० से अधिक बाजे बजाते हुए नर-नारी, युवक-युव-तियां, पंक्तिबद्ध होकर बड़े अनुशासन से चले। जगह-जगह स्वागत द्वार तथा खाने-पीने का प्रबन्ध था। शोभायात्रा देख अजमेर की शोभायात्रा याद आ रही थी।

१७-१०-८६ को ध्वजाभिवादन तथा परेड और व्यायाम का प्रदर्शन सवेरे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में हुआ। विधिवत् उद्घाटन श्री अर्जुनसिंह ने किया। उत्तरप्रदेश के मुख्य-मन्त्री श्री तथा उनके मन्त्री डा० सजयसिंह आदि भी समारोह में शामिल हुए, स्वागताध्यक्ष राजा रणञ्जयसिंह (अमेठी) थे। रात को पंजाब सम्मेलन वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता में हुआ। स्वामी आनन्दबोध जी तथा प्रो० शेरसिंह जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, मुख्य अतिथि थे। प्रो० शेरसिंह ने सम्मेलन का उदघाटन करते हुए बरनाला मन्त्रीमण्डल भंग करने, सुरक्षा पट्टी शीघ्र बनाने तथा सतलुज यमुना लिंक नहर भारत सरकार द्वारा अपने हाथ में लेकर बनाये जाने की मांग की। उन्होंने भारत को तोड़ने के षड्यन्त्र तथा बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता का उल्लेख किया और आर्यजनता से राष्ट्र की एकता और महत्ता के लिए जुट जाने को कहा। इसी के आधार पर प्रस्ताव बनाकर पारित किया गया।

१९ ता० को श्री वैद्यनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में वेद सम्मेलन हुआ। स्वामी सत्यप्रकाश जी मुख्य अतिथि थे। अनेक विद्वान् बोले। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का ओजस्वी भाषण हुआ।

१९ ता० दोपहर को युवा सम्मेलन, डा० धर्मपाल, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के नेतृत्व में प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न हुआ। प्रो० शेरसिंह ने भी उसे सम्बोधित किया।

१९ ता० रात को आर्य सम्मेलन हुआ। अध्यक्षता स्वामी आनन्द-बोध जी ने की। श्री इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ने मुख्य प्रस्ताव रखा। देश की एकता और अखण्डता की रक्षा तथा साम्प्रदायिकता तथा अल्पसंख्यक के नाम पर शिक्षा तथा शासन आदि में अनुचित सुविधाओं का विरोध करते हुए संविधान के अनुच्छेद ३० को समाप्त करने तथा अल्पसंख्यक आयोग को भंग करने को कहा। गोहत्या बन्द करने तथा शराबबन्दी और व्यसन मुक्ति के लिए आर्य जनता को घोर प्रबल आन्दोलन चलाने की अपील की गई।

समापन भाषण प्रो० शेरसिंह का था। उन्होंने पाकिस्तान द्वारा अघोषित युद्ध की चर्चा करते हुए राष्ट्र की एकता और सुरक्षा के लिए जनता को तैयार रहने तथा सरकार को इस संदर्भ में मजबूत कदम उठाने की अपील की। व्यसन मुक्ति के लिये हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उठाये गये आन्दोलन का उल्लेख किया और सारे देश में आर्यसमाज द्वारा व्यसन मुक्ति के लिये व्यापक आन्दोलन चलाने की अपील की। रूस, चीन तथा दूसरे देशों में इस सम्बन्ध में जो कदम उठाये गये उनकी विस्तार से चर्चा की। स्वामी आनन्दबोध जी और वन्देमातरम् जी ने बड़ी मार्मिक अपील की और प्रस्ताव के मुद्दों पर अमल करने के लिये आह्वान किया।

२० ता० कार्यकर्त्ता सम्मेलन प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यकर्त्ताओं ने आर्यसमाज के संगठन की समस्याओं की ओर ध्यान दिलाया। प्रो० शेरसिंह ने आर्य सम्मेलन के राष्ट्रीय एकता को साम्प्रदायिकता और भारत विरोधी शक्तियों के षडयन्त्र के द्वारा उत्पन्न हुए खतरे का मुकाबला करने के लिये अपने अपने प्रदेशों और जिलों में आन्दोलन चलाने का आह्वान किया।

२० ता० दोपहर बाद समापन समारोह हुआ, जिसे श्री के० सी० पन्त, इस्पात मन्त्री भारत सरकार श्री गोपीनाथ दीक्षित, गृहमन्त्री उत्तरप्रदेश सरकार, श्री वासुदेवसिंह, पूर्वमन्त्री उत्तरप्रदेश सरकार, श्री वाजपेयी शिक्षा राज्यमन्त्री उत्तरप्रदेश सरकार आदि ने सम्बोधित किया। संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, भजनीकों को लम्बी अवधि तक आर्यसमाज की सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

—प्रो० शेरसिंह

दयानन्द ऋषि फिर दीजिए

ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति

विश्व के लोगो ! यदि दयानन्द यति को जान लो।
वह कौन था, क्या कर गया इस बात को पहचान लो ॥

कल्याण होगा शीघ्र ही इसमें तो कुछ संशय नहीं।
मुक्ति मिलेगी शीघ्र ही बन्धन का कोई भय नहीं ॥

आदि सृष्टि से चला जो वैदिक धर्म था।
नरभुजङ्गों ने उसे डसना किया आरम्भ था ॥

शुद्धि सुदर्शन चक्र से फण काट कर ठण्डा किया।
वेद मन्त्रों की ध्वनि और ओ३म का झण्डा लिया ॥

विधवायें रोती थी यहां बालाएं मारी जा रही।
वृद्ध पुरुषों की यहां बारातें सज कर आ रहीं ॥

अधिकार विधवा को दिया जीवन सुखी उसका किया।
बालाएं विदुषी हो रहीं पाण्डित्य फिर से ले लिया ॥

शूद्रकुल में जन्म लेना ही महा अभिशाप था।
ब्राह्मण हो चाहे मूर्ख भी उसका बड़ा सम्मान था ॥

दयानन्द के सन्देश से अब शूद्र भी हैं पढ रहे।
वेद विद्या के धनी बन करके ब्राह्मण बन रहे ॥

गउओं के हा हाकार से माँ भारती थी रो रही।
करुणा निधि की आज है सर्वत्र चर्चा हो रही ॥

जन्म से कांग्रेस के दस वर्ष पहले यह कह दिया।
परदेशियों के राज्य में सुख है नहीं वर दे दिया ॥

जीवन पढो ऋषिराज का सत्यार्थ भी पढते चलो।
आर्य जीवन को बना फिर वेद पथ बढते चलो ॥

दयानन्द को यदि त्याग दें इतिहास भी वीरान है।
कोई बता दे विश्व में ऐसा कोई इन्सान है ॥

संघर्ष से वह जूझकर विषपान करता ही रहा।
सब यन्त्रणायें थी सही अमृत पिलाता ही रहा ॥

आज यदि यह विश्व सारा वेदपथगामी बने।
भ्रान्तियां सब दूर भागें शांति का मग फिर मिले ॥

राजा रमन्ना कह रहा परमाणु का अध्यक्ष है।
कोई भी उसकी बात को सुनता न राष्ट्राध्यक्ष है ॥

भगवन् भारतवर्ष को दयानन्द ऋषि फिर दीजिए।
अन्धकार फिर से बढ रहा आलोक फिर भर दीजिए ॥

११/१२४ पश्चिमी आजाद नगर,
दिल्ली-११००५१

दीपावली, महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर विशेष—

महान् राष्ट्रवादी महर्षि दयानन्द सरस्वती

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

राष्ट्रवादी महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान ३० अक्तूबर, १८८३ को दिवाली के अवसर पर साय ६ बजे अजमेर में हुआ था।

महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजलि समर्पित करते हुए फ्रेंच के प्रसिद्ध तत्ववेत्ता एव महान् लेखक श्री रोमारोला ने लिखा था कि—"महर्षि दयानन्द समग्र कान्ति एव समस्त जन-जागृति के जन्मदाता थे। महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी दुधर्षशक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूक दिया है।

प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य सेनानी नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाजलि इस प्रकार प्रकट की है—" महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषो मे से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया। और जो उसके आचारसम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं।

महर्षि का सच्चा राष्ट्रवाद

महर्षि दयानन्द सच्चे राष्ट्रवादी थे। उनके ग्रन्थो में स्थान स्थान पर इस भावना का प्रबल समर्थन मिलता है। यजुर्वेद के पहले अध्याय के छठे मन्त्र—स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति की व्याख्या करते हुए महर्षि लिखते हैं—

"मनुष्यैर्द्वाभ्या प्रयोजनाभ्या प्रवर्तितव्यम्। प्रथम अत्यन्तपुरुषार्थशरीरारोग्याभ्या चक्रवर्तिराज्यश्रीप्राप्तिकरणम्। द्वितीय सर्वा विद्या पठित्वा तासा सर्वत्र प्रचारीकरणम्। इस का अभिप्राय यह है कि "मनुष्य को अपने सामने सदा दो प्रयोजन रखकर उनकी पूर्ति के लिए अपना सब व्यवहार करना चाहिए। प्रथम यह है कि—अत्यन्त पुरुषार्थ करके और शरीर को स्वस्थ रखकर वह चक्रवर्त्ती राज्यरूपी श्री का सम्पादन करे और दूसरा यह है कि वह सब विद्याओं को पढकर सब जगह उनका प्रचार करे"। इस भाष्य में महर्षि ने राजनीतिक चावना और स्वराज्य की स्थापना को विद्या प्रचार या धर्मप्रचार से प्रथम स्थान दिया है। मनुष्य जीवन के लिए निर्धारित किए गए कार्यक्रम में शरीर का आरोग्य तथा चक्रवर्ती राज्य की प्राप्ति सब से मुख्य मानी गई है। महर्षि दयानन्द के हृदय में स्वदेश का मातृभूमि का, आर्यावर्त्त का, सर्वोपरि स्थान था। उनकी देशप्रेम या राष्ट्रभक्ति की भावना इतनी पवित्र उत्कृष्ट थी कि उनके सारे जीवन में और उनके समस्त कार्यों में मनुष्य की देह में खून की तरह से समाई हुई थी। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास में वे लिखते हैं—"यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल मे दूसरा देश नही है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योकि यही सुवर्ण आदि रत्नो को उत्पन्न करती है। जितने भूगोल मे देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है, कि जिस को लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं"। महर्षि दयानन्द १८७२ में बगाल गये थे, वहा दे छ मास तक ठहरे थे। बगाली नेताओ से महर्षि ने देशोद्धार के विषय मे बाते की थी, उन दिनो कलकत्ता भारत की राजधानी थी। राजधानी मे ही अनेको विद्वानो से महर्षि मिले थे। वेद के विषय मे तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति आदि के विषय मे महर्षि ने खुलकर बाते की थी। बगालीनेता जो उस समय प्रमुख थे—महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर, डा० केशवचन्द्रसेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहस, स्वामी रामतीर्थ आदि आदि। लेकिन इन नेताओ के दिमाग मे महर्षि की योजना न आसकी। १८७५ में सत्यार्थप्रकाश की रचना की गई थी। महर्षि ने इसी के ग्यारहवें समुल्लास के अन्त मे प्रार्थना समाजियो और ब्रह्मसमाजियो की आलोचना करते हुए कितने मर्मान्तक शब्दो मे उनके विषय मे लिखा है "इन लोगो में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है भला, जब आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न-जल खाया पिया और अब भी खाते पीते हैं, तब अपने माता-पिता व पितामहादि के मार्ग को छोडकर दूसरे विदेशीमतो पर अधिक झुक जाना और एतद्देशस्थ सस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना, मनुष्यो का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है, स्वदेश, स्वभाषा तथा स्वधर्म से प्रेम और अपने पूर्वजों के लिए गौरव एव अभिमान इन पक्तियो के एक एक शब्द में झलक रहा है। १८७२ में ही कलकत्ता में पादरी स्टाक के माध्यम से तत्कालीन वायसराय से भी महर्षि की बातचीत कराई गई थी। महर्षि ने उस समय भी निर्भीक होकर वायसराय से भारत को स्वाधीनता की भावना प्रकट की थी।

१८५७ का स्वातन्त्र्य संग्राम

विदेशी राज्य को महर्षि एक दिन भी भारत मे नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने १८५७ में भी सक्रिय रूप से स्वतन्त्रता सग्राम के भाग लिया था। ऐसे दस्तावेज आजकल प्राप्त हो रहे हैं। सर्व खाप पचायत का इतिहास भी इस में साक्षी दे रहा है। मीर मीरासी भाट का वह पत्र आज भी पचायत में सुरक्षित रखा है जिसमें गुरु विरजानन्द का १८५६ में सर्वखाप पचायत में अग्रेजी राज्य के विरुद्ध भाषण दिया गया था। १०-१२ इतिहास के ग्रन्थ अभी प्रकाशित हुए हैं जिनमें १८५७ के स्वाधीनता सग्राम के विषय में महर्षि दयानन्द के भाग लेने के तथ्य प्रकाशित किए गये हैं। सत्यार्थप्रकाश में १८५७ को भी चर्चा की गई है। विदेशियों के भारत में राज्य होने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए महर्षि लिखते हैं

पराधीनता के कारण—

"विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढाना, बाल्यावस्था में अस्वयम्वर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं" जब आपस में भाई-भाई लडते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है"। आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है"। परमात्मा कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय"।

भारत की उन्नति कैसे हो ?

यह प्रश्न एक दिन उदयपुर में महर्षि से मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने पूछा था, महर्षि ने उत्तर दिया था कि "जब तक एकमत, एक हानि-लाभ, एक सुख दुख परस्पर न मानें, तब तक उन्नति होना कठिन है"। ये पक्तिया दशम समुल्लास के भक्ष्याभक्ष्य आचार अनाचार के प्रकरण से ली गई हैं। उन दिनों महर्षि सम्वत् १९३९ में उदयपुर रह कर ही सत्यार्थप्रकाश को रचना कर रहे थे। इसीप्रकरण में समुद्रयात्रा को चर्चा करते हुए महर्षि लिखते हैं "क्या बिना देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में राज्य व व्यापार किये स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है"। इसी प्रसग मे वे आगे कहते हैं "इसी मूढता से इन लोगो ने चौका का लगाते लगाते विरोध करते कराते, सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं"। दूसरे देशो में द्वीप-द्वीपान्तर में और देश-देशान्तर में राज्य एव व्यापार करते हुए स्वदेश को समृद्ध एव वैभवशाली बनाने की भावना महर्षि दयानन्द के हृदय में किस प्रकार भरी हुई थी यह ऊपर की पक्तियों और उनके लिखे सारे ग्रन्थों में भरी हुई मिलती है।

महर्षि की स्वराज्य की कल्पना कितनी सुन्दर, उत्कृष्ट और विशुद्ध

है यह भी उनके लिखित ग्रन्थों में उपलब्ध। आज से १११ वर्ष पहले, जब देश परतन्त्र था तभी महर्षि ने स्वराज्य, साम्राज्य और अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की चर्चा अपने वेदभाष्य और आर्याभिविनय जैसे प्रार्थना पुस्तको में की थी। तब स्वराज्य का विचार किसी के दिमाग में पैदा न हुआ था।

स्वराज्य का प्रथम नारा

१९०६ में कांग्रेस के अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी ने इस शब्द का उच्चारण किया था। वह भी सत्यार्थप्रकाश को पढकर ही। जब दादा भाई सत्यार्थप्रकाश को पढ रहे थे तो लोकमान्य तिलक ने हंसकर उनसे पूछा था क्या दादा भाई, आप आर्यसमाजी हो गये हो, जो सत्यार्थप्रकाश पढ़ रहे हो? दादा भाई ने उत्तर देते हुए कहा था मुझे सत्यार्थप्रकाश पढने से स्वराज्य की सुन्दर सुगन्ध आती है। मैं उससे प्रेरणा पा रहा हूं। उसके पश्चात् १९१६ में लखनऊ कांग्रेस में लोकमान्य तिलक ने "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' की घोषणा की थी। १९२८ मे लाहौर में कांग्रेस ने इसे अपने ध्येय के रूप में स्वीकार किया था।

किन्तु महर्षि ने आधी सदी से भी पहले जिस स्वराज्य की चर्चा की थी उसका स्वरूप, उनके अत्यन्त सरल, सीधे और साफ शब्दो में यह था कि "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदाय नही है"।

राज्य को बागडोर हमारे हाथ में

महर्षि दयानन्द के सामने यह बात स्पष्ट थी कि ससार में सत्य और न्याय की प्रवृत्ति हमारे हाथों में तभी हो सकती है जब हमारे हाथों में सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की बागडोर हो। इस सच्चाई को महर्षि ने बार बार प्रकट किया है। जो लोग आर्यसमाज को राजनीति से दूर रखकर ससार मे सत्य और न्याय की प्रवृति करना चाहते हैं वे कितनी बडी भूल में हैं यह पाठक स्वय विचार लें। आज जो अपने देश की हालत बिगड रही है उसका कारण आर्यसमाज की सगठित रूप से राजनीति की उपेक्षा अथवा उदासीनता ही है। क्या आर्यसमाज के पास वेद उपनिषद् दर्शन इतिहास नीति ग्रन्थ नहीं हैं जिनमें आर्य राजनीति की रूप रेखा स्पष्ट न की गई हो। सत्यार्थप्रकाश का छठा समुल्लास क्या बन्द कर दिया गया है? महर्षि दयानन्द के बलिदान के पश्चात् हजारो आर्यों ने स्वाधीनता सग्राम में भाग लिया था। कितने बलिदान दिये। आज वे सब बेकार गए। स्वराज्य लिया हमने। आज है उन लोगो के हाथो में जो भारतीय सस्कृति के विरोधी हैं।

आर्यसमाज की स्थापना

१८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। सारे देश में आर्यसमाज का शक्तिशाली सगठन बना। उसके सार्वभौम १० नियम बनाए गये। सभी कुरीतियो एव कुप्रथाओ के विरोध में तूफान उठ खडा हुआ। आर्यसमाज आन्दोलन, जिससे सारे देश में, व विदेश में हलचल मच गई। भारतीय पराधीनता को बेडी तोडने के लिए सर्वप्रथम स्वराज्य प्राप्ति की भावना का प्रचार सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, वेदभाष्य के द्वारा किया गया। वेदविद्या को विज्ञान के युग में प्रतिष्ठित कराने के लिए ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका और वेदभाष्य द्वारा वेद को सब विद्याओ का मूलस्रोत प्रतिपादित किया। मानवजाति को सस्कारित करने के लिए सस्कारविधि द्वारा १६ सस्कारो का प्रवचन किया। आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्राणायाम योगाभ्यास व सन्ध्योपासना का सबको अधिकार प्रदान किया। समस्त विश्व को प्राण एव जीवन प्रदान करने के लिए यज्ञ-हवन का आदेश दिया। पचमहायज्ञों के लिए प्रेरित किया। मानव जीवन में सद्बुद्धि के उदय के लिए ओ३म का जाप व गायत्री मन्त्र जपने का अधिकार मानव मात्र को दिया। महर्षि ने यह राष्ट्रवाद से प्रेरित क्रान्तिकारी कार्यक्रम केवलमात्र भारत ही नही, विश्व को आर्य बनाने के लिए प्रारम्भ किया गया था।

महर्षि राष्ट्रभक्ति से प्रेरित थे

महर्षि ने जो किया, राष्ट्रभक्ति से ही प्रेरित होकर ही किया। गोरक्षा का आन्दोलन गोकरुणानिधि व गोकृष्यादि रक्षिणी सभा बनाकर करोडों हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरिया के पास भेजकर गोहत्या बन्द कराने का महर्षि का महान् प्रयत्न था। राष्ट्रिय शिक्षा नीति बना कर १८८२ मे पजाब के गवर्नर के पास भेजकर उसे सारे भारत में लागू करवाना था। शराबबन्दी की चर्चा महर्षि ने ७५ बार सत्यार्थप्रकाश में की हैं। मद्य, मास की निन्दा उन्होंने अनेकों बार की, वे देश का शराब-मास से पिण्ड छुडाना चाहते थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी में १८७५ में ही अपने ग्रन्थ लिखकर इसे राष्ट्र भाषा बनाने की नीव उन्होने रख दी थी। ईसाई, मुसलमान तथा अन्य विधर्मियो से वे देश की रक्षा करना चाहते थे। अत उन्होंने ११, १२, १३, १४ वा समुल्लास खण्डनात्मक लिखे। आर्यों के लिए अपने मन्तव्य ५१ लिखे। कहा तक लिखें।

आज दिवाली पर उनके बलिदान दिवस पर

हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए आर्यसमाज के आन्दोलन के द्वारा आजतक मुंह बाये खडी उन्हीं पुरानी समस्याओ का डटकर मुकाबला करे। आर्यसमाज आन्दोलन के बिना ढीला पड गया है। आज समय आगया है कि हम सभी राष्ट्रिय समस्याओ का सामना आर्यसमाज द्वारा आन्दोलन खडा करके करें। जब कोई आन्दोलन ही नही है तब फिर आर्यसमाज का और बाकी क्या काम रह गया? आर्यसमाज एक अन्दोलन है न धर्म, न मजहब। इस पवित्र पर्व पर महर्षि का नाम लेकर हाथ में जल उठाकर प्रण करो कि, इस आन्दोलन मे अपने खून की आहुति देकर तन-मन-धन से इसे फिर से प्रज्जवलित करेंगे। तब तो हम महर्षि के प्रति कृतज्ञभाव से श्रद्धाजलि देते हुए कह सकेंगे—

सकल रज रेणुओं को मणियो पर वार डारु।
मणियो को वार डारु सूरज और चन्द्र पै॥
सूरज और चन्द्रमा को स्वर्गहू पै वार डारु।
स्वर्गहू को वार डारु भारत सुखकन्द पै॥
भारत की भूमि को भगतो पै वार डारु।
भगतो को वार डारु देवता स्वच्छन्द पै॥
सकल देवताओ को, ऋषियो पै वार डारु।
ऋषियो को वार डारु ऋषि दयानन्द पै।

यही सादर श्रद्धाजलि है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का

बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

क्र०	पुस्तकों का नाम	मूल्य
१	दी वेदाज (अंग्रेजीभाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२	दी प्रिंसिपल्ज आफ आर्यसमाज— पं० चमूपति एम०ए०	१-५०
३.	जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—पं० चमूपति एम०ए०	३-००
४	निहारिकावाद और उपनिषद्—प० चमूपति एम०ए०	०-५०
५.	आर्यसमाज की विचारमाला—प० क्षितीशकुमार वेदालकार	१-००
६	निजाम की जेल में—लेखक प० क्षितीश	२०-००
७.	ईसाइयो की प्रचार प्रणाली—प० जगत्कुमार शास्त्री	००-१०
८	आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण—प ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
९.	बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य शहीदों का परिचय)	४-५०
१०	ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
११	हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१२	धर्म-प्रवेशिका —डा० रणजीतसिंह	३-००
१३.	धर्म-भूषण ,,	५-००
१४.	पंजाब का आर्यसमाज —प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१५.	आदर्श धातु रूपावली —महावीर आजाद शास्त्री	२-००
१६	वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१७	स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
१८	मूर्तिपूजा —सम्पादक प० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९.	वेदस्वरूप निर्णय ,,	००-७५
२०	वेदाविर्भाव ,,	१-००
२१	वेदभाष्य पद्धति ,,	१-००
२२	ईसाई पादरियों की आर्यसमाज को चुनौती—स्वा० दर्शनानन्द	०-१०
२३	गोकरुणानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४	सत्यार्थप्रकाश ,,	६-००
२५	महर्षि दयानन्द आत्मकथा ,,	०-५०
२६	हमारा फाजिल्का —योगेन्द्रपाल	१-००
२७	बड —स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती	१-५०
२८	वीर हेमू ,,	००-७५
२९	पीपल ,,	१-५०
३०	मिर्च ,,	१-५०
३१	श्लीपद या हाथीपांव की चिकित्सा ,,	०-२०
३२.	बिच्छू विष चिकित्सा ,,	०-५०
३३	लवण ,,	१-२५
३४	विदेशों में मैंने क्या देखा ,,	२-५०
३५	नैरोबी यात्रा ,,	१-५०
३६	ब्रह्मचर्य साधन ९-११ ,,	१०-००
३७.	,, १-२ ,,	१-००
३८.	,, ३ ,,	१-००
३९.	,, ४ ,,	२-५०
४०	,, ५ ,,	२-००
४१.	,, ६ ,,	३-००
४२.	,, ७-८ ,,	२-००
४३.	,, ९ ,,	३-००
४४.	,, १० ,,	१-५०
४५.	,, ११ ,,	२-००
४६	हल्दी ,,	१-५०
४७.	नीम ,,	१-२५
४८.	प० गंगाप्रसाद उपाध्याय—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	१-५०
४९	नास्तिक मत समीक्षा—प० हरिदेव सर्राफ	००-१५
५०	विश्व को आर्यसमाज का सन्देश—महात्मा वेदभिक्षु जी	००-२५

प्राप्ति स्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य जाति के संगठनार्थ हरयाणे का तूफानी दौरा

- शराब, दहेज, चरित्रहीनता, अश्लीलता, मांसखोरी
- बेरोजगारी, शैक्षणिक—आर्थिक—सामाजिक विषमता
- देश की बढ़ती हुई अराष्ट्रीय एवं विघटनकारी प्रवृत्तियों के विरुद्ध

नवयुवक जन जागरण अभियान

का प्रथम दौर

आज सारा विश्व ही जब शोषण रूपी असमानता की भट्टी में धधक रहा है तो भारत और विशेषकर हरयाणा फिर उससे दूर कहां ! ऐसी विषम परिस्थिति में क्या आर्यसमाज की युवा शक्ति को अपना आत्मनिरीक्षण नहीं करना चाहिए ? यदि हां ! तो फिर आइए इस अद्भुत कार्यक्रम में अपना तन मन-धन से सम्पूर्ण सहयोग देकर तूफानी दौरा की अत्यधिक सफलतार्थ कृपया एक बार अवश्य मिलने का अवसर दें।

युवक जनजागरण दौरा ३१ अक्तूबर ८६ को प्रात: ८ बजे यज्ञ के साथ आर्यसमाज कोसली (रोहतक) से प्रारम्भ होकर १० दिन तक हरयाणा के विभिन्न भागों में युवा शक्ति के संगठन को दृढ़ता पकड़ता हुआ ९ नवम्बर ८६ को दोपहर २ बजे आर्यसमाज मन्दिर जैकमपुरा गुड़गांवा में विशाल जनसभा के साथ समाप्त होगा।

	प्रात ९ से ११ बजे तक	दोपहर बाद २ से ५ बजे तक
३१ अक्तूबर	आर्यसमाज कोसली	आर्यसमाज दादरी
१ नवम्बर	,, हांसी	,, रामनगर जीन्द
२ ,,	,, सालवन करनाल	,, गुरुकुल कुरुक्षेत्र
३ ,,	,, माडल टाउन करनाल	,, माडल टाउन पानीपत
४ ,,	,, —	,, समालखा
५ ,,	,, रोहणा सोनीपत	,, बहादुरगढ़
६ ,,	,, नजफगढ़	,, पलवल
७ ,,	कान्हा गोशाला बहीन फरीदाबाद	,, फिरोजपुर झिरका
८ ,,	दयानन्द वैदिकाश्रम भादस गुड़गांवा	
९ ,,	आर्यसमाज जैकमपुरा गुड़गांवा में ११ से २ बजे तक विशाल नवयुवक जनसभा	

विशेष सूचना :— हरयाणा व दिल्ली प्रान्त के पुरोहित, शास्त्री व आर्य नवयुवक, संगठन कार्यकर्त्ता अपने नव विचारों के साथ ९ नवबर को गुड़गांव में सादर आमन्त्रित हैं।

उपरोक्त सभाओं में आचार्य श्री सत्यप्रिय जी वैदिक आश्रम तिजारा, ब्र महेन्द्रसिंह शास्त्री, महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सुरेश कुमार जी शास्त्री एवं स्थानीय संयोजक तथा विद्वान् कार्यकर्ता क्रमश श्री अशोक कुमार जी (कोसली), ब्र संजयदेव जी (दादरी), श्री अतरसिंह क्रान्तिकारी (हांसी), प्रो० ओमकुमार जी (जीन्द), श्री सुमेरसिंह जी भजनोपदेशक (सालवन), आचार्य देवव्रत जी (कुरुक्षेत्र), श्री जगदीशचन्द्र वसु (करनाल), श्री प्रियदत्त जी शास्त्री (पानीपत), श्री रणधीर जी शास्त्री (समालखा), डा. महावीर जी (रोहणा), श्री सुशीलचन्द्र जी शास्त्री, ब्र राजपाल जी (बहादुरगढ), श्री रघुनाथ जी (नजफगढ़), श्री शिवराम वाचस्पति (पलवल), श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री (बहीन), श्री सत्येन्द्र शास्त्री (फिरोजपुर झिरका), स्वामी अमरानन्द जी (भादस), श्री ईश्वरचन्द्र जी शास्त्री, अजानसिंह अध्यापक (गुड़गांवा)

संयोजक :— नवयुवक जनजागरण अभियान समिति

कार्यालय :— आर्यसमाज मन्दिर जैकमपुरा गुड़गांवा

दीपावली पर विशेष—

लूथर से भी महान् थे महर्षि दयानन्द सरस्वती

किसी विद्वान् का यथार्थ कथन है कि "महापुरुष होने का अर्थ है गलत समझा जाना" महापुरुषों को ससार प्रायः गलत ही समझता आया है। उनके जीवनकाल में तो लोग उन्हें प्राय पहचान ही नही पाते। महामानव दयानन्द इसके अपवाद नहीं थे। ससार ने उन्हें समझने में बहुत भूल की है और कर रहा है। इसी समझने में भूल के कारण ही लोग उन्हें प्राय कभी कुछ तो कभी कुछ कह दिया करते हैं और कभी किसी एक महापुरुष के समान बताने लगते हैं तो कभी किसी दूसरे के। कोई उन्हें दूसरा मार्टिन लूथर कहता है तो कोई दूसरा शकराचार्य। पायनियर ३० दिसम्बर १८७९ के हवाले से दयानन्द चरित्र में लिखा है कि वह अकाट्य तर्क और अग्नि-स्राविणी वाग्मिता के साथ द्वितीय लूथर के समान उन दूषणों के विरुद्ध प्रचार करता था जिन्होंने कालान्तर में पूर्वकाल मे उच्च पदस्थ धर्म को भारावनत और दूषित कर दिया था"। (दयानन्द चरित्र पृष्ठ १५७-१५८) अग्रेजी पढे लिखे लोग महर्षि दयानन्द की लूथर के साथ उपमा देने में अपनी कृतकार्यता समझते हैं। किन्तु हमारी दृष्टि में महर्षि दयानन्द की लूथर से उपमा देकर उनके व्यक्तित्व, कर्तव्य एव उद्देश्य का अवमूल्यन करना है। यह सब महर्षि दयानन्द को ठीक से न समझने के कारण ही हो रहा है। आचार्य नरदेव शास्त्री ठीक ही लिखते हैं कि ससार चकित है कि उसने स्वामी दयानन्द को समझने में इतनी भूल क्यों की? उस समय ससार यदि स्वामी दयानन्द को न समझ सका, तो इतने आश्चर्य की बात नही है। सबसे बडा आश्चर्य यह है कि स्वामी दयानन्द के अनुयायी भी अब तक स्वामी जी के पूर्ण स्वरूप को नही समझ सके हैं"। (दयानन्द कोमेमोरेशन वाल्यूम, पृष्ठ ३८६)

यद्यपि आचार्य नरदेव शास्त्री ने ये शब्द आधी शदी पूर्व ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर लिखे थे, पर लगता है कि ये शब्द आज के लिये लिखे गये हैं। यह सत्य है कि अधिकाश आर्यगण भी आज तक महर्षि को ठीक से समझ नही पाये। सत्य तो यह है कि क्षुद्र-दृष्टि वाले हम लोग भला महर्षि का समग्र स्वरूप देख भी कैसे पाते। महर्षि के समग्र स्वरूप को न देख पाने के कारण हम कभी उनकी उपमा किसी एक से देने लगते हैं तो कभी किसी दूसरे से। पर वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द अपनी उपमा आप ही थे। हमें तो योगिराज अरविन्द के ये शब्द सारयुक्त प्रतीत होते हैं कि वह Unique in his type as he is unique in his works.

जहा तक लूथर और स्वामी दयानन्द का सम्बन्ध है महर्षि लूथर से अनेक अर्थों में कहीं-कहीं बढ़-चढ कर हैं। इस सम्बन्ध में लाला लाजपतराय का यथार्थ कथन है कि "लूथर को वर्मज की प्रसिद्ध कौंसिल ने बुलाया था कि वह अपने विश्वास का प्रमाण दे और अपने दोषो को दूर करे। वहा जर्मन, रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रतिनिधि थे और यहा सारी काशी थी और स्वामी दयानन्द आप (स्वय) चेलिज देकर उनसे शास्त्रार्थ करने को गये थे। स्वामी दयानन्द भी अकेले थे और लूथर भी अकेला था। लूथर अपने डीफैन्स (बचाव) के लिये बुलाया गया था, स्वामी दयानन्द आप (स्वय) धावा करके मूर्तिपूजा की राज धानी पर गया था। आहा! क्या ही दृश्य था, एक गुजराती ब्राह्मण सन्यासी जिसके सग न कोई मित्र था, न कोई सेवक और न कोई सहायक था। तनतनहा अकेला लगोटा बांधे, भस्मी रमाये आसन पर बैठा हुआ परमात्मा के आश्रय काशी की सारी विद्वत्ता और पौराणिक धर्म के समस्त आचार्यों का सामना करता रहा। सारे हिन्दू मतमतान्तर विद्याबल, प्रताप, आचार्य आदि अपने पूर्ण बल से सामने को निकलते हैं और परास्त होकर अपना सा मुख लिये लौटते हैं" (महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका काम, पृष्ठ १६६-१६७)

लूथर और महर्षि दयानन्द के चिन्तन का मौलिक अन्तर यह है कि लूथर केवल अपने इर्द-गिर्द ही देखता था जबकि महर्षि चारों ओर बहुत दूर-दूर तक। तात्पर्य यह कि लूथर ने केवल ईसाई धर्म की मिथ्या बातो की ही आलोचना की जबकि महर्षि दयानन्द ने सभी मतमतान्तरों की मिथ्या बातो का खण्डन किया था। फिर लूथर केवल एकपक्षीय सुधार चाहता था, जबकि महर्षि धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रो में। अत महर्षि दयानन्द को भारत का लूथर कहना उनका, अवमूल्यन करना होगा। और फिर यदि किसी को कहना ही है तो लूथर को दूसरा दयानन्द कहा जा सकता है। तात्पर्य यह कि उपमान उपमेय मे सदा उत्कृष्ट हुआ करता है। अत हमें उपमा ही देनी है तो महर्षि से उपमा अन्य लोगो को दिया करें न कि अन्य लोगों से।

यशपाल आर्यबधु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर,
मुरादाबाद २४४०३२

'आर्य वीरदल' कैथल के बढ़ते कदम

'आर्य वीर दल' कैथल द्वारा विजया दशमी के पर्व पर सगठन का परिचय दिया गया प्रात: ८ बजे आर्यसमाज, क्योडकद्वार मे विशेष यज्ञ किया गया आर्यकन्या पाठशाला व आर्य वीर दल ने सास्कृतिक कार्य-क्रम प्रस्तुत किया। शहर के विद्वान् पुरुषों ने विजयादशमी के सार्थक अर्थ व वास्तविकता पर विचार प्रस्तुत किए। इस पर्व के मनाने में आर्यसमाज, स्त्री आर्यसमाज ने तथा आर्यों ने बढ-चढ कर भाग लिया। 'वीर निधि' का भी सचय किया गया।

'आर्य वीरदल' द्वारा प्रथम बार इस पर्व पर शहर के प्रमुख चौराहो पर तलवार, छुरी, नॉन चैकस, लाठी का प्रदर्शन दिखाकर न केवल शोभा यात्रा को ही चार चांद लगाए अपितु दर्शको को भी आकर्षित किया। शहर को यह पता चल गया है कि आर्यसमाज सुप्त नही है अपितु उसके वीर कुशल प्रशिक्षण में प्रशिक्षित भी हैं। आर्यसमाज के पदाधिकारियो व सभासदो ने 'आर्य वीरदल' को जागृत रखने के लिए पूर्ण सहयोग देने का भी वचन दिया है। रामलीला मैदान, चन्दाना गेट, कैथल में भी मनमोहक प्रदर्शन किया गया।

—बृजमोहन आर्य (शाखानायक, कैथल)

आकाशवाणी रोहतक से

दीपावली (स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस) पर १ नवम्बर १९८६ को सायकाल ९-१५ बजे श्री वेदव्रत शास्त्री की वार्ता प्रसारित की जाएगी। शीर्षक होगा "समाजोत्थान व स्वतन्त्रताप्राप्ति में स्वामी दयानन्द का योगदान"

मिट रही है शान महर्षि दयानन्द की

ए आर्यों मिट रही है शान, महर्षि दयानन्द की,
उठ रही हैं आर्य भूमि पर, आखे दुश्मनो की।
जन जन को जगाओ आर्य भूमि की सरहद पर,
बेवक्त के बादल छा रहे, बुझ रही ज्योति ओ३म् की।
फैलाओ वेदों का प्रचार, ससार की हर बस्ती मे,
उठ रहा धुआ हर तरफ, जल रही आग मौत की।
चुभो रहे नुकीले काटे उग्रवाद, इन्सानियत में,
खड़ी कर दो सेनाए हर लाश पर, आर्य वीरदल की।

—रामकुमार धीमान, गन्नौर (सोनीपत)

दीपावली सुपर्व मनायें

आओ घर-घर दीप जलाये।
दीपावली सुपर्व मनायें ॥

बीत गये युग राग-द्वेष अरु काम-क्रोध मद-मोह निशा में।
सत्यमार्ग को तजकर चलते रहे सदा अवरोह दिशा में॥
द्वेषपूर्ण संकीर्ण हृदय में प्यार प्रीति के भाव जगायें ॥१॥

कोई नही पराया यहा पर सब जग है परिवार हमारा।
विश्वबन्धु बनकर मानव पुनि मानव का हो सदा सहारा॥
भेदभाव की गिरा दिवारे जातिवाद को मार भगायें ॥२॥

कितने दीप जलाये अब तक मिटा न दुखदायी अधियारा।
सत का तेज नही था उनमे इससे कर न सके न उजियारा।
आत्मज्योति को जला देश से अधकार अज्ञान मिटाये ॥३॥

दीपक नही सूर्य बन करके दयानन्द ऋषिराज पधारे।
वेदज्ञान का कर प्रकाश वे परमधाम को आज सिधारे।
वैदिक पथ के पथी बनके हम श्रद्धा के सुमन चढायें ॥४॥

सत्यधर्म मानव के हित मे ऋषि ने यह बलिदान दिया था।
अमृत हमें पिला कर "छाजूराम" स्वय विषपान किया था।
उनका शुभ सन्देश सुनाने जग मे वैदिक नाद बजाये ॥५॥

छाजूराम शर्मा शास्त्री ए एस वी (रजि०)
नई दिल्ली–६५

दीवाली की शाम

आती है हर वर्ष दीवाली।

महान् आत्मा देव दयानन्द कर गये तन को खाली ॥
पौधा आर्यसमाज का जग मे गये लगाय।
हरा भरा रखना इसे जाय नही कुमलाय।
छाई रहे इस में हरियाली—आती है हर वर्ष दीवाली ॥१॥

देख दुर्दशा देश की ब्रह्मचर्य व्रतधार।
हिन्दू जाति पर किये अनगिनती उपकार।
मिटाई अविद्या की घटा काली, आती है हर वर्ष दीवाली ॥२॥

पूर्ण संन्यासी वेदवित् ब्रह्मनिष्ठ विद्वान्।
विकट संकटों को सहा अमृत दे विषपान।
सहे ईंट पत्थर व गाली, आती है हर वर्ष दीवाली ॥३॥

दया दयानन्द कर गये कातिल दिया बचाय।
घातक को निजकरो से धन भी मये गहाय।
पिलाई जिसने जहर की प्याली, आती है हर वर्ष दीवाली ॥४॥

—ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठता वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

ओ३म्　　कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री　　　सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३, अङ्क ४७ ७ नवम्बर, १९८६　　वार्षिक शुल्क २०। आजीवन शुल्क २०१। विदेश में ३ पौंड एक प्रति ५० पैसे

आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक उन्नति का अनोखा संगम—हवन यज्ञ

—यशपाल आर्यबन्धु

देवयज्ञ वैदिक ऋषियों का एक अभूतपूर्व अनोखा आविष्कार है। ऐसा आविष्कार जो विज्ञानसम्मत भी है और अध्यात्मसम्मत भी। अर्थात् देवयज्ञ मे आध्यात्मिक और आधिभौतिकता दोनो का एक अद्भुत अनोखा सगम दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए इसे आधिभौतिक एव आध्यात्मिक उन्नति का सर्वोत्कृष्ट साधन माना गया है। प्राचीन ऋषियो ने देवयज्ञ की महिमा को भलीभाति समझा था, और उससे होने वाले उपकारो को जाना था। इसीलिए नित्य दिन में दो-दो बार इसके करने का विधान किया था। जब तक यज्ञ का प्रचलन रहा, देश सुखो से पूरित एव दु खो से रहित था।

इस यज्ञ को स्वर्गप्राप्ति हेतु दिव्य नौका कहा गया है। इसीलिए यज्ञ अकेला नही सपत्नीक करने का विधान है। तात्पर्य यह कि यज्ञ मे पति-पत्नी दोनो के सम्मिलित होने की अनिवार्यता है। यहा तक कि यदि इन दोनो मे से एक उपस्थित न हो सके तो दूसरे के लिए यह आवश्यक एव अनिवार्य था कि वह दोनो की आहुति डाले। और यदि दोनो समय नही कर सकता तो फिर एक ही समय मे दोनो समय की आहुतिया दी जाये। तात्पर्य यह कि यज्ञ हमारे जीवन से इतना जुडा हुआ था कि वह कभी छोडा नही जा सकता था। उसमे लघन का कही भी कोई अवकाश नहीं था।

शतपथ ब्राह्मण में एक रोचक सवाद आया है जिससे यज्ञ की अनिवार्यता का आभास होता है। इसमें महर्षि याज्ञवल्क्य से जो प्रश्न किये गये और उन्होंने उनके जो-जो उत्तर दिये, वे अत्यन्त रोचक हैं। "आज्याहुतयो ह वा एता देवानाम्" इस शतपथ वाक्य के अनुसार यज्ञ के लिए घृत और दूध आदि की ही आवश्यकता हुआ करती है। किन्तु कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जावे कि जब घृत दूध आदि न मिलें तो यज्ञ कैसे किया जावे ? उपरोक्त सवाद में यही प्रश्नोत्तर रूप में कहा गया है। प्रश्नोत्तर इस प्रकार है —

प्रश्न—यत्पयो न स्यात् केन जुहुया इति ? अर्थात् यदि दूध न हो तो किससे हवन करे ?

उत्तर—व्रीहियवाभ्यामिति—धान और जौ से करे।

प्रश्न —व्रीहियवौ न स्याता केन जुहुया इति ? यदि धान और जौ न हों तो किससे होम करे ?

उत्तर—या अन्या ओषधय इति—जो और ओषधि हों उनसे करे।

प्रश्न—यदन्या ओषधयो न स्यु केन जुहुया इति ? यदि अन्य ओषधि भी न हो तो किससे होम करे ?

उत्तर—या आरण्या ओषधय इति। जगल के अन्न से करे।

प्रश्न —यदि आरण्या ओषधयो न स्यु केन जुहुया इति ? जो जगल के अन्न भी न हो तो किससे होम करे।

उत्तर—वानस्पत्येनेति—वनस्पति द्वारा करे।

प्रश्न—यदि वानस्पत्य न स्यात् केन जुहुया इति? यदि वनस्पतिया भी न हों तो किससे करे ?

उत्तर—अद्भिरिति—जल से करे।

प्रश्न —यदापो न स्यु केन जुहुया इति ? यदि जल भी न हो तो किससे करे ?

उत्तर—न वा इह तर्हि किचनासीदथैतदहूयतैव सत्य श्रद्धायामिति। यदि कुछ नही हो तो बिना आहुति दिया हुआ ही सत्य की श्रद्धा में आहुति दे। श प ११।३।३-४

उपरोक्त प्रश्नोत्तर इस बात का प्रमाण है कि यज्ञ एक अनिवार्य कृत्य है। साथ हो इस बात का भी यह द्योतक है कि यज्ञ केवल आधिभौतिक क्रिया-कलाप अथवा कर्मकाण्ड मात्र ही नही अपितु यह आध्यात्मिकता की भी दिव्य भावना अपने मे समेटे हुए है। अन्यथा सत्य की श्रद्धा में आहुति देने की बात का क्या प्रयोजन था। स्पष्ट है कि यज्ञ केवल अग्नि में घृत आदि का होमना ही नही अर्थात् यह केवल भौतिक जल-वायु आदि की शुद्धि का कारण ही नही अपितु यह एक आध्यात्मिक साधना भी है। यदि ऐसा न हो तो यज्ञ में वेदमन्त्रो के पाठ का विधान ही क्यो किया जाता ?

हवन यज्ञ में मन्त्रपाठ का प्रयोजन बताते हुए महर्षि लिखते हैं—दो काम यदि एक ही समय मे हो तो उन्हे करना चाहिये, ऐसा उद्देश्य कर प्राचीन आर्य लोगो ने जब हाथो को होमादिक द्रव्यो की व्यवस्था करने में लगाया तब मुंह खाली न रहे, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना मुह से होती रहे, इसलिये पहिले के ऋषि लोग वेद-मन्त्र कहते थे और ब्राह्मण लोगो ने कण्ठस्थ वेद आज तक किया, इस लिए वेद विद्या भी अबलौं बनी रही है। फिर यह भी कि वेदपाठ करने से परमेश्वर की भक्ति होती थी जिससे विचार शक्ति भी उत्पन्न होती थी। दूसरा ऐसा भी विचार है कि जो हाथो से प्रयोग होता है, उसके जो मन्त्र उस समय कहे जाते हैं, उनसे कुछ भी सम्बन्ध नही रहता, इससे मन्त्रोच्चार कर्म के उद्देश्य से नहीं होता, किन्तु परमेश्वर की स्तुति मुंह से होती रहे, यही प्रधान उद्देश्य है और कोई-कोई मन्त्र ऐसे भी हैं जिनमें होम के लाभ कहे गये हैं। सारांश यह कि वेद मन्त्रो को कहने से वेद की रक्षा ही मुख्य प्रयोजन है।" (पूना प्रवचन, यज्ञ सस्कार विषयक प्रवचन) यही बात

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सफलता का सबसे बड़ा सूत्र—साहस और संकल्प

—विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका

साहसी व्यक्ति की कोई कितनी आलोचना करे, उसके नेतृत्व के बारे में सन्देह नही होता। उनकी प्रतिज्ञा भगीरथ की प्रतिज्ञा होती है, उनका हठ हमीर का हठ होता है। वे साहस नहीं गवाते, घबड़ाते नही और अपने जीवन के विकास के मार्ग में आयी प्रत्येक बाधा को उखाड फेंकते हैं। वे अपने पथ से कभी विचलित नही होते और धीरे-धीरे उनकी शक्ति विराट् शक्ति का रूप धारण करती चली जाती है। अपने लक्ष्य पर दृष्टि गडाए वे आगे ही आगे बढते चले जाते हैं।

ध्रुव सकल्प ही वह प्रधान गुण है जिसके बलपर कोई भी व्यक्ति जीवन मे सफलता प्राप्त कर सकता है। उनमें भले ही अन्य गुण अधिक विकसित न हो। चाहे उनमें कुछ दुर्बलताए भी क्यो न हो, परन्तु अटूट निश्चय, अध्यवसाय एव निरन्तर सघर्ष और साहस तथा सकल्प के बल पर वे अवश्य ही विजयी होते हैं। कठोर परिश्रम से वे कभी घबराते नही, कष्टो से डरते नहीं, निराशा की भावना उनके मन को छू नही पाती। निरन्तर अपने उद्देश्य के लिए कार्य करते रहना उनके स्वभाव का अनिवार्य अग होता है।

एक दिन एक लडके ने एक बडी दुकान के बाहर एक बोर्ड लगा हुआ देखा, जिस पर लिखा था—"एक लडके की आवश्यकता है।" उसने तुरन्त बोर्ड को उतार कर नीचे रखा तथा दुकान में चला गया। दुकान के मालिक ने क्षुब्ध होकर पूछा "तुमने बोर्ड क्यो उतार कर नीचे रख दिया?" लडके ने कहा, "अब उसकी आवश्यकता नहीं रही। मैं सेवा के लिए उपस्थित हूं।" दुकानदार उस लडके के साहस से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उसे अपने यहा तुरन्त रख लिया। क्या इस सफलता के पीछे उस लडके का साहस ही नहीं काम आया?

जौन ए० जौन्सन जब दो बार अमेरिका की सीनेट के चुनाव मे हार गया, तो किसी ने उससे पूछा, "क्या अब फिर कभी चुनाव में खडे होओगे?" "क्यो नही?" जोन्सन ने तत्काल उत्तर दिया, "मैं सोचता हू कि अवश्य फिर चुनाव लड़ूंगा क्योकि इस हार से मेरा दिल नही टूटा है। मेरा साहस और आत्मविश्वास यथापूर्व है। अत: जिससे चुनाव में हारा हू, उससे मित्रता करूंगा ताकि अगली बार मैं भी विजयी हो सकू।" और अन्त में वह चुनाव जीतकर ही रहा।

जब ग्रान्ट शिलोह की पहली लडाई मे हार गया तो उसने दुबारा आक्रमण किया, वह भागा नही। उत्तरी अमेरिका की दोनो पार्टियो ने और प्राय सभी समाचार पत्रो ने लिखा कि ग्रान्ट को हटा दिया जाना चाहिए। कांग्रेस के अधिकाश सदस्यो और राष्ट्रपति के मित्रो ने उसे सलाह दी कि सेना की कमान किसी अन्य व्यक्ति को सौंपी जाये परन्तु लिंकन ने केवल यह उत्तर दिया, "मैं इस आदमी को नही छोड सकता। यह लडता है, बातें नही करता। वह बुलडाग के समान पराक्रमी है, जब एक बार किसी चीज पर अपने दात गडा लेता है तो उसे किसी तरह नही छोडता।" और अन्त में ग्रांट की विजय होकर ही रही।

कुछ लोग काम तो बडे उत्साह से आरम्भ करते हैं परन्तु जरा सी असफलता मिलने ही पीठ दिखाकर भाग जाते हैं, जबकि कुछ अन्य लोग पहली असफलता से उत्साहित होकर अपनी आन्तरिक शक्तियो का आह्वान करते हैं, दृढ निश्चय के साथ सकल्प करते हैं कि हम अवश्य सफल होगे। कुछ लोगो के लिए प्रत्येक पराजय वाटरलू की पराजय है परन्तु साहसी और सकल्पवान् व्यक्तियों के लिए कोई वाटरलू नहीं है। जिसका साहस नही हारा, वह कभी नही हार सका। जो बार-बार सतत प्रयास करता रहता है, वह कभी नही जानता कि पराजय किसे कहते हैं।

एक दिन सर थामस लिपटन अपने अनगिनत व्यापार सस्थानो में से एक में गये। जब वे भण्डार से बिना ही कुछ खरीदे जाने लगे, तो एक क्लर्क, जो उन्हें नही पहचानता था उनके पास आया। उसने पास आते ही "लिपटन पनीर" का गुणगान करना शुरु कर दिया। सर थामस लिपटन ने उसे टालने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु सब व्यर्थ। सर थामस ने उससे कहा "इस समय मुझे पनीर की आवश्यकता नही है, मैं तो केवल भण्डार देखने आया था" परन्तु क्लर्क ने फिर जोर देकर कहा और लच्छेदार शब्दो में पुन: पनीर का गुणगान करने लगा। परिणामत पनीर खरीदकर, मूल्य चुकाने के बाद ही भडार से निकलना पडा और कुछ दिनो बाद उस क्लर्क की उन्नति का आदेश जारी कर दिया गया।

दृढ निश्चयी के लिए ससार रास्ता छोड़कर एक तरफ हट जाता है। जो लगातार एक ही उद्देश्य पर स्थिर रहकर निरन्तर कार्य करता रहता है, जिसे अपनी सफलता पर अटूट विश्वास रहता है प्रत्येक व्यक्ति उस पर विश्वास करता है। जो कठिनाइयो और विपत्तियो में भी स्थिर चित्तता एव एकाग्रता से अपने लक्ष्य पर दृष्टि गडाए डटा रहता है, वह अवश्य ही विजयी होता है। साहस ही वह शस्त्र है जिससे सभी सकट कट जाते हैं। साहस के बल पर मनुष्य ने क्या-क्या नही किया? साहस के बल पर ही हठी किसानो ने ऊसर भूमि को लहलहाते खेतो में बदल डाला। साहस के बल पर ही कई स्त्रियो ने अपने परिवार का बोझ स्वय सभाल लिया। साहस के बल पर सैकडों मनुष्य तूफान, बाढ़, अग्निकाण्ड और भूकम्प जैसे सकटों का सामना करने के लिए अपनी जान पर खेलने में भी पीछे न रहे।

साहस के बल पर ही कई व्यापारी विषम मन्दी में भी नया व्यापार खोलकर मालोमाल हो गये। साहस का आसरा लेकर कई गरीब बालक काम के साथ खाली समय स्वतन्त्र अध्ययन करते हुए उन्नति की उच्चतम चोटी तक जा पहुचे। साहस के आधार पर कितने ही अगहीन व्यक्ति न केवल अपना ही गुजारा चलाते मैं, बल्कि सारे परिवार का बोझ उठाने में भी सफल हुए।

साहस के बल पर ही सूरदास और मिल्टन महाकवि हो गये।

साहस किसी भी दुर्बलता या त्रुटि का भरपाई करने वाला श्रेष्ठ गुण है। साहस के आधार पर ही पहाडो को चीरकर सुरगे बनाई गयीं। तार और टेलिफोन का जाल बिछाया गया। महाद्वीपों की खोज की गयी और ससार की सबसे बडी लडाइया साहस के बल पर ही लडी गयीं। उद्देश्य पर मर मिटने की कसम खाने वाले सदा विजयी होते रहे।

न्यूयार्क के एक बडे व्यापारी के पास उसका एक मित्र अपने एक नवयुवक सम्बन्धी को लेकर गया। उसने व्यापारी के सामने नवयुवक की बडी सराहना की और उसकी योग्यताओ का जी खोलकर वर्णन किया। जब वह सब कुछ बोल चुका तो व्यापारी ने प्रश्न पूछा—"क्या स्थिर चित्त से टिककर यहा काम करेगा? जब भीषण बाधाए मुह बनाए सामने आयेंगी, तब क्या आप धैर्य धारण करके स्थिर रहेंगे?"

हर जगह ऐसे व्यक्ति दिखायी पडते हैं, जो बाधाए आने पर भाग गये, जब उनकी सहनशक्ति ने जवाब दे दिया। उसमें साहस न था कि वे विजय प्राप्ति तक डटे रहते। यदि व्यक्ति में केवल एक ही गुण स्थिरता विद्यमान है तो भले ही उसमें अन्य सभी गुणों और योग्यताओं की कमी ही क्यों न हो, वह अवश्य सफल होगा। (युगवार्ता से साभार)

शोक समाचार

आर्यसमाज मुरथला जिला रोहतक के प्रधान महाशय दयाराम आर्य का ७७ वर्ष की आयु में २४ अक्टूबर, १९८६ को निधन हो गया। आर्यसमाज कोसली के प्रधान श्री अशोक आर्य ने अन्त्येष्टि वैदिक मन्त्रो के साथ कराई। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेक नर-नारी उपस्थित थे।

शोक प्रस्ताव द्वारा उनके निधन पर दु:ख प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। उनकी स्मृति में ५ नवम्बर को यज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन किया है। —सभामन्त्री

दीपावली पर (१ नवम्बर १९८६) सायंकाल ९.१५ बजे आकाशवाणी से प्रसारित--

समाजोत्थान और स्वतन्त्रता प्राप्ति में स्वामी दयानन्द का योगदान

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम में सन् १८२४ में हुआ था। उनका जन्म का नाम मूलशंकर था। ब्राह्मण कुलपरम्परा के अनुसार उनकी शिक्षा दीक्षा सम्पन्न हुई। वैराग्यभावना की प्रबलता के कारण विवाह आदि सांसारिक बन्धनों से छुटकारा पाने के लिये आपने युवावस्था में ही सम्पन्न परिवार को छोड़ दिया और सच्चे शिव की खोज में पहले ब्रह्मचारी के रूप में और कुछ काल पश्चात् सन्यासी के वेश में सारे भारत का भ्रमण किया। इस देशाटन में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत की सामाजिक और राजनीतिक दुर्दशा का भलीभान्ति अवलोकन किया।

इन्हीं दिनों नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, महारानी झांसी आदि स्वाधीनता संग्राम के संचालकों से स्वामी दयानन्द की भेंट हुई। ३३ वर्षीय नवयुवक सन्यासी ने अन्य भारतीय साधु-सन्तों के साथ मिलकर कमल के फूल और चपाती के द्वारा क्रान्ति का सदेश सर्वत्र पहुंचाया। तीर्थयात्रा के मिष से नाना साहब पेशवा ने लगभग समस्त उत्तर भारत का भ्रमण करके भारत की तात्कालिक स्थिति का अवलोकन किया था। सर्वखाप पंचायत शोरम जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के पुराने रिकार्ड के अनुसार गुरु विरजानन्द जी के लेखक मिर्जा अफजल बेग ने लिखा है कि दो सफेद घोड़ों पर दो बलवान् साधु रात्रि में गुरु विरजानन्द जी से मिलने आते थे। गोल मुखवाले साधु स्वामी दयानन्द थे। उनका नाम मूलशंकर लिखा है। दूसरे साधु एक अखाड़े के महन्त धर्मगिरि गोसाई थे। इस विषय में "देश भक्तों के बलिदान" पुस्तक में विस्तारपूर्वक प्रमाणसहित लिखा है।

सन् १८५७ की क्रान्ति के विफल हो जाने पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पराधीन भारत की तात्कालिक स्थिति के अनुसार अपना मार्ग बदलकर भाषण और लेख के द्वारा समाजोत्थान और स्वतन्त्रता प्राप्ति का कार्य प्रारम्भ कर दिया। स्वामी दयानन्द ही वह प्रथम भारतीय था जिसने अंग्रेजों के साम्राज्य से सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की मांग की थी। वे अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—

"कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्णसुखदायक नहीं।

वेदमन्त्रों के आधार पर लिखी अपनी ईश्वर प्रार्थना पुस्तक "आर्याभिविनय" में आपने लिखा है—"अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों, हम लोग पराधीन कभी न हों।"

इससे स्वामी दयानन्द की देशभक्ति और राष्ट्रीय विचारधारा का पता लगता है। राष्ट्र के संगठन और उत्थान के लिये नाना मत-मतान्तर और जाति पाति के झंझट को मिटाकर एक वैदिक धर्म, एक भाषा और एकसमान स्वदेशी वेशभूषा और खान पान का प्रचार किया। सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में अध्ययनाध्यापन के प्रकरण में स्वामी जी ने लिखा है—

"सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हों। सब को तपस्वी होना चाहिए।

प्रत्येक देशवासी की अनिवार्य शिक्षा के बारे में आगे लिखते हैं—"इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिये कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।"

भारतीय समाज के आचार विचार को उच्च बनाने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सदाचार एवं ब्रह्मचर्य को आवश्यक बतलाया। यही माता पिता का कर्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन-मन-धन से विद्या धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।"

हमारे देश में स्त्री और पुरुषों की संख्या लगभग बराबर है। सत्तर करोड़ भारतीयों में ३५ करोड़ स्त्रियां हैं। इसके अतिरिक्त तथाकथित शूद्र अथवा पिछड़ी हुई जातियों के लोग भी करोड़ों की संख्या में हैं। देश के थोड़े से स्वार्थी लोगों ने पढ़ने पढ़ाने का ठेका लेकर "स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः" इत्यादि कपोलकल्पित श्रुतियों के आधार पर स्त्रियों और शूद्रों से पढ़ने पढ़ाने का अधिकार छीन रखा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस सामाजिक अन्याय के विरुद्ध बड़े जोर से आवाज उठाई और

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥

यजुर्वेद (२६।२) के मन्त्र द्वारा सिद्ध किया कि वेदादि शास्त्र पढ़ने पढ़ाने का और सुनने सुनाने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इन के शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं।

आज हम देख रहे हैं भारत की नारियां पढ़ लिखकर उच्च पदों पर आसीन हैं। इसी प्रकार शूद्र अथवा अन्त्यज वर्णसंकर एवं पिछड़े कहे जाने वाले लोग अपने विद्यादि गुणों के कारण सर्वत्र समान रूप से हमारे समाज में उच्च पदों पर आसीन हैं और सम्मान के पात्र हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में—

जो आर्ज वेदध्वनि गूंजती है,
कृपा उन्हीं की यह कूजती है।

समाजोत्थान के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बाल-विवाह, वृद्धविवाह और अनमेल विवाह का निषेध करके गुण कर्मानुसार युवक युवतियों के विवाह का विधान किया तथा विधवा विवाह और नियोग प्रथा को वैदिक बतलाकर सामाजिक सदाचार की स्थापना की। नारीजाति को सामाजिक शोषण से मुक्ति दिलाई।

हमारे समाज में जन्मगत जाति के कारण पिछड़े लोगों को विशेष रूप से उन्नति के अवसर नहीं मिलते थे। स्वामी जी ने शास्त्रों के प्रमाणों से मनुस्मृति और गीता में वर्णित गुण कर्मों के आधार पर ब्राह्मणादि चार वर्णों की स्थापना की। इसके अनुसार किसी भी जाति कुल वा परिवार में उत्पन्न व्यक्ति विद्यादि शुभ गुणों के आधार पर समाज में सर्वोच्च स्थान और सम्मान प्राप्त कर सकता है।

भारतवासियों को अपना गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास स्मरण करवा कर उनमें व्याप्त हीनभावना को दूर करने के लिये स्वामी जी ११ वें समुल्लास में लिखते हैं—

आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसी लिये इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्योंकि सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।... ...जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि

है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

"सृष्टि से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था, अन्य देश में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे, क्योंकि कौरव पाण्डव-पर्यन्त यहाँ के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चलते थे।"

"महाराजा युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारतपर्यन्त यहा के राज्याधीन सब राज्य थे। सुनो! चीन का भगदत्त, अमेरिका का बब्रुवाहन, यूरोप का विडालाक्ष अर्थात् मार्जार के सदृश आंखवाले, यवन जिसको यूनान कह आये और ईरान का शल्य आदि सब राजा राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध मे सब आज्ञानुसार आये थे। जब रघुगण राजा थे तब रावण भी यहा के आधीन था। जब रामचन्द्र के समय मे विरुद्ध होगया तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया था। स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लडकर नष्ट होगये।"

विदेशी शासकों ने हमें पराधीन रखने के लिए हमारे वास्तविक इतिहास को छिपाकर मिथ्या कल्पित इतिहास तैयार करवाकर स्कूल कालेजो में पढाया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राचीनग्रन्थो के प्रमाण देकर हमारे सच्चे इतिहास को प्रकट किया। इस देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त था। यहा के मूल निवासी आर्य हैं। इनकी भाषा का नाम आर्यभाषा है जिसे हिन्दी कहते हैं, जो आज हमारी राष्ट्रभाषा है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रिय शिष्य पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश जाने की प्रेरणा दी। उन्होंने वहाँ जाकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य किया। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल धीगडा आदि इनके शिष्य वा साथी थे। लन्दन का इण्डिया हाउस उस समय क्रान्तिकारियो का गुरुकुल था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सदस्यों ने भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति में बढ चढकर भाग लिया है। श्री जयचन्द्र विद्यालकार डी० ए० वी० कालेज लाहौर में इतिहास और राजनीति के प्रोफेसर थे। सरदार भगतसिंह और उनके साथी उनसे राजनीति की शिक्षा लेते थे। भगतसिंह के दादा अर्जुनसिंह और पिता किशनसिंह भी आर्यसमाजी थे। भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार प० लोकनाथ तर्कवाचस्पति ने करवाया था। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी प० रामप्रसाद बिस्मिल के बारे मे श्री मन्मथनाथ गुप्त ने १३ जुलाई १९५८ के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में लिखा था—"पण्डित रामप्रसाद कट्टर नही तो नित्य हवन में विश्वास रखनेवाले आर्यसमाजी जरूर थे। बाद को शहीद होनेवाले श्री रोशनसिंह उन्हीं के पदचिह्नों का अनुसरण करते थे।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाजोत्थान के लिए सबसे बडा हथियार 'तर्क' का दिया। आख मूदकर सत्यवचन महाराज या बाबा वाक्य प्रमाणम् कहनेवाले लोगो को सचेत किया। अन्धविश्वास और पत्थर पूजा से होनेवाली हानिया बतलाईं। अपने भाषण और लेखों के द्वारा लोगों को समझाया कि किसी भी बात को मानने से पूर्व प्रत्यक्षादि प्रमाणो से उसकी परीक्षा करो और जो सत्य हो, सृष्टिक्रम और विज्ञान के अनुकूल तर्क की कसौटी पर खरा उतरे उसे स्वीकार करो। आर्यसमाज के नियम में भी लिखा है—"सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।"

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में भारत मे प्रचलित नाना मत मतान्तरों की झूठी लीला का वास्तविक चित्रण करके मानव समाज को सच्चाई की ओर चलने की प्रेरणा दी। भारत के प्रथम गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य जी के शब्दों में—स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज की बुराइया दूर करके इसे सभ्य लोगो के रहने लायक बनाया।

सन् १८८३ की दीपावली पर विषपान के कारण ५९ वर्ष की आयु में इस महान् समाज सुधारक, देशभक्त स्वतन्त्रतासेनानी का देहान्त होगया। अन्त में मैं नीचे लिखी पक्तियों द्वारा उस महात्मा के लिए श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ —

विद्याभानु प्रकाशित करके जिसने तम का नाश किया।
मूढप्रजा का मोह मिटाकर, फिर उन्नति विश्वास दिया ॥१॥

जिसने सुख को स्वप्न समझकर, जनता का उपकार किया।
गुरु के ऋण को जीवन देकर, शिर से अन्त उतार दिया ॥२॥

जिसने वेदो के दिनमणि को, सम्प्रदायघनमुक्त किया।
वेदरत्न को खोद धरा से, अथवा शोभायुक्त किया ॥३॥

जिसने सारी सुप्त प्रजा को, दे उपदेश प्रबुद्ध किया।
स्वार्थी हठी दुराचारों से, डटकर सतत युद्ध किया ॥४॥
जिसने मातृभूमि की लज्जा, मन में अपने अनुभव की।
पराधीनतारोगमुक्त को, औषध जिसने सच्ची दी ॥५॥

आओ उसके पदचिह्नों पर, चलकर सुयश बढा देवें।
दयानन्द की उप्त बेल को, ऊपर और चढा देवें ॥६॥

—वेदव्रत शास्त्री

सफल उसी जन का जीवन है

जो अपने को जला-जला कर,
अन्य जनों को ऊष्मा देता।
स्वय सहन कर कष्ट हजारों,
अन्य जनों का दु.ख हर लेता।
मुरझा कर अपनी मन-कलिका,
अन्य मनों का फूल खिलाता,
सुख देकरके अन्य जनो को।
स्वय दुखों को गले लगाता।

वही धरा पर हुआ रतन है।
सफल उसी जन का जीवन है॥

जो साहस से आपूरित हो,
सघर्षो से जूझा करता।
कठिन-कठिनतम भेद-विभेदों
को निर्भय हो बूझा करता।
चट्टानो से टकराना ही,
जीवन का सत है चिर शाश्वत।
बढते जाना कण्टक पथ पर,
यही रहा वीरों का अभिमत।

दासी बन जाती अड़चन है।
सफल उसी जन का जीवन है॥

युग की धारा को निश्छल हो,
मोड दिया करते हैं जो जन।
वही पहुँचते, जीवन पथ पर,
सफल उसी जन का है जीवन।
सफल प्रयासों के माध्यम से,
परहित में दे जीवन का धन।
जो अर्पित करते रहते हैं,
परहित में अपना ही तन मन।

करता जो प्रदीप्त कण-कण है।
सफल उसी जन का जीवन है॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावृत्ति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक चुनाव की सूची

२६ अक्टूबर ८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर प्रो० शेरसिंह जी को सभा का प्रधान सर्व-सम्मति से चुनने के पश्चात् उन्हें शेष अधिकारियों तथा अन्तरग सदस्यों आदि का चुनाव करने का भी अधिकार दिया गया था। अधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो की सूचि गताक में छप चुकी है।

आर्यविद्या सभा हरयाणा के सदस्य :–

१- स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक
२- प्रो० शेरसिंह जी कुलपति, गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक
३- प्रो० सत्यवीर शास्त्री, राजकीय महाविद्यालय भिवानी
४- श्री बलवान्सिंह जी आर्य ग्राम टिटोली, जिला रोहतक
५- मा० छाजूराम आर्य भवन रोहतक रोड, सोनीपत
६- श्री धर्मचन्द शास्त्री, कन्या गुरुकुल खानपुर, जिला सोनीपत
७- श्री भद्रसेन शास्त्री, कन्या गुरुकुल खानपुर, जिला रोहतक
८- मा० जसवन्तसिंह, डी० ए० वी० उच्च विद्यालय करनाल
९- आचार्य वेदव्रत शास्त्री, दयानन्दमठ, रोहतक
१०- श्री रामवीर शास्त्री, गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक
११- आचार्य दयानन्द जी व्याकरणाचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार
१२- श्रीमती सत्यवती आर्या, ग्राम जूआं, जिला सोनीपत
१३- श्रीमती सुशीलादेवी आर्या, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक
१४- श्री बलराज चुग, आर्यनगर रोहतक
१५- मा० दीपचन्द आर्य, ग्राम कासनी, जिला रोहतक
१६- स्वामी सेवानन्द जी, आर्यसमाज समालकामण्डी, जिला करनाल
१७- मा० दीपचन्द आर्य, श्रीपाल भारती विद्यालय, रोहतक
१८- मुख्याध्यापक श्री बारुराम, कुरुक्षेत्र
१९- श्री मनुदेव शास्त्री, रोहतक रोड, चरखीदादरी, जिला भिवानी
२०- श्री सत्यवीर शास्त्री, शास्त्री निवास निकट जाट कालेज रोहतक
२१- श्री वेदमित्र जी हापुडवाले, आर्यसमाज कबाडी बाजार अम्बाला छावनी
२२- श्रीमती प्रियवदा देवी, कन्या गुरुकुल खानपुर, जिला सोनीपत
२३- आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र
२४- आचार्य गुरुकुल भैंसवालकलां, जिला सोनीपत
२५- आचार्य गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक
२६- आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, जि० फरीदाबाद
-आचार्य गुरुकुल गदपुरी, जि० फरीदाबाद
२८- आचार्य गुरुकुल आर्यनगर हिसार
२९- आचार्य गुरुकुल डिकाडला, जि० करनाल
३०- आचार्या कन्या गुरुकुल खरल, जि० जीन्द
३१- आचार्या कन्या गुरुकुल हसनपुर, जि० फरीदाबाद
३२- आचार्या कन्या गुरुकुल पचगांव, जि० भिवानी
३३- आचार्य दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, जि० अम्बाला

आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के सदस्य –

१- स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक
२- प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान
३- आचार्य वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री दयानन्दमठ रोहतक
४- प्रो० सत्यवीर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय भिवानी
५- आचार्य विष्णुमित्र कन्या गुरुकुल खानपुर, जि० रोहतक
६- प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार, राजकीय महाविद्यालय दुजाना (रोहतक)
७- श्रीमती प्रभातशोभा पंडित विद्यालकृता, १४-एम, साकेत नई दिल्ली
८- डा० रणजीतसिंह प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र
९- डा० हरिप्रकाश जी गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार

कपालमोचन जिला अम्बाला के मेले पर वेदप्रचार शिविर

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी हरयाणा के प्रसिद्ध मेले कपाल-मोचन तहसील जगाधरी जिला अम्बाला में १३ से १५ नवम्बर ८६ तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर का प्रबन्धक स्वामी सदानन्द जी यमुनानगर को मनोनीत किया गया है। सभा में भजनोपदेशक प० हरिश्चन्द्र जी, प० विद्याभूषण जी, प० शेरसिंह जी, प० बनारसीलाल जी, प० चिरञ्जीलाल जी आदि की मण्डलियों को शिविर में प्रचारार्थ नियुक्त किया गया है। सभा के अन्तरग सदस्य वैद्य रामलाल जी के निर्देशन में शिविर की तैयारी आरम्भ हो गई है।

अतः आर्यसमाजो तथा दानी महानुभावों से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भान्ति वेदप्रचार शिविर को सफल करने के लिए तन मन तथा धन से सहयोग करें। मेले पर लाखो नर-नारी धार्मिक भावना से यहा पहुंचते हैं। अत वेदप्रचारार्थ यह शुभावसर है।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अभियोग में हरयाणा सभा को तीसरा पक्ष माना

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

फरीदाबाद ३० अक्टूबर। सभा के गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सम्बन्ध में चल रहे अभियोग में न्यायालय ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को तीसरा पक्ष बनने की आज्ञा दे दी है। स्मरण रहे स्वामी शक्तिवेश तथा श्री सत्यदेव भारती (श्री रोशनलाल आर्य विधायक पक्ष) के मध्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पर कब्जा करने के लिए कुछ समय से लड़ाई झगड़ा चल रहा था। इस कारण गुरुकुल की सम्पत्ति बर्बाद हो रही थी। अत जिला प्रशासन फरीदाबाद ने गुरुकुल की सम्पत्ति की रक्षा हेतु धारा १४५ के अन्तर्गत गुरुकुल को अपने अधिकार में ले लिया था।

एस० डी० एम० के न्यायालय फरीदाबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस अभियोग में तीसरा पक्ष बनने का आवेदन किया था। हरयाणा सभा के वकील ने न्यायालय में अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुये कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का १९७५ में बटवारा होने के पश्चात् गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पर हरयाणा सभा का अधिकार है। अनुशासन भग करने तथा धन का दुरुपयोग करने आदि के आरोप में स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी शक्तिवेश को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज से निकाल रखा है। श्री सत्यदेव भारती भी किसी आर्यसमाज के सदस्य नही हैं। इन तर्कों को सुनने के बाद माननीय जज महोदय ने इस अभियोग में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को तीसरा पक्ष मान लिया है।

सोनीपत में आर्य कवि सम्मेलन

१७ अक्टूबर १९८६ से १९ अक्टूबर १९८६ तक

वेद प्रचार समिति सोनीपत के वार्षिकोत्सव पर एक विराट् कवि-सम्मेलन सुभाष पार्क ऋषिनगर में स्वामी सरूपानन्द जी वेदप्रचार अधिष्ठाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे हुआ। कवि-सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख कवि सर्वश्री नाज सोनीपती, व्याकुल सेह प्रेमी, मुसाफिर रोहतकी, डा० बेताब अलीपुरी, दर्द गुमराह, नाज लायलपुरी, 'अश्क' निश्तर, शान्तिसरशार निर्भय, सागर होशियारपुरी के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रमुख वक्ता, डा० महेश वेदालकार, ठाकुर विक्रमसिंह, आचार्य सत्यदेव स्नातक थे। श्री भोजदत्त आर्य की व्यवस्था सराहनीय रही।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

पुनाहना में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्यवीर दल गुडगाव मण्डल के तत्वाधान मे चल रहा ७ दिवसीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर १७ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ। शिविर के समापन पर ५ आर्य वीरों से दहेज न लेने, जीवन भर आर्य समाज को तन मन धन से सेवा करने, पुनर्मिलन अभियान चलाने का व्रत लिया, पुंनाहना नगर वासियो ने जब आर्य वीरो की सच्ची भावना को सुना तो कई सज्जन आखो मे आसू भरलाये और कहने लगे कि भारत माता को ऐसे सपूतो की आवश्यकता है। गुडगाव मण्डल के मण्डलपति श्री सत्येन्द्रप्रकाश जी शास्त्री ने आर्यवीरो को आह्वान करते हुए कहा कि यदि देश को बचाना है तो घर से निकलपडो तथा समाज में एक नयी क्राति लाने के लिये कृतसकल्प हो जाओ, उन्होंने आर्यसमाजो के सभी अधिकारियो पर तीखा व्यग करते हुए कहा कि हमारे सभी समाजसेवी पडोसी के बच्चे को भगतसिह बनना देखना चाहते हैं जबकि अपने बच्चो की ओर ध्यान नही देते।

आयसमाज आर्य वीरदल की मा है, प्रत्येक मा अपने बच्चे को फलता फूलता देखना चाहती है, अत आयसमाजो को चाहिये कि आर्य वीर दल को जडो को मजबूत करें ताकि राष्ट्र एव सस्कृति पर मडराते गिद्धो को मार भगाया जा सके। इस अवसर पर मण्डलपति महोदय ने आयवीरो को सम्बन्धित सभी आवश्यक समितियो को पूरा करने का वचन भी दिया। इसके अतिरिक्त स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी शान्तानन्द श्री बालदिवाकर जी हस, आचार्य सत्यप्रिय जी, पदमचन्द्र आर्य, मन्त्री आर्य वेद प्रचार मण्डल आदि ने भी आर्यवीरो को आशीर्वाद रूपी प्रवचन दिये। शिविर मे शारीरिक प्रशिक्षण ब्रह्मचारी सत्यव्रत एव रवि आर्य ने दिया। समापन पर सभी आर्यवीरो ने लाठी, दण्ड, बैठक, फर्सा, जूडो-कराटे आदि का कार्यक्रम दिखाया। श्री शिवचरनदास आर्य मन्त्री आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका ने ७ दिसम्बर १९८६ को अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन फिरोजपुर झिरका का सभी को निमत्रण दिया। शिविर अच्छा रहा।

—लक्ष्मीनारायण आर्य, प्रधान
आर्यसमाज पुनाहना

आर्यसमाज कस्बा बुडिया का वार्षिकोत्सव

दिनाक १९, २० व २१ सितम्बर सन् १९८६ को मनाया गया जिसमें निम्नलिखित महानुभावो के प्रवचन हुए।

स्वामी सदानन्द जी महाराज, प० वेगराज जी प्रसिद्ध रामायणी, (उत्तरप्रदेश), प० ईशवरसिह तूफान रोहतक, आचार्य देवव्रत जी कुरुक्षेत्र, प० खेलसिह जी रानीपुरा, बहिन उर्मिला आर्या, कुमारी सुनीता आर्य किशनपुरा माजरा।

ब्रह्मचारी ओमदर्शन जी द्वारा भी अपनी ब्रह्मचर्य की शक्ति का प्रदर्शन सरिया मोड कर, काच पीसकर, थाल फाड कर, बजन छाती पर सखवाकर आदि अनेक कर्तव्य दिखाकर किया गया।

उपरोक्त लिखित कार्यक्रम का क्षेत्र मे बहुत अच्छा प्रभाव रहा। इन दिनो की सख्या अच्छी रही और अन्तिम दिन २०००-३००० की सख्या रही। स्थानीय पुलिस एव बुडिया कस्बा के निवासियो का विशेष योगदान रहा और आस-पास के ६०-६२ आर्यसमाजो ने भी दल-बल से सहयोग दिया।

लगभग १५-२० नौजवानो द्वारा यज्ञोपवीत (जनेऊ) लेकर जीवन में बुराइयो का त्याग करने का निश्चय लिया गया। कुल मिलाकर उत्सव बहुत अच्छा रहा एव क्षेत्र मे सराहना भी की जा रही है।

राकेश आर्य मन्त्री

मन्दिरों में तीन प्रकार का प्रसाद

हिसार। ग्राम सातरोड खुर्द के अन्दर एक बहुत बडा हनुमान का मन्दिर है। इस मन्दिर में पुजारी भगवान् के प्रसाद को तीन प्रकार के बर्तनों में विभाजित करता है। एक बर्तन में वह काजू और मिश्री रखता है जो बडे बड़े लोगो को तथा मन्दिर में पैसे चढ़ाने वाले को देता है। दूसरे बर्तन में वह बूंदियां तथा लड्डू रखता है जो थोड़े पैसे चढाते हैं उनको देता है। तीसरे बर्तन में वह पतासे रखता है यह प्रसाद उनको देता है जो मन्दिर मे कुछ नही चढ़ा पाते हैं। इन मन्दिर के पुजारियों ने भगवान् को भी तीन बर्तनों में रख दिया है। आने वाले इन मन्दिरो में भक्तो को उनकी योग्यता के अनुसार प्रसाद दिया जाता है।

मन्दिरो मे भी इस प्रकार का भेदभाव हो रहा है जबकि ये भगवान् का घर बताते हैं। जब भगवान् के घर में इस प्रकार अन्याय होने लगा तो आम जनता का क्या होगा? कहते है कि भगवान् के घर मे तो सब समान होते हैं। आज जो मन्दिरों मे पुजारी बैठे हैं वे भगवान् की बोली लगा रहे हैं। उनके नाम पर पैसे कमा रहे हैं। इन पुजारियों को चाहिये कि कम से कम वे भगवान् के घर मे तो 'भक्तो' के साथ ऐसा अन्याय न करें।

—गुरेन्द्र साहरण (मन्त्री) आर्य वीर दल
सातरोड खास, हिसार

उपदेशक विद्यालय में प्रवेश

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में 'सिद्धान्त-भूषण', सिद्धान्त विशारद' तथा 'सिद्धान्त-शिरोमणि' श्रेणियो में प्रवेश आरम्भ है। इसके साथ-साथ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्राज्ञ, विशारद एव शास्त्री परीक्षाओ का भी प्रबन्ध है। नवी और दसवीं कक्षा-उत्तीर्ण छात्र गाव के सरपच या आर्यसमाज के किसी अधिकारी द्वारा अनुमोदित आवेदन पत्र १५ नवम्बर तक भेजे।

आचार्य श्रीमद्दयानन्द उपदेश महाविद्यालय
वैदिक साधन आश्रम डा० शादीपुर,
यमुनानगर, जिला अम्बाला

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रकारान्तर से महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में भी कही है। वहाँ लिखा है कि—

प्रश्न — मंत्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर— मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिसमें होम करने के लाभ विदित हो जावें और मन्त्रो की आवृत्ति होने से कण्टस्थ रहें। वेद पुस्तको का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।"

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेद विषय प्रकरण में महर्षि एक शका का समाधान करते हैं। शका और उसका समाधान इस प्रकार है·

प्रश्न — होम करने का जो प्रयोजन है, सो तो केवल होम से ही सिद्ध होता है, फिर वहा वेदमन्त्रो के पढ़ने का क्या काम है ?

उत्तर— उनके पढने का प्रयोजन कुछ और ही है।

प्रश्न — वह क्या है ?

उत्तर— जैसे हाथ मे होम करते, आख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं, वैसे ही वाणी से वेदमन्त्रो को भी पढते हैं। क्योकि उनके पढने से वेदो की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है। तथा होम से जो-जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है। वेदमन्त्रो के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं, और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाय, क्योकि ईश्वर को प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। सो वेदमन्त्रो के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इस लिए सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से ही करना उचित है।

इतना ही नही महर्षि तो यहां तक कहते हैं कि "मुख्य तत्त्व से वेदमन्त्र के पठन से ईश्वर का सत्कार होता है, इसलिए प्राचीन आर्य लोगों ने होम के स्थल में मन्त्रों की योजना की है, इसी तरह यज्ञशाला को देवायतन अथवा देवालय कहा है।" (पूना प्रवचन)

जलवायु आदि की शुद्धि तथा वर्षा का यज्ञ से घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज जो वायु आदि के प्रदूषण की समस्या है, उसका एकमात्र समाधान हवन यज्ञ ही है। इस सम्बन्ध में केवल एक तथ्य का उल्लेख ही पर्याप्त समझता हूं। भोपाल की कुख्यात गैस दुर्घटना से हवन यज्ञ के द्वारा किस प्रकार दो आर्य परिवार अपने को सुरक्षित रखे सके, यह देखकर हवन यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होता है। वैदिक क्राति नामक पत्रिका के जून १९८५ के अक में उसका उल्लेख हमें उपलब्ध हुआ है, जोकि मूलत: ७ अप्रैल सन् ८५ के 'हिन्दू' पत्र से लिया गया है। इसमें श्री एस. एल कुशवाहा तथा श्री एम एल राठौर का विवरण दिया है कि जब ९ दिसम्बर सन् १९८४ की रात को सब लोग उठ उठ कर भाग रहे थे, ये लोग अपने अपने घरो में हवन यज्ञ करने बैठ गये। और २० मिनट के थोडे से समय में अपने अपने परिवार को मिक गैस के विषैले प्रभाव मे बचा लिया। जहाँ भागने वाले मौत के मुख में चले गये, वहा बैठ कर हवन यज्ञ करने वाले सर्वथा सुरक्षित रहे। इससे बढकर हवन यज्ञ के लाभ और भला क्या हो सकते हैं। इस पर भी यदि इसे कोई न अपनावे तो दोष किसका है ?

इस प्रकार अन्त में हम यही कहेंगे कि यदि एक ही क्रिया से आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनो प्रकार की उन्नति हम चाहते हैं तो फिर हवन यज्ञ को अपनाना ही होगा। हवन यज्ञ एक ऐसी क्रिया है जिसमें आध्यात्मिकता और आधिभौतिकता दोनो ही उन्नतियां छिपी हैं। अभ्युदय एव नि श्रेयस की सिद्धि यज्ञ द्वारा ही सम्भव है। अत यज्ञ का प्रचलन एव प्रचार अवश्यमेव होना चाहिये।

आर्यनिवास, चन्द्रनगर
मुरादाबाद—२४४०३२

अनमोल वचन

१- धार्मिक राजा ही धर्म की रक्षा कर सकता है, अधर्मी नान्यत।

२- धन से धर्म की रक्षा होती है और धर्मप्रचार के लिये पुष्कल धन राजा से ही मिल सकता है।

३- चरित्रहीन और स्वार्थी मनुष्य देश और समाज सेवा नही कर सकता।

४- समय का ध्यान और प्रभु का ज्ञान सफल जीवन की कुंजी है।

५- स्वाध्याय और सत्सग आत्मिक और मानसिक शान्ति के लिये परम आवश्यक हैं।

६- प्रसन्नता निरोगता की परम औषध है, इसलिए सर्वदा प्रसन्नचित्त रहो।

७- अज्ञान मनुष्य का सबसे बडा शत्रु है, इसलिए सत्य ज्ञान ग्रहण करो

८- अन्याय का साथ देना बडा भारी दोष है। इससे सर्वदा बचें।

९- आलस्य और प्रमाद सब दु खो का मूल हैं, अत उन्हे पास मत आने दो।

१०- परिश्रम सफलता की सरणी है, इसलिये उद्योगी बनो।

११- तम्बाकू पीना, खाना और सूघना, ये तीनो ही बुरे कुटेव हैं, इसलिये त्याज्य हैं। इनके सेवन से वायु, शरीर और धन तीनों का ही नाश होता है।

१२- शराब एक नशीला जहर है, जिसके सेवन से बुद्धि और धन दोनों की हानि होती है। इसलिये इसका सेवन अहितकर और विनाशकारी है।

१३- मास मनुष्य का भोजन नही। यह राक्षसी भोजन है, जो जीव हत्या के बिना नहीं प्राप्त होता। इसलिये इसका खाना पाप है। इस महापाप से बचें।

१४- जुआ मत खेल क्योंकि इस से समय, विद्या और धन तीनों नष्ट होते हैं।

१५- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहकार के बढ जाने से मनुष्य के विचार दूषित हो जाते हैं। इसलिये इन पर काबू पाने का प्रयत्न करो।

१६- जवानी मे जो सभल जाता है, वही ससार में सब कुछ पाता है।

१७- सत्सगति से लोक और परलोक दोनो का सुधार होता है।

१८- ससार में सभल कर समझ से कार्य करो, अन्त में कोई किसी का साथी नही।

१९- अहकार परमात्मा प्राप्ति में बाधक है, इससे विचारपूर्वक हमेशा बचें।

२०- किसी को धोखा देना पाप है और किसी के धोखे में आना मूर्खता है अत. इन दोनो कुकृत्यो से बचना चाहिए।

२१- जैसा मनुष्य सोचता है, वैसा ही बन जाता है।

२२- सेवा धर्म परम कठिन है, यह योगियो को भी अगम्य है।

२३- सत्पुरुषो की मित्रता जल और दूध के समान होती है।

२४- मनुष्य के क्षय और वृद्धि में अदृष्ट ही कारण है। पुरुषार्थ उपचार मात्र है।

—मांगेराम आर्य, प्रधान, आर्यसमाज,
अहमदनगर (महाराष्ट्र)

ऋषि की अमर कहानी

ऋषिवर की यह अमर कहानी तुम याद करो।
गुरु से विद्या पाकर तब चरणों मे शीष झुकाया।
देश धर्महित त्यागे सुख दु खो को गले लगाया।।
ऋषि ने दी झोक सारी जवानी, तुम ..।।१।।

स्वामी जी ने देश की खातिर कितने कष्ट उठाये।
विधवा-दीन-अछूतो के यहा सकट सभी मिटाये ।।
की तपस्या बने पूर्णज्ञानी, तुम.. ।।२।।

वेदविरोधी जो भी कोई उनसे आ टकराया।
गया हारकर वापिस फिर ना कभी लौटकर आया ।।
शक्ति विद्या की जब पहचानी, तुम..... ।।३।।

कई बार काशी मे जाकर पोपो को ललकारा।
शास्त्रार्थ के लिए पोपदल हुआ इकट्ठा सारा ।।
हारे पडित सभी अभिमानी, तुम . . ।।४।

वेदों की रक्षाहित ऋषि ने घूमा भारत सारा।
किया प्रचार निरन्तर उनको वैदिक धर्म था प्यारा ।।
खाक वन-पर्वतो की थी छानी, तुम ।।५।।

दे स्वराज्य का मन्त्र जवानो को यह पाठ पढाया।
अग्रेजो के चगुल से भारत आजाद कराया ।।
सारी दुनिया ने थी बात जानी, तुम... . ।।६।।

नारी को विद्या पढ़ने का था अधिकार दिलाया।
'छाजूराम' उसने बदले मे उनको जहर पिलाया ।।
बने ऋषिवर महाबलिदानी, तुम . ।।७।।

कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री
ए एस बी (रजि०)

आर्य कन्या गुरुकुल पंचगाँव का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल पचगाव (भिवानी) का वार्षिकोत्सव १८-१९ अक्तूबर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी, महात्मा राममुनि जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, ब्रह्मचारी सजयदेव जी, श्री सुखदेव शास्त्री आदि विद्वानो ने पधारकर वेदोपदेश किया। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री प० तेजपाल जी एव श्री प० ईश्वर सिंह 'तूफान' ने पधार कर मधुर भजन सुनाये। कुल मिलाकर कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

—हरिसिंह आर्य
मन्त्री, कन्या गुरुकुल,
पचगाव (भिवानी)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न० 23207/7   RTK 49   सृष्टि सवत् १,९६,०८,५३,०८७



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक —वेदव्रत शास्त्री, सभा मन्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १३ अङ्क ४८ १४ नवम्बर, १९८६   वार्षिक शुल्क २०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश मे ९ पौंड एक प्रति ५० पैसे

आर्यसमाज : आत्मविवेचन और संकल्प

ओम् असतो मा सद्गमय ओम तमसो मा ज्योतिर्गमय । ओम् मृत्योर्माऽमृतगमय

"ले चल हमें असत्य से परम सत्य की ओर ज्योतिर्मय मम चित्त हो, मिटे तमस घनघोर ।
प्राणो मे अमृत भरा, नही मृत्यु मे भीति, आनन्दमयी आलोकमयी पावन पुण्य-प्रतीति ।"

मानव जीवन की पथ-प्रदर्शक आर्ष-सूक्तियों की इस प्रसिद्ध त्रिवेणी से सभी आयजन सुपरिचित हैं। फिर भी इन सूक्तियो मे निहित सन्देश, इनकी प्रेरणा और उद्बोधन दीपावली के ज्योति-पर्व पर अनायास ही विशेष प्रासगिक बन जाते हैं और चेतना को झकझोरने लगते हैं। आसुरी वृत्तियों पर दिव्यगुणो की विजय के प्रतीक श्रीराम के अयोध्या को लौटने का सुखद प्रकरण तो दीपावली के साथ युगो से जुड़ा ही आरहा है, लेकिन जब से महर्षि दयानन्द के निर्वाण का मार्मिक प्रसग भी इसमे और जुड गया, तब से आर्यबन्धुओ के लिए दीपावली का दिन केवल बाहरी उल्लास और प्रकाश का अवसर नही रहा, अपितु आत्म-ज्योति से हृदय में परोपकार का प्रकाश लेकर जहा-जहा जीवन में, समाज मे, जगत मे अन्धेरा है, उसे मिटाने का शिवसकल्प दोहराने का दिन बन गया है यह। करुणानिधान ऋषिवर का आत्मोत्सर्ग था ही ऐसा अनुपम और प्रेरणाप्रद कि मन को बिना छुए नही रह सकता।

हृदय दीप में स्नेह भरा, बनी देह की दीपशिखा।
ज्योति जगाता ऋषि चला, अमर जोत मे जोत मिला ।।

नवचेतना के सवाहक और मानवता के अनन्य पुजारी ऋषिवर के निर्वाण को देवयोग ने भी काल-वैचित्र्य की श्रद्धाजलि अर्पित करके चमत्कारिक और अविस्मरणोय शायद इसलिए बना दिया कि कहीं दीपोत्सव के प्रकाश मैं हम पृष्ठभूमि मैं तिरोहित अमावस्या को भूल न जाय।

ऋषि दयानन्द के उत्सर्ग के बाद बहुत लम्बे समय तक महर्षि की प्रेरणा को लेकर आर्यसमाज महान् क्रांति का अग्रदूत बनकर आगे बढता रहा। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व इन उत्तरोत्तर विराट् विशाल समुदायो में बन्धो मानव जाति को, सम्पूर्ण वसुधा को एक कुटुम्ब की दृष्टि से व्यवस्थित करने का स्वप्न ऋषि ने हमे दिया। "अपनी सामर्थ्य अनुसार अधिक से अधिक देना और आवश्यकतानुसार कम से कम लेना" कुटुम्ब वृत्ति से जोने का यही फार्मूला है। आजकल 'बुनियाद" शोषक से एक धारावाही-वृत्त सप्ताह में दो बार दूरदर्शन पर दिखाया जारहा है। जिनके मानस-पटल पर आर्यसमाज की छवि कुछ धूमिल हो गई है, या नई पीढी के लोग जिन्हें आर्यसमाज का यह क्रातिकारी रूप प्रत्यक्ष देख पाने का सौभाग्य नहीं मिला, इस वृत्त-चित्र से उन्हें यह जाननें का, याद करने का अवसर मिलेगा कि हमारी उज्ज्वल परम्पराओं की धरोहर क्या है और उसका मूल्य क्या है।

शाश्वत मानवीय मूल्यों की पोषक भारतीय सस्कृति और सस्कृत के उपासक, वेदोद्धारक, पाखण्ड-भुक्ति के अग्रदूत, दिव्यद्रष्टा, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के दर्शाए पथ पर चलकर इस आर्यसमाज ने हजारो "हवेलीराम" पैदा किये और न जाने कितनी 'लाजोजी" जैसी त्यागमयी और निर्भीक महिलाये समाज मैं आगे आईं। चाहे समस्या हो समाज मैं उच्चवर्गीय लोगो द्वारा "अस्पृश्यता" थोपकर दलितो के शोषण की या सदियो से प्रचारित अन्धविश्वासो के उन्मूलन की, चाहे विदेशी सत्ता के चगुल से मातृभूमि को मुक्त कराने का प्रश्न हो या अज्ञानता और निरक्षरता की धारा से निकाल कर आलोकमयी मातृशक्ति की पुन प्रतिष्ठा का, उन दिनो हर क्षेत्र मैं, हर मोर्चे पर व्रत-निष्ठा के साथ, कठोर तप और त्याग के बल पर नि स्वार्थ सेवको की जो समर्पित टोली सघर्ष और बलिदान के नित्य नये कीर्तिमान स्थापित कर रही थी उसी का नाम था "आर्यसमाज"। विज्ञान को भौतिक आविष्कारो के क्षेत्र से बाधकर और ज्ञान को कोरी बौद्धिक दार्शनिकता के साथ जोडकर, जीवन को दो कक्षो में बाटकर चलने से नैतिकता और सयमित जीवन के अभाव मैं विश्व विचित्र बेचैनी का शिकार बना हुआ था। ऋषि दयानन्द नें भौतिक व्यवहार को ज्ञान से जोडा और दार्शनिक चिन्तन को वैज्ञानिकता से, ज्ञान-विज्ञान के इस नव-सगम से उपजनेवाले सन्तुलित दृष्टिकोण नें प्राचीन आर्य-जीवन शैली की प्रामाणिकता और प्रासगिकता के पुनर्मूल्याकन की प्रेरणा दी। फिर क्या था ? अस्पृश्यता और जन्मना ऊच-नीच की मान्यतायें ढहने लगी। अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा और टोने टोटके का पाखण्ड टूटने लगा। बाल-विवाह का स्थान बाल शिक्षा ने लिया। विधवाओं को जीवन को पुन सवारनें का अधिकार मिला। विदुषी और जागृत महिलाओ की समाज मैं सख्या बढने लगी। भोग-विलास मे डूबे राजा महाराजाओ की आखे भी खुली। अनेक उनमे से सस्कारवान् और सच्चरित्र बनकर देश और समाज की सेवा मे जुट गये। अन्धकार भागने लगा, सोया भारत जागने लगा। क्रान्ति के इन विस्तृत और विविध आयामो के साथ आर्यसमाज का अस्तित्व घुल-मिलकर कुछ इस तरह एकाकार हो गया कि उस काल की गतिविधियो का इतिहास आर्यसमाज का ही गौरवशाली अतीत बन गया।

आगे क्या हो ? आज आर्यसमाज के सम्मुख यह प्रश्न गम्भीर बनकर खडा है कि केवल अपने अतीत के सहारे ही हमे अब जीना है या कि आचार की शिथिलता और भौतिक समृद्धि के ज्वार मे डगमगाती मानव-सस्कृति की रक्षा के लिए कुछ करना है। आर्यजनता आज भी समाज का एक सुसगठित प्रबुद्ध वर्ग है और उसमें समाज के प्रति दायित्व की भावना से स्वेच्छापूर्वक सयमित रहकर जीने का माद्दा भी है। भारतवासी एक बार पहले अतीत के गौरव के सहारे जीने की भूल कर चुके हैं। परिणामत विदेशियो द्वारा लूटपाट और चीरहरण के एक अनन्त दौर से हमे गुजरना पड़ा। दासता की ऐसी गहरी जडें हमारे जीवन मे बैठ गई हैं कि अग्रेजो के शासन से मुक्त होकर भी अग्रेजो और अग्रेजियत इन दोनो का बोझ हम दीन बनकर ढो रहे हैं। (क्रमश.)

—प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सरस्वती के मन्दिर यौन शोषण के अड्डे बन रहे हैं ?

—शिवकुमार गोयल

- ❀ मुजफ्फरपुर के मेडिकल कालेज परिसर में छात्राओं के साथ बलात्कार का प्रयास।
- ❀ पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय की एम० एस० सी० की छात्रा अनुभा ने प्रोफेसर से सतीत्व की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग कर दिया।
- ❀ दिल्ली की एक और शोध छात्रा ने आत्महत्या की।
- ❀ एक राज्य के मुख्यमन्त्री के बेटे द्वारा छात्रा के साथ बलात्कार।
- ❀ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की शोध छात्राओं का यौन शोषण।

गत एक-डेढ महीने के समाचारपत्रों में ये पाच घटनायें प्रमुखता से छपी हैं। इन्हें पढकर सरस्वती के मन्दिर समझने जानेवाले शिक्षण सस्थानो मे पनपने वाले अनाचार का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। एक ओर सरकार तथा शिक्षा व सस्कृति मन्त्रालय शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से प्रगति होने का दावा कर रहे हैं, दूसरी ओर विश्वविद्यालयों से लेकर इण्टर कालेजों व हाई स्कूलो मे शिक्षको पर हमले किये जाने, परीक्षा में खुलकर नकल किये जाने, प्रधानाचार्य का मुँह काला कर देने जैसे उच्छृ खलतापूर्ण घटनाओं में वृद्धि होती जारही है। अब उनमें भी छात्राओं के यौन-शोषण की घटनायें सामने आने से तो यह स्पष्ट होता जारहा है कि सरस्वती के ये मन्दिर कहीं आगे चलकर अनाचार या व्यभिचार के केन्द्रों का रूप तो धारण नहीं कर लेंगे।

पंतनगर विश्वविद्यालय की अभागी छात्रा

हाल की ही घटना है कि पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय की कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग कोर्स की छात्रा अनुभा गुप्ता को जब एक प्रोफेसर ने काम पिपासा का शिकार बनाना चाहा तो उसने इस घिनौने कृत्य से स्पष्ट इन्कार कर दिया। प्रोफेसर उस प्रतिभाशाली छात्रा पर तरह-तरह के दबाव डालता रहा, किन्तु वह उसके चगुल में फसने को तैयार नहीं हुई। परिणाम यह हुआ कि उसे परीक्षा में फेल कर दिया गया।

छात्रा ने कुलपति से शिकायत की, किन्तु उसका कोई परिणाम नही निकला। उसने दोबारा दाखिला लिया तो फिर प्रोफेसर ने उसकी अस्मत लूटने के लिए हथकडो का प्रयोग किया। इस बार भी उस आदर्श छात्रा ने यौन-शोषण का शिकार होने से स्पष्ट इन्कार कर दिया, किन्तु इस घुटनपूर्ण वातावरण व अन्धकारमय भविष्य की आशका ने अनुभा को मानसिक बीमारी का शिकार बना डाला। अन्त में ७ अगस्त को उसने रहस्यपूर्ण परिस्थिति में दम तोड दिया।

पन्तनगर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओ ने अनुभा की मृत्यु के जिम्मेदार उस कामी प्रोफेसर को गिरफ्तार किये जाने की माग को लेकर हडताल की हुई है।

दिल्ली विश्वविद्यालय तथा दिल्ली के शोध सस्थानो मे छात्राओं के यौन शोषण तथा कुछ छात्राओ द्वारा अस्मत बचाने के लिए आत्महत्या किये जाने की घटनायें समय-समय पर सामने आती ही रही हैं।

सितम्बर के पहले सप्ताह में दिल्ली के एक होस्टल मे एक राज्य के मुख्यमन्त्री के बेटे ने एक छात्रा के साथ बलात्कार किया, तो पूरी दिल्ली की छात्र-छात्राओ में रोष व्याप्त हो गया। छात्राओं ने प्रदर्शन कर बलात्कारी को कडा दण्ड दिये जाने तथा छात्राओं को पूर्ण सुरक्षा व सरक्षण दिये जाने की माग की।

छात्र नेताओ ने आरोप लगाया कि राजनीतिक दबाव डालकर बलात्कारी को बचाने का प्रयास किया जारहा है।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय यौन-शोषण का आरोप

इन दिनो देश का जाना-माना शिक्षण सस्थान अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय छात्राओ के यौन शोषण के आरोपो के कारण चर्चा का विषय बना हुआ है। वहां के उपकुलपति ने मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष तथा रीडर को छात्राओं के यौन शोषण के आरोप में निलम्बित कर दिया है। इस आदेश के बाद शिक्षको के दो गुटों ने एक-दूसरे पर छात्राओं के साथ काम पिपासा शात करने के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनायें जाने के आरोप-प्रत्यारोप लगाने शुरु कर दिये हैं। विश्वविद्यालय में खुलकर पम्फलेट छापे जारहे हैं। उत्तरप्रदेश के एक प्रमुख हिन्दी दैनिक समाचारपत्र ने जब विस्तार से इस घृणित कृत्य में सलग्न प्रोफेसर के माफिया गिरोहों का सनसनीखेज रहस्योद्घाटन किया तो पूरे शिक्षा क्षेत्र में हडकम्प मच गया है।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय साम्प्रदायिक गतिविधियो तथा पाकिस्तान समर्थक नारेबाजी आदि के लिए तो अब तक बदनाम था ही किन्तु अब हिन्दू छात्राओ के साथ बलात्कार किये जाने, उनको प्रलोभन व दबाव फसकर धर्मपरिवर्तन कर शिक्षकों व छात्रो के साथ "निकाह" किये जाने की अनेक शर्मनाक घटनायें सामने आने से यह स्पष्ट होगया है कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा का पावन मन्दिर न रहकर अनाचार व वासनापूर्ति का अड्डा बनता जारहा है।

शोध छात्रा कु० सुनीता टण्डन ने कुलपति सैयद हाशिमअली से लिखित शिकायत की थी कि मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो० एम० ए० बेग (भूतपूर्व विधायक) उसे यौन कुण्ठा का शिकार न बना पाने पर तरह-तरह से उसका उत्पीडन करा रहे हैं। उसने यह भी आरोप लगाया था कि विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के शिक्षको का पूरा गिरोह बना हुआ है, जो छात्राओ को तरह-तरह के प्रलोभन देकर अपनी कामपिपासा का शिकार बनाता है। उपकुलपति ने जाच के बाद मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो० बेग तथा रीडर डा० बी० डी० गुप्त को निलम्बित कर दिया। इसके बाद इन दोनों ने अपने विरोधी गुट के अन्य शिक्षकों पर छात्राओं के यौन शोषण करने के आरोप लगाये।

धर्मपरिवर्तन व निकाह

गतवर्ष ही कम्प्यूटर विज्ञान के शिक्षक हामिद हसन के एक हिन्दू छात्रा को साथ लेकर अलीगढ से भाग जाने की घटना से तहलका मचा ही था। रानी व गीता नामक छात्राओ के साथ विश्वविद्यालय में बलात्कार किये जाने की घटनायें सामने आ ही चुकी हैं। अलीगढ के अनेक शिक्षा-सेवी ऐसी एक दर्जन छात्राओं के नाम बताते हैं, जिन्हें प्रलोभन में फसाकर पहले धर्मपरिवर्तन किया गया, बाद में उनका शिक्षक या छात्र के साथ निकाह कर दिया गया।

छात्राओ का यौन शोषण चाहे कोई भी गुट करता हो तथा इसके लिए कोई भी दोषी हो, किन्तु एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त यूनिवर्सिटी के नाम पर यह एक अमिट कलक लग चुका है। विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने केन्द्रीय इण्टेलीजेन्स के सेवा-निवृत्त डायरेक्टर श्री वासुदेवन को इन घटनाओ की जाच का काम सौंपा है।

गुरु-शिष्य सम्बन्धों का अवमूल्यन

भारतीय परम्परा में शिक्षक व छात्र-छात्रा का सम्बन्ध गुरु-शिष्य का पावन सम्बन्ध माना जाता रहा है। शिक्षक व छात्रा को पिता पुत्री का पावन दर्जा मिलता रहा है। स्वाधीनता से पूर्व तक छात्र अपने शिक्षको का पितृ-तुल्य समझ कर आदर करते थे। शिक्षक भी छात्रों को पुत्र की तरह स्नेह देते थे। ऐसा अनुशासन था कि छात्र-शिक्षक से बिलकुल पिता की तरह भय खाते थे। किन्तु पुराने सम्बन्धों व मूल्यो का तेजी से अवमूल्यन होता गया और शिक्षक जहा अपने को "वेतन भोगी" नौकर मानने लगा, वहीं छात्र आदर की जगह बराबरी का दर्जा देने में गर्व समझने लगा।

अपने जमाने के महान् शिक्षक तथा दार्शनिक राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने लिखा था—चरित्रहीन शिक्षक को सरस्वती के मन्दिर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

दैनिक वीरप्रताप में छपे समाचार का प्रतिवाद

(महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी संयोजक हरयाणा रक्षावाहिनी)

दैनिक वीरप्रताप जालन्धर के विशेष प्रतिनिधि द्वारा प्रकाशित समाचार पढ़कर आश्चर्य हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक अधिवेशन सम्बन्धी समाचार को मोड़ मरोड़कर प्रकाशित किया है। च्यू कि यह अधिवेशन हरयाणा रक्षावाहिनी का न होकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का था। अत. इस अधिवेशन में धार्मिक तथा सामाजिक विषयों पर ही प्रस्ताव पारित किये गये थे।

हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठकों में आरम्भ से ही अबोहर फाजिलका के हिन्दी भाषी क्षेत्रो को हरयाणा में मिलाये जाने की माग की जाती रही है। इसी सम्बन्ध में प्रो० शेरसिंह जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी, बा० रघुबीरसिंह जी, श्री वेदव्रत शास्त्री, प० सुखदेव शास्त्री तथा सभा की भजन मण्डलियों के साथ मे स्वय भी इन क्षेत्रो में गया हूँ। वहा की जनता को हरयाणा प्रदेश में मिलाने तथा भारत सरकार के मैथ्यू आयोग द्वारा इसी सम्बन्ध में जनगणना कराये जाने पर उन्हें अपनी मातृभाषा हिन्दी लिखवाने को प्रेरणा की गई। ग्राम पंचायतो से सम्पर्क करके हरयाणा में शामिल होने के प्रस्ताव पास करवाये तथा ग्रामों में सभा का भजन मण्डलियों द्वारा वेदप्रचार करवाया।

मैथ्यू आयोग के समक्ष हरयाणारक्षावाहिनी ने हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए ज्ञापन प्रस्तुत किया और अकालियो तथा पजाब सरकार द्वारा प्रस्तुत ज्ञापन का भी मु हतोड उत्तर दिया गया। इसी प्रकार पानी विवाद का निपटारा करनेवाले ट्रिब्यूनल के समक्ष प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष रक्षावाहिनी ने व्यक्तिगत रूप में उपस्थित होकर हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत किया। सतलुज यमुना लिकनहर की खुदाई का कार्य भारत सरकार अपने हाथ में लेवे। यह मांग भी सर्वप्रथम हरयाणा रक्षावाहिनी की ओर से की गई थी।

पजाब में निर्दोष हिन्दुओ की जानमाल की रक्षा के उपाय ढूढने के लिए प्रो० शेरसिंह ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले (वर्तमान स्वामी आनन्द बोध) के साथ एक सप्ताह तक पजाब के नगरो तथा ग्रामो का भ्रमण किया और सर्वप्रथम भारत सरकार से सुरक्षा पट्टी बनाने तथा श्री बरनाला की पथक सरकार को बर्खास्त करने की माग की गई।

वीरप्रताप के विशेष प्रतिनिधि ने चौ० बन्सीलाल के मुख्यमन्त्री बनने के पश्चात् प्रो० शेरसिंह द्वारा अपना रुख बदलने का मिथ्या आरोप लगाया है। चौ० बन्सीलाल के मुख्यमन्त्री बनने के पश्चात् २४ अगस्त को रोहतक में हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक में भी अकालियो द्वारा पजाब समझौता रद्द किये जाने पर १९७० का इन्दिरा गान्धी एवार्ड लागू करने की माग की गई थी। जिसके अनुसार चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिलका हरयाणा को देने की व्यवस्था है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिवेशन मे चौ० देवीलाल की आलोचना नही की गई अपितु स्वामी ओमानन्द जी ने उन द्वारा हरयाणा के हितो की रक्षा के लिए किये जा रहे आन्दोलन की प्रशसा की गई थी। तथापि चौ० देवीलाल की कुछ नीतियो का विरोध अवश्य किया गया है। यथा समस्त हरयाणा सम्मेलन में अकालियो के साथ हरयाणा का कोई झगडा नहीं था। प्रस्ताव, पजाब का मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशसिंह बादल को बनाये जाने का सुझाव एव लोकदल उपसमिति द्वारा सतलुज यमुनालिक नहर की खुदाई के कार्य को सन्तोषजनक बताना आदि हरयाणा विरोधी पग सभी बुद्धिजीवी मानते हैं।

चिड़िया में आर्यवीरदल की शाखा

आर्यसमाज चिड़िया जि० भिवानी में "आर्यवीर दल" की शाखा नियमित रूप से लगनी आरम्भ हो गई है। आर्यसमाज दूबधा (भिवानी) में भी ब्रह्मचारी संजयदेव जी ने श्री राजवीर आर्य पहलवान को नियुक्त करके नियमित शाखा लगानी प्रारम्भ कर दी है। इसी प्रकार निकट भविष्य में मीमकी वाली, चरखी, मन्दौला, भाण्डवा, बाढोली, मकड़ाना तथा दादरीशहर में भी नियमित "आर्यवीरदल" की शाखाएं आरम्भ कर दी जाएंगी।

—कृष्णकुमार आर्य, मन्त्री आर्यसमाज
एव अधिष्ठाता आर्यवीरदल, चिड़िया, भिवानी (हरयाणा)

महर्षि दयानन्द निर्वाण पर

'दयानन्द दिग्विजयार्क' ग्रन्थ के अन्त मे महाराष्ट्रीय प० गोपाल राव हरि लिखते हैं—

सुहृद्गण—इस प्रकार श्रीमान् स्वामी जी महाराज के वियोगार्णव में डूबा हुआ गुणलुब्ध समस्त भारतवर्ष हाहाकार के साथ महीनो विलाप करता रहा, कर रहा है और तावत् करेगा यावत् फिर कोई वैसा महापुरुष उसकी जैसी करुणा करने वाला उत्पन्न न होगा। इसलिये हे बन्धुवर्ग! कोई भी तो तदनुरूप बनकर परमार्त्त भारत का बने उस प्रकार शीघ्र शमन करो। प्रथम देखना और विचारना चाहिये कि स्वामीजी में क्या विशेषता थी। थे तो वे भी मनुष्य परन्तु उनके लिये इतना रुदन, इतना आक्रोश और आक्रन्दन लोगों ने किमर्थ किया?

देखिये, इस जगत् में प्रत्यह कितने राजा, महाराजा धनाढ्य, विद्वान्, सन्यस्त और सन्त महन्तादि नहीं मरते परन्तु खबर भी तो नही पडती कि कौन था और किधर गया। बहुत हुआ तो इस कान सुनी, उस कान निकाल दी। यदि किसी को किसी से कुछ अधिक सम्बन्ध हुआ वा उसमें कोई सा क्वचित् गुण हुआ तो उसका मरण सुन इतना कह देना हद है कि वह अच्छा, बडा अच्छा, बडा ही अच्छा था। बस हो चुका। बाद को कुछ नही। कदाचित् उसमे भी कुछ अधिक सम्बन्ध हुआ तो एक दिन वा दो चार दिन विशेष रो रुवा कर बैठ रहे। ऐसी रीति इस जगत् की है। उससे बिलकुल विरुद्ध स्वामीजी महाराज का मरण और शोक! परम विलक्षण सबके अनुभव में ऐसा आ रहा है कि जिसका कालत्रय मे मिटना अति गहन सा जान पड़ता है। यदि कोई केवल उस विषय के लेखों को (जैसे कि कुछेक छोटे कर करके अभी ऊपर धर दर्शाये हैं) बटोर कर एकत्रित करने का यत्न करता है तो अवश्य छोटा-मोटा महाभारत जैसा ग्रन्थ बन जाता। कारण उनकी इस प्रकार पवित्र कीर्ति के विस्तार से यही सिद्ध होता है कि उनमे समस्त सद्गुण निवास करते थे। उन सबका उपयोग प्राचीन महर्षियों के समान स्वदेश की भलाई में करते रहे, ऐसा उनका गाढ सकल्प था। सो उन्होंने यावज्जीवन किया और उसके पीछे अनेक प्रकार के क्लेश, अपमान और विघ्न भी सहे परन्तु कभी पीछे नही हटे। इससे पुन यही सिद्ध हुआ कि जो वैसा करेगा वह अवश्यमेव इसी प्रकार उनकी भाँति इस जगत् मे परम श्लाघ्य व पूज्य होगा अन्यथा ऐसा होना अति असम्भव है। चाहे वह कैसा ही विद्वान् क्यो न हो? प्रत्यक्ष देख लो कि काशी निवासी बाल शास्त्री जी कैसे भारी विद्वान् थे। उनका मरण स्वामीजी से केवल सवा वर्ष ही पूर्व हुआ था परन्तु वे यावज्जीवन अपनी विद्या और गुण निरन्तर स्वार्थ मे ही खर्च करते रहने के कारण परिणाम मे विज्ञो के समीप निद्य ठहरे। उदाहरणार्थ हिन्दी प्रदीप प्रयाग का लेख नीचे लिख दिखाया है।

प० बाल शास्त्री जी की मृत्यु पर हमारे सत्यवक्ता मुहफट सहयोगी हिन्दी प्रदीप इस तरह शोक करते हैं कि "अब द्विगुण दुख हमें इस बात का है कि ऐसे-ऐसे महान् पण्डित भी इन प्रान्तों में खासकर काशी में धनी-मानी राजा बाबुओ को उल्लू बनाय खूब रुपया ऐंठने के सिवाय अपना नाम चिरस्मरणीय रहने की कोई बात नहीं छोड जाते। न सस्कृत ही को किसी तरह फायदा उनकी जात ते पहुचता है, न लोकोपकार महावृक्ष की जड सीचने की इच्छा से एक चुल्लू पानी अपने जीते जी उस पर कभी वे छोडते होगे। पामर लोगो के समान ये लोग भी प्रजा को ठग मन मानता खाया, लुटाया और जहाँ तक धन-सचय करते बन पडा किया। अन्त को जैसे आये वैसे मुह बाये चल खडे हुए। बाल शास्त्री ने तो लोकोपकार एक ओर रहे, विद्या के अजीर्ण में आय हाल में विधवोद्वार खण्डन पर कुछ लिखा था। वाह अकल, पढ़ा-लिखा सब कुछ, पर पुरानी ख्याल की गदगी जी से दूर न हुई।"

सुलेख प्रतियोगिता

दिनांक ३१-१-८६ को गुरुकुल ढिकाडला के पांचवी कक्षा तक के छात्रों की सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन श्री जयवीर जो शास्त्री की अध्यक्षता में किया गया परिणाम इस प्रकार रहे —

ब्र० बलवीरसिंह डडवाडा कक्षा—४ प्रथम
ब्र० विनोदकुमार पट्टीकल्याणा कक्षा—४ द्वितीय
ब्र० विनोदकुमार डडवाडा कक्षा—५ तृतीय
ब्र० भूपेन्द्रसिंह उग्राखेडी कक्षा -४ तृतीय

(श्री बलजीतसिंह)
मुख्याध्यापक

सम्पादक के नाम पत्र

हर्ष का विषय है कि सर्वहितकारी निर्भीक निष्पक्ष एवं आधुनिक ढंग का नवयुवकों को चेतना में प्राण फूक देनेवाला पत्र है। इसमें प्रकाशित समस्त सामग्री धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में क्रान्ति लाने वाली होती है। जैसी कि आर्यजगत् में होती है। इसके माध्यम से जो आप जागृति लाये हैं उसके लिये बधाई। ऐसे पत्रों की देश धर्म की रक्षार्थ आज अत्यावश्यकता है। सरकार को बाध्य किया जाय कि धर्मनिरपेक्षता त्यागकर धर्म सापेक्ष (हिन्दूराज्य) घोषित करे। तभी भारत बचेगा।

छाजूराम शर्मा शास्त्री

ग्राम बालसमन्द (हिसार) में युवक सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक २४-९-८६ सायं-काल आदेश युवा सेवा समिति बालसमन्द की तरफ से गांव में युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें शराब बन्दी समिति के अध्यक्ष श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा सामाजिक विकास समिति हिसार के प्रधान प्रो० आर एस गुप्ता एवं प्रो० पी के० सैक्सेना, मा० देवेन्द्र शर्मा, प्रो० जयपालसिंह आर्य ने शराब बन्दी, दहेज बन्दी, छुआछात, सदाचार तथा नवयुवकों के कर्त्तव्य के बारे में विचार रखे। क्रान्तिकारीजी ने विशेषकर गांव में जो दो शराब के ठेके हैं उन्हें बन्द करवाने के बारे में नवयुवकों एवं ग्राम पंचायत को प्रेरित किया। परिणामस्वरूप प्रातःकाल सरपंच ने शराब बन्दी बारे रेजुलेशन पास कर आर्य जी को दिया ताकि अगले वर्ष यह ठेका यहां न उठ सके। इसके अतिरिक्त श्री अमरसिंह सोनी एवं श्री सरजीत आर्य के शिक्षाप्रद भजन हुवे।

मा० दुलीचन्द जी शास्त्री की अध्यक्षता में यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ। श्री राजकुमार समिति प्रधान ने इस का संचालन किया। नेताजी श्री इन्द्रसिंह ने गांव के विकास कार्य एवं समिति के रचनात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला। सम्मेलन में निकट के गांव बाडाहेडी ग्राम कल्याण युवा संगठन के प्रधान श्री नेकीराम के नेतृत्व में वाहन लेकर शराब बन्दी नारे लगाते हुवे ५० नवयुवक पधारे। इस कार्य को सफल करने में आर्यसमाज बालसमन्द के प्रधान श्री दिवानसिंह आर्य, सरपंच साहब, श्री रणजीतसिंह त्रिलोकचन्द पंच, जगदीशचन्द्र जी, श्री सुनील-दत्त आर्य, जयबीरसिंह जो, रामभगत, रामकिशन आदि का विशेष सहयोग रहा।

इस समय संगठन का कार्य सराहनीय है। साप्ताहिक हवन करना, गांव में सायंकाल शराब बन्दी नारे लगाना, गांव में दो मीट की दुकानें बन्द करवाना, गलियों की सफाई, वृक्ष लगाना आदि। अब तक लगभग ४० नवयुवक शराब एवं धूम्रपान न करने का व्रत ले चुके हैं। इस आन्दोलन से ठेकेदार बुरी तरह घबराया हुआ है। इस सम्मेलन में युवकों के अलावा नर नारियों ने भी काफी बढ-चढकर भाग लिया।

देवेन्द्र शर्मा
मन्त्री आदर्श युवा समिति बालसमन्द

आर्ययुवक ने अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में स्वर्ण पदक जीते

श्री शिवनारायणसिंह सुमन मन्त्री आर्यसमाज बुढावल ने अन्तर्राष्ट्रीय वेटरन एथलैटिक, प्रतियोगिता, हांगकांग जो दिनांक १८-१०-८६ तथा १९-१०-८६ को आयोजित थी, में भाग लिया था जिसमें लम्बी-कूद, ऊँची-कूद तथा ट्रीपल-जम्प में प्रथम स्थान प्राप्त करके तीन स्वर्ण-पदक जीते हैं तथा १०० मी० दौड में कांस्य पदक हस्तगत किया है।

इसके अतिरिक्त लम्बी-कूद तथा ट्रीपल-जम्प में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता का नया रिकार्ड स्थापित किया है। आर्य बन्धु को इस सफलता पर बधाई।

सम्पादक

भोगपुर कनालसी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

गांव भोगपुर—कनालसी जि० अम्बाला का द्वितीय वार्षिकोत्सव २६-२७ २८ सितम्बर को बहुत धूम-धाम से मनाया गया। इसमें निम्न-लिखित विद्वानों ने भाग लिया।

महाशय लक्ष्मणसिंह बेमोल, स्वामी सदानन्द जी वैदिक साधनाश्रम फतेहपुर, बहन उर्मिलार्या उपदेशिका करनाल, कुमारी सुनीता आर्या भजनोपदेशिका किशनपुरामाजरा अम्बाला तथा आर्य प्रतिनिधि हरयाणा सभा की ओर से प० हरीशचन्द्र, प० बनारसीलाल, प० राजबल जी ने भाग लिया। इस उत्सव में सभा को ५०१ रु० की राशि भेंट की गई। उत्सव में हजारों की संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। कई नौजवानों ने इस शुभावसर पर यज्ञोपवीत भी लिए।

दीपावली पर्व

आर्यसमाज कवारी की तरफ से दिनांक १-११-८६ को महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस के रूप में दीपावली पर्व मनाया गया। सायंकाल हवन किया गया। प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने महर्षि जी के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ में नवयुवकों को बुराई छोडने एवं अच्छाई धारण करने पर बल दिया। महाशय मनसाराम तथा श्री रामपाल आर्य ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त महाशय कर्णसिंह जी एवं श्री महेन्द्रसिंह आर्य ने भजनों के माध्यम से महर्षि के गुणों का वर्णन किया।

इन्द्रसिंह आर्य
मन्त्री आर्य समाज कवारी

रोहतक में ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्य वीर दल रोहतक नगर की ओर से ऋषि निर्वाणोत्सव बडी धूम-धाम से मनाया गया। दिनांक ३१-१०-८६ प्रातःकाल प्रभातफेरी निकाली गई। दिनांक १-११-८६ शनिवार को आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला में विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर के छात्र-छात्राओं की संगीत तथा भाषण प्रतियोगिता हुई। जिसके अन्दर ४२ प्रतियोगियों ने भाग लिया।

मुलखराज आर्य

यजुर्वेद पारायण यज्ञोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत में विश्वकल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण महायज्ञोत्सव श्री वैद्य जयकृष्ण हसीजा की अध्यक्षता एवम् सुश्री प्रज्ञादेवी जी आचार्या (वेदपाठिका ब्रह्मचारिणियों सहित) पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी उ० प्र० के ब्रह्मत्व में दिनांक २०-१०-१९८६ से २६-१०-८६ तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

चौथी बार सर्वसम्मति से सभा का प्रधान बनने पर प्रोफेसर शेरसिंह को बधाई

हम प्रोफेसर शेरसिंह को आर्य प्रतिनिधि हरयाणा का प्रधान चुने जाने पर बधाई देते हैं। इस समय में प्रो शेरसिंह ने हरयाणा को ऊंचा उठाने व वैदिक मान मर्यादाओं को पूरा करने में जो कार्य किया है वह आज तक किसी ने भी नहीं किया। आपने रक्षावाहिनी बना कर हरयाणा के हक में जो कार्य किये वे कार्य कोई नहीं कर सका। आपको राजनीति के साथ खेलने का अभ्यास है। और आप केन्द्रीय मन्त्री मण्डल मे एक मन्त्री भी रह चुके हैं। आपने शराब आदि नशीली चीजों के विरुद्ध बहुत प्रचार किया जिसके परिणामस्वरूप यह नशे यदि समाप्त नहीं हुए तो कम जरूर हो गये हैं। चण्डीगढ के बदले हरयाणा की राजधानी मिलने के लिये आपने बहुत प्रयत्न किये। उपरोक्त बातों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि आप एक सफल प्रधान रहे है।

जयदेव गोयल पत्रकार जींद।

बधाई सन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान पद के निर्विरोध चुनाव के लिए हमारी ओर से आपको हार्दिक शुभकामनाए।

ईश्वर आपके स्वास्थ्य, आयु एव साहस मे वृद्धि करे, ताकि आप आर्यसमाज, देश और जाति की पूर्व की भांति लग्न एव उत्साह से सेवा कर सकें।

हमारे आर्यसमाज का आपको सदैव भरपूर यथाशक्ति सहयोग मिलता रहेगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ एक बार पुन दीपावली तथा आपके निर्विरोध प्रधान पद के चुनाव के लिए मगल कामनाए।

—हिताभिलाषी धनपतराय आर्य प्रधान
आर्यसमाज, जवाहर नगर पलवल।

सातरोड कलां (हिसार) में वेद-प्रचार सम्पन्न

दिनाक ४, ५ अक्तूबर १९८६ को करुणा शास्त्री के पुरुषार्थ एव लगन से ग्राम सातरोड कला में वेद-प्रचार का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री स्वामी सर्वदानन्द जी, प्रो० ओमकुमार आर्य, मा० शेरसिंह जी प्रधान (राजकीय अध्यापक सघ हरयाणा), बहन ज्ञानवती एव श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आदि विद्वान् नेताओं ने ईश्वर की सत्ता, मनुष्य के कर्त्तव्य, नैतिक शिक्षा एव शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन पर बल, नारी शिक्षा, राष्ट्र एकता, शराब बन्दी बारे विस्तार से विचार रखें। क्रान्तिकारी जी ने विशेष कर शराब न पीने एव मीट न खाने पर जोर दिया तथा गाव वालों को अपने गाव से शराब का ठेका एव मीट की दुकान बन्द करवाने के लिये सघर्ष करने के लिये प्रेरित किया।

इस के अतिरिक्त प० सुमेरसिंह की भजन मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। गाव मे वेद-प्रचार का अच्छा असर रहा। सभा को १०० रु० दान दिया।

सुरेन्द्रसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज सातरोड कला

बड़वा ग्राम में जन्म दिवस पर यज्ञ प्रवचन

विगत १८ अक्तूबर को आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता पत्रकार एव अनेक लोक भजनों के रचयिता मा० रामचन्द्र आर्य "नलवा" के घर पर उनके पुत्र विकास के जन्म दिवस पर यज्ञ व प्रवचन का आयोजन किया गया। अनेक स्त्री पुरुषो ने जन्म दिवस पर उन्हे बधाई दी। यज्ञ के बाद श्री आर्य ने आए हुए मेहमानो का धन्यवाद किया तथा अपने वक्तव्य में आर्यसमाज और यज्ञ के महत्त्व को बताया।

हरीशकुमार आर्य, बड़वा

आर्यसमाज शान्तिनगर द्वारा बधाई सन्देश

प्रो० शेरसिंह जी (पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री) के चौथी बार सर्वसम्मति से प्रधान एव आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री के मन्त्री चुने जाने पर आर्यसमाज शान्तिनगर हार्दिक बधाई एव शुभकामनाए अर्पित कर रहा है।

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके एव गठित कार्यकारिणी के कुशल, गतिशील एव प्रेरक नेतृत्व में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। महर्षि दयानन्द एव वेद सन्देश को जन-जन तक पहुँचा कर मानव जाति का मार्ग प्रशस्त करेंगे। परमात्मा सभी को दीर्घायु एव असीम शक्ति प्रदान करे।

हरिचन्द स्नेही
महामन्त्री, आर्यसमाज शान्तिनगर, सोनीपत

बधाई सन्देश

मैं इस समय अहमदाबाद मे हू और २८ अक्तूबर का सर्वहितकारी जो आज तीन नवम्बर को प्राप्त हुआ मेरे सामने है, जिसे पढ कर बडी प्रसन्नता हुई कि सर्वसम्मति से प्रो शेरसिंह जो सभा के प्रधान चुने गये हैं। मैं इसके लिए आर्यसमाज के प्रतिनिधियों को बधाई के पात्र समझता हू जिन्होंने एकमत होकर प्रो शेरसिंह जो को अपना नेता स्वीकार किया है और यह प्रो० जी का सदा हो निस्वार्थ भावना और त्याग की वृत्ति से ही आर्यसमाज की उन्नति के लिए कार्य करने का फल है कि सब लोग उन का मान्य करते हैं, और करना भी चाहिए। परमात्मा ने उन्हें सब कुछ दिया है। और उन्हें किसी वस्तु का लालच नहीं, और न ही पद की लालसा है। इन्हीं को देख रेख में आर्यसमाज उन्नति कर सकता है और फिर इस बात से प्रसन्नता और भी बढ गई है कि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री और सर्वउपमन्त्री जन वेदो के विद्वान् हैं। मैं इस के लिए सब सभा के सदस्यों को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने इस कार्य को सर्व-सम्मति से सम्पन्न करके इस बात का परिचय दिया कि इस समय हरयाणा का सारा आर्यजगत् एक मत है और परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि हम सब सदा ही पक्षपात को छोडकर न्याय और सत्याचरण से युक्त जो धर्म है उसी को ग्रहण करते हुए मिलकर चले, और एक दूसरे का विरोध कभी न करे।

—देसराज खीरबाट

श्री आचार्य विष्णुमित्र जी की भ्रान्ति

आपका एक लेख सितम्बर १९८६ सर्वहितकारी में प्रकाशित महात्मा फूलसिह जी के सम्बन्ध में था। जिसमें आपने लिखा है कि महात्मा जी ने यज्ञोपवीत स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से लिया। मैने इस लेख को पढकर आचार्य जी को पत्र लिखा, परन्तु मेरे पत्र का आज तक उत्तर प्राप्त नही हुआ। इसके पश्चात् मैंने अपने स्कूल के अध्यापक श्री देवप्रकाश जी को उनके पास भेजा। फिर भी कोई सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त नही हुआ। आचार्य जी ने अपनी लिखी हुई पुस्तक (भगत फूलसिंह जी जीवन चरित्र) पृष्ठ ४२ पर भगत जी के सम्बन्ध में जो लिखा वह सत्य है अथवा अब जो लिख रहे हैं वह ठीक है। इसका निर्णय स्वय आचार्य जी ही करें। सच्चाई तो यह है कि भगत फूलसिंह जी ने पानीपत आर्यसमाज में आकर अपने जीवन को बदला और यही पर प० ब्रह्मानन्द जी से यज्ञोपवीत धारण किया। यही आचार्य विष्णुमित्र जी की उपर्युक्त पुस्तक मे दिया हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सम्पर्क में तो भगत जी बहुत दिन पश्चात् आये। न मालूम आचार्य जी जैसे व्यक्ति भगत जी के सम्बन्ध मे ऐसी भूल कैसे कर गये। मैंने यह स्पष्टीकरण केवल भ्रान्ति दूर करने के लिए लिखा है और मेरा कोई प्रयोजन नही है।

—रामानन्द शिवला
प्रधान आर्यसमाज, बडाबाजार, पानीपत।

आर्यसमाज की गतिविधियां

३१ अक्तूबर दीपावली के अवसर पर आर्यसमाज नरवाना के तत्त्वावधान मे नशा विरोधी सम्मेलन किया गया। जिसमें आर्य वीर-दल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी की प्रेरणा से ५३ व्यक्तियो ने शराब आदि की बुराई छोडने का व्रत लिया। नगर मे शराब विरोधी जलूस भी निकाला गया। एस० डी० एम० की अदालत मे जाकर पूर्ण नशाबन्दी के लिए ज्ञापन दिया गया। निश्चय किया गया कि १६ दिसम्बर से २३ दिसम्बर तक स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस तक आय वीरदल नशाबन्दी सप्ताह मनाएगा।

आर्य वीरदल बूडिया, जि० अम्बाला का २१-१०-८६ से २-११-८६ तक का १२ दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ। इसमे श्री सुखदशनलाल जी प्रधान, वीरसिहजी, स्वामी सदानन्द जी, श्री रोशनलाल जी आर्य विधायक, आचाय देवव्रत जी गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि विद्वानो ने अपने अपने विचारो से प्रभावित किया। वैद्य रामलाल जी व श्री रामस्वरूप शास्त्री ने भाग लिया।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा की ओर से महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टकारा में शिवरात्रि के अवसर पर २५, २६, २७ फरवरी को ऋषिमेले का आयोजन किया जा रहा है। टकारा जाने वाले यात्रियो के लिये बसों का प्रबन्ध किया गया है। यात्री निम्न पते पर टंकारा जाने के बारे में पता करलें।

—मन्त्री रामनाथ सहगल आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

प्रचार सूचना

गुरुकुल आर्यनगर हिसार का उत्सव ११, १२ अक्तूबर, ८६ को सम्पन्न हुआ।

स्वामी दिव्यानन्द की अध्यक्षता में योग साधना शिविर लगा। उत्सव में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, श्री राममेहर जी एडवोकेट, श्री शिवराम जी जिन्दल, श्री बलवन्तराय तायल, स्वामी सुमेधानन्द जी, डा० सर्वदानन्द जी, श्री वेगराज जी, प० जयदेव जी जतोई वाले, श्री चिरजीलाल जी भजनोपदेशक सभा, दादा गणेशीलाल हिसार आदि विद्वान् तथा भजनोपदेशको ने पधार कर अपने प्रभावशाली भाषणो से श्रोताओं को कृतार्थ किया।

उत्सव का आयोजन व सचालन श्री रामस्वरूप जी शास्त्री ने किया।

दिनाक ३, ४, ५ नवम्बर, ८६ को आर्यसमाज पायल (हिसार) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। प्रात साय यज्ञवेदी पर श्री सुखदेव शास्त्री के वेद प्रवचन हुए। श्री ईश्वरसिह जी तूफान व श्री रोहतासकुमार जी आर्य के प्रभावशाली भजन हुए। उत्सव कार्यक्रम का सचालन श्री राममुनि वानप्रस्थी ने किया। युवको का विशेष सहयोग रहा। १२ छात्र व छात्राओ ने जनेऊ लिये। सभा को ४०० रुपये दान में दिये।

—निवेदक रामस्वरूप वैद्य
पायल आर्यसमाज तखण्डी रुक्का हिसार

आर्यसमाज रामनगर जीन्द मे ऋषि बलिदान दिवस सम्पन्न। सभा की अध्यक्षता श्री रामभक्त जी लागायन, उपमण्डल अधिकारी ने की। डा० सुदशनदेव जी व श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी जगत् मुनि, चौ० प्रतापसिह जी ने अपने तेजस्वी विचार महर्षि के विषय में रखे। प्रो० ओकुमार जी ने सभा का सचालन किया। चौ० नत्थासिह जी के भजनो का बडा प्रभाव रहा। आर्य वीरदल के वीरो ने बडा सहयोग दिया।

नवयुवक जागरण अभियान का प्रथम दौर समाप्त।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री ब्र० महेन्द्रसिह जी के नेतृत्व में, श्री सत्यप्रिय जी की अध्यक्षता मे ३१ अक्तूबर से ९ नवम्बर तक जन जागरण अभियान किया गया। आर्यसमाज कोसली से लेकर दादरी, हासी, जीन्द, सालवन, घरौण्डा, समालखा, सिलावा, सोनीपत, गन्नौर, रोहणा, बहादुरगढ, झाडौदाकला, नजफगढ, पलवल, नूह, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, वहीन, फिरोजपुर झिरका, वजीराबाद, झाडसा, नगीना, भादस आदि स्थानो में जन जागरण किया गया। अन्तिम दिन ९ नवम्बर को आर्यसमाज मन्दिर गुडगाव में सम्पन्न हुआ। ९ नवम्बर को आर्यसमाज मन्दिर में विशाल गोष्ठो का आयोजन किया गया। जिसमें स्वामी सुधानन्द जी की अध्यक्षता में गोष्ठी आरम्भ हुई। इसमें श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक सभा, श्री ब्र० महेन्द्रसिह जी शास्त्री, श्री सजयदेव जी, श्री सुरेशकुमार शास्त्री, श्री सुशीलचन्द्र शास्त्री, श्री ईश्वरचन्द्र जी शास्त्री, प्रो० ओकुमार जी, प्रो० प्रभुदयाल जी, मा० खजानसिह जी, ठा० धर्मसिह जी, चौ० गोपीचन्द जी आदि विद्वानो तथा अनेक युवकों ने भाग लिया। शराबबन्दी के लिए अपने विचार रखे। गोष्ठी मे निश्चय किया गया कि भविष्य में शराब के विरुद्ध प्रान्तीय स्तर पर एक आन्दोलन किया जाय। सरकार को शराबबन्द करने के लिए विवश किया जाएगा।

आर्यसमाज रामनगर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर रामनगर करनाल का वार्षिक उत्सव दिनाक ७, ८, ९ नवम्बर को बडी धूमधाम के साथ आर्यजगत् के विद्वान् ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमें प० ओमप्रकाश शास्त्री, पं० वीरेन्द्ररत्नम्, प० कृष्णदेव जी, प० चिरजीलाल जी, प० बनारसीदास जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डलियों द्वारा बडा ही रोचक कार्यक्रम रखा गया।

दिनाक ९-११-१९८६ रविवार को प्रात ११ बजे ब्रह्मचारी ओमदर्शन योगाचार्य द्वारा योगशक्ति प्रदर्शन किया गया। जिसमें लोहे के सरिये गले व आख से मोडना, हाथ की नाडी को रोकना, हथेली पर काच पीसना, पीतल की थाली को हाथो से फाडना, लोहे की मोटी जजीर तोड़ना, काच पर लेटकर छाती पर पत्थर तुडवाना आदि मुख्य रहे। नवयुवकों पर शक्ति प्रदर्शन का काफी अच्छा प्रभाव रहा।

—मन्त्री आर्यसमाज रामनगर, करनाल

आर्यसमाज खटकड़ जि० जीन्द का वार्षिक चुनाव

प्रधान—बलदेवसिह आर्य उपप्रधान—अमरजीतसिह आर्य
महासचिव—सतबीरसिह खटकड एम ए, एल एल बी
कोषाध्यक्ष—सूरजमल आर्य।

(पृष्ठ २ का शेष)

विद्यालयो में एक मिनट के लिए भी सहन नहीं किया जाना चाहिए, क्योकि सस्कारहीन शिक्षक से छात्रो को कुसस्कार ही मिलेगे।

स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा था—"जिस देश का शिक्षक आदर्श होगा उसकी भावी पीढी स्वत राष्ट्रभक्त व आदर्श बनेगी। जिस देश का शिक्षक चरित्रहीन हो जायेगा, वह देश स्वत पतन के गर्त में चला जायेगा।"

अन्य वर्गों के साथ-साथ शिक्षको के नैतिक मूल्यो के अवमूल्यन का सकट हमारे राष्ट्र के चरित्र को लीलता जा रहा है। यदि सरस्वती के मन्दिर शिक्षण सस्थानो को कामुक, चरित्रहीन, उच्छृखल व अपराधी वृत्ति के शिक्षकों से मुक्त नही कराया गया, तो कितना ही शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर लिया जाये उसका कोई लाभ होने वाला नही है।

भारत में "भारत भवन" जैसे सांस्कृतिक सस्थान में कारन्त जैसे "पद्म श्री" प्राप्त प्रख्यात कलाकार द्वारा विभा के यौन शोषण तथा उसे जला डालने की शर्मनाम घटना भी देश-विदेश मे हाल ही मे काफी चर्चित रही है। शिक्षा, कला व सस्कृति के केन्द्र आज यौनाचार के अड्डे बनते जा रहे हैं, इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है?

—युगवार्ता

आर्य वीरदल हरयाणा का गठन

वर्ष १९८६-८७

संरक्षक—१ स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती
२ लाला लक्ष्मणदास आर्य
३ प० सत्यदेव भारद्वाज

सहसचालक—श्री मनोहरलाल जी आनन्द

उपसचालक—श्री उमेदसिंह शर्मा
,, अजीतकुमार आर्य
,, लाजपतराय आर्य

मन्त्री—श्री वेदप्रकाश आर्य

प्रचारमन्त्री—श्री देशराज आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री मुलकराज आर्य

लेखा-परीक्षक—श्री मनोहरलाल आनन्द

बौद्धिकाध्यक्ष—१ स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती
२ प्रो० ओमकुमार जी
३ श्री सजयदेव जी
४ प० सूर्यप्रकाश पाठक

सम्पादक आर्यवीर विजय—प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी

सह सम्पादक ,, ,, प्रो० चन्द्रभानु आर्य

❋मण्डलपति❋

१ श्री वेदप्रकाश आर्य (फरीदाबाद) २ श्री सत्येन्द्रकुमार शास्त्री (गुडगांव)
३ वैद्य हरीशचन्द्र आर्य (महेन्द्रगढ़) ४ श्री हरिचन्द स्नेही (सोनीपत)
५ श्री जगदीशचन्द्र मधोक (करनाल) ६ श्री हरीराम आर्य (कुरुक्षेत्र)
७ श्री त्रिलोकचन्द आर्य (अम्बाला) ८ श्री रामकुमार आर्य (जींद)
९ श्री जगदीश मित्र आर्य (रोहतक) १० श्री रामलाल आर्य (भिवानी)
११ श्री सत्यकाम आर्य (हिसार) १२ श्री नौरंगसिंह एडवोकेट (सिरसा)

❋अन्तरंग सदस्य❋

१ श्री बीरूराम आर्य २ श्री कन्हैयालाल महता
३ श्री रामानन्द सिंगला ४ श्री वीरभान आर्य

आर्य वीरांगना दल
सह संचालिका कु० सन्तोष आर्या

उत्तमचन्द शरर
संचालक आर्य वीरदल हरयाणा

आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल का चौतीसवां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल का चौतीसवां वार्षिकोत्सव दिनांक १४-१५-१६ नवम्बर, ८६ तदानुसार शुक्र, शनि तथा रविवार को बडे उत्साह से मनाया जारहा है। इस अवसर पर आर्यजगत् के पूज्य सन्यासी, विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री ए० ए०, आचार्य देवव्रत शास्त्री, डा० प्रशांत वेदालकार, प्रो० ओमवीर एम० ए०, प० सुखदेव शास्त्री, प० बेगराज भजनोपदेशक तथा प० मुरारीलाल जी बेचैन भजनोपदेशक ने पधारने की स्वीकृति दे दी है। इस समाज का वार्षिकोत्सव जिला फरीदाबाद का एक महत्त्वपूर्ण उत्सव होता है, जिसमें जिले के हजारो नर-नारी इसमे भाग लेकर धर्म का लाभ उठाते हैं।

आनन्दस्वरूप भाटिया मन्त्री

अध्यापक/अध्यापिका की आवश्यकता

शास्त्री एवं आचार्य उपाधि प्राप्त, जो संस्कृत-साहित्य एवं व्याकरण योग्यतापूर्वक अध्यापन करा सकें, ऐसे आर्य विचारवाले विद्वानों/विदुषियों की आवश्यकता है। सेवानिवृत्त एवं आर्यविचार वालों को प्राथमिकता दी जायेगी।

प्राचार्या
कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली-४०

आर्यसमाज अर्बन इस्टेट गुडगांव का चुनाव

प्रधान-सर्वश्री ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री-सोमदत्त आर्य, प्रचारमन्त्री-लाजपत आर्य, कोषाध्यक्ष—डी० बी० आनन्द, उपप्रधान—एल० बी० गुलियानी, पुस्तकाध्यक्ष—वासदेव गाबा, लेखानिरीक्षक-सत्यपाल आर्य।

आंधियों में दीपक जलाओ साथियो

दिल से अधेरों को भगाओ साथियो।
आंधियों में दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो।
बातियो को खून मे डुबाओ साथियो।

वायदा करो तो पूरा होना चाहिए। माग भरदो तो नहो रोना चाहिए।
यदि आग लगी आपके पडौस मे। चैन की न नींद कभी सोना चाहिए।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए। टी वो फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए
इतनी समझ हमे आनी चाहिए। लडकी न लकडी बनानी चाहिए।

डोलियां न अर्थियां बनाओ साथियो।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो।

प्यास न बुझा सके वो पानी नहीं है। विश्व भूल जाए वो कहानी नहीं है।
रुकने का नाम तो रवानी नहीं है। हार मान बैठे वो जवानी नहीं है।
नीतिहीन बातें सब छोड दीजिए। टूटी हुई माला फिर जोड दीजिए।
बादलों से अमृत निचोड लीजिए। कसों की कलाइया मरोड़ दीजिए।

गिरे हुए दीन को उठाओ साथियो।
एकता के बीज का बचाओ साथियो।

लक्ष्य पे न पहुचे वो तीर नहीं है। खून पीता हो जो वो अमीर नहीं है।
सत्य बेचता ही वो फकीर नहीं है। झूठ बोलता ही वो कबीर नहीं है।
प्यार के बिना तो जिन्दगी अनाथ है। साथ छूट जाए वो भी कोई साथ है।
व्यर्थ में झुका रहे वो कैसा माथ है। उन्नति का नाम नहीं फुटपाथ है।

प्रेम की फुहार में नहाओ साथियो।
वेदना को वन्दना बनाओ साथियो।

जनता को लूटे वो सिपाही नहीं है। लिखने से मुकरे वो स्याही नहीं है।
रास्ते को दोष दे वो राही नहीं है। प्यास को बढाए वो सुराही नहीं है।
साच को यहा कभी भी आच नहीं है। आच में जले वो कोई साच नहीं है।
पत्थर तो पत्थर है कांच नहीं है। पक्षपाती जाच कोई जाच नही है।

फैशन की पूरियां न खाओ साथियो।
पुरखों के पुण्य को बचाओ साथियो।

दिल से अधेरों को भगाओ साथियो। आंधियों में दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो। बातियों को खून में डुबाओ साथियो।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'
प्राध्यापक, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
डी० ए० वी० कॉलेज, अबोहर-१५२११६ (पंजाब)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।